हिन्दी नाटक कोश

सन् १३२५ से १९७०
तक के हिन्दी-नाटकों का
आधिकारिक अध्ययन



नेशनल पब्लिशिंग हाउस • दिल्ली

हिन्दी नाटक-कोश

डॉ० दशरथ ओझा

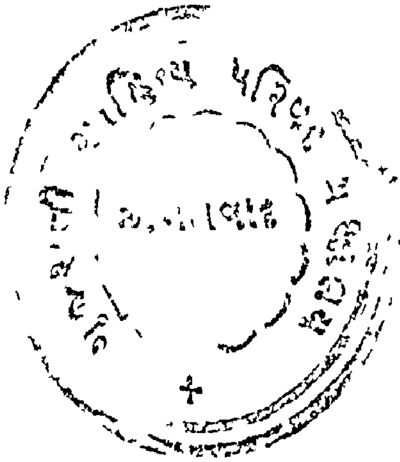


नेशनल पब्लिशिंग हाउस · दिल्ली

हिन्दी नाटक-कोश

डॉ० दशरथ ओझा

संगीत नाटक अकादमी
के तत्त्वावधान मे
निर्मित



नेशनल पब्लिशिंग हाउस
२३, दरियागज, दिल्ली-११०००६
द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण १९७५ • मूल्य ६५.००

सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस
मौजपुर, शाहदरा, दिल्ली-११००५३
द्वारा मुद्रित

HINDI NATAK KOSH
Encyclopaedia
Dr. Dashrath Ojha

भूमिका

हिन्दी नाटक के उद्भव और विकास पर शोध करते समय मुझे यह आभास हुआ कि प्राचीन हिन्दी-नाट्य-सम्पदा क्रमशः विनष्ट होती जा रही है, अत इसका सरक्षण राष्ट्रीय धर्म है। इस संरक्षण का मुझे यही मार्ग सूझा कि कोई ऐसा नाट्य कोश प्रस्तुत किया जाए जिसमे सभी नाटको का परिचय और विवरण एक ही स्थल पर उपलब्ध हो सके। साढे ६ सौ वर्षो की दीर्घ अवधि में अनेकानेक हिन्दी नाटक रचे गये—कुछ रंगशालाओ मे प्रदर्शित हुए, अधिकांश पुस्तकालयो मे पडे रह गये। नाटको की रचना रंगमंच के समृद्धि काल मे होती है, पर हिन्दी में रंगमंच की परम्परा ही खंडित रही, अतः यह धारणा बननी स्वाभाविक हैकि हिन्दी मे नाटक साहित्य नगण्य है। पर यह कम आश्चर्य की बात नही कि रंगमंच के अभाव मे भी अपने यहाँ नाटको की रचना बड़ी सख्या मे होती रही है। रचनाकारो मे अवश्य ही कोई अत्यन्त बलवती प्रेरणा काम करती रही जो उनसे बलात् नाट्य रचना कराती रही। गाँवो और नगरो मे नाटक लिखे गये, गोष्ठियो मे पढे गये, खुले मैदानो और चौपालो मे खेले गए, अन्त मे पुस्तकालयो मे बन्द रहे जिनमे से अनेक को काल देवता ने अपने रगमच के नेपथ्य मे सदा के लिए छिपा लिया। काल की प्रवृत्ति प्रदर्शित करने की नही, छिपाने की ही होती है। मन को यह प्रश्न बराबर कुरेदता रहा कि हिन्दी के अनेकानेक नाटको की क्या यही नियति है कि वे निर्धन साहित्यकार के घर जन्म लेकर अभिनय रूपी पोषक पदार्थ के अभाव मे असमय ही काल के ग्रास बन जाये। हिन्दी साहित्यकार की दयनीय स्थिति से यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि हमारी मध्यकालीन नाट्य सम्पदा का बहुत बडा अंश विस्मृति के गर्त मे सदा के लिए विलीन हो गया। हिन्दी-साहित्य के मध्यकाल की तो बात ही क्या, विगत दस वर्षो मे कितने ही प्राचीन नाटक पुस्तकालयो से विलुप्त हो गए। जब नई पुस्तको के लिए स्थान रिक्त कराना होता है तो जीर्ण-शीर्ण पन्ने वाली पुरानी नाट्य-कृतियो को इस तर्क के साथ रद्दी मे बेच दिया जाता है कि इन्हे कोई पढता तो है नही। छोटे कस्बो की कौन कहे दिल्ली, काशी, प्रयाग, कलकत्ता, आगरा, मेरठ, गया, भागलपुर, पटना प्रभृति नगरो के बडे-बड़े पुस्तकालयो मे आज वे अनेक प्राचीन नाटक अप्राप्य है जिन्हे मैने कुछ वर्षो पूर्व पढ़कर इस कोश के लिए विवरण तैयार किया था। कई बार प्रसगवश जब स्वय पठित नाटक उन्ही पुस्तकालयो मे खोजने गया तो ज्ञात हुआ कि उनकी अन्त्येष्टि हो चुकी है। जिन नाट्यकारो ने अपने जीवन के सुन्दर-

तम क्षणो की आहुति देकर नाट्य रचना की, उनकी कृतियों की ऐसी उपेक्षा देखकर दुःख होता है। अत हमने निश्चय किया कि किसी न किसी रूप मे उपलब्ध नाटकों की स्मृति को सुरक्षित रखने का प्रयास करना ही होगा। इसी सरक्षण की भावना ने मुझे इस नाटककोश के कार्य मे सलग्न किया। विगत पन्द्रह वर्षों से इसी कार्य मे जुटा रहा।

इस कार्य मे सबसे बडी समस्या नाटको के सन्धान की सामने आई। हमारी राष्ट्रीय सस्था नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, साहित्य सम्मेलन प्रयाग आदि मे अधिकांश नाटक अनुपलब्ध है। संगीत नाटक अकादमी मे प्राचीन नाटको का प्रश्न ही नही उठता। प्राचीन नाटको मे कितने ही आज भी अमुद्रित हैं। अनेक मुद्रित नाटको का चार-पॉच सौ प्रतियो का संस्करण प्रकाशन के दस-बीस वर्ष बाद ही अनुपलब्ध हो गया। गॉवो और कस्बो के मेधावी नाट्यकारो के अभिनीत नाटको की प्रतियाँ नगरो तक पहुँची ही नही। उन प्रतिभाशाली नाट्यकारो को कोई जानता ही नही। ऐसे नाटको के सधान मे गाँवो और नगरो मे सैकडो मील की यात्रा करनी पड़ी। प्राचीन नाटको की खोज मे आसाम से पजाब तथा मिथिला से महाराष्ट्र तक चक्कर काटना पड़ा। सन्तोष यही रहा कि जहॉ भी गया कुछ न कुछ नई सामग्री मिलती गई। इससे मन मे उत्साह बढा। मेरी यात्रा का सबल एक मंत्र भी था जो मुझे सन् १९४७ मे शान्ति-निकेतन मे साहित्य-साधना करने वाले तरुण तपस्वी प० हजारीप्रसाद द्विवेदी से मिला था। वे हिन्दी साहित्य के आदिकाल पर शोध कर रहे थे। उन्होने कहा था—"हिन्दी का प्राचीन नाट्य साहित्य भी समृद्ध रहा होगा। उस समूची परम्परा की खोज करते रहिए। एक दिन अवश्य सफलता मिलेगी।" यह कोश उस मन्त्र-जाप की सिद्धि के रूप मे प्रस्तुत है।

इस कोश मे असम, नेपाल, तजोर, धारवाड़, बम्बई आदि मे विरचित प्राचीन नाटको को सम्मिलित किया गया है। प्राचीन भाषा के व्याकरण से अपरिचित पाठको को यह अटपटा लग सकता है कि हिन्दी के नाटक भला आसाम, नेपाल और तजोर मे कैसे लिखे गये होगे। इस सम्बन्ध मे अपने निजी अनुभव को अभिव्यक्त करना उचित होगा। मेरे पिताजी सिलहट जिले मे देहात के ऐसे स्थान पर सस्कृत पाठशाला चलाते थे जहाँ हमारे गाँव-देहात के सैकडो किसान, श्रमिक, व्यापारी, कारीगर अपनी जीविका उपार्जन के लिए बस गए थे। उत्तर प्रदेश तथा बिहार की हिन्दी-भाषी जनता लाखो की सख्या मे चाय बागानो एवं खेतो मे काम करती थी। वे असमिया, बगला के अतिरिक्त अपनी मातृभाषा बोलते, अपने ढग से रामलीला, कृष्णलीला करते, बसन्त, होली, दीवाली आदि त्यौहार मनाते। पिताजी इन प्रवासियो की कहानियाँ सुनाया करते। विपदा के मारे हमारे आसपास के कई व्यक्ति वर्षों बाद जब घर लौटते तो हम लोग उत्सुकता के साथ बगाल और आसाम की कहानियाँ उनसे सुनते।

बडे होने पर इतिहास मे पढ़ा कि खिलजी एव तुगलक राज्य मे बड़े-बड़े पुस्तकालयो के भस्म होने पर विद्याप्रेमी अनेक व्यक्ति मुसलमानी राज्य से भाग कर

बाहर नेपाल और आसाम मे बस गए। वहाँ उनकी वस्ती वन गयी और उन्होने देवालय निर्मित किए और उन देवघरो में पवित्र पर्वो पर नाटक खेले गए जिनकी भाषा मूलत· भोजपुरी और मैथिली थी, पर वगला और असमिया का भी उनमे पुट रखा गया। जैसे आज उत्तर प्रदेश और बिहार के प्रवासी मारिशस, फिजी, केनिया मे डेढ़ सौ वर्षो के प्रवास के उपरान्त भी अपनी मातृभाषा का उपयोग साहित्य और सस्कृति के लिए बराबर करते आ रहे है उसी प्रकार वे प्रवासी नेपाल और आसाम मे अपनी मातृभाषा का प्रयोग दिन-प्रतिदिन के व्यवहार मे करते रहे। मेरा यह अनुमान क्रमश. दृढ होता गया कि मध्य देशीय प्रवासियो ने आसाम मे अवश्य नाटको की रचना की होगी। एक बार जब नाटको की खोज मे गोहाटी पहुँचा और वहाँ महापुरुष शकरदेव के सत्र मे नाट्य साहित्य देखने का अवसर मिला तो उसकी भाषा मे अपने पूर्वज पं० दामोदर ओझा कृत 'उक्ति व्यक्ति प्रकरण' की भाषा की छटा देखकर मेरे आनन्द का ठिकाना न रहा। असमिया लिपि में प्राचीन भाषा के दर्जनो नाटक देखकर कोश-निर्माण की धारणा बिल्कुल दृढ हो गयी और उन नाटको को नागरी लिपि मे लिख डाला जो 'प्राचीन भाषा नाटक' के रूप मे प्रकाशित हुआ और जिसे इस नाटक-कोश का प्रारम्भिक स्रोत मानता हूँ। इसी प्रकार अनेक अहिन्दी-भाषी प्रान्तो मे हिन्दी नाटको की रचना चौदहवी शताब्दी से आज तक होती रही है। मुझे मिथिला और नेपाल विरचित प्राचीन नाटको से बडी सहायता मिली।

तजोर राज श्री शाह जी महाराज ने सन् १६७४ से १७११ तक राज्य किया। उन्होने 'विश्वातीत विलास' नाटक और 'राधा वशीधर विलास' नाटक की स्वत: रचना की। यक्षगान शैली पर विरचित ये हिन्दी नाटक तजोर मे अनेक बार अभिनीत हुए। यहाँ तक कि उन्नीसवी शताब्दी के अन्त मे आध्र राज्य मे एक नाट्यकार हुए प० पुरुषोत्तम कवि। हिन्दी मे विरचित उनके ३२ नाटक उपलब्ध हुए है। नाट्यकार प० पुरुषोत्तम कवि स्वय सूत्रधार बन कर धारवाड के मछलीपट्टणम नगर में नेशनल थियेट्रिकल सोसायटी के तत्वावधान मे नाटक खेला करते थे। उन नाटको को भी कोश मे सम्मिलित कर लिया गया है।

देश के इतने विशाल भूभाग मे विरचित न्यूनाधिक दो सहस्र नाटको की खोज निकालने पर प्रश्न सामने आया कि क्या सभी नाटको को कोश मे स्थान दिया जाय अथवा प्रसिद्ध नाटको को ही चुन लिया जाय ? परामर्श समिति के सदस्यो मे इस विषय पर मतैक्य न होने से निर्णय का भार मेरे ऊपर छोड़ दिया गया। मैंने इस सम्बन्ध मे विभिन्न कोशकारो की सम्मति जानने का प्रयत्न किया। स्टैनले जे० कुनिटी (Stanley J. Kunity) ने अपने कोश 'अमेरिकन ऑथर्स' (American Authors) (1600–1900) की भूमिका मे लिखा है—

thor
mak
men

अर्थात् "इस ग्रन्थ मे विशेष एवं सामान्य महत्त्व वाले न्यूनाधिक उन तेरह सौ लेखको की जीवनी संगृहीत है जिन्होने सन् १६०७ से उन्नीसवी शताब्दी के अन्त तक हमारे साहित्यिक इतिहास के निर्माण मे योगदान दिया है।"

स्टैनले ने अपने कोश मे सामान्य से सामान्य लेखक को स्थान दिया। इसी प्रकार Encyclopaedia of American Theatre मे एक ऐसे नाटक को स्थान दिया गया जिसके विषय मे स्वयं कोशकार लिखता है कि "इससे घटिया गीतिनाट्य अग्रेजी भाषा मे लिखा ही नही गया।" अब प्रश्न उठता है कि अति सामान्य कोटि के प्राचीन नाटको को कोश मे स्थान देकर पृष्ठ सख्या बढाने की कोई उपयोगिता है भी ? इसका उत्तर Johnson ने अपने कोश मे इस प्रकार दिया है—

"But as every language has a time of rudeness antecedent to perfection, as well as of false refinement."

अर्थात् "प्रत्येक भाषा मे परिपूर्णता एव मिथ्या चारुता की स्थिति आने से पूर्व रहती है।" इस तर्क के अनुसार अनेक प्राचीन कलाहीनता नाटको मे आधुनिक दृष्टि से नाटकीयता भले ही न हो पर उनमे समाज के एक वर्ग की तत्कालीन भावना और नाट्याराधको की निजी अनुभूति तो निहित है ही, चाहे वह अनुभूति कितनी ही सामान्य कोटि की क्यो न हो। इतने बड़े देश के भिन्न-भिन्न भागो मे निवास करने वाली जनता भय और परिताप, हास्य और विषाद, प्रेम और घृणा, मृत्यु और पुनर्जन्म की समस्याओ पर किस प्रकार सोचती रही और उनका समाधान इतिहास के विभिन्न कालो मे किस प्रकार निकालती रही यह जानना भी कम महत्त्व की बात नही। जान गासनेर (John Gassner) 'एनसाइक्लोपीडिया आफ वर्ल्ड ड्रामा' (Encyclopaedia of World Drama) की भूमिका मे लिखते है—

"Its perspective is that of drama as a universal phenomenon, deeply rooted in the culture of the community and the experience of the individual. Evolving from that primitive past, drama has consistently provided the form in which men explored the ultimate problems of human existence, problems of fundamental as those related to the experiences of terror and death, laughter and rebirth."

यह सत्य है कि प्राचीन नाट्यकारो ने जीवन के शाश्वत मूल्यों को दिन-प्रतिदिन के जीवन की सामाजिक समस्याओ से अधिक महत्त्व दिया। यूरोप ने विगत सौ वर्षो मे नाटक और रगमच को दिन-प्रतिदिन की उन समस्याओ से जोड़ दिया जिनकी ओर उनके पूर्ववर्ती उपेक्षा की दृष्टि से देखते रहे। किन्तु पश्चिम मे अब जो नए नाटको का आन्दोलन चल रहा है उसमे पुन शाश्वत मूल्यो को महत्त्व दिया जा रहा है। आज के समाजशास्त्री भ्रष्टाचार की नित्य बढती हुई प्रवृत्ति को देखकर घबरा उठे हैं और वे इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि भारत और एशिया के इन रोगो का उपचार विधान-स्रष्टा के पास नही केवल साहित्य-स्रष्टा के पास है। सबसे बडी समस्या है भ्रष्टाचार और चारित्रिक पतन की। इस देश के प्राचीन नाट्यकारो ने सत्य-

अहिंसा, त्याग-तपस्या, प्रेम-पातिव्रत, निग्रह-निरोध, क्षमा-तितिक्षा आदि का महत्त्व दिखाने के लिए सम्भव-असम्भव सभी प्रकार की कहानियाँ निर्मित की और उन्हें नाटक के साँचे मे ढालकर रगमचो पर प्रदर्शित करने का प्रयास किया। अत: आधुनिक दृष्टि से अनेक प्राचीन हिन्दी नाटक भले ही अनाटकीय प्रतीत हो पर यह स्वीकार करना ही पड़ेगा कि उनमे जागरूक साहित्यकारो की निजी अनुभूति, तत्कालीन समाज की सामूहिक आशा-आकाक्षा, परिवार का आदर्श रूप झाँकता-झलकता अवश्य है और इन नाट्यकारो ने समाज मे स्वस्थ परम्परा को जमाए रखने मे सफलता प्राप्त की। जिन शतश: नाट्यकारो की कृतिया विलुप्त हो गई हैं उनके प्रतिनिधि के रूप मे उन नाट्यकारो को स्वीकार कर सन्तोष करना पडता है जिनके पन्ने काल के अन्धड़ मे उडते-उड़ते बच गए हैं। इसलिए आधुनिक नाट्यकला की दृष्टि से चाहे वह कितने ही महत्त्वहीन हो पर कोशकार की दृष्टि मे उनका अपना महत्त्व है ही। इसी कारण उन्हे इनमे स्थान देना आवश्यक समझा गया है।

प्राचीन नाटको मे अधिकांश पौराणिक और धार्मिक है। आज की दृष्टि से उन नाटको का भले ही कोई महत्त्व न हो पर अपने युग मे उनकी मान्यता उसी प्रकार रही होगी जिस प्रकार आज के विशृंखल युग मे परिवार के छिन्न-भिन्न रूप को दिखाने वाले 'आधे-अधूरे' की है। आधुनिक समीक्षक पौराणिक एवं धार्मिक नाटको को जिस रूप मे देखते और समझते है उससे भिन्न अर्थो मे ये कृतियाँ ग्रहण की जाती थी। श्री अरविन्द प्राचीन पौराणिक नाटको की चर्चा करते हुए लिखते है—

"The Puranas are essentially a true religious poetry, an art of aesthetic presentation of religious truth."

पुराणो ने इस देश के युग-युग के अनुभवो को संचित विश्वासों एवं काल की छलनी मे छानकर काव्यमय भाषा मे मणि की तरह पिरोया है। उनका मत है कि "पौराणिक एवं धार्मिक नाटको के ये अवशेष भी इतने पर्याप्त रूप मे प्रतिनिधि-स्वरूप हैं कि इनसे एक उच्च संस्कृति, वैभवशाली बौद्धिकता, समृद्ध धार्मिक चिन्तन, नैतिक एवं सौन्दर्यात्मिक जीवन, शक्ति-सम्पन्न राजनीतिक हलचल, व्यवस्थित समाज के प्रखर जीवन-प्रवाह और उसके बहुमुखी विकास की बहुरंगी छाप अनायास ही चित्त पर अंकित हो जाती है। ये धार्मिक नाटक अपने युग के समृद्ध सास्कृतिक जीवन को पौराणिक कथाओ के साँचे मे ढालकर जनता के सामने आते थे।" (The foundation of Indian Culture, page 320)।

इस देश की कुछ चिर संचित मान्यताएँ थी जिनसे समाज और व्यक्ति का जीवन परिचालित होता था। अत इन धारणाओ की अभिव्यक्ति करने वाले सभी प्राचीन नाटको को कोश मे स्थान देना अनिवार्य समझा गया।

मध्यकाल के अनेक नाटक नाट्यशास्त्र के नियमो से सर्वथा मुक्त दिखाई पडते हैं। बार-बार मन मे यह प्रश्न उठता रहा कि इन काव्यों के रचनाकार ने इन्हे नाटक की संज्ञा क्यो दी? भला बनारसीदास कृत समय सार को नाटक कैसे माना जाय?

गुरु गोविन्द सिंह के 'विचित्र नाटक' को नाटक मानकर कोश मे रखा जाय या उसे छोड दिया जाय ? मदिरो मे अभिनीत लीला नाटको को ग्रहण किया जाय या नही ? यद्यपि इन प्रश्नो का विस्तृत उत्तर देने का यह उपयुक्त स्थल नही है, तथापि यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि विदेशी विद्वानो ने भी ऐसे धार्मिक काव्यो को नाटक स्वीकार किया है। येल विश्वविद्यालय (Yale University America) मे ड्रामो के प्रोफेसर डॉ० नारविन हेन (Dr Narvin Hein) ने ब्रज प्रदेश के मन्दिरो मे प्रदर्शित झाँकियो को Miracle Plays की सज्ञा दी है।

जिन धार्मिक नाटको को साहित्येतर मानकर कुछ लोग सन्तुष्ट हो जाते है उनके अनुसन्धान मे Sir Richard Carnac Temple, R V. Poduval, Minaev, Friedrich Rosen, Sir William Ridgeway आदि विदेशी और डॉ० राघवन, प्रो० यागनिक, श्री जगदीशचन्द्र माथुर प्रभृति भारतीय विद्वानो ने अपना जीवन खपा दिया है।

डॉ० नारविन हेन ने मथुरा-वृन्दावन के मन्दिरों मे अभिनीत धार्मिक नाटको को केवल दर्शक रूप मे देखा ही नही अपितु अभिनेताओ एव सूत्रधार के सम्पर्क में रहकर लीला नाटको की कला का विधिवत् अध्ययन भी किया। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे है—

"The vernacular traditions of religious drama which may survive among the Hindus of North India are known in detail only to those who in some way participate in them." (The Miracle Plays of Mathura, Introduction, Page 3)

इन्ही तर्कों के आधार पर इस कोश मे कतिपय लीला नाटको को सगृहीत किया गया। अनेक लीला नाटक इस कोश मे संगृहीत नही हो पाए है। इस त्रुटि के अनेक कारण है जिनमे प्रमुख है मेरी विवशता। इसके लिए मैं परम्पराशील नाटक प्रेमियो से क्षमा चाहता हूँ।

हिन्दी नाटको की एक समृद्ध परम्परा लोक नाटको की है। हिन्दी भाषा-भाषी राज्यो मे ऐसे नाटक डढ सहस्र से अधिक संख्या मे उपलब्ध है। सारी सामग्री एकत्र करने पर ऐसा प्रतीत हुआ कि सबको इस कोश मे समेटना सम्भव है ही नही। अत. यह मानकर सन्तोष कर रहा हूँ कि सुविधानुसार उनका एक स्वतंत्र कोश तैयार होगा। केवल अति प्राचीन एव भिखारी ठाकुर के विदेसिया नाटको को सकलित करने का लोभ सवरण न कर सका। कारण यह है कि इस नयी नाट्य धारा ने केवल ग्रामीण जनता मे ही नही अपितु पटना, कलकत्ता जैसे महानगरो मे भी हलचल पैदा कर दी। नाट्य चयन मे सबसे विषम समस्या हिन्दी, उर्दू, हिन्दुस्तानी भाषा के प्रश्न को लेकर उठी। देश-विभाजन से पूर्व हिन्दुस्तानी के नाम पर हिन्दी-उर्दू-मिश्रित भाषा का प्रचार हो रहा था। काव्य की भाषा एक दूसरे से दूर होती जा रही थी पर नाटको मे मिश्रित भाषा जनप्रिय बन रही थी। कवि अमानत कृत इन्द्रसभा और भारतेंदु

कृत अंधेर नगरी के सदृश नाटको ने मिश्रित भाषा मे नाट्य रचना को प्रोत्साहन दिया। अनेक हिन्दू-मुसलमान नाट्यकार इस क्षेत्र मे उतरे। सन् १८७५ के उपरान्त मिश्रित भाषा के नाटको की धूम मच गई। प्रश्न उठा कि शम्सुल-उलमा अहमद हुसेन-खा, अफस मुरादाबादी, उमराव अली लखनवी, अमीरुद्दीन, बर्क सीतापुरी, मीर हुसेन-खाॅ 'बुलबुल', धनपतराय 'वेकस', लाला चन्दनलाल, दुर्गाप्रसाद, दीनानाथ, रौनक बनारसी, मौलवी नजीर हसन, केदारनाथ 'सूरत', विनायक प्रसाद 'तालिब', हुसेनी मिया, पं० बनवारीलाल, मीर गुलाम अब्बास, मुहम्मद इब्राहीम 'महशर', आगा मुहम्मद शाह हश्र, नारायण प्रसाद 'बेताब', पृथ्वीराज कपूर प्रभृति नाट्यकारो की कृतियो को सम्मिलित किया जाय या नही ? यदि इनकी कृतियो को सर्वथा बहिष्कृत कर दिया जाता तो हिन्दू-मुसलिम-मिश्रित सस्कृति की परिचायक एक बलवती नाट्यधारा से हिन्दी-प्रेमी सदा के लिए वचित रह जाते। हिन्दू जनता को इन नाट्यकारो ने अरेबिया और फारस की सस्कृति एवं विचारधारा का परिचय कराया। इन्होने गुल-बकावली, गुलिस्ता-बोस्ता की बारीकिया, लैला-मजनूँ, शीरी-फरहाद का प्रेमी जीवन, अरेबियन और पर्शियन बादशाहो की राजनीति, फारस की बेगमो, बाँदियो और शहजादियो के प्रेम-प्रणय की झाँकियाँ, सोहराब रुस्तम की वीरता भारतीयो के सामने रखी। इसी प्रकार भारतीय सस्कृति से अनभिज्ञ मुसलिम जनता को इन्होने विक्रमादित्य का न्याय, राजा गोपीचन्द का त्याग, हरिश्चन्द्र की सत्यप्रियता, सती सावित्री का पातिव्रत, श्रवणकुमार की पितृभक्ति, राम और कृष्ण की जीवन लीला का दृश्य दिखा कर इस देश के प्रति आकृष्ट किया। जिस मिश्रित भाषा ने प्रेमचन्द को प्रोत्साहन देकर 'करबला' जैसा नाटक लिखवाया उसकी उपेक्षा कैसे की जाती। अत हमने यही निश्चय किया कि जो भी ऐसे नाटक नागरी लिपि मे उपलब्ध हो उनका विवरण कोश मे अवश्य दे दिया जाए।

इस मिश्रित भाषा मे मिश्रित सस्कृति का गुणगान गानेवाले नाट्यकारो और नाटको को सबसे अधिक प्रश्रय पारसी थियेट्रिकल कम्पनियो ने दिया। उन्होने चुन-चुनकर देश के मूर्धन्य नाट्यकारो को आमन्त्रित किया और उनकी सुख-सुविधा का ध्यान रख कर उनसे नाट्य रचना का अनुरोध किया। उन नाट्यकारो और अभिनेताओ के नित्य नए प्रयोगो से पारसी थियेटर चमक उठा।

पारसी थियेटर की अनेक कम्पनियाॅ मिश्रित भाषा मे समूचे देश मे नाटक खेलती रही। जो भी नाटक लिखित रूप मे मुझे उपलब्ध हुए उनका परिचय देने का प्रयास किया है। सबसे बडी कठिनाई यह रही कि इन कम्पनियो के अधिकाश नाटक अब दुष्प्राप्य है। उनका नामोल्लेख तो मिल जाता है पर नाटक की प्रतियाॅ किसी लिपि मे नही मिलती। जब तक नाटक देखने को न मिले तब तक उसका विवरण विशेषकर कथावस्तु का प्रामाणिक रूप कैसे प्रस्तुत किया जाए ! अत: कितने ही नाटक इसमे छूट गए है। बहुत सावधानी रखने पर भी 'इसान की राह पर' जैसे कुछ आधुनिक नाटक भी इस सस्करण मे नही समाविष्ट हो पाये है। विचार है कि सन् १९७५

तक के अवशिष्ट नाटको का परिचय लिखकर परिशिष्ट के रूप मे अगले वर्ष संयुक्त कर दूं। मै उन नाट्यकारो एवं प्रकाशको से क्षमापूर्वक अनुरोध करता हूँ जिनकी कृतियाँ मेरी विवशता के कारण छूट गई है। यदि वे अपनी नाट्य-कृतियो की प्राप्ति का पूरा पता लिख भेजेगे तो मैं उनका आभारी रहूँगा और परिशिष्ट मे उन्हे अवश्य सगृहीत करूँगा।

कोश सम्बन्धी सामग्री : सन् १९६६ मे जब श्री कृष्णाचार्य ने हिन्दी नाट्य साहित्य की ग्रंथपुटी प्रस्तुत की, तो मुझे बडी प्रसन्नता हुई। नाट्य कोश की दिशा मे यह प्रथम महत्त्वपूर्ण कदम है। लेकिन इसमे केवल सन् १८६३ से १९६५ तक के ही नाटको की संक्षिप्त सूचना मात्र मिलती है। इस ग्रन्थपुटी मे इस अवधि के प्रकाशित नाटको का सूचीपत्रवत् ही उल्लेख हुआ है। इससे केवल नाटक, नाटककार, प्रकाशक, प्रकाशन काल, पृष्ठ सख्या सम्बन्धी टिप्पणी मिल जाती है। किन्तु नाटक की प्रकृति-प्रवृत्ति, उद्देश्य आदि के विषय मे कोई सकेत नही मिलता। उन्ही अस्थि-पजरो को मासल बना कर उनमे प्राण फूंकना मेरा लक्ष्य रहा है। इसके लिए नाटको को आद्योपान्त पढकर उनकी कथावस्तु, कथ्य आदि का भी पूर्ण विवरण तैयार करना आवश्यक प्रतीत हुआ। प्रस्तुत नाट्य कोश मे इसी दृष्टि से नाटको का पूरा परिचय दिया गया है।

अग्रेजी मे Bibliography of Stagable Plays in Indian Languages (बिब्लियोग्राफी आफ स्टेजेबुल प्लेज इन इंडियन लैंग्वेजेज) के अन्तर्गत सम्पूर्ण भारतीय भापाओ के केवल अति प्रसिद्ध नाटको के अंक-दृश्य दिये गए और कही-कही एक वाक्य मे नाटक के प्रकार का सकेत कर दिया गया है। गुजराती मे शताधिक प्रमुख नाटको का सक्षिप्त परिचय कोश के रूप मे मिलता है। मराठी मे पौराणिक, सामाजिक और ऐतिहासिक नाटको का परिचय कालक्रमानुसार उपलब्ध है किन्तु किसी भारतीय भाषा मे 'इनसाइक्लोपीडिया आफ ड्रामा' की शैली पर कोश तैयार नही किया गया है। सम्भवत: भारतीय भापाओ मे नाट्य कोश के रूप मे यह पहला प्रयास है। इस नाट्य कोश का प्रारम्भिक रूप 'सगीत नाटक अकादमी' की विशेपज्ञ समिति के सम्मुख समीक्षार्थ प्रस्तुत किया गया। समिति ने यह सुझाव दिया कि कोश मे अक-दृश्य, घटनास्थल और अभिनय काल का भी उल्लेख कर दिया जाए। समिति का यह भी सुझाव था कि कथावस्तु से पूर्व नाटक का कथ्य दो-तीन पंक्तियो मे दे दिया जाए जिससे सम्पूर्ण कथावस्तु को बिना पढे भी नाटक का उद्देश्य समझ मे आ जाए।

उपर्युक्त सुझावो को ध्यान मे रखकर पूरी पाण्डुलिपि पुन: तैयार करनी पडी। सशोधित पाण्डुलिपि को 'संगीत नाटक अकादमी' ने प्रकाशन के योग्य समझकर स्वीकृति दे दी और इसके प्रकाशन मे कुछ आर्थिक सहयोग देना भी स्वीकार किया। इसके लिए हम सगीत नाटक अकादमी के अधिकारियो विशेषकर डा० सुरेश अवस्थी के कृतज्ञ हैं।

कोश के निर्माण मे अनेक समस्याएँ उपस्थित हुई जिनका समाधान कोश की परामर्श समिति के द्वारा निकालने का प्रयास किया गया। पहली समस्या कतिपय

नाटको के नाम की थी । एक ही नाटक के कई नाम भिन्न-भिन्न संस्करणो में मिले । प्रश्न सामने आया कि कई नामो मे से किस नाम को कोश के लिए ग्रहण किया जाए । जैसे 'हमारा स्वाधीनता सग्राम' दूसरे सस्करण से 'स्वाधीनता का सग्राम' हो गया। ऐसी स्थिति मे हमने प्रथम सस्करण के प्रथम नाम को ग्रहण किया है । कही-कही अथवा या उर्फ देकर एक नाटक के दो नाम बना दिये गए है । हमने प्रथम नाम को ही प्रथम स्थान दिया है । जैसे 'अमर शहीद भगतसिह' अथवा 'सुनहरे पन्ने' मे 'अमर शहीद भगतसिह' को प्रमुखता दी है । 'करिश्मे कुदरत' उर्फ 'अपनी या परायी' मे 'करिश्मे कुदरत' को प्रधान मानकर 'क वर्ग' मे रखा गया है । वीरागना रहस्य महानाटक अथवा वेश्या विनोद महानाटक मे प्रथम नाम ग्रहण किया गया । कही-कही नाटक के मूल नाम के साथ कोष्ठक मे दूसरा नाम भी दे दिया गया है ।

दूसरी समस्या रचना-काल या प्रकाशन-काल की है । कितने ही नाटक रचना-काल के वर्षो बाद मुद्रित हुए । कोश मे उनका रचना-काल दिया जाए या मुद्रण-काल? बहुत विवाद के उपरान्त परामर्श-समिति ने यही निर्णय किया कि रचना-काल को ही यथार्थ मानकर कोश मे काल का निर्धारण करना उचित होगा । जैसे 'हर गौरी विवाह' नाटक की रचना जगज्ज्योति मल्ल ने वि० १६८० के आस-पास की जिसका प्रकाशन मिथिला रिसर्च सोसायटी, दरभंगा ने सन् १९७० के आस-पास किया । यदि इसका प्रकाशन-काल कोश मे दिया जाता तो पाठको को यह भ्रान्ति होती कि 'हर गौरी विवाह' आधुनिक नाटक है । काल के सबंध मे पाठको को कही सन् और कही विक्रम सवत् देखकर कोश की एकरूपता मे दोष जान पडेगा । यह समस्या जब परामर्श समिति के सामने रखी गयी तो मित्रो ने एक तर्क दिया कि यद्यपि सन् और संवत् मे ५७ वर्ष का अन्तर कर देने पर एकरूपता लाई जा सकती है किन्तु कभी-कभी सवत् को सन् के रूप मे परिवर्तित करने मे एक वर्ष का व्यवधान भी आ सकता है । जैसे मार्च सन् १९७५ मे आज सवत् २०३१ ही चल रहा है अत. ५७ घटाने-बढाने से एकरूपता तो आ जाती पर रचना-काल पूर्णतया कालानुरूप न होता । अतः ये ही उचित समझा गया कि नाट्यकार के दिये हुए सन् और सवत् को ज्यो का त्यो ग्रहण कर लिया जाए । काल के संबध मे सबसे बड़ी जटिल समस्या थी उन नाटको का विवरण देने मे, जिनमे कही किसी स्थान पर रचना-काल या प्रकाशन-काल का सकेत ही नही मिला । आज भी ऐसे अनेक प्रकाशक है जो अपने प्रकाशित नाटको मे कही सन्-संवत् का उल्लेख ही नही करते । उन्हे किसी रचना को प्राचीन या नवीन सिद्ध करने मे इस युक्ति से बडी सुविधा मिल जाती है । हमारे सामने यह समस्या थी कि ऐसे नाटको का रचना-काल किस प्रकार निर्धारित किया जाए । हमने प्रकाशको और नाट्यकारो से पत्र-व्यवहार कर अथवा स्वयं उनसे मिलकर ऐसे नाटको का समय निर्धारित किया । किन्तु जहा प्रयास करने पर भी कोई संकेत नही मिला वहाँ रचना-काल का उल्लेख नही किया गया । यदि कोई सज्जन ऐसे नाटको का रचना-काल किसी प्रकार से निकाल कर मुझे सूचित करने की कृपा करेगे तो मै उनका अत्यन्त आभार मानूंगा ।

पृष्ठ सख्या के संबंध मे भी कठिनाइयाँ सामने आई। कई प्राचीन नाटक अपूर्ण उपलब्ध हुए अत: उनकी पृष्ठ सख्या छोड दी गई। एक ही नाटक के भिन्न-भिन्न सस्करणो की पृष्ठ सख्या अलग-अलग हो गई। हमने प्रथम संस्करण की पृष्ठ संख्या ही रखना उचित समझा। पृष्ठ सख्या के सम्बन्ध में एक और समस्या थी : संगृहीत गीति नाटको की पृष्ठ संख्या का निर्धारण कैसे हो ? अलग-अलग संस्करणों मे एक ही नाटक की पृष्ठ सख्या बदल जाती है। अत किसी ग्रन्थ मे सगृहीत तथा पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित नाटको की पृष्ठ संख्या का प्राय: उल्लेख नही किया गया है। एक ही नाटक के भिन्न-भिन्न संस्करण अलग-अलग प्रकाशको द्वारा प्रकाशित हुए। स्वभावत प्रश्न उठता है कि किस प्रकाशक का नाम दिया जाए। हमने यही निर्णय किया कि नाटक प्रथम बार जिस प्रकाशक के यहाँ से प्रकाशित हुआ हो उसका ही नाम देना उचित होगा।

स्त्री और पुरुष पात्रो की सख्या के निर्धारण मे यही सिद्धान्त उचित समझा गया कि प्रमुख पात्रो की ही गणना की जाए। प्रहरी, सिपाही, सैनिक, किसान, मजदूर, पथिक आदि की सख्या की गणना नही की गई। पात्रो की सख्या देने का मूल उद्देश्य यह है कि नाटक का अभिनय करने वाले व्यवस्थापक को यह अनुमान लगाने मे सुविधा हो जाए कि किसी नाटक के खेलने मे कितने पात्रो की आवश्यकता होगी। जिन पात्रो को रंगमंच पर केवल वातावरण-निर्माण के लिए दिखाना अभीष्ट हो, जिन्हे वार्तालाप का अवसर बहुत ही कम या बिल्कुल ही न मिला हो उनकी गणना व्यर्थ ही है। उनकी सख्या से व्यवस्थापक को किसी प्रकार की सुविधा-असुविधा नही होती। इस कोश मे अनेक ऐसे नाटक मिलेगे जिनमे केवल पुरुष पात्र है अथवा केवल स्त्री पात्र है। अभिनय के लिए नाटक चयन करने वाले को अपनी परिस्थिति के अनुरूप पुरुष-पात्र-विहीन, स्त्री पात्र-विहीन नाटको के चयन मे सुविधा हो जाएगी। जिन नाटकों मे पुरुष-संख्या या स्त्री-संख्या नही दी गई है, उन्हे पुरुष-पात्र-रहित अथवा स्त्री-पात्र-रहित समझ लेना चाहिए।

प्रत्येक नाटक के विवरण मे अक और दृश्य की सख्या दे दी गई है। जिन नाटको मे अंक के स्थान पर बाव, अध्याय, अधिकारी आदि शब्दो का प्रयोग किया गया है उनमे पर्यायवाची शब्द ही रखे गए है। पाठको को इन शब्दो से अक का ही अर्थ समझ लेना चाहिए। पारसी रंगमंच के कतिपय नाट्यकार अंक के स्थान पर 'बाव' का प्रयोग करते थे। इस कोश मे पूर्णकालिक नाटको को ही ग्रहण किया गया है, जिनमे एक से अधिक अक होने चाहिए। किन्तु एक अक वाले उन नाटको को भी इसमे स्थान दिया गया है जो वास्तव मे पूर्णकालिक नाटक ही है, क्योकि उनकी कथावस्तु एवं नाट्यकला एकाकी से सर्वथा भिन्न प्रतीत हुई। अत: एक से अधिक अक न होते हुए भी उन्हे एकाकी नही कहा जा सकता। सम्पूर्ण गीति नाटकों को इसमे ग्रहण कर लिया गया है चाहे उनकी अक संख्या एक से अधिक न हो। ऐसे अनेक नाटक उपलब्ध हुए जिनमे दृश्य के स्थान पर सीन, पट, पर्दा, झाँकी, यवनिका आदि शब्दो का प्रयोग

किया गया है। दृश्य के लिए जहाँ पर जो शब्द मिला हमने उसी का प्रयोग उचित समझा। पाठको को उन शब्दो से दृश्य का ही अर्थ समझना चाहिए। कही-कही पर्दो का प्रयोग अक के लिए भी किया गया है।

रंगमच-निर्देशक की सुविधा के लिए घटनास्थलो का सकेत कर दिया गया है। इसका उद्देश्य यह है कि निर्देशक नाटक का चयन करते समय दृश्य-विधान के लिए अपनी व्यवस्था बना सके। अनेक दृश्यो मे जहाँ एक ही प्रकार का दृश्य-विधान मिला वहाँ उसकी बार-बार पुनरावृत्ति नही की गई है। कारण यह है कि निर्देशक को बार-बार वैसे दृश्य विधान के लिए नई व्यवस्था नही करनी होती। अत उनकी पुनरावृत्ति अनावश्यक समझी गई।

कथानक से पूर्व नाटक का कथ्य इस उद्देश्य से दिया गया है ताकि अभिनय के लिए नाटक का चयन करते समय चयनकर्ता को अपनी आवश्यकता के अनुसार सुविधा हो जाए। यदि कोई सामाजिक नाटक खेलना चाहता है तो उसे कथ्य की दो-चार पक्तियो से ही नाटक की मूल प्रवृत्ति का ज्ञान हो जाएगा। हास्य-व्यग्य का नाटक खेलना हो तो उसे गम्भीर ऐतिहासिक या पौराणिक नाटको की कथावस्तु से उलझना न पड़ेगा। कथ्य से नाट्य प्रकार और नाट्योद्देश्य का शीघ्र ही बोध हो जाएगा और चयनकर्त्ता अनावश्यक श्रम से बच जाएगा।

कथावस्तु का सक्षिप्त विवरण इस कोश की अपनी विशेषता है। कथावस्तु का विस्तार निर्णय करने मे हमने कतिपय सिद्धान्तो को अपनाया। पहला सिद्धान्त यह था कि अति प्राचीन एवं अनुपलब्ध नाटको की कथावस्तु इतने विस्तार के साथ दे दी जाए कि उनका पूरा चित्र पाठक की दृष्टि के सामने आ जाए। अत. कथा की प्रत्येक घटना का विवरण अकानुसार देने का प्रयास किया गया। इस प्रकार पाठक को मूलकथा सहज ही समझ मे आ जाएगी। कथावस्तु के विस्तार से नाटक की महत्ता का अनुमान लगाना उचित न होगा। प्राचीन और अति प्राचीन नाटक आज की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण भले ही न हो किन्तु उनका ऐतिहासिक महत्त्व अवश्य है। इसीलिए उनको विस्तृत रूप मे देकर शेष नाटको की कथा सक्षिप्त रूप मे दे दी गई। इसका यह अर्थ नही है कि जिस नाटक की कथा विस्तार से दी गई है वह अधिक महत्त्वमय है और जिसे सक्षेप मे लिखा गया वह महत्त्व-रहित है। शिव-पार्वती की कथा के आधार पर अनेक नाटक लिखे गए है जिनमे सबसे पुराना हर-गौरी-विवाह नाटक सवत् १६८० के आस-पास का मिला। यह राजा जगज्ज्योतिमल्ल के राज्यकाल की रचना है और इसे राजदरबार मे खेला गया। इस कोश मे उसकी कथा विस्तार से दी गई है। जिन नाटको मे कथा परिवर्तन का सकेत मिला उनकी कथावस्तु को भी कुछ विस्तार के साथ लिखा गया। संभव है कि कथावस्तु मे एकरूपता का अभाव कही-कही पाठको के मन मे खटके। हमारा उद्देश्य कथावस्तु के विवरण मे एकरूपता लाना है भी नही और यह सभव भी नही था। साढे छः सौ वर्षों मे विरचित दो सहस्र से अधिक नाटक, नाट्य-देवता की विस्तृत यात्रा के पद-चिह्न मात्र है। हमारा उद्देश्य उस लम्बी यात्रा पर

एक विहगम दृष्टि डालना है। पदचिह्न की एक-एक सूक्ष्म रेखा का अवलोकन न तो संभव है और न अनिवार्य ही। जितने नाटक हमे उपलब्ध हुए है, उनसे कही अधिक संख्या मे अतीत के गर्त मे विलीन हो गए होगे। हमारा मुख्य ध्येय यही रहा है कि नष्ट प्राय कृतियों को विस्मृति के अन्धकार से निकाल कर किसी प्रकार प्रकाश मे रखा जा सके। यदि प्रत्येक नाटक की कथावस्तु का विस्तार से विवरण दिया जाता तो इस कोश का कलेवर न जाने कितना दीर्घकार्य हो जाता।

सबसे बड़ी समस्या नाटक के अभिनय काल और स्थान के अनुसधान के विषय मे सामने आई। यह तो निर्विवाद सिद्ध है कि किसी भी काल मे विरचित सभी नाटको का न कभी अभिनय हुआ और न होगा। यद्यपि नाटक रंगमंच के लिए ही लिखा जाता है, पर सभी नाटको को रगमच की शोभा से सुसज्जित होने का सौभाग्य मिलता कहाँ है। जिस प्रकार उपवन मे नाना प्रकार के फूल खिलते है पर कोई राजा-रानी के मस्तक पर सुशोभित होकर दर्शको को चमत्कृत करता है और कोई किसी शव के ऊपर रख कर भस्म कर दिया जाता है। उसी प्रकार एक ही समय मे विरचित अनेक नाटको मे किसी-किसी को रगमच पर सुशोभित होने का सौभाग्य मिलता है। अधिकांश वीरान कब्रिस्तान मे दफना दिये जाते है। किन्तु यह निर्विवाद सत्य है कि देश-काल के अनुसार प्रत्येक नाट्यकृति का अपना महत्त्व है।

नाट्य समीक्षा : मैंने देखा कि Encyclopaedia of World Drama मे प्रत्येक नाटक की समीक्षा भी दी गई है। उसी शैली पर प्रत्येक नाटक की समीक्षा तैयार की, पर यह पाडुलिपि अप्रकाश्य बन गई। हमने इस प्रश्न को परामर्श समिति के सामने रखा। मित्रो से भी परामर्श किया। अन्त मे यही निर्णय हुआ कि कथावस्तु ही से सन्तोष करना चाहिए। समीक्षा से कोश का कलेवर बहुत बढ जाएगा। हमने समीक्षा-संबंधी सामग्री संकलित कर ली है। यदि पाठको का सकेत मिला तो आगामी सस्करण मे प्रमुख नाटको की संक्षिप्त समीक्षा भी संयुक्त कर ली जाएगी। यद्यपि समीक्षा से बचने का सर्वत्र प्रयास किया गया है तथापि जिन नाटको मे कोई नया क्रान्तिकारी प्रयोग मिला है उसका उल्लेख कर दिया गया है। मुझे जॉन गासनेर (John Gassner) की यह शैली आकर्षक प्रतीत हुई। उन्होने ओ नेल के नाटक Strange Interlude (1928) के विषय मे टिप्पणी देते हुए लिखा है—

"In this play O'Neill was, if any thing, too explicit in his spoken and especially unspoken dialogue — that is, the asides with which the author outlined the true thoughts and sentiments of the characters at the risk of redundancy. There could well be two strongly contradictory opinions about the recourse to asides and while British Theatre historian Allardyee Nicoll found O'Neill's use of them "tedious and fundamentally undramatic", others found much to applaud in this type of 'interior monologue' which resembled James Jayce's stream of consciousness technique in ulysses. Strange Interlude

is too long and interest flags in the last two acts, but it commanded, as a dramatic novel and a character study, the interest of a large public grateful for an exacting and unconventional drama."

हमने भी यत्र-तत्र इसी शैली पर नूतन प्रयोग के कुछ सकेत कर दिए हैं। पाठको को कथावस्तु की विभिन्नता पर आक्रोश न हो इसलिए यह उल्लेख कर देना आवश्यक समझा गया। इस देश की यह विलक्षणता है कि जहाँ युग-युग की नाट्य शैली बदलती रही है वहाँ एक ही युग मे अनेक प्राचीन एव नवीन शैलियाँ समादृत होती रही है। नटी और सूत्रधार का सवाद अब भी प्रचलित है।

यद्यपि रंगमच का ध्यान मे रखकर इसमे घटनास्थल और दृश्य-विधान का भी सामान्य सकेत कर दिया गया है पर यह कोश मूलत: नाटक का साहित्यिक रूप ही पाठको के सामने रखने के उद्देश्य से लिखा गया है। अत. रगमचीय विवेचन की इसमें अधिक सम्भावना थी ही नही। रगमच के व्यवस्थापको को इतना ही सकेत मिल सकता है कि किसी नाटक की प्रकृति और प्रवृत्ति क्या है ? पुरुष और स्त्री-पात्रो की सख्या क्या है ? यवनिका की व्यवस्था मे क्या कठिनाई होगी ? दृश्य-विधान कैसे बनाना होगा ? इनके अतिरिक्त कथावस्तु का विस्तार देखकर अभिनय-काल का अनुमान लगाया जा सकता है। किसी नाटक का परिचय पढकर रग-व्यवस्थापक को अपनी शक्ति और सीमा के अनुसार अभिनय के लिए नाटक चुनने मे अवश्य सहायता मिलेगी।

यह कोश इस तथ्य को ध्यान मे रखकर तैयार किया गया कि नाट्यानुभूति केवल रगशाला मे ही बन्द नही रहती। साहित्य के रूप मे नाटक का अस्तित्व मन:-प्रदेश की उस विस्तृत रंगभूमि तक व्याप्त है जहाँ अभिनेता और दर्शक, स्रष्टा और सृष्टि एक बन जाते है। नाटक की सफलता उस सिनेमा की तरह नही है जिसकी छटा सिनेमा-घर से निकलने के बाद ही धूमिल होने लगती है। जॉन गासनेर (John Gassner) और एडवर्ड रुइनर (Edward Ruiner) ने 'Encyclopaedia of World Drama' मे इसी सिद्धान्त का समर्थन करते हुए लिखा है—

"The dramatic experience need not be limited to the theatre. The existence of drama as literature testifies to the existence of that larger theatre of the mind in which one is both the actor and the audience, the created and the creator. It is on this stage long after the insubstantial pageant of an 'evening at the theatre' has faded—that a play achieves its final reality."

जो नाटक पाठक की ऐसी मन:स्थिति बनाने मे सफल नही होता जिसमे पहुँच कर दर्शक और अभिनेता का भेद जाता रहता है, उसके अभिनय मे चाहे अभिनेता अपने अभिनय नैपुण्य से दर्शक को घटे-दो-घटे भले ही बाँधकर रख ले पर वह नाटक साहित्य के क्षेत्र मे गरिमा का अधिकारी नही बन सकता। इस कोश मे अनेक ऐसे महत्त्वमय प्राचीन नाटक मिलेंगे जिनकी ज्योति रंगमंच की जगमगाहट के बिना भी

शताब्दियो तक धूमिल नही हो पाई है। इसी तरह कितने ही ऐसे नए नाटक मिलेंगे जिनको एक बार रगमच पर देखने के उपरान्त उनका नाम लेने का मन नही करता। इधर बेकेट (Beckett) और ब्रेख्ट (Brecht) की शैली पर हिन्दी मे ऐसे नाटक लिखे जा रहे है जिनमे मानसिक तनाव को अधिक से अधिक खीचने का प्रयास किया जा रहा है। ब्रेख्ट जहाँ सबसे अधिक महत्त्व थियेटर को देते थे वहाँ बेकेट 'प्ले' पर विशेष बल देते है। किन्तु दोनो शुद्ध और भाव व्यजक भाषा के प्रयोग पर बल देते है। जब कोई रचना विजय-पताका जीतकर थियेटरहाल से बाहर निकलती है तो भाषा और साहित्य का सशक्त वाहन ही उसे दूर देशो की यात्रा कराने मे समर्थ होता है। श्री रूबीकाह्न Ruby Cohn अपनी पुस्तक 'Contemporary Dramatists' की भूमिका मे लिखते हैं—

"Through the tension of play, Beckett probes the bases of Western Culture—faith, reason, friendship, family. Through the skills of play, Beckett summarises human action, word and pause, gesture and stillness, motion rising from emotion. Brecht called audience attention to the theatre as theatre, Beckett calls attention to the play as play But both of them agree in precision of language at the textural level, and in integration of verbal rhythms into an original scenic whole."

इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि नाटक मे भाषा-सौन्दर्य और दृश्य-सौन्दर्य का दूध और मधु जैसा सम्बन्ध है। दोनो के मिश्रण से नाटक पूर्णतया आस्वाद्य बनता है।

अन्त मे मैं दो शब्द इस कोश के निर्माण के सम्बन्ध मे कहना चाहता हूँ। अमेरिका मे नाटक कोश के निर्माण मे लगभग एक सौ व्यक्ति नियुक्त किए गए जिन्होने पाच वर्ष अनवरत परिश्रम करके एन्साइक्लोपीडिया तैयार की। मेरे दस वर्ष सामग्री सकलन मे व्यतीत हुए और चार वर्ष इसके प्रकाशन मे लग गए। सन् 1970 के उपरान्त शताधिक नाटक और प्रकाशित हो गए है। कितने ही पुराने नाटक अब प्राप्त हो रहे है जिनका विवरण कोश मे नही दिया जा सका है। एक-दो स्थल पर संवत् के स्थान पर सन् छप गया है जिसे हाथ से शुद्ध किया जा रहा है। बार-बार सशोधन एव परीक्षण के उपरान्त भी कई त्रुटियाँ रह गई है जिनके लिए मैं पाठको से क्षमा चाहता हूँ। अत्यल्प साधनो के होते हुए दुर्बल व्यक्ति ने इतना बडा बोझ उठा लिया और ज्यो-त्यो गन्तव्य स्थान तक इसे पहुँचा दिया। मार्ग मे यदि कुछ बिखर गया तो उसमे मेरी विवशता थी। विवशता तो प्रत्येक कोशकार के ललाट मे लिखी है। Johnson (जानसन) अपनी डिक्शनरी 'Dictionary of Language'-की भूमिका मे लिखते है—

"It is the fate of the writer of dictionaries to be exposed to censure without hope of praise; to be disgraced by miscarriage, or punished for neglect, where success would have been without applause, and diligence without reward"

हम यह कोश नाट्य देवता की आराधना में पुष्पाञ्जलि-स्वरूप प्रस्तुत कर रहे है। पुष्पाञ्जलि का महत्त्व उसके पुष्पो के सौन्दर्य और सौरभ से नही आँका जाता, वह तो आराधक की भावना पर निर्भर करता है, कहा जाता है कि देवता को अपनी स्तुति से अधिक अपने भक्त का गुणगान प्रिय है। इस कोश मे उन शताधिक अज्ञात नाट्योपासको की कृतियो का गान है जिनको हिन्दी-जगत् विस्मृत कर चुका था। जिन नाट्यकारो को हम भूलते जा रहे है उन्होने नि स्वार्थ भाव से उस भीषण काल मे नाट्य-साधना की थी जब नाटक खेलना अपराध माना जाता था। आज शासन की ओर से नाट्यकार को पुरस्कार मिलता है, मध्यकाल मे सुलतानो की दुत्कार एव फटकार मिलती थी। ऐसी स्थिति मे वह कौन-सी दैवी प्रेरणा थी जिसने साहित्यकारो को नाट्य रचना के लिए प्रेरित किया ? वह प्रेरणा थी आपत्ति काल मे भारतीय साहित्य, समाज और सस्कृति की रक्षा के लिए कुछ न कुछ कर जाने की। इसके लिए उन नाट्यकारो ने रामायण और महाभारत, स्मृति और पुराण के धार्मिक स्थलो को नाट्य कौशल से जन-जन के मानस मे बिठाने का प्रयास किया। धर्म मे निष्ठा लाने का सुन्दर साधन है धार्मिक नाटको का अभिनय। आज भी जोयस एम० पील, आनद, जोन हेलन पाल, पादरी जे० वाल्टर्स ईसा मसीह तथा अन्य संतो के जीवन की कहानियो को क्रूस की सहभागिता, सतपाल, नामान, भक्त यिर्मयाह नामक हिन्दी नाटको के माध्यम से अर्द्धशिक्षित जनता तक पहुँचा रहे है। ये इसाई नाट्यकार जिस मिशनरी भावना से काम कर रहे है वही नि स्वार्थ भावना मध्यकालीन नाट्यकारो को प्रेरित कर रही थी। अन्तर यही है कि आज के इन मिशनरी नाट्यकारो को ईसाई शासको से प्रोत्साहन मिलता है, उस काल के नाट्यकारो के भाग्य मे था उपहास और भय। यह नाट्य कोश उन्ही भारतीय साहित्य, समाज और सस्कृति के सच्चे पुजारियो की स्मृति को स्थायी बनाये रखने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। इसमे विभिन्न धर्मो, विभिन्न भाषाओ, विभिन्न सस्कृतियो एव विभिन्न कलाओ का सगम देखने को मिलेगा। सुधी पाठको से यही निवेदन है कि हिन्दी भाषा, भारतीय जीवन दर्शन और हिन्दी नाट्यकला को इसी व्यापक अर्थ मे ग्रहण करने की कृपा करे। हमारे पन्द्रह वर्षो के अनवरत श्रम का यही सबसे बड़ा पुरस्कार होगा।

—दशरथ ओझा

रामनवमी, संवत् 2032
एम० 119 ग्रेटर कैलास,
नई दिल्ली

आभार

प्राचीन नाटको के सन्धान मे देश के छोटे-बडे प्रायः सभी पुस्तकालयो से हमे आशातीत सहायता मिली। नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता मे श्री कृष्णाचार्य, श्री खन्ना के सहयोग से शताधिक नाटकों का विवरण लिखने मे सरलता हो गयी। कलकत्ता जैसे महानगर मे साहित्य-प्रेमी सम्पन्न व्यक्तियो ने अनेक पुस्तकालय स्थापित किए है जो हिन्दी ग्रन्थो के लिए सबसे अधिक समृद्ध है। जिस प्रकार भारतेन्दु युग की सर्वाधिक सामग्री नागरी प्रचारिणी सभा मे उपलब्ध है उसी प्रकार द्विवेदी युग की अधिकाश पुस्तके एवं पत्र-पत्रिकाएँ हनुमान पुस्तकालय और जालान पुस्तकालय में विद्यमान है। शोधकर्ताओ को यहाँ प्रभूत सामग्री मिल सकती है। यहाँ के पुस्तकपाल अनुभवी और सहृदय व्यक्ति है। सबकी सहायता करने को प्रस्तुत रहते है। कलकत्ते के अन्य पुस्तकालयो मे सगृहीत नाटको का अनुशीलन करने मे प्रो० कल्याणमल लोढ़ा, प० विष्णुकान्त शास्त्री से बडी सहायता मिली अत: मै उनका अत्यन्त आभारी हूँ। डा० वीरेन्द्र श्रीवास्तव ने भागलपुर मे कुँवर चन्द्रप्रकाश सिह एवं डॉ० शिवनन्दन प्रसाद, डॉ० वटेकृष्ण ने गया मे स्वर्गीय पं० रामप्रताप शास्त्री ने प्रयाग मे, डॉ० कृष्णचन्द्र शर्मा ने मेरठ मे, डॉ० सरनाम सिह ने राजस्थान मे, डॉ० चन्दूलाल दूबे ने कोल्हापुर मे, प्रो० आनन्द प्रकाश दीक्षित ने पूना मे, डॉ० विनय मोहन शर्मा ने मध्य प्रदेश मे, श्री अगरचन्द नाहटा ने बीकानेर मे डॉ० अम्बाशकर नागर ने गुजरात मे, डॉ० सिद्धनाथ कुमार ने राँची मे डॉ० निर्मल ने आन्ध्र और कर्नाटक मे अनेक प्राचीन नाटक उपलब्ध कराने मे सहायता प्रदान की। अत. मै अपने इन मित्रो का परम आभारी हूँ। असम के प्रसिद्ध विद्वान् प्रो० लेखारू और डॉ० महेश्वर नियोग का भी आभारी हूं। विदेश मे उपलब्ध 'कंसबध' नामक नाटक की प्रतिलिपि डॉ० भारत भूषण अग्रवाल से प्राप्त हुई। मै उनकी उदारता का सदा ऋणी रहूँगा। श्री मुरारीलाल केडिया के निजी पुस्तकालय से अनेक अप्राप्य नाटक प्राप्त हुए। शोधकर्ताओ को इस पुस्तकालय में बहुत-सी अलभ्य सामग्री मिल सकती है। श्री केडिया का मैं बहुत ही उपकृत हूँ। कलकत्ते मे अनेक शोध-

हिन्दी नाटक कोश

(मिरजापुर), डॉ० पुष्पा थुरेजा (पंजाब), डॉ० प्रेमशकर सिंह (भागलपुर), श्री महेशानन्द (दिल्ली), डॉ० मांधाता ओझा (दिल्ली), मीरा अम्बष्ट (कलकत्ता), देवकी वर्मा (कलकत्ता), डॉ० आर० पी० तिवारी (सागर), डॉ० रामजन्म शर्मा (हिन्दू वि० वि०), डॉ० लक्ष्मीनारायण भारद्वाज (दिल्ली), वागीशदत्त तिवारी (कलकत्ता), श्रीमती विभा श्रीवास्तव (मेरठ), डॉ० शशि शर्मा (दिल्ली), डॉ० श्याम तिवारी (काशी विद्यापीठ), डॉ० सुरेश शुक्ल (दिल्ली) ।

सकलित सामग्री को प्रेस के लिए सयोजित करने मे श्री घनश्याम शर्मा, श्री कामता कमलेश ने मेरी अहर्निश सहायता की है । डॉ० रामजन्म शर्मा का आद्योपान्त सहयोग सराहनीय रूप से रहा है। मै अपने इन सहयोगियो का किस प्रकार ऋण चुका सकूँगा। हमारे लिए दो सहस्र नाटको का कोश प्रस्तुत करना बडा दुष्कर कार्य था। इसका प्रकाशन तो और भी कठिन था। नेशनल पब्लिशिंग हाउस के सचालक श्री कन्हैयालाल मलिक तथा श्री सुरेन्द्र मलिक ने इसके प्रकाशन का भार बड़े उत्साह से वहन किया। पाण्डुलिपि मे अनेक बार परिवर्तन करने से मुद्रण की कठिनाई बहुत बढ गई। मैं अनेक बार अन्तिम प्रूफ मे भी परिवर्तन करता रहा। श्री सुरेन्द्र मलिक और श्री पद्मधर त्रिपाठी मेरी असावधानी से उत्पन्न कठिनाइयो को मौन भाव से सहते रहे। त्रिपाठी जी सम्पादन-कला मे दक्ष है। उनकी सूझबूझ से ग्रन्थ का रूप निखर आया। मै इन सब का अत्यन्त आभारी हूँ।

परामर्श समिति के सदस्यो के प्रति आभार व्यक्त करना मेरा परम कर्त्तव्य है। मुझे समय-समय पर इन मित्रो के सुझावो से बडी सहायता मिली है। प्रो० श्री जगदीशचन्द्र माथुर और देवेन्द्रनाथ शर्मा इस कार्य के लिए सदा प्रेरणा प्रदान करते रहे। कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह का सहयोग पग-पग पर मिलता रहा। डॉ० दासगुप्ता, प्रो० उमाशकर जोशी, प्रो० हरभजनसिंह की विशेष कृपा रही। अत. मैं इन मित्रो का परम आभारी हूँ।

—दशरथ ओझा

अंगारो की मौत (सन् १९६१, पृ० १९९), ले० शंभूदयाल सक्सेना, प्र०. मुक्तवाणी प्रकाशन, बीकानेर, *पात्र:* पु० १६, स्त्री २, *अंक* . ३, *दृश्य* . ४,६,७ ।
घटना-स्थल कानपुर, आगरा, लाहौर, कलकत्ता, दिल्ली, नई दिल्ली, शिमला, इलाहाबाद ।

यह राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत ऐतिहासिक नाटक है । इसमे भारतीय क्रान्ति का चित्र है जिसमे सन् १९२४ से ३१ तक की घटनाओ का समावेश है । स्वतन्त्रता के पुजारियो की क्रांति को दबाने के लिए अग्रेज सरकार कई षड्यंत्र रचती है किन्तु वह क्रातिकारियो का दमन करने मे असफल रहती है ।

इस नाटक मे आज़ादी के पुजारियो को नाना यातनाएँ सहनी पडती है परन्तु वे सरकार के आगे कभी नही झुकते । स्वतन्त्रता के दीवाने भगतसिह, सुखदेव और राजगुरु हँसते-हँसते फाँसी के तख्ते पर चढ जाते हैं । इन देश-प्रेमियो की कुर्बानी से अग्रेज़ सरकार भी काँप उठती है । इस नाटक के संवाद पढकर 'लुई माइकेल' स्मरण हो आते है—"स्वाधीनता के लिए तडपने वाले हृदयो को केवल एक ही अधिकार मिलता है—गोली की शक्ल मे सीसे का टुकडा ।"

नाटक मे चन्द्रशेखर आज़ाद, भगतसिह, गुरुदेव और सुखदेव के बलिदान पुकार-पुकारकर इस बात की घोषणा करते हैं कि "हमारे रक्त की एक-एक बूंद अग्रेज सरकार से बदला लेकर रहेगी ।" यही नाटक समाप्त हो जाता है । नाटक समाप्त होने पर देशभक्तो के बलिदान आँख के सामने नाचने लगते है । भगतसिह का फाँसी के लिए जाना, जनता के 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारे तथा भगतसिह के पिता किशनसिह का करुण रुदन हृदय पर अमिट छाप छोड़ जाते हैं ।

अंगुलिमाल (सन् १९५१), ले० : केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'; प्र० : ज्ञानपीठ प्रा० लि०, पटना-४, *पात्र* . पु० ३, स्त्री १, *दृश्य* . ४ ।
घटना-स्थल . जंगल, घर, विहार ।

'अंगुलिमाल' बौद्धकालीन कथा पर आधारित एक ऐतिहासिक गीतिनाट्य है । अगुलिमाल एक नृशस हत्यारा है, जिसकी प्रतिज्ञा है कि वह नर-नारियो की एक सहस्र अगुलियो की माला पहनेगा । इस सकल्प-पूर्ति-हेतु अगुलिमाल असंख्य निरपराध व्यक्तियो की हत्याएँ करता है । यहाँ तक कि अपनी माता पर प्रहार के लिए तत्पर हो जाता है, जो गीतिनाट्य की भावात्मक एवं चरम स्थिति कही जा सकती है । उसके इन कृत्यो से सारी प्रजा त्रस्त है । एक दिन भगवान् बुद्ध इधर आते है और अगुलिमाल को उसकी पाशविक वृत्तियो का दर्शन कराते है । उसे प्राणि-मात्र पर दया करने का उपदेश देते है । परिणामस्वरूप अगुलिमाल को आत्मज्ञान प्राप्त हो जाता है । वह बौद्ध धर्म मे दीक्षित हो जाता है। पाँच दृश्यो के इन कथानक मे गीति-नाट्यकार ने हृदय-परिवर्तन के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है । गीतिनाट्य के प्रारम्भ मे जो अंगुलिमाल हिसा की साक्षात् मूर्ति के रूप मे प्रस्तुत होता है, अन्त मे वही अहिसा के पुजारी बौद्ध भिक्षु के रूप मे दर्शको की सहानुभूति का पात्र बनता है । इस प्रकार अगुलिमाल के चरित्र के दोनो पक्षो मे उसके पूर्ण व्यक्तित्व का दर्शन होता है ।

अंगूर की बेटी (सन् १९३३, पृ० ११ ले० गोविन्दवल्लभ पन्त प्र० गंगा पु माला कार्यालय, लखनऊ , पात्र पु० स्त्री १. *अंक* : ३, *दृश्य* . ८, ३, ४ ।
घटना-स्थल : नी ।

पत्नी पर अत्याचार करनेवाले शराबी पति का सुधार नारी के पातिव्रत द्वारा दिखाने वाला सामाजिक नाटक है। मोहनदास शराबी अपनी पत्नी कामिनी का आभूषण छीनकर उसे पीटता है। मोहनदास की जेब से आभूषण चुराकर मित्र माधव अपने पास रखता है। दोनो मे झगडा होता है। कामिनी के सुझाव पर मैनेजर थोडी शराब मे पानी मिलाकर पिलाता है। क्रमश. उसकी शराब की आदत छूट जाती है। पत्नी कामिनी अपने पति की रक्षा करती है।

अंजना (सन् १९२९, पृ० १८८), ले० सुदर्शन; प्र० नाथूराम प्रेमी, बम्बई, *पात्र* . पु० ११, स्त्री ९; *अक* ५, *दृश्य :* ६, ५, ७, ६, ५। *घटना-स्थल* . जगल, युद्धभूमि।

दु ख से ओतप्रोत इस सामाजिक नाटक मे अजना और पवनजय की प्रेम-कथा वर्णित है। अजना पतिव्रता नारी है जो अपने पति के देश-प्रेम के कार्यो मे बाधक नही बनना चाहती। विपन्नावस्था मे उसे अरण्य-प्रदेश मे भी शरण लेनी पडती है। उस समय अन्य व्यक्तियो की—पति के देश-प्रेम के मार्ग मे बाधा डालने की—मत्रणा को ठुकराकर कहती है—"वे इस समय युद्धभूमि मे यश-प्राप्ति का कार्य कर रहे है, देश की सेवा कर रहे है, ससार मे अपने देश का सिर ऊँचा कर रहे है, मै जाकर उनके हृदय को दूसरी ओर कर दूँगी तो सारा काम चौपट हो जायेगा। उनके अद्वितीय बल मे न्यूनता आ जायेगी, पराक्रम थोडा हो जायेगा। मै यह पापकर्म नही कर सकती। अपने सुख पर देश और जाति के सुख को निछावर नही कर सकती। इसी निर्जन वन मे मै भी दु ख और कष्ट सहूँगी।"

वह शत्रु की कल्याण-कामना करती है। और अन्त मे पति-मिलन के साथ सुख-शान्ति से जीवन व्यतीत करती है।

अंजना-सुन्दरी (सन् १९५७, पृ० २२६), ले० कन्हैयालाल, प्र० वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई, *पात्र* ' पु० २०, स्त्री ७, *अक* ५, *दृश्य* ३, ३, ७, ५, ५।
घटना-स्थल . उद्यान, राजप्रासाद, युद्धक्षेत्र।

इस सामाजिक नाटक मे हनुमान की माता अजना के सतीत्व का परिचय मिलता है। अपनी युवती कन्या अजनासुदरी के योग्य वर के लिए चिंतित राजा महेन्द्र मत्रियो से परामर्श करते है। प्रह्लाद के पुत्र पवनजय से ही विवाह करने का निश्चय होता है। इसी बीच अजना के सम्मुख विद्युत्प्रभ की प्रशंसा होती है जिसे वह बिना प्रतिवाद किये मौन-भाव से सुन लेती है। इससे पवनंजय के मन मे अजना के प्रति शका उदय होती है। फलत वह उससे विवाह करने की इच्छा त्याग देता है। किंतु दोनो के अभिभावको के प्रयास से अजना-पवनजय का विवाह हो जाता है। इससे पवनंजय दु खी रहने लगता है और अजना को देखना भी पसद नही करता। इसके ठीक विपरीत अजना उससे प्रेम करती है। परतु उपेक्षा से दु खी हो जाती है और शृंगार के प्रसाधन त्याग कर तपस्विनियो का-सा जीवन व्यतीत करती है।

अपने बहनोई खर-दूषण को वरुण के बदीगृह मे पडा हुआ सुन रावण उसके विरुद्ध युद्ध की तैयारी करता है और प्रह्लाद को सहायता के लिए पत्र लिखता है। पवनजय पिता के बदले स्वय जाने की इच्छा प्रकट करता है। वह अपने साथ प्रहस्त को भी ले जाना चाहता है जो अजना के सतीत्व का प्रशसक है और पति-पत्नी मे पूर्ववत् प्रेम-सबध स्थापित करने का इच्छुक है। पति के युद्ध मे जाने का समाचार पाकर अजना, अपने पति को रण-कंकण बाँधने के लिए जाती है किन्तु पति द्वारा प्रताडित एव अपमानित होकर दु ख से अचेत हो जाती है।

युद्ध-शिविर मे पहुँचने पर वहाँ की प्राकृतिक छटा से परिष्कृत पवनजय के मन मे एकाएक अजना के साथ किये गये अपने दुर्व्यवहारो के प्रति क्षोभ उत्पन्न होता है और प्रहस्त के परामर्श से वह पत्नी से मिलने जाता है। क्षमाप्रार्थी स्वामी का श्रद्धापूर्वक स्वागत करके अजना रात-भर उसकी सेवा मे रहती है। प्रात काल पुन रण-स्थल को प्रस्थान की तैयारी करते समय वह उसके हाथो मे रण-ककण बाँध देती है, परन्तु उसके आने-जाने का समाचार किसी को ज्ञात नही होने पाता।

उधर अजना गर्भवती हो जाती है। इस समाचार से राजा प्रह्लाद और रानी केतु-

मती को अंजना के प्रति दुराचरण की शका होती है, क्योंकि वे जानते है कि पवनजय उससे बात करना भी नही चाहता। अजना के स्पष्टीकरण करने पर भी पवनजय के माता-पिता उसे अपमानपूर्वक महल से निकाल देते हैं। निर्वासिता अजना पिता के यहाँ भी अपने तथाकथित अपराध के कारण तिरस्कृत हो भटकती हुई अन्त मे अपनी सखी वसन्त-माला को साथ लेकर कष्टो का सामना करती है। मामा प्रतिसूर्य सन्तानवती अजना की रक्षा करता है। प्रतिसूर्य उसे उठाकर विमान द्वारा घर पहुँचते है। अब प्रतिसूर्य और प्रहस्त के सौजन्य से अजना के सतीत्व और पवनजय का अजना के प्रति प्रेम का समाचार सबको विदित हो जाता है। अत मे अजना के पावन चरित्र और निष्कलक जीवन का रहस्य खुल जाता है। पती-पत्नी एक-दूसरे से प्रेमपूर्वक मिलते है। पर्वत की कदरा मे पैदा होने तथा हणुरुहद्वीप मे जन्मोत्सव मनाये जाने के कारण अजना के पुत्र का नाम क्रमश शैल्य और हनुमान् पडता है।

अंजो दीदी (सन् १९५६, पृ० ११७), ले० उपेन्द्रनाथ अश्क, प्र० नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, *पात्र* पु० ४, स्त्री ३, *अक* २। *घटना-स्थल* घर, कक्ष।

इस सामाजिक नाटक मे अजो दीदी का कठोर अनुशासन दिखाया गया है, जिसे उसके वकील पति, पुत्र नीरज, नौकर-चाकर सभी स्वीकार लेते है। वह चाहती है कि उसके घर का प्रत्येक कार्य घडी की सुई के आदेश से चले। वह पूरे घर को साँचे मे ढाल लेती है। उसका यह प्रभाव उसके भाई श्रीपति द्वारा भग होता है। अजो दीदी का कठोर नियत्रण पति और पुत्र दोनो के जीवन को विकृत कर देता है। उसका पति छिपकर शराब पीने लगता है और पुत्र स्वच्छन्दता से मदिरा का सेवन करता है। उसकी पुत्रवधू उसकी अतिवादिता का समर्थन करती है। अजो दीदी की दमित इच्छाओ की अभिव्यक्ति उसके कठोर नियत्रण द्वारा होती है। उसकी मृत्यु के तीन वर्ष बाद तक उसके कठोर अनुशासन की छाया कोठी मे व्याप्त है। तथा उसका अह सारे घर को अनुशासित करता रहता है।

३० जनवरी १९५४ को बबई सेंट जेवियर्स द्वारा अभिनीत।

अंडर सेक्रेटरी (सन् १९५८, पृ० ११८), ले० रमेश मेहता, प्र० बलवन्त प्रकाशन, नई दिल्ली, *पात्र* पु० ६, स्त्री ३, *अक* ३। *घटना-स्थल :* एक सुसज्जित घर।

इस सामाजिक नाटक मे एक साधारण घराने की महिला सरोज की प्रदर्शन-प्रवृत्ति का परिणाम दिखाया गया है। चाँदनारायण भटनागर एक असिस्टेट क्लर्क है। सरोज उनकी पत्नी है। सरोज की सहेली पुष्पा अपने वस्त्रविक्रेता पति मि० वर्मा को डाइरेक्टर बताती है। इसलिए सरोज भी अपने पति को अण्डर सेक्रेटरी के रूप मे प्रस्तुत करती है और किराये के सामान लाकर अण्डर सेक्रेटरी के उपयुक्त अपना मकान सजाती है। वह नौकर से साहब और मेम साहब कहने का अभ्यास कराती है। सायकाल लौटने पर चाँदनारायण घर की सजावट देखकर अवाक् रह जाता है। सरोज विस्तार से उसके अण्डर सेक्रेटरी होने का कारण बताते हुए कहती है कि सहेली से उसकी प्रतिस्पर्धा है। वह किशोर से अण्डर सेक्रेटरी और अपने पति से नौकर बाबूराम का ऐक्ट करने का आग्रह करती है। पुराने नौकर को तीन महीने का अवकाश दे देती है। इस प्रकार सरोज सारे घर के सामान के साथ पात्रो की काया-पलट करने को तैयार हो जाती है।

द्वितीय अक मे मि० वर्मा और पुष्पा सरोज के घर पर आते है जहाँ उनका स्वागत-सत्कार होता है। नौकर का पार्ट करने वाले चाँदनारायण कही-कही आवश्यकता से अधिक प्रदर्शन कर बैठते है, जिसे किशोर डाँट-फटकार और प्रसग बदल कर साधे रहता है। इसी मध्य सूरजनारायण आ जाते है। उनका परिचय पागल के रूप मे दिया जाता है। वहाँ पर हास्य-विनोद का सुन्दर वातावरण बनता है और मि० वर्मा तथा पुष्पा भयभीत भी होते हैं। मिस कान्ता भी आती है और भेद खुलते-खुलते बच जाता है।

तृतीय अक रहस्योद्घाटन का है। सूरजनारायण अपने भतीजे चाँदनारायण को

रोते देख उसे फटकारता है और पत्नी की दासता को उसकी दुर्दशा का कारण समझाकर नकली रूप छोडने की सलाह देता है। चॉदनारायण का स्वाभिमान जगता है। वह निर्णय भी कर लेता है परन्तु सरोज सूरजनारायण को समझाकर पुन अपने मार्ग पर लाती है। पर नाटक के अन्त मे सभी एक-दूसरे को पहचानते है। मि० वर्मा उसके पुराने मित्र निकलते है जो अपने को कपडे का दुकानदार वताते है। चॉदनारायण के भी असिस्टेट क्लर्क होने का रहस्य खुल जाता है। किशोर का कान्ता से परिणय हो जाता है। तीनो की पत्नियॉ भेद खुलने के आघात के कारण मूर्च्छित हो जाती है और तीनो के पति उन्हे सँभालते है।

अंतःपुर का छिद्र (सन् १९४०, पृ० ८१), ले०. गोविन्दवल्लभ पत, प्र०. गगा ग्रन्थागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ, *पात्र :* पु० ६, स्त्री ५, *अक* ३, *दृश्य* . ३, ३, ९ ।
घटना-स्थल कौशाम्वी का राजगृह, रानी का कक्ष, वौद्ध विहार ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे राजा उदयन की पत्नी पद्मावती को आदर्श पत्नी के रूप मे दिखाया गया है। इसका नायक कौशाम्बी का राजा उदयन है। उसकी राज-महिषी पद्मावती भगवान् अमिताभ से प्रभावित हो, उनका दर्शन करना चाहती है। वह राजप्रासाद की दीवार मे कटार से एक छिद्र कर लेती है जो राजपथोन्मुख है, जिससे अमिताभ का दर्शन सरलता से हो सके। दूसरो की दृष्टि से इस तथ्य को छिपाने के लिए उस पर उदयन का चित्र रख देती है। उसी समय अमिताभ से घृणा करने वाली रानी मागधिनी उसके कक्ष मे आकर कहती है, "पद्मावती, तुम न भूलने दोगी। इस सन्यासी से जितनी दूर जाना चाहती हूँ यह उतना ही निकट खडा दिखायी देता है। तुम दीवार मे छिद्र कर उसे राजभवन के भीतर भी लाना चाहती हो। सिद्धार्थ ने एक वार मागधिनी से विवाह-प्रस्ताव अस्वीकार करते हुए उसका अपमान किया है, क्यो न उसका वदला ले लिया जाए।"

प्रतिशोध के लिए आतुर मागधिनी उदयन से छिद्र का रहस्य उद्घाटित करती है और दीवार-छिद्र दिखाकर अपनी वात की पुष्टि करती है। यही उदयन के अन्त-करण मे पद्मावती के प्रति सन्देह जन्म ले लेता है। मागधिनी, पद्मावती के मान-मर्दन के लिए मालिन के साथ योजना बनाती है। वह मालिन से सर्प मॅगाकर उदयन की वीणा मे रख देती है। यह वीणा पद्मावती ने ही भेट मे राजा को दी थी। उदयन के वीणा-वादन करते ही सर्प वाहर निकल आता है। इसी समय मागधिनी आकर सर्प को बर्तन से ढक देती है और पद्मावती को दोषी घोषित करती है। उदयन आग-बबूला होकर, सिद्धार्थ को राज्य-निर्वासित करने तथा पद्मावती को प्राण-दण्ड देने का सकल्प करता है। उदयन के जाने के वाद कुटिल मागधिनी मालिन को सर्प पकडने के लिए बुलाती है। उदयन छिद्र से दर्शन करती हुई पद्मावती को तीर मारता है, जो छिद्र से वाहर निकल जाता है। स्वामी का उद्देश्य समझकर पद्मावती छिद्र के समक्ष खडी होकर पुन शरसधान के लिए विनय करती है। राजा के तीर चढाते ही मालिन आकर सर्प-घटना का रहस्योद्घाटन करती है। उसी सर्प के डसने से मागधिनी मर जाती है। उदयन अपने भ्रम का निवारण करते हुए पद्मावती-सहित गौतम की शरण मे चले जाते है। अमिताभ सप्रेम उन दोनो को अपने सघ मे सम्मिलित करते है।

अंतिम सम्राट् (विक्रमी २०१६, पृ० १५१), ले० ओकारनाथ दिनकर, प्र० . ओरिएण्टल वुक डिपो, दिल्ली, *अक* ३, *दृश्य :* ५, ५, ४।
घटना-स्थल : राजभवन, युद्ध-क्षेत्र

इस ऐतिहासिक नाटक मे पृथ्वीराज की अद्भुत वीरता तथा मुहम्मद गोरी के क्रूर आक्रमणो का वर्णन है।

नाटक का आरम्भ पृथ्वीराज की माता कर्पूर देवी द्वारा श्वसुर एव पति की मूर्तियो के समक्ष प्रार्थना से होता है। राजगुरु रामदास सामन्तो से विचार-विमर्श के उपरान्त युवराज पृथ्वीराज को राज्याधिकार सौप देते हैं। पृथ्वीराज के सिंहासनारूढ़ होते

ही युद्ध के बादल घहराने लगते है। चालुक्यराज भीम, परमार-राज की द्वितीय पुत्री इच्छनी से विवाह करना चाहते है, परन्तु वह पहले ही पृथ्वीराज को मन से वरण कर चुकी है। उक्त वैवाहिक प्रसग पर ही चालुक्यराज परमार-राज पर आक्रमण करता है। महाराज पृथ्वीराज को इच्छनी-लग्न के साथ-साथ युद्ध का सदेश भी मिलता है। युद्ध मे परमार-राज की पराजय होती है, परन्तु विजयी चालुक्यराज इच्छनी कुमारी को प्राप्त करने मे सर्वदा असफल रहता है। हताश चालुक्यराज महाराज पृथ्वीराज के हाथो से पराजित होता है। दिल्ली पर मुगल बादशाह मोहम्मद गोरी के आक्रमण के पूर्वाभास से आतंकित राजपूत-नरेश अनगपाल पृथ्वीराज को दिल्ली-अधिपति घोषित करता है। प्रारम्भ मे पृथ्वीराज मोहम्मद गोरी के प्रत्येक आक्रमण को सफलतापूर्वक विफल करता है, परन्तु सयोगिता से विवाह के उपरान्त अत्यधिक विलासी हो कर्त्तव्य से पराङ्मुख हो जाता है। पृथ्वीराज के बाल-सहचर कवि चन्द उन्हे कर्तव्य के प्रति सचेत बनाये रखने का प्रयत्न करते है। जयचन्द, चालुक्यराज और मुगल बादशाह गोरी की दुरभिसन्धि के कारण अतिम युद्ध मे पृथ्वीराज प्राणपण से लडने पर भी पराजित होकर युद्ध-स्थल मे ही कवि चन्द-सहित वीरगति को प्राप्त होते है।

अंधा कुँआ (सन् १९५६, पृ० १५८), लें० : लक्ष्मीनारायण लाल, प्र० भारती भण्डार, लीडर प्रेस, प्रयाग, *पात्र* पु० १२, स्त्री ४, अक ४।
घटना-स्थल ' कमालपुर गॉव मे एक मकान का बरामदा, मकान का दुइदरा, ऑगन, दुइदरा।

इस सामाजिक नाटक मे एक ग्रामीण स्त्री का जीवन पति और प्रेमी के साथ दो रूपो मे दिखाया गया है।

इस नाटक मे भगौती की पत्नी सूका अपने प्रेमी इन्दर के साथ भाथ जाती है। भगौती मुकदमा लडकर सूका को घर ले आता है। घर लाकर सूका की बहुत दुर्दशा करता है। आत्महत्या करने के लिए सूका कुएँ मे कूदने पर भी बच जाती है। इन्दर सूका को लेने आता है परन्तु वह जाने से इनकार कर देती है। भगौती दूसरा विवाह करता है। दूसरी पत्नी अपने मगेतर के साथ चली जाती है। भगौती इन्दर को मारने जाता है किन्तु स्वय ही घायल होता है। सूका उसकी सेवा करती है। एक दिन इन्दर भगौती को मारने आता है, लेकिन वार सूका पर हो जाता है। भगौती प्रलाप करता है। इन्दर को सब लोग घेर लेते है। यही नाटक समाप्त हो जाता है।

अंधा युग (सन् १९५४, पृ० १३०), ले०. धर्मवीर भारती, प्र० किताबमहल, इलाहाबाद, पात्र : पु० १४, स्त्री १, अक . ५।
घटना-स्थल वनपथ।

इस गीति-नाट्य मे महाभारत-युद्ध के माध्यम से विश्व-युद्ध से उत्पन्न अनास्था, नैराश्य, एव विनाश का दृश्य उपस्थित किया गया है।

इसके प्रारम्भ मे स्थापना नर्तको की नमस्कार-मुद्रा और मगलाचरण से प्रारम्भ होती है। नर्तक नाट्य-कथा का सूत्रपात करते हुए कहते है—"युद्धोपरान्त यह अन्धा युग अवतरित हुआ।" इस युग मे कृष्ण के अतिरिक्त "शेष अधिकतर है अन्धे, पथभ्रष्ट, आत्महारा, विगलित, अपने अन्तर की अन्ध-गुफाओ के वासी, यह कथा उन्ही अन्धो की है, या कथा ज्योति की है अन्धो के माध्यम से।"

प्रथम अक मे कौरव नगरी पर अमगल-सूचक गिद्ध मँडरा रहे है। धृतराष्ट्र सजय से अठारहवे दिन के युद्ध का समाचार सुनने को उत्सुक है। पर वहाँ विदुर उपस्थित होकर इस कृष्ण-वचन का स्मरण दिलाते है 'मर्यादा मत तोडो।' इसे सुनकर गान्धारी आवेश मे आकर करती है—"उसने कहा है यह, जिसने मर्यादा को तोडा है बार-बार।" गान्धारी को पूरा विश्वास है कि "जीतेगा, दुर्योधन जीतेगा।"

द्वितीय अक मे कृतवर्मा को संजय युद्ध का परिणाम बताते है कि "शेष नही रहा एक भी जीवित कौरव वीर।" इसी समय बूढे कृपाचार्य उपस्थित होकर सूचना देते है कि "जीवित है केवल हम तीन आज! और

राजा दुर्योधन को नतमस्तक हो पराजय स्वीकार करते देख अश्वत्थामा आर्तनाद करता हुआ वन की ओर चला गया।" अश्वत्थामा का अन्तर्द्वन्द्व जब चरम सीमा तक पहुँचता है तो वह वृद्ध भविष्य का गला घोट देता है। कृपाचार्य सरोवर मे छिपे दुर्योधन का सदेश सुनाकर अश्वत्थामा और कृतवर्मा को सुला, स्वय पहरा देते है।

तृतीय अक मे सजय गाधारी और धृतराष्ट्र को यह कथा प्रात काल तक सुनाते है। मध्याह्न होते-होते एक करुणोत्पादक दृश्य उपस्थित होता है। वहाँ "खडित रथ टूटे छकडो पर लादकर थे लौट रहे, ब्राह्मण, स्त्रियाँ, चिकित्सक, विधवाएँ, बौने, बूढे, घायल, जर्जर।" गान्धारी-पुत्र युयुत्सु पाडवो के पक्ष मे युद्ध करने के उपरान्त आहत कौरव सेना के साथ लौटकर माता गान्धारी के चरण छूता है किन्तु माता उसकी घोर भर्त्सना करती है। युयुत्सु दुखी होकर विदुर से कहता है—"सबकी घृणा का पात्र हूँ।" इसी समय प्रहरी सजय द्वारा लाया सवाद सुनाते है कि राजा दुर्योधन द्वन्द्व-युद्ध मे भीम द्वारा मारे गये। अश्वत्थामा कृपाचार्य को अपनी योजना बताता है कि शिविरो को जाते हुए पाडवो को मै धोखे से मारूँगा। अश्वत्थामा कृतवर्मा और कृपाचार्य को समझाते हुए कहते है कि कृष्ण गाधारी को समझाने हस्तिनापुर गये होगे, अत पाडव-वध का अच्छा अवसर हाथ आया है। कृपाचार्य के रोकने पर भी अश्वत्थामा सोये हुए पाडवो के वध के लिए प्रस्थान करता है।

चतुर्थ अक मे गाधारी को सजय और विदुर विगत घटनाएँ सुनाते है। इसी समय अश्वत्थामा वहाँ पहुँचकर गाधारी, कृतवर्मा, कृपाचार्य से अपने प्रतिशोध की कथा कहता है। वह कहता है कि धृष्टद्युम्न का मैने वध किया है अब "उत्तरा को कर दूँगा पुत्रहीन, कृष्ण चाहे सारी योगमाया से रक्षा करे।" अश्वत्थामा प्रतिशोध लेने जाता है किन्तु थोडी देर बाद लौटकर अपने गले से चुभा हुआ बाण निकालता है। इसी समय अर्जुन आ जाते है। उन्हे देखकर अश्वत्थामा ब्रह्मास्त्र छोडता है। अर्जुन भी अपना ब्रह्मास्त्र छोडते है। भयानक विस्फोट होता है। प्रलय का दृश्य उपस्थित होने पर धृतराष्ट्र युयुत्सु को समझाते हुए कहते है कि "कौन जाने, एक दिन युधिष्ठिर सब राजपाट तुमको ही सौप दे।" इधर गाधारी आँख से पट्टी उतार अपने मृतक पुत्रो का शव देखकर कृष्ण को शाप देती है—"सारा तुम्हारा वश पागल कुत्तो की तरह एक-दूसरे को परस्पर फाड खायेगा, तुम खुद—किसी घने जगल मे साधारण व्याध्र के हाथो मारे जाओगे।" कृष्ण गाधारी का शाप स्वीकार कर उसे समझाते है—"जब तक मैं जीवित हूँ, पुत्रहीना नही हो तुम।"

पंचम अक मे ब्रह्मास्त्रो से झुलसी धरती हरी-भरी होती है, युधिष्ठिर का अभिषेक सम्पन्न होता है। किन्तु भीम प्रलाप करते हुए युयुत्सु का अपमान करता है। गूँगा सैनिक उसे पत्थर फेंककर मारता है। युयुत्सु आत्महत्या कर लेता है। कृपाचार्य भविष्यवाणी करता है कि "यह आत्महत्या होगी प्रतिध्वनित इस पूरी सस्कृति मे—शासन-व्यवस्था मे—आत्मघात होगा बस अतिम लक्ष्य मानव का।" दूत युधिष्ठिर को कृष्ण-मृत्यु की सूचना देता है। अश्वत्थामा सागरतट की रेती पर बिखरे यादव योद्धाओ के शवो का वर्णन करता है। परीक्षित को तक्षक डस लेता है। सर्वत्र दावाग्नि फैल जाती है। अश्वत्थामा अपने जीवन-अनुभव सुनाते है। मच पर केवल एक वृद्ध जरा-व्याध बच जाता है।

अंधी गली (सन् १९५६, पृ० १५१), ले० उपेन्द्रनाथ अश्क, प्र० नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, अक ७।
घटना-स्थल गली, कमरा, बाजार।

प्रस्तुत सामाजिक नाटक सरकारी वर्ग के भ्रष्टाचार के कारण जनता की छटपटाहट दिखाता है। नाटक का प्रारम्भ एव अत अधी गली से होता है। अधिकारी अधी गली मे स्थित रामचरण के मकान को गिराकर गली को बाजार से मिलाना चाहते है, परन्तु इसके आगे स्थित कई मकानो का तोडना अनिवार्य है। म्युनिसिपैलिटी अपने दलगत स्वार्थो के कारण ऐसा नही कर

पाती । अंधी गली मे कुछ मकानो मे शरणार्थियो के बसने पर सरकारी अफसरो को सडाँध आने लगती है, उनके लिए मकान बनने शुरू होते है परन्तु वे बरसात मे वह जाते है और सारा पैसा ठेकेदारो, सरकारी अफसरो की जेब मे पहुँच जाता है । रामचरण स्थिति को देखता है, पिसता है, परन्तु कुछ कर नही पाता । इस प्रकार नाटककार ने यह व्यजित किया है कि सरकारी अफसरो द्वारा जनता की भलाई के लिए लगाया गया धन केवल कागज तक ही सिमटकर रह जाता है और सामान्य जनता पिसती रहती है ।

अंधी तकदीर (सन् १९६२, पृ० ५४), *ले०* जगदीश शर्मा, *प्र०* देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६, *पात्र* पु० ६, स्त्री ३, *अक* २ ।
घटना-स्थल घर, विवाह-मडप ।

इस सामाजिक नाटक मे परिस्थितियो से विवश मानव को बडी-से-बडी बुराई सहज ही करते हुए दिखाया गया है ।

गौरी और राधा ऐसे भाई-बहिन हैं जिनके बचपन मे ही माता-पिता स्वर्गवासी हो जाते है । दोनो अपने चाचा-चाची के यहाँ रहते है । कहने को उनका पारिवारिक सबध है पर जिन्दगी गुलामो से भी बदतर है । शाति अपनी भतीजी राधा को पाँच हजार मे बेच देता है जिसमे उसका भाई भी हिस्सेदार बनता है । स्वय भाई ही अपनी बहिन का सौदा करता है । परिस्थितियो की अंधी तकदीर सबको ऐसा करने के लिए मजबूर कर देती है ।

अंधेर नगरी (सन् १९६२, पृ० ७२), *ले०* जगदीश शर्मा, *प्र०* देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६, *पात्र* पु० ५, स्त्री १, *अक* २ ।
घटना-स्थल घर, राज-दरबार, नगर का कोई स्थान आदि ।

यह हास्य रस का सामाजिक नाटक है । नाटककार ने इसे तीन रूपो मे लिखा है, १ चौपट का दिल, २ चौपट की शक्ल, ३ चौपट की अक्ल । इसमे अंधेर नगरी, चौपट राजा की कहानी चरितार्थ की गई है । एक बार शाही खजाने मे पैसे की कमी आने पर चौपट निर्णय करता है कि मुजरिमो को सजा न देकर सिर्फ जुर्माना किया जाए चाहे वह कातिल ही क्यो न हो । इसी तरह राज्यमत्री घनचक्कर जनता से घूस लेता है, किन्तु राजा चौपट को उसमे हिस्सा नही देता अत नौकरी से निकाल दिया जाता है । तब घनचक्कर ज्योतिषी गप्पीराम से मिलकर चौपट को खूब मूर्ख बनाता है। बीमार तो चौपट होता है, लेकिन ज्योतिषी के अनुसार दवा घनचक्कर की होती है तथा सेहत के लिए फल भी उसी को मिलता है । इस तरह कई हास्यप्रधान घटनाओ का इसमे समावेश है ।

अँधेरे-उजाले *ले०* सतीश दे, *प्र०* देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६, *अक रहित*, *दृश्य* ३ ।
घटना-स्थल विवाह-मण्डप ।

इस सामाजिक नाटक मे ऐसे अपराधी की कहानी है जिसका अँधेरे मे किया हुआ पाप उजाले मे रग लाता है । समाज उससे प्रतिशोध का अवसर पाकर अपने अधिकारो का प्रयोग करता है । समाज-शत्रु अपराधी का विवाह निश्चित होता है, किन्तु क्रुद्ध समाज विवाह-मण्डप की खुशी को करुणा मे बदल देता है । इस प्रकार पापी का दु खद अत दिखाया गया है ।

अँधेरे का बेटा (सन् १९६६, पृ० १०९), *ले०* रेवतीसरन शर्मा, *प्र०* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली; *पात्र* पु० ४, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* · केवल तीसरे अक मे चार दृश्य है ।
स्थान ड्राइग रूम ।

इस नाटक मे एक सिपाही की वीरता के साथ-साथ उसकी कायरता और कर्तव्य के द्वन्द्व को मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है ।

मेजर नारग की पत्नी निरुपमा एक महत्त्वाकांक्षिणी नारी है । अपने पति को प्रमोशन न मिलने, किन्तु उससे जूनियर को प्रमोशन मिलने के समाचार से उसे बडी निराशा होती है । लेकिन जब उसे यह पता

चलता है कि पति की पदोन्नति उसकी कायरता के कारण नही हुई, तो वह ग्लानि से भर जाती है। यही से पति-पत्नी मे विरोध उत्पन्न हो जाता है। मेजर नारग इस मानसिक कुण्ठा से ग्रस्त होकर पाकिस्तान के युद्ध मे स्वेच्छा से अपना बलिदान कर देते है। इस कथा के माध्यम से लेखक कुछ प्रश्न उभारता है। युद्ध-क्षेत्र से पलायन क्यो किया जाता है? क्या यह वास्तव मे सैनिको की कायरता है?

अबपाली (वि० २००५ पृ० ९५), ले० रामवृक्ष बेनपुरी, प्र० पुस्तक-भण्डार, पटना, पात्र पु० ९, स्त्री ५, अक ४, दृश्य ५, ३, ५, ४।
घटना-स्थल सघन अमराई, आनन्दग्राम, वैशाली का उपवन, राजगृह की पर्वतश्रेणियाँ, बाँस का झोपडा, रमणीक बौद्ध विहार।

एक राजनर्तकी को सद्बुद्धि जागने पर भगवान् बुद्ध की शिष्या के रूप मे चित्रित किया गया है।

अबपाली अपनी सखियो के साथ सघन अमराई मे झूला झूल रही है। उसकी एक सहेली मधूलिका उसके ग्रामीण प्रेमी अरुणध्वज की चर्चा करते हुए कहती है, "ज्योतिषी ने तेरे हाथ की रेखाएँ देखकर कहा था कि तेरे चरणो पर हजार-हजार राजकुमारो के मुकुट लोटेगे।" अबपाली राजकुमारो के सान्निध्य मे नारी के बन्दी जीवन का विरोध करती है। तीसरे दृश्य मे वैशाली नगरी मे फाल्गुनी उत्सव के अवसर पर अंबपाली और अरुणध्वज मदिरालय मे बैठकर सोमरस का पान करते है। उसी समय नयी राजनर्तकी के रूप मे सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी का चयन करने को सघ के प्रतिनिधि की हैसियत से चार राजकुमार वहाँ पहुँच जाते है। तत्कालीन राजनर्तकी पुष्पगधा चारो राजकुमारो के परामर्श से अबपाली को नवीन राजनर्तकी घोषित करती है। अबपाली वैशाली के शरद्-उपवन मे निवास करती है और शरद्-पूनो की रात्रि मे हजार राजकुमारो के साथ रास रचाती है। अबपाली जिस राजकुमार का हाथ पकडकर नाचती है वह अपने को धन्य समझता है।

द्वितीय अक मे भगवान् बुद्ध अबपाली के आम्रकानन मे निवास करते दिखायी पडते है। अबपाली भगवान् बुद्ध को भोजन का निमत्रण देती है। भगवान् बुद्ध अपने शिष्यो से अबपाली की प्रशसा करते है। अबपाली अपने को धन्य समझते हुए सखियो से बाते करती है।

तृतीय अक मे अजातशत्रु अबपाली का चित्र देखकर मुग्ध हो जाता है। वह वैशाली को जीतकर अबपाली को मगध लाने की योजना बनाता है। उसका मत्री सुनीध और प्रधान मत्री वस्सकार उस योजना को कार्यान्वित करना चाहते है। वैशाली के वृज्जि नागरिको का नेता अश्वसेन अजातशत्रु का विरोध करता है। वसुबधु और अश्वसेन मे युद्ध होता है, वसुबधु आहत होकर धराशायी हो जाता है। अबपाली को वैशाली का भविष्य अन्धकारमय दिखायी पडता है। अजातशत्रु की सेना वैशाली पर आक्रमण करती है। अबपाली के उत्साह से नागरिक उत्तेजित होकर युद्ध करते है, किन्तु वैशाली की पराजय होती है और अजातशत्रु अबपाली के पास पहुँचकर उसे अपने साथ चलने का आग्रह करता है। किन्तु अबपाली के प्रभाव से वह वैशाली का राज्य छोडकर उसके बिना ही मगध लौट आता है।

चतुर्थ अक मे अरुणध्वज को घायल दिखाया जाता है। युद्ध मे जो तीर अबपाली की ओर आ रहा था, उसे अरुणध्वज अपने ऊपर ले लेने से मरणासन्न पडा है। मधूलिका उसके सिरहाने बैठी उसके बालो को सहला रही है। अबपाली भी वहाँ पहुँच जाती है और अरुणध्वज की मृत्यु के समय दोनो चीत्कार करती है। धैर्य धारण कर अबपाली वैशाली के बौद्ध विहार मे भगवान् बुद्ध के पास पहुँचती है। वह सघ मे सम्मिलित होना चाहती है। आनन्द इसका विरोध करते है। किन्तु भगवान् बुद्ध अबपाली एव उसकी दो सखियो—पुष्पगधा और मधूलिका—को भिक्षुणी बनाकर सघ मे सम्मिलित कर लेते है।

अजातशत्रु के सम्मुख अबपाली के चित्र का प्रसग नये सस्करण मे जोडा गया है।

अकबर गोरक्षा न्याय नाटक (सन् १८९५, पृ० १७५), ले० प० जगतनारायण, मुशी कालबहादुर वारावकी, अलियावाद-निवासी, प्र० सदाशिव वावाजी प्रिंटिंग प्रेस, बम्बई, *पात्र* पु० ७३, स्त्री ६, *अक* ३, *दृश्य* १७, १८, २२।
स्थान तपोवन मे एक कुटी, वन मे चौरस्ता, बादशाह का प्राइवेट कमरा।

इस ऐतिहासिक नाटक मे गोवध के ऊपर प्रकाश डाला गया है। गौ को माता का स्थान प्राप्त है, उसका वध नही करना चाहिए, नाटक का यही मुख्य विषय है। नाटक मे अकवर के उस न्याय पर प्रकाश डाला गया है जिसमे उसने गोवध-निषेध को कानूनी रूप मे स्वीकार किया है। अकबर के इस महान् कार्य से हिन्दू-मुस्लिम-ऐक्य स्थापित हो जाता है।

अगस्त्य भारतीय सस्कृति के अभियान का एक नाटक (सन् १९६३, पृ० ११५), ले० : रामेश्वर दयाल दुबे, प्र० शील प्रकाशन, राष्ट्रभाषा रोड, कटक, *पात्र* पु० ३, स्त्री ३, *अक* ४, *दृश्य* ३, २, २, २।
स्थान महर्षि अगस्त्य के आश्रम के निकट वहने वाली नदी का तट, विदिशा की अतिथिशाला का प्रागण।

इस पौराणिक नाटक मे अगस्त्य मुनि अपने तपोवल से सागर-पान करके दानव से मानव की रक्षा करते है।

महर्षि अगस्त्य जीवन-भर अविवाहित रहने का विचार करते हुए भी विदर्भराज की पुत्री लोपामुद्रा का पाणि-ग्रहण करते है। दोनो विन्ध्य पर्वत पर जाते है। विन्ध्य पर्वत को पार कर अगस्त्य और लोपामुद्रा दक्षिणापथ का मार्ग पकडते है। लोपामुद्रा का वचपन ऐश्वर्य और वैभव की गोद मे वीता है। विवाह के उपरान्त वह अपने यौवन-काल मे भी उसी प्रकार के वैभव का भोग करना चाहती है लेकिन यह सम्भव नही होता। लोपामुद्रा वेगवती नदी के एक मोड के समीप पडी हुई शिला पर कमलो की माला वना रही है। वहाँ अगस्त्य मुनि पहुँच जाते है और उसे अकेली देखकर कुछ अपशव्द कहते है। लोपामुद्रा मूर्च्छित होकर शिला पर गिरती है। अगस्त्य उसे वचाने के लिए आगे वढते है, तव तक वह शिला से खिसककर धारा मे जा गिरती है। अगस्त्य 'लोपे-लोपे' कहकर चिल्लाने लगते है। इतने मे एक वृक आता है और उन्हे समझाता है। अगस्त्य कहते है कि मै लोपामुद्रा के प्रति ऋणी हूँ, और उसी ऋण को आजन्म चुकाने का मैं आज सकल्प करता हूँ। अगस्त्य नतशिर हुए आगे-आगे वढते है, वृक पीछे-पीछे जाता है।

समुद्रवासी कालेयक नामक असुर तपस्वियो का निरन्तर वध करता रहता है। प्रतिदिन मुनियो की लाशे वीभत्स रूप मे देखने को मिलती है। इस प्रकार सव तपस्वी विष्णु के कहने पर अगस्त्य के यहाँ जाते है। अगस्त्य समस्त लोगो के सामने वरुणालय समुद्र का पान कर लेते है। देवताओ के साथ-साथ मानव-लोक की सबसे वडी वाधा दूर हो जाती है। इस प्रकार अगस्त्य समुद्र पर विजय प्राप्त करते है। इस धार्मिक नाटक मे महर्षि अगस्त्य की प्रभुता का वर्णन है। वे अपने योगवल द्वारा समुद्र-पान करके समस्त देवो और मानवो का दु ख-निवारण करते है।

अग्नि देवता, (सन् १९५२) ले० नरेश मेहता, प्र० नवपजाव साहित्य सदन, दिल्ली और जालन्धर, *पात्र* पु० २, स्त्री २, *अक, दृश्य तथा घटना-स्थल रहित*।

यह एक यथार्थवादी रेडियो गीति-नाट्य है, जिसके अन्तर्गत प्रलय की पृष्ठभूमि पर अग्नि की विविध रूपो मे विवेचना की गई है। अग्नि की खोज मे लेखक की दृष्टि सृष्टि के आदि रूप तक गई है। इसके लिए अग्नि-पूजक अवेस्ता-विश्वासी पारसीको, यूनानियो, दार्शनिक हेराविलतु एव उपनिषद्कारो की अग्निविषयक विभिन्न मान्यताओ का प्रतिपादन किया गया है। प्रलय के पश्चात् जिस अग्नि की कामना जीवन की प्रारम्भिक आवश्यकताओ की पूर्ति-हेतु की गई थी वही अग्नि सघर्ष का कारण वन गई है। इस प्रकार मानव-सभ्यता के विकास मे अग्नि के योगदान की चर्चा करते हुए अन्त मे लेखक लोक-कल्याण-हित अग्नि के उपयोग पर वल देता

है। बीच-बीच मे प्रलय से लेकर महात्मा गाधी के निधन तक के विभिन्न प्रसगो की योजना है।

अग्नि-परीक्षा (सन् १९७१, पृ० ८५), ले० हरिकृष्ण 'प्रेमी', प्र० लोकचेतना प्रकाशन, १८४, शहीद स्मारक पथ, जबलपुर, *पात्र* पु० ६, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* १, १, १।
घटना-स्थल ओरछा, उद्यान, नर्मदा का तट, पहाडसिह के महल का एक कक्ष, जुझारसिह का शयन-कक्ष।

इस ऐतिहासिक नाटक मे हरदौल अपने प्राणो की परवाह न करके नारी-जाति के सम्मान की रक्षा करता रहता है। महाराज वीरसिह देव की मृत्यु के पश्चात् उनके बडे पुत्र जुझारसिह सिहासनासीन होते है। यह बात उनके भाई पहाडसिह को अच्छी नही लगती है, अत वह मुगल शासको से मिलकर राज्य हथियाने के लिए षड्यन्त्र रचता है। जुझार के काका चम्पतराय को महोबा की जागीर मिलती है। जुझारसिह के राजा होते हुए भी उनके सौतेले भाई हरदौल ही बुन्देलखण्ड की शत्रुओ से रक्षा करता है और प्रजा के सुख का ध्यान रखते हुए सब की आँखो का तारा बन जाता है। ओरछा की महारानी स्वर्णकुँवरि उसे पुत्र की तरह प्यार करती है। जहाँ हरदौल सिह एव चम्पतराय प्रजा के प्रिय है वही पहाडसिह एव उसकी पत्नी हीरादेवी को वे दोनो राह के कटक प्रतीत होते है। एक दिन चम्पतराय को पहाडसिह भोजन मे विष दे देता है। लेकिन चम्पतराय के भाई भीमसिह उसको खाकर स्वर्गवासी हो जाते है।

हरदौल को मारने के लिए पहाडसिह, जुझारसिह के मन मे शका का यह बीज बो देता है कि हरदौलसिह और महारानी स्वर्णकुँवरि मे अनुचित सबध है। जुझारसिह इसके लिए स्वर्णकुँवरि की परीक्षा लेते है और स्वर्ण-कुँवरि से हरदौल को दूध मे विष मिलाकर दिलवाते है। हरदौल जानते हुए भी नारी-जाति के सम्मान की रक्षा के लिए हँसते-हँसते विष-पान कर लेता है और इतिहास के पन्नो पर अपनी स्मृति छोड़ जाता है।

अज्ञातवास (सन् १९५२, पृ० १००), ले० कृष्णदत्त भारद्वाज, प्र० : व्रती भ्राता, जालन्धर, *पात्र* · पु० १५, स्त्री ४, *अक* ५, *दृश्य* · ४, ५, ३, ५, ६।
घटना-स्थल : राजदरबार, जगल।

यह एक पौराणिक नाटक है। इसमे दुर्योधन द्वारा दिये गये पाडवो के अज्ञातवास की चर्चा है। कौरवो के छल से जब पाण्डव जुए मे अपना सारा राजपाट, द्रौपदी-सहित हार जाते है तब दुर्योधन उन सबको १२ वर्ष तक वनवास की सजा सुनाता है तथा उसके बाद एक साल तक अज्ञातवास के लिए भी कहता है। इस अवधि मे पाण्डव और द्रौपदी ऐसे स्थान पर रहते है जहाँ दुर्योधन को पता नही चलता, अन्यथा उनकी सजा की अवधि पुन बढा दी जायेगी। निदान पाण्डव राजा विराट् के यहाँ छद्मरूप मे छद्म नाम से रहने लगते है।

अज्ञातवास (सन् १९२१, पृ० १५४), ले० द्वारकाप्रसाद गुप्त 'रसिकेन्द्र', *पात्र* पु० १६, स्त्री ८, *अक* · ३, *दृश्य* ७, ७, ६।
घटना-स्थल जगल, नृत्यशाला, राजभवन।

इस पौराणिक नाटक मे पाण्डवो के अज्ञातवास का वर्णन है। व्यासजी के सुझाव पर पाण्डव अपना अज्ञातवास-काल व्यतीत करने के लिए विराट्-नरेश के यहाँ अपना नाम तथा वेश बदलकर विभिन्न सेवाओ मे नियोजित हो जाते है। रानी की सेवा मे सलग्न सैरन्ध्री (द्रौपदी) के सौन्दर्य पर मोहित कीचक अवसर पाकर उस पर बलात्कार करने का प्रयत्न करता है। किन्तु द्रौपदी बच निकलती है और पतियो को कीचक के दुष्ट स्वभाव से अवगत कराती है। इधर भीम के परामर्श से वह उत्तरा की नृत्यशाला मे रात्रि के समय मिलने के लिए कीचक से कहती है। कामासक्त कीचक निश्चित समय निश्चित स्थान पर पहुँचता है और योजनानुसार भीम स्त्री-वेश मे पहुँच-कर उसका वध कर देते है। द्रौपदी यह अफवाह फैला देती है कि उसके अगरक्षक गन्धर्वो ने उसकी हत्या की है। इसके बाद कीचक के भाई द्रौपदी को अग्नि मे जलाने के उद्देश्य से पकड लाते है। इससे पाण्डव

युद्ध कर उन्हे भी धराशायी कर देते है। तत्पश्चात् सुशर्मा के अस्त्र से शख और विराट् मूर्च्छित हो जाते है। वह विराट् को वन्दी वना लेता है। पाण्डव उसे मुक्त कर कौरवो को भी पराजित करते है। अन्त मे विराट् के समक्ष सभी पाडव अपने सही रूप मे उपस्थित होते है। विराट् उनके प्रति कृतज्ञ होते है और अर्जुन-पुत्र अभिमन्यु के साथ अपनी कन्या उत्तरा का विवाह कर देते है।

अछूत (विक्रमी १९८५, पृ० ११८), ले० आनन्दीप्रसाद श्रीवास्तव, प्र० विश्व-ग्रथावली, इलाहावाद, *पात्र* पु० ६, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* २०।
घटना-स्थल मुहल्ले का दृश्य, मन्दिर आदि।

इस सामाजिक नाटक मे लेखक ने अछूतोद्धार पर बल देकर समाज की सहानुभूति जगाने की चेष्टा की है। एक महात्मा अपने शिष्य को अछूतो की सहायता करने का आदेश देता है और यह भी वचन लेता है कि वह अछूतो पर होने वाले अत्याचार का विरोध करेगा। शिष्य को समाज-सेवा के इस क्षेत्र मे अनेक कठिनाइयाँ दिखायी पडती है। वह कभी प्यासे अछूत को पानी न पिलाने वाले व्यक्तियो का घडा छीनकर याचक की प्यास वुझाता है, कभी मन्दिर के अन्दर अछूतो के प्रवेश मे वाधक पुजारी को पीटकर उनको (अछूतो को) मन्दिर मे पूजा करने का अवसर प्रदान करता है। उच्च वर्णवालो की पोल उस समय खुलती है जब उनका न्यायाधीश एक अछूत वन जाता है। वडे कुलीन ब्राह्मण अपने अपराधी बच्चों को दण्ड-मुक्त कराने के लिए उसके पैर तक छूते है। आगे चलकर जमीदार तथा राजा का भी समर्थन एव सहयोग मिल जाता है और अछूतो के साथ सबका व्यवहार सुधर जाता है।

अछूत कन्या (सन् १९३८, पृ० ६३), ले० मुशी आरजू वदायूंनी, प्र० उपन्यास-वहार आफिस, काशी, *अक* ३, *दृश्य* ८, ८, २।
घटना-स्थल · निर्माणाधीन मकान, मन्दिर तथा गाँव के दृश्य।

इस सामाजिक नाटक मे अछूतो के प्रति ब्राह्मणो के अधविश्वास का चित्रण किया गया है। श्यामलाल और स्वरूप की देखरेख मे भगवतीसिह के मकान का निर्माण होता है। शम्भू चमार अपनी पुत्री 'मुक्ति' के साथ वहाँ मजूरी करता है। भगवतीसिह श्यामलाल को वेईमानी के आरोप मे निकाल देते है। श्यामलाल इसमे स्वरूप का हाथ समझकर उससे वदला लेना चाहते है। भगवतीसिह स्वरूप की ईमानदारी पर प्रसन्न होकर सारा कार्य-भार उसको सौप देते है।

काम करते समय मुक्ति को गम्भीर चोट आ जाती है। स्वरूप पडित मानवता के नाते उसका उपचार करके उसे स्वस्थ करता है। शम्भू और मुक्ति दोनो ही ब्राह्मण-पुत्र के व्यवहार पर उसे देवता समझते है। मुक्ति उसे आत्म-समर्पण करती है। गाधीवादी युवा स्वरूप उसके साथ विवाह करने को तैयार हो जाता है। श्यामलाल षड्यत्र से भगवतीसिह द्वारा अछूत कन्या के प्रेमी स्वरूप को नौकरी से पृथक् करा देता है। वह ब्राह्मण-मण्डली को भडकाकर स्वरूप और मुक्ति की शादी नही होने देता और जवरदस्ती एक पतिपरायणा साध्वी ब्राह्मण-कन्या से उसकी शादी करा देता है जिससे स्वरूप खिन्न रहता है। पिता की दुश्चिन्ता का अन्त करने के लिए मुक्ति अपनी झोपडी मे आग लगाकर जल जाती है। उदास पिता ब्राह्मणो के अत्याचार का प्रतिशोध लेने का निश्चय करता है।

शम्भू चमार के साधू होने पर ब्राह्मण भी नतमस्तक होते है। एक दिन भगवतीसिह के यहाँ ब्रह्म-भोज मे शम्भू श्यामलाल की एकमात्र कन्या का अपहरण कर लेता है।

दूसरे अक मे स्वरूप के लडके नरेन्द्र को साँप काट लेता है। शम्भू नरेन्द्र को विष-मुक्त करता है। किन्तु नरेन्द्र शम्भू की पालिता पुत्री सरोजिनी से आँखे चार कर लेता है। यह सरोजिनी ही श्यामलाल की कन्या है। नरेन्द्र, शम्भू से वात करके सरोजिनी को मेले मे ले जाता है। वहाँ श्यामलाल एक वार तो उसे पहचान भी लेता है। मंदिर मे शम्भू और सरोजिनी को देख सव मारने दौडते है। नरेन्द्र रक्षा मे शम्भू और सरोजिनी के साथ वन्दी होता है। शम्भू के प्रयास से

ब्राह्मणो के विरोध करने पर भी श्यामलाल की अपहृत कन्या का नरेन्द्र के साथ विवाह होता है। कपटी ब्राह्मणो को काले पानी का दड मिलता है किन्तु स्वरूप उन्हे क्षमा करा देता है।

अछूत की लड़की या समाज की चिनगारी (सन् १९१४, पृ० १४६), ले० रघुनाथ चौधरी, प्र० बाबू सागरमल सिघानिया, सुल्तानगज, *पात्र* पु० १०, स्त्री ७, *अक* ३, *दृश्य* . ८, ६, ६।
घटना-स्थल . सभा, घर।

यह एक सामाजिक नाटक है। अछूतो की समस्या दूर करने के लिए सामाजिक समानता पर बल दिया गया है। इसमे समाज मे होने वाली बुराइयो पर प्रकाश डाला गया है। समाज को किशोरी-जैसी कन्या पर गर्व होना चाहिए। अछूत की कन्या होने पर भी उसका चरित्र उच्च है। वह आदर्शमय कन्या है। वह अपने वर्ग के लोगो को उनकी समस्याओ से अवगत कराती है। एक स्थल पर कहती है, "हम लोग निर्बल है जिसका कारण फूट है। अगर हम लोग एकता के सूत्र मे बँधकर, जाति-उन्नति का सरल रास्ता ढूँढ निकाले तो वही समाज, जो आज हम लोगो को घृणा की दृष्टि से देखता है, आदर की दृष्टि से देखने लग जायेगा।"

नाटक का नायक मोहन सदाचार के बल पर समाज की सेवा करता है।

अछूता दामन (रचना-काल १९०२, प्रकाशित सन् १९३५), ले० आगा हश्र काश्मीरी, प्र० राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, *पात्र* पु० ९, स्त्री ५, *अक* : ३, *दृश्य* · १०, ५, ३।
घटना-स्थल राजमहल, मकान, बन्दीगृह, पाईनबाग का बन्दरगाह।

इस पारसी थियेट्रिकल नाटक मे व्यभिचार के परिणाम को दिखाने का प्रयास किया गया है। अदलाबाद का बादशाह जहाँदार अपने एक विश्वसनीय नवाब सफदरजग को राज्य का कार्यभार सौपकर कार्य-निवृत्त हो जाता है। सफदरजग अच्छी तरह राज्य का सचालन करता है। वह न्यायी और दयाशील है, अत. राज्य मे अमन-चैन रहता है। उस राज्य मे जमील नामक एक व्यभिचारी व्यक्ति स्त्री पर बलात्कार करने के अपराध मे पकडा जाता है जिसे मृत्यु-दड मिलता है। जमील की बहिन सईदा भाई को किसी प्रकार मुक्त कराने के लिए नवाब सफदरजग से प्रार्थना करने जाती है। नवाब उसके सौंदर्य पर मुग्ध हो जाता है, और उसके भाई की मुक्ति के एवज मे उसके साथ भोग करना चाहता है। सईदा किसी प्रकार नवाब के दुर्व्यवहार को बादशाह तक पहुँचा देती है। बादशाह जहाँदार नवाब पर क्रुद्ध होकर उसे दड देता है।

इसका प्रथम अभिनय कावसजी खटाऊ द्वारा अलफ्रेड थियेटर मे १९०२ मे हुआ। सन् १९०५ मे इसमे कई परिवर्तन करके इसे फिर खेला गया।

अछूतोद्धार नाटक (सन् १९२६, पृ० ९४), ले० रामेश्वरीप्रसाद राम, प्र० हिन्दी सुलभ-साहित्य प्रकाशन मन्दिर, पटना, *पात्र* पु० १३, स्त्री ४, *अक* . ३, *दृश्य* ६, ५, ६।
घटना-स्थल वाग, अनाथालय, कमरा, जगल, देहात, न्यायालय, सार्वजनिक सभा।

इस सामाजिक नाटक मे एक सवर्ण व्यक्ति अछूतोद्धार करते हुए नाना प्रकार के कष्ट उठाता है।

सुरेन्द्र एक देशभक्त नवयुवक है। परतत्रता की बेडियो मे जकडे हुए अछूतो की करुण अवस्था है। विदेशी रग मे रँगे हुए धनी सेठ-व्यापारियो के कारण वे पिस रहे है। सुरेन्द्र देश का उद्धार तथा गरीबो की सहायता करना चाहता है। उसकी माता उसके उत्साहमय जीवन की अनुगामिनी हो जाती है। वह अपने स्वार्थी पति रणधीर से बुद्धि और विवेक मे बहुत बढ गई है। सुरेन्द्र अनाथालय की स्थापना कर गरीब अछूतो के निवास और भोजन की व्यवस्था करता है। रामप्रसाद अछूत के परिवार की वह हर तरह से सहायता करता है, परन्तु गाँववाले विशेषकर मुखिया पडितजी उसका विरोध करते है। मदिरा-प्रेमी शिवशकर को अपने देश-जाति के उत्थान-पतन की तनिक भी चिन्ता नही। शिवशकर एम०एल०ए० होने के स्वप्न देखते है। उन्हे देश की परतन्त्रता तथा गरीबी से

कोई लगाव नही। वे अपने कपटी मित्रो को हजार-हजार रुपयो की थैली देते है परन्तु गरीबी एव विपत्ति मे फँसे अनाथो के लिए बीस रुपए नही माफ कर सकते। उनके कपटी मित्र शिवशकर को शराब पिलाकर पाँच हजार रुपया हडप कर जाते है और सुरेन्द्र पर चोरी का दोषारोपण करते है परन्तु रामप्रसाद की सूझबूझ, चतुराई और गवाही से सत्य की जीत होती है।

अजनबी (सन् १९४६, पृ० २७४), ले० रामनरेश त्रिपाठी, प्र० दक्षिणभारत हिन्दी-प्रचार सभा, मद्रास, *पात्र* पु० १०, अक ३, *दृश्य* २१।
घटना-स्थल घर, दुकान, झोपडी आदि।

इस सामाजिक नाटक मे उच्च वर्ग की सकीर्णता और निम्न वर्ग की महत्ता दिखायी गई है। अजनबी ही नाटक का नायक है। वह एक दयालु व्यक्ति की कृपा से शिक्षा पाता है और अपनी कुशाग्र बुद्धि के कारण शीघ्र ही विद्वान् हो जाता है। शिक्षार्जन के पश्चात् वह देश-दर्शन के लिए निकल पडता है। देशाटन करते हुए समाज के विभिन्न वर्गो की वास्तविकता से परिचित होने पर समाज की कृत्रिमताओ से घृणा करने लगता है। वह उच्च वर्ग की अपेक्षा निम्न वर्ग की सरलता और सहयोगिता से अधिक प्रभावित होता है। सेठ, राजा, महन्त, नेता, लेखक, कवि, वकील आदि के सम्पर्क मे आने पर उनके निकृष्ट जीवन से खिन्न होता है और उनकी दुष्टताओ का भण्डाफोड करता है।

अजन्ता (सन् १९५३, पृ० ७८), ले० : प० सीताराम चतुर्वेदी, प्र० हिन्दी-प्रचारक पुस्तकालय, बनारस, *पात्र* पु० ६, स्त्री ३, *अक* : ३, *दृश्य* ५, ५, ५।
घटना-स्थल उद्यान, चतुष्पथ, चित्रशाला, प्रकोष्ठ, भवन का एक भाग।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है जिसमे अजन्ता की चित्र-वीथी पर विस्तार से कथानक को गढा गया है। नाटक का उद्देश्य भारतीय स्थापत्य कला, मूर्तिकला और चित्रकला का सामजस्य स्थापित करना है। अजन्ता की गुफाओ मे वाकाटक-वंशीय सम्राट् प्रवरसेन द्वितीय की पुत्री नयनिका का चित्र है जो शोक-विह्वला होकर मूर्च्छित पडी है।

पाँचवी शती विक्रमी मे नासिक मे प्रवरसेन द्वितीय राजा है। राज्यस्थित विद्यापीठ के प्रधान आचार्य सुनन्द है। इन्ही से यूनान का डारस (आवटेवियम) और नासिक की राजकुमारी प्रवरसेन की पुत्री नयनिका शिक्षा प्राप्त कर रही है। कई कारण-वश दण्डनायक नागदत्त आचार्य सुनन्द से ईर्ष्या-द्वेष करता है। दोषी और कलकित कर उन्हे निष्कासित करना चाहता है। उसके षड्यन्त्र से विवश होकर आचार्य को नासिक छोडना पडता है।

राजकुमारी को इससे बडा दुख होना है। किसी उपाय से सुनन्द राजभवन पहुँचते है और राजकुमारी को उपचार का उपाय बताकर अपने निवास-स्थान का चित्र दे जाते हैं जिसे देखकर राजकुमारी नयनिका समझ लेती है कि आचार्य अजन्ता के बौद्ध विहार की कन्दरा मे है। चित्र बनाने मे तल्लीन आचार्य सुनन्द पर नागदत्त पीछे से आक्रमण करता है, किन्तु कुशल रक्षको द्वारा उनकी रक्षा होती है और नागदत्त के षड्यन्त्र का भण्डाफोड हो जाता है। अपराधी नागदत्त को आचार्य क्षमा कर देते है। राजकुमारी नयनिका की प्रार्थना पर आचार्य उसे शिष्या बनाना स्वीकार कर लेते है, किन्तु गुरु की आज्ञा मानकर राजकुमारी आचार्य की गुफा मे नही जाती।

अजातशत्रु (सन् १९२२, पृ० १५१), ले० · जयशकर प्रसाद, प्र० भारती-भण्डार, इलाहाबाद, *पात्र* पु० १६, स्त्री ९, *अंक* ३, *दृश्य* ९, १०, ७।
घटना-स्थल · प्रकोष्ठ, उपवन, पथ, काशी मे श्यामा का गृह, वन्दीगृह, कोशल की राजसभा, कानन का प्रान्त, विम्बिसार का कुटीर।

यह ऐतिहासिक नाटक अतर्द्वन्द्व और बहिर्द्वन्द्व पर आश्रित है। मगध-सम्राट् विम्बिसार अपने पुत्र अजातशत्रु को राज्य देकर उपराम ग्रहण करते हे।

अजातशत्रु की माता छलना राजमहिषी

वासवी के साथ दुर्व्यवहार करती है जिससे व्याकुल होकर वह अपने पितृ-गृह कोशल चली जाती है। अजातशत्रु छलना और देवदत्त की मत्रणा से राज्य-सचालन करता है। मगध की इस घटना से कोशल-नरेश प्रसेनजित् खिन्न होकर अजातशत्रु का विरोध करते है। किन्तु उसी का पुत्र विरुद्धक अजातशत्रु के समर्थन मे अपने पिता से खुल्लमखुल्ला विद्रोह करता है। विरुद्धक को युवराज और उसकी माता शक्तिमती को राजमहिषी के पद से वचित किया जाता है।

कौशाम्बी मे वासवी की पुत्री पद्मावती के विरुद्ध षड्यन्त्र चलता है, जिसका सचालन उसकी सपत्नी मागधी करती है। वह वीणा मे सर्प रखकर यह घोषित करती है कि पद्मावती ने अपने पति उदयन की हत्या के लिए सर्प छिपाया था। इस प्रकार सम्पूर्ण प्रथम अक मे कौशाम्बी, मगध और कोशल मे विरोध की अग्नि धधकती हुई दिखायी पडती है। द्वितीय अक मे यह अग्नि और प्रज्वलित हो उठती है। अजातशत्रु और विरुद्धक एव प्रसेनजित् और उदयन सगठित होते है।

काशी का राज्य प्रसेनजित् ने यौतुक के रूप मे मगध को प्रदान किया था, किन्तु वासवी के कोशल चले जाने पर काशी राज्य के ऊपर मगध का अधिकार नही रहने देना चाहता। काशी की प्रजा कहती है, "हम लोग अत्याचारी राजा को कर न देगे जो अधर्म के बल से पिता के जीते ही सिहासन पर बैठ गया है और जो पीडित प्रजा की रक्षा भी नही कर सकता है।" अपने पुत्र को युवराज-पद से हटाने का षड्यत्र देखकर कोशल की महारानी किन्तु दासी-पुत्री शक्तिमती अपने पुत्र विरुद्धक को ललकारती है। पितृ-द्रोही विरुद्धक मागधी (जो अब वारवनिता हो गई है) से विवाह करता है। किन्तु अत मे मागधी को वहाँ से भी निराश होना पडता है और वह काशी मे बुद्ध भगवान् के उपदेश से प्रभावित होकर अपना आम्रवन बुद्ध-सघ को प्रदान कर देती है।

तृतीय अक मे भगवान् बुद्ध के प्रयास से विरोध का उन्मूलन होता है। बिबसार अपने पुत्र अजातशत्रु का तथा प्रसेनजित् विरुद्धक का अपराध क्षमा कर देते है। उदयन, पद्मावती की सहिष्णुता से प्रभावित होकर मागधी के षड्यत्र को समझ जाता है। छलना वासवी से अपराधो की क्षमा माँगती है। भगवान् बुद्ध की अनुकम्पा से कौशाम्बी, मगध और कोशल मे परस्पर-मिलन और एतदर्थ विरोध का शमन होता है।

अजामिल-उद्धार (पृ० ८०), ले० मुशी आरज़ू साहब, प्र० उपन्यासबहोर आफिस, काशी, *पात्र* पु० १६, स्त्री ५, अक ३, *दृश्य* : ७, ६, ४।
घटना-स्थल जीर्ण पर्णकुटी।

इस पौराणिक नाटक मे अजामिल के उद्धार की कथा है। नाटक के प्रारम्भ मे नारद और विष्णु भगवान् का सवाद है। भगवान् भविष्यवाणी करते है कि कन्नौज के सिधारण्य ग्राम मे बसने वाले, मेरे भक्त अलोक ब्राह्मण-दम्पती के घर एक बालक जन्म लेगा जो पितृ-भक्ति मे लीन रहेगा। मै इसी पर नारायण नाम की महिमा दिखाऊँगा। अलोक और अलोका का पुत्र अजामिल अपने माता-पिता की सेवा करता है किंतु कुसगति के प्रभाव से वह दस्यु-दल मे सम्मिलित हो जाता है। वह इतना क्रूर बन जाता है कि एक स्थान पर स्वय कहता है—"मै वह अजामिल हूँ जिसके शरीर मे हृदय के स्थान पर जड पत्थर रखा है।" वह ऐसा प्रसिद्ध डाकू बन जाता है कि राजा भी उससे हार मान लेता है और उसे राजा बनाना चाहता है। उसी समय पुरजय नामक ब्राह्मण-बालक उसके सामने आता है और कहता है कि तुमने मेरे पिता का वध किया है, मुझे भी मार डालो। ऐसे कठोर डाकू की गति उसके पुत्र नारायण के नाम से हुई। जीवन के अन्त मे वह अपने कुकृत्यो पर पश्चात्ताप करता है और मृत्यु के समय कहता है "नारायण, जल पिलाओ। मेरा कठ सूखा।" इतना कहते-कहते वह गिर पडता है और वैकुण्ठ मे पहुँच जाता है।

अजामिल-उपाख्यान नाटक (*रचना-काल १६वी शताब्दी, प्रकाशन-काल सन् १६६८,* पृ० ११), ले० : द्विजभूषण, प्र० : हिन्दी

विद्यापीठ, आगरा; पात्र . पु० ८, स्त्री २, अक और दृश्य से रहित ।
घटना-स्थल जगल, विष्णुपुरी, यमलोक ।

इस पौराणिक नाटक मे ईश्वर के नाम की महिमा का वर्णन है। जिसके नामोच्चारण से घोर पापी दासीपति अजामिल की मुक्ति हो जाती है। इसमे अजामिल नामक एक ब्राह्मण वेश्या के सम्पर्क मे आकर व्यभिचारी बन जाता है। वह अपना सारा कुटुम्ब-परिवार छोडकर वेश्या के साथ रहने लगता है। इस तरह पाप-कृत्य करते हुए उसकी वृद्धावस्था आ जाती है। उसके दस पुत्र है। एक पुत्र का नाम नारायण है। अजामिल अपने पुत्र नारायण का लालन-पालन बडे प्रेम से करता है।

इस प्रकार उसकी आयु समाप्त होने को होती है। यमदूत उसे लेने के लिए आते है। वह यम-यातना से डर जाता है और रक्षा के लिए अपने पुत्र नारायण को पुकारता है। उसी समय नारायण-ध्वनि को सुनकर विष्णु-पार्षद विमान पर चढकर आ जाते है। विष्णु-पार्षदो को देखते ही यमदूत त्रस्त होकर भाग जाते है। वे सारी बात धर्मराज से बताते है। धर्मराज अपने दूतो से चराचर जगत् मे ईश्वर के नाम की महिमा का वर्णन करते है। पापात्मा अजामिल भी उसी दिन से पुण्य-आत्मा ब्राह्मण बन जाता है तथा वेश्या को छोडकर हरिकीर्तन मे मग्न हो जाता है। अन्त मे देव-मन्दिर मे अजामिल अर्चन-पूजन तथा कृष्ण का नाम स्मरण करते हुए प्राण त्याग देता है।

अजामिल-चरित्र नाटक (सन् १९२६, पृ० ४२), ले० गौरीशकर प्रसाद मुशी उर्फ टिकैत, प्र० श्री रामेश्वर प्रेस, दरभगा, पात्र पु० २५, स्त्री ३, अक ३, दृश्य : ३, ५, ३ ।
घटना-स्थल वेश्या का घर, मदिरालय ।

कान्यकुब्ज नामक नगर का धनिक ब्राह्मण दालमडी की एक वेश्या को अपनी पत्नी बना लेता है। शर्त के अनुसार वह नया भवन बनवाकर उसके साथ रहता, मास-मदिरा का सेवन करता और भोग-विलास मे डूब जाता है, जिससे चारो ओर उसके कर्मचारी उसका परिहास करते और अपयश फैलाते है। अजामिल योगाभ्यास का बहाना बनाकर रियासत का सारा काम कर्मचारियो पर छोड स्वय वेश्या की सेवा मे लगा रहता है। वेश्या की माँग पूरी करते-करते वह कगाल हो जाता है। द्रव्य के अभाव मे वह वेश्या की माँग पूरी करने के लिए चोरी का सहारा लेता है। सेंध लगाते समय पकड लिये जाने से उसे मार भी खानी पडती है। मदिरा के लिए मदिरालयो मे भटकता है।

इधर वेश्या से उसे एक पुत्र उत्पन्न होता है। एक साधु के कहने पर उसका नाम नारायण रखा जाता है। फिर भी अजामिल जुए द्वारा धनोपार्जन कर वेश्या की इच्छा-पूर्ति करता रहता है तथा तिरस्कृत होकर घृणित जीवन व्यतीत करता है।

एक बार वह अचानक बीमार पडता है। यमदूत उसे नरक मे ले जाने के लिए आ पहुँचते है। वह अपने पुत्र को देखने के लिए उसका नाम 'नारायण-नारायण' पुकारता है, जिसे सुनकर विष्णु के दूत उसे स्वर्ग ले जाने के लिए आ पहुँचते है। यमदूत विष्णु-दूतो के प्रबल होने के कारण भाग खडे होते है। यमराज विष्णु के पास जाकर उनके दूतो के कृत्य और अजामिल के अधर्म की फरियाद करते है। अत मे विष्णु उनके सामने यह समाधान करते है—"चाहे कोई मनुष्य सदा का ही व्यभिचारी हो किंतु जब उसने किसी तरह मेरा स्मरण कर लिया तब वह मनुष्य पापात्मा न रहकर सीधा स्वर्गाधिकारी हो जाता है।"

(असम के क्षेत्रो मे अनेक बार अभिनीत।)

अजीतसिंह (सन् १९४९, पृ० १९४), ले० आचार्य चतुरसेन, प्र० गौतम बुक डिपो, दिल्ली, पात्र पु० ३१, स्त्री ८, अक ५, दृश्य . ६, ५, ७, १०, ८ ।
घटना-स्थल · राजभवन, भोजनालय, युद्ध-क्षेत्र ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे अजीतसिंह की वीरता और उसके पुत्र बख्तसिंह की क्रूरता और कायरता का वर्णन है। महाराज जसवन्तसिंह के देहान्त के समय अजीतसिंह

माँ के गर्भ मे होता है। उसी समय औरंगजेब जोधपुर पर आक्रमण करता है किन्तु ठाकुर दुर्गादास और मुकुन्ददास गर्भवती रानी को लेकर निकल जाते है। लाहौर मे अजीतसिह का जन्म होता है। बडे होकर अजीतसिह महाराजा उदयपुर की सहायता से जोधपुर का राज्य अपने अधिकार मे कर लेता है। औरगजेब बार-बार कोशिश करने पर भी सफल नही होता। जयपुर के राजा जयसिह उसकी मदद करते है। किन्तु अन्त मे मुहम्मदशाह अजीतसिह के बडे पुत्र बख्तसिह को राज्य का प्रलोभन देकर अपने वश मे कर लेता है। बख्तसिह अपने पिता अजीतसिह को भोजन मे जहर देकर मार डालता है। जिस हिन्दू राज की स्थापना के लिए वे लडते है स्वय उनका बेटा ही उनका परम शत्रु बन जाता है। इस प्रकार वीर अजीतसिह का अन्त दुश्मन से न होकर अपने पुत्र के द्वारा होता है कितु अन्तत बख्तसिह भी सफल नही होता। मुहम्मदशाह उसका भी अन्त कर देता है।

अजीब रात (सन् १९३७, पृ० ८४), ले० : बाबू गजानन्द घोडीवाला, प्र० : कृष्णगोपाल केडिया, वणिक् प्रेस, १, सरकार लेन, कलकत्ता, *पात्र* . पु० ६, स्त्री ४, अक ३, *दृश्य* ६, ५, ४।
घटना-स्थल गवरू के मकान का दालान, रास्ता।

यह एक सामाजिक नाटक है जिसमे राजनीति, मित्रता तथा सच्चे प्रेम का महत्त्व दिखाया गया है।

इसकी कथा का मूल विषय प्रेम की पवित्रता है। इसमे पाक मुहब्बत की ओर संकेत है। ताजिर का पिसर गबरू शम के वजीर हसनअली खॉ की पुत्री जमाल से प्रेम करता है। एक मालदार जौहरी कमरुद्दीन उसकी सहायता करता है। प्रेम के इस प्रसग मे गवरू और जमाल को अनेक कष्ट सहने पडते है। इन पर बादशाह और वजीर का कडा पहरा हो जाता है। प्रेमी-प्रेमिका का मिलन कष्ट-साध्य बन जाता है। किन्तु अन्त मे पाक मुहब्बत विजयी होती है। गवरू की विवाहिता पत्नी भी जमाल को अपनी बहन के रूप मे स्वीकार करती है। रोम का बादशाह महमूदशाह भी उनके प्रेम को पाक मोहब्बत मानता है और इनकी सत्य-निष्ठा से प्रसन्न होता है।

अठारह सौ सत्तावन की दिल्ली (सन् १९५९), ले० · महेश्वरदयाल, प्र० भारती साहित्य मन्दिर, फव्वारा, दिल्ली, *पात्र* पु० १३, स्त्री ६, *नाटक मजलिसों मे विभाजित है, केवल ३ मजलिस है।*
घटना-स्थल दिल्ली, चाँदनी चौक।

इस ऐतिहासिक नाटक मे १८५७ के स्वतत्रता-सग्राम के समय हुई दिल्ली की दयनीय दशा का वर्णन है। नाटक मे यद्यपि लाल किले पर होने वाले युद्ध का वर्णन है परन्तु न तो कही लाल किला है, न बादशाह है और न बेगम। बल्कि इसके सभी पात्र दिल्ली के रहनेवाले शहरी है जो कि वहाँ के कूचो और बाजारो मे ही दिखायी देते है।

अत्याचार (सन् १९४८, पृ० ७८), ले० : आनन्दप्रसाद कपूर, प्र० . उपन्यासबहार आफिस, काशी, *पात्र* · पु० १३, स्त्री ५, *अक* ३, *दृश्य* . ८, ६, ४।
घटना-स्थल राजभवन।

इस सामाजिक नाटक मे रामदास लोगो के अत्याचार से दुखी होकर भी धर्म की रक्षा करता है। रामदास एक राजा है, लेकिन लोग उसे लूटकर कगाल बना देते है। उसका पुत्र सोहन, पुत्री लक्ष्मी, दामाद बद्रीदास आदि दर-दर मारे-मारे फिरते है। लक्ष्मीकान्त उन्हे हर स्थल पर धोखा देकर परेशान करता है कितु रामदास अपने धर्म पर अडा रहता है और अन्त मे अत्याचार का अन्त होता है और धर्म की विजय होती है।

अत्याचार का अन्त (विक्रम १९७९, पृ० १३८), ले० हरगुलाल वसिष्ठ, प्र० विश्व साहित्य भण्डार, मेरठ, *पात्र* . पु० १०, स्त्री ६, *अक* . ३, *दृश्य* ९, ७, ६।
घटना-स्थल राजमहल, जगल, कारागार।

इस पौराणिक नाटक मे कस के अत्याचारो को प्रदर्शित किया गया है। नारद जी कस के अत्याचार रोकने के लिए बहुत

प्रयत्न करते है, फिर भी कस नही मानता। कृष्ण की प्रभुता का पता चलने पर वह व्याकुल हो उठता है। वह कृष्ण की हत्या करने के लिए गुप्त रूप से पूतना नाम की दुष्टा स्त्री को नियुक्त करता है। परन्तु यह भी कृष्ण का वाल-वॉका नही कर पाती। उसकी समस्त चेष्टाएँ निष्फल हो जाने पर छल द्वारा कृष्ण को निमन्त्रित कर उनका वध कराने का निश्चय करता है। एक उत्सव मे कृष्ण और वलराम को बुलाता है। वहाँ वलराम पहले मुष्टिक को मारते है, तत्पश्चात् कृष्ण व वलराम दोनो मिलकर कस का वध करते हैं। इस प्रकार कस के अत्याचारो का अन्त हो जाता है।

अत्याचार के परिणाम (विक्रम १९७८), ले०. विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक; प्र० भीष्म एण्ड व्रदर्स, कानपुर, पात्र पु० १४, स्त्री ५; अक : ३, दृश्य . ११, ७, ७।
घटना-स्थल घर।

इस सामाजिक नाटक मे अत्याचारी द्वारा किये गये अत्याचार का दुष्परिणाम दिखाया गया है। अत्याचारी दस्युदल की गोष्ठी होती है जिसमे शम्पी, व्राडी, व्हिस्की देशी-विदेशी सभी प्रकार की सुराओ का गुणगान किया जाता है। जीवन का वास्तविक आनन्द लूटने के लिए मद्यपान को अनिवार्य वताया जाता है। ये मद्यप डाकू अनेक प्रकार के कष्ट सहते हुए दिखायी पडते है और उन्हे अपने किये गये अत्याचारो का फल भी मिल जाता है। दस्यु दल के अत्याचार के मूल मे मद्यपान ही है। वह मद्यप न्याय-अन्याय, धर्म-अधर्म, कर्तव्याकर्तव्य का विवेक भूल जाता है और अन्त मे अत्याचारी जीवन के दुष्परिणामो को भोगकर पश्चात्ताप करते हुए ससार से विदा हो जाता है।

अत्याचारी औरंगजेब (सन् १९२९,पृ०१५५), ले० : नत्थीमल उपाध्याय 'वेचैन', प्र० : उपाध्याय एण्ड कम्पनी, उदयभानु गज, धौलपुर, पात्र पु० ३५, स्त्री ९, अक ३, दृश्य ७, ९, ८।
घटना-स्थल : औरगजेव का महल, अजमेर, उदयपुर महल का एक भाग, चित्तौड का समर-क्षेत्र, जोधपुर, दिल्ली का दरवार।

इस ऐतिहासिक नाटक मे औरंगजेव की कूटनीति और अत्याचार का वर्णन किया गया है।

अत्याचारी औरगजेव अपने पिता शाहजहाँ को सिंहासन से उतार कर उसे अपनी वहिन जहाँनारा सहित आगरे के किले मे कैद करता है और अपने भाइयो को युद्ध मे परास्त करके दिल्ली के राजसिंहासन पर बैठ जाता है। वह लेखक को इतिहास लिखने, कवि को कविता वनाने तथा भक्त को देवता-पूजन करने से वर्जित करता है। वादशाह के हुक्म के खिलाफ काम करने पर कथावाचक, पडित और श्रोतागण वन्दी वना लिये जाते है।

औरगजेव पृथ्वीसिंह की वीरता और ताकत की परीक्षा लेना चाहता है जिससे क्षत्रिय कुमार पृथ्वीसिंह और औरगजेव मे घोर सग्राम होता है। पृथ्वीसिंह के आक्रमण से वह पृथ्वी पर गिर जाता है। थोड़े ही समय मे पृथ्वीसिंह को विषाक्त वस्त्र पहनाया जाता है और वह विष की गर्मी से धराशायी हो प्राण त्याग देता है। औरगजेव भी मृत्यु के उपरान्त दोजख मे अनेक असह्य यन्त्रणाएँ भोगता है, अंत मे दु खी होकर हाथ जोडते हुए कहता है—"मुझे माफ कर दो, माफ कर दो।"

अथ रामचरित्र नाटक (सन् १८९४), ले० . पं० जयगोविद मालवीय, प्र० सरस्वती यन्त्रालय, प्रयाग, पात्र . पु० १०, स्त्री ६।
घटना-स्थल अयोध्या से लेकर लका तक।

भगवान राम को लोकप्रिय राजा, मानवीय गुणो से परिपूर्ण मर्यादा-पुरुषोत्तम के नाम से पुकारा गया है। यह धार्मिक नाटक रामलीला को मच पर खेलने के लिए लिखा गया है। इसमे ८ दिन की क्रमवद्ध वन-यात्रा से लेकर लंकेश के वध तक की लीला है। प्रत्येक दिन एक लीला दिखायी गयी है।

अथ हास्यार्णव नाटक (सन् १८८५,पृ०७४), वावू गोकुलचंद (भारतेन्दु जी के छोटे भाई

की आज्ञा से प्रकाशित, प्रथम सस्कार रस रूप, वाराणसी सस्कृत यत्रालय—विक्रम १९२३, पृ० ५२) हास्यार्णव, ले० हि० स० प० मन्नालाल; प्र० . भारतजीवन प्रेस, बनारस, फाल्गुन शुक्ल १०, सोमवार, सवत् १९४१; *पात्र* . पु० २४, स्त्री ७, *अक* ९, *दृश्य नही, दृश्य-विधान* कोई नही ।

इसमे स्वॉग दिखाने वाला नट अपनी करतूतो की झूठी डीग मारता है । महाराज तैलगपति कामरूप के नटो को आमत्रित कर स्वॉग दिखाने का आदेश देते है। एक नट कहता है कि मै मनुष्य को पशु बना सकता हूँ, चाहूँ तो आग बरसा दूँ, चाहूँ तो जल-वर्षा से प्रलय का दृश्य उपस्थित कर दूँ । अर्जुन को बकरी और भीमसेन को भेडा बना डालूँ । राजा आदेश देता है कि उस अन्यायी राजा का अभिनय दिखाओ जिसकी अनीति से उस वश का विध्वस हुआ । नट भगदत्त राजा के वश का परिचय देते हुए कहता है कि इस व्यभिचारी राजा के कुल मे मन्द-मति सात ब्राह्मणो का वध करता है। उसी के वश मे गर्दभराज होता है जो गर्दभो से सतत युद्ध करता है। उसके बेटे चिपाग का पुत्र हरिबोग है जिसका काम है—

"आश्रम बर्न अधर्मरत, विगत लोक मर्जाद ।
परद्रोही परदारप्रिय, परधन पर अपवाद ।।"

त्रिभगा नामक नटी अपना परिचय देती है और भूमिका प्रारम्भ होती है । महीपाल का आगमन होता है, वह उसकी वेशभूषा का वर्णन करता है। तदुपरान्त कुमति, वधुरा, विश्वभड, कलहाकुर, व्याधिसिधु, नामित, वनिक, मिथ्यावर्णन, मदनाकुश, हत्याशाति, निरकुशाकिकरी, कला ब्रह्मचारिणी, दीर्घ-लिग, क्रियाचतुरता, अधकवि, प्रवेश, अच्युतानद दीक्षित आदि अपनी करतूते दिखाते है जिससे हँसी का वातावरण उत्पन्न होता है। नाटक के अत मे मिलने का पता इस प्रकार है—

जिस किसी को लेना हो सो बनारस त्रिपुर भैरवी महाल मे पालाजी के छत्ते के पास वाराणसी सस्कृत यत्रालय मे मिलेगी ।

कुवार वदी चौथ, बृहस्पतिवार, स० १९२३,

लिपिकार—गणपति

श्री गौडेन्द्र द्विजेन्द्रकर नाम सु गनपति जासु ।
हास्यार्णव रसरूप कृत तेहिने कर्यौ प्रकाश ।।

अद्भुत नाटक (सन् १८८५, पृ० १२), ले० कमलाचरण मिश्र, प्र० भारतजीवन प्रेस, बनारस, *पात्र* 'पु० ४०, स्त्री ६, *अक* ९ *दृश्य नही ।*
घटना-स्थल जगल, आश्रम, गॉव, पर्वत, इन्द्रपुर ।

यह अवधूत प्रसगो से सग्रथित काव्य-नाटक है । इसमे अवधूतो की विविध कथाएँ वर्णित है । एक बार अवधूत सपथूदास को वृद्धावस्था मे पत्नी की इच्छा होती है। वे अपने मित्र झुनकानन्द, झाडूगिरि, काणानन्द तथा शिष्य मडूक के साथ दैत्यपुर गॉव मे भाटक कजरी की पुत्री से शादी करने के लिए जाते है । अनेक प्रकार की कठिनाइयो को झेलते हुए सपथूदास कजरी का ब्याह कर लाते है । अपने आश्रम मे पहुँचने पर वे अपने ऊपर गुजरी आपत्तियो को याद करके बहुत रोते है । गुरु मुछन्दर के समझाने-बुझाने पर सब शान्त हो जाते है। काफी दिन बीत जाने के वाद आश्रम मे विजयानन्द जी आते है । वे सपथूदास तथा मुछन्दरगिरिको मुक्ति का मार्ग बताते है जिस से सपथूदास को मोक्ष का ज्ञान हो जाता है और वह अपनी नई पत्नी कजरी के व्यवहार से दुखी होकर गुरु मुछन्दर सहित योगाभ्यास के लिए रमणीक स्थान की खोज मे चल पडते है। मार्ग मे उन्हे परमहस सन्यासी दिखाई देते है । वे अपना सारा अवधूतपन छोडकर परमहस के शिष्य बन जाते है, और अन्त मे रमणपुरी चले जाते है, वहाँ ब्रह्मा, विष्णु, महेश, धर्मराज और यम अपने सहायको सहित विराजमान होते है ।

अधर्म का अन्त या कुन्दन कसौटी नाटक—(सन् १९१९, पृ० १२८), ले० मोहनलाल गुप्त 'रसिया', प्र० . ललितकुमारसिह नटवर, पात्र पु० १३, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* ८, ७, ६ ।
घटना-स्थल देवलोक, जंगल, दरबार ।

इस पौराणिक नाटक मे अधर्म द्वारा

धर्म पर किये गए अत्याचारो का वर्णन है। अधर्म अपने को श्रेष्ठ समझकर धर्म से अधीनता स्वीकार कराना चाहता है। धर्म अस्वीकार करता है और उसे समझाता है। अत मे अधर्म क्रुद्ध होकर धरमपुर के धार्मिक राजा धर्मसेन पर सरहदी लुटेरो के सरदार अकटक खॉ द्वारा आक्रमण कराकर उन्हे घोर सकट मे डाल देता है। राजा, उसके छोटे पुत्र चन्द्रसेन तथा चन्द्रसेन की स्त्री को वदी वनाकर जवरदस्ती अधीनता स्वीकार करने को वाध्य किया जाता है। माया की मूर्ति माया द्वारा चन्द्रसेन के वडे भाई फाकसेन पर सौंदर्य और विलासिता का जादू डाल देता है जिससे वह अपनी सती नारी को अकारण त्याग कर शत्रु पक्ष से मिल जाता है। फिर अकटक खाँ के आज्ञानुसार जल्लाद चन्द्रसेन को मारने के लिए जगल मे ले जाता है। अकस्मात् कामसेन की पत्नी द्वारा चन्द्रसेन की प्राण-रक्षा होती है, अत मे वह धर्म रूप श्रीकृष्ण के दर्शन का अनुभव सा करता है। उधर अधर्म का काम वनाकर माया के अन्तर्धान होने पर कामसेन की माया-निद्रा टूटती है। तत्पश्चात् दोनो भाई शत्रु का नाश करते है। इस प्रकार धर्म की विजय और अधर्म की पराजय होती है।

अधूरा चित्र (सन् १९६७, पृ० १०४), ले० रामनिवास सनातन, प्र० वनसल वधु प्रकाशन, रोहतक, पात्र . पु० ५, स्त्री २, अक . ३, दृश्य ३, ३, ३।
घटना-स्थल राजभवन।

इस राजनीतिक नाटक मे राजा के अधूरे कार्य को मत्री की सन्तान द्वारा पूर्ण होते दिखाया गया है। महाराज नगेश जनता मे सुख-शाति की स्थापना करना चाहता है, किन्तु दस्युराज उनपर आक्रमण कर जनता के सुख-वैभव को जवरन छीनने का प्रयास करता है। इसी सघर्ष मे महाराज की मृत्यु हो जाती है। शाति का उनका अधूरा चित्र पूरा नही हो पाता है पर उनके महामत्री की कन्या किरण ज्योति और भालू भैया उसे पूरा करने के लिए प्रयास करते है।

अधूरी आवाज (सन् १९६२, पृ० ७७), ले० कमलेश्वर, प्र० आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, *पात्र* पु० ११, स्त्री १, *अक* ३, *दृश्य नही।*
घटना-स्थल आधुनिक ड्राइगरूम।

प्रस्तुत नाटक मे मनोविज्ञान के द्वारा सामाजिक समस्या का उद्घाटन किया गया है। इसमे विवाह की समस्या को आधार वनाकर समाज मे धनी-गरीव के भेदभाव को स्पष्ट करने का प्रयास मिलता है। राजेन्द्र एक धनी व्यक्ति है जिसकी प्रवृत्ति धन-संग्रह की है। वह नीलिमा नामक गरीव लडकी के साथ शादी करने से इनकार कर देता है। नीलिमा धनी वर्ग के अत्याचार और अर्थ-लोलुपता को देखकर वहुत दुखी होती है और अत मे आत्महत्या कर लेती है। उसकी आत्महत्या का प्रभाव उसकी छोटी वहन रजना पर भी पडता है जिससे वह भी मानसिक रूप से अत्यन्त रुग्ण हो जाती है।

यह नाटक इलाहावाद के आफिसर्स ट्रेनिंग स्कूल मे 'अजन्ता' द्वारा १९ दिसम्वर,१९५४ को अभिनीत हुआ।

अधूरी मूर्ति (सन् १९६८, पृ०९०), ले० : गोविंदवल्लभ पत, प्र० राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, *पात्र* पु० ६, स्त्री ४, *अक* . ४, *दृश्य नहीं है।*
घटना-स्थल दरवार, घर।

यह नाटक प्रसिद्ध लुटेरे नादिरशाह के भारत-आक्रमण की घटना पर आधारित है। जव नादिरशाह इस देश पर आक्रमण करता है तो उच्च वर्ग के हिन्दू-मुसलमान पारस्परिक कलह के कारण उसका सामना नही कर पाते। पर इस देश का निम्न वर्ग अपने देश की मान-मर्यादा वचाने के लिए नादिरशाह का मुकावला करता है। नादिरशाह कोहनूर हीरा लूटकर ले जाता है फिर भी वह भारतीय वीरता से आतकित होकर लौटता है।

इसका प्रथम अभिनय १५ जनवरी, १९६३ को प्रयाग मे हुआ।

अनघ (सन् १९२७, पृ० १३६), ले० : मैथिलीशरण गुप्त, प्र० : साहित्य सदन, चिरगाँव (झाँसी), *पात्र* . पु० १२, स्त्री १; *अक :*

अक के स्थान पर विभिन्न शीर्षक दिये गये है।
घटना-स्थल अरण्य, चौपाल, उद्यान, कारागार, न्याय-सभा आदि।

सत्य, अहिंसा, मानव-चेतना तथा साम्यवाद के सिद्धान्तो पर आधारित एक गीतिनाट्य है। इसमे बुद्ध के साधनावतार रूप मे मद्य नामक पात्र के सत्य, अहिंसा, लोक-सेवा और त्याग को दिखाया गया है।

प्रारभ मे लुटेरे बुद्ध के साधनावतार मद्य को लूटना चाहते है, किंतु उसकी तेजस्विता से प्रभावित होकर लौट जाते है। मद्य गॉव की सफाई, रोगियो की सेवा आदि कार्यो मे व्यस्त रहता है। सुरभि नामक एक युवती मद्य के सद्गुणो से प्रभावित होकर उससे प्रेम करने लगती है किन्तु वह इस प्रेम को सेवाव्रत मे परिवर्तित कर देता है। मद्य की लोकप्रियता के कारण उसके शत्रु षड्यन्त्रो की रचना करते है। दुष्टो द्वारा गायो की चोरी होने, घर के जलने तथा प्राणघातक प्रहार आदि होने पर भी वह अपना सत्पथ नही त्यागता। इस नाटक मे चोर, सूर, साधन आदि पात्र गाधी जी के हृदय-परिवर्तन का व्यावहारिक रूप प्रस्तुत करते है। इसमे गाधीवाद को युग-सन्देश के रूप मे प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक युग की विषमताओ का एकमात्र उपाय गाधी के सत्य, अहिंसा तथा सेवा-मार्ग को माना गया है। सुरभि तथा मॉ का जीवन सेवा-भाव मे ही समाप्त होता है। सुरभि की प्रणयाकाक्षा तथा मॉ के वात्सल्य का उत्कर्ष मद्य की युग-साधना मे अन्तर्भूत हो जाता है। अतिम दृश्यो मे जन-सेवा-विरोधी दुर्जन मुखिया तथा मद्य को वन्दी बनाकर अहिंसा पर कुठाराघात करते है। सुरभि इसका रहस्योद्घाटन करती है और इससे मद्य और उसके साथियो की मुक्ति के साथ षड्यन्त्रकारी दडित होते है। इस प्रकार इस गीति-नाट्य मे स्वार्थ, असत्य तथा हिंसा पर त्याग, सत्य और अहिंसा की विजय प्रदर्शित की गयी है।

अनन्ता (सन् १९५९, पृ० १२६), ले० कचनलता सब्बरवाल, प्र० कितावमहल, इलाहावाद, *पात्र* पु० ११, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* ७, ६, ९।
घटना-स्थल विशाल मदिर, सिंहासन, थानेश्वर का राजपथ।

इस नाटक मे थानेश्वर के वर्धनो, मालवा के गुप्तो और कन्नौज के मौखरी राजाओ की पारस्परिक स्पर्धा, शत्रुता एव मैत्री का सवादात्मक वर्णन है। इसका कथानक प्रसाद के 'राज्यश्री' नाटक से मिलता-जुलता है। राजकुमार देवगुप्त महासेन गुप्त के पश्चात् कुछ काल के लिए मालवा के सिंहासन पर बैठने मे सफल होते है। वह राज्यश्री के पति मौखरी-नरेश ग्रहवर्मा की षड्यत्र से हत्या करा देते है और राजश्री को वन्दिनी बना लेते है। राज्यवर्धन कन्नौज पर आक्रमण कर अपनी बहिन राज्यश्री को कारागार-मुक्त करते है। देवगुप्त शशाक से मैत्री करके उनके द्वारा हर्ष के ज्येष्ठ भ्राता राज्यवर्धन की भी हत्या करा देता है। गुप्त-साम्राज्य के स्वर्गीय बलाधिकृत की कन्या अनन्ता का प्रेम देवगुप्त के प्रति है। अनन्ता आजीवन देवगुप्त को सन्मार्ग पर लाने का प्रयत्न करती है पर वह अपने मद मे प्रेमिका की सद्भावनाओ की उपेक्षा करता है। इह नाटक मे एक नया कथानक सम्राट् महासेन गुप्त की भगिनी अथवा हर्षवर्धन की मॉ का भी जोड दिया गया है। पर उसकी उपयोगिता अधिक नही प्रतीत होती। अनन्ता का चरित्र एक दुखी नारी की दुर्दशा का परिचायक है। नाटक के अन्त मे अनन्ता देवगुप्त का शव गोद मे रखकर विलाप करती है—"चलो, अब दोनो साथ चलेगे ···। इस जीवन मे इन शरीरो से कभी भी एक मार्ग पर चल नहीं सके, किन्तु अब जीवन के परे···हम साथ-साथ चले।"

अनर्घल चरित्र महानाटक (सन् १९०८, पृ० १९३) ले० गगाविष्णु श्रीकृष्ण दास, प्र० लक्ष्मीवेकटेश्वर छापाखाना, कल्याण, बम्बई, *पात्र* पु० १०, स्त्री ८; *अक* १०, *दृश्य नही है।*
घटना-स्थल . स्वयवर-स्थल, जगल।

प्रस्तुत नाटक राजा नल के चरित्र का विस्तृत वर्णन करता है। राजा नल को स्वयवर मे दमयन्ती वरण करती है परन्तु कलि नल के विनाश पर तुला है। परिणामस्वरूप बहुत वर्षो के पश्चात् राजा नल अपने

भ्राता से जुए मे हार जाते है और दमयती के साथ राज्य से निकलकर जगल मे चले जाते है।

दोनो अनेक कष्ट सहते है। एक दिन दमयन्ती को कष्ट से बचाने का उपाय सोचते हुए नल उसे अकेली जगल मे छोडकर चले जाते है। वह अनुमान लगाते है कि दमयन्ती अपने पितृगृह चली जायेगी। अत मे नल और दमयन्ती का पुनर्मिलन दिखाया गया है।

अन्नदाता माधव महाराज महान (सन् १९४३, पृ० ९६) ले० वेचन शर्मा उग्र, प्र० मानकचन्द बुक डिपो, उज्जैन, पात्र पु० ८, स्त्री २, अक ३, दृश्य ९, ९, ९। घटना-स्थल उज्जैन के 'कालियादह महल' के पास अच्छा-खासा गाँव शिवपुरी।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। इसमे माधव महाराज के उदार चरित्र पर प्रकाश डाला गया है। माधव महाराज मराठा-पल्टन के शहसवारो की सरदारी करते है और ऑफिस का भी काम करते है।

नाटक मे धनिक लाल, कस्तूरी, गगादीन सभी कल्पित पात्र है। ऐतिहासिक पात्र केवल तीन है—माधव महाराज, नाना (जनरल नाना साहबसिदे बडौदे), रामजीदास वैश्य। सन् १९२७ के मराठी मासिक 'रत्नाकर' मे माधव महाराज पर नाना साहब का एक गभीर लेख प्रकाशित हुआ जिसके आधार पर यह नाटक लिखा गया।

कस्तूरी मास्टर धनिक लाल की पोती है। वह नारी-जीवन को ही नरक समझती है। मरने के लिए वह जहर खा लेती है लेकिन माधव महाराज उसे बचाने का प्रयत्न करते है। वह बचने योग्य भी हो जाती है। परन्तु इसी बीच उसके दादा मास्टर धनिक लाल की मोटर-दुर्घटना मे मृत्यु हो जाती है। उनकी लाश को देखते ही कस्तूरी की भी मृत्यु हो जाती है।

अनारकली (वि० २००९) ले० आचार्य सीताराम चतुर्वेदी, प्र० अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशी, पात्र पु० ४, स्त्री २, अक ३, दृश्य ६, ५, ५। घटना-स्थल अन्त पुर का उद्यान।

इस एतिहासिक नाटक मे नादिरा (अनारकली) का प्रेम के लिए बलिदान दिखाया गया है। शहजादा सलीम नायिका नादिरा से प्रेम करता है। नादिरा का गाना सुनकर बादशाह अकबर उसे अनारकली की उपाधि देते है. नाटक की खलनायिका हमीदा भी शहजादे सलीम से प्रेम करती है। अत. नादिरा के प्रति शहजादे सलीम का प्रेम-देखकर ईर्ष्या करने लगती है। सम्राट् के मन्त्री अबुलफजल सलीम और नादिरा के प्रेम-व्यापार से अवगत होने पर दोनो पर निगरानी रखते है।

इधर हमीदा सलीम के नाम से नादिरा को पत्र लिखकर बादशाह अकबर के आरामगाह मे डाल आती है। बादशाह अकबर पत्र पढकर क्रोधाग्नि मे जलने लगते है और अपने मन्त्री अबुलफजल को सावधान करते है। सलीम अबुलफजल को नादिरा के निर्दोष होने का पत्र लिखता है। अबुलफजल पत्र का उत्तर नमाज का समय हो जाने से नही देता है। सलीम कोई न उत्तर पाने पर अबुलफजल को दुरभिसधि मे शामिल समझता है।

बादशाह अकबर अबुलफजल के कहने पर नादिरा की जान बख्श देता है किन्तु सलीम और नादिरा के मिलन पर प्रतिबन्ध लगाता है। प्रतिबन्ध का पता चलते ही नादिरा सलीम-प्रदत्त अँगूठी की कनी निकाल कर खा जाती है। अबुलफजल को केवल नादिरा की लाश मिलती है। वह नादिरा की कब्र बनवा देते है। इधर सलीम षड्यन्त्र रच कर अबुलफजल की हत्या करा देता है। जब सलीम को पता चलता है कि अबुलफजल नादिरा को कैद से मुक्त करवा रहे थे तो उसे बडा पश्चात्ताप होता है। बादशाह अकबर को अबुलफजल की मृत्यु पर दुख होता है। अकबर कहते है—"सलीम, अगर तुम बादशाह होना चाहते थे तो मुझे मार डालते, अबुलफजल को जिन्दा रहने देते। देख रहे हो, सारा शहर रो रहा है।"

हमीदा के जाली पत्र का रहस्य-उद्घाटन होने पर उसे निर्वासित किया जाता है। सलीम अनारकली की कब्र पर बैठकर रोता है और रोते-रोते मूर्च्छित हो जाता है।

अनोखा वलिदान (वि० १९८५), ले० उमाशंकर सरमडल, प्र० . उमेश पुस्तक भंडार, अजमेर, *पात्र* . पु० १५, स्त्री २ ।
घटना-स्थल घर।

इस सामाजिक नाटक मे नायिका चचला को आदर्श भारतीय नारी के रूप मे चित्रित किया गया है। वह शिक्षिता होकर भी पति की श्रद्धा के साथ सेवा करती है। चंचला के पति तेजसिंह ऐसे पुरुप है जिनकी मनोवृत्ति मध्यकालीन है और जो स्त्री-शिक्षा मे विश्वास नही रखते। किंतु चचला पति मे अटूट श्रद्धा रखते हुए उनकी स्त्री-शिक्षा-सवधी मान्यताओ का विनम्र भाव से खण्डन करती है। स्त्री-शिक्षा के प्रचार मे वह अपना वलिदान कर देती है।

अपना-पराया (सन् १९५३), ले० राजा राधिकारमणप्रसादसिह, *पात्र* . पु० १४, स्त्री ५, *अक* ३, *दृश्य* ३, २, २ ।
घटना-स्थल विवाह-मण्डप नगर के दृश्य आदि।

इस सामाजिक नाटक मे एक नि.स्वार्थ समाजसेवी प्रेमनाथ और गुण्डा यूसुफ की करतूतो का समाज पर परिणाम दिखाया गया है। प्रेमनाथ समाजसेवी आर्यसमाजी है, जो अपने पुत्र सुरेश और उसके सहयोगियो की सहायता से वेला नामक युवती की गुण्डो के दल से रक्षा करते है। अव वेला के विवाह का प्रश्न सामने आता है। समाज का कोई भी भद्र व्यक्ति उस युवती को ग्रहण नही करना चाहता। अत वे अपने पुत्र सुरेश को ही वेला से विवाह करने के लिए वाध्य करना चाहते है। पर सुरेश का प्रेम रानी नामक लडकी से है। अव प्रेमनाथ सकट मे पड़ जाते है और एक मार्ग निकालते है। वह सुरेश से कहते है कि पहले तुम वेला के गले मे माला डाल दो और कुछ दिनो के वाद अध्ययन के वहाने मे नगर मे जाकर रानी से विवाह कर लेना, मैं लाहौर मे वेला के लिए उचित प्रवन्ध कर दूँगा। सुरेश पिता की आज्ञा मान लेता है और दोनो का विवाह हो जाता है। यूसुफ नामक व्यक्ति वेला और सुरेश की फोटो रानी को दिखा देता है और वह सुरेश की दी हुई अँगूठी दीनू नामक नौकर को प्रदान करती हुई कहती है—"वह रानी तो कभी की मर चुकी, यह तो रजिया वोल रही है, रजिया।" और वह अपना नाम रानी से रजिया रख लेती है।

वेला की अवैध सन्तान का नाम रणवीर पडता है क्योकि वह सुरेश के साथ व्याह से पूर्व ही गर्भवती थी। सुरेश सन्तान को स्वीकार नही करना चाहता किन्तु उसका पिता उदार विचारो का है। वह सन्तान की रक्षा करता है। सुरेश असहयोग आन्दोलन मे भाग लेने के कारण कारावास भेज दिया जाता है। किन्तु जेल जाने से पूर्व रजिया (रानी) से उसका साक्षात्कार होता है जिससे उसे ज्ञात होता है कि वेला की सन्तान का उत्तरदायी यूसुफ है और रानी की सन्तान सुरेश की है।

सुरेश और रजिया का पुत्र गुलाव है। वेला की दूसरी सन्तान सुरेश की पुत्री मीरा है जिसे गुलाव यूसुफ की प्रेरणा से भगा लेना चाहता है। पर मीरा का वडा भाई रणवीर सुरेश-परिवार के ससर्ग मे साहसी समाज-सुधारक वन जाता है और प्राणो पर खेल कर अपनी वहन के सतीत्व की रक्षा करता है।

यह एक सामाजिक नाटक है जिसमे यूसुफ जैसे पापात्मा खलपात्र और प्रेमनाथ जैसे उदार समाज-सुधारक विद्यमान हैं। नाटक के अन्त मे प्रेमनाथ समाज के कल्याण के लिए भरत-वाक्य के रूप मे भगवान से प्रार्थना करते है।

अपनी कमाई, ले० . राजेन्द्रकुमार शर्मा, प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, *पात्र* पु० ११, स्त्री २, *अंक* ३, *दृश्य नहीं है।*
घटना-स्थल क्लव, घर, ड्राइंग-रूम।

इस सामाजिक नाटक मे रिश्वत की समस्या उठायी गयी है। खुल्लमखुल्ला रिश्वत लेने वाले मि० वर्मा अपनी पत्नी के अनुरोध पर यह कुकृत्य छोड देते है। मि० वर्मा सरकारी अधिकारी है अत उनके हाथ मे अधिकार है। उस अधिकार से अनुचित लाभ उठाने वाले चपतराय और चदन मि० वर्मा और उसकी पत्नी को विविध भाँति के प्रलोभन देने मे सलग्न है। किन्तु वर्मा की पत्नी सभी प्रकार के प्रलोभनों का तिरस्कार

करती है और स्वय थोडे मे निर्वाह का मार्ग दिखाकर पति को इस कुकृत्य से बचा लेती है।

अपनी धरती (सन् १९६३, पृ० ८९), ले० रेवतीसरन शर्मा, प्र० नेशनल पब्लिशिग हाउस, दिल्ली, *पात्र* पु० ४, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* ३, ३, २।
घटना-स्थल गाँव का एक मकान, आँगन, रसोई।

यह नाटक १९६२ के भारत-चीन युद्ध का दृश्य उपस्थित करता है। इस युद्ध के समय भारतीय वीर सैनिक और उसके परिवार का त्याग और बलिदान दिखाया गया है।

इसमे एक ऐसे देशभक्त सैनिक की कथा है, जो अपने देश के लिए सब-कुछ बलिदान कर देता है। बलवतसिंह अपनी माँ को अकेला घर छोडकर युद्ध के लिए जाता है और अपनी आँखे और पाँव खो बैठता है। लेकिन उसकी माँ हिम्मत नही हारती। उसे अब भी आशा है कि बेटा शीघ्र ही अच्छा होकर दुश्मनो से फिर लडने जायेगा।

इस कथा के अतिरिक्त लेखक गाँव की अन्य समस्याओ की ओर भी सकेत करता है। दिल्ली की नाट्य-संस्था 'कला साधना मदिर' द्वारा इसका प्रदर्शन हो चुका है।

अपराजित (विक्रम २०१८, पृ० १४५), ले० लक्ष्मीनारायण मिश्र, प्र० कौशाम्बी प्रकाशन, दारागज, इलाहाबाद, *पात्र* . पु० १२, स्त्री ४, *अक* २, *प्रत्येक अक मे एक ही दृश्य है।*
घटना-स्थल कुरुक्षेत्र की समरभूमि, रणभूमि मे बाणो की शैया, गगा-तट।

इस पौराणिक नाटक मे ब्राह्मण-पुत्र अश्वत्थामा को युद्ध मे अपराजित सिद्ध किया गया है। इस नाटक का नायक अश्वत्थामा और नायिका उसकी पत्नी माधुरी है। माधुरी गाधारी के पुरोहित की कन्या है। वह जितनी धर्मविद्या मे निपुण है उतनी ही गन्धर्व-विद्या मे भी। वह सजीवनी विद्या भी विधिवत् जानती है। उसकी हार्दिक अभिलाषा है कि वह पुरुष-वेष मे अश्वत्थामा की सारथी बन कर रणनीति का सचालन करे। वह अपने पति से कहती है कि भवानी की अशरूपिनी मै हूँ और शकर के अश-रूप तुम हो। अश्वत्थामा उसे सारथी बनने की अनुमति दे देते है। विरोचन द्वारा अपने पिता का युद्ध-क्षेत्र मे अस्त्रशस्त्र त्याग समाधिस्थ होना जानकर अश्वत्थामा व्याकुल हो जाता है। वह अति क्रुद्ध होकर कुरुक्षेत्र मे माधुरी-सहित घोर सग्राम करता है। वह पाण्डु-पुत्रो को मारने के प्रयास मे धोखे से पाण्डवो के अन्य पाँच पुत्रो को मार डालता है। इधर युद्ध मे कुरुराज भी असह्य पीडा से आतुर होते है। पराजित कुरुराज की समस्त धन-धरती पर पाण्डव अपना अधिकार जमाना चाहते है, लेकिन अश्वत्थामा इसका विरोध करता है। वह पराजित कुरुराज का प्रतिनिधि बनकर सामने खडा हो जाता है, और पाण्डवो को पुन युद्ध के लिए ललकारता है। पाण्डव युद्ध को टालना चाहते है और उस पर पाण्डव-पुत्रो के वध का अभियोग लगाते है। आहत कुरुराज की असह्य वेदना देखकर शत्रुओ पर वह ब्रह्मास्त्र छोडता है। इधर अर्जुन भी अपने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करता है। दोनो के टकराव से अग्नि की वर्षा होने लगती है। व्यास जी वहाँ ब्रह्मास्त्र के नियत्रण की आज्ञा देते है। अर्जुन का अस्त्र भानुमती के मणि का हरण करता है। द्रोण-पुत्र अश्वत्थामा को मृत्यु से भी अपराजित रहने का वरदान प्राप्त होता है। तथा अन्त मे सभी अपराजित अश्वत्थामा की जय-जयकार बोलते है।

अपराधी (सन् १९५६), ले० पृथ्वीनाथ शर्मा, प्र० हिन्दी भवन, जालधर, *पात्र* पु० ८, स्त्री ५; *अक* ३, *दृश्य* ५, ६, ५।
घटना-स्थल उद्यान, गली, बन्दीगृह।

इस सामाजिक नाटक मे एक सामान्य नारी का उदात्त चरित्र दिखाया गया है। इस मे अशोक नायक है और लीला नायिका। बाल्यकाल मे ही अशोक माता-पिता की छाया से वचित रह जाता है। वह अपने चाचा नदगोपाल के सरक्षण मे एम० ए० तक उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। पर चाचा के आदेश के विरुद्ध वह पुलिस की मिलती हुई नौकरी छोडकर साहित्यिक जीवन बिताना चाहता है। इस पर रुष्ट होकर चाचा उसे घर से

निकाल देता है। घर से निकल कर अशोक अपनी सपनो की रानी लीला के पास जाना चाहता है लेकिन अपनी दयनीय दशा से लज्जित हो वहाँ नही जा पाता। इसी अन्तर्द्वन्द्व मे वह एक अँधेरी गली मे घूमता हुआ एक चोर पकडता है लेकिन दयार्द्र हो उसे छोड देता है। चोर का पीछा करने वाले अशोक को ही चोर समझ कर हवालात मे ले जाते है। चोर द्वारा सफाई से डाली गई घडी उसकी जेब मे मिलती है जिससे वह चोर साबित हो जाता है। मैजिस्ट्रेट राजकिशोर अशोक को आदर्शवादी और प्रतिभाशाली जानते हुए भी नही छोडते। लीला और रेणु अशोक को जमानत पर छुडाकर असली चोर को खोजने का प्रयत्न करती है।

अशोक फैसला सुनने के लिए अदालत मे हाजिर होता है। इतने मे असली चोर मातादीन घडी की सोने की चैन दिखलाकर अपना अपराध स्वीकार कर लेता है। अशोक लीला और रेणु को लेकर पार्क मे जा पहुँचता है और उन्हे अपनी मुक्ति और असली चोर के जेल जाने की बात बताता है। यह सुनते ही वहाँ उपस्थित आया के मुँह से एक सर्द आह निकल जाती है जिससे अशोक को यह पता चल जाता है कि वह चोर आया का प्रेमी है, जिसकी प्रेरणा से वह अदालत मे जाकर अपना अपराध स्वीकार कर लेता है। यह सुनकर रेणु आया के महान चरित्र की बहुत सराहना करती है।

अपराधी कौन *ले०* रमेश मेहता, *प्र०* चौ० बलवन्त प्रकाशन, नई दिल्ली, *पात्र* पु० ५, स्त्री २, अक ३।
घटना-स्थल घर।

इस सामाजिक नाटक मे तथाकथित हत्यारे की आत्म-हत्या दिखाई गई है। रघुनाथ राय पर एक सेठ की हत्या का झूठा आरोप लगता है अत वह वेश बदलकर अपने को साधु भगवतीप्रसाद बताता है। उसकी बहन रजना राज से प्रेम करती है और पुत्र सुधीर उषा से प्रेम करता है। एक दिन भगवतीप्रसाद का पुराना पडोसी कालीचरन उससे 'ब्लैक मेल' का प्रयत्न करता है। क्योकि उसे छद्मवेशी भगवती का रहस्य ज्ञात था। इसी बीच रंजना को यह पता चलता है कि उसका प्रेमी विवाहित है। रजना उसे दुत्कारती है, किन्तु वह प्रेमपत्र दिखाकर उसे ब्लैकमेल करना चाहता है। सुधीर अपने प्रयत्नो से रजना की इज्जत बचा लेता है क्योकि वह भी रजना के प्रेमी की बहिन से प्रेम करता था और उसके प्रेम-पत्र भी सुधीर के पास थे। भगवतीप्रसाद अपनी बहिन का रिश्ता एक जगह पक्का कर देता है। मँगनी वाले दिन कालीचरण भगवतीप्रसाद से रुपये लेने आता है, परन्तु वह ब्लैकमेल से बचने और अपने पुत्र और बहिन के भविष्य के लिए आत्महत्या कर लेता है। ब्लैकमेल करने वाले कालीचरण का रहस्य भी उसे मरते समय ज्ञात होता है।

अपूर्व दाम्पत्यम् (सन् १८८६, पृ० ४४), *ले०* श्री नादेल्ल पुरुषोत्तम कवि, *प्र०* श्री नादेल्ल मेधा दक्षिणमूर्ति शास्त्री, मछलीपटणम; *पात्र* पुरुष १५, स्त्री ३, *अक नही*, *दृश्य* १५।
घटना-स्थल मछलीपटणम् और आन्ध्र के अन्य नगर।

'सोमवार व्रत-माहात्म्य' को प्रतिपादित करने वाले इस नाटक मे शिवभक्तो की महत्ता का निरूपण किया गया है।

वरमित्र और सारस्वत नामक ब्राह्मणो के क्रमश. सोमवन्त और सुमेध नामक पुत्र है। वे दोनो गुरुभाई है। गुरुकुल मे अध्ययन समाप्त कर वे घर पहुँचते है। माता-पिता के आदेशानुसार गृहस्थाश्रम मे प्रवेश करने से पूर्व आवश्यक धन-सपादन के लिए वे विदर्भराज के यहाँ जाते है। वह राजा शर्त लगाता है कि तुम लोग दम्पति वेश धारण कर सीमतनी के पास जाओ और उससे दपति-पूजा ग्रहण कर आओ तो मुँहमाँगा धन दे दूँगा। सोमवत और सुमेध राजा की आज्ञा का पालन करने निकल पडते है और वहाँ सीमतिनी के प्रभाव से सोमवत सचमुच स्त्री बन जाता है। इस रूप मे घर आये पुत्रो को देख उनके माता-पिता दु खी होते है। वे चारो विदर्भराज के पास पहुँच उसे खरी-खोटी सुनाते है। राजा अपने गुरु भरद्वाज से प्रार्थना करते है। गुरु जी की सलाह के अनुसार वे गौरी की पूजा करते है। गौरी माई भी अपनी असमर्थता

प्रकट करती है पर शाप-विमोचन का उपाय वताती है कि एक पुत्र के जन्म के वाद सोमवत फिर पुरुषत्व को प्राप्त करेगा। वह वैसा ही कर पूर्वरूप को प्राप्त करता है।

अपोलो (सन् १९६९, पृ० ९१) ले० सतीश दे, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६, पात्र पु० १०, स्त्री १, अक २।
घटना-स्थल प्रयोगशाला।

इस वैज्ञानिक नाटक मे चाँद की मिट्टी की चोरी दिखायी गयी है। सन् १९६९ मे जब अमरीकन चन्द्रयात्री अपोलो ११ के द्वारा चन्द्र के धरातल पर पहली वार उतरे तो विश्व मे तहलका मच गया। असम्भव वस्तु सभव हो गयी। चन्द्र-धरातल वडा ही ऊवड-खावड और पथरीला है। चन्द्रमा की मिट्टी से ऐटम वम की शक्ति को क्षीण किया जा सकता है किन्तु इसके लिए सफल वैज्ञानिक की आवश्यकता है। डा० कटारिया चाँद की मिट्टी पर खोज करते है। उनके घर मे ही प्रयोगशाला है। नाटक का प्रारम्भ डा० कटारिया के मूर्ख नौकर एण्टोनी और पुत्री ववली की वातचीत से होता है। डा०कटारिया की प्रयोगशाला से ही दुश्मन चाँद की मिट्टी की चोरी करते हैं। प्रो० कछवाह दुश्मनो और डा० कटारिया से मिले हुए है। वे अपने देश की प्रतिष्ठा को भी नीलाम कर देते है। ववली डा० कटारिया की पुत्री है जो चागू से वाते करती है जिसकी कल्पना शायद नाटक-कार ने उस चीनी कहावत से की है, जिसमे कहा जाता है कि चीन की एक १६ साल की लडकी वहाँ वहुत दिनो से घूम रही है। ववली उसी से वात करती है, ऐसा दुश्मनो ने उसे विश्वास करा दिया है। किन्तु अनूप और विनोद नामक नवयुवक दुश्मनो की योजनाओ को असफल बना देते है। वे कहते है कि दुश्मनो को पकडने के लिए पुलिस, फौज की आवश्यकता नही है वरन् इसके लिए देश का प्रत्येक नवयुवक ही पर्याप्त है।

अप्सरा (सन् १९५१, पृ० ११५) ले० वृद्धि-चन्द्र अग्रवाल मधुर', प्र० कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, वनारस, पात्र पु० १०, स्त्री ७, अक ३, दृश्य . ६, ५, ८।
घटना-स्थल स्वर्ग।

इस पौराणिक नाटक मे उर्वशी नायिका है। इसमे उर्वशी अप्सरा और सूर्य, चन्द्र के प्रेम की कथा है। उर्वशी चन्द्र से प्रेम करती है, इन्द्र इसका विरोध करता है, किन्तु अन्त मे प्रेम की विजय होती है और उर्वशी इन्द्र को प्रभावित कर उससे आशीर्वाद भी प्राप्त कर लेती है।

अप्सरा (सन् १९५२) ले० सुमित्रानन्दन पत, प्र० राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, *पात्र* पुरुष, स्त्री, स्वर, *अक-रहित*, *दृश्य* ४।
घटना-स्थल . कलाकार का घर।

स्वय पतजी ने 'अप्सरा' को 'सौन्दर्य-चेतना का रूपक' कहा है। घृणा, स्वार्थ, राग-द्वेष से त्रस्त मन नवीन सदर्भो को स्वीकार नही कर पाता। ऐसी विषम स्थिति मे कला-कार नव्य चेतना का आह्वान करता है। किन्तु मन ग्रन्थियो की भयकर छायाकृतियों के भय से सौन्दर्य अवतरित नही होता। परिणामस्वरूप नवीन चेतना तथा अवचेतना के कुरूप तत्त्वो मे सघर्ष होता है और समस्त विकृतियो के नाश के साथ नवीन चेतना विजयी होती है।

अलौकिक सगीत से आविर्भूत कलाकार प्राणो के स्तर पर नवीन चेतना का अनुभव करता है और इसकी प्राप्ति के लिए व्याकुल हो जाता है। यहाँ अप्सरा उसे वताती है कि पूर्ण समर्पण द्वारा ही उसे पाया जा सकता है।

मानसिक सघर्ष शीर्षक से द्वितीय दृश्य मे फ्रायड आदि मनोविश्लेषणकर्ता उदास भावनाओ को त्यागकर कला के निम्न स्तरो को स्वीकारते है। इसीलिए मानव सौन्दर्य-प्राप्ति मे असमर्थ रहता है। इन असमर्थ-ताओ से नवचेतना का सघर्ष होता है, जिसमे नवचेतना विजयी होती है। यहाँ कलाकार जनमत-मन्दिर मे मनुष्यत्व की नव प्रतिमा की कल्पना करके अपना कर्त्तव्य निश्चित करता है।

तृतीय दृश्य 'उन्मेष' मे प्राचीन मान्य-ताओ के खँडहर पर नव-चेतना का निर्माण होता है। इस स्थल पर कवि धेनु-धरा का रूपक प्रस्तुत करता है। पुराणो मे धर्म की

ग्लानि होने पर जिस प्रकार धरा धेनु का रूप धारण कर भगवान के आगे विनती करती है कि वे अवतार लेकर उसका भार हटायें, उसी प्रकार यहाँ धरा-चेतना विनय करती है। पौराणिक रूपक मे भगवान धरा को आश्वस्त करते हे, यहाँ यह कार्य कलाकार करता है। यहाँ अरविन्द-दर्शन का प्रभाव परिलक्षित होता हे।

चतुर्थ दृश्य मे कलाकार सौन्दर्य-चेतना को अन्तर्तम की स्वर-लहरी बताता है। उसके पश्चात् आनन्दमूर्ति सौन्दर्य-चेतना मन के धरातल पर अवतरित होती हे। राग-द्वेष, कुत्सा-स्पर्धा से मुक्त जीवन मे वैषम्य का तम छँटकर भावसाम्य का उदय होता हे। इसी भाव के साथ गीति नाट्य समाप्त होता हैं।

अफजल-वध (सन् १९५०, पृ० ११६), ले० मोहनलाल महतो 'वियोगी', प्र० साहित्य-सरोज प्रकाशन, इलाहाबाद, *पात्र* पु० ११, स्त्री १, *अक* ३, *दृश्य* ३, ३, ४।

इस ऐतिहासिक नाटक मे हिन्दू-मुस्लिम एकता तथा अन्य राष्ट्रीय भावनाओ का उल्लेख है। शिवाजी औरगजेब के अत्याचार का सामना जनता के सहयोग से कर रहे है। दक्षिण भारत मे विजय-कीर्ति से आतकित मुगल बादशाह अफजल खॉ को शिवाजी के पकडने के लिए भेजता है।

इसमे शिवाजी की धार्मिकता, राष्ट्रीयता, धर्मनिरपेक्षता तथा उच्च चारित्रिक महत्ता को प्रस्तुत किया गया है। इसमे मुगल सेना की विलासिता और मरहठा वीरो की शूरता चित्रित है।

अफजल खॉ स्वय शिवाजी के कार्य और वीरता की प्रशसा करता है। शिवाजी मुस्लिम नारी, धर्म एव पूजा के स्थानो की पवित्रता तथा धार्मिक पुस्तको की पूर्णरूपेण रक्षा करते है। उनके राज्य मे मुस्लिम प्रजा का उतना ही ध्यान रखा जाता है जितना हिन्दू प्रजा का। दूसरी तरफ उन्मत्त शासक तथा उसके अफजल खॉ जैसे सिपहसालार हिन्दू और मुस्लिम दोनो का क्रूरता से वध करते है। अत प्रजा के सहयोग से शिवाजी सर्वत्र विजयी होते है। अफजल ख़ॉ छल से शिवाजी की हत्या का प्रयास करता है परन्तु स्वय मारा जाता है।

अफसर (पृ० ६८), ले० पं० शिवदत्त मिश्र, प्र० ठाकुरप्रसाद गुप्ता, बुकसेलर, वाराणसी, *पात्र* पु० ५, स्त्री २, *अक नहीं*, *दृश्य* १५। *घटना-स्थल* महल, कमरा, राजदरबार आदि।

इस ऐतिहासिक नाटक मे स्त्री जाति के कुशल नेतृत्व और अद्‌भुत वीरता का वर्णन है। वीरागना सोमावती कुम्भल स्टेट की उत्तराधिकारिणी है। अचानक पेशावर का गवर्नर टेलर कुम्भल पर चढाई कर देता है। सोमावती का सेनापति केतुसेन विश्वासघात करता है जिससे सोमावती उसे निकाल देती है। अख्तर तथा नूरेआलम नामक वीराग-नाएँ वीरतापूर्वक युद्ध मे सोमावती का साथ देती है। टेलर जबरदस्ती नूरेआलम को अपहृत कर अपनी बेगम बना लेता है। विक्रम-कुमार एक राजपूत सैनिक है जो वीरागना सोमावती की खुले दिल से मदद करता है। अचानक अख्तर और विक्रम कुमार पेशावर के गवर्नर टेलर को गिरफ्तार कर नूरेआलम को छुटकारा दिलाते है। अन्त मे विक्रमकुमार और सोमावती का विवाह हो जाता है। वहा-दुरी से लडते हुए राजपूत अग्रेजी सैनिको को भगा देते हे। अत मे कुम्भल स्टेट की विजय होती है।

अफसोस हम न होंगे (सन् १९७०, पृ० ८३), ले० रणवीरसिह, प्र० विद्या प्रकाशन मदिर, दिल्ली, *पात्र* पु० ६, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य नहीं है*।
घटना-स्थल घर।

इस सामाजिक नाटक मे दाम्पत्य जीवन को वहम के द्वारा दुखी और हास्य-व्यग के माध्यम से सुखी बनाया गया है।

मदन के सीने मे दर्द होने के कारण मृत्यु हो जाने का वहम हो जाता है। वह अपनी पत्नी ऊषा की अनुपस्थिति मे टेली-फोन से डा० घोष को इलाज के लिए बुलाता है। वह डाक्टर द्वारा दी हुई दवा को खाने के लिए बाथरूम मे जाता है। इधर डाक्टर घोष कॉर्डियोलाजिस्ट से टेलीफोन पर बात करके किसी दूसरे मरीज की हालत बहुत

गम्भीर बताते हैं। डा० घोष द्वारा कही हुई बात को मदन अपने विषय मे समझकर बहुत चिंतित होता है जिससे वह अपनी पत्नी ऊषा को प्रेम-पत्र लिखता है कि 'मेरे मरने के बाद तुम अपनी शादी मोहन के साथ कर लेना।' अपने मित्र अरविन्द को अपनी सन्निकट मृत्यु की आशंका से अवगत करते हुए उससे यह वचन लेता है कि वह ऊषा पर रहस्योद्‍घाटन न करेगा। अपनी यादगार बनवाने के लिए बेग साहब को तीन हजार रुपए भी दे देता है।

इधर ऊषा को मदन की बीमारी का पता चलने पर वह इलाज के लिए बम्बई जाने को तैयार होती है। अचानक डाक्टर घोष मछली का शिकार लेकर घर मे आते है। वह डा० घोष से मदन की बीमारी की चर्चा करती है। डा० घोष मदन को बिल्कुल ठीक बताते है। ऊषा को वहम होता है कि मदन मुझे मोहन के साथ बाहर भेजकर किसी अन्य लड़की के साथ प्यार करना चाहते हैं। इसी बात पर पति-पत्नी मे लडाई होती है। अरविन्द के कहने पर मदन प्रेम करने की बात जबरदस्ती स्वीकार कर लेता है। लेकिन फिर भी ऊषा उसकी बात का विश्वास नही करती। मदन भी इस प्रेम-कहानी को झूठा बताता है जिससे दोनो पति पत्नी अपने-अपने वहमो का समाधान हास्य-व्यग्य से करते हुए कमरे मे चले जाते है।

अबला की आह (सन् १९३०, पृ० ९८), *ले०* देहाती महिला, *प्र०:* आगा हश्र, उपन्यासबहार आफिस काशी, बनारस, *पात्र .* पु० ३, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* ६, ६, २। *घटना-स्थल* पाठशाला-मार्ग, मदिर।

इस सामाजिक नाटक मे सज्जन पुरुषो द्वारा स्त्रियो के सतीत्व की रक्षा तथा व्यभिचारियो के कुकृत्यो का परिणाम दिखाया गया है। धूर्त तथा लम्पट जमीदार दामोदर अंजना नामक भोली-भाली कन्या को अपने जाल मे फाँस कर भ्रष्ट करता है और फिर उसे छोड़कर सुशीला नामक दूसरी विदुषी कन्या के पीछे पडता है। नरेश बाबू एक उपकारी तथा नगीनचन्द्र एक धर्मात्मा पुरुष हैं। नगीनचन्द्र अपना विवाह उदारता से अंजना के साथ कर लेते हैं। दामोदर कई प्रयत्नो के बाद जब सुशीला को भ्रष्ट नही कर पाता तो धोखे से एकान्त मे बुला कर बलात्कार करना चाहता है पर नरेश बाबू व नगीनचन्द्र के तत्काल पुलिस लेकर पहुँच जाने से सुशीला की मुक्ति हो जाती है तथा व्यभिचारी दामोदर पकडा जाता है। नरेश बाबू सुशीला से सहर्ष विवाह कर लेते है तथा दामोदर अपने पापकर्मो के परिणाम-स्वरूप कालेपानी की सजा पाता है।

अभागिन (सन् १९६२, पृ० ५०), *ले०* जगदीश शर्मा, *प्र० .* देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६, *पात्र .* पु० ५, स्त्री २, *अक* ३। *घटना-स्थल* घर।

इस सामाजिक नाटक मे स्त्री के मातृ-स्वरूपा बनने की महत्त्वाकांक्षा को दिखाया गया है। सध्या को एक बच्चा चुराने के अपराध मे ६ महीने की सजा होती है। सध्या सन्तान-रहित होने से ऐसा काम करती है। उसका पति सुरेश उसे बाँझ समझकर तलाक देकर दूसरी शादी करना चाहता है किन्तु पत्नी सध्या के गर्भवती होने का हाल सुनकर सुरेश उसके जेल के दिन गिनने लगता है। जेल से मुक्त होने पर एक दिन मूसलाधार वर्षा मे किवाड़ की चौखट पर संध्या के गिरने से एक बच्चे का जन्म होता है किन्तु तुरन्त ही अभागिन के प्राण-पखेरू उड जाते है। माँ बनने की आखिरी तमन्ना पूरी होती है जिसकी अति खुशी मे वह अपने पति के चरणो पर अपने को सर्मापित कर देती है।

अभिमन्यु चक्रव्यूह में (सन् १९६४), *ले० :* चिरंजीत, *प्र०* सुमेर प्रकाशन, दिल्ली, *पात्र .* पु० ५, स्त्री ३, *अक .* ३, *दृश्य नहीं है।* *घटना-स्थल* ड्राइंग रूम।

इस व्यग्य-प्रधान नाटक मे आधुनिक भारत की ज्वलत समस्याओ—प्रान्तीयता, जातीयता, भाषावाद और वैयक्तिक स्वार्थ-परता को स्पष्ट किया गया है।

इसमे एक अधिकारी के निष्पक्ष भाव को भी दिखाया गया है। कैलाशनाथ केन्द्रीय सचिवालय मे एक उत्तर भारतीय प्रशासना-धिकारी हैं। एक दिन उनके दफ्तर मे एक

वीर अमरसिंह राठौर के शौर्य की झाँकी प्रस्तुत की गयी है।

महाराज अमरसिंह राठौर अपनी नव-विवाहिता पत्नी अहाडी रानी के सौदर्य पर मुग्ध होकर मुगल सल्तनत की सेवा करना अस्वीकार कर देता है जिसके कारण मुगल शासन का मीर बखशी सलावतखाँ अमर को शाहजहाँ की आज्ञा सुनाता है कि महाराज को शाही ड्योढी पर पहरा देना होगा। यह बात सुन कर अमरसिंह को गुस्सा आ जाता है। वह सलावतखाँ का अपमान करता है और स्वय शाहजहाँ से मिलने जाता है। वहाँ पहुँचकर अमर अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए सलावतखाँ का वध अपने मनसबदारो के सामने करने को कहता है। इसके पश्चात् वह अनेक योद्धाओ को मारता हुआ आहत अवस्था मे महल पहुँचता है। शाहजहाँ एक राजपूत मनसबदार अर्जुन गौड द्वारा अमर को मरवा डालता है। शाहजहाँ का ज्येष्ठ पुत्र दारा कुँवर जगतसिंह की रक्षा का वचन देता है—इस आश्वासन के साथ अहाडी रानी अपने पति के साथ सती हो जाती है।

अमर बलिदान (वि० २०२८, पृ० १५२), ले० हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० कौशाम्बी प्रकाशन, दारागज, इलाहाबाद, *पात्र* पु० १२, स्त्री १, *अक* ३, *दृश्य* ४, ५, ६। *घटना-स्थल* झाँसीगढ के बाहर का मैदान, कमिश्नर स्कीन का बँगला, सैनिक शिविर, झाँसी का दुर्ग, किले की एक दीवार, वेतवा का तट, अँग्रेजो की छावनी।

इस ऐतिहासिक नाटक मे सन् १८५७ मे घटित भारतीय स्वाधीनता-सग्राम पर प्रकाश डालने के उद्देश्य से लक्ष्मीवाई, तात्या टोपे और झाँसी की रानी के दीवान लक्ष्मणराव आदि का बलिदान दिखाया गया है। झाँसी पर अधिकार जमानेवाले फिरगियो से युद्ध करने को आल्हा, ऊदल, चम्पतराय, छत्रसाल और हरदौल के वशज (झाँसी की प्रजा) महारानी लक्ष्मीवाई की आज्ञा की प्रतीक्षा मे है, किन्तु लक्ष्मीवाई के जेठ का अवैध पुत्र अलीवहादुर अग्रेजो को प्रसन्न कर राज हथियाना चाहता है। झाँसी के कमिश्नर स्कीन और डिप्टीकमिश्नर गार्डन अलीवहादुर को गुप्तचर बनाकर लक्ष्मीवाई की योजनाओ की जानकारी प्राप्त करते है। इधर लक्ष्मीवाई अपने पिता मोरोपत, मत्री लक्ष्मण राव और तात्या टोपे से स्वतत्रता के युद्ध के विषय मे परामर्श करती है। लक्ष्मीवाई जब सेना का प्रश्न उठाते हुए कहती है—"फिरगियो ने हमारी सेना भग कर दी है, हमे सेना तो चाहिए ही।" तात्या टोपे विश्वास दिलाते है कि "इन अग्रेजो ने भारत का धन लूटकर जो वेतनभोगी विशाल भारतीय सेनाएँ जुटाई है वे सब अपनी ही सेनाएँ है। तुम रणभेरी बजाओ।" तात्या टोपे, नाना और लक्ष्मीवाई साथ-साथ विठूर मे अस्त्रविद्या सीखते रहे, इसी नाते तात्या टोपे उन्हे बडी बहिन मानकर चरणो मे मस्तक झुकाता है और स्वातत्र्य-युद्ध मे बलि होने की प्रतिज्ञा करता है।

द्वितीय अक मे गार्डन और स्कीन अलीवहादुर को झाँसी का राज्य प्रदान करने का प्रलोभन देते है। अलीवहादुर का देशद्रोही सेवक पीरअली रानी के विरुद्ध पड्यत्र करता है। पर झाँसी की भारतीय सेना अग्रेजो से प्रतिशोध लेने को उतावली होती है। गार्डन के अनुरोध पर अग्रेज स्त्री-बच्चो को रानी अपने महल मे रक्षार्थ रख लेने को तैयार होती है। किन्तु कई भारतीय सैनिक क्रुद्ध होकर किले मे रक्षित स्त्री-बच्चो को मौत के घाट उतार देते है। रानी उनकी भर्त्सना करती है। महारानी और सैनिको के वार्त्तालाप से ज्ञात होता है कि सग्राम छेडने का दिन इकत्तीस मई तय था, किन्तु वारकपुर मे मगल पाण्डेय ने समय से पहले अंग्रेज अफसरो को गोली का शिकार बना डाला। योजना थी कि सारे भारत मे एक साथ अग्रेजी सत्ता पर आक्रमण कर उसका अत कर दिया जाय। अब अग्रेजो को अपनी सहायता के लिए वर्मा, तिब्वत, ईरान से सेना बुलाने का समय मिल गया। अब सरल कार्य कठिन हो गया।

इसी समय सम्राट् बहादुरशाह का पत्र लक्ष्मीवाई के पास आता है जिसमे अग्रेजो के अत्याचारो और उनसे मुक्ति के उपायो पर विचार प्रकट किया गया है। सम्राट् ने लिखा है—

"हमने यह कदम फिर से मुगल साम्राज्य स्थापित करने के लिए नही उठाया है। यहाँ

ऐसे राज्य की स्थापना की जाए जो यहाँ के प्रत्येक वर्ग की राय से काम करे।"

लक्ष्मीबाई युद्ध की तैयारी करती है। गडी हुई तोपो को निकाल कर गौस खाँ प्रयोग के उपयुक्त बनाता है। दासी सुन्दर स्त्रियो को पुरुष-वेश पहनाकर सेना तैयार करती है किन्तु अलीबहादुर और पीरअली रानी की गतिविधि से अग्रेजो को परिचित कराते हैं। पीरअली गौस खाँ को महारानी के विरुद्ध कर देने मे सफल होता है। ह्यू ऐज पीरअली को शराब पिलाते हुए नाना प्रकार के प्रलोभन देता है। रानी के शस्त्रागार मे देशद्रोही दूल्हाजी आग लगा देता है। लक्ष्मीबाई वीरतापूर्वक अग्रेजी सेना को चीरती झाँसी से कालपी पहुँचती है। अग्रेजो को विजय पर विजय मिलती है। तात्या टोपे, लक्ष्मीबाई आदि स्वतंत्रता-सेनानी ग्वालियर गढ की दीवार के नीचे बाबा गंगादास की कुटी के पास पहुँचते हैं। इधर ग्वालियर के राव साहब घुँघरुओ की आवाज़ सुनने मे मस्त हैं। अग्रेज लक्ष्मीबाई और तात्य-टोपे का पीछा करते हैं। युद्ध होता है और लड़ते-लड़ते लक्ष्मीबाई बलिदान होती है। कुटिया के पास चिता पर उनका दाह-सस्कार होता है। बाबा गगादास बताते है कि "महारानी पुरुष-वेश मे थी, इसी कारण अग्रेज़ उन्हे पहचान न पाए और जब वह मरणासन्न स्थिति मे थी वे उन्हे अतिम साँसें गिनने के लिए छोड गए।" तात्या टोपे चिता के समीप खडे होकर उन्हे अतिम श्रद्धाजलि देते हुए कहते हैं—"यह चिता बुझ जायेगी, किन्तु भारत के जनमानस मे जलने वाली ज्वाला तब तक शान्त न होगी जब तक हमारा देश स्वतत्र नही होगा।"

अमर वेल (सन् १९५३, पृ० १८२), ले० : हरिश्चन्द्र खन्ना, प्र० नवपजाब साहित्य सदन, दिल्ली-जालधर, पात्र पु० ८, स्त्री ४; अंक · ३, दृश्य ३, २, ६,।
घटना-स्थल पजाब का एक साधारण कस्वा।

इस समस्यामूलक नाटक मे अछूतो की समस्या का समाधान और शूद्रो की विकट समस्या को यथार्थ रूप यह सामने लाता है।

अमर और मदन दो भाई हैं। मदन अछूतो की सेवा और दलित वर्ग का उद्धार करने मे ही अपने जीवन की सार्थकता समझता है। उसकी पत्नी रमा भी उसके विचारो की पुष्टि करती है। अमर भी मदन और उसके दल से प्रभावित होता है, लेकिन इनकी माँ पुराने विचारो की होने के कारण मदन के कामो को पसन्द नही करती। बडी बीवी अपने धन और सम्मान को ज्यादा महत्त्व देती है। अपनी माँ के उलाहनो से ऊब कर मदन अपनी स्त्री के साथ घर छोड देता है। भाई के विद्रोह से अमर बहुत दुखी होता है लेकिन वह माँ के विरोध मे कुछ नही कर सकता है। इधर अमर मीना नाम की एक अछूत लडकी से शादी करना चाहता है लेकिन उसकी माँ उसे ऐसा नही करने देती जिससे वह भी घर छोड़ने को तैयार हो जाता है। यह देखकर उसकी माँ पुत्र-स्नेह के कारण उन दोनो भाइयो के रास्ते का काँटा न बनने की कसम खाती है और सब पुन मिल जाते है।

अमर शहीद भगतसिंह अथवा सुनहरे पन्ने (सन् १९५०, पृ० ६४), ले० बचिन सक्सेना, प्र० रतन एण्ड कपनी बुकसेलर, दिल्ली-६, अक · २, दृश्य ११, ९।
घटना-स्थल दिल्ली, कानपुर, इलाहाबाद, सभा, कारागार, आदि।

इस राजनैतिक नाटक मे स्वतंत्रता-सेनानी वीर भगतसिंह तथा उनके अन्य साथियो का देश के प्रति अद्भुत बलिदान दिखाया गया है। भगतसिंह भारत की आजादी के लिए प्राणपण से अपने अन्य साथियो सहित अग्रेजो के कट्टर विरोधी हो जाते है। स्थान-स्थान पर राजगुरु, सुखदेव आदि के साथ अग्रेजो पर हमले करते है। अन्त मे बम फेकने के अपराध मे भगतसिंह को फाँसी की सजा दे दी जाती है। यह नाटक देशभक्ति से ओतप्रोत है।

अमरसिंह राठौर (सन् १८९५, पृ० ८२), ले० . राधाचरण गोस्वामी, प्र०. मथुराभूषण प्रेस, पात्र . पु० १८, स्त्री १, अक नहीं, केवल १५ दृश्यों मे विभाजित है।
घटना-स्थल . घोर वन, यमुना-तट, शाहजहाँ

का दरबार।

इस ऐतिहासिक नाटक मे अमरसिह की वीरता का वर्णन है जिसके प्रारम्भ मे दो वैतालिक गाते हुए कह रहे है—"भारत को वेग दास भाव से छुडाओ, जयभारत जय भारत जयभारत गाओ।" अमरसिह राठौर प्रतिज्ञा करते है कि चित्तौड और सोमनाथ का बदला बिना लिये अमरसिह न मानेगा। एक स्थान पर कहते है—"जो दिल्ली-पति का सीस न काट गिराऊँ। राठौर अमरसिह जग मे नही कहाऊँ।"

अमरसिह सभी हिन्दू राजाओ के पास पत्र लिखते है और शकरानन्द और योगानन्द के द्वारा अपना सन्देश सारे देश को सुनाते है। अमरसिह दिल्ली-प्रस्थान से पूर्व रानी सूर्य-कुमारी से वार्तालाप करते है और विदा लेते हुए कहते है—"प्यारी, यदि जीते रहे तो इसी देह से, और युद्ध मे रहे तो दिव्य देह से मिलेंगे।"

शाहजहाँ के दरबारमे अमरसिह विराजमान है। शाहजहाँ पूछते है—"क्यो अमर, तुमने सलावत खाँ को जुर्माना नही दिया ?" अमर सिह और सलावत खाँ मे खड्गयुद्ध होता है। सलावत खाँ आहत होकर गिरता है। शाहजहाँ अमरसिह को पकडवाना चाहता है। शाहजहाँ के दरबारियो से युद्ध होता है। अमरसिह अनेक को घायल करता है। पर शाहजहाँ की फौज चारो ओर से अमरसिह को घेर लेती है। मुगलो के हाथ मरना अनिवार्य समझ अमरसिह अर्जुनसिह से कहते है—"ऐसा न हो कि मै दुष्ट यवनो के हाथ से मारा जाऊँ। तुम अपने खड्ग से मार दो।" अर्जुनसिह के खड्ग से अमरसिह की मृत्यु होती है। राठौर सेना और मुगल सेना मे युद्ध होता है। महारानी सूर्यकुमारी घोडे पर सवार होकर मुसलमानी सेना से युद्ध करती है। श्मशान पर बहुत से क्षत्रिय वीरगण खडे है। सूर्य कुमारी राजपूतो से आपसी फूट मिटाने का आग्रह करती है।

अमर सुभाष (पृ० १०५), ले० लालचन्द जैन, प्र० साहित्यरत्न भण्डार, आगरा, *पात्र* . पु० १३, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* ७, ७, ३। *घटना-स्थल* . बगीचा, जापान।

इस नाटक मे वर्तमान इतिहास के निर्माण के प्रमुख ऐतिहासिक पात्र तिलक, गाधी, सुभाष, अरविंद, सरोजिनी नायडू, सरदार पटेल, शाहनवाज खाँ, सहगल, लक्ष्मी स्वामीनाथन, हिटलर, तोजो और अमर क्रातिकारी रासविहारी बोस का उल्लेख किया गया है।

नाटक के प्रथम अक मे सुभाष के हृदय मे मातृ-भूमि के प्रति अगाध प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना को प्रकाशित किया गया है। युग के क्रातिकारी वन्दी तिलक के चरणो मे राष्ट्र-भक्ति का उज्ज्वल आलोक लेकर नाटक का नायक अमर सुभाष गाधीजी के स्वदेशी आन्दोलन मे जुट जाता है और अपनी उत्कट देशभक्ति, तीव्र लगन और दृढ सघटन-शक्ति के द्वारा न केवल अपनी माँ से आशीष प्राप्त करता है बल्कि जनता का हृदय-हार बन जाता है। राजकीय बाग का माली सुभाष को हार भेजता है और अरविद पुलिस की नौकरी छोडकर सुभाष के स्वातत्र्यान्दोलन मे सम्मिलित हो जाता है। अक के छठे दृश्य मे रमेश और प्रेमशकर तथा माली की बातचीत से युग पर सुभाष के प्रभाव को प्रदर्शित करने का प्रयास है। इस अक के अतिम दृश्य मे सुभाष की प्रतिज्ञा और माता का आशीष नायक के उत्कर्ष का आभास देता है।

द्वितीय अक मे स्वतन्त्रता का अमर सेनानी सुभाष विदेश जाने की योजना बनाता है। विदेश मे वह हिटलर, मुसोलिनी से मिलकर उनसे सहायता की आशा व्यक्त करता है। जापान पहुँचने पर वह तोजो से मिलकर भारतीय कैदियो को मुक्त कराते है और आजाद हिन्द फौज का सगठन करते है। शाहनवाज, रासबिहारी बोस तथा सहगल आदि नेताजी के कार्य मे हाथ बँटाकर युद्ध मे जुट जाते है। डा० लक्ष्मी स्वामीनाथन भी लक्ष्मीबाई रेजिमेट की कमाण्डर बनती है। नेताजी अग्रेजो के विरुद्ध भारतीय सेना का नेतृत्व करते है। विजय-पराजय के मध्य सेना बढती है।

तृतीय अक मे 'आजाद सेना' की भारी क्षति तथा पीछे हटने की सूचना दी गई है। इसी अक मे नेताजी की वायुयान-दुर्घटना से

'भारतीय नेताओं' की चिन्ता, जनता के नैराश्य को अभिव्यक्त किया गया है। सुभाष भारत की स्वाधीनता की सूचना आश्रम मे गौतम को देते है और स्वय राजनीतिक कुटिलता तथा पद-लोलुपता से पृथक् रहकर आध्यात्मिक उत्थान मे तल्लीन हो जाते है। इस प्रकार नेताजी के जीवित रहने की धारणा को नाटककार सुभाष बाबू के इस कथन से अभिव्यक्त करता है—"अब मै लोक-दृष्टि से लोप ही रहूँगा।"

अमर है आलोक (मनोरजन पत्रिका के फरवरी १९४९ के अक मे प्रकाशित), ले० गिरिजाकुमार माथुर, *पात्र* पु० १, स्त्री १, *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल नही।

यह एक सगीत-रूपक है जिसमे काल्पनिक चित्रो द्वारा जनमुक्ति की भावना के साथ नवयुग-आगमन का सकेत दिया गया है। युग-पुरुष नामक पात्र गाधी का प्रतीक है एव मुक्तिक्रिया स्वतत्रता की। जिस प्रकार पृथ्वी से सीता का जन्म तथा समुद्र-मथन से लक्ष्मी का उदय हुआ था उसी प्रकार अनेक सघर्ष तथा त्याग के पश्चात् भारत मे स्वतत्रता अवतरित हुई। भारत के गौरवमय अतीत का चित्रण करते हुए कवि स्वतत्रता-आलोक मे उसे अमर बनाना चाहता है।

अमिया (सन् १९४९, पृ० १२०), ले० कचनलता सब्बरवाल, प्र० साहित्य सदन, देहरादून, *पात्र* पु० ७, स्त्री १०, *अक* ३, *दृश्य* ५, ६, ६।
घटना-स्थल राजमहल, तोरमाण का राजगृह, घना जगल।

इस ऐतिहासिक नाटक मे अमिया की वीरता तथा प्रेमी राजकुमार वज्रगुप्त के प्रति पूर्ण श्रद्धा दिखायी गयी है। भानुगुप्त बालादित्य पर हूणो का आक्रमण होता है। गुप्त-साम्राज्य का उच्च पदाधिकारी देशद्रोही होकर हूणराज से मिल जाता है। वह सन्यासी का वेश धारण कर भेद लेने के लिए राजमहल मे पहुँच जाता है। उसके साथ उसकी पुत्री अमिया भी राजमहल मे जाती है। अमिया की माता देशद्रोही पति को छोड़कर मायके चली जाती है। अमिया और राजकुमार वज्रगुप्त का प्रेम हो जाता है। दुर्भाग्यवश अमिया को युद्ध मे वज्रगुप्त से जूझना पडता है और उसके ही तीर से राजकुमार घायल होता है। वह युद्ध-क्षेत्र से आहत राजकुमार का शव उठाकर जगल मे चली जाती है। अपनी सखी मधुरा को भी सेवा के लिए बुला लेती है। उनकी परिचर्या से राजकुमार के प्राण बच जाते है। बालादित्य का स्वर्गवास होता है। राजकुमार जब राजधानी को लौटते है तो अमिया अपना परिचय देशद्रोही मातृविष्णु की पुत्री के रूप मे देती है। राजकुमार उसके उपकार भूलकर उससे घृणा करने लगते है। प्रेमयोगिनी अमिया उसी वन-कुटी मे राजकुमार की प्रतीक्षा करती है। वह भी शत्रुओ से युद्ध मे असफल होने पर अमिया के पास ही सान्त्वना पाने की दृष्टि से पहुँच जाते है किन्तु उनके पहुँचने से पूर्व ही अमिया के प्राण-पखेरू उड चुके होते है। घायल राजकुमार भी वही अतिम श्वास लेता है। वही एकमात्र मधुरा का आर्त-स्वर सुनायी पडता है—"तुम आये नाथ आज क्यो?"

सन् १९५२ मे महिला विद्यालय लखनऊ मे प्रदर्शित।

अम्बा (सन् १९३५, पृ० १११), ले० उदयशकर भट्ट, प्र० मोतीलाल बनारसीदास, लाहौर, *पात्र* पु० १३, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* ३, ५, ७।
घटना-स्थल महल, आश्रम, रणक्षेत्र।

इस पौराणिक नाटक मे काशिराज की कन्या अम्बा पर आयी आपत्ति और उसका निराकरण दिखाया गया है। काशिराज अपनी तीनो कन्याओ—अम्बा, अम्बिका, अम्बालिका के स्वयवर मे धीवर-कन्या सत्यवती के पुत्र विचित्रवीर्य को आमत्रित नही करता है। अत. सत्यवती भीष्म को भेजकर उन तीनो का हरण करवा लेती है। अम्बिका और अम्बालिका तो विचित्रवीर्य से ब्याही जाती है किन्तु शाल्व को पहले ही वर लेने की बात प्रकट करने पर वह अम्बा को शाल्व के यहाँ जाने देती है। शाल्व अपहृत कन्या को वरने से इनकार कर देता है जिससे अपमानित अम्बा

के मन मे पुरुष के प्रति भयकर प्रतिशोध की भावना जागती है ।

परित्यक्ता अम्बा का समाचार सुनकर उसकी दोनो बहने बहुत दु खी होती है और उनमे भी पुरुषो के क्रूर व्यवहार पर रोष उत्पन्न होता है। वे स्त्री-समाज की दशा पर दु ख प्रकट करती है । इसी बीच विचित्रवीर्य रोग से चल बसता है और भीष्म अम्बा को अविवेकपूर्वक हरने के कारण पश्चात्ताप करता हुआ परशुराम के आगे अपना अपराध स्वीकार करता है। इस पर परशुराम उसे अम्बा से विवाह करने की आज्ञा देते है जिसे वे अविवाहित रहने के प्रण के अनुसार अस्वीकार करते है । फलत क्रोधी परशुराम उसे युद्ध के लिए ललकारते है । परन्तु भीष्म के हाथो पराजित होते है । भीष्म से बदला लेने के लिए वह अम्बा को शिव की तपस्या करने का उपदेश देते है। अम्बा की तपस्या से शिव प्रकट होते है जिनसे वह भीष्म के नाश का वरदान माँगती है। शिव उसे यह वरदान देकर अन्तर्हित हो जाते है कि दूसरे जन्म मे शिखडी बनकर तू भीष्म का नाश कर सकेगी । इस जन्म मे अपनी कामना-पूर्ति न होने पर वह गगा मे कूदकर आत्महत्या कर लेती है और दूसरे जन्म मे शिखडी बनती है ।

महाभारत-युद्ध के बाद शरशय्या पर पडे भीष्म के निकट सभी के सामने व्यास इस रहस्य का उद्घाटन करते है कि अम्बा ही शिखडी बनकर भीष्म से प्रतिशोध ले रही है। भीष्म भी इसे स्वीकार करते है । अम्बा शिखडी के रूप मे अपने प्रतिशोध को पूरा होता हुआ देखकर प्रसन्नता से पागल हो उठती है ।

अमृत-पुत्री (सन् १९७०, पृ० ११२), ले० : हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० ज्ञानभारती, दिल्ली, *पात्र* पु० ९, स्त्री २, *अक* · ३, *दृश्य* ४, ३, ३ ।
घटना-स्थल वितस्ता का तट, भवन-कक्ष, वाटिका, राजमहल आदि ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे चाणक्य की योजनानुसार कठ-राज्य के गणनायक की पुत्री कणिका द्वारा फिलिप्स की मृत्यु दिखाई गई है । नाटक का उद्देश्य नाट्यकार के शब्दो मे "देशवासियो का ध्यान राष्ट्रीय एकता की ओर खीचना है ।"

पुरु-पराजय के उपरान्त सिकन्दर पूर्व-भारत की ओर बढने की योजना बनाता है किन्तु यूनानी योद्धाओ के प्रतिनिधि-रूप मे काइनास इसका विरोध करता है। अत परिस्थितियो से विवश सिकन्दर फिलिप्स को भारत मे क्षत्रप नियुक्त कर यूनान को प्रस्थान करता है । आचार्य चाणक्य अपनी नीति से केकय-नरेश आम्भी, पुरु, शिविगणनायक सिहरण और अग्रश्रेणी गणनायक जयपाल मे मतैक्य स्थापित करते है । सिहरण की पुत्री जयश्री के सौन्दर्य पर जयपाल मुग्ध है, अत इन दोनो राज्यो मे मैत्री स्थापित हो जाती है । कठ-गणनायक की पुत्री कणिका अपनी मातृभूमि की रक्षा और यूनानियो से प्रतिशोध लेने को विषकन्या भी बनने को उत्सुक है। चाणक्य उसे विष-कन्या से अमृत-पुत्री बनने की युक्ति बताते है । उनके आदेशानुसार पुरु विजयी फिलिप्स के स्वागतार्थ उत्सव करता है जिसमे कणिका के नृत्य से फिलिप्स मुग्ध होकर उसे बलात् पकडना चाहता है। कणिका कचुकी मे से कटार निकालकर उस का वध करती है । पुरु-सेना के नये सेनापति चन्द्रगुप्त योजनानुसार यूनानी योद्धाओ से युद्ध करते है । यूनानी पराजित होते है और भारत विदेशी शासन से मुक्ति पाता है। कणिका को अमृत-पुत्री की उपाधि मिलती है।

अयाची (सन् १९६२, पृ० ८०), ले० · काशीनाथ मिश्र, प्र० · ग्रथालय प्रकाशन, दरभगा, *पात्र* पु० १७, स्त्री ३, *अक* . ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल . अयाची मिश्र का घर, लूटन का दरवाजा, वैद्यनाथधाम का रास्ता, बालुकामय भूमि, गगा का किनारा, वैद्यनाथधाम का पहाडी मार्ग, जगली मार्ग, बाबा वैद्यनाथ का मदिर, भोलवा चमार का घर, सरिसव ग्राम का मार्ग एव अयाची मिश्र का भोजनालय ।

इस नाटक मे मिथिला की पुरातन गरिमा के ऐतिहासिक पक्ष का उल्लेख किया गया है । महामहोपाध्याय अयाची मिश्र मिथिला की महान् विभूतियो मे से एक है। उनकी उद्भट विद्वत्ता से सभी प्रभावित है, किंतु वह

अपने नाम के अनुकूल किसी से कुछ भी याचना करना महापाप समझते है। उनका सिद्धान्त है कि मनुष्य मनुष्य से क्या याचना करे, उसे तो केवल ईश्वर से याचना करनी चाहिए। उपर्युक्त सिद्धान्तानुरूप उन्होने अपना जीवन-यापन किया। वे धर्म के दस महान् लक्षणो मे अपरिग्रह को अपने जीवन मे प्रत्यक्ष प्रयोग द्वारा सिद्ध करना चाहते हैं। इसी साधना की झलक इस नाटक मे मूल रूप से दिखायी गयी है। धार्मिकता से प्रेरित अयाची अनेक कष्टो को झेलकर वैद्यनाथधाम जाते हैं और वहाँ प्रसन्नचित्त से शिव की आराधना करते है। बहुत दिनो के वाद वापस आने पर उनकी पत्नी भवानी उन्हे एक विस्मयपूर्ण कथा सुनाती है। वह वताती है कि महाराज हमारे पुत्र शकर की विद्वत्ता से प्रभावित होकर खजाने से ढेर-सी अशर्फियाँ पुरस्कारस्वरूप देते है। किन्तु मै अपनी पूर्व-प्रतिज्ञानुसार अपने गाँव के 'दगरिन' को दे देती हूँ, क्योकि शकर के जन्मोत्सव पर उसे कुछ भी नही दिया गया था।

महामहोपाध्याय अयाची मिश्र को इससे बडा सन्तोप होता है और भगवान् मे उनकी निष्ठा और दृढ हो जाती है।

अर्जुन की पराजय (सन् १९७०, पृ० ६४), *ले०* विश्वम्भरनाथ 'वाचाल', *प्र०* भाग्योदय प्रकाशन, मथुरा; *पात्र* पु० ९, स्त्री ४, अक ३, दृश्य ७, ६, ४।
घटना-स्थल रणक्षेत्र, मणिपुर, नागलोक।

इस पौराणिक नाटक मे अर्जुन के पुत्र वभ्रुवाहन की वीरता और अर्जुन की पराजय दिखायी गयी है। महाभारत-युद्ध के उपरान्त पाण्डु-पुत्रो को अपनी विजय का घमण्ड हो जाता है। अर्जुन अपने को चक्रवर्ती सम्राट् घोषित करने के लिए अश्वमेध यज्ञ करते है। कृष्ण अर्जुन के इस घमण्ड को उनके पुत्र वभ्रुवाहन द्वारा नष्ट करवा देते है। इस अश्वमेध मे एक अश्व चारो दिशाओ मे घूमने के लिए छोड दिया जाता है। मणिपुर पहुँचने पर उस घोडे को वालक वभ्रुवाहन हठात् पकड लेता है—उसकी माँ चित्रागदा अपने पति (अर्जुन) के सम्मान एव स्वागतार्थ उसे लौटा देती है किन्तु अर्जुन वभ्रुवाहन को वेश्यापुत्र एव क्षात्र-धर्म-विरोधी कहकर अपमानित करते है। वह अपने को अर्जुन-पुत्र वताता है। इसके प्रमाण के लिए अर्जुन उससे युद्ध की अपेक्षा करते है। वीर वालक वभ्रुवाहन युद्ध मे समस्त पाण्डवो-सहित अर्जुन, वृषकेतु प्रद्युम्न को मार डालता है। चित्रागदा पति के वियोग मे विलाप करती है। माँ को विलखता देख वभ्रुवाहन दुखी होता है। तभी उलूपी अपने पिता के पास नागलोक से नागमणि लाकर सभी को जीवित करने की वात वताती है। वभ्रुवाहन नागलोक जाकर नागराज को युद्ध मे पराजित करता है। उसकी वीरता से प्रभावित होकर नागराज उसे नागमणि तथा अमृत-कुण्ड देता है। वह मणिपुर आकर अपने मृत पिता अर्जुन तथा अन्य सभी को जीवित कर देता है।

इस नाटक का अभिनय मथुरा मे सन् '७० मे हुआ।

अर्जुन-पुत्र बभ्रुवाहन नाटक (सन् १९२९, पृ० ८६), *ले०* प० कृष्णकुमार मुखोपाध्याय; *प्र०* श्रीलाल उपाध्याय, काशी, *पात्र* पु० १२, स्त्री ४, अक ३, *दृश्य* ८, ७, ६।
घटना-स्थल अनार्यलोक, रणक्षेत्र आदि।

इस पौराणिक नाटक मे अर्जुन तथा उसके पुत्र वभ्रुवाहन के वीच हुए युद्ध मे वभ्रुवाहन की विजय और अर्जुन की पराजय दिखायी गयी है। प्रारम्भ मे भगवान् कृष्ण नारद मुनि को अनार्य लोक मे भेजते हैं। वहाँ नारद की भेट अर्जुन-पुत्र इलावत तथा उसकी माता से होती है। इसी समय महाभारत का युद्ध भी शुरू हो जाता है। अर्जुन का पुत्र इलावत उनकी सहायता करने जाता है। इस पर वभ्रुवाहन भी अपनी माता से अपने को युद्ध मे न होने का कारण पूछता है। अन्त मे परिस्थितिवश अर्जुन व वभ्रुवाहन का युद्ध होता है जिसमे अर्जुन पराजित होते हैं।

अलका (वि० २०१३, पृ० ३०), *ले०* आचार्य पडित सीताराम चतुर्वेदी, *प्र०* अ० भारतीय विक्रम परिषद्, काशी, *पात्र* : पु० १ (छाया-रूप मे), स्त्री १०; *अंक* २, *दृश्य* : ३, ४।

घटना-स्थल यज्ञ का भवन, अलका का राजमार्ग ।

इस पौराणिक नाटिका मे पति-पत्नी के अद्भुत प्रेम को प्रदर्शित किया गया है। यह मेघदूत की कथा के आधार पर विरचित है। अलकाधिपति कुबेर शिव की नित्य पूजा करते है और पूजार्थ पुष्प लाने का कार्य हेममाली को दिया गया है। हेममाली की पत्नी विशालाक्षी उसे इतनी प्रिय है कि वह उसे एक क्षण के लिए भी छोडना नही चाहता। एक दिन वह मानसरोवर से कमल तोडकर कुबेर के यहाँ जाने के स्थान पर अपनी पत्नी के पास पहुँच जाता है। कुबेर के सेवक उसे इसकी सूचना देते है। वह कुबेर के सेवको द्वारा पकडकर अलकापुरी ले जाया जाता है। कुबेर क्रुद्ध होकर आज्ञा देता है कि "पापी ! तूने देवताओ का तिरस्कार किया है। इसलिए तू अपनी पत्नी से अलग होकर पृथ्वीलोक पर रहेगा।"

नाटक के अन्त मे असन्धनी विशालाक्षी को सूचना देती है कि 'कुबेर ने हेममाली को क्षमा कर दिया है और देवसेना तथा सुवासिनी पुष्पक विमान लेकर उन्हे रामगिरि से लाने गई है।' इस पर विशालाक्षी की प्रसन्नता के साथ नाटक समाप्त होता है।

यह नाटिका कालिदास-जयन्ती के अवसर पर काशी की अभिनव रगशाला मे अखिल भारतीय विक्रम परिषद् की ओर से देवोत्थान एकादशी (स० २००१) पर अभिनीत हुई।

अलग-अलग रास्ते (सन् १९५४, पृ० १७०), *ले०* उपेन्द्रनाथ अश्क, *प्र०* नीलाभ प्रकाशन, ५, खुसरो बाग रोड, इलाहाबाद, *पात्र* पु० ९, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य-रहित* ।

घटना-स्थल ताराचन्द का ड्राइग-रूम।

इस सामाजिक नाटक मे चरित्रहीन तथा लोभी पति के दुर्व्यवहार से आदर्श पत्नी का दु खमय जीवन दर्शाया गया है। प्राचीन सस्कारो के प्रतीक पण्डित ताराचन्द की दो पुत्रियाँ है—राज और रानी, तथा एक पुत्र है पूरन। राज प्राचीन सस्कारो को मानने वाली है, लेकिन रानी और पूरन प्राचीन रूढियो को खण्डित करने वाले है। ताराचन्द अपनी पुत्री राज का विवाह एक प्रोफेसर से कर देते है जो एक अन्य स्त्री से प्रेम करता है। वह राज को छोडकर उसी स्त्री से विवाह कर लेता है। रानी का पति भी लोभी है, वह विवाह मे मकान और कार न मिलने के कारण उसकी (रानी की) उपेक्षा करता है। फलत रानी और राज दोनो पिता के घर रहती है। राज का श्वशुर उसको लेने आता है, रानी और पूरन के रोकने पर भी वह चली जाती है। राज पति को परमेश्वर मानती है। ताराचन्द रानी के पति त्रिलोक को मकान और कार देने के लिए तैयार हो जाते है जिससे त्रिलोक रानी को लेने आता है। रानी जाने से इन्कार कर देती है जिससे पिता क्रुद्ध हो उसे पितृगृह भी त्यागने को कहते है। पूरन रानी को लेकर चला जाता है। यही नाटक का अन्त हो जाता है।

१९ दिस० १९५३ को नीटा प्रयाग द्वारा पैलेस थियेटर मे प्रदर्शित।

अवतार (स० १९५८, पृ० ८४), *ले०* : हरीश, *प्र०*. हरिनाम सत्सग सम्मेलन समिति, मधुबनी, दरभगा, *पात्र* पु० २२, स्त्री ८, *अक* ३, *दृश्य* १६।

घटना-स्थल क्षीरसमुद्र का तट, कस की राजसभा का मार्ग, कस का कारागार, गोकुल मे यशोदा का प्रसूतिकागृह, गोकुल, उद्यान, यमुना-तट, वृन्दावन का उद्यान, गोकुल मे नन्द का घर, मथुरा का राजमार्ग एव कस की रगभूमि।

इस पौराणिक नाटक मे कृष्ण अवतरित होकर पापी कस का वध करते है। पृथ्वी पर कस का अत्याचार बढ जाने से कृष्ण अवतरित होते है और वे उसके इस आतक से लोगो को मुक्त करते है। जब यह भविष्यवाणी होती है कि देवकी के आठवे गर्भ से उत्पन्न बालक ही इसका विनाश करेगा, तब आततायी कस देवकी और वसुदेव को कारागार मे बद कर देता है। उसने योजना बनायी कि जन्म लेते ही नवजात शिशु की हत्या कर दी जाय। दैवी चक्र इस प्रकार परिचालित होता है कि देवकी के सभी बच्चे मारे जाते है। अन्तत.

वसुदेव आठवे शिशु कृष्ण को गोकुल मे नन्द के यहाँ छोड आते है जिससे वह बालक बच जाता है। कृष्ण के द्वारा कस का स्थान-स्थान पर अपमान होता है और उसकी हत्या भी उन्ही के द्वारा होती है। इस क्रम मे नाट्यकार ने कस और कृष्ण से सबधित अनेक प्रासगिक घटनाओ का उल्लेख किया है।

अवध की बेगम (सन् १९३०, पृ० १६६), ले० के० के० मुकर्जी, प्र० इडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, *पात्र* पु० १८, स्त्री ६, अक ५, दृश्य ८, ६, ५, ५, ७। *घटना-स्थल* घना जगल, बक्सर के पास युद्ध-शिविर।

इस ऐतिहासिक नाटक मे पराजित मीर-कासिम तथा उसके परिवार की दुर्दशा के साथ-साथ बेगम गुलनार का पति-प्रेम दिखाया गया है। बगाल का आखिरी नवाब मीर-कासिम मीर जाफर से हारकर अवध के नवाब शुजाउद्दौला के पास मदद के लिए जाता है। शुजाउद्दौला बिहार की नवाबी के प्रलोभन मे उसकी मदद करता है। मीर कासिम बक्सर की लडाई मे फिर हार जाता है। सैनिक वेतन न मिलने से शुजाउद्दौला और मीर कासिम को मार डालना चाहते है। शुजाउद्दौला के कुछ सिपाही मीर कासिम पर गोली चलाना चाहते है, लेकिन रुहेला-सरदार के भाई का पोता फैजुल्ला उसकी रक्षा करता है।

दूसरे अक मे शुजाउद्दौला की अप्रसन्नता के कारण मीर कासिम बरेली के रुहेला सरदार के यहाँ शरण लेता है। हाफिज रहमत खाँ और फैजुल्ला शरणागत की रक्षा करते है। इधर अवध मे मीर कासिम की बेगम गुलनार अपने पति के शत्रु के यहाँ रुकना उचित नही समझती। वह अपने छोटे-छोटे बच्चो को लेकर भाग जाना चाहती है। नवाब शुजाउद्दौला के सिपाही गुलनार और बच्चो को बन्दी बनाना चाहते है किन्तु कासिम का पुराना नौकर गफूर बच्चो की रक्षा करता है। किसान विट्ठलदास की पुत्री छाया भी छुरी निकाल कर उनकी रक्षा को कटिबद्ध हो जाती है। इधर युद्ध से लौटने पर शुजाउद्दौला बहू और बेगम पर मीर कासिम के परिवार को मुक्त करने के कारण बहुत ही रुष्ट होता है। शुजाउद्दौला छाया और जीनत उन्निसा को बन्दी बनाता है। वह छाया को जीनत उन्निसा समझकर उससे विवाह का प्रस्ताव करता है। छाया पर बलात्कार करना चाहता है तब तक वह खूनी छूरी निकालकर भोक देती है। जीनत उन्निसा भी भाई के साथ भाग जाती है। चौथे अक मे प्यासी जीनत उन्निसा किसी तरह उसके पास पहुँच जाती है। गफूर भी गुलनार और दोनो बच्चो के साथ पहुँचता है। गुलनार जीनत को गोद मे लेकर प्यार करती है।

इधर अवध मे शुजाउद्दौला का बेटा आसफउद्दौला नवाब बनता है। वह सारा खजाना लुटा देता है जिससे शुजाउद्दौला को अपने अतिम समय मे नाना प्रकार के दुख झेलने पडते है। रुहेले आक्रमण कर देते है।

इधर मीर कासिम के दोनो लडके बेहार और अजीमन जगल मे घूम-घूमकर किसी प्रकार जीवन बिताते है। अजीमन को शिकार के धोखे से एक शिकारी मार डालता है। मीर कासिम बच्चो की दुर्दशा तथा अजीमन की लाश देखकर दम तोड देता है। गुलनार दोनो की लाश के पास बैठी विलाप करती है।

अवशेष (वि० २००८, पृ० १०९), ले० : सुधाकर पाण्डेय, प्र० लोक सेवक प्रकाशन, बनारस, *पात्र* पु० ६, स्त्री ४, *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल सजा कमरा, कॉलेज का लम्बा बरामदा, पुस्तकालय।

इस सामाजिक नाटक मे विश्वविद्यालय के तथाकथित प्रेमी-प्रेमिका का एक दृश्य दिखाया गया है। चन्द्रकान्त, रमेश और जगन्नाथ एम० ए० के छात्र और मित्र है। एक दिन चन्द्रकान्त मार्ग मे उषा नामक बी० ए० की छात्रा से धक्का लगने से वाद-विवाद कर बैठता है। चन्द्रकान्त और अजलि नामक छात्रा मे सान्निध्य स्थापित हो गया है और दोनो मे पत्र-व्यवहार होता है। अजलि का एक पत्र रमेश के हाथ लग जाता है। अजलि को चिन्ता हो जाती है कि कही

उसके पत्र का दुरुपयोग न हो।

रमेश के द्वारा चन्द्रकान्त के पिता करुणा को अपने पुत्र के विषय मे कुछ जानकारी होती है। जब चन्द्रकान्त साढे ग्यारह बजे रात घर लौटता है तो उसके पिता उसकी भर्त्सना करते हुए कहते है कि एक सप्ताह मे तुम्हारा विवाह कर दूँगा।

इधर रमेश अजलि की चाटुकारिता करता है और चन्द्रकान्त को आवारा बताकर उससे मुक्ति दिलवाना चाहता है। अजलि बड़ी युक्ति से रमेश की जेब से अपने तीनो पत्र निकालकर उसे घर से विदा करती है। उन पत्रो को ऊषा को सुनाती है और ऊषा की आलोचना सुनकर उसे भी घर से भगा देती है। चन्द्रकान्त अजलि से मिलने आता है और अपने पिता का आदेश सुनाता है। अजलि उससे पिता के आज्ञा-पालन का आग्रह करती है। बडी देर की बहस के उपरान्त अजलि, चन्द्रकान्त और जगन्नाथ एक साथ भोजन करते है।

चन्द्रकान्त का विवाह हो रहा है। उसने अजलि के अतिरिक्त सबको निमत्रित किया है किन्तु अजलि बिना निमत्रण के सम्मिलित होती है। चन्द्रकान्त पान देना चाहता है। अजलि कहती है—"भारत की नारी पर-पुरुष से बीडा नही लेती"—इतना कहकर उपहार दे वह मुस्कराती चल देती है।

अशोक (सन् १९५४,पृ० १५८), ले०: चन्द्रगुप्त-विद्यालकार, प्र० राजपाल एण्ड सस, दिल्ली, *पात्र* पु० ६, स्त्री ३, *अक* ५, *दृश्य* ३५। *घटना-स्थल* राजप्रासाद का उद्यान, वैशाली प्रान्त मे।

इस ऐतिहासिक नाटक मे प्रियदर्शी सम्राट् अशोक के महान् कार्यों तथा भ.ई सुमन की वाग्दत्ता पत्नी के पवित्र आत्मबलिदान का वर्णन है। भारत-सम्राट् बिन्दुसार के तीन पुत्र युवराज सुमन, अशोक और तिष्य है। सेनापति चण्डगिरि तक्षशिला के नागरिको पर अत्याचार करते है। अशोक तक्षशिला के विद्रोह को दबाकर जनता को सतुष्ट कर देता है। वहाँ के नागरिक अशोक को अपना सम्राट् स्वीकार कर लेते है। भारत-साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र मे रुग्ण बिन्दुसार की मृत्यु हो जाती है इसकी सूचना पाते ही अशोक सोचता है कि अब ज्येष्ठ भ्राता सुमन को राजगद्दी मिलेगी। अत: उसके हृदय मे सुमन के प्रति द्वेष-भावना जाग्रत हो जाती है। अशोक अपनी सेना लेकर पाटलिपुत्र आता है और युवराज सुमन को बन्दी बना लेता है। चण्डगिरि धोखे से पवित्र-आत्मा 'सुमन' का वध कर देता है। अशोक मानवता-प्रेमी सुमन की हत्या नही करना चाहता, लेकिन चण्डगिरि के सामने विवश हो जाता है। तिष्य बडे भाई सुमन की हत्या सुनकर जगल मे भाग जाता है।

अशोक की सेना बौद्धो पर अत्याचार करती है लेकिन आचार्य उपगुप्त बौद्धो को अहिसा का मार्ग ही अपनाने को कहते है। अशोक कलिग पर आक्रमण कर देता है। दोनो ओर की सेनाओ मे घमासान युद्ध होता है। कलिगराज षड्यन्त्र रचते है कि रात्रि के दूसरे पहर मे सोते हुए अशोक की हत्या कर दी जायेगी। यदि सफलता न मिली तो प्रातकाल आत्मसमर्पण कर दिया जाएगा। इस षड्यन्त्र की सूचना 'सुमन' की वाग्दत्ता पत्नी 'शीला' को एक चर द्वारा मिल जाती है। वह रात्रि मे अशोक के स्थान पर स्वय सो जाती है अत. षड्यन्त्रकारी शीला को अशोक समझकर मार डालते है। आचार्य गुप्त से जब अशोक को पता चलता है कि शीला ने उसके प्राण बचाये है तो वह वैद्यराज से शीला के जीवन की भिक्षा माँगता है। शीला उपचार और आशीर्वाद से ठीक हो जाती है। 'अशोक' शीला से क्षमा-याचना करता है।

कलिग-विजय के उपरान्त अशोक बौद्ध धर्म का अनुयायी हो जाता है। वह विश्व-भर मे अहिसा, दया आदि मानवीय धर्मो का प्रचार करता है और जन-सेवा का सकल्प लेता है। शीला सब कुछ त्याग कर आचार्य उपगुप्त के साथ सीमाप्रान्त की ओर चली जाती हैं।

अशोक (सन् १९५७, पृ० १३५), ले० सेठ गोविन्ददास, प्र० भारती साहित्य मदिर, दिल्ली; *पात्र* : पु० ९, स्त्री ६; *अक* . ४, *दृश्य* ३, ३, ३, ३।

घटना-स्थल : पाटलिपुत्र, कलिंग, युद्धक्षेत्र, मार्ग, राजभवन ।

नाटक का प्रारम्भ अवन्ती के राजभवन मे अशोक और उसकी प्रथम पत्नी असधिमित्रा के वार्तालाप से होता है। वह अपने ज्येष्ठ पुत्र महेन्द्र की ग्यारहवी वर्षगाँठ के अवसर पर भावी योजना बनाते हुए कहता है—"सुसीम के सदृश पुरुषार्थहीन, अकर्मण्य, नपुसक व्यक्ति के हाथ मे भारतीय सत्ता जाने और उसके विध्वस, नष्ट-भ्रष्ट होने की अपेक्षा मौर्य-वश का गृह-कलह अधिक कल्याणकारी होगा ।" इधर पाटलिपुत्र के राजभवन मे अशोक का छोटा भाई विगताशोक प्रधानामात्य राधागुप्त से कहता है—"पिताजी ने आर्य अशोक को युवराज-पद पर प्रतिष्ठित न किया तो सुसीम से मै युद्ध करूँगा ।"

सम्राट् बिन्दुसार की मृत्यु के उपरान्त चार वर्ष तक गृह-कलह चलता रहा । उसके शमन होने और विदेशियो के निष्कासन पर अशोक राज्याभिषेक का समारोह करता है । दूसरे अक मे महेन्द्र और सघमित्रा क्रमश. बीस और अठारह वर्ष की अवस्था मे भिक्षु-भिक्षुणी बनने के लिए सम्राट् से अनुमति माँगते है । अशोक का पचवर्षीय पुत्र कुणाल महेन्द्र-सघमित्रा को केशमुडित देखकर डरता है । अशोक की दूसरी रानी कारुबाकी से उत्पन्न पुत्र तीवर सघमित्रा के बुलाने पर कहता है—"पहले तुम फिर से अपने बाल बढा लो, मेरे जैसे कपडे पहन लो, तब आऊँगा ।" इस प्रकार प्रारम्भ मे पारिवारिक वातावरण उत्पन्न किया गया है ।

तीसरे अक मे कलिंग-युद्ध के भीषण युद्ध के उपरान्त अशोक का हृदय-परिवर्तन होता है। वह कहता है—"कलिंग-युद्ध के हृदय को हिला देने वाले कारुणिक आर्त्तनाद के अतिरिक्त और कुछ सुनायी नही देता । हम दूसरो के दुखो की नीव पर अपने सुख के भवन का निर्माण नही कर सकते ।" अशोक घोषणा करता है कि "किसी भी जीवधारी का अब वध न किया जाएगा ।" सद्धर्म-प्रचार के लिए उत्तरापथ से दक्षिणापथ तक शिलास्तूपो, शिला-स्तम्भो आदि का निर्माण होगा जिन पर शिला-लेख लिखे जायेगे ।" अशोक बौद्ध-गुरु उपगुप्त से बौद्ध-धर्म की दीक्षा लेता है। सभासद् देवानाम्-प्रिय प्रियदर्शी चक्रवर्ती धर्मराज राजराजेश्वर सम्राट् अशोकवर्धन की जयजयकार करते है ।

चौथे अक मे अशोक के राज्यारोहण के छत्तीसवे वर्षोत्सव का दृश्य है। वह कारुबाकी को सभी शिलालेख पढाकर राज्य मे बौद्ध-धर्म-प्रचार का महत्त्व समझाता है । इसी समय अन्धा कुणाल अपनी पत्नी और पुत्र के साथ आता है । तिष्यरक्षिता कुणाल को अधा बनाने का अपराध स्वीकार करती है ।

नाटक के अन्त मे अहिंसा के प्रचार का परिणाम दिखाते हुए राधागुप्त कहता है—"अहिंसा के इस मार्ग से भारतीय साम्राज्य के एकीकरण और जम्बूद्वीप की भलाई तो दूर की बात है, अब तो मौर्य-साम्राज्य मे ही यत्रतत्र विद्रोह उठ खडे होते है । न सेना है और न कोष मे धन ।"

अशोक (वि० १६८४, पृ० १६८), ले० लक्ष्मीनारायण मिश्र, प्र० हिन्दी पुस्तक भण्डार, लहरिया सराय, *पात्र* पु० १७, स्त्री ४, *अक* ५, *दृश्य* . ८, ७, ८, ६, ७ । *घटना-स्थल* . कलिंग, पाटलिपुत्र, युद्ध-क्षेत्र, राजभवन आदि ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे बिन्दुसार की कल्मपता और उसके पुत्र अशोक की महत्ता, दोनो के जीवन की मार्मिक घटनाओ के आधार पर प्रदर्शित की गयी है ।

सम्राट् बिन्दुसार पश्चिमोत्तर प्रदेश का विद्रोह दमन करने के लिए राजकुमार अशोक को एकाकी भेज देते है। ऐसी स्थिति मे अशोक के सेनापति के रूप मे ब्राह्मण धर्मनाथ, सामन्तो को सुसगठित कर विदेशी-आक्रमण का सफलतापूर्वक सामना करता है । अशोक की सफलता और प्रभाव से भयभीत होकर सम्राट् बिन्दुसार उसे उज्जैन मे विद्रोह-दमन के लिए आदेश देता है। साथ ही उज्जैन के सेनापति के साथ गुप्त-प्रणिधि द्वारा अशोक की हत्या का षड्यन्त्र रचता है। इन्ही दिनो प्रधानमंत्री चन्द्रसेन को बिन्दुसार की दुरभिसधि के कारण पदत्याग करना पडता है । ज्येष्ठ राजकुमार भवगुप्त

चन्द्रसेन को सहायता देकर अशोक के पास पहुँचा देता है और राजनीति से वितृष्णा होने के कारण स्वय सन्यास ले लेता है।

ब्राह्मण धर्मनाथ की प्रेरणा और राज-विस्तार की महत्त्वाकाक्षा से अशोक कलिग-राज से अकारण युद्ध करता है। कलिगराज सर्वदत्त जयन्त को युद्धक्षेत्र मे भेजकर सन्यास ग्रहण करता है। जयन्त की पराजय होने पर उसकी पुत्री माया बन्दिनी बना ली जाती है। अशोक अकारण नरसहार देखकर प्रायश्चित्त करता है और धर्मनाथ आत्महत्या। माया के साथ भवगुप्त के पुत्र अरुण का विवाह होता है।

इसमे प्रासगिककथा ग्रीक-राजकुमारी डायना और निर्धन युवक ऐन्टीपेटर की प्रेम-कहानी पर आश्रित है। ऐन्टीपेटर एक दिन सिह से अशोक की रक्षा करता है, एतदर्थ सेनापति नियुक्त होता है। डायना अपने पिता की इच्छा के विरुद्ध ऐन्टीपेटर से प्रेम करती है। एक स्थान पर पिता से कहती है—"मै ऐन्टीपेटर को प्यार करती थी और अब भी उसे चाहती हूँ। इस ससार मे मेरा जो कुछ स्वर्ग है, वह ऐन्टीपेटर के चरणो मे है।"

ऐन्टीपेटर कलिग-युद्ध मे मारा जाता है और डायना का स्वर्ग विलुप्त हो जाता है।

नाटक के अन्त मे अशोक अपने ज्येष्ठ भ्राता भवगुप्त से कहता है—"अपने सम्राट् बने रहने के प्रलोभन मे सम्राट् ने मुझे साम्राज्य देने का विचार किया। यह साम्राज्य तुम्हारा है, भाई, तुम्ही सम्राट् बनो।"

इसी प्रकार अशोक कलिगराज सर्वदत्त से कहता है—"महाराज, आप विजयी है, आप अपना कलिंग ले लीजिए। मुझे अपनी तृष्णा का पूरा फल मिला।"

इस नाटक मे अशोक की पत्नी देवी मे भी युद्ध के प्रति वितृष्णा दिखायी गयी है।

अशोक की आज्ञा (सन् १९७०, पृ० १२०), ले० जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द, प्र० कैलाश पुस्तक सदन, ग्वालियर, *पात्र* पु० ६, स्त्री ४, *अक* ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : पाटलिपुत्र, नगर, गाँव आदि।

इस ऐतिहासिक नाटक मे अशोक के सत्य, अहिसा तथा धार्मिक उपदेशो का वर्णन है। महाराज बिम्बसार अपने मरने के बाद अपने ज्येष्ठ पुत्र सुसीम को राज्याधिकारी बनाना चाहते है, किन्तु सुसीम के विलासी, बुद्धिहीन तथा दुर्बल होने के कारण जनता उसके विपक्ष मे है। यद्यपि आचार्य उपगुप्त गुप्त रीति से सुसीम के पक्ष मे होते है, पर कृषको के प्रयास एव अशोक के प्रताप से राज्य सुसीम के स्थान पर उसे ही मिलता है। सम्राट् बनने के साथ ही एक नूतन व्यक्तित्व दिखाई देता है। उनका सारा कार्य स्नेह, सौहार्द तथा मानवता पर आधारित है। गौतम बुद्ध का प्रभाव उनकी रग-रग मे समाया हुआ है, वे उसी को कार्यान्वित करने के प्रयास मे रहते है। अशोक ग्रामीण शीला, सुशील तथा अपनी पुत्री सघमित्रा और पुत्र महेन्द्र को अहिसा, सहिष्णुता तथा मानवता के आदर्शो पर चलने के लिए प्रेरित करते है।

अशोकवन-बन्दिनी (सन् १९५५, पृ० ४५), ले० उदयशकर भट्ट, प्र० भारती साहित्य मन्दिर, दिल्ली-१; *पात्र* पु० १, स्त्री ५; *अक-रहित*, *दृश्य* १।
घटना-स्थल उद्यान।

इस गीति-नाट्य मे नारी के पीडित अन्तर का दिग्दर्शन कराकर नारीत्व के चरमोत्कर्ष की स्थापना की गयी है। प्रस्तुत गीति-नाट्य मे सीता भारतीय सस्कृति की प्रतिनिधि है।

प्रथम दृश्य मे अशोक-वन मे वन्दिनी सीता राम की स्मृतियो मे लीन है। रावण द्वारा नियुक्त त्रिजटा नामक राक्षसी सीता को अनेकानेक त्रास देकर राम को विस्मृत करके रावण को स्वीकारने का मार्ग सुझाती है। किन्तु सीता पति-चरणो से वियोग की अपेक्षा मृत्यु को अधिक श्रेयस्कर समझती है। सीता की यह एकनिष्ठ भक्ति तथा दृढ सकल्प-शक्ति त्रिजटा के हृदय-परिवर्तन मे सहायक होती है, जिसके परिणामस्वरूप त्रिजटा रावण की भर्त्सना करती है। इसी समय रावण विभिन्न प्रलोभनो द्वारा सीता को प्रभावित करना चाहता है। वह शक्ति-प्रदर्शन का आश्रय लेता है। ज्यो-ज्यो सीता रावण की शक्ति की अवहेलना करती जाती है, त्यो-त्यो रावण का कुठित दर्द

उद्वुद्ध होता जाता है। यहा तक कि वह सीता के वध के लिए भी तत्पर हो जाता है। तभी मदोदरी आकर 'अवला अवध्य' कहकर रावण को रोक लेती है। इस स्थल पर रावण-मदोदरी-सवाद मे पुरुष के अहकार पर प्रकाश डाला गया है। पुरुष अपनी शक्ति के द्वारा सर्वाधिकार प्राप्त करना चाहता है।

इसी दृश्य मे हनुमान सीता को वन्धन-मुक्ति का आश्वासन देते है। यह आश्वासन सीता के विरह-मरु मे शीतल जल का कार्य करता है। इसी समय मदोदरी आती है और आते ही सीता पर व्यग्य-वाणो की वौछार करती है। इस स्थल पर मदोदरी मे नारी-सुलभ ईर्ष्या का उदय होता है। वह इस समस्त काण्ड के मूल मे सीता के अपूर्व रूप को देखती है, जिस पर उसका पति आसक्त हो गया है। यह रूप उसकी सुखी गृहस्थी मे आगे रहा है। इस आरोप के प्रत्युत्तर मे सीता मदोदरी को पत्नी-धर्म का महत्त्व समझाती है और इससे आश्वस्त होकर अपने पति को सन्मार्ग पर लाने की ओर प्रवृत्त होती है।

अश्वत्थामा (सन् १९५९), ले० उदयशकर भट्ट, प्र० भारती साहित्य मडल, दिल्ली, *पात्र* पु० ६, स्त्री १, *अक-दृश्य-रहित* । *घटना-स्थल* रात्रि का एक दृश्य।

इस गीति-नाट्य मे प्रतिहिसा-भावना से उद्विग्न अश्वत्थामा का अन्त सघर्ष दिखाया गया है।

इसका प्रारम्भ महाभारत के युद्ध की समाप्ति के पश्चात् प्रथम काल-रात्रि से होता है। अश्वत्थामा अपने वल-पराक्रम के ह्रास तथा मणि के अभाव मे ईर्ष्या से जलता हुआ प्रतिहिसा के लिए तत्पर है। वह पाण्डवो की तथाकथित न्यायप्रियता के प्रति अपना तीव्र व्यग्य तथा आक्रोश व्यक्त करता है। महाभारत की अनेक विसगतियाँ अश्वत्थामा को विकल करती रहती है। धर्मराज कहलाने वाले युधिष्ठिर का असत्य-भाषण 'अश्वत्थामा हतः नरो वा कुजरो वा।' कौरवो के लिए दुर्भाग्य का पुज वन जाता है। द्रोण का पुत्र-शोक मे अस्त्र-त्याग, भीष्म की शर-शैया, दुर्योधन का वध आदि घटनाएँ इसी दुर्भाग्य की शृखलाएँ है। अर्जुन द्वारा मस्तक-मणि के अपहरण से अश्वथामा की प्रतिहिंसा पराकाष्ठा को पहुँच जाती है, जिसका परिशमन पाण्डवो के पाँच पुत्रो के वध के रूप मे होता है। मृतप्राय दुर्योधन को जव अश्वत्थामा इस घटना की सूचना देता है उसी समय शोक-सतप्त दुर्योधन प्राण त्याग देता है क्योंकि यही पाण्डव-पुत्र उसके वश के रक्षक थे। इनकी हत्या के पश्चात् पाण्डव-कुल के साथ-साथ कौरव-कुल का भी दीपक वुझ गया, यह विचार दुर्योधन को हिला देता है। अपने कुकृत्य का दुष्परिणाम देखकर अश्वत्थामा विक्षिप्त हो जाता है।

असत्य संकल्प (सन् १९३८, पृ० ८०), ले० वलदेवप्रसाद मिश्र, प्र० वलभद्र प्रसाद मिश्र, राजनंद गाँव, *पात्र* पु० ८, स्त्री १, *अक* २, *दृश्य* ३, ६, ६। *घटना-स्थल* राजप्रासाद, पाठशाला, आश्रम।

इस पौराणिक नाटक मे प्रह्लाद के सत्य-सकल्प के सामने हिरण्यकशिपु की हार दिखाई गई है। प्रह्लाद वाल्यकाल से ही ईश्वर-भक्त है, किन्तु हिरण्यकशिपु ईश्वर के स्थान पर उससे अपनी पूजा करवाना चाहते है। प्रह्लाद इसे स्वीकार नही करता। वह राज्य-कर्मचारियो और अध्यापको के द्वारा प्रह्लाद का मत-परिवर्तन करना चाहते है, पर प्रह्लाद अटल रहता है। जव आचार्य गण उससे परमात्मा के विपय मे तर्क करते है तो वह कहता है कि "जो प्रसूनो मे रस भर भ्रमर को मधु पिलाता है और जो कोयल के कठ मे वैठकर पचम स्वर सुनाता है वही ईश्वर है।" वह ईश्वर को विश्व के सम्पूर्ण कला-कलापो का सचालक घोषित करता है। उसे नाना प्रकार की यातनाएँ दी जाती है पर वह हरिनाम-स्मरण नही छोडता। भगवान् की कृपा से वह सभी यातनाओ से वच जाता है। अन्त मे पिता के असत्य सकल्प की हार और पुत्र के सत्य-सकल्प की विजय होती है।

इस नाटक मे विचार-स्वातंत्र्य पर भी वल दिया गया है। आश्रम-निवासियो के

मत की चर्चा करते हुए मन्त्री कहता है—"वे कहते है शिक्षा का स्थान स्वतन्त्र है। जिसे जो सत्य जान पडे उसे वह अगीकार कर सकता है। कोई मनुष्य दूसरे पर हठपूर्वक अपने सिद्धान्त नही लाद सकता। ज्ञान के राज्य मे सबको विचार-स्वातत्र्य है।"

असीरे-हिर्स (सन् १९२४, पृ० ११२), ले० · आगा हश्र (रचनाकाल १९०१ ई०), प्र० · बनारस उपन्यास दर्पण, *पात्र* पुरुष ८, स्त्री ४; ८ *युद्ध-दृश्य तथा अन्य दृश्य।*

घटना-स्थल शाही महल, युद्ध-क्षेत्र।

इस ऐतिहासिक नाटक मे कुटिल तथा अत्याचारी बादशाह का अन्त मे पश्चात्ताप दिखाया गया है। मिस्र के बादशाह के स्वर्ग-गत हो जाने पर युवराज नासिरुद्दौला के स्थान पर उसका चचेरा भाई चगेज सिहासनासीन होता है। राज-सिहासन पर बैठते ही युवराज नासिर, उसके पुत्र कमर और स्त्री महजबीन पर अत्याचार करता है किन्तु सेनापति रुस्तमगज और चगेज की स्त्री नौशाबा की बुद्धिमत्ता से सभी समस्याएँ सुलझ जाती है। नासिर बन्दीगृह से मुक्त होता है तथा कमर को फाँसी से छुटकारा मिल जाता है। चगेज अपने दुष्कर्मो पर पश्चात्ताप करता है और अन्त मे 'युवराज' नासिरुद्दौला को राजा बनाया जाता है।

यह 'सेरीडेन के पिजरो' नामक नाटक के आधार पर लिखा गया है। इसका प्रथम अभिनय सन् १९०२ मे नौरोजानी परी की पारसी कम्पनी द्वारा हुआ।

असीरे-हिर्स (सन् १९७१ ई०, पृ० १०६), मुशी जलाल अहमद से प्राप्त कर बाबू जयरामदास गुप्त ने प्रकाशित करवाया, श्री लक्ष्मीनारायण प्रेस, जतनवर, वनारस सिटी, *पात्र* पु० ८, स्त्री ४, *अक* : ३, *दृश्य* : ६, ८, ४।

घटना-स्थल जगल, खेमागाह, मकान, वाग, मैदानेजंग, रास्ता, कैदखाना।

इस ऐतिहासिक नाटक मे नासिरुद्दौला एवं चगेज के मध्य हुए युद्ध एवं उससे सबंधित घटनाओ का उल्लेख है। नासिर और चगेज के युद्ध मे नासिर का सेनापति सफदरजंग बन्दी बनकर चंगेज की बेगम नौशावा के सम्मुख उपस्थित होता है। बेगम नौशावा कैदी सफदरजंग को अपनी सालगिरह की खुशी मे रिहा कर देती है। यह जानकर चगेज नाराज होता है और उसे फिर वन्दी बनाता है। चगेज को सफदरजंग का एक सिपाही गोली मार देता है। आहत चगेज अपने बीवी-बच्चो का भार रुस्तम को सौपता है। रुस्तम नासिर को घमासान युद्ध के बाद बन्दी बना लेता है। नासिर के सहायक बन्दीगृह मे पहरेदारो को शराब पिलाकर नासिर को छुडा लेते है। नौशाबा चंगेज को कत्ल कराना चाहती है पर रुस्तम उसे रोक लेता है। चंगेज के सिपाही नासिर के बेटे कमर को बाँध कर लाते है। चगेज उसे मार देने का आदेश देता है, परन्तु रुस्तम युद्ध करके कमर को वहाँ से निकाल ले जाता है। चगेज नौशाबा को मरवा देता है। उधर नासिर, कमर एव रुस्तम नासिर की रोती हुई बेगम महजवीन से मिलते है। चगेज पुन आक्रमण करता है, जहाँ उसकी सेना हार जाती है। मरते समय नासिर की रूह नौशाबा की रूह द्वारा बचा ली जाती है। नासिर भी चगेज को माफ कर देता है। अंत मे चंगेज खाँ के हाथो नासिर की ताजपोशी होती है और जश्न मनाया जाता है।

अस्पृश्यता (सन् १९५८, पृ० १३९), ले० · कमलाकान्त पाठक, प्र० लल्ली प्रकाशन, प्रयाग; *पात्र* पु० १२, स्त्री ७, *अक* : ४, *दृश्य* ४, ३, ४, ४।

घटना-स्थल गाँव मे पुलिस-कैम्प।

इस सामाजिक नाटक मे स्वार्थी एव धर्मान्ध पाखडियो के अमानुषिक व्यवहार तथा हरिजन-कल्याण मार्ग का दिग्दर्शन कराया गया है। इसमे अस्पृश्यता को हिन्दू समाज पर एक कलक दिखाया गया है। इसका जड से उन्मूलन ही देश तथा समाज के उत्थान का सही मार्ग वताया गया है। उत्तर प्रदेश के एक गाँव मे पुजारी पडित अछूतो के साथ अमानवीय वर्ताव करते हैं और मन्दिर मे न तो दर्शन करने देते है, न ही कुएँ पर पानी भरने देते हे। धर्मान्ध पडित पुजारी इसी

भेदभाव के द्वारा अपनी स्वार्थ-सिद्धि चाहते है। उनके दुर्व्यवहार से गाँव के विभिन्न वर्गों मे एक-दूसरे के प्रति घृणा उत्पन्न हो जाती है। आपस का प्रेम-सम्बन्ध नष्ट हो जाता है। पचायत मे भी पाखडियो का बहुमत है। धर्मान्ध केवल अपने स्वार्थो मे लीन रहते है। अछूतो पर अमानुषिक अत्याचार करते है। पुलिस को भी रिश्वत देकर अपने पक्ष मे कर लेते है। पुलिस भी उन पर अत्याचार करती है। किन्तु अन्त मे कतिपय युवको के प्रयास से पुराने लोग भी अछूतोद्धार के लिए कटिबद्ध हो जाते है। यह नाटक समाज-कल्याण के सिद्धान्तो के प्रचार के लिए लिखा गया।

अहिल्या-उद्धार (सन् १९००, पृ० ५६), ले० मा० न्यादरसिंह बेचैन, देहलवी, प्र० . अग्रवाल बुक डिपो, दिल्ली, *पात्र* पु० ८, स्त्री २; *अक* ३, *दृश्य* · ६, ३, ४।
घटना-स्थल पर्णकुटी, वन आदि।

इस पौराणिक नाटक मे राम-चरणो के स्पर्श से अहिल्या-उद्धार की कथा वर्णित है। गौतम ऋषि के शाप से अहिल्या पत्थर के समान जडवत् हो जाती है। राम उसे अपने चरणो के स्पर्श से पुन नारी बना देते है और उसका उद्धार हो जाता है। यही इसकी मूल कथा है।

अहिल्या संक्रंदनीयम् (सन् १८९०, पृ०५०), (तेलुगु लिपि मे) ले० व प्र० नोदेल्ल पुरुषोत्तम कवि, तथा लेखक के पुत्र नोदेल्ल मेधादक्षिण-मूर्ति शास्त्री, मछ-लीपट्टणम, *पात्र* पु० २०, स्त्री ४, *अक* रहित, *दृश्य* . २४।
घटना-स्थल मछलीपट्टणम और आन्ध्र के अन्य नगर।

इस नाटक मे गौतम की पत्नी अहिल्या की करुण कथा प्रस्तुत की गई है। ब्रह्मा की मानसपुत्री अहिल्या विवाह से पूर्व ही इन्द्र को देख मोहित हो जाती है। अहिल्या की स्वीकृति पर ही इन्द्र अपनी काम-वासना तृप्त करता है। यह उद्भावना तेलुगु के रीतिकालीन काव्य (वाङ्मय-दक्षिणान्ध्र) से ग्रहण की गई है। शेप कथा मे कोई परिवर्तन नही किया गया है।

आ

आँख का नशा (सन् १९२४, पृ० १२०, ले० · सैयद मुहम्मद आगा हश्र काश्मीरी, प्र० : रतन एण्ड कम्पनी, दिल्ली, *पात्र* : पु० ११, स्त्री ६; *अक* · ३, *दृश्य* ७, ६, ६।
घटना-स्थल . कमरा, राजमहल के समीप वाटिका।

इस सामाजिक नाटक मे भारतीय नारी के सतीत्व का आदर्श तथा बुरे कार्य का बुरा परिणाम दिखाया गया है। जुगल आदर्श हिन्दू पत्नी की अवहेलना कर अपने दुराचारी मित्र की सगति के कारण कामलता वेश्या के चंगुल मे फँस जाता है। कामलता जुगल का धन, मान-मर्यादा सभी कुछ लूट कर पूर्व प्रेमी के पास चली जाती है। जुगल को जेल से छूटने पर वास्तविकता का पता चलता है, वह दर-दर की ठोकरें खाता फिरता है, इसी बीच एक दुकानदार जुगल को पकडवा देने पर ५००० रु० इनाम मिलने के लोभ से थाने मे रिपोर्ट लिखाने जाता है, परन्तु जुगल मूर्च्छित हो गिर जाता है, मदिर से आती हुई उसकी पत्नी उसे पहचान लेती है, बेनी भी अपना सारा अपराध स्वीकार कर क्षमा माँग लेता है।

आँधी और घर (सन् १९७१, पृ० ४८), ले० · मोहन चोपडा, प्र० विश्वोदय प्रकाशन, दिल्ली; *पात्र* पु० ४, स्त्री १, *अक* १, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल एक घर—कमरा।

इस प्रतीकात्मक नाटक मे आधुनिक जीवन की प्रमुख समस्या तथा प्राचीन और नवीन विचारो के सघर्प को सफलतापूर्वक चित्रित किया गया है।

दादा प्राचीनता के मोह मे लिपटे हुए है। इनके पुराने जर्जर घर मे एक बूढी नौकरानी और दो पोते है। सबसे बडा पोता चेतन घर की घुटन से तग आकर भाग जाता है। मझला पोता सुन्दर घर की प्रत्येक बात मे दादा का विरोध करता है। वह घर मे परिवर्तन लाने के लिए प्रत्येक पुरानी वस्तु को नष्ट कर देना चाहता है। दादा उसकी इन बातो को पसन्द नही करते। चन्द्र सहज विश्वासी और जिज्ञासु युवक है। वह दादा से समझौता कर लेता है। इसी बीच चेतन घर आ जाता है। वह भी घर मे परिवर्तन लाना चाहता है, परन्तु सुन्दर की तरह नाश नही चाहता। वह प्राचीनता मे से कुछ तत्त्व निकाल कर उसके स्थान पर नये ढग का निर्माण करना चाहता है। इसी बीच आँधी चलती है। पुराना घर गिर जाता है जिससे दादा चिंतित हो जाते है। किन्तु चेतन दादा को विश्वास दिलाता है। वह सुन्दर के विद्रोह को भी शात करता है तथा मकान के मलबे से कुछ बहुमूल्य वस्तुएँ निकालता है और इस पुराने घर के स्थान पर नया घर बनाने का नक्शा दादा को दिखाता है। वह दादा को जीवन-सघर्ष से थकने का कारण कमरे मे किसी रोशनदान का न होना तथा प्राचीनता से ही लिपटे रहना बताता है। दादा उसकी बातो से प्रभावित होकर उसकी राय स्वीकार कर लेते है।

आँधी और तूफान (सन् १९६३, पृ०५), ले० . कचनलता सब्बरवाल, प्र० आधुनिक प्रकाशन, लखनऊ, *पात्र* पु० ७, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* २, ३, २।
घटना-स्थल कमरा, ड्राइग-रूम।

यह राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत ऐतिहासिक नाटक है। इसमे युद्ध के समय भारतीय माताओ का सहयोग और वीर सैनिको का अमर बलिदान दिखाया गया है। पहले अक मे १९४२ के 'भारत छोडो आन्दोलन' का दृश्य है। इस अक मे वृद्धा माँ अपने पुत्र विजय को अग्रेजो से टक्कर लेने के लिए भेजती है। विजय युद्ध मे शहीद हो जाता है। सन् १९६२ मे चीन का आक्रमण होता है, उस समय विजय की बहिन अपने पुत्र तथा पति को चीनियो के विरुद्ध युद्ध करने के लिए सीमा पर भेजती है तथा पुत्री नर्स बनकर घायल सैनिको की सेवा करती है। देश-रक्षा के लिए माँ अपने पुत्रों को बलिदान करने के लिए उद्यत रहती है।

आखिरी करवट (सन् १९५९, पृ० ६४), ले० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६; *पात्र* पु० ४, स्त्री १, *अक* २, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल घर, कमरा।

इस सामाजिक नाटक मे सच्ची पत्नी तथा आदर्श माँ की हृदयस्पर्शी कहानी है। शारदा एक करवट अपने पति के स्वच्छ आदर्शो की ओर तथा दूसरी करवट पुत्र की भूखी आत्मा की ओर लेती है। इसी शारदा की आखिरी करवट, जिसे वह अपने बच्चे का जीवन समझती थी, उल्टी मौत बन जाती है। उसकी आखिरी करवट नारी का नारीत्व लूट लेती है। अपने बच्चे की जीवन-रक्षा के लिए वह गौरीशकर की हविस का शिकार बनने का फैसला करती है। फिर भी उसका बच्चा नही बच पाता। धर्म और पुत्र दोनो लुट जाते है। इसी से अन्त मे वह आत्मग्लानि से मर जाती है।

आग की जिन्दगी, ले० . शभुदयाल सकसेना; प्र० मुक्तवाणी प्रकाशन, बीकानेर, *पात्र* पु० ८, स्त्री, ४, *अक* ३, *प्रत्येक अक में अनेक दृश्य*।
घटना-स्थल रास्ता, वन, युद्ध-क्षेत्र, सभा-भवन, बुन्देलखण्ड, काशी, बम्बई, झाँसी, आगरा, दिल्ली, लाहौर, कानपुर, इलाहाबाद।

इस ऐतिहासिक नाटक मे चन्द्रशेखर आजाद के दुखद तथा साहसपूर्ण जीवन की अदभुत झाँकी प्रस्तुत है। इसके प्रधान पात्र चन्द्रशेखर आजाद है। उन्ही के जीवन के क्रान्तिकारी प्रयासो का चित्रण है। नायक के जीवन मे घटनाएँ बडी द्रुत गति से घटती है। नाटक मे भी कार्य-व्यापार बहुत प्रखर है। नाटक को रगमंच के योग्य बनाने का प्रयास किया गया है। पृष्ठभूमि ऐतिहासिक है एव तथ्यो पर आधारित है परन्तु घटनाओ के क्रम व समय के व्यवधान मे आवश्यक

स्वच्छन्दता से काम लिया गया है।

आचार-विडम्बन (सन् १८९९), ले० बाल-कृष्ण भट्ट, प्र० हिन्दी प्रदीप, *पात्र* पु० ३। *घटना-स्थल* बाजार, घर, गौशाला।

यह एक प्रकार का प्रहसन है जिसमे पाखण्डी पडितो की करतूतो का भण्डाफोड किया गया है। माधवाचार्य पाखण्डी पडितो का प्रतिनिधित्व करते है। रामप्रपन्न मिश्र अपने बुद्धि-कौशल के बल से माधवाचार्य की पाखण्ड-भरी करतूतो का उन्ही की वाणी द्वारा उद्घाटन करवाते है।

हिन्दू समाज मे व्याप्त बालविवाह प्रथा, शिक्षा का अभाव और आडम्बरो के सहायक माधवाचार्य के पाखण्डो का विवरण मिलता है। एक स्थान पर माधवाचार्य कहते है—"जब से हाड की चीनी चल पडी है मैंने बाजार की मिठाई खाना छोड दिया। बाजार की सागभाजी भी घर मे नही आने देता। इस लिए कि बम्बे का पानी उस पर छिडका रहता है। अहीर के घर का दूध-दही भी घर मे नही लाता, सो भी इसी लिए कि अहीर लोग बम्बे का पानी गाय-भैसो को पिलाते है। उनके दूध मे कहाँ तक बम्बे का पानी न उतर आता होगा। मैं तो जिधर निगाह फैलाता हूँ कोई ऐसा नही मालूम होता जो भ्रष्ट न हो गया हो। इसी से मै 'स्वय पापी' हो गया हूँ।"

इसी तरह केवल वार्तालाप के द्वारा हिन्दू-समाज के पाखण्डो को प्रदर्शित किया गया है।

आचार्य चाणक्य (सन् १९६३, पृ० २७०), ले० जनार्दनराय नागर, प्र० गगाप्रसाद एण्ड सस, आगरा, *पात्र* पु० १६, स्त्री ४; *अक* ३, *दृश्य* ७, ५, ६। *घटना-स्थल* तक्षशिला, राजभवन।

इस ऐतिहासिक नाटक मे आचार्य चाणक्य की कुशल नीतियो का वर्णन किया गया है। तक्षशिला विद्यापीठ के आचार्य चाणक्य सिकन्दर के भारत-आक्रमण से चिन्तित देश की स्वाधीनता के रक्षार्थ अपने शिष्यो को क्षुद्र सकीर्णताओ का त्याग कर कटिबद्ध होने का परामर्श देते है। आम्भीक पर्वतेश्वर की कन्या रजनीगन्धा से विवाह करना चाहता है, परन्तु पर्वतेश्वर इस परिणय-सम्बन्ध के प्रति अपनी सर्वथा असहमति प्रकट करता है। अपनी क्षुद्र महत्त्वाकाक्षाओ की पूर्ति के हेतु आम्भीक यवनराज सिकन्दर को आमन्त्रित करता है। देश की रक्षा के लिए चाणक्य पर्वतेश्वर को रजनीगन्धा का विवाह आम्भीक से करने का परामर्श देते है, किन्तु उन्हे अपमानित हो विमुख लौटना पडता है। महर्षि दाण्डायन के आश्रम मे चन्द्रगुप्त सेल्यूकस की पुत्री हेलन की सर्प से रक्षा करता है जिससे वह यवन-शिविर मे आमन्त्रित होता है, परन्तु शीघ्र ही उसे वहाँ से पलायन करना पडता है। पर्वतेश्वर और सिकन्दर के युद्ध मे चन्द्रगुप्त पर्वतेश्वर की ओर से युद्ध करता है। दैवयोग से सिकन्दर के समक्ष पर्वतेश्वर के हाथो से तलवार छूट जाने पर सिकन्दर नि शस्त्र पर्वतेश्वर पर आक्रमण नही करता। सिकन्दर द्वारा मैत्रीपूर्ण हाथ बढाने के कारण पर्वतेश्वर युद्ध-विराम की घोषणा करता है। सिकन्दर अपने सैनिको के विद्रोह के कारण वापस लौट पडता है। चाणक्य के प्रयास से चन्द्रगुप्त को सम्मिलित साम्राज्य का अधिपति तथा राक्षस को महामात्य घोषित किया जाता है। कौमुदी-महोत्सव की निषेधाज्ञा से चिढ-कर चन्द्रगुप्त चाणक्य के प्रति कटु वाक्यो का प्रयोग करता है। प्रत्यक्षत चाणक्य राज्य-कार्य छोडकर चले जाते है किन्तु सेल्यूकस के युद्ध मे समय पर पहुँच कर चन्द्रगुप्त और हेलन का विवाह करवा कर वे दाण्डायन के आश्रम की ओर प्रस्थान करते है।

आचार्य द्रोण (पृ० ५५), ले० प्रो० चन्द्रकान्त झा, प्र० हमीदिया वर्की प्रेस, लहेरिया सराय, दरभगा, *पात्र* पु० १०, स्त्री १। *घटना-स्थल* आचार्य द्रोण का आश्रम, महाराज द्रुपद का दरबार, घनघोर जंगल, द्रोण का आवास, महाराज द्रुपद का प्रासाद, कुरुक्षेत्र, कौरव-शिविर, दुर्योधन का प्रासाद, पाडव-शिविर इत्यादि।

महाभारत की पृष्ठभूमि पर लिखे गये इस पौराणिक नाटक मे द्रोणाचार्य और उनके शिष्यो से सबधित कथा प्रस्तुत की गई है। युधिष्ठिर को द्रोणाचार्य उनकी कायरता पर धिक्कारते है। यही से द्रोणाचार्य ६

दीक्षित छात्रो की धनुर्विद्या की परीक्षा होती है। उनका विश्वास है कि अर्जुन ही इस विद्या मे प्रवीण है, किन्तु एकलव्य की वीरता से अवगत होने पर सब विस्मित हो जाते है। प्रपचवश द्रोणाचार्य गुरु-दक्षिणा-स्वरूप एकलव्य के दाहिने हाथ का अँगूठा माँगते है। वह निर्विकार भाव से उनकी सेवा मे सर्मपित कर देता है। तत्पश्चात् अन्य छात्रो की परीक्षा मे केवल अर्जुन को सफलता मिलती है। केवल अर्जुन द्रुपदराज को वदी वनाकर गुरु-दक्षिणा चुकाते है। यद्यपि पाडवो के अत्यन्त भक्त होने पर भी द्रोणाचार्य का प्रेम कौरवो के प्रति अधिक था। इसी अवधि मे कौरवो और पाडवो के वीच गृह-युद्ध प्रारभ होता है जिसमे द्रोणाचार्य कौरव-पक्ष का और भीष्म पाडव-पक्ष का समर्थन करते है। कुरुक्षेत्र मे कौरव एवं पाडव-सेना के बीच भयंकर युद्ध होता है। द्रोणाचार्य द्वारा रचित चक्रव्यूह का भेदन करते समय अभिमन्यु मारा जाता है। महाभारत के विनाशकारी युद्ध के साथ ही नाटक समाप्त होता है।

आचार्य विष्णुगुप्त (सन् १९६५, पृ० ४८), ले० पं० सीताराम चतुर्वेदी, प्र० नया ससार प्रेस, भदैनी, वाराणसी, पात्र पु० १०, स्त्री १; अक ३, दृश्य ३, ३, ३।
घटना-स्थल दानशाला, दालान, राजभवन, शिविर, आवास, शयनकक्ष, कुटिया, गृह, राजसभा।

इस ऐतिहासिक नाटक मे चन्द्रगुप्त और चाणक्य के सम्वन्ध की प्रसिद्ध कथा है। इसे १९६४ मे टाउन डिग्री कॉलेज वलिया के छात्रो ने खुले मच पर चित्रित दृश्य पीठ के आगे खेला। इसे चित्रमय तथा पेटिका रगमच पर भी खेला जा सकता है।

आजकल (सन् १९३९, पृ० ११९), ले० . ताराप्रसाद वर्मा, प्र० तरग हाउस, काशी, पात्र . पु० १२, स्त्री ७, *अक* ३, *दृश्य* : ५, ४, ४।
घटना-स्थल नगर, गाँव, घर, बाजार आदि।

इस सामाजिक नाटक मे देश-सेवा के ।व को प्रेरित करने का प्रयास किया गया है। इसमे यह दिखलाने का प्रयास किया गया है कि गाधी के नाम की आड मे अनवूझ लोग निरपराधी जनता पर कितना अनाचार करते है।

आज की ताजा खबर (सन् १९६३, पृ० ५६), ले० जी० पी० कौशिक, प्र० शारदा मन्दिर, दिल्ली, *पात्र* पु० ६, स्त्री २, *अक* २, *दृश्य* ३, ४।
घटना-स्थल भारत-चीन सीमा, पहाडो की चोटियाँ।

देश-प्रेम से ओतप्रोत इस क्रान्तिकारी नाटक मे चीन द्वारा सीमातिक्रमण कर भारत-भूमि पर आक्रमण करने की कथा वर्णित है। सकट की इन घडियो मे विनोद अपने उच्च सैनिक-अधिकारी के निर्देश पर सेना के अग्रिम मोर्चो पर चलता है। उसकी त्यागमयी भावना से समस्त गाँव मे अपूर्व चेतना की लहर दौड जाती है। बाल-वृद्ध सभी भारतीय चीनी शत्रु से लोहा लेने को सन्नद्ध हो जाते है। जगदीश अपने अग्रज विनोद के सत्परामर्श से अपने खेतो की व्यवस्था कर स्वय फौज मे भर्ती हो जाता है। विनोद के वीरगति प्राप्त करने के उपरान्त उसकी पत्नी नर्सिंग ट्रेनिंग लेकर देश-सेवा का सकल्प करती है।

आज की बात (सन् १९००, पृ० ९०), ले० शिवरामदास गुप्त; प्र० : उपन्यासवहार आफिस, वनारस, *अक* . ३, *दृश्य* · १३, १०, ५।

इस नाटक मे दो स्तरो पर कथा चलती है। एक स्तर पर आज के युग मे धोखा-फरेव से जनता को ठगने का प्रयत्न है। दूसरे स्तर पर आधुनिक प्रभाव से नारी-जाति मे देश-प्रेम की भावना जाग्रत होती है। नारी और श्रमिक-वर्ग को समाज वहुत दवा कर रखता है। उनकी समस्याओ की ओर कोई ध्यान नही देता। उन्ही की समस्याओ को उठाया गया है। एक मिल-मालिक की कन्या मलिना मिल के मैनेजर से विचार-साम्य के कारण प्रेम करती है। मिल-मैनेजर समाजसेवी और सुधारवादी विचारधारा का परिपोपक है। वह मलिना

के साथ श्रमिको की समस्याओ को सुलझाने का प्रयत्न करता है। वह मलिना को समाज-सेवा के लिए पूरी स्वतंत्रता और सुविधा देता है। मलिना गरीब स्त्रियो के साथ चर्खा कातती है। वह स्त्री-वर्ग का देश-सुधार के लिए आह्वान करती हुई कहती है—"उठो सब भारत की नारी—दीपक बन तुम करो देश उजियारी।"

आजाद भारत (सन् १९५०, पृ० ६३), ले० · 'अलख', प्र० ठाकुरप्रसाद एण्ड सस, वाराणसी; *पात्र* पु० ९, *अक-रहित, दृश्य* · १२।
घटना-स्थल भारत, पाकिस्तान, जेल, भारत के अन्य शहर।

क्रान्तिकारी नाटक है। इसमे भारत-पाकिस्तान के युद्ध का वर्णन है। पाकिस्तान के अचानक भारत पर आक्रमण कर देने से देश के प्रत्येक नागरिक के मन मे वडा ही उत्साह होता है। हमारी भारतीय फौज के कप्तान रणधीर तथा भारतीय विमानचालक चन्द्रशेखर और भारतीय टैंकचालक प्रमोद कुमार वडी ही वीरता तथा कार्य-कुशलता से सेना का सचालन करते हैं। वे दुश्मनो के टैंको और विमानो को नष्ट कर देते है। अव्दुलहमीद एक मुसलमान होकर भी अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर कर देता है। इस समय देश के किसान भी एकत्र होकर कठिन परिश्रम करके अन्न पैदा करते है जिससे भारतीय जवानो को किसी प्रकार का भी अभाव नही रहता। देश के नौजवान सेना मे भर्ती होकर देश की रक्षा के लिए शपथ ग्रहण करते है।

आजादी की रक्षा (सन् १९७२, पृ० ६४), ले० हरशरण शर्मा 'शिव', प्र० चन्द्रवती 'प्रभा', साधना सदन, माधवगढ, सतना (मध्य प्रदेश), *पात्र* पु० ७४, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* १०, १०, १०।
घटना-स्थल · भारतीय लोक-सभा, चीनी लोक सभा, पीकिंग, युद्ध-क्षेत्र, कोलम्वो आदि।

यह नाटक चीन और भारत की लडाई से सम्वन्धित है। चीन के आकस्मिक आक्रमण से देश की रक्षा करने के लिए भारतीय जनता उन्मत्त हो जाती है। युवा-वर्ग फौज मे भर्ती होकर दुश्मनो के छक्के छुडा देता है, व्यापारी-वर्ग महँगाई नही वढने देता, भारतीय स्त्रियाँ भी अपने शरीर के आभूषण उतार कर रक्षा-कोष मे जमा कर देती है। भारत और चीन के युद्ध को देखकर दुनिया के अन्य देश भी चीन को दोषी ठहराते है। चीन अपने जन-धन की वहुत वडी हानि देखकर युद्ध वन्द करने की घोषणा कर देता है। अन्त मे लका, रूस, कम्वोडिया घाना, मिस्र, इण्डोनेशिया आदि देशो के प्रयत्नो से भारत और चीन के मध्य कोलम्वो मे शान्ति-वार्ता होती है। दोनो देश शान्तिपूर्वक पुन. अपनी-अपनी सीमा पर आ जाते है।

आजादी के वाद (सन् १९४९, पृ० ११०), ले० विनोद रस्तोगी, *पात्र* पु० ११, स्त्री ३, *अक* · ३, *दृश्य* १, १, १।
घटना-स्थल शरणार्थी शिविर, पजाव, मकान, मिल आदि।

इसमे शरणार्थियो के माध्यम से शोषक और शोषित वर्गो को दिखाने का प्रयास किया गया है। १५ अगस्त के अवसर पर शहरो के गली-कूचे, घर-वाहर दीपो से जगमगा उठते है। इस अवसर पर कुछ ऐसे भी परिवार है जिनके घरो के दीपक पजाव के हत्याकाण्डो मे वुझ गए है। सेठ मानिकचन्द का सुधारवादी वेटा कहता है कि वास्तव मे यह स्वतत्रता के वेश मे हमारी सामूहिक मौत का दृश्य उपस्थित करता है। देश के नेताओ का कथन है कि यह रक्तहीन सत्ता है जव कि पाँचो नदियाँ भारतीयो के खून से लाल हो जाती है। उनके घरो मे लगी आग की लपटो से आकाश तक लाल हो जाता है। साम्प्रदायिकता की वेदी पर अपना सर्वस्व लुटाकर भारत लौटने पर भारतीय जनगण इन्हे शरणार्थी कहकर सम्वोधित करते है। लोभी-लालची, सेठो-साहूकारो के लिए तो देश-विभाजन लाभप्रद सिद्ध होता है। मकान अलग से महँगे होते गए। मिलो का मालिक सेठ अपनी मिलो मे हडताल कराना चाहता है किन्तु उनका नेता अजीत ऐसा नही होने देता। सेठ अजीत को अपनी

लडकी की वर्षगाँठ पर लज्जित करना चाहता है, उसमे भी सेठ को मुँह की खानी पडती है। उसका पुत्र रमेश, अजीत की बहन काता से प्रेम करता है। सेठ इस अपराध पर उसे घर से निकल जाने को कहता है। नीला और सुरेश भी अपने भाई रमेश का अनुसरण करते है। सेठ अजीत को मरवाने का प्रयास करता है। इसी समय उसे मिलो मे आग लगने तथा कपास की गाँठे, जिन्हे कि वह चोरी से भेज रहा है, के पकडे जाने की सूचना मिलती है। इस सर्वविनाश मे मानिकचन्द की आँखे खुलती है। घायल अजीत आता है। सेठ उसे बचाना चाहता है किन्तु असमर्थ रहता है। अजीत का बलिदान सच्ची स्वतत्रता-प्राप्ति के लिए आजादी के बाद होता है।

आजादी या मौत (सन् १९३६, पृ० १९६), ले० यमुनाप्रसाद त्रिपाठी, प्र० श्री भारती आश्रम, पो० माल-लखनऊ, *पात्र* पु० २०, स्त्री ५, *अक* ३, *दृश्य* ७, ९, ५।
घटना-स्थल उरई, रणस्थल, कन्नौज नगर।

इस ऐतिहासिक नाटक मे आल्हा-ऊदल की लडाई की घटनाओ पर प्रकाश डाला गया है। इसमे बारहवी सदी की ज्वलत घटनाएँ प्रस्तुत है। पृथ्वीराज, कन्ह, कैभास तथा मलखान आदि वीरो की अद्भुत वीरता का वर्णन भी प्रचुर मात्रा मे देखने को मिलता है।

आजादी या मौत (सन् १९२३, पृ० ८४), ले० मकतूलबाद मुशी अब्दुल समी साहब, प्र० उपन्यास वहार आफिस, काशी, बनारस, *पात्र* पु० १६, स्त्री ११, *अक* ३, *दृश्य* ६, ७, ५।
घटना-स्थल गिरजाघर, जुलिपाका, ख्वाबगाह।

इस ऐतिहासिक नाटक मे वर्तानवी शासक तालवेट के क्रूर अत्याचारो को दिखाया गया हे। तालवेट अग्रेज जनरल वहुत खूँखार व्यक्ति हे जो हिन्दुस्तानी व्यक्तियो पर अकारण अत्याचार करता है। वह गिरजाघर के पादरी तथा उसके लडके की कुछ विद्रोही व्यक्तियो को शरण देने के आरोप मे हत्या कर देता हे। आजादी का बाना लेकर आगे वढने वाली वीरागना जोहाना देशवासियो मे जोश पैदा करती है और वह अपने अभियान मे सफल होती है। तालबेट उसे जीवित जलवा देता है जिसके परिणामस्वरूप वह अपने चारो ओर उस हुतात्मा की छाया देखता है और पागल होकर प्राण त्याग देता है।

आतिशी नाग (सन् १९१९, पृ० ९४), ले० जलाल अहमद शाह, प्र० हितचिन्तक प्रेस, राजघाट, काशी, *पात्र* पु० १०, स्त्री ७, *अक* ३, *दृश्य* ८, ५, ५।
घटना-स्थल तहखाना, मकान, शाही महल, रास्ता, कैदखाना, मैदानेजग, कब्रिस्तान, दरबार।

इस पारसी थियेट्रिकल नाटक मे रशिया के रहमदिल बादशाह मलिकुल आदिल के वलिअहद सलतनत सैफ की अय्याशी और उसके स्वार्थी खूनी मित्र बुलहवस और खुदगरज के दु खमय परिणाम को चित्रित किया गया है। बुलहवस और खुदगरज सैफ को बहकाकर पिता के विरुद्ध करते है, किन्तु सैफ अपनी सुबुद्धि से उन धोखेबाजो को दण्ड देता है। एक स्थान पर सैफ खुदगरज से कहता है—"कहो! कौन थे जिन्होने मुझे वाप और भाई को कत्ल करने की सलाह बतायी थी? तुम्ही ने मेरे मिजाज को दोजख वना डाला।" वह कब्रिस्तान मे अपने पिता की कब्र पर बैठ कर पश्चात्ताप करता है, "ओह, यही मेरे मकतूलबाद की कब्र है।"

आत्म-त्याग (वि० २००८, पृ० ८६), ले० आनन्दीप्रसाद श्रीवास्तव, प्र० हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, *पात्र* पु० ८, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* ४, ६, ५।
घटना-स्थल मकान, महल, रास्ता, वनमार्ग आदि।

इस सामाजिक नाटक मे उदात्त चरित्र की विशेषताओ का सफल चित्रण किया गया है। इसमे नायक और नायिका की उदारता प्रमुख हे। वे निर्धन तथा दलित वर्ग के दु खो को देखकर अत्यन्त दु खी रहते है और उनके दु ख-निवारण के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर देते है। उनके इस विचित्र आत्म-त्याग

को देख और सुनकर दर्शक तथा पाठक के हृदय मे बडी ही सहानुभूति उत्पन्न हो जाती है।

आत्म रहस्य (वि० १६८५, पृ० ६८), ले० · हरिशरण शर्मा, प्र० सूर्य-कमल-ग्रन्थमाला कार्यालय, गणेश गज, लखनऊ, *पात्र* पु० ६, स्त्री ६, *अक* पूर्वाक, उत्तराक।
घटना-स्थल शरीर देश का राजमहल।

शरीर देश के महाराज के पास मत्री बुद्ध देव आकर उपराजा मनदेव की शिकायत करते है। राजा रनिवास मे जाकर रानी नित्या को भयकर समाचार सुनाता है कि मनदेव ने हमारे विरुद्ध आन्दोलन खडा किया है। विद्रोह की अग्नि चारो ओर भडक उठी है, गुडे स्वेच्छानुसार साधू-महात्माओ की हत्या कर रहे है। मनदेव एक नर्तकी से प्रेम करता है। पत्नी विरक्ति उसे वासना से प्यार करने के लिए मना करती है, उसी समय वासना भी आ जाती है। वासना अपनी बातो से राजा को खुश कर विरक्ति को राजभवन से निकालने का प्रस्ताव रखती है। मनदेव इसे स्वीकार कर लेते है। राज-भक्त नागरिक दानदत्त को मनदेव की आज्ञा से मृत्युदड दिया जाता है। दानदत्त की पत्नी दयावती ईश्वर की भक्त है। ज्यो ही जल्लाद वध करना चाहते है दो व्यक्ति काले-काले लबादो से अपना शरीर छिपाये हुए आकर दानदत्त की रक्षा करते है। मनदेव वासना के साथ प्रेम-संलाप करता है। आत्मदेव बुद्धिदेव को अगूठी तथा मन्त्र देकर मनदेव और वासना को कैद करने के लिए भेजता है। बुद्धिदेव सफल हो जाते है। मनदेव आत्मदेव से क्षमा माँगकर फिर उसी पद पर नियुक्त हो जाता है। विरक्ति वासना को भी छुडा देती है। वासना कामदेव के साथ चली जाती है और मनदेव विरक्ति को फिर स्वीकार कर लेता है।

आदर्श कुमारी (सन् १६३२, पृ० ८७), ले० रामचन्द्र भारद्वाज; प्र० · लक्ष्मी पुस्तक कार्यालय, दिल्ली, *पात्र* पु० १०, स्त्री ६, *अक* ३, *दृश्य* ६, ५, ४।
घटना-स्थल भारतवर्ष—समय मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र से बहुत पहले।

इस पौराणिक नाटक मे सती सुकन्या के पतिव्रत-धर्म का वर्णन किया गया है। राजा शर्याति की पुत्री सुकन्या अनजाने मे तपस्या-रत महर्षि च्यवन को नेत्र-विहीन कर देती है। तत्पश्चात् महर्षि च्यवन से सुकन्या का विवाह हो जाता है। सुकन्या महर्षि की सेवा बड़े आदरभाव से करती है और उन्हे अपना पति मानती है। एक बार अश्विनीकुमार सुकन्या के पतिव्रत-धर्म की परीक्षा लेते है और इससे प्रसन्न होकर महर्षि को पुन नेत्र प्राप्त करने व सुन्दर नवयुवक हो जाने का वरदान देते है। इस प्रकार सुकन्या अपने पति-व्रत धर्म द्वारा सुखपूर्वक च्यवन के साथ जीवन बिताने लगती है।

आदर्श ग्राम पंचायत (सन् १६६२, पृ०६०), ले० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भडार, दिल्ली-६, *पात्र* पु० ८, स्त्री १, *अक* ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल बैठक।

इस सामाजिक नाटक मे न्यायालय एव न्यायाधीश के कार्यो का मूल्याकन है। चौधरी छज्जूराम अपने न्याय के समक्ष सबको बराबर समझते हुए अपने परिवार का भी ध्यान नही रखता है। वह आदर्श ग्राम पचा-यत की स्थापना कर ग्राम सुधार-सम्बन्धी कार्यो को करने मे रत रहता है।

आदर्श बन्धु या पाप परिणाम (सन् १६२०, पृ० २०४), ले० जमुनादास मेहरा, प्र० . दुर्गा प्रेस, कलकत्ता, *पात्र* पु० १८, स्त्री ६।
घटना-स्थल घर, शराब की दुकान, रास्ता आदि।

इस सामाजिक नाटक मे एक मद्यप परिवार का विनाश दिखाया गया है। नाटक का एक प्रधान पात्र कालिदास कहता है—"इस देश के धर्म को डुबानेवाली मदिरा है। जो लोग सुखपूर्वक अपने महलो मे आनन्द मनाया करते थे, वे लोग शराब के वशीभूत होने के कारण मिट्टी मे मिल गए है। जिनके पास अपार धन था, वे द्वार-द्वार टुकडा मागते हुए दिखाई पड रहे है।"

इस देश की आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक

राजनीतिक विपत्ति का मूल कारण सुरा (मदिरा) को ही बताया गया है।

आदर्श मित्र (सन् १६३७, पृ० ६६), ले० टी०एन० खन्ना, प्र० इन्द्रप्रस्थ हिन्दी साहित्य माला, खारी बावली, दिल्ली, *पात्र* पु० ११, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* ६, ५, ४।
घटना-स्थल दरबार, वाजार, कमरा, रास्ता बाग, मकान।

इस सामाजिक नाटक मे स्वार्थी एव सच्चे मित्रो के गुणो पर प्रकाश डाला गया है। महाराज सत्यपाल के पुत्र राज की आदत बुरे मित्रो के चक्कर मे पडने से बिगड जाती है। इस बात से महाराज बहुत दुखी होते है और राजगुरु से परामर्श करते है। राजगुरु के कथनानुसार युवराज अपने पिता का नकली सिर लेकर मित्रो से सहायता माँगता है कि वे उसकी रक्षा करे, लेकिन उसके मित्र उसे अपमानित करके अपने घरो से निकाल देते है। युवराज अपने मित्र रामनारायण के पास जाता है तो वह युवराज की रक्षा के लिए उसके पिता के खून का अपराध अपने ऊपर ले लेता है। रामनारायण के सच्चे प्रेम को देखकर राजगुरु, महाराज सत्यपाल और युवराज वहुत प्रसन्न होते है और उसे युवराज का अतरग मित्र घोषित कर देते है।

आदर्श मृत्यु (वि० १६८३, पृ० १०४), ले० रामस्वरूप चतुर्वेदी, प्र० साहित्य सदन कार्यालय, सहारनपुर, *पात्र* पु०२५, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* ७, ६, ६।
घटना-स्थल जगल, कट्टर प० का मकान, स्वामी श्रद्धानन्द का कमरा (नया बाजार मे) स्वर्गलोक।

इस समाजिक नाटक मे स्वामी श्रद्धानन्द का अछूत उद्धार के लिए किए गये प्रयासो तथा मुसलमानो के अत्याचार का वर्णन है। कमला नामक अनाथ अवला अपने बच्चे को गोद मे लिए जाते-जाते एक जगल के समीप पहुची। वहा अहमद नामक मुसल्मान उसे वलात् मुसलमान वनाना चाहता है। धक्का देकर कमला उसे गिराकर उसकी छाती पर बैठ जाती है। अहमद की सीटी की आवाज सुन कर जगल से पाच मुसल्मान आते है और उसे वलात् मुसलमान वनाना चाहते है। कमला भगवान् से प्रार्थना करती है। वह कमला की रक्षा करते हुए कहते है कि हिन्दुओ की रक्षा के लिए श्रद्धानन्द जैसा मेरा भक्त जन्म ले चुका है। मै भी अवतार धारण करने वाला हूँ।

इधर स्वामी श्रद्धानन्द अछूतोद्धार और बलात् मुसलमान बनाए हुए हिन्दुओ के उद्धार मे तत्पर है। उनके प्रयास से हिन्दू अछूतो को अपने कुए पर पानी भरने देते है। श्रद्धानन्द जी के प्रयास से हिन्दू धर्म के लिए मरने वाले नवयुवक तैयार हो जाते है। नवयुवको के प्रयास से बलात् मुसलमान बनाये हुए हिन्दू पुन वैदिक धर्म स्वीकार करते है। इस कारण कट्टर मुसलमान वडे क्रुद्ध होते है। अहमद प्रतिज्ञा करता है—

हो तरक्की कौम तो, यह जान भी दे दीजिये।
यानी मुसल्मा हर बशर संसार मे कर लीजिये।

जान आलम, अब्दुल रशीद और यूसुफ अहमद षड्यत्र करते है। अब्दुल रशीद प्रतिज्ञा करता है "श्रद्धानन्द को ठिकाने लगाऊ और अपने दिल की आग बुझाऊ और जहान के मुसलमानो मे गाजी का रुतवा पाऊँ। आज कल वह वीमार है। वीमार को मारना बडी वात नही। नये बाजार मे रहते है जाऊँ और दिल्ली मे गडवड फैलाऊँ।" अब्दुल रशीद इस्लाम पर बहस के वहाने श्रद्धानन्द के कमरे मे पहुँचता है। अवसर पाकर वह स्वामी जी के सीने मे तीन गोली मारता है। स्वामीजी की मृत्यु हो जाती है और स्वर्ग मे इन्द्र, नारद, अग्नि, विष्णु भगवान्, कुबेर, बृहस्पति उनका स्वागत करते है।

आदर्श राम (वि० २०२१, पृ० १३८), ले० ब्रजरत्नदास, प्र० हिन्दी साहित्य कुटीर, वनारस, *पात्र* पु० १७, स्त्री ६, *अक* ३, *दृश्य* ६, ६, ६।
घटना-स्थल अयोध्या एव जगल।

इस पौराणिक नाटक मे मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन-चरित्र को नाटकीय रूप मे दिखाया गया है। इसमे श्रीराम के जन्म से लेकर लंकेश्वर-वध, वहा से वापसी एव अश्वमेध यज्ञ की तैयारी तक का सम्पूर्ण चित्रण है।

आदर्श या गुरुगोविन्द सिंह (सन् १९२२, पृ० १३३), ले० · श्री अमरनाथ कपूर; प्र० आदर्श राष्ट्रीय ग्रन्थमाला, भारती भवन, प्रयाग, *पात्र* · १४, *अंक* · ३, *दृश्य* ६, १०, १४। *घटना-स्थल* . साधारण स्थान, गुरु गोविन्द सिंह का दरवार, देवी का मन्दिर।

इस ऐतिहासिक नाटक मे गुरु गोविन्द सिंह की वीरता और आदर्शवादिता का परिचय मिलता है। धर्म की ओट लेकर औरंगजेव सिक्खो के सम्प्रदाय को समाप्त करना चाहता है। वह तेगवहादुर को बुलाकर उन का वध कर देता है। तेगवहादुर का वेटा सिक्खो का दसवाँ गुरु गोविन्द सिंह अपनी सेना को प्रवल बना कर 'सनातन धर्म' की रक्षा के लिए औरंगजेव से वदला लेता है। युद्ध मे गोविन्दसिंह के दो वेटे जुझारसिंह और अजीतसिंह मारे जाते है। औरंगजेव का मन्त्री सूवा सरहिन्द शेष दो वेटो को दीवाल मे चुनवा देता है। जिसका प्रतिशोध अन्त मे सेवक वन्दा सूवा सरहिन्द को मार कर लेता है। औरंगजेव की पराजय होती है। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका वेटा वहादुर शाह पिता की गद्दी को प्राप्त करने के लिए गोविन्दसिंह से सहायता माँगता है। इस प्रकार गोविन्दसिंह की सहायता से वहादुर शाह को सल्तनत प्राप्त होती है।

आदर्श वीरता (पृ०६०), ले० वी० पी० माधव, प्र० सूरी व्रदर्स, दिल्ली, *पात्र* पु०१४ स्त्री ५, *अंक*. ३, *दृश्य* . ६, १४, ६, ५। *घटना-स्थल* वुन्देलखंड, भारतीय भूमि, रण-क्षेत्र।

इस ऐतिहासिक नाटक मे वुन्देलखड के महान् वीर आल्हा और ऊदल के शौर्य का चित्रण किया गया है। साथ ही सम्राट् पृथ्वीराज, जयचन्द, परमर्दि देव आदि राजवश के पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष को दिखाकर भारत की आन्तरिक दुर्वलता को भी दिखाया गया है।

आदर्श स्मारक उपनाम अछूत की जीवात्मा (सन् १९५०, पृ०५०), ले० . ओमप्रकाश गुप्त, प्र० साहु रमेशकुमारजी, प्रधान, हरिजन सेवक सघ, मुरादावाद, *पात्र* पु०९, स्त्री २, *अंक* ३, *दृश्य* ४,६, ५। *घटना-स्थल* सेठी की कोठी, औषधालय, पाठशाला का मैदान, अस्पताल, पुजारी का मकान।

इस सामाजिक नाटक मे कुछ युवा-वर्ग के माध्यम से अछूतोद्धार की समस्या का समाधान दिखाया गया है। रामपाल, चौधरी और अछूत हरिजन वालक हैं। वे जिस गाँव मे रहते है उसमे हरगुलाल नामक दुष्ट वैद्य हरिजन-द्रोही है। दूसरा डाक्टर रामचन्द्र हरिजनो का सेवक है। हरगुलाल डाक्टर रामचन्द्र से घृणा करता है। प्रथम अक मे एक अछूत माता अपने मरणासन्न वच्चे को गोद मे लेकर रामचन्द्र औषधालय मे पहुँचती है और वह सेवा करके वच्चे को नीरोग कर देता है। वुढिया वार-वार आशीर्वाद देती है।

दिनेश एक धनी सेठ का लडका है। वह अपने स्वर्गीय पिता के स्मारक मे अपने अर्जित धन पचीस हजार रुपये को अछूतोद्धार मे लगाना चाहता है। वह रामचन्द्र को अछूनो के लिए पाठशाला और अस्पताल खोलने को धन देता है। इससे रुष्ट होकर हरगुलाल पंचायत मे रामचन्द्र को विरादरी से निकलवा देता है। दिनेश का भाई रमेश पचीस हजार रुपये से एक पार्क वनवाकर कमिश्नर से उद्घाटन कराना चाहता है। सेठानी श्यामा दिनेश का समर्थन करती है तो रमेश अपनी माँ को घर से निकालने की धमकी देता है। रमेश पंडा-पुजारियो को उभाडकर रामचन्द्र को मरवा डालना चाहता है। गुडे उसे इतना पीटते हैं कि वह आहत होकर अस्पताल मे भर्ती हो जाता है। इसका ऐसा प्रभाव पडता है कि अनेक मन्दिर अछूतो के लिए खोल दिए जाते है। रामचन्द्र की तपस्या से रमेश का हृदय परिवर्तित होता है। सभी अछूतोद्धार मे संलग्न हो जाते है।

आदर्श हिन्दू विवाह (सन् १९१६), ले० प० जीवानन्द शर्मा, प्र० तिरहुत विद्या प्रसारिणी सभा, मुजफ्फर नगर, *पात्र* पु०१२, स्त्री ६, *अक* ४, *दृश्य* ५, ५, ६, ७। *घटना-स्थल* महल।

इस सामाजिक नाटक मे अनमेल विवाह की वुराइयो एव उनमे उत्पन्न समाज की

दुर्दशा का चित्रण किया गया है। किरन नामक लडकी की शादी अधिक उम्र मे होने से समाज उसके पिता पर व्यग्य कसता है तथा यह मानता है कि जिस घर मे लडकी की शादी अधिक उम्र मे होती है वहाँ भूत-प्रेत निवास करते है।

अन्ध-विश्वासो के मध्य नाटक की रचना होने पर भी नाटककार ने उसे सुधारवादी वनाने का सफल प्रयास किया है।

आदित्यसेन गुप्त (सन् १९४२, पृ० १२८), ले० कचनलता सव्वरवाल, प्र० हिन्दी-भवन, इलाहावाद, *पात्र* पु० १३, स्त्री ६, *अक* ५, *दृश्य* ७, ६, ६, ८।
घटना-स्थल मगध राजमहल, विवाहस्थल, वौद्ध-सघ, राजदरवार।

इस ऐतिहासिक नाटक मे आदित्य तथा एक असहाय पतिपरायणा पत्नी की जीवन-कथा वर्णित है। मगध तथा उसके आस-पास के प्रदेशो पर महासेन गुप्त का पौत्र, माधवगुप्त का पुत्र आदित्यसेन राज्य करता था। माधवगुप्त की पुत्री देवप्रिया का विवाह दाक्षिणत्य सम्राट् से होने पर वह पितृकुल पर ध्यान नही देती है। उसका पति वाहर गया है। वह चाँदनी रात मे विरह-तप्त खडी है। सहसा गुप्त-साम्राज्य का एक स्वामिभक्त आकर उसे करुण-कहानी सुनाता है। व्यथित हो देवप्रिया श्वशुरगृह त्यागकर पितृगृह को अपना वच्चा ले चली जाती है। घर आकर उसे नन्हा वालक आदित्य ही शेप दिखाई देता है। देवप्रिया कर्त्तव्यनिष्ठा के साथ आदित्य के हृदय मे पूर्वजो के गौरव-वीज वोया करती है। आदित्य वश के पूर्व-गौरव को रक्षित रखने के लिए सचेष्ट हो जाता है।

सहसा उसके जीवन मे कोणदेवी का प्रवेश होता है। पिता की मृत्यु के वाद सैनिक उसके भाई को मारकर उसे गणिका मधुमती के हाथ वेच देते है। कोणदेवी वौद्धश्रमणो की योजना के अनुसार आदित्य-सेन का वध करने भेजी जाती है किन्तु वह कुमार को मारती नही वल्कि लेकर भाग जाती है। स्मृति-खोये कुमार का इलाज कराती है, किन्तु कुमार उसे ठुकरा देते है। कुमार राज्य मे लौट आता है।

कोणदेवी अपने जीवन से घृणा करने लगती है, मधुमती उसे कर्त्तव्य का यथार्थ उपदेश देती है। कोण अज्ञातरूप से स्वामी के प्रति समर्पित रहती है। देवप्रिया कोणदेवी के गुणो से प्रभावित होकर उसे आदित्य की पत्नी वनाती है। भाई आदित्य को सम्पन्न रूप मे छोडकर देवप्रिया अपने पुत्र को लेकर दाक्षिणात्य के पास लौट जाती है।

आदि-मार्ग (सन् १९४३), ले० उपेन्द्रनाथ अश्क, प्र० प्रयाग साहित्यकार ससद, *पात्र* पु० ५, स्त्री २, *अक* . १, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल बैठक, आंगन, वाग।

इस सामाजिक नाटक मे प्रेम और समस्या के वर्तमान परिवेश को प्रतीकात्मक ढग से प्रस्तुत किया गया है। रानी और राज दो वहने है। रानी स्वाभिमानी, और राज पति-परायणा है। पति से विरक्त होने पर दोनो वहने पुराने विचारो के समर्थक अपने पिता ताराचन्द के घर आ जाती है। रानी का पति वकील, दहेज मे कोठी और मोटर न मिलने के कारण उसकी उपेक्षा करता है तथा राज का पति प्रोफेसर अपनी प्रिया से विवाह कर लेता है। इन वहनो का भाई पूरन प्रगतिवादी विचारो का जागरूक नवयुवक है। रानी का व्यक्तित्व पूरन से मेल खाता है। वह अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए लालची पति और कट्टर पिता दोनो को छोडना चाहती है जवकि राज अपने श्वशुर के घर जाने को उद्यत होती है। इस नाटक मे ताराचन्द, त्रिलोक और उदयशंकर पुराने भारतीय सस्कारो के प्रतीक के रूप मे आए हुए है जो कि सामती सस्कारो का प्रतिनिधित्व करते है। राज, नारी के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है जिसमे नारी, वधन को अपना शृगार तथा अत्याचारो को साधना समझती है, और यह सव सहते हुए भी वह अपने को पतिपरायणा वनाए रखना चाहती है। रानी का व्यक्तित्व इससे विपरीत चित्रित हुआ है। वह विद्रोहिणी है। पूरन, समाज के दमित विचारो के प्रति क्रान्तिकारी स्वरो से विरोध करता है।

आधी रात (सन् १६३४, पृ०१३६), ले० लक्ष्मी नारायण मिश्र; प्र० भारती भण्डार, इलाहाबाद, *पात्र :* पु० ३, स्त्री १, अक २, *दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल घर, आगन, बागीचा ।

इस नाटक मे एक ऐसी नारी के जीवन की समस्या उठाई गई है, जिसका जन्म तो हमारे अपने देश मे हुआ था, किन्तु जिसकी सारी शिक्षा-दीक्षा एव आदर्शो और आकाक्षाओ का निर्माण इग्लैड मे हुआ था। मायावती नारी-जीवन की सारी मान्यताओ को हवा मे उडाकर दो बैरिस्टरो के साथ प्रेम-क्रीडा से नये स्वर्ग का निर्माण करने लगती है, उसमे नारी के व्यक्तित्व की स्वतत्रता और पुरुषो की आख मे आख गडाकर ललकारने की लालसा है। अपनी शक्ति-भर उसने यह नया प्रयोग किया, पर एक दिन आया जब उसने देख लिया कि उसका यह प्रयोग उसे सब ओर से ले डूबा। इस देश मे नारी-जीवन के जो विश्वास थे, उसने उन सब को अपनाया। अपने प्रिय के मगल और अपने चित्त की शाति के लिए तीर्थ और व्रत के रूप मे उसने वे सारे कार्य किए जो इस देश की श्रद्धामयी ग्रामीण स्त्रिया सदा से करती आ रही है।

आधी रात (सन् १६३८, पृ० २७०), ले० जनार्दन राय, प्र० . सरस्वती प्रेस, बनारस; *पात्र* पु० २१, स्त्री ५, *अक* ३, *दृश्य :* १०, ७, ८ ।
घटना स्थल घनाजगल, महल, राजमार्ग ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे सेनापति के साथी राजपुत्र की पिता तथा भाई के प्रति निर्ममता दिखाई गई है। महाराणा कुम्भा विद्रोही खडेलो को पराजित कर मुक्त कर देते है। सेनापति कौघल, इससे असन्तुष्ट होते है। वह क्षेत्रसिह (राणा के तृतीय पुत्र) से अपना असन्तोष प्रकट करते हुए कहते है "अच्छा होता हुजूर वानप्रस्थ ले लेते।" इतने मे युवराज ऊदा आ जाते है और कौघल से कहते है— "महाराणा चाहते है कि सब को मुक्त कर, भेदभाव पाट के सब पाप धो डाले जाए।' कौघल को आशका है कि महाराणा कुभा की अदूर-दर्शिता से मेवाड छोटा-सा प्रान्त भर रह जायगा। यह कैसे सहा जायेगा? कालान्तर मे ऊदा और जैतसिह दोनो भाइयो मे युद्ध होता है। ऊदा कुभा की हत्या करते है। मेवाड की सारी प्रजा भ्राता और पिता के हत्यारे ऊदा का विरोध करती है। ऊदा के पास सेना और अस्त्रशस्त्र है। प्रजा के पास केवल आत्मशक्ति। ऊदा नीद मे बड-बडाते हुए कहता है—"सैनिको ! यह रात समाप्त होगी।" इतने मे बिजली कडकडाकर उस पर गिरती है। ऊदा राख बन जाता है।

आधे अधूरे (सन् १६६६), ले० ·मोहन राकेश, प्र० · राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, *पात्र* पु० ५, स्त्री ३, *अक* २, *दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल ड्राइग-रूम।

इस सामाजिक नाटक मे उस मध्यम-वर्गीय समाज का चित्रण है जो नगर मे विविध प्रकार के घुटन का अनुभव कर रहा है। नाटक का नायक महेन्द्रनाथ जीविका के लिए अपनी पत्नी सावित्री के ऊपर सर्वथा अव-लम्बित रहने के कारण अपने ही घर मे उपेक्षित है। उनकी बडी लडकी बिन्नी माता के प्रेमी मनोज के साथ अवसर देखकर भाग, जाती है और उससे विवाह कर लेती है किन्तु थोडे ही दिन बाद वह वैवाहिक जीवन से खिन्न रहने लगती है। लडका अशोक बेकारी के कारण आज के युवको की कटु मनोवृत्ति को प्रकट करता है। छोटी लडकी निन्नी बडी मुखर और जिद्दी है जो किसी की आज्ञा मानना नही चाहती। बारह वर्ष की अवस्था मे ही वह कैसानोवर की कहानियाँ एव नर-नारी के यौन-सबधो मे रुचि रखती है। नौकरी द्वारा जीविकोपार्जन करने वाली सावित्री पर परिवार का सारा बोझ है, अत वह झुझलाई हुई रहती है। वह पति के रूप मे एक पूर्ण मनुष्य का स्वप्न देखती है, पर अपनी कामना की असफलता मे उसे न कही शान्ति मिली है और न वह घर मे किसी को शान्ति से रहने देती है। अपने पति पर सदा क्रुद्ध रहने के अनेक कारणो मे एक कारण यह है कि वह परावलम्वी बना रहता है। अपने मित्रो के परामर्श के अनुसार कार्य करता है। स्वय किसी निर्णय पर नही पहुँचता। महेन्द्रनाथ अस्वस्थ एव दुखी होने पर अपने मित्र जुनेजा के यहाँ चला जाता है। उसकी

अवस्था जब असाध्य होने लगती है, तब जुनेजा सावित्री को महेन्द्रनाथ की दयनीय स्थिति से परिचित कराता है। पर सावित्री का आक्रोश किसी प्रकार कम नही होता। अशोक रुग्ण पिता को लेकर घर लौटता है, पर घर मे आते ही वह अन्तिम सास ले लेता है।

बम्बई की नाट्य-सस्था 'थियेटर यूनिट' ने इसका सफलता से प्रदर्शन किया है। यह दिल्ली मे दिशान्तर सस्था (ओम शिवपुरी) के निर्देशन मे और कलकत्ता मे अनामिका सस्था द्वारा प्रस्तुत किया गया है। इस नाटक का चलचित्र भी बन चुका है।

आध्यात्मिक प्रह्लाद नाटक (सन् १९२५, पृ० ५८), ले० श्रीराम नन्द सहाय 'ब्रह्मविद्या'; प्र० मिस्टर भटनागर, प्रोपराइटर के प्रबन्ध से आफताब मुद्रण यन्त्रालय, फैजाबाद मे मुद्रित हुआ, *पात्र* ९, *अक* ५। *घटना-स्थल* देवलोक, तपोभूमि, असुरलोक, नन्दन वन, महारण्य, गिरिशृग, समुद्र।

यह नाटक पौराणिक कथाओ पर आधारित है। सभी प्रचलित ललित छन्दो से यह नाटक विभूषित किया गया है। इसमे प्रह्लाद की दृढता एव तपस्या का चित्रण है।

आन का मान (सन् १९६२, पृ० १४४), ले० हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० कौशाम्बी प्रकाशन, इलाहाबाद, *पात्र* पु० ४, स्त्री १, *अक* ३। *घटना-स्थल* मारवाड का राजभवन, जगल, मार्ग, घर, ईरान।

इस ऐतिहासिक नाटक मे राजपूत दुर्गादास की कर्त्तव्य-परायणता दिखाई गई है। अकबर की सहायता मे स्वामिभक्त सेनानायक दुर्गादास अजीतसिह को मुट्ठी-भर सैनिको की मदद से मारवाड की गद्दी पर बैठाता है। औरगजेब की कूटनीति के कारण अकबर को प्राणरक्षा के लिए ईरान जाना पडता है। जाते समय वह अपने बच्चो की रक्षा का भार दुर्गादास पर सौपता है। बडा होने पर अजीतसिह एव अकबर की पुत्री मे प्रेम हो जाता है। किन्तु दुर्गादास अपने मानापमान की चिंता न कर अजीतसिह को रुष्ट कर अकबर के बच्चो को औरगजेब के पास पहुँचा देता है, और स्वय अजीतसिह द्वारा निर्वासन का दण्ड भोगता है। वह अनेक विपदाओ को सहता हुआ भी अपने कर्त्तव्य-पथ से च्युत नही होता।

आनन्द का राजपथ तथा अन्य लघु नाटक (सन् १९५७, पृ० १२९), ले० सीताचरण दीक्षित, प्र० आत्माराम एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६, *पात्र :* पु० ८, स्त्री २, भिक्षु, भिक्षुणिया, *अक* ३, *दृश्य* . २, ३, ३। *घटना-स्थल* बौद्ध-शिविर।

इस ऐतिहासिक नाटक मे भगवान् तथागत के सिद्धान्तो का दिग्दर्शन कराया गया है। अनेक भिक्षुओ तथा गौतम के मतानुसार मनुष्य दु खो के चक्कर मे पडकर आनन्द का अवसर ही नही प्राप्त कर पाता है। स्थविर-स्वामी भिक्षुओ को वैराग्य से लगाव तथा हास्य से विरक्ति का उपदेश देता है, लेकिन भिक्षु प्रकृतिवश हास्य से ही प्रेम करते है। अन्त मे स्थविर थक कर आनन्द की प्राप्ति का राजपथ घोषित करता है कि दु खो को झेलकर जीवन को आनन्द के साथ जीना ही श्रेयस्कर है।

'आनन्द के राजपथ' के साथ 'रक्षा-बन्धन', 'आत्म प्रगति' तथा 'गान्धीकला' नामक तीन लघु नाटक भी जुडे है। 'रक्षा-बन्धन' मे इन्द्र सभा मे चर्चिल, हिटलर, रवीन्द्रनाथ, नारद आदि सभी प्रस्तुत है। इन्द्राणी शान्ति-पुरुष गाधीजी को राखी बाँधती है, जो ससार को अहिसा की ओर प्रवृत्त करते है। 'आत्मप्रगति' मे तितली नामक पाश्चात्य सभ्यता के रग मे रगी लडकी गान्धी जी की अहिसा तथा खादी से घृणा करती है। अन्त मे अपने तर्क से परास्त होकर वह गान्धीवाद मे ही अपनी आस्था प्रकट करती है। 'गान्धीवाद' मे एक आदमी गाँवो मे घूमकर सभी को अत्याचारो से दूर करना चाहता है। परिणामत लोग उससे घृणा करते है, लेकिन अन्त मे वह सभी के हृदय को जीत लेता है।

आनन्द मठ (पृ० ७०), ले० पातीराम भट्ट; प्र० साहित्य निकेतन, कानपुर; *पात्र :* १५, *अक दृश्य* ५, ३,४, १। *घटना-स्थल* बगाल की एक जन-शून्य चट्टी।

इस ऐतिहासिक नाटक मे आनन्द मठ के अध्यक्ष की नीति-निपुणता से अग्रेजो को युद्ध मे हराने की कथा वर्णित है। अग्रेजो के अत्याचार से दुखी भारतीय गाव छोडकर भागते है। जमीदार महेन्द्रसिह अपनी पत्नी और वच्ची को लेकर चट्टी पर आते है। भूख से व्याकुल अपनी वच्ची के लिए दूध लेने जाते है। पीछे से डाकू आकर स्त्री के गहने लूट ले जाते है। स्त्री अपनी वच्ची को लेकर प्राण-रक्षा के लिए भाग निकलती है। आनन्द मठ के अध्यक्ष सत्यानन्द महेन्द्रसिह की पत्नी को सुरक्षित स्थान पर ले जाते है। सत्यानन्द के कहने पर महेन्द्रसिह सन्तान-व्रत ग्रहण करते है। अग्रेजो से युद्ध होता है जिसमे सत्यानन्द को विजय मिलती है। सत्यानन्द महेन्द्रसिह को उसकी पत्नी और पुत्री तथा देश-रक्षा का भार सौपकर स्वय प्रस्थान करते है।

आनंद रघुनंदन (सन् १८८१, पृ० १२३), ले० रीवा नरेश विश्वनाथ सिहदेव, प्र० . नवलकिशोर प्रेस लखनऊ, *पात्र* पु० ३२, स्त्री ८, *अक* ७, *दृश्य--रहित*।

इस पौराणिक नाटक मे मर्यादा पुरुषोत्तम राम की समग्र जीवन-लीला को अनुस्यूत किया गया है। राम जन्म से आरम्भ होकर, किशोरावस्था, राम-लक्ष्मण को विश्वामित्र द्वारा ले जाना, अहिल्योद्धार, सीता-स्वयवर, राम वनवास, भरतमिलाप, सीता हरण, बालि-वध, सीता की पुन प्राप्ति के लिए राम का रावण से युद्ध, रावण-सहार आदि, प्रमुख घटनाए है। अन्त मे सीता को अयोध्या ले जाकर राम के राज्याभिषेक समारोह के साथ नाटक का सुखद अत होता है।

आनन्द विजय नाटिका (सन् १३३२, पृ० ५०), ले० कविवर रामदास, प्र० राज प्रेस, मे श्री हरिनारायण द्वारा मुद्रित और प्रकाशित, *पात्र* पु० ६, स्त्री ४; *अक* ४, *दृश्य-रहित*। *घटना-स्थल* उल्लेख्य नही।

इस कीर्तनिया नाटक मे प्रेमी-प्रेमिका के मनोभावो का विश्लेषण किया गया है। नायक माधव के हृदय मे अपनी राधा के निमित्त पूर्वराग का उदय होता है। वह अपने दोस्त आनन्दकन्द से राधा के दर्शन कराने के लिए कहते है। एक दिन राधा अपनी सखियाँ विचक्षणा और वाचाला के साथ आनन्दकन्द से मिलती है। आनन्दकन्द अपने-आपको गुण-विधान नामक ज्योतिषी बताकर उन लोगो को शिव-अर्चना-हेतु पुष्पो का चयन करने को कहते है। पुष्प-चयन करते समय कालिदास के दुष्यन्त की तरह माधव और आनन्दकन्द भ्रमर का स्वरूप धारण कर पुष्पो पर उपस्थित होते है। लेकिन जैसे ही वे कुछ वाते करना चाहती है वैसे ही माधव चले जाते है। राधा के हृदय मे माधव के प्रति प्रेम का प्रादुर्भाव होता है। वह पुष्पो को लेकर प्रेमी के दर्शन-हेतु ईश्वर की प्रार्थना करती है। ईश्वर उसकी प्रार्थना से खुश होकर उसे प्रेमी से मिलाते है।

आमेर की सरस्वती (सन् १९६५, पृ० ३०३), ले०. शारदा मिश्रा, प्र०· गगा पुस्तक माला-कार्यालय लखनऊ, *पात्र* : पु० ४५, स्त्री १२; *अक* ७, *दृश्य* २, २, २, ३, २, ३, ३। *घटना-स्थल* अम्बा माता का मंदिर, मुगल पडाव, यमुनातट, आगरे का दुर्ग, कुतुब खाना, जोधाबाई का महल, फतेहपुर सीकरी।

यह ऐतिहासिक नाटक अकवर एवं जोधावाई के जीवन पर आधारित है। आमेर की राजकुमारी जोधावाई भारतीय जनमानस मे आत्म-सम्मान की ज्योति जगाने की महती कामना अपने गुरु चतुरनाथ के सम्मुख प्रकट करती है। तत्कालीन मुगल-सम्राट अकवर धार्मिक वैमनस्य को दूर करने के लिए अपनी सहोदरा शाहजादी शकरुलनिसा के विवाह का प्रस्ताव कुँवर भगवानदास के समक्ष रखता है, परन्तु राजपूत-नरेश इसे अस्वीकार कर देते है। इसके विपरीत राजा भारमल अपनी पुत्री जोधावाई का विवाह अकवर के साथ कर देते है। जोधावाई के सद्गुणो से प्रभावित अकवर उसे 'सुलह-ए-कुल' की उपाधि से विभूषित करता है। जोधावाई के प्रयासो से 'जजिया' आदि करो के भार से हिन्दू-जनता मुक्त हो जाती है। वह अपने पुत्र सलीम का विवाह भगवान्दास की पुत्री मानवाई से करती है। इस विवाह के उपरान्त वह अपने प्रिय मन्दिर मे दर्शनार्थ जाती है। परन्तु विधर्मी होने के कारण उसे मन्दिर-प्रवेश की अनुमति नही मिलती। बलात् मन्दिर के कपाट गिरवा

कर जोधाबाई को दर्शनो का लाभ करवाया तो गया, परन्तु वह इस अपमान को न सह सकने के कारण मन्दिर मे मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। बादशाह अकबर जोधाबाई के शव को उठाकर ले जाते है।

अरण्य काण्ड (सन् १८८४, पृ० १२०), ले० श्री दामोदर शास्त्री, प्र० बाबू साहिब प्रसाद सिह, खडग विलास छापाखाना, बाकीपुर, *पात्र* पु० १०, स्त्री ५।
घटना-स्थल समरभूमि, अगस्त्याश्रम।

यह पौराणिक नाटक रामचरित मानस के आधार पर अरण्य काण्ड का खण्ड है। राम जंगल मे लक्ष्मण और सीता के साथ रहकर अपनी वनवास-अवधि को पूरा करते है। जहाँ राम-रावण की लडाई तथा वाद-विवाद का प्रसग दिखाया गया है।

आराम हराम है (सन् १९६१, पृ० १०२), ले० . प्रकाश साथी, प्र० चौ० बलवन्त राय एण्ड कम्पनी, दिल्ली, *पात्र :* पु० ९, स्त्री २, *अक :* २, *दृश्य :* ३, ३।

यह सामाजिक नाटक देश के भिखमगो की समस्या पर आधारित है। देश मे अपाहिजो, भिखारियो के अतिरिक्त कुछ प्रमादी, कामचोर भी भीख माँगने का धन्धा अपना लेते है। नाटककार ने इसे समाज का कोढ समझ दूर करने का प्रयास किया है। अन्त मे भिखारियो का मुखिया बादशाह भीख माँगना छोडकर बडे परिश्रम से काम करता है। लडकी राधा के रोकने पर भी काम करता है। वह आराम को हराम बताता है तथा सबको मेहनत से रोटी कमाने और खाने का उपदेश देता है।

आर्यमत मार्त्तण्ड नाटक : प्रथम भाग (पृ० ९४), ले० पण्डित रुद्रदत्त शर्मा प्राजीत, प्र० आर्य-भास्कर प्रेस, आगरा, *पात्र* पु० ६, स्त्री १।
घटना-स्थल आश्रम, जगल आदि।

इस धार्मिक नाटक मे नियमो की समीक्षा की गई है और उसे श्रेष्ठ बताया गया है। एक स्थान पर परिपार्श्वक का कथन है।—"जैसा इस समय पूर्णचन्द्रमा का प्रकाश है ऐसा ही इस समय आपके आर्य मत का प्रकाश है।"

आर्यमत पर प्रकाश डालने के लिए रैदासी, दादू इत्यादि के मतों पर गहराई से ध्यान दिया गया है। भिन्न-भिन्न सम्प्रदायो का विवेचन भी है।

आर्यमत मार्त्तण्ड नाटक · द्वितीय भाग, ले० प० दामोदर प्रसाद, प्र० प० नन्दकिशोर शर्मा के प्रबन्ध से 'आर्यभास्कर' प्रेस आगरा मे मुद्रित।
घटना-स्थल वन, आश्रम, गगातट।

इस धार्मिक नाटक के द्वितीय भाग मे द्वैत, अद्वैत और विशिष्टाद्वैत इत्यादि दर्शनो का विवेचन है। विभिन्न दर्शनो के द्वारा जीव, ब्रह्म, आत्मा, परमात्मा पर प्रकाश डाला गया है। नाटककार का उद्देश्य विभिन्न दर्शनो की दृष्टि से विवेचन करना है। सत्य की खोज मे एक विरक्त सन्यासी गगा-तट पर बैठकर जीव-ब्रह्म की समीक्षा करता है। इसमे विदूषक आद्योपान्त विद्यमान है। जो विभिन्न मत-मतान्तरो का आधुनिक दृष्टि से खंडन-मंडन करता है।

आर्याभिनव (वि० २००३, पृ० ६४), ले० रामानन्दन सहाय 'ब्रह्मविद्या'; प्र० ब्रह्मविद्यालय फैजाबाद, *पात्र :* पु० ६, स्त्री ४, *अक* ४।
घटना-स्थल : आश्रम।

इस सामाजिक नाटक का मूल उद्देश्य भेदभाव को त्यागकर जन-जन मे विद्या का प्रचार करना है। वेद-पाठी जी और शास्त्री जी सनातन धर्म के लोप होने तथा बढते हुए अधविश्वास पर वार्तालाप करते है। प्रसगो के बीच शास्त्रीजी शूद्र के वेद पढने का विरोध करते है परन्तु वेदपाठीजी देश के हित मे अविद्या के नाश तथा विद्या के जन-जन प्रचारार्थ इसका समर्थन करते है। इसका मूल विषय है जन-जन मे विद्या का प्रचार करना, जिसे पहले से वर्ण-विशेष (ब्राह्मण-वर्ग वेद-पाठ के लिए) का पैत्रिक अधिकार माना जाता रहा है।

आवारा (सन् १९४२, पृ० ९६), ले० पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र; प्र० · मानिकचन्द बुक-डिपो उज्जैन, *पात्र* · पु० ८, स्त्री २, *अक :* ३,

दृश्य ८, १८, ७।
घटना-स्थल घर, भिक्षुक-गृह।

इस सामाजिक नाटक की मूल वस्तु व्यक्ति और समाज का द्वन्द्व है। इसमे पतितो के पुनरुद्धार पर जोर दिया गया है। 'आवारा' को सार्थक करती हुई भिखमगो की एक टोली होती है। टोली का नेतृत्व समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति करता है। अपनी इस दशा के लिए वह समाज को ही दोषी बताता है। उसकी पालिता पुत्री लाली भी इसी तरह भीख माँगती है। दयाराम एक शिक्षित नवयुवक उसे भीख माँगने से रोकता है। लाली भी समाज पर दोषारोपण करती है। दयाराम उनका उद्धार करने और उनके जीवन को सुधारने के लिए एक नया नगर बसाता है। लाली से अपना विवाह करता है। वह बुद्धू से भी यह वातावरण अपनाने के लिए कहता है। किन्तु बुद्धू अपने कलुष-मय जीवन का कारण समाज को बताते हुए ऐसा करना स्वीकार नही करता। इन घटनाओ के अतिरिक्त कुछ अन्य अस्वाभा-विक घटनाओ का भी समावेश किया गया है।

आशिक का खून, दामन पे धब्बा उर्फ दौलत का प्यार, चाहत से वार (सन् १८८३), ले० मुहम्मद महमूद मिया 'रौनक', प्र० खुरशेदजी मेहरवानजी, मालिक विक्टोरिया नाटक कम्पनी; अक . २, दृश्यरहित।
घटना-स्थल · घर, आंगन।

इस सामाजिक नाटक मे आशिक और हसीना के झूठे प्रेमो का मनोवैज्ञानिक विश्ले-षण है। पिता की मृत्यु के वाद उसकी एक-मात्र पुत्री मस्तनेज अकेली रह जाती है। उस अकेले पुष्प पर उम्र आने के साथ वहुत से भ्रमर मडराने लगते है। आशिक, शुजा और इब्नेमीर इन तीन प्रेमियो को वह अपने हुस्न के सौदे मे नैकट्य प्रदान करती है। मस्तनेज सर्वप्रथम आशिक, को अपना हृदय समर्पित करके शादी की आशा वंधाती है। वह शुजा को अपनी जुल्फो और इश्क के झूठे मुलम्मो मे अटकाये रहती है। वह अपने तीसरे प्रेमी इब्नेमीर की ओर भी लपकती है। धन और ऐश्वर्य के लोभ ने प्रथम प्रेमी आशिक को धना वताने का मार्ग दिखाया। आशिक की वहिन दिलनवाज मस्तनेज के धोखे को ताड कर भाई को उससे दूर होने की सलाह देती है और दूसरी तरफ प्रणयी किन्तु आशिक उसका साथ नही छोडता। मस्तनेफ अपने दूसरे प्रेमी के सुख के लिए २००० रु० अफलक को देकर प्रेम मे अन्धी हो उसका वध करवा देती है।

आशिक के वध से दिलनवाज को वडा दुख होता है। वह यथाशीघ्र इब्नेमीर के साथ शादी का प्रवन्ध करती है। उस कहर ढाने वाली हसीना को क्या पता कि रहस्य अपने गर्भ मे कुछ और ही छिपाये हुए है। नाटककार अति प्राकृतिक शक्तियो के द्वारा मस्तनेज की हत्या के षड्यन्त्र का रहस्योद्-घाटन कर देता है। हत्यारिनी स्वय अपना अपराध स्वीकार कर लेती है। वह अपराध स्वीकृत कर स्वय आत्महत्या करती है और इब्नेमीर ऐसी गैर-वफादार पत्नी के जाल मे फसने से वच जाता है। आशिक वध से मरा नही था। उसका विवाह दिलन-वाज से हो जाता है। अफलक अपने पाप का दण्ड फासी के तख्ते से प्राप्त करता है।

आशिके-सादिक उर्फ हीर-रांझा (सन् १८८०), ले० मुहम्मद महमूद मिया, रौनक', प्र० खुरशेदजी मेहरवानजी, मालिक विक्टोरिया नाटक कम्पनी;
पात्र पु० २, स्त्री २।
घटना-स्थल घर, उपवन।
मुहम्मद अब्दुल अजीज ने भी हीर-राँझा नाटक लिखा।

यह नाटक हीर और राझा के प्रणय पर आधारित है। इसमे इश्क शरीरी से इश्क हकीकी की ओर विकास प्रदर्शित किया गया है।

नाटक की नायिका हीर स्वप्न मे एक सुन्दर युवक को देख मुग्ध हो जाती है। वह जाकर उसे प्राप्त करने का उपाय करती है। दैवी शक्तियो की आराधना करके अपने प्रियतम को प्राप्त करने का वरदान पाती है। दैवी शक्तियो ने हीर को उसके प्रेमी राझा की आकृति और उसका प्रणय भी हीर के प्रति दिखाया तथा उसे मिलाने का वचन

दिया।

राझा भी स्वप्न मे हीर की अद्वितीय छवि देखकर मुग्ध होता है और उसके अलौकिक सौन्दर्य को देखकर बेहोश हो जाता है। वह प्रातः उठने पर अपनी माशूका के लिए गृह-त्याग कर दीवाना होकर निकल पडता है। मार्ग मे अनेक आपत्तियो और बाधाओ से लडता हुआ अपने को तपाता रहता है। वह घोर तप और दृढ प्रेम मे उन्मत्त हो पागल की भॉति हीर-हीर रटता, गिरता-पडता बेहोश होता उसी बाग मे पहुँचता है जहॉ हीर उसके लिए तडप रही है। लेखक ने विरह-वर्णन मे बारहमासे का भी प्रयोग किया है। राझा बाग मे पहुँचकर सज्ञाहीन हो जाता है। हीर उसे पहचान लेती है। वह राझा के पास जाकर उसे संभालती है। काफी प्रयास के बाद वह चेतना मे आता है और हीर को देखकर पुन मूर्च्छित हो जाता है। हीर अपने प्रियतम को अपनी गोद मे रखकर प्रणयपूर्ण कोमल हाथो से उसका उपचार करती है। इस प्रकार दोनो का मिलन होता है।

नाटक मे प्रणय का उद्‌भव दोनो तरफ है। उनका प्रेम इश्क-शरीरी से इश्क-हकीकी की सिद्धावस्था को प्राप्त करता है। रचना का उद्देश्य आदर्शवादी है।

आशीर्वाद (सन् १९६१, पृ० ११८), ले० सूरजदेव प्रसाद श्रीवास्तव, प्र० अग्रवाल बुक डिपो, दिल्ली-६, *पात्र* पु० १०, स्त्री ५, *अक* ४, *दृश्य* ५, ७, ५, ३।

यह एक सामाजिक नाटक है। इस नाटक मे धनीराम वैश्य की पुत्री श्यामा का विवाह हरिजन गोपालदास से होता है जोकि एक ओवरसियर है। उसी को सभी वर्ण वाले सुखी रहने के लिए आशीर्वाद देते है, क्योकि उसने अन्तर्जातीय विवाह किया है। जातिवाद का भेद मिटाने मे यह नाटक अपना एक नवीन आदर्श प्रस्तुत करता है।

आषाढ़ का एक दिन (सन् १९५८, पृ० ११६), ले० . मोहन राकेश, प्र० राजपाल एण्ड सस, दिल्ली-६, *पात्र* पु० ८, स्त्री ४, *अक* · ३, *दृश्य*-रहित।

घटना-स्थल · ग्राम, एक प्रकोष्ठ।

आधुनिक यथार्थपरक नाट्य-पद्धति पर लिखा हुआ एक ऐतिहासिक नाटक है। प्रथम अक मे सर्वप्रथम कालिदास एक प्रेमी के रूप मे सामने आते है। आषाढ के पहले दिन मल्लिका और कालिदास घाटियो की गोद मे मिलते है और वर्षा का आनन्द लेते है। मल्लिका घर आकर प्रकृति के सौदर्य तथा कालिदास से मिलन की प्रसन्नता को अपनी मा अम्बिका से कहती है। अम्बिका प्रेम के कारण फैले ग्राम्य-अपवाद से दुखी है। वह मल्लिका के विवाह-प्रस्ताव के वापस हो जाने से दुखी है। अम्बिका का कालिदास के प्रति भी रोष है, क्योकि कालिदास मल्लिका से प्रेम तो करता है लेकिन विवाह नही करता। इसी बीच कालिदास भी एक घायल हरिणशावक को लेकर वहा आ जाता है। उसके पीछे दन्तुल भी शिकार को अधिकारपूर्वक मागते हुए प्रवेश करता है। वह कालिदास का नाम सुनकर क्षमा-याचना करता है, तथा उज्जयिनी के सम्राट् और वररुचि द्वारा कालिदास की प्रसिद्धि और प्रशंसा की सूचना देता है, जिसे सुनकर मल्लिका बहुत प्रसन्न होती है। कालिदास उज्जयिनी जाने से इन्कार करता है।

द्वितीय अक मे अन्तर्-सघर्ष का प्राधान्य है। कालिदास के उज्जयिनी-गमन के उपरान्त अम्बिका और उसकी पुत्री मल्लिका निरन्तर वियोग-संतप्ता बनी रहती है। ग्राम-पुरुष निक्षेप कालिदास और गुप्त वश की राजकुमारी के परिणय की सूचना देता है। एक दिन कालिदास अपनी अर्धांगिनी प्रियगुमजरी के साथ मल्लिका के आवास के समीप से अश्वारोही बनकर निकल जाता है और उसकी पत्नी प्रियगुमजरी मल्लिका के पर्णकुटीर मे उसका वृत्तान्त जानने के लिए पहुच जाती है। वह मल्लिका और कालिदास की बाल-मैत्री से परिचित है। वह मल्लिका से साथ चलने का अनुरोध करती है, पर मल्लिका अस्वीकार करती है। ग्राम-पुरुष विलोम और माता अम्बिका के व्यग्यबाणो से मल्लिका का हृदय आहत होता है।

तृतीय अंक के प्रारभ मे माता अम्बिका स्वर्गवासिनी बनती है जिससे निराश्रित

मल्लिका को विवश होकर उस विलोम को स्वगृह मे बसाना पडता है जिसके प्रति उसके हृदय मे प्रेम का सदा अभाव रहा। विलोम के साथ रहकर मल्लिका पुत्री-रत्न को जन्म देती है। तदुपरान्त कालिदास (मातृगुप्त) कश्मीर का राज्य त्याग मल्लिका के पास पहुचता है और कश्मीर जाते समय उससे न मिलने का कारण स्पष्ट करता है। कालिदास अपनी काव्य-प्रेरणा का स्रोत मल्लिका को घोषित करता है। उसे यह जानकर विस्मय होता है कि धनाभाव मे भी मल्लिका किस प्रकार उसकी काव्य-कृतियो को उपलब्ध कर उनका अध्ययन करती रही है। मल्लिका द्वारा सकलित पृष्ठो को वह महाकाव्य की सज्ञा देते हुए अपने अन्तर्द्वन्द्व को बडे मार्मिक शब्दो मे अभिव्यक्त करता है।

नाटक का अभिनय विविध संस्थाओ द्वारा सन् १६५८ से आज तक लगातार होता आ रहा है।

आस्तीन का सांप (सन् १६६३, पृ० ८५), ले० सतीश डे, प्र० भारतीय कला निकेतन चन्दौसी, *पात्र* पु० ७, स्त्री ४, *अक* नही, *दृश्य* ३।
घटना-स्थल नेफा, लद्दाख, भारत, चीन आदि।

इस ऐतिहासिक नाटक मे भारत पर चीन के आकस्मिक आक्रमण का वर्णन है, वह चीन जो हिन्दी-चीनी भाई-भाई का नारा लगाता था। ऐसा नारा लगानेवाला धोकेबाज देश चीन, अचानक भारत पर आक्रमण कर आस्तीन का साप बन जाता है। इस युद्ध मे नेफा के वीरतामय कबायली जीवन का चित्रण किया गया है।

आहुति (सन् १६३८, पृ० १२७), ले० पुरुषोत्तम महादेव, सिनेमेटोग्राफर, प्र० नवरस कार्यालय, इन्दौर शहर, *पात्र* पु० १०, स्त्री ५, *अक* ४, *दृश्य* ५, ४, ४, ५।
घटना-स्थल शराबखाना, पूँजीपति का महल, पुलिस-दफ्तर।

इस सामाजिक नाटिका मे महात्मा गाधी के उच्चादर्शो तथा सत्य-अहिसा के सिद्धात को अभिव्यक्त किया गया है।

श्यामलाल, मोहन को अर्थलोभ के जाल मे फसाकर उसकी शालीन, शिक्षिता बहिन सुमति से विवाह की योजना बनाता है। सुमति की मा अन्नपूर्णा स्वर्गीय पति की इच्छानुसार सुमति का हाथ मि० विश्वास को देना चाहती है, लेकिन श्यामलाल इस कार्य मे विघ्न डालता है। वह जालसाजी से सुमति की मा को जहर दिलवा देता है, मि० वसन्त के द्वारा मोहन से बैंक के रुपयो का गबन कराता है। मोहन घबराकर आत्महत्या करना चाहता है। भाई का भला चाहने वाली बहिन मि० श्यामलाल के समक्ष रुपयो से मजबूर होकर घुटने टेक देती है। श्याम उससे विवाह करने का वचन लेता है, लेकिन सुमति उस शराबी के साथ विवाह नही करना चाहती। कलह बढता है। वह सुमति को गोली मार देता है। तभी पुलिस आकर मा को जहर देने मे तथा सुमति के खून के अपराध मे श्यामलाल को गिरफ्तार करती है। इस प्रकार आधुनिक समाज का चित्रण एव स्त्री के महान् त्याग की अनुगूँज से नाटिका अनुप्राणित है।

आहुति (सन् १६४० पृ० ६२), ले० हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० हिन्दी भवन जालन्धर और इलाहाबाद, *पात्र* पु० १०, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* ६, ६, ५।
घटना-स्थल नलहारणोगढ की बावली, जगल-दिल्ली सल्तनत, छाछागढ का राजभवन, रणथम्भोर का राजमहल, रणक्षेत्र।

इस ऐतिहासिक नाटक मे अलाउद्दीन की पराजय, राजपूत स्त्रियो का जौहर और हम्मीर की आहुति दिखाई गई है।

नाटक का नायक मीर महिमा प्रथम तो दिल्ली के सेनापति मीर गमरू का भाई तथा बाद मे रणथम्भोर के महाराव हम्मीरसिह का मित्र हो जाता है। इसमे हम्मीर अलाउद्दीन के कोप-पात्र मुसलमान मीर महिमा को शरण देता है। अलाउद्दीन हम्मीर के पास मीरमहिमा को लौटाने के लिए पत्र लिखता है। हम्मीर शरणागत 'मीर महिमा और राजपूती आन की रक्षा मे सर्वस्व न्योछावर करने को प्रस्तुत होता है, जिससे अलाउद्दीन रणथम्भोर के घमड को चकनाचूर करने की धमकी देता है। इससे सघर्ष विकसित होता

है। राजपूत साहस के साथ युद्ध करते है। हम्मीर मीर महिमा को सेनापति बनाकर उसके साथ राजकुमार जय-विजय को रण-थम्भोर गढ के मुख्य द्वार पर अन्य राजपूत सैनिको के साथ भेजता है। दोनो राजकुमारो के साथ मीर महिमा दुश्मनो से अधाधुध युद्ध करता हुए वीरगति को प्राप्त होता है। तत्पश्चात् हम्मीर अन्य राजपूतो के साथ युद्ध मे जाते है। भयकर युद्ध होता है जिसमे हम्मीर की जीत होती है। किन्तु दु खद घटना यह होती है कि अलाउद्दीन को रण से भागते देखकर राजपूत सैनिक शत्रु के झण्डे अपने हाथ मे निशान-रूप मे लेते है। राजपूत स्त्रिया दुश्मन के झडे को देखकर जौहर की ज्वाला मे अपने को समर्पित कर देती है। सघर्ष का अन्त अलाउद्दीन की पराजय, स्त्रियो के जौहर तथा हम्मीर की आहुति से होता है।

आहुति (सन् १९५०, पृ० १६७), ले० लाल चन्द्र बिस्मिल, प्र० : पृथ्वी थिएटर, बम्बई; *पात्र* पु० १७, स्त्री ५; *अक* ३, *दृश्य नही*।

इस सामाजिक नाटक मे देश-विभाजन की करुण कथा प्रस्तुत की गई है। किस प्रकार अनेको असहाय स्त्रिया इस विभीषिका की हव्य बनी। उसी का स्पष्ट चित्रण किया गया है। बाबू रामकृष्ण की पत्नी मृत्यु के पश्चात् एक अबोध बालिका पीछे छोड जाती है। पुत्री जानकी के युवा होने पर उसका सम्बन्ध रायसाहब के पुत्र राम के साथ तय हो जाता है, परन्तु इस बीच ही देश-विभाजन होता है तथा उस अबोध युवती का अपहरण हो जाता है। कुछ समय पश्चात् शफी की कृपा से वह अपहृत युवती उसके पिता को मिल जाती है परन्तु रायसाहव उससे अपने पुत्र का विवाह नही होने देते। पुत्र की वचन-बद्धता को देख उसे पैतृक सम्पत्ति इत्यादि के अधिकार से च्युत कर देते है। जानकी के मन मे ग्लानि होती है और वह अपने प्राणो की आहुति कर देती है।

इ

इन्कलाब (सन् १९६२, पृ० ५८), ले० : जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, *पात्र* . पु० ६, स्त्री १, *अक* २, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल मिल, घर, सभा, जलूस।

इस सामाजिक नाटक मे मिल-मालिको और मजदूरो का साहचर्य दिखाया गया है। मिल मे हडताल होती है। गद्दार मजदूर केशव मिल-मालिक के इशारे पर हडताल तोडने का फैसला करता है। मिल-मालिक का लडका महेश इसका विरोध करता है। महेश मजदूरो को जोश देकर १२ दिन तक लगातार केशव के गुट से मिलकर मिल पर हमला करता है। महेश केशव को गोली से मार देता है। रायसाहव अपने बेटे को दड से बचाने के लिए बहुत प्रयत्न करते है। अन्त मे रायसाहव पर दया करके केशव सभी अपराध अपने ऊपर लेकर उनकी प्रतिष्ठा रखता है। केशव के इस फैसले से रायसाहव के दिल मे मजदूरो के प्रति सदैव के लिए सहानुभूति पैदा हो जाती है।

इंगलैंडेश्वरी और भारत जननी (सन् १८७८), ले० धनजय भट्ट, *पात्र* पु० रहित, स्त्री २।
घटना-स्थल इगलैड, भारत, रगमच।

इस दो-पात्री सवाद-नाट्य मे भारत माता तथा विक्टोरिया के कथोपकथन के माध्यम से भारत मे फैली स्वार्थपूर्ण अर्थ-शोषण की प्रक्रिया का चित्रण है। उस समय भारत मे अकाल की स्थिति होती है। विक्टोरिया, भारत-जननी के पास आकर उसकी पीडा के प्रति अपनी अतिशयोक्तिपूर्ण उक्तियो को प्रस्तुत करती हुई उसे कृतज्ञ होने का उपदेश देती है। किन्तु भारत-जननी वस्तुस्थिति को उसके समक्ष रखती हुई उसे झिडकी देती है। इस झिडकी का इंगलैंडेश्वरी

पर कोई प्रभाव नही पडता है। वह भारत-जननी से अपने मूर्ख सपूतो को अग्रेजो की भेदभाव की नीति से अलग रखने का आदेश देकर, बिना किसी प्रत्युत्तर और परिणाम की आशा के रगमच से चली जाती है।

इन्दर-सभा उर्फ गुल्फामो सब्ज़परी (सन् १८६८, पृ० ७१), ले० सैयद आगा हसन अमानत, प्र० वैकटेश्वर प्रेस ववई, अक २, दृश्य नही।
घटना-स्थल इन्द्रपुरी, महल, वगीचा, सिहल-द्वीप।

इस गीत-नाट्य मे सब्ज़परी और शाहजादा गुलफाम के प्रणय का चित्रण है। नाटक मे सब्ज़परी मानव-लोक की सैर करने आती है और शाहजादा गुल्फाम पर मुग्ध होकर उसे अपनी अगूठी पहना कर अपने धाम को वापस हो जाती है। इन्दर के अपने शाही तख्त पर विराजमान होते ही पुखराज, नीलम, लाल और सब्जपरियाँ क्रमश आकर नृत्य करती है। सब्जपरी के गायन के साथ इन्दर सो जाते है। सब्जपरी इशारे से काला देव को पुकार कर उसे सिहल द्वीप के शाहजादे गुलफाम को लाने का आदेश देती है। काला देव शाहजादे को छपरघट के साथ सोता हुआ ले आता है। सब्जपरी उसे जगाकर छिप जाती है। वह अजनवी स्थान मे अपने को देख भयभीत होता है। सब्जपरी के प्रकट होने पर शाहजादा डर जाता है। परी शाहजादे से अपना प्रेम प्रकट करती है। वह शाहजादे को प्रसन्न करने के लिए तिलस्म के महल को ताली वजाकर वाग मे वदलती है और वाग मे स्वय एक उडते तख्ते पर सवार होकर उडना आदि चमत्कार दिखाती है।

इन्द्र धनुष (सन् १९६७), ले० डा० विनय, प्र० सजीव प्रकाशन, मेरठ, *पात्र* पु० ४, स्त्री २, *अक-रहित, दृश्य* ३।
घटना-स्थल . चित्रकार का कमरा।

इस सामाजिक नाटक मे एक चित्रकार का अन्तर्द्वन्द्व है, जो जीवन के महत्त्वपूर्ण सत्य को अपने चित्त मे उतारना चाहता है। कलाकार के अन्तर्मन का सत्य ही कला के धरातल पर समाज की गति और उन्नति मे अपना योग दिया करता है। समाज के जन-जीवन की झाकी गाधारी एवं द्रौपदी के चित्रो द्वारा चित्रित की गई है। नाटककार के मतानुसार 'इन्द्र धनुष' रूपक मे "मैंने अपने देश की विभिन्न इकाइयो को विभिन्न रगो के समान मानकर उनकी अभिन्नता उसी रूप मे प्रतिपादित की है जैसे इन्द्र-धनुष के रगो की अभिन्नता है।"

इन्दुमती (सन् १९५५), धूप के धान मे सकलित, ले० गिरिजाकुमार माथुर, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, *अक-दृश्य-रहित*, कतिपयस्वर, *रेडियो गीतिनाट्य शैली* पर।

इस गीतिनाट्य के कथानक का आधार रघुवश मे दी हुई इन्दुमती के स्वयंवर की कथा है। इन्दुमती के स्वयवर के अवसर पर देश-देश के महाराजा आते है। इन्दुमती की सखी सुनन्दा स्वयवर मे आये हुए अतिथियो का परिचय और विशेपता बताती जाती है। इन्दुमती वरमाला को लिए आगे बढती जाती है। अन्तत वह किसी भी राजा की विशेपताओ पर ध्यान दिए बगैर ही अज को वरमाला पहना देती है। इसमे नाटककार ने इन्दुमती के वार्तालाप के माध्यम से अपनी आधुनिक धारणा प्रस्तुत की है।

इन्द्र-विजय (सन् १९६१, पृ० ६४), ले० अनिरुद्ध यदुनन्दन मिश्र 'स्नेह-सलिल', प्र० श्री गगापुस्तक मन्दिर, पटना, *पात्र* : पु० ९, स्त्री १, *अक* ३, *दृश्य* ४, ५, २।
घटना-स्थल सुरलोक, असुरलोक, इन्द्र-सभा आदि।

यह पौराणिक नाटक है। इसमे देवासुर-सग्राम की कथा है। इस सग्राम मे देवताओ के राजा इन्द्र को असुरो पर विजय प्राप्त करने के लिए महत्त्वपूर्ण घटनाओ को उद्धृत किया गया है।

इन्सान और शैतान (सन् १९००, पृ० ७५), ले० सतीश डे, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६, *पात्र* पु० ६, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* नही है।
घटना-स्थल नेफा, लद्दाख, गाँव, नगर।

इस ऐतिहासिक नाटक मे नेफा के कबायली, मोनयाओ और भारतीय सिपाहियो की वीरता दिखाई गई है। भीखू दादा और गगावती दोनो मिलकर देश की रक्षा करते है ,किन्तु निर्दयी चीनी सैनिक अपनी काली करतूतो से बाज नही आते और अचानक भारत पर आक्रमण कर देते है। फिर भी ये लोग अपना सर्वस्व निछावर कर देश को प्राणपण से बचाने का दृढ संकल्प करते है।

इन्सान भगवान पैसा (सन् १९६८, पृ० ८४), ले० सतीश डे, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, *पात्र* पु० १०, स्त्री ३, *अक* २, *दृश्य* १, १।
घटना-स्थल : घर, अदालत, मद्यपान गृह, कमरा।

इस सामाजिक नाटक मे इन्सान, भगवान् और पैसा मे से सबसे बडा कौन है ? इस प्रश्न के समाधान का प्रयास किया गया है। चन्द्रप्रकाश वकील ईमानदारी से रहकर ईश्वर की भक्ति करता है। वह झूठे केस नही लडता है। उसका जवान भाई सत्य-प्रकाश, बहिन शारदा और सती पत्नी आशा अत्यन्त विपन्न स्थिति मे निर्वाह करते है। इसी दुखी दशा मे आशा दुर्घटना-ग्रस्त हो जाती है। प्रकाश वकील होकर भी पैसे की कमी के कारण डाक्टर नही बुला पाता। यह घटना प्रकाश को बदल डालती है और वह झूठे केसो की वकालत कर धनी बन जाता है। बडा भाई सत्यप्रकाश उसे झूठे केस करने से मना करता है किन्तु वह नही मानता, जिससे सत्यप्रकाश ईमानदारी और ईश्वर-भक्ति को सम्मान देकर अपने बेईमान भाई को छोड जाता है। वकील शराबी हो जाता है। वह निर्मला से शादी करना चाहता है। किन्तु निर्मला उसे कोढी समझ त्याग देती है। उस अवसर पर बहिन शारदा अपने सद्भाव से उसे मार्ग पर लाती है। इस तरह नाटककार ने बेईमानी से कमाये हुए धन को बुराइयो का कारण बताया है। यह नाटक फाइन आर्ट्स सैण्टर द्वारा दिल्ली मे प्रथम वार अभिनीत हो चुका है।

इन्सानियत की राह पर (सन् १९००, पृ० ६४), ले० रक अहियापुरी, प्र० भारत पुस्तक भण्डार, जालन्धर शहर, *पात्र* पु० ४, स्त्री १, *अक* ३, *दृश्य* नही।

इस सामाजिक नाटक में देश मे व्याप्त काले कारनामो का खुला चित्र दिखाया गया है। नवाब और शकरदेव क्रमश पाकिस्तान एव भारत के स्मगलर है। शकरदेव महमूद की मदद से अनाथालय की एक सुन्दर युवती नीला को रुपये के लोभ मे नवाब के हाथ बेच देता है, किन्तु वह अपनी इज्जत बचाने के लिए कृत-संकल्प रहती है। नवाब के अब्बा की मदद से वह नवाब के नापाक हाथो मे बचती है। इधर शकर देव का विरोध उसका पुत्र असलम उर्फ रवि करता है। शकरदेव धोखेबाज महमूद की हत्या करने का प्रयास करता है। रवि पुलिस से मिलकर सब का भण्डाफोड कर देता है। सभी देशद्रोही पकडे जाते है। फिर नवाब के अब्बा नीला और रवि का विवाह कर देते है।

इन्साफ (पृ० १०५), ले० प०शिवदत्त मिश्र, प्र० ठाकुर प्रसाद एण्ड सस बुक्सेलर, वाराणसी; *पात्र* . पु० ५, स्त्री, २, *अक* नही, *दृश्य* ११,

इस सामाजिक नाटक मे झूठे पापो का निराकरण इन्साफ और प्रायश्चित्त द्वारा प्रदर्शित किया गया है। ईश्वर-भक्ति मे अटल विश्वास रखते हुए इसे मोक्ष-प्राप्ति का साधन माना गया है। चन्द्रावती एक रूपवती युवती है जो शोभाराम से प्रेम करना चाहती है, लेकिन शोभाराम उसके प्रेम को ठुकरा देते है। चन्द्रावती, दारुण की सहायता से राजा प्रयागदास के पास जाकर शोभाराम पर प्रेम करने का झूठा आरोप लगाती है। किन्तु प्रयागदास को शोभाराम की महिमा तथा यथार्थता का पता चल जाता है। चन्द्रकान्ता भी अपने पाप का प्रायश्चित्त करती हुई वन मे जाकर कठिन तपस्या करती है। प्रयागदास भी अपनी मुक्ति के लिए शोभाराम के दर्शन करना चाहते है। भिखारी की मदद से प्रयागदास दारुण शिकारी तथा चन्द्रावती को शोभाराम के दर्शन होते हे। शोभाराम जी सब को

ओकार शब्द की महत्ता का ज्ञान कराते है। तथा इसे ही मोक्ष का मार्ग बताते हैं।

इन्साफ अथवा कपटी भाई (सन् १९६४, पृ० १३६), ले० सत्यनारायण 'सत्य', प्र० श्रीकृष्ण पुस्तकालय कानपुर, *पात्र* पु० १२, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* ८, ६, ६।
घटना-स्थल गंगा-तट, रास्ता, जगल,दरबार, बाग, कैदखाना, मोनो घाटी, महल।

इस सामाजिक नाटक मे स्वार्थी भाई की कपटपूर्ण नीतियो को दिखाने का प्रयास है। मदर्नासह अपने बडे भाई उदयसिंह से धोखा और अन्याय करके स्वय राज्य का अधिकारी बन जाता है। इस कार्य मे उसकी स्त्री प्रभा-वती नकाबपोश रूप मे खूब मदद करती है। किन्तु अन्त मे उसके कार्यों का भण्डाफोड हो जाता है और वह बार-बार पश्चात्ताप करता है।

इत्तहाद अथवा स्वर्ण युग (सन् १९३९, पृ० ७८), ले० सीताराम वर्मा, प्र० मजदूर बुक डिपो, छपरा, *पात्र* पु० १२, स्त्री ३, *अक के स्थान पर* ३ *खड*, *दृश्य* २९।
घटना-स्थल ग्राम पाठशाला, घर, राजमहल जगल-गली, अन्त पुर।

इस ऐतिहासिक नाटक मे हिन्दू-मुस्लिम एकता की समस्या प्रस्तुत की गयी है। इसके नायक विजयपुर के महाराज विक्रम के गुरु कादिर बख्श राज्य के प्रवधक है। उनकी कन्या सलीमा हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य का सदा गान गाती है। एक दिन नवाबगज का नवाबजादा इनायतउल्लाह सलीमा को देख लेता है। इसी बीच नदी मे डूबती हुई सलीमा को विक्रम-पुत्र क्षत्रसाल जान पर खेलकर बचा लेता है। विजयपुर के गली-चौराहे पर माधो पाडे और रहमू तथा राजकुमार छत्रसाल और नवाबजादा हिन्दू-मुस्लिम एकता के विषय पर चर्चा करते है।

दूसरे खड मे घोर जगल मे खड्गसिह और रमजान डकैत राजा और नवाब से दडित होने के कारण जंगल मे छिपकर डाका डालते है। इधर इनायतुल्लाह सलीमा से शादी करके जगल के पास से निकलते है। डाकू उन्हे पकडकर लूटने और विजयपुर मे हिन्दू-मुसल-मानो मे लडाई कराने की योजना बनाते है। रमजान सलीमा का अपहरण करके उसे पीटता है, पर खडर्गासह सलीमा की रक्षा के लिए रमजान से युद्ध करता है। रमजान उसके कलेजे मे तलवार घुसाना चाहता है तब तक सलीमा रमजान के पैर मे छुरा घोप देती है। जानकीनाथ छात्रो के साथ डाकुओ से युद्ध करते है। रमजान हारकर जगल मे भाग जाता है।

इल्जाम (सन् १९६१, पृ० ६०), ले० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भडार; दिल्ली-६, *पात्र* पु० ६, स्त्री २, *अक* २, *दृश्य नहीं*।
घटना-स्थल घर, पुलिस-स्टेशन, कमरा, आदि।

इस सामाजिक नाटक मे निर्दोष व्यक्ति पर झूठा इल्जाम और उसका समाधान दिखाया गया है। बाबू श्यामलाल अपने छोटे भाई रमेश की शादी तय करने के लिए दीनानाथ के घर जाते है, किन्तु वहाँ दीनानाथ की लाश पडी देखकर वे भाग पडते है। पुलिस उनके पीछे लग जाती है। बे-गुनाह श्यामलाल पुलिस की नजरो मे कातिल बन जाता है। किन्तु सी०आई० डी० इन्स्पेक्टर को अजय की बहन शशि द्वारा असली कातिल का पता लगाने मे सहायता मिलती है। अन्त मे इन्स्पेक्टर ही असली कातिल सिद्ध होता है। निर्दोष श्यामलाल अपने भाई रमेश और शशि की शादी उसके भाई अजय के सामने कर देता है।

इश्क व आशिकी का गंजीना मारुफबे नई तरज गुलरु जरीना (सन् १९०४), ले० मिर्जा नजीर बेग, 'नजीर', प्र० दी न्यू स्टार आफ इण्डिया थियेट्रिकल कम्पनी आफ आगरा।
घटना-स्थल चीन, जंगल, घर।

इस सामाजिक नाटक मे प्रेमी द्वारा अपनी प्रेमिका को पाने के लिए किये गये प्रयासो का वर्णन है। वजीर साबिर का पुत्र गुलरु चीन की राजकुमारी जरीना से प्रेम करता है। गुलरु और जरीना को अपना प्रेम प्राप्त करने के लिए बहुत सघर्ष करना पडता है। सघर्ष के उतार-चढाव मे कथा का विकास होता

है पर वह छेदी के समझाने पर माता-पिता की सेवा मे जुट जाता है । गाव के चौधरी छेदी के बुद्धिबल की प्रशंसा करते है। छेदी के संपर्क मे आने पर ही रामू और सुन्दरिया अपनी अंधी पुत्र-वधू को पुन घर लाते है।

बदलू को मलेरिया ज्वर हो जाता है। किन्तु पडित और औघड उस पर ग्रह और ब्रह्म का प्रकोप वताते है। सुन्दरिया इन सबका कारण राधिका (बदलू की पत्नी) को वताती है। इसी बीच छेदी डॉक्टर लाता है। दवा के प्रभाव से बदलू स्वस्थ हो जाता है। अब रिबई को भी अपने कुकृत्यो पर पश्चात्ताप होता है। अत मे सब लोग छेदी के चरित्र की प्रशसा करते है और उसके वताए रास्ते पर चलने का संकल्प करते है।

उड़ान (सन् १९५०, पृ० ८०), ले० उपेन्द्रनाथ अश्क, प्र० · नीलाभ प्रकाशन, इलाहावाद, *पात्र* पु० ४, स्त्री १, *अक* · ३, *दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल घर का कमरा।

इस सामाजिक नाटक मे पुरुषो की दुर्वलताओ पर प्रकाश डालते हुए यथार्थ के चित्राकन से नारी-समस्या का निदान खोजने का प्रयास किया गया है। इसका प्रमुख पात्र मदन पुरुष की अधिकार-भावना से परिपूर्ण है, वह पत्नी के दासी-रूप मे विश्वास करने वाला है। शकर आदिम पुरुप की उच्छृखल वासना से तृप्त रहता है जो कि शिकारी पहले और मनुप्य वाद मे है। रमेश मे भावुक कवि का साहसहीन हृदय है, जो बधनो मे पडी नारी को मुक्त नही कर पाता है अपितु उसकी पूजा करता है। वाणी-जैसी पात्राओ मे नारीत्व के लिए विद्रोह उवलता है। वह पूंजीवादी युग की सामान्य आधुनिक नारी है और माया मे दाम्पत्य सवधो का नया आधार ढूँढने के लिए उसकी नारीत्व भावना का विरोध करती है।

उत्तरकाण्ड (सन् १८८८, पृ० ७८), ले० . दामोदर, शास्त्री सप्रे, प्र० खड विकास प्रेस, वाकीपुर; पटना, *पात्र* पु० १०, स्त्री ८, *अक* के स्थान पर सूचक दृश्यो के नाम है जैसे, राजभवन।
घटना-स्थल . राजभवन, दरवार।

इस पौराणिक नाटक का कथानक रामचरित-मानस पर आधारित है। इसमे राम द्वारा सीता को धोवी के कहने पर वनवास देना तथा उनकी अग्नि-परीक्षा लेने की इच्छा शामिल है। वाल्मीकि और लवकुश की कथा का भी वर्णन पाया जाता है।

उत्तर जय (सन् १९६५, पृ० ५५), ले० : नरेन्द्र शर्मा, प्र० : रामचन्द एण्ड कम्पनी, दरियागंज, दिल्ली, *पात्र* . पु० १३, स्त्री ३; *अक-दृश्य के स्थान पर* १२ *शीर्षक दिये गये हैं।*
घटना-स्थल कुरुक्षेत्र, पाडवो का राजप्रासाद आदि।

इस पौराणिक नाटक मे महाभारत समाप्त होने के वाद की स्थिति का वर्णन है। महारथी अश्वत्थामा के युद्ध-जनित महारोप और रोप-जनित पराक्रम के कारण युद्ध की अतिम रात्रि, पाँचाल-शिविर के लिए सहार की काल-रात्रि बन जाती है। अश्वत्थामा कौरव-पक्ष का अन्तिम सेनापति होता है। उसे ही उत्तरा के गर्भ को पीडित करने का दोपी ठहराया जाता है। अश्वत्थामा मे एक वडा दोप है कि वह पीडा-भीरु है। कृष्ण के शाप से उसे पाच सहस्र वर्प अति पीडा भोगनी पडती है। वह चिरजीव है। महाभारत के अन्तिम युद्ध मे अश्वत्थामा के अमोघ पराक्रम से उसे शिव का अशावतार माना जाता है। पाच पाडवो को पाच तत्त्वो का प्रतीक माना गया है। देववाहिनी पृथा ही पृथ्वी माता है। अभिमन्यु को चन्द्रमा का अवतार कहा गया है। युधिष्ठिर पृथ्वी पर धर्मराज्य स्थापित करने के लिए तथा अपनी सिद्धि और मुक्ति के हेतु पार्थिव स्तर पर उतरकर कर्मयोग की साधना करते है।

अश्वत्थामा और युधिष्ठिर दोनो अपनी नियति से वाध्य होते है, जिससे अश्वत्थामा को क्षात्र-धर्म का परित्याग और युधिष्ठिर को जन्मजात स्वधर्म ग्रहण करना पडता है। इसमे शकुनि तथा दुर्योधन-जैसे प्रतिपक्षी का वर्णन है। शकुनि को द्वापर और दुर्योधन को कलि का अवतार वताया

जाता है। दुर्योधन की ओर से युद्ध का सदेश लेकर युधिष्ठिर के शिविर जाने वाले शकुनि-पुत्र उलूक की घटना की पुनरावृत्ति की गई हैं। काव्य-नाट्य के उत्तरार्ध मे विदुर के देह-त्याग का भी प्रसंग आया है।

उत्तरप्रियदर्शी (सन् १९६७, पृ० ६६), ले० अज्ञेय, प्र० अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, *पात्र* पु० ५, स्त्री, *अक दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल दीवार, देवतरु, मदिर-कलश की साकेतिक झलक, स्तम्भ के ऊपर पद्म-पीठ।

इस गीति-नाट्य मे अशोक के वाल्यकाल से प्रारम्भ कर उसके मुक्ति-स्रोत के वरण तक की घटनाए वर्णित है। वालक अशोक पूर्व जन्म मे अपने प्रागण मे खेलता है, उसी समय तथागत स्वय पधारते है और अशोक उनके भिक्षापात्र मे एक मुट्ठी धूल डाल देता है। शाक्य मुनि उसे पुण्य फल के रूप मे भारत को विशाल राज्य देते है। कलिग को जीतकर अशोक राजेश्वर एव प्रियदर्शी परमेश्वर बन जाता है। किन्तु युद्ध-क्षेत्र मे आहतो के चीत्कार एव मृतको की विभीषिका से उसका चित्त उद्विग्न हो जाता है। राजगद्दी पर बैठते ही अशोक परम क्रूर व्यक्तियो द्वारा नरक स्थान का निर्माण करा चुका है। अशोक स्वत अपने राज्य के उसी निर्मित नरक मे प्रविष्ट होता है। वहा का स्वामी घोर नरक की विकराल स्थिति का वर्णन करता है। अशोक एक भिक्षु के साथ जब नरक मे पहुँचता है तो उस सतप्त नरक मे शान्ति शीतलता आ जाती है और नरक मे रहने वाले प्राणी प्रसन्न हो जाते हैं। नरक मिट जाता है। भिक्षु वहा के निवासियो को पारमिता करुणा का स्मरण दिलाता है। प्रियदर्शी कहता है—

कल्मष कलंक धुल गया आह !
युद्धान्त यहा यात्रान्त हुआ।

नमो वुद्धाय की गूँज के साथ नाटक समाप्त होता है। प्रथम आरगणा—दिल्ली मे त्रिवेणी कला सगम के खुले रगमच पर ६ मई १९६७ को निष्पन्न।

उत्तरशती (सन् १९५१), ले० . सुमित्रानन्दन पत, भारती भडार, इलाहाबाद; रजत शिखर मे सकलित।

इस गीति-नाटक के कथानक का आधार १९५० से २,००० तक के पचास वर्षो मे अध्यात्म-चेतना-सम्पन्न विश्व का निर्माण है। यह कल्पना आशा के माध्यम से व्यक्त हुई है। इस नाटक का प्रारम्भ आधारभूत समय के पूर्व, ५० वर्षो के भीतर हुए दो महायुद्धो की भूमिका से हुआ है। इसके चित्रण मे यथार्थता और मानव-हृदय को स्पर्श करने वाली समर्थता है। कवि आने वाले पचास वर्षो के लिए आशा व्यक्त करता है कि उनमे नव सस्कृति, नव वसन्त, नव सौन्दर्य का विकास हो सकेगा। इसमे भावी जीवन और समाज की रूपरेखा को चित्रित करते हुए उस समय की सस्कृति क्या होनी चाहिए, आर्थिक व्यवस्था किस तरह की रहनी चाहिए, आदि सकेत व्यक्त किए है।

उत्तरा और अभिमन्यु (सन् १९३०), ले० : मगल प्रसाद विश्वकर्मा, 'रेणुका' मे सग्रहीत; *पात्र* पु० १, स्त्री १, *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल प्रकोष्ठ।

यह गीति-नाट्य महाभारत के एक सक्षिप्त प्रसग पर आधारित है। इसमे युद्ध के लिए प्रस्थान करते समय अभिमन्यु के हृदय मे उठते कर्त्तव्य एव भावना के सघर्ष का प्रदिपादन किया गया है। इस सघर्ष मे एक ओर कौरवो को पराजित करना अभिमन्यु का कर्त्तव्य है, किन्तु दूसरी ओर पत्नी का स्नेह इसमे अवरोध उत्पन्न करता है। इसीलिए वह उत्तरा के प्रेम का आदर करते हुए रुकने मे असमर्थता व्यक्त करता है। एक दृश्य मे वर्णित उत्तरा और अभिमन्यु के जीवन के इस महत्त्वपूर्ण क्षण मे कवि ने भावना पर कर्त्तव्य की विजय प्रदर्शित की है।

उत्सर्ग (वि०२०१४, पृ० ६०), ले० चतुरसेन शास्त्री, प्र० गगा-ग्रथागार, ३६, गौतम बुद्ध मार्ग, लखनऊ, *पात्र* पु० ९, स्त्री ६; *अक* . ४, *दृश्य* ३, ३, २, ३।

घटना-स्थल · चित्तौड का विशाल महल, युद्ध-भूमि।

इस ऐतिहासिक नाटक मे चित्तौड के राजपूतो की गौरव-गाथा वर्णित है। चित्तौड को अपने राज्य मे मिलाने के उद्देश्य से सम्राट् अकबर उस पर विशाल वाहिनी लेकर चढाई करता है। मुगलो की विशाल वाहिनी को देखकर राजपूत भी धैर्य से मुकावला करते है। राजमहलो मे राजपूत-रानिया भी अपनी आन-मान पर दृढ हो जाती है। जयमल का वध होने पर भी पेरवसिंह युद्ध समाप्त नही करता। मुगलो की सेनाए लगातार चित्तौड की ओर बढ रही है, राजपूतो की सेना वीरता से लडते हुए कट-कट कर गिर पडी है। राजपूतो की वीर रानिया, सुकुमार राजकुमारिया सभी अपने सतीत्व एव गौरव की रक्षा के लिए चिता मे कूदकर प्राणो का उत्सर्ग करती है।

उदार प्रेम (सन् १९३० पृ० १३०), ले० ठाकुर रामपटल सिह 'मधुर', *पात्र* पु० ६, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* ६, ८, ६।
घटना-स्थल मानसिह का शिविर, तिलोत्तमा का शयन-कक्ष।

इस ऐतिहासिक नाटक मे नारी की महान् उदारता दिखाई गई है जो अपने प्राणो की परवाह न करके प्रेमी की रक्षा करती है। मुगल सेनापति मानसिह का पुत्र जगतसिह एक बार जगल मे सैनिको के साथ भटक जाता है। जगल के एक मन्दिर मे उसकी भेट मदारगढ के राजा वीरेन्द्रसिह की पुत्री तिलोत्तमा व पत्नी विमला से होती है। जगतसिह व तिलोत्तमा एक-दूसरे से प्रेम करने लगते है। वे १५वे दिन मिलने का वायदा करते है। इसी बीच जगतसिह उडीसा के नवाव कतलूखा की सेना को बुरी तरह परास्त करता है। १५वे दिन मदारगढ के किले मे विमला उसे तिलोत्तमा से मिलाने ले जाती है। परन्तु कतलूखा का सेनापति उसमान खा धोखे से किले मे वीरेन्द्रसिह, जगतसिह, विमला व तिलोत्तमा को गिरफ्तार करवा लेता है। कतलूखा वीरेन्द्रसिह को कत्ल करवा देता है। वहा विमला कतलूखां को धोखे से मार देती है। कतलूखा की बेटी आयशा जगत सिह की जान बचाती है। मरते समय कतलूखा उडीसा को मुगलो के अधीन कर देता है। जगतसिह व तिलोत्तमा मिल जाते है। विमला सती हो जाती है। आयशा भी आरम्भ से ही जगतसिह से प्रेम करती है परन्तु तिलोत्तमा के लिए वह अपना प्रेम बलिदान कर देती है।

उद्धव वशौठि नाटिका (अर्थात् हास्य और श्रृंगार रस से पूरित गीति-रूपक : गोपियों का चरित्र (सन् १८८७ ई०, पृ० ४३), ले० . विद्याधर त्रिपाठी, प्र० रामचद्र खजाची, *पात्र* पु० ३, स्त्री २, तथा अन्य गोपिया। *अक* ४, दृश्य-रहित,

इस पौराणिक नाटक मे गोपियो की कृष्ण के साथ रासलीला दिखाई गई है। यह व्रज-भाषा मे रचित नाटिका है। इसमे श्रृ गार एव हास्य रस का अच्छा समावेश है, गोप-गोपिकाओ के वन-विचरण, कृष्ण के साथ गोचारण एव आपसी नोक-झोक का अच्छा वर्णन है। तीसरे एवं चौथे अक मे उद्धव-गोपी सवाद है।

उद्धार (सन् १९४९, पृ० १३६), ले० हरिकृष्ण प्रेमी; प्र० 'आत्माराम एण्ड सस, दिल्ली; *पात्र* पु० ६, स्त्री ३; *अक* : ३, *दृश्य* : १, ९, ८।
घटना-स्थल मेवाड।

इस सास्कृतिक नाटक मे देश-भक्ति को सभी सासारिक वस्तुओ से श्रेष्ठ बताया गया है। इस नाटक का नायक मेवाड को स्वाधीन कराता है।

हमीर महाराणा अजयसिह के बडे भाई अरिसिह का पुत्र होते हुए भी गाव मे साधारण जीवन व्यतीत करता है। उसकी वीरता के कारण अजयसिह अपने पुत्र सुजानसिह को युवराज न बना कर हमीर को युवराज बनाते है। सुजानसिह पहले विलासी होता है, वह हमीर की वीरता और नि स्वार्थ देश-प्रेम को देखकर स्वय बदल जाता है। हमीर कमला नाम की विधवा से विवाह करता है। दोनो दम्पती मिलकर मेवाड़ के उद्धार का

सकल्प करते है। सुजानसिह इनकी सहायता करता है। इस तरह तीनो के प्रयत्नो से मेवाड़ का उद्धार होता है।

उन्नति कहां से होगी (सन् १६१५, पृ०२६), ले० कृष्णानन्द जोशी, प्र० हरिदास एण्ड कम्पनी, कलकत्ता; पात्र पु० १०, स्त्री २, अक-रहित, दृश्य : ६।
घटना-स्थल . गाव, नगर, समिति-स्थल।

इस सामाजिक नाटक मे ग्रामीण स्त्रियो के निकम्मेपन को दिखाने का प्रयास है। ग्रामीण लोग मिलकर ग्राम-सुधार के लिए 'जाति-सुधारिणी समिति' का निर्माण करते है जिसका उद्देश्य गाव के बन्धुओं को बुला कर सस्कृत तथा अग्रेजी की उच्च शिक्षा देना, बोर्डिंग बन जाने तक घर मे भोजन की व्यवस्था करना, स्त्रियो के पहनावे मे सुधार करना, बाल-विवाह की प्रथा को हटाना इत्यादि है। किन्तु घर की स्त्रियां किसी भी अतिथि को एक समय का भोजन भी बनाकर नही खिला सकती। अम्बिका प्रसाद उपाध्याय की पत्नी लक्ष्मी अपने समधी मगलप्रसाद चौबे का आदर के स्थान पर अनादर करती है। बीमारी का बहाना कर भोजन नही बनाती तथा अपशकुन के बहाने सोने के लिए पलग भी नही भिजवाती। गाव से आये रघुनाथ को भोजन इत्यादि के लिये कष्ट उठाना पडता है। 'जाति-सुधारिणी-समिति' के अन्य सदस्यो के यहा भी यही हाल है। अन्त मे समिति के सदस्य मिलकर इस 'जाति-सुधारिणी समिति' को समाप्त करने का निश्चय करते है। अम्बिका प्रसाद उपाध्याय का चाचा गगाप्रसाद जब यह सुनता है तो कहता है,—"भानजे को सूखी रोटी, दामाद को खीर" ऐसी दशा मे "उन्नति कहा से होगी।"

उन्मुक्त (सन् १६४०, पृ० १६०), ले० · सियारामशरण गुप्त; प्र० साहित्य सदन, चिरगाव (झासी); पात्र पु० ५, स्त्री १, अक दृश्य-रहित।
घटना-स्थल · रणक्षेत्र, मृदुलालय, शिविर, एकात सचालन शिखर, शयन-कक्ष।

इस पौराणिक गीति-नाट्य मे हिसा के वातावरण को प्रस्तुत करते हुए हिसा और अहिसा का सघर्ष चित्रित किया है। साम्राज्यवाद की भावना से प्रेरित होकर शक्तिशाली लौहद्वीप कोमल कुसुमद्वीप पर आक्रमण करता है। पुष्पदन्त द्वीप-वाहिनी का सेनापति है। मृदुला पुष्पदन्त की बहन और एक व्यस्त समाज-सेविका है। गुणधर मृदुला का पति है, अहिसा मे विश्वास करने वाला सेनापति वक्त आने पर घोर हिसा से उत्तर देता है। गुणधर भी पूर्ण अहिसा मे विश्वास करता है। पुष्पदन्त एक ऐसा अस्त्र बनवाता है जिसमे भस्मक किरण होती है। दुर्भाग्य से वह विमान दुश्मनो के हाथो मे पड जाता है। उस भस्मक किरण का व्यवहार कुसुमद्वीप पर ही होता है। इस तरह अपने ही अस्त्र से स्वय कुसुमद्वीप पराजित होता है। कवि के अनुसार यह वास्तव मे प्रतिहिसा की पराजय है। इस तरह युद्ध के परिवेश मे दैवी और आसुरी शक्तियो के सघर्ष को प्रदर्शित किया गया है।

उर्मिला (सन् १६६०, पृ० ६२), ले० · पृथ्वीनाथ शर्मा, प्र० आत्माराम एण्ड सस कश्मीरी-गेट, दिल्ली-६; पात्र : पु० ८, स्त्री ६, अक ३, दृश्य . ४,४, ४।
घटना-स्थल · अयोध्या, जगल, चित्रकूट।

इस पौराणिक नाटक मे लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला की हृदय-विदारक कथा को नाटकीय रूप देने का पूरा प्रयास है। महाराज दशरथ अपने ज्येष्ठ पुत्र रामचन्द्र का राज्याभिषेक करना चाहते है। लेकिन कैकेई महाराज से अपने पूर्व प्रदत्त दो वर मागती है, जिसमे पहला वर तो रामचन्द्र को चौदह वर्ष का वनवास तथा दूसरा भरत को राजगद्दी है। पिता की आज्ञा से भगवान्, सीता और लक्ष्मण वन जाने की तैयारी करते है। जब यह खबर उर्मिला को मिलती है, तो वह अपने पति लक्ष्मण की प्रतीक्षा करने लगती है। उसका स्वाभिमान कहता है कि उसके पति अवश्य मिलने आयेगे। इसी स्वाभिमान के कारण ही वह वन जाते समय अपने पति के अतिम दर्शन भी नही कर

पाती है। इधर भगवान् राम के विरह मे व्याकुल महाराज दशरथ की मृत्यु हो जाती है। उर्मिला भी लक्ष्मण के न आने का तर्क-वितर्क अपने मन मे करती है, जिसमे वह वास्तविकता को पाती है। इधर भरत अयोध्या की बडी सेना तथा गुरु वसिष्ठ और सभी माताओ के साथ भगवान् से मिलने के लिए चित्रकूट जाते है। साथ मे उर्मिला भी अपनी शकाओ का निवारण करने तथा अपने प्रिय पति के दर्शन के लिए जाती है। चित्रकूट मे सभी आपस मे मिलते है और भगवान् से वापस आने के लिए कहते है। लेकिन रामचन्द्र जी वापस नही आते। उर्मिला भी लक्ष्मण से मिलकर अपनी शकाओ का समाधान करने मे पूर्ण सफलता प्राप्त करती है जिससे उसकी आत्मा को बडी शान्ति मिलती है। वह लक्ष्मण के साथ वन मे रहने के लिए कहती है। किन्तु पुन अपने आप अपना आग्रह त्याग देती है। वहा से सभी वापस अयोध्या आते है। भरत भी भगवान् रामचन्द्र की खडाऊँ लाकर राज-सिहासन पर रख स्वय वन मे तपस्या करने लग जाते है।

इधर उर्मिला चित्रकूट से वापस आने पर अपने पति लक्ष्मण की याद करके बार-बार बडी दुखी होती है। लेकिन अपने दिल को सान्त्वना देकर चौदह वर्ष की अवधि पूरा करती है। अपना स्वाभिमान पूरा करने के लिए लक्ष्मण के वापस आने पर पुन. उनसे मिलने के लिए नही जाती। अन्त मे लक्ष्मण जी स्वय आकर उर्मिला से मिल करके उसके स्वाभिमान की रक्षा करते है। उर्मिला लक्ष्मण से अपने प्रति उदासीनता न रखने का वचन प्राप्त करती है। लक्ष्मण हमेशा उर्मिला को अपने साथ रखने को वचन-बद्ध होते है। लेकिन एक बार भगवान् रामचन्द्र के द्वारपाल का काम करते हुए लक्ष्मण से त्रुटि हो जाती है। उस समय भगवान् किसी विशेष कार्य के लिए ब्रह्मा के दूत तापस से बात कर रहे होते है जिसमे किसी को अन्दर जाने की आज्ञा नही होती। सहसा दुर्वासा ऋषि आ जाते है और वे भगवान् से मिलने के लिए लक्ष्मण से कहते हैं। लक्ष्मण के अनुरोध करने पर दुर्वासा सारे परिवार को नष्ट करने का शाप देना चाहते है। लक्ष्मण राम के आदेश का उल्लघन कर अन्दर जाकर मुनि का सदेश देते है। लक्ष्मण की अवहेलना से भगवान् राम लक्ष्मण को त्याग देते है जिससे लक्ष्मण पुन. उर्मिला को बिना बताये ही वन को चले जाते है। उर्मिला को पुन बडी आत्मग्लानि होती है और वह पति-वियोग से मूर्च्छित हो जाती है।

उर्वशी (सन् १९५८), ले० जानकीवल्लभ शास्त्री, प्र० लोक भारती, इलाहाबाद; *पात्र* पु० ३, स्त्री ५, (पाषाणी मे सकलित)।
घटना-स्थल स्वर्ग और पृथ्वी।

इस गीति-नाट्य मे उर्वशी-पुरुरवा के प्रणय के द्वारा द्वन्द्वात्मक प्रेम की समस्या प्रतिपादित की गई है। स्वर्ग की अप्सरा उर्वशी पृथ्वी के राजा पुरुरवा से प्रेम करती है और फलस्वरूप अभिशप्त होकर सामान्य मानुषी के रूप मे दु खान्त जीवन व्यतीत करती है। यहा नाटककार ने भरत द्वारा भोगवादिनी (दरबारी) कन्या का तिरस्कार किया है। उनके अनुसार कन्या की सार्थकता देव-अर्चना मे है।

उर्वशी (सन् १९६१, पृ० १६१), ले० रामधारी सिह 'दिनकर', प्र०. उदयाचल, पटना, *अक* ५, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल प्रतिष्ठानपुर का कानन, राज-भवन, पर्वत, आश्रम।

इस पौराणिक गीतिनाट्य मे पुरुरवा और उर्वशी की प्रणय-कथा अलौकिक तथा लौकिक पात्रो के वार्तालापो द्वारा प्रदर्शित की गई है। स्वर्ग की अप्सरा उर्वशी पृथ्वी के राजा पुरुरवा से इस शर्त पर प्रेम-व्यापार करती है कि जब उसे पुत्र-प्राप्ति हो जाएगी तो वह पुन स्वर्गलोक को चली जाएगी। अपनी परिणीता रानी कौशीनरी को छोड-कर पुरुरवा उर्वशी के साथ गधमादन-विहार चला जाता ह। पुरुरवा और उर्वशी दोनो प्रेम-प्रलाप करते-करते समाधि-रूप मे पहुँच जाते है। प्रेमालाप के फलस्वरूप उर्वशी मातृ-

स्वरूपा हो जाती है। उर्वशी के पुत्र का जन्म च्यवन ऋषि के आश्रम मे होता है। भरत-शाप के कारण उर्वशी के भीतर मातृत्व और पत्नीत्व के बीच विरोध उत्पन्न होता है। वह अपने नवजात पुत्र को सुकन्या की गोद मे छोडकर स्वय पुरुरवा के राजमहल मे लौट आती है। इसके पश्चात् उर्वशी के पुत्र आयु को लेकर सुकन्या स्वय राजभवन मे आती है। सुकन्या को आते देख उर्वशी स्वर्गलोक चली जाती है। इसमे पुरुरवा सनातन नर का प्रतीक है और उर्वशी सनातन नारी का।

उर्वशी नाटक (सन् १९१०, पृ० १८२), ले० लक्ष्मी प्रसाद, प्र० . शारदा प्रेस, छपरा; पात्र : पु० ६, स्त्री ४; अक · ५, दृश्य : ३, ५, ५, ४, ८।
घटना-स्थल हिमालय।

इस पौराणिक नाटक मे पुरुरवा और उर्वशी की प्रेम-कथा वर्णित है।

स्वर्ग-अप्सरा उर्वशी मृत्युलोक को स्वर्गलोक से अधिक आनन्ददायक समझती है। वह अपने प्रेम-व्यापार के लिए पृथ्वी पर आती है। पुरुरवा भी नरसिंह से उर्वशी का सौन्दर्य सुनकर रीझ जाता है। शृगार-उपवन मे विरहिणी उर्वशी का मधुर सगीत सुनकर नरसिंह मुग्ध होता है। वह पुरुरवा को उर्वशी का दर्शन कराता है। पुरुरवा उसका पता पूछते हुए कहता है—

यह किस जन्म के पुण्य का फल हुआ ?
मुझे जो आज तेरा दर्शन हुआ।

अव पुरुरवा प्रेम मे पागल होकर घर से निकल जाता है। लौटने पर पुरुरवा की माता पुत्र से कहती है कि अनेक राजपुत्रियाँ तुमसे व्याह को लालायित है। पुरुरवा कहता है कि मैं किसी को पहले ही विवाह के लिए चयन कर चुका हूँ। इससे माता इला को वहुत कष्ट होता है, पर वह सहन कर लेती है। फिर उर्वशी और पुरुरवा का विवाह सम्पन्न होता है। उर्वशी अपने शाप के विपय मे चर्चा करते हुए कहती है—जव इन्द्र पर रावण का आक्रमण हुआ, मेघनाद सेनापति होकर लड़ने आया। शिव-वरदान के वल से वह इन्द्र को सर्वाग वॉधकर मृत्युलोक मे ले चला। इन्द्राणी व्याकुल होकर पति-मुक्ति के लिए ब्रह्म-व्रत करने लगी। उसमे चन्द्रक पुष्प की आवश्यकता हुई। वह पुष्प ज्ञानी मुनि के आश्रम मे था। मैं जव उसका चयन करने गई तो दुर्वासा ने शाप दिया—

"है कहाँ की चाडालिन तू।
हमारे प्रिय सुमन पर हाथ
कर्कश क्यो उठाती है ?
करे अव प्रेम जिससे तू,
वह अन्तर्धान हो जावे॥"

मेरे साथी विश्वा और स्वाद के अनुनय-विनय पर उन्होने शाप को हल्का कर दिया और वोले—

"वनोगे मेप जव तुम लोग,
तव प्रियतम मिले इसका
अलक्षित तुम हुए क्षण भर
चली आकाश मे फिर यह॥"

अन्त मे उर्वशी और पुरुरवा का विवाह हो जाता है। शाप-वश उर्वशी आकाश मे उड जाती है। पुरुरवा उसके वियोग मे व्याकुल होकर राजपाट छोड देता है और नदी, पर्वत, वन छानता हुआ रोदन करता फिरता है।

इधर हस्तिनापुर मे राजमाता इला वैदुर्य, रिपुदमन, नरसिंह आदि सभासदो से पुत्र को ढूँढने का आग्रह करती है। पुरुरवा एक वालायोगी के समीप हिमराजित पर्वत पर विलाप कर रहा है—

कोई यत्न मुझे अव वता दे,
उर्वशी चन्द्रमुख को दिखा दे।

वालायोगी क्रुद्ध होकर पुरुरवा को शाप देना चाहता है। उसी समय भारद्वाज मुनि, ऋपिकुमार और त्यागानद पहुँच जाते है जिससे वालायोगी शाप नही दे पाते। भारद्वाज के आदेश से राजा पुत्रेप्टि यज्ञ करते है। निरन्तर सात वर्षो तक यज्ञ-हवन होने से उनको सगम मणि प्राप्त होती है जिसके प्रताप से पुरुरवा को उर्वशीपुत्र आयु के सहित प्राप्त होती है।

उलझन (सन् १९५४, पृ० ९६), ले० · रमेश मेहता, प्र०. चौ० वलवतराय एण्ड क०, दिल्ली,

पात्र . पु० ८, स्त्री २, अक ' ३ दृश्य-रहित। घटना-स्थल . घर कमरा, दुकान।

इस सामाजिक नाटक मे यथार्थता को छिपाने से अनेक उलझनो का व्युत्पन्न होना दिखाया गया है। नारायणसिंह गढवाली बनारसीदास के दफ्तर मे चपरासी का काम करता है। बनारसी फिजूलखर्ची के कारण कर्जदार बन जाता है। इतवार की एक सुबह कुछ महाजन रुपये वसूल करने बनारसी के घर आते है। नारायणसिंह बडी मुश्किल से महाजनो को समझाकर विदा करता है। बनारसी की मकान-मालकिन उसे अपना पति बनाना चाहती है, लेकिन बनारसी अपने को शादीशुदा बताता है। वह जानकी को पिलपिला आम कहता है। जिसे जानकी सुन लेती है और उसे धमकी दे जाती है कि शाम तक अपनी बीबी को ले आना, नही तो सारा सामान बाहर फिकवा दूँगी। बनारसी और नारायण दोनो मालकिन की बात से परेशान होते है।

अचानक शकुन्तला बनारसी के एक दोस्त की चिट्ठी लेकर आती है और साथ ही अपने रहने के लिए जगह मागती है। प्राणनाथ बीमे के काम से कुछ दिन रहने के लिए बनारसी के पास आता है। बनारसी बीबी की समस्या हल करने के लिए दोनो को रहने की जगह दे देता है। वह रौब से नारायण को भेजकर जानकी से कहलवाता है कि बाबू की बीबी अपने भाई के साथ आ गई है। इधर प्रभुदयाल बनारसी की शादी की बात पक्की करने उसके पास आते है। उन्हे यहाँ अजीब तमाशे का पता जानकी द्वारा लग जाता है। बनारसी बाप से क्षमा माँगता है। प्रभुदयाल बेटे को पान लेने भेज देते है। नानकचन्द भतीजी की शादी बनारसी के साथ करने के लिए प्रभुदयाल सीताराम और पठान से बैठकर परामर्श करते है। बनारसी इन तीनो को घर मे बैठा देख उल्टे पाव लौट जाता है। शाम को आने पर उसे पिताजी के मथुरा लौट जाने की खबर मिलती है। बनारसी शकुन्तला के साथ अपनी शादी करना चाहता है। लेकिन प्राण शकुन्तला को अपनी पत्नी बनाता है। दोनो बनारसी को बेवकूफ बनाते है। प्राण के कहने पर बनारसी शरमाते हुए जानकी के पाव पडता है। इसी बीच प्रभुदयाल यह कहते हुए घुसते है "बाप को रौब दिखाओ, शादी नही करता; साथ मिले तो चरण चूमो।" सन् ५४ में दिल्ली मे अभिनीत।

उलटफेर (सन् १९५२, पृ० १३८), ले० : गगाप्रसाद श्रीवास्तव, प्र० : हिन्दी पुस्तक एजेसी, ज्ञानवापी, बनारस; पात्र : पु० १३, स्त्री २, अक ३, दृश्य · ५, ७, ८। घटना-स्थल ' वकील का दफ्तर, मजिस्ट्रेट का इजलास, बाग और खेत, कचहरी, मकान, पुतलीघर।

नाटक का नायक लालचन्द उच्च विचारो का आदर्शवादी वकील है। किन्तु उसका क्लर्क हिकमतलाल धूर्त व्यक्ति है जो ग्रामीण व्यक्तियो को कचहरी मे अनुचित ढग से ठगता रहता है। दूसरे दृश्य मे अर्दली फितरत अली डिप्टी कलक्टर के दौरे के सिलसिले मे एक बैलगाडी के स्थान पर बीस को पकडकर उनसे पैसा वसूल करता है। तीसरे दृश्य मे डिप्टी कलक्टर मिर्जा अलल-टप्पू और उसकी बेगम गुलनार का वार्तालाप हँसी का दृश्य उपस्थित करता है। गुलनार डिप्टी साहब के खब्त मिजाज से परेशान है। चौथे दृश्य मे एक ग्रामीण मुवक्किल ओरई और गाँव के पटवारी का वार्त्तालाप है। पाँचवे दृश्य मे डिप्टी कलक्टर को आलसी, जल्दबाज और अपने कुटिल रीडर का अन्धानुसरण करता हुआ दिखाया गया है। कचहरी मे गवाहो की विलक्षण गवाहियो से हँसी का रमणीक वातावरण निर्मित किया गया है। रीडर की चालाकी से अलल-टप्पू कानून की पकड़ मे आ जाते है और डिप्टी कलक्टरी से हटा दिए जाते है। वे वकील बन जाते है, पर वकालत भी नही चलती।

द्वितीय अक मे एक आनरेरी मजिस्ट्रेट पडित घोघावसन्त पारिवारिक मुकदमेबाजी मे निर्धन हो जाते है। पर शान वही पुरानी है। उनमे और असेसर बम्बू बख्शसिंह मे एक-दूसरे को नीचा दिखाने का वार्त्तालाप बडे हास्यपूर्ण-ढग से चलता है। यह दृश्य इस नाटक

मे सबसे अधिक रोचक है, ग्रामीण भाषा का हास्य यहाँ निखर उठता है। घोघा-वसन्त का मुख्तारे-आम मुख्तार हुसेन दिल-फरेब नामक वेश्या के घर जाता है और हीरे-जवाहरात का एक बक्स उसके यहाँ छोड आता है। अरदली फितरत अली लोकई के डाकू-दल को बुलाकर सरिश्तेदार खुराफात बेग की हत्या कराना चाहता है। पर कुछ ऐसा चक्र चलता है कि डाकू खुराफात बेग के स्थान पर फितरत अली की हत्या कर देते है। मुख्तार हुसेन के द्वारा खुराफात बेग की नाक काट ली जाती है। डाकुओ ने उसे दिलफरेब समझा था, क्योकि वह स्त्री-वेश मे था। डाकू लूट के माल का बँटवारा करने के लिए एक पटवारी बुलाते है, पर उसी पर सन्देह करके उसको पीटकर अधमरा बना छोड देते है। सप्तम दृश्य मे विभिन्न वकीलो की उन्नति और अवनति दिखाई गई है।

चतुर्थ अक मे कचहरी की विभिन्न स्थितियो को हास्यमय बनाया गया है। इसमे सेशन जज, वकील, मुवक्किल, गवाह पर हास्य-व्यग्य किया गया है। घोघा-वसन्त और बम्बू बख्शसिह का मुकदमा हास्य से भरा हुआ है। अन्तिम दृश्य लालचन्द नामक मुसिफ के कोर्ट का है, जो वकील से मुसिफ बना है। इसमे दिलफरेब एक धनी जमीदार के ऊपर इसलिए मुकदमा चला रही है कि उसने विवाहोत्सव मे उसका नाच कराकर पैसा नही दिया। पता चलता है कि अललटप्पू दोनो तरफ से पैसा लेकर वकालत कर रहा है। इसी समय खुराफात बेग पुलिस-अधिकारियो से किसी प्रकार बचकर दिलफरेब को मार डालता है। दूसरी बार वह मुख्तार हुसेन की हत्या करता है। नाटक के अन्तिम दृश्य मे अजीज अली वकालत छोडकर मिल चलाता है और मित्रो को पार्टी देता है जिसमे सलाहबख्श, लालचन्द, अललटप्पू इत्यादि भाग लेते है और नृत्यगान के साथ नाटक समाप्त होता है।

उषागिनी या सुनहरी जंजीर (सन् १९२५, पृ० २२८), ले० व्रजनन्दन सहाय, प्र० खड्ग विलास प्रेस, पटना, पात्र . पु० १५, स्त्री ६, अक ' ५, दृश्य ६, ६, ६, ६, ८। *घटना-स्थल* ' रगभूमि, अन्त पुर, शृगार-भवन, वनमार्ग, सडक, मठ, दालान, वस्तुओ का अड्डा, राजभवन।

इस पौराणिक नाटक मे उषागिनी के द्वारा एक विशुद्ध अविच्छिन्न नि स्वार्थ प्रेम का आदर्श दिखाया गया है। काशी-निवासी चुन्नीलाल व्यापार के लिए कश्मीर जाता है। एक दिन मित्रो के साथ वह एक भोज मे सम्मिलित होता है, पर जी घबडाने से घर की तरफ लौट जाता है। मार्ग भूलने से जगल मे भटक जाता है। वही कुछ लोग एक सन्दूक मिट्टी मे गाडकर चले जाते है। चुन्नीलाल उनके जाने के बाद सन्दूक खोलने पर आश्चर्य-चकित हो जाता है—उसमे बन्द की हुई रमणी को वह निकालता है। उषागिनी को उसकी सौतेली मा तथा मामा ने धन के लालच से विष देकर मारने का प्रयत्न किया था। विष खिलाकर सन्दूक मे बन्द कर उसे जगल मे फेक दिया गया था। यह सब काड मन्त्री (जो उषागिनी का पिता था) की अनुपस्थिति मे किया गया था। पिता को बेटी की प्राकृतिक मृत्यु की खबर देकर उषागिनी के श्राद्धभोज का आयोजन किया गया था। इधर जगल मे स्वामी अभयानन्द उसे बूटी का रस पिलाकर विषैला प्रभाव दूर करते है। चुन्नीलाल उषागिनी को अपने निवास पर ले आता है। उषागिनी अपने पिता के पास पत्र भेजती है तथा उसकी विमाता अपने कार्य पर पश्चात्ताप होने से सत्य बता देती है जिससे चन्दूमल को सजा होती है और अन्त मे अभयानन्द के प्रयास से चुन्नीलाल अपनी माता तथा बहन से मिलता है। मन्त्री को अपनी भूल मालूम होती है और चुन्नीलाल तथा उषागिनी का विवाह हो जाता है। बुलाकी तथा सुशीला के आख्यान मे दृढ दाम्पत्य प्रेम का परिचय दिया गया है। मनोरमा और कन्हैया की पाप-कहानी का उल्लेख करते हुए अधिक सुख के लिए चिरन्तन दु ख मोल लेना प्रदर्शित किया गया है। मनोरमा का सम्पूर्ण जीवन पापकर्म का प्रायश्चित्त तथा अपने दुष्कर्म पर अनुताप करते हुए बीत जाता है।

ऊ

ऊषा-अनिरुद्ध (सन् १९२५, पृ० ८७), ले० मुशी आरजू साहब, प्र० · उपन्यास बहार आफिस, काशी, पात्र पु० २, स्त्री ७, अक ३, दृश्य · ६, ६, ५।
घटना-स्थल कैलाश।

इस पौराणिक नाटक मे ऊषा-अनिरुद्ध-प्रेम दिखाया गया है। ऊषा और अनिरुद्ध का आपस मे प्रेम है। दोनो एक-दूसरे से विवाह करना चाहते है, किन्तु ऊषा का पिता बाणासुर इस विवाह का विरोध करता है। ऊषा और अनिरुद्ध जिस कक्ष मे है, उसे बाणासुर घेर लेता है और अनिरुद्ध पर प्रहार करना चाहता है। वह अपनी कन्या को भी दुर्वचन कहता है। ऊषा कहती है "चाहे मेरे शरीर के टुकडे-टुकडे कीजिए, पर मेरे जीवनाधार को क्षमा प्रदान कीजिए।" बाणासुर अनिरुद्ध को बन्दी बनाता है तो ऊषा भी उसी कारागार मे जाती है। बाणासुर और अनिरुद्ध मे युद्ध ठनता है। उसी समय कृष्ण और प्रद्युम्न वहाँ पहुँच जाते है। प्रद्युम्न और बाणासुर का युद्ध होता है जिसमे बाणासुर पकडा जाता है। बाणासुर क्षमायाचना करता है।

ऊषा-अनिरुद्ध (सन् १९३२, पृ० १४४), ले० · राधेश्याम कथावाचक, पात्र पु० २५, स्त्री १४, अक ३, दृश्य ७, ८, ३।
घटना-स्थल रग-भूमि, राजभवन, अत पुर, राजमहल, वन-मार्ग, जगल।

इस पौराणिक नाटक मे ऊषा-अनिरुद्ध का विशुद्ध प्रेम प्रदर्शित है।

बाणासुर की कन्या ऊषा अनिरुद्ध पर आकृष्ट हो उससे विवाह करना चाहती है। दोनो के प्रेम-मार्ग मे अनेक बाधाए आती है। किन्तु सखी चित्रलेखा की सहायता से ऊषा अपने प्रियतम से मिलने मे सफल हो जाती है। भेद खुलने पर बाण उसका विरोध करता है और अनिरुद्ध को बन्दी बनाता है। सूचना पाकर कृष्ण यादवसेना लेकर आक्रमण करते है। अंत मे शिवजी मध्यस्थता कर उस झगडे को शात कर देते है। वे वैष्णव और शैव मतातर के कारण यह भेद-भाव अच्छा नही समझते। शिवजी ऊषा-अनिरुद्ध का विवाह करा दोनो मे मित्रता स्थापित कराते है।

ऊषा-अनिरुद्ध (सन् १९२५, पृ० ६४), ले० श्रीकृष्ण हसरत, प्र० बाबू बैजनाथ प्रसाद बुक्सेलर, बनारस; पात्र पु० ६, स्त्री ५, अक · ३, दृश्य ८, ६, ३।
घटना-स्थल राजभवन, वनमार्ग, जंगल, मत्रणाभवन, कारागार।

इस पौराणिक नाटक मे ऊषा-अनिरुद्ध के द्वारा सच्चे प्रेम को दिखाया गया है। बाणासुर भगवान् शिव का परम भक्त है। उसकी पुत्री ऊषा भगवान् कृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध से प्रेम करती है। चित्रलेखा ऊषा की सखी है जो चित्रकला मे बडी निपुण है। वह चित्र बनाकर ऊषा को अनिरुद्ध का दर्शन कराती है। ऊषा अनिरुद्ध के लिए व्याकुल हो जाती है। चित्रलेखा विदूषक की सहायता से अनिरुद्ध को ऊषा से मिलाती है। यह सब प्रेमकथा देखकर बाणासुर क्रुद्ध होता है। वह ऊषा और अनिरुद्ध दोनो को कारागार मे बन्द कर देता है। समाचार पाकर श्रीकृष्ण यादवो-सहित आक्रमण करते है। युद्ध मे अपने को हारता हुआ देखकर बाणासुर शिवजी का ध्यान करता है। भक्त-प्रिय शिव आकर भगवान् कृष्ण से युद्ध करते है, जिसमे प्रलय होने की शंका हो जाती है। फिर ब्रह्मा जी प्रकट होकर युद्ध शात करते है। अन्त मे सभी देवताओ के समक्ष ऊषा और अनिरुद्ध का विवाह होता है तथा स्वाभिमानी बाणासुर शिव-रूप मे भगवान् कृष्ण को प्रणाम करता है।

ऊषा नाटक (सन् १९०६, पृ० १९६), ले० श्रीमत बलवन्तराव भैया, प्र० खेमराज श्रीकृष्णदास, श्री वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई, पात्र पु० १८, स्त्री ८, अक ३, दृश्य ८, १०, १० ।
घटना-स्थल बाणासुर का दरबार, चित्रलेखा का मन्दिर, द्वारका महल ।

इस पौराणिक नाटक मे बाणासुर का स्वाभिमान तथा ऊषा-अनिरुद्ध के स्वच्छन्द प्रेम का वर्णन है ।

बाणासुर भगवान् शकर का परम भक्त है । उसकी भक्ति पर प्रसन्न होकर शकर भगवान् स्वय उसके नगर की रक्षा करते है । बाणासुर की कन्या ऊषा स्वप्न मे श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध को देखकर उसके वियोग मे अन्यमनस्क-सी रहती है । ऊषा की सखी चित्रलेखा अपनी योग विद्या द्वारा अनिरुद्ध को शैया-सहित ऊषा के राजमहल मे ले आती है । चार मास पश्चात् बाणासुर को ज्ञान होने पर वह अनिरुद्ध को नजरबन्द कर देता है । नारद मुनि द्वारा यह समाचार सुनकर बलराम तथा कृष्ण अपनी सुसगठित सेना द्वारा बाणासुर को परास्त कर उसकी बलबाधा को दूर करते है । अनिरुद्ध तथा ऊषा का विधिवत विवाह हो जाता है ।

ऊषाहरण (सन् १९६२, पृ० ५२), ले० हर्षनाथ, प्र० दरभगा प्रेस कम्पनी (प्राइवेट) लि०, दरभगा, पात्र पु० ११, स्त्री ५, अक ५, *दृश्य-रहित* ।

मैथिल के इस पौराणिक नाटक की कथावस्तु रत्नपाणि के उषाहरण के समान है जिसमे ऊषा-अनिरुद्ध प्रेम वर्णित है । ऊषा अपने हृदय-प्रेमी को प्राप्त करने के लिए गौरी से प्रार्थना करती है । उसके पिता बाणासुर को भी यह वरदान प्राप्त है कि जो उसके अहं के प्रतिकूल करेगा, उसे मृत्यु के घाट उतरना पडेगा । चित्रलेखा के अथक प्रयास से ऊषा-अनिरुद्ध मिलन हो जाता है । अनिरुद्ध के नौकर द्वारा बाणासुर को ऊषा-अनिरुद्ध के प्रेम का पता चलता है । वह क्रोधित हो अनिरुद्ध को बदी बनाने का आदेश देता है । अनिरुद्ध को छुडाने के लिए बाणासुर और कृष्ण के बीच युद्ध होता है जिसमे कृष्ण की विजय होती है और वे ऊषा और अनिरुद्ध को घर वापस ले आते है ।

ऊषाहरण (सन् १८९१, पृ० ३७), ले० कार्तिक प्रसाद, प्र० हरिप्रकाश यत्रालय, काशी, पात्र पु० ९, स्त्री ८, अक ४, दृश्य ३, ३, ३, ३ ।
घटना स्थल राजभवन, द्वारिका, मत्रणा-भवन, जगल ।

बाणकन्या ऊषा स्वप्न मे एक पुरुष का दर्शन कर उसके विरह मे उदास रहती है । उसकी सखी चित्रलेखा उसे यदुवशी अनिरुद्ध का चित्र दिखाती है जिसे देख वह प्रसन्न होती है । चित्रलेखा उसको नायक से मिलाने का वचन देती है । उधर अनिरुद्ध भी स्वप्न मे किसी सुन्दरी का दर्शन कर उस पर वशीभूत हो जाता है । चित्रलेखा अपनी सहेलियो की सहायता से अनिरुद्ध को पलग-सहित उठाकर शून्यमार्ग से शोणितपुर को जाती है । वहा नायक-नायिका का वाछित मिलन होता है । एक दिन ऊषा की माता ऊषा के साथ किसी पर-पुरुष को देखकर चिंतित होती है । वह इसकी सूचना बाणासुर को देती है । क्रुद्ध बाणासुर अनिरुद्ध को नागपाश द्वारा बदी बना लेता है । नारद मुनि द्वारिका जाकर समाचार देने तथा यदु-सेना की सहायता से ऊषा-सहित उन्हे कारागार से मुक्त करने का आश्वासन देते है ।

यह सुनकर कृष्ण बलराम और प्रद्युम्न को शोणितपुर पर चढाई करने का आदेश देते है । सेना के प्रस्थान करते ही शोणितपुर मे शिवजी द्वारा बाणासुर को प्रदत्त ध्वज गिर पडता है । प्रद्युम्न के नेतृत्व मे यादव-वाहिनी शोणितपुर को घेर लेती है । सेनापति को नगर-रक्षा का भार सौंप स्वय शिव-पूजन को जाता है । दोनो सेनाओ मे घोर सग्राम छिडता है । युद्ध मे बाणासुर को व्याकुल देख शिवजी कृष्ण से प्रार्थना कर युद्ध बद करवाते है । बाणासुर कृष्ण के चरणो पर गिरकर ऊषा को स्वीकार करने की प्रार्थना करता है । बाणासुर शिव की आज्ञा से ऊषा-अनिरुद्ध-विवाह बडे धूमधाम से सम्पन्न कर देता है ।

ए

एक कंठ विषपायी (सन् १९६३, पृ० १२३), ले० दुष्यन्त कुमार, प्र० लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, *पात्र* . पु० ९, स्त्री १।
घटना-स्थल प्रजापति दक्ष का सुसज्जित निजी कक्ष, हिम-मडित कैलास पर्वत का शिखर, ब्रह्मा के भवन का कक्ष।

इस गीति-नाट्य मे प्राचीन परम्पराओ के खडन, युद्ध तथा राज्य-लिप्सा आदि आधुनिक समस्याओ को स्पष्ट किया गया है। इसमे प्रजापति दक्ष द्वारा आयोजित यज्ञ मे सती के भस्म होने से लेकर शकर द्वारा देवलोक पर आक्रमण तक की कथा वर्णित है। वीरिणी सती के सम्मान की रक्षा के लिए अपने पति दक्ष से विवाद करती है, परन्तु दक्ष शकर से नाराज होने के कारण उसे यज्ञ मे स्थान नही देते। सती सती हो जाती है। ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र आदि देवता दक्ष के नगर का निरीक्षण करते है जिसको शकर ने कुपित होकर नष्ट कर डाला है। 'सर्वहत' नामक पात्र के द्वारा इस ध्वस को स्पष्ट किया गया है। तीसरे दृश्य मे शंकर का प्रलाप है और चौथे दृश्य मे ब्रह्मा की असहायावस्था का वर्णन है— शकर के युद्ध से प्रजा त्राहि-त्राहि कर उठती है। अत मे विष्णु युद्ध को शात कर देते है।

एक प्याला (सन् १९२७, पृ० १२४), ले० मुशी फक साहब, प्र०. उपन्यास बहार आफिस, बनारस, *पात्र* पु० १२, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* ८, ८, ४।
घटना-स्थल घर, मदिरालय।

इस सामाजिक नाटक मे मदिरा-पान के गुण-दोष का विवेचन है। सुरापान कर प्रेमी केशव कहता है "मदिरा आलस्य को हटाती है, आत्मा को प्रफुल्लित करती है और शोक को मिटाती है।" जो लोग मदिरा को दोष-युक्त बताकर उसे छोडने का आग्रह करते है केशव उनको तर्क देता है, "यदि एक बार विवाहित होकर पत्नी नही छूटती, एक बार मिलकर पदवी नही छूटती तो फिर मदिरा क्यो छोडी जाय। यदि पत्नी, पदवी बुरी नही तो मदिरा भी बुरी नही। यदि भरी सभा मे मात्रा से अधिक न पी जाये।" इस प्रकार नाट्यकार मदिरा का सीमित सेवन लाभप्रद और असीमित सेवन हानिप्रद बताता है।

एक भगवान् . एक खुदा (सन् १९००, पृ० ८०), ले० सतीश डे, प्र० . देहाती पुस्तक भडार, दिल्ली-६, *पात्र* . पु० ९, स्त्री ४, *अक* २, *दृश्य-रहित*।

इस ऐतिहासिक नाटक मे हिन्दू-मुस्लिम एकता, देश-प्रेम और आधुनिक विचारो का वर्णन है। शरफुद्दीन प्राचीन विचारो वाला व्यक्ति है। प्रेरणादायक विचार देश-हित के लिए सहायक होते है। इसी प्राचीन विचार के समक्ष एक आधुनिक युग का नवयुवक नूरी है जिस पर आधुनिकता का पूरा प्रभाव है। उसकी अन्तश्चेतना मे रतना है, वह बराबर समाज को आधुनिक पहलू मे देखना चाहता है। नाटककार ने सबका समन्वय कर हिन्दू-मुस्लिम-ऐक्य समस्या को सुलझाने का प्रयास किया है।

इस नाटक का अभिनय भी हो चुका है।

एक भेंट (सन् १९६०, पृ० १०६), ले० . रामाश्रय दीक्षित, प्र० मत्री, अखिल भारत सर्व सेवा सघ, राजघाट, काशी; *पात्र* १७, *अक* ३, *दृश्य* १७, ७, ६।
घटना-स्थल रंगमच।

इस सामाजिक नाटक मे ग्रामीण युवकों का परिश्रम तथा सहयोग दिखाया गया है।

आजादी के उपलक्ष्य मे ग्रामीण युवक एक सभा का आयोजन करते है। पास एक तिरगा लपेटा जाता है। गाव वालो के अनुरोध पर महात्मा गाधी झडा फहराकर सभा का उद्घाटन करते है। इस आजादी के उत्सव मे लोग गाँधीजी के साथ प्रार्थना गाते हुए भारत माता की तथा महात्मा गाधी की जय जयकार करते है। अग्रेज कलक्टर और सुपरिटेण्डेण्ट हिन्दुस्तान छोडकर चले जाते है। महात्माजी ग्रामीण शिक्षितो को परिश्रम से काम करने के लिए प्रेरित करते है। राजनाथ एक गँवार आदमी है। वेकारी के कारण वह आत्महत्या करना चाहता है। शिक्षित युवक आलोक उसे बचाकर कृषि की शिक्षा दे उसकी वेकारी दूर कर देता है।

आलोक अछूत शिवदीन के बीमार लडके को भोजन देता है तथा अन्य अछूत गरीब लोगो को भी खाने की वस्तुए देता है। अछूत शिवदीन उस भोजन को भेंट-स्वरूप स्वीकार करता है। इस प्रकार परिश्रम द्वारा सभी उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते है।

एक मिनट की रानी (सन् १९६१, पृ०३९), ले० ' रवीन्द्रनाथ ठाकुर; प्र० . ग्रन्थालय प्रकाशन, दरभगा; पात्र पु० ४, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* ३, ४, ३।
घटना-स्थल रणक्षेत्र, कारागार आदि।

इस ऐतिहासिक नाटक मे सिल्यूकस और चन्द्रगुप्त की लडाई का वर्णन है। सिल्यूकस चन्द्रगुप्त को गिरफ्तार करके बन्दीगृह मे डाल देता है जैसे ही वह चन्द्रगुप्त को मारने के लिए कृपाण निकालता है, एक नकावपोश व्यक्ति आकर चन्द्रगुप्त की रक्षा करता है तथा उसकी वेडिया काटकर मुक्त करता है। सिल्यूकस उसकी वहादुरी से दग रह जाता है। चन्द्रगुप्त चाणक्य की मदद से पुन सिल्यूकस से युद्ध करता है। उसमे सिल्यूकस की हार होती है। वह अपनी वेटी हेलेन का विवाह चन्द्रगुप्त से करना चाहता है। किन्तु चन्द्रगुप्त एक भिखारी की पुत्री प्रेमा के साथ प्रेम करने के कारण उसे मना करता है। प्रेमा दुश्मनो के वार से घायल हो देश-सेवक की पदवी प्राप्त करती है और चन्द्रगुप्त से आग्रह करती है कि वह हेलेन से विवाह करे और उसे प्रेमा ही समझे।

एक रोगी और वैद्य (सन् १८७९), ले० : धनजय भट्ट।

इस ऐतिहासिक नाटक मे भारत की आन्तरिक अव्यवस्था से फैले असन्तोप का कारण बताया गया है। इसमे रोगी के रूप मे हिन्दुस्तान और वैद्य के रूप मे अग्रेज शासक को प्रस्तुत किया गया है। हिन्दुस्तान अशान्ति के कारण वीमार पडा हुआ है। अग्रेज वैद्य के रूप मे रोगी से वार्तालाप करता है और उसे स्वस्थ कर देने के लिए लम्बी-लम्बी डीग मारता है। रोगी-हिन्दुस्तान सव समझता है और वह अंग्रेज वैद्य को उसका मेहनताना देता हुआ उसे आश्वस्त करता है कि मै आपकी मधुर वाणी और आश्वासनो से सतुष्ट हुआ हू, किन्तु वस्तु-स्थिति कुछ और ही रहती है। इसके साथ भारतीय नेताओ और नागरिको की कायरता के कुपरिणामो का भी सकेत है।

एक रात (सन् १९६९, पृ० ६४), ले० : जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली, *पात्र* पु० ५, स्त्री १, *अक* : ३।
घटना-स्थल फैक्ट्री, मकान।

इस सामाजिक नाटक मे स्वार्थी भाई की धन-लोलुपता तथा क्रूरता दिखायी गयी है। इसमे रायवहादुर शकरदास जी अपने भाई की फैक्टरी मे मैनेजर है, भाई के मरने पर वह उसके एकमात्र पुत्र गजेन्द्र की हत्या कर सारी सम्पत्ति के स्वय मालिक वन जाते है। उनके इस अपराध का पता कुन्दन माली को लग जाता है। अत उसे भी रायवहादुर मरवा देते है। फैक्टरी मे वे श्रमिको को भी छलछद्म से पीडित करते है और नित्य शराव और धन के नशे मे मस्त रहते है। किन्तु पाप छिपता नही है। कुन्दन की आत्मा उन्हे तग करती है। पुलिस हत्या का भेद खोलती है और रायसाहव अपने शरावी वेटे से भी पीडित होते है। पुत्री भी अन्तिम समय नही पहुच पाती। फरिश्ते से वे एक माह, एक सप्ताह, एक दिन, एक रात का समय पश्चात्ताप के लिये तथा समस्त धन अच्छे कार्य मे खर्च करने के लिये मागते हैं।

लेकिन वह भी उन्हे नही मिलता है और अन्त मे वे मर जाते है ।

एकला चलो रे (सन् १९४८, पृ० ३४), ले० उदयशकर भट्ट, प्र० . राजकमल, दिल्ली; पात्र · कतिपय स्वर, अक-दृश्य-रहित ।
घटना-स्थल-रहित

'एकला चलो रे' सगीत-रूपक मे कवि ने सत्य, अहिंसा और प्रेम के प्रतीक महा-मानव गाधीजी को अपनी श्रद्धाजली अर्पित की है । इस नाटक का आधार गाधी जी की नोआखाली-यात्रा को बनाया गया है । बुद्ध, ईसा, मौहम्मद पैगम्बर की भाति गाधीजी भी अकेले ही मानव-कल्याण के मार्ग पर अग्रसर होते है । नोआखाली मे हुए उपद्रवों से त्रस्त मानवता को गाधीजी सत्य, अहिंसा और प्रेम का सदेश देते है । इस प्रकार नोआखाली-यात्रा को प्रतीक मानकर लेखक ने गाधीजी के महान् व्यक्तित्व का दिग्दर्शन कराया है ।

औ

औरत और शैतान (पृ० ६२), ले० शिवदत्त मिश्र, प्र० ठाकुर प्रसाद एण्ड सस, वाराणसी, पात्र पु० ८, स्त्री ४, अक १, दृश्य . १४ ।

घटना-स्थल वेश्या-गृह, दुकान, बाजार, घर आदि ।

इस सामाजिक नाटक मे समाज की बुराइयो को दिखाने का प्रयास किया गया है । इसमे बेला नामक लडकी को कुन्दनलाल बेचकर उससे अपना मतलब हल करता है । नारियो की उच्छृखल प्रवृत्ति से लाभ उठाकर नाटक का एक पात्र चन्द्रकान्त अपना व्यापार चलाता है । सामाजिक बुराइयो के खोखलेपन को जानने के लिए प्रस्तुत नाटक पर्याप्त सहायक है ।

औरत का दिल (पृ० १०६), ले० मुहम्मद शाह आगा हश्र काश्मीरी, प्र० उपन्यास-बहार आफिस, काशी, पात्र पु० ७, स्त्री ३, अक १, दृश्य ५, ६, ३ ।
घटना-स्थल मकान, जगल, विवाह-मडप, कारागार, कठघडा ।

इस सामाजिक नाटक मे निरपराध औरत की वीरता का परिणाम दिखाया गया है । सकीना प्रतिष्ठित बैरिस्टर महमूद की पालिता पुत्री है । सकीना के नाम से एक तिलस्मी तिजौरी और तिलस्मी पुतली है जिसे महमूद शादी के साथ सकीना को उस का रहस्य समझाकर देना चाहता है । उसकी शादी के लिए महमूद एक रईस जमीदार मि० इनायत को अपने घर बुलाते है । सकीना का सम्बन्धी जालिमखा भी रहस्यमयी तिजोरी और पुतली को प्राप्त करने के लिए उससे विवाह करना चाहता है । जालिमखा भयकर डाकुओ का सरदार है, जो मि० महमूद को धमकी-भरा पत्र लिखकर धन तथा कन्या दोनो मागता है ।

किन्तु मि० महमूद, मि० इनायत से सकीना की शादी कर उसकी अमानत सौप देना चाहते है । शादी की रात जालिमखा मि० महमूद का खून कर रहस्यमयी पुतली लेना चाहता है । अचानक पिस्तौल से गोली छूट जाने की दहशत मे वह अपनी चाभी और खजर वही फेककर भाग जाता है । गोली की आवाज से मि० इनायत उठकर आते है और खूनी खजर तथा चाभी उठाते है । सकीना उन्हे देखकर उन्ही को खूनी समझती है और पुलिस आकर उन्हे ले जाती है ।

अफजल (मि० महमूद) जालिमखा के गिरोह का सरदार बनकर उसका विनाश करते है तथा सकीना और मि० इनायत के भ्रम का निवारण करते है । अन्त मे जालिम-

खा मि० इनायत को मारने के लिए जाता है। वफादार नौकर करीम पुलिस की मदद से उसे बन्दी बनाता है और जेल के कठघरे तथा पुलिस के सरक्षण मे रहने पर भी कुलसुम द्वारा मारा जाता है। मुकदमे मे अफजल (मि०महमूद) तथा करीम और सकीना की सफाई से इनायत वरी हो जाता है।

क

कण्ठहार (*वि० २०२१, पृ० १९३*), ले० मणि पद्म, प्र० · मैथिली प्रकाशन समिति, सरिसव, दरभगा, *पात्र :* पु० २३, स्त्री ५; *अक* . ११, *दृश्य* · ३६।
घटना-स्थल देव-स्थान, नैमिषारण्य का उपवन, गढ गोढियारी प्रागण, शास्त्रार्थ स्थल, कमलेश्वरनाथ महादेव का प्रागण, महादेव का मदिर, विद्यापति का घर, ग्राम-पथ।

यह ऐतिहासिक मैथिली नाटक है। विद्यापति के प्रारभिक जीवन से लेकर उनकी अतिम स्थिति तक का चित्रण नाटकीय शैली मे किया गया है। विद्यापति को शस्त्र एव शास्त्र दोनो का ज्ञाता माना गया है। गढ गोढियार के युद्ध-स्थल मे शस्त्र-शक्ति का और शास्त्रार्थ मे शास्त्र-ज्ञान का परिचय मिलता है। विद्यापति मातृभूमि और मातृभाषा की पूजा मे जीवन विताते है। राजनीति द्वारा महाराज शिवसिह को दिल्ली के सुल्तान से बधनमुक्त कराते है। इससे महाराज देवसिह और महारानी लखिमा प्रभावित होकर उनका अत्यधिक सम्मान करती है। महारानी लखिमा की सगीत-प्रवीणता का आभास नाटक मे अनेक स्थलो पर मिलता है। महारानी के सती होने पर विद्यापति निराश्रित हो भक्ति की ओर उन्मुख होते है। महादेव इनकी भक्ति-भावना से प्रसन्न होकर उनके यहा नौकरी करते है। घटनाबाहुल्य से नाटक रगमचोपयोगी नही है। विद्यापति के गीतो को स्थान-स्थान पर उद्धृत किया गया है।

कंजूस की खोपडी (सन् १९२३), ले० · गोविन्द वल्लभ पन्त, प्र० . उपन्यास वहार आफिस, काशी।

इस प्रहसन मे कजूस धनी का परिहास किया गया है। पन्त जी की यह प्रथम कृति है।

कंसवध (सन् १५९६, पृ० २३), ले० : रामचरण ठाकुर, *प्र० :* हिंदी विद्यापीठ, आगरा, *पात्र* पु० ११, स्त्री २, *अक और दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल गोकुल, मथुरा, कंस का दरबार, यज्ञशाला।

इसमे कृष्ण की प्रमुख लीलाओ का उल्लेख और उनकी महिमा का वर्णन है। कृष्ण-नाम-स्मरण और श्रवण से मानव की मुक्ति दिखाई गई है। नारद कस को उसके प्राणघाती कृष्ण-बलराम का ज्ञान कराते है। कस उन दोनो को मारने के लिए चाणूर-मुष्टिक को आज्ञा देता है। और कृष्ण को मथुरा लाने के लिए अक्रूर को भेजता है। नारद जी मथुरा से कृष्ण के पास पहुँचकर कंस की योजना वताते है। अक्रूर कृष्ण से गोकुल मे सारी बात कह सुनाते है। कृष्ण और बलराम गोपियो को आश्वासन देकर अक्रूर के साथ रथ पर बैठकर मथुरा के लिए प्रस्थान करते है। मथुरावासी कृष्ण के दर्शन से प्रफुल्लित होकर पुष्पो की वर्षा करते है। मार्ग मे जाते हुए कृष्ण सुदामा माली का मनोरथ पूर्ण करते है और कुवजा के प्रेम से प्रभावित होकर उसका कूबडपन मिटाते है। तदनन्तर धनुपयज्ञ शाला मे धनुष पर प्रत्यचा लगाकर लीला करते है। हाथीवान को मारकर रगशाला मे प्रवेश करते है। वहाँ पर प्रसिद्ध मल्ल चाणूर, मुष्टिक और सकर्षण से कृष्ण और वलराम का युद्ध होना है। थोडी देर वाद कृष्ण चाणूर और मुष्टिक को मारकर दुष्ट कस का भी वध कर डालते है।

और उग्रसेन को सिहासन पर बैठाते है।

कंसवध (सन् १९१०, पृ० ४८), ले० रामनारायण मिश्र, 'द्विजदेव', प्र० · मैथिली प्रिंटिंग प्रेस, मधुबनी, दरभगा, *पात्र* पु०१६, स्त्री, ५, *अक* ५, दृश्य १, २, २। *घटना-स्थल* गोकुल, मथुरा, यज्ञशाला, रगभूमि।

अत्याचारी कस की हत्या के लिए भगवान् कृष्ण अवतार धारण कर देवताओ के कष्ट दूर करते है।

जीर्णविष और करालदत नामक दो राक्षसो से वार्तालाप द्वारा देवकी की विदाई के समय आकाशवाणी का परिचय मिलता है। बहिन देवकी के आठवे पुत्र से अपने सर्वनाश की घोषणा सुन कस वसुदेव-देवकी को कारागार मे बद करता है और उनके सात पुत्रो की हत्या के बाद आठवी सतान कन्या को मारना चाहता है किन्तु वह कस के हाथ से छूटकर आकाश मे यह कहते हुए लुप्त हो जाती है कि, 'तुम्हारा शत्रु गोकुल मे जन्म ले चुका है।'

धनुष-यज्ञ के व्याज से अक्रूर के द्वारा कृष्ण मथुरा बुलाए जाते है।

आगमन की सूचना पाकर मथुरावासी उनके दर्शन को आ पहुँचते है। कृष्ण रास्ते मे धोबी से राजोचित वस्त्र छीनकर पहनते है। कस का माली उन्हे माला पहनाता है। कुब्जा चदन लगाती है और कृष्ण द्वारा सुदरी स्त्री के रूप मे परिवर्तित कर दी जाती है। तदनन्तर वह धनुषयज्ञ मे धनुष तोडते है और कस के रक्षको से अपनी रक्षा करते है।

दूसरे दिन वे रगभूमि के प्रवेश-द्वार पर स्थित कुवलय को द्वारपाल और महावत-सहित मारते है। यह सूचना पाकर कस अपने वीरो को सावधान करता है। कस के ललकारने पर कृष्ण मच पर उसका वध करते है।

कच-देवयानी (सन् १९५१), ले० हसकुमार तिवारी, प्र० ज्ञानपीठ लि०, पटना, *पात्र* पु० १, स्त्री १, *अक-रहित*, दृश्य १।
घटना-स्थल . आश्रम, उपवन।

'कच-देवयानी' एक पौराणिक सगीत-रूपक है जिसमे कच और देवयानी की प्रेम-गाथा को प्रतिपाद्य किया गया है। देवगुरु का पुत्र कच असुर-गुरु आचार्य शुक्र के पास सजीवनी विद्या सीखने आता है जिससे पराजित देव-सेना को जीवन दान दिया जा सके। आचार्य शुक्र की पुत्री देवयानी कच के प्रणय-पाश मे बध जाती है। कुछ समय पश्चात् जब कच विद्या सीखकर वापस स्वर्ग जाने लगता है तो देवयानी उसे रोकने का प्रयत्न करती है किन्तु वह (कच) कर्त्तव्य के समक्ष प्रेम की उपेक्षा करता है जिससे विक्षुब्ध हो देवयानी उसे शाप देती है कि जिस विद्या के लिए तुमने अकपट प्रेम को ठुकराया है, वह विद्या तुम्हारे काम नही आएगी।' यह अभिशाप उसे भी चैन से नही बैठने देगा। परिणामस्वरूप वह अन्त तक विरहाग्नि मे सुलगती रहती है।

कत्ल हकीकत राय (सन् १९५४, पृ० १००), ले० सैयद शेरअली असद जालधरी; बाबूराम कृष्ण वर्मा द्वारा सम्पादित तथा भारत जीवन प्रेस मे मुद्रित; *पात्र* . पु० ७, स्त्री ६, *'बाब'* ३, पर्दा · १०, १०, ८। इस नाटक मे अक की जगह बाब तथा दृश्य की जगह पर्दा दिया गया है।
घटना-स्थल महल, कमरा, उद्यान, अदालत बन्दीगृह।

इस दुःखान्त ऐतिहासिक नाटक में हकीकत राय का धर्म की रक्षा के लिए बलिदान दिखाया गया है। हकीकत राय के पिता भागमल के यहा बटाला के तिल्लासिह अपनी कन्या के विवाह का प्रस्ताव भेजते है। हकीकत राय का विवाह जैदेई के साथ हो जाता है। हकीकत राय जिस मकतब मे पढते है उस के मुसलमान छात्र काजी से हकीकत राय की शिकायत करते है कि वह पैगम्बरो से अपने देवताओ को मिलाता है। धर्मान्ध मुसलमान लडके हकीकत राय को बहुत मारते है। हाकिम के पास जब इस धार्मिक कलह की बात पहुचती है तो वह हकीकत राय और जैदेई को बन्दीगृह मे डाल देता है। वह किसी प्रकार बन्दीगृह से भाग निकलता है किन्तु पुन पकडा जाता है। वजीर अपने अधिकारियो के साथ

आकर शत्रु खलावद्ध हकीकत राय को कत्ल की सजा देता है। जल्लाद हकीकत राय का मस्तक काट लेता है जिसे देखकर उसके माता-पिता वेहोश होकर गिर जाते है। जैदेई प्राण त्याग देती है।

इसमे गानो का आधिक्य और अरवी-फारसी के शब्दो का वहुल प्रयोग है।

कनियापुतरा (सन् १९६७, पृ० १३२), ले० गुणनाथ झा, प्र० मिथिला कला केन्द्र प्रकाशन, कलकत्ता, *पात्र* . पु० १४, स्त्री ३, *अक* ' ३, *दृश्य* १५।
घटना-स्थल ' प्रोफेसर साहव का आवास, जगन्नाथ वावू के आवास का एक शयन-कक्ष, साधारण गृहस्थ परिवार का दरवाजा, छात्रा-वास।

मैथिल-समाज मे प्रचलित तिलक-दहेज प्रथा के दुष्परिणाम इस नाटक मे दिखाये गये है। यदि इस परम्परा को नही रोका जायेगा तो समाज का वास्तविक स्वरूप और अधिक विरूपित हो जाएगा। नाटक की नायिका, दहेज-प्रथा की मारी हुई निर्मला विवाहिता मैथिल ललनाओ का प्रतिनिधित्व करती है। वह समाज के प्रत्येक शिक्षित युवक को धिक्कारती है कि जव तक वैवाहिक प्रथाओ मे क्राति नही होगी तव तक समाज को मुक्ति नही मिल सकती है।

इस नाटक का प्रदर्शन मिथिला कला-केन्द्र के सातवे वार्पिक अधिवेशन के अवसर पर नेताजी सुभाप इन्स्टिट्यूट, सियालदह मे हुआ था।

कन्दर्पीघाट नाटक (सन् १९६६, पृ० ५९), ले० . राजेश्वर झा, प्र० ' अमरनाथ प्रकाशन रसुआर,सहरसा, *पात्र* . पु० १६, स्त्री ३, *अक* . ३, *दृश्य* . १५।
घटना-स्थल भौरागढ, भौरा की राजसभा पटना के शासक जैनुद्दीन की राजसभा, भौरा-गढ का अन्त पुर, युद्ध-शिविर, नवाव अली वर्दी का दरबार एवं युद्धभूमि।

इस ऐतिहासिक नाटक मे महाराजा नरेन्द्रसिह द्वारा मुसलमानो से मिथिला की मुक्ति दिखाई गई है। मिथिला के इतिहास मे कन्दर्पीघाट का एक विशिष्ट स्थान है जो वलिदान, पराक्रम और शस्त्र-सचार की प्रेरणा देता है। वस्तुत इस रण-स्थल का महत्त्व मिथिला के लिए हल्दीघाटी के समान है। इसके नायक खडवलाकुल के पराक्रमी शासक महाराजा नरेन्द्रसिह है जो धीर-वीर एव स्वतन्त्रता-प्रिय है। अलीवर्दी खा उनके पराक्रम एव रणकुशलता से मुग्ध होकर अनेक उपाधियो से उन्हे विभूपित करता है। कन्दर्पीघाट मे महाराजा नरेन्द्र सिह, पटना के मुसलमान-नवाव के उपशासक राजा रामनारायण सूवा के साथ युद्ध करते है। इस युद्ध मे महाराज नरेन्द्रसिह अपनी वीरता के वल पर विजयी होते है। उनसे परास्त होकर नवाव मिथिला को कर-मुक्त कर देता है।

कन्या का तपोवन(ससुराल) (सन् १९५४, पृ० १७६), ले० ' रामनरेश त्रिपाठी, प्र० . आदर्श पुस्तक भडार, कलकत्ता, *पात्र* पु० ८, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* ७, १६, १२।
घटना-स्थल फुलवाडी, मदन का घर, कमरा, वैठक, कलकत्ता की गली।

प्रस्तुत नाटक वस्तुत अनमेल विवाह पर व्यग्य करता हुआ उसके दुष्परिणामो की ओर सकेत करता है। इन्दुमती सुशिक्षिता आधुनिक युवती है। उसका विवाह मदन-मोहन से हो जाता है जो धनी किन्तु अशि-क्षित है। वह पुरानी रूढियो और परम्पराओ से जकडा होने के कारण विवेकहीन हो दूसरो की वातो पर शीघ्र ही विश्वास कर लेता है। उसका चाचा लीलाधर उसकी इसी कमजोरी का लाभ उठाता है और उसका दाम्पत्य जीवन टूट-टूट कर विखर जाता है। इन्दुमती धैर्य और सहिष्णुता को नही छोड़ती और अन्त मे अपने आदर्श के कारण अपनी गृहस्थी को पुन. बसा लेती है। त्रिपाठी जी ने आदर्श दम्पती के रूप मे देवेन्द्र और कृष्ण को चित्रित किया है। ये दोनो न केवल परित्यक्ता इन्दुमती को आश्रय देते है अपितु उसे अपने पति से मिलाने मे भी सहायक होते है।

कन्या-विक्रय (सन् १९२३, पृ० १३३), ले०,

जमुनादास मेहरा, प्र० रिखबदास बाहिती, दुर्गा प्रेस, कलकत्ता, *पात्र* पु० ६, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य-रहित*, *गीत* सात।
घटना-स्थल रामदास का गृह, एक साधारण गृह का कक्ष, जगल।

इन नाटक मे कन्या-विक्रय और अनमेल विवाह का दुष्परिणाम दिखाया गया है। रामदास बडी पुत्री लक्ष्मी का विवाह पाच रुपये के लोभ मे बूढे तथा रोगी लोटनमल के साथ कर देता है। कुछ ही समय के पश्चात कन्या विधवा हो जाती है। लोभी पिता पुन उसका विक्रय करना चाहता है किन्तु लक्ष्मी लोभी पुरुषो को मार्ग दिखाती हुई अपने जीवन का अन्त कर देती है। रामदास दूसरी कन्या मोहिनी का विवाह दो हजार रुपये लेकर एक नासमझ और अबोध बालक के साथ कर देता है। कन्या घर छोडकर साधु के साथ भागने पर विवश होती है। इसी बीच मार्ग मे डाकू मिल जाते है किन्तु स्वय सेवको और साधू के प्रयत्न से मोहिनी बचा ली जाती है। अन्त मे पचायत के निर्णय पर मोहिनी निर्दोष ठहरायी जाती है। रामदास का बहिष्कार कर दिया जाता है। मोहिनी की माता रोहिणी दुष्परिणाम के कारण विषपान कर लेती है, रामदास छुरी से आत्महत्या करता है। मोहिनी भी पिता की छुरी से आत्महत्या कर लेती है। इस प्रकार कन्या-विक्रय के कारण सारा परिवार नष्ट हो जाता है।

कन्या-सम्बोधिनी नाटक (वि० १८८८, पृ०५८), ले० कामता प्रसाद साहब रईस, प्र० मुशी चुन्नीलाल, कैम्प, फतेहगढ, *पात्र* . पु० ६, स्त्री ४, *अक-रहित*, *दृश्य* ४।

इस नाटक मे कहानी के द्वारा स्त्रियो को जीवनोपयोगी शिक्षा दी गई है। इसमे अनेक घटनाये अलग-अलग है। अयोध्यावासी लाला नारायणदास अपनी कन्या राज कुवरि को हिन्दी-ज्ञान के साथ चिकन-कलावत्तू की टोपियाँ काढना सिखाते है। उसका विवाह निर्धन परिवार मे होता है। वह अपने आभूषण बेचकर पति को एक दुकान करा देती है और स्वय कलाबत्तू की टोपियाँ तैयार करके दुकान पर बेचने को देती है। इसी की आय से वह बूढे सास-ससुर को भोजन और ननदो को हस्तकौशल की शिक्षा देती है।

इसी तरह की चार कहानियाँ स्त्रियो को स्वावलम्बन की शिक्षा देने के लिए रची गई है। इन्ही चारो को चार अको मे विभाजित समझा गया है। एक कहानी मे मद्यपान के दोष, दूसरे मे पर्दे की कुप्रथा के कारण समाज की अधोगति दिखाई गई है। सभी कहानियो मे स्त्रियो की बुद्धिमानी से परिवार एव समाज-सुधार दिखाया गया है।

कपटी मुनि नाटक (सन् १९०३, पृ० ८३), ले० अनन्तराम पाडे, प्र० भारत जीवन प्रेस, काशी, *पात्र* . पु० ७, स्त्री कोई नही, *अक* . ५, *दृश्य* के स्थान पर *गर्भाक* २, २, ३, ४, ३।
घटना-स्थल जंगल, राजसभा, नदी तट पर देवालय, दरबार, कपटी मुनि का आश्रम, मत्री धर्मरुचि का भवन।

इस नाटक मे एक कपटी मुनि के सग का दुष्परिणाम दिखाया गया है। सूत्रधार पारिपार्श्वक से नाटक का महत्त्व बताते हुए कहता है—"और शास्त्र सब कथनहार है करनहार नहि कोई। नाटक करके करि दिखलावे सत्यासत्य जु होई।" तदुपरान्त देश की दुर्दशा पर दोनो रामकलेवा की धुन पर ४० चरणो की लम्बी कविता का गान करते है। अपने अतीत का स्मरण करते हुए वे गाते है—"वही हमारा पुण्य देश है, वही आर्यकुल बसते है। फिर किस कारण मधुमक्खी से सारहीन हो मरते है।" इस प्रकार प्रस्तावना मे देश को जगाने का प्रयास किया गया है।

प्रथम अक मे वाह्लीक देश के राजा चन्द्रसेन व्याकुल भाव से जगल मे भागते हुए दिखाई पडते है। उन्हे राजा भानुप्रताप से हारकर भागना पडता है। इसी जगल मे कालकेतु भी भागकर आता है। कालकेतु के सौ पुत्रो और दस भाइयो का भानुप्रताप वध कराता है। कालकेतु और चन्द्रकेतु अपनी पराजय के कारणो पर विचार करते है। दोनो निश्चय करते है कि शक्ति द्वारा भानुप्रताप को जीतना असम्भव है अत छल द्वारा उसे पराजित करना उचित होगा। इधर भानुप्रताप चन्द्रसेन के श्वशुर चन्द्रवीर को

सभा मे बुलाता है और चन्द्रसेन को दरबार मे उपस्थित करने का आदेश देता है। योजनानुसार कालकेतु नदी-तट पर स्थित देवालय मे पंडित के वेश मे रहता है। एक दिन भानुप्रताप के गुप्तचरो को वह सूचना देता है कि राजा चन्द्रसेन सपरिवार उसके घर रहता है। चन्द्रसेन एक कपटी मुनि के आश्रम मे शरण लेता है। वहाँ कालकेतु दौडता हुआ आकर कहता है कि हमने राजा के रनिवास को आग से फूंक दिया है। अब वह निश्चय भानुप्रताप के पास आयेगा। राजा चन्द्रसेन कालकेतु की बुद्धि की प्रशंसा करता है। कालकेतु चन्द्रसेन को आश्वस्त करता है कि आपका परिवार श्वशुर चन्द्रवीर के यहाँ कुशल-क्षेम से है। उधर भानुप्रताप गोघातक व्याघ्र की खोज मे जगल मे भटकता हुआ कपटी मुनि के आश्रम मे पहुचता है। राजा प्यास से व्याकुल होकर कपटी मुनि से जल माँगता है। कपटी मुनि एक तालाब का पता बताता है। राजा घोडे-सहित प्यास बुझाता है। भानुप्रताप और कपटी मुनि मे वार्तालाप होता है। भानुप्रताप कपटी मुनि से ब्राह्मणो को वश मे करने का मार्ग पूछता है। कपटी मुनि कहता है कि मेरी बनी हुई रसोई ब्राह्मणो को परसो वे सब वशीभूत होगे। राजा वही थककर सो जाता है और कालकेतु उसे पीठ पर लादकर उसके रनिवास मे पहुचा देता है। वहाँ ब्रह्मभोज मे कपटी मुनि मास का पकवान बनाता है। राजा परोसता है तो ब्राह्मण रुष्ट होकर शाप देते है—"एक साल के भीतर तेरे कुल मे एक जन पानी देने वाला तक भी न बचे।" अब चन्द्रसेन, कालकेतु, अरिशाल आदि अपनी सेना सजाकर भानुप्रताप के राज्य पर आक्रमण करते है। भानुप्रताप पराजित होकर रथ से गिर पडता है। वीरवेश मे कालकेतु और चन्द्रसेन विजयी बन निष्कटक राज्य प्राप्त करते है।

कफन (पृ० ६०), ले० रामनिरजन शर्मा 'अलख', प्र० साधना मन्दिर, पटना-४, *पात्र* पु० ११, स्त्री १; *अक* ३, *दृश्य* ८, ७, ७।
घटना-स्थल घर, मार्ग, आर्यसमाज मदिर।

इस सामाजिक नाटक मे एक मक्कार पुरोहित की काली करतूत दिखायी गयी है। भैरवनाथ एक नशेबाज शराबी व्यक्ति है जो अपनी सुन्दर पुत्री ललिता का विवाह मक्कार पुरोहित चतुर्वेदी के परामर्श से शैतान साधु फक्कडनाथ के चेले अधेड एव कुरूप गोवर्धन दास से कर देता है। तत्पश्चात् लडकी की शादी से मिले हुए चार हजार रुपयो के खर्च हो जाने पर भैरवनाथ पुन ललिता को एक धनी व्यक्ति गुलशन के हाथ दो हजार रुपए मे बेच देता है। गाँव के भद्र युवक रामबहादुर, राधेश्याम तथा गणेश इसका घोर विरोध करते है और ललिता की शादी आर्यसमाज मन्दिर के योग्य युवक मोहन के साथ करने की तैयारी करते है। भैरवनाथ पुन कुछ बदमाश धनी आदमियो को लेकर मन्दिर मे पहुचता है और रामबहादुर आदि युवको के साथ कलह करता है। इतने मे बदमाश साधु त्रिशूल से ललिता पर वार कर देता है जिससे ललिता की मृत्यु हो जाती है। अन्त मे भैरवनाथ सहित सभी बदमाश गिरफ्तार कर लिये जाते है। रामबहादुर, मोहन तथा राधेश्याम-सहित जन-सेवी व्यक्ति विवाह की उस लाल चुँदरी को बहन ललिता का कफन बना देते है।

कफन अर्थात सिन्दूर की लाज (सन् १९६८, पृ० ८६), ले० सतीश डे, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६, *पात्र* पु० ७, स्त्री ३; *अक* ३, *दृश्य-रहित*।

इस सामाजिक नाटक मे एक अछूत लडकी की दर्दभरी कहानी है। एक सुन्दरी अछूत लडकी अपनी माग की लाज के लिए जीवन को बलिवेदी पर चढा देती है, क्योकि अन्यायी समाज उसे जीने नही देता वरन् उसका सब कुछ लूट कर उसे मरने के लिए बाध्य कर देता है।

कभी गरम कभी नरम, ले० सतीश डे, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६; *पात्र* पु० ६, स्त्री २, *अक* २, *दृश्य-रहित*।

यह नाटक परिवार की विविध समस्याओ

का उद्‌घाटन करता है। एक परिवार के लोग ऊपर से प्रेमभाव दिखाते है किन्तु अन्त-करण मे एक-दूसरे से विद्वेष करते है। कुछ पात्र तो अपन असली रूप बदल कर कार्य करते है जिससे नाटक मे हास्य की छटा दिखाई पडती है। अनमेल विवाह, अनधिकार सम्पत्ति-अधिकार की लालसा के कारण परिवार मे विद्रोह की अग्नि भभकती है और सबको कष्ट उठाना पडता है।

कमलमोहिनी भंवरसिंह (पृ० २७), ले० . लाला जवाहरलाल वैद्य, जयपुर, *पात्र* पु० ६, स्त्री ५, *अक* . ४, *दृश्य-रहित*
घटना-स्थल कमलमोहिनी का शयनगृह, बन, कमलमोहिनी का महल, मार्नासह का महल।

इस नाटक मे प्रेमी और प्रेयसी की अभिलाषा पूर्ण न होने के कारण दोनो की मृत्यु दिखाई गई है।

नाटक नान्दी, सूत्रधार, नट और नटी से आरम्भ होता है। कमलमोहिनी और भवरसिह स्वप्न मे एक-दूसरे के दर्शन कर प्रेम के रस मे पूर्ण रूप से सराबोर हो जाते है। कमलमोहिनी की सखी चम्पा साधु का वेश धारण कर भँवरसिह को योगी के रूप मे चन्दनपुर लाने मे सफल हो जाती है। कमलमोहिनी योगी के दर्शन के बहाने भवरसिह के साथ भाग निकलती है किन्तु पिता के सिपाही तथा मन्त्री द्वारा पकड ली जाती है। मार्नासह भंवरसिह को प्राणदण्ड देते है। कमलमोहिनी भवरसिह के निष्प्राण शरीर को देखकर प्राण त्याग देती है। कमलमोहिनी का पिता भी प्राण त्याग देता है। चिता सजाते समय कमलमोहिनी की सखी चम्पा तथा भँवरसिह का मित्र शूरसेन भी चिता मे कूद पडते है। इस प्रकार नाटक का *अन्त* करुण-रस मे होता है।

कमला (सन् १६३६, पृ० ८५), ले० उदय शकर भट्ट, प्र० सूरी ब्रदर्स, लाहौर, *पात्र* . पु० १४, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* : १, ३, १।
घटना-स्थल : जमीदार देवनारायण का भवन, नदी आदि।

इस सामाजिक नाटक मे अनमेल विवाह, नैतिकता का सकट, अनैतिक आचरण, जमीदारी प्रथा की विभीपिका, नारियो की यातना का चित्रण है।

गाव का जमीदार देवनारायण, अवस्था की दृष्टि से वृद्ध किन्तु मन से अत्यन्त कामुक है। अपनी ही रुचि से परिचालित होकर वह युवती कमला से विवाह करता है। कमला आधुनिक होने के नाते सेवा-परायणा है, उस के खुले व्यवहार से देवनारायण उसके चरित्र पर शका करता है। कमला अनाथालय के एक बालक को पुत्रवत स्वीकार कर लेती है और उसे जाने नही देती। इससे देवनारायण मे यह धारणा बद्धमूल हो जाती है कि अनाथालय का बालक शशिकुमार कमला का ही अवैध पुत्र है। अत वह पत्नी को अपमानित करके घर से निकाल देता है। निराश कमला नदी मे कूदकर आत्महत्या कर लेती है। शशिकुमार की भी मृत्यु हो जाती है। अन्त मे वास्तविकता का पता चलने पर देवनारायण अत्यन्त दुखी होकर पश्चात्ताप करता है।

कर्फ्यू (रचनाकाल १६७१, प्रकाशन-काल सन् १६७२, पृ० १२३), ले० · लक्ष्मीनारायण लाल, प्र० . राजपाल एण्ड सस, दिल्ली, *पात्र* पु० २, स्त्री २, *अक-रहित*, *दृश्य* : ५।
घटना-स्थल : गौतम का ड्राइग-रूम, सजय का कमरा।

इस नाटक मे आधुनिक नारी की पर-पुरुष के साथ रमण मे रुचि दिखाई गई है। एक बडे नगर मे दगा होने पर अधिकारी कर्फ्यू लगा देते है। ऐसी स्थिति मे समृद्ध कुल की दो महिलाएँ कर्फ्यू के कारण रात्रि-वेला मे अपने घर से अलग होने को विवश हो जाती है। मिल-मालिक गौतम के ड्राइग-रूम मे मनीपा नामक महिला प्रवेश करके नि शंक भाव से वार्तालाप करती है। वाइस-चांसलर की कन्या मनीषा अपने उन सहपाठी छात्रो की प्रेम-गाथाये सुनाती है जिनके आलिगन से उसे सुख मिलता था। वह कालेज के टेनिस-प्लेयर, विश्वविद्यालय के रिसर्च-स्कॉलर तथा अन्य युवको की प्रेम-

कहानियो को मस्ती मे सुनाती जाती है और परिचित व्यक्तियो से ऊवकर कहती है—'नाऊ आई लाइक ओनली स्ट्रेंजर्स। 'एण्ड यू आर ए स्ट्रेंजर।' मनीषा गौतम के साथ सुरापन करती है। गौतम से कहती है—'आओ वढो, मेरा हाथ पकडो—।' गौतम अपने घर मे एकाकी है और उसने वाहर का द्वार बन्द कर रखा है। मनीषा जव वाहर जाने लगती है तो गौतम उसे कसकर पकड लेता है। वह छुडाकर पास मे पडी तलवार उठाकर कहती है—'अव आगे मत आना, मै अपने को बचा सकती हूँ।' तलवार फेककर निकल जाती है।

दूसरे दृश्य मे गौतम की पत्नी कविता कपर्यू लगने पर सजय नामक अभिनेता के एकाकी घर मे प्रवेश करती है। सजय एक नाटक का रिहर्सल कर रहा है। कविता उसके साथ पार्ट करती हुई विवाह के विविध रूपो के गुण-दोषो पर वार्तालाप करती है। भावावेश मे आकर स्वय सजय के वटन खोल-कर उसकी कमीज उतारती है। टेवल-लैंप बुझा देती है। जव वह सजय से कहती है कि मै तुम्हे चाहती हूँ तो वह उसे अक मे भर लेता है। सजय के पकडने पर वह चीखती है फिर मुँह छिपा लेती है। सजय उसे कायर कहकर छोड देता है। इस दृश्य मे कविता, आधुनिक नाटक, उसके रिहर्सल और गोष्ठी की शैलियो पर नाना प्रकार के विचार प्रकट करती है।

तीसरे दृश्य मे मनीपा पुन गौतम के ड्राइग-रूम मे आकर उस कपर्यू की रात की अपनी शेष कहानी सुनाती है।

गौतम और मनीषा मे प्रेमालाप होता है। वह मनीषा को वाँहो मे भर लेता है। दोनो के हाथ मे एक-एक मोमबत्ती है। दोनो ओम् नम स्वाहा···का मत्र पढते हुए परि-क्रमा करते-करते आलिगनबद्ध हो जाते है।

चौथे दृश्य मे कविता पुन सजय के उसी कमरे मे सोफे पर लेटी दिखाई देती है। सजय अपने कमरे मे लेटा है।

पाँचवे दृश्य मे कपर्यू टूटते-टूटते कविता अपने घर से गौतम के यहाँ आ जाती है। गौतम और कविता कपर्यू की अपनी राम कहानी एक-दूसरे को सुनाते है। गौतम मनीषा का प्रसग और कविता सजय की कहानी सुनाती है।

मनीषा समझाती है कि 'व्यक्तिगत सत्यो से ऊपर एक वडा सामाजिक सत्य होता है।' अन्त मे चारो मिलकर कविता-गौतम के विवाह की सालगिरह मनाते है। प्रथम प्रस्तुती-करण—अभियान द्वारा आईफेक्स के मच पर नयी दिल्ली मे १२ नवम्वर, १९७१ को हुआ।

कराल चक्र (वि० १९९०, पृ० १२५), ले० चन्द्रशेखर पाण्डेय 'चन्द्रमणि', प्र० . भारती भवन, वन्नाव, पात्र · पु० १२, स्त्री ४, अक . ३, दृश्य . ८, ८, ६।

नाटक का नायक ज्ञानशकर समाज-सेवा तथा देशोद्धार के लिए प्रस्तुत होता है, जिसमे उसकी पत्नी सत्यवती सहायता करती है। विजयसिंह अकर्मण्य शासक तथा दीवान जालिमसिंह के हाथ की कठ-पुतली वना हुआ है। जालिमसिंह स्वय शासक वनना चाहता है अत वह राजा को मद्यपान व वेश्यागमन की ओर प्रवृत्त कराता है। प्रजा ज्ञानशकर को अपना नेता मानने लगती है। जालिमसिंह ज्ञानशकर को फाँसी की सजा दिलवाता है। फाँसी वाले दिन जालिमसिंह राजा विजयसिंह को फाँसी देखने के लिए वुलाता है तथा उन्हे जहर-मिली शराव देने का प्रयत्न करता है परन्तु रहस्य खुल जाता है और विजयसिंह वच जाते है। जालिमसिंह को सजा मिलती है तथा विजयसिंह और जनता के अनुरोध पर ज्ञानशकर राजा वनाए जाते है।

करिश्मे-कुदरत उर्फ अपनी या पराई (सन् १८९२), मुशी विनायक प्रसाद 'तालिब', एव खुरशीद वाटलीवाला के निदेशन एव विक्टो-रिया नाटक मडली, बम्वई द्वारा प्रदर्शित।

यह नाटक पुरुष-स्त्री की प्रेम-क्षेत्र मे बेवफाइयाँ प्रदर्शित करता है। टाइम्स रोम के एक नगर आर्डिया का वादशाह है। वह अपनी क्रूरता तथा पैशाचिकता के लिए प्रसिद्ध है। उसका पुत्र मार्क्स है। वह प्रथम प्रणय के लिए अपनी चचेरी वहिन डेसिया के प्रति आकृष्ट होता है। दोनो का आक-र्पण विवाह की वातचीत तक पहुँचता ही है

कि उनके मार्ग मे एक अन्य यहूदी कुमारी राहिल आ जाती है। राहिल अली एजार नामक एक यहूदी की पालिता पुत्री है। अलीएजार ने उसको जलती अग्नि से बचाया था और बडे मनोयोग से उसका पालन किया था इसलिए वह यहूदी कन्या ही कहलाती थी। किन्तु वास्तव मे वह आर्डिया नगर के रोमन धार्मिक पेशवा पान्टीफ ब्रूट्स की लडकी (पालीना) थी। यह रहस्य नाटक के अन्त मे राहिल की मार्क्स के साथ शादी के समय खुलता है।

मार्क्स जब राहिल यहूदन के नयन-बाणो से विद्ध हो उसकी तरफ बढता है तो डेसिया मार्ग के वृक्ष की भाँति अलग ही रह जाती है। दोनो के प्रणय को घनिष्ठता और अभिन्नता की ओर अग्रसर देख अलीएजार बडा अप्रसन्न होता है। क्योकि वह अपनी यहूदी लडकी का किसी रोमन के साथ सम्बन्ध होना सहन नही कर सकता। मार्क्स तुर्कमान नसीबे की सहायता से राहिल को ले उडता है। डेसिया मार्क्स पर अपने अधिकार को छोड देती है और राहिल रोमन का उसके साथ विवाह हो जाता है।

करुणाभरण (रचनाकाल १६१७-१६५६ के मध्य), ले० कृष्ण जीवन लच्छीराम, *पात्र* . पु० १, स्त्री ४, *अक* :७, *दृश्य-रहित*। *घटना-स्थल* . वृन्दावन।

इस नाटक मे राधाकृष्ण का कुरुक्षेत्र मे पुन साक्षात्कार दिखाया गया है। यह एक पौराणिक नाटक है। इसमे ग्रहण के समय स्नानार्थ कृष्ण द्वारिका से कुरुक्षेत्र आते है जहाँ पर वृन्दावन से राधा, गोप, गोपियाँ, यशोदादि भी आए हुए रहते है। वही पर सबका पारस्परिक मिलन होता है और अतीत की प्रेममयी स्मृति मे सब खो जाते है। नाटक के अन्तिम अद्वैत अक मे नाट्यकार सभी घटनाओ को आध्यात्मिक रूप देकर इसे दार्शनिक बना देता है।

करुणालय (सन् १६१३, पृ० ३६), ले० जयशकर प्रसाद, प्र० भारती भण्डार, इलाहाबाद, *पात्र* पु० ८, स्त्री २, *अक-रहित*, *दृश्य* : ५ (गीति-नाट्य)। *घटना-स्थल* : सरयू नदी, कानन, कुटीर, दरबार, यज्ञ-मडप।

ऐतरेय ब्राह्मण मे वर्णित शुन शेप आख्यान (ऐतरेय ब्राह्मण ७।३) पर आधारित इस गीति-नाट्य मे मानव-बलिदान की अमानुषिक क्रियाओ का दिग्दर्शन कराया गया है। प्रारम्भ मे राजा हरिश्चन्द्र नौका-विहार कर रहे है। नौका-विहार के समय नेपथ्य से घोर गर्जन होता है जिसमे राजा हरिश्चन्द्र को अपने पुत्र रोहित की बलि का पूर्व-कृत-सकल्प स्मरण कराया जाता है। पितृसुलभ स्नेह के कारण क्षणभर को राजा के निश्चय मे शिथिलता दृष्टिगोचर होती है किन्तु शीघ्र ही राजा का सत्यवादी रूप उभरता है और वह पुत्र-बलि का निश्चय करता है। उधर रोहित धर्म के नाम पर अपनी बलि का विरोध करता है। उसमे स्वत्व-भावना जाग्रत होती है। उसकी इस जीवनेच्छा को नेपथ्य से उद्घोषित कर्म-प्रेरणा द्वारा बल मिलता है। परिणामस्वरूप वह देशाटन के लिये घर से प्रस्थान करता है। उधर अजीगर्त नामक ब्राह्मण-परिवार अभाव की स्थिति मे क्षुधा-पीडित है। जिससे छुटकारा दिलाने के हेतु वह उसका एक पुत्र क्रय करना चाहता है, जिसको वह अपने स्थान पर बलि के लिए प्रस्तुत कर सके। अजीगर्त सौ गायो के बदले अपने मध्यम पुत्र शुनःशेप को बेचने के लिए तत्पर हो जाता है। यहाँ अजीगर्त की पत्नी तारिणी का मुँह ढक कर चले जाना करुण-मातृत्व की पराकाष्ठा है। साथ ही कथा बिना किसी द्वन्द्व के आगे बढती है। रोहित वापिस घर आता है और शुन शेप की बलि का प्रस्ताव रखता है। पिता के धिक्कारने पर वह तर्क द्वारा अपने कथन का औचित्य सिद्ध करता है। उसके अनुसार पिता को पिड-तिलोदक देने के लिए उसका जीवित रहना अत्यावश्यक है। मुनि वसिष्ठ इसका समर्थन करते है और निरपराध शुन शेप बलि-हेतु यूप से बाँध दिया जाता है। सौ गायो के लोभ मे अजीगर्त पुत्र-वध के लिए भी तत्पर हो जाता है। इसी समय विश्वामित्र अपने सौ पुत्रो के साथ पधारते है और इस कृत्य की मानवीय व्याख्या करते हैं, जो

अत्यन्त प्रभावोत्पादक बन पडी है। उधर सुव्रता (विश्वामित्र की गाधर्व-विवाहिता पत्नी) रहस्योद्घाटन करती है कि शुन.शेप वास्तव मे अजीगर्त का पुत्र न होकर स्वय विश्वामित्र का पुत्र है। विश्वामित्र भी अतीत स्मृति के आधार पर सुव्रता को पहचान कर शुन शेप उसे सौप देते हैं। इसके साथ ही अगम, विश्वाधार जगदीश्वर की वन्दना के साथ गीति-नाट्य समाप्त होता है।

कर्ण (वि० २००३, पृ० १२९), *ले०* : सेठ गोविन्द दास, *प्र०* · विद्या प्रकाशन मन्दिर, मथुरा, *पात्र* पु० १८, स्त्री ३; *अक* · ५, *दृश्य* ४, ५, ५, ४, ५।
घटना-स्थल राजमहल, रणक्षेत्र।

प्रस्तुत नाटक कर्ण की वीरता और सत्य-निष्ठा को प्रतिष्ठित करता है। महाभारत की कथा मे केवल एक स्थान पर थोडा-सा परिवर्तन है। द्वैतवन मे जब चित्ररथ गन्धर्व से दुर्योधन हारता है तब कर्ण उस युद्ध मे अनुपस्थित रहता है।

नाटक मे कर्ण की द्वन्द्वात्मक भावनाओ का कारण बताया जाता है। मजूषा को सम्बोधित कर वह समाज की आलोचना करता है।

उपक्रम मे कर्ण जब रगशाला मे आता है तो कृष्ण उसके वश के विषय मे पूछते है परन्तु कर्ण कहता है, 'वर्णो तथा वशो का द्वन्द्व होता है या अर्जुन का और मेरा आचार्य ?'

दुर्योधन कर्ण की वीरता और पौरुष से प्रसन्न हो, उसे अग देश का राज्य दे देता है। कर्ण उससे विमुख न होने का वचन देता है। कर्ण षड्यन्त्रो के सर्वथा विरुद्ध है। जहाँ कौरव और पाण्डव नीति-धर्म छोड देते है; वहाँ भी वह सदैव महान् और उदार बना रहता है।

कर्ण (सन् १९५३), *ले०* भगवतीचरण वर्मा, *प्र०* भारती भण्डार, प्रयाग, *पात्र* पु० ७, स्त्री २, *अक-रहित*, *दृश्य* १।
घटना-स्थल नही।

यह गीति-नाट्य महाभारत के अदम्य वीर, अपूर्व दानी तथा कौरव पक्ष के समर्थक कर्ण का मनोवैज्ञानिक पुनर्मूल्याकन प्रस्तुत करता है। सामाजिक तिरस्कार एव उपेक्षा से पीडित प्रतिक्रियावादी कर्ण के चारित्रिक दौर्बल्य को मनोवैज्ञानिक परिवेश मे औचित्य प्रदान किया गया है।

इसमे महाभारत के अतिम दिन का चित्रण किया गया है, जिसका सेनापति कर्ण था। सारथी शल्य रणक्षेत्र मे कर्ण को हतोत्साह करने का प्रयत्न करता है, क्योकि इस कार्य के लिए युधिष्ठिर ने शल्य से वचन ले लिया था। किन्तु वार्तालाप के अनन्तर शीघ्र ही शल्य कर्ण से प्रभावित हो जाता है। यहाँ शल्य कृष्ण की कूटनीति का शिकार हो जाता है, जिसके परिणामस्वरूप उसका रथ दलदल मे फँस जाता है। रथ निकालने का अन्य कोई मार्ग न देखकर कर्ण स्वय प्रयत्नशील होता है। यही उसके लिए अभिशाप सिद्ध होता है। कृष्ण के सकेत पर अर्जुन निरस्त्र कर्ण पर बाणो की बौछार कर देता है। जीवन की अतिम घडियाँ गिनते समय कर्ण के पास विप्र-वेश मे धर्म आकर उससे दान माँगता है। कर्ण अपना स्वर्ण-दत उसे दान मे देकर अपने चारित्रिक औदात्य को बनाए रखता है।

कर्ण (सन् १९६२, पृ० ६८), *ले०* चतुर्भुज, *प्र०* साधना मन्दिर, पटना, *पात्र* पु० १२, स्त्री २, *अक* . ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल : आश्रम, राजसभा, नदी-तीर, शिविर, रणभूमि।

इस नाटक मे दानवीर कर्ण के चरित्र को महाभारत के आधार पर चित्रित किया गया है।

नाटक के प्रथम अक मे कर्ण परशुराम से दीक्षा लेकर ज्यो ही विदा माँगते है उसी समय इन्द्र वहाँ जा पहुँचते है और कर्ण के सूत-पुत्र होने की सूचना देकर उसे (कर्ण को) शाप दिला देते है। कर्णार्जुन युद्ध और उसमे विजय की अभिलाषा धूमिल होने पर वह पुन दुर्योधन के समुदाय मे धर्मराज होकर कीर्ति प्राप्त करता है। अर्जुन की रक्षा मे इन्द्र भी भिखारी बनकर कर्ण से कवच और कुण्डल माँग लाते है।

द्वितीय अक मे कृष्ण दुर्योधन को समझाने जाते हैं, किन्तु उनका सधि-सन्देश निरर्थक सिद्ध होता है। कृष्ण और कुन्ती दोनो कर्ण को उसके जन्म का रहस्य खोलकर 'भारत

युद्ध' मे उसे पाण्डु-पक्ष मे करना चाहते हे, परन्तु कर्ण आजीवन दुर्योधन का वफादार मित्र और अर्जुन का शत्रु बना रहता है। वह कुन्ती से स्पष्ट कहता है कि कर्ण या अर्जुन मे से एक ही रहेगा, पाण्डु पाँच रहे है छह नही।

तृतीय अक मे भीष्म की शरशैया के पश्चात् कर्ण सेना-नायकत्व ग्रहण करता है और शल्य जैसे सारथी को पाकर भी कर्णार्जुन युद्ध मे वीरता दिखाकर शाप के फलस्वरूप मारा जाता है।

कर्णवध नाटक (सन् १९१८, पृ० ८०), ले० : श्यामाचरण जौहरी, प्र० : भार्गव पुस्तकालय, काशी, *पात्र* : पु० ३५, स्त्री ६; *अक* : ५, *दृश्य* : ६, ६, ८, ५, ५।
घटना-स्थल : राजभवन, युद्ध-क्षेत्र, चक्रव्यूह।

इस नाटक मे महाभारत के कारणो और परिणामो को आद्योपान्त प्रदर्शित किया गया है। प्रारम्भ मे पुत्र-शोक से मूर्च्छित अर्जुन चेतनता आते ही धृष्टद्युम्न पर क्रुद्ध होते है और अभिमन्यु तथा द्रौपदी पर किए गए अत्याचारो को स्मरण दिलाकर कृष्ण उसे (अर्जुन को) महायुद्ध के लिए कृत-सकल्प कराते है। दूसरे अक मे कर्ण पाण्डवो की पराजय के लिए मकर-व्यूह की रचना करता है। अश्वत्थामा और अर्जुन के युद्ध मे गुरु का रथ अश्वो के मरने से व्यर्थ हो जाता है। तीसरे-चौथे अक मे कर्ण और अर्जुन का युद्ध होता है। इसी अक मे धर्मराज को आहत दिखाकर अर्जुन का आक्रोश उत्तेजित किया जाता है। पाचवे अक मे भी कर्ण और अर्जुन भयकर युद्ध करते हुए दिखाई पडते है। कर्ण के मूर्च्छित होने पर कृष्ण अर्जुन से उस पर प्रहार करने का आग्रह करते है। इस समय कर्ण अर्जुन का धर्म-युद्ध-सबधी सवाद होता है। अन्त मे कर्ण की मृत्यु और पाडवो की विजय दिखाई गई है।

कर्त्तव्य (सन् १९४९, पृ० २०८), ले० सेठ गोविन्द दास, प्र० : महा-कोशल साहित्य मन्दिर, जबलपुर, *पात्र* पु० ५, स्त्री ३, *अक* ५, *दृश्य* ३, ५, ५, ५, ७।
घटना-स्थल , अयोध्या, किष्किन्धा, लका।

इस नाटक मे राम और कृष्ण की विशिष्टता दिखाकर राम को मर्यादा-पुरुषोत्तम और कृष्ण को लीला-पुरुषोत्तम सिद्ध किया गया है। पूर्वार्द्ध मे रामकथा और उत्तरार्द्ध मे कृष्णकथा है।

प्रथम अक मे राम-वनवास के कारण दशरथ, अवधवासी और प्रजा को अत्यन्त चिंतित दिखाया गया है। राम का मन नाना विरोधी भावनाओं, प्रेम और कर्तव्य के सघर्प से परिपूर्ण है। उत्तरार्द्ध मे सारथी आकर कृष्ण को गोकुल से मथुरा ले जाता है। कृष्ण-वियोग मे सब गोकुलवासी दुखी है, पर श्रीकृष्ण के मन मे कोई सघर्ष नही हे।

दूसरे अंक मे राम के द्वारा वृक्ष की ओट मे बालि-वध दिखाया गया हे। यद्यपि परिस्थितियो के कारण राम को बालि-वध करना पडता है, तथापि उनके मन मे यह सघर्प चल रहा है कि धोखे से इस प्रकार मारना पाप है। दूसरी ओर मथुरा पर जरासध और कालीयवन का आक्रमण होने पर कृष्ण युद्ध से भागते है, और ऐसी परिस्थिति मे भागने को ही धर्म बताते है।

तृतीय अक मे रावण-वध और सीता की अग्नि-परीक्षा होती है। राम के मन मे सीता को ग्रहण करने के विषय मे विविध सघर्ष चलते है। दूसरी ओर कृष्ण बाणासुर से युद्ध करके सोलह हजार एक सौ कन्याओ को मुक्त कर बिना अग्नि-परीक्षा के ही विवाह कर लेते है।

चौथे अक मे राम शम्बूक का वध करते है परन्तु निशस्त्र शम्बूक को मारने से उनके मन मे सघर्ष उत्पन्न होता है। इधर कृष्ण छल से कौरवो का वध कराते है और इसी को धर्म समझते है।

पाचवे अक मे सीता पृथ्वी मे प्रविष्ट हो जाती है। उत्तरार्द्ध मे कृष्ण मुरली बजाते हुए अन्तिम श्वास लेते है।

कर्म-धर्म-सिंह, ले० · महादेव प्रसाद सिंह 'घनश्याम', प्र० दूधनाथ पुस्तकालय, हावडा, *पात्र* पु० ३, स्त्री २, *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल भवन, वानप्रस्थ आश्रम।

इस नाटक मे निरपराध को खौलते तेल

मे कूदकर बचते दिखाया गया है। राजा कर्मसिह का छोटा भाई धर्मसिह है। कर्मसिह शिकार को जाता है। उसकी पत्नी धर्मसिह के साथ रमण करना चाहती है। वह अस्वीकार करता है। अत वह रुष्ट होकर उस पर व्यभिचार का दोष लगाती है। राजा फासी की सजा छोटे भाई को देता है। वानप्रस्थी माता-पिता कर्मसिह को फटकारते है। वह पवित्रता की परीक्षा के लिए भाई को खौलते तेल मे कूदने को कहता है। धर्मसिह सहर्ष खौलते कडाह मे कूद जाता है और बच जाने से निर्दोष सिद्ध होता है। अत. उसकी जयजयकार होती है।

कर्मपथ (सन् १६४८), ले० प्रेमनारायण टडन, प्र० हिन्दी साहित्य भडार, लखनऊ; *पात्र* पु० १, स्त्री २, *अक* १, *दृश्य-रहित*। *घटना-स्थल* वन।

इस गीति-नाट्य मे शिष्य-रक्षा के लिए पुत्र को सकट मे डाला गया है। वैदिक गाथा के एक लघु प्रसग पर आधारित 'कर्मपथ' एक अकीय गीति-नाट्य है। सुर-असुर युद्ध मे देवताओ की पराजय होती है, जिसका समस्त दोष युद्ध-सचालक आचार्य वृहस्पति को दिया जाता है तथा भरी सभा मे उन्हे अपमानित किया जाता है। इस पर भी गुरु होने के नाते उनका धर्म उन्हे देवरक्षा-हित विवश करता है। वह अपने एकमात्र पुत्र को असुर-गुरु शुक्राचार्य के पास संजीवनी विद्या सीखने भेजते है। इस निर्णय के समय वृहस्पति का अन्तर्द्वन्द्व गीति-नाट्य मे दिखाया गया है। प्रारभ मे धर्म और वात्सल्य का यह द्वन्द्व नाटकीय उतार-चढाव से परिपूर्ण है।

कर्मपथ (सन् १६५३, पृ० १४७), ले० दयानन्द झा; प्र० . स्वावलवन सस्थान, प्रयाग, *पात्र* पु० १५, स्त्री ५, *अक* ३, *दृश्य* : ४, ४, ४। *घटना-स्थल* . गाँव, पचायत, देवी मंदिर।

इस सामाजिक नाटक मे गाधीजी का समाज-सुधार के क्षेत्र मे प्रभाव दिखाया गया है। इसमे वडका (अभिजात वर्ग), छोटका (निम्न वर्ग) की समस्याओ को युवा पीढी सुधारने का प्रयास करती है। गाधीजी के पचायत राज्य का प्रभाव इस पर सहज ही देखा जाता है। विहार की आचलिक पृष्ठभूमि मे सूदन झा और रतना पासी की लडाई, भूत-प्रेत की भावना तथा पचायत के द्वारा शाति दिखाई गई है। मनोज के सत्य-पथ पर चलते हुए कर्म करने से सभी प्रकार का सुधार हो जाता है और रूढियो का वन्धन ढीला पड़ जाता है।

कर्मवीर चण्ड (सन् १६२७, पृ० १७२), ले०. चन्द्रनारायण सक्सेना, प्र० ॰ उपन्यास वहार आफिस, काशी, *पात्र* पु० ७, स्त्री ३, *अक* : ३, *दृश्य* ११। *घटना-स्थल* ॰ मेवाड।

इस ऐतिहासिक नाटक मे चड की पितृ-भक्ति और विमाता के प्रति श्रद्धा दिखाई गई है। राव रणमल की युवा राजकुमारी का विवाह वृद्ध मेवाड-महाराणा लाखासिह से होता है। प्रारभ मे राजकुमारी का विवाह राजकुमार चूडामणि से होना निश्चित था किन्तु जव वह (चूडामणि) सुनता है कि पिताजी उससे विवाह के लिए इच्छुक है तो माँ-सदृश राजकुमारी के साथ विवाह करने से इन्कार कर देता है। इस नयी रानी से गोकुल नामक पुत्र पैदा होता है और चूडामणि मेवाड त्याग कर चला जाता है। राव रणमल का पुत्र जोधा मेवाड-राज्य का लोभी है। अत वह अपनी वहन के नादान शिशु तथा वृद्ध वहनोई की परिस्थिति से लाभ उठाना चाहता है। वहन की भेजी हुई राखी को वापस लौटा देता है और राजा को धोके से राज्य-निष्कासित कर अपनी वहन को वन्दी वनाता है। मेवाड पर जोधा का अधिकार हो जाता है किन्तु पुरोहित की मदद से कर्मवीर चण्ड 'गदी' छद्मनाम से कार्य करते हुए जोधा का विरोध कर उससे सघर्ष करता है। जोधा वन्दी वनाया जाता है। चड अपने छोटे भाई गोकुल को राजगद्दी दिलाना चाहता है किन्तु प्रजा नही मानती। अन्त मे उसे ताज पहनना पडता है और फिर जोधा को भी उसकी वहन क्षमादान कर एक उज्ज्वल सस्कृति का प्रमाण उपस्थित करती है।

कर्मवीर नाटक (वि० १९८२, पृ० १६२), ले० रेवतीनन्दन 'भूषण' प्र०: व्यास साहित्य मन्दिर, *पात्र* · पु० १२, स्त्री ६; *अक* : ३ *दृश्य* १०, १०, ५।
घटना-स्थल : महल, घर, जंगल, उद्यान।

इस पौराणिक नाटक मे द्वापर और कलियुग का सधिकालीन रूप दिखाया गया है। भारत-सम्राट् परीक्षित पर कलियुग का प्रभाव पडता है किन्तु वह कर्मवीर अपने धर्म पर अटल रहता है। परीक्षित के उपरान्त कलियुग का पृथ्वी पर दूषित प्रभाव पडने से संसार मे द्वेष, वासना, लोभ आदि दुर्गुणो का प्रचार बढ़ जाता है।

कलंक या वेश्या (सन् १९६२, पृ० ७२), ले०: जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६; *पात्र* पु० ७, स्त्री २; *अक* · ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल . वेश्या-गृह, महफिल।

इसमे स्वार्थी बाप की नीच इच्छा के दुष्परिणामस्वरूप उसकी बेटी किरण वेश्या बनती है। उसे धनियो के मनोविनोद के लिए धर्म बेचना पड़ता है। एक दिन वह भी घडी आती है जब उसका भाई अपनी बहिन को महफिल के इशारो पर नाचते देखता है। एक दिन बाप भी स्वय बेटी के ऊपर नोटो की बौछार करता है। तभी वह अपने ऊपर मिट्टी का तेल छिडककर आत्महत्या कर लेती है। इस तरह अन्त मे रहस्य का पता लगता है।

कलंकी (सन् १९६६, पृ० ७७), *ले०* · लक्ष्मी नारायण लाल, प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, *पात्र* · पु० ७, स्त्री ३; *अक* *दृश्य-रहित*
घटना-स्थल . प्रतीकात्मक रंगमंच।

'कलंकी' नाटक मे 'मिथक' को आधार बनाकर आधुनिक जीवन की ज्वलत समस्याओ को प्रस्तुत किया गया है। आज का मनुष्य जीवन की विसगतियो-विषमताओ से छुटकारा पाने के लिए अवतार की प्रतीक्षा करता है, परतु उसकी प्रतीक्षा निष्फल हो जाती है।

परिवर्त्तन-विरोधी शासक अकुलक्षेम विद्रोही हेरूप को विक्रम विहार भेजता है। हूण-आक्रमण से पराजित हो वह आत्महत्या करता है। वही प्रेत अवधूत बनकर जनता को धोखे मे डाल शासन करता है। हेरूप अवधूत का विरोध करता है। लेखक ने काव्य-बिम्बो के माध्यम से अपने मतव्य को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। प्रत्येक युग मे शासक इस कलकी अवतार की कल्पना करता है जिससे वह लोगो को और मूर्ख बनाकर अपना अस्तित्व बनाए रख सके। शासको की बातो मे आकर प्रजा प्रश्न करना छोड देती है। तीनो कृषक भोली प्रजा के प्रतीक है। हेरूप जैसे जिज्ञासु युवक सामने आते भी है, तो उन्हे कुचल दिया जाता है। ऐसे युवको को प्रश्नहीन करने के लिए 'विक्रम विहार' जैसी शिक्षा-व्यवस्था भी विद्यमान है। सारा नाटक आज की जागरूक प्रजा की त्रासदी है जो झूठे आश्वासनो पर जीती है।

कल और आज (सन् १९५५), ले०: स्नेह, प्र० अमृत बुक कम्पनी, नई दिल्ली, *पात्र*: पु० ३, स्त्री २; *अक* · ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल : घर, जंगल, कचहरी।

इस नाटक मे हिन्दू कोड बिल से उत्पन्न स्त्री-समाज की जागरूकता और प्राचीन रूढियो की विडम्बना का चित्रण है।

रमा एक पढी-लिखी नारी है और उसका पति पुराने विचारो का व्यक्ति है। रमा उसके साथ घूमने जाने का आग्रह करती है किन्तु पति इसे बुरा मानता है। अन्त मे पति-पत्नी मे कलह हो जाता है। पति रमा को मारकर घर से निकाल देता है। फिर वह अपने मायके चली जाती है, जहाँ भाई-पिता आदि भी उसे घर मे घुसने नही देते। इसी बीच हिन्दू कोड-बिल का नियम सरकार द्वारा पास होता है। जिसे देखकर रमा अपने भाई और पिता से सम्पत्ति की माँग करती है तथा अपनी स्थिति को सुधार कर पति से आदर प्राप्त करती है।

कलियुग का बुखार (सन् १९१५, पृ० ४०), ले० . जयरामदास गुप्त;

प्र० . जयरामदास गुप्त, काशी, नागेचर प्रेस; *पात्र* · पु० ३, स्त्री २, अक-रहित, *दृश्य :* ६ ।

इस प्रहसन मे झगड़ा लगाने वाले मक्कार व्यक्ति की अन्त मे दुर्दशा दिखाई गई है। ऐय्यार इस नाटक मे जाल फैलाकर सभी को एक-दूसरे के विरुद्ध करता है। कलीम के पिता बुड्ढी को नाज़नी के प्रेम-जाल मे फँसाकर दूर तमाशा देखता है। प्रेम मे पागल बुड्ढे को नाजनी के हाथो से जूतियां खानी पडती है। इस नाटक के चरमोत्कर्ष तक तो वह भगी के रूप मे दिखाई देता है। ऐय्यार बुड्ढे की पत्नी हुज्जत वेगम तथा नाज़नी मे भी झगडा करा देती है । नाटक के अन्त मे धीरे-धीरे सभी पात्र एकत्रित होते है। भगी के रूप मे बुड्ढे को देखकर हुज्जत से खूब झगड़ा और युद्ध होता है। दलाल रूपी कलीम आकर सभी वातो का पर्दाफाश करता है। सभी मक्कार ऐय्यार को दोषी मानकर प्रतिशोध लेना चाहते है। बुड्ढा तो मारने दौडता है किन्तु नाजनी ऐय्यार की रक्षा करती है।

कला और कृपाण (वि० २०१५, पृ० ८६), ले० : डा० रामकुमार वर्मा, प्र० : रामनारायण लाल, इलाहावाद, *पात्र* . पु० ६, स्त्री ४; *अक* . ३, *दृश्यर-हित* ।
घटना-स्थल विन्ध्य-भूमि का वन-प्रान्त, कौशाम्वी का उपवन, कौशाम्वी का राज-प्रासाद ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे बुद्ध-विरोधी उदयन का मजुघोषा के वलिदान से हृदय-परिवर्तन दिखाया गया है। इसमे महाराज उदयन छद्मवेश मे शिकार खेलने जाते है। उनके वाण से किरात-कन्या मजुघोषा की सारिका का वध हो जाता है। मंजुघोषा शिकारी पर अभियोग लगाना चाहती है। सम्राट् उदयन राजमहल मे आकर महारानी वासवदत्ता को आखेट का विवरण सुनाते हैं। मजुघोषा राजमहल मे महाराज उदयन के माथे पर निशान देखकर सारी वात समझ जाती है और क्षमायाचना करती है। उदयन मजुघोषा को महारानी की प्रमुख सहचरी घोषित करते है। जब महात्मा बुद्ध कौशाम्वी मे प्रवचन के लिए आते हैं तो जनता एकत्र होकर व्याख्यान सुनती है। क्रुद्ध होकर बुद्ध की हत्या करने के लिए महाराज उदयन शब्द-वेधी वाण चलाते है जो मंजुघोषा को लग जाता है। बुद्ध मजुघोषा का शव लेकर राजमहल मे आते हैं। उदयन बुद्ध से क्षमा-याचना कर अहिंसाव्रत धारण करते हैं।

कलाकार (सन् १९५४, पृ० ९७), ले० · पृथ्वीराज कपूर, पृथ्वी थियेटर, वम्वई, *पात्र* पु० २, स्त्री १, *अक* ३, *दृश्य-रहित*। *घटना-स्थल* ग्राम, नगर मे घर ।

इस सामाजिक नाटक मे एक कला उपासक कलाकार की कला-निष्ठा का परिणाम दिखाया गया है । नाटक मे कलाकार की जीवन-कथा है जो भोली ग्राम-कन्या गौरा के सौन्दर्य पर रीझ अनेक अनुपम कला-कृतियो को जन्म देता है। और उसे नगर के कृत्रिम वातावरण मे उठा लाता है। गौरा धीरे-धीरे कृत्रिम फैशन की पुतली वन जाती है। अव वह भोलेपन और सादगी को पसंद नहीं करती। वह चाहती है कि मेरा पति सादा जीवन न विताकर अपनी अमर कृतियो को वेच एक धनी पुरुष वन जाये।

कला का पुजारी कलाकार विलासिता का दास नही वनता, इसी कारण पति-पत्नी मे मनोमालिन्य रहता है। किन्तु एक दिन जव पति का दुराचारी मित्र गौरा की उच्छृं-खलता से लाभ उठाकर उसके सतीत्व को नष्ट करने की चेष्टा करता है तो उसका नशा उतर जाता है और पति के उदार चरणो मे अपने-आप को पूर्णतया समर्पित कर देती है। इसका अभिनय पृथ्वी थियेटर के द्वारा दिल्ली, वम्वई आदि नगरो मे वरावर हुआ।

कलाकार (सन् १९५८, पृ० ६८), ले० : जयनारायण, प्र० : जय प्रकाशन, राँची, *पात्र* . पु० ३, स्त्री १, *अक* ६, *दृश्य-रहित*। *घटना-स्थल :* ग्रामीण घर, आई० जी० का वंगला ।

इस नाटक मे स्वतंत्रता के पश्चात् सामान्य जनता के निराशामय जीवन, पूंजी-

पतियो एवं उच्च प्रशासनिक अधिकारियो के भ्रष्टाचार तथा अन्य समसामयिक समस्याओ का चित्रण है । मोहन एम० ए० मे प्रथम स्थान प्राप्त करता है । उसके परिवार के लोग उसे एक उच्च पदाधिकारी देखना चाहते है परन्तु उसकी रुचि यूनिवर्सिटी-प्रोफेसर बनने मे है । उसकी धारणा है कि सरकारी नौकरियो से प्रतिभा नष्ट होती है, उस का विकास सम्भव नही । कलाकार अमर है, शासक का नामोनिशान नही रहता । मोहन आई० पी० एस० की परीक्षा पास करके ए० एस० पी० लग जाता है । परन्तु वह घूस नही लेता और न्याय की माँग के लिए अपने एस० पी० के विरुद्ध आई० जी० के पास जाता है जो उसे आदर्श के त्यागने का परामर्श देता है । वह समझाता है 'आदमी को परिस्थितियो के अनुसार चलना पडता है । तुम्हारी तरह मै भी आदर्शवादी था और बुद्ध तथा गाँधी बनने का स्वप्न देखा करता था ··कौन आई० जी० नही जानता कि दारोगा घूस लेते है, कौन अफसर नही जानता कि उसके पेशकार घूस लेते है, पर हम लाचार है । आखिर शासन तो चलाना ही है । मोहन का व्यक्तित्व चीत्कार कर उठता है और वह त्यागपत्र दे देता है ।

कलिंग-विजय (सन् १९५६, पृ० ८०), ले०· चतुर्भुज एम० ए०, प्र० . साधना मन्दिर, नया टोला, पटना, *पात्र* पु० ७, स्त्री २, अक ३, दृश्य ८ ।
घटना-स्थल . राजप्रासाद, रणभूमि, कारागार, मरुस्थल आदि ।
प्रथम अभिनय २६-१०-१९५४ (*प्रकाशन-पूर्व*) ।

इसमे क्रूर-सम्राट् अशोक का हृदय-परिवर्तन एव उनका बुद्ध धर्म मे दीक्षित होना दिखाया गया है । मगध-सम्राट् अशोक अपने जीवन के प्रारम्भिक दिनो मे महाअत्याचारी है । अपनी उद्दाम लालसा के वशीभूत होकर वह कलिग पर आक्रमण करते है और घोर नर-सहार के पश्चात् उसे अपने अधिकार मे कर लेते है । यह उनका पहला और अतिम युद्ध है । घटनाचक्र से पराजित हो वह अपनी भूल स्वीकार करते है, और बाद मे बौद्ध-धर्म की दीक्षा लेते है । नाटक मे अशोक की क्रूरता, राजमहल के भीतर षड्यत्र, कलिंग-राजकुमारी की वीरता, अशोक के हृदय-परिवर्तन आदि की झलक मिलती है ।

कलिकौतुक (सन् १८८९, पृ० ३८), ले० : प्रतापनरायण मिश्र, प्र० खड्ग विलास प्रेस, पटना, *पात्र* पु० १५, स्त्री ३, अक-रहित, दृश्य ४ ।
घटना-स्थल . घर, मदिरालय, वेश्यागृह, कारागार ।

इस नाटक मे स्वेच्छाचारी एव उच्छृंखल पति-पत्नी की दुर्दशा दिखाई गई है । नाटक का आरभ नायक की पत्नी श्यामा और उनकी सखी चम्पा के वार्तालाप से होता है । । श्यामा सतान-रहित होने से कई पुरुषो के साथ सभोग-रत होती है । श्यामा यह जानती है कि उसका पति किशोरीदास भी कई अन्य स्त्रियो से सबध रखता है । दूसरे दृश्य मे किशोरीदास अपने को अन्य पात्रो के समक्ष सात्त्विक और शुद्ध वैष्णव सिद्ध करने का प्रयास करता है । इन पात्रो के विदा होते ही किशोरीदास ईसाई, मुसलमान तथा दुश्चरित्र ग्रामीणो के साथ वेश्या और उसके भडुवो के यहाँ शराब पीता है । नशे मे घोर उच्छृखल प्रेमालाप करता है । वेश्या इन शराबियो के सिरो पर जूतियो का प्रहार करती है तो शराब के नशे मे वे सब इसे परिहास समझते है । तृतीय दृश्य मे किशोरीदास के दत्तक पुत्र का दुराचरण दिखाया गया है । चतुर्थ दृश्य मे लाला किशोरीदास को तीन वर्ष की जेल की सजा हो जाती है । इसमे शिवनाथ नामक एक सत्पात्र है, जो देशोन्नति के लिए प्रयत्नशील रहता है । यही पात्र अत मे भरतवाक्य के रूप मे भारतवासियो को सन्मार्ग पर लाने की प्रतिज्ञा करता है । कुछ लोग इसे एकाकी नाटक मानते है ।

कलियुग (सन् १९१२, पृ० ६८), ले० · आनन्द प्रसाद कपूर, जगमोहन शाह, प्र० गोरख यत्रालय, काशी, *पात्र* पु० १०, स्त्री ३, अक ३, दृश्य ६, ६, ५, ।
घटना-स्थल , घर, मदिरालय, वेश्यालय ।

इस नाटक मे कलियुग के अन्दर होने वाली विविध बुराइयो का चित्र और अन्त मे सुधार की व्यवस्था दिखाई गई है।

कलियुग और घी (सन् १८८६), ले० अम्बिकादत्त व्यास, प्र०. नारायण प्रसाद, मुजफ्फपुर, पात्र पु० ४, स्त्री नही, अक और दृश्य-रहित।

इस प्रतीक नाटक मे घी की मिलावट के माध्यम से कलियुग के दोषो का निरूपण किया गया है।। घी मे मिलावट की समस्या को दृष्टि मे रखकर लिखा गया है। इसमे कलियुग, उत्साह, एकता और वस्तुरूपी घी नामक चार पात्र है। सूत्रधार आरभ मे रगमच पर आते ही ढाई पृष्ठो का लम्बा स्वागत-भाषण देकर अपने उद्देश्य से पाठको को परिचित कराता है। कलियुग सनातन धर्म के नाश के लिए घी को भ्रष्ट करने का उपाय स्वागत-भापण मे प्रस्तुत करता है। घी, कलियुग की इस नीति को जान कर भागने की चेष्टा करता है। घी भाग कर तीर्थ मे छिपने की सोचता है। इसी अवसर पर उत्साह के साथ एकता का आगमन होता है। दोनो ही अपनी दुर्दशा का वर्णन करते है। नेपथ्य मे कोलाहल होता है। कोलाहल के माध्यम से कलियुग और घी का सघर्ष प्रस्तुत किया गया है। घी गिडगिडाता है, कलियुग उसे तग करता है। घी अपने बचाव के लिए एकता और उत्साह को पुकारता है। ये दोनो कलियुग को पकडकर उसका वध करने को अपनी कटार निकालते है, जिससे कलियुग डर कर घी को मुक्त कर देता है।

नाट्य-रचना के समय घी के व्यापारी घी मे चर्बी मिलाने के लिए कुख्यात रहे है जिसकी रोकथाम के लिए मारवाडी जातीय पचायत ने अर्थदण्ड की व्यवस्था की थी। इससे प्राप्त अर्थ से उस समय मे अनेक धर्मशालाओ का निर्माण इस सत्य का साक्षी है।

कलियुग की सती (सन् १९२६), ले० अनवर हुसैन आरजू, प्र० उपन्यास वहार आफिस, वनारस; *अक-दृश्य-रहित*।

घटना-स्थल नगर मे घर, एजेसी।

इस नाटक मे स्वेच्छा से विवाह करने वाली नारी को कलियुग की सती माना गया हैं। नाटक की नायिका चम्पा है। नगर मे विवाह की एक एजेसी खुलती है। चम्पा उस एजेसी मे पॉच रुपये जमा करती है। उसे इस वात की प्रसन्नता है कि उसके माता-पिता उसका विवाह उसी की इच्छा के अनुसार करने को तैयार है। इस प्रकार इस नाटक मे प्राचीन पद्धति के विरुद्ध स्वेच्छा-विवाह को नये युग के अनुरूप सिद्ध किया गया है।

कलियुग नाटक (सन् १९१२, पृ० ६८), ले० . आनन्द प्रसाद खत्री, प्र० ' जगमोहन दास साह, गोरख यन्त्रालय, काशी, पात्र . पु० १२, स्त्री ३, ड्राप दृश्य ६, ६, ५।
घटना-स्थल ' राजदरवार, वन्दीगृह।

इस नाटक मे तीन विवाहिता कन्याओ का पिता के प्रति पितृ-भाव पृथक्-पृथक् रूप मे दिखाया गया है। नाट्यकार भूमिका मे लिखते है—यह नाटक पारसी स्टाइल पर लिखा गया है परन्तु हिन्दी मे है। सूत्रधार और पारिपार्श्वक वार्तालाप करते हुए कहते है कि 'यदि पारसियो की अच्छी बात लेकर हम लोग काम करते होते तो आज हिमालय से कन्याकुमारी तक हिन्दी-ही-हिन्दी दिखाई पडती।'

आनन्दपुरी के महाराज सुरेन्द्रसिह की तीन पुत्रिया—माधवी, तारा और कमला है। तीनो विवाहिता है और अपने-अपने पति के साथ सुरेन्द्रसिह के राजमहल मे रहती है। सुरेन्द्र सिह उसे ही उत्तराधिकारी वनाना चाहते है जो पुत्री उनसे सवसे अधिक प्रेम करती है। कमला निवेदन करती है—'जितना प्रेम आप पर मेरा है उतना कोई अन्य पुत्री न तो अपने पिता से रखती थी, न रखती है और न रखेगी। इसी प्रकार तारा भी प्रेम प्रकट करती है। किन्तु कमला कहती है कि मैं आपसे उतना ही प्रेम रखती हूँ जितना कि एक पितृ-स्नेही पुत्री को अपने पिता से रखना चाहिए। सुरेन्द्र सिह कमला पर क्रुद्ध होकर कहता है कि मै तुझे कुछ न दूंगा।

दूसरी कथा मत्री जीतसिह और उसके पुत्र नरसिह की है। नरसिह के षड्यन्त्र से सुरेन्द्रसिह और कमला बन्दी बनाए जाते है। वह वधिको को भेजकर सुरेन्द्रसिह को मरवा डालना चाहता है। वह माधवी के द्वारा कमला का वध कराना चाहता है और इस वध का दोष तारा पर लगाकर उसे प्रजा के हाथो मरवाना चाहता है।

सम्पूर्ण नाटक शेक्सपियर के किगलियर नाटक के आधार पर विरचित है।

कलियुग बहार, ले० बुद्धू मियाँ, प्र० : दूधनाथ पुस्कालय प्रेस, हावडा, कलकत्ता, *अक-दृश्य और घटना-स्थल रहित।*

इस नाटक मे सास-बहू के कलह के कारण परिवार की दुर्दशा दिखाई गई है। इसकी कथा भिखारी ठाकुर के गगा-स्नान से ग्रहण की गई है। माँ का प्यारा पुत्र अपनी पत्नी के बहकावे मे आकर उसका निरादर करता है। माँ जीविका-निर्वाह के लिए बोझा ढोती है। उसका अन्त भी गगा-स्नान नाटक की तरह होता है। इसकी गति और अभिनय-शैली विदेशिया से थोड़ी परिवर्तित कर दी गई है।

कलियुगागमन (सन् १९१८, पृ०२७), ले० · प० रामेश्वरदत्त शर्मा, प्र० · बाबू जयराम गुप्त, उपन्यास बहार, काशी, *पात्र :* पु० १२, स्त्री २, *अक* ४, *गीत* . ५, *दोहा* ५।
घटना-स्थल . कलियुग का दरबार, धर्म का दरबार, आश्रम, राजा परीक्षित का स्थान।

नाटक सूत्रधार और नान्दी के मगलाचरण से प्रारम्भ होता है। सतयुग और त्रेतायुग के बाद कलियुग धीरे-धीरे अपना प्रभाव बढा रहा है। वह कुमत, आलस, रोगराज, राव हैजासिह, खानबहादुर मलेरिया, पण्डित शीतलाप्रसाद, मदिरा, चौपटसिह इत्यादि मत्रियो की सहायता से धर्म, विचार (धर्म का मंत्री), कर्म इत्यादि को वन्दी बनाता है। इसी समय अकस्मात् राजा परीक्षित आ जाते है। कलियुग परीक्षित को देखकर भयभीत हो जाता है और अपने रहने के लिए स्थान की याचना करता है। राजा परीक्षित कलियुग को चार स्थान—सोना, पशुवध शाला, वेश्या का घर, कुसगियो का समाज—दे देते है। कलियुग वचनबद्ध परीक्षित के शब्दो का उचित लाभ उठा कर उन्ही के मुकुट मे जा बैठता है। कुमति के कारण राजा परीक्षित समीक ऋषि के गले मे मरा हुआ साँप डाल देते है। ऋषि-पुत्र परीक्षित को शाप देता है कि 'आज से सातवे दिन यही तेरा अस्तित्व मिटा देगा, तेरे-शरीर को भस्म बना देगा।' राजा परीक्षित को जब अपनी मृत्यु का समाचार मिलता है तो वह राजमहल छोड गगा के किनारे शरीर का त्याग करने चले जाते है।

कलियुगीन अभिमन्यु (पृ० १२३), *ले० :* विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, प्र० गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा, *पात्र :* पु० २०, स्त्री ५; *अक* ३, *दृश्य* ६, ३ ५।

कन्नौज के राजा जयचन्द का भतीजा, 'लाखन राना' इस नाटक का नायक है। पृथ्वीराज, महोबा को घेर लेते है, क्योकि आल्हा-ऊदल को परमाल ने निकाल दिया था। वे कन्नौज मे थे। आल्हा को मनाने के लिए, जागन कन्नौज जाते है। लाखन राना, आल्हा-ऊदल के साथ चलते है। लाखन, इस कारण अपनी नवविवाहिता रानी, पद्मा से एक बार भी नही मिल पाते। अभिमन्यु की तरह, महोबे के युद्ध मे उन्हे घेर कर मारने की कोशिश होती है। अन्त मे लाखन मारे जाते है। इस युद्ध मे महोबा, सिरसा, उजड जाते है और पृथ्वीराज की सेना क्षीण हो जाती है, देश पर विदेशियो की विजय का मार्ग खुल जाता है।

कल्कि विजय नाटक (सन् १९१२, पृ० ९३), ले० : विजयानन्द त्रिपाठी, *पात्र* पु० ११, स्त्री ३, *अक* · १०, *गर्भाक* १, १, १, १, १, १, १, १, १, १।
घटना-स्थल : कल्कि की राजधानी।

इस प्रतीक नाटक मे धर्म की विजय एव अधर्म की पराजय दिखाई गई है। इसमे मोह, शक्ति, कपट आदि पात्र के रूप मे है। कलियुग के राज्य मे दम्भ, मोह, पाखड, झूठ आदि का अधिकार रहता है। इन्ही के

बल पर कलि कुटिल राज्य करता है। कलि से उद्धार का साधन धर्म है, दूसरा कोई नही। धर्म के द्वारा ही इस पर विजय सम्भव है। यही इस नाटक का मूल उद्देश्य है।

कल्पना (सन् १६००, पृ० १००), ले० परदेशी, प्र० . कल्याणमल एण्ड सन्स, जयपुर, *पात्र* · पु० ६, स्त्री ६, *अक* १, *दृश्य* : २६।

इस प्रेम-प्रधान अर्ध-ऐतिहासिक नाटक मे विक्रमादित्य की पुत्री कल्पना का विवाह कालिदास के साथ दिखाया गया है। कालिदास विक्रमादित्य के दरबार मे रहते है। किन्ही कारणो से उन्हे राजा विक्रमादित्य की लडकी कल्पना के अनुरोध पर निकाल दिया जाता है, किन्तु जब वे अपनी साहित्य-साधना, कवित्व-शक्ति से खूब यश प्राप्त कर लेते है तब कल्पना को अपनी भूल मालूम होती है। इसी बीच कालिदास को राजद्रोह के कारण बन्दी बनाया जाता है किन्तु जनता के प्रबल विरोध के कारण वे मुक्ति प्राप्त करते है। बन्दीगृह मे वह अपने प्रिय गीतो को गाया करते है। एक दिन उनके कुछ गीतो को राजकुमारी कल्पना सुन लेती है और उनसे अपना विवाह करने का सकल्प करती है। अन्त मे राजा विक्रमादित्य कालिदास से पुत्री कल्पना का विवाह कर उन्हे अपने दरबार का नवरत्न बना लेते हैं।

कल्पना के खेल (सन् १९६६, पृ० ११), ले० . ललितमोहन थपल्याल; *पात्र* पु० २, स्त्री · १, *नटरग* १०-११।
घटना-स्थल . कमरा

इस नाटक मे आधुनिक नारी अपने नीरस दाम्पत्य जीवन से भागकर अनागत को रसमय और मनोरूप बनाने का प्रयास कर रही है। छात्र-जीवन मे पुष्पा एक प्रोफेसर पर आसक्त होती है। दोनो नगर छोडकर एक सप्ताह के लिए इलाहाबाद चले जाते है। लौटने पर माता-पिता पुष्पा का विवाह एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी के साथ कर देते है। सरकारी अफसर को कार्याधिक्य के कारण पत्नी से मिलने का बहुत कम अवसर मिलता है। छात्र-जीवन मे प्रो० के साथ बीते हुए आनन्दमय क्षण कल्पना मे बार-बार उभर आते है। वह इस दाम्पत्य-जीवन का बन्धन तोड भाग जाने की योजना बनाती है। एक दिन पति से अनर्गल बाते करते समय प्रो० की मृत्यु का दुखद समाचार मिलता है। हृदय की छटपटाहट को दबाते हुए पुष्पा फिर भी पति से वार्तालाप करती रहती है।

कल्पवृक्ष (सन् १८८८, पृ० ६४), ले० : खड्गबहादुर मल्ल, लाल, प्र० · खड्ग विलास प्रेस, बाँकीपुर, *पात्र* पु० १३, स्त्री ६; *अक* . ४, *दृश्य* ४, १, ४, ३।
घटना-स्थल · द्वारिका का राजमहल, इन्द्र-पुरी, मार्ग, वाटिका।

रैवतगिरि पर रुक्मिणी-सहित अपने भवन मे विराजमान कृष्ण को नारद जी पारिजात पुष्प देते है। कृष्ण उसे रुक्मिणी को दे देते हैं। कृष्ण द्वारा रुक्मिणी को पारिजात पुष्प दिए जाने की सूचना द्वारका-स्थित सत्यभामा को दासी से मिलती है। दासी बडी ही कुशलता से सत्यभामा के मन मे जमा देती है कि कृष्ण सबसे अधिक प्रेम रुक्मिणी से करते हैं। इससे सत्यभामा बहुत दुखी होती है और मान करती है। कृष्ण उसके मान को दूर करने का बहुत प्रयत्न करते हैं। मान के कारण का पता चलने पर वह सत्यभामा को प्रसन्न करने के लिए पुष्प के स्थान पर कल्पवृक्ष को ही उसकी वाटिका मे लगाने का वचन देते है और नारद द्वारा पारिजात-वृक्ष के लिए इन्द्र के पास सन्देश भेजते हैं। नारद के बार-बार समझाने पर भी इन्द्र पारिजात वृक्ष देना स्वीकार नही करता।

अत सात्विकी-सहित गरुड पर चढ़कर कृष्ण सुरपुर पहुँचते है और कल्पवृक्ष को उखाड़कर गरुड़ पर रखते हैं। दूसरी ओर ऐरावत पर चढकर इन्द्र आते हैं। दोनो में घोर युद्ध आरम्भ हो जाता है। दिन डूब जाने पर युद्ध बन्द हो जाता है। इन्द्र के चले जाने पर कृष्ण पुष्कर-तट की एक पर्वत-कदरा मे विश्राम करते है जहाँ उनकी पूजा से शिव प्रकट हो उन्हे आशीर्वाद देकर अन्त-

ध्यान हो जाते है।

नियमानुसार दूसरे दिन पुन दोनो दलो मे घोर युद्ध होता है। इसी बीच कश्यप और अदिति युद्ध-भूमि मे आते है। दोनो पिता की आज्ञा से युद्ध रोक देते है। पुन वे इन्द्र को यह आदेश देते है—'तुम कृष्ण को कल्पवृक्ष दे दो और उनका सत्कार करो और वस्त्राभूषणादि-सहित इन्हे विदा करो।' पश्चात् कश्यप और अदिति दोनो पुत्रो के परिवार से मिलकर प्रसन्न होते है।

कवि (सन् १९५१, पृ० ५०), ले० सिद्ध-नाथ कुमार, प्र० पुस्तक मन्दिर, बक्सर।

इस गीति-नाट्य का कथानक सामाजिक समस्याओ के चित्रो को प्रस्तुत करता है। वस्तुत यह यथार्थ की दृढ भूमि पर स्थित है। इसमे कवि ने यही प्रश्न उठाया है कि वास्तव मे वस्तुस्थिति से विमुख होकर गगन के कल्पनालोक मे अधिक समय तक विचरण नही किया जा सकता है। युद्ध की अस्तव्यस्त स्थितियो के प्रति जागरूक होकर उनके पुर्ननिर्माण का प्रयास करना समीचीन बताया गया है। कल्पना का घोर विरोध कर जीवन मे कठोर सत्य को अपनाकर कर्म करना ही उचित घोषित करते हुए अपने मतव्य को प्रस्तुत किया है। यही उसका अभीष्ट है।

कवि और ब्रह्मा (सन् १९५२, पृ० ५३), ले० सत्यव्रत अवस्थी, प्र० शिक्षा सदन, प्रयाग, *पात्र* . पु० ९, स्त्री २, *अक* ' ५, *दृश्य* ' ३, ३, ३, ३, २।
घटना-स्थल स्वर्ग, पर्णकुटी, पृथ्वीलोक, ब्रह्मा के घर के सामने का उद्यान।

इस नाटक मे कवि की सर्जनात्मक शक्ति की ब्रह्मा की शक्ति से तुलना की गई है। ब्रह्मा, चित्रगुप्त और शक्ति मे वार्तालाप होता है। ब्रह्मा कहते है कि "मै मानव को पृथ्वी पर एक नवीन सृष्टि करने के लिए भेज रहा हूँ।" शक्ति कवि से उत्सुकता के साथ कहती है कि "मैं त्रिगुणात्मक शक्तियो को प्रत्यक्ष रूप मे देखना चाहती हूँ।" कवि अन्त करण की साधना के आधार पर एक नई सृष्टि करता है। सत्य शिवं सुन्दरम् के पुजारी कवि को देखने के लिए शिव स्वय आते है। विष्णु भी कवि के दर्शनार्थ आकर उसका आलिंगन करते है। नन्दन वन की कलियाँ नारी-रूप धारण कर नाचती है।

कवि कालिदास (वि० १९८३, पृ० ९४), ले० गणेश प्रसाद द्विवेदी, प्र० ' हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, *अक* २, *दृश्य* ' २, २।
घटना-स्थल ' कुतल राजधानी के निकट एक वृक्ष, राजपथ।

जनश्रुति पर आश्रित इस ऐतिहासिक नाटक मे मूर्ख कालिदास का विद्योत्तमा से विवाह दिखाया गया है। महाराज विक्रम इसके प्रमुख पात्र है। कथानक का आरभ कालिदास के 'जिस डाल पर बैठे उसी को काटे' वाले प्रख्यात प्रसग से होता है। इसका प्रारम्भ कई ब्राह्मणो के सवाद से होता है जो विद्योत्तमा के प्रश्नो का उत्तर न दे पाने के कारण अपमानित होकर लौट रहे है। मार्ग मे उन्हे कालिदास उक्त कार्य करते मिलते है। इसके पश्चात् कालिदास की विख्यात कथा नाटक-रूप मे चली है। विद्योत्तमा को विद्या-धरी नाम दिया गया है। नाटक के अत मे कालिदास एव विद्याधरी का मिलन होता है।

कवि की नियति (पृ० १५६), ले० ' विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, प्र० जयकृष्ण अग्रवाल, कृष्णा ब्रदर्स, कचहरी रोड, अजमेर, *पात्र* . १६, *अक* ३, *दृश्य* . ४, ४, ४।
घटना-स्थल : आगरा का लाल किला।

बादशाह का सगमर्मरी सिहासन खाली है। हाल के अन्दर तथा बाहर अफसर, दरबारी तथा सिपाही बादशाह के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे है। सिहासन के नीचे मुख्य अफसर फाइले लिए खडा है, ताकि बादशाह के आते ही उन्हे प्रस्तुत किया जाये। आठ बजे के लगभग राजा दरबार मे आ जाता है। चीफ बखशी मनसबदारो की दरख्वास्ते बाद-शाह के सम्मुख प्रस्तुत करता है। बादशाह दीवाने-आम के बाद दीवाने-खास मे जाकर

दो घंटे विशेष महत्त्व के कार्यों को देखता है। यहाँ दीवान राजनीति की चर्चा प्रस्तुत करते है। इसी प्रकार 'शाहबुर्ग' पर बादशाह अत्यधिक गोपनीय चर्चा करता है फिर दूसरे दिन दरबार मे पडितजी पेश होते है, जिन्होने कुछ गलत काम कर दिया था। उनका फैसला होता है। पडितजी की लवगी से मुलाकात होती है और वे दोनो एक साथ रहते है। लवगी एक स्त्री है जो पडितजी पर मुग्ध हो सारी घटना बताती है कि औरगजेब द्वारा दाराशिकोह की हत्या कर दी गयी है। लवगी पडितजी को जाग पर लिटा कर बैठी है। कुछ पडे आकर उसको अपशब्द कह रहे है। लवगी पडित जी को जगाने पर न जागने से गगा मे कूदने के लिए दौडती है और उसे पकडने के लिए पडित और पडा दौडते है लेकिन लवगी नदी मे कूद जाती है जिससे पडित जी भी कूद जाते है।

कवि भारतेन्दु (सन् १९५५, पृ० १३६), ले० लक्ष्मीनारायण मिश्र, प्र० · हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, बनारस, *पात्र* · पु० ६, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य रहित* ।
घटना-स्थल . काशी का कविगृह, विलास-कक्ष, सृजन-कक्ष।

इस नाटक मे भारतेन्दु जी के व्यक्तित्व को स्पष्ट किया गया है। कथा काशीस्थित कवि भारतेन्दु के मकान से आरम्भ होती है। पत्नी माधवी सुसज्जित हो पति की प्रतीक्षा करती है पर पति को सरस्वती-आराधना से ही फुरसत नही मिल पाती है। भारतेन्दु माधवी को रति और प्रेमिका मलिका को सरस्वती मानकर जीवन व्यतीत कर रहे हे। भारतेन्दु जी के विचारो से प्रभावित राधाचरण जी भी उनके घर आ जाया करते है। दानशीलता से धनाभाव के समय मलिका तथा माधवी उन्हे धैर्य देती हुई पचास हजार की सम्पत्ति देना भी चाहती है, किन्तु भारतेन्दु जी उसे स्वीकार नही करते है तब मलिका अपनी सम्पत्ति राधाचरण को सौप देती है। भारतेन्दु जी की दानशीलता बढती है और वे सभी सम्पत्ति को दान कर देते है। माधवी तथा गोकुलचन्द मे अनबन हो जाती है। भारतेन्दु के प्रयासो मे परिवार मे शान्ति स्थापित होती है। जीवन के अतिम दिनो मे वह भगवान् का चिन्तन करते हुए जीवन-लीला समाप्त करते हे।

कविवर नरोत्तमदास (स० २०१६, पृ० ५६), ले० चन्द्रप्रकाश सिह, प्र० रामदयाल विश्वकर्मा, गुर्जर भारती प्रकाशन, बडौदा, *पात्र* पु० ८, स्त्री १, *अक* १, *दृश्य* ५।
घटना-स्थल सरायन नदी का तट, मदिर का प्रागण, द्वारिकापुरी का मदिर।

प्रस्तुत नाटक कविवर नरोत्तम के चरित्र को बिना कलक के चन्द्रमा की तरह प्रदर्शित करता है। नरोत्तम जी एक उच्चकोटि के ब्राह्मण है। घर मे अपार आर्थिक कष्ट है। एक दिन उनकी स्त्री बडी दुखी दिखाई देती है। नरोत्तम जी जप-तप के पश्चात् इस दुख का कारण पूछते है। ब्राह्मणी आँसू पोछकर जवाब देती है 'महाराज बरसो तक आपने केवल एक बार सवा के चावल का भोजन पाया है। कल एकादशी निर्जला रहे और आज भी केवल आपने तुलसी दल का ही भोग लगाकर ग्रहण किया है।' इस बात को सुनकर नरोत्तम अपनी पत्नी से कहते है 'प्रिये, ब्राह्मणो का तुलसी से बढकर दूसरा और कोई प्रिय भोजन नही है।'

सुदामा-चरित्र के रचयिता कवि नरोत्तमदास और गोस्वामी तुलसीदास का मिलन नैमिषारण्य के एक मदिर मे होता है। दोनो के प्रयास से रामलीला की जाती है। सुदामा-चरित्र का भी अभिनय होता है। नरोत्तमदास, उनके लघुभ्राता कथावाचक एव जयरामपुर निवासी रामसिह भारतीय सस्कृति और धर्म की रक्षा के लिए तीर्थो मे भ्रमण करते है। नरोत्तमदास को द्वारका के मदिर मे अखड अनादि भारत देश की झॉकी दिखाई पडती है। भारत के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ नाटक समाप्त होता है।

इतने मे उनके भाई कथावाचक द्वारा महाकवि तुलसीदास के नैमिषारण्य मे आगमन का पता लगता है। नरोत्तम उनके दर्शन करते है और परस्पर सभी प्रकार की बाते

होती है। नरोत्तम का 'सुदामा-चरित्र' नाटक के रूप मे खेला जाता है। इससे कविवर मुग्ध हो जाते है और उन्हे अपना सारा दु ख भूल जाता है।

कवि विद्यापति (सन् १९००, पृ० ७५), *ले०* : रामशरण जी 'आत्मानन्द'; *प्र०*: उपन्यास बहार आफिस, काशी, *पात्र* : पु० ७ स्त्री ३, *अक* : ३, *दृश्य* : ८, १, ३। *घटना-स्थल* : राजदरबार, घर।

इस नाटक मे कवि विद्यापति को सच्चे प्रेमी और आदर्श राजकवि के रूप मे चित्रित किया गया है। इस मे कवि विद्यापति और अनुराधा नामक लडकी की प्रेम-कथा है। कवि विद्यापति शिवसिह के राजकवि है और वे अपने काव्य-बल से रानी लक्ष्मी को भी लोक-निन्दा से बचाकर जनता का प्रिय बना देते है। जो कार्य स्वय शिवसिह नही कर पाते उसे विद्यापति पूरा करते है।

कश्मीर के शहीद (सन् १९६५, पृ० १०२), *ले०*. बन्धु प्रसाद, *प्र०* बिहार ग्रन्थ कुटीर पटना-४, *पात्र* : पु० ११, स्त्री ५; *अक* ३, *दृश्य* : १६, १०, ११। *घटना-स्थल* कश्मीर, युद्धक्षेत्र, पथ।

इस राजनीतिक नाटक मे कश्मीरियो की देशभक्ति दिखाई गई है। इसमे भारतीय कश्मीर पर पाकिस्तान का प्रथम बार आक्रमण होता है। पाकिस्तानियो द्वारा प्रेरित कबायली जम्मू और कश्मीर पर आक्रमण कर वहा की असख्य जनता को मौत के घाट उतार देते है। नाटक मे एक वृद्ध एक पथिक से बीती हुई अपनी बाते बताता है। छापा, किरण, चन्दन आदि के शहीद हो जाने की इसमे कथा है। एक वृद्ध को पश्चात्ताप है कि वह विश्वासघाती महावत को मौत के घाट न उतार सका।

कसाई (पृ० ९१), *ले०* प० मोहनलाल महतो वियोगी, *प्र०* ज्ञानपीठ लि०, पटना, *पात्र* पु० १२, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* : ३ ३, ३,। *घटना-स्थल* . कलकत्ता, सेठ का घर, कसाई का घर।

इस नाटक मे बगाल के अकाल का भीषण दृश्य दिखाया गया है। जापानी आक्रमण से घोर आतक फैलता है। बगाल की नदियो की नावो को इधर-उधर हटा दिया जाता है। बहुत सी नावे डुबा दी गयी। शहर का एक बदनाम और डरावना मुहल्ला है। बडा सा पुराना घर, और उसके भीतर एक गद्दी तथा गुप्त कोठरी है। तीन-चार डरावने व्यक्ति फर्श पर बैठे है। सेठ सियारामशख एक कुर्सी पर बैठे माला फेर रहे है। रहीम सेठ के पास लडकिया लाता है, जो बहुत पीटी गई हैं। एक लडकी को सेठ तमाचे से मारता है।

शहर के भेडिये मेमने की खाल ओढे देहातो के आस-पास घूमते नजर आते है। ये भेडिये नाना रूप धारण करते है—त्यागी बनकर ये गाव मे प्रवेश करते है, वहा खुराक मिल जाती है और शिकार भी पा जाते है। अकाल और सकट के दिनो मे ये भेडिये गावो को जी-भरकर लूटते है। सेठ कसाई के कमरे मे बैठा है, दो लडकिया पखा कर रही है। सेठ मेले के विषय मे जुम्मन से पूछता है—जुम्मन कहता है कि तीन बच्चे और दो छोकरिया रो रही थी। उनको पीटा गया जिससे वे मर गयी। सेठ भी प्रसन्न होते है। जुम्मन बहुत-सी छोकरियो को पीटता हुआ सेठ जी के पास लाता है। जुम्मन उस छोकरी को धक्के मारकर आगे बढाता है जिसे आदित्य के कमरे मे हरण किया जाता है। वह छोकरी सेठ जी को पहचान रही है इसलिए सेठ जी उसका कत्ल कराना चाहते है। इसी समय कई नकाबपोश आकर सेठ को मारने के लिए तैयार हो जाते हैं। कजरी नामक छोकरी खुद पिस्तौल माँगकर उस कसाई सेठ को मार देती है।

द्वितीय महायुद्ध तेजी से चल रहा है। भाडे के सिपाही साग-मूली की तरह कट रहे है और बडे-बडे राजनीतिज्ञ गद्दीदार कुर्सियो पर आराम से बैठकर योजनाए बना रहे है। इस मनहूस छाया को धनी व्यक्ति देखकर प्रसन्न हो रहे है और गरीब काप रहे है। इसी वातावरण मे यह नाटक समाप्त होता है।

कॉग्रेसी हौवा (पृ० ६६), *ले०* सुबोध मिश्र 'सुरेश', *प्र०* : उपन्यास वहार आफिस, वनारस, *पात्र* स्त्री ४, पु० ७; *अक* नही, *दृश्य* ९।
घटना-स्थल . जमीदार का मकान, श्मशान घाट।

इस प्रहसन मे धनी जमीदार की मूर्खता और इन्द्रिय-लोलुपता का दुष्परिणाम दिखाया गया है। इसमे एक मूर्ख किन्तु धनी जमीदार स्त्री का प्रेम पिपासु वनता है। महा धूर्तराज ज्योतिपाचार्य तथा अक्ल के दुश्मन वैद्यराज जमीदार से ३ हजार रुपए लेकर उसके विवाह की युक्ति वनाते है। वे धन-लोलुप रामरूप को एक हजार रुपये देकर उसकी पुत्री ललिता के वदले उसके नौकर कलुआ की शादी जमीदार के साथ कर देते है। यह रहस्य न तो रामरूप और न ज्योतिपाचार्य ही जानते है। क्योकि यह चालाकी रामरूप की पत्नी पार्वती तथा ललिता की थी। वहॉ पर काग्रेसी हौवा के डर से जमीदार व्याकुल हो जाता है। कलुआ भी जमीदार से वात नही करता जिससे जमीदार काफी संपत्ति कलुआ को खुश करने के लिए देता है। अकस्मात् जमीदार की तीसरी पत्नी के मरने का झूठा प्रचार ज्योतिपाचार्य करते है। श्मशान घाट पर वह जिन्दा हो जाती है जिससे सव डरकर भाग जाते है और कलुआ सारी सम्पत्ति लेकर पार्वती के पास आ जाता है। पार्वती सारी सम्पत्ति किसानो मे वाट देती है और उधर जमीदार अपनी सम्पत्ति के विनाश से दुखी होकर मर जाता है।

कॉटा दामन फूल (सन्१९६५, पृ० ८३), *ले०* · सतीश डे, *प्र०* देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६, *पात्र* पु० ६, स्त्री २, *अक* . २, *दृश्य* ३।
घटना-स्थल जगल, गाव।

इस नाटक मे डाकू चरित्र की एक झाकी के साथ सौतेली मॉ का कटु व्यवहार दिखाया गया है। फूल अपनी सौतेली मॉ रूपेली से दुखी होकर घर से भाग जाता है और वह डाकू हो जाता है। नाटक के अन्त मे डाकू फूल अपनी प्रेमिका गौरी को लेने आता है किन्तु गौरी डाकू फूल को ठुकराकर मानवीय प्रेम को पवित्र रखती है।

कागजी सिक्का (सन् १९६७, पृ० ७२), *ले०* शारदेन्दु रामचन्द्र गुप्त, *प्र०* ठाकुरप्रसाद एण्ड सस, वनारस, *पात्र* पु० ९, स्त्री १, *अक* · ६, *दृश्य* १७।
घटना-स्थल · घर, जंगल, डाकुओ की गुफा।

इस नाटक मे डाकू की दुर्दशा और ईमानदारो की सुख-शाति दिखाई गई है। मोहन और चन्दू दो सगे भाई है। चन्दू अपने परिश्रम की कमाई से अपना और अपने भाई का पेट भरता है। उसका भाई प्रथम तो निठल्ला रहता है। उसकी सगाई मेलहू भंगी की पुत्री सुशीला से हो चुकी है। चन्दू सेठ लाला वीरेन्द्र के यहा ईमानदारी श्रौर वफादारी से काम करता है।

मोहन चन्दू को मारकर वर्षा मे घर से वाहर निकाल देता है। उसे साप डसता है। उपचार करने पर वह अच्छा होता है। मोहन भी अपना हाथ जला लेता है। सुशीला दोनो को अच्छा कर देती है। मोहन वनवारी के साथ जुआ, चोरी द्वारा धन कमाने लगता है किन्तु घरवालो को धनार्जन का साधन नौकरी वताता है। एक दिन वनवारी नशे मे सव कुछ वक देता है। चन्दू चोरी के धन को वाहर फेकता है और मोहन को सच्चरित्र होने की चेतावनी देता है।

मोहन प्रतापसिह डाकू के गिरोह मे जाकर सेठ वीरेन्द्र के घर डाका डालता है। सुशीला मोहन की खोज मे डाकुओ के अड्डे पर पहुचती है और डाकुग्रो का पता लगाकर घर लौटती है और आग मे कूदकर मर जाती है। चन्दू उन कागजो के सिक्को को छूता भी नही।

कामना (सन् १९२४, पृ० ९४), *ले०*. जयशकर प्रसाद, *प्र०* भारती भण्डार, इलाहावाद, *पात्र* पु० १५, स्त्री १०, *अक* ३, *दृश्य* ६, ८, ८।
घटना-स्थल · फूलो का द्वीप, समुद्र का किनारा घर, मदिर, जगल मे कुटी, वृक्षकुज।

इस प्रतीक नाटक मे मनोवृत्तियो का खेल दिखाया गया है। नाटक मानव जाति के उस जीवन से प्रारम्भ होता है, जिसमे लोगो को प्रकृति से प्रेम था। समुद्र के किनारे फूलो के द्वीप मे हरे-भरे खेत, छोटी-छोटी पहाडियो मे लुढकते हुए झरने, फलो से लदे वृक्षो की पक्ति, भोली गउओ और उनके प्यारे बच्चो के झुण्ड, धवल धूम और तारो से जगमगाती रात को छोडकर अन्यत्र जाने की उन्हे इच्छा भी नही होती। उस द्वीप के लोग 'यथालाभ सतुष्ट' रहते है, कोई किसी से मत्सर नही करता है। समस्त जाति परिवार के सदृश सप्रेम निवास करती हुई उपासना-मदिर मे पूजा करती है। इस मदिर की व्यवस्थापिका है 'कामना'।

कालान्तर मे विलास नामक परदेशी विदेश से आता है और द्वीप-निवासियो को स्वर्ण के प्रकाश मे मानिक-मदिरा दिखाकर विलासी जीवन की प्रेरणा देता है। अपव्यय से अभाव का अनुभव होता है, जिसकी पूर्ति के लिए हिसा आवश्यक समझी जाती है। वनलक्ष्मी इसका विरोध करती हुई कहती है, 'आग, लोहे और रक्त की वर्षा की प्रस्तावना न करो।' इसी प्रकार वृद्ध विवेक भी बीच-बीच मे विलास के प्रस्तावो का विरोध करता रहता है, किन्तु वनलक्ष्मी और विवेक की बाते कोई नही सुनता। उन्हे पागल समझा जाता है। मद्यपान, जीव-हिसा और व्यभिचार का सर्वत्र प्रचार होता है। शान्तिदेवी की हत्या की जाती है। करुणा व्याकुल हो वन मे शरण लेकर जगली फलो पर निर्वाह करती है। वह आधुनिक सभ्यता का विवेचन करती हुई कहती है, 'जीवन के समस्त प्रश्नो के मूल मे अर्थ का प्राधान्य है। मै दूर से उन धनियो के परिवार का दृश्य देखती हूँ। वे धन की आवश्यकता से इतने दरिद्र हो गए है कि उसके विना उनके बच्चे उन्हे प्यारे नही लगते। मै अपनी निर्धनता के आसू पीकर सतोप करती हूँ और लौटकर इसी कुटी मे पडी रहती हूँ।' स्त्रिया वैवाहिक जीवन को घृणा की दृष्टि से देखती है, और सर्वत्र, क्रूरता और दम्भ का प्रचार करती है। विवेक नगर-रूपी अपराधो के घोसले से भाग जाता है। भागने से पूर्व जनता को सदेश देता जाता है कि 'लौट चलो उस नैसर्गिक जीवन की ओर, क्यो कृत्रिम के पीछे दौड लगा रहे हो?'

फूलो के उस द्वीप मे सर्वत्र अभाव, अशाति और दुख-ही-दुख है। उस द्वीप पर शासन करने वाली रानी कामना का हृदय चचल है। चादनी के समुद्र मे उसका मन मछली के सदृश तैरता है, किन्तु उसकी प्यास नही बुझती। सतोष के पूछने पर कामना कहती है, 'मेरे दुखो को पूछकर और दुखी न बनाओ। जहा की रानी इतनी खिन्नमना है वहा की प्रजा की क्या दशा होगी!' सेनापति विलास अपने एक सैनिक की स्त्री को बलात् पकडकर ले जाता है। विलास की स्त्री लालसा एक सैनिक के साथ यह कहती हुई चल पडती है, 'तुम्हारे सदृश पुरुष के साथ चलने मे किस सुन्दरी को शका होगी।' विलास अपनी स्त्री की दुर्वासना का समाचार सुनकर क्रुद्ध होता है और उसका वध करने को उत्सुक होता हुआ कहता है, 'ओह अविश्वासी स्त्री, तूने मेरे पद की मर्यादा, वीरता का गौरव और ज्ञान की गरिमा सब डुबा दी।'

शातिदेवी की मृत्यु के उपरान्त कई दुर्वृत्त मद्यप करुणा का पीछा करते है। वह अवला धर्म बचाने के लिए भागती जाती है, किन्तु मद्यप कब माननेवाले। विवेक उसको बचाता है और भूकम्प के कारण मद्यपो का नगर नष्ट हो जाता है। नाटक के अन्त मे कामना अपने दुखी राज्य से व्याकुल हो जाती है और अपने पिता विवेक की गोद मे आश्रय ले लेती है। जनता विवेक का यह उपदेश ध्यान से सुनती है "मनुष्यता की रक्षा के लिए, पाशवी वृत्तियो का दमन करने के लिए राज्य की अवतारणा हो गई। परन्तु उस की आड मे दुर्दमनीय नवीन अपराधो की सृष्टि हुई। इसका उद्देश्य तव सफल होगा जब कामना अपना दायित्व कम करेगी, जनता को, व्यक्ति को आत्मसयम आत्म शासन सिखाकर विश्राम लेगी।'

नाटक के अन्त मे विलास और लालसा के अत्याचारो से पीडित जनता उन्हे अपने देश से निकाल देती है और वे एक नौका पर आरूढ होते है। जनता मदिरा-पात्र तोड डालती है और स्वर्ण की राशि फेक-फेककर

नाव पाट देती है, जिससे लालसा क्रन्दन करती है। इस प्रकार फूलो के द्वीप से विलास की नई सभ्यता भाग जाती है और द्वीपवासी विवेक के कथनानुसार कृत्रिमता से नैसर्गिकता की ओर मुड़ जाते है ।

कामिनी कुसुम(सन् १९६४, पृ० ५६), ले० हरनारायण चतुर्वेदी, प्र० जी० वी० एच० एण्ड फ्रेंड्स चौक, बनारस, *पात्र* पु० ८, स्त्री ७, *अक* ३, *गर्भाक* ४, ४, ५। *घटना-स्थल* राज भवन, घर की बैठक, विदूषक का घर।

इस सामाजिक नाटक मे प्रेम-विवाह की विजय दिखाई गई है। मधुपुरी का राजकुमार कुसुमसेन वर्धमान देश की राजकुमारी कामिनी से विवाह करना चाहता है। कामिनी भी कुसुमसेन की प्रशसा सुनकर उनका साक्षात्कार करना चाहती है किन्तु उसकी सखी लीला उसे समझाती है कि पहले राजा-रानी देख-सुनकर उसके विषय मे जानकारी प्राप्त कर ले तब तुम देखना। पर कामिनी छत पर से वृक्ष तले खडे कुसुमसेन को देखकर उस पर मोहित हो जाती है। मालिन की युक्ति से कुसुमसेन कामिनी के मन्दिर मे पधारते है और दोनो का एकान्त मे वार्तालाप होता है। कुसुमसेन और मालिन को चौकीदार वन्दी बनाकर राजा वीर सिंह के पास ले जाते है। राज दरबार मे महाराज वीरसिह बैठे है और जमुना भाट मधुपुरी से लौटकर सन्देश देता है कि महाराज जिसके बुलाने के हेतु आपने मुझे भेजा था वह यहा स्वय पधारे हैं। यहा आने पर मुझको विदित हुआ कि उनको चोर समझ कर कारागार दे दिया गया है।

राजा वीरसिंह अपनी पुत्री से क्षमा-याचना करते है तथा कामिनी और कुसुमसेन का विवाह हो जाता है।

कामिनी मदन (सन् १९०७, पृ० ४७), ले० हरिहर प्रसाद, प्र० अग्रवाल प्रेस, गया, *पात्र* पु० ७, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* ७, ६, ४। *घटना-स्थल* रास्ता, मकान, हॉस्पिटल।

इस नाटक मे कामिनी और मदन की प्रणय-कथा के द्वारा नई शिक्षा प्रणाली का वैवाहिक पद्धति पर प्रभाव दिखाया गया है। पूजा करने के लिए गई हुई कामिनी के साथ छात्रो का अभद्र व्यवहार देखकर मदन उसकी रक्षा करता है। दोनो प्रथम मिलन मे ही एक-दूसरे के प्रति आकृष्ट हो जाते है और दूसरी बार के एकात मिलन मे वे अपने प्रेम को स्थायी रखने के लिए एक-दूसरे से अंगूठी बदलकर परिणय-सूत्र मे बध जाते है। परन्तु समाज के सम्मुख उनका विवाह सम्पन्न नही हुआ है। अत दासी प्रेम-विवाह की अवहेलनाकर सीता-सावित्री आदि का आदर्श उसके सम्मुख प्रस्तुत करती है।

अचानक मदन के पिता की मृत्यु का समाचार मिलता है और मदन की रेल-दुर्घटना होती है। यहा कामिनी के पिता जयचन्द जी के घर मे आग लगने से बाप बेटी बेघर-बार हो जाते है। निर्धनता के कारण जयचन्द बारह वर्षीया बेटी कामिनी का विवाह ६० साल के वृद्ध हरपचन्द के साथ करना चाहता है। विवाह-मडप मे जब पाणिग्रहण की तैयारी होती है उसी समय मदन पहुँचकर कामिनी की रक्षा करता है और दोनो का विधिवत् विवाह होता है।

कायाकल्प काल(सन् १९७१), ले० राजेन्द्र कुमार शर्मा, प्र० आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, *पात्र* पु० ६, स्त्री ३, *अक* ३। *घटना-स्थल* हिमालय, घर।

इस सामाजिक नाटक मे बूढा साधु के प्रताप से जवान बनता है किन्तु पुन जवान से बूढा हो जाता है।

इसमे बूढा गोवरधनलाल एक ज्योतिषी के झाँसे मे आकर हिमालय के एक साधु के पास जाता है जिसके पास बूढे से जवान बनाने की बूटी है। गोवरधनलाल कुछ दिनो के बाद २५ वर्ष के जवान से लगते है किन्तु एक दिन क्रोध मे आ जाने से पुन बूढे हो जाते है और अपनी भूल पर पछताते है।

काल कन्या (पृ० ६७), ले० रासविहारी लाल; प्र० जनसम्पर्क विभाग, बिहार राज्य, पटना, *पात्र* पु० ११, स्त्री ४, *अक* ४, *दृश्य* ३, ३, ३, ३। *घटना-स्थल* बुन्देलखण्ड मे राजा का महल,

२५५९

नगर, इलाहाबाद, जैतपुर का दुर्ग ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे छत्रसाल के साहसपूर्ण कृत्य दिखाये गए है। बुन्देलखण्ड का व्याघ्र राजा छत्रसाल इलाहाबाद मे सूबेदार मुहम्मद खा वेगस की चोटे खाकर भी अपने कापते हुए कमजोर हाथो से ढाल तलवार लेकर, वेग से आगे बढता है पर वह नौजवान बेगस खा का झपट्टा सह नही सकता है। फिर भी लडखडाकर गिरते-गिरते भी बाजीराव को पुकारता है—

'जैसी गति गजराज की, वैसी ही गति आज ।
बाजी जाति बुदेल की, बाजी राखो लाज ।'

बाजीराव राजा छत्रसाल की पुकार सुनते ही घोडे की रास मोडकर मराठा घुडसवार, बरछिया चमकाते बुदेलखण्ड की चचल धरती की ओर दौड पडते है। राजा छत्रसाल की पुरानी शान रह जाती है और बेगस जैतपुर के दुर्ग मे हाथ पैर पटकता रह जाता है। इसी विजय के उपलक्ष्य मे एक नृत्योत्सव होता है और महान् बाजीराव के सामने क्षणमात्र मे ही वेगस आत्म-समर्पण कर देता है।

कालदहन (सन् १९५१, पृ० ५२), ले० केदारनाथ मिश्र 'प्रभात', प्र० ज्ञानपीठ प्रकाशन, पटना, *पात्र* पु० ३, स्त्री ३, *अक रहित* ।

इस प्रतीकात्मक गीतिनाट्य मे पुरुषार्थी की विजय भाग्यवादी के ऊपर दिखाई गई है। यह नाटक वेदान्त के आधार पर गाधीवाद की पुष्टि करता है। ये कथित पात्र मानव के क्षेत्र मे मिलनेवाले विविध मानसिक तथा प्राकृतिक गुणो का प्रतिनिधित्व करते है। सब पात्रो के माध्यम से एक दीर्घ काल की कहानी को रूप दे दिया गया है। इस नाटक मे अतीत अपने यज्ञकुण्ड को पुन प्रज्वलित करना चाहता है। चेतना उद्दीपन का कार्य करती है। इस अवसर पर पौरुष भाग्यवादी बनकर एक वृक्ष से बधा होता है। समय के साथ पौरुष अपनी शृखलाओ के बन्धन से मुक्त हो दिग्विजय करता है। यही इस का आशामय सुखद अन्त है।

काला राजा (सन् १९७१, पृ० १३५), ले० ललित मोहन थपलयाल; प्र० राधाकृष्ण प्रकाशन, *पात्र* पु० १५, स्त्री २, *अक* ४, *दृश्य* ३, ४, ७, ५ ।
घटना-स्थल प्रतीकात्मक मच ।

इस मे नाटककार ने ग्रामीण समाज के सघर्ष द्वारा देश की व्यापार सम्बन्धी राजनीतिक चालो को स्पष्ट किया है। काला राजा तानाशाही का प्रतीक है जिसके माध्यम से यह दिखाया गया है कि कोई सत्ता केवल झूठे विचार के बल पर अधिक दिन तक स्थिर नही रह सकती।

सेठ गल्लाराम गाव का शोपण करता है। वह गाव मे फूट डाल देता है जिससे गाव के मुखिया 'प्रधान' की बात कोई नही मानता। इसी मध्य 'कालाराजा' का शासन हो जाता है। लेकिन अपने अत्याचारो से वह जनता के हृदय पर अधिकार नही जमा पाता। गाववाले इस शासन का विद्रोह करते है। प्रधान अपना बलिदान करता है तो गाव की सारी जनता इस शासन को समाप्त करके ही शान्त होती है।

कालिदास (सन् १९५०, पृ० ३८), ले० उदयशकर भट्ट, प्र० आत्माराम एण्ड सस, दिल्ली, *अक और दृश्य रहित* ।
घटना-स्थल नही है।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के राजकवि कालिदास के जीवन पर आधारित यह एक सगीत रूपक है। प्रारभ मे जन-चर्चा के साथ चीनी यात्री फाह्यान द्वारा कालिदास के समय की सुख-समृद्धि का दिग्दर्शन कराया गया है। तत्पश्चात् सूत्रधार कालिदास की ऋतुसहार, मेघदूत, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, कुमारसभव तथा रघुवशम् आदि अमर कृतियो के मार्मिक उद्धरणो का वाचन करता है। इस प्रकार कालिदास के व्यक्तित्व तथा कृतियो के प्रेरणा-स्रोतो का दर्शन होता है। अधिकाश स्थल मूल रचनाओ के अनुवाद मात्र है।

काली आकृति (सन् १९५६, पृ० ९१), ले० राजकुमार, प्र० : हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, *पात्र* . पु० ७, स्त्री नही, *अक* ३, *दृश्य* ४, ३, ४ ।

घटना-स्थल कमरा, मकान, थाना, होटल आदि।

नाटक मे रहस्यपूर्ण दृश्यो का सयोजन है। इसमे बास नामक व्यक्ति काली आकृति बनाकर सेठ चादमल को डराता है तथा उसका सारा सोना जवरदस्ती लेकर चला जाता है और बम्बई से गायब हो जाता है। बास के साथ ओझा तथा गोठी का पूरा-पूरा हाथ होता है। सेठ चाँदमल थाने मे जाकर दरोगा से सारी बात वताता है। उसकी रिपोर्ट लिखी जाती है। सी० आई० डी० इन्सपेक्टर मिस्टर पाल मामले की छानवीन बडी कुशलता से करते है जिससे रूप वदलकर ठगनेवाले बास, ओझा और गोठी गिरफ्तार होते है। सेठ चाँदमल का चोरी मे गया हुआ सोना मिल जाता है। तथा कुशल सी० आई० डी० इन्सपेक्टर पाल साथ ही साथ सोना लेकर भागनेवाले सेठ चॉदमल को भी गिरफ्तार कर लेते है जिससे सब लोग मिस्टर पाल की कार्य-कुशलता की सराहना करते है।

काली नागिन (पृ० १३६), ले० मु० जलाल अहमद साहव, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, *पात्र* . पु० ११, स्त्री ६, *अक* ३, *दृश्य* ६, ८, ७।
घटना-स्थल वाग गजन्फर, ख्वागाह, महल जर्रार।

इस नाटक मे स्त्री को काली नागिन मानकर इससे दूर रहने का उल्लेख है। इस नाटक के पहले अंक मे शेरसिंह विगडेदिल से कहता है देखो यहा रग ही कुछ और है। इससे विगडेदिल खुश होता है। इस नाटक मे प्रेम की कहानी है। औरतो का जीवन कैसा है, उन पर विश्वास करना उचित है या अनुचित यह वताया जाता है। औरत को काली नागिन की उपमा दी गयी है जो सबसे प्यार का सौदा करती है।

काली नागिन (सन् १९२४, पृ० १३०), ले० किशन लाल, प्र० उपन्यास वहार आफिस, काशी, *पात्र* पु० ७, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* ·, ७, ६, ६।
घटना-स्थल : शाही महल, जंगल, मिस्र की नील नदी, मकान खिड़कीवाला।

इस नाटक मे दिलफरेव मनोवृत्ति को काली नागिन सिद्ध करने का प्रयास है। यह नाटक प्रतीक पात्रो से भरा पडा है। मिस्र देश के महल मे छलावा और जातशरीफ तथा दिलनवाज और विगड़ेदिल गले मे बाहे डाले गीत गाते है। एक वूढे का घर लूट लिया जाता है और जव वह फरियाद करता है तो जातशरीफ वूढे को पकड़कर दण्ड देना चाहता है। एक स्थान पर दिल-फरेव और कहर का वार्तालाप होता है। दिलफरेब कहती है—

'तूने सर काटा जो लाखो
एक सर के वास्ते।'

इसी प्रकार तोफीक और गजन्फर मे वार्तालाप होता है। गजन्फर तोफीक से कहता है कि तुम मेरा सर काट डालो।

गजन्फर अन्त मे कहता है—'अरी दिल-फरेव, तू मुझे धोखा दे रही है, वह मिस्र की मल्का दिलफरेव न थी वलिक वह एक काली नागिन थी जिसकी मुहव्वत ने मुझ पर जहरे-कातिल का काम किया, मेरी जान लेने का सामान किया।'

नाटक की नायिका दिलफरेव अन्त मे आत्महत्या कर लेती है।

काल्पी (सन् १९३५, पृ० ८३), ले० भगवतीप्रसाद पान्थरी; *पात्र* : पु० ६, स्त्री ३, *अक* : ३, *दृश्य* : ४, २, ५।
घटना-स्थल : राजकीय प्रकोष्ठ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे असत्य पर सत्य की विजय दिखाई गई है। महाराज रघुनाथ (तजोर के महाराजा) राजा सोलागा की भेजी हुई छद्मवेशी वेटी विलासिनी के रूप पर मुग्ध हो जाते है। विलासिनी झूठे आरोप लगाकर रानी काल्पी (राजा रघुनाथ की रानी) से राजा रघुनाथ का हृदय फेर देती है। महाराजा, रानी काल्पी पर आरोप लगाकर निष्कासित कर देते हे जिसके वारे मे आत्महत्या कर लेने की अफवाह फैल जाती है। अवसर देखकर विलासिनी महाराजा रघुनाथ को जहर देना चाहती हे परन्तु ययासमय भेद खुल जाने पर उसे स्वय उस

जहर को पीना पडता है। मरते समय विलासिनी यह रहस्योद्‌घाटन करती है कि वह राजा सोलागा की बेटी न होकर दक्षिण की एक वेश्या है। सोलागा ने उनके साथ छल किया है। महाराजा रघुनाथ सोलागा पर आक्रमणकर विजयी होते है और महारानी काल्पी को पुन प्राप्त करते है। काल्पी ने आत्महत्या न कर अपने को भूमिगत कर लिया था। उन्हे विश्वास था कि एक-न-एक दिन असत्य की पराजय और सत्य की विजय अवश्य होगी।

किरणमयी (सन् १९१४, पृ० ६८), ले० तुलसीदास स्वर्णकार, प्र० रेजीमेन्टल छापाखाना, अन्धेर देव, जबलपुर, *पात्र* पु० १, स्त्री ६, *अक* ४, *दृश्य* २, ८, १, २।
घटना-स्थल जगल मार्ग, बादशाह अकबर का महल, नगर का सकीर्ण और अन्धेरा मार्ग।

इस ऐतिहासिक नाटक मे एक क्षत्रिय बाला विलासी सम्राट से अकेले अपने सतीत्व की रक्षा करती है। अकबर का लोहा जब सारे हिन्दू राजा मान चुके थे उस समय भी राजपूत-कुल-केशरी महाराणा प्रताप सिह स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए अकबर के विरुद्ध युद्ध कर रहे थे। जीवन पर्यन्त अकबर जैसे शक्तिशाली शत्रु से टक्कर लेकर विजय पाते रहे। इन्ही के छोटे भाई शक्तिसिह की नारी-कुल-शृगार कन्या किरणमयी थी। शक्तिसिह अपने ज्येष्ठ भ्राता प्रतापसिह से एक साधारण बात पर वैमनस्य हो जाने के कारण अकबर के पास जाकर मुगल सेना के एक अधिकारी के रूप मे महाराणा प्रताप सिह से प्रतिशोध लेने के लिए दिल्ली मे रहते है। वह अपनी कन्या किरणमयी का विवाह जोधपुर नरेश के छोटे भाई प्रसिद्ध वीर कवि राजा पृथ्वीसिंह के साथ करते है। पृथ्वीसिंह शाही प्रथानुसार दरबार मे हाजिरी देने के लिए आगरे मे रहते है। विवाह के बाद नवदम्पति इच्छित पदार्थ पाकर प्रसन्न हुए। किरणमयी के अप्रतिम सौन्दर्य की चर्चा अकबर के कानो तक पहुँचती है। बादशाह की इच्छा मे किरणमयी को जोर देकर नोरोज के मेले मे बुलाया जाता है जहाँ वह अपनी पाप-वासना की पूर्ति करना चाहता है। अकबर की वासनामयी बाते सुनते ही वह सम्राट को धर दबाती है और उसके वध से सती नारियो के साथ हुए अत्याचारो का प्रतिशोध लेना ही चाहती है कि वह किरणमयी को माँ पुकारकर क्षमा याचना करता है। किरणमयी उसे छोड देती है। अकबर अन्त मे कहता है कि मै नही जानता था कि राजपूत स्त्रियाँ अपने धर्म की रक्षा स्वय करना जानती है।

किस का हाथ (सन् १९६७, पृ० १०७), ले० सतीश डे, प्र देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ६, *पात्र* पु० ७, स्त्री २, *अक* ३।
घटना-स्थल घर, पुलिस स्टेशन।

इस जासूसी नाटक मे हत्या, षड्यत्र आदि का अन्त मे रहस्योद्‌घाटन किया गया है। अमृतराय एक व्यापारी है जिन्हे रहस्यमयी एव दुर्लभ वस्तुओ के खरीदने का शौक है। अमृतराय अपनी साठवी वर्षगाँठ मना रहे है। उसी समय फ्राडन नामक प्रसिद्ध जादूगर पाँच हजार रुपए मे दुर्जन मिश्र के माध्यम से उन्हे एक विचित्र हाथ बेचता है। शामुली पति से मना करती है, पर अमृतराय पत्नी की बात नही मानता है। पुलिस धोखेबाज जादूगर का पीछा करती है किन्तु वह चतुराई से निकल भागता है।

थोडे दिन बाद अमृत के पुत्र रजन की हत्या हो जाती है। अमृतराय का विनोदी नौकर बुद्धू देखता है कि खरीदा हाथ उसका गला दबा रहा है। पुलिस उस हाथ की खोज कर रही है। पर कुछ पता नही चलता। बुद्धू, अमृतराय और दुर्जन पर पुलिस को शक है। कुछ दिन बाद अमृतराय की पुत्री मधुरता का भी उसी प्रकार कत्ल हो जाता है। पुलिस-इन्सपेक्टर मामलो की छानबीन करते हुए शामुली को आत्महत्या से बचाता है और अन्त मे शामुली को ही नकाबपोश स्थिति मे गिरफ्तारकर अमृतराय की जान बचाता है।

अन्त मे यह रहस्य खुलता है कि दुर्जन मिश्र और उसकी बहन शामुली ने अपने सम्बन्धी की हत्या का बदला लेने के लिए

यह सब षड्यन्त्र रचा था। इसका अभिनय फाइन आर्ट्स सेंटर, दिल्ली के रगमच पर ८ मई, सन् १९६७ ई० को किया गया।

किसान (पृ० ६४), ले० प० शिवदत्त मिश्र, प्र० ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स, बुकसेलर, वाराणसी, *पात्र* पु० ५, स्त्री २, *अक* १, *दृश्य* १६।

इस सामाजिक नाटक मे विदुषी स्त्रियो को बुद्धिमत्ता और कार्य-कुशलता के बल पर व्यभिचारियो से अपने धर्म की रक्षा करते दिखाया गया है। इसमे शोभाराम नामक किसान अपनी बहन चम्पावती के अचानक गुम हो जाने पर लोक-लज्जा के कारण पत्नी सहित घर छोडकर अन्यत्र रहने लगता है। चपावती दुष्ट नारायण के पजे मे आ जाती है। वह उससे व्यभिचार करना चाहता है किन्तु धर्मपाल की मदद से उसे छुटकारा मिल जाता है। अचानक चपावती फिर कुछ वदमाशो के चक्कर मे आ जाती है जहा उसे गणिका का काम करना पडता है। शोभाराम अपनी बहिन को गणिका-वेश मे देखकर नाता तोड लेता है। उस पर चम्पावती को वडा कष्ट होता है और वह अन्त मे दुखी होकर वैरागिन हो जाती है तथा साथ ही धर्मपाल भी वैरागी बन जाता है और दोनो को भगवान विष्णु के दर्शन होते है।

किसान (सन् १९५०, पृ० १२०), ले० . शील, प्र० लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, *पात्र* पु० ३, स्त्री ८, *अक* ३। *घटना-स्थल* गॉव, पचायतघर, चौधरी का कक्ष।

इस राजनीतिक नाटक मे भारतीय किसान का नया सघर्ष यथार्थ भूमि पर चित्रित किया गया है। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के वाद प्रथम बार देश मे ग्राम पचायतो का चुनाव होता है। चुनाव मे सूदखोरो, जमीदारो और पुलिस के एजेटो का प्रभुत्व रहता है। प्रथम अक मे उत्तर प्रदेश के एक गॉव के जमीदार अगर्दासह, सूदखोर साहू गयादीन, पचायत सरपच केदार अपने घृणित तरीको से किसानो की जमीन अपहरणकर धीरज चौधरी के परिवार को आपत्तियो मे डाल देते है।

दूसरे अक मे चौधरी की पत्नी सुखिया शोषको के अत्याचार से पागल हो जाती है। वह अपने युवा लडके को सघर्ष के लिए प्रेरित करती है। इस पर गाव के किसान धीरज के आसपास एकत्रित होकर शोषको के प्रति खुल्लमखुल्ला विद्रोह करते है।

तृतीय अक मे पचायत की विजय के साथ ट्रैक्टर पर पचायत का कब्जा हो जाता है। चौधरी अगर्दासह, साहू गयादीन और केदार के षड्यन्त्रो का भण्डाफोड करता है और पचायत के पुलिस स्वयसेवको द्वारा चोरी, डाका, उत्पात आदि से गॉव की रक्षा करता है। उसी समय चौधरी के भतीजे, जोधा के पुत्र पूरन की पत्नी बारहवे पुत्र को जन्म देती है। इस पर चौधरी कहता है—'रधिया की अम्मा। घर मे नयी पीढी ने जन्म लिया है। अब हम पापो के इतिहास से मुक्त हो चुके है।'

किष्किधा कांड (सन् १८८७, पृ० १०९), ले० दामोदर शास्त्री सप्रे, प्र० खड्ग विलास प्रेस, बाकीपुर मे बाबू साहब प्रसाद सिह ने प्रकाशित कराया, *पात्र* पु० ९, स्त्री ५, इसमे *दृश्य* की जगह *स्थान* सूचक है। *इसकी कथा क्रमाको मे विभाजित है।* *घटना-स्थल* पर्णकुटी, पचवटी, पर्वत, समुद्र तट।

इस धार्मिक नाटक मे रामचरित मानस के किष्किधा काड की कथा नाटकीय रूप मे प्रस्तुत की गई है। सीता हरण के पश्चात् राम सीता की खोज मे आगे बढते है रास्ते मे हनुमान् एवं सुग्रीव से भेट होती है। राम बालि का वध और सुग्रीव का राज्याभिषेक करते है। बन्दरो की सेना सीता की खोज मे निकलती है। समुद्र तट पर विचार-विमर्श के बाद हनुमान् समुद्र पारकर सीता की खोज के लिए प्रस्थान करते है।

कीचक (सन् १९२३), ले० भगवन्नारायण भार्गव, प्र० बालाप्रसाद वर्मा, स्वाधीन प्रेस, झासी; *पात्र* पु० २१, स्त्री ३, *अक* ६, *दृश्य* २, ४, ५, ५, ५, २। *घटना-स्थल* रगभूमि, जगल, महल, गली, कमरा, भवन, राजपथ, उद्यान, पाण्डव भवन।

इस पौराणिक नाटक मे कीचक का वध और उसका कारण दिखाया गया है। पाण्डव छद्मवेश मे राजा विराट के यहा आश्रय लेते हैं। द्रौपदी सैरन्ध्री नामक दासी का कार्य करती है। रानी का भाई कीचक उस पर आसक्त हो जाता है तथा ललिता नामक उस दासी की उपेक्षा करने लगता है जिससे वह पहले प्रेम करता था। द्रौपदी कीचक की दुर्भावनाओ से परेशान होकर पाण्डवो से शिकायत करती है। भीम द्रौपदी का वेश धारणकर उद्यान मे कीचक से मिलते है और उसका वध कर देते है।

सर्व-गुण-सम्पन्न होते हुए भी विषय-वासना और इन्द्रिय-लोलुपता जैसे अवगुण के कारण ही कीचक का वध होता है। नाटक को रुचिकर बनाने के लिए स्थान-स्थान पर हास्य का नियोजन किया गया है।

कीचड़ का फूल (सन् १९६३, पृ० ९४), लें० : सतीश डे; प्र० . देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६; *पात्र* पु० ५, स्त्री २, *अक* : ३, *दृश्य रहित* ।
घटना-स्थल : गाव, अछूत का घर, रईस का घर।

इस सामाजिक नाटक मे अछूतोद्धार की समस्या सुलझाई गई है। इसमे कमलनयन नामक सुन्दर अछूत लडकी से सभी उच्च वर्गवाले घृणा करते है, दुर्गादेवी उससे विशेष चिढती है किन्तु विजय कुमार तथा देवीप्रकाश के प्रयास से समाज उसे अछूत न मानकर उसका आदर करने लगता है।

कीर्ति-स्तम्भ (सन् १९५५, पृ० १६९), लें० : हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० · राजपाल एण्ड सस, दिल्ली, *पात्र* पु० ४, स्त्री ७, *अक* : ३, *दृश्य* २०।
घटना-स्थल : कीर्ति-स्तम्भ, वाटिका।

इस ऐतिहासिक नाटक मे मेवाड के महाराजा रायमल के गृह-कलह की कहानी है। महाराणा कुभा का ज्येष्ठ पुत्र उदयी पिता की हत्याकर मेवाड का राज्य हडप कर लेता है। परन्तु ऊदाजी का अनुज रायमल बडे भाई को हराकर मेवाड का महाराणा बनता है। ऊदाजी को दिल्ली के बादशाह उस कार्य मे सहयोग नही देते है। ऊदाजी मारे जाते है। साथ ही सूरजमल के हृदय मे मेवाड राज्य के प्रति मोह जाग उठता है। इस कारण रायमल के पुत्रो मे भी झगडा होने लगता है। अत मे रायमल के ज्येष्ठ पुत्र सग्राम सिह की दूरदर्शिता के कारण आन्तरिक कलह शात हो जाता है।

कीर्ति मालिनी प्रदानमु (सन् १९४०, पृ० ४८), लें० · श्री नादल्ले पुरुषोत्तम कवि, प्र० श्री नादल्ले मेघा दक्षिणमूर्ति, *पात्र* पु० १५, स्त्री ५, *दृश्य* २०, *अक रहित* ।
घटना-स्थल मछलीपट्टम् और आन्ध्र के अन्य नगर।

शिवमाहात्म्य को प्रकट करनेवाले इस नाटक की कथावस्तु स्कन्द पुराण से ली गई है।

सीमतिनी और चद्रागद की पुत्री कीर्तिमालिनी का विवाह, ऋषभ योगी के आदेशानुसार भद्रायु से होता है। पिता के वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण करने पर भद्रायु सुचारु रूप से राज्य का भार सम्भालने लगता है।

एक बार भद्रायु और कीर्तिमालिनी आखेट के लिए वन मे जाते है। वहा एक बूढे ब्राह्मण और उसकी पत्नी पर सिह आक्रमण करता है। अभयदान देकर भी भद्रायु उस ब्राह्मणी की रक्षा नही कर सकता। भद्रायु उस ब्राह्मण को अपनी पत्नी दे देता है और स्वय चिता सुलगाकर प्राणत्याग करने के लिए तैयार हो जाता है। तब ब्राह्मण वेषधारी शिवजी अपना वास्तविक रूप दिखाकर भद्रायु को समस्त ऐश्वर्य प्रदान करते है।

कुंवरसिंह (सन् १९५१, पृ० ८२), लें० . चतुर्भुज, प्र० पुस्तक सदन, दिल्ली, *पात्र* · पु० ११, स्त्री १, *अक* . ३, *दृश्य* · १४।
घटना-स्थल जेल।

स्वतन्त्रता आन्दोलन से सम्बन्धित इस नाटक मे स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए अग्रेजो से लडाई की गई है जिसका नायक कुंवरसिंह है। यथार्थ घटना और कार्य-व्यापार के आधार पर माया नामक एक लडकी और उसके पिता हरेकृष्ण के चरित्रो को दिखाया गया है जिसमे पुत्री माया देशभक्त है और हरेकृष्ण

अंग्रेजो का वफादार। माया ही अपने पिता को गिरफ्तार करवाने मे मदद देती है तथा कुँवरसिंह सभी गुप्तचरो के माध्यम से असली देश के नकाबपोश जासूसो को भी अपनी ओर मिलाकर अंग्रेजो को असफल करने मे समर्थ हो जाते है।

कुँवरसिंह (पृ० १२६), ले० दुर्गाशकर सिह, अक, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल युद्धभूमि।

इस ऐतिहासिक नाटक मे स्वतन्त्रता-सग्राम के सेनानी कुँवरसिंह का वलिदान दिखाया गया है। १८५७ के स्वतन्त्रता-सग्राम मे बाबू कुँवरसिंह बहादुरी के साथ अग्रेजो का मुकाबला करते है। पटना के कमिश्नर टर्नर कुँवरसिंह को पटना बुलाते है किन्तु वह निमत्रण अस्वीकार कर देते है। स्वतन्त्रता-सग्राम मे उनके संवधी ही उन्हे धोखा देते है, पर अत मे जीत कुवरसिंह की ही होती है। कुँवरसिंह सेनापति डनवर को हराकर जगदीशपुर मे पुन अग्रेजो को परास्त करते है किन्तु शिवपुर घाट पर डगलस का गोले लगने से उनका दाहिना हाथ टूट जाता है। मृत्यु की परवाह न कर वह कमला और मंगला की मदद से स्वतन्त्रता-सग्राम चलाते रहते है। युद्ध-भूमि मे अत्यत आहत होने पर कमला को यह सग्राम चलाते रहने का आदेश दे अतिम सास लेते है। कही-कही भोजपुरी भाषा का प्रयोग मिलता है।

कुन्दकली नाटक (सन् १८९५), ले० : जगन्नाथप्रसाद शर्मा, प्र० ग्रन्थकार, जवलपुर, पात्र. पु० ५, स्त्री २, अक ११, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल घर, महात्मा की कुटी, जंगल, चिड़ियो का घोसला।

इस प्रतीक नाटक मे फूलो के माध्यम से मानव स्वभाव की विविधता दिखाई गई है। पात्रो के वार्तालाप से ससार मे पाए जानेवाले विभिन्न स्वभाव के पात्रो का उद्घाटन किया गया है। भिन्न-भिन्न पात्रो के भिन्न-भिन्न स्वभाव, कर्म, धर्म और गुणगान का विवेचन इसका लक्ष्य है। पिक के समान मधुरभाषी किन्तु दुष्कर्मो मे प्रवृत्त करानेवाले मित्र अनेक है। गुवरिल जैसी ढोगी महात्माओ की भी कमी नही। दुष्कर्मो से वचानेवाले कीट और हंस अति विरल है। मालिन की तरह रक्षा करनेवाले प्राणी और भी विरल है। इसमे मालिन कुन्दकली और काग का सवाद मानव-स्वभाव का वैचित्र्य प्रकट करता है।

कुन्दमाला (सन् १९५०, पृ० ५०), ले० सत्येन्द्र शरद, प्र० नीलाभ प्रकाशन गृह, इलाहाबाद, पात्र पु० ९, स्त्री ४, अक ३, *दृश्यों का अभाव*।
घटना-स्थल तपोवन, उद्यान, नदी-तट, मैदान, अयोध्या।

लोकनिन्दा के भय से राम, सीता की अग्नि-परीक्षा के पश्चात् भी वनवास देने का निर्णय करते है। लक्ष्मण, सीता को वन मे जाकर छोड आते है। रात्रि मे करुण-क्रन्दन सुनकर वाल्मीकि दयावश सीता को अपने आश्रम मे ले जाते है। वही सीता लव-कुश नामक दो पुत्रो की माता वनती है। सीता आश्रम-सखी वेदव्रती के साथ पति-स्मृति मे रमी हुई, पुत्रो की सेवा करती हुई दिन व्यतीत करती है। वह प्रतिदिन पुष्करिणी को कुन्दमाला चढाती है। तभी वेदव्रती राम द्वारा किए जानेवाले अश्वमेध-यज्ञ की सूचना देती है। महायज्ञ मे उन्हे धर्मपत्नी को साथ अवश्य रखना पडेगा। सीता भी अपने प्रगाढ प्रेम पर यहा विश्वास प्रकट करती है। सहसा आश्रम मे आकाशवाणी होती है कि राम ने आश्रम के सभी लोगो को निमंत्रण दिया है। सीता 'पुष्करिणी' को कुन्दमाला अर्पित करती है जिसे जल मे प्रवाहित देखकर राम-लक्ष्मण निकाल लेते है। राम माला गूथते समय जानकी की माला-निर्माण-पद्धति का स्मरण करते है। प्रिया-वियोग से व्यथित हो, राम मूर्च्छित हो जाते है, छाया रूपी सीता यह देखकर उन्हे अपनी गोद मे लेती है लेकिन वरदान के कारण कोई किसी को देख नही पाता है। तभी सीता कुन्दमाला उनके गले मे डाल देती है। तभी कौशिक और लक्ष्मण वहा आ जाते है

राम वन मे लौटकर जब कभी सिंहासन पर बैठते है तो कुछ अतिरिक्त भार उन्हे प्रतीत होता है। वे सीता की स्मृति मे ध्यान-

मग्न रहते है। तभी कौशिक बाहर से आये हुए दो कला-प्रवीण तापस-कुमारो को लाते है। 'इनकी आकृति हमारे बाल्यकाल के सदृश है। बालको का परिचय प्राप्त करते ही उन्हे ज्ञात हो जाता है कि वे उन्ही के पुत्र है। दोनो तापस-कुमार रघुवशियो की विरुदावली का गान करते है, वे रामायण की कथा सुनाते है तथा अशुभ भय से सीता-त्याग की कथा के बाद बन्द हो जाते है। राम वात्सल्य-प्रेम के वशीभूत पुत्रो को छाती से लगा लेते है। मुनि सीता को राम के चरणो मे अर्पित करते है। धरती माता प्रकट होकर सीता की पवित्रता तथा दृढता की वन्दना करती है। तभी सीता आचल से नवीन कुन्दमाला निकालकर राम के गले मे पहना देती है।

कुंए पर (सन् १९३४), ले० वेढव बनारसी; प्र० 'सुधा' पत्रिका मे प्रकाशित, *पात्र :* विभिन्न वर्णो के अनेक छात्र, प्राध्यापक। *घटना-स्थल* गाव की पाठशाला।

इस सामाजिक नाटक मे युवा पीढी का अछूतोद्धार सवधी संकल्प और उसका परिणाम दिखाया गया है। गाव के कुए पर एक विद्यालय है जहा अछूतो के उद्धार के लिए सभा होती है। उस सभा मे ब्राह्मण-क्षत्री आदि उच्च वर्णो के बालक भी भाग लेते है। यह युवा पीढी अपने रुढिवादी अभिभावको की क्रोधाग्नि की विना परवाह किए अछूतोद्धार का सकल्प लेती है। जव माता-पिता ब्राह्मण-पुत्रो को सभा से दूर रहने का आग्रह करते है और कहते है कि तुझ से उससे क्या काम तो पुत्र उत्तर देता है "पिताजी कल हम लोगो मे कई विद्यार्थियो ने प्रण किया है कि हम लोग इन भाइयो मे काम करेगे। इन्हे पढायेगे, लिखायेगे और स्वच्छ रहना सिखायेगे।"

नाट्यकार का उद्देश्य है कि शिक्षा के क्षेत्र मे तुरन्त छूत और अछूत की समस्या मिटा दी जाये और नई पीढी सवके साथ समान व्यवहार करे।

कुणीक (वि० २००८, पृ० ९२), ले० रत्नशकर प्रसाद, प्र० प्रसाद मन्दिर, गोवर्धन सराय, काशी, पात्र पु० ९, स्त्री ५, अक . ३, दृश्य ६, १, ५। *घटना-स्थल* · वैशाली का कनक सौध, राजगृह का अन्त पुर, कपिलवस्तु।

ऐतिहासिक नाटक मे अजातशत्रु, विरुद्धक, कारायण, मल्लिका व वाजिरा आदि के जीवन की अधिकाश घटनाए जयशकर प्रसाद के अजातशत्रु नाटक से मिलती है। इसमे मगध के निर्वासित महामात्य वर्षकार के जीवन की घटना नई जोडी गई है। रत्नशकर प्रसाद लिखते है—"प्रस्तुत नाटक मे मगध राजा वैदेही पुत्र अजातशत्रु कुणीक की साम्राज्य भावना का द्योतक उसके कूटनीतिक अभियान—वैशाली विजय के अकन मे किया गया है।" कथा मगध के महामात्य वर्षकार के वैशाली प्रवास से कुणीक के हाथो वैशाली पतन तक चलती है।

कुमारिल भट्ट (सन् १९३४, पृ० १२४), ले० श्रीमती अनुरूपा देवी, प्र० श्री आर्यमहिला हितकारिणी महापरिषद्, काशी, *पात्र* पु० १७, स्त्री ७, *अक :* ५, *दृश्य* ४, ६, ७, ५, ६। *घटना-स्थल* बौद्ध आश्रम, राजमहल, झोपडी आदि।

इस जीवनीपरक नाटक मे महात्मा कुमारिल भट्ट की वैदिक-धर्मोद्धार-पद्धति का परिचय दिया गया है। कुमारिल भट्ट बडे कौशल और तर्कबल से आर्य-धर्म का झण्डा ऊँचा करते है। बौद्ध-विहारो, चैत्यो मे अनाचार और अनैतिकता का ताण्डव होने लगता है। वैदिक भावनाओ एव धारणाओ को सास लेना कठिन हो जाता है, सनातन धर्मावलम्बी प्रजा नाना प्रकार से बौद्ध राजदण्ड से सत्रस्त होने लगती है। उसी महाकठिन काल मे महात्मा कुमारिल भट्ट सम्पूर्ण देश मे भ्रमणकर आचरण की शुद्धता और पवित्रता पर वल देते है और अपनी बुद्धि एव चरित्र वल से वैदिक धर्म का उद्धार करते है।

कुरुक्षेत्र (पृ० ८०), ले० अवधभूषण मिश्र, प्र० जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, *पात्र* पु० १४, स्त्री ६, अक . ७।

घटना-स्थल कुरुक्षेत्र की रणभूमि।

इस पौराणिक नाटक मे महाभारत युद्ध का परिणाम दिखाया गया है। कुरुक्षेत्र के मैदान मे कौरवो एव पाडवो का भयकर युद्ध होता है। नाटक के अन्त मे दुर्योधन का मरण एवं गांधारी का शाप दिखाया गया है।

कुरुक्षेत्र (सन् १९२८, पृ० १६३) ले० जगन्नाथशरण, प्र० सरस्वती विहारी लाल, मथुरा भवन, छपरा, *पात्र* पु० १६, स्त्री ५, *अक* ५, *दृश्य* . ६, ६, ६, ७, ८।
घटना-स्थल . राजसभा, कुरुक्षेत्र का युद्ध-स्थल, राजपथ।

इस पौराणिक नाटक मे महाभारत युद्ध का आद्योपान्त दृश्य दिखाया गया है। इसका अभिनय प्रकाशन से पूर्व नवम्बर १९२५ मे शारदा नाट्य समिति, छपरा द्वारा किया गया। रगमंच की त्रुटियो को देखकर इसमे सुधार किया गया तदुपरात प्रकाशित हुआ। यह नाटक अष्टादश हिन्दी साहित्य सम्मेलन मुजफ्फरपुर के सुअवसर पर २७ जून १९२८ को छपरा नाटक समिति द्वारा खेला गया।

इस नाटक के प्रारम्भ मे शकुनि और दुर्योधन का षड्यत्र पाडवो के विरुद्ध सीमा तक पहुँच जाता है। विदुर पाडवो को सावधान कर देते है कि वारणावत मे सवको भस्म करने की योजना वनाई गई है। पाडव किसी प्रकार गुप्त मार्ग से निकलकर प्राण वचाते है। प्रथम अक मे भीम युधिष्ठिर के शातिमय जीवन-यापन का विरोध करते है। द्वितीय अक मे धृतराष्ट्र दुर्योधन की कूटनीतियो का विरोध करते है। तीसरे अक मे विराट नगर मे पाडवो के जीवन का विवरण है। चौथे अक मे महाभारत का घोर युद्ध होता है। पाँचवे अक मे जयद्रथ के वध का अर्जुन द्वारा सकल्प होता है और रणक्षेत्र मे कर्ण, शल्य आदि वीरो की वीरगति दिखाकर अतिम दृश्यो मे धृतराष्ट्र की व्यथा का मार्मिक चित्र खीचा गया है। नाटक का अत धृतराष्ट्र की मृत्यु के साथ होता है। महाभारत की कथा के आधार पर लिखे नाटको मे यह नाटक विशेष स्थान रखता है।

कुरुवन दहन नाटक (सन् १९२२, पृ० १२९) ले० वदरीनाथ भट्ट, प्र० रामभूषण प्रेस, आगरा, *पात्र* . पु० २३, स्त्री १०, *अक* : ७, *दृश्य* ३, ५, २, ३, ३, २, ४।
घटना-स्थल दुर्योधन का राजदरवार, राजमहल, रणक्षेत्र।

इस पौराणिक नाटक मे दुर्योधन की मृत्यु महाभारत के आधार पर दिखाई गई है। इस नाटक की मूलकथा का प्रारंभ महाभारत के उद्योग पर्व से होता है। कंचुकी भीम को यह सूचित करता है कि दुर्योधन की सभा मे कृष्ण का सधि-प्रस्ताव लेकर जाना निष्फल हो गया है। वहा से लेकर कौरवो के पूर्ण पराजय तथा दुर्योधन के अतिम क्षण तक की कथा का वर्णन इस नाटक मे है।

कुलदीप (सन् १९५८, पृ० ४८) ले० रामाश्रय दीक्षित, प्र० अखिल भारतीय सर्वसेवा सघ प्रकाशन, राजघाट, काशी, *पात्र* पु० १४, *अक रहित*, *दृश्य* ७।
घटना-स्थल कोठी, गुफा, दालान, जगल, चौपाल, गाधी चवूतरा।

'कुलदीप' नाटक सन्त विनोवा भावे के 'भूदान आन्दोलन' तथा सर्वोदय सवधी विचारो पर प्रकाश डालता है। नाटक का प्रारभ दरोगा तथा दयाराम की वातचीत से होता है। दयाराम का पुत्र डाकुओ द्वारा उठा लिया गया है। दयाराम दरोगाजी को पाँच सौ रुपए रिश्वत रूप मे देता है जिससे लडका शीघ्र मिल जाय पर दरोगा रिश्वत नही लेता और अपने कर्त्तव्य के नाते शरत् को खोजने के भरपूर प्रयास की। वात कहकर सातवना देता है। नवयुवक विद्यार्थी विजय दयाराम को वताता है कि गरीव जग चुके है। धनियो की धूर्तता, पूँजीवादियो की स्वार्थ भावना अव नही चलने की। अत आप भी अव विनोवा जी के भूदान पर अमल करे। शरत् डाकुओ के सरदार को 'भूदान आन्दोलन' के वारे मे वताता है, और प्रभावित कर लेता है। पुजारी का पुत्र कमल तथा मुखिया का पुत्र सरोज एक

भगी लडके की लाश का अतिम सस्कार स्वय करते है। उन दोनो के पिता पहले तो उनका विरोध करते है पर अन्त मे बात मानकर भूदान के लिए तैयार हो जाते है। विजय, तथा डाकू सरदार पुत्र अभय डाकू सरदार को अपनी बातो से प्रभावित करते है। सरदार तो पहले ही अमीरो की सपत्ति लूटकर गरीबो मे वितरण करता है, पर अन्त मे दस हजार रुपए गरीब किसानो की सहायता के लिए देता है।

कुलीनता (सन् १९४१, पृ० ११५), ले० सेठ गोविन्ददास, प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर बम्बई, *पात्र* पु० ६, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* ६, ६, ६,।
घटना-स्थल युद्धक्षेत्र, राजप्रासाद।

इस ऐतिहासिक नाटक मे अकुलीन-कुलीन की दूषित हिन्दू भावना पर कुठाराघात किया गया है। गौडीय वशीय राजा अजयसिह देव अपने वश के अतिम राजा है। शहाबुद्दीन गोरी उत्तरी भारत के अनेक राजाओ को पराजित कर चुका है। इसका उत्तराधिकारी कुतुबुद्दीन त्रिपुरी पर आक्रमण करना चाहता है, परतु अजयदेव ऐबक का माण्डलिक राजा बनना स्वीकार कर लेता है। त्रिपुरी पर आक्रमण न होने की खुशी मे अजयदेव के दरबार मे मद्यपान और नृत्य हो रहा है। इसी अवसर राज्य के महामत्री सुरभि पाठक सभा मे प्रवेश करके इस रगारग को बद करने की आज्ञा देते है। वे सधि के स्थान पर युद्ध करना चाहते है।

सेनापति भी युद्ध के लिए सहमत है, किन्तु राजा उससे क्रुद्ध होकर उसके स्थान पर दूसरे सेनापति का निर्वाचन कर लेता है। नया सेनापति अस्पृश्य गोड जाति का है। उच्च वर्णवाले पहले सेनापति को रत्नावली से प्रेम करने के अपराध मे निष्कासित किया गया था। अजयसिह सुरभि पाठक को भी बदी करना चाहता है परन्तु वह वहा से भाग जाते है।

सुरभि पाठक यदुराव से मिलकर एक नयी सेना का निर्माण करते है। वे फिर से त्रिपुरी को स्वतत्र करने मे सफल होते है। अस्पृश्य यदुराव का विवाह राजकुमारी रेवा सुन्दरी से होता है। वाद मे यदुराव ही त्रिपुरी का राजा बनता है।

कुसुम (सन् १९५६, पृ० ६२), ले० कालीनाथ झा 'सुधीर', प्र० श्री पीताम्बर प्रकाशन समिति, विट्ठो; *पात्र* पु० १०, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* १४।
घटना-स्थल पाठशाला, डाक्टर साहब का घर, राजेश का घर, स्कूल का रास्ता एव पण्डित जी का दरबार इत्यादि।

इस सामाजिक नाटक मे नाट्यकार ने मैथिल समाज मे व्याप्त नारी-शिक्षा की समस्या उठाई है। इसमे ऐसे परिवार को प्रदर्शित किया गया है जो लडकियो को उच्च शिक्षा देने मे अग्रसर है। डा० रमेश अपनी लडकी कुसुम को आधुनिक पाठ्य प्रणाली के अनुसार शिक्षित करते है और समाज की कटु आलोचना की तनिक परवाह नही करते। कुसुम के ट्यूटर रामनारायण के हटाने का दूसरा ट्यूटर जगदीश प्रयत्न करता है। वह घटनाओ का जाल इस प्रकार रचता है कि रामनारायण के स्थान पर उसकी नियुक्ति होती है। जगदीश कुसुम के समक्ष शादी का प्रस्ताव रखता है। कुसुम और डा० रमेश को यह प्रस्ताव स्वीकार करना पडता है। नाटक की समाप्ति जगदीश और कुसुम की शादी से होती है।

कुहेस (सन् १९३७, पृ० ११०), ले० बाबू साहेब चौधरी, प्र० मिथिला ग्रामोदय परिषद, कारज, पोस्ट—करजापट्टी, दरभगा, *पात्र* पु० १३, स्त्री ३, *अक* २, *दृश्य* ११।
घटना-स्थल साधारण गृहस्थ का घर, सुवश पाठक का घर, जनक बाबू का दरवाजा, जनक मिश्र का आगन एव अस्पताल की एक कोठरी।

इस सामाजिक नाटक मे तिलक-दहेज की समस्या उठाई गई है। परपरा के अनुसार जनार्दन अपने बेटे अमरकान्त की शादी मे तिलक-दहेज के रूप मे प्रचुर धन मागते है। युवती सीता के पिता जनक परिस्थिति से

लाचार होकर शर्ते स्वीकार कर लेते है, किन्तु समय पर तिलक की पूरी राशि का न जुटा सकने के कारण वहाँ शादी नही हो पाती। प्रगतिशील युवक शकर के सत्प्रयास से उच्चगोत्रीय बालक रामकुमार से सीता का विवाह इस शर्त पर होता है कि तिलक की रकम बाद मे दी जाएगी। दुर्भाग्यवश जनक रुपए की व्यवस्था नही कर पाते है जिसके परिणामस्वरूप सध्या सीता और जनक दोनो की दुर्दशा करती है। उनके दुर्व्यवहार से पीडित होने पर जनक अपनी जमीन बेचकर सम्पूर्ण रकम अदा कर देता है। अपने पिता की ऐसी निर्दयता देखकर रामकुमार आत्महत्या कर लेता है, किन्तु शकर के समुचित सत्प्रयास से वह मृत्यु बच जाता है।

इस नाटक का अभिनय सर्वप्रथम नेता जी सुभाष इन्स्टीच्यूट सियालदह मे हुआ था और उसके बाद भी अनेक स्थलो पर इसका सफल अभिनय हुआ है।

कृषक दुर्दशा (वि० १९७९, पृ० ८१), ले० ईश्वरी प्रसाद शर्मा, प्र० हरिश्चन्द्र एण्ड ब्रादर्स, अलीगढ, *पात्र* पु० ७, स्त्री २, *अक* ५, *दृश्य* १७।
घटना-स्थल गाव, पुलिस स्टेशन, साधु कुटीर।

प्रस्तुत नाटक मुख्य रूप से भारतीय कृषक-समाज की दुर्दशा का वर्णन है। जो किसान देश को अन्न से आत्मनिर्भर बनाने मे योग देते है वे स्वय भुखमरी के शिकार बन जाते है और सामाजिक व्यवस्था उनकी ओर तनिक भी ध्यान नही देती। नाटक का नायक भोला एक किसान है जो प्राय सभी प्रकार की प्रतारणाओ का शिकार होता है। दीन-दुखियो की चीत्कार को सरकारी अधिकारी सुनते ही नही। अधिकारी-वर्ग और जनता भ्रष्टाचार के कारण तेजहीन हो गई है। रिश्वत खोरी, पुलिस के अत्याचार, सरकार द्वारा चापलूसो को प्रश्रय, न्याय की हत्या आदि के दृश्य समाज को खोखला बना रहे है। इन्ही प्रपीडनो के चगुल मे पडकर भोलानाथ का धन, परिवार, मान, सब कुछ नष्ट हो जाता है। अत मे उसकी भेट एक साधु से होती है जो उसे वैराग्य का उपदेश देता है। भोलानाथ के हृदय से काम, क्रोध लोभ मोह का तिरोभाव हो जाता है और वह अपने को पूर्ण आनदित पाता है। अब वह देश के उत्थान मे प्रवृत्त हो जाता है।

कृष्ण का संधि-संदेश (पृ० १०४) ले० विश्वम्भर सहाय प्रेमी, प्र० प्रेमी साहित्य प्रकाशन, मेरठ, *पात्र* पु० ७, स्त्री ६, *अक* २,
घटना-स्थल हस्तिनापुर, दुर्योधन का राजभवन।

इस पौराणिक नाटक मे कृष्ण के सधि-प्रयत्न की असफलता दिखाई गई है। भगवान श्री कृष्ण सधि का सदेश लेकर दुर्योधन के पास जाते है और पाडवो को उनका राज्य वापस करने का प्रस्ताव रखते है किन्तु दुर्योधन पाँच गाँव भी देने को तैयार नही होता है। कृष्ण असफल होकर लौट आते है। तत्पश्चात् पाडव युद्ध के लिए तैयार होते है। नाटक का मूल उद्देश्य दुर्योधन की हठवादिता को प्रदर्शित करना है जिसके परिणामस्वरूप महाभारत का भयंकर युद्ध होता है। नाटक मे कृष्ण को बन्दी बनाने के लिए दुर्योधन की दुरभिसन्धियो और कुटिलताओ का भी उल्लेख है किन्तु कृष्ण की दूरदर्शिता उनके पात्रो की रक्षा करती है और वे सकुशल पाडवो के पास लौट आते है।

कृष्ण-जन्म (सन् १९६१, पृ० ११७), ले० प्रेमनारायण टडन, प्र० हिन्दी साहित्य भडार, लखनऊ, *पात्र* पु० ५, स्त्री १, *अक* ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल राजप्रासाद, कस के महल के समीप, देवकी का निवास, बदीगृह।

इस पौराणिक नाटक मे कृष्ण-जन्म के समय वसुदेव देवकी की स्थिति दिखाई गई है। ज्योतिषी भविष्यवाणी करता है कि 'देवकी का आठवाँ पुत्र तेरा काल होगा'— मुष्टिक कस को बार-बार भविष्यवाणी की याद दिलाता है। देवकी का आठवाँ पुत्र नद के पास पहुँचा दिया जाता है। नद की पुत्री को लेकर वसुदेव चलते है तो मन मे चिन्ता करते है 'कि ससार मेरे इस कृत्य पर मुझको कितना धिक्कारेगा यदि अपने पुत्र की रक्षा

के लिए दूसरे की सतान का वध करा दूँ।' वसुदेव के अन्तर्द्वन्द्व की स्थिति का विशद चित्रण इसमे मिलता है। कस की क्रूरता से जनता क्षुब्ध होकर उसका विरोध करती है। नाटक के तीसरे अक मे नद की पुत्री का कस द्वारा वध दिखाया गया है। देवकी उस कन्या के वध से दुखी होकर कहती है —'मेरे पुत्र की प्राणरक्षिका वह कन्या मेरे लिए तो सभी सतानो से बढकर थी। अपनी सारी संतानो के सम्मिलित ममत्व से मैने छाती से लगाया था। अहा हतभागिनी मै!'

नाटक के अन्त मे देवकी कहती है कि 'भाग्यहीन मै यदि किसी प्रकार आत्म-हत्या का साहस जुटा पाती तो निश्चय ही तुम सब कष्टो से मुक्त हो जाते।'

वसुदेव देवकी को समझाते है कि जो भी विपत्ति आये उसे सहन करना कर्त्तव्य है। यदि तुम्हारी मृत्यु हो जाती तो कस तुम्हारी हत्या का दोषी मुझे ठहराकर सहज ही फॉसी दे देता।

वसुदेव और देवकी अपने पुत्र की दीर्घायु के लिए परम प्रभु से प्रार्थना करते है।

कृष्ण-मन्दिर (सन् १९६९, पृ० ८३), *ले०* एन० डी० कृष्णमूर्ति, *प्र०* भारतीय साहित्य मन्दिर, धारवाड, *पात्र* पु० ८, स्त्री २, अक ३।
घटना-स्थल सेठ की कोठी, मन्दिर।

इस सामाजिक नाटक मे मन्दिर से छात्रावास की आवश्यकता पर बल दिया गया है। सेठ सेतूराम अपने जीवन मे व्याज-खोरी से करोडो रुपया जमा करते है। वह अपनी पत्नी ललितम्मा की आत्मिक शान्ति के लिए कृष्ण-मन्दिर बनवाते है और शोषण के पाप-कृत्य को छोडकर भगवद्भक्ति मे लग जाते है। मन्दिर-पूजा के विचार से नारायण आयगर को पुजारी तथा रगण्ण को अपना सचिव नियुक्त करते है। किन्तु भीम-राव वकील मन्दिर मे सट्टा-जुआ-मद्य कृत्य प्रारम्भ करके सेतू राम के मन्दिर की पवित्रता नष्ट कर देते है। इस कारण समाज-सुधारक रामराव और लीला के प्रयास से मन्दिर को छात्रावास का रूप दे दिया जाता है।

कृष्ण-लीला (सन् १९२२, पृ० १३०), *ले०* आनन्द प्रसाद कपूर, *प्र०* उपन्यास बहार आफिस, काशी; *पात्र* पु० १२, स्त्री ७, *अक* ३, *दृश्य* ६, ८, ८।
घटना-स्थल मथुरा, गोकुल, यमुनातट, गोपियो का घर, गोवर्धन पर्वत।

इस नाटक मे कृष्ण की विविध लीलाओं—दान लीला, माखन चोरी, गोवर्धन धारण, रासलीला की घटनाओ और ग्वाल बाल की प्रेम कथा को गठित किया गया है। परब्रह्म स्वरूप कृष्ण मे रक्षक की स्थापना की गई है। नाटक मे गीत, दोहा, सवैया तथा उर्दू के शेर जोड दिए गए है।

कृष्णलीला नाटक (सन् १९०७, पृ० ३४), *ले०* रूपनारायण शर्मा पाण्डेय, *प्र०* ऐंग्लो ओरियन्टल प्रेस, लखनऊ, *पात्र* पु० ७, स्त्री ६, *अक* ३, *दृश्य* ३, ३।
घटना-स्थल गोपियो का घर, वृन्दावन।

इस पौराणिक नाटक मे थियेटर की रीति पर गोपियो का कृष्ण प्रेम दिखाया गया है। इसमे कालिय नाग-पाश तक की कथा का अश लिया गया है। कृष्ण जब यमुना मे कालिय नाग के पास चले जाते है तो राधिका घबरा जाती है। कृष्ण उन्हे सान्त्वना देते हुए कहते है "प्रेममयी राधे? मुझे इतनी दूर खोजते-खोजते क्यो आई? मै तो तुम्हारे हृदय मे हूँ, मुझे जब हृदय मे ढूढोगी, देख पाओगी।"

कृष्ण-सुदामा (सन् १९३६, पृ० ४०), *पात्र* पु० ५, स्त्री ४, *दृश्य* ५।
घटना-स्थल सदीपन का आश्रम, सुदामा की कुटिया, कृष्ण का राजभवन।

इस पौराणिक नाटक मे सुदामा का औदार्य दिखाया गया है। श्रीकृष्ण सुदामा की मित्रता को दिखाकर तथा अन्त मे श्रीकृष्ण द्वारा मिला धन गरीबो की सहायता, गोशाला और अस्पताल के निर्माण मे व्यय करने के लिए सुदामा सपत्नीक सकल्प करते है। शेष कथा पूर्व जैसी है। कृष्ण-सुदामा की मूल कथा से इसकी कथा मे कुछ अन्तर है।

संवादों में गीतों का समावेश है।

कृष्ण सुदामा (सन् १९५९, पृ० १०८), ले० हरिनाथ व्यास, *पात्र* पु० १३, स्त्री ७, *अंक* ३, *दृश्य* ८, ८, ४।
घटना-स्थल सुदामा का पर्णकुटीर, पथ, द्वारका।

इस पौराणिक नाटक में कृष्ण की सुदामा के प्रति प्रगाढ़ मैत्री दिखाई गई है। कृष्ण सुदामा की मूलकथा ज्यों-की-त्यों ग्रहण की गई है।

कृष्ण सुदामा (सन् १९२१, पृ० १०६), ले० जमुनादास मेहरा, *पात्र* पु० ८, स्त्री ४, *अंक* ३, *दृश्य* ६, ६, ४।
घटना-स्थल सुदामा का पर्णकुटीर, पथ, द्वारका, पूजागृह।

इस पौराणिक नाटक में कृष्ण-सुदामा-मैत्री और सुदामा का अपनी अनुपस्थिति काल में पत्नी के चरित्र पर शंका और उसका निवारण दिखाया गया है। इस नाटक की भी वही प्रसिद्ध पौराणिक कथा है जिसमें कृष्ण-सुदामा के अटूट प्रेम का चित्रण है। नाटक के अन्त में सुदामा द्वारिका से लौटने के बाद अपनी पत्नी सुशीला के चरित्र पर सन्देहकर उससे वाद-विवाद करते हैं, किन्तु पूजा के समय श्रीकृष्ण स्वयं प्रकट हो उसका सन्देह निवारण कर देते हैं।

कृष्ण सुदामा (सन् १९५०, पृ० ८०) ले० . न्यादरसिंह, प्र० . देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ६, *पात्र* पु० १४, स्त्री ६, *अंक* ३।
घटना-स्थल सदीपन गुरु का आश्रम, जंगल, सुदामा का पर्णकुटीर, द्वारकाधीश का राजप्रासाद।

इस पौराणिक नाटक में भी कृष्ण-सुदामा की मैत्री अध्ययन-काल से अन्त तक दिखाई गई है। कृष्ण-सुदामा अपने गुरु सन्दीपन के आश्रम में साथ-साथ पढ़ते हैं। एक दिन गुरु-पत्नी जंगल से लकड़ी लाने के लिए कृष्ण-सुदामा को भेजती है। साथ में खाने के लिए चने भी दे देती है। लकड़ी चुनते-चुनते जब कृष्ण थक जाते हैं तो गुरु-पत्नी द्वारा दिए गए चने सुदामा से माँगते हैं। सुदामा सारे चने स्वयं खाकर कृष्ण से झूठ बोल देता है कि चने किसी ने चुरा लिए। कृष्ण, सुदामा की चालाकी तथा असत्य को जान जाते हैं और इसी के परिणाम स्वरूप सुदामा को घोर दरिद्रता का जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

दुखी सुदामा की पत्नी सुशीला एक दिन सुदामा को उनके सखा कृष्ण के पास द्वारिका भेजती है और साथ में थोड़ा से चावल भी श्रीकृष्ण के लिए दे देती है। कृष्ण प्रेम से चावल खाकर सुदामा की दरिद्रता को दूर-कर अपनी अटूट मित्रता का परिचय देते हैं।

कृष्ण सुदामा नाटक (सन् १९४० पृ० ८०), ले० वेणीराम त्रिपाठी 'श्रीमाली', प्र० : ठाकुरप्रसाद एण्ड संस, वाराणसी, *पात्र* पु० १२, स्त्री १२, *अंक* ३, *दृश्य* ७, ५, ५।
घटना-स्थल सदीपन आश्रम, कृष्ण का राजभवन, सुदामा की कुटिया।

इस पौराणिक नाटक में कृष्ण-सुदामा की मैत्री का परिचय मिलता है। कृष्ण और सुदामा गुरु सदीपन के यहाँ एक साथ पढ़ने जाते हैं। गुरु-पत्नी द्वारा दिए गए चने को सुदामा, कृष्ण की चोरी से अकेले खा जाते हैं जिसका उन्हें बड़ा प्रायश्चित्त करना पड़ता है। सुदामा अपनी पत्नी सुषमा द्वारा दिए गए चावलों को लेकर कृष्ण के पास जाते हैं। भगवान कृष्ण सुदामा से दौड़कर मिलते हैं, और भाभी के दिए गए उपहार को रुक्मिणी तथा सत्यभामा के साथ प्रेम-पूर्वक खाकर उस उपहार के बदले सुदामा को धन-सम्पन्न कर देते हैं और अन्त में सुदामा अपनी पत्नी सहित भगवान के चरणों में ध्यान लगाते हुए बड़े सुख का जीवन बिताते हैं।

कृष्ण सुदामा (वि० २०२३, पृ० २३), ले० : सीताराम चतुर्वेदी, प्र० टाउन डिग्री कॉलेज, बलिया, *पात्र* पु० ८, स्त्री २, *अंक* ४, *दृश्य* १, १, १, १।
घटना-स्थल आश्रम का रमणीक वन्य भाग, घर का अलिंद, द्वारिका में श्रीकृष्ण का भवन, नवीन भवन।

इस पौराणिक नाटक में कृष्ण और

सुदामा की मैत्री की प्रसिद्ध कथा अकित की गयी है। इसके चारो अक एक दृश्यात्मक है। यह टाउन डिग्री कालेज, बलिया के छात्रो द्वारा कृष्ण-जन्माष्टमी पर १९६५ मे अभिनीत हुआ।

कृष्ण सुदामा (सन् १९५०, पृ० ६४), ले० श्री बालभट्ट, प्र० गिरधारीलाल थोक पुस्तकालय, खारी बावली, दिल्ली, *पात्र* पु०१५, स्त्री ६, *अक* ३, *दृश्य* ६, ५, ३। *घटना-स्थल* सदीपन आश्रम, द्वारिका, सुदामा की कुटिया।

इस पौराणिक नाटक मे कृष्ण-सुदामा की मैत्री के साथ सुदामा की कृष्ण-भक्ति वर्णित है। सुदामा एक दीन ब्राह्मण है, जो अनेक विपत्तियो के सहने पर भी कृष्ण-भक्ति नही छोडते। सतयुग, द्वापर, त्रेता तथा कलियुग ईश्वर की चार शक्तियाँ है। कलियुग तथा अधर्म-शक्तियाँ द्वापर के ब्राह्मण सुदामा को धर्म से विचलित करने के लिए अनेक कष्ट देती है, किन्तु सतयुग, द्वापर और त्रेता सुदामा की मदद करते है। नारद जी मृत्यु-लोक और स्वर्ग-लोक मे खबर पहुँचाते रहते है। सुदामा की पतिव्रता पत्नी पद्मा सदा सुदामा के सुख-दुख की सगिनी है। पदमा के कहने पर वह कृष्ण के लिए उपहार लेकर द्वारिका जाते है। कृष्ण सुदामा से वडे प्रेम से मिलते है। सुदामा की भक्ति से प्रसन्न होकर शिव और पार्वती उन्हे आशीर्वाद देते है। अन्त मे नारद जी सुदामा को उनकी कुटिया की जगह नवनिर्मित महल मे पहुँचा देते है। कलियुग और अधर्म हार मानकर श्रीकृष्ण को मस्तक झुकाते है।

कृष्णा कुमारी (सन् १९६२, पृ० ६८), ले० चतुर्भुज, प्र० साधना मदिर, पटना-४, *पात्र* पु० ९, स्त्री १, *अक* ३, *दृश्य* ९। *घटना-स्थल* महल, शिविर, कारागार।

इस ऐतिहासिक नाटक मे मेवाड की रक्षा के लिए कृष्णा कुमारी का वलिदान दिखाया गया है। मेवाड का भाग्य-सूर्य अस्त हो रहा है। मेवाड मे बार-बार मराठे बलात् कर वसूल कर रहे है। सिंधिया, जोधपुर और पिडारी डाकुओ का सरदार अमीर खा सम्मिलित रूप से मेवाड पर आक्रमण करने की योजना बना रहे है। मेवाड की राजकुमारी कृष्णा से जोधपुर-नरेश और जयपुर नरेश दोनो विवाह करना चाहते है। मेवाड युद्धभूमि वन रही है। ऐसे समय मे मेवाड को नष्ट होने से बचाने के लिए कृष्णा विष पानकर महात्याग का परिचय देती है।

कृष्णा ले० सियारामशरण गुप्त, प्रकाशित 'प्रभा' पत्रिका के अप्रैल-मई-जून, १९२१ मे। *पात्र* पु० १, स्त्री १, *अक-रहित* : *दृश्य* ३।

राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत यह एक ऐतिहासिक गीतिनाट्य है जिसमे कृष्णा के आत्म-बलिदान के मार्मिक प्रसग को प्रस्तुत किया गया है। उदयपुर नरेश भीमसिह की पुत्री राजकुमारी कृष्णा अपूर्व सुन्दरी है। उसका यह सौन्दर्य उसके जीवन के लिए अभिशाप सिद्ध होता है। जयपुर के राजा जगतसिह तथा जोधपुर नरेश मानसिह दोनों कृष्णा के रूप पर मोहित होकर उससे विवाह करना चाहते है। इसके लिए वे उदयपुर पर आक्रमण करने तक को उद्यत हो जाते हैं। उधर सरदार अमीर खा उस युद्ध मे मानसिह का समर्थन करता है। इस युद्ध-आशका से राजा भीमसिह के समक्ष देश की रक्षा का प्रश्न उपस्थित होता है। राष्ट्र सकट के निवारण हेतु भीमसिह पुत्री की हत्या करना चाहता है। वह सोचता है कि जब तक कृष्णा जीवित है तब तक युद्ध की आशका वनी रहेगी। कृष्णा आत्महत्या द्वारा पिता को इस द्वन्द्वात्मक स्थिति से उबार लेती है।

कृष्णापमान (वि० १९७५, पृ० ११७), ले० गणेशदत्त शर्मा गौड, प्र० साहित्य कल्पलता कार्यालय, भागलपुर, *पात्र* पु० ३५, स्त्री २, *अक* ५।
घटना-स्थल दुर्योधन का राजप्रासाद, पाण्डव आवास, कुरुक्षेत्र, युद्धभूमि।

इस पौराणिक नाटक मे दुर्योधन द्वारा कृष्ण के अपमान और उसके परिणाम का विवेचन है। इसका कथानक महाभारत पर आधारित है। इसमे कौरव-पाडव युद्ध का

वर्णन है। कृष्ण का अपमान सुनकर पाडव दृढ प्रतिज्ञा करते है कि हम कौरवो का विनाश करके ही विश्राम लेगे। इसमे दुर्योधन के अत्याचार से लेकर महाभारत युद्ध तक की कथा समेटी गई है।

कृष्णार्जुन युद्ध (सन् १९१८, पृ० १०२), ले० माखनलाल चतुर्वेदी, प्र० : प्रताप कार्यालय कानपुर, पात्र पु० २२, स्त्री ७, *अक* ४, *दृश्य* ४, ५, ७, ६।
घटना-स्थल राजभवन, ऋषि आश्रम, तपोवन।

इस पौराणिक नाटक मे कृष्ण और अर्जुन का युद्ध दिखाया गया है। एक दिन विमान यात्रा करते समय चित्रसेन गधर्व के मुँह से पान की पीक तर्पण करते हुए गालव ऋषि की अजलि मे गिरी। क्रुद्ध गालव ऋषि तत्कालीन शासक श्रीकृष्ण को चित्रसेन के इस व्यवहार के लिए दोषी ठहराने लगे। गालव ऋषि का क्रोध तभी शान्त होता है जब कृष्ण चित्रसेन के वध की प्रतिज्ञा करते है। प्रतिज्ञानुसार श्रीकृष्ण चित्रसेन के वध के लिए प्रस्तुत होते है। इधर नारद के परामर्श से चित्रसेन पाण्डवो के यहाँ सहायतार्थ पहुँचता है। किन्तु सहायता के प्रश्न पर अर्जुन, भीम और द्रौपदी का विवाद अनिर्णीत रह जाता है: अत चित्रसेन लौटकर नारद के मतानुसार चिता जलाकर भस्म होने को प्रस्तुत होता है ताकि कृष्ण उसका वध न कर सके और उनकी प्रतिज्ञा अपूर्ण रह जाये। इधर अर्जुन-पत्नी सुभद्रा चित्रसेन को उसकी रक्षा का वचन देती है और अर्जुन से कृष्ण के साथ युद्ध करने का आग्रह करती है। फलत कृष्ण और अर्जुन का युद्ध छिड जाता है जिसमे कृष्ण के प्रहार से अर्जुन आहत होते हैं। अर्जुन पाशुपतास्त्र का प्रयोग करते है जिससे भयकर स्थिति उत्पन्न हो जाती है। नारद के प्रयास से ब्रह्मा गालव ऋषि से इस भयावह स्थिति को सुधारने की प्रार्थना करते है। गालव चित्रसेन को क्षमा कर देते है और युद्ध समाप्त हो जाता है।

केलिगोपाल नाटक (रचनाकाल . १५४०, पृ० २०, प्रकाशन १९६८), ले० : शंकरदेव, प्र० : हिन्दी विद्यापीठ, आगरा *पात्र* पु० ३, स्त्री ३; *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल वृन्दावन, गोकुल, यमुना तट।

इस धार्मिक नाटक मे कृष्ण की रासलीला का चित्र खीचा गया है। सस्कृत श्लोको मे कृष्ण की वन्दना के उपरात देशी भाषा मे कृष्ण स्तुति सुनाई पडती है। सूत्रधार सामाजिको को कृष्ण भगवान, अघ, वक, कुवलय, धेनुक, केशि, कस आदि की वधसवधी लीलाओ का उल्लेख करते हुए वृन्दावन की शरद रासलीला की ओर सकेत करता है। कृष्ण वेणु-वादन करते हुए गोपियो के सहित मच पर आते है। कृष्ण की वेणु-ध्वनि सुनकर गोपियाँ झुण्ड बनाकर आती है। कृष्ण और गोपियो का सवाद होता है। कृष्ण गोपियो को अपने-अपने घर जाने का आदेश देते है किन्तु गोपियाँ भगवान् के चरणो को छोडना नही चाहती। अत भगवान् उन पर कृपा करते हुए रासलीला प्रारम्भ करते है। इसी समय शखचूड नामक राक्षस गोपियो के समक्ष आता है। गोपियो को भयभीत देख कृष्ण उसे मार भगाते हैं और रासलीला प्रारम्भ होती है।

जब गोपियो को अपने रूप-यौवन पर गर्व होने लगता है तब भगवान् अन्य ब्रजागनाओ को छोडकर राधा के साथ तिरोहित हो जाते है। भगवान् के अदृश्य होने पर गोपियाँ अत्यन्त व्याकुल होती है और वनस्पतियो से उनका पता पूछने लगती है। राधा को भी जब इस बात का गर्व होता है कि भगवान् सबको छोडकर मुझे ही प्यार करते है। उसी समय कृष्ण वहाँ से भी तिरोहित हो जाते है। गोपियाँ राधा के पास कृष्ण को खोजते हुए पहुँचती है। गोपियाँ और राधा कृष्ण के विरह मे क्रन्दन करती है। उनकी दशा देखकर कृष्ण की आँखो मे आँसू आ जाते है और वे गोपियो को दर्शन देते है। पुन रासलीला प्रारम्भ हो जाती है। इसी समय फिर शखचूड नामक राक्षस आता है और एक गोपी को लेकर भाग जाता है। वह गोपी आर्तनाद करती है और कृष्ण शाल वृक्ष उखाडकर उसके मस्तक पर प्रहार करते है। राक्षस के मस्तक से रक्त निकलता देखकर गोपियाँ प्रसन्न होती

है। कृष्ण गोपियो के साथ जल-क्रीडा करते है। रात व्यतीत होने पर कृष्ण सबको घर भेज देते है।

केवट (सन् १९५२, पृ० ११६), ले० वृन्दावनलाल वर्मा, प्र० मयूर प्रकाशन, झासी, पात्र पु० ७, स्त्री ५, अक ३। *घटना-स्थल* गाँव, सभा, मूर्तिस्थल।

इस राजनीतिक नाटक मे नाना प्रकार की दलबन्दी के मूल कारणो को ढूँढने का प्रयास है। इसके पात्र कल्पित है। दलबन्दी के कारण जनता का हित न होकर किस प्रकार अहित होता है उसी को चित्रित किया गया है। इस नाटक मे गोदावरी की नि स्वार्थ सेवा और क्षमाशीलता से प्रभावित होकर जनता उसकी मूर्ति का निर्माण करती है। मूर्ति उद्घाटन के अवसर पर नायिका स्पष्ट शब्दो मे नगर मे फैली दलबन्दी की ओर सकेत करके कहती है—"दलबन्दी की कीचड मे लथपथ होकर आप समझते है कि हमने गगा-स्नान किया और हम उस मूर्ति के पूजन के और भी अधिकारी हो गये है। पर असल मे आप दलदल को उस मूर्ति का दर्पण बनाते है।" इसमे नाटककार का उद्देश्य तत्कालीन नागरिक जीवन मे राजनैतिक कारणो से व्याप्त दलबन्दी के दुष्परिणामो की ओर सकेत करने का है।

कैकेयी (पृ० १२८); ले० रत्नकान्त साहित्यालकार, प्र० आनन्द पुस्तक भवन, कोठी, पात्र पु० १२, स्त्री ८, अक-दृश्य रहित।
घटना-स्थल · वशिष्ठ का आश्रम, देवलोक, वनपथ, लका।

इस धार्मिक नाटक मे कैकेयी का चरित्र नये रूप मे दिखाया गया है। गुरु वशिष्ठ के आश्रम मे राजा दशरथ उनसे राम के राज्याभिषेक की आज्ञा लेने आते है। इधर नारद के द्वारा यह बताने पर सम्पूर्ण देवलोक चिन्तामग्न है। राक्षसो का अत्याचार अधिक बढा हुआ है। सभी यही सलाह देते है कि किसी-न-किसी तरह राम को वन मे रहना चाहिए जिससे वे रावण का वध कर सके। सरस्वती के द्वारा यह प्रार्थना कैकेयी के कानो तक चली जाती है। कैकेयी के द्वारा मागे हुए वरो के अनुसार राम चौदह वर्ष के लिए वन जाते है। परन्तु इस घटना का सब को पता चल जाता है। सब कैकेयी की सराहना करते है। राम के थोडे कष्ट से सारे प्राणियो का दु ख टल जाता है और कलकिनी विमाता कैकेयी धर्ममयी आदर्श माता के रूप मे प्रतिष्ठित होती है।

कैकेयी कल्याण (सन् १९६६, पृ० ८०), ले० दुर्गाशकर प्रसाद सिह, प्र० नव साहित्य मन्दिर, शाहाबाद, पात्र पु० १०, स्त्री ४, अक २, दृश्य ६, ६।
घटना-स्थल दृश्यविधान—दशरथ का मत्रणा-भवन, कैकेयी का महल।

इस धार्मिक नाटक मे रामकथा को आधुनिकता की दृष्टि से देखा है और इसकी कथावस्तु मे रामायण की प्रसिद्ध रामकथा को निम्नलिखित रूप मे बदल दिया गया है—

(१) भरत को राजगद्दी का पूर्ण अधिकारी सिद्ध किया गया है।
(२) अयोध्या की राजनीति मे दो पक्ष दिखाए गए है। एक पक्ष भरत का समर्थक था, दूसरा राम का।
(३) कैकेयी को निर्दोष सिद्ध किया गया है।

इसमे रामायण की कथा को आधुनिक रूप देने का प्रयास है।

कैद और उड़ान (सन् १९५०, पृ० १५६, ले० उपेन्द्रनाथ अश्क, प्र० नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, पात्र पु० ६, स्त्री ६।

इस सामाजिक नाटक मे नारी और पुरुष के स्वाभाविक सघर्षो से उत्पन्न होनेवाली उलझनो, विकारो का दृश्य प्रस्तुत किया गया है। अप्पी के माता-पिता अपनी बडी लडकी की मृत्यु के उपरान्त उसकी गृहस्थी उसकी छोटी बहिन अप्पी के गले मे बाँध देते है। अप्पी को न तो गृहस्थी सम्हालने का ही शौक था, न ही बच्चो से प्रेम। वह घुटन-सी अनुभव करती रहती है। एक दिन अपने पति प्राणनाथ से सुनती है कि दिलीप, उसके सपनो का देवता,

आ रहा है तब उसमे एकाएक उल्लास जाग्रत होता है। दिलीप आकर अफी के गार्हस्थ्य जीवन की सराहना करता है। तब अफी की आत्मा फूट पडती है। दिलीप चला जाता है। अफी को अनुभव होता है कि वह शव की तरह रह गई है और उसके शरीर का खून कभी तृप्त न होनेवाली जोंक ने पी लिया है। यही इस कैंद का अन्त है।

कैंद की कराह (सन् १९५०, पृ० ३६), ले० शिवरामदास गुप्त, प्र० उपन्यास वहार आफिस, काशी, *पात्र* पु० १२, स्त्री ३।
घटना-स्थल आगरा का दुर्ग।

इस ऐतिहासिक नाटक मे सम्राट शाहजहाँ के बन्दी जीवन की करुण कहानी चित्रित की गई है। शाहजहाँ को जब उसका पुत्र औरगजेब राज्य-लोभ मे गिरफ्तार करके जेल मे डाल देता है तो उस समय मे शाहजहाँ के हृदय से निकले उद्‌गारो का चित्रण इस नाटक मे हुआ है।

कोई न पराया (सन् १९६१, पृ० ११०), ले० आरिगपूडि ए० रमेश चौधरी, प्र० भारती साहित्य मदिर, दिल्ली, *पात्र* पु० ७ स्त्री ५, *अक* ४, *दृश्य* ३, ३, ५, ४।
घटना-स्थल जमीदार की कोठी, सभा-स्थल, विवाह-मडप।

इस सामाजिक नाटक मे विजातीय एव स्वेच्छा विवाह की आवश्यकता दिखाई गई है। वसन्त रेड्डी जमीदार राम रेड्डी का पुत्र है। परन्तु आधुनिक शिक्षा-दीक्षा मे पला होने के कारण परम्परा से मुक्त होना चाहता है। सहृदय होने के कारण अपने पुराने नौकर नीलम्मा की दुखभरी व्यथा-कथा सुनकर अपने मित्र शास्त्री से उसको कुछ धन दिला देता है। वसत रेड्डी के पिता राम रेड्डी गरीब नौकरो की सहायता की अपेक्षा मन्दिर के पुजारी को भगवान के नाम पर धन देना उचित समझता है। वेकटरत्न अपनी पुत्री का विवाह-सम्बन्ध वसन्त रेड्डी से करने का यत्न करता है। सीताराम शास्त्री विजातीय विवाह का प्रचार करते है। वरलक्ष्मी अपने पुत्र वसन्त का विवाह अपने भाई की लडकी से करना चाहती है और राम रेड्डी वेकट की पुत्री से। वसन्त वेकटराव की लडकी से विवाह नही करना चाहता क्योंकि उसके चरित्र के विषय मे इधर-उधर चर्चा सुनता है। माता-पिता मे मतैक्य न होने के कारण वसन्त अभिभावको की इच्छा के विरुद्ध मैत्रेयी से विवाह कर लेता है।

कोटोरा खेला झुमुरा (सन् १९६८ मे प्रकाशित), (रचनाकाल १६वी शताब्दी), ले० माधवदेव, प्र० हिन्दी विद्यापीठ, आगरा, *पात्र* पु०, ३ स्त्री १, *अक और दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल वन, जमुना घाट, मथुरा।

इस अकिया नाटक मे कृष्ण तथा ग्वालो की गोरस वेचनेवाली गोपियो से छेड-छाड दिखाई गई है। पहले स्तुति मे इन्द्र द्वारा वैद्य श्रीकृष्ण की तथा दूसरी स्तुति मे शेषशायी विश्वनाथ की वन्दना है। श्रीकृष्ण अपने सखा के साथ वन मे जाते है। वहाँ राधा तथा अन्य गोपियाँ पुकार-पुकार नवनीत वेचती है। श्रीकृष्ण तथा उनके सखा उन्हे वेचने से रोकते हुए दण्ड माँगते है। राधा कस से शिकायत करने की धमकी देती है। वे सब गोपियो को बन्दी कर लेते है। तब गोपियाँ श्रीकृष्ण को नृत्य दिखाने पर दूध, दही तथा लवण देने का वायदा करती है। सभी गोपसखा तथा कृष्ण कोटोरा खेला का नृत्य करते है। दीनदयाल भक्ति के अधीन होकर ही सब कौतुक दिखाते है। इसमे भक्तो के प्रेमी कृष्ण की महिमा का वर्णन है।

कोणार्क (सन् १९५१, पृ० १०७), ले० जगदीशचन्द्र माथुर, प्र० भारत भारती, इलाहाबाद, *पात्र* पु० ९, स्त्री पात्र नही है, *अक* ३, *दृश्य-रहित*
घटना स्थल शिल्पी का निवास स्थान।

'कोणार्क' मे श्री जगदीशचन्द्र माथुर ने कलाकार के शाश्वत अतर्द्वन्द्व और अत्याचारी सत्ताधारियो से सघर्ष दिखाया गया है।

कलिग नरेश महाराज नरसिहदेव की

आज्ञा से कोणार्क के सूर्य मन्दिर का निर्माण प्रारम्भ होता है। मंदिर बनते समय इसके शिखर की स्थापना असंभव हो जाती है। धर्मपद नामक एक शिल्पी अपनी प्रतिभा से इसके शिखर की बड़ी कुशलता से स्थापना करता है। नरसिंहदेव धर्मपद का अभिनन्दन करते हैं। धर्मपद महाराज को एक यथार्थ से अवगत कराता है कि शिल्पियों को पिछले तीन महीने से वेतन नहीं मिला है और महामात्य चालुक्य ने शिल्पियों की भूमि भी छीन ली है। महाराज को इस बात से आश्चर्य होता है क्योंकि उन्होंने इस प्रकार की कोई आज्ञा नहीं दी। इसी बीच उनका महामात्य चालुक्य अपने आप को कलिंग का नरेश घोषित कर देता है। उसकी सेनाएँ मंदिर को चारों ओर से घेर लेती हैं। धर्मपद के पिता शिशु चालुक्य से धर्मपद के प्राणों की भीख माँगते हैं, लेकिन धर्मपद को मार दिया जाता है। शिशु कोणार्क को ऐसी युक्ति से खंडित कर देता है कि एक विशाल मूर्ति चालुक्य के ऊपर गिरती है और उसकी तत्काल मृत्यु हो जाती है।

इस नाटक में ग्रीक पद्धति के अनुकूल 'प्रोलॉग' और 'एपिलॉग' का उपयोग है और संस्कृत नाट्य-पद्धति में 'विष्कम्भक' को 'उपकथन' के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

कौमुदी महोत्सव (सन् १९४९, पृ० ४५), ले० डॉ० रामकुमार वर्मा, प्र० साहित्य भवन लि० प्रयाग, पात्र पु० ७, स्त्री १, अंक और दृश्य रहित।
घटना-स्थल कुसुमपुर की विजयभूमि, शरद-पूर्णिमा की रात, नृत्य-शिविर।

इस ऐतिहासिक नाटक में कौमुदी महोत्सव के वर्णन का कारण दिखाया गया है। कुसुमपुर की विजय के उपरान्त सम्राट चन्द्रगुप्त शरदपूर्णिमा के अवसर पर कौमुदी महोत्सव की घोषणा करता है। चारों ओर उल्लास का वातावरण बनाया जा रहा है। इसी अवसर पर नगर के कुटिल गुप्तचर चन्द्रगुप्त के विश्वसनीय बन प्रतिष्ठित पदों पर आसीन हो जाते हैं। धूर्त वसुगुप्त विषकन्या अलका (राजनर्तकी) के द्वारा चन्द्रगुप्त के वध की योजना बनाता है। चन्द्रगुप्त अलका के नृत्य पर झूम उठता है। अलका डोरे डालती हुई कहती है 'जिस समर्पण में भाषा होती है, वह व्यापार बन जाता है, और हृदय का व्यापार कभी नहीं होता।' अलका से प्रभावित चन्द्रगुप्त कहता है 'बहुत सुन्दर राजनर्तकी अलका! तुम जितनी सुन्दर हो, उतना ही सुन्दर तुम्हारा नृत्य है। यह लो अपना पुरस्कार।' इसी अवसर पर आर्य चाणक्य उपस्थित होकर चन्द्रगुप्त को चेतावनी देता है—'यदि इस क्षणिक विश्राम में ही जीवन का अन्त हो गया तो?' वह महोत्सव रोक देता है। चन्द्रगुप्त तथा चाणक्य के मध्य अधिकार के प्रश्न को लेकर विवाद बढ़ जाता है। चाणक्य अपने सैनिकों से अलका तथा धूर्त वसुगुप्त को बन्दी बना लेता है। उनके मायाजाल को खोल देता है। चन्द्रगुप्त अपना अपराध स्वीकार करता हुआ चाणक्य के पैरों पर गिर पड़ता है। उसके मुख से लगातार एक आवाज निकलती है 'कौमुदी महोत्सव नहीं होगा।'

कौशाम्बी (सन् १९५२, पृ० ८२), ले० डॉ० यदुवंशी, प्र० पीताम्बर बुक डिपो, दिल्ली, पात्र पु० १०, स्त्री नहीं है।
घटना-स्थल कौशाम्बी।

इस ऐतिहासिक नाटक में कौशाम्बी का इतिहास प्रारम्भ से वर्णित है। रेडियो के लिए लिखे गए इस रूपक में विभिन्न कालों के पात्र छाया रूप में उसके सम्मुख आते हैं और अपने युग की कौशाम्बी से सम्बन्धित मुख्य-मुख्य घटनाएँ बताते हैं। इस नगरी को कृतयुग में चेदिराज उपरिचर वसु के पुत्र कुशाम्ब ने बसाया था जिसके समय में कौसुरु बिन्दी कौशाम्बेय आदि मन्त्रद्रष्टा ऋषि हुए। कलियुग के प्रथम चरण में अर्जुन के वंशज निचक्षु ने हस्तिनापुर के बाढ़ में ध्वस्त हो जाने पर पुनः इसे राजधानी बनाया और वह एक बार पुनः वैभव का केन्द्र बन गया। बौद्धकाल में यहाँ उदयन की राजधानी बनी। प्रारम्भ में उदयन का विरोध होने पर भी बाद में यह बौद्ध-धर्म का प्रमुख केन्द्र रहा। अशोक के राज्य-काल में यहाँ सघ [illegible]

प्रारम्भ हो गया था परन्तु उनके प्रयत्नो से वह कम हुआ। अशोक के सौ वर्ष बाद शुँग राज्य होने पर जैनमत का भी इस नगरी मे पदार्पण हुआ पर दोनो धर्मावलम्बी शाति-पूर्वक रहते थे। समुद्रगुप्त ने इसी कौशाम्बी के युद्ध मे शत्रुओ को पराजितकर विशाल गुप्त साम्राज्य की स्थापना की। धीरे-धीरे बौद्धमत के पतन के साथ कौशाम्बी की श्री नष्ट होती गई। यहाँ तक कि ह्यूनचाँग के समय उसकी अत्यन्त दयनीय दशा हो गई।

क्रान्ति (सन् १९३९, पृ० १२९), ले० डा० बलदेवप्रसाद मिश्र, प्र० चाद कार्यालय, इलाहाबाद, *पात्र* पु० ११, स्त्री ४, अक ३।

इस जीवनीपरक नाटक मे शकराचार्य की धार्मिक दिग्विजय का सरस वर्णन है। शकराचार्य ने १६ वर्ष की उम्र मे ही समस्त वेद-वेदागो की शिक्षा प्राप्त कर ली। शकर अपनी माँ से सन्यास ग्रहण करने की इच्छा प्रकट करते है। माँ यह वचन लेकर सन्यास की अनुमति देती है कि मेरी मृत्यु के समय आकर तुम दाह-सस्कार करोगे। शकर माँ को वचन देकर वाराणसी पहुँचते है और गुरु से दीक्षा ग्रहण करते है।

शकर मण्डन मिश्र को शास्त्रार्थ मे पराजित करते है लेकिन उनकी धर्म-पत्नी भारती से काम-कला पर प्रश्न पूछने पर एक मास की अवधि माँगते है। इस अवधि मे अमरूक के शरीर मे प्रवेश करने से काम-कला के रहस्यो की जानकारी पाकर भारती को भी पराजित करते है। मण्डन मिश्र और भारती शकर के शिष्य बन जाते है। शकर अन्तिम समय मे माँ के पास पहुँच-कर स्वय ही माँ का दाह-सस्कार करते है। स्वजन शकर के इस कृत्य का विरोध करते है। शकराचार्य सम्पूर्ण भारत पर धार्मिक विजय प्राप्तकर देश की चारो दिशाओ मे मठो की स्थापना करते है।

क्राति का देवता चन्द्रशेखर आजाद (सन् १९६२, पृ०८२), ले० विष्णुदत्त कविरत्न, प्र० प्रेम प्रकाशन, चर्खेवालान, दिल्ली, *पात्र* पु० २४, *अक-रहित, दृश्य* १३। *घटना-स्थल* · घर का आँगन, डेन साहब की कोठी, अदालत, दिल्ली का चौक, जलिया-वाला बाग।

इस ऐतिहासिक नाटक मे क्रातिकारी सेनानी चन्द्रशेखर आजाद की वीरता का वर्णन है। अपने देश को पराधीनता से मुक्त करने के लिए चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिह, बिस्मल, राजगुरु, सुखदेव, आदि वीर सैनिक अग्रेजो के खिलाफ आन्दोलन शुरू करते है। ये क्रातिकारी हिसात्मक नीति को महत्त्व देते हे। गाँधी जी अहिसावादी है। यही दोनो की नीतियो का मतभेद है। भगतसिह, राजगुरु तथा सुखदेव गिरफ्तार हो जाते है। इनको अग्रेज अफसरो द्वारा अनेक कष्ट दिए जाते है ये वीर शहीद होते हुए फाँसी के फन्दे को चूम लेते है। आजाद को वडा दुख होता है। लेकिन फिर भी वे अपनी क्रान्ति को आगे बढाने के लिए अपना परिश्रम जारी रखते है। अचानक एक बार इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क मे उनकी अग्रेजी सिपाहियो के साथ मुठभेड हो जाती है। अन्त मे अग्रेज सैनिको को मौत के घाट उतारते हुए आजाद भी मातृभूमि की बलि-वेदी पर अपने प्राण न्यौछावर कर देते है। कवि अशफाकुल की यह पक्ति बडी ही रोचक है कि—

'शहीदो की चिताओं पर लगेगे हर बरस मेले।
वतन पे मरनेवालो का यही बाकी निशा होगा।।'

क्रान्तिकारी (सन् १९५३, पृ० ८०), ले० उदयशकर भट्ट, प्र० राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, *पात्र* ११, *अक* १, *दृश्य* ४। *घटना-स्थल* मनोहर का बँगला, दयामयी का मकान, जगल मे कुटी।

इस राजनीतिक नाटक मे क्रातिकारियो की रणनीति का उद्घाटन किया गया है। मनोहर और दिवाकर दो सहपाठी है। मनोहर पुलिस अफसर बनता है और दिवाकर देश की स्वतन्त्रता का इच्छुक क्रान्तिकारी। ऐसी परिस्थितिया जुटती है कि जब दिवा-कर को पकडने के लिए पुरस्कार की घोषणा होती है तो दिवाकर मनोहर के यहाँ शरण लेता है। धन के लोभ मे मनोहर दिवाकर के हाथ पुरानी मित्रता का निर्वाह नही

करता। मनोहर की पत्नी वीणा दिवाकर से प्रभावित होकर उसके गुट मे शामिल हो जाना चाहती है। वह मनोहर की विकृत नीयत देखकर दिवाकर को लेकर घर से भाग जाती है। दिवाकर के दलवाले वीणा पर विश्वास नही करते। उल्टे मनोहर के यहाँ शरण लेने के कारण उसी से नाराज होते है और उसे प्राणदड की सजा देते है। दल मे सम्मिलित होने से पहले वीणा की परीक्षा ली जाती है। उसे (वीणा को) अपने पति की हत्या करने का आदेश दिया जाता है और वह उसका पालन करती है।

क्रान्ति का नाहर (सन् १९६४, पृ० ८४), ले० श्यामलाल मधुप, प्र० मनोरमा प्रकाशन गृह, नई दिल्ली, *पात्र* पु० १०, स्त्री २।
घटना-स्थल बाजीराव का महल, अँग्रेज अधिकारी की कोठी, पथ, वन।

इस ऐतिहासिक नाटक मे नाना फडनवीस की सगठन-शक्ति और अँग्रेजो का अत्याचार दिखाया गया है। बाजीराव पेशवा के मरने के बाद उन्हे मिलनेवाली आठ लाख सालाना की पेन्शन बन्द होने पर उनके उत्तराधिकारी नाना साहब अपने अधिकार की माँग करते है क्योकि वही बाजीराव के असली उत्तराधिकारी थे। पर अँग्रेज अधिकारी उन्हे दत्तक पुत्र मानकर पेन्शन बन्द कर ही देते है। नाना साहब अँग्रेजो के खिलाफ बगावत करते हैं पर कुछ देशद्रोहियो के कारण उन्हे सफलता नही मिलती और वह पराजित होकर कुछ सिपाहियो के साथ नेपाल की पहाडियो और बीहड वनो की ओर चले जाते है फिर उनका पता नही चलता।

क्षमादान (सन् १९६९, पृ० ७९), ले० : विन्देश्वर मण्डल, प्र० मैथिली रगमच, कलकत्ता, *पात्र* पु० १३, स्त्री ३, *अक* २, *दृश्य* ८, ७।
घटना-स्थल महतो का घर, खेत, दलान।

इस नाटक का अभिनय १० नवम्बर, १९६८ को नेताजी सुभाष इन्स्टीट्यूट, सियालदह मे हुआ। ग्रामीण जीवन पर आधारित इस सामाजिक नाटक मे गाँव के मातबर जटाधर बाबू और एक वृद्ध बनिहार (मजदूर) कचन महतो के पारिवारिक जीवन की झाँकी दिखाई गई है। नाटक का प्रारम्भ कचन के बालक उमेश की भूख की छटपटाहट से होता है। उसकी माँ सोनियाँ समझाती है कि मत रोओ, अभी तुम्हारे पिता आकर कुछ व्यवस्था करेगे। किन्तु कचन आकर कहता है कि ठेकेदार ने कुछ नही दिया, क्या करू ? कचन जटाधर बाबू रईस के पास कर्ज के लिए जाता है पर कर्ज वहाँ भी नही मिलता। रईस उसे दूसरे दिन आने को कहता है। जटाधर का मैनेजर बाक और चाकर हरिया कचन को समझाते है कि बाबू जटाधर को एक नौकरानी चाहिए। जो उचित वेतन होगा वह मिलेगा। अत तुम अपनी कन्या कमलेसरी को वहाँ नौकर कर दो। कमलेसरी और मोहन मे प्रेम है। अत मोहन कमलेसरी को समझाता है कि जटाधर बाबू के घर नौकरी करने से गाँव भर मे निदा होगी। यहाँ ग्रामीण युवक-युवती के प्रेम-प्रसग का मार्मिक चित्रण है।

कमलेसरी जटाधर बाबू के घर की शान देखकर चकित रह जाती है। बाबू की नौकरानी कुसुमी कमलेसरी को जटाधर बाबू के कमरे मे ले जाती है। वहाँ जटाधर बाबू नशे मे डूबे हुए है। कमलेसरी उन्हे देखकर भयभीत होकर कहती है—'दोहाई मालिक केर। अपने हमर माय-बाप छी।' जटाधर कहते है—'हम तोहर राजा, तो हमरी रानी।' जटाधर उसे गहना आदि देने का लोभ दिखाकर पास बुलाते है। उसके अस्वीकार करने पर कमलेसरी की बाँह पकडने की चेष्टा करते है। कमलेसरी अब साहस बटोरकर कहती है—'हम तोहरा मुँह मे थूक देबै, जो हमरा पर अत्याचार करते।"

इसके उपरान्त घटनाएँ ऐसी घटती है कि जटाधर बाबू मे परिवर्तन आता है और वह कचन को बुलाकर क्षमायाचना करते हुए कहते है—"हमारा सन जुल्मी अत्याचारी ससार मे आर कतहु नहि भेटतह।" मैने अपने स्वार्थवश नीच कार्य किया जिसका फल मुझे मिला। अब मै शपथ खाकर कहता हूँ कि ऐसी भूल कभी नही करूगा। मेरे

पास छह सौ बीघा जमीन है। मै चार सौ बीघा जमीन युवक सघ को अर्पण करता हूँ। अब मै ग्राम के सुधार मे जीवन लगाऊगा।"

ख

खण्डित यात्राएँ (सन् १९६२, पृ० १०७), ले० नरेश मेहता, प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर, बम्बई, *पात्र* पु० ६, स्त्री ३, *अक* ३। *घटना-स्थल* लखनऊ मे सुरेन बाबू का कक्ष, रगकक्ष।

इसमे प्राचीन सामन्त वर्ग की कथा है। सुरेन बाबू एक पुराने जमीदार है। उनकी सभी मान्यताये नये युग के साथ मेल न खाने के कारण टूट जाती है। उनकी पुत्री नन्दिता परिवर्तन से भयभीत हो अपने मे ही खो जाती है। अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के कारण उसका अपना अलग ही स्थान है। पुत्र महेन अपने को एक नूतन परिवेश मे लाकर नए परिवर्तन की वास्तविकता को इगित करता है कि ये सब बीमार है। वह बीना से प्रेम करता है और फिर बाद मे उसी से प्रेम विवाहकर अपनी मान्यता को स्थापित करता है।

सामन्त वर्ग तो समाप्त हो गया है किन्तु आज का व्यावसायिक वर्ग उसका स्थान नि सकोच लेता जा रहा है। नन्दिता की मा के विवाह मे बुआ माँ दहेज रूप मे आती है जो बाद मे घर के किसी उत्तरदायी व्यक्ति के अभाव मे वहाँ की अभिभाविका भी बन जाती है। इसी प्रकार बीना भी अपने विवाह के बाद हरखू को अपना व्यक्तिगत नौकर रखकर पूरे सामन्तयुगीन वातावरण को जीवित रखती है। इन सबके होते हुए सभी लोग अपूर्ण है। सबकी जीवन-यात्राएँ, विशेषकर सामन्तयुग की यात्रा का खण्डित होना दिखाया गया है।

इसका प्रथम प्रदर्शन 'अभिनय' (प्रयाग) नामक सस्था द्वारा प्रकाशन से पूर्व ८ जनवरी १९६१ को हुआ।

खटर काका चीन मे (सन् १९६७, पृ० ११६), ले० श्री कपिल प्रभाकर; प्र० राज भारती प्रकाशन, सत्य निकेतन, मटरस, पिरोजगढ दरभगा, *पात्र* पु० २०, स्त्री ३, *अक* ४, *दृश्य* : २२।
घटना-स्थल : रमेश का दरवाजा, खटर काका का आँगन, सडक, खटर काका का घर, खटर काका का दरवाजा, देवकान्त का शयन-कक्ष।

इस मैथिल नाटक मे चीनी भेडियो के काले कारनामे दिखाये गये है। मैथिली साहित्य-प्रेमी व्यक्तियो के लिए 'खटर काका' अत्यधिक परिचित पात्र है। अब तक ये मिथिला की मिट्टी मे महादेव बनाकर पूजा करने और शास्त्र-पुराण पर प्रवचन के लिए ही प्रसिद्ध थे; किन्तु अब ये आधुनिक विचार के बनकर चीन की सीमा तक पहुच गये है। इसमे भारतीय सुरक्षा को सुदृढ करने के लिए राष्ट्रीय भावनाओ को सहज रूप मे हृदयगम कराया गया है। खटर काका चीन मे भी मैथिली मे ही भाषण देते है, जिसके फलस्वरूप उन्हे पहचानने मे असुविधा नही होती है। इस नाटक मे खटर काका की रजना-व्यजना, प्रत्युत्पन्नमतित्व का परिचय मिलता है। यह नाटक चीन के आक्रमण के सघर्ष मे लिखा गया है। वस्तुत आधुनिक युग मे इसमे व्यक्ति-व्यक्ति के हृदय मे देश-भक्ति का अपूर्व सचार हुआ है। अन्तत विजयोपलक्ष्य पर खटर काका के जय जवान, जय किसान, नारे से उनकी कर्मठता और कठोरता भी ज्ञात होती है।

खलक खुदा का (सन् १९५८, पृ० ८०), ले० गिरजाशकर पाण्डेय, प्र० जय प्रकाशन, वाराणसी, *पात्र* १४, *अक* ५।
घटना-स्थल : गगातट, घर, कमिश्नर का बगला, छावनी, अस्पताल, गाव, अदालत।

इस ऐतिहासिक नाटक मे स्वतन्त्रता

प्राप्ति के लिए अपनी आन पर लडते हुए वीरो का वर्णन है। बनारस पर अँग्रेजो के अधिकार के कारण राजा चेतसिह ने रामनगर के गढ की रक्षा के लिए जो प्रयास पूर्व किया था उसे पूरा करने के लिए बाद मे लोगो ने पुन अँग्रेजो से मुठभेड ली। इस प्रकार सदैव काशी नगरी अँग्रेजो से अपने स्वतन्त्र अस्तित्व के लिए लडती रही। इसका ऐतिहासिक वर्णन इस नाटक का उपजीव्य है। केशव भट्ट, सरदार सूरतसिह आदि पात्र शिलालेख एव इतिहास के ग्रन्थो मे भी पाये जाते है।

खाँजहाँ (वि० १९८१, पृ० १७५), ले० रूपनारायण पाण्डेय, प्र० . गगा पुस्तकालय कार्यालय, लखनऊ, *पात्र* पु० १२, स्त्री ४, *अक* ५, *दृश्य* ५, ६, ७, ७, ३।
घटना स्थल बाग, अन्त पुर, मत्रणा भवन, पहाड, भारी जगल आदि।

स्वाभिमानी वीर खाजहाँ का महत्त्व दिखाने के उद्देश्य से इस ऐतिहासिक नाटक की रचना की गई है। शाहजहाँ, खाजहाँ को दिल्ली बुलाता है। दिल्ली आने पर बादशाह द्वारा अपमानित किये जाने के प्रयास को देखकर खाजहाँ वापस चला जाता है। महावत खा के मामा उच्चादर्शवाले व्यक्ति और शाहजहाँ के दरबार के विदूषक है।

सोफिया महावत खा की रूपवती लडकी है। उसका सौन्दर्य सभी को आकर्षित करनेवाला है, लेकिन नारायणराव ब्राह्मण अपने हिन्दुत्व की रक्षा के लिये सोफिया की तरफ देखता भी नही है जिसे सोफिया सहन नही कर पाती। वह नारायणराव के प्रण को छुडाने का प्रयत्न करती है। किन्तु उसे जब यह पता चल जाता है कि नारायणराव हृदयहीन नही बल्कि उच्च विचार का व्यक्ति है तो उसके हृदय मे नारायणराव के प्रति श्रद्धा का भाव उत्पन्न होता है, और दोनो इकट्ठे होकर प्रेम-बन्धन मे बँध जाते है। सोफिया के हृदय मे हिन्दू जाति के प्रति प्रगाढ प्रेम उत्पन्न हो जाता है।

नाटककार ने खाजहाँ का आत्माभिमान और शौर्य गुलनार तथा रजिया का पति और पिता के सम्मान के लिए आत्मोत्सर्ग, बालक अजमत खा की पितृभक्ति और खुदादाद तथा रजिया की ईश्वर-भक्ति का अच्छा वर्णन किया है। साथ ही शाहजहाँ की कुटिल नीति का भी परिचय मिलता है।

खिलौने की खोज (सन् १९५६, पृ० ११५), ले० वृन्दावनलाल वर्मा, प्र० मयूर प्रकाशन, झासी, *पात्र* पु० ८, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* ४, ५, ७।
घटना-स्थल तलगॉव, कमरा, अस्पताल।

इस सामाजिक नाटक मे मूर्ति के माध्यम से प्रेमी प्रेमिका की विरहिणी दशा चित्रित की गई है। डॉ० सलिल अपनी बाल सहचरी सरूपा से चाहते हुए भी विवाह नही कर पाता। परिणामत जीवन-पर्यन्त सरूपा की स्मृति उसे सालती रहती है। जीवन से हताश सलिल मरने के उद्देश्य से सेना मे भर्ती हो जाता है, परन्तु क्षय-ग्रस्त होकर उसे तलगॉव लौट आना पडता है। नन्दिनी डॉ० सलिल के गिरते स्वास्थ्य के प्रति अत्यधिक चिन्तातुर रहती है, परन्तु डॉ० स्वय अपने आपको गला डालना चाहता है। डॉ० भवन अपने गठिया रोग का निदान डॉ० सलिल से कराने की प्रार्थना करते है। भवन की प्रार्थना पर सलिल उनका उपचार करता है। फलत उसे भी अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत होना पडता है। एक दिन सरूपा का पुत्र केवल डॉ० सलिल के कमरे से चॉदी की मूर्ति उठाकर अपने घर ले जाता है। मूर्ति को देखकर सरूपा को अपने अतीत का स्मरण हो आता है। वह केवल डॉ० सलिल की मूर्ति को लौटाने का अनुरोध करती है। डॉ० सलिल सारे घटना प्रसगो से अवगत होकर मृतप्राय सरूपा के उपचार मे प्रवृत्त हो जाता है।

खुदा और शैतान (सन् १९२८, पृ० १४०) ले० सरदार मोहनसिह, प्र० रामलाल सूरी, अनारकली, लाहौर, *पात्र* पु० १० स्त्री ३, *अक* ७, *दृश्य* रहित।
घटना-स्थल झोपडी, राजभवन, निर्धन ब्राह्मणी की कुटिया एव दुखी मजदूर की झोपडी।

इस नाटक के प्रथम अक मे मजदूर, उसकी स्त्री, पड़ोसिन सेठ के लडके से जीवन

की विभिन्न समस्याओ के विषय मे वार्तालाप होता है। एक स्त्री निर्धनता के कारण बीमारी मे दवा और पथ्य के अभाव से व्याकुल हो रही है। दूसरे अक मे राजा और उनके प्राइवेट सेक्रेटरी मे राजनीति पर विचार होता है। राजा साहब प्रेम के शिकारी बनकर प्रेयसी जमीला के ख्याल मे मग्न रहते है और बाधा डालनेवाले दुश्मनो को गोली मार देना चाहते है। तीसरे अक मे खुदा और दून तथा चौथे अक मे शैतान और फरिस्ता बाते करते है। फरिस्ता कहता है कि "मेरा रग भी क्या जादू है, इस ब्राह्मणी की एक लडकी होगी और हुजूर की बरकत से वह या तो मुसलमान होकर चकले मे बैठेगी या किसी महाजन के घर पर जावेगी।" शैतान की आज्ञा पाकर गरीबी, रोग, अत्याचार का देश मे सचार होता है। छठे अक मे राजा साहब और जमीला मे मोहब्बत की बाते होती है और राजा अपने प्रतिद्वन्द्वियो को दण्ड देने का उपाय सोचते है। शहर मे हिन्दू मुस्लिम फसाद होता है किन्तु राजा साहब जमीला के साथ दिल बहलाने मे लगे हुए है। शैतान के प्रयास से राजा वासना मे लिप्त और प्राइवेट सेक्रेटरी धोखा और फरेब मे सलग्न रहते हैं किन्तु निर्धन मजदूर रोटी के लिए तरसते है।

खुदा दोस्त सुल्तान (सन् १९२५, पृ० ७२) ले० एच० ए० किरन, प्र० गर्ग एण्ड को० देहली, *पात्र* पु० ५, *अक* · ३ *दृश्य* ८, ६, ६।
घटना-स्थल राजभवन, राजसभा, रणभूमि।

इस नाटक मे यवन और तातार के आपसी सम्बन्धो और उसकी ताजपोशी का ही वर्णन है जिसके अन्त मे यवन देश का ताज शाहजादा कमर के सर पर बाँधा जाता है, और तातार का बादशाह फकीर खुदा दोस्त बनाया जाता है। भारत थियेट्रिकल कपनी द्वारा अभिनत

खून का खून (सन् १९२५, पृ० १०२) ले० मुशी जलाल अहमद 'शाद' प्र० उपन्यास बहार आफिस, बनारस, *पात्र* . पु० १५, स्त्री ९, *अक* . ३, *दृश्य* ७, ५, ३।
घटना-स्थल · महल, झोपडी।

इस ऐतिहासिक नाटक मे स्त्रियो की निर्भीकता के साथ पतिपरायणता की भावना दिखाई गई है। राज्य का वजीर (राजा का भाई) एक खूनी व्यक्ति है। वह ताहिर नाम के व्यक्ति का खून कर देता है। उसकी पत्नी जोहरा स्वय अपने पति से बदला लेने की प्रतिज्ञा करती है और धीरे-धीरे उन तमाम तथ्यो को अपने पति के प्रतिकूल इकट्ठा करती है जिनकी मदद से खून होता है। जोहरा जाकर राजा से सारी बाते बताती है। खूनी गिरफ्तार किया जाता है। उसका अपराध प्रमाणित होने पर उसे मृत्यु-दण्ड की सजा मिलती है किन्तु उसके भागने के प्रयास मे राजा स्वय उसे अपनी गोली का शिकार बनाते है। खूनी के मरने के बाद उसकी स्त्री जोहरा भी आत्महत्याकर अपने पति के साथ प्राण त्याग देती है।

खून की रेखाएँ (सन् १९४७) ले० · गिरिजाकुमार माथुर। प्र० विप्लव पत्रिका मे प्रकाशित।

सर्वप्रथम इसे 'दगा' शीर्षक से यशपाल जी के पत्र 'विप्लव' मे अप्रैल १९४७ मे प्रकाशित किया गया।

इस ऐतिहासिक नाटक का आधार साम्प्रदायिक दगो एव सघर्ष की लम्बी कथाएँ है। इसमे १९४७ मे जाति के आधार पर हुए दगो को चित्रित किया गया है। इन दगो के माध्यम से समाज मे हो रहे विनाश के प्रति नाटककार ने ध्यान आकर्षित किया है तथा प्रकारान्तर से वह समाज को इन तत्त्वो से विमुखकर नव-बन्धुत्व भावना को प्रेरित किया है।

खून की होली (सन् १९२५, पृ० ८८) ले० · प० वचनेश मिश्र, प्र० . कुँवर दलपति सिंह जूदेव कालाकाँकर,; *पात्र* : पु० १५, स्त्री १०, *अक* ५, *दृश्य* २, ४, ३, १, २।
घटना-स्थल राजसभा, मंडल, युद्ध,-मैदान।

इस ऐतिहासिक नाटक का कथा-भाग कालाकाँकर की राजवशावली से सम्बद्ध है। इसमे रामराय, हरवंशराय, युवराज जय-

सिह, कुँवर उदयसिह और युवराज श्यामसिह आदि की प्रशसा मे राजलक्ष्मी के द्वारा युद्ध-वर्णन के छन्द लिखे गए है।

इस नाटक मे श्रीमान् अवधेश सिह के चरित्र पर प्रकाश डाला गया है। इनके अन्य पूर्वज राजा श्यामसिह की वीरता का भी सुन्दर उल्लेख है जिसने देखते ही देखते कल्याणशाह और वहादुरशाह को मौत के घाट उतार दिया है।

खून की होली (सन् १९६३, पृ० ५६), ले० 'एन० सी० शाह 'कविजी', *पात्र* पु० ४, स्त्री १, *अक* ३, *दृश्य* ३, ३, ३।

चीन के आक्रमण से सम्वन्धित इस ऐतिहासिक नाटक मे देशभक्त युवक वीर विक्रम सिह और युवती प्रतिभा के साहसपूर्ण कार्यो का वर्णन है। उन्होने नेफा और लद्दाख मे खून की होली खेली।

सभी वीर सैनिक, हिन्दू युवक, प्रतिभा और विक्रम सीमा की ओर कदम से कदम मिलाकर चले जा रहे है। विक्रम चीनियो को ललकारता हुआ गीत गाता है—

"ओ चीनिओ जाओ निकल
नेफा और लद्दाख से।
है सिह गर्जते आ रहे,
विहार से, वगाल से ॥"

चीनी सैनिक कहता है—"तो रे नीच भारतीय, फैसला कर ले कि कौन शेर है और कौन भेडिया"। चीनी सैनिक विक्रम पर वार करता है। विक्रम द्रुत गति से वढकर रायफल के वार को निष्फल कर देता है, गोली एक भारतीय सैनिक की वाँहो को छेदती हुई एक वृक्ष मे जा लगती है। भारतीय सैनिक की कराह विक्रम के हृदय मे चुभती है और विक्रम विजली की तरह चीनी सैनिको पर टूट पडता है। उसकी छाती मे छुरा घुसेडकर हाथो को खून से रँगकर चिल्ला उठता है—

"खेलो खून की होली,
दुश्मनो के खून की होली।"

(चीनी सेनाये भयभीत होकर भाग जाती है)

खून के छीटे (पृ० ७१) ले० प्रो० ओमप्रकाश नायर, प्र० . किताव महल इलाहावाद, *पात्र* पु० १६, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* ३, ५, ३।
घटना-स्थल चलकन्द का पहाडी भाग।

एक महान् क्रान्तिकारी और धर्म-प्रवर्त्तक विरसा 'भगवान' का जन्म नागपुर मे होता है। विरसा विद्या-प्राप्ति के पश्चात् अपने गुरु के द्वारा आशीर्वाद प्राप्त करता है। विरसा एक दिन गाँव के निवासियो के सामने अपने मीठे स्वरो मे धर्म, अहिसा और अत्याचार के विषय मे वाते करता है। वीरसिह को अग्रेजी राज, पुलिस, दरोगा, कचहरी तथा ठाकुरो के अत्याचारो से मुक्ति पाकर स्वतत्र मुण्डा-राज्य की स्थापना के लिए प्रोत्साहित करता है। सव प्रसन्नचित्त हो यह प्रतिज्ञा ध्यान मे रख विरसा को प्रणामकर चल देते है। चलकन्द गाँव मे ग्रामीण भयानक वादलो को देखकर कहते है कि आज आसमान आग उगलेगा। यह विरसा भगवान का कहना है। किन्तु कहते है चलकन्द मे जिसका दिल साफ होगा उसके ऊपर विपत्ति नही आयेगी। विरसा भगवान की तपस्या से यह आपत्ति टल जाती है और विरसा की जय-जयकार होने लगती है। सिपाहियो का एक झुण्ड आकर विरसा को वन्दी वनाना चाहता है किन्तु आदिवासी युवको द्वारा खदेड दिया जाता है। फिर दूसरे दिन जिला सुपरिण्टेण्डेण्ट मिस्टर मिरेज विरसा को पकडने की आज्ञा दे देते है। चलकन्द की विरसा की लिपी-पुती झोपडी मे मगल कार्य का आभास मिलता है। विरसा मुण्डो की स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए तीर-धनुष लेकर तैयार रहने का आदेश देते है। सव ग्रामीण तैयार हो जाते है। सभी के शरीर अजेय करने के लिए विरसा भगवान घडे मे भरे पानी को आम्रपत्र द्वारा शरीरो पर छिडकते है और अस्त्र-शस्त्र के साथ क्राति प्रारम्भ करने की सूचना देते है। इधर सुपरिण्टेण्डेण्ट की आज्ञा से सिपाही वन्दूक के साथ चढ देते है। पुलिस की फायरिंग मे आदिवासी युवक भागते है। तव मिरेज स्ट्रीट-फील्ट फायरिंग 'स्टाप' का आदेश देता है। सिपाहियो द्वारा विरसा भगवान का पता न लगने से ढिंढोरा पिटवाया जाता है कि जो विरसा को हाजिर करेगा, उसको पाँच सौ

रुपया दिया जायेगा। दो युवक पैसे के प्रलोभन मे आकर विरसा को और झोपडी निवासिनी दो स्त्रियो को पकडकर कमिश्नरी मे हाजिरकर इनाम प्राप्त कर लेते है। विरसा स्त्री सहित राँची जेल मे भेज दिया जाता है। कमिश्नर से कहता है कि सत्य की विजय होती है। हम समाप्त हो जायेगे लेकिन देश का बच्चा-बच्चा विरसा है। तुम लोगो की गोलियाँ पानी का बुलबुला वन जायेगी और तुम सब वोरिये-विस्तर सहित यहाँ से भागोगे। कालान्तर मे पता लगता है कि विरसा की मृत्यु हो गयी। आदिवासी दु खी होते है लेकिन वाद मे विरसा की वाणी —'सत्यमेव जयते'—को यादकर जननी जन्मभूमि और विरसा भगवान की जय-जयकार करते है।

खूने नाहक (सन् १८८९, पृ० ९६), ले० मेहदी हसन 'अहसन', प्र० उपन्यास वहार आफिस, वनारस, *पात्र* पु० ८, स्त्री ३, *अक* ३।

मलिका गौहरुलनिसा का अनुचित प्रेम देवर के साथ है। वह युवराज जहाँगीर की जगह फारूक को राज दिलाना चाहती है। पर वजीर तैयार नही होता। वजीर की वेटी मेहरवानू जहाँगीर से प्रेम करती है और मेहरवानू अपना प्रणय जहाँगीर के प्रति निवेदित करती है। किन्तु जहाँगीर त्रिया चरित्र की धोखा, मक्कारी और वेवफादरी के कारण स्त्रियो से दूर रहता है। अत मेहरवानू अपने प्रेम का ठीक समाधान करने में असफल रहती है।

द्वितीय अक मे फारूक की कूटनीति और जहाँगीर की तैयारी मे गतिशीलता दिखाई देती है। जहाँगीर अपनी मा मलिका को अपने पिता के चित्र दिखाता है और उसके फुसलावे की वातो से उत्तेजित होकर उसकी मक्कारी का पर्दाफाश करता है। फारूक भी जहाँगीर का काँटा निकालने के लिए षड्यन्त्रो का जाल वुनता है।

अतिम अक मे जहाँगीर सारी साजिशो से वच जाता है। न्यू अल्फिस्टन थियेट्रिकल कम्पनी द्वारा अभिनीत।

खूने नाहक (सन् १९३१, पृ० ९६), ले० . मु० आरजू साहव; प्र० उपन्यास वहार आफिस, वनारस, *पात्र* पु० १०, स्त्री ६, *अक* ३, *दृश्य :* ५, ६, ३।
घटना-स्थल महल, दरवार।

इस पारसी थियेट्रिक नाटक मे जहाँगीर का प्रतिशोध वर्णित है। कसक दमिश्क का वादशाह तथा शाहजादा जहाँगीर का चाचा खलनायक है। वह अपने भाई को विप द्वारा मारकर मलका के प्रेम तथा राज्य को प्राप्त करता है। मलका अपने शाहजादे से भयभीत है। विद्रोही जहाँगीर अपनी माँ, चाचा तथा मन्त्री हुमायूँ को मारकर पिता की मृत्यु का वदला लेता है। हुमायूँ की लडकी मेहरवानू पिता तथा प्रेमी मसूर के हत्यारे जहाँगीर से ही प्रेम करती है।

फारूक की साजिश से नसीर अपने पिता हुमायूँ तथा वहन मेहरवानू का वदला लेने के लिए जहाँगीर पर खजर चलाता है किन्तु प्रतिरोध मे नसीर मारा जाता है और जहाँगीर घायल हो जाता है। ममूर की हत्या का वदला लेने के लिये उसका पिता जहाँगीर को विप पिलाना चाहता है। किन्तु धोखे मे उसे मलका पी जाती है। फारूक के षड्यन्त्र का उल्टा परिणाम निकलता है। फारूक को भी भागने से पूर्व जहाँगीर पिस्तौल से मार देता है और स्वय भी मरकर नाटक का दुखान्त करता है।

न्यू अल्फिस्टन थियेट्रिकल कम्पनी द्वारा अभिनीत।

खूसटचन्द (सन् १९३५, पृ० ६४), ले० डी० आर० सिनहा, प्र० भारती आश्रम, हेविट रोड, इलाहाबाद, *पात्र* पु० ५, स्त्री २, *अक-रहित, दृश्य* ७।

यह सामाजिक जीवन पर आधारित अत्यन्त रोचक और मनोरजक प्रहसन है। अपने कार्यालय मे मैनेजर रखने के शौकीन खूसटचन्द अपनी वीवी के मना करने पर भी गडवडसिह को अपना काम करवाने के लिए मैनेजर नियुक्त करता है। वह कई महीने वीतने पर भी मैनेजर को तनख्वाह नही देता। मैनेजर गडवडसिह किसी काम से ८ दिन के लिए कलकत्ता जाता है। वह कलकत्ता जाकर खूसटचन्द के सारे ग्राहको से पैसा

एकत्र करके २½ महीने बाद लौटता है तथा खूसटचन्द को रुपये न देकर उनका हिसाब दे देता है। इधर खूसटचन्द गडबडसिंह की जगह बदकिस्मत लाल को नौकर रख लेता है और उसे भी पैसे नही देता जिससे बदकिस्मत लाल बडा तग हो जाता है। खूसटचन्द बदकिस्मत लाल की पत्नी से प्रेम करता है। अन्त मे गडबडसिह की मदद से खूसटचन्द बदकिस्मत लाल के घर चोर के रूप मे गिरफ्तार कर लिया जाता है जिससे बडी मार पडती है और वह दुखी होता है।

ख्याल राजा नल का (सन् १९४४), ले० नानूलाल, प्र० मुशी शादीलाल, कुतुब फरोश, दरीबाकलाँ, दिल्ली, *पात्र* पु० ३, स्त्री ३, *अक-दृश्य--रहित*।

इस पौराणिक नाटक मे नल दमयती के दाम्पत्य जीवन मे आई विपत्तियो की झाकी प्रस्तुत है। राजा भीमसेन अपनी कन्या दमयन्ती के विवाह के लिए स्वयवर रचते है। दमयन्ती हस के गले मे पत्र बाँधकर नल के पास भेजती है और उन्हे स्वयवर मे बुलाकर गले मे वरमाला डालती है। विवाह के उपरान्त नल-दमयन्ती पर आनेवाली अनेक विपत्तियो की कवि कल्पना करता है। भुना हुआ तीतर उड जाता है। मरी मछली समुद्र मे कूद पडती है। इस पर नल कहता है —

"भुन्या तीतर उड गया
होसी दिन खोटो छे मेरो।
जीकर गई समन्दर मे
जानत मछली है भगवान्।"

सारी विपत्तियाँ सहकर फिर नल दमयन्ती मिल जाते है और उन्हे राज्य प्राप्ति होती है। कवि कहता है—

"गढ नरवल के बीच मे
सो फिर नल की फिरी दुहाई।
गोमद राम उस्ताद
ज्ञान दियो मिट गई अब दुखदाई।'
नानूराम चिडावे वालो
नल लीला कथ गाई।

कवि नानू ने यहा तक विवरण दिया है कि मैंने अपने जीवन के इक्तीसवे वर्ष मे यह ख्याल रचा है।

ख्वाबेहस्ती नाटक (सन् १९२६, पृ० ९५), ले० जयरामदास गुप्त, प्र० उपन्यास बहार आफिस राजघाट, काशी, *पात्र* पु० ७, स्त्री ६, *अक* ३, *दृश्य* ८, ११, ७। *घटना-स्थल* परिस्तान, जगल।

इस ऐतिहासिक नाटक की कथा बदचलन सौलत खा के व्यभिचारो पर आधारित है। अजमत खा एक रईस मालदार नवाब है सौलत उसका बदचलन बेटा है। फीरोज डाकुओ का सरदार है। उसकी बहन हुस्ना सौलत खा पर आशिक है। परन्तु एक बार सौलत हुस्ना को मारकर नदी मे फेक देता है। बाद मे उसे फीरोज बचा लेता है। फीरोज की प्रेमिका अजमत खा की भतीजी रजिया है। सौलत खा रजिया से जबरदस्ती प्रणय करना चाहता है। परन्तु रजिया कहती है कि वह अपने बाप के हत्यारे सौलत खा से प्रेम नही कर सकती। सौलत उसकी हत्या करना चाहता है। परन्तु फीरोज उसे बचाता है। बाद मे सौलत खा हुस्ना से माफी माँगता है और वे प्रणय-सूत्र मे बँधते है। रजिया व फीरोज भी मिल जाते है। यही पर नाटक की समाप्ति है।

ख्वाबे हस्ती नाटक (सन् १९२६, पृ० ९४), ले० जलाल अहमद 'शाद', प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, *पात्र* पु० ७, स्त्री ६, *अक* ३, *दृश्य* ८, ११, ७। *घटना-स्थल* परिस्तान, मकान, जगल, कैदखाना।

यह नाटक बम्बई की पारसी नाटक कम्पनियो के लिए लिखा गया था। इसके कितने ही सस्करण हो चुके है। इससे इसकी लोकप्रियता का परिचय मिलता है।

इस नाटक मे एक मालदार नवाब अजमत खा और उसके ऐय्याश बेटे सौलत खा, डाकुओ के सरदार फीरोज की घटनाए दी गई है। सौलत खा फीरोज नामक डाकू की बहिन हुस्ना को प्यार करता है। पर हुस्ना उसका विश्वास नही करती। वह कहती है—
तू झूठा है —
'हमसे गरीबो को करे प्यार गलत है।
एक बार गलत नही, सौ बार गलत है।"

इस नाटक मे चमत्कारी घटनाये दिखाई

गई है। एक स्थान पर पहाड वीच से फटता है और हुस्ना रूह के लिवास मे नजर आती है। हुस्ना की रूह और सौलत मे वाते होती है। हुस्ना ने सौलत के प्रेम मे प्राण अर्पण कर दिया है। उसकी रूह सौलत से कहती है—

"तेरी चाह मे पाये यह रजो अलम,
न इधर की रही न उधर की रही।"

सौलत अपने कुकृत्यो पर तौवा करता है; और हुस्ना प्रसन्नतापूर्वक प्रकट होकर सौलत से कहती है कि "न घवराओ, आओ, मेरे सीने से लग जाओ।"

इसी प्रकार रजिया और फीरोज का भी मिलन हो जाता है।

ग

गगा का वेटा (सन् १९४०, पृ० ९४), ले० पाण्डेय वेचन शर्मा 'उग्र', प्र० रूप व्रदर्स, इन्दौर, *पात्र* पु० १५, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* ८, १६, ३।
घटना-स्थल पर्वत, राजमहल, गगातट, कुटी भवन, प्रकोष्ठ झोपडी, यमुना तट, स्वयवर-मडप, आश्रम, मदिर, पहाडी, वटवृक्ष, मार्ग, शिविर।

इस पौराणिक नाटक मे गगा-पुत्र भीष्म का पराक्रम वर्णित है जो शान्तनु के शापानुकूल शिखडी की आड मे अर्जुन के वाणो से मारे जाते है।

वसुओ द्वारा अपहृत नदनी गाय का पता, वशिष्ठ समाधि के वल पर लगाकर उन्हे देवता से मानव होने का शाप देते है। शाप का ज्ञान होते ही वसु वशिष्ठ के पास पहुँच कर अपनी गलती स्वीकारते है। वशिष्ठ द्वारा वताये गये उपाय से वसु गगा को अपनी माँ वना लेते है। हस्तिनापुर के सम्राट शान्तनु का परिचय गगा से होता है। दोनो एक दूसरे को पति-पत्नी रूप मे स्वीकार करते है। गगा यह शर्त रखती है कि आप मेरे किसी भी कार्य मे वाधक न होगे। गंगा के सात पुत्र उत्पन्न होते है और उन्हे वह नदी मे प्रवाहित कर देती है। सातो वसुओ के अश से पैदा होनेवाले आठवे पुत्र देवव्रत का गगा राज्याधिकार के निमित्त पालन करती है। एक दिन गगा के तट पर अचानक पिता-पुत्र की भेट होती है। राजा देवव्रत को युवराज वनाने का आदेश देते है। एक दिन यमुना के तट पर शातनु दाशराज की पुत्री सत्यवती पर मन का दाव हार जाते है। जव विवाह का प्रस्ताव रखा जाता है तो दाशराज शर्त रखते है कि तुम्हारे वाद राज्य का अधिकारी सत्यवती का पुत्र होगा। शान्तनु इसे नही मानते। उनके पुत्र भीष्म इसे स्वीकारकर पिता से विवाह करने का आग्रह करते है। शातनु मरने से पूर्व सत्यवती के दो पुत्र छोड जाते हैं। भीष्म सत्यवती-पुत्र विचित्रवीर्य को राजा वना देते है और उनके लिए काशीराज की तीन कन्याओ अम्वा, अम्विका तथा अम्वालिका का स्वयवर से अपहरण कर लाते है। अम्वा शाल्वराज से अनुरक्त होती है। इस का ज्ञान होते ही वह भीष्म तथा शाल्वराज दोनो से ठुकरा दी जाती है। वह भीष्म से वदला लेने के लिए परशुराम जी के पास जाती है। परशुराम के समझाने पर भी भीष्म नही मानते और दोनो मे युद्ध होता है। परशुराम पराजित होते हैं। इस पर गगा शिव की तपस्याकर उनसे वरदान पाती है कि पाचाल देश के राजा द्रुपद की पुत्री वनकर फिर समय पर पुत्र वनेगी उसीसे भीष्म मारे जायेगे। द्रुपद-पुत्र शिखडी की आड मे अर्जुन के तीर से मृत्यु को प्राप्त होते है।

गंगा माहात्म्य (पृ० २८) ले० वशीधर पाठक, प्र० आर्य भास्कर यत्रालय, मुरादावाद, *गर्भाङ्क* ३ *परिच्छेद* ७।
घटना-स्थल द्वारका का कुशावर्त घाट, मदिर।

इस नाटक का उद्देश्य धर्म-सम्वन्धी

लोक प्रचलित रूढ़ि, परम्परा, पौराणिक मान्यता, कर्मकाण्ड और अन्धविश्वास का खडन करना है।

गिरधर शर्मा एक सनातन कर्मकाण्डी पुरोहित है। वह गगा को पापहारिणी तथा मोक्षदा मानता है। सत्यव्रत शर्मा उसके विचारो से असहमत है। वह तीर्थों और मेलो मे होनेवाले अत्याचारो तथा कष्टो का विवरण देकर गगा-स्नान मात्र से मुक्ति के सिद्धान्त का परिहास करता है। उसके शब्दो मे गगा दुराचारियो की हिमायती है—दोनो मे विवाद होता है। अन्त मे अपने मत की पुष्टि के लिए सत्यव्रत गिरिधर को मेला दिखाने ले जाता है।

मेले मे आये स्नानार्थियो को पडे परेशान करते है। उनमे से एक स्नानार्थी उसका विरोधकर गगा-विषयक अधविश्वासो को चुनौती देता है। इसी प्रकार हरिद्वार के कुशावर्त घाट पर भीड के धक्के खाते कुछ स्नानार्थी गगा-पुत्रो और उनके अभिकर्त्ताओ के चगुल मे पडकर दान-दक्षिणा देते है।

उसी मेले मे एक ओर जुआ तथा दूसरी ओर साधुओ के तम्बू मे पडित जी का कथा बाँचने, श्रोताओ की अन्धविश्वासपूर्ण मनौतियाँ करने तथा एक यात्री द्वारा सत्यनारायण कथा तथा तुलसी-शालिग्राम विवाह सम्बन्धी प्रश्न पूछे जाने पर पडित का उससे पिंड छुड़ाने, ज्योतिषी साधु का भोले और मूर्ख ग्रामीणो को ठगने और स्त्रियो को भ्रान्ति मे डालने आदि की घटनाएँ देखने को मिलती है।

गंगावतरण (सन् १९५८) ले० जानकीवल्लभ शास्त्री, प्र० 'पाषाणी' मे सग्रहीत, लोकभारती इलाहाबाद, *पात्र* पु० ४, स्त्री २, अक-रहित, *दृश्य :* ३।
घटना-स्थल वन, उद्यान।

इसमे गगा के भू-अवतरण हेतु भगीरथ के प्रयत्नो की पौराणिक कथा वर्णित है। सूत्रधार भगीरथ के कर्मठ व्यक्तित्व का उल्लेख करते हुए गगावतरण के असिधारा-व्रत की ओर सकेत करता है। उधर स्वर्ग मे नारद की सूचना पर इन्द्र भगीरथ के तप से उद्विग्न होकर रभा तथा उर्वशी अप्सराओ को तप-भंग हेतु भेजते है।

द्वितीय दृश्य मे युगल नर्त्तकिया विभिन्न कामोद्दीप्त चेष्टाओ द्वारा भगीरथ की तपस्या खडित करने का प्रयास करती है किन्तु विफल रहती है, इससे भगीरथ का सकल्प और भी दृढ हो जाता है। इसी समय वर ब्रूहि—कहते हुए ब्रह्मा प्रकट होते है। भगीरथ उनसे पितर-उद्धार की प्रार्थना करते है। इस पर ब्रह्मा पार्थिव लोक मे कर्म की प्रधानता का उल्लेख करते हुए कहते है कि तुम्हारे पुण्य कर्मो से पितरो का मोक्ष सम्भव नही। ये कर्म तुमको स्वर्ग की उपलब्धि करा सकते है। किन्तु भगीरथ उस स्वर्ग को त्याज्य समझते है जो उनके पूर्वजो का उद्धार न कर सके। इसी समय अचानक नारद का आगमन होता है और वे ब्रह्मा को भगीरथ की लोकमगल भावना से परिचित कराते है जिससे ब्रह्मा प्रभावित होकर आशीर्वाद देते है। तत्पश्चात् गगा के भारवहन हेतु भगीरथ शकर की आराधना के लिए तत्पर होते है। अन्त मे शकर इस पुण्य-कार्य हेतु स्वयं प्रस्तुत होते है।

गंगा स्नान (सन् १९३८, पृ० २४) ले० भिखारी ठाकुर, प्र० दूधनाथ पुस्तकालय, कलकत्ता।
घटना-स्थल गगातट।

इस सामाजिक नाटक मे माता का पुत्र से प्रेम दिखाया गया है।

इस नाटक का नायक सतानहीन म्लेच्छ है। उसकी धारणा है कि गगा-स्नान से उस के घर मे सतान हो सकती है। वह माँ और पत्नी के साथ गगा-स्नान को जाता है। वहाँ अपनी माँ को दुत्कार गगा के किनारे छोडकर सन्तान की कामना से आशीर्वाद लेने एक साधु के पास जाता है। साधु बडा ही प्रपची और धूर्त है। वह म्लेच्छ की पत्नी को एकान्त मे ले जाता है और उसके आभूषण छीनकर भाग जाता है। अब इस दम्पति को यह अनुभव होने लगता है कि उन पर यह विपत्ति उनके द्वारा माता के अपमान के कारण आई है। वह गगा-स्नान के मेले मे अपनी माता को खोजता फिरता है। अन्त मे उसको पाकर दोनो प्रसन्न होते ह। माता तब भी बेटे को प्यार करती है और सब घर

लौट आते है ।

गंगोत्री (सन् १८९७, पृ० ९३) ले० वालमुकुन्द पाण्डेय, प्र० लखनऊ प्रिंटिग प्रेस, लखनऊ ।
घटना-स्थल . गाँव, जमीदार का भवन ।

इस सामाजिक नाटक मे नवविवाहिता पत्नी की सच्ची पति-परायणता दिखाई गई है ।

गगोत्री का विवाह होने पर जब वह पति के साथ अपने गृह जाने लगती है तभी वहाँ का जमीदार बलात् गगोत्री का हरण करने के लिए आ धमकता है। जमीदार सम्पन्न व्यक्ति है और गगोत्री का विवाहित पति अति सामान्य कृपक । जमीदार के प्रलोभन देने पर माता-पिता विचलित हो जाते है । गगोत्री के विवाहित पति की हत्या कर दी जाती है । पति का वियोग सहने मे असमर्थ होने के कारण सती साध्वी गगोत्री गोली के द्वारा आत्महत्या कर लेती है ।

गड़बड़ घोटाला (सन् १९१८, पृ० ३४), ले० शिवरामदास गुप्त; प्र० उपन्यास वहार आफिस, काशी, *पात्र* पु० १०, स्त्री ३ अक रहित, *दृश्य* ३ ।
घटना-स्थल कलन्दर का मकान, रास्ता, घटालवेग का मकान ।

इस सामाजिक नाटक मे प्रेमी द्वारा अपनी प्रेयसी को प्राप्त करने के लिये किये गये आडम्बरो का वर्णन है ।

कलन्दर घण्टालवेग की लडकी करीना से प्रेम करता है । वह चटोरी से घण्टालवेग तथा करीना को पत्र लिखवाकर बुलाने भेजता है । इधर खटपट की छुपी हुई शरारत से लाल स्याही गिर जाती है जिसे खून समझकर सिपाही कलन्दर को पकडने चले आते है । इसी बीच घण्टालवेग अपनी लडकी के साथ आता है और यह तमाशा देखकर वापिस चला जाता है । सिपाही जब खटपट को मुर्दा समझकर ले जाना चाहते है तो वह जीवित खडा हो जाता है । धोखा देने के अपराध मे खटपट ही पकड़ा जाता है । अब कलन्दर अपनी माशूका को प्राप्त करने के लिए स्त्री का भेष बदलकर घण्टालवेग को अपने जाल मे फँसाता है । घण्टालवेग अपने निकाह के लिए काजी और मौलवी को बुलाने जाता है । उसी समय कलन्दर अपना भेद प्रकट करता है । घण्टालवेग के आने पर सारा रहस्य खुल जाता है । करीना और कलन्दर का मिलाप हो जाता है ।

गणेश जन्म (सन् १९३०, पृ० ११४), ले० प० रामशरण आत्मानद, प्र० उपन्याम वहार आफिस, काशी, *पात्र* पु० १६, स्त्री ५, *अक* ३, *दृश्य* ६, ८, ८ ।
घटना-स्थल शिवपुरी, इन्द्रलोक, पर्वत, जंगल आदि ।

इस पौराणिक नाटक मे गणेश जन्म की कथा का वर्णन किया गया है । इसमे शिव और पार्वती की कथा के साथ कामदेव की घटना भी दिखाई गई है । भस्मासुर राक्षस की कथा भी इसमे वर्णित है ।

गद्दार (सन् १९६१), ले० कुँवर कल्याणसिह प्र० राष्ट्रीय नाट्य परिपद, लखनऊ, *पात्र* पु० ८, स्त्री ३, *अक* ३ ।
घटना-स्थल पहाडी, गाँव, घर, जगल एवं कवायलियो का डेरा ।

इस नाटक मे १९४७ मे कश्मीर पर पाकिस्तानी कवायली लुटेरो द्वारा किये गये अत्याचारो तथा भाई की गद्दारी का सशक्त चित्रण है । असलम अपनी बेटी नफीस के साथ कवायली लुटेरो से डरकर गाँव छोडकर जाना चाहता है । किन्तु शौकत, मुल्तान, जरीना आदि के द्वारा बेटी नफीस और भूमि की रक्षा का विश्वास पाकर वह रुक जाता है । फिर भी कवायली हमले मे असलम और शौकत मारे जाते है ।

नफीस धोखे से लुटेरो द्वारा पकड ली जाती है । मुल्तान भेष बदलकर कवायलियो मे जा मिलता है । वह भारतीय फौज को कवायलियो का पता बताता है जिससे हजारो कवायली मारे जाते है । लुटेरा सरदार को मुल्तान की चाल और गद्दारी का पता चल जाता है । वह मुल्तान को गोली मारकर तथा नफीस को जबरदस्ती लेकर भागता है ।

सरदार जैसे ही नफीस को भी मारने के लिए वन्दूक उठाता है, वैसे एक गोली उसको लगती है और वह वहीं ढेर हो जाता है। सरदार को गोली मारनेवाले अफजल और नूरा पहाड से उतरकर वेहोश नफीस को कधे पर उठा कर अपने घर ले जाते है ।

अफजल नफीस की देखभाल अपनी वहन की तरह करता है । नफीस होश मे आने पर भी पागलो की तरह बाते करती है। अफजल कबायलियो के अत्याचारो से गॉव को बचाने के लिये माँ के मना करने पर भी अब्बू के साथ चला जाता है। इधर नूरा नफीस को अकेला पाकर छेडखानी करता है । नफीस अपनी वेबसी पर रोती हुई मा से शिकायत करती है। माँ को नूरा की इस शरारत पर विश्वास नहीं होता और वह उल्टे नफीस को डॉटती है। अफजल को धोखे से कवायली जगल मे घेर लेते है। वह बुरी तरह घायल होकर घर लौटता है। नफीस रोते-रोते अफजल से नूरा की शिकायत करती है। अफजल गुस्से मे आकर नूरा को घर से भगा देता है। नूरा गद्दार रहमान से मिलकर रात को शराव के नशे मे नफीस को चुराने और अफजल को मारने आता है। माँ नूरा की इस गद्दारी को भॉपकर खुद अपने हाथो से उसको गोली मार देती है।

गद्दार (सन् १९५२) ले० पृथ्वीराज कपूर, प्र० : पृथ्वी थियेटर्स, वम्वई, *अक* ३ ।

इसमे लीगियो की गद्दारी और स्वार्थ-परता वर्णित है।

एक राष्ट्रभक्त मुसलमान अपने साथियो के वहकावे मे आकर लीगी वन जाता है। परन्तु वाद मे देशभक्त हो जाता है। अन्त मे लीग का शिकार वन शहीद हो जाता है। लीगवालो की इस स्वार्थपरता को देख-कर लोग घृणा करते है और उनसे अलग हो जाते हैं। फलस्वरूप उनकी स्वार्थ-प्रेरणा इस भारत-भूमि को दो भागो मे बॉट देती है। सन् २१ से ४७ तक की राजनीतिक घटनाएँ प्रदर्शित है। पृथ्वी थियेटर्स द्वारा अभिनीत ।

गरीव किसान नाटक (सन् १९२३ पृ०, ९८), ले० दुर्गाप्रसाद गुप्त, काशी, प्र० उपन्यास वहार आफिस, काशी, *पात्र* पु० १३, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* ६, ५, ३ ।

इसमे किसानो की असहाय अवस्था और क्रूर जमीदारो के अत्याचारो का वर्णन है। जमीदार जालिमसिह किसानो पर अनेक अत्याचार करता है । अन्त मे उसके मित्र डिप्टी कलेक्टर (प्रेमनारायण) उसको अत्याचारो का दुष्परिणाम वताते हुए सन्मार्ग पर चलने का उपदेश देते है। प्रेमनारायण के समझाने पर दुर्जनसिह नामक जमीदार भी अपनी गलती महसूस करता है।

गरीब हिन्दुस्तान (वि० स० १९७९, पृ० १९१), ले० किसनचन्द 'जेबा', प्र० एस० सन्तसिह एण्ड सस, लाहौर, *पात्र* पु० २१ स्त्री ८, *बाब* ३, *दृश्य* ७, ७, ४ । *घटना-स्थल* जमीदार का बाग, जगल, हवेली ।

इस सामाजिक नाटक मे भारतीयो पर विदेशी सभ्यता की छाप तथा हिन्दू-मुस्लिम फूट का सुन्दर चित्रण है। ठा० सूर्यसिह विलायत मे शिक्षा प्राप्तकर वैरिस्टर वन लौटते है। उन्हे भारत की हर वात बुरी लगती है। उसकी माता कौशल्या को अव पछतावा हो रहा है कि वेटे को विलायत भेजकर तीस हजार रुपया नष्ट किया। सूर्य सिंह अव घर की पद्धति का विरोध करते हैं और अपने पिता ठाकुर से कहते है, "शट अप यू वेवकूफ फादर। शेम-शेम टुम विलकुल गधा है।" सूर्यसिह विलायत मे जाकर शिकार और शराव का सेवन करने लगा है। यहाँ आकर वह वेश्यागामी भी वन जाता है। उसकी वहन कमला पर उसकी स्वेच्छाचारिता का प्रभाव पडता है और वह घर से भाग जाती है। सारा परिवार दुखी हो जाता है।

इसी के समानान्तर दूसरी कथा हिन्दू-मुसलमानो के वैमनस्य की चलती है। हिन्दुओ मे हरि और मुसलमानो मे वशीर हिन्दू-मुसलमान की मैत्री के पक्ष मे है। मुसलमान गाय की कुर्वानी पर तुले है पर वशीर उनका

विरोध करता है। इसी प्रकार हिन्दू छूआ-छूत पर डटे हुए है। हरि उनको समझाता है। इसी प्रकार गरीव हिन्दुस्तान के शत्रु रूप मे विद्यमान हिन्दू-मुसलमान की फूट का सुन्दर चित्रण मिलता है।

गरीब हिन्दुस्तान उर्फ स्वदेशी तहरीक (सन् १६४२), ले० मोहम्मद इवराहीम महशर अवालवी, प्र० जे० एस० सन्तसिह एण्ड सन्स, लाहौर, पात्र ६।
घटना-स्थल जमीदार का बाग, जगल, महल।

यह नाटक स्वदेशी आन्दोलन पर आधारित है। ठा० हरिसिंह अपने पुत्र सूरजसिह को विलायत पढने भेजते है। वह विदेश से लौटने पर अपने पिता को स्वागतार्थ फूल (वेवकूफ) की उपाधि प्रदान करता है। उसे यहाँ का समस्त वातावरण घृणित प्रतीत होता है।

इसमे युगव्यापी छुआछूत और हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक भावना पर प्रकाश डालने के लिये चोटीधारी हरि पाण्डे और शिव पाण्डे का मौलाना वशीर से विवाद भी प्रस्तुत है। सज्जन राष्ट्रवादी मुसलमानो का प्रतिनिधित्व मौलाना करते है जो गाय के स्थान पर अपने पुत्र को वलि देने के लिये प्रस्तुत करते है।

ठा० हरिसिंह अपने स्वप्नो के विपरीत पुत्र सूरजसिह के आचरण से असन्तुष्ट होकर उसे निर्वासित कर देते है। सूरज अपने कुकृत्यो से पीडित हो अन्ततोगत्वा भूल स्वीकार करता है और पिता द्वारा क्षमा कर दिया जाता है।

गरीवी या अमीरी (सन् १६४७, पृ० १६५), ले० सेठ गोविन्ददास, प्र० इलाहावाद हिन्दुस्तानी एकेडमी, *पात्र* पु० ३, स्त्री २, अक ५, *दृश्य* ३, ३, ३, ३, ३।
घटना-स्थल द० अफ्रीका, भारत।

विद्याभूपण भारतीय आदर्शवादी साहित्य-प्रेमी निर्धन युवक है। दक्षिणी अफ्रीका मे एक धनी लडकी अचला से उसका प्रेम हो जाता है। परन्तु विद्याभूपण उसे ऐश्वर्य के वीच मे ग्रहण करने को तैयार नही होता। वह अदर से अचला के प्रति प्रेम होते हुए भी उसे छोडकर भारत चला आता है। अचला भी किसी वहाने भारत चली आती है। उसका पिता अपनी वेटी के लिये वहुत चिन्तित है। वह एक ऐजेन्ट से पता लगाकर अचला के लिये आवश्यकतानुसार धन भेजने लगता है। विद्या-भूषण उसे स्वीकार नही करता क्योकि उसके पिता ने गरीबो के खून से धन कमाया है। वह अचला से अलग होकर एक गरीव मुहल्ले मे रहने लगता है। पत्र-पत्रिकाओ मे अपने लेख निकालता है। तो भी उसका निर्वाह ठीक प्रकार से नही होता। विद्याभूपण का स्वास्थ्य गिरने लगता है। इधर अचला भी एक देहात मे रहकर सारा धन गरीवो की सेवा मे लगा देती है। जीवन से अधिक तग आकर विद्या-भूषण अचला के पास आता है, यहाँ आते ही उसकी हृदय-गति रुक जाने से मृत्यु हो जाती है। परन्तु अचला अपने पुत्र सरस्वती-चन्द्र को जीवन का आधार वनाकर कर्त्तव्य-पथ पर अचल रहती है।

गरुड़ध्वज (सन् १६५६, पृ० १८४), ले० लक्ष्मीनारायण मिश्र, प्र० हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, ज्ञानवापी, वाराणसी, *पात्र* पु० १२, स्त्री ४ तथा अन्य सेवक, अक : ३।
घटना-स्थल विदिशा, वौद्ध-विहार युद्ध-भूमि, मैदान, उद्यान।

इस ऐतिहासिक नाटक मे विक्रमादित्य के शौर्य का वर्णन है। विदिशा का शुग सेनापति विक्रममित्र यवनो से देश की रक्षा करने को तत्पर है। वौद्ध राजा काशिराज अपनी कन्या वासन्ती का विवाह वौद्धधर्मावलम्वी किसी व्यक्ति से करना चाहता है। परिणामत वह यवन वौद्ध के साथ अपनी कन्या भेज देता है। परन्तु विक्रममित्र यह तथ्य जानकर कन्या को वीच मे ही यवन से छीन लेता है। इसी समय मलयकुमारी भी विदिशा मे शस्त्र-विद्या का अध्ययन करने को ठहरी है। वासन्ती अपनी करुण-कथा मलय कुमारी को सुनाती है। इन्ही दिनो अवन्ती पर यवन आक्रमण होता है। मालव राज-कुमार विपमशील तथा विक्रममित्र यवनो ने युद्ध करते हैं। यही अवन्ती मस्कृत कवि कालि-

दास भी बोद्ध सघो मे भिक्षुओ के साथ रहते है। उन्हे बुलाकर विक्रममित्र कालिदास को काशिराज के पास भेजता है। कालिदास उसे अपने विचारो से प्रभावित करते हुए भागवत-धर्म का अनुयायी बना लेते है। काशिराज की पुत्री पिता के सकेत पर कालिदास के गले मे माला डाल देती है लेकिन कालिदास सहमत नही होते है। कालिदास, काशिराज विक्रममित्र सभी मिलकर मालव राजकुमार की रक्षा के लिए शत्रुओ को परास्त करते हुए शान्ति की स्थापना करते है। वासन्ती का विवाह भी कालिदास से हो जाता है। अचानक एक श्रेष्ठी आकर विक्रममित्र को उसके पुत्र के अन्याय की सूचना देता है। पुत्र को पकडवाकर राजा, विपमशील को उसे (पुत्र को) दण्ड देने के लिए न्यायाधीश घोषित करता है। श्रेष्ठी-पुत्री कौमुदी के निवेदन करने पर वे छूटते है तथा देश छोडकर दूर चले जाते है। विक्रममित्र शुगकुमार के चले जाने पर विपमशील को विदिशा का राजा घोषित कर देता है। कालिदास की इच्छा से उनका नाम विपमशील से विक्रमादित्य रखा जाता है। विक्रमादित्य प्रतिज्ञा के साथ 'गरुडध्वज' को फहराता है। उसके गौरव और प्रतिष्ठा को सदैव बनाये रखने का प्रण करता है।

गर्दभ सेनोद्धार (प्रहसन) (सन् १९३०, पृ० २८), ले० प० जगन्नाथ शर्मा राजवैद्य, प्र० धार्मिक यन्त्रालय, प० जगन्नाथ तिवारी, इलाहाबाद, पात्र पु० ४, अक और दृश्य-रहित।

विपयासक्त होकर या लालचवश ईसाई होनेवालो की आखे खोलने के लिए यह प्रहसन लिखा गया है। मुसलमान गगादास गगा की महिमा का वर्णन करते हुए हिन्दू धर्म को सभी धर्मो मे श्रेष्ठ वताता है। एक दिन गगादास तथा गर्दभसेन क्रिस्तान की जोरदार वहस होती है। अन्त मे गर्दभसेन अपना भेद खोलता है कि वह ईसाई लडकी के साथ विवाह करने के लालच मे ईसाई वन गया था। वास्तव मे वह जाति का धोवी हिन्दू है। ब्राह्मण वृकोदर तथा पुरोहित गर्दभसेन से प्रायश्चित्त करवाकर पुन धोवी की जाति मे सम्मिलित कर लेते है। इस प्रकार गगादास के ससर्ग से गर्दभसेन का उद्धार हो जाता है।

गांधर्व विवाह (वि० स० २०१०, पृ० १२०), ले० दामोदर झा, अध्यापक, प्रभु नारायण राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, रामनगर, बनारस, पात्र पु० ३१, स्त्री ११, अक ५, दृश्य २२।
घटना-स्थल राज सभा, फुलवाडी, रास्ता, वन, अर्जुन का शयन-कक्ष, युधिष्ठिर का दरबार, दुर्योधन का दरबार।

गान्धर्व-विवाह की कथा-वस्तु महाभारत से ली गयी है। द्वारिका मे अर्जुन एव सुभद्रा के परस्परावलोकन से दोनो के हृदय मे राग उत्पन्न होता है। अर्जुन के इन्द्रप्रस्थ चले जाने पर सुभद्रा वियोगिनी बन जाती है। सत्यभामा की मत्रणा से सुभद्रा अर्जुन को पत्र लिखती है। पत्र पाते ही अर्जुन व्याकुल होकर शीघ्र ही कृष्ण और वसुदेव के साथ द्वारका पहुँचते है। अर्जुन के द्वारका पहुँचते ही सुभद्रा की विरहाग्नि अत्यधिक प्रज्वलित हो जाती है। ऐसी स्थिति मे सत्यभामा के सत्प्रयास से कृष्ण को अनुकूलकर सुभद्रा और अर्जुन की शादी गान्धर्व रीति से हो जाती है। किन्तु बलराम सुभद्रा की शादी दुर्योधन के साथ निश्चित करने के कारण वे दुर्योधन को आमन्त्रण भेज देते है। दुर्योधन वारात की तैयारी करके युधिष्ठिर को इसमे सम्मिलित होने का आग्रह करते है। अर्जुन भी दुर्योधन को पत्र लिखकर गान्धर्व विवाह की सारी वातो से अवगत करा देते है। ऐसी स्थिति मे दुर्योधन सेना सहित बारात लेकर द्वारका से चार मील की दूरी पर ठहरता है। इधर वलराम भी शादी की पूर्ण तैयारी करते है। इसी बीच कृष्ण का इशारा पाकर शिकार खेलने के लिए अर्जुन सुभद्रा को लेकर इन्द्रप्रस्थ के लिए प्रस्थान करते है। रास्ते मे यादवी सेना से युद्ध होता है। कौरवी सेना भी अर्जुन को पकडने का प्रयास करती है। क्रमश कर्ण और भीम के प्रत्युत्तर के फलस्वरूप घमासान लडाई होती है। किन्तु भीष्म और द्रोण के प्रयास से युद्ध स्थगित हो जाता है। अर्जुन भी यादव सेना को परास्तकर वापस आते है और उन दोनो की विधिवत् शादी

होती है, इस घटना से कुछ दिनो तक बलराम अप्रसन्न रहते है। किन्तु अर्जुन के सत्प्रयास से उनका मनोमालिन्य दूर हो जाता है। अन्तत अर्जुन और सुभद्रा इन्द्रप्रस्थ के लिए प्रस्थान करते है।

गाधार पतन—'संकल्प' मे संग्रहीत (सन् १९४६, पृ० १०३), ले० प्रेमनारायण टण्डन, प्र० विद्या मन्दिर, लखनऊ, *पात्र* पु० ३, स्त्री १, *अक* १।
घटना-स्थल राजप्रासाद तथा नदी-तट।

गाधार पतन गीतिनाट्य सिकन्दर के विश्व-विजय अभियान मे गाधार के देशद्रोह की इतिहास प्रसिद्ध कथा पर आधारित है। यह सत्य है कि गाधार नरेश आभीक सिकन्दर को अपने राज्य द्वारा प्रवेश मार्ग प्रदान कर देशद्रोही की सज्ञा ग्रहण करते है। परन्तु इस घृणित कृत्य के पीछे उनकी विवशता विद्यमान है। आभीक सिकन्दर से सधि करते हुए अपने पुत्र को विद्रोही सेना का सगठन करने के लिए नियुक्त करता है, जिससे सिकन्दर को भारत मे बुलाकर भारतवासियो के शौर्य का परिचय दिया जा सकता है।

गान्धारी (सन् १९६५, पृ० १६८), ले० आचार्य चतुरसेन, *पात्र* पु० १५, स्त्री ४, *अक* ५, *दृश्य* ९, ६, ९, ८, ९।
घटना-स्थल गान्धार का महल, हस्तिनापुर, पुरुषपुर का राजप्रासाद, अस्त्र परीक्षा की रगभूमि।

इस पौराणिक नाटक मे महाभारत की सम्पूर्ण कथा को समेटने का प्रयास किया गया है। इसलिये कुछ कथाये सकेत रूप मे ही मिलती है। गान्धारी का चरित्र अति सुन्दर दिखाकर उसके पतिव्रत धर्म की प्रतिष्ठा को उच्चासन दिया गया है। इसीलिये नाटक के अन्त मे गान्धारी की प्रशसा कृष्ण, अर्जुन तथा अन्य सभी लोग करते है।

इसके अतिरिक्त इसमे भास के नाटको एव वेणी-सहार का प्रभाव भी देखने को मिलता है। काल्पनिक घटनाओ से कथाओ का सूत्र क्रमपूर्वक जुडा हुआ है। शेष सम्पूर्ण कथा महाभारत से मिलती-जुलती है।

गांधी दर्शन (सन् १९२२, पृ० ९३), ले० दुर्गाप्रसाद गुप्त, प्र० भार्गव पुस्तकालय, वाराणसी।
घटना-स्थल गाँव, नगर, मदिरालय, सभा, जलूस।

इस नाटक मे गांधी के उच्चादर्शों का मानव जीवन पर प्रभाव दिखाया गया है। नायक दौलतराम अग्रेजी राज्य मे रायसाहब और राजा की उपाधि प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील है। वे बडे-बडे अधिकारियो और अफसरो की मास, मदिरा द्वारा दावते करते है। दौलतराम के मित्र रज्जब खाँ उन्हे परामर्श देते हुए कहते है कि .

"अगर है राजा जीवन के
फिरने का इरादा जनाब का।
तो कबाब कलिया पके
मजे से चले दौर भी शराब का।।
करे गवर्नर की खूब खातिरदारी,
सहज है मिलना खिताब का।"

वह हमेशा अपनी झूठी शान के लिये परेशान रहता है। किन्तु अन्त मे गाधी जी के प्रभाव से उसका जीवन परिवर्तित हो जाता है।

गाँव की ओर (सन् १९६१, पृ० ९८), ले० बाबूरामसिंह 'लमगोडा', प्र० श्रीमती प्यारी देवी, साधना प्रकाशन, औसानगज, वाराणसी-१, *पात्र* पु० १२, स्त्री १, *अक* ३, *दृश्य* ३, ५ १।
घटना-स्थल मजदूरो की बस्ती।

इस नाटक का उद्देश्य सुख की लालसा से अपनी जन्मभूमि को छोडकर नगरो मे जाकर बसनेवालो की दुर्दशा दिखाना है। शहर से बाहर एक मन्दिर है। उसमे पूजन के समय अनेक पुजारी तथा भिक्षुक एकत्रित होकर पूजा करते है। इसी समय चेतन एक किसान गाँव छोडकर नगर मे आता है। वह चारो तरफ भिखमँगे देखकर पश्चात्ताप करता है। सयोग से पागल से मुलाकात होने पर कुछ वार्तालाप होता है। पागल टोल के चबूतरे की ओर नशे मे चूर बडबडाता है रोटी! रोटी!! शहर मे जिससे पूछो क्या करने आये हो—कहता है बस रोटी कमाने आया हूँ। इतने मे जेठू और चेतन आ जाते हैं

जो अभी गाँव छोडकर शहर आने के विषय मे बाते करते है। उस मन्दिर पर अनेको पुर्जे चिपके रहने से सेठ जी पुजारी को निकाल देते है और पुजारी पागल से माफी माँगता है। इधर चेतन को तथा और गाँव से आये हुए किसानो को शहर मे कष्ट होता है। इसलिए सब गाँव के लिए वापिस हो जाते है। वहाँ आकर सुखी जीवन व्यतीत करते है।

गाँव की दीवार (सन् १९६२, पृ० ९०), ले० . कृ० शि० मेहता, प्र० साहित्य प्रकाशन मन्दिर, हाई कोर्ट रोड, लश्कर, ग्वालियर; *पात्र* पु० १३, स्त्री २, *अक* १, *दृश्य* · २। *घटना-स्थल* गाँव, गली, झोपडी ।

इस सामाजिक नाटक मे शिक्षित युवक युवतियो का प्रयास दिखाया गया है।

मुरारी एक शिक्षित ग्रामीण युवक है। उसका पिता भोला अपनी सम्पत्ति बेचकर उसे पढाता है। शिक्षित होने पर मुरारी अपने गाँव आता है। वह गाँव मे फैले भेद-भाव तथा छुआछूत को दूर करने का प्रयास करता है। वह गाँव मे स्कूल खोलकर अशिक्षित ग्रामीणो को शिक्षित बनाकर उनमे एकता का भाव सचारित करता है और उनके साथ मिलकर गाँव की सफाई एव सडक का निर्माण कराता है। गाँव की तरुण बालिका राधा भी इस काम मे गाँववालो की सहायता करती है। लेकिन गाँव के सेठ एव महन्त को यह बात पसन्द नही आती। वे गाँव के एक उद्दड युवक काला को प्रलोभन देकर अपनी तरफ मिला लेते है और मुरारी एव उसके साथियो को कष्ट देने की कोशिश करते है। किन्तु काला भी मुरारी से प्रभावित हो जाता है।

धोखे से सेठ और महन्त राधा को अपने मकान मे बन्द कर लेते है। लेकिन मौके पर काला पहुँचकर राधा को छुडाता है तथा सेठ को मारता है। महन्त भाग जाता है। राधा और मुरारी सब को क्षमा कर देते है। इस घटना के बाद सेठ भी इन लोगो की मदद करता है। सेठ की मदद से गाँव मे स्कूल एव अस्पताल खुलता है। लोग एक दूसरे की मदद करते हुए सुख से जीवन व्यतीत करते है।

गाँव की पुकार (सन् १९६८, पृ० ४८), ले० · रामचन्द्र राही, प्र० · सर्व सेवा सघ, वाराणसी, *पात्र* . पु० १४, *अक* ३, *दृश्य* : ३, ३, ३।
घटना-स्थल बिहार के गाँव मे हाई स्कूल की इमारत, हाई स्कूल के मैदान मे सभा, सेठ दौलतराम की गद्दी, विकास कार्यालय, बैठक खाना, चुनाव सभा, मच पर बुढिया की लाश।

इसमे मिनिस्टरो की साजिश तथा कर्त्तव्यविमूढता का चित्रण किया गया है।

बिहार के एक गाँव मे नवरगपुर के प्रतिष्ठित व्यक्ति हरिनारायणसिह का पुत्र कुँवर सिह सन् ४२ के आन्दोलन मे शहीद होता है। उसके साथी उग्रसेन झा, दशरथ मडल, अलाउद्दीन खाँ, खेदू पासवान जेल से मुक्त होने पर सन् १९४७ मे कुँवर नारायण की स्मृति मे हाई स्कूल की स्थापना करते है। बारह वर्ष बाद सन् १९५९ के चुनाव मे काँग्रेस के साथी कार्यकर्त्ता राजसत्ता के मोह मे काँग्रेस से पृथक् होकर जनसघ, मुस्लिमलीग और कम्युनिस्ट दल के नेता बन जाते है। चुनाव के दिनो मे आपस मे लडते और एक दूसरे की निन्दा करते है। मिनिस्टरी के लिए मनोहर प्रसाद काँग्रेस छोडकर अन्य दलो का नेता बन जाता है। मिली-जुली सरकार मे मत-भेद होने से किसानो और मजदूरो की भलाई का कानून पास नही हो पाता।

सन् १९६७ के चुनाव मे जातिवाद जोर पकडता है। काँग्रेस, जनसघ, कम्युनिस्ट और समाजवादी पार्टी मे झगडे होते है। मत-दाताओ को धोखा एव आशा दिलाकर नेता अपना कार्य सिद्ध करते है। उनमे भ्रष्टाचार बढता है। प्रजा हित की किसी को चिन्ता नही होती। विधवा ब्राह्मणी सुकारु भिखारिन भूख से तडपती हुई गाँव मे मर जाती है। हरिनारायणसिह गाँववालो को एकत्र कर विनोबा भावे की ग्रामदान की योजना समझाते है और गरीबी के निवारण का यही सर्वोदयी उपाय स्वीकार किया जाता है।

गाँव चलो (सन् १९६२, पृ० ८८) ले० :

रामनिरजन शर्मा अलख; प्र० ग्रंथालय प्रकाशन, दरभगा, पात्र पु० ७, स्त्री २, अक २, दृश्य ६, ७।
घटना-स्थल गाँव, सडक, स्कूल, मार्ग।

इस सामाजिक नाटक मे ग्राम सुधार की अनेक समस्याएँ चित्रित की गयी है। इसके द्वारा शिक्षा भवन वनवाने, पुस्तकालय खोलने तथा ऊँच-नीच का भेद-भाव दूर करने का प्रयास किया गया है। श्याम और सुन्दर दो ग्रामीण युवको के प्रयासो से गाँव का वातावरण बदल जाता है। श्याम गरीब किसान की वेटी सुपमा का विवाह भी अपने साथ कर लेता है।

गुनहगार बाप (सन् १९२३), ले० मुहम्मद इवराहीम, प्र० जे० एस० सर्न्तासह एण्ड सन्स, लाहौर, पात्र पु० ६, स्त्री ४।
घटना-स्थल महल, स्वयवर भवन, रणक्षेत्र राजसिहासन आदि।

इस अर्ध-ऐतिहासिक नाटक मे बाप की भूलो से बेटो पर आई मुसीवत का वर्णन है।

राजा विक्रम अपनी साध्वी पत्नी निर्मला और दो पुत्र राजकुमार चन्दर्रासह और वाल सिह के साथ सुख और शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करते है। उनके सुखी जीवन मे मदनकला नर्तकी का प्रवेश गृह-कलह का कारण वन जाता है। विक्रम नर्तकी के पीछे दीवाना हो जाता है। ऐसी परिस्थिति मे विक्रम का मित्र सज्जनसिह अपनी कन्या रूपवती का विवाह चन्दर्रासह से करने आता है। वह साथ मे अपनी पुत्री भी लाया है। रूपवती विक्रम की दोनो रानियो से पृथक्-पृथक् मिलती है। मदनकला राजकुमार चन्दर्रासह की बडी निन्दा करती है जिसके परिणामस्वरूप रूपवती सम्बन्ध के लिए स्वीकृति नही देती। अव मदनकला, जो राजा समर्रासह की गायिका थी, के लिये सघर्ष हो जाता है। समर्रासह विक्रम द्वारा मदनकला को उसे वापिस न करने के कारण उस पर आक्रमण करता है। विक्रम भयभीत हो मदनकला को लेकर भाग जाता है। रानी निर्मला और चन्दर्रासह को भी भवन त्यागकर ही आत्मरक्षा का उपाय सूझता है।

राजकुमार चन्दर्रासह महाराज सोपतसिह की पुत्री सूरजबाई के स्वयवर का समाचार पाकर वहाँ जाता है। वह सूरजबाई के द्वारा वरण कर लिया जाता है। उसका दूसरा भाई बालसिह अपने पौरुष से अर्जित सहयोग के बल पर पुन समर्रासह से राज छीनने मे सफल होता है। वह अपने भाई चन्दर्रासह से मिलने उसके पास जाता है। राजा विक्रम को नाना प्रकार की आपत्तियो और कष्टो को सहना पडता है। मदनकला भी हतवीर्य विक्रम को त्यागकर मौजसिह को अपना लेती है। व्यथित विक्रम राजा चन्दरसिह के यहाँ पहुँचकर न्याय की माँग करता है। काम पिशाचनी मदनकला साँप के डसने से परलोक-गामनी होती है। विक्रम की परिणीता पत्नी निर्मला भी अपने आपत्तिग्रस्त जीवन मे भटकती हुई उसी समय चन्दर्रासह के पास पहुँच जाती है। अन्त मे सारे भूले-भटके पीडित पुन. एकत्रित हो जाते है।

गुन्नौर की रानी (सन् १८८४, पृ० १२) ले० काशीनाथ खत्री, प्र० प्रयाग धार्मिक यन्त्रालय, प्रयाग, पात्र · पु० ६, स्त्री २, अक २।
घटना-स्थल गुन्नौर का राजमहल।

इन नाटक का निर्माण राजस्थान के गुन्नौर की रानी की वीरता तथा आत्मत्याग को लेकर हुआ है। शेर खा गुन्नौर पर विजय करने के वाद विजयोन्मत्त हो वहाँ की रानी को अपनी रखैल वनाकर रखना चाहता है। राजपूत रमणी के लिये धर्म और प्रतिष्ठा सर्वोच्च है। भारतीय सती नारी विपयी म्लेच्छ को अपना शरीर अर्पित करने मे अपना घोर अपमान समझती है। रानी हिन्दू धर्म और राजपूती आन की रक्षा के लिये कपटाचरण का सहारा लेती है। वह विजयी शेर खा के पास परिधान भिजवाती है। शेर खा उस पोशाक को पहनकर जव रानी के पास पहुँचता है तो वह रुष्ट हो करके स्वय नदी मे कूदकर प्राण त्याग करती है।

गुमराह (सन् १९५९, पृ० ९२), ले०

जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, *पात्र* पु० ७, स्त्री ४।

इस सामाजिक नाटक मे बाप द्वारा बेटे के गुमराह करने के प्रयास वर्णित है। दौलतराम जानता है कि गरीबदास लक्ष्मी के लिये किसी भी समय बागी बन सकता है। वह गरीबदास को गुमराह करने के लिये पडितो को बस मे करके उसे भाग्यवादी बना देता है। पर दौलतराम की यह भी चाल असफल होने के कारण वह अपनी बेटी शान्ति को लक्ष्मी की रक्षा के लिये साधन बनाता है। किन्तु शान्ति स्वय गरीबदास की बन्दिनी बन जाती है। वह रास्ते से हट जाना चाहती है, जिससे गरीबदास लक्ष्मी को पा सके। गरीबदास लक्ष्मी को छुडाने के लिए चल पडता है किन्तु दौलतराम फिर भी उसे गुमराह करने का प्रयत्न करता है। अन्त मे वह गरीबदास को गोली का निशाना बनाकर स्वय फरार हो जाता है। गरीबदास अपने प्राण देकर भी लक्ष्मी को छुडा लेता है।

गुरु द्रोण का अन्तर्निरीक्षण : अशोकवन बन्दिनी मे सकलित (सन् १६५६, पृ० ११४), ले० उदयशकर भट्ट, प्र० भारतीय साहित्य मण्डल, दिल्ली, *पात्र* पु० ५, स्त्री २।

इस पौराणिक गीतिनाट्य मे महाभारत के अपराजित योद्धा द्रोण के अन्तर्मन का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत है। गीतिनाट्य का प्रारम्भ द्रोण की अन्तर्द्वन्द्वात्मक स्थिति से होता है। कौरव पक्ष की अनीति से परिचित होते हुए भी वह उनका सेनापति-पद ग्रहण कर लेते है। वे अपनी अन्तश्चेतना के वशीभूत पाण्डवो के प्रति शत्रु भाव भी नही रख पाते। दुर्योधन को यह स्थिति असह्य होती है। वह कुलगुरु द्रोण के मर्म पर व्यग वाणी के तीक्ष्ण प्रहार करता है। दुर्योधन को तो द्रोण तर्क द्वारा शान्त कर देते है किन्तु छायारूप आत्मा के समक्ष वह झुक जाते है। उनका विगत जीवन चित्रपट की भाँति उनके सम्मुख साकार हो उठता है। द्रुपद को प्रतिशोध वश अर्जुन के द्वारा पराजित करवाना, अपने पुत्र के कारण एकलव्य जैसे एकनिष्ठ शिष्य को अगुष्ठविहीन अवस्था मे धनुर्विद्या से वचित करना, भरी सभा मे द्रौपदी के अपमान का तटस्थ भाव मे अवलोकन करना आदि घटनाएँ उनके जीवन को नष्ट कर देती है। अतीत का चिन्तन करते-करते छायारूप आत्मा उनके ब्राह्मणत्व को जाग्रत् करती है जो अब प्राय निष्कासित हो गया है। इस नैराश्यपूर्ण वातावरण मे मृत्यु की कामना करते हुए द्रोण प्रस्थान कर जाते है।

गुर्ज्जरेश्वर (सन् १६६७, पृ० १५६), ले० ओकारनाथ दिनकर, प्र० अनुराग प्रकाशन, अजमेर, *पात्र* पु० १०, स्त्री ५, *अक* ३, *दृश्य* ४, ३, ४। *घटना-स्थल* सिद्धराज जयसिह का मत्रणाकक्ष, पत्तन का राज-उद्यान, राजनर्तकी सुमोहा की अट्टालिका, पत्तन तुरगाध्यक्ष के आवास का एक कक्ष, सिद्धराज जयसिह का परिषद भवन, कुमारपालदेव का मत्रणाकक्ष।

सिद्धराज जयसिह गुर्ज्जर मण्डल राज्य का बिना उत्तराधिकारी नियुक्त किए स्वर्गवासी हो जाते है। यद्यपि कुमारपाल विद्यमान थे किन्तु उनके पितामह का जन्म एक नर्तकी रानी की कुक्षि से होने के कारण सिद्धराज घृणा करते थे। यहाँ तक कि कुमार के पूर्वज तथा उन्हे जीवित भस्म करा देने का षड्यन्त्र रचा गया था। उनमे अकेले कुमारपाल बच जाते है। राजसिहासन के लिए कतिपय उत्तराधिकारी उपस्थित होते है। कृष्णदेव चौहान, तुरगाध्यक्ष—जो कुमारपाल का बहनोई था—के अथक प्रयासो से जयसिह के पुत्र चाहडदेव को भी शाकम्भरी मे शरण लेने के लिए विवश होना पडता है। शाकम्भरी सम्राट अर्णोराज कुमारपाल की भगिनी और अपनी पत्नी का अपमान करते है। अर्णोराज से हुए युद्ध मे वे पराजित होते है और वन्दी बना लिए जाते है। उन्हे क्षमादान दिया जाता है। अवन्ति मे गुर्ज्जर मण्डल का दण्डनायक चाहडदेव कृष्णदेव की योगिनी नर्तकी सुमोहा के सान्निध्य मे लालच देकर कृष्णदेव एव कुमारपाल के विरुद्ध षड्-

यन्त्र रचता है। किन्तु सुशीला इस अथाह द्रव्य राशि को ठुकरा देती है। चाहडदेव को युक्तिपूर्वक गुर्जर साम्राज्य से निष्कासित कर दिया जाता है। कुमारपालदेव सिंहासनारूढ होने पर जनहितकारी अनेक कार्य करते हैं। कृष्णदेव कुमारपालदेव को सिंहासनारूढ कराकर उद्दण्ड हो जाता है। कुमारपालदेव उसे निष्पक्षभाव से मृत्यु दण्ड देते हैं।

गुल-बहार नाटक (सन् १९१३, पृ० २२), ले० शिवनन्दन मिश्र, प्र० काशी नागेश्वर प्रेस, पात्र पु० ७, स्त्री ५, अक २, दृश्य ६, ७।
घटना-स्थल नदी, भीमपुर, जगल।

इसमे गुल तथा बहार के आन्तरिक प्रेम को बड़े मार्मिक ढग से चित्रित किया गया है। जगल की रानी केसरी गुल की बहन है। बाप दादे की सम्पत्ति को हड़पने के लिए केसरी गुल को मरवा डालने का षड्यन्त्र करती है पर सयोगवश वह बच जाती है और उसकी भेट बहारसिंह से होती है। वह अपनी पालक बहन केसर को याद करती है। बहारसिंह उसे भी खोजते है। दोनो बहनें मिलकर बहारसिंह का परिचय जानना चाहती है। बहारसिंह उन्हे जगल से बाहर ले जाता है। पास ही एक नदी है। उन्हे बहार के दरबार को नक्कारा दिल्लू सिंह मिलते है। बहारसिंह एक नाव भाड़ा पर लेने के लिये वहाँ से अलग होते है। दिल्लू सिंह गाने मे मस्त है। उतने मे डाकू का एक दल आकर दोनो बहनो को उठा ले जाता है। बाद मे डाकू बहार सिंह एव दिल्लू सिंह को भी कैदखाने मे डाल देते है। इसी बीच बच्चन सिंह (बहार सिंह का भाई) आकर डाकुओं से इन्हे छुड़ाता है। गुल एव केसर भी किसी तरह जगल मे भाग जाती है। इधर बहार सिंह गुल के प्रेम की याद मे पागल है। साथ ही गुल भी बहार के वियोग मे तडप रही है। सुन्दरी और चपला दो सखियाँ बहारसिंह एव दिल्लू सिंह पर आसक्त होकर उनसे शादी करना चाहती है। परन्तु ये लोग शादी करने से इन्कार कर देते है। फलस्वरूप सुन्दरी और चपला डाकुओं के दल में मिल जाती है और इन्हे मरवा डालने का षड्यन्त्र करती है। ऐसे ही मौके पर बच्चन सिंह (बहार सिंह का भाई) वहाँ जाता है और उस षड्यन्त्र से इन दोनो को बचाता है। वे लोग वहाँ से चलकर जगल मे एक वृक्ष के नीचे बैठ जाते है। सहसा गुल और केसर वहाँ आ जाती है। उसी समय बहार सिंह का गुल के साथ तथा केसर का बच्चन सिंह के साथ गाधर्व विवाह हो जाता है।

गुलामी का नशा (सन् १९२४, पृ० ९२), ले० डा० लक्ष्मण सिंह, प्र० सुरेन्द्र शर्मा, प्रताप प्रेस, कानपुर, पात्र पु० ९, स्त्री ४, अक १, दृश्य १०।
घटना-स्थल गाव, नगर, सभा।

यह नाटक उस असहयोग आन्दोलन का चित्र उपस्थित करता है, जो देश के राजनैतिक जीवन मे एकदम युगातर उत्पन्न कर देता है। नौकरशाही ने खुशामदी लोगो से मिलकर क्रिमिनल ला आदि दमनकारी कानूनो को बना रखा है। वीर और साहसी देशभक्तो द्वारा ये कानून निर्भीकता के साथ तोडे जाते है। बच्चो से लेकर बूढो तक के हृदय मे महात्मा गाधी की विलक्षण प्रतिभा की धाक जम जाती है। लोग गाधी जी की प्रेरणाओ से प्रेरित होकर परतत्रता को दूर कर स्वतन्त्रता प्राप्त करने के हर सम्भव प्रयास मे लगे है।

गुस्ताखी माफ (सन् १९००, पृ० ८२), ले० सुदर्शन बब्बर, प्र० नवयुग प्रकाशन, दिल्ली, पात्र पु० ८, स्त्री ३, अक-रहित दृश्य ३।
घटना-स्थल घर, कमरा।

यह हास्य प्रधान नाटक है। इसमे विवाह और स्त्री समस्या को लेकर कथानक को बढाया गया है। बूढे को स्त्री का प्रलोभन देकर उसे मूर्ख बनाया जाता है तथा कन्हैया अपनी बीवी को दूसरे की बीवी बनाता है। वह अपने बच्चे को तिरस्कृतकर एक नये चरित्र का उद्घाटन करता है, किन्तु अन्त मे सभी एक परिहास के होने के कारण आपस मे अपनी स्थिति को समझते है और मन की

जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, पात्र पु० ७, स्त्री ४।

इस सामाजिक नाटक मे बाप द्वारा बेटे के गुमराह करने के प्रयास वर्णित है। दौलतराम जानता है कि गरीबदास लक्ष्मी के लिये किसी भी समय बागी बन सकता है। वह गरीबदास को गुमराह करने के लिये पडितो को बस मे करके उसे भाग्यवादी बना देता है। पर दौलतराम की यह भी चाल असफल होने के कारण वह अपनी बेटी शान्ति को लक्ष्मी की रक्षा के लिये साधन बनाता है। किन्तु शान्ति स्वय गरीबदास की बन्दिनी बन जाती है। वह रास्ते से हट जाना चाहती है, जिससे गरीबदास लक्ष्मी को पा सके। गरीबदास लक्ष्मी को छुडाने के लिए चल पडता है किन्तु दौलतराम फिर भी उसे गुमराह करने का प्रयत्न करता है। अन्त मे वह गरीबदास को गोली का निशाना बनाकर स्वय फरार हो जाता है। गरीबदास अपने प्राण देकर भी लक्ष्मी को छुडा लेता है।

गुरु द्रोण का अन्तर्निरीक्षण : अशोकवन बन्दिनी मे सकलित (सन् १९५६, पृ० ११४), ले० उदयशकर भट्ट, प्र० भारतीय साहित्य मण्डल, दिल्ली, पात्र पु० ५, स्त्री २।

इस पौराणिक गीतिनाट्य मे महाभारत के अपराजित योद्धा द्रोण के अन्तर्मन का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत है। गीतिनाट्य का प्रारम्भ द्रोण की अन्तर्द्वन्द्वात्मक स्थिति से होता है। कौरव पक्ष की अनीति से परिचित होते हुए भी वह उनका सेनापति-पद ग्रहण कर लेते है। वे अपनी अन्तश्चेतना के वशीभूत पाण्डवो के प्रति शत्रु भाव भी नही रख पाते। दुर्योधन को यह स्थिति असह्य होती है। वह कुल-गुरु द्रोण के मर्म पर व्यग वाणी के तीक्ष्ण प्रहार करता है। दुर्योधन को तो द्रोण तर्क द्वारा शान्त कर देते है किन्तु छायारूप आत्मा के समक्ष वह झुक जाते है। उनका विगत जीवन चित्रपट की भाँति उनके सम्मुख साकार हो उठता है। द्रुपद को प्रतिशोध वश अर्जुन के द्वारा पराजित करवाना, अपने पुत्र के कारण एकलव्य जैसे एकनिष्ठ शिष्य को अगुष्ठविहीन अवस्था मे धनुर्विद्या से वचित करना, भरी सभा मे द्रौपदी के अपमान का तटस्थ भाव से अवलोकन करना आदि घटनाएँ उनके जीवन को नष्ट कर देती है। अतीत का चिन्तन करते-करते छायारूप आत्मा उनके ब्राह्मणत्व को जाग्रत् करती है जो अब प्राय निष्कासित हो गया है। इस नैराश्यपूर्ण वातावरण मे मृत्यु की कामना करते हुए द्रोण प्रस्थान कर जाते है।

गुर्ज्जरेश्वर (सन् १९६७, पृ० १५९), ले० ओकारनाथ दिनकर, प्र० अनुराग प्रकाशन, अजमेर, *पात्र* पु० १०, स्त्री ५, *अक* ३, *दृश्य* ४, ३, ४।
घटना-स्थल : सिद्धराज जयसिह का मत्रणा-कक्ष, पत्तन का राज-उद्यान, राजनर्तकी सुमोहा की अट्टालिका, पत्तन तुरगाध्यक्ष के आवास का एक कक्ष, सिद्धराज जयसिह का परिषद भवन, कुमारपालदेव का मत्रणाकक्ष।

सिद्धराज जयसिह गुर्ज्जर मण्डल राज्य का बिना उत्तराधिकारी नियुक्त किए स्वर्गवासी हो जाते है। यद्यपि कुमारपाल विद्यमान थे किन्तु उनके पितामह का जन्म एक नर्तकी रानी की कुक्षि से होने के कारण सिद्धराज घृणा करते थे। यहाँ तक कि कुमार के पूर्वज तथा उन्हे जीवित भस्म करा देने का षड्यन्त्र रचा गया था। उनमे अकेले कुमारपाल बच जाते है। राज-सिहासन के लिए कतिपय उत्तराधिकारी उपस्थित होते है। कृष्णदेव चौहान, तुरगाध्यक्ष—जो कुमारपाल का बहनोई था—के अथक प्रयासो से जयसिह के पुत्र चाहडदेव को भी शाकम्भरी मे शरण लेने के लिए विवश होना पडता है। शाकम्भरी सम्राट अर्णोराज कुमारपाल की भगिनी और अपनी पत्नी का अपमान करते है। अर्णोराज से हुए युद्ध मे वे पराजित होते है और वन्दी बना लिए जाते है। उन्हे क्षमादान दिया जाता है। अवन्ति मे गुर्ज्जर मण्डल का दण्डनायक चाहडदेव कृष्णदेव की योगिनी नर्तकी सुमोहा के सान्निध्य मे लालच देकर कृष्णदेव एव कुमारपाल के विरुद्ध षड्-

मान पूर्ण होता है।

गोपी उद्धव सवाद नाटक (रचना-काल सन् १६०८, प्रकाशनकाल १६६८, पृ० २२), ले० गोपाल आना; प्र० हिन्दी विद्यापीठ, आगरा, पात्र पु० ५, स्त्री ३, व अनेक गोपियाँ, अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल गोकुल, मथुरा।

इस अकियानाट मे उद्धव गोपी संवाद के साथ गोपियो का विरह वर्णन है। प्रारभ मे नान्दी श्लोक है जिसमे दुष्टविनाशक ब्रह्मा-इन्द्रादि से पूजित कृष्ण की स्तुति है। उसके बाद सूत्रधार देवकी के गर्भ से कृष्ण जन्म की सूचना देता है। एक पथिक बडे मार्मिक शब्दो मे गोपियो की विरह-व्यथा को श्री कृष्ण से कहता है। गोपियो के प्रेम मे विह्वल होकर कृष्ण उद्धव को सदेश लेकर गोकुल भेजते हैं।

गोकुल पुरी मे उद्धव का रथ प्रवेश करते ही आनन्द छा जाता है। नन्द उनकी पूजा करके उन्हे भोजन कराते हैं और फिर कृष्ण का कुशल पूछते है। उद्धव कृष्ण को परब्रह्म बताकर उनके पुत्र रूप का त्याग करने को कहते हैं। प्रात काल उद्धव प्रेमातुर गोपियो से कृष्ण का गुणगान करते हैं। प्रेमविह्वल गोपियाँ कृष्ण-दर्शन के लिए व्याकुल हो जाती है। उद्धव गोपियो को कृष्ण का सान्निध्य प्राप्त होने का आश्वासन देते है। यह सुनकर नन्द, यशोदा और गोपियाँ सब मे प्रसन्नता छा जाती है। कई महीने गोकुल मे रहकर उद्धव गोपियो की असह्य प्रेम-पीडा देखते है। वे मथुरा जाकर कृष्ण से नन्द, यशोदा और गोपियो का विरह-दुख वर्णन करते हैं।

गोपीचन्द (सन् १८६६, पृ० ६०), श्री लाली देवी, प्र० . जैन यत्रालय, लखनऊ, पात्र पु० ६, स्त्री ७।
घटना-स्थल घर, जगल।

गोपीचन्द के दो विवाह होते है। प्रथम विवाहिता पत्नी सुलक्षणा और द्वितीय पत्नी कुमुदा है। गोपीचन्द के सन्यास ले लेने पर कुमुदा का मर्मस्पर्शी विलाप इस नाटक की विशेषता है। इस नाटक मे दोनो सपत्नियो का पारस्परिक प्रेम-भाव दिखाया गया है जो प्राय. सामाजिक व्यवहार मे कम ही पाया जाता है।

गोपीचन्द (सन् १६०४), ले० मुशी विनायक प्रसाद तालिब, प्र० मालिक विक्टोरिया नाटक मण्डली, वम्बई, पात्र पु० ४, स्त्री २।

इस धार्मिक नाटक मे योग की महिमा दिखाई गई है। राजा गोपीचन्द योग साधना मे अपने नाशवान शरीर को अमर बना लेते है। इस कार्य मे उनकी माता मैनावती उनको बडा सहयोग देती है। मैनावती के गुरु कानिफा के प्रयासो से गोपीचन्द की अलौकिक सिद्धियाँ अत्यन्त चमत्कृत हो जाती हैं। सारा नाटक देवशक्तियो और योग के चमत्कारो की शृखला मे परिपूर्ण अद्भुत जान पडता है। इसमे योगिनी और लौटन हास्य-व्यग और विनोद के प्रधान आकर्षण है।

अन्त मे राजा को महान् चमत्कारिक यौगिक सिद्धि की प्राप्ति होती है।

गोपीचन्द (सन् १६६०, पृ० ८५), ले० न्यादरसिंह बेचैन, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, पात्र पु० ५, स्त्री ३, अक ३, दृश्य ५, ४, ५।

इस नाटक मे राजा गोपीचन्द के विलासी जीवन त्यागकर योगी बन जाने की कथा वर्णित है। धारा नगरी के महाराजा गोपीचन्द अपनी माता मैनावती की आज्ञा से योगी बनकर महाराज भरथरी की शरण मे चले जाते है। भरथरी गोपीचन्द को योग-संन्यास से विरत करने का प्रयास करते है। किन्तु गोपीचन्द अपने निश्चय पर अटल रहते है। भरथरी गोपीचन्द को अपने गुरु जलन्धरनाथ के पास ले जाते है। जलन्धरनाथ गोपीचन्द की अनेक तरह से परीक्षा लेकर उन्हे गुरुमन्त्र देते है। गोपीचन्द गुरु की आज्ञा से धारा नगरी जाकर अपनी पत्नियो को माँ सम्बोधित करके भिक्षा माँगते है। माँ, रानियाँ तथा पुत्रियाँ गोपीचन्द को योगी भेष मे देखकर विलाप करती है। सब योगमार्ग त्यागकर राज्य ग्रहण का आग्रह करते है लेकिन वे माया, मोह मे नही फँसते। माँ के

ग्रंथियाँ दूर करते है। अभिनीत।

गृहणी से देशमाता, पत्रिका मे प्रकाशित, रेडियो से प्रसारित, ले० यशपाल जैन, *पात्र* पु० ४, स्त्री २, *अक-रहित*।

इसमे गाधी जी की पत्नी कस्तूरवा गाधी के जीवन सम्वन्धी कुछ महत्त्वपूर्ण अशो को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है। उनके पारिवारिक जीवन के कुछ मार्मिक स्थलो की चर्चा करते हुए यह दिखाया गया है कि किस प्रकार कस्तूरवा गृहणी से देशमाता वन जाती है। कस्तूरवा को कुछ गुण पैतृक विरासत मे मिलते है तथा कुछ गाधी जी के जीवन से। इस प्रकार यह नाटक नारी जीवन की सच्ची झाँकी प्रस्तुत करता है।

गृहदाह (सन् १९४९, पृ० ८२), ले० चन्द्रकिशोर जैन, प्र० . उपन्यास वहार आफिस, काशी, *पात्र* पु० ५, स्त्री ३। *घटना-स्थल* घर का आँगन, कमरा, वगीचा।

इस सामाजिक नाटक मे स्त्रियो के छल-दम्भ को गृह-कलह का कारण वताया है। जमीदार राय साहव अपनी आन की वेदी पर अपने एकमात्र पुत्र महेन्द्र का वलिदान कर देते है। उनकी वहन श्यामा के कपटपूर्ण व्यवहार से सारे घर मे कलह होता है, किन्तु सरस्वती उसे रोकने का प्रयास करती है। अन्त मे सभी अपनी-अपनी भूलो पर पश्चात्ताप करते है।

ग्रेजुएट (सन् १९६२, पृ० ८०), ले० जगदीश शर्मा, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ६, *पात्र* पु० १०, स्त्री ४। *घटना-स्थल* घर का कमरा, अस्पताल।

वर्तमान युग के पढे-लिखे वेरोजगारो के जीवन पर आधारित यह नाटक आज की वेकारी का चित्रण करता है। सतीश एक शिक्षित युवक है। अनेक प्रयास करने पर भी उसे नौकरी कही नही मिलती। अनायास प्रेमिका राधा वीमार पडती है। पैसे की तगी के कारण डा० विनोद उसका इलाज नही करता जिससे वह मर जाती है। सतीश राधा की मृत्यु का प्रतिशोध लेने के लिये रात को डा० विनोद की हत्या के इरादे से उसके घर जाता है। किन्तु पहुँचते ही उसके विचार वदल जाते है और वह भागता है। भागते हुए सतीश पर रात के अधेरे मे डा० विनोद फायर करता है जिससे वह घायल होकर मर जाता है।

गोपा (सन् १९६८), ले० जानकीवल्लभ शास्त्री, प्र० 'तमसा' मे सग्रहीत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, *पात्र* पु० २, स्त्री २, अक १, *दृश्य* ३। *घटना-स्थल* राजभवन का एक कक्ष।

यह गौतम के गृह-त्याग के प्रख्यात प्रसग पर आधारित एक गीतिनाट्य है। इसमे कवि ने गोपा की मूक वेदना को काव्य-स्वर प्रदान किया है। प्रथम दृश्य मे विरह व्यथित गोपा की मानसिक दशा का उद्घाटन होता है। इसी समय गोपा को राहुल का ध्यान आता है जिसकी निरन्तर वढती योगवृत्ति एव रहस्यात्मक वाते उसे आशकित कर देती है। द्वितीय दृश्य के अन्तर्गत अन्त पुर के एकान्त कक्ष मे गोपा अपने कर्महीन जीवन की उदासी दूर करने के लिए सितार वजाती है। विगत जीवन के मधुर क्षण उसे व्याकुल करते है। एक दिन वह प्रेम-भाव मे डूवी थी कि अचानक सिद्धार्थ आकर प्रणय निवेदन करते है। तभी गोपा के मुख से निकला एक वाक्य—

"ऐसा भी क्या ? राज भोग पर,
आज बुभुक्षित से टूटे।"

उसके जीवन मे एक स्थायी अभिशाप वनकर रह जाता है। सिद्धार्थ निर्वाण-पथ की ओर प्रेरित होते है। गोपा को विरह के अनन्त सागर मे छोडकर वह ज्ञान की खोज मे चल देते है। तृतीय दृश्य मे गौतम के आने की सूचना मिलती है। गोपा के सास, श्वसुर तथा राहुल उनकी अभ्यर्थना हेतु उसमे चलने का आग्रह करते है किन्तु यहाँ गोपा का आत्म-सम्मान उभरता है। वह कहती है कि गौतम स्वय गृह त्यागकर गये है। अत उन्हे ही पहले आना चाहिये। उसी समय गौतम के अकस्मात् पधारने से गोपा का

मान पूर्ण होता है।

गोपी उद्धव संवाद नाटक (रचना-काल सन् १६०८, प्रकाशनकाल १९६८, पृ० २२), ले० गोपाल आता, प्र० हिन्दी विद्यापीठ, आगरा, *पात्र* पु० ५, स्त्री ३, व अनेक गोपियाँ, *अक-दृश्य*-रहित।
घटना-स्थल गोकुल, मथुरा।

इस अकियानाट मे उद्धव गोपी सवाद के साथ गोपियो का विरह वर्णन है। प्रारभ मे नान्दी श्लोक है जिसमे दुष्टविनाशक ब्रह्मा-इन्द्रादि से पूजित कृष्ण की स्तुति है। उसके वाद सूत्रधार देवकी के गर्भ से कृष्ण जन्म की सूचना देता है। एक पथिक वडे मार्मिक शव्दो मे गोपियो की विरह-व्यथा को श्री कृष्ण से कहता है। गोपियो के प्रेम से विह्वल होकर कृष्ण उद्धव को सदेश लेकर गोकुल भेजते है।

गोकुल पुरी मे उद्धव का रथ प्रवेश करते ही आनन्द छा जाता है। नन्द उनकी पूजा करके उन्हे भोजन कराते है और फिर कृष्ण का कुशल पूछते है। उद्धव कृष्ण को परब्रह्म वताकर उनके पुत्र रूप का त्याग करने को कहते है। प्रात काल उद्धव प्रेमातुर गोपियो से कृष्ण का गुणगान करते है। प्रेमविह्वल गोपियाँ कृष्ण-दर्शन के लिए व्याकुल हो जाती है। उद्धव गोपियो को कृष्ण का सान्निध्य प्राप्त होने का आश्वासन देते है। यह सुनकर नन्द, यशोदा और गोपियाँ सव मे प्रसन्नता छा जाती है। कई महीने गोकुल मे रहकर उद्धव गोपियो की असह्य प्रेम-पीडा देखते है। वे मथुरा जाकर कृष्ण से नन्द, यशोदा और गोपियो का विरह-दुख वर्णन करते है।

गोपीचन्द (सन् १८९६, पृ० ६०), श्री लाली देवी, प्र० जैन यत्रालय, लखनऊ, *पात्र* पु० ६, स्त्री ७।
घटना-स्थल घर, जगल।

गोपीचन्द के दो विवाह होते है। प्रथम विवाहिता पत्नी सुलक्षणा और द्वितीय पत्नी कुमुदा है। गोपीचन्द के सन्यास ले लेने पर कुमुदा का मर्मस्पर्शी विलाप इस नाटक की विशेपता है। इस नाटक मे दोनो सपत्नियो का पारस्परिक प्रेम-भाव दिखाया गया है जो प्राय सामाजिक व्यवहार मे कम ही पाया जाता है।

गोपीचन्द (सन् १९०४), ले० मुशी विनायक प्रसाद तालिव, प्र० मालिक विक्टोरिया नाटक मण्डली, वम्वई, *पात्र* पु० ४, स्त्री २।

इस धार्मिक नाटक मे योग की महिमा दिखाई गई है। राजा गोपीचन्द योग साधना से अपने नाशवान शरीर को अमर वना लेते है। इस कार्य मे उनकी माता मैनावती उनको वडा सहयोग देती है। मैनावती के गुरु कानिफा के प्रयासो से गोपीचन्द की अलौकिक सिद्धियाँ अत्यन्त चमत्कृत हो जाती है। सारा नाटक देवशक्तियो और योग के चमत्कारो की श्रृखला से परिपूर्ण अद्भुत जान पडता है। इसमे योगिनी और लौटन हास्य-व्यग और विनोद के प्रधान आकर्पण है।

अन्त मे राजा को महान् चमत्कारिक यौगिक सिद्धि की प्राप्ति होती है।

गोपीचन्द (सन् १९६०, पृ० ८५), ले० न्यादरसिह वेचैन, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, *पात्र* पु० ५, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* ५, ४, ५।

इस नाटक मे राजा गोपीचन्द के विलासी जीवन त्यागकर योगी वन जाने की कथा वर्णित है। धारा नगरी के महाराजा गोपीचन्द अपनी माता मैनावती की आज्ञा से योगी वनकर महाराज भरथरी की शरण मे चले जाते है। भरथरी गोपीचन्द को योग-सन्यास से विरत करने का प्रयास करते है। किन्तु गोपीचन्द अपने निश्चय पर अटल रहते है। भरथरी गोपीचन्द को अपने गुरु जलन्धरनाथ के पास ले जाते है। जलन्धरनाथ गोपीचन्द की अनेक तरह से परीक्षा लेकर उन्हे गुरुमन्त्र देते है। गोपीचन्द गुरु की आज्ञा से धारा नगरी जाकर अपनी पत्नियो को माँ सम्वोधित करके भिक्षा माँगते है। माँ, रानियाँ तथा पुत्रियाँ गोपीचन्द को योगी भेप मे देखकर विलाप करती है। सव योगमार्ग त्यागकर राज्य ग्रहण का आग्रह करते है लेकिन वे माया, मोह मे नही फँसते। माँ के

मना करने पर भी गोपीचन्द योगी भेष मे बहन चन्द्रावल के पास भिक्षा माँगने जाते है।

बाँदी हीरे-जवाहरात भिक्षा मे देने आती है लेकिन गोपीचन्द लेने से इनकार कर कहते है "चन्द्रावल से कहो कि तुम्हारा भाई गोपीचन्द आया है।" बाँदी उसे ढोगी साधु समझकर डण्डे से खूब मारती है। लेकिन गोपीचन्द मार और अपमान को सह लेते है। बाँदी के कहने पर चन्द्रावल आती है लेकिन उसे गोपीचन्द को देखकर विश्वास नही होता। गोपीचन्द कई सच्ची बाते बतलाकर और ललाट मे चन्दन तथा पाँव मे पद्म दिखाकर उसे भाई होने का विश्वास दिलाते है। चन्द्रावल भाई को योगी भेष मे देखकर मूर्च्छित हो जाती है। गोपीचन्द बहन की अपने प्रति ममता देखकर महल को आग की लपटो से भस्मकर स्वय अन्तर्धान हो जाते है। चन्द्रावल भाई के वियोग मे महल से गिरकर मर जाती है। लेकिन गोपीचन्द गुरु-कृपा से चन्द्रावल को जीवित कर देते है।

गोरक्षा नाटक (सन् १९२६, पृ० ११२), ले० दुर्गाप्रसाद गुप्त, प्र० मातेश्वरी प्रेस, कलकत्ता, *पात्र* ४०।
घटना-स्थल घर, काँजी हाउस।

इस धार्मिक नाटक मे गोभक्त हरिदास की कथा है। हरिदास गाय की रक्षा के लिये अपने सारे घर को नीलाम पर चढा देता है और मुसलमान कसाई कल्लू से गाय की रक्षा करने मे सफल होता है। जमीदार भीमसिंह एक पडित को दो बूढी गाय दान देकर अपने धार्मिक होने का परिचय देते है। किन्तु पडित चौपटानन्द उन बूढी गायो का पालन पोषण करने के बजाय सडक पर लावारिस छोड देते है। फलत वह काँजी हाउस जाती है और फिर नीलाम पर चढती है जहाँ हरिदास अपने गौ-प्रेम के कारण उन्हे कसाई कल्लू के हाथ बिकने से बचा लेता है।

गोरखधन्धा (सन् १९१२, पृ० ११९), ले० . प० नारायणप्रसाद बेताब, प्र० पारसी अल्फ्रेड थियेट्रिकल कम्पनी, बम्बई, *पात्र* पु० १६, स्त्री ६, *अक* ३, *दृश्य* ६, ८, ४।
घटना-स्थल शाहीपुस्तकालय, होटल, गिरजाघर।

यह नाटक पारसी अलफ्रेड थियेट्रिकल कम्पनी (बम्बई) ने कोयटा (बिलोचिस्तान) मे जुलाई सन् १९१२ ई० मे प्रथम बार रगमच पर खेला। इस पारसी नाटक मे गोरखधधा दिखाने का प्रयास है।

मुल्के श्याम के सुलतान लुई के खून का प्यासा उसका भतीजा जेम्स है। उसके सहायक हेमफ्री, फ्रासिस तथा हेरी है। वे षड्यन्त्र रचते है। दूसरी कथा आईजेन की है। उसके बेटे ऐंटोनियो शामी और रूमी अपने पिता को नही पहचानते। अटोनियो के दो गुलाम है जो उसी की आकृति के है। अटोनियो की माँ एमेलिया गिरजाघर मे प्रार्थना करनेवाली है। इन सबका षड्यन्त्र इस नाटक मे दिखाया गया है। इसमे षड्यन्त्रो की भरमार है। जासूसी नाटक की श्रेणी मे रखा जा सकता है।

गोराबादल (पृ० ६५), ले० शिवप्रसाद "चारण", प्र० महर्षि मालवीय इतिहास परिषद, उपासना मन्दिर। दुगड्डा (गढवाल), *पात्र* पु० १२, स्त्री ६, *अक* ३, *दृश्य* ५, २, ६।
घटना-स्थल दुर्ग का निम्नस्तर, रत्नसिंह का शयन-कक्ष, चित्तौड-बादल का गृह, रण, स्थल, राजदरबार।

इस ऐतिहासिक नाटक मे गोरा-बादल की वीरता और उनका सच्चा बलिदान दिखाया गया है। स० १३६० वि० मे अलाउद्दीन चित्तौड पर आक्रमण करके उसे विध्वस करता है। बारह सहस्र नागरिको के साथ पद्मिनी सती होती है और चित्तौड के अन्तिम रावल रत्नसिंह सवश वीरगति को प्राप्त होते है। पद्मिनी के सतीत्व और गोराबादल की देशभक्ति की गाथा सारे हिन्दुस्तान में फैल जाती है। इस नाटक मे नाटककार ने शान्ति के देवता हिन्दू को मुसलमानो के प्रति प्रेम और सद्भावना का भाव भरने के लिए कहा है। महात्मा मोहनदास रणथम्भौर मे वीर

हम्मीर के यहाँ रहते थे। रणथम्भौर पतन के बाद वह मेवाड चले जाते है। वीर गोरा-बादल देश-सम्मान, स्वतन्त्रता तथा धर्म-सस्कृति के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर देते हैं।

गोसकट (सन् १८८८) ले० प्रतापनारायण मिश्र, 'ब्राह्मण' पत्र खड ४, सख्या ५ मे प्रकाशित।

इस धार्मिक नाटक मे गोहत्या की समस्या प्रस्तुत की गयी है। नाटक से इस तरह का आशय व्यक्त होता है कि इस नाटक का कथानक-एक ओर तो राजनैतिक पहलुओ को दिखाता है तथा दूसरी ओर धर्म और सस्कृति का स्वरूप प्रस्तुत करता है। यह नाटक गोरक्षा के कारण हिन्दू और मुसलमानो के बीच होनेवाले सघर्षो को मूलाधार बनाकर लिखा गया है तथा दूसरी ओर अकबर के द्वारा अपने राज्यकाल मे गोहत्या की निषेधाज्ञा का भी इसमे समावेश है।

गोसंकट नाटक (सन् १८८६), ले० अंबिकादत्त व्यास, प्र० खड्ग विलास प्रेस पटना, *पात्र* पु० ११, स्त्री २, *अक* ३ *दृश्य* ३।
घटना-स्थल महल, दुकान, राजदरबार।

इस धार्मिक नाटक मे बर्बर मुसलमानो के द्वारा गोमाता पर किए गए क्रूर अत्याचारो का समाधान दिखाया गया है। बकरीद मे गोहत्या होने की पूर्व सूचना पाकर हिन्दू क्षुब्ध होते हैं। और इसका निर्णय शान्ति से करना चाहते हैं। साबजी मौलवी साहब को समझाते है परन्तु वह ध्यान नही देते। गोपालदास और गोवर्धनलाल, लौडी की सहायता से मौलवी की बीबी साहिबा को धन का लोभ देकर काटने के लिए प्रस्तुत गऊ को बचाना चाहते है किन्तु उसमे भी असफल रहते है। दुकानदार अपनी दुकाने बन्दकर इसका विरोध करते है। गोपीसिह मरने-मारने पर उतारू हो जाते है फिर भी समस्या बनी रहती है। अन्त मे ६ हजार हस्ताक्षरो के साथ अकबर को हिन्दुओ द्वारा आवेदन-पत्र दिया जाता है। सम्राट् हिन्दुओ के पक्ष मे निर्णय दे गोवध का निषेध कर देता है जिससे हिन्दू लोग उल्लासपूर्वक गोरक्षा महोत्सव मनाते है।

गौतम-अहिल्या (सन् १६२१, पृ० ११७), ले० दुर्गाप्रसाद गुप्त, प्र० भार्गव पुस्तकालय, चौक, वाराणसी, *पात्र* पु० ५, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* ६, ६, ३।
घटना-स्थल नाट्यशाला, इन्द्रासन, गौतम का तपोवन।

इस पौराणिक नाटक मे गौतम और उनकी स्त्री अहिल्या की कथा वर्णित है।

गौतम ऋषि की स्त्री अहिल्या अत्यन्त सुन्दरी है। एक दिन गौतम नवयौवना सुन्दरी अहिल्या को आश्रम मे अकेले छोडकर तप करने चले जाते है। अहिल्या उन्हे नही रोक पाती। वासना युक्त इन्द्र कामदेव से अहिल्या के सतीत्व को नष्ट करने का सहयोग माँगते है। काम से जागृत् इन्द्र रति द्वारा जागृत् अहिल्या के पास उन्मत्त हुए आते हैं। वे अहिल्या के साथ नित्य प्रेमालाप करते है। अन्त मे गौतम ऋषि के शाप से अहिल्या पाषाणी हो जाती है। भगवान राम के चरण-स्पर्श से उसका उद्धार होता है। नाटक के अन्त मे गौतम अहिल्या को अपना लेते है। नाटककार ने इस नाटक के माध्यम से अनमेल विवाह पर प्रकाश डाला है। गौतम ऋषि का अहिल्या के भ्रष्ट होने पर कथन है—"इस अवस्था मे तुझसी कोमलागी के साथ विवाहकर तुझे भयानक दुख दिया है देखो, देखो, ससार के लोग मेरी दशा को देखो और इस अनुचित विवाह सम्बन्ध से क्या परिणाम निकलता है, उससे शिक्षा ग्रहण करो।"

गौतम नन्द (वि० स० २००६, पृ० १२६) ले० जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द, *पात्र* पु० ५, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* ६।
घटना-स्थल गृह, आश्रम, जगल।

इस ऐतिहासिक नाटक मे गौतम नन्द के राजसिहासन त्याग और भिक्षुक बनने की कथा वर्णित है। गौतम बुद्ध के अनुज गौतम नन्द इस नाटक के नायक हैं। नाटककार

मत है कि गौतम वुद्ध के गृहत्याग के उपरान्त महाराज शुद्धोदन की सम्पूर्ण आशा अपने कनिष्ठ पुत्र गौतम नन्द पर केन्द्रित होती है। किन्तु गौतम नन्द भी गौतम वुद्ध के आदेश पर अपने विवाह तथा राज्याभिषेक के ऐन मौके पर भिक्षु धर्म स्वीकार करते है।

गौतम वुद्ध नाटक (सन् १९२२, पृ० ११६)
ले० वावू आनन्दप्रसाद कपूर, प्र० उपन्यास वहार आफिस, काशी, वनारस, *पात्र* पु० २२, स्त्री ८, *अक* ३, *दृश्य* ६, ८, ६।
घटना-स्थल महल, वन, आश्रम।

इस धार्मिक नाटक का विषय गौतम वुद्ध के जीवन से सम्वन्धित है। नाटक मे वतलाया गया है कि किस प्रकार सिद्धार्थ को वैराग्य उत्पन्न होता है और वे गृह त्याग कर ज्ञान-प्राप्ति के लिए वन मे चले जाते है। भगवान वुद्ध त्याग के प्रतीक है, वे वनावटी त्याग को त्याग नही समझते। जिसका मन घर को छोड विश्व-प्रेम मे निमग्न नही हो जाता है ऐसो को भिक्षु वनाना भी वे उचित नही समझते। इसी सिद्धान्त से वे माधव भिक्षु को ससारी वना देते है।

गौरॉं (सन् १९५३, पृ० १२४), ले० . रामानन्द सागर, प्रकाशक एव विक्रेता, हिन्दी मन्दिर व्यावार, *पात्र* पु० ८, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* २, २, १।
घटना-स्थल मन्दिर, आँगन, पहाडी।

इस सामाजिक नाटक मे प्रेमी-प्रेमिका के सच्चे प्रेम के साथ कलाकार की कला का महत्त्व दिखाया गया है। पहाडी की नीचे स्थित गांव मे एक कलाकार आता है। कलाकार गांव की एक अल्हमस्त युवती गौरां को रूपा और झरनो की रानी कहकर सम्वोधित करता है। गौरां कलाकार की स्पष्टवादिता एव कला देखकर प्रसन्न होती है। गांववाले भी कलाकार से प्रभावित हो जाते है। किन्तु गांव का एक पुजारी कलाकार को धोखेवाज एव व्यभिचारी की सज्ञा देता है। इस बात पर कलाकार और पुजारी मे विवाद होता है। पुजारी ग्रामीण जीवन को सुखमय बताता है तथा उसके विपरीत कलाकार शहरी जीवन को आनन्दमय वताता है। गौरॉं गॉववालो के समक्ष कलाकार से विवाह का प्रस्ताव रखती है। पुजारी के असहमत होने पर भी दोनो की शादी हो जाती है। इसी वीच देश मे लडाई शुरू होती है जिसमे कलाकार और गौरॉं शान्ति स्थापना के लिए लडते हुए मारे जाते है। मरने के वाद भी उनकी अद्भुत कला अमर रहती है।

गौरीशंकर नाटक (सन् १९२४, पृ० ६०), ले० रामनारायण सिह जयसवाल, प्र० भारत प्रेस, वडी पियरी, काशी, *पात्र* पु० ११, स्त्री ६, *अक* ८, *दृश्य* २, २, १, १, १, १, १, १।
घटना-स्थल अमरपुरी, इन्द्रसभा, अमरावती, कैलाश पर्वतस्थ विल्व कुजद्वार, हिमालय के राजभवन का अन्त पुर।

इस धार्मिक नाटक मे शकर की समाधि भग करने के लिए देवताओ का प्रयास वर्णित है। देवताओ द्वारा समाधि मे मग्न शकर की तपस्या को भग करने के लिए रति को भेजा जाता है। काम और रति शकर की समाधि भग करने मे सफल हो जाते है। किन्तु समाधि भग होते ही उनके क्रोध से वे भस्म हो जाते है। पवन, चन्द्र, इन्द्र आदि देवताओ के प्रयास से गौरीशकर का मिलन होता है।

गौरी-स्वयंवर नाटक (सन् १९६१, पृ० २२), ले० कवि लाल, प्र० अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, तीरमुक्ति, इलाहावाद, *पात्र* पु० ६, स्त्री ५, *अक* १।
घटना-स्थल इन्द्रसभा, अमरावती, कैलाश पर्वत, जगल।

इस धार्मिक नाटक मे गौरी स्वयवर का वर्णन है। शिव का ध्यान भग करने पर असफल कामदेव उनकी क्रोधाग्नि से भस्म हो जाता है। कामदेव की पत्नी रति पति की मृत्यु पर करुण क्रन्दन करती हुई शिव से प्रार्थना करती है।

दूसरे दृश्य मे शिवजी ऋषि भेष मे गौरी की आस्था की परीक्षा लेते है।

फिर शिवजी तपोवन मे कठिन

तपस्या करते है। गौरी उनकी पूजा के लिए फूल लाती है। उसकी सखी वहाँ महेश का गुणगान करती है।

शिवजी गौरी से अपना विवाह करने के लिए नारद को हेमन्त के पास भेजते है। मैना यद्यपि शिवजी को वर रूप मे उपयुक्त नही समझती, फिर भी इन्द्र तथा विष्णु के प्रयास से शिव-गौरी का विवाह हो जाता है।

ग्रह का फेर (सन् १९१३, पृ० ९२) ले० अखौरी अनन्त सहाय, प्र० ट्रेनिग स्कूल राची, *पात्र* पु० ६, स्त्री १, *अक* ३, *दृश्य* १२।
घटना-स्थल नगर, गाँव।

इस प्रहसन मे ग्रहो का फेर तथा समाज मे व्याप्त रूढियो और अधविश्वासो पर व्यग्य करके समाज सुधार का मार्ग प्रशस्त किया गया है। जमीदार यदुनन्दन बाबू के लडके वासुदेव को छुट्टियो मे गाँव आने समय उसका मित्र वेणीमाधव शिक्षित वर्ग मे व्याप्त भूत, प्रेत, ग्रह का फेर, आदि अंधविश्वासो के विषय मे बताता है। वासुदेव के विश्वास न करने पर वेणीमाधव उसे एक तरकीब बताता है कि गाँव जाते ही वह बीमारी का बहाना बना ले तब उसे यथार्थ का ज्ञान हो जायेगा। घर आते ही वासुदेव बीमारी का बहाना लेकर लेट जाता है। माँ बाप बहुत परेशान होकर पडित महेशदास, नीम हकीम हेलू, ओझा, झनमन आदि को बुलाते है। यशोदा काली को बलिदान का प्रसाद मान देती है। पर इनके निष्फल प्रयासो के पश्चात् वासुदेव अचानक उठकर बैठ जाता है और इस नाटक का रहस्योद्घाटन कर लोगो को अधविश्वासो से विमुख करने का प्रयास करता है। अन्त मे समाज सुधार के प्रयास के साथ देशप्रेम की भावना का भी प्रतिपादन हुआ है।

ग्राम देवता (सन् १९६४, पृ० ९६), ले० शम्भूनाथ 'मुकुल'; प्र० मुकुलोत्पल प्रकाशन, पार्वती कुटीर, वैद्यनाथ, देवघर, *पात्र* पु० ११, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* ५, ७ ३।
घटना-स्थल मुखिया का घर, पचायत घर, अचल अधिकारी कार्यालय।

यह गाँव की पचायत-व्यवस्था पर आधारित रोमाचकारी सामाजिक नाटक है। रामपुर पचायत के मुखिया सत्येन्द्र के पास एक समझदार ग्रामीण गिरिधारी आकर उनसे पंचायत मे होनेवाली घूसखोरी और लगान-वसूली के विषय मे बाते करता है। मुखिया लगान देने को मना करता है। वही गिरिधारी की उपस्थिति मे रामपुर पचायत का नामी पच मुरारी आता है। मुखिया घूसखोरी मे मुरारी की शिकायत सुनने के कारण उसे फटकारते है। मुरारी नाराज होकर चला जाता है। वह ग्रामीण लोगो मे मुखिया की शिकायत करता है। गिरधारी तथा अन्य ग्रामीण मुरारी का विरोध करते है। वहाँ से लोग मुखिया के पास आकर सडक के ठीके के विषय मे बातचीत करते है। अचल अधिकारी के कार्यालय मे तकावी बँटती है। अधिकारी को डाकिया द्वारा एक लिफाफा मिलता है जिसमे गाँव की भुखमरी को दूर करने का आग्रह होता है। जिलाधीश गरीब राधा के लिए—जिसका पति भूख से मर गया है—सब व्यवस्था कर देता है। कालान्तर मे रामपुर मे डाका पडता है। डाकुओ की गोली से मुखिया घायल हो जाते है। अस्पताल मे अपनी स्त्री रीता और पुत्र पारस के समक्ष प्राण त्याग देते है जिसमे पत्नी और पुत्र दोनो दु खी होते है।

ग्राम देवता (सन् १९५८, पृ० ७१), ले० रज्जन श्रीवास्तव, प्र० सिहल साहित्य निकेतन, जुमेराती गेट, भोपाल, *पात्र* पु० १३, स्त्री ७, तथा अन्य ग्रामीण, *अक* ४, *दृश्य* ३, ४, ३, ३।
घटना-स्थल ग्राम का चबूतरा, मैदान।

यह पचवर्षीय योजना तथा सामूहिक विकास की पृष्ठभूमि पर आधारित सामाजिक नाटक है। इसमे मदिरापान, जुआ खेलना और खाली समय बर्बाद करना आदि बाते प्रमुख है। ग्राम-नेता दिनेश सारे ग्राम मे जागृति लाने के लिए ग्राम-

महिला-विकास-मण्डल तथा कृषि-सुधार सम्बन्धी योजनाये बनाता है। वह गाधीजी के ग्राम-सन्देश तथा सर्वोदय विचार जनता को सुनाता है। रात्रि के विद्यालय मे सभी ग्रामवासी आकर लघु उद्योग-धन्धे सीखते है। दिनेश अपने विचारो से ग्राम की काया पलट देता है। उसका नारा है—'हमे नया भारत निर्माण करना है।' सवल बाहुओ मे कुदाल और फावडे लेकर गॉव-गॉव जागृति का यह सन्देश सुनाकर बापू के 'ग्राम-राज्य' की स्थापना करनी है। ग्राम देवता की पूजा हेतु तुम्हे नये सिरे से आरती सजानी है।

ग्राम पाठशाला और निकृष्ट नौकरी (सन् १८८४), ले० काशीनाथ खत्री, प्र० काशी, भारतजीवन प्रेस, हरिश्चन्द चन्द्रिका और कविवचन सुधा मे प्रथम बार प्रकाशित दो विभिन्न नाटक।
घटना-स्थल ग्राम पाठशाला, कार्यालय।

इस सामाजिक नाटक मे नौकरी छूटने पर गृह-दुर्दशा का चित्रण है। ग्राम पाठशाला का एक अध्यापक किन्ही कारणो से नौकरी छूट जाने पर बहुत दुखी होता है। उसकी पत्नी आश्वासन देती है। इस नाटक के पात्र अग्रेजी साम्राज्य और नौकरशाही की विभीषिकाओ से सामाजिक जीवन को सचेत कराते है। निर्धन लिपिक की नौकरी छूट जाने पर वह अपने हृदय का उद्गार इस प्रकार प्रकट करता है—"रिकमडी साहब २४ वर्ष के नौकर है। ५०० रु० महीना पाते है। दिन भर बैठे चुरट पिया करते है या फर्श पर टहला करते है। यदि कही पिलाईक्लिर साहब इनको पेन्शन देकर इनकी तकलीफ कम कर देते तो दस-बीस दुखिए सहज मे पल जाते और रिकमडी साहब को भी बैठे गुड सर्विस पेन्शन के २५० रु० मिलते, पर कहे कौन? वह भी गोरे रग के है। भला रिकमडी साहब क्यो ५०० रु० से २५० रु० पसन्द करेगे। वह भी तो पेन्शन ही है दिन भर एक दो दफे दस्तखत कर दिया बस नौकरी हो गई।"

ग्राम सुधार (पृ० ८०), ले० न्यादर सिह बेचैन, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६, पात्र पु० १८, स्त्री ३, अक ३, दृश्य ५, ४, ५।
घटना-स्थल गॉव, स्वर्ग, ग्राम-पचायत।

इस सामाजिक नाटक मे स्वातन्त्र्योत्तर भारत की उन्नति के मूल आधार ग्रामो की प्रगति मे आनेवाली रुकावटो का चित्रण है।

ग्राम पचायत के चुनाव मे दीवान भीखू, भुण्डु आदि गुण्डो को शराब पिलाकर खुद गॉव का सरपच बन जाता है और पचायत के सभी पदो पर अपने ही आदमियो को चुनवा देता है जिससे गॉव मे अशान्ति पैदा हो जाती है। दीवान और उसके साथियो के अत्याचारो से गॉववाले बहुत दुखी हो जाते है। एक दिन शराबी गुमानसिह अपने बदमाश साथी भगोडू के साथ स्कूल से लौटती हुई लडकी किरण को पकडता है। उसी समय सरदारा और सुरजा वहाँ पहुँचकर दोनो को मार भगाते है। सरदारा और सुरजा पचायत मे भगोडू के काले कारनामो की शिकायत करते है। लेकिन दीवान इनकी बातो पर ध्यान नही देता।

पचायतो से गाव की उन्नति होने के बजाय भ्रष्टाचार फैलते देख सरदारा, चन्दगीराम और सुरजा सभी ग्रामवासियो को एकत्रितकर ग्राम सुधार का काम शुरू करते है। एक दिन गाव की सफाई करते समय भीखू आदि गुडे सरदारा को मारने लगते है। इसी समय किरण पुलिस को लेकर आती है। लेकिन इन्सपेक्टर दीवान से रिश्वत लेकर मामला समाप्त कर देता है। सरदारा चन्दगीराम पुलिस और पचायत की शिकायत ऊपर के अधिकारियो से कर देते है। फलत पचायत का दुबारा चुनाव होता है जिसमे सरदारा सरपच चुना जाता है तथा चन्दगीराम, सुरजा आदि योग्य एव ईमानदार व्यक्ति उसके सदस्य चुने जाते है। चन्दगीराम छुआछूत को मिटाने के लिये अपनी लडकी किरण की शादी हरिजन युवक सरदारा से कर देता है।

ग्राम सुधार (वि० १९९८, पृ० ३७), ले० शकर सहाय वर्मा, पात्र पु० ७, स्त्री १।
घटना-स्थल ग्रामीण घर, अछूतो की झोपटी।

इस सामाजिक नाटक मे गोपाल द्वारा अछूतोद्धार के लिए किये गये प्रयासो का वर्णन है।

नाटक का नायक अछूतोद्धार के लिए तन-मन-धन से लगा है किन्तु उसका पिता इसका विरोध करता है। वह पुराणपथियो से कहता है कि हरिजन हिन्दू है। भगवान की पूजा करते है, तीर्थ-व्रत आदि करते है, क्या आप उस बच्चे की माँ को अछूत समझेगे जो अपने बच्चे का मैला साफ करने मे आनन्द मानती है ? क्या आप उस धर्मात्मा को छूने मे आनाकानी करेगे जो दूसरे लोगो की अस्वस्थता मे उसका मैला तक साफ करे ? क्या आप उन भाइयो को पशुओ से भी गिरा हुआ समझेगे जो खाद्य-अखाद्य खाते है।

यह अछूत नही बल्कि हिन्दू जाति का अभिन्न अग है। समाज के कल्याण के लिए उनकी सेवा आवश्यक ही नही, अनिवार्य है। उनको अछूत समझना बहुत बडी मूर्खता है।

ग्राम सुधार नाटक (सन् १९३५, पृ० ९९), ले० सैयद कासिम अली, प्र० साहित्य सदन, अबोहर (पजाब), *पात्र* · पु० ११, स्त्री ५, *अक* ३, *दृश्य* १०, ७, ४।
घटना-स्थल गाँव के जमीदार का भवन, मैदान, बाग।

ग्रामीण जीवन की विषमताओ पर आधृत यह एक सामाजिक नाटक है जिसमे नाटककार निर्बल एवं निर्धन ग्रामीणो की दयनीय दशा को चित्रित करता है। इसमे जमीदारो एव धनवानो द्वारा निर्धन और निर्बल पर अत्याचार दिखाया गया है। इस नाटक मे धनी जमीदार अखड सिह के बंगले पर एक तरफ शराब का दौर चलता है और दूसरी ओर नर्तकी का नृत्य हो रहा है। उसके अत्याचार से ग्रामीण जनता बहुत विकल है। वह गरीब किसानो पर नित्य नया अत्याचार करने की योजना बनाता है। गाँव के एक किसान के बेटा पन्नू को निरपराध जेल मे भेज देता है तथा उसके पिता रामू को पेड से बँधवाकर बेतो से इतना मारता है कि रामू बेहोश हो जाता है।

घ

घटकैती (सन् १९६६, पृ० १०८), ले० : श्री कमल, प्र० कन्हैयालाल कृष्णदास, लहेरियासराय, दरभंगा, *पात्र* पु० १४, स्त्री ३, *अक* · ४, *दृश्य* · १७।
घटना-स्थल उमाकान्त का दरवाजा, दिनकर मिश्र का आँगन, जयभद्र का दरवाजा, सुरेश का मकान, पटना मे गौरी का डेरा, गाँव का एक बाँध एव विमल की कोठरी इत्यादि।

मैथिल समाज मे प्रचलित वैवाहिक प्रथा पर आधारित यह एक सामाजिक नाटिका है। इसमे तिलक-प्रथा, वृद्ध-विवाह, अनमेल-विवाह, कन्या-विक्रय, बाल-वैधव्य आदि सामाजिक समस्याओ की ओर सकेत किया गया है। साथ ही साथ धनवानो का दम्भ, गरीबो का आर्तनाद, दुराचारियो का दौरात्म्य, सदाचारी का सौहार्द का भी चि[illegible] मिलता है। एक ओर सुरेश नामक धनवान व्यक्ति के दौरात्म्य से क्षोभ उत्पन्न होता है, घटकराज पँचकौडी के छल-छद्म से चित्त भिन्नाने लगता है, तो दूसरी ओर विमल एव गौरीकान्त के चरित्र से सतोष और वसुन्धरा एव सुशीला की शीलमयी प्रकृति से सहानुभूति जगने लगती है। इसमे हरेराम की अर्थ-लोलुपता, दिनकर मिश्र की सहृदयता, पँचकौडी की विकृत वाक्पटुता, रोगहा की उच्चारण-विकृति, वृद्धो की रूढिप्रियता और नवयुवक वर्ग की सुधारप्रियता के चित्र प्रदर्शित है। घटकैती के चक्र मे समाज के अच्छे और बुरे दोनो पक्षो पर प्रहार होता है। नाट्यकार ने बडी सतर्कता के साथ घृणित पात्रो को दुर्गति का परिणाम भोगने से बचा-

कर उन्हे सुधारने की चेष्टा की है।

घर का भूत (सन् १९५६, पृ० १०७), ले० : कान्तानाथ पाडेय 'चोच'; प्र० : चौधरी एण्ड सस, बनारस; *पात्र* पु० ९, स्त्री ४, *अक कोई नही, १५ दृश्यों मे विभाजित* ।
घटना-स्थल प्रोफेसर का बँगला, टूटा-फूटा मकान, सडक ।

इस सामाजिक नाटक मे सामाजिक अन्धविश्वास चित्रित है। प्रो० सीधेराम तिवारी के लिए उनका शिष्य तिकडम किराये पर मकान ढूँढता है और उनकी चिट्ठी-पत्री लिखने का काम भी करता है। उनकी स्त्री कमला तिकडम की योग्यता मे विश्वास नही करती। चिथरू एक ऐसा मकान बताता है जिसमे भूत का निवास है। चिथरू नाई प्रोफेसर साहब से बाते करते-करते उनकी एक तरफ की मूँछे वना देता है। अव उन्हे पूरी मूँछ वनवानी पडती है जिससे सब लोग समझते है कि प्रो० के पिता की मृत्यु हो गई है। लोग सहानुभूति प्रगट करते है। तिकडम प्रो० के पडोसी मुशी उजबक को भूत बनकर डराता है। भूत के डर से मुशी उजवक मकान छोडकर भाग जाते है। वह मकान प्रो० को मिल जाता है।

घर का विद्रोह (सन् १९००, पृ० ९६), ले० · रामशरण आत्मानन्द, प्र० : उपन्यास वहार आफिस, काशी, *पात्र* : पु० ६, स्त्री २।
घटना-स्थल : महल, पृथ्वीराज का दरवार, रणक्षेत्र।

गृह-कलह की पृष्ठभूमि पर आधारित यह एक ऐतिहासिक नाटक है। इसमे जयचन्द के विरोधी होने से ही पृथ्वीराज की हार और भारत पर मुहम्मद गोरी का अधिकार हो जाता है। एक घर के विद्रोह के कारण ही समूचा देश यवनो का गुलाम हो जाता है। अन्त मे जयचन्द को भी अपने किये का फल मिलता है।

घर की वात (सन् १९६१, पृ० ८७), ले० · प्रेमनाथ दर, प्र० . नेशनल पब्लिशिग हाउस, दिल्ली; *पात्र* . पु० ५, स्त्री : २; *अक* . ४।
घटना-स्थल घर का दृश्य।

इस सामाजिक नाटक मे विवाह की समस्या को जाति एव दहेज के साथ जोडकर पिता की अर्थ-लोलुपता दिखाई गई है। वणिक वर्ग का लड़का जीवन, इन्द्रा नामक ब्राह्मण युवती के साथ अपना विवाह कर लेता है। यह देखकर उसके पिता उसे घर से निकाल देते है। इन्द्रा के पिता भी इस विवाह को परम्परा एवं मर्यादा के विपरीत मानते है। जीवन पुन. पिता के पास आश्रय के लिए जाता है, परन्तु धन-लोलुप पिता किसी भी शर्त पर नही रखता। जीवन पिता से स्वावलम्बी बनने के लिए धन मॉगता है किन्तु वह इन्कार कर देता है। अन्त मे विवश होकर २०,००० रु० चुपके से चुरा लाता है, और पत्नी के साथ घर बसाता है। जीवन का पिता जब रुपया वापस मॉगने आता है तो वह इन्द्रा के पिता द्वारा दिए गए जेवर एव रुपए को देखकर दोनो को अपने घर ले जाता है।

घर जमाई (सन् १९५१, पृ० २४) ले० : बुद्धू मियॉ, प्र० · दूधनाथ पुस्तकालय प्रेस, हावडा, कलकत्ता।
घटना-स्थल : पिता का घर, ससुर का मकान।

इस सामाजिक नाटक मे सामाजिक जीवन का बडा ही मार्मिक और वास्तविक चित्रण है। एकयुवक शादी के उपरान्त घर की अपेक्षा ससुराल से अधिक सम्बन्ध रखता है। परिवार मे गृह-कलह उत्पन्न हो जाने के कारण वह ससुराल मे ही जाकर वस जाता है। ससुराल मे बसने पर पत्नी और ससुर की दृष्टि मे वह केवल दास मात्र रह जाता है।

घरवाली (सन् १९६२, पृ० ८०) ले० : सतीश डे, प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली; *पात्र* . पु० ८, स्त्री . १, *दृश्य* . ३।
घटना-स्थल : घर, ऑफिस आदि।

परिवार-नियोजन पर लिखा हुआ

हास्यप्रद सामाजिक नाटक है। किरण शादी के वाद भी नौकरी करके अपने घर की आर्थिक स्थिति को सुदृढ करती है। ऑफिस का हेड क्लर्क सूरज शादी के साढे तीन साल वाद भी कोई वच्चा न होने से वहुत चिन्तित रहता है। वह दीपक के कहने पर पत्नी किरण को तलाक की धमकी भी देता है। किन्तु किरण पति की जिद को हँसी समझकर उसे खेलने के लिए एक जापानी गुड्डा लाकर देती है। नाना वनने के शौकीन रोशनलाल सूरज को डॉ० भटनागर से दवाई की वोतल लाकर देता है। गगाधर सूरज को करामात अली से तावीज वनवाने की सलाह देता है। करामात अली एक दिन सूरज से मिलने आता है। सूरज रोशनलाल द्वारा लाई हुई पाँच वोतले करामात अली को यह कह-कर देता है कि इसके सेवन से तुम्हारे वच्चे पैदा होने वन्द हो जायेगे। लेकिन इसका उल्टा असर पडता है और करामात अली के अगले वर्ष जुडवॉ वच्चे पैदा होते है। सूरज के पिता सूवेदार चॉदमोहन भी अपना कोई पोता न देखकर चिन्तित होते है। चाँदमोहन की भी यह वहुत तमन्ना थी कि जल्द ही मेरे पोता पैदा हो जो फौज मे कर्नल वने। एक दिन किरण घर को खूव सजाकर एक वच्चे का फोटो टेविल पर रखती है। वच्चे का फोटो देखकर चाँदमोहन वहुत खुश होकर अपने भावी कर्नल पोते के लिए खिलौने लेने चल पडते है। सप्रूहाउस, नई दिल्ली मे सन् ६२ मे अभिनीत।

घाटियाँ गूँजती हैं (सन् १९६५, पृ० १२७), लें० डॉ० शिवप्रसाद सिंह, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, कलकत्ता, *पात्र :* पु० १२, स्त्री १; *अक* ३, *दृश्य* ३। *घटना-स्थल* होटल, पहाडी, चट्टाने।

यह नाटक १९६२ के भारत-चीन-युद्ध पर आधृत एक सशक्त रचना है। विवेककुमार राय चीनी हमले से सम्वन्धित समाचार-सकलन के लिए तेजपुर पहुँचता है। वहाँ वोमदिला के पतन का समाचार रेडियो से सुनकर सव लोग भाग जाते है। होटल मे विवेक की भेट कैप्टन से होती है जिससे वह वोमदिला जाने के लिए एक जीप का प्रवन्ध करने को कहता है। रोज भी विवेक के साथ अपने पिता को वचाने के लिए वोमदिला जाने का हठ करती है। कैप्टेन, विवेक और फादर पिण्टो रोज को वोमदिला जाने से रोकते है किन्तु वह नही मानती। कैप्टेन अपनी वाते छिपकर सुननेवाले आदिवासी वूढे को पकड लेता है और उसपर चीनी ऐजेन्ट होने का सन्देह करता है। लेकिन करतार सिंह उसे अपने होटल का गूँगा चौकीदार वताकर मुक्त करा लेता है।

विवेक और रोज वोमदिला घाटी के पास पहुँचते है लेकिन अँधेरी रात और सैनिक हलचलो के कारण आगे जाना उचित नही समझते। विवेक ने वही पर शीकू को देखा तो उसे शक हो गया कि जरूर यह चीनी ऐजेण्ट है। उसके एक पेड के नीचे सो जाने पर रोज चुपके से अपने पिता को खोजने चली जाती है। रोज एक चर्च मे से अपने घायल पिता को ले आती है। विवेक और रोज के सेवा करने पर भी वह मर जाता है। रोज के दुखी होने पर विवेक उसे ढाढस देता है कि तुम्हारा टूरा जीवित है और देश की रक्षा के लिए लड रहा है।

कैप्टेन भेष वदलकर चीन-भक्त भारतीय मुकुल को पकडकर लोगो को गाँव छोडकर भागने से रोकता है। शीकू टूरा को छुरे से मार देता है। उसी समय क्यूला, विवेक, रोज और मुकुल को लेकर कैप्टेन भी उसी जगह पहुँचते है। क्यूला को वहुत हैरानी होती है कि वापू शीकू ने ही अपने वेटे टूरा को मार दिया। कैप्टेन के पूछने पर गूगा वना शीकू रोते हुए अपने गद्दार वेटे टूरा की कहानी वताता है, जिसे सुनकर क्यूला पागल की तरह चिल्लाती हुई घाटियों मे घूमने लगती है।

घेराव (सन् १९६७, पृ० १६०), *लें०:* चिरजीत, प्र० · कान्त वन्धु प्रकाशन, नई दिल्ली, *पात्र* . पु० १२, स्त्री ४; *अक* · २, *दृश्य :* २।
घटना-स्थल . दिल्ली के एक सहशिक्षा कालिज के पिछले भाग का वगीचा, शान्ति

की कोठी के पिछले भाग मे बाग का एक कोना।

इस सामाजिक प्रहसन मे राजनीति के प्रचलित 'घेराव' की तरह प्रेम का घेराव दिखाया गया है। प्रिंसिपल का एक आदेश है कि "लडके लडकियाँ परस्पर मिलन तथा वार्तालाप न करे।" इसके विरुद्ध उनके कार्यालय पर घेराव होता है। इसका नेता दिलीप कुमार है जो फिल्म कम्पनी मे कार्य करने का इच्छुक है। घेराव मे सभी लडके लड-कियाँ शामिल होकर "तानाशाही नही चलेगी", 'किंगडम आफ लव-जिन्दाबाद," "प्रेम-दिवाने जिन्दाबाद" आदि नारे लगाते है। छात्र यूनि-यन का प्रेसिडेण्ट सुरेशचन्द्र इसका विरोध करता है। उत्तेजित छात्र उसे पीटते है। अन्त मे प्रिंसिपल के रोकने पर प्रदर्शन बन्द होता है। कालिज की बी० ए० फाइनल की छात्रा शान्ति अपने माता-पिता की मृत्यु के बाद लाखो की मालिक है, उसपर दिलीप, बद्रीनाथ, प्रो० फूलचन्द की आँखे गडी है। शान्ति भी सुरेशचन्द्र की ओर आकृष्ट है। किन्तु सुरेश शान्ति की उच्छृखलता से परे-शान है। शान्ति अपने तीनो प्रेमियो को धता बताती हुई उनके घेरे को तोडकर निकल जाती है। उधर घर मे मामा-मामी भी उसके लिए वर के पक्ष मे घेरा डाले हुए है। इधर कालिज की टीम भी 'प्रेम घेराव' का कार्यक्रम बनाकर शान्ति का घर घेर लेती है। रूप और धन की लिप्सा मे रघोमल तथा दिलीप कुमार के पिता अपने लडको को कुमार्ग की शिक्षा देते है। शान्ति के हितैषी मामा-मामी भी अपनी भाँजी को धन के लोभ मे कुपात्र को सौप देना चाहते है। नाटककार ने कालिज मे कुछ मनचले प्रोफेसरो पर भी सकेत किया है। शान्ति अपनी पैनी दृष्टि, सफल क्रियाशीलता और क्रीडा-कौशल से प्रेमी घेराव का अन्तकर सुरेशचन्द्र को वरण करती है।

घोघाबसन्त (सन् १९२७, पृ० ३८), ले० चन्द्रनारायण सक्सेना, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, पात्र ५।
घटना-स्थल कमरा।

इसमे घोघाबसन्त की मूर्खता का चित्रण है। कही उसकी बीबी बदल जाती है तो वह दुखी होता है और कही लडकी की नीलामी से परेशान हो दीवान की शरण लेता है। हास्य रस के माध्यम से घोघा की क्रियाओ का सुन्दर चित्रण देखने को मिलता है।

च

चण्डीदास (सन् १९३१, पृ० १४४), ले० मुहम्मदशाह आगा हश्र कश्मीरी, प्र० उपन्यास बहार आफिस, बनारस, पात्र पु० ६, स्त्री ३, अक ३, अक सीन मे विभाजित।
घटना-स्थल गाँव मे मन्दिर, जमीदार की कोठी।

इस धार्मिक नाटक मे पाखड के ऊपर सत्य की विजय दिखाई गई है।

चण्डीदास उदार हृदय मानव प्रेम-मन्दिर का पुजारी है। वह गुरु के आदेश से भक्तो के साथ रामी धोबिन को प्रसाद देता है। जमीदार गोपीनाथ रामी के अनिद्य सौन्दर्य पर मुग्ध होकर उसे प्राप्त करने की चेष्टा करता है। मानव-प्रेमी चण्डीदास उसे प्रभु-भक्तिन समझकर उसका आदर करता है।

गोपीनाथ रामी को रानी के बहाने रात्रि मे सरयूप्रसाद के माध्यम से एकान्त मे बुलाता है और अपनी काम-पिपासा-शान्ति की कामना प्रकट करता है। रामी बलात्कार से बचने के लिये शोर मचाती है। सयोग से रानी मन्दिर से लौटते समय उसकी पुकार

सुनकर रामी के सतीत्व की रक्षा करती है और पति की नीचता के लिये उससे क्षमा माँगती है। गोपीनाथ चण्डीदास और रामी के अवैध सम्बन्ध की झूठी अफवाह गाँव में फैलाकर चण्डीदास को प्रायश्चित्त करने पर विवश करता है। गुरु आचार्य भी समाज-धर्म को बड़ा मानकर चण्डीदास को प्रायश्चित्त के लिए बाध्य करते है। चण्डीदास इस मिथ्या लाँछन का विरोध करता है किन्तु गुरु आज्ञा से जैसे ही प्रायश्चित्त के लिए कदम उठाता है त्यो ही भगवान प्रकट होकर उसे निर्दोष घोषित करते है।

चन्दन की बाँसुरी (सन् १६००, पृ० ४४) ले० . शारदेन्दु रामचन्द्र गुप्त, चन्दन गुप्त, प्र० ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुक्सेलर, वाराणसी, *पात्र* पु० ४, स्त्री २।
घटना-स्थल उपवन, नदी।

इस सामाजिक नाटक मे एक राजकुमार का प्रेम अछूत निर्धन कन्या के साथ मृत्यु की गोद मे दिखाया गया है।

दुर्गादास भैरवीगढ का राजकुमार है। वह सुमन नामक निर्धन कन्या से प्यार करता है। चन्दन की बाँसुरी मे उसे रिझाता है, किन्तु सामाजिक लाँछन के भय मे दोनो नदी के भँवर मे डूबकर अपने प्रेम-भाव की रक्षा करते है।

चन्द्रकला भानुकुमार नाटक (सन् १६०४, पृ० १३६) ले० देवीप्रसाद श्रीवास्तव पूर्ण, प्र० रसिक समाज, कानपुर, *पात्र* पु० १७ स्त्री ६, अक ७, *गर्भाक मे विभाजित है।*
दृश्य २, ४, ८, ४, ५, ३, ४।
घटना-स्थल मन्दिर, भयानक वन, तपोवन, मेला, नगर, रगभूमि।

यह एक सामाजिक नाटक है, जिसका उद्देश्य है "एक अपूर्वकल्पित मनोहर आख्यायिका के द्वारा सत्प्रेम, विश्वास, धर्मनिष्ठा इत्यादि सद्गुणो की बडाई और व्यभिचार, पिशुनता इत्यादि दूषित कर्मो की निन्दा दिखलाई जावे, जिन की भाषा निर्मल और सुन्दर कविता से अलकृत हो और जो शृगार आदि नवरस से सम्पन्न हो।" कचनपुर के राजा लोकसिंह की पुत्री चन्द्रकला और विजयनगर के राजकुमार भानुकुमार प्रथम साक्षात्कार मे ही एक दूसरे की ओर आकृष्ट होते है। वर्षाऋतु मे भानुकुमार अपने मित्र प्रताप कुमार के साथ कचनपुर मे भ्रमण करने आते है। वही सयोगवश राजकुमारी के उपवन मे भानुकुमार और चन्द्रकला का साक्षात्कार होता है। दोनो के हृदय एक दूसरे मे बँध जाते है। किन्तु चन्द्रकला के सौन्दर्य की गाथा सुनकर अमरावती का राजा दिक्पाल भी अपने विवाह का प्रस्ताव लोकसिंह के पास भेजता है, और विवाह न करने पर युद्ध की धमकी देता है। चन्द्रकला यह सवाद सुनकर बहुत व्याकुल होती है। दोनो ओर से युद्ध की तैयारी होती है और प्रताप कुमार सेनापति बनाया जाता है। वह अपनी पत्नी से विदा लेकर युद्धक्षेत्र मे जाता है। भानुकुमार भी सेना लेकर युद्धक्षेत्र मे पहुँचता है। अमरावती मे युद्ध होता है। सत्यप्रेम की विजय होती है। राजा दिक्पाल हार जाता है। अन्त मे स्वयंवर मे चन्द्रकला भानुकुमार का वरण करती है।

चन्द्रगुप्त नाटक (सन् १६२८, पृ० १००) ले० बदरीनाथ भट्ट, प्र० रत्नाश्रम, आगरा *पात्र* पु० १४, स्त्री ५, *अक* ३, *दृश्य* . ७, ८, ५।
घटना-स्थल पाटलिपुत्र, युद्ध भूमि।

मौर्यकालीन भारतीय इतिहास की घटनाओ पर आधारित ऐतिहासिक नाटक है। महानन्द-वध के पश्चात् चन्द्रगुप्त गद्दी पर बैठता है। वह प्रजाजनो का स्नेहभाजन है किन्तु एक असन्तुष्ट आर्य रणधीर, राजा की सफलता से द्वेष करता है। किन्तु राजा के विरुद्ध प्रजा को भडकाने और विद्रोह कराने मे असफल रहता है। चाणक्य राक्षस मन्त्री की मन्त्रणा से आर्य रणधीर को स्वपक्ष मे कर लेता है। इसी समय सिल्यूकस का आक्रमण होता है। रणधीर देश-सेवा मे प्राणो की आहुति देता है। चन्द्रगुप्त युद्ध मे सिल्यूकस को पराजित करके कैद कर लेता है। तभी दोनो मे सन्धि होती है और सन्धि के फलस्वरूप सिल्यूकस अपनी पुत्री अथेना का विवाह चन्द्रगुप्त से कर देता है। इस सांस्कृतिक सम्बन्ध की महत्ता

को शुभ घोषित करता हुआ चाणक्य राक्षस को मन्त्रित्व का भार सौंपकर वन मे चला जाता है।

चन्द्रगुप्त मौर्य (सन् १६३१, पृ० २२४), ले०: जयशकर प्रसाद, प्र० भारती भडार, इलाहाबाद; पात्र पु० २१, स्त्री ६, अक. ४, दृश्य. ११, १०, ६, १४।
घटना-स्थल तक्षशिला का गुरुकुल, विलास कानन, भग्नकुटीर, उपवन, राजसभा, सिन्धु तट, बन्दीगृह, प्रासाद प्रकोष्ठ, कानन पथ, दाड्यायन का आश्रम, ग्रीक शिविर, युद्धक्षेत्र, उद्यान, स्कधावार, मालवदुर्ग, रावी तट, रंगशाला, तपोवन।

इस ऐतिहासिक नाटक मे ग्रीक आक्रमण से भारत की रक्षा चाणक्य के नीतिकौशल के द्वारा प्रदर्शित है। इसमे भारतीय सस्कृति और तपोनिष्ठ ब्राह्मण की शक्ति का परिचय दिया गया है।

तक्षशिला गुरुकुल के कुलपति आचार्य चाणक्य दीक्षान्त समारोह के अवसर पर अपने शिष्यो को भारतीय राजनीति और विदेशी आक्रमण की सम्भावना से अवगत कराते है। गान्धार के युवराज आम्भीक का चन्द्रगुप्त और सिंहरण नामक छात्रो से विवाद हो जाता है। आम्भीक की भगिनी अलका मालवकुमार सिहरण की तेजस्विता पर मुग्ध होकर भाई से कलह मिटाने का आग्रह करती है। चन्द्रगुप्त और सिहरण देश की रक्षा के लिए सर्वस्व समर्पण का सकल्प लेते है। चाणक्य और चन्द्रगुप्त अपनी जन्मभूमि पाटलिपुत्र मे लौटकर नद की विलासिता का दुष्परिणाम देख और अपने माता-पिता का दु खद समाचार सुनकर राष्ट्रोद्धार का सकल्प दृढ बनाते है। सरस्वती मदिर के उपवन मे समाज का आयोजन देखने नदकुमारी कल्याणी सखियो के साथ आती है। इसी समय राजा का अहेरी चीता पिजरे से निकलकर कल्याणी की ओर झपटता है। चन्द्रगुप्त अपने तीर से उसका सिर भेदनकर कल्याणी की रक्षा करता है। कल्याणी चन्द्रगुप्त मे वार्तालाप होता है। इधर चाणक्य नद की राज्यसभा मे प्रविष्ट होकर आर्यावर्त की स्थिति समझाते हुए कहता है—

"यवनो की विकट वाहिनी निपध-पर्वत माला तक पहुँच गई है। तक्षशिलाधीश की भी उसमे अभिसधि है। सम्भवत समस्त आर्यावर्त पादाक्रात होगा। उत्तरापथ मे बहुत छोटे-छोटे गणराज्य है, वे उस सम्मिलित पारसीक यवन बल को रोकने मे असमर्थ होगे। अकेले पर्वतेश्वर ने साहस किया है, इसलिए मगध को पर्वतेश्वर की सहायता करनी चाहिए।" राजसभा मे कल्याणी और चन्द्रगुप्त पहुँच जाते है। नद की आज्ञा से प्रतिहार चाणक्य की शिखा पकडकर उसे घसीटता हुआ बाहर निकाल देता है। चाणक्य प्रतिज्ञा करता है—"यह शिखा नद कुल की काल सर्पिणी है, वह तब तक न बधन मे होगी जब तक नद कुल नि शेप न होगा।"

कुछ दिन बीतने पर राक्षस वदी चाणक्य से तक्षशिला मे मगध का गुप्त प्रणिधि बनने का आग्रह करता है। उसे अस्वीकार करने पर वररुचि अपने साथ पाणिनि का भाष्य लिखने को बाध्य करता है तो चाणक्य कहता है—"भाषा ठीक करने से पहले मै मनुष्यो को ठीक करना चाहता हूँ।" राक्षस क्रुद्ध होकर उसे अधकूप मे वदी बनाने का दड देता है। उसी समय रक्तपूर्ण खड्ग लिये सहसा चन्द्रगुप्त का प्रवेश होता है और शस्त्र बल से गुरुदेव को मुक्त कराता है। चाणक्य मगध से पचनद पर्वतेश्वर की राजसभा मे पहुँचता है। वह मगध राज्य पर चन्द्रगुप्त का अधिकार स्थापित करने के उद्देश्य से पर्वतेश्वर से सैन्य सहायता माँगता है पर पचनद-नरेश सिकदर के आसन्न युद्ध की आशका और चन्द्रगुप्त के वृषलत्व के कारण चाणक्य का प्रस्ताव ठुकरा देता है। असफल होकर चाणक्य और चन्द्रगुप्त भटकते-भटकते सिन्धु-तट के समीप सिल्यूकस के शिविर मे पहुँचते है। मार्ग मे सिल्यूकस मूर्छित चन्द्रगुप्त पर आक्रमण करनेवाले व्याघ्र को मारकर उस की रक्षा करता है। अपने राज्य मे चाणक्य और चन्द्रगुप्त को शत्रु शिविर मे देखकर गाधार कन्या अलका विस्मित होती है। यवन सैनिको से अलका इससे पूर्व अपमानित हो चुकी है। अत उसके मन मे वडा विक्षोभ होता है। सभी अपनी-अपनी समस्याओ के समा-

धान के लिए सिन्धु तट पर दाड्यायन के आश्रम मे एकत्र होते है। सिकन्दर के साथ सिल्यूकस कार्नेलिया के साथ पहुँचता है। अलका अपने मन का सशय और विक्षोभ प्रकट करती है। चाणक्य उसकी शका को निर्मूल करता है। सिकदर अपनी विजय का आशीर्वाद माँगता है। दाड्यायन उसे समझाते हुए कहता है—"विजय तृष्णा का अत पराभव मे होता है, अलक्षेन्द्र! राजसत्ता सुव्यवस्था से वढे तो वढ सकती है, केवल विजयो से नही। इसलिए अपनी प्रजा के कल्याण मे लगो।"—सिकन्दर की उत्कंठा मिटाते हुए दाड्यायन चन्द्रगुप्त की ओर सकेत करते हुए यह भी कहते है—"अलक्षेन्द्र, सावधान। देखो यह भारत का भावी सम्राट तुम्हारे सामने वैठा है।"—यही प्रथम अक समाप्त होता है।

सिकन्दर का निमन्त्रण पाकर चन्द्रगुप्त यवन-शिविर मे ग्रीक युद्ध-नीति सीखता है और एक दिन सिल्यूकस-कन्या की रक्षा फिलिप्स नामक विलासी ग्रीक योद्धा से करता है। कार्नेलिया भारत के भावी सम्राट चन्द्रगुप्त की विनयशील वीरता पर मुग्ध होकर इस घटना से पिता को अवगत कराने के लिए चन्द्रगुप्त से निवेदन करती है। सिकदर अपने सैन्यवल ने चन्द्रगुप्त को मगध का सम्राट वनाने की योजना सामने रखता है। जिसे चन्द्रगुप्त अस्वीकार करता है। सिकदर रुष्ट होकर उसे वन्दी वनाना चाहता है किन्तु वह अम्भीक, फिलिप्स और एनिसाक्रिटीज को आहत करता हुआ निकल जाता है।

अव चन्द्रगुप्त, सिंहरण और अलका सपेरा, नट-नटी का वेश वदलकर पर्वतेश्वर के युद्ध-शिविर मे पहुँचते है और पचनद नरेश को यवन रणनीति से सावधान रहकर रणव्यूह-रचना का परामर्श देते है। पर्वतेश्वर के चले जाने पर सिंहरण को अपने शिविर मे आमन्त्रित करती है। चन्द्रगुप्त सिंहरण को पृथककर एकान्त मे कल्याणी से युद्ध का भविष्य वताता है। दोनो वास्तविक स्थिति समझकर अपने-अपने कार्य मे सलग्न हो जाते है। सिकन्दर युद्ध की भेरी वजाता है। पर्वतेश्वर और सिल्यूकस मे घोर युद्ध होता है। ग्रीक सेनापति आहत हो जाता है। विकट यवन वाहिनी को आते देख सिंहरण पर्वतेश्वर से सुरक्षित पहाडी पर चले जाने का आग्रह करता है पर वह युद्धक्षेत्र मे नही हटता। दोनो वीरतापूर्वक यवन योद्धाओ मे युद्ध करते है पर लडखडाकर गिरने लगते है तो सिकदर युद्ध वन्द करने की आज्ञा देता है। चन्द्रगुप्त सिकन्दर के लिए ललकारता है पर सिकदर पर्वतेश्वर के शौर्य पर मुग्ध होकर कहता है—"भारतीय वीर पर्वतेश्वर! अव मैं तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार करूँ?" पर्वतेश्वर रक्त पोछते हुए कहता है—"जैसा एक नरपति अन्य नरपति के साथ करता है।" दोनो मे मैत्री हो जाती है। कल्याणी अपना शिरस्त्राण फेककर पर्वतेश्वर को लज्जित करते हुए कहती है—"जाती हूँ क्षत्रिय पर्वतेश्वर! तुम्हारे पतन मे रक्षा न कर सकी, वडी निराशा हुई!" अलका घायल सिंहरण को उठाना चाहती है। आम्भीक दोनो को वन्दी वनाता है।

अव सिकन्दर मालवा पर आक्रमण करता है। पर्वतेश्वर अलका से विवाह का प्रस्ताव करता है किन्तु वह प्रतिवन्ध लगाती है कि मालवयुद्ध मे आपको सिकन्दर की सहायता नही करनी होगी। पर्वतेश्वर पहले तो वचनवद्ध होता है किन्तु सैन्यदल के साथ सिकदर की सहायता को प्रस्थान करता है। अलका मालविका आदि के उद्योग और चन्द्रगुप्त के सेनापतित्व मे गणराज्यो की सम्मिलित सैन्य शक्ति से सिकन्दर पराजित और आहत होता है। यही द्वितीय अक समाप्त होता है।

इस विजय के उपरान्त सिंहरण और अलका का विवाहोत्सव होता है जिसमे सिकदर मालवो और यवनो के सम्मिलित उत्सव की घोषणा करता है। यह देखकर अलका का प्रेमी पर्वतेश्वर छुरा से आत्महत्या करना चाहता है किन्तु चाणक्य आकर हाथ पकड लेता है। चाणक्य के प्रयास से पर्वतेश्वर और सिंहरण मे मैत्री स्थापित होती है। इधर कार्नेलिया और चन्द्रगुप्त मे वार्तालाप के समय फिलिप्स पहुँचकर कार्नेलिया को प्रलो-

भन देता है और चन्द्रगुप्त को द्वन्द्व युद्ध के लिए ललकारता है। किन्तु चन्द्रगुप्त के स्वीकार करने पर प्रस्थान करता है। इधर राक्षस चाणक्य को अपनी मुद्रा देकर सुवासनी को वन्दीगृह से मुक्त कराने का आग्रह करता है। चाणक्य धूमधाम के साथ ससैन्य जलमार्ग से सिकन्दर को उनके देश भेज देता है। यही प्रतिमुख सन्धि समाप्त होती है।

तृतीय अक के प्रारम्भ मे सुवासिनी के कारण नद और राक्षस मे वैमनस्य हो जाता है। नद एक दिन सुवासिनी को बलपूर्वक पकडता है। उसी समय अमात्य राक्षस पहुँच जाता है। और नद लज्जित होकर कहता है —"यह तुम्हारी अनुरक्ता है राक्षस! मै लज्जित हूँ।" इधर चाणक्य मालविका अलका आदि के साथ कुसुमपुर पहुँचकर राक्षस के विवाह के दिन नद के विरुद्ध प्रजा-विद्रोह की योजना बनाता है। शकटार नद से प्रतिशोध लेने के लिए प्रतिश्रुत होता है। चाणक्य के आदेश से राक्षस की मुद्रा से अंकित एक पत्र मालविका नद के पास पहुँचाती है जिस मे लिखा है—"सुवासिनी, कारागार से शीघ्र निकल भागो, इस स्त्री के साथ मुझसे आकर मिलो। मैं उत्तरापथ मे नवीन राज्य की स्थापना कर रहा हूँ। नद से फिर समझ लिया जायगा।"—पत्र पढकर नद राक्षस को वन्दीगृह मे डाल देता है। इस समाचार से नागरिक नद के विरुद्ध विद्रोह करते है। शकटार नद का वध करता है। प्रजा की सम्मति मे चन्द्रगुप्त मगध का शासक नियुक्त होता है। मन्त्रि-परिषद् की स्थापना होती है। यही तृतीय अक के साथ गर्भ सन्धि समाप्त होती है।

पर्वतेश्वर कल्याणी से बलात् विवाह करना चाहता है। वह छुरा निकालकर पर्वतेश्वर का वध करती है और उसी से आत्महत्या कर डालती है। चन्द्रगुप्त दक्षिणापथ को विजय करने के लिए प्रस्थान करता है। इधर राक्षस को सन्देह होता है कि शक्तिशाली चाणक्य सुवासिनी से विवाह करना चाहता है। अत वह मगधराज के विरोध की योजना बनाता है। दक्षिणापथ से विजयी होकर लौटने पर विजयोत्सव न मनाये जाने से चन्द्रगुप्त के माता-पिता रुष्ट होकर बाहर चले जाते है। चन्द्रगुप्त और चाणक्य मे इस विषय को लेकर विवाद होता है। चाणक्य राज्य छोड देता है। मालविका षड्यन्त्रकारियो से चन्द्रगुप्त की रक्षा करते हुए मारी जाती है। सिल्यूकस चन्द्रगुप्त के साथ युद्ध की घोषणा करता है। चन्द्रगुप्त सकल्प-विकल्प करते हुए कहता है—"पिता गये, माता गई, गुरुदेव गये, कधे से कधा भिडाकर प्राण देनेवाला चिर सहचर सिहरण गया! तो भी चन्द्रगुप्त को रहना पडेगा।" यही विमर्श सन्धि समाप्त होती है।

चाणक्य की नीति से आम्भीक और सिंहरण गुप्त रीति से चन्द्रगुप्त की रक्षा करते है। मगध सेना के प्रत्यावर्तन के समय आम्भीक ग्रीक सेना पर टूट पडता है और सिल्यूकस से युद्ध करते-करते मारा जाता है यवन सेना को सिहरण पराजित करता है। सम्राट चन्द्रगुप्त की जयजयकार होती है। सिहरण से गुरुदेव का प्रयास सुनकर चन्द्रगुप्त अपने को अपराधी स्वीकार करता है। इधर ग्रीक शिविर मे पराजय के कारण कार्नेलिया आत्महत्या करना चाहती है। उसी समय चन्द्रगुप्त वहाँ पहुँचकर उसके हाथ से छुरी ले लेता है। कार्नेलिया अपने पिता की हत्या से आशकित होती है। उसी समय सिल्यूकस आ जाते है। इसी समय सीरिया पर ओटिगोनस के आक्रमण की सूचना मिलती है। मेगस्थनीज सिल्यूकस को चाणक्य की कूटनीति समझाते हुए चन्द्रगुप्त को बन्धु बनाने के लिए कार्नेलिया के साथ उसके विवाह का सुझाव देता है। कार्नेलिया की सहमति से विवाह सम्पन्न होता है। युद्ध मे सिल्यूकस का सहायक राक्षस चारो ओर आर्य सैनिको मे घिरने से दाड्यायन के तपोवन मे छिप जाता है। रागद्वेष से मुक्त चाणक्य को देखकर राक्षस, मौर्य और चन्द्रगुप्त अपने अपराधो की क्षमा माँगता है। मौर्य स्वीकार करता है कि कि "मैं—सबकी अवज्ञा करनेवाले महत्त्वाकाक्षी ब्राह्मण का वध करना चाहता था।" चन्द्रगुप्त पिता को इस अपराध के लिए प्राणदण्ड देना चाहता है किन्तु चाणक्य सबके अपराध क्षमा कर देता है। राक्षस

अपने अपराधो के लिए दड माँगना है तो चाणक्य कहते है—"आर्य शकटार के भावी जगाता अमात्य राक्षस के लिए, मैं अपना मन्त्रित्व छोडता हूँ। राक्षस ! सुवासिनी को सुखी रखना।"

सिल्यूकस आर्य चाणक्य का अभिनन्दन करके स्वदेश लौटना चाहता है। सन्धिपत्र के साथ सिल्यूकस कार्नेलिया का हाथ चन्द्रगुप्त को पकडाता है। जयध्वनि होती है और चाणक्य मौर्य के साथ अरण्य प्रदेश मे प्रस्थान करता है। यही निर्वहण सधि के साथ नाटक समाप्त होता है। सन् १९३३ मे काशी मे अभिनीत।

चन्द्रगुप्त मौर्य (सन् १९४६, पृ० १५३) ले० लक्ष्मणस्वरूप, प्र० एम० चन्द एण्ड कम्पनी, फव्वारा, दिल्ली, *पात्र* पु० १३, स्त्री २ *अक* २ *दृश्य* . २०।
घटना-स्थल तक्षशिला का शिक्षा-केन्द्र, मगध का राजविहार, पाटलिपुत्र का सगम।

इस ऐतिहासिक नाटक मे चाणक्य की राजनीति-पटुता और चन्द्रगुप्त के शौर्य का परिचय मिलता है। तक्षशिला विश्व-विद्यालय मे चाणक्य, चन्द्रगुप्त तथा अपने अनेक शिष्यो को शिक्षा देता है। चाणक्य के राष्ट्रीय विचारो का महाराज आम्भि सर्वथा विरोधी है। वह क्रोधित होकर चाणक्य का अपमान करता है। परिणामत शिष्य भडक जाते है। इसी समय सिकन्दर का आक्रमण होता है। चन्द्रगुप्त से प्रभावित होकर वह मशकवती का राज्य उसे सौप देता है। यही चन्द्रगुप्त का परिचय सिल्यूकस से होता है। उसी दिन सन्ध्या के समय सिल्यूकस की पुत्री हेलेन, नौका-विहार करती दिखाई देती है। नौका डूबने लगती है किन्तु चन्द्रगुप्त उसके प्राणो की रक्षा करता है। दोनो का परिचय प्रेम मे बदल जाता है। हेलेन यूनानी सस्कृति से घृणा करती हुई भारतीय सस्कृति को हृदय से सराहती है। इधर चाणक्य कूटनीति के जाल बिछाता रहता है। सिकन्दर की मृत्यु और फिलिप्स का पतन होता है। यूनानियो को उनके देश भेजकर चन्द्रगुप्त विस्तृत भू-भाग का राजा हो जाता है।

पाटलिपुत्र का विलासी राजा नन्द सुन्दरियो के भोग मे डूबा रहता है। मन्त्री शकटार राजा की पाप-नीति का विरोध करता है। नन्द मन्त्री को जेल मे डाल देता है और विदूषक की सलाह से पितृ-श्राद्ध पर ब्रह्म-भोज कराता है। इसी अवसर पर नन्द चाणक्य की शिखा खीचता है। चाणक्य बदला लेने का दृढ निश्चय करता है। चन्द्रगुप्त मगध पर आक्रमणकर नन्द का वध करता है। चाणक्य उसके रक्त मे शिखा बाँधकर सन्तुष्ट हो जाता है। तभी सिल्यूकस अपने को सिकन्दर का उत्तराधि-कारी घोषित करता हुआ चढाई करता है। उसकी पराजय होती है। चाणक्य के सकेत पर सिल्यूकस अपनी पुत्री हेलेन का विवाह चन्द्रगुप्त से कर देता है। चाणक्य शकटार को मन्त्री बनाकर, राज्याभिषेक हो जाने पर सन्यास ले लेता है।

चन्द्रमुखी (सन् १९६५) ले० अमृत कश्यप प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६, *पात्र* पु० ५, स्त्री ४, *अक* ३।
घटना-स्थल नगर की गली, मकान, विवाह मडप।

बडे शहरो मे मकान की समस्या पर आधारित हास्यपूर्ण एक सामाजिक नाटक है। प्रकाश को अविवाहित होने के कारण दिल्ली मे कोई मकान-मालिक घर देने को तैयार नही होता। वह अपने मित्र को कल्पित बीबी घोषित कर धन्नो के मकान मे किराये पर रहने लगता है। धन्नो प्रकाश की बीबी चन्द्रमुखी के स्वभाव से खुश है और उसकी सन्तान देखने को उत्सुक रहती है। राज मजुला के साथ प्रकाश के पास आता है और उसकी तथाकथित स्त्री चन्द्र-मुखी को देख विस्मित होता है। राज और मजुला प्रेमी-प्रेमिका के रूप मे घर से भाग जाते है। नर्मदाप्रसाद अपने बेटे प्रकाश की शादी ठीक करने आते है तो धन्नो से उसकी बीबी की जानकारी प्राप्तकर आश्चर्य मे पडते है। प्रकाश पिता से चन्द्रमुखी को घर की नौक-रानी बताता रहा है। रेखा प्रकाश से मिलने आती है। दोनो के प्रेमालाप के समय चन्द्र-मुखी वहाँ आती है और रेखा के पूछने पर अपने को प्रकाश की बीबी बताती है। रेखा नाराज

हो चली जाती है। चन्द्रमुखी वास्तव मे ब्रजभूषण सक्सेना था जो प्रकाश के कहने पर स्त्री-वेश धारण करके मकान के लिये उसकी बीबी बन गया था। एक दिन प्रकाश और चन्द्रमुखी मे कलह होने के कारण सक्सेना गुस्से से लॅहगा उतारकर अटेची ले बाहर जाने लगता है। राज चन्द्रमुखी और प्रकाश मे बीच-वचाव करके प्रकाश से माफी मॅगवाता है और चन्द्रमुखी को लहँगा पहन लेने के लिये मनाने लगता है। तभी धन्नो के आने की आवाज आती है। दोनो चन्द्रमुखी को खाट पर लेटा देते है। धन्नो के पूछने पर प्रकाश बताता है, कि उसके पेट मे दर्द है। धन्नो यह समझकर खुश होती है कि चन्द्रमुखी का पॉव भारी है।

प्रकाश चेतू के हाथ रेखा के पास चिट्ठी भेजकर अपनी तथाकथित बीवी का रहस्य उद्‌घाटित करता है। रेखा प्रकाश के घर आकर अपनी ऑखो से चन्द्रमुखी का असली रूप देखकर हॅस पडती है। पिता की अनुमति से प्रकाश और रेखा का विवाह हो जाता है।

चन्द्रशेखर 'आजाद' (सन् १९६१, पृ० ११०) ले० देवीप्रसाद धवन, प्र० चैतन्य प्रकाशन, कानपुर, *पात्र* पु० १३, स्त्री १, *अक* ३ दृश्य ११, ६, ७।
घटना-स्थल · अमृतसर की गली तथा गुप्त कमरा, कानपुर का मकान, आनन्द भवन, अल्फ्रेड पार्क, फॉसी की कोठरी।

इस राजनीतिक नाटक मे क्रान्तिकारी नेता चन्द्रशेखर 'आजाद' की वीरता का परिचय दिया गया है। भारत की पराधीनता देख चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिह, राजगुरु, सुखदेव तथा बिस्मिल आदि वीर क्रान्तिकारी देश को मुक्त कराने के लिए अग्रेजो के विरुद्ध जगह-जगह सभाएँ करते है, जुलूस निकालते है और भारतीयो मे उत्साह की भावना भरते है। अग्रेज सरकार इनको गिरफ्तार करने के लिए विविध प्रयत्न करती है। एक बार एक सार्वजनिक सभा मे अग्रेजो के खिलाफ भाषण करते हुए भगतसिह, राजगुरु और सुखदेव गिरफ्तार हो जाते है। उनको अनेक यातनाएँ दी जाती है। अन्त मे तीनो 'इन्कलाव जिंदाबाद' और 'वन्देमातरम्' कहते हुए फॉसी के तख्ते को चूम लेते है। इसी तरह चन्द्रशेखर 'आजाद' भी एक बार अचानक इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क मे पुलिस के साथ सघर्ष करते हुए मातृभूमि की बलिवेदी पर शहीद हो जाते है।

चन्द्रसेन (सन् १८७७) ले० · बालकृष्ण भट्ट, प्र० : हिन्दी प्रदीप, *पात्र* पु० ६, स्त्री ३, *अक* ४, *दृश्य रहित*।
घटना-स्थल महल, पथ, विवाह-मंडप।

इस अर्द्ध-ऐतिहासिक नाटक मे अलाउद्दीन की नीचता और दो प्रेमियो की सत्यनिष्ठा दिखाई गई है।

अलाउद्दीन राजा इद्रमणि की सुन्दरी कन्या मदनलतिका के साथ विवाह का प्रस्ताव करता है जिसे अमान्यकर राजा कलानिधि के पुत्र चन्द्रसेन से कन्या के पाणिग्रहण की बात चलाता है किन्तु आपसी फूट के कारण असफल होता है। इधर अलाउद्दीन छलपूर्वक कलानिधि की हत्या करवा देता है जिससे चन्द्रसेन निराश्रित हो जाता है। सुलतान के सरदार अपमान करने के उद्देश्य से मदनलतिका का विवाह एक कुरूप कुबडे से करने का षड्यन्त्र करते है। उधर चन्द्रसेन के रूप पर मोहित प्रमद्वरा नामक अप्सरा चित्ररण्य की सहायता से उसकी रक्षा करती है जिससे चन्द्रसेन और मदनलतिका का मिलन होता है।

चन्द्रहार (सन् १९५२, पृ० १५०), ले० : विष्णु प्रभाकर, प्र० सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद; *पात्र :* पु० ३, स्त्री ८;

इस सामाजिक नाटक मे प्रेमचन्द्र जी के उपन्यास गबन की कथा ग्रहण की गई है। इसमे मूल कथा एक मध्यम वर्गीय अशिक्षिता नारी की है। यह नारी सुन्दर आभूपण और वस्त्रो के आकर्पण से अपने को मुक्त नही कर सकी है। नायक के माध्यम से उस वर्ग का चित्रण किया गया है जो वास्तविकताओ से सही रूप मे परिचित नही है।

चन्द्रहास (सन् १९१४, पृ० ७०) ले० : सोमेश्वरदत्त शुक्ल; प्र० : इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, *पात्र :* पु० ८, स्त्री ४;

अक · ३, दृश्य १२।
घटना-स्थल : धृष्टवुद्धि का भवन, वाटिका।

इस अर्द्ध-ऐतिहासिक नाटक मे ऋषि की भविष्यवाणी को सत्य दिखाया गया है। मूलकथा जैमिनि पुराण से नवीन कल्पना के साथ ली गई है। कुन्तलपुर का प्रधान मन्त्री धृष्टवुद्धि चन्द्रहास की हत्या के अनेक प्रयत्न करता है, क्योकि ऋपियो की भविष्य-वाणी के अनुसार वही उस राज्य का उत्तराधिकारी था। शिकार खेलते हुए राजा कुलिन्दक के द्वारा चन्द्रहास की रक्षा होती है। कालक्रमानुसार धृष्टवुद्धि की पुत्री विपया चन्द्रहास पर मुग्ध हो जाती है और दोनो का विवाह होता है। ऋपियों की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध होती है। चन्द्रहास महाराज के पद पर आसीन होता है तथा धृष्टवुद्धि अपने पापो का प्रायश्चित्त करता है।

चन्द्रहास नाटक (पृ० ४४), ले० : च० ल० सिंह, प्र० : हरिहर अग्रवाल प्रेस, गया; पात्र . पु० १३, स्त्री ५; अक : ३, दृश्य ६, ४, ५।
घटना-स्थल .' रास्ता, जगल, पूजागृह, फुलवारी, महल।

इस जासूसी नाटक मे भाग्यचक्र का खेल दिखाया गया है। दासीपुत्र चन्द्रहास राजा की कृपा से राजमहल मे निवास करता है। कुन्तलपुर के राजा की उस पर वडी कृपा है, किन्तु उसका दीवान उससे ईर्प्या करता है और वह चाडाल कल्लू और मल्लू को चन्द्रहास की हत्या के लिए उत्तेजित करता हुआ कहता है—"उसको महल से निकाल, जंगल की राह मे डाल, उसके जीवन के प्याले को दे उछाल, वस इतना काम निकाल, फिर कर दूँ तुझे माला-माल, ले चल अवसर न टाल।" जगल मे चाडाल कल्लू-मल्लू पेड से कूदकर माला जपते हुए चन्द्रहास पर आक्रमण करते है। उसकी उँगली कट जाती है। विदूपक को देख वे भाग जाते है। चन्द्रहास जंगल मे भगवान् से प्रार्थना करता है। उसी समय चन्दनावती का राजा कलिंग वहाँ पहुँच जाता है। उसकी तेजस्विता से प्रभावित होकर उसे गोद ले लेता है और उसको राजगद्दी प्रदान करना चाहता है। कुन्तलपुर का दीवान चाण्डालों द्वारा चन्द्रहास-वध की कल्पना करता है। एक दिन पुप्प-वाटिका मे दीवान की पुत्री विपया चन्द्रहास की सुन्दरता पर रीझ जाती है और उसे वर रूप मे पाने की प्रार्थना करती है। वह चन्द्रहास की पगडी की चुनट मे से यत्न से मुहर की हुई एक चिट्ठी निकालती है। इस पत्र मे पिता ने उसके भाई मदन को लिखा था—"जाते ही विप दे देना।" वह विष के आगे 'या' और जोड़ देती है। वह पत्र लेकर मदन के पास जाता है और मदन उसका विवाह अपनी वहन विपया से कर देता है। दीवान भी इस विवाह को स्वीकार कर लेता है और धूम-धाम से विवाह सम्पन्न होता है।

चन्द्रहास (सन् १६१६, पृ० १६४), ले० : श्री मैथिलीशरण गुप्त, प्र० . साहित्य-सदन, चिरगाँव, झासी; पात्र पु० ६, स्त्री ३ तथा दासियाँ; अक : ५, दृश्य : ५, ५, ५, ५, ५।
घटना-स्थल : कुन्तलपुर का राजगृह, निर्जन वन, मन्दिर मैदान।

इस पौराणिक नाटक मे भाग्य का खेल और भक्तिभाव की महिमा दिखाई गई है। भविष्यवाणी से आतकित महामन्त्री-पुत्र मदन को कुन्तलपुर का राज्य दिलाने मे सशक है। धृष्टवुद्धि उत्तराधिकारी वालक चन्द्रहास को दो सेवको के हाथ सौंपकर निर्जन वन मे उसके वध की योजना वनाता है। लेकिन घातक भगवान की कृपा से करुणावश उसके पाँव की छठी उँगली काटकर उसे वही छोड देते है। तभी राजा का सामन्त कुलिन्दक (चन्दनावती का राजा) चन्द्रहास को अपना दत्तक पुत्र वना लेता है।

मदन चन्दनावती पहुँचकर चन्द्रहास के वध की योजना वनाता है। साकेतिक भापा मे लिखा पत्र देकर वह चन्द्रहास को अपने पुत्र के पाम कुन्तलपुर भेज देता है। चन्द्रहास वहाँ जाता है तथा नियति पुन: उसकी रक्षा करती है। कुन्तलपुर के उद्यान

मे विषया प्रथम बार देखते ही हृदय से वशीभूत होकर उससे विवाह कर लेती है। धृष्टबुद्धि जामाता के रूप मे चन्द्रहास को पाकर प्रसन्न हो जाता है। महाराज कौन्तलप चन्द्रहास को कुन्तलपुर का राज्य सौप देते है। धृष्टबुद्धि अब भी विजनेश्वरी देवी के मन्दिर मे चन्द्रहास का वध कराना चाहता है। भगवान की प्रेरणा से चन्द्रहास कौन्तलप के पास ही रुक जाता है। मन्त्रीपुत्र मदन विजनेश्वरी देवी के मन्दिर मे जाता है। मदन का वध देखकर धृष्टबुद्धि भी आत्महत्या कर लेता है। लेकिन देवी की कृपा से दोनो जीवित हो जाते है। चन्द्रहास के राजा बनने पर धृष्टबुद्धि राजा कौन्तलप के साथ वन को चला जाता है।

चन्द्रावली नाटिका (सन् १८७७, पृ० ६१), ले० भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्र० मेसर्स ब्रज० बी० दास एण्ड को०, बनारस, *अक* ४, अकावतार १, निष्कभक १।
घटना-स्थल उपवन, पथ, यमुनातट।

कृष्ण के प्रति चन्द्रावली और अन्य गोपियो के प्रेम की चर्चाकर नारद शुकदेव को प्रेमलीला दिखाने के लिए ब्रजभूमि ले जाते है। वार्तालाप क्रम मे हृदयगत तथ्य को छिपाने का प्रयत्न करने पर भी ललिता कृष्ण के प्रति चन्द्रावली के गूढ प्रेम को समझ जाती है। प्रेम की महत्ता का प्रतिपादन करने पर वह अपने हृदय की सच्ची भावनाओ को ललिता पर प्रकट कर देती है। विरहिणी चन्द्रावली कदलीवन मे जाते ही विक्षिप्तावस्था को प्राप्त हो जाती है और प्रलाप करती हुई, कभी तो प्रिय से वार्तालाप करती है, कभी उन्हे उपालम्भ देती है, कभी चेतनावस्था मे आकर अपनी सखियो से बाते करती है। यह स्थिति देख सध्या उसका प्रेमपत्र लेकर कृष्ण के पास जाती है। वह पत्र रास्ते मे गिर जाता है जिसे पाकर चपकलता कृष्ण के पास पहुँचा देती है। इधर सरोवर के निकट बगीचे मे सखियाँ प्रकृति की शोभा का वर्णन करती है किन्तु प्रकृति चन्द्रावली के प्रेम को उद्दीप्त कर उसकी विरहावस्था को गम्भीर बना देती है। उसकी इस दशा पर चिंतित सखियाँ कृष्ण-चन्द्रावली मिलन का उपाय करती है। अन्त मे कृष्ण योगिनी के रूप मे अलख जगाते हुए चन्द्रावली के यहाँ जाकर सगीत की तान छेडते है। चन्द्रावली मूर्छित होकर ज्यो ही भूमि पर गिरती है उसे कृष्ण बीच ही मे थाम लेते है। इस प्रकार दोनो का मिलन हो जाता है।

चन्द्रावली (सन् १८९७), ले० मेहदी हसन (अहसन), प्र० रामदत्तमल, लाहौर, *पात्र* पु० ५, स्त्री २, बाब ३, प्रत्येक बाब मे कई सीन।
घटना-स्थल राजमहल, जगल।

इस सामाजिक नाटक मे पतिव्रत की महिमा दिखाई गई है। राजा और उसके मन्त्री मे स्त्री के पतिव्रत-धर्म की वास्तविकता पर विवाद प्रारम्भ होता है। राजा का राजगुरु (महात्मा) रानी चन्द्रावली को पथ-भ्रष्ट करने का बीडा उठाता है, वह अपनी माया और कूटनीति से रानी को डिगाने का पूर्ण प्रयत्न करने पर भी असफल रहता है। चन्द्रावली भारतीय नारी के आदर्श पर अडिग और अपने सतीत्व पर अविचल रहती है। महात्मा अपनी नीचता पर लज्जित होता है और नाटक सती की महिमा का प्रतिपादन करके समाप्त होता है।

बबई नाटक मडली द्वारा लखनऊ मे सन् १८९७ मे अभिनीत।

चंद्रिका नाटक (सन् १९३३, पृ० ६९), ले० चन्द्रभानु सिह, प्र० आदर्श ग्रन्थ-माला, दारागज, प्रयाग, *पात्र* पु० ७, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* . ४, ३, ३।

इस प्रतीक नाटक मे सद्गुणो और दुर्गुणो मे होड दिखाई गई है। यह प्रतीकात्मक नाटक है। निशा, प्रभात, चन्द्रिका, भानु आदि इसके पात्र है जो निर्मलता, कलुषता, तेज, शीतलता आदि के प्रतीक है। सबो मे आपस मे होड लगी है कि कौन महान है। इनके द्वारा कहे हुए सवाद भी सकेत सूचक है। उदाहरणार्थ —

प्रभात जानती हो, लालवर्ण (प्रभात का) बडा परावर्तनीय है।

निशा हाँ रक्त शोषक भी है।

प्रभात · नही, नही, अधिकाश मे रक्त पोषक ही है।

चक्रव्यूह (सन् १९५३, पृ० ११४), ले० : लक्ष्मीनारायण मिश्र; प्र० कौशाम्बी प्रकाशन, प्रयाग, *पात्र* पु० १४, अक ३, दृश्य २, २, २।
घटना-स्थल युद्धभूमि, युधिष्ठिर शिविर।

इस पौराणिक नाटक मे अभिमन्यु का अतुल शौर्य दिखाया गया है।

नित्य ही हार होने के कारण कौरवो ने आचार्य द्रोण की सलाह से एक चक्रव्यूह की रचना की है। अर्जुन ही पूरी तरह चक्रव्यूह तोडना जानते है। वह ससप्तको से युद्ध के लिये बाहर गये हुए है। अब पाण्डवो को सोच होता है। उनमे से कोई भी चक्रव्यूह की विद्या नही जानता। अर्जुन-पुत्र अभिमन्यु युद्ध के लिये तैयार हो जाता है। चारो पाण्डव घबराते है। अभिमन्यु तनिक भी पीछे नही हटता। वह व्यूह मे प्रवेश करना तो जानता है पर निकलना नही जानता। अभिमन्यु माता तथा पत्नी से विदा लेकर प्रवेश द्वार को पूरी तरह से विजय करके अन्दर युद्ध करता है। द्वारपाल अन्य पाण्डवो को अभिमन्यु के रक्षार्थ अन्दर नही जाने देते। एकाकी युद्ध मे अभिमन्यु की पराजय न देख सात महारथी एक साथ उस पर टूट पडते है। शस्त्र-रहित अभिमन्यु रथ के पहिये से लडता हुआ वीर गति को प्राप्त होता है।

चक्रव्यूह (सन् १९५५), ले० रघुवरदयाल श्रीवास्तव, प्र० सरस्वती मदिर, झासी, *पात्र* पु० २३, *अक-दृश्य रहित*
घटना-स्थल युद्धक्षेत्र, चक्रव्यूह का मध्य भाग।

इस पौराणिक नाटक मे अभिमन्यु का शौर्य एव अधर्म-नीति से चक्रव्यूह मे उसका वध होने पर महाभारत युद्ध का परिणाम दिखाया गया है।

महाभारत युद्ध मे जब कौरव दल शिथिल हो जाता है तब द्रोण के द्वारा बताई हुई युक्ति का वे पालन करते है। सुयोधन के साथी त्रिगतराज अर्जुन को अलग युद्ध के लिये ललकारते है। अर्जुन और भगवान् कृष्ण युद्ध के लिये निकल पडते है। इधर द्रोणाचार्य द्वारा युद्ध मे चक्रव्यूह की रचना होती है जिससे पाण्डव घबराते है, क्योकि व्यूह-भजन केवल अर्जुन ही जानता है। इसी बीच मे सुभद्रा-पुत्र अभिमन्यु धर्मराज को प्रणामकर कह उठता है—'महाराज,आज युद्ध मे मै जाऊँगा।' सभी इस बात को सुनकर तिलमिला उठते है। अभिमन्यु सगे-सम्बधियो से आज्ञा एव आशीर्वाद लेकर युद्ध के लिये प्रस्थान करता है। युद्ध मे अभिमन्यु बडे कौशल से सबको पूरी तरह से पराजित करता है परन्तु चक्रव्यूह मे निकलना नही जानता। अभिमन्यु के घिर जाने पर कौरव महारथी एक साथ उस पर आक्रमण करते है। अधर्म की लडाई मे अभिमन्यु अपने शस्त्रो के टूट जाने पर रथ के पहिये से लडता हुआ मार दिया जाता है। अधर्म युद्ध मे अभिमन्यु का वध हो जाने पर महारथी भीम रात्रि को ही अनेक कौरवो को मृत्यु के घाट उतार देते है और अर्जुन पुत्र-शोक के कारण की हुई प्रतिज्ञा के अनुसार जयद्रथ का वध करते है।

चलता-पुर्जा (सन् १९३५, पृ० १५६), ले० : मेहदी हसन लखनवी, मोरावजी ओग्रान्यू अल्फ्रेड मडली, बम्बई के लिए लिखा गया, प्र० राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, *पात्र* पु० १६, स्त्री ७।
घटना-स्थल जगल, पथ, बन्दीगृह।

आरम्भ मे फरिश्तये-अक्ल और फरिश्तये-अमल रगमच पर आकर मानव जीवन के उद्देश्य और रहस्य पर वादविवाद करते है। प्रश्न उठता है कि मानव क्यो अपने कर्त्तव्य से विमुख होकर छल, प्रपच, हत्या का जीवन व्यतीत करता है? व्यवहार का फरिश्ता बताता है कि मानव जीवन के रहस्य से अनभिज्ञ मनुष्य अपने मानवीय गुणो को विस्मृतकर पाशविक आचरण करता है। इसी उद्देश्य को सिद्ध करने के लिये नाटक मे दैवी और आसुरी वृत्तियो के प्रतिनिधि गुणो का सघर्ष चित्रित किया गया है। इसके लिये सिकन्दर खा नामक डाकू के चरित्र को मुख्य कथा का आधार बनाया गया है।

सिकन्दर खा सज्जनता का ढोग करके

समाज मे अपना जाल फैलाता है और विभिन्न रीतियो से लोगो की हत्या और लूट-खसोट करता रहता है। अन्ततोगत्वा वह बन्दी बनाया जाता है किन्तु वह अपनी चालाकियो से पुलिस की निगरानी से निकल भागने मे सफल होता है। यही उसका चलता-पुर्जापन है। किन्तु उसके सभी दुश्चरित्रो और चालाकियो का भण्डाफोड होता है और उसे अपनी करनी का फल भोगना पडता है।

चांडाल चौकड़ी (सन् १९२६, पृ० ४३), ले० : हरिशकरप्रसाद उपाध्याय, प्र० : बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, *पात्र* पु० ६, स्त्री १, *अक* . रहित, *दृश्य* १२।
घटना-स्थल : घर, रास्ता, गगा नदी का तट, मन्दिर।

इस प्रहसन मे एक शैतान छात्र के बिगडने के कारणो पर प्रकाश डाला गया है।

खेलाडीलाल नामक छात्र न स्कूल मे पढता है और न घर पर। उसका पिता झुम्मनदास जब आवारा घूमने के लिए उसे पीटता है तो खेलाडी की माँ उसे छुडा देती है। खेलाडी कुसगति मे पडकर चोरी करने लगता है। अन्त मे थानेदार उसे चोरी मे पकडता है। खेलाडी का पिता थानेदार से कहता है कि इसे जरूर जेल की हवा खिलाइए, मै प्रसन्न होऊँगा। खेलाडी की माँ, भद्रा और खेलाडी झुम्मनलाल से अनुनय विनय करते है कि किसी प्रकार इस कष्ट से बचाये। झुम्मन के प्रयास से खेलाडी मुक्त किया जाता है। वह अपने शैतान मित्रो की भर्त्सना करता है और भद्रा अपनी भूल स्वीकार करती है।

खेलाडी की शैतानियाँ हँसी उत्पन्न करती है।

चाण्डाल चौकडी (सन् १९००, पृ० ३२), ले० : सुवर्ण सिह, प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी, *पात्र* . पु० २, स्त्री २, *अक-रहित*।

इस प्रहसन मे घसीटा को दो लडकियाँ तरह-तरह से मूर्ख बनाती है। इसमे एक मात्र घसीटा की मूर्खतापूर्ण बातो को ही चित्रित किया गया है। चम्पा और चमेली घसीटा से प्रेम की बाते करती हुई उसे तरह-तरह से मूर्ख बनाती है। हास्य के वातावरण मे ही यह प्रहसन समाप्त हो जाता है।

चाँदी का जूता (सन् १९६०, पृ० ७१), ले० : जगदीश शर्मा; प्र० . देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६; *पात्र* : पु० ९, स्त्री १। *घटना-स्थल* · सेठ की कोठी, सभास्थल, चुनावस्थल।

इस राजनीतिक नाटक मे झूठे देशभक्त पर चाँदी के जूते का प्रभाव दिखाया गया है।

इसमे कॉमरेड आजाद अपनी देशभक्ति का दावा करते फिरते है किन्तु सेठ धनीराम के चाँदी के जूतो के समक्ष उनके सभी सिद्धान्त समाप्त हो जाते है। जनता भी धन के लोभ से कॉमरेड आजाद को ही अपना मत देती है। कुन्दन जनता की इस मूर्खता पर हँसता है किन्तु लोग उसे पागल समझकर टाल जाते है। अन्त मे मजदूरो की सेवा का अवसर आने पर जनता अनुभव करती है कि कुन्दन पागल नही था अपितु चाँदी के जूतो से जनता स्वय पागल बना दी गई थी।

चाणक्य और चन्द्रगुप्त : ले० · आरसी प्रसाद सिह, प्र० : गाधी हिन्दी पुस्तक भण्डार, झासी, *पात्र* : पु० २, *अक-रहित*। *घटना-स्थल* राजभवन, वन।

इस गीतिनाट्य मे चाणक्य का आदर्श ब्राह्मणत्व दिखाया गया है। इसमे चन्द्रगुप्त के सिहासनारूढ होने तथा चाणक्य के वन-प्रस्थान के प्रसग वर्णित है। चाणक्य ब्राह्मण है अत उसके जीवन का मुख्य उद्देश्य मुक्ति साधना है। इसीलिये चन्द्रगुप्त द्वारा उसे रोकने के लिए किए गए सभी अनुरोधो, प्रयत्नो को वह ठुकरा देता है। इस गीतिनाट्य मे प्रवृत्तिमूलक तथा निवृत्तिमूलक दार्शनिक सिद्धान्तो का मूलत. विवेचन है।

चाणक्य नाटक (सन् १९५८, पृ० ६२), ले० : रामबालक शास्त्री, प्र० . साहित्य मन्दिर, रामापुरा, नई बस्ती, वाराणसी; *पात्र* पु० १६, स्त्री ३; *अक* : ३, *दृश्य* : ४, ४, ४।

घटना-स्थल पाटलिपुत्र, सिन्धुतट, चाणक्य-कुटीर, तक्षशिला।

प्रस्तुत नाटक चाणक्य की कूटनीति का दिग्दर्शन कराता है। कुलपति चाणक्य को आशीर्वाद देता है कि "ब्राह्म तेज के साथ तुम्हारी ज्ञान-राशि का भी सवर्धन हो।" चाणक्य इस आशीर्वाद को स्वीकार करता है। चाणक्य अपनी कूटनीति से राक्षस को अमात्य नियुक्त करता है। इसी समय देश पर आक्रमण होता है और चाणक्य की सहायता से चन्द्रगुप्त की विजय होती है। चाणक्य का मुखमण्डल चमत्कृत हो उठता है और राक्षस चाणक्य को देखकर अभिभूत रह जाता है।

चाणक्य प्रतिज्ञा (सन् १९५१, पृ० ११२), ले० कैलाशनाथ भटनागर, प्र० . भारतीय गौरव ग्रथमाला, नई दिल्ली, *अक :* ३, *दृश्य* ७, ५, ६।
घटना-स्थल · फाँसीगृह, पाटलिपुत्र का राजभवन, राज्यसभा।

इस ऐतिहासिक नाटक मे सब प्रकार से चाणक्य की प्रतिज्ञा-पूर्ति दिखाई गई है।

सस्कृत के मुद्राराक्षस के आधार पर इसकी रचना हुई है। चाणक्य अपनी प्रतिज्ञानुसार नन्दवश का नाशकर वृषल चन्द्रगुप्त मौर्य को मूर्धाभिषिक्त करता है, किन्तु कार्य के सुचारु सचालन की दृष्टि से नन्द के मन्त्री राक्षस का सहयोग अपेक्षित है। पर अपने स्वामी नन्द का भक्त राक्षस इसके लिये सहमति नही देता। चाणक्य युक्तिपूर्वक राक्षस की मुद्रा प्राप्त करके उसके सहयोगी चन्दनदास को फाँसी पर लटकाने का नाटक रचता है और अन्त मे राक्षस आत्मसमर्पणकर मन्त्रिपद स्वीकार लेता है। चाणक्य राक्षस की सहमति से नन्द की पुत्री के साथ चन्द्रगुप्त का विवाह कर देता है।

चामुण्डा (सन् १९६०, पृ० ९४), ले० : सीताराम वर्मा, प्र० · कला भारती प्रकाशन मुजफ्फरपुर (विहार), *पात्र* पु० ७, स्त्री २, *अक* . ४, *दृश्य :* ५, ४, ३, १।
घटना-स्थल . कटरागढ, तिरहुत।

इस ऐतिहासिक नाटक मे मुजफ्फरपुर के दुर्ग कटरागढ पर बगाल का राजा अधिकार करता है। अवसर पाकर राजा का एक कर्मचारी अपने को स्वतत्र कर लेता है। कालान्तर मे वह तिरहुत पर भी अधिकार जमाने की चेष्टा मे असफल रहता है। इसके दो पुत्र है तिलक और चन्द्र। इसकी मृत्यु के वाद इसका छोटा पुत्र अपने वाहुबल से बहुत से हिस्सो पर अधिकारकर एक छोटे से राज्य का निर्माण करता है। यह वडा वीर और पराक्रमी राजा बनता है। शत्रु के आक्रमण करने पर वह कुलदेवी चामुण्डा की उपासना करता है और युद्ध मे जाते समय अपनी रानी को राजध्वज की ओर सकेत करके कहता है, "जब यह ध्वज झुक जाय तो समझना मै मर गया।" उसके चले जाने पर राजमत्री राज पर अधिकार करना चाहता है और छल से ध्वजा को झुका देता है। झुके ध्वज को देखकर रानी चिता मे कूद जाती है। इसी समय राजा विजयी होकर लौटता है पर यह दारुण दृश्य देख विक्षिप्तावस्था मे चिता मे कूद पडता है।

चाय-पार्टियाँ (सन् १९६३, पृ० १२४), ले० : सतोषनारायण नौटियाल, प्र० : भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, *पात्र :* पु० ११, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल ड्राइगरूम, ऑफिस।

इस सामाजिक नाटक मे आज के जीवन की कृत्रिमता, झूठा आडम्बर और बेकारी की समस्या का चित्र व्यग्यात्मक रूप से अकित किया गया है।

रमेश अपने भाई-भतीजे की नौकरी के लिए अपने झूठे जन्म-दिन की पार्टी मे वडे-वडे लोगो को आमत्रित करता है। वह सिफारिश को सफलता का एक महत्त्वपूर्ण अग समझता है। किन्तु उसका भाई सतीश 'टैक्ट' और 'डिप्लोमेसी' को धोखाधडी मानकर इनके आधार पर नौकरी नही चाहता। रमेश इस पार्टी मे बैजल नामक एक व्यक्ति को भी बुलाता है, जो एक कम्पनी के मैनेजिग डायरेक्टर है। बैजल की कम्पनी मे नौकरी के लिए एक स्थान खाली है—अत उसे रमेश के अतिरिक्त कई अन्य व्यक्तियो की सि

रिशो का सामना करना पडता है। लेकिन वह योग्यता के आधार पर सतीश को ही चुन लेता है।

अभिनय—१. लखनऊ के सस्कृति केन्द्र द्वारा सन् १९५४ मे।

२ अनामिका द्वारा कलकत्ते मे सन् १९५७ मे।

चाल वेढब (सन् १९३४, पृ० १०२), ले० गगाप्रसाद श्रीवास्तव, प्र० नरेन्द्र पब्लिशिग हाउस, चुनार, *पात्र* पु० ७, स्त्री ३, अक ३, *दृश्य* ३, ४, ४।

घटना-स्थल घर, सडक, मैदान, वाग, गली, मकान का भीतरी भाग।

यद्यपि इस नाटक का आधार मोलियर का नाटक रहा है पर इसमे मूल से बहुत भिन्नता है। इसका प्रकाशन 'इन्दु' पत्रिका मे सर्व-प्रथम हुआ। साधारण से साधारण परिस्थिति मे दिखाई पडनेवाले आचार-विचार, बात-चीत, मान-अपमान को लेकर हास्य का वातावरण निर्मित किया गया है। एक बूढे कजूस रईस मिर्जा हुज्जत बेग का नौकर गफूर है और हुज्जत वेग का नौजवान लडका यूसुफ है तथा नौकर वेढब। यूसुफ की प्रिया जोहरा है। फितरत नहूसत वेग का नौकर है। एक बूढे अमीर हाजी नहूसत वेग का युवा पुत्र महवूब है। अपने नौकर फितरत से यह जानकर परेशान होता है कि मेरे पिता मिर्जा हुज्जत वेग की लडकी से शादी करने के लिए जहाज से आ रहे हैं। महबूब और फितरत के वार्तालाप के समय चालाक नौकर वेढव आ पहुँचता है। महवूव अपनी प्रेयसी गुलवदन के सौन्दर्य और मिर्जा हुज्जत वेग की लडकी के फूहडपन का वर्णन करता है। बेढव की चालाकियो से हुज्जत की दुर्गति होती है और गुलवदन से महवूब की शादी हो जाती है। इसी प्रकार वेढव की चालाकियो से यूसुफ और उसकी प्रेयसी जोहरा का मिलन होता है।

हास्य का ग्रामीण ढग है जैसे कौन क··· क···क ··कौन ? कौन भाई व—व—वेढव। ओ—ओ। लिल्लाह मुझे वचाओ। तो—तो—तो—तो।

चिंदियो की एक झलक (सन् १९६९, पृ० ८०), ले० : अमृतराय, प्र० हस प्रकाशन, इलाहावाद, *पात्र* पु० २, स्त्री १, अक १, *दृश्य-रहित*।

घटना-स्थल कमरा।

इस राजनीतिक नाटक मे पुरानी पीढी (जिसने देश के लिए त्याग किया है, जिसका अपना आदर्श है) और नई पीढी (जो शॉर्ट-कट मार्ग से जीवन से वहुत कुछ चाहती है, जिसका कोई आदर्श नही है) की टकराहट मे पुरानी पीढी के टूट जाने का चित्रण है।

क्रातिकारी नन्दन अपने वलिदान की कीमत देश से नही चाहता। वह अपनी पत्नी दीपा के साथ विगत जीवन की स्मृतियो के सहारे जी रहा है। किन्तु उसके पुत्र मगल की दृष्टि से पिता का त्याग और आदर्श—चिंदियो के समान महत्त्वहीन हो गया है। एक बार मगल को मदमस्त युवक-युवतियो के बीच देखकर नदन व्याकुल हो जाता है। मगल भर्त्सना करने पर अपने पिता को दो टूक जवाब देता है। अत मे नदन आत्महत्या कर लेता है। इसमे दो पीढियो की घटनायें है। एक पीढी नदन और दीपा के जीवन से सम्बद्ध है, जो प्राणो की वाजी लगाकर स्वतत्र भारत मे घी-दूध की नदियाँ बहने की आशा मे थी। लेकिन उनका स्वप्न टूट जाता है। वह अपने ही देश मे उपेक्षित होने पर भी आदर्श नही छोडते। दूसरी ओर मगल की कथा है जो आदर्श को ढोग मानकर सुख-भोग मे लिप्त रहना चाहता है।

अभिनय—इसका प्रदर्शन 'नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा' मे १८-१९ सितम्वर, १९७१ को नादिर जहीर के निर्देशन मे, २ अक्टूबर १९७१ को सप्रू हाउस दिल्ली मे कलकत्ता की अदाकार सस्था द्वारा हुआ।

चित्तौड़ की देवी (सन् १९३१, पृ० ७८), ले० दशरथ ओझा, प्र० साहित्य प्रकाशन मडल, दिल्ली, *पात्र* पु० ६, स्त्री ३, अक २, *दृश्य* ४, ३।

घटना-स्थल अरावली पर्वत की उपत्यका, महाराणा प्रताप की कुटिया।

इस ऐतिहासिक नाटक मे महाराणा प्रताप के वच्चो की विपत्ति मे भी दृढता

दिखाई गई है।

हल्दी घाटी के युद्ध के उपरान्त महाराणा प्रताप अपनी पत्नी ज्ञानदा और बच्चो के साथ घोर जगल मे एक कुटिया बनाकर भावी युद्ध की तैयारी मे संलग्न है। अन्नाभाव मे सभी कई दिन से भूखे समय बिता रहे है। चम्पा बडी बहिन है जो अपने छोटे भाई को अपने भाग की रोटी छिपाकर खिलाती है। महाराणा एक दिन बच्चो को भूख से तडपते देखकर अकबर से सन्धि करने का विचार करने लगते है, पर चम्पा महाराणा से अपने अन्तिम समय मे वचन ले लेती है कि वह पराधीनता कभी स्वीकार न करेंगे। अकबर सन्यासी के वेश मे चम्पा की दृढता की परीक्षा लेने स्वत जाता है और चम्पा प्राणो का मूल्य चुकाकर स्वतत्रता की रक्षा करती है। अन्त मे सम्राट् अकबर महाराणा की विजय और अपनी पराजय स्वीकार कर लेता है और स्वय सन्धि-पत्र लिखकर महाराणा के मित्र सुर्जनसिह के द्वारा भेजता है। चम्पा की जलती हुई चिता के प्रकाश मे सुर्जनसिह महाराणा को अकबर का पत्र पढकर सुनाता है। महाराणा और ज्ञानदा भगवान् की लीला स्मरणकर आँसू बहाते है। इस प्रकार चम्पा अपने बलिदान से राजपूती आन और स्वतत्रता की रक्षा करती है।

चित्रकूट (सन् १९६२ पृ०, १५२) ले० . लक्ष्मीनारायण मिश्र, प्र० रामनारायण लाल, इलाहाबाद, *पात्र* पु० १६, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल : भवन, गगा का किनारा, पर्णकुटी।

अयोध्या काण्ड के आधार पर भरत का अयोध्या से प्रस्थान और चित्रकूट मे राम-भरत का मिलन दिखाया गया है।

राजा दशरथ की मृत्यु पर भरत ननिहाल से अयोध्या आते हैं। राम-वनवास की घटना से दु खी भरत को वशिष्ठ जी राक्षस-राज रावण से देश की रक्षा का महत्त्व और राम का भावी कार्यक्रम समझाते है। भरत मत्री को अयोध्या का राज सौंपकर चित्रकूट के लिए प्रस्थान करते हैं।

द्वितीय अक मे निषादराज और भरत का मिलन होता है। भरत राम की तरह भूमि-शयन का व्रत लेते है। तीसरे अंक मे राम-सीता और लक्ष्मण के अरण्य जीवन की झाँकी दिखाई गई है। लक्ष्मण के मन मे ससैन्य भरत के आगमन से शका उत्पन्न होती है। भरत जानकी के चरणो मे गिरकर प्रणाम करते है। राम को राजा दशरथ के स्वर्गवास का दु खद समाचार मिलता है। पिडदान के उपरान्त भरत राम से अयोध्या लौटने का आग्रह करते है। राम भरत को बहुत समझाते है पर वह अपना आग्रह नहीं त्यागते। अन्त मे वशिष्ठ के आदेश से चरण-पादुका लेकर अयोध्या लौटते हैं। इस नाटक मे राजा जनक का परिवार चित्रकूट नही आता।

चिराग की लौ (सन् १९६२, पृ० ८६), ले० : रेवतीसरन शर्मा, प्र० . नेशनल पब्लिशिग हाउस, दिल्ली, *पात्र* · पु० ५, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* २, ३, २।
घटना-स्थल ड्राइग रूम, साधारण कमरा।

इस सामाजिक नाटक मे आज के समाज मे व्याप्त भ्रष्टाचार, चोर-बाजारी और प्रेम के खोखलेपन का चित्र खीचा गया है।

किशोर नामक ईमानदार युवक इन्कम-टैक्स इन्सपेक्टर होते हुए भी किसी से रिश्वत नही लेता। अपने इन आदर्शो के कारण वह भौतिक सुखो से वंचित रहता है। लेकिन उसकी पत्नी तारा स्वभाव से सुख-सुविधाओं को चाहनेवाली है, इसलिए वह रिश्वत लेने को बुरा नही समझती। वह अपनी धनी सहेली रानी के प्रभाव मे आकर अनैतिक कार्य करने मे भी नही झिझकती। इस वैचारिक वैषम्य के कारण किशोर और तारा के प्रेम-सम्बन्ध टूट जाते है और नाटक का दु खात होता है।

अभिनय : 'कला साधना मदिर' (दिल्ली) के द्वारा २१ मार्च, १९६१ को।

चिराग जल उठा (सन् १९६८, पृ० १२०), ले० · ज्ञानदेव अग्निहोत्री, प्र० . उमेश प्रकाशन, दिल्ली, *पात्र* . पु० १०, स्त्री २; *अक-दृश्य-रहित*। रेडियो का रूपान्तर है।
घटना-स्थल मैसूर के राजप्रासाद का कक्ष,

पुराना चिराग लेकर उन्हे नया चिराग देकर चल देता है और इसकी सहायता से इविनजार के कब्जे मे उसकी इच्छित वस्तुये आ जाती हैं।

चीनी के लड्डू (सन् १६६०, पृ० १५४), *ले०* पडित ईशनाथ झा, *प्र०* विद्यापति प्रकाशन, दरभगा, *पात्र* पु० २५, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* २२।
घटना-स्थल . राजमार्ग, सुधाकान्त का कार्यालय, वटुआदास का घर, सुधाकान्त का घर, सुधाकान्त का आगन, प्रेमकान्त का शयनागार, प्रेमकान्त का आगन, प्रेमकान्त का विलास भवन, पर्णकुटी, प्रेमकान्त का कार्यालय, धर्मानन्द झा का घर एव जज का इजलास।

इस सामाजिक नाटक मे दो भाइयो के पारस्परिक प्रेम के वीच वैमनस्य का वीज वोनेवाला खलपात्र अपने दुष्कर्मो का फल पा जाता है। सुधाकान्त और प्रेमकान्त मिथिला के प्रतिष्ठित जमीदार है। इनके पिता की मृत्यु के उपरात इन दोनो भाइयो की देखभाल उनके मामा धर्मानन्द झा करते है। धर्मानन्द का महत्त्व देखकर दीवान वटुआदास ईर्ष्यावश एक षड्यन्त्र द्वारा प्रेमकात को सुधाकात के विरुद्ध कर देता है। दीवान के मायाजाल मे फँसकर प्रेमकात उसके हाथ की कठपुतली वन जाता है। प्रेमकात की पत्नी चण्डिका को दीवान समझाता है कि सुधाकात खानगी तौर पर वहुत वडी राशि इकट्ठा कर रहे है। चण्डिका चण्डी की तरह प्रचड हो जाती है। शयनागार मे चण्डिका प्रेमकात को सारी स्थिति से अवगत कराती है। दीवान वटुआ और पत्नी के आग्रह पर प्रेमकात वडे भाई से विद्रोह करते है। अत दोनो भाई अलग-अलग हो जाते है। अव वटुआदास प्रेमकात को भ्रातृ-पुत्र सुकुमार की हत्या की मत्रणा देता है। योजनानुसार विषमिश्रित चीनी का लड्डू तैयार होता है, जिसे लेकर वटुआदास स्वय सुधाकात के यहाँ जाता है और मिठाई के डिव्वे को प्रेमकात की ओर से सुकुमार के लिए सौगात वताता है। सुधाकात वटुआदास को भोजन मे वही चीनी का लड् देता है। इस प्रकार उसे अपने दुष्कर्मो व फल स्वय ही भोगना पडता है।

चुगी की उम्मीदवारी (सन् १६१४, पृ०५२) *ले०* वदरीनाथ भट्ट, *प्र०* रामभूषण पुस्त भडार, आगरा, *पात्र* पु० ७, स्त्री १, *अक रहित*।
घटना-स्थल . नगरपालिका चुनाव सभ घर।

इस प्रहसन मे नगरपालिका के निर्वाच का चित्र यथार्थवादी पद्धति पर हास्यात्म ढग से प्रस्तुत किया गया है। मेम्वरी क प्रत्येक प्रत्याशी चुनाव मे किसी भी तर चुने जाने के लिये अधिक से अधिक वोट को प्राप्त करने की कोशिश करता है। इस लिये वह प्रत्येक वोटर के पास जाता है हर प्रत्याशी वोट को प्राप्त करने के लि विविध पद्धति अपनाता है। इन निर्वाचन पद्धति मे प्रत्याशी अपनी मर्यादा तक की तिलाजलि दे देता है। मतदाता प्रत्याशियो से खीजकर यह निश्चय करता है कि मत किसी को भी न दिया जाये। वोट डालने की निश्चित तिथि पर प्रत्येक प्रत्याशी मतदाता को अपनी ओर खीचता है। अन्त मे दोनो ही पक्षो मे मारपीट प्रारम्भ हो जाती है। यही इस प्रहसन का अत होता है।

चुंबन (सन् १६३६, पृ० २११), *ले०* वेचन शर्मा उग्र, *प्र०* : पुस्तक एजेसी, कलकत्ता; *पात्र* · पु० १३, स्त्री ३; *अक-दृश्य रहित*। केवल स्थान परिवर्तन।
घटना-स्थल पहाडी, नदीतट, पाठशाला, दरवाजा, झोपडी, टूटा मंदिर, आराम घर, खलिहान आदि।

सम्पूर्ण नाटक तीन भागो मे विभाजित है और प्रत्येक भाग मे अनेक दृश्य है। सव मिलाकर न्यूनाधिक १०० दृश्य है। इस सामाजिक नाटक मे सूदखोर सेठ का चरित्र दिखाया गया है।

दौलतराम नामक सेठ सूद पर रुपया देता है। मल्लू नामक लकड़हारे के ऊपर उसका सूद मूल से कई गुना वढ चुका है।

अंग्रेजो की फौजी छावनी, मैसूर का राज-प्रासाद।

इस ऐतिहासिक नाटक मे टीपू सुल्तान की वीरता, उदारता और राष्ट्रभक्ति दिखाई गई है।

टीपू की मलिका रूही वेगम अपने भयंकर स्वप्न का वर्णन करती है। टीपू का चचेरा भाई अनवर टीपू से युद्ध का हाल पूछता है। इसी समय दीवान सूचना देता है कि जग मे फतह मिली है पर किस्मत ने शिकस्त दी है। सिपहसालार लैली सूचना देता है कि नाना फडनवीस अग्रेजो से मिल गया है। प्रहरी निवेदन करता है कि जालिम फिरगियो ने दूध पीते बच्चो तक की हत्या कर दी है। टीपू लैली को दूने उत्साह के साथ युद्ध करने को कहता है। युद्ध की तुरही वजती है। घोर युद्ध के उपरान्त अग्रेजो की विजय होती है। टीपू को आधा राज्य देना पडता है और उसके दोनो लडको को अँग्रेज अपनी देखरेख मे रखना चाहते है। नाना फडनवीस टीपू से महाराष्ट्र की दुर्दशा का वर्णन करता है और अपराधो और विवशता के लिए क्षमा चाहता है। टीपू और नाना फडनवीस मिलकर अँग्रेजो से घोर युद्ध करते है किन्तु टीपू आहत होता है। अन्त मे उसका सिर एक ओर लुढक जाता है। उसके मरते ही चिराग वुझ जाता है, किन्तु नाना फडनवीस दोनो वच्चो को रूही वेगम की गोद मे दे देता है। मच पर वढते हुए चिराग की लाल रोशनी फैलती है।

चिरागे वतन अर्थात् देश-दीपक (सन् १९२२, पृ० १०४), ले० लाला किशनचन्द जेवा, प्र० हनुमान पुस्तकालय, लोहारी दरवाजा, लाहौर, पात्र पु० २२, स्त्री ८, अक ३, दृश्य ६, ५, ५।

घटना-स्थल मैदान, अग्रेजो का विलास भवन, रणछोरदास के महल की वैठक, ऋषि आश्रम, मन्दिर का एक भाग, वधगृह, कुटी, स्वर्ग लोक, मन्दिर, वैठक, जेलखाना, फुलवारी, राव साहव का मकान, स्कूल, कार्यालय का एक भाग।

नाटक के पहले दृश्य मे धर्म और शक्ति का वाद-विवाद है, धर्म भारत का प्रतिनिधि है शक्ति यूरोप की। तत्पश्चात् भारतवासियो की दीन-हीन अवस्था एव अँग्रेजो के ऐय्याश जीवन पर प्रकाश डाला गया है। इसी प्रसग मे रणछोरदासजी आते है जो देशी सभ्यता मे रँगे हुए है परन्तु उनकी पत्नी कचन को अँग्रेजी हवा लगी हुई है, किन्तु अन्त मे कचन अँग्रेजी सभ्यता के अभिशाप तक पहुँचने से पूर्व सन्मार्ग पा जाती है और पति की तरह ही स्वदेशी रग मे रग जाती है। राव साहव सरकारी खिताव प्राप्तकर एक अँग्रेज रमणी की धुन मे समा जाते है परन्तु रणछोरजी का धिक्कार उन्हे भी वास्तविकता का ज्ञान कराकर स्वदेशी बना देता है। नाटक आद्योपान्त गाधीवादी भावनाओ से पूर्ण है। हिन्दू-मुस्लिम एकता, मातृभाषा-प्रेम एव स्वाभिमान की रक्षा आदि को दर्शाया गया है।

इस नाटक का उद्देश्य देश की दुर्दशा के विविध कारणो पर प्रकाश डालकर गाधीजी के सिद्धान्तो द्वारा इसको स्वाधीन कराना है। राष्ट्रीयता की भावना इसमे ओतप्रोत है।

चिरागे चीन उर्फ अलादीन (सन् १९२५, पृ० १३६), ले० वावू शिवदास गुप्त, प्र० श्री विश्वेश्वर प्रेस, वनारस, पात्र पु० ९, स्त्री ८, अक ३, दृश्य ५, ७, ५।

घटना-स्थल इवनजार का कमरा, जगल मे तिलस्माती गार, अलादीन का महल, चागचिग फाउ का दरवार।

इस तिलस्मी नाटक मे अलादीन के चिराग की करामात दिखाई गई है।

अलार्क इविनजार का गुरु है। इविनजार के नेक हव्शी अन्धे नौकर कमराक को अलार्क ठीक कर देता है। इसके एक पात्र अलादीन के पास ऐसा चिराग है जो सवकी इच्छायें पूरी कर सकता है। उसी चिराग के चमत्कार इस नाटक मे दिखाये गये है। इस नाटक के तीसरे अक के तीसरे सीन मे अलादीन अपने महल मे मित्र के साथ आता है और खवासो को होशियार करके चला जाता है। उसी समय इविनजार भी आता है और

पुराना चिराग लेकर उन्हे नया चिराग देकर चल देता है और इसकी सहायता से इविनजार के कब्जे मे उसकी इच्छित वस्तुये आ जाती है।

चीनी के लड्डू (सन् १९६०, पृ० १५४), ले० पडित ईशनाथ झा, प्र० विद्यापति प्रकाशन, दरभगा, पात्र पु० २५, स्त्री ४, अक . ३, दृश्य २२।
घटना-स्थल राजमार्ग, सुधाकान्त का कार्यालय, वटुआदास का घर, सुधाकान्त का घर, सुधाकान्त का आगन, प्रेमकान्त का शयनागार, प्रेमकान्त का आगन, प्रेमकान्त का विलास भवन, पर्णकुटी, प्रेमकान्त का कार्यालय, धर्मानन्द झा का घर एव जज का इजलास।

इस सामाजिक नाटक मे दो भाइयो के पारस्परिक प्रेम के बीच वैमनस्य का बीज बोनेवाला खलपात्र अपने दुष्कर्मो का फल पा जाता है। सुधाकान्त और प्रेमकान्त मिथिला के प्रतिष्ठित जमीदार है। इनके पिता की मृत्यु के उपरात इन दोनो भाइयो की देखभाल उनके मामा धर्मानन्द झा करते है। धर्मानन्द का महत्त्व देखकर दीवान वटुआदास ईर्ष्यावश एक षड्यन्त्र द्वारा प्रेमकात को सुधाकात के विरुद्ध कर देता है। दीवान के मायाजाल मे फँसकर प्रेमकात उसके हाथ की कठपुतली बन जाता है। प्रेमकात की पत्नी चण्डिका को दीवान समझाता है कि सुधाकात खानगी तौर पर बहुत बडी राशि इकट्ठा कर रहे है। चण्डिका चण्डी की तरह प्रचड हो जाती है। शयनागार मे चण्डिका प्रेमकात को सारी स्थिति से अवगत कराती है। दीवान वटुआ और पत्नी के आग्रह पर प्रेमकात बडे भाई से विद्रोह करते है। अत दोनो भाई अलग-अलग हो जाते है। अब वटुआदास प्रेमकात को भ्रातृ-पुत्र सुकुमार की हत्या की मत्रणा देता है। योजनानुसार विषमिश्रित चीनी का लड्डू तैयार होता है, जिसे लेकर वटुआदास स्वय सुधाकात के यहाँ जाता है और मिठाई के डिब्बे को प्रेमकात की ओर से सुकुमार के लिए सौगात बताता है। सुधाकात वटुआदास को भोजन मे वही चीनी का लड्डू देता है। इस प्रकार उसे अपने दुष्कर्मो का फल स्वय ही भोगना पडता है।

चुंगी की उम्मीदवारी (सन् १९१४, पृ०५२), ले० . बदरीनाथ भट्ट, प्र० रामभूषण पुस्तक भडार, आगरा, *पात्र* पु० ७, स्त्री १, *अक-रहित*।
घटना-स्थल . नगरपालिका चुनाव सभा, घर।

इस प्रहसन मे नगरपालिका के निर्वाचन का चित्र यथार्थवादी पद्धति पर हास्यात्मक ढग से प्रस्तुत किया गया है। मेम्बरी का प्रत्येक प्रत्याशी चुनाव मे किसी भी तरह चुने जाने के लिये अधिक से अधिक वोटों को प्राप्त करने की कोशिश करता है। इसके लिये वह प्रत्येक वोटर के पास जाता है। हर प्रत्याशी वोट को प्राप्त करने के लिये विविध पद्धति अपनाता है। इस निर्वाचन पद्धति मे प्रत्याशी अपनी मर्यादा तक की तिलाजलि दे देता है। मतदाता प्रत्याशियो से खीजकर, यह निश्चय करता है कि मत किसी को भी न दिया जाये। वोट डालने की निश्चित तिथि पर प्रत्येक प्रत्याशी मतदाता को अपनी ओर खीचता है। अन्त मे दोनो ही पक्षो मे मारपीट प्रारम्भ हो जाती है। यही इस प्रहसन का अत होता है।

चुंबन (सन् १९३६, पृ० २११), ले० : बेचन शर्मा उग्र, प्र० : पुस्तक एजेसी, कलकत्ता, *पात्र* पु० १३, स्त्री ३, *अक-दृश्य-रहित*। केवल स्थान परिवर्तन।
घटना-स्थल पहाडी, नदीतट, पाठशाला, दरवाजा, झोपडी, टूटा मंदिर, आराम घर, खलिहान आदि।

सम्पूर्ण नाटक तीन भागो मे विभाजित है और प्रत्येक भाग मे अनेक दृश्य है। सब मिलाकर न्यूनाधिक १०० दृश्य है। इस सामाजिक नाटक मे सूदखोर सेठ का चरित्र दिखाया गया है।

दौलतराम नामक सेठ सूद पर रुपया देता है। मल्लू नामक लकडहारे के ऊपर उसका सूद मूल से कई गुना बढ चुका है।

दौलतराम के ऋण से मल्लू के अनेक पडोसी भी दबे हुए है। दौलतराम एक कर्जदार को औरो से पिटवाता है पर मल्लू बीच मे कूद कर उसे बचा लेता है। मल्लू नदी पारकर एक मदिर मे पूजा करने जाता है और मूर्ति के सम्मुख नित्य धन का वरदान माँगता है। मल्लू का बेटा विपत स्कूल मे पढता है पर उसको भर पेट भोजन भी नही मिलता। मल्लू की स्त्री मैना उसके पूजापाठ से खिन्न हो उठती है वह विपत को पढाते हुए कहती है बोलो 'क' से मलुआ। मलुआ अपनी स्त्री की ढिठाई पर हँसता है। मैना अपने पति की गरीबी से विकल रहती है। तब तक एक दिन दौलतराम मल्लू के लडके विपत को ऋण न चुकाने के कारण पकड ले जाता है। कर्जदारो मे तहलका मच जाता है। सभी दौलतराम के आगे अपनी विपदा सुनाते है।

दूसरे भाग मे सुन्दरी मैना एक दिन नदी मे स्नान करती है उसी समय दौलत वहाँ पहुँच जाता है। मैना धन के लोभ मे उसके साथ जाने को तैयार होती है तब तक विपत भागकर माँ की गोद मे आ जाता है और मैना पुत्र-स्नेह के वश होकर दौलतराम के साथ नही जाती। पर होली के दिन घर की गरीबी और पडोसियो के ताने से तग आकर वह दौलतराम के साथ उसके बँगले पर चली जाती है ! मल्लू बहुत से लोगो को लेकर दौलतराम के घर पहुँचता है पर मैना और विपत को नये-नये वस्त्र और आभूषण से सुसज्जित देखकर पहचान नही पाता। कुछ दिनो के उपरात मैना एक जमीदार के साथ उसकी मोटर मे सैर-सपाटा करती है। एक दिन शराब के नशे मे चूर जमीदार झगडा होने के कारण उसे अपनी मोटर मे दौलतराम के घर छोड आया। दौलतराम क्रुद्ध होकर दासियो से उसके वस्त्र आभूषण उतरवा लेता है और उसके लडके विपत को भी घर मे बाँधकर रख लेता है।

तीसरे भाग मे मैना सब जगह से निराश होकर राम-मदिर के पीछे ज्वर मे प्रलाप करती पडी है। विपत भी किसी प्रकार दौलतराम से छुटकारा पाकर वहाँ आ जाता है। दौलतराम भी उसी मदिर मे आता है। हनुमान जी रामजी की आज्ञा से दौलतराम को कठोर दड देते है और उससे मल्लू लकडहारे को दो हजार कलदार दिलाते है। अन्त मे मल्लू मैना और विपत का मिलन होता है।

यह नाटक सिनेमा की दृष्टि मे रखकर लिखा गया है।

चेतसिंह (सन् १९५६, पृ० ६६), ले० सर्वदानद, प्र० किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, *पात्र* पु० ११, स्त्री २, *अक-रहित दृश्य* २।
घटना-स्थल रामनगर का दुर्ग, काशी का शिवालय घाट।

इस ऐतिहासिक नाटक मे अग्रेजी राज्य के विरुद्ध युद्ध मे चेतसिह की कायरता और मनियार सिह की वीरता दिखाई गई है। काशीराज चेतसिह की माता पन्ना सूफी शायर और ईरान के शहजादे शेख अली हर्जो से बाते करती हुई पुत्र के आसन्न सकट की चर्चा करती है। फिरगी लाट चेतसिह से ५० लाख रुपया जुर्माना वसूल करना चाहता है। वे प्रजा से बलात् रुपया लेने का आग्रह करते है। प्रजा भगवान् से चेतसिह की रक्षा के लिए प्रार्थना करती है। चेतसिह के चचेरे भाई मनियार सिह प्रजा को अग्रेजो के साथ युद्ध के लिए तैयार कर रहे है। उनका साथ देने को चेतसिह के लघु भ्राता सुजानसिह प्रस्तुत है। पर चेतसिह मे युद्ध का साहस नही होता। वह स्वीकार करता है कि "चेतसिंह के राज्य मे चोरी, डाका, हत्या और बलात्कार बहुत बढ गए है। वह राजा बनने के योग्य नही है।" रानी चेतसिह को युद्ध के लिए सन्नद्ध करना चाहती है और राजमाता पन्ना से आशीर्वाद माँगती है कि यह अन्याय के सामने सिर न झुकाये। चेतसिह रानी के वचन सुनकर दग रह जाता है। हर-हर महादेव का घोष सुनाई पडता है।

दूसरे दृश्य मे दरोगा, तोपखाना, गुलाम हुसेन और प्रमुख अधिकारी बख्शी सदानद के वार्तालाप से ज्ञात होता है कि चेतसिह ने बक्सर मे गवर्नर जनरल के कदमो पर टोपी रख दी और अपने प्राणो की रक्षा के लिए काशी का राज्य देना स्वीकार कर लिया। देशद्रोही मुशी फैयाज अली, अलाउद्दीन

कुवरा, शभूराम पडित, वेनीराम, वनकट मिश्र अग्रेजो से मिलकर देशद्रोह करते है। गोलो की घडघडाहट सुनकर चेतसिंह वख्शी सदानद से कहता है "वख्शी जी, मानो चेतसिंह मर गया, उसका शव डोल रहा है।" वख्शी सदानद की प्रेरणा से मनियार सिंह के सैनिक कम्पनी के सिपाहियो से जूझ पडते है पर चेतसिंह खिडकी से कूदकर भाग जाता है। उसी समय एक सजीव मूर्त्ति का स्वर सुनाई देता है—"जनता एक दिन जागेगी और भारत विदेशी परतत्रता से मुक्त होगा।"

इस नाटक का अभिनय—२२-२३ अगस्त १९५६ को प्रथम वार लखनऊ मे हुआ। उद्घाटन राज्यपाल के० एम० मुशी ने किया।

चेहरो का जंगल (मन् १९६७, पृ० ६३), ले० · आलोक शर्मा, प्र० इंडियन ओवरसीज एलायस कॉरपोरेशन, कलकत्ता; पात्र पु० ४०, स्त्री ६; अक ५, दृश्य १, १, १, २।

घटना-स्थल : दफ्तर, फुटपाथ, प्रदर्शनी, रेस्तरा, फ्लैट।

यह सवादहीन नाटक सामाजिक नाटक है जिसमे कोई सुसगठित कथा नही है। समाज के विभिन्न वर्गो को चेहरो का जगल दिखाया गया है।

नायक यौवनावस्था पार कर चुका है। इसके चेहरे पर जीवन से वितृष्णा और तटस्थता का मिश्रित भाव है। वह कुछ लिखकर स्टेनो को दे देता है। स्टेनो टाइप करते हुए नायक को फटी-फटी आँखो से देखता जाता है। नायक उसकी ओर से दृष्टि हटाकर नए कागज पर लिखकर क्लर्क को देता है। इसी समय एक वूढा चपरासी नायक की टेवल पर खडा हो जाता है और उसकी (नायक) ओर फटी-फटी आँखो से देखने लगता है। तब तक उम्रदराज नामक व्यक्ति हाथ मे छाता लेकर नायक से मिलने के लिए क्लर्क और चपरासी को एक-एक रुपया का नोट देता है पर दोनो उसे अपना मुँह विचकाकर वाहर जाने का सकेत करते है। क्लर्क और चपरासी सारे समय पैर टेवल पर फैलाए अँगड़ाइयाँ लेते रहते है।

दूसरे दृश्य मे नगरी का कोलाहलमय दृश्य गाडियो के हार्न, रिक्शा-साइकिल की घंटी, भोपू, जुलूस के नारे, फायर ब्रिगेड की घटी, पुलिस के सायरन सुनाई पडते हैं। यात्री ट्रैफिक के नियमो का उल्लघनकर फुटपाथ के नीचे वस का इन्तजार कर रहे है। मछलीवाले, कागज चुननेवाले, महिला यात्री, पुस्तक विक्रेता, मोची, धोवी आदि मच पर आते हैं। नायक सवको घूरता हुआ सिगरेट पीता है। इसी समय एक प्रोफेसर नायक के सामने आ जाता है। कुछ क्षण तक दोनो एक दूसरे को देखते रहते हैं। संकेत से दोनो एक दूसरे का कुशल जानना चाहते है। इस प्रकार शिशु, नवदम्पति, छात्राओ, पुस्तक विक्रेताओ, पागल व्यक्ति, मित्र, युवती आदि को देखकर मुखमुद्रा के द्वारा नायक के मनोभावो को प्रकट किया जाता है।

इसी प्रकार तीसरे अंक मे चित्रकार, प्रौढ सज्जन, अधेड पति-पत्नी, किशोर, शिशु आदि को देखकर नायक की मन स्थिति का चित्रण किया जाता है। चौथे दृश्य मे मित्र और मित्र के मित्र से मिलने पर नायक की मुस्कराहट, गम्भीर मुद्रा आदि के द्वारा मनोभावो का प्रदर्शन किया जाता है। वहुत दिनो पर मिलने के कारण मित्रो को पहचानने मे कठिनाई होती है। फिर पहचान लेने पर अतुल प्रसन्नता के भाव स्पष्ट होते है।

पाँचवे अक मे नायक की पत्नी महानगर के एक फ्लैट मे वैठी है। दीवार से लगी अलमारी मे कुछ पुस्तके, वुद्ध की प्रतिमा और पुराने किस्म का रेडियो है। पत्नी डाइनिंग टेवल की कुर्सी पर उदास वैठी प्रतीक्षा करती हुई स्वेटर वुन रही है। रात के साढे ग्यारह वजे हैं। नायक दवे कदमो कमरे मे प्रवेश करता है। नायक के चेहरे पर हीनता का भाव है। वह कमर पर हाथ रखने के वाद शून्य मे देखता हुआ लवी साँस लेता है। फिर पत्नी की वगल मे पलग पर सीधा लेट जाता है। कमरे मे रात भर सरोद का उदासी-भरा स्वर सुनाई पडता रहता है। सारी रात जागरण करता हुआ नायक अपनी मनोव्यथा को हावभाव से व्यक्त करता रहता है।

चोरधरा झुमुरा (सन् १६६८, पृ० १७), ले० माधव देव, प्र० हिन्दी विद्यापीठ, आगरा, *पात्र* पु० ६, स्त्री ३, *अक-दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल गोपियो का घर, राजमार्ग आदि ।

इस धार्मिक अकियानाट मे माखन-चोर कृष्ण को पकडकर गोपियाँ यशोदा के पास ले आती है ।

इस झुमुरा का प्रारभ सस्कृत भापा मे नान्दी से होता है। उसके वाद सूत्रधार सामाजिको को लोकहितैपी श्रीकृष्ण की चोर-चातुरी तथा गोपियो के साथ रचाई जानेवाली क्रीडा को देखने के लिए आमत्रित करता है। एक दिन कृष्ण एक गोपी का गृह जन-रिक्त देखकर नवनीत की चोरी करने के लिए घर मे घुस जाते है। गोपी घर लौटने पर कृष्ण की चोरी पकडती है, और बाहर से दरवाजा वन्द कर लेती है। थोडी देर मे अनेक गोपियाँ इकट्ठी हो जाती है, और कृष्ण को नवनीत खिला-खिलाकर खूब नचाती है जिससे कृष्ण को गृह लौटने मे देर हो जाती है। यशोदा मध्याह्न के समय व्याकुल होकर कृष्ण को चारो ओर ढूँढती है। एक गोपी आकर यशोदा से कृष्ण की चोरी की बात बताती है। इतने मे सभी गोपियाँ कृष्ण सहित यशोदा के पास आ जाती है। यशोदा कृष्ण को देखकर प्रसन्न होती है। फिर माता के मुख को देखकर कृष्ण रो-रोकर गोपियो का वृत्तान्त सुनाते है। कृष्ण के वचन को सुनकर यशोदा गोपियो की भर्त्सना करती है। गोपियाँ भी कृष्ण के नृत्य की बडी प्रशसा करती है। यशोदा भी कृष्ण को झाड-पोछकर स्नान कराती है भोजनोपरात उन्हे सुन्दर दिव्य परिधान पहनाकर परम आनन्दित होती है।

चौपट चपेट (सन् १८९२, पृ० ४२), ले० किशोरीलाल गोस्वामी, प्र० आर्य पुस्तकालय, आरा, *पात्र* पु० ६, स्त्री २, *अक* ५, *दृश्य-रहित* ।

यह एक प्रहसन है। इसमे पतिव्रता नारियो का पतितजनो से अपने सतीत्व की रक्षा करने का दृष्टान्त प्रस्तुत किया गया है। इसमे चपकलता वावू अभय कुमार की पतिव्रता पत्नी है जिसको अभय कुमार पतिता आचरण की समझकर त्याग देते है तथा वेश वदलकर चपकलता की परीक्षा करते है। मदन मोहन, छक्कूलाल, रजनीकान्त वकील तथा गुलफाम एक कामुक जुलाहा, चपकलता को वहुत चाहते है। एक दिन चपकलता अपनी बुद्धिमानी तथा दासी गुलाव की चतुरता से चारो दुष्टो को वारी-वारी से बुलाकर अपने घर मे छिपाती जाती है। जव अन्त मे रईस मदन मोहन आते है तो उनको भी अपना घोडा वनने को कहती है। जव वे प्रेम आतुर होकर चपकलता का घोडा वनते है तभी वैजूबावरा के वेश मे अभय कुमार आकर चारो को कठोर दड देते है। चारो अन्त मे अपने किये हुए का प्रायश्चित्त करते है और अभयकुमार अपनी निर्दोष पतिव्रता पत्नी की कार्य कुशलता पर प्रसन्न होते है।

छ

छठा बेटा (सन् १९४०, पृ० ११९) ले० उपेन्द्रनाथ अश्क, प्र० नीलाभ प्रकाशन इलाहावाद, *पात्र* पु० ७, स्त्री १, *दृश्य* ४।
घटना-स्थल वरामदा। इलाहाबाद म्योर हास्पिटल मे प्रदर्शित १९५१ मे ।

यह एक स्वप्न नाटक है, जो कि अश्क जी के अनुसार सत्य कथा पर आधारित है। वस्तुत यह एक पिता की आकाक्षा की कहानी है। इसकी पृष्ठभूमि मनोवैज्ञानिक तत्त्वो पर आधारित है। इसके माध्यम से नाट्यकार ने तत्कालीन समाज और सभ्यता के प्रति कटाक्ष किया है। बसतलाल अपने बेटो से

उपेक्षित होने के कारण अत्यन्त दु खी है। एक दिन वह स्वप्न मे लॉटरी से धनी वनने पर वेटो से आदर पाकर सुखी वनता है किन्तु धन समाप्त होने पर पुन उसके लडके उसकी उपेक्षा करते है। अव उसे अपना छठा वेटा स्मरण आता है जो वचपन मे घर से चला गया था। दु ख के समय वह आता है। स्वप्न भग होने पर खरीदा हुआ लॉटरी का टिकट पडा मिलता है।

छत्रपति शिवाजी या समर्थ रामदास (सन् १९४९, पृ० १००) ले० वेणीराम त्रिपाठी श्रीमाली, प्र० ठाकुरप्रसाद एण्ड सस, वुकसेलर, वाराणसी, *पात्र* पु० १६, स्त्री ६, अक ३, *दृश्य* ८, ८, ५।
घटना-स्थल नदी तट, पार्वत्य प्रदेश, जगल, चाफलग्राम, कुटी, मन्दिर, भवन।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है जिसमे शिवाजी के साहस, शौर्य और देशप्रेम का चित्रण है। औरगजेब से शिवाजी की टकराहट तथा उसे चकमा देकर वन्दीगृह से मुक्त होना और अन्त तक कब्जे मे न आना शिवाजी के वुद्धि-चातुर्य का सुन्दर रूप प्रस्तुत करता है।

शाहजी और जीजावाई सन्तान के अभाव मे दु खी होकर समर्थ गुरु रामदास के पास जाते है। समर्थ जीजावाई को आशीर्वाद देते है—"तुम क्षत्राणी हो, सिहनी की कोख से शेर ही पैदा होगा।" शिवाजी वाल्यकाल से ही श्रद्धापूर्वक तुलजा भवानी के मदिर मे पूजन-अर्जन करते है। एक दिन स्तुति करते हुए कहते है—"विश्वेश्वरी! हिंदू जाति और हिंदू धर्म की ऑखे तेरी ओर लगी हुई है। जगदम्विके! हिन्दू जाति पर अपने अभय वरदहस्त की छत्रछाया कर! जिससे मै धर्म और देश की रक्षा कर सकूँ।" भवानी अपनी करवाल देती है। इधर समर्थ के प्रयास से पूना के मठ मे चार हजार साधु शिक्षा प्राप्तकर दक्षिण भारत की हिन्दू जनता मे प्रचार कार्य करते है। उत्तर भारत मे प्रचार करनेवाले ५०० साधुओ मे ५ पकड लिये जाते है। समर्थ एक पत्र देकर प्रिय शिष्य कल्याण स्वामी को शिवाजी के पास भेजते है। शिवाजी किसी प्रकार औरगजेव के जुल्म से हिन्दुओ की रक्षा का उपाय सोचते है। इतने मे ही औरगजेव शिवाजी को किसी प्रकार भुलावा देकर वुलाने का कार्य जयसिह को सौपता है। इधर शिवाजी समर्थ का आशीर्वाद प्राप्तकर उनकी चरण-पादुका सिहासन पर रखते है। समर्थ हिन्दू राष्ट्रपति, हिन्दू धर्म की जयजयकार वोलते है। उनके आशीर्वाद के साथ औरगजेव के निमत्रण और जयसिह के आश्वासन पर शिवाजी औरगजेव के दरवार मे पहुँचते है। वहाॅ जाने पर औरँगजेव का कपट व्यवहार देखकर वीमारी का वहाना वनाते है और दान रूप मे भिखारियो को वॉटने के लिए तैयार टोकरे मे वैठकर औरँगजेव के वन्दीगृह से मुक्त हो मथुरा पहुँचते है। मन्दिर मे दर्शन करते है। वही उनके सेनापति मिल जाते है। दोनो तीर्थाटन करते हुए समर्थ गुरु रामदास के पास पहुँच जाते है। दोनो के प्रयास से सव मठाधीश हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए कटिवद्ध हो जाते है।

मूल कथा के साथ प्रत्येक अक मे एक स्वतंत्र कथा पारसी नाटको की शैली पर हास्य उत्पन्न करने के लिए लिखी गई है। जैसे प्रथम अक के तृतीय दृश्य मे ककण, कुडल, कन्दुक, उद्धव का वार्तालाप है। एक स्थान पर कदुक गरुड पुराण का उद्धरण देता है—

प्रथमा वस वुद्धिश्च
चर्म वुद्धिस्तु दूसरी।
तृतीया पद्य वुद्धि है
यो जानाति स पडित॥

इसका अभिनय श्री शिवराम नाट्य परिषद गायघाट काशी द्वारा सन् १९४८ मे हुआ। दर्शको मे पराडकर जी, कमलापति त्रिपाठी, गर्देजी, रामनारायण मिश्र आदि प्रमुख साहित्यकार थे।

छत्रपति शिवाजी (सन् १९५८), ले० वीरेन्द्रकुमार मिश्र, *पात्र* सुषमा पुस्तकालय, दिल्ली, *पात्र* पु० १५, स्त्री ५, अक ४, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल जगल, नदीतट, पर्वत-प्रदेश, दुर्ग।

यह सामाजिक नाटक शिवाजी के जीवन

का दिग्दर्शन कराता है। शिवाजी शाहजी की परित्यक्ता धर्मपत्नी जीजाबाई की एकमात्र सन्तान है। वीरागना जीजाबाई अपने पुत्र को बचपन मे ही रामायण, महाभारत एव वीरो की कथाएँ सुनाकर निर्भीक, साहसी और वीर बनाती है। दादा कोणदेव शिवाजी को शस्त्रास्त्र तथा युद्ध की शिक्षा देते है। माता के सकेत मात्र से किशोर शिवा तोरण दुर्ग को जीतकर बीजापुर के सुलतान को पराजित करते है। शाइस्ताखा की अँगुलियाँ काटकर उसे भगा देते है। जयसिंह से सधि करके शिवाजी औरँगजेब के दरबार मे पहुँचते है लेकिन उचित सम्मान न मिलने पर वे क्रुद्ध होकर भरे दरबार से चले आते है। औरँगजेब शिवाजी और उनके पुत्र शभाजी को आगरे मे बन्दी बनाता है। शिवाजी अपने बुद्धि-चातुर्य से औरँगजेब के फन्दे से निकल जाते है, और साधुवेश मे पूना पहुँचकर माता जीजाबाई के चरणो मे प्रणाम करते है। शिवाजी अपने बाहुबल एव बुद्धिबल से मुगलो को पराजित कर सुदृढ साम्राज्य की स्थापना करते है।

छत्रसाल (सन् १९५४, पृ० ११४) ले०. आचार्य चतुरसेन, प्र० अतरचन्द कपूर एण्ड सन्ज, देहली, *पात्र* पु० ११, स्त्री ६, अक ५।
घटना-स्थल आगरा का दुर्ग, ओरछा का महल।

प्रस्तुत नाटक का कथानक महाराष्ट्र के प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यासकार बालचन्द नानकचन्द शाह के इसी नाम के मराठी उपन्यास के आधार पर लिखा गया है। नाटक मे औरगजेब के लडखडाते मुगल साम्राज्य के विरुद्ध बुन्देला वीर चम्पतराय और उनके वीर पुत्र छत्रसाल के साहस, आत्म-त्याग और क्षत्रियोचित गुणो का चित्रण किया गया है।

ओरछा की महारानी हीरादेवी के षड्यन्त्र से बचपन के मित्र सागर के राजा शुभकरण और महोबा के अधिपति चम्पतराय मे शत्रुता का भाव उदय होता है और शुभकरण चम्पतराय को नष्ट करने के लिये अपने देश, गौरव और आत्मा तक को बेच डालता है। यवनो को मित्र बनाता है परन्तु उसकी आत्मा सदा उसे धिक्कारती रहती है। अत हीरादेवी द्वारा उत्पन्न किये गये भ्रम के दूर होते ही वह छत्रसाल का साथ देकर बुन्देलखण्ड को यवनो से मुक्त करने के अनुष्ठान मे भाग लेता है। इस पवित्र कार्य मे अन्य सहायक है, प्राणनाथ प्रभु नामक महात्मा, सागर के राजकुमार दलपतिराय, ढाढेर की राजकुमारी विजया, औरँगजेब की पुत्री बदरून्निसा। नाटक मे अनेक प्रासगिक कथाये आ गई है जैसे चम्पतराय और औरँगजेब के वध के षड्यन्त्र पर ठीक मौके पर रहस्य खुल जाने के कारण उनकी रक्षा, छत्रसाल और शिवाजी की भेट, रोशनारा का प्रभावशाली व्यक्तित्व और मुगलराज्य का अधिपति होने की महत्त्वाकाक्षा, हीरा देवी का अपने को पुत्रवती सिद्ध करने के लिये अपनी पुत्री को विमलदेव नामक पुत्र के रूप मे प्रसिद्ध करना, कचुकिराय की दास वृत्ति, बदरून्निसा और दलपतिराय का प्रेम आदि।

छद्म योगिनी (वि० १९७९, पृ० ५८) ले० वियोगी हरि, हरिप्रसाद द्विवेदी, प्र० प्रयाग साहित्य भवन, *पात्र* पु० ५, स्त्री ६, *अक*, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल. गोकुल, बरसाना, वृन्दावन।

इस पौराणिक नाटक मे कृष्ण को छद्म योगिनी और राधा को योग-शिक्षक के रूप मे प्रस्तुत किया गया है। प्रेमलक्षणा भक्ति और योगसाधना की व्याख्या सुनने के लिए नारद और शुकदेव भी शुकसारिका के रूप मे व्रज आते है। राधा व्रजभूमि की सर्वेश्वरी है, विशाला, ललिता, मालती और माधवी आदि राधिका जी की सहेलियाँ है। श्रीकृष्ण जी छद्मवेशधारी योगिनी बनकर श्री राधा जी को प्रेम की सासारिकता के स्थान पर ज्ञानपूर्ण योग की शिक्षा देते है और उन्हे योग स्वीकार करने के लिये प्रेरित करते है।

इस नाटक की नायिका राधा कृष्ण को सम्पूर्ण प्रेम-तत्त्व की व्याख्या करती हुई उत्तर देती है—मै आपका वेदान्त नही समझती। सीधी-सादी बात कहिए, क्या योगा—

भ्यास से प्रेमस्वरूप वृन्दावन विहारी की प्राप्ति हो सकती है। मुक्ति के आगे भी कुछ है और वह यही मिलन सुख है। वैराग्य ही जीवन लक्ष्य नही है, उसके आगे अनुराग है। इसी प्रकार संसार से मुक्त होकर मुक्ति से भी मुक्त होना पडता है और यह अवस्था निष्काम प्रेम द्वारा ही प्राप्त हो सकती है, योग द्वारा नही।

इस नाटक मे नाटककार प्रेमलक्षणा भक्ति के स्वरूप को ही दृष्टि मे रखता है। भक्तो को प्रभु की रूप-माधुरी का पान योग की साधना से अधिक प्रिय है। भक्त के लिए मुक्ति काम्य नही, वह तो वार-वार जन्म लेकर प्रभु के दर्शन से अपने तृषित नेत्रो की तृप्ति चाहता है। उसका प्रेम निष्काम है। भक्त अपने इप्टदेव से कुछ पाना नही चाहता; उसे मोक्ष की चाह नहीं वह तो अपने इप्ट की रूपमाधुरी से छके रहने का अभिलाषी होता है। श्री राधा जी अपने उसी आराध्य वृन्दावन विहारी का परिचय देती है—
योगेश्वर नद-नंदन मुक्ति है, मैं जिनकी दासी हू।

भ्रमर का भी नाटक मे उल्लेख है और उसके द्वारा भी प्रेमलक्षणा भक्ति की महत्ता प्रदर्शित की गई है।

छलना (सन् १६३६, पृ० १२१) ले० भगवतीप्रसाद वाजपेयी, प्र० . राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, *पात्र* · पु० ५, स्त्री ६ *अक* . ३, *दृश्य* · ५, ६, ६;
घटना-स्थल जमीदार का घर।

इस प्रतीक नाटक मे सामाजिक रंगीनी, भ्रष्टाचार और सभ्यता के आवरण मे ढके हुए मन्त्री, नेता, सदस्य, वकील तथा सम्पादक आदि का चित्रण करने के उद्देश्य से मानव प्रवृत्तियो को पात्र वनाया गया है। इस नाटक की नायिका छलना परिस्थिति से असन्तुष्ट रहने पर भी पति के धनी शिष्य विलासचन्द्र के द्वारा दी गई साडी को अस्वीकार कर देती है। वह जानती है कि गरीवी के कारण मन की वहुतेरी संकुचित किन्तु प्रकृत भावनाएँ उभर-उभरकर साकार होती हैं तिस पर भी वह अपने पति को अधिक धन अर्जित करने के लिये परेशान करती रहती है। अंततः वह अधिक धन कमाने की दृप्टि से वम्वई चला जाता है। इसी अवसर के वीच एक दिन कल्पना कामना नामक युवती को आदर्श का पाठ पढाती है। एक नए समाज मे नई तरह की शिक्षित नारियो के सस्थान की वात करती है। फिर एक दिन कामना वलराज नामक युवक को लेकर आती है। इस समय तक विलास आत्म-हत्या कर चुका होता है। वलराज कहता है कि मनुप्य की आत्मा के साथ विलास का कुछ ऐसा ही सम्वन्ध है कि आदर्श का साक्षात्कार होते ही वह अन्तर्धान हो जाता है। यही इस नाटक का अभीप्ट भी है।

छलावा (सन् १६६१, पृ० १०४) ले० : परितोप गार्गी, प्र० : आत्माराम एंड संस दिल्ली, *पात्र* . पु० ८, स्त्री ५; *अक* ३।

एक सम्पन्न जमीदार के दो वेटे कालू और लालू है। लालू अपनी प्रेमिका वेला अध्यापिका से विवाह अस्वीकारकर अजला नामक एक धनी परिवार की लडकी से विवाह करता है। विवाह के दिन वेला भी आती है और विप खाकर मर जाती है। तव अजला को उसकी मरी हुई आत्मा सताती है। वेला की हत्या के वाद कुछ लोग उसकी सूचना पुलिस को दे देते है। पुलिस लालू पर वेला की मृत्यु का अपराध लगाती है किन्तु अजला के वुद्धि-चातुर्य से लालू वच जाता है। अजला वेला के सभी प्रेम-पत्रो को अपना वताकर अपने पति की रक्षा करती है। अजला के इस अनोखे साहस को देखकर लालू को अपनी गलती याद आती है और वह अजला को देवी के समान आदर की दृप्टि से देखने लगता है।

अभिनय—अनामिका द्वारा १६६४ मे प्रदर्शित सर्वप्रथम ऑल इण्डिया फाइन आर्टस एण्ड क्राफ्ट सोसायटी हाल मे इण्डियन नेशनल थियेटर्स के कलाकारो द्वारा प्रदर्शित।

छात्र-दुर्दशा (सन् १६१५, पृ० ५५), ले० : पाण्डेय लोचनप्रसाद शर्मा; प्र० : हरिदास वैद्य, २०६, हरीमन रोड, कलकत्ता; *पात्र:* पु० १६, स्त्री १४; *अक रहित*।
घटना-स्थल : रगमच, लम्वा चौड़ा मकान

कुर्सी टेबल से सजा हुआ कमरा, सभा ।

नाटककार अपने वक्तव्य मे लिखते है कि यह बङ्ग-भङ्ग के समय लिखी गयी थी, इस पुस्तिका मे देश-दशा चित्रण का यत्-किंचित् प्रयत्न किया गया है ।

नाटक शुद्ध भारतेन्दुयुगीन शैली पर आधारित है। प्रारम्भ मे प्रस्तावना दी गई है जिसमे रगशाला मे नान्दी का मगल-पाठ होता है। तत्पश्चात् सूत्रधार एव नटी का प्रवेश होता है। नाट्यकार की नाम-घोषणा के बाद उनका यशगान होता है तब नाटक की घोषणा की जाती है । पहले दृश्य मे आकाशमार्ग मे सरस्वती का गान होता है—यह गीत प्रेमघन रचित 'भारत सौभाग्य' नाटक से उद्धृत है (तजत होत सोच तुम्है भारत के वासी) । दूसरे दृश्य मे भारत-वर्ष के छात्रो का प्रतिनिधि साही कमर मे धोती, सिर मे फेटा और बदन पर पतली चादर डाले दिखाई पडता है, और भारत-दुर्दशा का गीत गाता हुआ वह मूर्छित हो जाता है। तत्पश्चात् आशा का प्रवेश 'जगत् का आशा जीवन प्राण' गाते हुए होता है। प्रतिनिधि चौककर जाग उठता है। तदु-परान्त क्रमश आत्म-सम्मान एव कर्तव्य का प्रवेश होता है और वे अपना-अपना सदेश सुनाते है। तीसरे दृश्य मे एक लम्बे-चौडे मकान मे छात्र-प्रतिनिधि का 'भारतोद्धार महती सभा' मे भाषण होता है। भारत की दुर्दशा का वर्णनकर वे भारतोद्धार के लिए कटिबद्ध होते है। परन्तु बुर्जुआ लोग उनके राह मे रोडे अटकाते है। इसके अतिरिक्त तत्कालीन छात्र की व्यक्तिगत एव पारिवारिक समस्याओ का चित्रण भी नाटक का विषय है। श्याम एक जागरूक छात्र है तथा एम० ए० की तैयारी कर रहा है। धोके से उसे घर बुलाया जाता है और जबर्दस्ती उसकी शादी कर दी जाती है। शादी मे अपव्यय का वह विरोध करता है परन्तु उसकी एक नही चलती। अन्तत वह अपनी पढाई जारी रखना चाहता है परन्तु पत्नी हीरामती व्यव-धान करती है और श्याम के न ध्यान देने पर कुएँ मे कूद जाती है—कलक के डर से वह स्वय भी कुएँ मे कूद जाता है। परन्तु वे दोनो निकाल लिये जाते है। श्याम करुण स्वर से कहता है—"मात-पिता बैरी अब तो भये।"

छाया (सन् १९५५) ले० पारितोष गार्गी, प्र० आत्माराम एण्ड सस, दिल्ली, अक : ४, दृश्य रहित ।
घटना-स्थल सेठ की कोठी ।
अभिनय—दिल्ली मे प्रकाशन के समय ।

इस सामाजिक नाटक मे नवविवाहिता स्त्री के घर आने पर व्यापार मे घाटा तथा गृह की अन्य मुसीबतो का कारण उसका आगमन बतानेवालो की भूल दिखाई गई है।

काशीराम एक सम्पन्न व्यापारी है। उनके बेटे हस का विवाह छाया नामक लडकी से होता है किन्तु जब से छाया उस घर मे आती है काशीराम को अपने सट्टे मे ६० हजार का घाटा होता है और हस का छोटा भाई दौलतराम छत से गिरकर मर जाता है। सब लोग छाया को मनहूस कहते है क्योकि जब से इसकी छाया घर पर पडी तब से हम पर सकट आने लगे ।

अन्त मे परेशान हो छाया अपने पति हस के साथ घर छोड देती है। इधर काशी-राम का मुनीम भी रुपया लेकर भाग जाता है तब काशीराम को बडा कष्ट होता है। लेनदार उससे रुपया माँगते है। अन्त मे काशीराम भी परेशान होकर भाग जाता है। अपने पुत्र हस और छाया से मिलकर पश्चा-त्ताप करते हुए कहता है कि छाया तुम मन-हूस नही हो वरन सट्टे और आदमी का कोई भरोसा नही। फिर सब मिलकर प्रेम से मेहनत करते हुए जीवन व्यतीत करने लगते है।

छाया (सन् १९४१, पृ० ८३) ले० हरि-कृष्ण प्रेमी, प्र० वाणी मदिर, लाहौर, *पात्र* पु० ७, स्त्री ४, अक ३, दृश्य ५, ५, ५।
घटना-स्थल नूरजहाँ का मकबरा, कुज, घर, झोपडी, मैदान,

प्रस्तुत नाटक भारतीय साहित्यकार के जीवन की विषमता और प्रकाशको की शोषक वृत्ति पर कटु व्यग्य है।

नाटक का नायक प्रकाश एक

विख्यात कवि है जो अपने गीतो द्वारा ससार को प्रकाश देता है परन्तु जिसके अपने जीवन मे निपट निराशा का अन्धकार है। एक ओर शोषक प्रकाशक उसकी कृतियों से लखपति बन उसे अपनी दया का भिखारी बना डालते हे दूसरी ओर उसके साहित्यकार मित्र ईर्ष्यावश उसका चरित्र कलकित कर स्वय आगे बढने का प्रयास करते है। परन्तु भावुक तथा सहृदय प्रकाश असहाय एव उत्पीडित नारियो को सम्बल प्रदान करने के लिए लाछन सहता है, समाज मे अनादृत होता है पर अपना कर्तव्य-पथ नही त्यागता। इसमे पत्नी छाया सदा उसकी सहायता करती है। वह न केवल दैन्य और दरिद्रता के कष्टो के बीच अपनी पुत्री का पालन करती है अपितु पति के मित्रो द्वारा पति के विरुद्ध लगाये लांछनो पर भी विश्वास नही करती। अन्त मे सत्य की असत्य पर विजय होती है।

ज

जंगल की रानी (सन् १९६१, पृ० ५०), ले० मूलचंद 'बेताब', प्र० जवाहर बुक डिपो, गुजरी बाजार, मेरठ, *पात्र* पु० १३, स्त्री ४, *अक-रहित*, *दृश्य* ८।
घटना-स्थल . राजदरबार, शमीमपुर गाँव, आरामगाह, रतीराम का मकान, सुनसान जगल, राजमहल, दाने का मकान।

इस सामाजिक नाटक मे दहेज की कुप्रथा और प्रेम विवाह का वर्णन है।

शमीमपुर के गरीब किसान की बेटी कान्ता जगल के किनारे अपने खेतो की रखवाली करने जाया करती है। दहेज के कारण उसका विवाह नही हो रहा था। एक दिन रणपुर शहर का राजा हिरण का पीछा करता हुआ कान्ता के खेतो के समीप पहुँचता है। हिरण कान्ता के खेत मे घुस जाता है। राजा उसे मारना चाहता है, लेकिन कान्ता इसका विरोध करती है। इस पर राजा और कान्ता मे वाद-विवाद हो जाता है। राजा कहता है—"मैं शहर का राजा हूँ" और कान्ता कहती है —"मैं जगल की रानी हू।" राजा कहता है "मैं तुमसे शादी करूँगा" और कान्ता कहती है "मैं तुमसे दाना दलवाऊँगी।"

राजा कान्ता से शादी करके उसे जगल मे छोड देता है और कहता है कि जब तक तुम मुझसे दाना न दलवाओगी तब तक तुम्हे घर न ले जाऊँगा। युक्ति से कान्ता अपना प्रण पूरा करती है। और राजा की पटरानी बन जाती है।

जंगल घर : बादशाह स्वर्गीय महाराज। कर्ण सिह जी बीकानेर, (सन् १९२४, पृ० १४३), ले० पं० रामदीन पाराशर; प्र० स्टैंडर्ड प्रेस, इलाहाबाद; *पात्र* : पु० २१ स्त्री ३; *अक* ५, *दृश्य* · २, ३, ३, ३, ३।
घटना-स्थल . बीकानेर, राजदरबार, लाहौर, शाही दरबार।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है जिसमें बीकानेर महाराज की दृढता से हिन्दुत्व की रक्षा दिखाई गई है।

इस नाटक के नायक महाराज कर्ण सिह बीकानेर के राजा हैं। जब औरँगजेब के भाइयो मे सत्ता-सघर्ष होता है तो वह अपने दो बेटो सहित औरँगजेब का साथ देते हे और उसकी जान बचाते हैं। औरँगजेब सभी हिन्दू राजाओ को एक स्थान पर धोखे मे मुसलमान बनाने के लिए बुलाता है। किसी तरह कर्ण सिह को यह बात मालूम हो जाती है और वे सब राजाओ सहित वापस आ जाते है। इस पर औरँगजेब क्रोधित होता है परन्तु वह दृढ रहते है। अत मे औरँगजेब प्रसन्न होकर उन्हे औरगाबाद मे तैनात कर देता है। वहा कर्ण सिह ने मन्दिर बनवाये और तीन गाँव अपने व दोनो बेटो के नाम पर बसाये। औरगाबाद मे ही उनका निधन हुआ।

जंगली घास (सन् १९७३), ले० रेवतीसरन शर्मा; प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, *पात्र:* पु० ५ स्त्री ५, अक ३, दृश्य . २, २, २।

प्रस्तुत नाटक मे समाज की कई सम-सामयिक समस्याओ की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है किन्तु दहेज की समस्या ही केन्द्रीय समस्या के रूप मे प्रस्तुत की गई है। सुरेन्द्र एक ईमानदार क्लर्क है जिसकी आय सीमित है उसके साथियो की पदोन्नति भ्रष्ट तरीके अपनाने के कारण हो गई है किन्तु सुरेन्द्र की कोई पदोन्नति नही होती। उसकी चार कन्याएँ है जिनके विवाह की समस्या को लेकर उसकी पत्नी शाता परेशान रहती है। शाता भी मूलत. सदगुणोवाली नारी है गलत तरीको से कुछ भी प्राप्त करना उसे अभीष्ट नही। आर्थिक परेशानी से तंग आकर अथवा अपने सुदर सपनों को फलीभूत होता न देखकर वह कभी-कभी अपने पति से भी गलत कमाई करने को कहती है किन्तु शीघ्र ही उसकी आत्मा की सत्पुकार इस विचार को कार्य रूप मे परिणत करने देने से सदा रोकती है। विपन्न स्थिति की टकराहट से वह पर्याप्त चिडचिडी हो जाती है और अकारण अपनी बेटियो और अपने पति पर झल्लाती है। इस प्रकार उसके चरित्र और पारिवारिक जीवन की घटनाओ के सघात से नाटक की कथावस्तु विकसित होती है। विपत्तियो से टक्कर लेने की प्रेरणा है, उससे विद्रोह करने का भाव नही है।

जईफे हिर्स (वि० १९८०, पृ० ९८), ले० . लाला नत्थोमल जी, प्र० · श्याम काशी प्रेस, मथुरा, पात्र पु० ८, स्त्री ४, अक : ३, दृश्य · ५, ४, ९।
घटना-स्थल वाग, गुरु की मढी, मकान, कोतवाली, जगल, नदीतट, शहर, फॉसीघर।

इस सामाजिक नाटक मे वृद्ध व्यक्ति के पुर्नविवाह का दुष्परिणाम दिखाया गया है। सेठ कुन्दनलाल अपनी प्रथम पत्नी की मृत्यु के उपरान्त पुत्र और पुत्रवधू के वर्जन करने पर भी नही मानता और लोभीचन्द की पुत्री कस्तूरी के साथ मन्नू भगेडी की मदद से ७ हजार रुपये देकर शादी कर लेता है। कस्तूरी बूढे कुन्दनलाल से घृणा करती है और छबीला नौकर के साथ भाग जाती है। कुदनलाल लोक निंदा से दुःखी होकर मर जाता है कई बार छबीला कस्तूरी को तग करता है तो कस्तूरी उसकी अनुपस्थिति मे गुलरु नवयुवक से मुहब्बत करने लगती है, जिससे छबीला कस्तूरी की हत्या कर देता है और पुलिस उसे गिरफ्तार कर लेती है। अन्त मे जल्लाद गले मे फन्दा डालकर तख्ता हटाते है, और छबीला तडप-तडपकर मर जाता है।

जख्मी हिन्दू (सन् १९३५, पृ० ११०), ले० : विशनचन्द जेबा, प्र० . नेशनल बुक डिपो, नई सडक, दिल्ली, पात्र पु० २५, स्त्री ७; अक · ३ *सीन :* ६, ३, २।
घटना-स्थल : बदीगृह, वेश्यागृह।

इस राष्ट्रीय नाटक मे हिन्दू सगठन पर बल दिया गया है।

महात्मा गाधी के उपवास की एक घटना को आधार बनाकर यह नाटक लिखा गया है। कोहाट, मुल्तान, सहारनपुर मे हिन्दुओं की बडी दुर्दशा हो रही है। महात्माजी हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य के लिए बदीगृह मे उपवास करते है और भारत की एकता को मनाते हुए कह रहे है—"ठहरो देवी, मत जाओ। मै नही जाने दूँगा। तू मुझे छोड दे किन्तु मै तेरी शरण को नही छोड़ सकता।" महात्मा जी बन्दीगृह से बाहर आने पर हिन्दुओ को उनके दोष समझाते है। पजाबी नेता हीरो गाधी जी से हिन्दू सगठन पर जोर देता है किन्तु गाधी जी समझाते है कि आर्य और अनार्य दोनो का समान अधिकार है।

इस नाटक मे हिन्दुओ मे व्याप्त कुरीतियो पर विचार किया गया है। महात्मा के उपवास के अन्तिम दिन यमराज और कृष्ण का दर्शन होता है। कृष्ण महात्मा को यह सदेश सुनाकर चले जाते है—"यदि आर्य ऊँच-नीच, उत्तम-निपिद्ध का भेद-भाव छोड कर एक नही हो जायेगे तो भारत से आर्य जाति का नाश हो जायगा।"

दूसरी कथा फातिमा और जयन्ती की है। जयन्ती के पति वेश्यागामी है। ऊपर से पवित्रता का ढोग करते है। इस प्रकार

हिन्दुओ की दुर्बलता से लाभ उठाकर मौलवी हिन्दू लडको को मुसलमान बना लेते है। एक हिन्दू बालक मुसलमान बनने को तैयार नही होता तो उसे तलवार के घाट उतारा जाता है। वह लडका मरते-मरते कहता है 'रक्षा! प्रभो रक्षा!' नाटक के अन्त मे प्रत्येक हिन्दू सगठन के प्रधान कार्यकर्त्ता एकत्र होकर हिन्दू महामडल की स्थापना करते है, जिसमे अछूत वर्ग के लोग सम्मिलित होते है।

जगद्गुरु (सन् १९५८, पृ० १३६), ले० : लक्ष्मीनारायण मिश्र, प्र० . कौशाम्बी प्रकाशन, इलाहाबाद; पात्र . पु० १०, स्त्री २, *अक* . ३, *दृश्य* १, १, १।
घटना-स्थल : माहिष्मती नगरी, कालडी ग्राम।

इस जीवनीपरक नाटक मे जगद्गुरु शकराचार्य के जीवन और कृतित्व तथा देश की तत्कालीन धार्मिक और सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। नाटक का प्रारम्भ महिष्मती नगरी के यशस्वी मीमासक मण्डन मिश्र, उनकी विदुषी पत्नी और पुत्र के सुखमय पारिवारिक जीवन की झाकी स होता है। उनकी दृष्टि मे प्रवृत्ति मार्ग, कर्ममय जीवन ही जीवन को सार्थक बनाता है न कि शंकराचार्य का सन्यास। उधर शकराचार्य प्रयाग के कुमारिल भट्ट को शास्त्रार्थ मे पराजित कर मण्डन मिश्र से तर्क करने महिष्मती आते है। उनका भव्य स्वागत होता है, और मण्डन की पत्नी भारती को शास्त्रार्थ का निर्णायक मान उन दोनो विद्वानो मे शास्त्रार्थ प्रारम्भ होता है। निर्णय मे कठिनाई अनुभवकर भारती दो पुष्पमालाएँ दोनो के कण्ठ मे डाल देती है और कहती है कि जिसकी माला सूख जाएगी वही पराजित माना जाएगा। शकर के एक प्रश्न का उत्तर न सूझने पर मण्डन मिश्र विचार के लिए कुछ समय चाहते है, तुरन्त ही उनका पुष्पहार मुर्झा जाता है और उन्हे पराजय स्वीकार करनी पडती है। परन्तु वहाँ उनकी पूर्ण पराजय नही होती। उनकी पत्नी को जब तक शकराचार्य पराभूत न कर दे, तब तक वह विजय अधूरी ही रहेगी। यह कहकर भारती शकर को चुनौती देती है। शकर के चुनौती स्वीकार करने पर, वह उनसे कामशास्त्र सबधी प्रश्न करती हैं, जिसका उत्तर बालब्रह्मचारी होने के कारण शंकर नही दे पाते। उसका उत्तर देने के लिए वह समय चाहते है जिससे परकायप्रवेश द्वारा कामशास्त्र का ज्ञान लाभ कर उत्तर देने मे समर्थ हो सके। भारती उनका प्रस्ताव स्वीकारकर उनकी पराजय को विजय मे परिणत करने की उदारता दिखाती है। नाटक के अन्तिम अक मे शकर की माता की मृत्यु, उस अवसर पर शकर का अपने दिए वचन के अनुसार पहुँचना, कुटुम्बियो द्वारा पहले उपेक्षा परन्तु अन्त मे उनका अनुगामी बनना, केरल के राजा की सहायता से भारत के चारो कोनो मे चार मठ स्थापित करना आदि घटनाओ का चित्रण है। नाटक मे जनश्रुति के आधार पर कुछ दैवी चमत्कार जैसे, सर्प का बिना आघात पहुँचाए शकर के दाए से निकल जाना, परकाया प्रवेश द्वारा भोगविलास, नारद कुड के अगाध जल मे से मूर्ति निकालना आदि का प्रयोग भी किया गया है।

जनक-नन्दिनी (सन् १९२५, पृ० १५५), ले० : प० तुलसीदत्त शैदा; प्र० · श्री व्यास साहित्य मदिर, यार लेन, कलकत्ता, *पात्र* पु० १०, स्त्री ६, *अक* : ३, *दृश्य* ६, ६, ४।
घटना-स्थल जनकपुरी, राजमहल, वन, आश्रम आदि।

इस धार्मिक नाटक मे सीता की चरित्रगत विशेषता दिखाई गई है।

इसमे जनक-नन्दिनी सीता के चरित्र पर प्रकाश डाला गया है। प्रारम्भ मे लोभ, मोह आदि पात्रो का प्रवेश होने से नाटक मे नवीनता आ गई है। इसमे सीता जी के जीवन की मुख्य घटनाओ का ही उल्लेख है। सीतात्याग, लवकुश जन्म, सीता जी की पाताल प्रवेश तक की घटना इसमे सम्मिलित है।

जनक-बाग-दर्शन (सन् १९०६, पृ० १६), ले० प० रामनारायण मिश्र काव्यतीर्थ; प्र० खड्गविलास प्रेस—बाँकीपुर, पटना मे बाबू रामरणविजय सिंह द्वारा प्रकाशित;

पात्र . पु० ४, स्त्री ३, *अक* १, *दृश्य* ५। *घटना-स्थल* जनकपुर, राजभवन, वाटिका, गिरजा मन्दिर।

रामचरित मानस के पुष्पवाटिका प्रसग को नाटक का रूप दिया गया है। इस नाटक मे जनक-वाटिका के सौन्दर्य का भगवान राम-लक्ष्मण द्वारा वर्णन मिलता है। सखियो द्वारा राम और लक्ष्मण के सौन्दर्य पर प्रकाश डाला गया है। इसमे सवैया एव कवित्त का भी प्रयोग है।

जनकवि जगनिक (सन् १९५७, पृ० १२३), ले० कुँवर चन्द्रप्रकाश सिह, प्र० : सेवा प्रकाशन, लखनऊ, *पात्र* : पु० २४, स्त्री ४, *अक* ५, *दृश्य* ४, ७, ४, ३, २। *घटना-स्थल* महोवा का महल, रिजगिरि मे आल्हाऊदल का भवन, रणभूमि, दिल्ली मे चद का भवन, कालिजर।

इस जीवनीपरक नाटक मे जनकवि का देश रक्षा का प्रयास दिखाया गया है।

जनता की पुकार एव सत्य को काव्य-बद्ध करना ही जगनिक का एकमात्र धर्म है। महोबे के लोग दिल्लीपति पृथ्वीराज के आक्रमण से तग आ गए है। जगनिक इस स्थिति को देखकर बडे चिन्तित होते है। वे चन्द कवि की सहायता से इस आक्रमण को टालना चाहते है, किन्तु भारतीयो के भाग्य-हीन होने के कारण वे अपने प्रयास मे अस-मर्थ रहते है। इसी समय कन्नौज से आल्हा-ऊदल को बुलाने की वजह से युद्ध कुछ दिन के लिए स्थगित हो जाता है। आल्हा, ऊदल महोबे से बडे चिढे हुए है क्योकि उनकी इस जन्म भूमि मे उनका पूरी तरह से तिरस्कार हो चुका है। परन्तु जगनिक की भावमयी कविता को सुनकर वे महोबे के लिए तैयार हो जाते है। इधर पृथ्वीराज पर इसी बीच मुहम्मद गोरी के द्वारा आक्रमण होता है। उससे निबटने के बाद महोबे के साथ युद्ध होता है। जिसमे वडा नरसहार होता है। जनकवि जगनिक युद्ध को टालने का पूरा प्रयास करते है परन्तु असमर्थ रहते है। वे चाहते है कि सब छोटे-छोटे भारतीय राज्य एक साथ मिलकर विदेशी आक्रमणो से टक्कर ले पर आपसी फूट के कारण ऐसा सभव न हो सका। गजनी मे गोरी को मार-कर चद और पृथ्वीराज आत्महत्या कर लेते है।

जनगण अधिनायक (सन् १९६१, पृष्ठ ११२), ले० . समर सरकार, प्र० हिन्दी प्रचारक सस्थान, वाराणसी, *पात्र* . पु० २७, स्त्री ७, *अक* ४, *दृश्य* . ५, २, ४, ३। *घटना-स्थल* बर्मा स्थित रगून मे आजाद हिन्द फौज का सदर दफ्तर।

इस राजनीतिक नाटक मे सुभाषचन्द्र बोस के प्रवासी जीवन का एक पहलू चित्रित किया गया है। नेता जी भारत मे अग्रेज सरकार के चगुल से निकलकर जर्मनी पहुँच जाते है। जर्मनी मे हिटलर तथा मार्शल गोयरिंग इनका भव्य स्वागत करते है। हिटलर नेता जी को चालीस करोड भारतीयों का नेता घोषित करते है। नेताजी को भारतीय स्वाधीनता सघ को नेतृत्व ग्रहण करने के के लिए सिगापुर आना पडता है। सिगापुर मे जापान के जनरल तोजो से अण्डमान और निकोबार द्वीपसमूह की माँग करते है जिसे जापान की सरकार स्वीकार कर लेती है।

इसके पश्चात् नेता जी बर्मा मे सैनिकों को युद्ध के लिए तैयार करते है। सैनिक कोहिमा पर अधिकार कर लेते है लेकिन हाल मे भारी वर्षा और तूफान के कारण नेताजी सैनिको को पीछे हटने के लिए कहते है। जापानी अग्रेज सरकार के विरुद्ध युद्ध मे असफल रहते है। जापानी सैनिको के साथ नेताजी को भी बर्मा छोडना पडता है। रगून पर अग्रेजो का आधिपत्य हो जाता है। नेताजी रगून छोडकर नही जाना चाहते लेकिन 'आजाद हिन्द फौज' के सैनिक लोक-नाथन, भादुडी आदि समझाते है 'यदि आप सुरक्षित पहुँच गये तो आक्रमण धारा अटूट रहेगी।"

रगून हवाई अड्डे पर सैनिक दल नेता जी को बिदाई देने आते है। वही पर नाटक का अन्त हो जाता है।

णाम यह होता है कि आर्य और नाग जाति (अनार्य) विद्वेप भूलकर परस्पर मित्रभाव से व्यवहार करती है।

नाटक के नायक जनमेजय के पिता की हत्या नागो ने की थी। अत पितृ-वध को स्मरणकर सम्राट् के हृदय मे नाग जाति के विरुद्ध परम्परागत द्वेपाग्नि सुलगती रहती है। इस द्वेषाग्नि को शान्त करने के लिए उन्हे नाग जाति का विनाश अभीष्ट है। अत नाग-विध्वस के लिए कृतसकल्प होकर वे कहते है, "अश्वमेध पीछे होगा, पहले नागयज्ञ करूगा।"

आर्य-सम्राट् जनमेजय की तरह नागराज तक्षक के हृदय मे आर्य जाति के प्रति प्रतिहिसा की भावना उद्दीप्त होती रहती है। एक स्थान पर वह अपने मनोभावो को व्यक्त करते हुए कहता है, "प्रतिहिंसे ! तू बलि चाहती है तो ले, मै दूँगा। छल, प्रवचना, कपट, अत्याचार सब तेरे सहायक होगे। हाहाकार, क्रन्दन और पीडा तेरी सहेलियाँ बनेगी।" इस सकल्प की सिद्धि के लिए वह नागो को सुसगठितकर आर्य-जनपदो मे हत्या और लूट के द्वारा आतक फैलाता है। वह यज्ञ के घोडे को बलपूर्वक पकडवा लेता है और नाग जाति को आर्यो के विरुद्ध युद्ध के लिए आह्वान करता है।

आर्य और नाग जाति (अनार्य) के परम्परागत इस सघर्ष को निर्मूल करने मे सरमा और मणिमाला आदि सहायक होते है। आस्तीक के पिता है आर्यऋषि और माता है नाग-कन्या। आस्तीक के जीवन का उद्देश्य है निर्मल बुद्धि द्वारा आर्यो और अनार्यो के पारस्परिक मनोमालिन्य का उन्मूलन करना। वह एक स्थान पर कहता है, "किन्तु भाई, हमलोगो का कुछ कर्त्तव्य भी है। दो भयकर जातियाँ क्रोध से फुफकार रही है। उनमे शाति स्थापित करने का हमने बीडा उठाया है।" जनमेजय जब ऋषि-पुत्र आस्तीक के व्यक्तित्व से प्रभावित हो उसे अपना रक्त देने को भी तैयार हो जाता है तो वह ऋषिकुमार आत्म-सुख की कोई वस्तु नही चाहता अपितु कलहशील दो जातियो मे शाति स्थापित करने के लिए कहता है, "मुझे दो जातियो मे शान्ति चाहिए। सम्राट्, शान्ति की घोपणा करके वन्दी नागराज को छोड दीजिए। यही मेरे लिए यथेष्ट प्रतिफल है।"

आस्तीक के सदृश ही नागकुलोत्पन्न वासुकी और नागपत्नी सरमा मे भी विश्व-मैत्री की भावना है। वे दोनो शत्रु का अपकार से नही प्रत्युत उपकार के द्वारा परिवर्तित करने मे सलग्न रहते है।

नाटक की नायिका है *मणिमाला*। वह जनमेजय के प्रतिपक्षी तक्षक की कन्या है। अपने शील-सौजन्यादि सदगुणो के कारण आर्य-सम्राज्ञी का पद पाती है, इस प्रकार उसकी मैत्री के बल से आर्य और अनार्य जातियो की कलहाग्नि इतनी शान्त हो जाती है कि आर्य जाति के नेता सम्राट् जनमेजय को बाध्य होकर यह कहना ही पडता है। "नागकुमारी की प्रजा होना भी अच्छा समझता हूँ।" इस प्रकार न केवल राजनीतिक प्रत्युत सास्कृतिक दृष्टि से भी आर्य-अनार्य जाति का सम्मिलन उभय पक्ष के लिए कल्याणप्रद होता है। दोनो जातियो मे राजनीतिक ऐक्य स्थापित हो जाता है और आर्य-सस्कृति तथा नाग-सस्कृति के समन्वय से भारतीय सस्कृति समृद्ध बन जाती है।

जन्म-यात्रा (सन् १९६८, पृ० १३) ले० गोपाल आता, प्र० हिन्दी विद्यापीठ, आगरा; पात्र पु० ८, स्त्री २, *अक और दृश्य से रहित।*

घटना-स्थल · गोकुल, मथुरा, प्रसूति-गृह।

इस पौराणिक नाटक मे कृष्ण-जन्म को गीत और सवाद द्वारा दिखाया गया है।

नाटक के प्रारम्भ मे उस कृष्ण की वन्दना की जाती है जिसके नाम-स्मरण से चाण्डाल पर्यन्त जीव परमगति को प्राप्त करते है। उसके बाद रगस्थली मे दुख-शोक से जर्जरित वसुमती ब्रह्मा के सम्मुख आती है और अपने दुख का सारा कारण बताती है जिससे दुःखी होकर ब्रह्मा क्षीरोदधि के तट पर देवताओ-सहित समाधि लगाते है और उन्हे ईश्वर वाणी सुनाई देती है कि भूमि-भार हरने के लिए श्री कृष्ण गोकुल मे जन्म

ले रहे हैं। कृष्ण-जन्म के निमित्त योगमाया अवतार धारण करती है।

इसके उपरान्त मथुरापुरी के राजा उग्रसेन और देवक, देवकी की शादी वसुदेव के साथ कर देते है। विवाहोपरान्त देवकी को साथ लेकर वसुदेव प्रस्थान करते है, तो रथ के थोडी दूर आगे जाते ही आकाशवाणी होती है कि "हे कस, देवकी का अष्टम पुत्र तेरा प्राण-सहारक होगा।" इसे सुनकर कस वसुदेव और देवकी को जाने से रोकता हैं और देवकी को मार देना चाहता हे। लेकिन वसुदेव से यह वचन लेकर कि "देवकी के गर्भजात सभी पुत्रो को सर्मपित कर दूंगा"—कस उसे छोड देता हे।

इस तरह कंस देवकी के गर्भजात सभी छ पुत्रो को नष्ट कर देता है तथा सप्तम का गर्भपात होता है। अष्टम मे भगवान् स्वय अर्धरात्रि मे उत्पन्न होते है। वसुदेव कृष्ण को लेकर गोकुल जाते हैं। उसी समय योगमाया जन्म लेती है। प्रहरी सो जाते हैं। वृष्टि होने लगती हैं। बढते हुए जमुना जल को देख वसुदेव भयभीत हो जाते ह। फिर भी कृष्ण के स्थान पर कन्या को लेकर लौटते हैं और देवकी की गोद मे दे देते है। कन्या के रुदन को सुनकर सभी प्रहरी जागते है। इसकी सूचना कंस को देते हैं। कस उस अबोध कन्या को उठाकर शिला पर पटक देता है। वह हाथ से छूटते ही दिव्य रूप धारण कर आकाश मे उड जाती है तथा कस के प्राण-वैरी की घोषणा करती है।

कस दैत्य-सभा मे जाकर सारी गाथा सुनाता है। दैत्य अपना अत आता जानकर गौ-ब्राह्मण की हिंसा करने लगते हे। इधर गोकुल मे नन्द-पुत्र के जन्म का वृत्तान्त सुनकर दशो दिशाओ मे हर्षोल्लास के साथ-साथ कृष्ण के ऊपर पुष्प-वर्षा होने लगती है।

जफाये सितमगर उर्फ घड़ी की घड़ियाल (सन् १८९०), ले० . मुहम्मद महमूद मिया 'रौनक', प्र० . विक्टोरिया कम्पनी ने दी० लखमीदास की कम्पनी बम्बई मे छपवाया; पात्र . पु० ८, स्त्री ४, अक . ४। घटना-स्थल . मन्दिर।

इस तिलस्मी नाटक मे देवी के वरदान से सामान्य सिपाही बादशाह बनता है। किन्तु अन्याय के कारण शापवश मारा जाता है।

सितमगर एक गरीब सिपाही है। वह कालका देवी की आराधना और जादू के बल पर रोशनाबाद का बादशाह बन जाता है। देवी का वरदान ह कि यदि वह प्रतिवर्ष एक नरवलि देता रहेगा तो उसके राज्याधिकार पर कोई आपत्ति न आयेगी किन्तु यदि वह ऐसा न कर सका तो स्वय उसी का बलिदान हो जाएगा। सितमगर प्रत्येक पूनम की रात्रि को बारह बजे देवी की पूजा मे नरवलि देता है।

सितमगर भूतपूर्व बादशाह के पुत्र नेकबख्त को पकडकर देवी को नर-वलि से प्रसन्न करके एक तीर से दो निशाने साधने की युक्ति निकालता है। परन्तु लडका किसी प्रकार उसकी कारागार मे बच निकलता है। वह नगर की एक दहकानी लडकी 'नूर आलम' के पास पहुँचकर उसके यहा शरण लेता है। सितमगर भी नूर आलम पर मुग्ध होकर उसे अपने हरम मे ले लेना चाहता है। अचानक एक दिन वह उस लडके को नूर आलम के घर मे देख लेता है और पुन उसे बन्दी बनाकर कारागार की जजीरो मे जकड देता है। नूर आलम अपने संरक्षित की रक्षा के लिए अधीर हो उठती है और उसको खोजतेखोजते पा भी जाती है। नूर आलम ठीक उसी समय पर पहुँचती है जबकि सितमगर नेकबख्त की बलि चढाने के लिए तैयार है। नूर आलम प्राण रहते उस लडके की रक्षा मे तत्पर होती है। सितमगर अब नूर आलम को ही पकडकर बलि देना चाहता है। उस सघर्ष मे नेकबख्त बचकर भाग निकलता है। वह शीघ्रता मे घडी मे बारह बजा देता है। देवी बारह बजे बलि न मिलने से क्रुद्ध हो उठती है। वह अपने विकराल रूप मे प्रकट होकर सितमगर को खा जाती है और उस के अन्याय मे सभी सम्बन्धित पात्र मुक्ति पा जाते है। नाटक मे घडी सितमगर के लिये घड़ियाल बनकर काल बन जाती है। विक्टोरिया कम्पनी द्वारा अनेक बार अभिनीत।

जव जागे तभी सवेरा (पृ० ७४), ले० · प० शिवदत्त मिश्र, प्र० ठाकुर प्रसाद एण्ड सस वुक्सेलर, वाराणसी, पात्र · पु० १०, स्त्री ७, अक नहीं, दृश्य · १६।

घटना-स्थल . अमरनाथ का कमरा, अस्पताल, मकान।

यह एक सामाजिक नाटक है। अमरनाथ डाक्टर वडे ही सुलझे हुए व्यक्ति है। इनकी पत्नी गौरा भी वडी सुशील तथा चरित्रवान् है। गौरा को ससुराल मे आये हुए काफी समय वीत जाता है, लेकिन उसके कोई भी सतान पैदा नही होती, जिससे उसे ताने सुनकर वडा दु ख होता है, और वह विना पति से वताए अपने भाई भोला के पास चली जाती है। भोला भी गरीवी से वडा दुखी है जिससे वह दुप्ट राजेन्द्रकुमार के हाथ अपनी सम्पत्ति वेचना चाहता है, लेकिन गौरा वचा लेती है। गौरा, उदय प्रताप मजिस्ट्रेट के यहा गरीवी के कारण नौकरानी का काम करती है। उदय प्रताप का साला राजेन्द्र-कुमार वहनोई की सम्पत्ति को चोरी-चोरी अपनी वहन के जरिये नष्ट कर रहा है। गौरा उसको वचाती है। राजेन्द्र एक धनी लडकी विमला को चाहता है, लेकिन विमला उसे नही चाहती। अचानक अमरनाथ मजिस्ट्रेट के घर गौरा को देखकर दुखी होते है और उसे (गौरा को) अपने घर ले जाते है। इधर विमला तथा राजेन्द्र भी अमरनाथ के घर जाते है और उदय प्रताप भी राजेन्द्र को पकडने के लिए जाता है। अन्त मे गौरा के समझाने पर राजेन्द्र सही रास्ते पर आ जाता है।

जमाना (सन् १९५८, पृ० १०६), ले० रमेश मेहता, प्र० चौ० वलवन्तराय प्रकाशन दिल्ली, पात्र . पु० ८, स्त्री ३, अक : ४।

घटना-स्थल पनवाडी का घर, सेठ की वैठक, मकान।

इस सामाजिक नाटक मे निम्न मध्यवर्ग के परिवार की करुण कहानी चित्रित है। एक निर्धन पनवाड़ी भोलाराम खोमचा लगाकर पान वेचता है। परन्तु कमेटी वाले प्राय उसका चालान करते रहते है और इस प्रकार उसकी आय का प्रमुख भाग दण्डस्वरूप उनकी भेट हो जाता है। भोलाराम की पत्नी पार्वती धार्मिक वृत्ति की भारतीय नारी है जो भगवान् तथा भाग्य मे पूर्ण विश्वास रखती है। परन्तु उसकी सन्तान 'सुन्दर' तथा 'चम्पा' पत्थर के भगवान् से ऊव चुके है। सुन्दर का अभिन्न मित्र जग्गू अवसरवादी और नास्तिक युवक है। वह सफाई से जेव कतरने की कमाई करता है, धर्म एव जातीयता जैसे आदर्श उसकी दृष्टि मे ढोग हैं।

भोलाराम अपने पिता की तेरहवी करने के लिए सेठ किरोडी मल से २०० रु० ऋण लेता है। वासना के दास सेठजी उस ऋण के वदले मे चम्पा का सौदा करना चाहते हे। 'जग्गू' सेठ की इस अधम वृत्ति को भाँपने पर उसे हत्या की धमकी देता है। सेठ किरोडी-मल जग्गू की इस फटकार से आतकित हो भविष्य मे उस घर के आँगन मे पाँव न रखने का प्रण कर भाग जाता है।

'सुन्दर' के चित्रो की प्रदर्शनी देखकर सेठ राधाचरण की पुत्री मालती कलाकार 'सुन्दर' के दर्शन करने उसके निवास-स्थान पर आती है। 'जग्गू' 'मालती' को देखकर उसके वटुए पर अपनी दृष्टि गडाता है। पर सुन्दर एक स्वाभिमानी कलाकार है, जिसकी निर्धनता कला का सवल है। 'मालती' सुन्दर से यह कला सीखने के लिए उत्साहित है। विचारो के आदान-प्रदान के लिए दोनो गोल वाग मे भेट का निश्चय करते है। सेठ राधाचरण का नौकर 'नैनसुख' मालती तथा सुन्दर की इस भेट की सूचना सेठजी को देता है। और इसे लोक-निन्दा का कारण वताता है। इससे सेठजी आग-ववूला हो जाते है।

दुर्भाग्यवश भोलाराम दुर्घटना के कारण नेत्रहीन हो जाता है। इस आकस्मिक विपत्ति के उपरान्त 'पार्वती' सेठ राधाचरण के घर कहारी का कार्य करने लगती है। परन्तु वह इस वात को अपने स्वाभिमानी पुत्र 'सुन्दर' से गुप्त रखती है। एक दिन मालती के निमन्त्रण पर जग्गू तथा सुन्दर उसके घर चाय पीने जाते है। वहा पार्वती ज्योही सुन्दर को देखती

है उसके हाथो से फलो की ट्रे गिर पडती है। और मालती उससे कहती है कि 'क्या तुम अन्धी हो' सुन्दर यह कहते हुए 'काश हमे कुछ दिखाई न देता' वहाँ से उठकर चला आता है। पार्वती भी अपना थला उठा घर की राह लेती है। धूर्त नैनसुख उस थैले मे मालती का स्वर्णहार डाल देता है। पार्वती जब घर पहुचती है तो उस हार को देखकर विस्मित हो जाती है। इस हार को लेकर वडा विवाद होता है। पार्वती इसे लौटाना चाहती है परन्तु जग्गू तथा सुन्दर इसे अपने पास रखने के पक्ष मे ही है। 'नैन-सुख' पुलिस-इन्स्पेक्टर को साथ लेकर भोला-राम के घर आ धमकता है और पार्वती को थाने जाना पडता है। इन परिस्थितियो से निराश सुन्दर जग्गू से आग्रह करता है कि वह चम्पा को लेकर इस क्रूर जमाने से कही दूर भाग जाए, क्योंकि वह अन्धे वाप और वेकार भाई के लिए वोझ है। परन्तु चम्पा यह सब सुनकर पागलो की तरह चिल्लाती हुई घर से वाहर की ओर भाग निकलती है। जग्गू उसे रोकने के लिए उसका पीछा करता है। सुन्दर पार्वती की श्रद्धा एव विश्वास की प्रतीक नन्ही पापाण-प्रतिमा को फेंकना चाहता है पर उतने मे पार्वती द्वार से उसे पुकारती है और वह मूर्ति को यथा-स्थान धर देता है। पार्वती तथा भोलानाथ मालती की सहायता से थाने से वापस आ जाते है। जग्गू चम्पा को घसीटते हुए घर मे प्रवेश करता है। पार्वती तथा भोलानाथ चम्पा को जमाने के अत्याचारो को दृढता-पूर्वक सहन करने का सन्देश देते है।

अभिनय—आर्ट्स क्लब दिल्ली द्वारा सन् १६५३ मे अभिनीत।

जयंत (सन् १६३४, पृ० १२०), ले० : राम नरेश त्रिपाठी, प्र० . हिन्दी मन्दिर, प्रयाग, पात्र पु० ४, स्त्री ४, अक ३, दृश्य २६।
घटना-स्थल मकान, गरीवो की वस्ती।

इस सामाजिक नाटक मे अधर्मी धनी के अत्याचार और उससे मुक्ति का मार्ग वताया गया है।

नाटक का नायक जयंत है। सेठ मनोहर-लाल अपने अत्याचारो एव अपनी दमनकारी नीतियो द्वारा सामान्य जनता को पीडित करता है। अपने गुर्गो द्वारा वह वसती की पुत्री का अपहरण कर अपने महल मे रखता है। जयत उसके इन कुकृत्यो का विरोध करते हुए जनता को साथ ले लेता है। सेठ मनोहर लाल को उसके आत्मीय तक छोड देते है और उसकी पत्नी तो उससे सवध ही विच्छेद कर लेती है, पर उसमे परिवर्तन नही होता। जयत द्वारा प्रेरित युवक जब सेठ मनोहर लाल को आत्म-समर्पण के लिए वाध्य करते है तब वह वास्तविकता को समझ जाता है और उसका हृदय परिवर्तित हो जाता है। अत मे नाटक आदर्श की ओर उन्मुख हो गया है और सुखान्त वातावरण मे दूसरी परिणति हो जाती है। सेठ मनोहर लाल अपनी पत्नी के साथ ही गरीवो की वस्ती मे रहकर उनके कल्याण का कार्य करने लगते है और सवको समान सुविधा देने के पक्षपाती हो जाते है।

जय चित्तौड (सन् १६७०, पृ० ६४), ले० विश्वम्भरनाथ 'वाचाल', प्र० भाग्योदय प्रकाशन, मथुरा, पात्र पु० ६, स्त्री ४; अक ३।
घटना-स्थल दिल्ली का महल, चित्तौडगढ, पथ, युद्ध-क्षेत्र।

यह ऐतिहासिक नाटक चित्तौड की रानी 'पद्मिनी' के अमर वलिदान 'जौहर' पर आधारित है।

महाराजा रतनसिह महामत्री और सेना-पति के साथ प्रजाहित के लिए सभा-कक्ष मे योजनाये वना रहे है कि पद्मिनी के सौन्दर्य से अभिभूत दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी का पत्र-वाहक आ जाता है। वह राजा को अलाउद्दीन का पत्र देता है जिसमे पद्मिनी को समर्पित करने का आदेश है। राजा पत्र फाडकर कुचल देता है और युद्ध की घोषणा हो जाती है। कुछ दिन वाद यवन-सेना गढ को घेर लेती है। रणोन्मत्त वीर राजपूत अपनी आन की रक्षा मे युद्ध मे रत रहते है।

द्वितीय अक मे अलाउद्दीन छल से राजा को वन्दी वनाता है और पद्मिनी की चतुराई तथा गोरा-वादल की वीरता और वीरसिंह

के प्राणोत्सर्ग से रत्नसिह कारा-मुक्त होते है।

तृतीय अक मे अलाउद्दीन की विजय, रत्नसिह-सहित समस्त राजपूतो की वीरगति और पद्मिनी का जौहर दिखाया गया है। इसे देखकर अलाउद्दीन भी कह उठता है —"ओह, सिवाय गुनाह के कुछ न मिला, या खुदा, यह क्या हुआ, राजपूतनियो ने जौहर कर लिया।"—"उफ खुदा तू मुझे मौत दे।"

जय जवान जय किसान (सन् १९६५, पृ० ८३), लें० श्यामलाल 'मधुप', प्र० : नवीनतम प्रकाशन, दिल्ली, पात्र . पु० ६, स्त्री ४, *अक-रहित, दृश्य* . १४।
घटना-स्थल गाव के खेत, युद्धस्थल, घर, कश्मीर का शिविर।

भारत के प्रधान मंत्री स्व० लालबहादुर शास्त्री के 'जय जवान जय किसान' के नारे पर इस नाटक की रचना की गई है। जगत कडी मेहनत करके धरती से खूब अन्न पैदा करता है और विजयसिह सेना मे भरती होकर देश की रक्षा करता है। सभी मिलकर देश के विकास मे काम करते हुए नए समाज का निर्माण करते है।

जय-पराजय (सन् १९३७, पृ० २१६), लें० : उपेन्द्रनाथ 'अश्क', प्र० : नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, *पात्र* पु० ५, स्त्री ५; *अक* : ५, *दृश्य* . ६, ८, ७, ७, ९।
घटना स्थल . मेवाड, युद्धभूमि, महल, उपवन कन्दरा।

इस ऐतिहासिक नाटक मे मेवाड के युवराज चड की वीरता दिखाई गई है।

मेवाड के युवराज चड हसाबाई के साथ विवाह करना अस्वीकार कर देते है, क्योकि युवराज के विवाह के लिए जो नारियल आता है उसके सबध मे उसके पिता राणा लक्षसिह ने हँसी मे कहा था—"यह नारियल तो युवराज के लिए होगा, हम बूढो के लिए कौन नारियल लाता है।" अत हसाबाई चड की माँ के रूप मे ही आती है। इधर हसा का भाई रणमल जो अपने राज्य से निर्वासित होकर मेवाड मे रह रहा था—अपने षड्यन्त्रो से चंड के छोटे भाई राघव देव का वध करवा देता है। वह चंड को भी राज्य से निर्वासित करवा देता है। इस षड्यन्त्र मे हंसाबाई भी उसका साथ देती है। किंतु अत मे वह रणमल से डरने लगती है, क्योकि रणमल स्वय मेवाड का राजा बनने का स्वप्न देखने लगता है। हसाबाई चड को अपनी सहायता के लिए बुलाती है। चड शत्रुओ का नाश करते हुए रणमल का वध कर देते है। जब हसाबाई रणमल का शव देखती है तो रोती हुई चड का अपमान कर देती है। इससे क्षुब्ध होकर चड पुन. राज्य से निकल जाता है।

जय बाङ्गला (सन् १९७१, पृ० ७०), *लें० :* रामकुमार वर्मा, प्र० : राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, *पात्र* . पु० १५, स्त्री ४; अक : ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल घर, चौकी, नदी का किनारा।

इस ऐतिहासिक नाटक मे वर्मा जी ने पाकिस्तानी सैनिको द्वारा बगला देश की जनता पर किए अत्याचारो का चित्रण किया है। प्रथम अक मे पाकिस्तानी सैनिको की बर्बरता का चित्रण है और मुक्ति-फौज के स्वयसेवक शिशिर दा के द्वारा जनता को सघर्ष करने की प्रेरणा दिखाई गई है। द्वितीय अक मे इन पाकिस्तानी सैनिको के अत्याचारो के वर्णन के साथ-साथ सुधारानी नामक बगाली लडकी और फीरोज खाँ (बलूचिस्तानी) की निडरता और उदात्त चरित्र को अकित किया है। अतिम अक मे मुक्तिवाहिनी की विजय का सकेत करते हुए धीरेन्द्रनाथ और सुधारानी के मिलन एव अन्य पात्रो के साथ इनका देश की मुक्ति के लिए प्रतिज्ञाबद्ध होना दिखाया गया है।

जय सोमनाथ (वि० २०१३, पृ० ७५), लें० : सीताराम चतुर्वेदी; प्र० : अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, *पात्र* · पु० ११, स्त्री ४; *अक* : ३, *दृश्य* १, १, १।
घटना-स्थल : सोमनाथ-मदिर, मडप, युद्धक्षेत्र।

महाराज भीमदेव सोलकी अपनी रानियो—उदयमती तथा बकुला देवी सहित सोमनाथ मदिर के अध्यक्ष ज्ञानदेव के अतिथि बनते है। ज्ञानदेव महाराज की अतिथि-सेवा का

भार अवन्तिका तथा जयमाला नामक देवदासियो को सौप देते है। रानी वकुलादेवी पहले इस मदिर मे देवदासी रह चुकी थी। इस काल मे समस्त देशो मे तान्त्रिको का आतक फैला हुआ है। वामाचारी तान्त्रिक सिद्धि के लिए अनेक प्रकार के अनाचारो के साथ नर-बलि देते है। वीरेन्द्र नामक एक दुष्ट तान्त्रिक तथा उसका साथी धूम्रकुण्डल सोमनाथ मदिर के डम्मोल नायक सेवाधारी को धनलोभ द्वारा अपने इस कुकृत्य मे सम्मिलित करता है और अवन्तिका का अपहरण करने मे सहायता करने के लिए प्रेरित करता है परन्तु वह स्वीकार नही करता। अवन्तिका का पिता मरुकच्छ का सेठ समस्त मोह-ममता को त्याग कर उसे मदिर मे देवदासी वनने को छोड गया था। उसका गगलभाई नामक सेवक सेठ के पास से कुछ धन तथा वस्त्रादि अवन्तिका के लिए लाता है जिसे वह अत्यन्त तिरस्कार के साथ अस्वीकार कर देती है। वीरभद्र चोरी से अवन्तिका को वलि देने के लिए पकडने आता है परन्तु भीमदेव तथा ज्ञानदेव के समय पर पहुँच जाने से उसकी रक्षा हो जाती है। ज्ञानदेव वीरभद्र को अपमानित करते है परन्तु वह अपने कुकृत्य से वाज नही आता। इस सम्वन्ध मे भीमदेव का सेना-नायक किसी षड्यन्त्र का सन्देह करते हुए ज्ञानदेव को सूचित करता है। एक दिन पूजा के समय रानी वकुलादेवी विक्षिप्त हो कहती हैं—"मुझे भगवान् दर्शनदेकर कह गए हैं कि वह जा रहे है।" इसी अवसर पर अमात्य विमलदेव महमूद की सेना के तीव्रगति से आने की सूचना देता है और साथ ही डम्मोल घोषित करता है कि कोई अवन्तिका को वलपूर्वक घोडे पर वैठाकर ले गया है। धूम्रकुण्डल डम्मोल को मदिर के वाहर ले जाकर उसकी हत्या कर देता है। अवन्तिका किसी भाति वीरभद्र के चगुल से मुक्त होकर आती है, वीरभद्र भी उसके पीछे-पीछे आता है। वह त्रिशूल से अपनी रक्षा करती है और वीरभद्र भाग जाता है। वकुलादेवी ध्यान-मग्न अवस्था मे कहती है 'कि भगवान सोमनाथ रक्त चाहते हैं।' इसके साथ ही विमलदेव महमूद के पहुँचने की सूचना देते है। महाराज भीमदेव सेना-सहित युद्ध के लिए जाते है तथा ज्ञानदेव समस्त देवदासियो को सुरक्षा की दृष्टि से पाताल-गृह मे भेज देते है। महमूद अपने सेनाध्यक्ष तथा वीरभद्र-सहित मदिर के द्वार पर पहुँचता है परन्तु अवन्तिका भीतर से कुँडी लगा लेती है और ज्ञानदेव वाहर से मार्ग रोकते है जिन्हे वलात् गिरा दिया जाता है और इस प्रकार वीरभद्र अपने अपमान का वदला लेता है। वीरभद्र महमूद को देवता की मूर्ति भग करने से रोकता है परन्तु वह कुछ न सुनकर द्वार पर गदा प्रहार करता है जिसके फलस्वरूप अवन्तिका द्वार खोलकर त्रिशूल-सहित वाहर निकलती है। इसी समय वकुलादेवी तलवार से महमूद पर प्रहार करती है परन्तु वह उसे मार गिराता है। इसी अवसर पर मालवराज भोजदेव की सेना आकर महमूद को चारो ओर से घेर लेती है। महमूद इसे धोखा समझकर वीरभद्र तथा धूम्रकुण्डल की हत्या कर देता है। साथ ही अवन्तिका भी मर जाती है और ज्ञानदेव भी प्राण त्याग देते है।

अभिनय—पटेल स्टेडियम, वम्वई के सेट्रल फोकल स्टेज पर सन् १९५७ मे अभिनीत।

जया नाटक (सन् १९१२, पृ० ३२), ले० : हरिहर प्रसाद जिज्जल, प्र० . अग्रवाल प्रेस, गया, पात्र :पु० १६, स्त्री ४, अक . ३, दृश्य : ६, ६, ३, ९।
घटना-स्थल · राजमहल, वन्दीगृह।

इस ऐतिहासिक नाटक मे नान्दी और सूत्रधार का प्रयोग मिलता है। चित्तौड के राजा रत्नसेन को अलाउद्दीन खिलजी के सिपाहियो ने धोखा देकर वन्दी वना लिया है। उसकी एकमात्र पुत्री जया इस घटना से शोकातुर है अत वह अपनी सखी कुसुम को साथ लेकर जैसलमीर की ओर चलती है। रास्ते मे जया को यवन सरदार घेर लेते है, लेकिन ठीक उसी समय जैसलमीर का कुवर जैपाल वहाँ पहुँच जाता है और सरदार को ही तलवार से दो टुकडे कर देता है। जैपाल जया को साथ लेकर जैसलमीर आता है और प्रतिज्ञा करता है कि जव तक तुम्हारे पिता को नही छुडा-

ऊंगा तब तक मै आराम नही करूगा । अन्त मे जैपाल अलाउद्दीन के सभी सिपाहियो और पहरेदारो को मारकर रत्नसेन को छुडा लेता है । रत्नसेन भी उचित अवसर पाकर जया की शादी जैपाल से कर देता है।

ज्योत्स्ना (सन् १९३९, पृ० १००), ले० : रामादीन पाडेय, प्र० पुस्तक-भण्डार, लेहरियासराय, पात्र पु० ८, स्त्री ४, अक : ४, दृश्य १०, ८, ८।
घटना-स्थल गॉव, रोगी का घर ।

इस सामाजिक नाटक मे ग्रामोद्धार की कहानी है। नायक वीरेन्द्र अपने त्यागबल, ज्योत्स्ना की तपस्या और प्रभा की सेवावृत्ति के बल पर गॉव की स्थिति सुधारता है । मृत्युजय और रजनी के जीवन का गॉव पर प्रभाव पडता हे । गॉव मे आज भी आदर्श पुरुप और साध्वी नारियो का अभाव नही है। दारोगा और इकबाल अपना अपराध स्वीकार कर पश्चत्ताप करते है । भैरव एक मूर्ख और बलवान् किसान है। वह आत्म-समर्पण द्वारा गॉव का मनोबल ऊँचा उठाता है । ज्योत्स्ना मृत्युजय की सेवा-परायणा शिक्षिता कन्या गॉव के सुधार मे जीवन लगा देती है । प्रभा भैरव की भोली-भाली गृहिणी है जो बीमारो की सेवा करनेवाले पादरी की सहायता करती है। पादरी प्रभा को ईसाई बनाना चाहता है पर वह प्रलोभन को ठुकराकर सती-धर्म का पालन करती हे ।

जरासध-वध (सन् १९६२, पृ० ८०), ले० · अनिरुद्ध-यदुनन्दन मिश्र 'स्नेह-सलिल, प्र० श्रीगगा पुस्तक मन्दिर, पटना, पात्र पु० ८, स्त्री २ ।
घटना-स्थल : मथुरा, द्वारिका, युद्धभूमि ।

इस पौराणिक नाटक मे जरासघ के अत्याचारो और कृष्ण द्वारा उसके वध का चित्रण है।

यह एक पौराणिक नाटक है । प्राचीन मगध देश के राजा जरासध की लडकी का विवाह मथुरा-नरेश कस के साथ हुआ था। कृष्ण द्वारा कस के मारे जाने पर जरासख्य नर-नारियो का सहार करता है। अन्त मे कृष्ण जरासध के भय से भागकर द्वारिकापुरी मे अपनी राजधानी बना लेते है। एक बार कृष्ण अर्जुन से कहते है—"आज तक मुझे जितने विरोधियो से पाला पडा, उनमे जरासध ही सबसे अधिक प्रभावशाली है। यही एक प्रतिपक्षी है, जिसका भय दिन-रात मेरे जी से नही जाता ।"

जरासध अनेक वन्दी राजाओ की बलि देकर महारुद्र की उपासना करना चाहता है किन्तु कृष्ण, भीम, अर्जुन छद्म वेश मे उसके महल मे पीछे के दरवाजे से घुस आते है और मल्ल युद्ध के लिए उसे ललकारते है। वीर जरासध इसके लिए तैयार हो जाता है जिसमे वह कृष्ण से मल्ल युद्ध करते समय मारा जाता है और अन्त मे उसका पुत्र सहदेव अन्तिम सस्कार कर राज्य का अधिकारी बनता है ।

जला मशाल (सन् १९६३, पृ० ७९), ले० : अनिरुद्ध-यदुनन्दन मिश्र 'स्नेह-सलिल', प्र० · श्री गगा पुस्तक मन्दिर, पटना, पात्र पु० ७, स्त्री २, अक ३, दृश्य ५, ४, ४।
घटना-स्थल नेफा, लद्दाख, ग्राम, युद्धभूमि ।

यह राजनीतिक नाटक भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित है जिसमे नेफा और लद्दाख के सीमावर्ती ग्रामीण बडी बहादुरी से चीनी बर्बरो का मुकाबला करते है। बहादुर ग्रामीण मोहनसिह चीनी मेजर के सभी षड्यन्त्रो को विफल करता है। क्रान्तिकारी सोनासिह की पुत्री मनु तथा मुखिया की पत्नी माया दुश्मनो के समक्ष यह प्रमाणित कर देती हे कि भारत की नारिया भी पुरुषो की तरह वीर तथा देश-भक्त हुआ करती है ।

सेनासिह इस युद्ध मे मारा जाता है, किन्तु उसके शौर्य से जनता का उत्साह बढता है । चाऊ-माऊ मुर्दाबाद के नारे चीनी सैनिको का मनोबल गिरा देते हे । नेफा और लद्दाख का प्रत्येक प्राणी चीनियो को मुह-तोड उत्तर देता है । अन्त मे चीनी सैनिक इस बहादुरी को देखकर पीछे हट जाते हे ।

वहार आफिस, काशी, पात्र पु० ५, स्त्री २, अक ३, दृश्य ८, ६, ६ ।
घटना-स्थल मकान, वाग, ताडीखाना, मार्ग, काली-मदिर ।

इस सामाजिक नाटक मे विधवा को वेश्या-रूप मे दिखाकर कामुको और पुलिस की लीला चित्रित की गई है ।

विधवा कामिनी को कामी पुरुष भगाकर ले जाता है । विवश हो वह वेश्या वन जाती है । धनी कालिदास को उसका मित्र गौरीनाथ अपने फदे मे फसाकर ले जाता है और कामिनी से परिचय कराता है । कालिदास कामिनी के मोह-फास मे वध जाता है और उसे घर लाता है । अपने मित्र सोहन के समझाने पर भी वह नही मानता । आखिरकार कामिनी कालिदास का सारा धन खीच लेती है, जिससे वह ऋणी हो जाता है । महाजन का ऋण न चुकाने पर वह गिरफ्तार भी होता है । गिरफ्तारी से वचने के लिए कालिदास कामिनी से गहने मागता है, तव कामिनी इन्कार कर देती है, जिससे कालिदास की आखे खुलती है । उधर गौरीनाथ और कामिनी मे पुन मेल हो जाता है । कालिदास जेल से छूटने पर गौरीनाथ और कामिनी को एकत्र देखता है तो उनसे झगडा करता है । गौरीनाथ कालिदास पर गोली चलाता है । गोली कामिनी को लगती है पर गौरीनाथ स्वय पुलिस को बुलाता है और कालिदास को उल्टा दोषी ठहराता है, किन्तु उसी वीच कालिदास भाग जाता है । अन्त मे गौरीनाथ को अपनी लडकी का पता लगता है जिससे कामिनी के उस्ताद चम्मन से झगडा हो जाता है । गौरीनाथ की गोली से चम्मन मारा जाता है । फिर वह भी आत्महत्या करना चाहता है पर पिस्तौल के खाली रहने पर सजा पाने के लिए पुलिस मे आत्म-समर्पण कर देता है । उधर भिखारी वेषधारी कालिदास को पुलिस गिरफ्तार करती है, पर उसी समय गौरीनाथ पहुँचकर अपना अपराध स्वीकार कर लेता है कि कामिनी का वह स्वय हत्यारा है । सोहनलाल की सहायता से उसी समय कालिदास की पत्नी करुणा आ जाती है । इस तरह दो दम्पतियो के मिलन से नाटक की समाप्ति होती है ।

जवानी की भूल (वि० १९८९, पृ० १२३), ले० जमुनादास मेहरा, प्र० हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, २०३ हेरिसन रोड, कलकत्ता, *पात्र* पु० १७, स्त्री ८, *अक* ३, *दृश्य* ९, ६, ३ ।
घटना-स्थल वेश्या-गृह ।

इस सामाजिक नाटक मे वेश्या-प्रेमी उस युवक की दशा दिखाई गई है जो अपनी सती नारी को छोड देता है ।

जवानी की उत्तेजना मे रमानाथ का पुत्र मानिकलाल अपनी पत्नी की उपेक्षा करते हुए फूलमनी नामक वेश्या के जाल मे फस जाता है और अपना सर्वस्व नष्ट कर डालता है । मानिक पर खून करने का आरोप भी लगाया जाता है । एक स्थल पर फूलमनी मानिक से उसके विश्वासघातिनी कहने पर कहती है "मै क्या करू, जैसा किया है, वैसा पाओगे । मै क्या तेरी खुशामद करने गई थी कि तू मेरे घर मे आ, दौलत दे और जल्लाद वन ।" अन्त मे अपने मित्र रामसेवक की सहायता से उसका उद्धार होता है और वह फिर से अपनी पत्नी को स्वीकार करते हुए कहता है "ले चलो—ले चलो उस गृह-लक्ष्मी के सामने ले चलो—नरक से तो निकाल चुके अव स्वर्ग मे ले चलो ।"

जसमा (सन् १९६३), ले० मनोहर प्रभाकर, प्र० कल्याणमल एड सस, जयपुर, 'जसमा तथा अन्य सगीतरूपक' मे सग्रहीत; *पात्र* पु० ९, स्त्री ३, *अक-दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल महल, तालाव, झोपडी ।

गुजरात की एक प्रसिद्ध लोककथा जसमा-ओडन पर आधारित एक लघु सगीतरूपक है । जसमा ओडन जाति की एक सुन्दर मालव-युवती है । एक चारण द्वारा उसके रूप-यौवन का वर्णन सुनकर गुर्जर-नरेश सोलकी उस पर मुग्ध हो जाता है और उसको प्राप्त करने के अनेक प्रयत्न करता है । एक वडा तालाव खुदवाने के लिए वह मालव के समस्त ओडन मजदूरो को आमन्त्रित करता है । जसमा भी अपने पति के साथ वहाँ आती

है। एक दिवस जब जसमा थककर तम्बू मे अपने पुत्र को लोरी सुना रही थी तब सोलकी राजा आकर उससे प्रणय-निवेदन करता है, जिसे जसमा अस्वीकार करती है। परिणाम-स्वरूप राजा एक दिन बलपूर्वक उसे महलो मे बुलवाता है। जसमा राजा को शाप देती है कि तेरा तालाब सूख जाए और अन्त मे वह भारतीय नारी के गौरव को सुरक्षित रखते हुए अपने प्राण त्याग देती है।

जहर (सन् १९६६, पृ०), *ले०* · कणाद ऋषि भटनागर, प्र० : नेशनल पब्लिशिग हाउस, दिल्ली, *पात्र* : पु० ७, स्त्री ३, अक : ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल . ड्राइगरूम, घर, फैक्टरी।

प्रस्तुत नाटक मे आधुनिक समाज मे व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दाफाश है। लेखक श्यामचरण को मुख्य पात्र मानकर आज के समाज की भ्रष्ट प्रवृत्तियो का उद्घाटन करता है। श्यामचरण दवाइयो मे मिलावट करने की फैक्टरिया बनाकर जनता को धोखा देता है, परतु जनता भी जागरूक होने पर उससे प्रतिशोध लेना चाहती है। अत मे वह स्वय अपनी फैक्टरी का नकली जहर खा कर तडपता ही रहता है। मरता नही, क्योकि उस जहर मे भी मिलावट है।

जहाँगीरशाह और गौहर (सन् १८७८), *ले०* खाँ साहब 'आराम', प्र० नसरवान मेहरवान जी, *पात्र* पु० ५, स्त्री २, *अक के स्थान पर बाब मे विभाजित*।

इस तिलस्मी नाटक मे जहाँगीरशाह और गौहर के प्रणय की कहानी है। जहाँ-गीरशाह के त्याग, वलिदान, प्रणय का अत्यन्त शृगारिक वर्णन है। नाटक मे दैवी शक्ति, चमत्कार, रूप-परिवर्तन आदि का प्रयोग किया गया है। सम्पूर्ण नाटक गीतो, कविताओ और रागो तथा शेरो-शायरी मे ही लिखा गया है। नाटक के वीच-वीच मे रगमच के सकेत गद्य मे दिये गये है। कार्यो और घटनाओ की सूचना नाटककार देता चलता है।

जहरी साप (सन् १९०६), *ले०* · नारायण प्रसाद वेताव, प्र० : वेताव पुस्तकालय, देहली, *पात्र* पु० १४, स्त्री ८, अक · ३, *दृश्य* १०, ७, ५।

इस समाजिक नाटक मे सिपहसालार वाकर की बेटी खुरशीद के पातिव्रत की महिमा दिखाई गई है। इसके अतिरिक्त डाक्टर गुमानी जीलानी की लडकी अकवरी का बहराम खाँ के बेटे हमीद से प्रेम प्रकाशित किया गया है। अकबरी का पिता अपनी पुत्री से लडकर विदेश चला जाता है और उसकी माँ हज करने चली जाती है। इस लडकी को बहराम खाँ के सरक्षण मे रखा गया है और वह उसी के बेटे से प्रेम करती है।

अभिनय—यह नाटक पारसी थियेट्रिकल कम्पनी आफ वम्बई द्वारा २७ जून १९०६ को प्रथम बार विक्टोरिया थियेटर, बम्बई मे अभिनीत हुआ।

जागरण (वि० १९९८, पृ० १७४), *ले०* : सेवाधर झा, *पात्र* पु० १६, स्त्री ८; अक ३, *दृश्य* · ७, ८, ८।
घटना-स्थल राजमहल, उद्यान, शिवजी का मदिर।

इस ऐतिहासिक नाटक मे छुआछूत, अमीर-गरीब, बडे-छोटे, प्राचीन-अर्वाचीन एवं पुरुष-स्त्री की गुत्थियो को सुलझाने का प्रयास किया गया है।

कमल देव रामगढ का विलासी राजा है। उसके ऊपर उत्कल का राजा राजदेव आक्रमण करता है। राज्य की रक्षा मे कमल देव की कन्या माधुरी और मत्री-पुत्री निर्मला पुरुष के वेश मे युद्ध करती है। मत्री-पुत्र वसन्त वडी वीरता से युद्ध करके रामगढ की रक्षा करता है। उसे विद्रोही समझकर वन्दी बनाया गया था किन्तु माधुरी उसे मुक्त कराती है और वह प्राणो की वाजी लगाकर रामगढ की रक्षा करता है। माधुरी वसन्त की रक्षा करते हुए कहती है—'उस दिन के वाद उस सुन्दर युवक की जिसे वसन्त कहते है, केवल कीर्ति-कथाये ही सुनने को मिली। मै वचाऊँगी, उन्हे कारागार की यत्रणाओ से मुक्त करूगी।"

मूलकथा के साथ-साथ अछूतोद्धार की कथा भी चलती रहती है। शिवजी के मन्दिर मे पुजारी जी पूजा करने वालो से

पैसे एकत्र करते है। नन्दू नामक अछूत पूजा करना चाहता है, पर पुजारी उसे घुसने नही देता। दर्शन करते समय भक्तिन माया के गले का हार टूट कर गिरता है तो उसे पुजारी अपने बक्स मे रख लेता है और मागने पर भी नही देता। मन्त्री-पुत्र वसन्त हरिजनो का पक्ष लेकर पुजारी का भडाफोड करता है।

जागीरदार (सन् १९४६, पृ० १०३), ले० · डा० नारायण विष्णु जोशी, प्र०. हिन्दी ज्ञान मन्दिर लि०, बम्बई, पात्र पु० १२, स्त्री १०, दासिया तथा नर्तकिया।

घटना-स्थल विशाल भवन, अछूत निवास, जागीरदार का विलास-कक्ष।

जागीरदारो के अत्याचार की कहानी नाटक मे व्यक्त है। कथानक का आरम्भ एक अछूत काश्तकार के झोपडे से होता है। गीत गाती हुई एक अछूत-पत्नी राजल चक्की पीस रही है। अचानक उसका भाई आकर उसे सुन्दर वस्त्र देता है, और जीजा के सम्बन्ध मे पूछता है। राजल बताती है कि वे जागीरदार के यहाँ बेगार करने गए है तभी जागीरदार का नौकर आकर राजल को भी चक्की पीसने के लिये जागीरदार के यहा ले जाना चाहता है। राजल के अस्वीकार करने पर जागीरदार के नौकर उसे और उसके भाई को पीटते है और बलात् राजल को पकड ले जाते है। समुन्द्रसिह राजल नामक स्त्री को जागीरदार के हवाले कर उसे प्रसन्न करना चाहता है। जागीरदार शराब पीकर राजल के पास जाता है। राजल आत्म-रक्षा के लिये कमरे मे टगी बन्दूक उठाती है। सहसा बन्दूक के चलने पर राजल मर जाती है। इधर इज्जत-आबरू के भय से भौरू राजल को खोजता फिरता है। सुखलाल शहर से पुलिस बुला लाता है। पुलिस-अफसर जागीरदार और उसके नौकरो से पूछताछ करता है। मोतिया नौकर राजल की मौत का राज खोल देता है। पुलिस जागीरदार, समुन्दरसिह तथा कामदार को अपराधी मानकर पकड लेती है। महराज पुलिस को पाँच हजार की रिश्वत भी देता है लेकिन उससे उसका कोई काम बन नही पाता है। सभी जेल मे बन्दी हो दण्ड भोगते है।

जागीरदार (सन् १९५६, पृ० १५७), ले० · उदयसिह भटनागर, प्र० गौरीशकर शर्मा, भारती साहित्य मन्दिर, फव्वारा, दिल्ली-६, *पात्र* पु० ६, स्त्री १, *अक* ४, *दृश्य* . ६, ५, ६, ९।

घटना-स्थल जमीदार का महल-कक्ष, ग्राम-पचायत स्थल।

जमीदारो के अत्याचार से पीडित व्यक्तियो की कहानी इस नाटक मे प्रस्तुत की गई है। अकाल के समय जागीरदार मानसिह सेठ लक्ष्मीचन्द के साथ फैक्ट्री खोलना चाहता है। जैत नामक व्यक्ति के विरोध करने पर जागीरदार उस पर क्रुद्ध होता है और धन-जन-बल से विरोध दबा देता है। शराबी जमीदार लखमीचन्द के द्वारा कमिश्नर को डाली देकर प्रसन्न रखता है। सारी प्रजा जमीदार की अनेक यातनाएँ चुपचाप सहती है। केवल एक पत्रकार पाठक विरोध करता है। परिणामत जागीरदार के आदमी उसे उठाकर ले जाते है और हत्या की योजना बनाते है, पर सफल नही हो पाते। पाठक मुक्त होकर पचायती राज्य स्थापित करता है, लेकिन जनता का हित भूलकर स्वार्थी बन जाता है। वह जैत पर लडकी भगाने का अभियोग लगाकर मुकदमा चलाता है। उन्हीं दिनो सेठ के यहाँ डाका पडता है। जैत गाँव की स्थिति से दुखी है। उसके विचारो का साथ निर्मला देती है और सभी भले-बुरे कार्यो का वह अपने को उत्तरदायी घोषित कर देती है। दुखी जैत गाव छोड-कर चला जाता है।

जागो फिर एक बार (सन् १९६३, पृ० ३३), ले० प० सीताराम चतुर्वेदी, प्र० कलकत्ता नागरिक सघ, *पात्र* पु० ९, स्त्री ३, *अक* · ३, *दृश्य* १, १, १।

घटना-स्थल . सडक, चौतरा।

इस नाटक मे चीनी आक्रमण के समय एक वीर-परिवार के बलिदान का वर्णन है। यह कलकत्ते के एक दृश्य बहुपीठात्मक। मय मच पर प्रस्तुत हुआ। तीनो दृश्य

दृश्यपीठ पर हुए। यह नाटक केवल इस प्रकार के रगमच पर ही खेला जा सकता है।

जागो हिन्दुस्तान (सन् १९६१, पृ० ७२), ले० अनिरुद्ध यदुनन्दन मिश्र 'स्नेहसलिल'; प्र० श्री गगा पुस्तक मन्दिर, पटना, पात्र पु० ६, स्त्री २, अक ४, दृश्य . ४, ३, ४ ३।
घटना-स्थल नदी-तट का उपवन, आर्य-शिविर, दरवार, एक आश्रम, पहाडी।

यह मनोवैज्ञानिक, सास्कृतिक एव राजनीतिक नाटक है। नाटक मे चलने वाला इतिवृत्त मुख्यत तीन लम्बे युगो मे विभाजित है। पहला आर्य-अनार्यों का समन्वय-सघर्ष, दूसरा विदेशी लुटेरो और अग्रेज सत्ताधारियो के द्वारा उलटफेर और स्वतत्रता-प्राप्ति के अनन्तर के भारत की स्थिति। सभ्यता, सस्कृति, अग्रेज-यात्रिक और आर्य कुमार आदि इस नाटक के पात्र है। एक अग्रेज वडी कठिनाई से समुद्र लॉघकर भारत मे आता है। वह अपने चातुर्य तथा नीतिपूर्ण राजनीति से हमारा शासक भी वन बैठता है। एक ही आर्य कुमार आर्यावर्त की पुरातन पद्धतियो का विरोध करता है। वही अग्रेज कार्यकर्ता वनता है। वह सुभाष की हत्या करता है और गाधी को मारने का भी दुष्कर्म कर बैठता है। फिर भी जनता उसे निर्वाचित करती है, जिससे वह अपने नये-नये जाल फैलाता है। वह भारत की भोली-भाली जनता को धोखा देकर ठगने का प्रयास करता है।

जानकी मंगल (वि० १९३३, पृ० ६५), ले०. शीतला प्रसाद त्रिपाठी, प्र० ज्ञान मार्तण्ड यत्रालय, प्रयाग, पात्र पु० ६, स्त्री ४; अक ३, दृश्य . ३।

इस पौराणिक नाटक मे राम-जानकी का विवाह दिखाया गया है।

इस नाटक का आरम्भ 'नान्दी'-पाठ द्वारा होता है, जिसमे भगवान् राम की वन्दना की गई है। नान्दी के बाद सूत्रधार एव नटी उपस्थित होकर नाटक का विषय और उसकी कथावस्तु का सकेत देते है।

नाटक के प्रथम अक का प्रारम्भ मालियों के गीत—

"आज जानकी केर विवाहू,
आए इहाँ सकल नर नाहू।"

से होता है। सीताजी अपनी सहेलियो के साथ फुलवाडी मे 'गौरीपूजन' के लिए आती है। उधर रामचन्द्र भी गुरु के हेतु फुलवाडी से पुष्प लेने आते है। सीता की एक सखी राम के अनिद्य सौन्दर्य का वर्णन करती है। राम और सीता का वाटिका मे साक्षात्कार होना है। राम और सीता एक-दूसरे के सौन्दर्य पर मुग्ध होते है। सीता राम का ध्यान करती सखियो के साथ घर को लौटती है।

नाटक के द्वितीय अक मे सीता-स्वयवर का दृश्य है। महाराज जनक की राजसभा मे देश-विदेश के राजा और राजकुमार विद्यमान है। एक सुन्दर मच पर शिव-पिनाक तोडने के लिए रखा हुआ है। स्वयवर मे उपस्थित विविध राजा धनुष के साथ अपने पराक्रम का प्रदर्शन करते है, किन्तु कोई भी 'शिवधनु' की शक्ति-परीक्षा मे सफल नही होता। अन्त मे रामचन्द्र जी ने गुरु की आज्ञा पाकर शिव-पिनाक को तोड दिया। तव सीता जी वरमाला राम के गले मे डालती है।

नाटक के अतिम दृश्य मे परशुराम-आगमन, लक्ष्मण एव परशुराम का सवाद, परशुराम का आक्रोश तथा भ्रम, राम की नम्रता तथा धनुष की प्रत्यचा को चढाने पर परशुराम की क्षमा-याचना का दृश्य है।

जानहार (सन् १९००, पृ० १००), ले० कुदसिया जैदी, प्र० आत्माराम एण्ड सस, दिल्ली-६, पात्र पु० ४, स्त्री ४, एक्ट ४ और सीन २, १, १, १।
घटना-स्थल वेश्यागृह।

यह नाटक अलग्जेडर ड्यूमा के 'कमील' से प्रभावित है। इसमे लखनऊ की तवायफो का विवरण दिया गया है। इसमे तवायफो की गुफ्तगू, उनकी जेहनीयत, उनके मामलो का बढिया नक्शा खीचा गया है। कोई तवायफ जवान है, कोई अधेड उम्र की। किसी की सूरत अच्छी है, किसी की मामूली, कोई

सफल है, कोई सफलता की खोज मे है। योरूप और हिन्दुस्तान की तवायफो का भी चित्रण है। दोनो के अलग-अलग कायदे है। जरीना और जावेद की मुहब्बत असली होते हुए भी नकली का रूप है। जरीना, अन्ना, परवीन, अलमास, मीनो नामक वार-वनिताओ पर नवयुवक जावेद, जमीदार कैसर, ताल्लुकेदार मजूर मुग्ध है।

जाने अनजाने (सन् १९६२, पृ० ९१), ले० ओंकार शरद, प्र०. राम रजना प्रकाशन, इलाहावाद, *पात्र* पु० ४, स्त्री ४, *अक* २; *दृश्य* . ४, २।

घटना-स्थल एक सजा कमरा। एक ही मकान मे विभिन्न कक्ष।

इस सामाजिक नाटक मे एक विवाहित मद्यप हवाई सैनिक का जीवन दिखाया गया है।

जितेन एक हवाई सैनिक है जिसकी पत्नी मधु उससे वहुत प्यार करती है। वह एक प्रश्न उठाती है कि दुनिया मे शादी-शुदा लोग ज्यादा है या चुपचुप प्रेम करने वाले। दोनो इस प्रश्न को अनुत्तर छोडकर सो जाते है। दूसरे दृश्य मे मधु अपने वच्चो के साथ अपनी मा प्रतिभा के घर मे दिखाई पडती है, और अपने सैनिक पति के जीवन के विषय मे सशक हो उठती है। तीसरे दृश्य मे जितेन एक पार्टी मे अत्यधिक शराव पीकर गाडी चलाता है और उसकी असावधानी से एक व्यक्ति आहत हो जाता है। अस्पताल मे फोन द्वारा जितेन इसका पता लगाता है और अपनी नौकरी छूटने और कारावास का दण्ड पाने की खवर सुनकर काप उठता है।

दूसरा अक सर्वथा स्वतंत्र है। इसमे जीवन, डाक्टर और शशि का वार्तालाप है। इसके द्वारा शशि की विक्षिप्त अवस्था और पुलिस की करतूत का वर्णन है। जीवन अपनी प्रेयसी को टेलीफोन करता है कि मैं अस्पताल मे हूँ। मुझे मिनर्वा होटल के सामने चोट आ गई। जितेन अपने मन मे यह सुनकर सोचता है कि 'पता नही वह कैसा आदमी था। शायद वह भी शादी-शुदा रहा हो। शायद वह भी मेरी तरह अपने वीवी-वच्चो को प्यार करता रहा हो।' 'लेखक लिखता है, 'दो अको मे अलग-अलग दो बिलकुल भिन्न कथाएँ है। पर एक घटना दोनो को अन्त मे जोडकर एक कर देती है। अभिनय दिसम्वर १९५१ मे प्रयाग मे हो चुका है।'

जामे-कहकहा नाटक (सन् १८९९, पृ० २४), ले० हरिहर प्रसाद, प्र० मगध शुभकर प्रेस गया, *पात्र* पु० ३, स्त्री २, *अक* २, *दृश्य* ३, ३।

इस पद्यवद्ध नाटक मे वेश्यागमन से एक धनी व्यक्ति की दुर्दशा दिखाई गई है। नाटक के बीच-बीच मे रगमचीय सकेत गद्य मे है।

तारकेश्वर नामक व्यक्ति वनारस की अख्तर जान वेश्या से प्रेम करता है और उसके साथ हरिहर क्षेत्र का मेला देखने जाता है। वहाँ अहमदुल जरीफ नामक मुसलमान उसे उडा ले जाता है। तारकेश्वर पर वेश्या के कारण कर्ज हो जाता है और वह अन्त मे भिखारी वन जाता है।

जलियाँवाला वाग (सन् १९४९, पृ० १९२), ले०. श्री रामचन्द्र आसरे, प्र० श्री भारतीय प्रकाशन मन्दिर, २८, वासतल्ला गली, कलकत्ता, *पात्र* पु० १३, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* . ७, १०, ५।

घटना-स्थल : भारत व इग्लैड, जलियावाला वाग।

इस राजनीतिक नाटक मे जलियावाला वाग मे अग्रेजी अफसरो का अत्याचार और उसका परिणाम दिखाया गया है।

जनरल डायर पंजाव का फौजी गवर्नर वन कर भारत आता है। यहाँ वह मनमाने अत्याचार करता है। जलियावाला वाग की निर्मम घटना भी उसी के आदेश से होती है। भारतीय स्वतत्रता के उपासक अनेक क्रातिकारी यत्र-तत्र सरकार की नीद हराम कर रहे है। जलियावाला वाग की घटना का प्रतिशोध लेने के लिये क्रान्तिकारी युवक मदनसिह लन्दन पहुँचता है। वहा इण्डिया हाउस मे भरी सभा मे जनरल डायर और जैटलैण्ड को गोली से उडा देता है। अन्त में

उसे फांसी होती है, जिसे वह हँसते हुए स्वीकार करता है।

जिन्दा लाशें भूखे भेड़िये (सन् १९६९, पृ० १११), ले० ·श्रीमृत; प्र० नरवदा बुक डिपो, जवलपुर, पात्र: पु० १२, स्त्री ३; अक ३।

घटना-स्थल : घर, सडक, डाक्टर की डिस्पेंसरी, वेश्यालय, वकील का घर, अदालत का कमरा।

इस नाटक मे धर्म व समाज के ठेकेदारो की काली करतूतो का भडाफोड किया गया है। मास्टर उदयशकर सड़क पर पडे हरिजन वालक गोपाल को घर पर लाकर पुत्रवत् पालता है। एक दिन गोपाल, सूरज, चन्दा, तारा आदि शाम को तुलसी-चौरे के सामने भगवान् की आरती करते है और पुजारी धर्मानद चमार के लडको के साथ आरती करने के लिये उदयशकर को सर्वनाश हो जाने का शाप देता है। उदयशकर अपने प्राणो का मोह छोडकर जन सेवा करता है। सर्वस्व वलिदान के उपरान्त भी क्षय रोग से पीडित होने पर इलाज के लिए उनके पास एक पैसा भी नही है। धर्मानद ठाकुर जी के नाम पर उदय को वीस रुपये कर्ज देता है। वावा जी कचन से रुपये लेकर उदय की सहायता करते है। धर्मानद वावाजी (कैलाश) को कुछ रुपये कर्ज देता है, जिसे वह चुका नही पाते। इस कारण धर्मानद उनकी सारी जमीन-जायदाद हडप लेता है। कचन का भाई साम्प्रदायिक दगे मे मारा जाता है। अत वह असहाय दशा मे गा-वजा कर अपना पेट पालती है। लेकिन भूखे भेडिये उसका जिस्म खा जाना चाहते है। धर्मानंद, लक्ष्मीकान्त, छिकौडीलाल दीनानाथ, इन्सपेक्टर सव एक रात को अपनी काम-पिपासा को पूरी करने के लिए कचन के कोठे पर इकट्ठे होते है और उसके हाथों शराव पीते है। कचन केवल गाना गाकर उन सवकी काली करतूतो के भडाफोड की धमकी देकर भगा देती है।

सूरज, धर्म, तथा समाज को भ्रष्ट करने वाले धर्मानद, लक्ष्मीकान्त, छिकौडी लाल, दीनानाथ के खिलाफ जन-सहयोग से आन्दोलन छेडता है। एक जुलूस का नेतृत्व करते हुए पुलिस सूरज को गिरफ्तार करती है। जेल जाने से पहले कचन सूरज के गले मे माला पहनाती है। उदयशकर कंचन को अपनी पुत्रवधू स्वीकार करता है। कचन धर्मानद, लक्ष्मीकान्त, छिकौडीलाल के खिलाफ सप्रमाण अभियोग लगाती है। मद्यप दीनानाथ रात को तारा की इज्जत उतारने के लिए उसके पीछे भागता है। वह तारा को पकडने ही वाला है कि इन्सपेक्टर मौके पर पहुँच कर दीनानाथ को पकड लेता है और उसी समय वावा पहुँचकर तारा की जान वचाते है। न्यायाधीश इनकी काली करतूतो को सप्रमाण सिद्ध करके लम्वी सजा देता है और सूरज को सम्मान से मुक्त करता है।

जीत मे हार (सन् १९३७, पृ० ११२), ले० : चन्द्रशेखर पाण्डे, प्र० : ज्ञान लोक प्रयाग, *पात्र* . पु० १४, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य :* ८, ७, ६।

घटना-स्थल सुखई का घर, कलेकटर साहव का इजलास, हरखू माली का घर।

इस मौलिक नाटक मे मुकदमेवाजी से होने वाली हानियो का चित्रण है। इस मे हर छोटी वातो मे मार-पीट तथा मुकदमेवाजी करने वाले रामधीन एक दिन अपना खेत खोदते-खोदते सुखई के खेत मे आ जाता है। दोनो मे विवाद होता है। अन्त मे लाठी चल जाने से सुखई की मृत्यु हो जाती है। उसका पुत्र हरदीन मृत्यु के वहुत दिन वाद उसका वदला लेने के लिए मुकदमा चलाता है। मुकदमा जीत जाता है, जिसमे रामदीन उसे भी मारने के लिए सोचता है परन्तु लोगों के प्रयास से मित्रता हो जाती है। इस प्रकार गाँव मे द्वेष के स्थान पर भ्रातृभाव आने लगता है।

जीवन-यज्ञ (सन् १९३५, पृ० २४७), ले० : डा० सत्येन्द्र, प्र० · सरस्वती सदन, लश्कर, ग्वालियर; पात्र . पु० २८, स्त्री ६, अक : ४, दृश्य ७, ७, ७।

घटना-स्थल : सोलकी रानी का देवी मदिर, तालाव, राजसभा, गाँव।

इस ऐतिहासिक नाटक के प्रथम अक मे धार-नरेश की दो रानियो—सोलकी और वाघेली—की प्रतिस्पर्धा दिखाई गई है। छोटी रानी वाघेली चतुराई से राजा द्वारा अपने राजकुमार रणधवल को युवराज घोषित करा लेती है। सोलकी की रानी का पुत्र जगदेव गृह-कलह बचाने के लिये त्याग का मार्ग ग्रहण करता है और पाटनराज सिद्धराज जयसिह के यहाँ प्रस्थान करता है। साथ मे अपनी पत्नी वीरमती को भी ले लेता है। दूसरे दृश्य मे जगदेव जगल के उस सिह-सिहनी के जोडे का, जिन्हे बडे-बडे शूरवीर नही मार सके थे, शिकार करता है। उसके कान और पूछ काटकर रख लेता है। वही सरोवर पर लालजी नायक आता है। नायक मरे हुए सिह के जोडे को अपना शिकार घोषित करता है और पाटन भेज देता है।

द्वितीय अक मे सिद्धराज की राजसभा मे सिह-युग्म के वध के लोक-कल्याणकारी कार्य करने वाले लालजी नायक का सम्मान होना था। किन्तु व्यभिचारी लालजी की वीरता के प्रति नागरिको के मन मे शंका है। शका का कारण सिह-युग्म के कटे हुए कान-पूँछ का होना भी है। किन्तु राजा विचार-पूर्वक वास्तविक वीर जगदेव को खोज लेता है और उसे लखटकिया बनाकर अपने महल के पास ही निवास की व्यवस्था कराता है। जगदेव डेढ नाम की अस्पृश्य जाति का सुधार करता है जिससे उनमे पचायतराज की स्थापना तथा गाधी के अछूतोद्धार का स्वर मुखरित हो उठता है। इन सभी कार्यो मे जगदेव के वढते महत्त्व को रोकने के लिये षड्यत्र भी प्रारम्भ होता है। किन्तु जगदेव प्रजारक्षण, राज्य-विकास योजनाओ तथा राज्य की समृद्धि मे लगा रहता है। वह अपने पौरुष से, उदयन-मंत्री, डूगराशी नगराध्यक्ष के षड्यत्र से राजा तथा राज्य की रक्षा करता है और सती जसमा तथा वेश्या विन्दु की मर्यादा को भी वचाता है। धारवासी उसकी प्रशसा सुन राज्य मे लाकर उसका सम्मान करते है।

जुआरी-खुआरी (सन् १८२२, पृ० ६), ले० : प्रताप नारायण मिश्र; *पात्र* · ५, ब्राह्मण खड १ मे प्रकाशित।

यह एक प्रहसन है जिसको मिश्रजी पूर्ण न कर पाये। इसके आरम्भ मे नान्दी-पाठ है। चार सेठ, प० लक्ष्मीदास से जुआ खेलने का शुभ मुहूर्त निकालने का आग्रह करते है। ज्योतिषी प० दक्षिणा मे पचास रुपया माँगते है। लाला धनदास, पडितजी को दक्षिणा देकर उनसे अनुष्ठान करने की प्रार्थना करता है।

प्रहसन अपूर्ण है। अत· द्यूत-क्रीडा के दुष्परिणाम का पता नही चल पाता। पात्रों के सवाद मे व्रजभाषा और वैसवाडी का प्रयोग मिलता है। अधिकाश स्थलो पर खडी वोली दिखाई देती है। प० लक्ष्मी दास की वोली वैसवाडी—उदाहरणार्थ "औ लालाजी वहुत हाव-हाव करथै तो का कहूँ के राजि पाय जाथै, भगवती कै दया चही हमका एई चार घर का थोरे है।"

जुझार सिंह बुन्देल (पृ० ६६), ले० शिव प्रसाद चारण, प्र० महर्षि मालवीय इति-हास परिषद, उपासना मन्दिर, दुगड्डा (गढवाल), *पात्र* पु० २४, स्त्री ६; *अक* ३; *दृश्य* . ५, ४, ७।
घटना-स्थल सैंहूर, वनमार्ग, ओरछा, आगरा शाहीदरवार, चौरागढ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे जुझार सिंह ओरछा-नरेश के पराक्रम और वलिदान का वर्णन है। शाहजहा हिन्दुओ को मुसलमान वनाने लगा है इससे हिन्दुओ मे चारो तरफ आतक फैलता है। इस अत्याचार की परि-स्थिति मे जुझार सिंह अपने प्राणो के रहते हुए मुगलो की अधीनता स्वीकार करने के लिए तैयार नही होता। शाहजहा औरगजेव को दमन के लिए भेजता है। इतनी घोर परि-स्थिति मे भी जुझार सिंह नही घवडाता। जुझार सिंह की माता रानी पार्वती उसकी पत्नी ललिता को समझाती है कि वेटी घव-राओ नही। जुझार सिंह की पत्नी रानी भवानी भी शत्रुओ के चगुल मे फसने मे अच्छा मृत्यु को ही मानती है। अन्त मे जुझार सिंह देश की रक्षा मे वलिदान हो जाता है।

'जुलमे अजमल' उर्फ जैसा दो वैसा लो : (सन् १८८३), ले० : मुहम्मद महमूद मियां 'रौनक' बनारसी ।

इस जासूसी नाटक मे नुरुन्निसा नामक एक सुन्दरी के सतीत्व की रक्षा का दृश्य दिखाया गया है ।

तुमान नामक द्वीप पर एक तुर्क अमीर की दो सन्तान है—नूरुन्निसा और शम्सरू। नूरुन्निसा के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर उस द्वीप का निवासी एक निर्दयी हबशी नवाब अजल्म उससे शादी का प्रस्ताव करता है किन्तु नूरुन्निसा उसे ठुकरा देती है। अजल्म के अत्याचार से अपनी मर्यादा की रक्षा के लिये नूरुन्निसा भाई शम्सरू के साथ द्वीप छोडकर भाग जाती है पर नवाब वहा भी उनका पीछा करता है। भयानक तूफान मे नूरुन्निसा का जहाज टूट जाने से भाई-बहन पृथक् हो जाते है। नूरुन्निसा को पानी मे से एक अमीर और गाडीवान निकालकर अपने घर ले जाते है और दोनो उसके सौंदर्य पर आसक्त हो जाते है।

अमीर नूरुन्निसा को नाना प्रलोभनो से आकृष्ट करना चाहता है, पर उनकी दाल नही गलती । अब उन्होने उसे बदनाम करके परास्त करना प्रारम्भ किया । अजलम भी जहाज के डूबने से उसी अमीर के यहाँ शरण लेता है जहाँ वह गाडीवान को मिलाकर और नूरुन्निसा के पास पहुँचता है । शरण-दाता अमीर उन दोनो मे प्रणय समझकर उन्हे बेच देता है । शम्सरू अपनी बहिन को पहचान कर दोनो को खरीद लेता है । अज-लम के साथ बहिन के सतीत्व भंग होने की उसे आशका होती है, इसलिये बहिन का वध करना चाहता है । सयोग से शाम देश के राजकुमार मुनव्वरहसन नूरुन्निसा की छवि से अभिभूत होकर अपने पिता से उसके साथ शादी की अनुमति माँगते है, पर पिता अजलम, गाडीवान और अमीर के साथ उसके अनुचित सम्बन्ध की चर्चा के कारण पुत्र को मना करता है। नूरुन्निसा के सतीत्व का अन्य ढग से रहस्योद्घाटन होने पर मुनव्वर नूरुन्निसा से विवाह कर लेता है। विवाह से भाई शम्सरू भी प्रसन्न हो जाता है।

जै-जै हिन्दुस्तान (सन् १६६५, पृ० ६४), ले०, जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६, पात्र पु० ४, स्त्री २, अक : २ ।

घटना-स्थल गाँव के मकान की बैठक ।

इस नाटक मे सग्राम के सेनानियो को उपेक्षित और देश-द्रोहियो को नेता दिखाया गया है ।

गाँव का मुशी कुन्दन निर्धनता मे भी आजादी का दीवाना है और उसकी पत्नी लच्छी भी असहयोग आन्दोलन मे भाग लेती है । सन् १६४२ की क्रांति मे कुन्दन काग्रेस आन्दोलन मे कूद पडता है। गाँव का मुखिया चन्दू देशद्रोही और अग्रेजो का पिट्ठू है। चन्दू कुन्दन को गोली से खत्म कर देने की धमकी देता है तो कुन्दन उत्तर देता है "मैं तो शहीद की मौत मरूंगा, लेकिन तू गद्दार कुत्ते की मौत मरेगा ।" रतन, गीता, केशव और उनके दल वाले अग्रेजी सेना को रोकने के लिये गाँव तक आने वाली पुलिआ को बम से उडा देने की योजना बनाते है । रतन हथगोला लेकर घर आता है और मा-बाप से आज्ञा एव आशीर्वाद माँगता है। कुन्दन रतन से हथगोला छीनकर स्वय ही पुलिया उडाने चल पडता है, लेकिन दुर्भाग्य से वह पुलिया नही उडा पाता । अग्रेजी सेना गाँव मे घुस आती है और बडी क्रूरता से गाँव मे आग लगा देती है। कुन्दन अग्रेजी सेना की गोली से शहीद हो जाता है। स्वतन्त्रता मिलने पर देशद्रोही चन्दू खादी का कपडा पहनकर नेता बन जाता है ।

ज्योतिपर्व (सन् १६६३), ले० · मनोहर प्रभाकर, प्र० : कल्याणमल एण्ड सस, जयपुर, 'जसमा तथा अन्य संगीतरूपक मे सग्रहीत', पात्र . पु० ३, स्त्री २; अक-दृश्य-रहित ।

'ज्योतिपर्व' सगीतरूपक दीपावली के विभिन्न पक्षो का दिग्दर्शन कराता है । दीपा-वली कही प्रकाश कही अन्धकार की सर्जना करती है । अत सम्पन्न-विपन्न वर्गो मे विभक्त इस समाज मे इस पर्व का कोई महत्त्व नही। लेखक के अनुसार समता के धरातल पर ही दीपावली का मूल्याकन किया जा सकता है।

विश्व के करोडो दीप बुझे पडे है। प्रत्येक भारतवासी का कर्त्तव्य है कि इन बुझे हुए दीपो को पुन जलाए। तभी समाज मे नव-ज्योति का आगमन हो सकता है।

ज्योत्स्ना (सन् १६३६, पृ० १६६), ले० रामदीन पाडेय, प्र० पुस्तक भण्डार, लहेरिया सराय, *पात्र* पु० ७, स्त्री ४; *अक* : ४, *दृश्य* ५, १०, ८, ८।
घटना-स्थल देहाती खलियान मे गेहूं, मटर, जौ आदि कुछ देते हुए अधिकतर वीज-रूप मे रत्नपुर सव-डिविजन की कचहरी, न्यायालय।

यह यह एक सामाजिक नाटक है। इसमे गॉव की समस्याओ की ओर सकेत कर उसके सुधार का उपाय बताया गया है।

वीरेन्द्र इस नाटक का प्रधान पात्र है। वह अपने त्यागवल से गाव के निरकुश जमीदार इकवाल को सुधार देता है। ग्रामीण युवक मृत्युन्जय की कन्या ज्योत्सना सद्भावना प्रेम और परिश्रम से वीरेन्द्र के साथ गाव मे सेवा-कार्य करती है। वीरेन्द्र के त्याग, सेवा और प्रेम से कुछ दिन वाद गाव एक आदर्श गाव वन जाता है।

ज्वार भाटा (सन् १९६०, पृ० ११२), ले० राजकुमार, प्र० हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, *पात्र*. पु० १०, स्त्री का अभाव है, *अक* : ४; *दृश्य* ३, ७, ५।
घटना-स्थल · कमरा, वाजार आदि।

वकिम नामक एक पात्र समाज-सुधार की भावना से एक वेश्या की लडकी नीलिमा को उसकी माँ के मरते वक्त अपने सरक्षण मे ले लेता है। उसको गुप्त रूप से अपने एक साथी गोपाल वावू के यहा रखकर लोगो से यह रहस्य छिपाये रखता है कि नीलिमा वही है। जनता यही जानती है कि नीलिमा कोई दूसरी लडकी है जो वकिम के पास रहती है। इससे वकिम के ऊपर उच्चवर्ग के लोग कीचड उछालते है और उसे वेश्या रखने का आक्षेप करते है। हर एक ढंग से ताडक वकिम को वेइज्जत करने का प्रयत्न करता है। दूसरी ओर नेताओ के दो वर्ग दिखाये गए है। एक वर्ग के प्रतिनिधि सुशील, वकिम वगैरह है। वे समाज की रूढियो, बुराइयो और कमजोरियो को उखाड़ फेकने के लिए वद्ध-परिकर है। दूसरे वर्ग का प्रतिनिधित्व ताडक और चन्द्रनाथ करते है। चन्द्रनाथ एक घूसखोर नेता है। घूस लेने के लिए उसका एजेट ताडक है। यह उसमे हिस्सा लेता है और चन्द्रनाथ यह नही भाँपने देता कि यह घूस उसे भी मिलती है। सूदखोरी और महाजनी वृत्ति की भी एक समस्या साथ-साथ चलती है।

दूसरे अक मे गोपाल की पालित लडकी नीलिमा के विवाह की सारी तैयारियाँ हो गई है। इसी समय उनका महाजन अमरनाथ कुडकी लिए आता है और गोपाल के विवाह मे जुटाये सामान को कुड़क कराता है। ताडक ही इन सव जालसाजियो की जड़ है। जिस लडके से शादी तय थी उसकी मति फेरने के लिए ताडक प्रयत्न करता है। इससे वकिम, सुशील और गोपाल वहुत चिंतित होते है परतु सुशील शीघ्र ही जाकर कर्ज का रुपया जमा कर आता है और कुडकी से गोपाल को वचाता है। छठे और सातवे दृश्य तक आते-आते ताडक के कुत्सित आचरणो का भण्डा-फोड होने लगता है। ताड़क और चन्द्रनाथ मे भी कलह छिड जाता है।

तीसरे अक के प्रथम दृश्य मे वकिम के साथी गोपाल कार्यक्षेत्र से ऊवकर लडकी नीलिमा (वेश्या-पुत्री) के विवाह का भार वकिम पर छोड कही चला जाता है। दूसरे मे ताडक, चन्द्रनाथ द्वारा विष देकर मार डाला जाता है। तीसरे दृश्य मे चन्द्रनाथ को अनैतिक कार्यो के कारण हिरासत मे डाल दिया जाता है। चौथे मे प्रतिपक्षी भी आकर वकिम, सुशील आदि नि.स्वार्थ समाजसेवियो के साथ मिल जाते है। पाँचवे मे नीलिमा के वेश्या-पुत्री होने का सारा रहस्य वर के पिता पर खुल जाता है फिर भी वह उसे अपनी पुत्र-वधू के रूप मे स्वीकर कर समाज-सुधार करता है।

अभिनय—२६ जनवरी १९६० को नागरी नाटक मडली द्वारा काशी मे अभिनीत।

झ

झांकी (सन् १९४२), ले० आनन्दीप्रसाद श्रीवास्तव, प्र० गाधी हिन्दी पुस्तक भण्डार प्रयाग, *पात्र* . पु० ३, स्त्री १, अक ४ । *घटना-स्थल* उपवन, भवन, महल, आश्रम ।

इसमे अको के स्थान पर चार काव्यबद्ध संभाषण है ।

इन सभाषणो मे नाट्य-तत्व की अपेक्षा काव्य-तत्व ही अधिक है। प्रथम सम्भाषण मे भाग लेने वाले पात्र है—पार्वती और सीता । विवाह से पूर्व सीता अपने भावी जीवन के प्रति जिज्ञासु हो पार्वती की उपासना कर उनके दर्शन होने पर प्रश्न करती है और पार्वती उनके भावी जीवन की सम्पूर्ण झाकी दिखलाकर उन्हे आशीर्वाद देती है, साथ ही कह देती है कि सीता को उस सवाद की बाते विस्मृत हो जावेगी । दूसरे सम्भाषण मे भारत-लक्ष्मी शिवाजी को भारत की तत्कालीन क्षोभकारी वस्तुस्थिति बताने के उपरान्त भावी भारत की सामाजिक, राजनीतिक और सास्कृतिक दुर्दशा का चित्र प्रस्तुत करती है । साथ ही प्राचीन भारत की वर्तमान से तुलना कर उसकी दयनीय स्थिति पर शोक प्रकट करती है । तीसरे सम्भाषण की नायिका है मरणासन्न नूरजहा । मृत्यु-शय्या पर लेटी हुई नूरजहा अपनी पुत्री लैला से विगत जीवन की घटनाओ का वर्णन करने के साथ उन भावनाओ और जीवन-सिद्धान्तो को भी प्रस्तुत करती है जिनसे अनुप्रेरित हो उसने शेर अफगन के प्रति हार्दिक प्रेम होते हुए भी जहागीर से विवाह किया था । प्रस्तुत सम्भाषण नूरजहा के चरित्र पर नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के कारण सुन्दर है। चौथे सभापण 'चाणक्य' और 'चन्द्रगुप्त' मे चन्द्रगुप्त विभिन्न तर्क—राज्य को चाणक्य की आवश्यकता, लोकहित के लिए उनकी उपस्थिति, वन-जीवन का क्लेश आदि प्रस्तुत कर चाणक्य को वानप्रस्थाश्रम प्रवेश से रोकना चाहता है परन्तु चाणक्य उसके तर्कों को काटकर तथा आध्यात्मिक विकास को सर्वश्रेष्ठ कहकर वन के लिए प्रस्थान करते है।

झांसी की रानी (सन् १९५७, पृ० १४३), ले० रणधीर साहित्यालकार, प्र० कान्ति प्रकाशन, चितपुर रोड, कलकत्ता-७, *पात्र* पु० १२, स्त्री ३, अक ३, *दृश्य* ७, ६, ५ । *घटना-स्थल* विद्यालय, घर, कमरा, ग्वालियर का किला, कालपी का किला ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे झासी की रानी का युद्ध-कौशल दिखलाया गया है। इसमे झासी की रानी लक्ष्मीबाई देश की स्वाधीनता के लिए अँग्रेजो से युद्ध करती हुई वीरगति को प्राप्त होती है । लक्ष्मीबाई के जीवन को लेकर अनेक नाटक लिखे गये है जिनकी कथावस्तु मे एकरूपता पाई जाती है।

झांसी की रानी (सन् १९५६, पृ० १३६), ले० वृन्दावनलाल वर्मा, प्र० मयूर प्रकाशन, झाँसी, दिल्ली, *पात्र* . पु० १५, स्त्री ५, अक ५, *दृश्य* . ८, ९, १०, १०, १० । *घटना-स्थल* बुन्देलखण्ड के वन, खेल-मैदान, युद्ध-शिविर ।

वर्मा जी ने पाठको के आग्रह पर झासी की रानी नामक अपने उपन्यास को नाट्यरूप दिया है। नाटक का आरम्भ बिठूर मे मनु (लक्ष्मीबाई) तथा नाना साहब के खेलो से होता है। रानी के बचपन, गगाधरराव से विवाह, दामोदरराव को गोद लेने एव गगाधर राव की आकस्मिक मृत्यु से उत्पन्न करुण-कथा यहाँ मिलती है । वैधव्य से पीडित रानी को अग्रेजो के अत्याचारो का शिकार बनना पडता है। वीरागना प्रतिज्ञा करती है कि वह अपनी स्वतन्त्रता अग्रेजो के हाथो नही वेच सकती । अपने स्वाभिमान की रक्षा मे वह युद्ध की घोषणा करती है । जवाहिर

सिंह, रघुनाथसिंह, तात्याटोपे आदि वीर रानी के सहयोगी है। घर का भेदी पीर अली रानी की सेना के भेद का पता शत्रु को देता रहता है। यही पर सूचना मिलती है कि डाकू सागरसिंह जेल से निकल कर भाग गया है। तृतीय अक मे रानी सागरसिंह की लूटमार से चिन्तित है। उसे पकडने के लिए खुदाबख्श जाता है, किन्तु घायल होता है। सागरसिंह फिर भी पकडा जाता है तथा रानी से क्षमादान पाता हुआ उनकी सेना मे सम्मिलित हो जाता है। भेदिया पीरअली भी सागरसिंह की सेना मे मिलकर जनरल रोज को भेद दे रहा है। अग्रेज रानी से समर्थको सहित समर्पण करने का आग्रह करते है। रानी का दर्प जागता है, वह युद्ध के लिए ललकारती है। घमासान युद्ध होता है। युद्ध-व्यवस्था के लिए रानी सखियो मे जुहीबाई तथा काशीबाई का सहारा लेती है। विकट युद्ध मे रानी जूझ रही है। सहसा, दुल्हाजू के विश्वासघात के कारण अग्रेज किले मे घुसते है। सुन्दर, मोतीबाई आदि रणक्षेत्र मे प्राण दे देती है। निराश रानी आत्महत्या करना चाहती है, तभी सरदार भोपटकर कहते है—"आप आत्मघात करने जा रही है ? यही न ! कृष्ण की पूरी गीता जिसको कठाग्र है, जो गीता के अठाहरवे अध्याय को अपने जीवन मे बरतती चली आई है, और जो प्रत्येक परिस्थिति मे स्वराज्य-स्थापना का, यन की वेदी पर प्रण कर चुकी है, वे आत्मघात करेगी ? करिए कृष्ण का अपमान, करिए गीता का अनादर ? आप रानी है। आपकी आज्ञा का पालन तो करना ही पडेगा। परन्तु आपके उपरान्त देश की जनता क्या कहेगी जिसकी रक्षा के लिए आपने बीडा उठाया है।" इस प्रेरणा से अभिभूत रानी कालपी आती है। यहा भी पराजय मिलती है। यही पर रानी ग्वालियर पर अधिकार करने के उपरान्त अंग्रेजो से युद्ध की योजना बनाती है। बाबा गगादास के पास जाकर रानी युद्ध का भविष्य पूछती है। रानी नया घोडा लेकर युद्ध-क्षेत्र मे जाती है, युद्ध मे सुन्दर तथा रानी दोनो वीर-गति पाते है। रानी का शव बाबा गगादास की कुटिया के पास ले जाया जाता है, बाबा जी लकडी के अभाव मे कुटिया तोडकर शवदाह करते है। स्वामिभक्त रघुनाथसिंह बन्दूक लेकर चिता की रक्षा करता है। रामचन्द्र देशमुख दामोदर राव को लेकर दक्षिण की ओर चला जाता है।

झाँसी की रानी (सन् १६७० ई०, पृ० ७४), ले०. चतुर्भुज, प्र० मगध कलाकार प्रकाशन, १०६, श्रीकृष्ण नगर, पटना-१, *पात्र* . पु० १३, स्त्री १, *अंक* नही, *दृश्य* ७। *घटना-स्थल* दरबार, शिविर, दुर्ग।

सन् १८५७ ई० की क्रान्ति की सेनानी झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई इतिहास-प्रसिद्ध है। नाटक उस स्थल मे प्रारम्भ होता है जहा ब्रिटिश मेजर रानी से आत्म-समर्पण करने के लिए कहता है। युद्ध होता है। गौस खा रानी के लिए प्राणदान देता है और अन्त मे रानी की मृत्यु होती है।

प्रथम अभिनय—१६७० ई० (प्रकाशन-पूर्व)।

झासी की रानी (सन् १६६८, पृ० १२२), ले० न्यादर सिंह बेचैन, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, *पात्र* पु० २८, स्त्री ७, *अक* ३, *दृश्य* ७, १०, १२।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है जिसमे मोरोपन्त की कन्या वीरागना झासी की रानी के चरित्र को कथावस्तु के रूप मे अपनाया गया है। प्रथम अक मे झासी के राजा गगाधर राव के साथ छबीली की शादी, पुत्रोत्पत्ति आदि घटनाओ को प्रदर्शित किया गया है।

द्वितीय अक मे लक्ष्मीबाई के पुत्र की मृत्यु और उसके कारण राजा का बीमार होना, बीमारी की दशा मे दामोदर राव को गोद लेना और उसकी स्वीकृति के लिए प्रार्थना-पत्र भेजना तथा गगाधरराव की मृत्यु की घटनाये चित्रित की गई है। बीच-बीच मे सवादो द्वारा देश की स्थिति पर भी प्रकाश डाला गया है।

तृतीय अक मे अग्रेज शासको का रानी के दत्तक पुत्र को अस्वीकार करना और झाँसी राज्य को अग्रेजी राज्य मे मिलाने के

घोषणा, रानी द्वारा अग्रेजो को राज्य न सौपना और राज्यभार स्वय सभालना, राज्य की सुव्यवस्था तथा डाकुओ का अन्त करना, सैन्य संगठन, स्त्री सेना बनाना और शासन करना प्रदर्शित किया गया है। रानी का तात्याटोपे एवं नाना साहब से सम्बन्ध कायम कर क्रान्ति का बिगुल बजाना, वीरतापूर्वक सघर्ष और देश-द्रोहियो के कारण पराजय तथा अन्त मे वीरतापूर्वक लडते हुए रानी का अन्त दिखाया गया है।

ड

डबल नवाब नाटक (सन् १९६६, पृ० १९), ले० . हरिहरप्रसाद गिगल; प्र० : अग्रवाल प्रेस, गया, पात्र पु० १५, अक : १, दृश्य . ६।

घटना-स्थल . मकान, इजलास।

यह एक प्रहसन है। इस प्रहसन मे रईस, नवाब, वकील और सेठ पर व्यग्य किया गया है। शरीफ मिरजा चार मुसाहिबो के साथ भोजन कर रहे है। इसी बीच पन्नाबाई रोती हुई आती है। पन्नाबाई शरीफ मिरजा से यह शिकायत करती है कि डबल नवाब ने बहुत अपमान किया है। उन्होने यहाँ तक कह दिया है कि मेरी नाक काट ली जायगी। पन्नाबाई मुकदमा दायर करती है। कोर्ट मे लेन-देन की बातचीत होती है। डबल नवाब अपनी बेइज्जती पर पश्चात्ताप कर रहा है। अन्त मे मुकदमे का फैसला पन्नाबाई के ही पक्ष मे होता है।

इस प्रहसन मे हास्य उत्पन्न करनेवाले १५ गीत भी जोडे गये है।

डाँडी-यात्रा (सन् १९५९, पृ० ७८), ले० · मोहन लाल 'महतो' 'वियोगी', प्र० पुस्तक भण्डार पटना, पात्र . पु० १५, स्त्री १, अक ३; दृश्य ३, ३, ३।

घटना-स्थल ' साबरमती आश्रम, मार्ग, समुद्रतट।

इस नाटक मे महात्मा गाधी की डाँडी-यात्रा नामक सत्याग्रह की घटना को आधार बनाया गया है। तीनो अको मे तीन दृष्टि-कोणो से नमक सत्याग्रह पर प्रकाश डाला गया। शासक पक्ष और विदेशी, देशी पत्रकार एव भारतीय जनता अपने महान् नेता के कार्य को जिस रूप मे देखती है, उसी को मूर्त रूप देने का प्रयास है।

सम्पूर्ण नाटक के केन्द्र मे महात्मा गाधी और उनका सत्याग्रह है। नाटक मे चारित्रिक विशेषताओ का विशेष ध्यान रखा गया है। श्रद्धावनत लेखक स्वय लिखता है—"बापू के नाम से जो भी लिखा जाय वह एक पुण्य-कार्य बन जाता है।" बीच-बीच मे गीतो, भजनो, उपदेशो का प्रयोग मिलता है।

डाकू मानसिंह (सन् १९६३, पृ० ६८), ले० . श्री चन्द्र जोशी, प्र० गिरधारीलाल थोक पुस्तकालय, दिल्ली, पात्र . पु० ६, स्त्री १।

यह नाटक बेतवा और चम्बल की घाटी के मशहूर डाकू मानसिंह के क्रियाकलापो का अकन करता है। नाटक मे डाकू मानसिंह जितना खूखार है उतना सहृदय भी। विधवा ब्राह्मणी की एकलौती पुत्री केशर को मानसिंह के पुरोहित तलफीराम का पुत्र युवराज अपहृत कर लेता है। विधवा ब्राह्मणी मानसिंह से अपनी कथा कहती है। मानसिंह प्रण करता है कि जब तक मै केशर को छुडा नही लाऊँगा, पानी नही पीऊँगा। अन्तत उसे छुडाकर लाता है और फिर इससे उसकी दुश्मनी युवराज से बढ जाती है। वह भागता है और जगलो मे जाकर डाके डालता है। आगरा कॉलेज के लडको का अपहरण कर रुपए की माँग करता है किन्तु अन्त मे काके-पुरा गाव के बाहर पुलिस से मुठभेड होती है जिसमे वह मारा जाता है। साथ ही सूबेदारसिंह भी मौत के घाट उतार दिया जाता है।

डिक्टेटर (अन्तर्राष्ट्रीय नाटक) (सन् १९३७, पृ० ५६), ले० पाण्डेय बेचन शर्मा, 'उग्र', प्र० प्रतिभा पागल पार्टी कलकत्ता, पात्र पु० ७, स्त्री २, अंक ३, दृश्य ३, ६, १।

घटना-स्थल विश्वपथ, जिनेवानगर।

इस राजनीतिक नाटक मे जनता को भ्रम मे डालकर स्वार्थ सिद्ध करनेवाले मनचले नेताओ का वास्तविक रूप सामने आता है। आज अधिकांश नेता अपने को जनता का सेवक घोषित करते है। विप्लव माया से कहता है कि ये नेता "मार डालेगे! माता जनता को।" जनता माता को घेरकर जानबुल, विप्लव, अकिल, पेरी, बकवादी आपस मे लडते है। वे हिन्दुस्तानी को देखकर रुष्ट होते है। पेरी कहता है 'मगर, इडियन तो कोई आदमी नही, निकालो इसको।'—तीसरे दृश्य मे नाटक का नायक डिक्टेटर जनता माता पर क्रुद्ध होकर कहता है—'अगर तू वरदान न देगी तो मैं तेरा खून करूगा।' इसी समय महाकाल प्रकट होकर डिक्टेटर को आशीर्वाद देता है। आशीर्वाद पाकर डिक्टेटर जनता की हत्या को दौडता है। जानबुल और डिक्टेटर मे विवाद होता है और जानबुल, अकिल साम, पेरी आदि डिक्टेटर को घेर लेते है। बकवादी ललकार कर कहता है—"मैं सरे-बाजार कहता हूँ, डिक्टेटर आततार्इ है, नीच है, नृशस है, नराधम है।" वह आगे कहता है "कि मि० जानबुल मेरी लीडरी से चारो खाने चित ! अकिल साम की दाढी भय से काली मे सफेद हो गई है।"

सन् १९४८ मे स्थिति बदल जाती है। माता जनता त्रिशूल लिए खडी है और उसे घेर कर खडे है मोशिये विप्लव और बहुत से गरीब दुखिया, रोगी। विप्लव माता से वरदान मागता है कि जनता पर जनता ही राज करे। जनता के गरीब और दुर्बल बच्चे नन्हे-नन्हे दीप जलाकर छोटी-छोटी घटियाँ बजाकर करुण स्वर से आरती गाते है। माँ सजग हो उठती है।

डेढ रोटी (सन् १९६८, पृ० ६१), ले० : जगदीश शर्मा; प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६, पात्र पु० ६, स्त्री १।

घटना-स्थल जगल, घर।

यह एक सामाजिक नाटक है। जिसमे अपने अधिकारो की माँग है। चन्दनसिंह गुण्डा होते हुए भी मानवीयता से ओतप्रोत है। शकर कहने को तो उसका भाई बना है पर वह चन्दनसिंह की लडकी सुषमा से प्यार करता है और खलनायक की भूमिका अदा करता है। डेढ लाख रुपये की चोरी का सन्देह चन्दन पर होता है जिसके पास डेढ रोटी खाने तक को नही है। सन्देहो के मध्य बेचारा चन्दन उपद्रवी बन जाता है पर अन्त मे जब शकाओ का समाधान होता है तो असली अपराधी शकर सामने आता है और उसकी सभी काली करतूते दिखाई पडने लगती है।

ढ

ढोंग (सन् १९५७, पृ० ८०), ले० रमेश मेहता, प्र० बलवन्त पब्लिकेशन, नयी-दिल्ली, पात्र पु० ५, स्त्री ३, अक ३, दृश्य १, १, १।

यह एक हास्यपरक सामाजिक नाटक है। इसमे हकीम गगाधर नीना और चन्द्रा का इलाज करते है किन्तु उन्हे सफलता नही मिलती। प्रेम का रोग ही ऐसा था जिसे वे समझ न पाए। हकीम भी पैसे के लोभ मे दूसरी शादी करने का इच्छुक है पर पुजारी के किसी भी हालत मे अपना दान का रुपया छोडने को न तैयार रहने से सबको परेशानी होती है, लेकिन ढोंग के चक्कर मे उसे कुछ नही मिलता।

घोषणा, रानी द्वारा अग्रेजो को राज्य न सौपना और राज्यभार स्वय सभालना, राज्य की सुव्यवस्था तथा डाकुओ का अन्त करना, सैन्य संगठन, स्त्री सेना बनाना और शासन करना प्रदर्शित किया गया है। रानी का तात्याटोपे एव नाना साहब से सम्बन्ध कायम कर क्रान्ति का बिगुल बजाना, वीरतापूर्वक सघर्ष और देश-द्रोहियो के कारण पराजय तथा अन्त मे वीरतापूर्वक लडते हुए रानी का अन्त दिखाया गया है।

ड

डबल नवाब नाटक (सन् १९९६, पृ० १९), ले० . हरिहर प्रसाद गिगल, प्र० : अग्रवाल प्रेस, गया, *पात्र* पु० १५, *अक* ' १, *दृश्य* ६।
घटना-स्थल मकान, इजलास।

यह एक प्रहसन है। इस प्रहसन मे रईस, नवाब, वकील और सेठ पर व्यग्य किया गया है। शरीफ मिरजा चार मुसाहिबो के साथ भोजन कर रहे है। इसी बीच पन्नाबाई रोती हुई आती है। पन्नाबाई शरीफ मिरजा से यह शिकायत करती है कि डबल नवाब ने बहुत अपमान किया है। उन्होने यहाँ तक कह दिया है कि मेरी नाक काट ली जायगी। पन्नाबाई मुकदमा दायर करती है। कोर्ट मे लेन-देन की बातचीत होती है। डबल नवाब अपनी बेइज्जती पर पश्चात्ताप कर रहा है। अन्त मे मुकदमे का फैसला पन्नाबाई के ही पक्ष मे होता है।

इस प्रहसन मे हास्य उत्पन्न करनेवाले १५ गीत भी जोडे गये है।

डाँडी-यात्रा (सन् १९५९, पृ० ७८), ले० मोहन लाल 'महतो' 'वियोगी', प्र० पुस्तक भण्डार पटना, *पात्र* . पु० १५, स्त्री १; *अक* . ३, *दृश्य* ३, ३, ३।
घटना-स्थल . साबरमती आश्रम, मार्ग, समुद्रतट।

इस नाटक मे महात्मा गाधी की डाँडी-यात्रा नामक सत्याग्रह की घटना को आधार बनाया गया है। तीनो अको मे तीन दृष्टि-कोणो से नमक सत्याग्रह पर प्रकाश डाला गया। शासक पक्ष और विदेशी, देशी पत्रकार एव भारतीय जनता अपने महान् नेता के कार्य को जिस रूप मे देखती है, उसी को मूर्त रूप देने का प्रयास है।

सम्पूर्ण नाटक के केन्द्र मे महात्मा गाधी और उनका सत्याग्रह है। नाटक मे चारित्रिक विशेषताओ का विशेष ध्यान रखा गया है। श्रद्धावनत लेखक स्वय लिखता है—"बापू के नाम से जो भी लिखा जाय वह एक पुण्य-कार्य बन जाता है।" बीच-बीच मे गीतो, भजनो, उपदेशो का प्रयोग मिलता है।

डाकू मानसिंह (सन् १९६३, पृ० ६८), ले० श्री चन्दू जोशी, प्र० गिरधारीलाल थोक पुस्तकालय, दिल्ली, *पात्र* पु० ६, स्त्री १।

यह नाटक बेतवा और चम्बल की घाटी के मशहूर डाकू मानसिह के क्रियाकलापो का अकन करता है। नाटक मे डाकू मानसिंह जितना खूखार है उतना सहृदय भी। विधवा ब्राह्मणी की एकलौती पुत्री केशर को मानसिह के पुरोहित तलफीराम का पुत्र युवराज अपहृत कर लेता है। विधवा ब्राह्मणी मानसिंह से अपनी कथा कहती है। मानसिंह प्रण करता है कि जब तक मै केशर को छुडा नही लाऊँगा, पानी नही पीऊँगा। अन्तत उसे छुडाकर लाता है और फिर इससे उसकी दुश्मनी युवराज से बढ जाती है। वह भागता है और जगलो मे जाकर डाके डालता है। आगरा कॉलेज के लडको का अपहरण कर रुपए की माँग करता है किन्तु अन्त मे काकेपुरा गाव के बाहर पुलिस से मुठभेड होती है जिसमे वह मारा जाता है। साथ ही सूबेदारसिंह भी मौत के घाट उतार दिया जाता है।

डिक्टेटर (अन्तर्राष्ट्रीय नाटक) (सन् १९३७, पृ० ५६), ले० · पाण्डेय बेचन शर्मा, 'उग्र', प्र० प्रतिभा पागल पार्टी कलकत्ता, *पात्र* पु० ७, स्त्री २, *अंक* ३, *दृश्य* ३, ६, १ ।
घटना-स्थल · विश्वपथ, जिनेवानगर।

इस राजनीतिक नाटक मे जनता को भ्रम मे डालकर स्वार्थ सिद्ध करनेवाले मनचले नेताओ का वास्तविक रूप सामने आता है। आज अधिकाँश नेता अपने को जनता का सेवक घोषित करते है। विप्लव माया से कहता है कि ये नेता "मार डालेगे ! माता जनता को।" जनता माता को घेरकर जानबुल, विप्लव, अकिल, पेरी, वकवादी आपस मे लडते है। वे हिन्दुस्तानी को देखकर रुष्ट होते है। पेरी कहता है 'मगर, इडियन तो कोई आदमी नही, निकालो इसको।'—तीसरे दृश्य मे नाटक का नायक डिक्टेटर जनता माता पर क्रुद्ध होकर कहता है—'अगर तू वरदान न देगी तो मैं तेरा खून करूगा।' इसी समय महाकाल प्रकट होकर डिक्टेटर को आशीर्वाद देता है। आशीर्वाद पाकर डिक्टेटर जनता की हत्या को दौडता है। जानबुल और डिक्टेटर मे विवाद होता है और जानबुल, अकिल साम, पेरी आदि डिक्टेटर को घेर लेते है। वकवादी ललकार कर कहता है—"मैं सरे-बाजार कहता हूँ, डिक्टेटर आतताई है, नीच है, नृशस है, नराधम है।" वह आगे कहता है "कि मि० जानबुल मेरी लीडरी से चारो खाने चित ! अकिल साम की दाढी भय से काली से सफेद हो गई है।"

सन् १९४८ मे स्थिति बदल जाती है। माता जनता त्रिशूल लिए खडी है और उसे घेर कर खडे है मोशिये विप्लव और बहुत से गरीब दुखिया, रोगी। विप्लव माता से वरदान मागता है कि जनता पर जनता ही राज करे। जनता के गरीब और दुर्बल बच्चे नन्हे-नन्हे दीप जलाकर छोटी-छोटी घटियाँ बजाकर करुण स्वर से आरती गाते है। माँ सजल हो उठती है।

डेढ़ रोटी (सन् १९६८, पृ० ६१), ले० : जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६; *पात्र* पु० ६, स्त्री १ ।
घटना-स्थल जगल, घर।

यह एक सामाजिक नाटक है। जिसमें अपने अधिकारो की माँग है। चन्दनसिंह गुण्डा होते हुए भी मानवीयता से ओतप्रोत है। शकर कहने को तो उसका भाई बना है पर वह चन्दनसिह की लडकी सुषमा से प्यार करता है और खलनायक की भूमिका अदा करता है। डेढ लाख रुपये की चोरी का सन्देह चन्दन पर होता है जिसके पास डेढ रोटी खाने तक को नही है। सन्देहो के मध्य बेचारा चन्दन उपद्रवी बन जाता है पर अन्त मे जब शकाओ का समाधान होता है तो असली अपराधी शकर सामने आता है और उसकी सभी काली करतूते दिखाई पड़ने लगती है।

ढ

ढोंग (सन् १९५७, पृ० ८०), ले० रमेश मेहता, प्र० बलवन्त पब्लिकेशन, नयी-दिल्ली, *पात्र* पु० ५, स्त्री ३, *अंक* ३; *दृश्य* १, १, १ ।

यह एक हास्यपरक सामाजिक नाटक है। इसमे हकीम गगाधर नीना और चन्द्रा का इलाज करते है किन्तु उन्हे सफलता नही मिलती। प्रेम का रोग ही ऐसा था जिसे वे समझ न पाए। हकीम भी पैसे के लोभ मे दूसरी शादी करने का इच्छुक है पर पुजारी के किसी भी हालत मे अपना दान का रुपया छोडने को न तैयार रहने मे सबको परेशानी होती है, लेकिन ढोंग के चक्कर मे उसे कुछ नही मिलता।

त

तकदीर का फैसला (वि० १९८२, पृ० १०८), ले० मथुरा प्रसाद शर्मा, प्र० रामानन्द, शर्मा, गुटूर, पात्र पु० ७, स्त्री ३, अक ३, दृश्य ६, ६, ६ ।
घटना-स्थल देहात, गॉव का घर ।

इस सामाजिक नाटक मे मुसलमानो के अत्याचार का हिन्दुओ द्वारा प्रतिशोध दिखाया गया है ।

नाटक का प्रारम्भ एक मस्जिद से होता है । मुसलमान इकट्ठे होकर हिन्दुओ के प्रतिकूल बाते करते है । अकबर एक भारत-प्रेमी, मानवतावादी मुसलमान है जो इन लोगो का विरोध करता है । मुसलमान उसे काफिर करार देते है पर वह अपने सुधारवादी सिद्धान्त से विचलित नही होता । विजय हिन्दू-सगठन का नायक तथा विनय, अहिसा-धर्म का उपासक, मुसलमानो की कट्टरता से क्षुब्ध होकर हिन्दुओ को मुसलमानो के विरुद्ध कुछ युवक भडकाते है । दोनो वर्गो मे सघर्ष की स्थिति पैदा हो जाती है । लेकिन अकबर और बिहारी स्वयसेवक के प्रयत्न से लडाई बच जाती है । पुन दोनो वर्ग मिलकर देश के लिये प्रयत्न करते हे ।

तडप (सन् १९६०, पृ० ८३), ले० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, पात्र पु० ५, स्त्री २, अक २ ।
घटना-स्थल घर, कमरा ।

इस सामाजिक नाटक मे प्रेमी का अपनी प्रेयसी के लिए तडपना चित्रित है ।

जय अपनी प्रेमिका शकुन्तला को प्राप्त करने के लिये समाज मे भटकता रहता है किन्तु समाज का राक्षसी रूप उसे सदैव ठुकरा देता है । राजशर्मा नामक दूसरी लडकी जय के समक्ष आत्म-समर्पण करती है किन्तु जय उसमे शकुन्तला का रूप देखकर भी उसे प्राप्त नही करता । वह आत्मा की खोज के लिए सदैव तडपता रहता है । उसे विश्वास है कि हम दोनो कभी वास्तविक रूप मे मिलेगे । इसका प्रत्येक पात्र कल्पना की उडान मे उडता रहता है ।

तथागत (सन् १९४८, पृ० ७६), ले० रामवृक्ष बेनीपुरी, प्र० बेनीपुरी प्रकाशन, पटना, पात्र . पु० ११, स्त्री ८, अक . ४, दृश्य ७, ६, ६, ४ ।
घटना-स्थल लुम्बिनी वन, राजगृह, गृद्धकूट, शालवन ।

भगवान् बुद्ध का चरित्र ही इस नाटक का कथानक है । लुम्बिनी वन मे तथागत का माया के गर्भ से जन्म होता है । महाराज शुद्धोधन पुत्र की कुडली कौण्डिन्य ऋषि को दिखाते है । वे भविष्यवाणी करते है कि या तो यह बालक चक्रवर्ती सम्राट् होगा अथवा विश्व-विख्यात धर्म-प्रवर्त्तक । सिद्धार्थ यशोधरा का वरण करते है । उससे राहुल का जन्म होता है । किन्तु कुछ दिन बाद सिद्धार्थ प्रवृत्ति से निवृत्ति मार्ग की ओर मुड जाते है । अन्तत अनोमा नदी के किनारे कथक घोडे तथा सारथि छदक को छोडकर ज्ञान की खोज मे निकल पडते है ।

भिक्षु तथागत सर्वप्रथम राजगृह मे जाकर बासी खिचडी खाते है । कष्ट के कारण उनके शिष्य भद्रजित छोडकर भाग जाते है । अन्त मे सुजाता की खीर खाते है, फिर सम्यक् सम्बोद्धि प्राप्त करके मानव-मात्र के कल्याण के लिये अष्टाग मार्ग का उपदेश देते है ।

शाक्यकुल के सिद्धार्थ मार की भट्टी मे जलकर तथागत बन "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय" ज्ञान का प्रसार करते है । पचभिक्षु वर्ग श्रेष्ठिपुत्र यश को प्रव्रज्या देते है । राजगृह मे निरीह पशुओ पर दया कर वे हिंसा यज्ञ बन्द कराते है । तथागत बिम्बसार को दीक्षा देते हे । गिरिवर्ण से कपिलवस्तु जाकर सभी को भिक्षुधर्म मे सम्मिलित करते है । देवव्रत के विरोध को जीतकर अजातशत्रु को भी

दीक्षित करते है। तत्पश्चात् गृद्धकूट शालवन मे अन्तिम प्रवचन करके पूर्णिमा को तथागत निर्वाण प्राप्त करते है।

तप्ता-सवरण (सन् १८८३, पृ० ३९), ले० लाला श्रीनिवास दास, प्र० खग विलास यन्त्रालय, बाकीपुर, *पात्र* पु० ५, स्त्री ६; *अक* ५।
घटना-स्थल लग्नमडप, वन आदि।

इस सामाजिक नाटक मे तप्ता और सवरण का सच्चा प्रेम प्रदर्शित है।

तप्ता सखियो सहित लग्नमण्डप मे बैठी है। उस की सखी चन्द्रकली यह सदेश सुनाती है कि कोई राजकुमार आखेट खेलने आया है। तप्ता अपने मृगछौने को पकडने दौडती है। सवरण का साक्षात्कार हो जाता है। दोनो एक-दूसरे की ओर आकृष्ट होते है। सवरण वृक्ष की छाया मे बैठकर माला गूँथने लगता है। तप्ता और सवरण का प्रेमालाप होता है। दोनो विलग होने पर अत्यन्त विरहाकुल होते है। एक दिन सवरण के विरह मे मूर्छित हो जाने पर तप्ता पहुँच जाती है। तप्ता के दर्शन से सवरण प्रसन्न होकर उससे विवाह का प्रस्ताव रखता है, पर तप्ता कहती है कि विवाह तो पिता सूर्य भगवान् की आज्ञा से ही सम्पन्न हो सकता है। सवरण वसिष्ठ मुनि के पास जाता है। वसिष्ठ मुनि सूर्य भगवान् की स्तुति करते है। सूर्य भगवान् दर्शन देते है और वसिष्ठ के आग्रह से सूर्य भगवान् तप्ता का सवरण के साथ विवाह स्वीकार करते है।

तमसा (सन् १९६८), ले० जानकी वल्लभ शास्त्री, प्र० राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, *पात्र* पु० ८, स्त्री १, *अक-रहित*, *दृश्य* ४।
घटना-स्थल तमसा नदी का किनारा।

इस गीतिनाट्य का प्रारम्भ तमसा नदी के वैभवपूर्ण अतीत से होता है। तत्पश्चात् विगत स्मृति के आधार पर वाल्मीकि तमसा तट पर अपने शिष्य भारद्वाज के साथ जाते है। उधर से बहेलियो का एक समूह कोलाहल करता हुआ आता है। वाल्मीकि तथा भारद्वाज परस्पर विचारविनिमय करते हुए एक चकवा-दम्पती की ओर सकेत करते है जिस पर बहेलियो ने लक्ष्य साधा हुआ है। वाल्मीकि का हृदय नर-पशु की इस नृशस वृत्ति से द्रवित होता है। इसी समय बहेलिया तीर चला देता है और क्रौच की आर्त-चीत्कार के साथ वाल्मीकि के करुण स्वर मे आदि श्लोक—मा निषाद प्रतिष्ठा त्वम्—की सृष्टि होती है।

द्वितीय दृश्य मे वाल्मीकि की अन्तर्ध्वनि के रूप मे क्रमश छ ऋतुएँ आकर मानो नूतन काव्य-सृजन की प्रेरणा दे जाती है। तृतीय दृश्य मे बहेलियो का पश्चात्ताप वर्णित है। चतुर्थ दृश्य मे भारद्वाज वाल्मीकि को परित्यक्ता सीता का परिचय देते है जिसके परिणामस्वरूप वाल्मीकि मे कवि-सस्कार उदित होते है जो आगे चलकर राम-कथा मे परिणत होकर कवि को अमर कर जाते है।

तमाशा (सन् १९५३, पृ० ९५), ले० सुधाँशु शेखर चौधरी, प्र० शेखर प्रकाशन दरभगा, *पात्र* पु० ९, स्त्री ४, *अक-दृश्य* के स्थान पर १२ झाकियाँ।
घटना-स्थल कलकत्ता का राजपथ, सेठ का बगला, झोपडी, कलकत्ता का फुटपाथ, भिखारी का घर, सडक।

इस सामाजिक नाटक मे नगर के धनी एव निर्धनता के शिकार भिखारियो की दशा का वर्णन है।

निम्न मध्यवर्ग का युवक सुधीर एक भिखारी के साथ भिखमगो की दशा देखने निकलता है। सेठ दामोदर लाल की कोठी पर पहुँचता है तो उसके हाथ पर हटर की चोट मिलती है। सेठ के परिवार मे कलह मचा है और सेठ पालतू कुत्ते को अपने खाने की सजी-सजाई थाली देता है। इस प्रकार भिखारी के साथ सुधीर नगर के धनी और निर्धनता के शिकार भिखारियो की दशा का निरीक्षण करता है। भूख से तडप कर भिखारी मृत्यु-शैय्या पर लेटा है। वह अपनी बेटी साधना से पूछता है कि बेटा अव्वल दवा लेकर कब आयेगा। भिखारी की मृत्यु के समय अभिलाषा होती कि सुधीर साधना से ब्याह कर ले

दोनो का प्रेम भाव वह देख चुका था। सुधीर भिखारियो की दशा सुधारने का आन्दोलन करके जेल जाता है। जेल से लौटने पर अचल और साधना की बाते सुनता है। सुधीर अपने मित्र अचल को इसलिए कोसता है कि उसने सुधीर की अनुपस्थिति मे भिखारी का घर ऋण मे बिकवा दिया। यह सब खेल वह साधना को प्राप्त करने के लिए करता रहा। सुधीर अचल की बहन रजना को प्राप्त करना चाहता था। पर वहा से भी निराशा मिली। अत वह गगा मे डूबने जा रहा था। बीच मे अचल उसे पकड लेता है।

अब साधना रेडियो स्टेशन पर प्रोग्राम मे सम्मिलित होती है। एक दिन दामोदर लाल धन-सम्पत्ति नष्ट होने पर भिखारी-रूप मे साधना के पास जाते है। वह प्रसन्नता से एक रुपया भीख मे प्रदान करती है।

दूर पर एक वैरागी गा उठता है—

"दुनिया एक तमाशा बाबा।"

यह नाटक सन् ५० मे कलाकार-ससद, दरभगा द्वारा अभिनीत हुआ। छात्रो ने अन्य स्थानो पर कई बार इसका अभिनय किया।

तस्वीर उसकी (सन् १९६४, पृ० ६४), ले० चिरजीत, प्र० आत्माराम एण्ड सस, दिल्ली, *पात्र* पु० ५, स्त्री ५, *अक* ३, *दृश्य* १, ३, १।
घटना-स्थल ड्राइग-रूम।

प्रस्तुत नाटक मे लेखक ने चीनी आक्रमण को आधार बनाकर देश-भक्ति का स्वर मुखरित करने का प्रयत्न किया है।

अजना नाम की नवयुवती अपने कालेज के सहपाठी मदन वर्मा और अनिल वर्मा दोनो भाइयो मे से मदन वर्मा को अपना पति बना लेती है। उसके पिता इसका विरोध करते है। मदन धीरे-धीरे अपने ससुर के प्रकाशन-गृह पर अधिकार कर लेता है और मैनेजर पाण्डे पर गबन का झूठा आरोप लगाकर उसे निकाल देता है। दूसरी ओर वह नलिन को भी घर से निकाल देता है। नलिन झूठी आत्महत्या का नाटक रचकर पुराने मैनेजर पाण्डे के साथ अल्मोडा चला जाता है। अजना अपनी सहेली सावित्री से मिलकर 'रानी झासी समाज' चलाती है, जिसमे सैनिक शिक्षा दी जाती है। परन्तु मदन अपनी प्रेमिका रोमिला और नये मैनेजर के साथ मिलकर तस्कर-व्यापार करता है। वह इन दुष्कार्यों के अतिरिक्त देशद्रोही भी बन जाता है। इसी बीच रोमिला और नया मैनेजर गिरफ्तार हो जाते है। इस गिरफ्तारी के पश्चात् मदन के घर आने पर अजना उसको पकडवाने के लिये पुलिस को फोन करती है। मदन पिस्तौल से आत्महत्या कर लेता है।

तहजाब (सन् १९५९, पृ० ७५), ले० : जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, *पात्र* पु० ९, स्त्री ३, *अक* २।
घटना-स्थल सेठ की कोठी।

यह नाटक आज के फैशन-परस्त जीवन का चित्र प्रस्तुत करता है। उमाशकर अपनी पुत्री नीलम को नर्तकी, गायिका के अतिरिक्त मिस इण्डिया और मिस यूनिवर्स भी देखना चाहते है। उनके पुत्र किशोर इग्लैण्ड से नगी तस्वीरो का ऐसा तोहफा लाए जिसे देख नीलम वासना से भर जाती है और अपने ही पिता के क्लर्क राजशर्मा से अपनी इच्छाओ की पूर्ति करना चाहती है। किन्तु उससे उपेक्षित होने पर उसे घर से जलील करके निकाल देती है। अन्त मे नीलम घर से भागकर क्लब मे जाती है। राजशर्मा उसे पकड पिता के हाथों सौपता है। तहजीब की इस पराकाष्ठा से वकील उमाशकर की आँखे शर्म से झुक जाती है। वह राजशर्मा को पुन नौकर रख लेता है।

अभिनय—स्टार्स ऑफ इडिया, लुधियाना द्वारा अभिनीत।

तात्या टोपे (वि० २०१७, पृ० ९२), ले० : श्री पातीराम भट्ट, प्र० साहित्य निकेतन, कानपुर, *पात्र* पु० ३०, *अक* ३, *दृश्य* : ४, ५, ४।
घटना-स्थल बैरकपुर छावनी, नाना साहब का महल, दिल्ली का किला, सत्ती चौराघाट कानपुर, नाना साहब का घर कानपुर, फतेहपुर का युद्ध-क्षेत्र, कानपुर, गोमती का

किनारा, हुमायूँ की कब्र, रेजिडेन्सी, ग्वालियर का किला, युद्ध-क्षेत्र ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे भारतीय राजा-महाराजाओ की कायरता तथा स्वार्थपरता दिखाई गई है।

भारतीय सिपाहियो पर अग्रेजो की नीति की प्रतिक्रिया दृष्टिगोचर होती है, वे विद्रोह का सकल्प करते है। अग्रेजी सेना का भारतीय सिपाही मगल पाण्डे देश की बलि-वेदी पर उत्सर्ग हो जाता है। पेशवा के नाना साहब अपने निर्वासन-काल मे अपने सेनापति तात्या टोपे को लेकर क्रान्ति को भडकाने मे प्रयत्नशील है, हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य की भावना घर किए है। राजे-महाराजे अग्रेजो की अधीनता स्वीकार कर अपना-अपना उल्लू सीधा करना चाहते है, दिल्ली के मुगल बादशाह बहादुरशाह बुजदिलो मे से है। इस प्रकार नाना साहब का यह कथन—'हमने जो विद्रोह सगठित किया है उसका न तो कोई केन्द्र है और न उसमे प्राण'—आगे चलकर सही साबित होता है। बाद मे अग्रेजो की चालाकी और भारतीय आदर्श का सघर्ष परिलक्षित होता है। द्वितीय अक मे नाना साहब और तात्या के बीच मे मनमुटाव उत्पन्न हो जाता है। तात्या अपने पद से इस्तीफा दे देता है। नाना साहब लियाकत अली के हाथ सैन्य-सचालन का भार सौपते है, परन्तु अपनी कम सूझ के कारण वह मोर्चे मे मुँह की खाता है। नाना साहब सपरिवार आत्महत्या कर लेते है। तात्या भरसक प्रयत्न करता है कि स्वाधीनता-सग्राम सफल हो परन्तु भारतीय राजाओ की कायरता एव स्वार्थ-नीति से वह टूट जाता है। वह कहता है "भारत का शत्रु अग्रेज नही भारतवासी स्वय है।" अग्रेज अफसर हैव्लाक तात्या के महत्त्व को स्वीकार करता हुआ कहता है "हार तो नेपोलियन का भी हुआ था, तुम्हारा मुल्क अगर तैयार रहता तो तुम जरूर अपने मुल्क को आजाद कर सकता।" अन्त मे ग्वालियर-नरेश सिंधिया तथा जागीरदार राव साहब भी अपनी स्वार्थपरक बुजदिल नीति के कारण तात्या को धोखा देते है। तात्या पराजित और वन्दी हो जाता है।

'सत्' और 'असत' के सघर्ष मे सत् की पराजय, मगल पाण्डे को फासी, नानासाहब और मनु की मृत्यु तात्या की पराजय से होती है।

तारा (सन् १९५०), ले० . भगवतीचरण वर्मा, प्र० . साहित्य केन्द्र, इलाहाबाद, *पात्र* पु० २, स्त्री २, *अक-रहित*, *दृश्य* : ४।

घटना-स्थल प्रकृति-स्थली, कुटी आदि।

इस पौराणिक गीतिनाट्य मे ऋषि-पत्नी तारा तथा चन्द्रमा के प्रणय-अभिशाप की प्रख्यात घटना है, जिसका केन्द्र-बिन्दु है—धर्म और वासना का तुमुल सघर्ष। आचार्य बृहस्पति की पत्नी तारा के जीवन का मुख्य लक्ष्य सयम की स्थापना है। प्रारम्भ मे तप. साधना की शुष्क-कठोर भूमि पर तारा का सौरभमय रूप, अतृप्त, उद्दाम-यौवन विद्रोह कर उठता है। एक ओर वह वासना-तृप्ति की आकाक्षी है, दूसरी ओर उसका सस्कारी मन नैतिकता की दुहाई देकर कर्त्तव्य-आराधना मे शक्ति पाने का असफल प्रयास करता है। कर्त्तव्य और भावना का यह सघर्ष अन्त तक चलता है। द्वितीय दृश्य मे अपने शिष्य चन्द्रमा को पढाते समय बृहस्पति के मुख से पुण्य की व्याख्या करते हुए अनायास निकला वाक्य 'प्रकृति स्वय है, पाप-पुण्य कुछ भी नहीं' चन्द्रमा पकड लेता है जो बाद मे उसकी कामान्ध-वासना का सम्बल बनता है। रात्रि के स्निग्ध-वातावरण मे चन्द्रमा को देखते ही तारा का नारी-हृदय पुरुष-कामना से पीडित हो जाता है। सहसा चन्द्रमा तारा को माँ सम्बोधित करके उसके कामवेग पर आघात करता है। इसी समय ऋषि चन्द्रमा पर आश्रम का भार छोडकर बाहर चले जाते है। बृहस्पति की अनुपस्थिति दोनो के हृदय मे वासनोद्दीपन मे सहायक सिद्ध होती है। उनका यौवन नैतिक-सीमाएँ तोड मुक्त-प्रवाह मे बह जाना चाहता है। चन्द्रमा नर-नारी के शाश्वत सम्बन्धो के परिप्रेक्ष्य मे तर्क का आश्रय लेकर तारा के धर्मभीरु हृदय पर विजय प्राप्त कर लेता है और तारा वासना के दुस्तर प्रवाह मे सुखमय पाप के लिए आत्म-समर्पण कर देती है। चतुर्थ दृश्य मे बृहस्पति कुटी की—

शून्यता तथा अपने योगबल से वस्तुस्थिति का बोध कर दोनो को युगयुगान्तर के लिए शाप दे देते है।

तिन्दुवुलम (सन् १९५८, पृ० १०१), ले० लक्ष्मीकान्त वर्मा, प्र० किताब महल, इलाहाबाद, *पात्र* पु० १२, स्त्री ३, *अक* २, *दृश्य* ३, ४।
घटना-स्थल मन्दिर, नदीतट।

गीतगोविन्द के रचयिता जयदेव की जीवन-सम्बन्धी एक किवदती के आधार पर लिखा गया नाटक है। कथारम्भ श्री जगन्नाथ मन्दिर के एक कक्ष से होता है। धर्माभिमानी, दम्भी आचार्य सत्यदर्शन मन्दिर मे होने वाले तिन्दुवुलम के गान को बन्द कर देता है। उसका विचार है कि गान वासना को प्रदीप्त करता है। पद्मावती नामक देवदासी को तिन्दुवुलम की प्रेमिका घोषित कर प्रेम के अपराध मे कैद कर लेता है। पिता देवव्रत पुत्री पद्मावती को मारता-पीटता है, लेकिन वह गाने से इन्कार कर देती है। नचिकेता अनेक कापालिक आचार्यो के कार्यो की भर्त्सना करता है। आचार्य देवव्रत को निकाल देता है तथा तिन्दुवुलम का प्रवेश निषेध कर देता है। तिन्दुवुलम समुद्र की लहरियो के सगीत मे रम जाता है, वही पद्मावती उससे मिलने जाती है तथा आनन्द अनुभव करती है। समय वीतता जाता है और तिन्दुवुलम की साधना वढती जाती है। उसका विचार है —"मैने पद्मावती से प्रेम किया है, उसके रसमय अभिनय से मैंने गति ली है, उसकी भावमुद्रा से मैने छन्द लिए है, उसके सकेतो से मैने शब्द लिए है।" लेकिन आचार्य सत्यदर्शन देवदासी को पथभ्रष्ट करने के अपराध मे तिन्दुवुलम को दण्ड देने पर दृढ रहते है। पद्मावती कवि जयदेव के प्रेम मे सभी वधन तोडकर रम जाती है। नचिकेता भी तिन्दुवुलम को यही प्रेरणा देता है कि "इसका भोग करो' इसमे ही तृप्ति मिलती है। त्याग से नही।"

अचानक नदी-तट पर राज-सेना का आक्रमण हो जाता है। वे नचिकेता को पकड ले जाते है और कवि के ताड-पत्र राजा लक्ष्मणसेन को सौंप देते है। राजा ताड़-पत्र पर लिखे गीतो को पढकर आत्म-विभोर हो जाता है तथा कवि की तलाश करता है। कापालिक नचिकेता की सहायता से राजा को कवि तिन्दुवुलम के दर्शन कराता है। आचार्य सत्यदर्शन अन्धा हो जाता है और क्षमा-याचना करता है। अपने पापो का प्रायश्चित्त करता हुआ अपनी पुत्री विपुला को गले लगाता है। वह विपुला की माँ के प्रेम के प्रति भी अपने को कृतघ्न मानता है। नचिकेता के समक्ष आचार्य अपने को पराजित स्वीकार कर लेता है। पद्मावती भी तिन्दुवुलम की आज्ञा से महाप्रभु के गीत गा उठती है। महाराज कवि-साधना को अमररूप मे रक्षित रखने के लिए गीतो को अपने राज्य मे ले जाते है। इस प्रकार इस नाटक मे एक ओर है मानव का सहज प्रेम और दूसरी ओर हैं देवदासी प्रथा का अभिशाप—धर्म के नाम पर किया जाने वाला अत्याचार। यह नाटकीय कथानक मध्ययुगीन धर्म की विसगतियाँ प्रस्तुत करता है।

तिलक दहेज (सन् १९७१, पृ० ६८), ले० रामनिरजन शर्मा, प्र० अलख-साधना मन्दिर, पटना, *पात्र* पु० ११, स्त्री १, *अक* २, *दृश्य* ८, ७।
घटना-स्थल घर, कालेज, विवाह-मण्डप।

इस सामाजिक नाटक मे प्रचलित तिलक-दहेज प्रथा का चित्रण है।

करुणा एक पढी-लिखी युवती है। उसकी शादी के लिये पिता रघुवर तथा भाई रमेश वहुत परेशान होते है लेकिन दहेज की प्रथा से तग आ जाते है। वह अपनी सारी जायदाद वेचकर करुणा की शादी एक रईस खानदान मे पक्की कर लेते है, लेकिन करुणा यह शादी पसन्द नही करती। वह अपनी शादी कालेज मे पढने वाले एक ग्रेजुएट लडके कमलेश के साथ करना चाहती है। कमलेश और करुणा मे वर्ण-वैभिन्य होते हुए भी दोनो की शादी तय हो जाती है। गाँव के लोग इसे परम्परा के विरुद्ध मानकर विवाह-मण्डप मे विघ्न डालते हैं। करुणा का भाई रमेश वडी वहादुरी से इन लोगो को मारकर हटाता है। कमलेश और

करुणा भी डटकर मुकावला करते है। कमलेश के सिर मे चोट आती है जिससे रक्त वहता है। इतने मे पुलिस आकर सभी लोगो को गिरफ्तार कर लेती है। कमलेश अपने वहते हुए रक्त से करुणा की माग मे सिंदूर लगा देता है।

अभिनय—कलामच द्वारा पटना मे अभिनीत।

तिलस्मानी पुतली मारूफत्रे सहरसामरी जमशेदी (सन् १९१३), ले० मिर्जा नजीर वेग, प्र० नजीर मतवा इलाही, आगरा, पात्र. पु० ७, स्त्री २।

इस सगीत नाटक मे जादू का भाव तथा प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम दिखाया गया है।

इसका प्रारम्भ तूफान फलक नामक प्रसिद्ध जादूगर और उसकी दो पुत्रियो, मलिका पुतली और खुरशेद निगार, से होता है। जादूगर अपने जादू की शक्ति से दिलयारवाद के राजकुमार जवावख्त को सुषुप्तावस्था मे उठा ले जाता है। वहा उसकी पुत्री खुरशेद निगार उसके सौदर्य पर मुग्ध हो जाती है। राजकुमार की खोज-वीन प्रारम्भ हो जाती है। सुल्तानवख्श का मत्री-पुत्र नजूमी की घटना का पता चलने पर शहजादे की तलाश मे निकल पडता है। सयोग से वह जादूगर की पुत्री मलिका पुतली से मिलता है। वे दोनो एक-दूसरे के प्रति आकृष्ट हो जाते है। वह भी उनके तिलस्म की दुनिया मे जा फँसता है। वे दोनो विभिन्न उपायो द्वारा जादूगर की दुनिया से निकलते है। अन्त मे दोनो का विवाह हो जाता है।

तिलोत्तमा (सन् १९७२, पृ० १०८), ले० मैथिलीशरण गुप्त, प्र० साहित्य सदन, चिरगाव, झासी, *पात्र* पु० ११, स्त्री ६, अक ५।

घटना-स्थल देवदानव सभा।

इस पौराणिक नाटक मे तिलोत्तमा के सौन्दर्य पर मुग्ध असुरो का सर्वनाश दिखाया गया है।

असुर लोकेश की तपस्या करके अजेय वरदान प्राप्त करते है। जिससे दानव देवताओ को जीतने के लिये उनसे युद्ध करते है। उनके प्राप्त वरदान का पता चलने पर कुवेर सारी वात देवराज इन्द्र से वताते है। देवता असुरो के अत्याचार से अत्यन्त दुखी हो लोकेश ब्रह्मा के पास जाकर अपनी दुखद घटना सुनाते है। ब्रह्मा जी दैत्यो के नाश के लिये एक सुन्दरी तिलोत्तमा की उत्पत्ति कर उसे दैत्यराज सुन्द और उपसुन्द के पास भेज देते है। मदान्ध दैत्यराज जव तिलोत्तमा को देखते है तो दोनो उसे अपनी-अपनी पत्नी वनाना चाहते है। तिलोत्तमा के कहने पर दोनो भाई आपस मे लडकर अपनी वीरता का परिचय देते हुए अन्त मे मर जाते है जिससे देवताओ का भय दूर हो जाता है। सव खुश होकर इन्द्राणी तथा अप्सराओ के साथ स्वर्ग चले जाते है।

तीन दिन तीन घर (सन् १९६१, पृ० १७१), ले० शील, प्र० लोकभारती प्रकाशन, इलाहावाद, *पात्र* पु० १५, स्त्री ५, *अक* ५।

घटना-स्थल गली, मकान।

इस सामाजिक नाटक मे तीन प्रकार के घरो को लेकर समाज की भिन्न-भिन्न समस्याओ को परखा गया है। नाटक के प्रथम अक मे एक मजदूर की हत्या कर उसे रुई के ढेर मे दवा दिया जाता है। फलस्वरूप मिलो मे हडताल हो जाती है। इस सत्य को प्रभात अपने समाचार-पत्र मे प्रकाशित करता है,- लेकिन उसे नौकरी से अलग कर दिया जाता है। इसी हडताल के वीच हीरालाल चोरवाजारी से धनी वन जाता है। नाटककार तथ्यो के आधार पर कहना चाहता है कि पूँजीपतियो को हटाकर वर्गहीन समाज की स्थापना करना ही भारत के लिये श्रेष्ठ है। इस सघर्ष मे मजदूर का सवसे वडा महत्त्व है।

तीन पग (सन् १९६५, पृ० ८०), ले० : अम्विका प्रसाद दिव्य, प्र० साहित्य सदन, अजयगढ, *पात्र* पु० ८, स्त्री १०, अक : ३, *दृश्य* ५, ५, ५।

घटना-स्थल . महल, अरण्य, राजभवन, यज्ञमण्डप।

इस नाटक मे बलि वामन की पौराणिक कथा को कल्पना के आधार पर एक नई दृष्टि से देखा गया है। वामन की पत्नी महान् लावण्यमयी युवती है। उन पर वामन का छोटा भाई कुदृष्टि डालता है। सतीत्व रक्षा के अभिप्राय से वामन उसे लेकर एक अरण्य मे रहने लगते है परन्तु राजा बलि को पता चलने पर वे उनकी पत्नी को छीन लाते है। रानी मजुला उसके सतीत्व की रक्षा मे सहायता करती है। बलि उस पर विजय प्राप्त करने के लिये यज्ञ करवाते है। यज्ञ के दिन वामन तीन पग पृथ्वी दान मागने आते है। राजा बलि भगवान् की इस लीला से अनभिज्ञ रहकर तीन पग धरती दान देता है। इस पर भगवान् खुश होकर राजा बलि को पाताल भेज देते है।

तीन युग (सन् १९५८, पृ० ११८), ले० : विमला रैना, प्र० · किताब महल, जीरो रोड, इलाहाबाद, *पात्र* · पु० १२, स्त्री ८; *अक-रहित, दृश्य* ४।
घटना-स्थल विशाल भवन का कक्ष, देश के विभिन्न भाग, आगन।

यह भारतीय स्वातन्त्र्य सग्राम की घटनाओ पर आधारित सामाजिक नाटक है। सन् १९२० से १९५७ तक की प्रमुख आर्थिक, सामाजिक तथा सास्कृतिक घटनाओ को नाटक मे संजोया गया है।

रायबहादुर शकरलाल प्रात काल अपने पुत्र कैलाश से अखबारो मे छपी हुई भारतीय राजनीति-सम्बन्धी उथल-पुथल की घटनाओ को सुन रहे है। राय साहब अग्रेजियत के रग मे रगे है किन्तु उनका बडा पुत्र कैलाश राष्ट्रीय-विचारधारा का प्रबल समर्थक है। रायसाहब बच्चो को अग्रेजी स्कूलो मे पढाते है। अग्रेजी से दुखी रायसाहब की पत्नी कभी-कभी घर मे विरोध भी करती है। रायसाहब की पुत्रवधू भारतीय सस्कारो की नारी है तथा पति कैलाश के प्रति समर्पित रहती है। कैलाश प्राय कॉग्रेस के आन्दोलन मे भी भाग लेता है और जेल जाता है। रायसाहब उसके मार्ग मे बाधक कभी नही बनते है। रायसाहब का छोटा पुत्र गरमदल का सेनानी है। वह अपने मित्र चन्द्रमोहन के साथ क्रान्ति की योजनाएँ बनाता रहता है। दोनो ही सशस्त्र क्रान्ति मे दृढ विश्वास रखते है।

रायसाहब के उसी घर मे दूसरा युग आरम्भ होता है। कमरे मे से विक्टोरिया की मूर्ति हटाकर गान्धी जी की मूर्ति लाई जाती है। कैलाश काग्रेस का बडा नेता बनकर देशोद्धार पर भाषण देता है। गरमदल के राजीव तथा चन्द्रमोहन भी अपना क्रान्ति-कार्य निरन्तर चलाते है। रायसाहब की पुत्री प्रेम चन्द्रमोहन की प्रेमिका बनकर क्रान्ति मे भाग लेती है। कैलाश का पुत्र मुन्ना भी क्रान्ति मे चाचा-पिता के साथ सक्रिय है। कैलाश को जेल की लम्बी सजा हो जाती है।

अकेले शकरलाल घर पर रह जाते है। शेष सभी आन्दोलनो मे सक्रिय है। नए फैशन के कारण पुराने विचारो की रायसाहब की पत्नी छोटी बहू की आलोचना करती रहती है। स्वतन्त्रता आन्दोलन की क्रान्ति के मध्य ही भारत-पाक बटवारे का प्रश्न उपस्थित होता है। आजादी मिलने पर कैलाश जेल से छूट आता है।

आजाद देश की नवीन पीढी का प्रतिनिधि मुन्ना स्वतन्त्रता-पूर्व के नेताओ की काहिली के कारण खिलाफत करता है। देश मे अनन्त समस्याएँ उत्पन्न हो रही है, लेकिन नेता सुख भोग रहे है। शकरलाल नई पीढी को उपदेश देते है कि पुराने लोगों को छोडकर वे अपना भविष्य स्वय ईमानदारी से जगमग करे, इसी मे स्वतत्र राष्ट्र का हित निहित है।

तुम मुझे खून दो (सन् १९६६, पृ० ८५); ले० देवी प्रसाद धवन 'विकल', प्र० चैतन्य प्रकाशन मन्दिर, कानपुर, पात्र पु० ११, *अक* ३, *दृश्य* १०, १०, ७।
घटना-स्थल. सुभाष का घर, विलायत, सिंगापुर, जापान आदि।

इस राजनीतिक नाटक मे सुभाष बाबू का भारत की आजादी के लिए सच्चा देश-प्रेम चित्रित है।

भारत के स्वतन्त्रता-संग्राम मे नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने देशवासियो से कहा था

"तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूंगा।" उनके इस कथन को देशवासियो ने एक स्वर से माना। नेताजी अपने माता-पिता और गुरु माधव से देश-सेवा का पाठ सीखते है। हैदर गुण्डे को सही रास्ते पर लाते है। वे विलायत से आई० सी० एस० की परीक्षा पास करते है किन्तु तुरन्त ही उससे इस्तीफा देकर देश की आजादी की लडाई मे कूद पडते है। सिंगापुर मे आजाद हिन्द-सेना का सगठन करते है। देशवासी उन्हे सोने और हीरे से तोलकर उनका सम्मान और मदद करते है। वे दो बार अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष चुने जाते है। फिर देश को स्वतन्त्र करने के लिए जी-जान से जुट जाते है किन्तु सिगापुर से जापान जाते समय उनका वायुयान दुर्घटना-ग्रस्त हो जाता है। उसमे आग लग जाने से उनका प्राणात हो जाता है।

तुम्हें रुपया खा गया (सन् १९५५, पृ० ८३), ले० भगवती चरण वर्मा, प्र० मोतीलाल वनारसीदास, दिल्ली, *पात्र* पु० ६, स्त्री २, अक · ३, *दृश्य* : ३, २, २।

घटना-स्थल शयनागार, दफ्तर, लॉन।

इस सामाजिक नाटक मे रुपये को ही प्रेम की पराकाष्ठा तथा दुर्दशा का कारण वताया गया है।

सेठ मानकलाल २० वर्ष पूर्व किसी फर्म मे क्लर्क था। अल्प आय होते हुए भी परिवार सुखी था। अचानक एक दिन उसके विचार वदलते है और वह आमदनी वढाने के सिलसिले मे उस फर्म से ५,००० रु० तथा कुछ कागज उडाकर दूसरे नगर मे आ जाता है। वहा वह एक्सपोर्ट तथा इम्पोर्ट का धधा करता है। कितनी ही झूठी कम्पनिया वनाता और विगाडता है। फलत वह करोडपति वन जाता है: मानकलाल अपने इस करोडपति के जीवन मे यह अनुभव करता है कि उसकी पत्नी, पुत्र, पुत्री, नौकर, चाकर सभी केवल उससे पैसे के लिये प्रेम करते है। इससे उसकी आत्मा की शान्ति नष्ट हो जाती है। एक वार सेठ वीमार होता है किन्तु उस की पत्नी मसूरी मे किसी कला-केन्द्र का उद्घाटन करने मे व्यस्त रहती है। पुत्र पाच लाख रुपये वनाने के चक्कर मे दिल्ली से कलकत्ता तथा कलकत्ता से दिल्ली एक कर रहा है। सेठ मे विरक्ति की भावना जागृत होती है और वह अपनी रुग्णावस्था मे ही रुपये की माला फेरना शुरू कर देता है। उसका वेटा मदन जव आकर देखता है कि पिता ने अपनी वीमारी के दौरान सट्टे मे ७० लाख रुपये पर पानी फेर दिया है तव वह सेठ को पागल करार कर देता है पिता के कमरे से फोन हटवा देता है। इसी अवसर पर डा० का पिता किशोरीलाल आता है। यह वही कैशियर है जो माखनलाल के वदले मे पहली फर्म मे पाच हजार रुपये के लिये जेल काट कर आया हुआ होता है। किशोरीलाल वदले की अपेक्षा सहानुभूति ही व्यक्त करता है और अन्तत वह मानकलाल को वताता है कि कि तुम्हे रुपया खा गया। इसी चिन्ता से मानिकलाल को वस्तुतः टी० वी० हो जाती है।

तुलसी और सूर (सन् १९५४, पृ० ८८), ले० · मदन गोपाल सिंघल, प्र० . भारतीय साहित्य प्रकाशन, २३२, स्वराज्य पथ, सदर मेरठ, *पात्र* · पु० ४, स्त्री ८, *दृश्य* : तुलसी ११, सूर ९।

घटना-स्थल : तुलसी की कुटिया, मार्ग, चित्रकूट, नाभा जी का स्थान, कृष्ण मन्दिर, वैठक, गोस्वामी जी का स्थान, सूर की कुटिया, जगल, श्रीनाथ जी का मदिर।

यह धार्मिक नाटक एक तरफ तुलसी की भक्ति, सहनशीलता और निरभिमानिता पर आधारित है तो दूसरी ओर सूर के जन्माध होने का समर्थन पुष्टि मार्ग के उस सामान्य सिद्धान्त के आधार पर ही किया जाता है जिसके अनुसार प्रभु की नित्य लीलाओ मे प्रवेश पा चुके हुए पुष्टि जीव प्रतिक्षण कृष्ण की लीलाओ का साक्षात् दर्शन करते है। उसके लिए चर्मचक्षुओ की नही आत्मिक दृष्टि की आवश्यकता होती है जो सूर को सहज प्राप्त है। वास्तव मे दोनो रूपक एकाकी के अधिक समीप जान पडते है।

तुलसीदास (सन् १९५१, पृ० ७०), ले० . श्रीराम शर्मा, प्र० हिन्दी भवन, हिन्दी मार्ग, नाम पल्ली रोड, हैदराबाद, पात्र पु० १२, स्त्री १ तथा साधु और नर्तकिया, अक ४।
घटना-स्थल कवि-पत्नी का गृह, तपोभूमि, नदीतट, काशी विश्वनाथ का मदिर।

महाकवि तुलसीदास जी के जीवन की घटनाओ पर आधारित ऐतिहासिक नाटक है। कथा का आरम्भ तुलसीदास तथा रत्नावली के प्रेम-सम्बन्ध से होता है। एक बार रत्नावली अपने भाई के साथ तुलसीदास की अनुपस्थिति मे अपने मैके चली जाती है। पत्नी-वियोग मे व्यथित हो तुलसी उसके घर पहुँचते है। वहाँ पर फटकारे जाने पर वे विरक्त हो काशी चले जाते है। काशी मे तुलसीदास जी रामोपासना मे लीन हो जाते है। तुलसी को विख्यात होते देख अन्य सम्प्रदाय के लोग उनको बदनाम करने के लिये षड्यन्त्र रचते है। लेकिन तुलसी से परास्त हो उनकी शिष्यता स्वीकार कर लेते है। इन्ही दिनो टोडरमल के पुत्र ज्ञानमल तथा ज्ञानमल के मित्र शोभराज राजदरबारी कवि आचार्य केशव के अश्लील शृगारी काव्य को सराहते थकते नही है। केशव वृद्ध होने पर भी हृदय से रगीन है अत अपने बालो की सफेदी से व्यथित है। वे जहाँगीर के साथ कश्मीर-यात्रा करते है। लौटने पर कवि तुलसीदास की लोकप्रियता से परिचित होते है। केशव ईर्ष्यावश तुलसी की सतत निन्दा करते है तथा उनके यश को मलिन करने के लिए छन्दो तथा अलकार के वैचित्र्य से भरपूर 'रामचन्द्रिका' की रचना करते है। तुलसी से प्रभावित टोडरमल मृत्यु से पूर्व चुपचाप अपनी वसीयत तुलसी को लिख जाते है लेकिन विरागी भक्त तुलसी सम्पत्ति को स्वय न लेकर उनके परिवार तथा विद्यालय को दान दे देते है। अचानक तभी तुलसी से रत्नावली का मिलन होता है। महामारी से ग्रस्त तुलसी शान्तिपूर्वक स्वर्ग चले जाते है।

तुलसीदास (स० १९९१, पृ० ५४), ले० . जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, प्र० गंगा पुस्तक कार्यालय लखनऊ, पात्र पु० ७, स्त्री १, अक ३, दृश्य ७, ९, ९।
घटना-स्थल : ससुर का घर, गगा का तट, काशी विश्वनाथ का मदिर।

प्रस्तुत रूपक गोसाई-चरित के आधार पर लिखा गया है। इसमे गोस्वामी जी के जीवन की मुख्य घटनाये ही ली गई है। नाटक मे कल्पित पात्रो का भी प्रयोग है। वर्तमान युग के अनुरूप गोस्वामीजी का दलितोद्धारक रूप रगमच के लिए अत्यन्त उपयुक्त है।

तुलसीदास (सन् १९२२, पृ० १४३), ले० बदरीनाथ भट्ट, प्र० . रामभूषण पुस्तकालय, आगरा, पात्र पु० ८, स्त्री ५, अक . ३, दृश्य ८, ८, ५।
घटना स्थल तुलसीगृह, सोरो, अवध, आगरा, काशी।

इस नाटक मे भक्त शिरोमणि तुलसीदास की जीवन-झाकी प्रस्तुत की गई है।

तुलसीदास का साला अपनी बहन रत्नावली की दुर्दशा देखकर उसे अपने घर ले जाना चाहता है। पर तुलसीदास के आग्रह से रत्नावली द्विविधा मे पड जाती है। भाई के आग्रह करने पर वह तुलसीदास की अनुपस्थिति मे भाई के साथ पितृगृह चली जाती है। तुलसीदास अपनी स्त्री पर रुष्ट हो ससुराल चल पडते है। वहा पहुँचने पर रत्नावली कहती है—"बताओ हाड, रक्त या चाम किस से प्रेम करते हो, जो होता राम से यह प्रेम तो फिर क्या नही होता।" तुलसीदास वहाँ से खिन्न होकर गुरु नरहरिदास के पास जाते है। वहाँ से ज्ञानोपार्जन कर अवध पहुँचते है।

दूसरे अक मे तुलसीदास काशी मे एक प्रेत को प्रसन्न करके उससे भगवद्दर्शन का वरदान मागते है। प्रेत तुलसीदास को कर्णघटा पर होने वाली रामकथा मे कोढी के रूप मे कथा श्रवण करने वाले हनुमान के पास भेजता है। तुलसीदास कोढी रूपधारी हनुमानजी की स्तुति करते है। हनुमान तुलसीदास को चित्रकूट मे रामदर्शन का वरदान देते है। अब तुलसीदास भक्ति से सिद्ध

महात्मा होकर आगरा मे एक पागल हाथी से जनता की रक्षा करते है। अकबर खानखाना, बीरबल और मानसिह तुलसीदास की भक्ति से प्रभावित होते है। तुलसीदास जीवन के अन्त मे प्लेग से पीडित होते है। उसी समय रत्नावली भी वहा पहुँच जाती है और तुलसीदास के शव को प्रणाम कर वह भी प्राण छोड देती है।

तू कौन (सन् १९३१, पृ० ८०), ले० रामशरण आत्मानन्द अमरोही, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, *पात्र* पु० ११, स्त्री ५, *अक* ३, *दृश्य* १०, ११, ५। *घटना-स्थल* मेला, गगातट, साधु की कुटी, विवाह-मण्डप।

इस सामाजिक नाटक मे पत्नी का सच्चा पति-प्रेम दिखाया गया है।

सरूप एक मेले मे खो जाता है। लोग उसके गगा मे बहकर मर जाने की कल्पना कर लेते है। इस समाचार से लोग उसकी पत्नी दुर्गा को विधवा समझने लगते है। किन्तु भाग्य से एक साधु की कुटी मे सरूप और दुर्गा की भेट होती है। दोनो आपस मे प्रेम से मिलते है पर इसी बीच रजीत भी दुर्गा से प्रेम करता है। दुर्गा के पिता रजीत के साथ उसकी शादी तय करते है। यद्यपि इस विधवा-विवाह मे उन्हे बडी कठिनाई होती है तथापि शादी के अन्तिम समय मे दुर्गा द्वारा सरूप के वचपन के चित्रो को दिखाने मे यह प्रमाणित हो जाता है कि दुर्गा विधवा नही सधवा है और उसका असली पति सरूप अभी जीवित है। अत विवाह-मण्डप मे ही रजीत यह रहस्य जानकर उसे पुन उसके पति सरूप के साथ कर देता है।

तेगे सितम (सन् १९२३, पृ० १०४), ले० बी० डी० गुप्त, प्र० उपन्यास वहार आफिस, काशी, *अक* ३, *दृश्य* ७, ६, ३। *घटना-स्थल* सीजर का शाही वाग, सीजर मीनार के ऊपर कमरा, शाही दरवार।

इस ऐतिहासिक नाटक मे दुष्ट राजा सीजर की व्यभिचारिता तथा वीर सेना मारकस की वीरता प्रस्तुत है।

सीजर के दरवार मे सुन्दरी मालिन मरसिया फूल की डाली लेकर सेवा मे उपस्थित होती है। सीजर उसे एकान्त मे ले जाकर उसका सतीत्व हरण करना चाहता है किन्तु वह वीरतापूर्वक उसकी कमर से रिवाल्वर खीचकर फायर करती है। गोली कान के पास से निकल जाती है। मरसिया नदी मे कूदकर निकल भागती है। सीजर उसे पकडने की आज्ञा देता है।

सीजर के आनन्द भवन मे मरसिया भेषधारी मार्टन बन्दी-रूप मे आता है। सीजर कहता है—ओ सुनहरी नागिन, तूने मुझपर फायर किया था क्या अब भी तू मेरे हाथो से निकल सकती है। मार्टन अपने सर से टोप और गाउन उतार देता है और ललकारता है कि मै एक स्त्री का सतीत्व वचाने के लिये प्राण देने को तैयार हूँ। मार्टन का वध होता है और सीजर उसकी लाश पर हटर जमाता है।

सरजीर और सीजर मे ईश्वर के अस्तित्व के विषय मे बहस होती है। सीजर उसे तलवार से मारना चाहता है पर वह भाग निकलता है। रोम के ईसाई मुहल्लो मे आग लगा दी जाती है। सीजर प्रसन्न होकर देखता है। एक स्त्री अपने मृतक वच्चे को लेकर सीजर के सामने आती है किन्तु सीजर वेश्याओ से घिरा शराव पी रहा है। नाटक के अन्त मे मारकस नामक वीर सेनानी को मरसिया के द्वारा सीजर के पापो का पता चलता है। सीजर शत्रुओ से घिर जाता है और अन्त मे धधकती आग मे जल मरता है। मारकस राजकाज सम्हालता है। लुई अपनी वेटी मरसिया का विवाह मारकस से करते हुए कहती है—मैने प्रतिज्ञा की थी कि प्रजा के कष्ट हरने वाले को ही अपनी लडकी दूँगी।

तोता मैना (सन् १९६२, पृ० ७७), ले० डा० लक्ष्मीनारायण लाल, *पात्र* पु० ८ और तोता मैना, *अक* ३।

इस नाटक मे तोता मैना सूत्रधार एव नटी के रूप मे आपसी वार्तालाप से कथा का दिग्दर्शन कराते है। तोता पुरुष-पक्ष तथा मैना स्त्री-पक्ष को श्रेप्ठ सिद्ध करने के लिये अपने तर्क प्रस्तुत करते है। दोनो अपने-अपने पक्ष की पुष्टि के लिये अनेक कथाओ, घटनाओ को

दृष्टान्त-रूप मे रखते है। विवाद अधिक बढने पर हंस आकर दोनो को समझाते हुए कहता है—"इस दुनिया मे मर्द सभी एक से नही होते "सभी औरते एक ही तरह की नहीं होती"—हस तोता-मैना का मतभेद दूर कर दोनो की आपस मे शादी करा देता है। नाटक प्रथम बार लखनऊ थियेटर द्वारा १९६१ मे और थियेटर यूनिट, बम्बई द्वारा प्रदर्शित।

त्याग या ग्रहण (सन् १९४३, पृ० १२२), ले० : सेठ गोविन्द दास, प्र० : रामदयाल अग्रवाल, इलाहाबाद, पात्र पु० ५, स्त्री २, *अक* ५, *दृश्य-रहित*।

घटना-स्थल सपादक का कार्यालय, भवन का कक्ष, आश्रम।

इस नाटक मे गाधीवाद तथा साम्यवाद की श्रेष्ठता के प्रश्न को उठाकर समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। धर्मध्वज गाधीवादी है और नीतिराज साम्यवादी। गाधीवाद त्याग मे विश्वास करता है और साम्यवाद मानव के मनोविज्ञान को लेकर नीतिराज के माध्यम से व्यक्त हुआ है। इन दोनो ही पात्रो के मध्य, नाट्यकार ने रूमानी भूमिका मे विमला देवी को (एम० ए० प्रथम श्रेणी पास) नायिका के रूप मे प्रस्तुत किया है। धर्मध्वज के चित्रण मे आदर्श को दिखाया गया है जबकि नीतिराज के माध्यम मे नवयुवक-वर्ग पर व्यग्य किया गया है। साम्यवाद अवगुणो को तो अपना रहा है किन्तु उसके गुणो से दूर होता जा रहा है। नीतिराज के प्रति सर्वप्रथम विमला आकृष्ट होती है। वह उसकी साम्यवादी विचारधारा से सहमत रहती है। नीतिराज से वह खुलकर प्रणय-सभोग करती है किन्तु जब नीतिराज को यह मालूम होता है कि विमला गर्भवती हो चुकी है तो वह भावी भय से घबड़ा जाता है। नीतिराज को लगता है कि इस तरह से वह अपनी पैतृक सम्पत्ति से च्युत कर दिया जायेगा। अतएव वह विमला से विवाह का प्रस्ताव रखता है। जब विमला को यह पता लगता है कि नीतिराज साम्यवाद के सिद्धान्तो से हट रहा है जिसके मूल मे उसकी कायरता है तब वह उससे घृणा करने लगती है। इस अवसर पर वह कहती है कि मै अपना बालक नदी मे फेक दूँगी या किसी अनाथालय को दे दूँगी किन्तु किसी कायर की पत्नी बनना कभी भी पसन्द नही करूँगी। ऐसे अवसर पर धर्मध्वज सारी परिस्थिति को जानता हुआ भी उसकी सहायता मे प्रवृत्त होता है।

त्यागी युवक (वि० १९९४, पृ० ७६), ले० : अमर विशारद, प्र० तिलक पुस्तक भण्डार, मधुपुर, सथाल परगना, पात्र . पु० १५, स्त्री २, *अक* : ३, *दृश्य* ' ७, ६, ५।

घटना-स्थल रास्ता, शराबी, पियक्काड का मकान, आदित्यसेन जमीदार की कचहरी, शराब की दुकान, इनायतअली का घर, सडक, झडो से ढका शव।

इस दु खान्त नाटक मे दो त्यागी युवको का देश को अग्रेजी सत्ता से मुक्त कराने के लिये किये अदभुत बलिदान को दिखाया गया है।

रवीन्द्रनाथ के गान 'अन्तर मम विकसित करो...' से मगलाचरण होता है और द्वितीय दृश्य मे एक ग्रेजुएट नवयुवक उदय हाथ मे बी० ए० की डिग्री लेकर मार्ग मे उपाधि की निरर्थकता और बेकारी की समस्या पर सोचता जा रहा है। उनका नेता दिवाकर किसानो और मजदूरो की दुर्दशा का कारण विदेशी शासन बताकर कहता है —'भारत स्वतन्त्र होकर सबसे पहले किसानों और मजदूरो को ऋण-मुक्त करेगा। उन्हे उनकी जमीन का मालिक बना, उनके भोजन-वस्त्र और स्वास्थ्य-शिक्षा का समुचित प्रबन्ध करेगा और शासन की बागडोर उनके हाथो मे देगा। उदय को यह सुनकर मानो मार्ग मिल जाता है। उदय को मार्ग मे एक चोर हथकड़ी-बेड़ी मे जकड़ा थानेदार द्वारा पिटता दिखाई पड़ता है। चोर कह रहा था "हजूर दो दिन से कुछ खाया नही था, इसलिये एक रोटी वाले की दुकान से आँखें बचाकर चार रोटियाँ उठाई कि पकड़ा गया।"—दारोगा करीम खाँ उसकी दीन दशा देखकर दुखी होता है पर कानून के अनुसार चोर को दड देना ही पड़ता है।

प्रथम अक मे शराबियो की दुर्दशा दिखाई गई है। सत्यवती अपने शराबी पति से तग आकर कहती है—"पुरुष कुछ भी करे स्त्री बोल नही सकती। कहा है हिन्दू धर्म के ठेकेदार ? वे विवाह की अध्यात्मवादिता दिखलाये।" इसी अक मे एक अछूत, उदय और दिवाकर को पीठ दिखाते हुए कहता है —"पीठ फाटि गेल सरकार ! भारत-भारत दम निकाल दिहिन।" इस हरिजन को केवल अछूत होने के कारण सवर्णो ने पीटा था। उदय और दिवाकर उक्त समस्याओ का मूल कारण अग्रेजीराज मानकर विदेशी सत्ता से देश को मुक्त कराने के लिए घर-बार छोड देते है।

उदय और दिवाकर जमीदार आदित्यसेन के विरुद्ध किसानो और मजदूरो का जत्था लेकर जुलूस निकालते है। उनका नारा है "जमीन किसानो की, कारखाना मजदूरो का, गुलामी मौत है।" जमीदार आदित्यसेन गुडो द्वारा इतना पीटा जाता है कि उसके जीवन की कोई आशा नही।

तीसरे अक मे राष्ट्रीय मुसलमान इनायत अली देश की दशा देखकर कहता है—"वे मुसलमान हो नही सकते जो हिन्दुस्तान को गुलाम बनाये रखने मे अग्रेजो के मददगार है। इनायत अली की गोद मे मरणासन्न दिवाकर लेटा है। वह मरते समय कहता है "भगवान मुझे फिर नयी ताकत, नए जोश के साथ भेजे।" दिवाकर को देखकर उदय रोता है तो दिवाकर कहता है, "कल २६ जनवरी है, जाओ और थाने पर स्वतन्त्रता का झडा गाड आओ।" उदय तिरगा झडा गाडने फरीद खा के थाने पर जाता है। ज्योही झडा फहराने का प्रयास करता है कि सार्जेंट मि० फाम्स उसको बडी निर्दयता से पीटता है। उदय के प्राण उसी समय निकल जाते है। इनायत अली के मकान पर उदय और दिवाकर के शव अगल-बगल मे रखे जाते है। शव तिरगे से ढके है। सभी अमर शहीदो की जय बोलते है। उदय के पिता भानु प्रकाश के रोदन के साथ नाटक समाप्त होता है।

त्रिकोण की भुजाएं (सन् १९७०, पृ० ८४), ले० डॉ० चन्द्रशेखर, प्र० आत्माराम एण्ड सज, दिल्ली, पात्र पु० ६, स्त्री १, अक-रहित, दृश्य . ८।

घटना-स्थल . पाठशाला, होस्टल, हास्पिटल, गान्धीरोड।

इस सामाजिक नाटक मे सच्ची प्रेमिका का कुटिल, वासनासक्त प्रेमी के साथ प्रेम दिखाया गया है।

इस ध्वनि-नाटक मे त्रिकोण की भुजाएँ नमिता, दिवाकर और लोकेश है। नमिता अपने प्रेमी दिवाकर को पाने के लिए ही अपनी अभिलाषाएँ एव परिवेश त्याग कर आधुनिक बन जाती है। दिवाकर नमिता को केवल वासनाओ की तृप्ति का साधन समझता है। वह मेजर गुप्ता, विद्यार्थियो आदि के सामने नमिता का परिचय 'सिस्टर' 'कजिन' के रूप मे देता है। नमिता दुनिया के लाछन से डर कर दिवाकर पर विवाह करने के लिए दबाव डालती है लेकिन दिवाकर शादी करने से अनिच्छा प्रकट करता है। दिवाकर अपने स्कूटर पर नमिता को होस्टल छोडने जा रहा था कि भयकर दुर्घटना हो गई। दिवाकर बच गया लेकिन नमिता की दोनो टागे काटनी पडी। प्रो० शर्मा नमिता की जीवन-रक्षा के लिए अपना खून देते है। दिवाकर दुर्घटना के दूसरे दिन ही विश्वविद्यालय के 'टूर' मे अजन्ता की गुफाएँ देखने चला जाता है। होश आने पर नमिता प्रो० शर्मा को सामने खडा देख दिवाकर के लिए तडप उठती है।

अब प्रो० शर्मा नमिता के दु ख के साथी बन जाते है। वे कुछ पुस्तके और अपनी डायरी पढने के लिए नमिता के पास हास्पिटल मे भिजवा देते है। डायरी पढकर उसे प्रो० शर्मा की उदात्त भावना और दिवाकर के लुभावने चेहरे, कुत्सित वासनाओ का पता चलता है। वह डायरी के अन्तिम पन्ने पढती हुई तिलमिला उठी कि दिवाकर दुर्घटना के दूसरे दिन ही अनिता से शादी करके 'टूर' पर चला गया। उसके जीवन-सपने चकनाचूर हो गये। वह आत्महत्या करने के लिए व्ही-

ह्वीलचेयर पर बैठकर चल पडती है। दुर्घटना तो हुई पर डा०सुनील की सतर्कता से नमिता फिर बच जाती है। प्रो० शर्मा के यह कहने पर कि मैं तुम्हारे जिस्म से नही वरन् तुम्हारी आत्मा एव अभिलाषाओ से प्रेम करता हूँ, नमिता का मन स्थिर हो जाता है। वह प्रो० शर्मा के साथ नया जीवन जीने के लिए तैयार हो जाती है। इसी समय दिवाकर अनिता के साथ नमिता के कमरे मे घुसता है। और अनिता के साथ दिवाकर को देखकर नमिता व्यग करती है। 'क्यो दिवाकर, कोई नया प्रयोग है क्या ?' सब व्यग्य से हँस पडते है।

त्रेता (सन् १९६२, पृ० १२६), ले० चन्द्र प्रकाश वर्मा, प्र० गया प्रसाद एण्ड सस आगरा, पात्र पु० ८, स्त्री ६, अक . ३, दृश्य ५, ५, ५।

'त्रेता' राम और रावण के युद्ध एव तत्कालीन सास्कृतिक सघर्ष की भाव-रजित झाकी प्रस्तुत करता है। नाटक की प्रमुख समस्या युद्ध है जो सृष्टि के मूल मे निहित है तथा यह निरन्तर मानव-प्रगति को रुद्ध करती रही है। वज्र-ज्वाला के शब्दो मे "युद्ध सुख छीनता है, वह आशा और अभिलाषा छीनता है। वह चरणो मे गति, अधरो से मुस्कान, कठ से गीत और हृदय से स्नेह छीनता है। वह भूमि से हरीतिमा और आकाश से नीलिमा छीनता है।"

इस नाटक मे रावण के चरित्र के उपेक्षित अश को उभारने का प्रयास किया गया है। यहा राम-रावण का विरोध व्यक्तिगत न होकर दो विचार-धाराओ का टकराव है। तीसरे अक मे राम कहते है, "लकेश्वर मुझे ज्ञान था कि तुम महान् हो। तुम-सा विरोधी जय-पराजय को अर्थहीन सा बना देता है। पर लकेश्वर तुमने केवल बाह्य देखा अतरग नही। तुमने देह देखी आत्मा नही। तुम पक देख सके सरसिज नही। महान् ऋषियो की साधना सदा लोक-रजन के लिए ही रही है। उनकी साधना के फल का अधिकारी समग्र ससार रहा है। वसिष्ठ, विश्वामित्र, वाल्मीकि, भारद्वाज··· आदि मानवता के प्रकाश-स्तम्भ है। प्रवृत्ति और निवृत्ति का सतुलन ही श्रेयस्कर होगा लकेश्वर। मर्यादा मे दोनो को आबद्ध होना होगा। इद्रियो का पूर्ण रोध जहा मरण है, वहा उनकी पूर्ण मुक्ति देवताओ का भी पतन करा देती है।"

त्रेता की झांकी (सन् १९४६, पृ० १८८), ले०: डॉ० सूर्यकान्त, प्र० . अतरचन्द कपूर एण्ड सन्ज, लाहौर, पात्र . पु० ७, स्त्री ६, अक . ५, दृश्य : ७, ५, ४, ५, ५।

घटना-स्थल आश्रम।

विश्वामित्र और वसिष्ठ के चिरपरिचित द्वन्द्व को आधार मानकर त्रेता युग के वर्ग-सघर्ष का चित्र प्रस्तुत किया गया है। त्रेता युग मे विभिन्न वर्णो के पारस्परिक सघर्ष, कालुष्य, द्वेष और वैमनस्य से सम्पूर्ण हिन्दू समाज अभिशप्त था। ब्राह्मणो और क्षत्रियो के बीच यह कटुता सर्वाधिक थी। उन दोनो वर्णो के प्रतिनिधि थे वसिष्ठ और विश्वामित्र। गुरु आश्रम मे विद्याध्ययन करते समय ही उन दोनो के विचार-भेद के कारण सघर्ष होने लगा था जो समय की गति के साथ बढता ही गया। वसिष्ठ गुरु आश्रम से जाने के बाद साकेत-नरेश त्रिशकु के प्रधान अमात्य बनते है और जमदग्नि, परशुराम आदि विप्र-वर्ग की सहायता से त्रिशकु को ब्राह्मण-कन्या से विवाह करने के कारण अपदस्थ कर देते है। उन्हे बन्दी-गृह मे डाल और स्वय मनमानी करने लगते है। उधर कान्यकुब्ज मे विश्वामित्र राजा बन जाते है। वे ब्राह्मणो के विरुद्ध क्षत्रिय-शक्ति को सयोजित कर त्रिशकु की सहायता करने का निश्चय करते है। वे आत्मबल बढाने के लिए घोर तप करते है। वसिष्ठ की निरकुश शासन-प्रणाली और ब्राह्मणो के प्रति पक्षपात भाव, राज्य मे विशृखलता और अनुशासनहीनता उत्पन्न कर देते है, जिससे प्रजा मे विद्रोह होने लगता है। अवसर से लाभ उठाकर एक ओर से हैहयराज कृतवीर्य

साकेत पर आक्रमण करते है, दूसरी ओर से विश्वामित्र। आपत्ति के क्षण मे वसिष्ठ अपने कृत्य पर पश्चात्ताप करते है। तभी विश्वामित्र मैत्री का हाथ आगे वढाकर सम्मिलित सैन्य से हैहयराज को परास्त कर देते है। वसिष्ठ और विश्वामित्र की मैत्री के फलस्वरूप वर्णविद्वेष की अग्नि शान्त हो जाती है और त्रिशकु राजपद तथा विश्वामित्र ब्रह्मर्षि-पद पाते है।

थके पांव (वि० २०१२), ले० भगवती चरण वर्मा, प्र० साहित्य सदन, देहरादून, [उपन्यास का नाटक रूपातर अभिनय के लिए]

इस नाटक मे तीन पीढियो का कथानक है। विवाह और परिवार-वृद्धि के कारण प्रत्येक व्यक्ति को जीवन कष्टमय प्रतीत होता है।

कथा का नायक नौकरी के लिए इण्टरव्यू मे जाता है पर वहाँ सिफारिश के वल से अयोग्य व्यक्ति चुना जाता है। घर लौटते ही वह ज्वरग्रस्त होता है। उसकी वहन के विवाह मे दहेज के कारण परिवार पर ऋण होता है।

किसी प्रकार नौकरी प्राप्त करने पर जो वेतन मिलता है वह इतना अल्प है कि तीन-चार वच्चो और स्त्री के साथ निर्वाह करना कठिन है। भाई सिनेमा मे धनोपार्जन करता है। वह वहन के विवाह मे कोई योगदान नही देता है। परिणामत परिवार छिन्न-भिन्न होता है। उस दिन क्लर्क के परिवार मे उसका लडका परीक्षा मे अनुत्तीर्ण होता है। आगे चलकर एक छात्रावास मे उसके लिये द्रव्य का अभाव पडता है। यही क्लर्क फर्म मे रिश्वत लेता है, क्योकि पुत्र की पढाई का खर्चा देना है। हृदय मे कोलाहल मचता है। प्रात काल फर्म के स्वामी को सूचित करता है कि जो सैम्पिल पास था उसके अतिरिक्त दूसरा माल रिश्वत लेकर हमने पास कर दिया है। मै वेईमान हूँ पर यह वेईमानी मैने अभावों और वहन-वेटी की शादी मे दहेज के रुपयो के लिये की है। मालिक क्षमा नही करता है। रिश्वत का रुपया लौटा देता है पर नौकरी से त्यागपत्र मागता है। परिवार पर वडा प्रहार होता है और अन्त मे क्लर्क आत्महत्या कर चिन्ता से मुक्त होता है।

थोड़ी देर पहले और थोडी देर बाद (सन् १९३८), ले० सत्यदेव दूवे, *पात्र* पु० ३, स्त्री १, *अक* ६, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल कमरा।

इस सामाजिक नाटक मे आधुनिक मानव के मानसिक द्वन्द्व को प्रदर्शित किया गया है। वर्तमान युग मे परिस्थितियो के द्रुतगति से वदलने के कारण कोई निर्णय लेना असम्भव हो गया है।

नाटक का नायक रमेश जीविका का कोई साधन न होने के कारण अपनी प्रेयसी कमला से विवाह नही कर पाता। वह कर्त्तव्य को प्यार से अधिक महत्त्व देता है। इसी कारण कमला भी आत्महत्या करने की चेष्टा करती है। किन्तु वच जाती है। चन्दन नामक एक युवक कमला से विवाह का प्रस्ताव करता है किन्तु कमला और रमेश के प्रेम का रहस्य ज्ञात हो जाने पर वह अपना विचार वदल देता है। वह रमेश के लिए जीविका का साधन जुटा देता है। अचानक कमला की भी लाटरी निकल आती है। इस प्रकार अर्थ की समस्या दूर हो जाने पर दोनो का विवाह जाता है।

द

दंगा (सन् १९४७), ले० . गिरिजाकुमार माथुर, *पात्र* पु०-स्त्री०, अक-दृश्य-रहित। *घटना-स्थल*-रहित।

समसामयिक परिवेश पर आधारित यह एक रेडियो सगीत-रूपक है। भारत-पाकिस्तान के विभाजन की साम्प्रदायिक पृष्ठ-भूमि पर कवि ने घृणा और कटुता दोनो का दिग्दर्शन कराया है जिसमे तत्कालीन जनता मे व्याप्त भय, अनास्था, अनिश्चितता और आक्रोश की तीव्र अभिव्यक्ति मिलती है।

दंत मुद्रा (वि० २०२४, पृ० ८३), ले० . सीताराम चतुर्वेदी, प्र० अखिल भारतीय वि० प० काशी, *पात्र* पु० ९, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* ३, ४, ४।
घटना-स्थल अध्ययनकक्ष, प्रमोदवन, ब्रह्म-पल्ली का स्थान, आवास, भवन का वाहरी हिस्सा, शयनागार, कुटिया, न्यायसभा।

इस ऐतिहासिक नाटक मे सम्राट् अशोक की गुप्त नीतियाँ दिखाई गई है।

शिशुपाल अशोक के समय का एक मनस्वी ब्राह्मण है, जो चाणक्य का शिष्य होने के नाते यह सोचता है कि मै राज्य का सचालन भली-भाँति कर सकता हूँ। सयोगवश एक दिन अशोक भटकता हुआ उसके यहाँ पहुचता है लेकिन उसे अपना परिचय नही देता। शिशुपाल उससे अशोक की बुराई करता है। अगले दिन राज-दरबार मे शिशुपाल को बुलाकर उसे न्यायमत्री बना दिया जाता है। अशोक क्रूर एव विलासी स्वभाव का होने के कारण एक दिन सेवक की हत्या करके शिशुपाल को आदेश देता है कि अगर आपने हत्यारे का पता न लगाया तो आपको मृत्यु-दड दिया जायगा।

यह १९८८ मे अभिनव रंगशाला के दृश्य पीठात्मक पेटिका रगमच पर, १९८९ मे सतीशचन्द्र कालेज, वलिया के रगमच पर तथा १९९६ मे टाउन महाविद्यालय मे सफलतापूर्वक अभिनीत हुआ। इसमे लेखक ने स्वय भी अभिनय किया था।

दक्षयज्ञ-विध्वस (सन् १९१४, पृ० ३३), ले० प्र० कैलाशपति द्विवेदी और कमलधारी, *पात्र* पु० ७, स्त्री ६, *अक* ४, *गर्भाक* १, ४, ४, १।
घटना-स्थल दक्षपुरी, राजसभा, कैलाश-पर्वत ब्रह्मलोक, यक्षराजपुरी।

इस पौराणिक नाटक मे सती का पितृ-गृह से प्राण-त्याग तथा शिव द्वारा दक्षयज्ञ का विध्वस दिखाया गया है।

स्तुति के उपरान्त दक्ष के दरवार मे वीणा वजाते नारद आते है। दक्ष नारद से अपने जामाता शिव द्वारा अपमान के प्रतिशोध का उपाय पूछते है। भृगु-यज्ञ-सभा मे सभी देवताओ ने दक्ष की अभ्यर्थना की किन्तु शकर अहकारवश खडे भी नही हुए। अत दक्ष-यज्ञ मे शकर को निमत्रण नही दिया जायगा। यदि वे आयेगे तो वहिष्कृत कर दिये जायेगे। दक्ष-पत्नी प्रसूती इस प्रस्ताव का विरोध करती है और नारद से अनुरोध करती है कि सती से यही आने का आग्रह करना। नारद शंकर के पास पहुँचकर दक्ष की सारी योजना समझाते है और दोनो का कलह देखने के लिए उत्सुक होते है। शकर नारद से प्रार्थना करते है कि सती से इसकी चर्चा न करना। अब नारद वैकुठधाम, ब्रह्मलोक, पाताल, चन्द्रलोक, इन्द्रलोक मे जाकर लक्ष्मी-नारायण, ब्रह्मा, वासुकी, चन्द्र, कृत्तिका, अश्विनी-भरणी को दक्ष-यज्ञ का सदेश सुनाते हुए सती के पास पहुँचते है और दक्ष-यज्ञ की बात सुनाते हुए कहते है—"दुख का विषय है कि आपको निमन्त्रित नही किया है, पर आप अपने पिता के गृह अवश्य जाना। जब अश्विनी आदि देवियाँ सती के पास आकर उनसे साथ चलने का आग्रह करने लगी तो वह शिव से

अनुमति लेने जाती है, पर शिव कहते है—"देखो सती, तुम मुझको त्यागकर मत जाओ।" सती शिव की अवहेलना कर पितृ-गृह को प्रस्थान करती है। शिव नदी को भेजते है कि सती को मार्ग से लौटा लाओ। सती किसी की कुछ न सुनकर दक्ष के अन्त -पुर मे पहुँच जाती है। माँ बेटी को आभूषण-रहित देखकर कहती है—"महाराज को मै क्या कहूँ! भिखारी वर से व्याह करके लडकी का हाथ पाँव पकडकर पानी मे फेक दिया है।"—इतना कहकर रोदन करती है। दक्ष सती को देखकर क्रुद्ध होते है। सती कहती है—"पिताजी, पितृभवन विना निमत्रण के कन्या आ सकती है। गुरुगृह और माता-पिता के गृह अपमान कैसा!"

दक्ष शिव की घोर निंदा करते है, और कहते है "जब वह मरेगा तो अन्न-वस्त्र देकर तेरा पालन करूँगा।" पति की घोर निन्दा सुनकर सती व्याकुल हो उठती है और योगासन से प्राण-त्याग करती है। नन्दी से सती का प्राणत्याग सुन शकर वीरभद्र से कहते है "तुम दक्षालय जाकर दक्ष-यज्ञ विध्वस करो और दक्ष का विनाश करके तब आओ।"—वीरभद्र तथा भूतगणो के आतक से भृगु आदि मुनि, यज्ञकर्ता ब्राह्मण, देवगण भागकर प्राण बचाते है। वीरभद्र दक्षराज का मस्तक काटकर अग्नि मे निक्षेप करता है। प्रसूती महादेव से अपने वैधव्य-निवारण की याचना करती है। महादेव के आदेशानुसार नन्दी छाग का मुड काटकर प्रभु को देता है। महादेव छागल का मुड कन्धे पर रखकर सजीवनी मत्र का उच्चारण करते है। दक्ष जीवित होकर क्षमा-याचना करते है और भगवान् के चरणो मे अनुरक्ति का वरदान माँगते है।

दबे का यार (वि० २००८, पृ० ८१), ले० माधव प्रसाद दुबे, प्र० द्विवेदी बधु, ६ राहा, बजरिया, इटावा (उत्तर प्रदेश), पात्र पु० १६, स्त्री ३, दृश्य ४५। घटना-स्थल बाग, युद्धशिविर, साधुकुटीर, गढी विक्रमपुर, बन्दीगृह की कोठी, युद्धक्षेत्र।

इस अर्ध-ऐतिहासिक नाटक मे औरगजेब के समय की राजनीति का परिचय मिलता है। युद्ध मे अभिभावको की मृत्यु के कारण गम्भीर सिह की शिक्षा का भार प्रभाकर-सिह पर आ पडता है। प्रभाकर सिंह 'हाजिरी दरबार' से ऊब जाते है। वे अपने भाजे को शस्त्र-विद्या मे निपुण कर उसे सेनापति बना देते है।

दारा मोहिनी के साथ विवाह कर देने का प्रस्ताव करता है, किन्तु उसे ठुकराकर प्रभाकर सिह साधु हो जाते है। गम्भीर सिह भी सेनापति-पद को त्यागकर गुलामी की बेडी तोड डालता है। उत्तर-दक्षिण मे रणधीर सिह औरगजेब के मातहत रहकर लडाइयो मे भाग लेता है। वहाँ उसके हाथ औरगजेब को दबाने की कुँजी हाथ आ जाती है। सुजान सिह अन्त समय अपने भाई-बहिनो की रक्षा का रणधीर सिंह से वचन लेते है।

मुबारक अलीशाह से कदाचित् किसी कलक के भय से दारा दबा हुआ था जिसके कारण वह जनता पर बहुत अत्याचार करता था, वह मोहिनी के पीछे पड जाता है। कर्त्तव्य-पथ निश्चित करने के लिये रणधीर-सिह आगरा जाता है, वहाँ उसे गम्भीर सिंह मिल जाता है। दोनो मोहिनी का उद्धार कर, अपने भाई-बहिनो की सहायता करते है, अत्याचारी नवाबो का अन्त करते है, औरगजेब के मातहत रहकर उसे बादशाह बनने मे मदद देते है।

दमयंती स्वयवर (वि० १६४६, पृ० ६४), ले० बालकृष्ण भट्ट, प्र० हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, पात्र पु० २६, स्त्री ११, अक १०, गर्भाक २१।

यह नाटक हर्ष के 'नैषध-चरित' पर आधारित है। इसमे विदर्भ-नरेश भीम की लोक-विख्यात सुन्दरी कन्या दमयती का स्वयवर वर्णित है। नैषध-नरेश नल उस पर आसक्त हो जाता है। उधर नल के रूप-गुण की प्रशसा सुन दमयती के मन मे उनके प्रति पूर्वराग उत्पन्न होता है और सोने के हस द्वारा नल का सदेश प्राप्त कर वह उसे पति-रूप मे वरण करने का निश्चय करती है। अब राजा भीम दमयती-स्वयवर का आयोजन करते है जिसमे नाग, यक्ष, किन्नर, देवता, मनुष्य आदि सभी योनियो के पुरुष आते है,

किन्तु दमयती नल को ही चुनती है। दमयती के लिए इच्छुक कलि देवता उस आयोजन और चुनाव की सूचना पाकर प्रतिशोध की भावना से उनको दडित करने का निश्चय करते है और नल को द्यूतक्रीडा के लिए प्रेरित कर उसका सर्वनाश कर देते है। राज्यहीन नल अनेक कष्ट सहता हुआ दमयती के साथ घोर वन मे शरण लेता है, जहाँ कलि की प्रेरणा से वह दमयती को अकेली सोती छोडकर पलायित हो जाता है। जगने पर निरीह दमयती विलाप करती है और एक ऋषि के दर्शन से आश्वस्त होती है। वहाँ से वह चेदिनगर की राजमाता के आश्रम मे पहुँचकर दास्यवृत्ति अपनाती है। इधर शापित कर्कोटक नाग के देश से नल विकृत हो जाता है। वह दमयती को प्राप्त करने का उपक्रम करता है और अयोध्यानरेश ऋतुपर्ण के सारथी-रूप मे द्यूतक्रीडा मे पारगत हो जाता है। अन्त मे नल से दमयती का मिलन होता है।

दमयन्ती स्वयंवर (सन् १८९५, पृ० ५५), ले० परमानन्द उपनाम छेदीलाल, प्र० : सरस्वती मन्त्रालय, प्रयाग, पात्र · पु० ८, स्त्री ४, अक ५, गर्भाक २, ३, १, १, १।

इस पौराणिक नाटक मे दमयन्ती-स्वयवर की कथा चित्रित है।

दमयन्ती राजा नल से प्रणय करती है। नल भी दमयन्ती से प्रेम करता है। परन्तु नल की उदारता देखकर इन्द्र, अग्नि, यम, वरुण चारो देवता द्यूत कर्म करने दमयन्ती के पास पहुचते है। दमयन्ती केवल राजा नल से ही प्रेम करती है। स्वयवर मे चारो देवता नल का वेप धारण कर आते है। दमयन्ती पाँच नल देखकर दुविधा मे पडती है किन्तु फिर भी अन्त मे देवकृपा से वह राजा नल को ही वरण करती है।

दरवाजे खोल दो (सन् १९६३, पृ० ९२), ले० कृश्नचन्दर; प्र० हिन्द पाकेट बुक्स, पात्र पु० ८, स्त्री २; अक-दृश्य-रहित। घटना-स्थल कुज मे स्थित आफिस।

इस नाटक का उपसहार से अर्थ स्पष्ट होता है। ख्वाजा अहमद अब्बास कहते हे "दिल के दरवाजे, दिमाग की खिड़कियाँ! इनको बन्द रखने के कितने पुराने और कितने अनोखे ढग है"—धर्म, जाति, धन, विद्या आदि के नाम पर दिल-दिमाग के दरवाजे वन्द कर लिये जाते है। इस नाटक मे उन्ही को खोलने की आवश्यकता इस प्रकार दिखाई गई है।

रामदयाल के कई फ्लैट है। वह अन्य धर्मवालो को उन्हे किराये पर नही देता। वह फ्रटियर वाला, कश्मीरी, बगाली, मद्रासी, पजाबी को इसलिए किराये पर मकान नही देता, क्योकि वे लोग मासाहारी है। यद्यपि मकान के निर्माण मे सभी वर्णो और प्रान्तों के लोग सलग्न है। विभिन्न प्रान्त के निवासी उसके फ्लैट मे आते है पर वह सबको बहाना वता देता है किन्तु एक लडकी चालाकी से सामान रख देती है। रामदयाल उसके पिता डाक्टर पर क्रुद्ध होते है। डाक्टर पूछता है कि मेरी लडकी ने इस फ्लैट को लेकर मुझे टेलीफोन किया था। बताओ मेरी लडकी को तुमने अपने घर मे कहाँ छिपाया है? नही तो मै पुलिस मे खबर करता हूँ। रामदयाल का वेटा कमलाकान्त स्वीकार करता है कि बिल्लो नामक लडकी को मैंने यह फ्लैट किराये पर दिया है। रामदयाल और डाक्टर मे गुत्थमगुत्था होती है। रामदयाल को दिल का दौडा पडता है। कमलाकान्त डाक्टर से अनुनय-विनय करके पिता का उपचार कराता है। अच्छा होने पर रामदयाल कहता है -"यह घर हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, पारसी, यहूदी ने मिलकर वनाया है। अगर वे सब मिलकर इस घर मे नही रहेंगे तो यह घर कैसे आवाद होगा।" सभी लोग एकत्र होकर आनन्दोत्सव मनाते है। इस प्रकार रामदयाल के दिल-दिमाग का दरवाजा खुल जाता है।

दलजीत सिंह (सन् १९२२, पृ० १४३), ले० · कृष्णलाल वर्मा, प्र० अमीचन्द जैन रईस, मालिक प्रेम माला कार्यालय, गोहाना (रोहतक), पात्र · पु० १३, स्त्री ५, अक · ५, दृश्य : ८, ७, ६, ८, ३।

घटना-स्थल : राजगढ दुर्ग, राजगढ का जेलखाना, शाइस्ताखाँ का महल, मठ, सेनाजी का मकान; राजगढ़ दुर्ग का महल, रामभोली की कोठरी, हनुमान जी का मन्दिर, सिहगढ दुर्ग, अन्त पुर, शिव का मन्दिर, घाटियाँ, पहाडी, वन प्रदेश।

इसमे प्रेमी-प्रेमिका के सच्चे प्रेम के साथ दलजीत सिह की अद्भुत वीरता का वर्णन है।

कथा का नायक दलजीत सिह वीर-केसरी परिवार का है। उसी तलहर ग्राम मे किशनपत जमीदार की रामभोली नाम की कन्या है, दलजीत सिह और रामभोली का परस्पर प्रेम है। परन्तु किशनपत रामभोली की शादी शेरसिह मरहट्टा से करना चाहता है। रामभोली के स्पष्ट कह देने पर किशनपत दलजीत सिह पर कुपित हो जाता है। तथा शिवाजी से शिकायत कर उसे कैद करवा देता है। कैदखाने मे जब एक दिन कुवर दलजीत को यह मालूम होता है कि यवनो की सेना महाराष्ट्र मे घुसी चली आ रही है तो वह जेलखाने की दीवार फाँदकर बाहर आ जाता है और सारी बाधाओ को तोडता हुआ दुश्मनो के दाँत खट्टे करता आगे बढता रहता है। पूना मे वह मुगल सिपाहियो द्वारा कैद कर लिया जाता है। इधर रामभोली कुवर को छुडाने के लिये अपनी सखी कमला को भेजती है। कमला दलजीत सिह का पता लगाकर शिवाजी को सूचित करती है और शिवाजी उसे छुडा ले जाते है।

शेरसिह रामभोली से विवाह करने के लिए अभी भी लालायित है। वह धोखे से रामभोली को हनुमान जी के मन्दिर मे बुलवाता है पर रामभोली के विवाह से इन्कार करने पर उसे भयानक जगल मे छोड आता है।

कुवर लौटकर रामभोली को कही नही पाता, अत उसकी तलाश शुरू कर देता है। शेरसिह दलजीत सिह पर राजद्रोह का आरोप लगाकर उसकी शिकायत शिवाजी से कर देता है। उधर दलजीत सिह सलहारगढ को मुसलमानो से बचाकर पाँच हजार की पदवी लेता है। तत्पश्चात् पनालदुर्ग पर अपना कौशल दिखाकर शिवाजी को मोहित कर लेता है। शिवाजी जब दलजीत सिह को पदवी देने के लिए दरबार लगाकर बैठे थे तभी वहाँ शेरसिह के फन्दे से निकलकर रामभोली पहुँचती है। रामभोली की फरियाद पर शिवाजी दुष्ट शेरसिह को कत्ल की आज्ञा देते है। रामभोली कुवर दलजीत सिह को देखकर उनकी गोद मे ही प्राण त्याग देती है। कमला भी अपनी प्यारी सखी के शोक मे हीरा की कनी चूस लेती है। इस दु खद अन्त को देखकर कुवर भी आत्महत्या का प्रयत्न करता है परन्तु तभी एक महात्मा सन्यासी पहुँचते है और उसे ऐसा न करने का उपदेश देते है। दु खित कुवर ससार को निस्सार समझ महात्मा के साथ चल देता है।

दलित कुसुम (सन् १९४६, पृ० १९४), ले० सेठ गोविन्ददास, प्र० गया प्रसाद एण्ड सस आगरा, *पात्र* . पु० ५, स्त्री ३, *दृश्य* : ५, ५, ५, ५।

घटना-स्थल मदिर, विधवा आश्रम।

इस सामाजिक नाटक मे बाल विधवा की दुर्दशा दिखाई गई है।

कुसुम बाल विधवा है। वह इस ससार से ऊबकर परलोक के विषय मे सोचती है। एक मन्दिर का महन्त कुसुम को कलुषित करना चाहता है। एक डाक्टर से कुसुम के विवाह की बातचीत होती है, परन्तु महन्त डॉक्टर को भी धोखा देता है। दुखी होकर वह अपने श्वशुर के घर जाना चाहती है, परन्तु वहाँ भी उसको कोई रहने नही देता। कुसुम विधवा आश्रम मे आश्रय लेना चाहती है, परन्तु वहाँ पर भी बेची जाने के डर से नही जाती। वह मिशनरी सस्था मे जाती है, परन्तु ईसाई हुए बिना वहा भी आश्रय नहीं मिलता। वह भटकती-भटकती एक दिन अपने बाल सखा कुँज की मोटर के नीचे दब जाती है। किंतु कुज उसे बचा लेता है। अब वह यूथिका के साथ एक दासी के रूप में रहने लगती है। बाद मे कुज उसको एक बाल विद्यालय मे जगह दिला देता है। जब विधवाश्रम के मैनेजर को यह सब खबर मिलती है तो वह अपने आश्रम की पोल

खुलने के डर से कुसुम के विपरीत नारे लगवाने आरम्भ कर देता है। इस भारी अपमान को देखकर वह मूर्च्छित हो जाती है। अब कुसुम का 'बायकाट' विद्यालय से भी हो जाता है। एक कुट्टिनी उसको रसिकलाल के घर ले जाती है। जहाँ रसिकलाल दलित कुसुम के साथ बलात्कार करता है। कुसुम अब अपने को जीवित रखने मे असमर्थ पाकर आत्महत्या के लिए गगा मे कूद पडती है, परन्तु तुरन्त ही पुलिस के द्वारा निकाल ली जाती है। कुसुम पर आत्महत्या का अभियोग चलता है, जहाँ उसकी मृत्यु बयान देते-देते ही हो जाती है।

दशाश्वमेध (वि० २००८, पृ० १२०), ले० लक्ष्मीनारायण मिश्र, प्र० हिन्दी भवन इलाहाबाद, *पात्र* पु० १२, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* २, २, २।
घटना-स्थल राजभवन, शिव मदिर, अष्ट भुजा का मदिर, दुर्ग।

इस ऐतिहासिक नाटक मे काशी मे गगा के तटवर्ती स्थान दशाश्वमेध का वर्णन है जहाँ पर अश्वमेध-परम्परा प्रचलित है।

ईसा की तीसरी शती मे भारशिव नागो की एक ऐसी शक्ति उठ खडी हुई, जिसने विदेशी कुषाण-शक्ति को देश के बाहर खदेडते हुए गगा-यमुना की धारो को मुक्त कर पूर्वजो के स्वर्ग का द्वारा खोल दिया। इस नाटक मे पद्मावती (एक स्थान विशेष) का तरुण वीरसेन नाग, कुषाण शक्ति का भीतर से पता लगाने के लिये मथुरा के कुषाण-राज वासुदेव की सेना मे एक सामान्य सैनिक के रूप मे कार्य करने लगता है। और वीरसेन मथुरा की कुषाण सेना मे रहते हुए अपने जातीय सगठन को बराबर बढाता रहा। वीरसेन के कुषाण-सेना मे नौकरी कर लेने से अराजकता बन्द तो हो जाती है पर उसके सकट के दिन नही मिटते। कुषाण शक्ति का पूर्वी क्षत्रप अगारक, वासुदेव की पुत्री कौमुदी को अपनी प्रिया बनाने की चिन्ता मे काशी छोडकर मथुरा मे डेरा डालता है। किन्तु कौमुदी वीरसेन नाग की ओर आसक्त है। पर वीरसेन नाग कभी भी कामना की आँखो से न तो राजपुत्री को देखता है न उसकी सखियो को। उसके इस सयम और आचरण से राजपुत्री सूर्य-किरणो मे हिम-सी पिघल उठती है। दूसरी ओर अगारक उसे अपनी भेंट और आग्रह के विविध रूपो से तग कर देता है। वीरसेन को अपने सिद्धि-मार्ग का अवरोधक मानकर शिव-मन्दिर मे पूजा करते समय अगारक उसकी हत्या का षड्यन्त्र करता है, पर वीरसेन शत्रु-शस्त्रो को अपने अर्घ्य-पात्र पर रोक कर उनका शस्त्र छीनकर शत्रुओ को आहत करता है और प्रतिज्ञा करता है...."अगारक को जिस दिन मै युद्ध मे मारूगा, शिवपुरी काशी मे मै अश्वमेध यज्ञ करूँगा।" अगारक और वीरसेन के द्वन्द्व-युद्ध की बात काशी के उस पार गगा की रेती मे निश्चित होती है।

दूसरे अक मे अगारक और वीरसेन के द्वन्द्व-युद्ध मे अगारक की मृत्यु होती है।

तीसरे अक मे वीरसेन की प्रतिज्ञा पूरी होती है। वर्ष की अन्तिम सन्ध्या मे वह मथुरा के दुर्गद्वार पर विजयी के रूप मे पहुँचता है, जहाँ राजपुत्री कौमुदी उसका स्वागत करती है। फलत वीरसेन उसे समूचे राज्य की स्वामिनी स्वीकार करता है। अश्वमेध-यज्ञ का जो सकल्प एक वर्ष पूर्व मथुरा मे किया था, वह काशी मे गगा के तटवर्ती स्थान-विशेष पर पूरा होता है। वहाँ भविष्य मे अश्वमेध की परम्परा चल पडती है। वही स्थान नाटक मे दशाश्वमेध कहा गया है जिस नाम से काशी मे आज भी उसकी ख्याति है।

दहेज (सन् १९३९, पृ० ६४), ले० प० शिवदत मिश्र, प्र० ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स, वाराणसी, *पात्र* पु० ५, स्त्री २, *अक-रहित*, *दृश्य* ६।
घटना-स्थल कमरा, मकान।

इस सामाजिक नाटक मे दहेज-प्रथा की समस्या तथा उसका समाधान प्रस्तुत है।

मनोहरलाल अपने लडके चन्द्रकुमार की शादी बहुत बडे दहेज के साथ करना चाहता है। उसे प्रेम बहू मे नही वरन् पैसे से है। प्यारेलाल उर्वशी का प्रेमी है पर वह उसे नही चाहती। प्यारेलाल उसे प्राप्त करने के अनेक उपाय करता है किन्तु

सब मे असफल होता है। अन्त मे दहेज के अभाव मे भी चन्द्रकुमार अपने पिता की इच्छा न रहते हुए उर्वशी से विवाह कर आदर्श नीति का पालन करता है।

दहेज (सन् १९५१, पृ० ८०), ले० · न्यादर सिंह 'बेचैन', प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, *पात्र* पु० १०, स्त्री ६, *अक* ३, *दृश्य* · ८, ६, ५।
घटना-स्थल · उमाशकर का घर, वेश्या-गृह।

इस नाटक' मे दहेज-प्रथा को लेकर समाज की बुराइयो का वर्णन है। गरीब होने से उमाशकर की तीन लडकियो मे किसी का विवाह नही हो पाता। किसी प्रकार घर गिरवी रखकर वह एक पुत्री का विवाह करता है किन्तु पर्याप्त दहेज के न देने से पुत्री को ससुराल मे कष्ट दिया जाता है। दूसरी लडकी पिता की गरीबी देखकर आत्महत्या करती है। तीसरी लडकी पिता के ऋण चुकाने के लिये फिल्म हीरोइन बनने के लोभ मे गुण्डो के हाथो पडकर वेश्या बन जाती है। अन्त मे भाई किशोर को पहेली पुरस्कार से धन मिलता है और उसी से सबका कष्ट दूर होता है।

दादा और मै (सन् १८९४, पृ० १३६), ले० गोपालराम, *पात्र* पु० ३, स्त्री ३, *अक* ४, *दृश्य* ३, ३, ३, ४।
घटना-स्थल घर का आगन, घर, वाटिका, पुस्तकालय।

यह एक प्रहसन है जिसमे स्त्री-भीरु दो नवयुवको की मनोवृत्ति का उपहास करते हुए अन्त मे उनका विवाह करा दिया जाता है।

कल्याणी मदन से कहती है कि वह अपना विवाह करा ले, किन्तु मदन स्त्री से बराबर डरता है। वह अपने छोटे भाई अनन्त मे बहुत प्रेम करता है और व्याह न करने का कारण बताता है कि वह के आते ही दोनो भाइयो मे मनोमालिन्य हो जाएगा। अनत (छोटा भाई) भी स्त्री से बहुत डरता है। अनत के विवाह के लिये कल्याणी रामनारायण की पुत्री सुन्दरी का प्रस्ताव रखती है। रामनारायण मान जाते हैं। मदन तथा अनन्त लडकी देखने के लिये जब रामनारायण के घर जाते है तो सुन्दरी तथा उसकी सहेली कौशल्या मार्ग मे एक वृक्ष की आड लेकर उनको देखती है। किन्तु जब इन दोनो की नजर लडकियो पर पडती है तो डर के मारे मदन तथा अनंत भागते है। उनका चश्मा वही छूट जाता है। घर पर अनंत तथा सुन्दरी का साक्षात्कार होता है पर अनत सुन्दरी को ठीक से नही देख पाता। एक बार सुन्दरी अनंत के पास अकेली जाती है तथा उससे बातचीत करती है। अनत उसे न पहचानने के कारण, सुन्दरी के बारे मे पूछता है कि वह कैसी है। सुन्दरी कौशल्या से यह बता देती है और कौशल्या मदन से कहती है कि उनका भाई स्त्रियो से अभद्र व्यवहार कर प्रेम रचाता है। मदन उसे स्वीकारता तो नही पर कौशल्या तर्क-वितर्क से उस समय अनत को नाराज कर देती है। कौशल्या सुन्दरी को मदन के सामने पुन लाकर यह कहलवा लेती है कि मदन के लिये इससे उपयुक्त वह न न मिलेगी। वह शादी कराने को तो तैयार है पर अनत माने तो। दूसरी ओर सुन्दरी अनत से यह विश्वास ले लेती है कि अनत उसी से शादी करेगा, सुन्दरी से नही। इस प्रकार भुलावे मे डालकर सुन्दरी अनत के हृदय के प्रेम की दृढता पा लेती है और मदन के सामने भेद खोल दिया जाता है। कौशल्या के हृदय मे मदन के लिये स्थान बना है। मदन तथा अनत एक-दूसरे की बात टालते नही, इसलिये कौशल्या तथा सुन्दरी की उपस्थिति मे अनत मदन से यह कहलवा लेता है कि वह भी कौशल्या से प्रेम करता है। और रामनारायण मदन-कौशल्या तथा अनत-सुन्दरी का व्याह कर देता है।

दानवीर कर्ण (सन् १९५२, पृ० ६५), ले० . न्यादरसिंह 'बेचैन', प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, *पात्र* पु० १६, स्त्री ४, *अक* · ३, *दृश्य* ६, २, ५।
घटना-स्थल · दुर्योधन का राजभवन, —क्षेत्र।

इस पौराणिक नाटक मे वीर कर्ण की दानवीरता का चित्रण है ।

नाटक का प्रारभ कुती की वर-प्राप्ति पर सूर्य का स्मरण तथा उनके आशीष से पुत्र-प्राप्ति, पिता सूरसेन द्वारा लोकलज्जा से उसका परित्याग और अधिरथ द्वारा कर्ण के पालन से होता है । प्रथम अक मे कौरव-गुरु द्रोणाचार्य अपने शिष्यो के ज्ञान का प्रदर्शन कराने आते है। उसमे पाडवो की विजय-प्राप्ति पर दुर्योधन ैर कर्ण अप्रसन्नता प्रदर्शित करते है। कर्ण के अपमान का बदला चुकाने तथा उसे अपने पक्ष मे लेने के लिये दुर्योधन उसे वग देश का राजा बनाता है ।

द्वितीय अंक मे द्यूत-क्रीडा मे हारी, द्रौपदी का चीरहरण, १२ वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास दिखाया गया है । उसी मे कृष्ण कौरवो से सन्धि कराने मे असफल होते है जिससे महाभारत होता है।

महाभारत मे कर्ण के प्रश्न को ही लिया गया है। कर्ण कुन्ती, इन्द्र और श्रीकृष्ण को कवच-कुडल, शस्त्र और स्वर्णदान देता है। स्वय कृष्ण उसकी वीरता की प्रशसा करते है ।

दानवीर कर्ण (सन् १९५२, पृ० ७९), ले० आर० एल० गुप्त, 'मायल देहलवी'; प्र० अग्रवाल बुक डिपो, दिल्ली, *पात्र* पु० १७, स्त्री ३, अक : ३, दृश्य ८, ५, ५ ।
घटना-स्थल कुरुक्षेत्र, मालदेश, मृत्युशैय्या ताप्ती नदी का किनारा ।

इस पौराणिक नाटक मे दानी कर्ण की भगवान् कृष्ण द्वारा ली गई परीक्षा का वर्णन है।

कर्ण कुन्ती मे जन्मा कुमारी अवस्था का पुत्र है। इसीलिए कुन्ती उसका परित्याग कर देती है। सारथी उसका पालन-पोषण करता है और दुर्योधन उसे माल देश का राजा बना देता है। इसलिए वह उसकी मदद के लिए बाध्य है। महाभारत के युद्ध मे वह दुर्योधन की ओर से पाडवो से लडता है। अपनी तपस्या एवं शौर्य से वह इन्द्र से कुँडल और कवच प्राप्त करता है, जिसके होते हुए कर्ण की मृत्यु सभव नही। यह जानते हुए भी कर्ण उन सबको अपनी मा को दान मे दे देता है और स्वय मृत्यु का आवाहन करता है। मरते समय कृष्ण ब्राह्मण के वेश मे उसके दाँत मे लगे हुए सोने को माँग कर उसकी दान-वीरता की परीक्षा लेते है, जिसमे कर्ण खरा उतरता है। लेकिन कृष्ण मुँह से निकले हुए जूठे सोने को लेने से इन्कार कर देते है। तब कर्ण घायल अवस्था तथा मृत्युशय्या पर पडे होने पर भी बाण चलाकर पाताल गगा के जल से धोकर उसे पवित्र करता है और फिर शुद्ध सोना दान देता है। कृष्ण इस अपूर्वदान से प्रसन्न होकर उसे वर माँगने को कहते है। तब कर्ण कहता है—जैसे मै कुँआरी स्त्री से पैदा हुआ हूँ वैसे मुझे कुँआरी पृथ्वी पर जलाया जाय।" यद्यपि यह कठिन था फिर भी कृष्ण ताप्ती के किनारे सुई की नोक पर जमीन देखकर और वही अपनी हथेली पर कर्ण का मृतक शरीर भस्म कर वरदान पूरा करते है ।

दानवीर कर्ण (सन् १९३९, पृ० ९६), ले० शम्भूप्रसाद उपाध्याय; प्र० बाबू बैजनाथ प्रसाद बुक्सेलर, वाराणसी, *पात्र* पु० १६, स्त्री ४, अक . ३, दृश्य ६, ४, ५ ।
घटना-स्थल द्रोणाचार्य का आश्रम, कौरवो-पाडवो के राजभवन, कुरुक्षेत्र ।

इसमे दानी कर्ण की दानवीरता चित्रित की गई है ।

कौरवो की राज-सभा मे जब द्रोणाचार्य के शिष्यो के बल की परीक्षा हो रही थी उसी समय कर्ण भी वहाँ आ जाता है जिससे अर्जुन शक्ति-परीक्षा को तैयार नहीं होते, वह कहते है कि यह तो सूत-पुत्र है। नीच कुल मे लडना हमारी प्रतिष्ठा के विरुद्ध है। तब दुर्योधन उसे अग देश का राजा बनाते है। फिर भी अर्जुन उससे शक्ति-परीक्षण नही करते। कर्ण गुरु सेवा मे परशुराम द्वारा पाँच अजेय बाण प्राप्त करते है तथा अपने पिता सूर्य से कवच और कुण्डल। उन अस्त्रो के रहते कर्ण को कोई नही मार सकता। पर महाभारत के युद्ध मे कृष्ण पहले तो

उसे अपनी ओर मिलाना चाहते है, क्योकि कर्ण कुन्ती के गर्भ मे कौमार्यावस्था मे उत्पन्न हुआ उसका ही पुत्र है। पर कर्ण अपने मित्र दुर्योधन को दिए गए वचन से नही हटता। कर्ण की दानशील प्रवृत्ति से लाभ उठाकर कुन्ती उससे कुण्डल और कवच दान मे माँग लेती है। इनके अभाव मे वह अर्जुन के बाणो से घायल होता है। इसी घायलावस्था मे कृष्ण और अर्जुन साधु के वेश मे पहुँच उससे दान मागते है। कर्ण अपने दात मे लगे हुए सोने को हाथो से उखाडकर दाँत समेत देते है, पर जूठा रहने से कृष्ण इन्कार करते है तब कर्ण अपने बाण से पाताल गगा से पानी निकाल उसे धोकर पवित्र करके कृष्ण को दान देते है। जीवन के अन्तिम समय तक उस दानवीर ने अपने स्वभाव को नही बदला और इसी कारण उसे हार भी खानी पडी फिर भी कर्ण दान को प्रथम स्थान देता ही रहा।

दानवीर बलि (सन् १९५८, पृ० १२८), ले० सुशील कुमार शर्मा 'मायावी', प्र० · श्याम घाट, मथुरा, पात्र पु० १४, स्त्री ४, अक ३, दृश्य १०, ७, ५।
घटना-स्थल सुरलोक, पाताल, राजा बलि का महल।

इस पौराणिक नाटक मे राजा बलि की दानवीरता तथा भक्ति की महिमा दिखाई गई है।

दैत्यराज बलि को जीतने के लिए स्वय भगवान् को वामन-रूप धारण कर अवतार लेना पडता है। राजा बलि बडा दानी है। इसलिए वामन भगवान् तीन पैर पृथ्वी मागकर सारी सृष्टि को दो पैरो मे ही नाप लेते है। तीसरे पैर की पूर्ति के लिए राजा बलि को अपना शरीर नपवाना पडता है। इससे भगवान प्रसन्न होकर उनसे वरदान मागने को कहते है। तब बलि कहता है कि आप मुझे इस वामन-रूप मे प्रतिदिन मेरे महल के फाटक पर मिला करे जिससे मैं नित्य आपका दर्शन कर सकू। भगवान् बलि की इस इच्छा को पूरा कर उसके दरवाजे पर गदा लेकर द्वारपाल का कार्य करने लगते है।

दानी कर्ण (सन् १९३८, पृ० १२३), ले० वेनीराम त्रिपाठी 'माली'; प्र० . बाबू ठाकुर प्रसाद गुप्त बुकसेलर, बनारस सिटी, पात्र : पु० १६, स्त्री ४, अक ३, दृश्य · ११, ५, ७।
घटना-स्थल कुरुक्षेत्र, द्रोण का आश्रम, राजमहल।

दानी कर्ण के जन्म से लेकर उसके मरण तक की कथा इस नाटक का आधार है। कुन्ती के प्रथम पुत्र कर्ण का पालन अधिरथ सूत करता है। द्रोणाचार्य उसे नीच-पुत्र होने के कारण शिक्षा देने से इन्कार कर देते है फिर कर्ण तप करके इन्द्र से अमोघ कुंडल और कवच प्राप्त करता है। इसके रहते हुए उसकी मृत्यु सभव नही थी किन्तु अपने दानी स्वभाव के कारण वह यह जानते हुए कि वे मेरे रक्षक है, फिर भी उनको दान दे देता है और मरणावस्था मे अपने सोने के दात भी दान देकर अपनी दानवीरता का परिचय देता है।

दानी कर्ण (पृ० ११०), ले० एक नाटक प्रेमी, प्र० श्रीयुत बाबू सूर्य नारायण जी द्वारा जगन्नाथ प्रिंटिंग वर्क्स, राजघाट, काशी, पात्र पु० १०, स्त्री ५; अक. ३, दृश्य ७, ७, ५।
घटना-स्थल · महल, आश्रम, तपोभूमि, जंगल कुरुक्षेत्र।

प्रस्तुत नाटक दानी कर्ण की दानशीलता का विस्तृत परिचय देता है। कृष्ण भी कर्ण की महान् दानशीलता व उदारता से प्रभावित होते है।

दामाद (सन् १९५९, पृ० ६४), ले० : रमेश मेहता, प्र० : बलवत प्रकाशन, नई दिल्ली, पात्र पु० ८, स्त्री ६, अक ४।
घटना-स्थल . कालेज, म्यूनिसिपेल्टी, घर, कमरा।

इस सामाजिक नाटक मे दामाद के रूप मे चापलूस लोगो की धोखाधडी चित्रित है।

छज्जूराम कई बार मैट्रिक मे फेल होने पर भी सिफारिश से म्यूनिसिपेल्टी मे इन्स-पेक्टर की नौकरी प्राप्त कर लेता है।

वह बहुत घूस लेता है। उसके साथ कमला की शादी तय होती है किन्तु हरिप्रकाश कमला का प्रेमी है। हरिप्रकाश का दोस्त छज्जूराम अपने मित्र के लिए बनावटी रूप मे अपनी शादी कमला से करता है किन्तु वास्तविक रूप से दूल्हे के रूप मे हरिप्रकाश जाता है। इस तरह वह अपने मित्र का फर्ज पूरा करता है। किन्तु इस धोखाधडी के लिए कमला का पिता छज्जूराम पर मुकदमा चलाता है पर कमला के बीच-बचाव के कारण छज्जूराम को क्षमा कर दिया जाता है। तब वह कमला को अपनी बहन मानकर अपने उच्च चरित्र का प्रमाण देता है।

दालमंडी रहस्य (सन् १६००, पृ० ३६), ले० . बाल कृष्ण शर्मा, प्र० बसन्त साव बुकसेलर, चॉदनी चौक, काशी, पात्र पु० ५, स्त्री ३, दृश्य ४।
घटना-स्थल काशी के दो मकान, मार्ग और दालमडी का कोठा।

इस नाटक मे वेश्यागामी तथा वेश्याओ के व्यवहार का चित्रण है।

दास जी (खत्री) की जाफरान जान वेश्या से आशनाई है। मलजी और चिथरू पडित उनके मित्र है। होली के अवसर पर दास जी उस वेश्या के यहॉ जाना चाहते थे, किन्तु रुपए की कमी थी। सब निश्चय करते है कि एक सौ रुपए की साडी लेकर चला जाय। रास्ते मे खूब होली गाई जा रही है। दालमडी मे वेश्याये कोठे पर बैठी है। दास जी चिथरू पडित के साथ जाफरान जान के कोठे पर पहुँचते है। खूब शराब के साथ नाच-गाना होता है। रुपयो की नोच-खसोट होती है। रात बहुत बीतने पर दास जी के मुनीम आते है। फिर पुलिस वाले दास जी को पकडकर थाने पर ले जाते है। थाने की कथा दूसरे भाग मे छपी होगी, पर वह भाग उपलब्ध नही।

दाहर अथवा सिंधपतन (सन् १६३३, पृ० १५४), ले० उदयशंकर भट्ट, प्र० आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, पात्र पु० १६, स्त्री ३, अक : ५; दृश्य ६, ५, १०, ६, ४।
घटना-स्थल सिध, बगदाद।

इस ऐतिहासिक नाटक मे सिध-पतन का कारण देशद्रोहियो को बताया गया है।

सिध-राज दाहर अपने राज्य मे शान्ति एवं सुरक्षा स्थापित करने के विचार से पूर्वजो द्वारा अपदस्थ छोटे-छोटे राज्यो को पुन अधिकार देना चाहते है। इसी बीच बगदाद के खलीफा की ओर से अरबी व्यापार को स्वतत्र करने का सदेश आता है। यह सदेश राजा की उत्तेजना का कारण बनता है। परिणामस्वरूप सदेश की अवहेलना करते हुए राजा दाहर कडा प्रत्युत्तर भेजता है जिससे क्रोधित होकर हैजाज सिधराज को अपदस्थ करने के लिये अपनी सेना भेजता है, पर पराजित होता है। बौद्ध धर्मावलम्बी ज्ञानबुद्ध देश-द्रोही के रूप मे हैजाज के सेनापति अब्दुल्ला की मृत्यु से दुख प्रकट करता है और हैजाज को सहायता का वादा करता है।

इस अवसर का लाभ उठाकर मुहम्मद बिन कासिम के सचालन मे फिर एक बार सिंध पर चढाई होती है। ज्ञानबुद्ध खुलकर अपने देशद्रोह का परिचय देता है। उसी के षड्यत्र से राजा दाहर मारा जाता है, और सिध को पराजित होने से नही बचाया जा सका।

दिग्विजय (सन् १६६३), ले० सुमित्रानन्दन पत, पात्र · पु० ३, स्त्री २, अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल नही।

यूरी गगारिन की अन्तरिक्ष-यात्रा से प्रेरित इस लघु गीति-नाट्य मे कवि ने मानव को उसकी अन्तरिक्ष-विजय पर बधाई देते हुए मानव का मूल्याकन किया है। यह सत्य है कि शब्द-गति का अतिक्रमण कर मानव निस्सीम अन्तरिक्ष को नाप आया है। सभव है आगामी प्रयासो मे वह मगल, चन्द्र, शुक्रादि ग्रहो पर भी विजय प्राप्त करले किन्तु उसने क्या वह काल-नियति के लौह-चक्र से बच सकता है? कवि ने नील-ध्वनि के द्वारा एक सदेश प्रेषित किया है कि केवल भौतिक विज्ञान ने मानव

का कल्याण सभव नही, क्योकि जिस ग्रह पर भी वह जाएगा उसके साथ भू-मन-जीवन का समस्त नैराश्य, विषाद, राग-द्वेष, स्वार्थ भी वहाँ जाएगा और शीघ्र ही उन ग्रहो की स्थिति भी पृथ्वी-जैसी हो जाएगी। अत शान्ति, ज्योति, आनन्द, सौन्दर्य, प्रीति तथा अमृत-तत्व प्राप्त करने के लिए नियति के ऊर्ध्व-शिखरो पर आरोहण करके मानव को आत्मजयी बनाना होगा। कवि के मतानुसार ऊर्ध्व-चेतना तथा निम्न-चेतना अर्थात् ज्ञान-विज्ञान मे मूलत कोई भेद नही है। दोनो ही जीवन का दिग्दर्शन कराते है। अन्तर केवल दृष्टि मे आया है। इसी भेद के समन्वय के साथ ही गीति-नाट्य समाप्त होता है।

दिल की प्यास (सन् १९३९, पृ० ९६), ले० आगा हश्र कश्मीरी, प्र० बम्बई बुक डिपो, कलकत्ता, *पात्र* पु० ५, स्त्री ५, *अक-रहित, दृश्य* २७।
घटना-स्थल घर का कमरा।

इस नाटक मे पुरातन तथा आधुनिक विचारधारा का सघर्ष दिखाया गया है।

यह सघर्ष एक शिक्षित रईस, नवीन सभ्यता के पुजारी और स्त्री-स्वातंत्र्य के पक्षपाती मदनमोहन के घर मे घटित होता है। मदन अपनी पति-परायणा पतिव्रता पत्नी कृष्णा से अप्रसन्न होकर दूसरा विवाह फैशन-परस्त मनोरमा से कर लेता है। कृष्णा पति की प्रसन्नता के लिये अपना सर्वस्व उत्सर्ग कर देती है और मनोरमा से शादी करने की भी स्वीकृति दे देती है। किन्तु वही मनोरमा उससे सौतिया डाह उत्पन्न करके उसे घर से निर्वासित कराती है। फलत कृष्णा स्वामि-भक्त नौकरानी शकरी के साथ सिलाई करके अपना निर्वाह करती है। पर उसे अपने पति का सदैव ध्यान रहता है। एक समय तो कृष्णा पति की बीमारी मे पुरुष का वेश बना पति की सेवा करती है और मनोरमा सोसाइटी और फैशन मे पति की चिन्ता नही करती। अन्त मे रहस्योद्घाटन होने पर कृष्णा के व्यक्तित्व से पराभूत होकर मदन डाक्टर और मनोरमा की आँख खुलती है और मदन पुन कृष्णा को अपनाता है।

दिल की प्यास (सन् १९३६, पृ० ११ ले० शिवरामदास गुप्त, प्र० उपन्यास द आफिस, काशी; *पात्र* पु० ७, स्त्री *अक* ३, *दृश्य* . १०, ९, ४।
घटना-स्थल मकान, झोपडी, अस्पताल।

इस सामाजिक नाटक मे व्यभि मनुष्य की दुर्दशा तथा पत्नी की पतिप णता दिखाई गई है।

सदन एक शराबी तथा मुर्दा का रूप-पिपासु दुराचारी व्यक्ति है एक फैशनेबुल पढी-लिखी युवती मनो के लावण्य पर आसक्त होकर अपनी पति पत्नी सरला को घर से निकाल देता गरीब युवती सरला रोहिणी के अपने पुत्र दीपक को लेकर रहती है। अ नक दीपक बीमार हो जाता है। गरीबी कारण दवा न होने से दीपक मर जाता सदन भी अकस्मात् बीमार पडता है, लें फैशनेबुल मनोरमा उसकी परवाह करती। किन्तु पतिपरायणा सरला पुरुष धारण कर सेवक के रूप मे अपने पति की करती है। अन्त मे सरला की सेवा मे स ठीक हो जाता है। वह अपने किये हुए प पर पश्चात्ताप करता है और मनोरमा पिस्तौल मारना चाहता है। तब सरला अ वास्तविक रूप मे प्रकट हो जाती है, जि सदन, सरला और मनोरमा अपने f की प्यास क्रमश पश्चात्ताप, पति-सेवा त तलाक के कड़ुए घूट से बुझाते है।

दिलफरोश (सन् १९१८, पृ० ११०), ले मेहदी हसन लखनवी, प्र० भार्गव पुस्त लय, काशी, *पात्र* पु० ८, स्त्री ३, *अ* ३, *दृश्य* . ८, ६, ८।
घटना-स्थल बगदाद, मिस्र, कचहरी।

इस नाटक का आधार शेक्सपियर मर्चेण्ट आफ वेनिस है।

इस नाटक मे जादुई अगूठी की अ भुत करामात से दो बिछुडे दिलो को मिल की कथा है।

बगदाद के व्यापारी की मृत्यु पर उस बडा पुत्र इकराम सम्पूर्ण सम्पत्ति पर अ अधिकार कर लेता है, और वह अपने

वह बहुत घूस लेता है। उसके साथ कमला की शादी तय होती है किन्तु हरिप्रकाश कमला का प्रेमी है। हरिप्रकाश का दोस्त छज्जूराम अपने मित्र के लिए बनावटी रूप मे अपनी शादी कमला से करता है किन्तु वास्तविक रूप से दूल्हे के रूप मे हरिप्रकाश जाता है। इस तरह वह अपने मित्र का फर्ज पूरा करता है। किन्तु इस धोखाधडी के लिए कमला का पिता छज्जूराम पर मुकदमा चलाता है पर कमला के बीच-बचाव के कारण छज्जूराम को क्षमा कर दिया जाता है। तब वह कमला को अपनी बहन मानकर अपने उच्च चरित्र का प्रमाण देता है।

दालमंडी रहस्य (सन् १९००, पृ० ३६), ले० : बाल कृष्ण शर्मा, प्र० वसतू साव बुकसेलर, चाँदनी चौक, काशी, *पात्र.* पु० ५, स्त्री ३, *दृश्य* · ४।
घटना-स्थल काशी के दो मकान, मार्ग और दालमंडी का कोठा।

इस नाटक मे वेश्यागामी तथा वेश्याओ के व्यवहार का चित्रण है।

दास जी (खत्री) की जाफरान जान वेश्या से आशनाई है। मलजी और चिथरू पडित उनके मित्र है। होली के अवसर पर दास जी उस वेश्या के यहाँ जाना चाहते थे, किन्तु रुपए की कमी थी। सब निश्चय करते है कि एक सौ रुपए की साडी लेकर चला जाय। रास्ते मे खूब होली गाई जा रही है। दालमडी मे वेश्याये कोठे पर बैठी है। दास जी चिथरू पडित के साथ जाफरान जान के कोठे पर पहुँचते है। खूब शराब के साथ नाच-गाना होता है। रुपयो की नोच-खसोट होती है। रात बहुत बीतने पर दास जी के मुनीम आते है। फिर पुलिस वाले दास जी को पकडकर थाने पर ले जाते है। थाने की कथा दूसरे भाग मे छपी होगी, पर वह भाग उपलब्ध नही।

दाहर अथवा सिंधपतन (सन् १९३३, पृ० १५४), ले० उदयशंकर भट्ट, प्र० : आत्माराम एण्ड सस, दिल्ली, *पात्र* पु० १६, स्त्री ३, *अंक* : ५, *दृश्य* : ६, ५, १०, ६, ४।
घटना-स्थल . सिंध, बगदाद।

इस ऐतिहासिक नाटक मे सिंध-पतन का कारण देशद्रोहियो को बताया गया है।

सिंध-राज दाहर अपने राज्य मे शान्ति एव सुरक्षा स्थापित करने के विचार से पूर्वजो द्वारा अपदस्थ छोटे-छोटे राज्यो को पुन अधिकार देना चाहते है। इसी बीच बगदाद के खलीफा की ओर से अरबी व्यापार को स्वतत्र करने का सदेश आता है। यह सदेश राजा की उत्तेजना का कारण बनता है। परिणामस्वरूप सदेश की अवहेलना करते हुए राजा दाहर कडा प्रत्युत्तर भेजता है जिससे क्रोधित होकर हैजाज सिंधराज को अपदस्थ करने के लिये अपनी सेना भेजता है, पर पराजित होता है। बौद्ध धर्मावलम्बी ज्ञानबुद्ध देश-द्रोही के रूप मे हैजाज के सेनापति अब्दुल्ला की मृत्यु से दुख प्रकट करता है और हैजाज को सहायता का वादा करता है।

इस अवसर का लाभ उठाकर मुहम्मद बिन कासिम के सचालन मे फिर एक बार सिंध पर चढाई होती है। ज्ञानबुद्ध खुलकर अपने देशद्रोह का परिचय देता है। उसी के षड्यत्र से राजा दाहर मारा जाता है, और सिंध को पराजित होने से नही बचाया जा सका।

दिग्विजय (सन् १९६३), ले० सुमित्रानन्दन पत; पात्र : पु० ३, स्त्री ३, *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल नही।

यूरी गगारिन की अन्तरिक्ष-यात्रा से प्रेरित इस लघु गीति-नाट्य मे कवि ने मानव को उसकी अन्तरिक्ष-विजय पर बधाई देते हुए मानव का गुणगान किया है। यह सत्य है कि शब्द-गति का अतिक्रमण कर मानव निस्सीम अन्तरिक्ष को नाप आया है। सभव है आगामी प्रयासो मे वह मगल, चन्द्र, शुक्रादि ग्रहो पर भी विजय प्राप्त करले किन्तु [illegible] नियति के लौह-चक्र मे [illegible] ने नील-ध्वनि के द्वारा [illegible] है कि केवल भौतिक [illegible] मानव

का कल्याण सभव नही, क्योकि जिस ग्रह पर भी वह जाएगा उसके साथ भू-मन-जीवन का समस्त नैराश्य, विषाद, राग-द्वेष, स्वार्थ भी वहाँ जाएगा और शीघ्र ही उन ग्रहो की स्थिति भी पृथ्वी-जैसी हो जाएगी। अत शान्ति, ज्योति, आनन्द, सौन्दर्य, प्रीति तथा अमृत-तत्व प्राप्त करने के लिए नियति के ऊर्ध्व-शिखरो पर आरोहण करके मानव को आत्मजयी बनाना होगा। कवि के मतानुसार ऊर्ध्व-चेतना तथा निम्न-चेतना अर्थात् ज्ञान-विज्ञान मे मूलत कोई भेद नही है। दोनो ही जीवन का दिग्दर्शन कराते है। अन्तर केवल दृष्टि मे आया है। इसी भेद के समन्वय के साथ ही गीति-नाट्य समाप्त होता है।

दिल की प्यास (सन् १९३९, पृ० ९६), ले० आगा हश्र कश्मीरी, प्र० बम्बई बुक डिपो, कलकत्ता, *पात्र* पु० ५, स्त्री ५, *अक*-रहित, *दृश्य* २७।
घटना-स्थल घर का कमरा।

इस नाटक मे पुरातन तथा आधुनिक विचारधारा का सघर्ष दिखाया गया है।

यह सघर्ष एक शिक्षित रईस, नवीन सभ्यता के पुजारी और स्त्री-स्वातत्र्य के पक्षपाती मदनमोहन के घर मे घटित होता है। मदन अपनी पति-परायणा पतिव्रता पत्नी कृष्णा से अप्रसन्न होकर दूसरा विवाह फैशन-परस्त मनोरमा से कर लेता है। कृष्णा पति की प्रसन्नता के लिये अपना सर्वस्व उत्सर्ग कर देती है और मनोरमा से शादी करने की भी स्वीकृति दे देती है। किन्तु वही मनोरमा उसमे सौतिया डाह उत्पन्न करके उसे घर से निर्वासित करानी है। फलत कृष्णा स्वामिभक्त नौकरानी शकरी के साथ सिलाई करके अपना निर्वाह करती है। पर उसे अपने पति का सदैव ध्यान रहता है। एक समय तो कृष्णा पति की बीमारी मे पुरुष का वेश बना पति की सेवा करती है और मनोरमा सोसाइटी और फैशन मे पति की चिन्ता नही करती। अन्त मे रहस्योद्घाटन होने पर कृष्णा के व्यक्तित्व से पराभूत होकर मदन डाक्टर और मनोरमा की आँख खुलती है और मदन पुन कृष्णा को अपनाता है।

दिल की प्यास (सन् १९३६, पृ० ११२), ले० शिवरामदास गुप्त, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, *पात्र* पु० ७, स्त्री ३; *अक* ३, *दृश्य* १०, ९, ४।
घटना-स्थल मकान, झोपडी, अस्पताल।

इस सामाजिक नाटक मे व्यभिचारी मनुष्य की दुर्दशा तथा पत्नी की पतिपरायणता दिखाई गई है।

सदन एक शराबी तथा सुन्दरियों का रूप-पिपासु दुराचारी व्यक्ति है जो एक फैशनेबुल पढी-लिखी युवती मनोरमा के लावण्य पर आसक्त होकर अपनी पतिव्रता पत्नी सरला को घर से निकाल देता है। गरीब युवती सरला रोहिणी के घर अपने पुत्र दीपक को लेकर रहती है। अचानक दीपक बीमार हो जाता है। गरीबी के कारण दवा न होने से दीपक मर जाता है। सदन भी अकस्मात् बीमार पडता है, लेकिन फैशनेबुल मनोरमा उसकी परवाह नही करती। किन्तु पतिपरायणा सरला पुरुष वेष धारण कर सेवक के रूप मे अपने पति की सेवा करती है। अन्त मे सरला की सेवा से सदन ठीक हो जाता है। वह अपने किये हुए पापों पर पश्चात्ताप करता है और मनोरमा को पिस्तौल मारना चाहता है। तब सरला अपने वास्तविक रूप मे प्रकट हो जाती है, जिसमे सदन, सरला और मनोरमा अपने दिल की प्यास क्रमश पश्चात्ताप, पति-सेवा तथा तलाक के कडुए घूट से बुझाते है।

दिलफरोश (सन् १९१८, पृ० ११०), ले०: मेहदी हसन लखनवी, प्र० भार्गव पुस्तकालय, काशी, *पात्र* पु० ८, स्त्री ३, *अक*: ३, *दृश्य* ८, ९, ८।
घटना-स्थल बगदाद, मिस्र, कचहरी।

इस नाटक का आधार शेक्सपियर का मर्चेण्ट आफ वेनिस है।

इस नाटक मे जादुई अगूठी की अद्भुत करामात से दो बिछुडे दिलो को मिलाने की कथा है।

बगदाद के व्यापारी की मृत्यु पर उसका बडा पुत्र इकराम सम्पूर्ण सम्पत्ति पर अपना अधिकार कर लेता है, और वह अपने नेक

भाई करीम को कुछ भी नहीं देता। एक व्यापारी खुदादाद, करीम की सहायता करता है। उसी समय करीम को मिस्र की शाहजादी के स्वयंवर का पता चलता है, जिसमें एक तिलस्मी बक्स में उसका चित्र है। जो उस चित्रवाले सन्दूक को पहचानने में सफल हो, राजकुमारी उसके साथ विवाह करेगी और अपनी सम्पत्ति का मालिक भी बना देगी। करीम बरगन यहूदी से दस हजार रुपये खुदादाद की जमानत पर लेकर मिस्र के लिये प्रस्थान करता है।

बरगन यहूदी इस शर्त पर रुपया देता है कि यदि वह निश्चित समय पर रुपया वापस न करेगा तो वह खुदादाद के शरीर में आधा सेर माँस काट लेगा। विवशता के कारण खुदादाद करीम की सहायतार्थ उस शर्त को मान लेता है।

करीम अपनी प्रियतमा से मिलकर रहस्यमयी चाभी से स्वर्ण और चाँदी के आकर्षण से बचकर तिल्समी लोहे के सन्दूक को पसद करता है और शीरी को प्राप्त करता है। जब वह आनन्द की लहरों में निमग्न था तभी उसे खुदादाद का सदेश मिलता है कि रुपये समय पर न पहुँचने के कारण वह बरगन की चाल का शिकार हो गया है। करीम अपनी प्रेयसी शीरी को सारा किस्सा समझाकर पर्याप्त धन लेकर बगदाद आता है और खुदादाद की जमानत करके उसे बरगन से मुक्ति दिलाने का प्रयास करता है। शीरी भी अपने पति के वफादार मित्र खुदादाद के सहायतार्थ वकील बनकर अपनी सहेली गुलशन को मुहर्रिर बना पुरुष-वेश में कचहरी में उपस्थित होती है। वह करुणा की प्रार्थना पर बरगन को जब नहीं समझा पाती है तो रक्त की एक बूंद बहाये बिना मांस लेने के निर्णय द्वारा न केवल न्याय करवाती है, बल्कि खुदादाद को छुड़ाने के साथ आधी सम्पत्ति उसे और आधी उसकी लड़की तथा दामाद के नाम जारी करा देती है। शीरी [illegible] में ही वह अपनी अंगूठी इनाम में लेकर गुलशन के साथ वापस चली जाती है। करीम भी खुदादाद और असद के साथ [illegible] पहुँचता है। वहाँ अंगूठी का रहस्य खुलता है और शीरी की चमत्कारिता से सभी अभिभूत हो उठते हैं।

अभिनय—न्यू अल्फ्रेड थियेट्रिकल कम्पनी द्वारा अभिनीत।

दिलेर दिलशेर उर्फ चोरी व सरजोरी (सन् १८९०, पृ० ११०), ले० : मुंशी विनायक प्रसाद 'तालिब'; प्र० : बालीवाला, जामे जमशेद प्रेस, बम्बई, पात्र : पु० ७, स्त्री ३; अक (बाब) ३।
घटना-स्थल : जगल, कारागार, कोतवाली, वनमार्ग।

ओपेरा शैली के गीति-नाट्य में दिलशेर की ठगी तथा जालसाजी का वर्णन है।

दिलशेर लोगों को ठगी, जालसाजी और छल-कपट से लूटता है। उसकी पत्नी अकलामा भी कम भयानक नहीं है। वह भी यात्रियों की हत्या करती है। उन लुटेरों के कारण यात्रियों, अमीरों और निरपराध लोगों का जीवन सर्वदा भय और शका में रहता है। सौदागर मुनरंफ की भतीजी का दिलशेर से प्रणय-सम्बन्ध स्थापित है। सौदागर की भतीजी उस भयानक मनुष्य के बीभत्स कृतियों से परिचित होकर भी उसके प्रणय में आबद्ध हो जाती है। अन्ततोगत्वा कोतवाल उस नर-पिशाच को यत्न-पूर्वक बन्दी बनाने में सफल होता है। किन्तु दण्ड पाने से पूर्व ही दिलशेर हिरासत में विष पीकर आत्महत्या कर लेता है। उसकी परकीया नायिका उसके बन्दी बनाये जाने पर बहुत दुःखी होती है। वह भी दिलशेर के साथ उसी के पास पहुँचकर दम तोड़ देती है।

अभिनय—विक्टोरिया नाटक-मण्डली द्वारा अभिनीत।

दिल्ली से नेफा तक (सन् १९६८, पृ० [illegible]), ले० : देवी प्रसाद धवन; प्र० : [illegible] मन्दिर, [illegible]पुर, पात्र : पु० १२, स्त्री ३।
घटना-स्थल : [illegible]

इस नाटक में [illegible]

मुखरित है। इसमे नानाराव, तात्या टोपे, लक्ष्मीबाई, चन्द्रशेखर आजाद, नेहरू, शास्त्री, कृष्ण मेनन, चह्वाण, मोरारजी देसाई, अयूबखा, भुट्टो, माउत्स-ए-तुग, चाऊ एन लाई आदि सभी पात्रो के सवाद सुनाई देते है। और साथ ही दिल्ली, पाकिस्तान, चीन आदि के दृश्य भी दिखाई देते है। ऐसा लगता है लेखक ने प्रसिद्ध नेताओ के भाषणो की 'अखबारी कतरनों' को एक साथ पिरो-कर रख दिया है।

दीवान बहादुर (सन् १९३९, पृ० ११३), ले० देवदूत, प्र० श्यामलाल प्रेस, मोती हारी, *पात्र* पु० २०, स्त्री ७; *अक* ५, *दृश्य* ६, ६, ५, ७, ६।
घटना-स्थल मदन पल्ली मे कालेज का मैदान।

इस सामाजिक नाटक मे दीवानबहादुर दोरै स्वामी अय्यगार के समाज-सुधारवादी कार्यो पर प्रकाश डाला गया है।

जिस समय समाज मे विधवा-विवाह पर हस्तक्षेप किया जाता था, उस समय दीवान बहादुर अपनी विधवा पुत्री कोमलम् का विवाह करके समाज को श्रेष्ठ उदाहरण उपस्थित करता है।

दिवास्वप्न (सन् १९६१), ले० प्रेम नारायण टडन, प्र० विद्या मन्दिर, लखनऊ, *पात्र* पु० १, स्त्री १, *अक दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल प्रकृति-स्थली।

दिवास्वप्न कच-देवयानी की पौराणिक गाथा पर आधारित गीति-नाट्य है। देवयानी कच से प्रेम करती है, किन्तु कच की ओर से प्रणय-प्रतिदान के कोई प्रत्यक्ष सकेत न पाकर वह दिवास्वप्न द्वारा उसकी कल्पना करती है। दिवास्वप्न के आधार पर अन्त मे देवयानी मिलन-सुमनो की माला गूँथे बैठी रहती है। इस स्वप्न के टूटने पर नारी-रूप की विकलता देवयानी को व्यथित कर देती है। प्रणय की इसी विफलता मे गीति-नाट्य समाप्त होता है।

दिव्यलीला (सन् १९६०, पृ० ८८), ले० वीरसिंह कलचुरी, प्र० : मेहेर पब्लिकेशन्स, अहमद नगर, *पात्र* पु० १९, स्त्री ५, *अक* ४, *दृश्य* ६, ६, ६।
घटना-स्थल रगभूमि, गाँव, पार्क, मकान, एकात आफिस।

इस सामाजिक नाटक मे नई तथा पुरानी पीढी के मतभेद को साधु-महात्माओ की दिव्यलीला द्वारा दूर किया गया है।

नई पीढी पुरानी पीढी की जमीदारी को समाज के लिए घातक समझ रही है। जमीदार रमाकान्त का पुत्र सतीश विलायत जाने के लिए पिता द्वारा प्रदत्त धन गरीबो मे बाँट देता है। वह चाहता है कि गाँव वालो से कर्ज का पैसा न लिया जाय। पिता से विचार-साम्य न होने से वह घर पर एक पत्र छोडकर चला जाता है। उसे ऐसा प्रतीत होता है कि उसके मानसिक कष्ट को दूर करने के लिए अन्तरिक्ष से ध्वनि आ रही है।

इधर मारिस कालेज के छात्रो मे मेहेर बाबा का प्रसग लेकर दो विरोधी प्रतिक्रिया हो रही है। जॉन मेहेर बाबा की प्रशसा करता है पर ईरानी उनको पाखडी कहता है। जॉन का प्रवेश रमाकात के सम्बन्धी चतुर्वेदी के घर मे है। चतुर्वेदी का परिवार सतीश के भाग जाने से विकल है। २१ वर्षीया कन्या श्यामा जॉन से शान्ति की कामना मे मेहेर बाबा के फोटो माँगती है। जॉन और उसके मित्र अली मे मेहेर बाबा के विषय मे विवाद छिडता है। जॉन आध्यात्मिक विज्ञान और भौतिकी विज्ञान मे अन्तर स्पष्ट करता है। वह कहता है—"आध्यात्मिक विज्ञान का मकसद मन को निर्मूल करता है और एक ही इलाज है प्रेम, यही प्रेम बाबा की देन है।"

इधर रमाकात के गाँव का लकडहारा भैरव मेहेर बाबा का भक्त है। वह कहता है, कि भाई बाबा की कृपा हो जाय तो सतीश घर लौट आये। विलासी रमाकात को अब मेहेर बाबा की धुन समाती है और वह साधु-महात्माओ मे विश्वास करने लगते है। इधर सतीश और नरेश पूना के एक उपवन मे हरिदास बाबा से उनके जीवन और मेहेर बाबा की कृपा के विषय मे पूछते है। सतीश के मन मे मेहेर बाबा के प्रति श्रद्धा उमडती

है। इधर श्यामा के पास बाबा का तार आता है। उधर सतीश मेहेर बाबा के आदेश मे अपने गॉव पहुँच जाता है। सतीश मे और भी परिवर्तन आ गया है। पहले निर्धनो को पैसा देने मे उसे इस अभिमान का अनुभव होता कि मै मदद कर रहा हूँ। अब उसको ऐसा प्रतीत होता है कि सब कुछ बाबा करा रहे है। अब रमाकात मेहेर बाबा का शिष्य बन जाता है और ईरानी, जॉन, अली, रमेश उसकी बहन लीला, श्यामा, चतुर्वेदी आदि मेहेर बाबा के भक्त बन जाते है। सब मिल-कर मेहेर बाबा के चित्र की आरती उतारते है।

दीन नरेश (सन् १९४६, पृ० ९५), ले० डा० सरनामसिह शर्मा 'अरुण', प्र० कन्हैयालाल एण्ड सन्स, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर, पात्र पु० ७, स्त्री ७, अक ५। *घटना-स्थल* ऋषि सान्दीपन के आश्रम मे यज्ञ वेदिका, विप्र सुदामा का भग्न कुटीर, मार्ग, राजकीय अतिथि शाला, अभिनव सुदामापुरी ।

'दीननरेश' का पौराणिक कथानक कृष्ण-सुदामा की मैत्री पर आधृत है।

सुदामा अलौकिक भाव-भक्ति के उत्साह मे त्याग और तपस्या का प्रखर जीवन बिताता है किन्तु पत्नी के वात्सल्य से वह प्रखरता अति आर्द्र हो जाती है और सुदामा मानवीय करुणा से पसीज कर पत्नी के निर्देश को स्वीकार कर लेते है और कृष्ण के पास जाते है। किन्तु भक्ति का वातावरण कही भी विगलित नही होने पाता। कृष्ण से विदा होते समय भी याचना पर स्वाभिमान आरूढ रहता है। फिर भी वे मानवीय चिता मे आग्रस्त ही लौटते है। नाटक भक्ति और भगवद्-अनुग्रह के साथ लीला के वातावरण मे समाप्त होता है।

अभिनय—जयपुर मे सन् १९४९ मे अभिनीत।

दीवार (सन् १९५२, पृ० ९६), ले० : पृथ्वीराज कपूर, प्र० रमेश सहगल और इन्द्रराज आनन्द, बम्बई, *पात्र* · पु० १३, स्त्री ५, *अक* : ३।

घटना-स्थल घर।

यह नाटक पाकिस्तान की पृष्ठभूमि पर तैयार किया गया है। वस्तुत इस नाटक मे दो भाई हिन्दू और मुसलमान के प्रतीक के रूप मे रगमच पर उपस्थित होते है। अतिथि-पूजा के प्रेमी ये दोनो भाई विदेश से आए कुछ फिरगियो को अपने घर मे शरण देते है किन्तु वे अतिथि भेद-नीति का प्रयोग कर इन दोनो भाइयो के मध्य फूट का बीज बोकर एक दीवार खडी करते है। फलत· एक घर दो भागो मे बॅटकर भारत-पाकिस्तान के रूप मे प्रकट होता है।

दीवाला (सन् १९६२, पृ० ५६) ले० . जगदीश शर्मा, प्र० . देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, *पात्र* पु० ६, स्त्री १, *अक* २ *दृश्य* . २,
घटना-स्थल . द्यूतक्रीडा-स्थल, मकान, महल।

इस सामाजिक नाटक मे जुआरियो की प्रवृत्तियो का परिचय मिलता है।

शकर जुआ और शराब का अभ्यासी है। वह जीवन के प्रत्येक क्षण मे जुआ के शकुन देखता है किन्तु असफल रहता है। उसका पडोसी शम्भू उसे बहुत समझाता है। कमला भी रोकती है। किन्तु उसे एक दाव मे लक्षाधीश बनने का अरमान है। अन्त मे वह मगल साधु की शरण लेता है। उसे विश्वास होता है कि किसी महात्मा का आशीर्वाद ही साथ दे तो वह विजयी हो सकता है। वह क्रुद्ध होकर उसकी हत्या पर आरूढ हो जाता है, जिससे साधु उसे आशीष देता है। उसकी पत्नी उसे अपने जेवर दॉव पर लगाने को देती है। वह मकान भी दाव पर लगा देता है किन्तु सब को हार जाता है। अन्त मे वह दीवाली को दिवाला कहकर उत्सव बन्द करने को कहता है।

दुःख क्यो (सन् १९२१, पृ० ११४) ले० . सेठ गोविन्ददास, प्र० गगा प्रसाद एण्ड सस आगरा, *पात्र* पु० ५, स्त्री ३, *अक* ४। *घटना-स्थल* · वकील का घर।

इस नाटक मे मनुष्य की ईर्ष्या-प्रवृत्ति

ो दुख का कारण बताया गया है।

एक परिवार का नेता यशपाल साधारण ोटि का वकील है। उसकी पत्नी सुखदा ुख और शील की खान है। ब्रह्मदत्त छात्र-त्ति देकर विद्यार्थी जीवन मे उसकी सहायता रता है। अनेक बार उपकार करने वाले े प्रति सबसे अधिक ईर्ष्या की उत्पत्ति ोती है। अत यशपाल के हृदय मे ब्रह्म-त्त के बढते हुए प्रभाव के कारण र्ष्या का प्रादुर्भाव होता है। ब्रह्मदत्त ौंसिल के लिये चुनाव लडता है। यशपाल सके विरोध मे एक मोची को खडा करता ै। ब्रह्मदत्त हार जाता है। इस सारे प्रचार ं यशपाल ऐसे-ऐसे कार्य करता है जो एक ाँधीवादी के लिए अशोभनीय है। यशपाल ा यथार्थ रूप जनता समझ लेती है जिससे सका सार्वजनिक जीवन आरम्भ से ही नष्ट ो जाता है। इसके कारण ही उसके सुखी ौटुम्बिक जीवन की भी इस ईर्ष्या यज्ञ में आहुति हो जाती है।

दु.खिनी वाला (सन् १८९८, पृ० १३), ले० : राधा कृष्णदास, प्र० हरिप्रकाश, यन्त्रालय बनारस, *पात्र* पु० ४, स्त्री ३, *अक-रहित*, *दृश्य* ६।
घटना-स्थल : गाँव, प्रकोष्ठ।

इस छोटे से रूपक मे बाल-विवाह समस्या तथा जन्मपत्री पर विश्वास करने वाले माता-पिता का वर्णन है जो सुयोग्य वर छोड कर अयोग्य वर के साथ विना गुण-दोष पर विचार किये ही अपनी सन्तान को आजन्म कष्ट के समुद्र मे डाल देते है।

गोवर्धनदास बिना कुछ सोचे-समझे योग्य वर छोडकर अपनी कन्या सरला का विवाह अनपढ और अयोग्य वर लल्लू के साथ इस-लिये कर देते है कि सरला की जन्म-कुण्डली लल्लू की जन्म-कुण्डली मे मेल खा जाती है। कुछ ही दिनो पश्चात् सरला विधवा हो-कर पिता के घर आ जाती है। सरला की अवस्था शोचनीय है। उसके मन मे दूसरा विवाह करने की इच्छा पनपती है किन्तु इस नन्ही-सी कोपल पर समाज का कठोर नियम है। अन्त मे वह अपने धर्म की रक्षा के लिये विषपान कर लेती है।

दुर्गावती (वि० १९८२, पृ० १९९), ले० : बदरीनाथ भट्ट, प्र० गगा ग्रथागार, लख-नऊ, *पात्र* पु० १६, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* ७, ७, ४।
घटना-स्थल आगरा का किला, नगर के पास मैदान, युद्धभूमि।

इस ऐतिहासिक नाटक मे वीरागना दुर्गावती की वीरता चित्रित है।

जबलपुर के निकट स्थित गढमडल की रानी दुर्गावती का विवाह सग्राम-सिंह के पोते दलपति शाह से होता है। रानी विवाह के चार वर्ष उपरान्त विधवा हो जाती है। पुत्र को राज्यभार सौंप वह मालवाधिपति बाजबहादुर को जीतकर भोपाल प्रान्त राज्य मे मिला लेती है। अपने मन्त्री बाबू अधारसिंह की सहायता मे वह मुगल-सम्राट् से लोहा लेती है। शत्रु की प्रबल शक्ति को जीतने मे अस-मर्थ होने के कारण युद्धक्षेत्र मे आहत होती है। स्वर्ग-मार्ग मे यश देवी दुर्गावती का स्वागत करते है।

दुर्गा-विजय-नाटक (वि० २०१५, पृ० २७), ले० श्री जीवनाथ झा, प्र० वैदेही समिति, लाल बाग, दरभगा, *पात्र* . पु० १५, स्त्री २, *अक* २, *दृश्य* ६।
घटना-स्थल तपोवन मे मुनि की कुटी, राज-मार्ग, हिमालय की गुफा, शुम्भ का दरबार, युद्धभूमि, निशुम्भ का दरबार।

प्रस्तुत नाटक की कथा-वस्तु मार्कण्डेय पुराणस्थ दुर्गा सप्तशती के कथाश को लेकर लिखी गई है। असुर-राज शुम्भ देवताओं को जीतकर अपना आधिपत्य जमा लेता है। भय से इन्द्रादि सभी देवता भागकर जगल मे छिप जाते है। शुम्भ मदमत्त होकर गोवश का वध करता है तथा लोगो को ईश्वर के नामोच्चारण के बदले शुम्भ-शुम्भ जपने की आज्ञा देता है। साथ ही पूजा-पाठ-यज्ञादि का भी निषेध कर देता है। ऋषि-मुनियो की हत्या होने लगती है। सभी स्थानो पर त्राहि-त्राहि मचती है। ऐसी स्थिति मे देवता गण मिलकर दुर्गा की सामूहिक स्तुति करते है, जिसके फलस्वरूप दुर्गा का प्रादुर्भाव होता है। ऋषि-मुनि एव देवताओं की दुर्दशा देख-

कर वे मोहिनी रूप मे असुरो के साथ युद्ध करती है। असुरो का सहार कर दुर्गा इन्द्र को पुन त्रिभुवन के राज-सिहासन पर बैठाती हुई धर्म की स्थापना करती है।

दुल्ला-भट्टी (सन् १९६०), ले० हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० . आत्माराम एण्ड सस, दिल्ली, पात्र पु० ८, स्त्री ५, *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल . नदी-तट, कारागार, गाँव।

पजाब की लोककथा पर आधारित 'दुल्ला-भट्टी' सगीत-रूपक प्रेम का एक नया रूप प्रस्तुत करता है। नदी से जल भरकर लाती नूरी (भट्टी का असली नाम नूरी था) का घडा गाँव का आवारा दुल्ला फोडता है। अत दोनो मे झगडा होता है, जिसमे नूरी दुल्ला को कटुवचन कहती है। यह बात दुल्ला को लग जाती है और वह अपनी माँ से अपने पिता के हत्यारे का पता पूछता है। माँ के मुह से अकवर का नाम सुनते ही वह उसका दुश्मन वन शाही खजाने लूट लेता है। कर्त्तव्य के प्रति उसकी यह सच्ची लगन नूरी को भी उसके प्रेम मे दीवाना बना देती है। उधर अकवर शाही खजाना लूटने वाले डाकू को पकडने के लिए मिर्जा निजामुद्दीन के पुत्र हैदर को भेजता है। गाँव मे प्रवेश करते ही हैदर की दृष्टि नूरी पर पडती है और वह उसके सौन्दर्य पर मुग्ध हो जाता है। यहाँ हैदर दुल्ला की माँ के पास ठहरता है, क्योकि बचपन मे उसने ही हैदर को पाला था। अवसर पाते ही हैदर दुल्ला से नूरी के रूप की चर्चा करते हुए उससे विवाह की लाल्सा व्यक्त करता है। दुल्ला अपने प्रेम का बलिदान करके उसका विवाह नूरी से करा देता है। घर पहुँचकर हैदर को अपने पिता मिर्जा का विरोध सहना पडता है, जिसके परिणामस्वरूप दोनो को कारागार की अधेरी कोठरियो मे डाल दिया जाता है। यहाँ नूरी उस कबूतर द्वारा जो विदा के समय दुल्ला ने उसे भेट-स्वरूप दिया था—सदेश भिजवाती है। दुल्ला आकर हैदर और नूरी को छुडाने मे सफल होता है। किन्तु सघर्ष मे घायल होने के कारण दोनो की मृत्यु होती है।

दुविधा (सन् १९६८, पृ० ६८), ले० : *पृथ्वी नाथ शर्मा*, प्र० हिन्दी भवन, जालधर; *पात्र* पु० ५, स्त्री १, *अक* ३, *दृश्य*: ४, ५, ४।
घटना-स्थल मकान का एक कमरा।

इस नाटक मे उच्च शिक्षा-प्राप्त एक युवती के प्रेम और विवाह की समस्या को प्रस्तुत किया गया है। इसकी नायिका सुधा भावुकता मे डूबकर कल्पना के सहारे अपने प्रेम के विपय मे एक रगीन जीवन की आशा करती है और उत्तेजित भी उसी कल्पना के आधार पर होती है। सुधा के दो प्रेमी है। पहला प्रेमी केशव बैरिस्टर है और दूसरा विनय अभी वेकार है। केशव नारी की भावुकता को कुरेद कर उसे फुसलाने मे चतुर पुरुप है और विनय निराशा और उद्विग्नता से ओतप्रोत आत्माभिमानी प्रेमी है। ऐसे प्रेमियो के चक्कर मे पडी हुई सुधा 'दुविधा' मे पड जाती है, जिससे कोई निष्कर्प निकालने मे कठिनाई होती है। सुधा की अनत कल्पनाएँ 'माया मिली न राम' के रूप मे अपूर्ण रह जाती है किन्तु अतत. सुधा वैवाहिक जीवन से समझौता करने का निश्चय करती है।

दुश्मन (सन् १९७१, पृ० ९५), ले० : दया प्रकाश सिन्हा, प्र० साहित्य केन्द्र प्रकाशन, दिल्ली, *पात्र* . पु० ३, स्त्री २, *अक* ३।

यह हास्य-नाटक परिवार-नियोजन की *समस्या पर आधारित है।*

नाटक का नायक हिकमत सिह पहलवानी मे रुचि रखता है और ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा करता है। वह अपने प्रतिद्वद्वी से ऊँचा रहने का प्रयत्न करता है। उसके मामा और माँ-वाप चाहते है कि हिकमत विवाह करले परन्तु वह नही मानता। उसके प्रतिद्वन्द्वी के यहाँ विवाह होता है। जिस कमरे मे हिकमत कसरत करता है उसकी एक दीवार मे छेद होता है, जिसकी दूसरी ओर दुश्मन का घर होता है। हिकमत का मामा उस

छेद से देखकर उसे चिढाता है, और दुश्मन की दुल्हन की प्रशसा करता है। हिकमत उस छेद को अपने शिष्य द्वारा वन्द करवा देता है, परन्तु स्वय चुपके से देखने लगता है। मामा के समझाने पर विवाह के लिए तैयार हो जाता है। विवाह के पश्चात् वह अपनी पत्नी लीला की उपेक्षा करता है। परन्तु जव दुश्मन के यहाँ लडका होता है तो वह भी उससे ऊचा उठने के लिए ब्रह्मचर्य तोड देता है। उसके छ वच्चे हो जाते हैं। वह उनकी ठीक प्रकार से देखभाल नही कर पाता। एक दिन उसका एक वच्चा दुश्मन के लडके से पिटकर आता है, तव मामू कहता है "अपनी हैसियत से ज्यादा वच्चे पैदा करके तुमने स्वय अपने परिवार को हरा दिया।" अन्त मे निष्कर्ष निकलता है कि सबको अपनी आमदनी के अनुसार वच्चे पैदा करने चाहिए।

अभिनय—प्रस्तुत नाटक का प्रदर्शन और प्रसारण कई वार हो चुका है।

दुश्मने ईमान (सन् १९२४, पृ० १४९), ले० जलाल अहमद 'शाद', प्र० . उपन्यास वहार आफिस, वनारस, *पात्र* . पु० १५, स्त्री ९, *अक* ३, *दृश्य* ८, ७, ३।

घटना-स्थल पुर्तगाल का राजभवन, जगल, वन मार्ग।

इस नाटक मे सती स्त्रियो के सतीत्व की रक्षा दिखाई गई है।

सईदा पुर्तगाल के उजडे शाही खानदान की नेक शहजादी है। सईदा पर आशिक गम्माज अपने मित्र तसदीक को उसके पास भेजता हे। सईदा के पास जाकर तसदीक उसको सताता है तभी खम्भे से दो व्यक्ति प्रकट होकर तसदीक को सन्मार्ग वताते हे। तसदीक तभी से सईदा का मददगार हो जाता है। गम्माज की वहन हमीदा भी सईदा को वडा ही कष्ट पहुँचाती है। वह सईदा के लडके सिराज को मार डालती है जिसका वदला लेकर तसदीक हमीदा की शादी मत्री जमीर के साथ कर देता है। इधर तसदीक गम्माज के लडके विरजिस तथा जासूस कजल्क को मार डालता हे। सईदा की नेकनामी मे गम्माज की लडकी नाजनी भी उसका साथ देती है। अन्त मे तसदीक तथा मुहाफिज दोनो मिलकर गम्माज को कैद कर लेते हे और वह दुष्ट स्वय पश्चात्ताप करके मर जाता है। अन्त मे सईदा और तसदीक विछडे हुए भाई वहन मिल जाते है।

दूज का चाँद (सन् १९३०, पृ० १३२), ले० शिवराम दास गुप्त, प्र० उपन्यास वहार आफिस, काशी, *पात्र* · पु० ९, स्त्री ५, *अक* ३, *दृश्य* . ७, ७, ३।

घटना-स्थल मोतीलाल का घर, मदिरा-गृह, वेश्यागृह।

इस सामाजिक नाटक मे शरावी मोतीलाल का पतन दिखाया गया है तथा उसकी पत्नी शान्ता का पतिव्रता रूप दिखाकर नारी के आदर्शो की रक्षा की गई हे। मोतीलाल के दोस्त गौरीनाथ, गोपीनाथ तथा केशव राम दुराचारी है—और कामलता वेश्या से प्रभावित होकर मोतीलाल को भी पथभ्रष्ट करते हे। मोतीलाल का पुराना नौकर गोवर्धन सच्चरित्र और ईमानदार हे। किन्तु दोस्तो के कहने से मोतीलाल उसे निकाल देता है। गोवर्धन इतने पर भी अपने स्वामी की सदैव रक्षा करता है और उनके कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहता है। शान्ता की धर्म-परायणता ही मोतीलाल के आखिरी दिनो मे सहायक होकर उसे सुधार की ओर प्रेरित करती है।

दूतागद व्यायोग (वि० १९९०, पृ० ८२), ले० रघुनदन दास, प्र० नरेन्द्रदास विद्यालकार, *पात्र* पु० १०।

घटना-स्थल रामादल, वन, समुद्र, रावण का दरवार, पर्वत, सभा।

यह मैथिली नाटक सीता की खोज मे भेजे गये दूत अगद की रावण-दरवार मे दिखाई गई वीरता का परिचय देता है।

राम-दूत के रूप मे अगद लका जाकर रावण को राम का यह सदेश देते है कि अपने कर्म पर पश्चात्ताप करते हुए रावण राम की शरण मे जाकर विनयपूर्वक सीता को

समर्पित करे नही तो बुरे परिणाम भोगने को तैयार रहे। इस प्रश्न को लेकर सभा मे रावण और अगद के बीच विवाद उत्पन्न होता है। रावण अपने पक्ष को उचित ठहराते हुए अहकारपूर्ण शब्दो मे राम का परिहास करता है तथा उनके सन्देश को ठुकरा देता है। बदले मे अगद रावण को अपमानजनक शब्दो, व्यग्यो और कटूक्तियो से आहत कर इतना क्रुद्ध कर देते है कि वह इन्हे मारने का आदेश देता है। किंतु अगद साहसपूर्वक अपना दाहिना पैर जमाकर यह चुनौती देते है कि यदि कोई पॉव हटा देगा तो वह अपनी पराजय स्वीकार कर लेगे। फलत रावण के गर्व भरे आदेश से सभा मे उपस्थित अनेक वीर राक्षस पॉव हटाने आते है परन्तु असफल होते है। इस असफलता पर क्रुद्ध हो रावण अपने वीरो को धिक्कारते हुए स्वय अगद का पैर पकडकर उसे फेकने को उद्यत होता है, किंतु वह यह कहते हुए हट जाता है—'मेरा पैर धरने से अच्छा है राम का पैर पकड।' रावण लज्जित हो जाता ह। तदनतर राम के वचनो को स्मरण दिलाकर अगद राम के युद्ध-शिविर मे जाते है और रावण की सभा मे हुई बातो तथा घटनाओ का विवरण देकर लक्ष्मण से साधुवाद पाते है।

दूध का दूध पानी का पानी (सन् १८८२) (भाण) ले० प्रतापनारायण मिश्र, ब्राह्मण खण्ड १ सख्या ६ मे प्रकाशित।

यह भाण्ड शैली मे लिखा नाटक है। इसमे एक ब्राह्मण मच पर उपस्थित होकर सारी कथा आकाश-भाषित के रूप मे प्रस्तुत करता है। इसमे विजयसिह के दत्तक पुत्र बालकृष्ण की समस्त सम्पत्ति टेकचन्द नामक एक बनिये द्वारा हडप लेने की कथा ली गई है। यह नाटक अपूर्ण है। ब्राह्मण पत्र के अतिरिक्त अन्य कही इसका प्रकाशन भी नही हुआ है।

इसकी भाषा मे बैसवाडी का प्रभाव है। नाटक मे गद्य और पद्य दोनो का प्रयोग है।

देखा देखी (सन् १९५६, पृ० ६२), ले० वृ दावन लाल वर्मा, प्र० . मयूर प्रकाशन, झाँसी, *पात्र* पु० ७, स्त्री ३, *दृश्य* · ३।
घटना-स्थल बढई का घर, मोतीलाल का मकान।

इस सामाजिक नाटक मे निम्न मध्य-वर्गीय परिवार का थोथा प्रदर्शन दिखाया गया है। चॉदीलाल अपने पुत्र के जन्म-दिन के उत्सव को धनाढ्य लोगो के अनुरूप मनाना चाहता है। पत्नी के निरन्तर आग्रह के कारण प्रदर्शन पर वह अपनी सीमा से अधिक खर्च कर देता है। इसको पूरा करने के लिए वह रिश्वत लेता है और इसी से उत्कोच का अभियोग उस पर लगा दिया जाता है। अभियोग से तो बच जाता है, परन्तु वह अपने पडोसी चमनलाल बढई के हाथ अपना मकान बेच देता है। चमनलाल की पत्नी भी अपने पुत्र बीरू के जन्म-दिन को बडे लोगो की तरह ही मनाना चाहती है। कर्म की महत्ता समझने वाले चमन लाल के पुत्र बीरू को बढई का काम करते समय अपने कपडो के खराब होने का भय सदा बना रहता है। इस प्रकार लोग दूसरो की देखा-देखी अपने सामर्थ्य से अधिक दिखावे का कार्य करने लगते है जो कि बाद मे दु:खो का कारण बन जाता है।

देव और मानव (सन् १९५५, पृ० १५३), ले० चन्द्रगुप्त विद्यालकार, प्र० अतर चन्द कपूर, दिल्ली, *पात्र* पु० ७, स्त्री ३, *अक* ५, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल दक्ष का राजदरबार, कैलाश पर्वत, देवो की राजधानी।

इस पौराणिक नाटक मे गौरीशकर की प्रचलित कथा वर्णित है। प्रजापति दक्ष के दरबार मे वसन्तोत्सव के समय राजकुमारी पार्वती अपनी सखी तिलोत्तमा के साथ विद्यमान है। नगर कन्याएँ तथा राज-नर्तकी महाराज के सामने निकलकर गीत गाती है। नृत्य समाप्त होने पर त्रिशूलधारी शिव प्रवेश करते है। शिव की दृष्टि सती पर पडती है। वह सहसा आह्लाद से भरकर डमरू बजाते है। दूसरे अक मे देवो की राज-धानी कैलाशपुरी मे वरुण, सोम, अग्नि, अगिरस, प्रद्युम्न, बृहस्पति, सूर्य के वार्तालाप के

समय महाराज शिव और चित्रांगदा का प्रवेश होता है। थोड़ी देर में प्रजापति दक्ष का दूत आता है। चित्रांगदा और शिव का नृत्य होता है। नृत्य के उपरान्त चित्रांगदा शिव से दक्ष-कन्या के विवाह के बारे में निर्णय पूछती है। शिव कहते हैं कि सती एक शक्ति है जो देव और मानव के बीच की खाई पाट सकती है।

तीसरे अंक में सती के मामा पांचालेश्वर और दक्ष का वार्तालाप है। पांचालेश्वर शिव के साथ सती के विवाह का विरोध करते हैं, किन्तु दक्ष सती का विवाह शिव के साथ कर देते हैं। वहाँ से लौटकर शिव-सती कैलाश-पुरी के राजकीय उद्यान में आकर वरुण, अग्नि, वृषभ, सोम, सूर्य आदि देवों से कहते हैं—"मानव जाति के सबसे श्रेष्ठ रत्न (सती) से मेरे विवाह का उद्देश्य ही यह है कि मैं मानव और देव की कला और संस्कृति के सम्मिश्रण से एक उच्चतम संस्कृति का निर्माण कर सकूँ।"

पाँचवें अंक में कनखल में अग्निष्टोम यज्ञ होता है। उस यज्ञ में शिव और सती सम्मिलित नहीं हैं। दक्ष ने उन्हें निमंत्रण नहीं दिया था तो भी सती अस्त-व्यस्त रूप में यज्ञ में पहुँच जाती है और चीत्कार करती है। दक्ष सती की भर्त्सना करते हैं। यज्ञ-कार्य के मध्य में ही उसके पश्चात् शिव भी पहुँच जाते हैं। दक्ष उनकी भी भर्त्सना करते हैं। क्रोधित शिव अपना संहारकारी रूप दिखलाते हैं। सती धधकती हुई ज्वाला में कूद पड़ती है। तभी चारों ओर एक ध्वनि सुनाई पड़ती है "सती-सती-सती—।

अभिनय—पंजाब ड्रामा लीग द्वारा लाहौर में अभिनीत।

देव कन्या (सन् १९३६ पृ० ८५), ले० : पण्डित श्री कृष्ण मिश्र, एम० ए०, बी० एल०, प्र० : वाणी-मंदिर, मुंगेर. पात्र : पु० ७, स्त्री ३; अंक : ३, दृश्य : ५ ४, ५।
घटना-स्थल : गुरुपुर का गौरीशंकर-मन्दिर,

इस सामाजिक नाटक में सच्चे प्रेमी और प्रेयसी का मिलन प्रस्तुत है।

गौरीशंकर-मन्दिर में आचार्य मार्तंड और भास्कर के सामने आकर राजनर्तकी और उसकी कन्या मेनका प्रणाम करती है। एक बार मार्तंड और भास्कर मेनका को मन्दिर में पकड़ना चाहते हैं लेकिन वह चीत्कार करती भाग जाती है। तभी राजनर्तकी दौड़कर वहाँ आ जाती है।

मेनका हरिजनों के मुख्य सेवक चन्द्र-शेखर से प्यार करती है। कालान्तर में राज-नर्तकी के भवन में शय्या पर सोती हुई मेनका के कमरे में राजराघव दबे पाँव प्रवेश करता है। मेनका की नींद टूट जाती है और वह राजराघव को देखकर चकित हो जाती है। राजराघव के रानी बनने के प्रस्ताव को मेनका अस्वीकार कर देती है। राजराघव मेनका का हाथ पकड़ता है जिससे वह चिल्लाती है। इसी बीच चन्द्रशेखर, भस्मी और मार्तंड, पुजारी और कई सिपाही लाठी लिये घुस आते हैं। चन्द्रशेखर मेनका को लेकर भाग जाता है। कालान्तर में राजराघव चन्द्र-शेखर के पास जाकर उसे जान से मार डालने की धमकी देता है और मेनका को प्रियतमा बनाना चाहता है। मेनका चन्द्रशेखर के बन्धन से मुक्त होने की शर्त पर प्रियतमा बनना स्वीकार कर लेती है। थोड़े ही समय में मेनका राजराघव को मदिरा पिलाकर शय्या पर सुला कटारी उसके सीने में मारना चाहती है कि चन्द्रशेखर आकर हाथ पकड़ लेता है जिससे राज-राघव बच जाता है। उसी समय राजराघव चन्द्रशेखर को आशीर्वाद देता हुआ मेनका और चन्द्रशेखर के हाथ को आपस में मिला देता है। इस प्रकार मेनका चन्द्रशेखर की प्रियतमा बन जाती है।

देवता (वि० २०१०, पृ० १०८) ले० : आचार्य सीताराम चतुर्वेदी, प्र० : पुस्तक भवन, बनारस. पात्र. पु० ९, स्त्री ३; अंक : ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : भवन, सड़क, उपवन।

इस सामाजिक नाटक में अच्छे और बुरे लोगों के कार्यों का परिणाम दिखाया गया है। न्यायधीश देवशंकर के दो पुत्र दयाशंकर तथा प्रभाशंकर और पुत्री माया विविध शिक्षित

बनते है। इस समय द्वितीय महायुद्ध होने से सभी वस्तुये पूरी महँगाई पर है। ब्लैक मार्केट चलता है। लोग जयशकर को क्लोथ कन्ट्रोलर होने के नाते घूस देने का प्रयत्न करते है किंतु असफल रहते है। इधर देवशकर का पडोसी वसतलाल पूरणमल को एक चक्कर मे पडा देखकर स्वय गरीब होने के नाते उनका कार्य करके १०,००० रु० ठहरा लेता है। उसको गुप्त रूप से जयशकर के यहाँ पहुँचा देता है।

इन्ही दिनो बडोदा कॉलेज की अध्यापिका शान्ता बहन भी देवशकर के पडोस मे रहने लगती है। वसतलाल ने इनके पिता से पॉच हजार रुपये लिये थे। मॉगने पर उसने उनकी हत्या भी कर दी थी। जब शाता को पता लगा तो वह खुशामद करने पर उसे छोड देती है।

पूरणमल से रुपये लेने पर वसतलाल फिर मदिरा पीने लगता है। वह पूरणमल की सलाह से शान्ता के घर मे आग लगाता है। इस अपराध मे वे जयशकर को फसा देते है क्योकि उसके यहाँ दस हजार रुपये थे। परन्तु वह निर्दोष था क्योकि उसको अभी यह भी पता न था कि ये रुपये कहाँ से आये।

देवशकर उसको सात साल का कारावास देते है। परन्तु इस रहस्य का पता लगने पर वसतलाल पकडा जाता है और जयशकर देवता के कुल का देवता माना जाता है।

देवयानी (सन् १९२२, पृ० १०६) ले० जमुना दास मेहरा, प्र० दुर्गा प्रेस, कलकत्ता, पात्र पु० ९, स्त्री ३, अक ३, दृश्य ८, ८, ५।
घटना-स्थल देव लोक, शुक्राचार्य का आश्रम।

इस पौराणिक नाटक मे शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी के पतन का कारण बताया गया है।

दैत्यो के राजा वृषपर्व देवताओ पर विजय पाने का सामर्थ्य न रहने पर भी मृतसजीवनी विष्णु द्वारा प्राप्त कर सदा राक्षसो की विजय कराते है। इसमे देवगण अपने गुरु वृहस्पति से मिलकर सभा मे निर्णय करते है कि नरलोक मे जाकर शुक्राचार्य से मृतसजीवनी विद्या प्राप्त करे। इस काम के लिए गुरु-पुत्र 'कच' भेजे जाते है। कच शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी से प्रेम-सम्बन्ध स्थापित कर मृतसजीवनी प्राप्त करते है। देवयानी का पतन होता है। कच के अधिक परिश्रम से देवो की दानवो पर विजय होती है जिससे देवयानी का भी उद्धार हो जाता है। वह अपने स्थान को पुन प्राप्त करती है।

देवयानी (सन् १९४४, पृ० ९६), ले० कुमारी तारा वाजपेयी, प्र० इडियन प्रेस, लिमिटेड इलाहाबाद, *पात्र* पु० १३, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* ६, ७, ६।
घटना-स्थल देव लोक, शुक्राचार्य का आश्रम।

इसमे ऋषि-कन्या देवयानी तथा देवगुरु पुत्र की प्रणय कथा के साथ देवताओ की विजय और असुरो की पराजय का वर्णन है।

नाटक मे महाभारत प्रसिद्ध कच और देवयानी के प्रसिद्ध उपाख्यान को आधार बनाया गया है। इसमे देवयानी के चरित्र को महत्व देकर नायिका का स्थान प्रदान किया गया है। ऋषि-कन्या देवयानी मे आदर्श चरित्र सफलता से अकित किया गया है। देवयानी का चरित्र भावुक हृदय को आकर्षित करने वाला है।

देवयानी (सन् १९५४, पृ० १११), ले०. सियाराम सिह 'वन्धु', प्र०. नव बिहार पुस्तक मन्दिर, पटना, पात्र पु० ७, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* ७, ५, ४।

यह नाटक महाभारत कालीन कथाओ के आधार पर लिखा गया है। देवासुर सग्राम मे देवयानी (शुक्राचार्य की पुत्री) का चरित्र प्रकाश मे लाना ही इस नाटक का उद्देश्य है। शर्मिष्ठा (वृषपर्वा की पुत्री) देवयानी की मदद करती है तथा पुरु नरदेव उसके कार्यो का प्रेरणा स्रोत बना है। देवयानी से कच का प्रेम होता है जिसके कारण वह देवयानी के पिता शुक्राचार्य से सजीवनी विद्या सीख जाता है। इस सजीवनी विद्या के द्वारा

ही दानवो पर देवताओ को विजय मिलती है।

देवर-भाभी (सन् १९६५, पृ० ८४), ले० · चौआजा चौधरी 'मस्ताना', प्र० ग्रथालय प्रकाशन, दरभगा, *पात्र* पु० ६, स्त्री ३, *अक* ४, *दृश्य* ५, ७, ७, ६।
घटना-स्थल घर, आँगन, बगीचा।

इस सामाजिक नाटक मे विधवा जीवन से सम्बन्धित दु'खद घटनाएँ समाज का सजीव चित्रण करती है। मनोरमा विधवा नारी है। अतएव उसके सास-श्वसुर सब उसे कष्ट देते है। भाभी के कष्ट को देख देवर प्रदीपकुमार उसकी सहायता करता है तथा भाभी के हृदय मे खुशी भरने के लिए वह अपनी पत्नी ज्योति का प्यार भी ठुकरा देता है। अन्त मे उसकी ही विजय होती है और सभी परिजन अपनी त्रुटियो पर पश्चात्ताप करते है।

देवर्षि नारद (सन् १९६१, पृ० १२८), ले० राधेश्याम कथा वाचक, प्र० राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, *पात्र* पु० १३, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* ४, ५, १।

इस पौराणिक नाटक मे देवर्षि नारद के जीवन की कतिपय घटनाओ पर प्रकाश डाला गया है। इसमे दिखाया गया है कि महापद प्राप्त करने वाले तपस्वी भी किस तरह वदर का रूप धारण करके मायानगरी की विश्व-मोहिनी के चक्कर मे पड जाते है, लेकिन भगवान् हमेशा भक्तो की मदद करके उनका धर्म वचाते है।

देवाक्षर चरित (सन् १८५४, पृ० ४७), ले० · रविदत्त शुक्ल, प्र० आर्य देशोप-कारिणी मभा, वलिया, *पात्र* पु० ६, अक-रहित *दृश्य* ६।

इस नाटक मे देवनागरी लिपि की महत्ता का नाटकीय ढग से उल्लेख किया गया है। (लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया मे लिखा है—"यह नाटक वनारस मे रामलीला के अवसर पर जिलाधीश डी० टी० रावर्ट की अध्यक्षता मे खेला गया था।"

अग्रेजी राज्य मे नागरी लिपि की उपेक्षा पर नाटककार को बडी वेदना होती है। उसी से प्रेरणा पाकर देवनागरी लिपि को समुचित स्थान दिलाने के उद्देश्य से इस नाटक का प्रणयन किया गया है।

देवी देवयानी (सन् १९३४, पृ० १३३), ले० रामस्वरूप चतुर्वेदी, प्र० उपन्यास वहार आफिस, काशी, *पात्र* पु० १६, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* १०, ६, ४।
घटना-स्थल आकाशमार्ग, शुक्राचार्य की कुटी, जगल मे कच का गाय चराना, मार्ग, ययाति का भवन, वाटिका।

भूमिका लेखक इस नाटक-रचना का प्रयोजन वताते हुए लिखते है—"पौराणिक आधार पर वर्तमान सामाजिक व्यवस्थाओ का चरित्र-चित्रण करते हुए सामाजिक समस्याओ को हल करने वाले नाटको का सर्वथा अभाव है। देवी देवयानी की रचना कर नाट्यकार ने नाट्य ससार की इस कमी को पूरा कर हिन्दी-साहित्य का क्षेत्र वढाया है।"

दैत्यराज वृषपर्वा के दरवार मे शुक्राचार्य सजीवनी विद्या का प्रभाव दिखाते है और देवासुर सग्राम मे मृत सभी दैत्य पुन जीवित हो उठते है। वृहस्पति का पुत्र कच देवदुर्दशा से चिन्तित होकर कहता है—"इस दैत्यनगरी मे व्यभिचारी अवलाओ के सतीत्व को डिगा रहे है। इधर भाई-भाई के मिटाने का यत्न करता है तो उधर पुत्र पिता को मारने की युक्ति सोचता है।" इमी के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियो का दिग्दर्शन कराया गया है।

कच दैत्यो से देवरक्षा के लिए देवगुरु शुक्राचार्य के आश्रम मे शिष्य वनते है। शुक्राचार्य कच का परिचय अपनी कन्या देवयानी से कराते है। देवयानी प्रसन्न होकर कहती है—'कच तो मेरा आधा काम वटायेगा, अवकाश के समय घडी दो घडी मेरा मन वहलायेगा।" कच देवयानी दोनो वर्षो तक साथ-साथ रहते है। एक दिन नारद कच (वृहस्पति पुत्र) को देखकर दैत्यो से सारा रहस्य खोल देते है। दैत्यराज और शुक्राचार्य कच को प्राण-दंड देते है पर देवयानी के आग्रह से कच की प्राण रक्षा होती है। कुछ

दिनो के उपरान्त कच पिताजी के पास लौटने की अनुमति माँगता है। देवयानी उससे अपना प्रेम-भाव स्पष्ट करके परिणय की भीख माँगती है। कच देवयानी को भगिनी पुकारता रहा है। वृषपर्वा की कन्या शर्मिष्ठा देवयानी के साथ कच को लेकर छेडछाड करती है। देवयानी क्रुद्ध होती है और देवयानी शर्मिष्ठा मे विवाद खडा हो जाता है। दोनो मे पिता की शक्ति को लेकर कलह होने लगता है। अन्त मे इन्द्र के आक्रमण करने पर वृषपर्वा शुक्राचार्य के पैरो पर गिरता है। इस प्रकार ज्ञान को धन से महत्तर सिद्ध किया गया है।

इसी के साथ दूसरी कथा ययाति और पुरु की चलती है। ययाति पुरु से युवावस्था माँग लेता है। वैद्य के प्रयास और पुरु के स्वेच्छा वृद्धत्व से ययाति युवा बन जाता है। इसी स्थल पर राज्य के लिए द्रुह्य, अनु, यदु और तुर्वस आदि भाइयो मे घोर कलह दिखाया गया है। ययाति इन्द्र से इन्द्रासन खाली करने को कहता है किन्तु देवगण उसे धक्का देकर नीचे गिरा देते है। ययाति अपने पुत्र पुरु से क्षमा याचना करता है। पुरु पुन तरुण और ययाति वृद्ध हो जाता है। देवयानी अपने हाथो से राजमुकुट पहनाते हुए कहती है—"अच्छा बेटा पुरु! लो, मेरा भी प्रसाद लो।"

देवी द्रौपदी (स० १९८२, पृ० ५८), ले० रामचरित उपाध्याय, प्र० गगा पुस्तकमाला कार्यालय अमीनाबाद-पार्क लखनऊ, *पात्र* . (महाभारत के सभी प्रमुख पात्र), *अक* · दृश्य के स्थान पर १० भागो मे नाटक विभक्त।
घटना-स्थल पाचाल की राजधानी, विवाह-मडप, युद्ध-क्षेत्र, महाराजा युधिष्ठिर की राजधानी।

यह नाटक नही नाटकीय शैली पर लिखी देवी द्रौपदी की जीवनी है जिसमे उस का जन्म राजा द्रुपद के यज्ञ-कुड से दिखाया गया है। याज्ञसेनी का लालन-पालन पाचाल नरेश द्रुपद के द्वारा होने से उसे द्रौपदी, पाचाली और याज्ञसेनी कहा गया। द्रौपदी बाल्यकाल मे कन्या-कौमुदी नामक ग्रथ पढकर सदाचरण की शिक्षा ग्रहण करती है। वह सगीत का विधिवत् अध्ययन करती है। स्वयवर मे कर्ण द्रुपद की प्रतिज्ञा के अनुसार मत्स्य-वेध करता है किन्तु द्रौपदी कर्ण के क्षत्रिय कुमार होने मे सन्देह के कारण उसे जयमाला नही पहनाती। आगे चलकर एक मुनि द्रौपदी के पूर्व जन्म की कथा सुनाकर उसके पचपति होने का समर्थन करता है। द्यूत-क्रीडा मे हारने पर पाडव वनवासी बनते है। गुप्तवास के दिनो मे कीचक पाचाली पर आसक्त हो जाता है। द्रौपदी उसे धर्म-पिता सम्बोधन करती है पर वह कामासक्त होने के कारण बलात्कार करना चाहता है। भीम समय से पहुँचकर उसकी टाँगे पकडकर चीर डालता है। अब भीम, युधिष्ठिर और अर्जुन की शान्ति-प्रस्तावना को अस्वीकार कर द्रौपदी के कथनानुसार कौरवो से युद्ध का आग्रह करता है।

कृष्ण के प्रयास करने पर भी कौरव शान्ति-प्रस्ताव को ठुकरा देते है। अन्त मे महाभारत का युद्ध होता है। कृष्ण के प्रताप से कौरव पराजित होते है। अन्तिम दृश्य मे अश्वत्थामा, भीम और युधिष्ठिर मे धर्माधर्म पर तर्क-वितर्क होता है। भीम का मत है कि शिशु-घातक दुष्ट को प्राणदण्ड देना समुचित है, किन्तु द्रौपदी अर्जुन से निवेदन करती है—"अश्वत्थामा के वध से क्या आपके पुत्र जी सकते है?"

पतिशोक से व्याकुल गुरु-पत्नी की हृदय-वेदना का ध्यान दिलाकर द्रौपदी अश्वत्थामा को मुक्त कराती है। इस प्रकार द्रौपदी के चरित्र का महत्व दिखाया गया है।

देश का दुर्दिन (सन् १९५०, पृ० ९४) ले० · शिवरामदास गुप्त, प्र० उपन्यास बहार, काशी, *पात्र* पु० १४, स्त्री २, *अक* २, *दृश्य* ७, ५,
घटना-स्थल उद्यान, सगरसिह का भवन, युद्ध शिविर, रणक्षेत्र, राजभवन, दुर्ग का भाग, नदी तट, मार्ग, मत्रणाभवन।

इस ऐतिहासिक नाटक मे मुगलो के क्रूर अत्याचार से देश की दुर्दशा का विवरण मिलता है।

मुगल बादशाह जहाँगीर मेवाड पर

आक्रमण का भार अपने सहयोगी महावत खा को सौपता है । सम्मुख युद्ध मे राणा पक्ष की अपार क्षति होती है । राणा अपने स्वबन्धु की हत्या के प्रतिशोध की भावना से महावत खा से युद्ध कर वीरगति प्राप्त करना चाहते है, परन्तु मानसी एव कल्याणी के हस्तक्षेप के कारण भीषण रक्तपात सम्भव नही होता। मुगल बादशाह जहाँगीर राणा के गले मे जयमाला डालकर हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य का जयघोष करता है । नाटक की इस प्रधान कथा के साथ अजय एव मानसी की कथा सयोजना भी हुई है ।

देश का दुर्दिन (वि० २०००, पृ० ८८) लेे० दाऊदयाल गुप्त, प्र० हिन्दी पुस्तकालय, मथुरा, *पात्र* पु० २३, स्त्री १०, *अक* ३, *दृश्य* ७, ७, ४ ।

इसमे हिन्दू-मुस्लिम-कलह, निर्धनो की दुर्दशा, डाक्टरो की निर्दयता और मजदूर-सगठन का विवरण है । हैदराबाद मे सत्याग्रहियो के आन्दोलन से देश-भक्त वीरो का परिचय मिलता है ।

देशभक्त नामक हिन्दू की साम्प्रदायिकता की ज्वाला मे हत्या हो जाती है । उसकी पत्नी श्यामा अजीतसिह नामक दुराचारी जमीदार के चगुल मे पड जाती है परन्तु अपने सतीत्व की रक्षा के लिए अजीतसिह को छुरो से मारकर स्वय भी आत्मघात कर लेती है । दूसरी कथा जातिभेद की समस्या से सम्बन्ध रखती है । अछूत सोहन और उसकी कन्या राधा की कथा मे बीमार राधा एक दिन स्वप्न मे देखती है मानो कोई योगी कह रहा है कि तुम प्रसाद का एक फूल मँगवाकर अगर नही सूँघोगी तो तुम्हारी मृत्यु निश्चित है । पिता वेटी के इस स्वप्न को सुनकर हतप्रभ रह जाता है । उसकी जिद पर वह मन्दिर तो जाता है परन्तु वहाँ अन्य भक्तो द्वारा बुरी तरह पीट दिया जाता है । लौटने पर राधा की मृत्यु हो जाती है । सोहन विक्षिप्त-सा वडबडाता है "प्राण रख दो एक तरफ इस नीच की सन्तान का । धर्म के काँटे पै रख दो, फूल वो भगवान का, देख लो फिर कौन भारी और हल्का कौन है ।"

इसके अतिरिक्त 'मजदूर फैडरेशन' की मीटिग के दृश्य से नाटककार ने यह दिखाया है कि किस प्रकार पदाधिकारियो के विश्वासघात के कारण हमारी सस्थाओ का सर्वनाश हो जाता है । नाटक की अन्य प्रमुख घटनाओ मे काग्रेस के जुलूस, शिवमदिर-सत्याग्रह, महिलाओ का अपमान आदि है जो तत्कालीन समाज को प्रतिबिम्बित करते है ।

देश दशा (सन् १८९२, पृ० ४०), ले० गोपालराम, प्र० बिहार बन्धु, छापाखाना, बॉकी पुर, *पात्र* पु० ११, स्त्री २, *अक* ७, *दृश्य* १, २, २, १, २, २ ।
घटना-स्थल पोस्ट आफिस, कचहरी, लूटू सेठ का महल ।

इस नाटक मे नाटककार ने देश की दुर्गति का चित्र खीचा है । सर्वभोग दास एक दरोगा है, स्वार्थचन्द मुशी तथा एक कान्स्टेबल चटोरी है जो लोगो से घूस लेते है तथा दूसरो को वे बात पर हवालात मे बद कर देते है तब मुकदमा होने पर उसे दबाकर रफा-दफा कर देते है ।

देश दशा (वि० १९८०, पृ० १०५) ले० बावू कन्हैयालाल, प्र० उपन्यास बहार आफिस, *पात्र* पु० ५, स्त्री ३ ।

इस सामाजिक नाटक मे विवाह समस्या का आधुनिक चित्रण है ।

इसका प्रमुख पात्र मुहम्मददीन अग्रेजी-शिक्षा प्राप्त एक नवयुवक है । उसका विवाह एक ग्रामीण बालिका से निश्चित हो चुका है, किन्तु मुहम्मददीन की इच्छा है कि वह एक फैशनेबल चचला लडकी से विवाह करे । अत वह अशिक्षित, गवार, इण्डियन गर्ल्स से विवाह करना अपना अपमान समझता है । अतएव उस लडकी के पिता खुदाबख्स को उसकी कन्या से विवाह के लिए अस्वीकृति भेज देता है ।

इस नाटक मे मि० वाई भारतीय नवयुवको को सावधान करते हुए कहते है कि आख मूँद कर नकल करने से भारत का

कल्याण नही हो सक्ता तथा यदि किसी अशिक्षित बालिका से किसी शिक्षित पुरुष का विवाह हो जाये तो उसका धर्म है कि अपनी पत्नी को स्वय पढा कर गृहस्थी के उपयुक्त बनाए।

देश भक्त (सन् १९३७, पृ० १३६), ले० महाशय राज बहादुर 'शरद' बी० ए०, प्र० नेशनल बुक डिपो, नई सडक दिल्ली, *अक* २, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल उदयपुर का विलास भवन।

इस ऐतिहासिक नाटक मे देशभक्त राणा प्रताप की वीरता का विवरण मेवाड की इस कहावत के आधार पर है—

'जननी तू ऐसो जन जैसो राणा प्रताप'

जब राणा प्रताप मेवाड की गद्दी पर बैठता है तो उसके पास न कोई राज्य है और न राजधानी लेकिन उसके हृदय मे राजपूती उमग है। उसके रक्त मे देश भक्ति की तरग है। राणा प्रताप के मित्र और सहायक बीकानेर, मारवाड, अजमेर और बूँदी के राजा सब शत्रुओ से जा मिलते है मगर वह देशभक्त धर्म के सहारे रण मे खडा हो जाता है। वह पहाडो की गुफाओ मे रहता है, उसके बाल-बच्चे उसके सामने दाने-दाने को तरसते है लेकिन उस प्रतापी का पॉव धर्म के रास्ते से नही हटता है। अजमेर का मानसिह शोलापुर मे विजयी बनकर प्रताप से मिलने आता है तो प्रताप उस देशद्रोही के शान—शौकत का ख्याल न कर उसके स्वागत के लिए कदम आगे नही बढाते है। वह प्राय कहा करते है कि अगर मेरे और राणा सागा के दरम्यान उदयसिह गद्दी पर न बैठा होता तो चित्तौड कभी मेरे हाथो से न जाता।

एक तरफ तमाम हिन्दुस्तान का शहनशाह अकबर है और दूसरी ओर बाप्पा रावल का नामलेवा प्रताप अपने गिने-चुने राजपूतो को लेकर मैदान मे खडा होता है। इस पर भी राजपूत वीर अपना सर नही झुकाते है। प्रताप मरते दम तक देश की आन और शान को निभाता रहा।

देश भक्त नर्तकी (सन १९५२, पृ० १७६), ले०. सैयद कासिम अली, प्र० सुषमा साहित्य मदिर, जवाहरगज, जबलपुर, *पात्र* पु० १४, स्त्री १, *अक* ३, *दृश्य* १०, ७ ४।

घटना-स्थल दिल्ली दीवान खास, अटल का सीमावर्ती गॉव, शाहजादा करीमुल्ला का महल, नादिरशाह का शयनागार, दिल्ली की सुनहरी मस्जिद, ईरान मे नादिरशाह का स्वागत।

इस ऐतिहासिक नाटक मे देश-भक्त राज-नर्तकी का अमर बलिदान दिखाया गया है।

दिल्ली के दीवान खास मे मुहम्मद शाह बादशाह के दरबार मे गुमान तथा अन्य कविगण काव्य पाठ करते है। तदुपरान्त नर्तकियो के नृत्यगान के उपरान्त प्रधानमत्री मुहम्मद अमीन खा नादिरशाह का लिखा पत्र बादशाह के सामने रखता है, जिसमे लिखा है—"मै इस्लाम और पैगम्बर की भक्ति की प्रेरणा से तुम्हे दडस्वरूप दिल्ली की गद्दी छोडने का आदेश देता हूँ। तीन दिन के भीतर सारी धन-दौलत मुझे सुपुर्द कर दो वरना मेरा काफिला तलवार से तुम्हारे कुफ्र का अत करके रहेगा।" एक सैनिक दरबार मे आकर अटक पर ईरानियो के आक्रमण का सदेश देता है। उपमत्री वीरेन्द्र सिह बादशाह को युद्ध के लिए प्रोत्साहित करते है किन्तु मुगल दरबार का शक्तिशाली सामत आसफजहा निजामल मुल्क प्रधान सेनापति सआदत खा से गुप्त मत्रणा करता है, जिसका कथन है "मुझे गुलामी पसन्द है पर उस काफिर रगीलेशाह की छत्रछाया मे सरदारी पसद नही। उसने सैयदो का खात्मा कर दिया है"। इधर शहजादा करीमुल्ला प्रसिद्ध नर्तकी हूर के प्रेम मे उन्मत्त होकर विश्वासपात्र नौकर अली मुल्ला का सत्परामर्श अवज्ञा के कानो से सुनते है।

अटक के हिन्दू-मुसलमान विदेशी आक्रमण की तैयारी करते है। हिन्दुओ को भय होता है कि कही मुसलमान भाई आक्रमणकारियो को मुसलमान समझकर देश-द्रोह न करे पर मुसलमान आश्वासन देते है। "नही चौधरी जी हमारा मजहब भले ही इस्लाम है, पर मुसलमान होने के पहले

हम हिन्दुस्तानी है।" चौधरी को नादिरशाह का सैनिक धमकाते हुए कहता है—"ईरान का इस्लामी वाद शाह खुदा के बन्दे की हैसियत से हिन्दुस्तान मे कुफ्र का नाश करने के लिए यहाँ आ रहा है। उसके स्वागत और फौज का प्रबन्ध करो।" चौधरी बादशाह के दरबार मे दुहाई भेजता है।

नादिरशाह सीमान्त प्रदेश पजाब को रौंदता करनाल के मैदान मे पहुँचता है। वीरेन्द्रसिंह और हैदर बख्श बहादुरी से लडते है पर अनुशासन हीनता और अधिकारियो के निरुत्साह के कारण मुगलो की पराजय होती है। उधर दिल्ली मे शहजादा नर्तकी हूर के नशे मे डूबा है और नादिरशाह दिल्ली पर धावा बोल देता है। वह दीवाने खास मे मुहम्मदशाह को समझाता है कि गद्दारी और फूट से तुम्हारी सलतनत बरबाद हो रही है। तुमने हिन्दुओ को भी जागीर दे रखी है, मुझे धन दौलत चाहिए। मुहम्मद शाह नादिर की सभी शर्ते मान लेता है और हूर के नृत्य-सगीत से आक्रमणकारियो का स्वागत होता है। नादिर-पुत्र शाहजादे और रजा का हूर के प्रति आकर्षण होता है। इधर नहमपाशा नामक नादिर का वफादार सैनिक सूचना देता है कि हमारे तीन सिपाहियो को भीड ने मार डाला। नादिर हुक्म देता है—'नालायक मुगल सत्ता का सम्पूर्ण कोप लूट लो। मारो, काटो जो चाहो सो करो।' इस हत्याकाण्ड के उपरान्त हूर को रजा शाह अपने साथ ईरान लाता है। रजा शाह और नादिर मे कलह होता है। रजा शाह बन्दी बनाया जाता है। उसकी आँखे निकलवा ली जाती है। हूर से नादिर की शादी होती है किन्तु पहली रात को शराब के बहाने विष पिलाकर वह नादिर से अपने देश पर किये गये अत्याचारो का बदला लेती है। उसकी भी हत्या की जाती है। देशभक्ति के लिए प्राणो की बलि देती है। वह अन्त मे गाना गाती स्वर्ग को जाती है।

देश-भक्त मालवीय (सन् १९६८, पृ० ५५), ले० मोहनलाल तिवारी; प्र० नाट्य सघ, वाराणसी, पात्र २४, अक ३, दृश्य २, ३, ४।

घटना-स्थल प्रयाग।

प्रयाग मे मालवीय जी अपने निवास-स्थान पर बैठे पूजा कर रहे है। थोडे ही समय मे उनके मित्र श्री नाथ जी आ जाते है। उनसे कुछ बाते होती है। फिर तिलक जी आ जाते है और महामना को काशी जाकर हिन्दू यूनिवर्सिटी के निर्माण की राय देते है। मालवीय जी प्रसन्नतापूर्वक इस राय को स्वीकार करते है। स्थान शिमला मे मालवीय जी अपने अनेक साथियो के साथ बैठे हुए काशी विश्वविद्यालय के निर्माण की चर्चा करते है। कालान्तर मे काशी मे अन्य सज्जनो के साथ विश्वविद्यालय-शिलान्यास-समारोह होता है। अनेक राजा भी उपस्थित है। मालवीय जी गोलमेज परिषद् से लौट कर आते है। एक वृद्धा के बेटे को फासी से बचाने के लिये आदमी भेजते है। तीन आदमी आकर मालवीय जी से प्रश्न करते है और उनका यथोचित उत्तर पाते है। मालवीय जी अपने साथियो से भिक्षा माँगकर विश्वविद्यालय का निर्माण कर देते है। दीक्षान्त-समारोह मे मालवीय जी टैगोर और कुल-सचिव का भव्य स्वागत करते है। मालवीय अपने भाषण मे वहाँ उपस्थित छात्रो तथा नवयुवको को देशप्रेम की भावना के प्रति जागृत करते है।

देशी कुत्ता विलायती बोल (सन् १८९८), ले० राधा कान्त लाल, प्र० ग्रथकार, हसुआ।

इस नाटक मे पाश्चात्य सस्कृति पर हास्यास्पद व्यग्य किया गया है। इसमे भगवती बाबू का प्रथम पुत्र मि० सहाय इग्लैड मे शिक्षा प्राप्त करता है। वहाँ की सस्कृति मे सराबोर अपने प्रथम पुत्र की मन स्थिति तथा उसकी वेषभूषा देखकर भगवती बाबू विकल हो जाते है।

इस नाटक मे भोडे विचारो का प्रकाशन हुआ है। विलायत से लौटे मि० सहाय का कुत्ते का मुह चूमना तथा पाश्चात्य सभ्यता मे दीक्षित मि० प्रसाद की नाक काट लेना, भोडेपन के ही अतर्गत आता है।

देशोद्धार या राणाप्रताप नाटक (सन् १९२२, पृ० ८६), ले० दुर्गाप्रसाद जी गुप्त, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, बनारस, *पात्र* पु० १०, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* ६, ६, ५।

घटना-स्थल सीमाप्रान्त, राजभवन, मीना-बाजार, विलासभवन, वारहदरी, वागीचा, दरबार, राजपथ, मुगल कैम्प, वनपथ, पहाडी नदी, पहाडी खोह, सीमाप्रान्त, पहाडी किला :

इस ऐतिहासिक नाटक मे महाराणा प्रताप की अद्भुत देशभक्ति और वीरता का वर्णन है जिसे देखकर अकबर भी उनकी सराहना करता है।

महाराणा प्रताप वीरो को तन-मन-धन लगाकर मातृभूमि की रक्षा करने के लिए प्रेरित करते है, किन्तु उनका भाई शक्ति सिह अकबर से मिलकर अपनी वहन का सम्बन्ध उनसे स्थापित करता है। शहशाह अकबर शक्तिसिह को अपनी तरफ मिला लेते है। दूत द्वारा एक पत्र राणा प्रताप के यहा भेजते है जिसमे सन्धि की शर्त होती है पर राणा प्रताप प्रस्ताव स्वीकार नही करते। शक्तिसिह अपने प्रतिशोध के लिए मेवाड पर आक्रमण कर देते है।

इसमे प्रताप और अकवर के युद्ध के साथ एक प्रेम-कथा भी जुडी है जिसमे मालती अपने पति को युद्ध के लिए भेज देती है तथा खुद भी लडने के लिए जाती है। दूसरे अक के पाचवे दृश्य मे शाहजादे सलीम और मानसिह अपनी सेना को युद्ध के लिए ललकारते है और इधर अमर सिह वाल-सेना के साथ, गुलावसिह भीलो के साथ जननी जन्मभूमि और महाराणा प्रताप की जयजयकार करते युद्ध-क्षेत्र मे कूद पडते है। युद्ध करते-करते कई यवन सैनिक अमर-सिह को घेरकर कलेजे मे खजर भौकना चाहते है। मालती वीर भेप मे पहुँचकर सिपाहियो को मार गिराती है। सैनिक मालती की ओर बढते है, अमरसिह और गुलावसिह पहुँच जाते है। यवन-सेना प्रताप को घायल करती है। झालासिह प्रताप का टोप पहनकर बन्दी वन जाते है, और प्रताप चेतक पर सवार होकर नदी पारकर जाते है, किन्तु चेतक मर जाता है। शक्तिसिह मे भ्रातृप्रेम उमडता है और वह प्रताप के पैरो पर गिरकर क्षमा याचना करता है। प्रताप शक्तिसिह को कलेजे से चिपका लेता है। इधर जब सलीम प्रताप की वीरता की कहानी अकबर को सुनाता है तो सम्राट् महाराणा के शौर्य से प्रसन्न होकर सलीम को आदेश देते है—"वाद वरसात के फिर लडाई शुरू कर दी जाय और उस प्रताप को जिन्दा गिरफ्तार कर मेरे रूवरू हाजिर किया जाय।" उदयपुर आदि स्थानो पर मुगलो का अधिकार होने से महाराणा की सन्तान को घास की वनी रोटिया खानी पडती है। एक दिन एक जगली न्योला राणा की पुत्री के हाथ से रोटी का टुकडा लेकर भाग जाता है। वच्चो को भूख से तडफते देखकर राणा रोदन करने लगते है। इसी समय मुगलो का आक्रमण होता है। महाराणा वच्चो को भीलो को सौप युद्ध क्षेत्र मे कूद पडते है। धनाभाव के इन क्षणो मे भामाशाह अपनी सारी सम्पत्ति राणा को युद्ध के लिए प्रदान करते है। गुलावसिह, मालती, महाराणा तथा सैनिक योजना वनाकर युद्ध करते है। मालती चित्तौड दुर्ग पर चढकर यवन-पताका नीचे गिरा देती है। प्रताप यवन द्वार-रक्षको को मारकर दुर्ग मे प्रविष्ट हो युद्ध करके विजयी होते है। मालती गुलाबसिह के पैरो पर गिरती है। प्रताप कोट-रक्षक को पकड लेते हैं। जननी जन्मभूमि की जयजयकार और हर हर महादेव के साथ नाटक समाप्त होता है।

दो दूरदेशी (सन् १८७८), ले० धनजय भट्ट, *पात्र* : पु० २, *अक रहित*।
घटना-स्थल : कक्ष।

इसमे दो पात्रो के माध्यम से भारतीयो द्वारा दिखाई जाने वाली झूठी राजभक्ति के प्रति कठोर व्यग्य किया गया है।

इसमे दो दूर देशो के दो पात्र है। एक पात्र हिन्दुस्तानी और दूसरा पात्र अग्रेज है। इन दोनो पात्रो के कथोपकथन द्वारा अग्रेज शासको की स्वार्थपूर्ण नीति एवं भारतीयो से घृणा पर प्रकाश डाला है। इसमे अग्रेज पात्र शासन की असमानता की नीति

को तर्को के साथ प्रस्तुत करता है। हिन्दुस्तानी पात्र अग्रेजो द्वारा भारतीयो की उपेक्षा, प्रताडना, तिरस्कार, काले-गोरे के भेदो के सापेक्ष परिणामो को व्यक्त करता है।

दो धारी तलवार (सन् १९२३, पृ० २२), ले० दुर्गाप्रसाद गुप्त, प्र० रत्नाकर पुस्तकालय, बनारस, पात्र पु० १२, स्त्री ६, अक ३, दृश्य · ६, ५, ४।
घटना-स्थल : घर, वेश्या गृह, जगल, वन-मार्ग।

इस सामाजिक नाटक मे पतिव्रता पत्नी की अपने सतीत्व की रक्षा मे विजय दिखाई गई है।

माधवदास का दगावाज दोस्त सुकदेव शर्मा उसे हुस्ना नामक वेश्या के चगुल मे फँसा देता है। माधवदास की जिन्दगी तवाह हो जाती है। वह हुस्ना के कहने पर अपनी विवाहिता पत्नी को ठोकर मारकर घर से निकाल देता है।

माधवदास का लडका मोहन अपनी मा सुशीला को साथ लेकर जगल मे चला जाता है, जहाँ पर दुष्ट रार्नमिह मौका पाकर सुशीला से प्यार जताता है। सुशीला इन्कार करती है, तो रामसिह कहता है कि तुम्हारा वेटा तेरे सामने कत्ल किया जायेगा अव भी समय है मान जा। फिर भी वह नही मानती है। रार्मसिह वलात्कार करना चाहता है तव तक अचानक विजली गिरती है। रार्मसिह मर जाता है। मोहन और सुशीला वच जाते है।

अत मे सुशीला अपनी पति-भक्ति से जीवन मे विजय पाती है।

दो नाटक (वि० १९९९, पृ० १९४) ले० . सेठ गोविन्ददास, प्र० दी एज्यूकेशनस प्रेस आगरा, पात्र पु० ६, स्त्री ३; अक ५, दृश्य ५, ५, ५, ५, ५।
घटना-स्थल शहर का गृह, ग्राम।

'दो नाटक' सामाजिक त्रासदी है। 'पतित सुमन' तथा 'दलित कुसुम' दोनो ही नायिकाएँ आत्महत्या करती है। 'दलित कुमुम' का आरम्भ वचपन के साथियो के खेल से होता है। वाल-विवाह के वाद कुमुम वाल-विधवा हो जाती है। वैधव्य अवस्था के वीच मे ही डॉ० मदन आकर उससे विवाह का प्रस्ताव रखता है। माँ के समझाने पर कुसुम तैयार हो जाती है, लेकिन रसिक नामक धूर्त व्यक्ति डॉ० मदन को भडका देता है जिससे वह छोडकर चला जाता है। कुसुम दरवदर भटकती है। वैरिस्टर कुँज उस की स्थिति पर चिन्तित होकर अध्यापिका वनवा देता है। यहाँ भी रसिक उसका पीछा नही छोडता, वह आकर वलात्कार करता है। विवश होकर कुसुम आत्महत्या कर लेती है।

नाटक 'पतित सुमन' एक सयोग-प्रधान घटना पर आधारित है। आरम्भ मे विश्वनाथसिह तथा सुमन का प्रेम सम्वन्ध दिखाया गया है। दोनो प्रणय-सूत्र-वन्धन मे जकडने को ही है कि एक वृद्धा आकर उन दोनो को भाई-वहिन सिद्ध कर देती है। हृदय से व्यथित मुमन का विवाह विक्रमसिह से हो जाता है। गाँव की दीवालो मे वन्द सुमन दुखी है। वह काव्य-कला का घर पर ही अभ्यास करके समय काटती है। सहसा कही सार्वजनिक सस्था का सेवक विश्वनार्थसिह आकर कुसुम का घाव हरा कर देता है। आपसी परिस्थितियो से मजवूर होकर सुमन आत्महत्या कर लेती है।

दो भाई (सन् १९३३, पृ० ६७), ले० आनन्द, प्र० हिन्द एस० पी० सी० केन्द्र, डिपो, दिल्ली; *पात्र* पु० ६, स्त्री ४, *अक* : ३, *दृश्य* . २।
घटना-स्थल . व्यापारी का घर, अस्पताल, क्लव।

एक व्यापारी पतरस के शशि और निर्मल दो पुत्र होते है। शशि व्यापार मे लग जाता है पर निर्मल नाटक मडली मे अपना धन उडाने लगता है जहा इसका प्रेम गाँव की डाक्टरनी कला के साथ होता है। वह आभा नर्तकी के जाल मे भी फँस जाता है, जिससे निर्मल और शशि मे अनवन होती है। निर्मल एक नर्तकी से शशि का व्याह रुचि कर नही मानता। अन्त मे ईसाई धर्म-प्रचारक पादरी हस के द्वारा सव मे समझौता हो जाता है।

दौलत की दुनिया (सन् १९३३, पृ० १०४), ले० शिवरामदास गुप्त, प्र० ठाकुर प्रसाद एण्ड सस, बुकसेलर, वाराणसी, *पात्र* · पु० १२ स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* १, १२, ७, ४।
घटना-स्थल · वेश्यागृह, गगा तट।

इस सामाजिक नाटक मे व्यभिचारियो द्वारा सती साध्वी विधवा स्त्रियो की दुर्दशा चित्रित है।

विधवा स्त्री को ससार मे जीने का कोई अधिकार नही है। आठ वर्ष की बालिकाए साठ वर्ष के बूढे को भेट चढाई जाती है। विधवाएँ घर की कूडा और वेश्याएँ मस्तक का चन्दन समझी जाती है। लक्ष्मीकान्त दौलत की छुरी से हत्या करने वाला एक विलासी पुरुष है जो फूलकुमारी नामक गरीब स्त्री की इज्जत को लूटता है। फलत फूलकुमारी व्यभिचारी गौरीशकर तथा बिहारीलाल से आतकित होकर वेश्या बन जाती है। लक्ष्मीकान्त सावित्री देवी पर झूठा लाछन लगाता है। फिर भी सावित्री अपने धर्म को बचा लेती है। अन्त मे फूलकुमारी, उसका भाई गजाधर और सावित्री गगा तट पर मिलते है। अकस्मात् फिर वहा पर भी लक्ष्मीकान्त पहुँच जाता है, जहाँ उसके द्वारा गजाधर की हत्या होती है तथा फूलकुमारी और सावित्री दोनो धर्म की देवियाँ लक्ष्मीकान्त को मारकर स्वय भी आत्महत्या कर लेती है। इस प्रकार दौलत की दुनिया मे पाप का नाश और धर्म की विजय होती है।

द्रौपदी (सन् १९७०, पृ० ३१) ले० सुरेन्द्र वर्मा, प्र० नटरग पत्रिका, (खड ४ अक १४) दिल्ली; *पात्र* पु० ५, स्त्री २, अक २, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल घर, दफ्तर, पार्क।

इस नाटक मे आज के युग मे व्याप्त भौतिक-ऐश्वर्य और सैक्स की भूख का यथार्थ चित्र अकित किया गया है।

आज का व्यक्ति इस भौतिकता के पीछे भागने से कितना खंडित हो गया है—इसका प्रतिनिधित्व मनमोहन करता है। सफेद नकाबवाला (मनमोहन की अन्तरात्मा और विगत प्रसन्नता का प्रतीक), काले नकाब वाला (अनैतिकता का प्रतीक), पीले नकाब वाला (आफिस मे काम करने वाले व्यक्तित्व का प्रतीक) लाल नकाब वाला (सैक्स की भूख) ये चारो व्यक्ति मनमोहन के ही खडित रूप है। इन प्रतीकात्मक पात्रो को लेकर लेखक मनमोहन की त्रासदी चित्रित करता है। नाटक मे किसी निश्चित कथा का समावेश नही है क्योकि लेखक कथा को प्रमुखता न देकर चरित्र को प्रमुखता देता है। उसकी पुत्री सुरेखा इन पाँचो व्यक्तियो का सामना करती है। पुत्र अनिल और पुत्री अलका आज की युवा-पीढी का कच्चा चिट्ठा खोल देते है।

प्रस्तुत नाटक का प्रथम प्रदर्शन ४ फरवरी ७१ को दिशातर (दिल्ली) सस्था द्वारा हुआ है।

द्रौपदी (सन् १९४५, पृ० ४४) ले० भगवती चरण वर्मा, प्र० . भारती भण्डार, प्रयाग। सकलित त्रिपथगा मे, *पात्र* · पु० १०, स्त्री ३, अक १, *दृश्य* १०।

महाभारत की प्रसिद्ध कथा पर आधारित 'द्रौपदी' गीतिनाट्य मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य मे नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। प्राय द्रौपदी को महाभारत का मूलकारण माना गया है किन्तु लेखक इसका कारण पूरे युग को मानते हुए कहता है—"हिसा घृणा उस युग के व्यक्तियो मे पाप नही समझे जाते थे। महाभारत मे जो विनाश हुआ वह मानव-विनाश नही था, वह युग की मान्यताओ का विनाश था।"

द्रौपदी मे घृणा, हिसा की भावना पूर्व प्रसगो से सम्बन्धित है। द्रोणाचार्य द्वारा द्रौपदी के पिता का अपमान इन सब घटनाओ के मूल मे दृष्टिगोचर होता है। कौरवो से अपने पिता का प्रतिशोध लेने के लिए ही द्रौपदी निराश्रित पाडवो का वरण करके पाँच पतियो की भार्या बनती है और सम्पूर्ण कौरव वश के विनाश का अवसर प्रस्तुत करती है।

द्रौपदी ... हरण (वि० १९५५, पृ० ७५) ... गि... ... प्रेस

बनारस, पात्र पु० २५, स्त्री १, अक ५, दृश्य ३, ३, ३, ३, १।
घटना-स्थल राजसभा।

इस नाटक का भी वही कथानक है जो द्रौपदी-चीर-हरण नाटक मे सामान्यत पाया जाता है।

द्रौपदी वस्त्र हरण अथवा पाण्डव वन गमन (वि० १९५३, पृ० १०३), ले० प्रभुलाल अस्थाना, प्र० वेकटेश्वर प्रेस, वम्वई, पात्र पु० २३, स्त्री १, अक . ५, दृश्य . ३, ४, २, ५, ५।

इसका भी कथानक महाभारत वर्णित कथानको जैसा है।

द्रौपदी चीर हरण (सन् १९४०, पृ० ७०), ले० रामजी शर्मा, प्र० वाबू बैजनाथ प्रसाद वुक्सेलर, बनारस, पात्र . पु० २०, स्त्री ६, अक ३, दृश्य ४, ५, ३।
घटना-स्थल राजसभा।

इस पौराणिक नाटक मे दुष्ट दुःशासन द्वारा पाण्डव पत्नी द्रौपदी के चीर हरने की कथा वर्णित है।

इस नाटक मे भीम अपने नए भवन को दिखाने के लिए दुर्योधन को आमत्रित करते है और दुर्योधन और शकुनि उसे देखने आते है। जब दुर्योधन थल को जल समझकर अपने जूते उतारने लगता है तो भीम, द्रौपदी आदि हँस पडते है। फिर जल को थल समझ उसमे दुर्योधन गिर पडता है और तब द्रौपदी कहती है—"अन्धे के अन्धी ही सन्तान होती है जिसे दिन मे भी दिखाई नही पडता।" इस व्यग्य से दुर्योधन नाराज हो द्रौपदी को दरबार मे नगी करने का प्रण करता है। और जब शकुनि की चाल से युधिष्ठिर जुए मे सब कुछ हारकर द्रौपदी को भी हार जाता है तब दुर्योधन उसे अपनी रानी बनाने का प्रयास करता है। द्रौपदी के विरोध करने पर भरी सभा मे दु शासन उसकी साडी को खीच कर नगी करने की आज्ञा देता है, किन्तु दु शासन द्रौपदी की साडी खीचते-खीचते थक जाता है पर द्रोपदी नगी नही हो पाती। तब द्रौपदी कृष्ण को याद करती है। भगवान कृष्ण उनकी रक्षा करते है।

द्रौपदी चीर हरण (सन् १९६८, पृ० ७६) ले० न्यादरसिंह बेचैन, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, पात्र . पु० १६, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य ४, ६, २।
घटना-स्थल राजसभा।

नाटक की कथावस्तु महाभारत के द्रौपदी चीर हरण प्रसग से ली गई है। इस मे पाडवो के राजसूय यज्ञ के समय भीम दुर्योधन को मयदानव की शिल्प-कला दिखाते है। उसमे दुर्योधन धोखा खा जाता है। द्रौपदी उस पर व्यग्य करती है "अन्धे की सन्तान भी अधी होती है।" दुर्योधन इस अपमान का बदला लेने के लिए शकुनि और कर्ण की मदद से द्यूतक्रीडा का कार्यक्रम बनाता है। धृतराष्ट्र और गाधारी भी पुत्र की उस विजय मे सहायता करते है और विदुर की नीति-सूचक बातो पर ध्यान नही देते। धृतराष्ट्र की तरफ से निमत्रणपत्र पाकर युधिष्ठिर भाइयो के साथ कौरव-भवन पधारते है और नीति-विरुद्ध द्यूत को स्वीकार करते है। शकुनि के कौशल से युधिष्ठिर अपना समस्त राजपाट, धन-सम्पति यहाँ तक कि भाई और द्रौपदी को भी हार जाते है। दुर्योधन प्रतिशोध के रूप मे द्रौपदी को नग्न होकर अपनी जाघ पर बैठने का आदेश देता है। द्रौपदी न्याय की दुहाई देती है किन्तु भीष्म, विदुर, धृतराष्ट्र और द्रोण भी रक्षा मे तत्पर नही होते। अन्त मे भगवान् कृष्ण उसकी रक्षा करते है।

द्रौपदी स्वयंवर (सन् १९२९, पृ० १२२), ले० ज्वालाराम नागर, प्र० आदर्श प्रेस, काशी, पात्र पु० १६, स्त्री ३, अक ३, दृश्य ७, ६, ३।
घटना-स्थल द्रुपद की सभा।

इस पौराणिक नाटक मे द्रौपदी के स्वयवर की कथा वर्णित है।

राजा द्रुपद की सभा मे द्रोणाचार्य का अपमान होता है जिसमे उनकी दशा विक्षिप्त-सी होती है। वे कौरव पाँडवो

धनुर्विद्या की शिक्षा देते है। वे एकलव्य की गुरुभक्ति की परीक्षा लेते है तथा अर्जुन को ब्रह्मास्त्र प्रदान करते है। द्रोणाचार्य युद्ध की रचनाकर द्रुपद को वन्दी बनाते है और पुन राजा द्रुपद को आधा राज्य लौटाकर मुक्त कर देते है। स्वयवर होता है जिसमे अर्जुन लक्ष्यभेद कर द्रौपदी को प्राप्त करते है।

द्रौपदी स्वयंवर (सन् १९३० पृ० १७२) ले० प० राधेश्याम कथावाचक, प्र० . राधेश्याम पुस्तकालय वरेली, *पात्र* पु० ३३, स्त्री ८, *अक* ३, *दृश्य* ७, ९, ४।
घटना स्थल . राजा द्रुपद की राज सभा।

इस नाटक के द्वारा द्रोपदी-स्वयवर मे भगवान श्री कृष्ण की लोकोत्तर-चमत्कार वाली झाँकी देखने को मिलती है। इसके अतिरिक्त पाडवो के पराक्रम की घटनाये, कौरवो की कुटिल नीतियाँ, शकुनि मामा के व्यग्य तथा विदुर की पवित्र वृत्तियो का भी चित्रण है। महर्षि वेदव्यास के पुण्य दर्शन से इस नाटक की समाप्ति होती है।

द्वापर का द्वन्द्व (पृ० १५४), ले० श्री श्याम विहारी दास, 'नवानी', प्र० विहारी वन्धु ग्राम, पोस्ट नवानी, जिला दरभगा, पात्र पु० १६, स्त्री १०।

इस पौराणिक नाटक मे महाभारत युद्ध के कारणो पर प्रकाश डाला गया है। इसमे कृष्ण के चरित्र से सबधित अनेक प्रासगिक घटनाओ का उल्लेख किया गया है जिससे स्पष्ट होता हे कि और भी विशाल व्यक्तित्व वाले व्यक्ति हुए थे। किन्तु फिर भी कृष्ण के चरित्र पर ही क्यो विशद रूप से भागवत कार ने विचार किया है। अतएव नाट्यकार ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि वस्तुत द्वापर युग द्वन्द्व का युग था। अनेक द्वन्द्व युक्त प्रासगिक एव अप्रासगिक कथाओ का उल्लेख इसमे हुआ है। यही कारण है यह नाटक धार्मिक न रह कर एक राजनैतिक नाटक बन गया है, किन्तु इतना मानना ही पडेगा कि नाट्यकार ने धार्मिकता को सुरक्षित रखने का भरपूर प्रयास किया है।

द्वापर की राज्य क्रान्ति (सन् १९४०, पृ० ८८) ले० किशोरीदास वाजपेयी शास्त्री, प्र० . हिमालय एजेन्सी कनखल यू० पी०; *पात्र* पु० ११, स्त्री ४, *अक* ५, *दृश्य* . ४, २, २, २, २।
घटना-स्थल उद्यान मे सरोवर तट, गाँव की चौपाल, सुदामा की झोपडी, कृष्ण की विनोदशाला।

गुरु सन्दीपन कहते है कि देश की एकता बनाए रखना और अशिक्षा दूर करना राज्य का कर्तव्य होता है। सुदामा उनके कथन का समर्थन कर यथाशक्ति काम करने की प्रतिज्ञा करते है। सुदामा अपना सर्वस्व देकर भी देश-सुधार मे लगने की घोषणा करते है।

देश-प्रेम, गरीबोद्धार और अशिक्षा दूर करने का व्रत लेकर सुदामा गाव मे आते है और नि स्वार्थ सेवा मे लग जाते है। वे किसानो को अत्याचार-अनाचार का डटकर मुकावला करने के लिए उकसाते भी है। उधर कृष्ण विजयनगर आदि छोटे-छोटे राज्यो को समाप्त कर एक वडा और शक्तिशाली राज्य बनाने की योजना बनाते है। विजयनगर का मन्त्री सर्वाश के साथ मिलकर धन का लालच देकर सुदामा को राजमहल मे पकडलाने की योजना बनाता है।

सर्वाश अपनी योजना मे असफल होता है। सुदामा लक्ष्मी-लोभ को पैरो तले रौंदते है, सुदामा की सहायता से कृष्ण विजयनगर पर अधिकार कर लेते है। पडिताइन (सुदामा की पत्नी) सुदामा से कहती है कि कृष्ण से मिलना चाहिए। पहले तो सुदामा आनाकानी करते है किन्तु वाद मे पत्नी समझाती है "क्या कोई किसी से कुछ लेने ही जाता है! कुसुम चन्द्रमा का क्या छीन लेता है और कमल भास्कर का क्या लूट लेता है, अपने मित्र का उदय देखकर सब का दिल खिल उठता है।" सुदामा तैयार होते है पर उनके वर भेट देने को कुछ भी नही। सुदामा पडिताइन से कहते है "पाव डेढ पाव चावल तो मगल द्रव्य है। मित्र ही तो है, वादशाह मे

मिलने मैं नही जा रहा हूँ।" वे चावल लेकर द्वारिका को प्रस्थान कर देते है।

चौथे अक के आरम्भ मे परिश्रात उद्धव और कृष्ण सरस वार्तालाप करते दिखाई पडते है। इसी बीच सुदामा के आगमन का समाचार सुनकर कृष्ण बाहर आते हैं। उन्हे आदर पूर्वक राजमहल मे ले जाकर पति-पत्नी दोनो सुदामा का चरण पखारते है। रुक्मिणी प्रसाद के बदले सुदामा को धन-राज्य देना चाहती है। पहले तो कृष्ण कहते है कि सुदामा राज्य सुख और धन को तृण समझते है किन्तु आग्रह करने पर धन प्रदान करने के लिए राजी हो जाते हैं।

पाचवे अक मे द्वारिका से लौटे सुदामा का स्वागत करने के लिये भीड लगी है। अपने मत्रणा-गृह मे सुदामा मित्र से कहते है कि सेना का खर्च कम करके अशिक्षा और भुखमरी दूर कीजिए। इस तरह प्रजातत्र की स्थापना एव प्रजा की भलाई के सकल्प के साथ नाटक समाप्त होता है।

ध

धरती और आकाश (सन् १९५४, पृ० ९४) ले० : शम्भूनाथसिंह, प्र० गान्धी ग्रन्थागार, बनारस, *पात्र* पु० ११, स्त्री २, अक . ४।

घटना-स्थल सेठ की गद्दी, ग्राम का मैदान।

यह नाटक मूलत सामाजिक समस्याओ पर प्रकाश डालने के लिए लिखा गया है। सेठ लक्ष्मीपति नवीन फैक्ट्री खोलने की योजना बनाकर राय साहब से खरीदी हुई जमीन मे 'पावर हाउस' बनाना चाहता है। इसी बगले के पास जनसेवक कलाकार प्रजापति रहता है। धूर्त सेठ अपने स्वार्थ के चक्कर मे अपने भाई ज्ञानचन्द को पागल सिद्ध करके उसका हिस्सा हडप लेना चाहता है। ज्ञानचन्द सेठ की काली करतूतो से पूरी तरह परिचित है। सेठ लगातार रिश्वत के बल पर पुलिस अफसर तथा मन्त्री आदि सभी से नाजायज कार्य करवा कर किसान मजदूरो का गला घोटता है। ज्ञानचन्द मजदूरो मे सेठ के अत्याचारो के प्रति जागृति उत्पन्न करता है। लेकिन सेठ मजदूर नेताओ को धोखा देकर निकलवा देता है। वह बुद्धिमान् ज्ञानचन्द को पागल सिद्ध कर पुलिस मे पकडवा देता है। तभी सेठ के खिलाफ जनता विद्रोह करती है, पुलिस गोली बरसाती है। भोले जन-नेता मारे जाते है। सेठ अपनी योजनाओ मे सफल होता है और विद्रोही जनता भी धीरे-धीरे सेठ के चक्कर मे आ जाती है।

इस प्रकार जन-शान्ति की घोषणा के साथ नाटक समाप्त होता है।

धरती की बेटी (सन् १९६० पृ० ४५) ले० रामस्वार्थ चौधरी 'अभिनव', प्र० . अभिनव साहित्य प्रकाशन, मुजफ्फर पुर, *पात्र* पु० ११, स्त्री ३, *अक* नही, *दृश्य* · १०।

घटना-स्थल : राजा विदेह का राजभवन, आचार्य कनकाभ का आश्रम।

भूमि-कन्या सीता के जन्म पर नाटक की कथा आधारित है। अनावृष्टि आदि दैवी प्रकोप के कारण देश मे भीषण अकाल मे लूटपाट जैसे समाज विरोधी कार्य कोढ मे खाज की सी स्थिति उत्पन्न कर देते है। आचार्य कनकाभ अपने शिष्यो सहित इन समाज विरोधी गतिविधियो का प्रबल विरोध करते हैं। अकाल की भीषण स्थिति मे क्षुधातुर लोग अत्यल्प खाद्यान्न के लिए एक दूसरे के प्राण हर लेते है, माताएँ निर्मोह होकर अपनी सन्तान का परित्याग कर देती हैं। इसी प्रकार की परित्यक्ता नवजाता कन्या विदेहराज जनक को भूमि-शोधन-अभियान के अवसर पर प्राप्त होती है। कनकाभ की कन्या-सम्बन्धी भविष्यवाणी के साथ कथा की परिसमाप्ति होती है। सीता के

जन्म-रहस्य की कथा के साथ-साथ आचार्य कनकाभ एव उनके शिष्य मलय तथा महीरथ एव वसुमति की घटनाएँ भी सयोजित है ।

धरती की महक (सन् १९५९, पृ० १५३) ले० रामावतार चेतन, प्र० हिन्दी भवन इलाहाबाद, *पात्र* पु० २०, स्त्री २, *अक* ३ ।
घटना-स्थल गाव का खेत, पुलिस स्टेशन ।

इस सामाजिक नाटक मे ग्रामीण कुरीतियो और दुर्व्यवस्थाओ को दूर करने वाले एक शिक्षक का प्रयास वर्णित है ।

नाटक का नायक शिवसागर मध्यमवर्ग का एक शिक्षक है जो समाज सेवा के उद्देश्य से नगर त्याग कर गॉव मे आकर रहने लगता है और अपने कुछ नवयुवक साथियो के सहयोग से गॉव की दशा सुधारने मे तत्पर है, परन्तु पग-पग पर उसका विरोध होता है। जमीदार, उसके चाटुकार मित्र, उसके सहायक गुडे सभी गॉव मे मनमाना अत्याचार करते है। अफीम का अवैध व्यापार, खेतोऔर घरो मे चोरी, ढोरो का अपहरण—इन सबसे उनको धन प्राप्त होता है जिसका कुछ अश पुलिस अधिकारियो का मुह बद करने के लिए निश्चित है। यदि शिवसागर जैसे कुछ व्यक्ति उसका विरोध करते है तो उनके घर चोरी कराई जाती है, उन्हे मार-पीट की धमकी दी जाती है और उनके चरित्र को कलकित करने का प्रयास किया जाता है। इन सबसे तग आकर शिवसागर उन गुण्डो को, जिनके कारण गॉव मे लोगो का जीवन दूभर हो गया था, मार डालता है और स्वय पुलिस को आत्मसमर्पण कर आत्म वलिदान द्वारा जनता की ऑखे खोल देता है।

धरती माता (सन् १९५४, पृ० ५२), ले० . रघुवीर शरण मित्र, प्र० . भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ, *पात्र* पु० १०, स्त्री ५, अक-रहित । *दृश्य* ५ ।
घटना-स्थल धरती माता का मदिर, खेत ।

इस सामाजिक नाटक मे सत्य की असत्य पर और धर्म की अधर्म पर विजय दिखाई गई है। गॉव के किसान अपने खेतो मे कठिन मेहनत करके अच्छी फसल उगाते है। गाव का मुखिया धनदेव भी किसानो को पुत्रवत् प्यार करता है। लेकिन विनाश और पाप-बुद्धि नाम की दुष्टात्माओ को किसानो का ऐश्वर्य और सुख अच्छा नही लगता। वे गॉव के मुखिया धनदेव को बहकाते है। धनदेव इनके कहने पर गॉव वालो को तग करता है। वही धनदेव जो गॉव की बहू-बेटियो को अपनी बहू-बेटी समझता था अब उन्ही का सतीत्व लूटने को तैयार है। वह निरीह बच्चो और बूढो की हत्या कराने लगता है। उसके अत्याचार से किसानो के रक्षक देवतागण भी दु खी हो जाते है।

लेकिन अन्त मे धर्मराज के प्रयास से सत्य की असत्य पर, धर्म की अधर्म पर और अहिसा की हिसा पर विजय होती है। धनदेव अपने कर्मो पर पश्चात्ताप करता है। विनाश और पाप-बुद्धि को भी धर्मराज क्षमा प्रदान कर देते है।

धरती से गगन (सन् १९५०, पृ० ८०), ले० · सतीश डे, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, *पात्र :* पु० १२, स्त्री ३, *अक* . ३, *दृश्य* १, १, १ ।
घटना-स्थल फैक्टरी, छोटी सी खोली ।

यह परिवार-नियोजन की समस्या पर लिखा गया हास्यपूर्ण सामाजिक नाटक है। दुर्गाप्रसाद एक फैक्टरी मे काम करने वाला मजदूर है। वह एक खोली मे अपने एक दर्जन बच्चो और बीबी सुन्दरी के साथ किसी तरह दिन गुजारता है।

उसके सभी बच्चे मारे-मारे फिरते है। दो एक बच्चे तो दवा के अभाव मे मर जाते है। किन्तु उसका दूसरा पुत्र प्रेम एक अमीर लडकी गीता से प्रेम करता है और जब गुडिया-गुड्डे की शादी बच्चे कर रहे थे तो उसी समय गीता और प्रेम का भी विवाह हो जाता है तथा दहेज के रूप मे ३) की परिवार नियोजन की पुस्तक माता-पिता की ओर से भेंट की जाती है।

धरादीप—'धूप के धान' मे संकलित (सन् १६६०), ले० गिरिजाकुमार माथुर, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ काशी, *पात्र* कतिपय स्वर, अक-दृश्य-रहित ।

'धरादीप' सगीत रूपक मे दीपावली को देशकाल की सीमाओ से मुक्त एक चिरन्तन धरातल प्रदान किया गया है। दीपावली उस सामाजिक सुख का प्रतीक है जहाँ समस्त रोग-शोक तथा बन्धन दीपक की लौ मे जल जाते है। कवि के अनुसार दीवाली प्रत्येक युग की धरोहर है। कदाचित् इसलिए उसने प्रत्येक अमावस्या की रात्रि के साथ दीवाली की उद्भावना की है। विभिन्न महापुरुषो ने अवतार लेकर इस दीप को प्रज्ज्वलित रखा है।

धर्म ईमान (सन् १६६२, पृ० ६०), ले० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार दिल्ली, *पात्र* पु० ५, स्त्री २, अक . २। *घटना-स्थल* ग्रामीण मकान, बैठक ।

हिन्दू-मुस्लिम धर्म के आधार पर लिखा गया यह एक सामाजिक नाटक है। कुन्दन अपने प्राणो की बाजी लगाकर बशीर के प्राणो की रक्षा करता है। फिर कुन्दन के मासूम बच्चे गोपी की परवरिश बशीर का भाई रहमत खाँ करता है। किन्तु इस कार्य के लिए उसे मजहब के ठेकेदारो से उलझना पडता है जिससे वह अपनी कौम का गद्दार साबित होता है। उसे दुखी होकर अपनी बीबी नसीम की भी हत्या करनी पडती है। अन्त मे रहमत अपना इन्साफी फर्ज पूरा कर गोपी के साथ अपनी बेटी रजिया की शादी करके हिन्दू-मुस्लिम धर्म को एक सूत्र मे बाँध देता है।

धर्म की धुरी (सन् १६५३, पृ० ६८), ले० राजा राधिकारमणप्रसादसिह, प्र० राजराजेश्वरी साहित्य मदिर, पटना; *पात्र* पु० ११, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* ३, २ ४।
घटना-स्थल वैष्णव मठ, मदिर, मकान ।

इस सामाजिक नाटक मे धर्म के आधार पर साम्प्रदायिक सकीर्णता को दूर करने का प्रयास है।

वैष्णव मठ के महन्त सत सरनजी गाधीवादी विचार के है। वह १६४७ ई० के साम्प्रदायिक झगडो मे एकता स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील है। विभाजन के समय पश्चिमी पजाब के कुछ लोगो के साथ राय साहब गुलजारीलाल साम्प्रदायिकता की अग्नि प्रज्ज्वलित करके मुसलमानो से प्रतिशोध लेना चाहते है।

इधर मुल्ला नूरमियाँ भी साम्प्रदायिकता की अग्नि भडकाता रहता है। दोनो वर्गों मे सघर्ष होता है पर अहमद मुकुन्द की रक्षा मुसलमानो के आक्रमण से करता हुआ स्वयं मारा जाता है। गुलजारीलाल की भतीजी कमला संत सरन जी के मदिर मे शरण लेने आती है। जहाँ कमला और मुकुन्द मे प्रेम देखकर महन्त जी उनकी शादी कर देते है। अहमद और सन्तसरन के प्रयास से साम्प्रदायिकता की आग बुझ जाती है।

धर्म चक्र (सन् १६६१, पृ० ४५), ले० रामस्वार्थ चौधरी 'अभिनव', प्र० अभिनव साहित्य प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, *पात्र* पु० १०, स्त्री ३, *अक* नही, *दृश्य* ६।
घटना-स्थल मगध सम्राट अशोक का राज दरबार, कलिंग ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे कलिग युद्ध के बाद अशोक तथा कलिग कुमारी प्रणयलता द्वारा धर्म प्रचार की कथा वर्णित है।

सम्राट अशोक कलिग युद्ध के भीषण नरसहार से भयभीत होकर अहिंसा का व्रत ठान लेता है तथा देश मे बौद्ध धर्म की स्थापना के लिए कृत सकल्प है। कलिंग के राजकुमार इन्द्रजीत और राजकुमारी प्रणयलता ज्ञानगुप्त की मदद से सम्राट् अशोक से बदला लेना चाहते है किन्तु अशोक की नीतियो से प्रभावित हो ऐसा नही कर पाते। अशोक इन्द्रजीत से कहता है—"देखो राजकुमार ! मगध वाले न मागध बनकर रह सकते है न कलिग वाले कलिंगी बनकर। इन सीमाओ से ऊपर उठकर सबसे पहले उन्हे मनुष्य बनकर रहना होगा। मगध और कलिग का प्रीति-सम्बन्ध अक्षुण्ण रहे, इसके लिए मैं इन

राजवशो को एक सूत्र मे आबद्ध देखना चाहता हूँ।" इन्द्रजीत इस कथन से प्रभावित होता है और प्रणयलता अशोक के चरित्र से। अन्तत प्रणयलता अशोक की रानी बनकर उनके बौद्ध धर्म के सचालन तथा अहिंसा के प्रचार मे सहयोग देती हुई धर्म-चक्र को घुमाने मे अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देती है।

धर्मपाल-शान्ता (सन् १९५२, पृ० ६८), ले० न्यादरसिह 'बेचैन', प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, *पात्र* पु० १३, स्त्री ३; *अक* ३, *दृश्य* ६, ७, ५।
घटना-स्थल · घर, कमरा, जगल, वनमार्ग, श्वसुर का घर।

इस सामाजिक नाटक मे अनमेल विवाह के दुष्परिणामो को दिखलाया गया है। युवती कामकला का विवाह बूढे कल्याणसिह से होता है किन्तु काम-पीडित-कामकला एक दिन अपने सौतेले पुत्र धर्मपाल से काम-शाति की याचना करती है पर वह अपनी विमाता की प्रतिष्ठा रखते हुए उसे इन्कार करता है, तब कामकला त्रियाचरित्र के माध्यम से उस पर आरोप लगाती है। फलत वह घर से भाग जाता है। रास्ते मे उसे अनजाने मे उसके साले लूटने के बहाने से घायल करते है। अन्त मे वह अपनी ससुराल पहुँचकर अपनी पत्नी शान्ता से सारी बाते बताता है। वह उसकी मदद करती है जिसके कारण सब लोग अपनी-अपनी भूलो पर पश्चात्ताप करके प्रेम से रहने लगते है।

धर्मयोगी (सन् १९२१, पृ० १२२), ले० मुशीजायक साहब, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, *पात्र* पु० २१, स्त्री ९; *अक* ३, *दृश्य* ८, ८, ३।
घटना-स्थल वेश्यागृह, मकान।

इस नाटक की कथा वेश्यावृत्ति पर आधारित है। इसमे दिखाया गया है कि किस प्रकार सम्पन्न परिवार के लोग बिना अपनी मर्यादा का ध्यान किए वेश्यावृति के शिकार हो जाते है। पर अन्त मे निराशा और बर्बादी ही हाथ लगती है। उन्हे पुन अतिम सहारा भी उसी परिवार मे मिलता है जिसकी पूर्व उपेक्षा करके वे वेश्यावृति मे अग्रसर होते है।

धर्मराज (सन् १९५६, पृ० १८२), ले०· आचार्य चतुरसेन शास्त्री, प्र० राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली, *पात्र* पु० २२, स्त्री ८, *अक* ५, *दृश्य* ११, ११, ११, ११, ११।
घटना-स्थल मथुरा का नगरद्वार, पाटलीपुत्र राजप्रासाद।

इस ऐतिहासिक नाटक के द्वारा सम्राट् अशोक के समय मे प्रचलित भारतीय सभ्यता और सस्कृति पर प्रकाश डाला गया है। क्रूर और क्रोधी शासक अशोक कलिग विजय के पश्चात् बौद्ध धर्म का अनुयायी हो जाता है। युद्धोपरात कलिग महाराजा और राजकुमार को जीवित पकड लानेवाले को अशोक पुरस्कार देने के लिए कहता है। कलिग राजकुमारी की आकृति अपने भाई से मिलती है जिससे वह स्वय को कलिग राजकुमार कह कर बन्दी बनवा लेती है। किन्तु आचार्य उपगुप्त के कहने पर अशोक कलिग राजकुमार को बन्दीगृह से मुक्त करता है लेकिन जब पता चलता है कि वह राजकुमारी है तो वह उससे विवाह कर लेता है। अशोक अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री सघमित्रा को बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए लका भेजता है। वृद्धावस्था मे अशोक एक दासी से विवाह कर लेता है जो अशोक के पुत्र कुणाल से प्रणय याचना करती है लेकिन ठुकराई जाने पर ईर्ष्या की अग्नि मे जलने लगती है। षड्यन्त्र से वह कुणाल की आँखे निकलवा लेती है। कुणाल का पुत्र सम्प्रति राज्याधिकारी बनता है। और कुमार महेन्द्र धर्म प्रचार करते हुए निर्वाण प्राप्त करते है।

धर्मात्मा (सन् १९४०, पृ० १४०), ले० · शिवराम दास गुप्त, प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी, *पात्र* : पु० १०, स्त्री ४; *अक* ३, *दृश्य* १३, ९, ८।
घटना-स्थल वनारस मे एक व्यापारी की दुकान, मदिर।

यह सामाजिक नाटक प्रेमचन्द के

उपन्यास 'कर्मभूमि' पर आधारित है। इसमे पाखडियो के ढोग का पर्दाफाश किया गया है। बनारस मे धर्मदास साडियो के सबसे बडे व्यापारी है, जिनके यहाँ मजदूर वर्ग अपनी मजदूरी बढाने के लिए बगावत करते है। मजदूरो की उचित माग को देखकर धर्मदास का पुत्र अमरनाथ उनका साथ देता है। समाज का पूँजीपति ऊपर से देखने मे कितना धर्मात्मा लगता है पर वह मजदूरो का खून चूसने मे तनिक भी नही हिचकिचाता। इसी प्रकार आचार्य जी धर्म के ठेकेदार है किन्तु चुनिया नामक धोबिन के प्रेम मे फसकर उससे अपना सम्बन्ध रखते है। एक दिन जब वह मदिर मे पूजा करने की इच्छा करती है तब आचार्य उसका विरोध करते है तथा चुनिया को मारना चाहते है किन्तु धोखेबाज आचार्य को सबक सिखाने के उद्देश्य से चुनियाँ उन्हे छुरे से घायल कर स्वय भी मर जाती है। अन्त मे सबको अपनी भूल का पता चलता है और फिर नए समाज का उदय होता है।

धर्माधर्म युद्ध (सन् १६२२, पृ० १२२), ले० लाला किशन चन्द जेबा, प्र० लाला लाजपत राय पृथ्वीराज साहनी, लाहौर, *अक* ३, *दृश्य* ४, ६, ३।
घटना-स्थल : दुर्योधन की राज्य सभा।

इस पौराणिक नाटक मे कौरव-पाण्डव युद्ध का वर्णन है। दुर्योधन के अत्याचारो से प्रजा त्रस्त है। दुष्ट दुर्योधन चालबाजी से जुए मे पाण्डवो का सर्वस्व अपहरण कर लेता है। भीष्म जैसे सत्यव्रती को भी उसके प्रतिकूल बोलने की हिम्मत नही पडती। अन्त मे कौरव-पाण्डवो का युद्ध होता है जिसमे पाण्डवो की विजय होती है। अपने सारे छल-बल के बाद भी दुर्योधन हारता है अर्थात् धर्म की विजय एव अधर्म की पराजय होती है।

धर्मालाप अर्थात् भारतीय नाना धर्मो का वार्तालाप (सन् १८८४), ले० राधाकृष्ण दास, प्र० धर्मामृत यंत्रालय, काशी, *पात्र* २२, *अक-रहित*।
घटना-स्थल सनातन धर्मियो की एक सभा।

वृद्ध सनातन धर्म को एक सभा मे पडित, बैरागी, वेदान्ती, ब्राह्मण, पुरोहित, शैव, शाक्त, कौल, वैष्णव, मारवाडी, साहोजी, बाबू साहब, लाला साहब, पचपीरिए, दयानदी, थियोसॉफिस्ट, न्यू फैशनिये, नेटिव क्रिश्चियन, प्रेमी भक्त आदि अपने-अपने परस्पर विरोधी विचार व्यक्त कर, दुखी और निराश होते है क्योकि सनातन धर्म इनके उद्धार और ऐक्य के लिए सचेष्ट है। वह अपनी दुर्दशा की चिंता से अचेत हो जाता है। ऐसी स्थिति मे साहस और आशा उसकी रक्षा करते है और सहयोग के लिए प्रतिज्ञा करते है। सनातन धर्म सचेत होने पर विलाप करता है। अन्त मे ३ अप्सराएँ सनातन धर्म के जय की कामना करती हुई एक गीत गाती है।

धर्मावतार (सन् १६२५, पृ० ६५), ले० : सरयू प्रसाद 'बिन्दु', प्र० एम० आर० बेरी एण्ड कम्पनी, कलकत्ता, *पात्र* · पु० ११, स्त्री १, *अक-रहित दृश्य* ६।
घटना-स्थल जगल, मार्ग, कमरा, आर्यसमाज मदिर।

इस प्रहसन के प्रस्ताव मे सूत्रधार कहता है—

आज अभिनय रचायेगे देशोद्धार का
दृश्य सबको दिखायेगे अछूतोद्धार का ॥

इसमे धर्म के नाम पर ढोगियो द्वारा हिन्दू धर्म की दुर्बलता चित्रित है।

नाटक का नायक घुरहू चमार जालिम खॉ जमीदार का नौकर है। जमीदार एक दिन घूमते-घूमते एक जगल मे प्यास से बेचैन हो जाता है। उस जगल मे एक झोपडी है जिसमे सुशीला भाई विद्याधर के साथ रहती है। विद्याधर दरी पर प्यासे जमीदार को बिठाता है और सुशीला जल लाकर उसे पिलाती है। जमीदार जालिम खा सुशीला के सौन्दर्य पर रीझकर उसका अपहरण करना चाहता है। जब घुरहू उसका विरोध करता है तो वह उसे मारने को धमकाता है। जालिम विद्याधर को मारकर सुशीला का अपहरण करता है। सुशीला के पिता प० पवित्राचार्य अपनी लड़की के उद्धार का प्रयत्न

नही करते वल्कि कहते है—

"वेटा मरै लडकी हरै इसका नही कुछ ध्यान है। पूजा करे ठाकुर की ये हिन्दू धरम का ज्ञान है।" घुरहू पुलिस को सूचित करता है। पुलिस सुशीला को जमीदार के घर से निकालकर वन्दीगृह मे रखती है। जालिम वहाँ पहुँचकर सुशीला का सतीत्व हरण करना चाहता है। घुरहू पहुँचकर सुशीला की रक्षा करता है। पवित्राचार्य मंदिर मे अछूतो को घुसने नही देते, पर दान-दक्षिणा चुपके से ले लेते है। घुरहू को अछूत समझकर उसे मदिर से निकालने लगते है। घुरहू सुशीला को दुष्टो से वचाकर लाया है। पर पवित्राचार्य अपनी वेटी को घर मे रखना नही चाहते। यहाँ सुशीला और उसके ढोगी पिता का वार्त्तालाप हिन्दू-धर्म की दुर्वलताओ का दिग्दर्शन कराता है। आर्य समाज के प्रचारक स्वामी विद्यानद सुशीला को समझाते हुए कहते है—"हिन्दू धर्म अपनी विछुडी हुई सन्तानो को तो मिला ही सकता है किन्तु उसमे विधर्मियो को भी मिला लेने की शक्ति है।" सुशीला और घुरहू का व्याह हो जाता है।

धर्मोजय वा वीर विजय (सन् १९२१, पृ० १४१), ले० · कुजीलाल जैन, प्र० उपन्यास वहार आफिस, बनारस, पात्र पु० १३, स्त्री ८, अक ३, दृश्य ९, ८, १०।

इस सामाजिक नाटक मे धर्मोपदेश के साथ सत्यनारायण के व्रत और भक्ति-भावना का प्रभाव दर्शाया गया है। भक्तो की पुकार सुनकर सच्चिदानन्द सत्य नारायण प्रत्येक अवसर पर उनकी सहायता करते है। सत्यनारायण के प्रभाव के कारण विना प्रयास के ही श्रीपाल शंकरगढ का राजा वन जाता है। पर अजयपाल विश्वासघात तथा छल के द्वारा श्रीपाल का राज्य हरण कर लेता है। श्रीपाल परिवारसहित जगल मे छिप जाता है। अजयपाल के जासूस श्रीपाल-सिह तथा उसकी पत्नी गोमती को पकडकर ले जाते है। अजयपाल गोमती पर कुदृष्टि रखता है किन्तु सत्यनारायण भगवान साक्षात् दर्शन देकर गोमती के सतीत्व की रक्षा करते है। उनकी कृपा से पुन राजा को अपना राज्य वापस मिलता है।

धारेश्वर भोज (सन् १९५८, पृ० १७२), ले० ओकारनाथ दिनकर, प्र० रायल वुक एजेन्सी, अजमेर; अक ३, दृश्य : ५, ५, ४।

घटना-स्थल · धारानगरी की धर्मशाला, राजा भोज का मंत्रणाक कक्ष, अध्ययन कक्ष, शारदा सदन।

इस ऐतिहासिक नाटक मे धारेश्वर भोजराज द्वारा तैलपराज से लिये गये प्रतिशोध का वर्णन है।

महाकालेश्वर के पूजा पर्व पर राजमाता मृणालवती की सतप्त तथा अशात आत्मा धारेश्वर भोजराज को तैलपराज से प्रतिशोध के लिये प्रेरित करती है और भोजराज महारात्रि का उत्सव अधूरा ही छोडकर युद्ध की तैयारी करते है। धारानगरी की राजकीय धर्मशाला मे यदि सैनिक सेठ तथा यात्रियो पर आक्रमण करते है, परन्तु क्षेमेन्द्र तथा भोजराज सेनापति के सहित पहुँच कर उनकी रक्षा करते है। तृतीय दृश्य मे दानवीर भोज का चित्रण है। चतुर्थ मे क्षेमेन्द्र विजयातिलका आदि राजकवि धनपाल सरस्वती की वाटिका मे क्रीडा करते है। भोजदेव अपने मत्रणा कक्ष मे रण-विजय पर विचार विमर्श करते है, किन्तु कविराज धनपाल अपने अहिसात्मक विचारो से धारेन्द्र को व्यर्थ रक्तपात से पृथक् करते है।

प्रथम दृश्य मे विजयातिलका क्षेमेन्द्र के उत्थान का चित्रण है। द्वितीय दृश्य मे पाटनाधिपति गुर्जरेश्वर भीमदेव अपनी परिषद् मे सोमनाथ-पराजय तथा भोज के यश पर विचार-कर मालवेन्द्र भोज के पराभव की योजना वनाते है। दृश्य तीन मे मालव की परम-भट्टारिका काचनमाला विजया के साथ खेलती हुई तैलग-विजयी भोज का स्वागत करती है। दृश्य चार मे भोज की परिषद् मे दिग्विजय की चर्चा होते-होते ही गुर्जरेश्वर स्वयं विप्ररूप मे दामोदर मेहता के साथ सहायक सन्धि-विग्राहक की हैसियत से आते है तभी भोजराज सामुद्रिक विद्या के ज्ञान से उन्हे पहचान लेते है किन्तु वहाना करके भीमदेव

निकल जाते है। भोज मदनोत्सव मनाकर परिजन-पुरजन को आनन्दित करते है।

विद्यावीर भोज अपने अध्ययन कक्ष मे धनपाल सरस्वती को अपने जलयान, वायुयान, स्वचालित यन्त्रो की रचना दिखाते है। दूसरे दृश्य मे गुर्जरेश्वर भीमदेव मन्त्रणाकक्ष मे विचार-विमर्श करके सोमनाथ की नर्तकी चकुला देवी को परमभट्टारिका का पद देकर धारानगरी जाने से रोकते है। तृतीय दृश्य मे धारा के शारदा-सदन मे विजया तथा क्षेमेन्द्र भोज प्रशस्ति का रूपक दिखाकर भोज-राज को प्रसन्न करते है तथा परिषद् मे उच्चस्थल देकर प्रणयसूत्र मे वधते है। अन्तिम दृश्य मे भोज आचार्य धनपाल सरस्वती से मजरीग्रथ सुनकर उसका नायक स्वय वनने का प्रस्ताव करते हैं किन्तु आचार्य इसका विरोध करते है। फलतः भोज मजरी को अग्नि मे डालते हैं। इस पर धन-पाल सज्ञाशून्य हो जाते है और इसी दुख मे भोज भी वेहोश हो जाते हैं किन्तु तिलका और क्षेमेन्द्र की पुनर्रचना के आश्वासन पर दोनो स्वस्थ होकर मजरी का नाम 'तिलक-मजरी' रख देते है तथा भोजराज यज्ञ वलि-निरोध की आज्ञा प्रसारित कराते है।

धीरे-धीरे (वि० १९९६, पृ० ६७), ले० : वृन्दावन लाल वर्मा, प्र० गगा ग्रथागार, लखनऊ, *पात्र* पु० १४, स्त्री १, अक . ३, दृश्य-रहित।

घटना-स्थल जमीदार का भवन, ग्राम-क्षेत्र।

जमीदार तथा जनता के बीच उभरने वाले सघर्ष का चित्र इस राजनैतिक नाटक मे मिलता है। जमीदार राव गुलावसिह अपनी चालाकी से जगत् मे प्रतिष्ठा वनाये रखना चाहता है। वह सरकार द्वारा जमीदारो के प्रति किये जाने वाले विरोध से भी सतर्क है। वह अपने कारिन्दा चन्दनलाल को लगा-तार यही समझाता रहता है कि गाँववालो को अप्रसन्न मत होने दो। तभी राष्ट्रीय सघ का एक देहाती नेता सगुनचन्द उनके यहाँ चन्दा लेने आता है। जमीदार का आतिथ्य पाने पर भी वह गाँव वालो को उनके अधि-कारो के प्रति सजग करता है। गाँववालो के साथ सगुनचन्द के उपदेशो से जमीदार का झगडा हो जाता है। थानेदार आता है और प्रभावहीन सिद्ध होकर लौट जाता है। जमी-दार के अत्याचार की सूचना नेता जी लखनऊ भेजते है वहाँ भी अधिकारी शिकायत पर अधिक ध्यान नही देते है। उनका कहना है कि जमीदार तथा जनता के वीच सुधार धीरे-धीरे ही होगा।

धूप छाँह (सन् १९५०), ले० . आरसी प्रसाद सिंह, प्र० नई धारा, पटना, *पात्र*. पु० ११, स्त्री ७, *अक-दृश्य-रहित*।

यह सगीतरूपक मानव-जीवन का एक व्यापक चित्र प्रस्तुत करता है जहाँ कुछ भी स्थिर नही है, सभी कुछ अस्थिर है। लेखक ने जीवन को धूप छाँह माना है। सुख-दुख हास-अश्रु, मिलन-विरह का उन्मुक्त विलास मानव-नियति को किसी अदृश्य डोर मे वाँधे हुए है। इस स्थिति का समाधान है—आत्म-साक्षात्कार, जिसके उपरान्त मानव द्वन्द्वातीत स्थिति मे पहुँच जाता है।

धूर्तराज (सन् १९३५, पृ० ६१), ले० सीताराम गुप्त 'विनोद', प्र० सीताराम गुप्त, कवीर चौरा, काशी; *पात्र* पु० ५, स्त्री नही, *अक-रहित, दृश्य* : १९।

घटना-स्थल जमीदार का घर, इम्पीरियल होटल, वम्वई मे एक होटल।

इस प्रहसन मे दो धूर्तो की ढोग विद्या का नाटकीय रूप दिया गया है।

इसमे दिनेश तथा वसन्त दो दोस्त मौजी-मल के कहने पर वम्वई जाने के लिए तैयार हो जाते है। दिनेश तथा वसन्त दोनो जनाने लिवास मे होते है। दिनेश देखने मे वडा ही सुन्दर लगता है जिसे देखकर एक ठाकुर जमीदार प्रेममुग्ध होकर उसे अपने घर ले जाता है। वहाँ से दिनेश तथा वसत तिजोरी से चेक वुक तथा कुछ पैसे लेकर रातो-रात भागकर इम्पीरियल होटल मे रुकते है। वहाँ पर वे अपने शानो-शौकत का झूठा ढोग दिखाकर होटल के मैनेजर से भी दो हजार रुपया लेकर तथा अपनी कार

जमानत पर छोडकर चले जाते है। रास्ते मे वे एक भिखारी को कुछ पैसे देकर उसे अपने साथ ले लेते हैं। फिर उसे राजा का लिवास पहनाकर और खुद मुसाहिवो के लिवास मे वम्वई के एक वडे होटल मे जाकर ठहरते है। वहा भी ये अपना राजा होने का झूठा ढोग रचकर वडा धन खर्च करते है। जब पैसे कम होने लगते है तो अम्बालाल सेठ को ४२० पढाकर उनसे ५० हजार रुपये ऐठते है। अन्त मे ये दोनो धूर्त पकडे जाते है और उनकी वास्तविकता का पता चलता है।

धूर्त समागम (सन् १६६०, पृ० ७०), ले० . ज्योतिरीश्वरठाकुर, सपादक जयकान्त मिश्र, प्र० अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति सस्कृत, प्राकृत, मैथिलीगीत इलाहावाद, पात्र पु० ६, स्त्री २; अक-*दृश्य-रहित*।

घटना-स्थल खुला मैदान,'आश्रम, सन्यासिनी वेश धारिणी वेश्या का गृह।

सस्कृत भाषा मे नान्दी पाठ के उपरात नटी वसन्तश्री का गुणगान करती है। सूत्र-धार सूचना देता है कि गणिका-विलासी, सद्धर्म परित्यागी विश्वनगर नामक सन्यासी कमडल धारण करके आ रहा है। विश्वनगर का अनुगमन करते हुए स्नातक प्रविष्ठ होता है। स्नातक अनगसेना नामक वेश्या के सौन्दर्य का वर्णन करता है। विश्वनगर अपनी प्रेयसी सुरतिप्रिया के सौदर्य पर मुग्ध होता है। दोनो मृतागार ठाकुर के आश्रम पर भिक्षार्थ पहुँचते है। ठाकुर पडोस मे पुत्रो-त्पत्ति के कारण अशौच का वहाना वनाकर उन दोनो को पार्श्ववर्तिनी स्त्री सुरतिप्रिया के पास भेज देता है। वहाँ पहुँचकर विश्वनगर मास, माछ, वड, वडी, दाल, मद्य जमाया, दही, सोन्धा दूध आदि रसमयी वस्तुये माँगता है। सुरतिप्रिया विश्वनगर पर प्रसन्न होकर धर्म के लिए अपना शरीर और प्राण भी अर्पण करने को वचन देती है। सुरतिप्रिया को भोजन की तैयारी का आदेश देकर वह स्नातक के साथ आगे वढता है। स्नातक सहसा अनगसेना को देखकर नाचने-गाने लगता है और उधर मदनाभिभूत विश्वनगर अनगसेना से कामसिन्धु मे निमज्जित होने की प्रार्थना करता है। ज्योही वह अनगसेना के वस्त्र पकडता है, स्नातक अपने गुरु को धिक्कारता हुआ कहता है—'इसे मै पहले ग्रहण कर चुका हूँ। यह तो पुत्र-वधू हो चुकी।' विश्वनगर स्नातक को धिक्कारता हुआ कहता है—'यह तो तेरी गुरु पत्नी है, अत मातृ तुल्या है।' स्नातक क्रुद्ध होकर कहता है—'रे लम्पट, यदि इस तरह बोलेगा तो वेल के समान तेरा सिर लाठी से चूर-चूर कर दूँगा।'

इन दोनो के वढते विवाद को देखकर अनगसेना असज्जाति मिश्र को निर्णायक ठह-राती है। विश्वनगर इस प्रस्ताव से सहमत हो जाता है किन्तु स्नातक अपनी गाँठ का धन दिखाकर अनगसेना को अपने पक्ष मे लाने का प्रयास करता है।

दूसरे अक मे असज्जाति मिश्र असन्तोष प्रकट करते हुए कहता है—'इस नगर मे आठ दिन निवास करते हो गया किन्तु न तो किसी विवाद मे पच बनाया गया, न कपट श्राद्ध का लाभ हुआ और न गणिका-जन आलाप सुनने को मिला।' इसी समय अनग-सेना विश्वनगर और स्नातक का विवाद निप-टाने पहुँचते है। स्नातक अपनी झोली मे भाँग और गाँजा लेकर जाता है और असज्जाति को उत्कोच रूप मे धन प्रदान करता है। असज्जाति मिश्र अनगसेना के सौन्दर्य पर मुग्ध होता है। वह वादी-प्रतिवादी का विवाद सुनकर निर्णय देता है कि तुम दोनो से पूर्व ही स्वप्न मे इससे मेरा परिचय हो चुका है। इस कारण यह हमारी वल्लभा है। उसी समय विदूषक पहुँचकर कहता है—"यह मिश्र महोदय वूढा है, सन्यासी निर्धन, स्नातक स्वेच्छाचारी अत इन सवको छोडकर मेरे सग अपने यौवन को सफल करो।" इसी समय मूलनाशक नापित आता है और अनगसेना और असज्जाति ने क्षौर कर्म का पारिश्रमिक माँगता है। असज्जाति गाँजा-भाँग की झोली दे देता है। उसकी रस्सी से नापित असज्जाति के हाथ पैर वाँध देता है। मिश्र उससे वधन छोडने की प्रार्थना करता है। नापित हिला-हिलाकर देखता है और कहता है—'हे मिश्र, तुम मरे या जीवित हो ?"

धूल भरे हीरे (पृ० १००), ले० · श्रीमृत; प्र० नरवदा बुकडिपो, जवलपुर; *पात्र* पु० २२, स्त्री , *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल वरगद का पेड, शराव की दुकान।

इस सामिजक नाटक मे छोटे वच्चो की दुर्दशा तथा उसका समाधान प्रस्तुत है।

इस नाटक मे उन भोले वालको की कहानी है जो माता-पिता व समाज की घोर उपेक्षा तथा दुर्व्यवहार के कारण अपराधी का जीवन व्यतीत करते हैं। सुशील इन सभी वच्चो को इकट्ठा करके वरगद के पेड़ के नीचे 'वाल कुटीर' की तख्ती लटकाकर इनके जीवन को उपयोगी वनाने का काम शुरू कर देता है। सुशील गाधीजी के वुनियादी तालीम (वेसिक शिक्षा) के अनुसार ऐसे वच्चो को शिक्षा देने के साथ ही साथ खादी, चरखा और खेती-वाडी का काम भी सिखाता है। वच्चो के वनाये हुए खादी के वस्त्र एव चरखा देश भर मे विकने लगते है। वच्चे आसाम के भूकप पीडितो के लिए आर्थिक सहायता भेजते है और शराववदी के लिए दुकानो पर भूख-हडताल भी करते हे। इस प्रकार इन विगडे हुए वच्चो का जीवन सुधर जाता हे।

ध्वंस शेष (सन् १९५२), ले० सुमित्रानदन पन्त, प्र० राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, *अक-रहित, दृश्य* ४।
घटना-स्थल राजमार्ग, खँडहर, सिन्धु तट पर आश्रम।

इस नाटक की कथा प्रस्तर युग से प्रारभ होकर पूंजीवादी युग तक आती हे जिसमे मानव-सस्कृति का विकास दिखाकर यह प्रमाणित किया गया है कि प्राचीन जीवन का युग समाप्त हो चुका है। इस वदलते हुए मानव की चेतना धर्म, राजनीति दर्शन पर आधारित है। इसमे वर्तमान यान्त्रिक युग मे महाविनाश के लक्षण परिलक्षित हो रहे है। इस नाटक का पात्र वृद्ध अंतश्चेतना का प्रतीक है। युवती आधुनिक सभ्यता की प्रतीक है। पत जी ने इस नाटक मे विश्व-युद्ध का कारण खोजने की चेष्टा की है जिसमे वे भौतिकवादी मन की अधता, द्वेषादि दुर्गुणो का कारण वताते है। कवि ने विनाश मे भी सौन्दर्य का अकन करना चाहा है। अतत. प्रलय के उपरात ध्वस-शेष की खुदाई द्वारा कवि को गत युग के मनोविज्ञान, दर्शन, धर्म, इतिहास आदि का स्वरूप मिलता है। इस नाटक का अत उर्ध्वचेतनावाद के आधार पर समन्वय स्थापित करके भविष्य के सुखो की कल्पना के साथ हुआ है।

ध्रुव तपस्या (सन् १९२३, पृ० ८४), ले० : रामनारायण सिह जायसवाल, प्र० भारत प्रेस, पियरी कला, काशी, *पात्र* . पु० ७, स्त्री ४, *अक* ४, *दृश्य* २, ५, ५, ३।
घटना-स्थल राजा उत्तानपाद की सभा।

यह नाटक पौराणिक कथाओ के आधार पर ध्रुव की तपस्या और उनके माता-पिता के चरित्र को चित्रित करता है। अन्त मे ध्रुव की विजय दिखाकर न्याय और धर्म को ऊँचा उठाया गया है।

ध्रुवतारा (सन् १९५५, पृ० १०६), ले० दयाशकर शर्मा एम० ए०, प्र० श्री राम मेहरा, एण्ड कम्पनी, आगरा, *पात्र* : पु० १०, स्त्री ५; *अक* ४, *दृश्य* ४, ७, ७, ४।
घटना-स्थल आर्यावर्त का राजमहल, कैलाशपुरी, गगातट।

इस ऐतिहासिक नाटक मे कुशानो के शासनकाल की अन्तिम दुर्व्यवस्था का वर्णन है।

कुशानो की प्रवलता के कारण भारशिवो को लगभग आधी शताब्दी तक मध्यप्रदेश की पहाडियो मे रहना पडता है। गंगा के पुनीत तट पर पहुँचकर भारशिव क्रूर कुशानो की विभीषिका से आक्रान्त हो आर्यावर्त के उद्धार का वीडा उठाते हे। भारशिवो ने उस समय शिव का आह्वान किया और शिव गगा तट के मैदान मे वहाँ के निवासियो को अपना ताण्डव नृत्य दिखाते है। नाग राजा भी भारशिव वनकर गगातट के मैदान मे राष्ट्रीय नृत्य करते है। उस समय

के भारशिव राजाओ मे, वीरसेन, स्कन्द नाग, भीमनाग, देवनाग, भवनाग आदि नाम उल्लेखनीय है। नाटक मे वीरसेन अन्धकार-युगीन भारत का ध्रुव तारा है।

भारशिवो ने अनेक वार वीरता पूर्वक युद्ध किये और उनके प्रयास से आर्या-वर्त्त के कुशानो का शासन धीरे-धीरे नष्ट हो जाता है। कुशानो को आर्यावर्त्त से खदेडकर फिर से हिन्दू राज्य स्थापित करने मे यशस्वी वीरसेन का प्रमुख हाथ रहा। वीरसेन के आविर्भाव और उत्कर्ष से एक स्वदेशी युग आरम्भ होता है, विदेशी शासन समाप्त होता है। अन्धकार-युगीन भारत का ध्रुवतारा वीरसेन पथ-भ्रष्ट भटकती हुई जनता को ठीक दिशा की ओर अग्रसर कर देता है।

ध्रुवलीला (सन् १९२९), ले० · आनन्द प्रकाश 'कपूर', प्र० · उपन्यास बहार आफिस, काशी, पात्र ·पु० १०, स्त्री ७, अक : ३, दृश्य . ७, ८, ४।

घटना-स्थल राज्य भवन, वन मार्ग आदि।

इस नाटक मे भक्त बालक ध्रुव की पौराणिक कथा है। ध्रुव का सौतेली माँ द्वारा अपमानित होना, जगल मे तपस्या करना, वरदान प्राप्त करना आदि का वर्णन है। अन्त मे नाटककार ने सौतेली माँ सुरुचि से अपने कुकृत्य का पाश्चात्ताप करा कर और भक्त ध्रुव को पुन उससे मिलाकर नाटक को सुखान्त कर दिया है।

ध्रुवस्वामिनी (सन् १९३३, पृ० ५९), ले० · जयशकर प्रसाद, प्र० . भारती भण्डार, काशी, पात्र पु०७, स्त्री ५, अक . ३।

घटना-स्थल : राजमहल, शकराज का शिविर।

इस नाटिका मे इतिहास-प्रसिद्ध गुप्तवश की वह घटना कथावस्तु बनाई गई है, जिसमे स्त्री का पुनर्विवाह कराया गया है। महाराज समुद्रगुप्त के दो पुत्र हुए—रामगुप्त और चन्द्रगुप्त। चन्द्रगुप्त के शौर्य पर प्रसन्न होकर महाराज समुद्रगुप्त उसी को युव-राज-पद प्रदान करना चाहते है, किन्तु चन्द्र-गुप्त अपने ज्येष्ठ भ्राता रामगुप्त के लिए यह वैभव त्याग देता है। इसी प्रकार उस काल की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी ध्रुवस्वामिनी के वाग्दत्ता होने पर भी उसका परिणय रामगुप्त के साथ स्वीकार करता है। रामगुप्त ऐसा विलासी, कायर और कुलकलकी निकलता है कि आक्रमणकारी शको से युद्ध न करके हिजडो, कुबडो और सुन्दरियो के मध्य जीवन व्यतीत करने लगता है और शको से सन्धि करने के लिए अपनी धर्मपत्नी ध्रुवस्वामिनी को शकराज के हाथो मे समर्पित करने को प्रस्तुत हो जाता है। चन्द्रगुप्त कलक-सागर मे गुप्तकुल-यश को निमग्न होते देख स्त्री-वेप मे ध्रुवस्वामिनी के साथ शकराज के पास जाता है, और उसका वध करके लौटता है। ध्रुवस्वामिनी की ओजस्विता से प्रभावित होकर सामन्तवर्ग रामगुप्त का विरोध करते है। परिणाम यह होता है कि एक सामन्त रामगुप्त का वध कर देता है और पुरोहितो की शास्त्रविहित सम्मति से विधवा ध्रुवस्वा-मिनी का पुनर्विवाह चन्द्रगुप्त के साथ होता है। चन्द्रगुप्त सम्राट् और ध्रुवस्वामिनी महा-देवी बनती है। आचार्य मिहिरदेव की कन्या अपने प्रियतम शकराज का शव ध्रुवस्वामिनी से भीख माँग कर लाती है।

न

नद विदा नाटक (सन् १९००, पृ० ५३), ले० बलदेव प्रसाद मिश्र प्र० · इडिया लिटरेचर सोसायटी द्वारा प्रकाशित एव तत्र प्रभाकर प्रेस मे मुद्रित; पात्र पु० १०, स्त्री ८; अक · ५, दृश्य . ४, ३, ५, ५, १।

घटना-स्थल नन्द भवन, पथ, राजमार्ग, मंदिर।

इस पौराणिक नाटक मे कसवध के लिए कृष्ण का मथुरागमन तथा गोकुल का पुनरावर्तन दिखाया गया है।

कंस की रानियाँ—अस्ति और प्राप्ति के कथोपकथन से विदित होता है कि कस ने एक लाख राजाओ को अधियारी गुफा मे वलि के लिये बद कर रखा है। कस के अत्याचार से प्राप्ति दुखी है और उसे अनुचित मानती है। अस्ति उसका विरोध करती है। इसी वीच कस आकर उन्हे नारद का यह कथन वताता है कि 'व्रजभूमि के कृष्ण-वलराम तुम से शत्रुता रखते है। इसलिये धनुप यज्ञ के बहाने बुलाकर उन्हे मार डालो।' वह यह भी बताता है कि नारद के चले जाने के वाद अनेक भयकर अपशकुन हुए। प्राप्ति इस कार्य को अनुचित कहती है किंतु अस्ति उस का समर्थन करती है। पश्चात् अक्रूर को अपना अभिप्राय समझाकर कस उन्हे व्रजभूमि से कृष्ण, बलराम, नद-उपनद सहित समस्त व्रजवासियो को धनुषयज्ञ के अनुष्ठान के बहाने निमत्रित करने को भेजता है।

प्रात काल के समय कृष्ण को जगाकर समस्त गोप-सखा गोचारण के लिए वन को जाते है। कृष्ण और वलराम के घर लौटने पर कस दूत अक्रूर नद को कस का न्योता देते है। व्रजभूमि मे मथुरा की यात्रा के लिए डुगडुगी फिराई जाती है। कृष्ण सखाओ के साथ मथुरा प्रस्थान करते है।

मथुरा के राजमार्ग पर सखाओ सहित कृष्ण वलराम कस के घोडे लुटवाने, वसुदेव को कारामुक्त करवाने, महल को तोड फोड़ डालने की प्रतिज्ञा करते हुए जाते है और कस के धोवी को मारकर उसके कपडे छीन एक दर्जी के सहयोग से पहनते है।

आगे वढने पर कस की दासी कुब्जा उन्हे चन्दन लगाती है। कृष्ण प्रसन्न होकर उसके कूबड को सीधा करते हुए उसे सुदर स्त्री का रूप प्रदान करते है।

कस शयनागार मे ही नरक के प्रेतो को देखता है, फिर वह किसी नगे पिशाच को अपनी ओर आता हुआ देख उसे मारने को उद्यत होता है और भयग्रस्त हो प्रलाप करता है। पति की ऐसी दशा देख प्राप्ति कालिका देवी के मदिर मे जाकर पति की कुमति को दूर करने की प्रार्थना करती है और उस की प्राणरक्षा के निमित्त आत्मवलि देने का सकल्प करती है। इसी वीच देवी की प्रतिमा कॉप कर फट जाती है। उसके साथ राजलक्ष्मी भी मथुरा छोडकर चल देती है। राजलक्ष्मी से इसकी सूचना पाकर प्राप्ति भी वहाँ से निराशापूर्वक लौट आती है।

राजमार्ग पर दो नगरवासियो के वार्तालाप से प्रकट होता है कि किस प्रकार कस मारा गया और कृष्ण वलराम ने कुवलय हाथी, मुष्टिक और चाणूर सहित कस का वध किया। इस चर्चा के साथ ही कृष्ण वलराम आदि गौरी की प्रार्थना करते हुए आते है। जव देवियाँ उनका जयजयकार करती है और मथुरावासी स्वागत गान गाते है।

जय ध्वनि के साथ कृष्ण कारागार मे वन्द माता-पिता के चरणो मे प्रणाम करते है। देवकी पुत्र-वत्सलता मे मग्न हो उन्हे गोद मे वैठाती है।

कस के मरने के वाद प्रजा-रक्षण का कार्य कृष्ण अपने हाथ मे लेते है। निराश हो नद और उपनद 'हमे जनि विसारियौ' कहकर रोते हुए ग्वाल बाल के साथ व्रज को प्रस्थान करते है। इधर कृष्ण-विछोह से कातर यशोदा पूर्व वृत्तात सुनकर विलाप करती हुई मूर्छित हो जाती है। यमुना तीर पर गोपियो सहित राधा कृष्ण के विरह मे व्याकुल हो विलाप तथा प्रलाप करती है। वृदा और ललिता उन्हे अनेक प्रकार से समझाती हैं पर वे कृष्ण के विना जीना नही चाहती। अत मे कृष्ण 'राधे-राधे' कहते हुए आते है। वह दौडकर उन्हे भेटती है।

नन्दोत्सव अथवा व्रौका यात्रा (सन् १९६८, पृ० ४), ले० गोपाल आता रचनाकाल १६ वी शती; प्र० हिन्दी विद्यापीठ आगरा; पात्र पु० ३, स्त्री गोपियाँ, *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल नन्द गृह, गोकुल।

नन्द के घर मे मधुर मूर्ति वालक उत्पन्न होने का समाचार सुनकर गोपियाँ एकत्रित होती है और महोत्सव की योजना वनाती है। इसी समय गर्ग पुरोहित भी वहाँ आते

है। यदुवशियो के गुरु गर्ग नन्द के कहने पर कृष्ण का जातकर्म कराते है तथा कृष्ण के अवतार धारण करने की बात वताते है। कृष्ण पर आने वाली बाधाओ से रक्षा का सकेत करते है। इसके उपरान्त गर्ग कृष्ण की स्तुति कर अपने घर जाते है। गोपियॉ हर्षोल्लास के साथ पुष्प वर्षा करती है। ऋपिगण वेदध्वनि करते है तथा देवता गण भी आकाश से पुष्पो की वर्षा करते है। दिशाओ मे शख, ढोल और ढपली की आवाज गूँजने लगती है।

नइकी दुनिया (सन् १९५०, पृ० ८०), ले० राहुल सस्कृत्यान (भोजपुरी का नाटक), *अक* ४, पात्र पु० ६, स्त्री ५।

इस नाटक मे कुरीतियो से जकडी पुरानी पीढी और स्वाधीनचेता नवयुवको की कहानी है। रजपूतिन जगरानी अपने वेटे रामधनी से दीन-दुनिया की बाते कर रही है। वह अपने पोते वटुक की शैतानियो की शिकायत करती हुई कहती है कि वह सुकरुल्ला के यहाँ जाकर अडा खाता है और एक दिन अडा लाकर कहता है कि इयवा (जगरानी) ये ठाकुर जी है इनकी पूजा कर। जगरानी सचमुच उसे ठाकुर जी समझकर नहा धोकर उसकी पूजा कर चरणामृत लेती है। वटुक उसी के सामने अडे को फोडकर खाता है तो जगरानी को अपनी भूल मालूम होती है। जगरानी प्रायश्चित करने के लिए सात दिन तक केवल जल पर उपवास रखती है। बटुक इयवा को जब यह वताता है कि यह घटना सारे गॉव को मालूम है तो बुढिया रोने लगती है कि हाय अब कौन राजपूत वटुक के साथ अपनी लडकी की शादी करेगा। लेकिन जब बटुक उसे वताता है कि गॉव के सारे लडके सुकरुल्ला के यहाँ हर इतवार को अडा खाते है तव कही बुढिया शान्त होती है।

वटुक वडा होकर कम्युनिस्ट हो जाता है। वह जापानियो से लडने के लिये अग्रेजो की सेना मे भरती होता है। बटुक कायस्थ की लडकी सोना से शादी करता है। जगरानी के विचार अव वदल गए है। अव अपने पोते और उसके साथियो के कामो की वडाई करती है। वटुक सोना, सुगिया, बनुलिया, महदेई आदि से मिलकर गॉव मे कम्यून स्थापित करता है। वे सब मिलकर खेती करते है। विचार विमर्श करके अपनी समस्या हल कर लेते है।

नई गीता (सन् १९२८), ले० प्रो० सरदार मोहर्नासह स्वरावली मे सकलित, प्र० . राम लाल सूरी, अनारकली लाहौर, पात्र पु० ९, स्त्री २, *अक* ७, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल का उल्लेख नही है।

इस धार्मिक नाटक मे कृष्ण का उपदेश सवादो के माध्यम से समझाया गया है।

प्रस्तुत नाटक मे प्रत्येक अक की कथा स्वतत्र रूप से लिखी गई है। प्रथम अक मे राधा का सवाद, द्वितीय अक मे पुजारी और दर्शक के सवाद द्वारा गीता उपदेश समझाया गया है। तृतीय अक मे चित्र और विश्वमित्र वार्तालाप करते-करते पुन कृष्ण के गीतामृत की चर्चा करते है। दोनो कर्तव्य पालन पर बल लेते है। चौथे अक मे साथी लीडर कृष्ण की बात सुनते है। और भक्ति उपदेश से (गीता के) प्रभावित होते है। कृष्ण का कहना है "मेरी भक्ति मे पौरुप है, भक्ति से दु ख की निवृति है और अपने आप मे प्रवृत्ति है। पॉचवे अक मे कृष्ण कवि और उसके मित्र को गीता का उपदेश देते है और दोनो कृष्ण से अत्यन्त प्रभावित होते है। छठे अक मे बुढिया भी विधवा कृष्ण का उपदेश सुनकर चमत्कृत रह जाती है। सातवे अक मे राधा और कृष्ण सवाद है। कृष्ण राधा से कहते है "हे राधे लोग मुझको नही समझे। मैं ही सुख हूँ, मै ही जीवन हूँ और मै ही पुण्य हूँ।"

नई राह (सन् १९६८, पृ०१०८), ले०. हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० सस्ता साहित्य मण्डल नई दिल्ली, *पात्र* पु० ४, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* ३, २, २।
घटना-स्थल करोडीमल की कोठी, घर का सायवान आदि।

इस राजनीतिक नाटक मे पंचवर्षीय योजनाओ की असफलता पर विचार किया गया है।

नाटककार कहता है—"हमारे देश को स्वतत्र हुए इतने वर्ष हो गए और देश को उन्नत और विकसित करने के लिए शासन द्वारा योजनाबद्ध तरीके से निरन्तर प्रयास हो रहा है फिर भी देश मे आशा के अनुरूप खुशहाली नही आई? इसका क्या कारण है?" इस समस्या पर स्वय लेखक ही विचार प्रस्तुत करते हुए कहता है "स्वतत्र हो जाने से कोई देश सुखी नही हो जाता । खुशहाल, सुखी और समर्थ होने के लिए राष्ट्र को आवश्यक श्रम करना पडता है और चूँकि हमारे देश की अधिकाँश आवादी गॉव मे है, इसलिए हमारा कर्त्तव्य गाव को आत्मनिर्भर और सुखी वनाना है।" इसी के साथ वेरोजगारी आदि पर भी प्रकाश डाला गया है। सेठ करोडी मल कहता है "कोट खोलने के लिए मै सौ रुपये महीने पर एम० ए० पास वावू रख सकता हूँ।...सौ रुपये महीने पर घर का काम करने वाला नौकर नही मिलेगा, लेकिन एम० ए० पास वावू मिल जायेगा।" नाटककार ने इन्ही विचारो को किशोर, सेठ करोडी मल, विनोद, लता, जानकी, रहीम, फातमा इत्यादि पात्रो के द्वारा नाट्यरूप प्रदान किया है।

नई रोशनी का विष (सन् १८८४), ले० : वालकृष्ण भट्ट, प्र० हिन्दी प्रदीप, *पात्र* · पु० ५, स्त्री ५, अक ५।
घटना-स्थल किसान का घर, सेठ की कोठी, वेश्या घर।

इस सामाजिक नाटक मे नई सभ्यता के अन्धानुसरण कर्ताओ की दुर्गति दिखाकर उनसे प्रायश्चित कराया गया है।

नाटक के पात्र फारसी और अग्रेजी शब्दो का खुल कर प्रयोग करते है। इस नाटक का मुख्य पात्र किसान का वेटा भानुदत्त वकालत पढने जाता है। वहाँ कुछ यारो के चक्कर मे पडकर वेश्यागामी वन जाता है। नये फैशन मे पागल होकर चलचित्र अभिनेत्री पर आसक्त होता है। प्रमदा का वास्तविक प्रेम अन्य के साथ है पर रुपया ऐठने के लिये भानुदत्त को अपने जाल मे फँसाएँ रखती है। दूसरी और कलकत्ते के वणिक पुत्र ताराचन्द से भी रुपया खीचती है। भानुदत्त सव कुछ खो कर गाँव को लौटता है। गॉव मे भानुदत्त के पिता विश्वामित्र और माता सीमन्तिनी पुत्र की दयनीय स्थिति देखकरी दुखी होते है। भानुदत्त अपने अपराधो और दुष्कर्मो के के लिये प्रायश्चित करता है। ताराचन्द भी पश्चात्ताप करते हुए कहता है—'आप लोगो ने सचमुच मेरी आँखे खोल दी। अव ऐसी गुस्ताखी न होगी।'

इसी प्रकार अन्य सभी नई रोशनी के पात्रो की दुर्गति होती है और सभी प्रायश्चित करते हुए चित्रित किए गए हैं।

नई रोशनी नया कदम (पृ० ८८), ले० . रामनिरजन शर्मा 'अलख', प्र० . साधना मन्दिर, पटना, *पात्र* पु० ६, स्त्री ३, अक २, *दृश्य* ११, ११।
घटना-स्थल · होटल, कारखाना, शहर।

इस सामाजिक नाटक मे स्वेच्छा विवाह को नया कदम दिखाया गया है।

एक मेकेनिकल इजीनियर प्रकाश नौकरी की तलाश मे—घूमता रहता है। अचानक उसकी सी० आई० डी० इन्सपेक्टर कैलाश से भेट हो जाती है जो अपने को नौकरी का खोजी वताता है। एक वार एक होटल मे वदमाश मि० इकवाल से इन दोनो की मुलाकात हो जाती है। मि० इकवालसिह से किसी वात के सिलसिले मे इन सवसे नाराजी हो जाती है। वही पर अचानक सेठ ज्ञानचन्द्र की पुत्री सरिता से इन दोनो की वातचीत होती है। सरिता के सहयोग से प्रकाश को ज्ञानचन्द्र के कारखाने मे मेकेनिकल इजीनियर तथा कैलाश को मोटर ड्राइवर का काम मिल जाता है। एक गरीव व्यक्ति शशिभूषण गाँव के अन्यायी तथा धनीमानी लोगो से आतकित होकर अपनी पुत्री अरुणा के साथ शहर चला जाता है। प्रकाश से मुलाकात हो जाने से उसे रहने की जगह मिल जाती है। एक वार इकवाल सेठ ज्ञानचन्द्र की लडकी सरिता को उठा ले जाता है। प्रकाश और कैलाश वडी वीरता से सरिता को मुक्त कराते हैं। तथा वदमाश

इकबाल का पता पुलिस सुपरिटेडेण्ट को देकर गिरफ्तार कराके कलाश अपनी चतुराई का परिचय सबको देता है। अन्त मे प्रकाश की शादी सरिता के साथ और अरुणा की शादी कैलाश के साथ होती है।

नकाब पोश उर्फ मौत का फरिश्ता (सचित्र जासूसी नाटक) (सन् १९३२, पृ० १२१), ले० स्वर्गीय दुर्गा प्रसाद गुप्त, प्र० एस० आर० बैरो एण्ड कम्पनी, २०१, हरीसन रोड, कलकत्ता, *पात्र* : पु० ६, स्त्री ३, अक ३, *दृश्य* ७, ६, ४।

इस जासूसी नाटक मे धोखा हत्या आदि दृश्यो के द्वारा अपराधी डाकू को दडित दिखाया गया है। क्रूरसिह जालिम खॉ के नाम से मशहूर एक खूँखार डाकू है। वह वीरसिह की पुत्री सुशीला का अपहरण करना चाहता है। वह निश्चित दिन आने के लिए पत्र देकर वीरसिह के मकान मे आ जाता है। वीरसिह के घर पर उसका दामाद प्रेमचन्द और सी० आई० डी० इन्सपेक्टर सोये है। डाकू एक ही झपाटे मे वीरसिह के सर को काट तलवार छोड भाग जाता है। प्रेमचन्द वहॉ आकर तलवार उठाकर देखता है। इतने मे इन्सपेक्टर आ जाता है और प्रेमचन्द को हथकडी लग जाती है।

महल मे सुशीला मालती के साथ शोकाकुल वेश मे प्रवेश करती है जालिम खॉ पुलिस इन्सपेक्टर के वेश मे और डाकू सिपाही के वेश मे प्रवेश कर धोखे से सुशीला को बँगले के बहाने लेकर चल देता है। महल मे ले जाकर वह उसे अपना बनाना चाहता है। सुशीला के अस्वीकार करने से वह ज्यो ही धक्का देता है कि खिडकी से एक तीर अन्दर आता है जिस पर मौत का फरिश्ता लिखा है। मालती के आग्रह से क्रूरसिह सिपाहियो पर हमला कर प्रेमचन्द को उठा ले आता है और उसके घर पहुँचा देता है। मालती के द्वारा प्रेमचन्द डाकू के यहॉ जाता है। क्रूरसिह सुशीला का हाथ पकडकर बध करना चाहता है कि पीछे से प्रेमचन्द पिस्तौल के कून्दे से डाकू को मारकर सुशीला को ले भागता है। डाकू पीछा करते है। नकाब पोश बम फेक कर क्रूरसिह को गिरफ्तार कर लेता है। वीर सिह इधर जिन्दा है जिसने नकली शरीर बनाया था। कोतवाली मे मजिस्ट्रेट के द्वारा क्रूरसिह को फॉसी और डाकुओ को कालेपानी की सजा हो जाती है और शेष व्यक्ति छूट जाते है।

नक्शे का रंग (सकेत रूपक नाटक), (वि० १९९८, पृ० ८४), *पात्र* ६, *अक-रहित*, *दृश्य* ६।

इस नाटक मे सभ्यता और सस्कृतियों के समन्वय से होने वाले परिवर्त्तनो का समाज पर प्रभाव दिखाया गया है। यह सकेत रूपक नाटक है। इसके प्रत्येक पात्र किसी न किसी भाव सकेत के परिचायक है। इसमे अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो के आधार पर बदलते सामाजिक स्तर का मूल्याकन किया गया है। प्राचीन भारतीय सस्कृति मे आधुनिकता का समन्वय होने से समाज मे उथल-पुथल होता है जन-जीवन शकालु होता है। पर आगे चलकर समाज उसे अगीकार कर लेता है। यही इस नाटक का मूल भाव है।

"नजर बदली बदल गये नजारे" (सन् १९६१, पृ० ९१), ले० राजा राधिका रमण प्रसाद सिह; प्र० अशोक प्रेस, पटना, *पात्र* . पु० १०, स्त्री २।

इस सामाजिक नाटक मे राजनीति और आर्थिक शक्ति के प्रभाव से अछूत समस्या का स्वत उन्मूलन दिखाया गया है।

दीवान रामसिह, रायबहादुर ठा० सरदारसिह की जायदाद और जमीदारी के प्रबन्धकर्त्ता है। रायबहादुर साहब के रहन-सहन का स्तर बहुत ऊँचा है और पारिवारिक वातावरण पूर्णतया सामन्तवादी है। उनके देवालय मे पुजारी आरती पूजा करता है तो विलासालय मे मोहिनी बाई वेश्या नृत्य और सगीत।

रायबहादुर की जमीदारी मे देवराम की पत्नी फुलिया और सोहन, मोहन दो पुत्र रहते है। अविवाहित मोहन

छात्र है और विवाहित सोहन जीविकोपार्जन मे लगा है। सारा परिवार एक नन्ही-सी झोपडी मे रहता है। झोपडी के समीप रायवहादुर की जमीन है जिस पर एक और झोपडी लगाने के लिये देवराम ठाकुर से प्रार्थना करता है। ठाकुर अनुमति दे देते है किन्तु दीवान निर्धन रामदेव से रिश्वत न मिलने पर रुष्ट होकर उसकी पीठ की खाल उधेडवा देते है।

पाँच-सात वर्ष वाद जमीदारी का उन्मूलन हो जाने पर ठाकुर साहव और दीवान अर्थ सकट मे फँस जाते है पर देवराम चमार का लडका मोहन पढ लिख कर उच्च पद पर आसीन हो जाता है और मिनिस्टरो के सम्पर्क मे आ जाता है। वह गाँव का मुखिया बनता है । उसके यहाँ मन्त्रीगण ठहरते है और उसका सर्वत्र आदर-सत्कार होता है। पुजारी जी सदा रामदेव को अछूत समझकर दूर रहा करते थे, पर अव अपने वेटे की नौकरी के लिए उसके पीछे-पीछे फिरते है और उसके पोतो को कन्धे पर विठा कर घूमते है।

ठाकुर साहव विधान सभा के लिये खडे होने के लिये कॉंग्रेस का टिकट चाहते है और उसके लिये रामदेव की खुशामद करते है। रामदेव के जन्म दिन पर उत्सव होता है। ठाकुर साहव उन्हे अभिनन्दन ग्रन्थ प्रदान करते है और एक रगीला युवक मस्त होकर गाता है—

"नजरे वदल गई, तो नजारे वदल गये।
जव सुवह हो गई, तो सितारे वदल गये।।

न धर्म न ईमान (सन् १९७०, पृ०८०), ले० : रेवतीसरन शर्मा, प्र० नेशनल पब्लिशिग हाउस, दिल्ली, *पात्र* पु० ३, स्त्री ३, *अक* . ३, *दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल कमरा, आँगन।

इस नाटक मे लेखक वैवाहिक मूल्यो को परिवर्तित रूप मे प्रस्तुत करने की चेष्टा करता है।

युवक दिनेश अपने पुरातनवादी परिवार के कारण दया से विवाह नही कर पाता और दया का विवाह रामदयाल नामक एक अधेड से हो जाता है। विवाहोपरात दया को क्षय-रोग हो जाता है। रामदयाल उसका इलाज नही करवाता। दादी झाड-फूँक के द्वारा उसे ठीक करवाना चाहती है। वह डॉक्टरी इलाज का विरोध करती है। परिणामस्वरूप दया को मृत्यु से जूझना पड़ता है। लेकिन दिनेश अपना रक्त देकर उसकी रक्षा करता है। दया के अन्तर्मन मे विद्रोह प्रस्फुटित होता है और वह समाज को चुनौती देती हुई दिनेश का हाथ थाम लेती है। अभिनय . दिल्ली की सस्था 'कला साधना मन्दिर' द्वारा सफलतापूर्वक प्रदर्शन।

नन्ही दुल्हन—नाट्याचार्य (वि० १९८७, पृ० १८३), ले० श्री पडित 'शैदा', प्र० . दि इडियन सोशल रिफार्म पब्लिशिग कम्पनी, ४६ वी, रमेश मित्र रोड, कलकत्ता; *पात्र* पु० १४, स्त्री १०; *अंक* . ३, *दृश्य* . १०,१०, ५।
घटना-स्थल . गोलोक, भवन, ड्राइंगरूम, अदालत, पानीया अन्तपुर।

इस सामाजिक नाटक मे हिन्दू वाल-विधवा की समस्या दिखाई गई है। समस्या के समाधान रूप मे 'विधवा विवाह' का चित्रण भी किया है। नाटक के अन्त मे सावित्री वाल-विधवा गार्गी का विवाह मदन से कराती है और सावित्री के स्वर मे जैसे नाटककार की आकाक्षा मूर्तिमान हो उठती है—"जव तुम जैसे भारत के वीर सपूतो ने विधवा उद्धार पर कमर वाँध ली तो फिर यह भी समझ लीजिए कि भारत वर्ष का वेडा पार है···वाल-विधवाओ के डूवते वेड़े को पार लगाया जायेगा।"—

नाटक का प्रारम्भ आनन्दी मिश्र तथा सरस्वती की वातचीत मे होता है, पुरोहित आनन्दी मिश्र धर्म और समाज का झूठा भय दिखाकर सरस्वती को आठवे वर्ष मे ही अपनी पुत्री सावित्री का विवाह नौ वर्ष के देव से करने पर विवश करता है। सावित्री के पिता व्रजमोहन वाल-विवाह का लाख विरोध करते है—उन्हे अपनी वेटी के भविष्य की चिन्ता है—पर जवरदस्ती सावित्री का विवाह कर दिया जाता है। व्रजमोहन के माध्यम मे धर्म के ढोगी पडितो

पर करारी चोट की गई है—"हिन्दु-कन्याओ के सुख सौभाग्य को बाल-विवाह की धार्मिक नीलामी पर चढाकर दूसरे से बोली दिलाने वाले दल्लालो ! ·· हमारे घरो मे घुस-कर भोली-भाली अनपढ औरतो को अपना मनमाना धर्मशास्त्र पीट-पीटकर सुनाओ और उनसे रुपये ऐंठकर वेश्याओ का घर भरो।" थोडे ही दिनो मे सावित्री विधवा हो जाती है और उस पर होने वाले अत्याचारो की—सख्या दिनोदिन बढती जाती है—बूढे हो या अधेड कोई भी अपना दाव लगाने से नही चूकता—इन वृद्धो की काली करतूतो पर करारी चोट की गई है। परिस्थितियो के सभी थपेडो को सहते हुए भी सावित्री आखिर तक अपने पातिव्रत धर्म का निर्वाह करती है। इसी तरह लज्जा नाम की एक बाल-विधवा की अवस्था का भी सजीव चित्रण किया गया है जो अपने बहनोई के चक्कर मे फँसकर अत मे अपने शिशु को गगा मे प्रवाहित करती हुई पुलिस द्वारा पकडी जाती है। वह आत्महत्या कर लेती है। सावित्री, माधोमिश्र तथा अन्य नेतागण मिलकर यह नि' बनाते है कि भारत मे सोलह वर्ष से कम उम्र की हिन्दू-कन्या का विवाह नही हो सकता तथा नवयुवको को बाल-विधवाओ से विवाह के लिए प्रेरित करते है।

नया अवतार (सन् १९२८), *ले०* प्रो० सरदार सिह, *प्र०* रामलाल सूरि, *पात्र* पु० ८, स्त्री ४, *अक* ५, *दृश्य-रहित*।

इस नाटक मे स्वतत्रता को नया अवतार माना गया है। कलयुग का पूरा प्रभाव देश पर दिखलाया गया है। रायबहादुर प्राणनाथ नेता के रूप मे नये अवतार द्वारा देश के कल्याण के लिए नये धर्म का उद्घोष करते है और नया अवतार देश के कल्याण के लिए नीति, धर्म, सत्य, न्याय, प्रेम की शिक्षा देता है और पक्षपात, घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, वैर, धोखे आदि से दूर रहने की शिक्षा देता है। पढी-लिखी स्त्रियो पर नये अवतार के उपदेश का प्रभाव पडता है और वे सब अपने घरो को शाति, सुन्दरता और आनन्द का केन्द्र बनाना चाहती है। ऊँच-नीच सभी नये अवतार के उपदेश से प्रभावित होते है और देश की समस्या को सुलझाने की प्रतिज्ञा करते है।

नया जन्म (पृ० ७५), *ले०* रामाश्रय दीक्षित, *प्र०* साहित्य निकेतन, कानपुर, *पात्र* पु० ९, *अक-रहित*, *दृश्य* ३।
घटना-स्थल कमरा।

इस राजनीतिक नाटक मे युक्तिनाथ नामक प्रपची व स्वार्थी राजनैतिक नेता विनोद, सुरेश, रमेश तथा चितरजन आदि युवक विद्यार्थियो को प्रान्त का विलय कर देने के विरुद्ध आन्दोलन करने के लिये भडकाता है। सभी विद्यार्थी युक्तिनाथ के राजनैतिक चक्कर मे आ जाते है और आन्दोलन शुरू कर देते है। मधुसूदन इसका विरोध करता है। आन्दोलन मे विनायक का छोटा भाई विनोद काफी आहत हो जाता है। छोटे भाई को आहत देखकर विनायक बडा क्रुद्ध होता है और वह युक्तिनाथ को मारने की प्रतिज्ञा करता है। प्रतिज्ञा की खबर चितरजन युक्तिनाथ के पास पहुँचाता है जिससे युक्तिनाथ डर जाता है और औरत की वेषभूषा बनाकर विनायक के घर आता है। विनायक के दादा न्यायप्रिय सुमति के सामने अपने किये गये कुकर्मो के लिये पश्चात्ताप प्रगट करता है। अन्त मे सुमति-स्वरूप विनायक को बहुत समझाते है जिससे विनायक युक्तिनाथ की हत्या नही करता है। युक्तिनाथ बाद मे प्रत्यक्ष रूप से प्रकट होकर विनायक से अपनी गल्तियो के लिये क्षमा प्रार्थना करता है। अन्त मे राष्ट्रीय गीत के साथ नाटक समाप्त होता है।

नया रूप (सन् १९६२, पृ० ८३), *ले०* पृथ्वीनाथ शर्मा, *प्र०* आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, *पात्र* पु० ६, स्त्री ७, *अक* ३, *दृश्य* ९।
घटना-स्थल साधारण कमरा, ड्राइगरूम, क्लब का कमरा।

प्रस्तुत नाटक मे धन के आधार पर विभाजित वर्ग व्यवस्था मे प्रचलित वैवाहिक

प्रणाली का दोष दिखाया गया है। समाज मे दो वर्ग है—धनी वर्ग, निर्धन वर्ग। रोशनलाल और मास्टर रामस्वरूप क्रमश इन्ही के प्रतिनिध है। रोशनलाल मास्टर की पुत्री रानी से विवाह करने से इन्कार कर देता है क्योकि वह कलर्क से आई० ए० एस० वन गया है। वह राधिका मे विवाह कर लेता है क्योकि वह आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न है। मास्टर रामस्वरूप की पुत्री रानी स्वय अपनी योग्यता से रोशनलाल से भी ऊँचे पद पर पहुँच जाती है। लेकिन वह नारी न रहकर अर्धनारीश्वर वनकर रह जाती है। उसका यह नया रूप समाज के वैषम्य को झकझोर देता है।

नया समाज ले० · उदयशकर भट्ट; पात्र पु० ८, स्त्री ३, अक २, दृश्य . ३, ३।
घटना-स्थल जमीदार का टूटा वँगला।

उदयशकर भट्ट का 'नया समाज' जमीदारी-प्रथा के उन्मूलन के उपरान्त जमीदारो की परिस्थिति दिखलाने के उद्देश्य से लिखा गया है। इस नाटक मे जमीदार मनोहर्रसिह के परिवार का चित्रण किया गया है। जमीदारी के उन्मूलन से उनकी आर्थिक स्थिति शोचनीय वन गई है, तो भी उनके परिवार के रहन-सहन मे कोई परिवर्तन नही हुआ। उनका पुत्र चन्द्रवदर्नासह ईसाई कन्या 'रीटा' से प्रेम करता है और पुत्री 'कामना' कल्पनालोक मे विचरण करती है तथा अपने नौकर रूपा (जो पुरुष-वेशधारी कन्या है) पर मुग्ध है। एकवार चन्द्रवदन रूपा के सौन्दर्य पर रीझ कर उमसे विवाह करने के लिए तत्पर होता है। उमी समय एक गडरिया रहस्योद्घाटन करता है कि रूपा तो मनोहर की जारज कन्या है जिसे मृतक समझकर गाड दिया गया था। रूपा के दुखी होने पर 'कामना' सान्त्वना देती है कि हम दोनो एक ही पिता की सन्तान है।

अब मनोहर्रसिह किंकर्त्तव्यविमूढ वन जाते है। इसी समय उनके मित्र धीरेन्द्रसिंह के पुत्र कह उठते है, "रूपा निर्दोष है। मैं उसे स्वीकार करता हूँ।"

इस नाटक मे जमीदारी के दिनो के जमीदारो के उच्छृ खल चरित्र का चित्र उपस्थित किया गया है। उनकी वर्तमान स्थिति का यदि यथार्थ चित्रण किया गया होता तो यह एक सफल नाटक सिद्ध होता। इसमे नाटककार किसी एक समस्या को प्रमुखता नही प्रदान कर सका है। यौन-समस्या, जारज-समस्या, प्रतिलोम विवाह-समस्या, आर्थिक समस्या आदि अनेक समस्याए आपस मे उलझती हुई दीख पडती है और कोई भी समस्या पूरी तरह उभरकर धरातल पर नही आ पाती।

नये रिफार्मर (सन् १९११), ले० राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह, प्र० काशी की मनोरजन मासिक पत्रिकाओ मे प्रकाशित।

यह एक व्यग्य प्रधान प्रहसन है। इसमे एक सेठ प्राचीन परम्परा का अन्धविश्वासी है और उनका पुत्र रमेश पाश्चात्य सभ्यता मे रँगा हुआ है। सेठ जी का अन्धविश्वास एक अन्धे कुए के समान है जो गलत दिशा मे कदम वढाने की प्रेरणा देता है। उनका पुत्र रमेश आधुनिक युग की आवश्यकताओ को देखकर समाज मे सुधार लाना चाहता है, किन्तु सुधार की जो योजना वनाता है वह समाज को पतन की ओर ले जाने वाली है। इसीलिये रमेश को 'नया रिफार्मर' के नाम से घोषित किया गया है। इसकी पाण्डुलिपि एक नगर से दूसरे नगर तक अभिनय के लिये घूमती रही इसी कारण इसका प्रकाशन बहुत देर मे हुआ।

नये हाथ (पृ० १८४), ले० · विनोद रस्तोगी, प्र० आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, पात्र पु० ६, स्त्री ४, अक · ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : कमरा।

इस नाटक मे ऐसे जमीदारो की कथा है जो जमीदारी उन्मूलन के वाद भी अपने खोखलेपन को छिपाने के लिए वाह्याडम्वर का आश्रय अत्यधिक लेते हैं। इनके साथ

ही साथ आज के युवा-वर्ग का वैवाहिक मर्यादाओ के प्रति विद्रोह भी प्रदर्शित किया गया है। ठाकुर अजयप्रताप पर राजा नरेन्द्रपाल का ऋण बढने पर उनकी पत्नी अपनी पुत्री माला का विवाह नरेन्द्र के पुत्र कुँवर महेन्द्र-पाल से करने का परामर्श देती है ताकि ऋण की समस्या ही न रहे। परन्तु महेन्द्र-पाल विवाह के पक्ष मे नही। कुवर महेन्द्र-पाल को जब इस आशय का पता लगता है तो वे माला के प्रेमी को विद्रोह करने का परामर्श देते है। अन्त मे स्थिति यहाँ तक आता है कि अजयप्रताप आत्म हत्या करने लगते है। बालो नामक दासी ठाकुर साहब की जारज पुत्री है।

नरमेध (सन् १९७१, पृ० २४), ले० . गिरिराज किशोर, *पात्र* पु० ५, स्त्री ३; *अक* ' ३, *नटरग-अक* . १५।
घटना-स्थल . कमरा।

इसमे आधुनिक कुण्ठाग्रस्त विवाहिता नारी की मनोवेदना का परिचय मिलता है। इन्द्रदेव की पत्नी पति के अधूरे प्रेम से अस-तुष्ट रहती है। और अपने पूर्व प्रेमी के साथ विचरण करने वाले सुखमय क्षणो को स्मृति मे सजोये रहती है। पति इस तथ्य से अव-गत होने पर उसके प्रति अपना हार्दिक प्रेम प्रर्दाशत करना चाहता है। यहा तक कि कभी अपनी बात पर आग्रह नही करता। इसे भी पत्नी तारा वेगानापन समझती है। तारा के पुत्र बन्दु और उसके प्रेमी की पुत्री वता मे आपस मे प्रेम है पर तारा उनके विवाह मे बाधा डालती है ताकि अत्यन्त समीपता के कारण नरेन और उसके पूर्व प्रेम का उद्घाटन न हो जाय।

नरसी भगत (नरसी का भात) (सन् १९६७, पृ० ७४), ले० : न्यादरसिह बेचैन, प्र० . देहाती पुस्तक भण्डार, चावडी, बाजार, दिल्ली, *पात्र* पु० ७, स्त्री ८, *अक* ३, *दृश्य* ६, ५, ९।

यह जीवनीपरक धार्मिक नाटक है। इसमे नरसी भक्त की कथा का उल्लेख है। जूनागढ के नरसी महता बड़े धनी, कजूस माया मे अधिक लिप्त थे। भगवान इस भक्त के उद्धार का निर्णय करते है और इनको ज्ञान देने के लिए साधु बनकर गगातट पर वही पहुँचते है जहाँ नरसी महता श्मशान घाट पर नहाने जाते थे। साधू ने याचना की। नरसी ने टालना चाहा। अन्त मे विवश होकर नरसी ने एक टका देने का वचन दिया और शर्त रखी कि साधु उससे पूर्व उनके दरवाजे पर पहुँच जाय। साधु शर्त स्वीकार करता है। नरसी अपने रथ-वान को तेजी से रथ भगाने का आदेश देते है किन्तु तो भी उससे पूर्व ही साधु उसके दरवाजे पर खडा मिला। नरसी फिर भी टका न देने के लिए नौकर से कहलाते है कि सेठ वीमार है। साधु कहता है कि वह अच्छे होने पर ही टका लेगा। अव नरसी अपने आपको मरा घोषित करता है और अरथी पर लेट कर श्मशान ले जाया जाता है। साधु टका लेने पर डटा है। अव भगवान नरसी वनकर सब कार्य करते है और चक्र तथा माया को आदेश देते है कि वे नरसी को रास्ते पर लाये। उधर नरसी को बाँध कर चक्र सुदर्शन झाडी मे डाल देता है। माया उसे भगवान कृष्ण के पास भेजने की प्रेरणा करती है और भगवान वहाँ जाकर उसे उस सकट से बचाते है। अब वह बेखटके घर पहुँचता है तो दरवान उसे रोक देता है। अन्त मे भगवान नरसी बनकर नरसी को दर्शन देते है। तव उसे ज्ञान होता है और समस्त सम्पत्ति लुटा कर वह साधु हो जाता है। वहाँ पर उसकी लडकी का भात भरने का निमत्रण आता है और उसे भी भगवान भरते है।

नर हत्या (सन् १९२५, पृ० १२२), ले० हुब्बलाल, प्र० : प्रेमधन नागरी, नाट्य समिति; *पात्र* · पु० ११, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* ७, ७, १२।

प्रस्तुत नाटक मे नाटककार विवाह मे दहेज की कुप्रथा को दूर करने की आवश्य-कता बताता है। इस नाटक मे गोपाल के पिता पुत्र का विवाह अधिक दहेज लेकर करते है। लडकी के पिता इतने गरीब है कि

वे उसे आसानी से दे नही सकते। अत वह अपनी सारी जायदाद वेचकर लडकी की शादी करते है। इस पर गोपाल को हार्दिक दुख पहुँचता है और वह मर जाता है। उसकी स्त्री भी उसके चरणो पर सिर रखकर मर जाती है। मरते समय कहती है—"हे प्राणनाथ! क्या तुम मेरे लिए स्वर्ग मे दूसरा वर खोजने जा रहे हो? क्या कहा ईश्वर न्यायी है क्या वहाँ जाने मे अकेले कप्ट नही होगा? प्राणेश्वर अकेले वहाँ कष्ट होगा इस दासी को भी साथ लेते चलिए नाथ! जव आप अकेले चलते-चलते थक जावेगे तो यह हतभागिनी आपके चरणो की सेवा करेगी आपका श्रम दूर करेगी वोलिए क्या आज्ञा है!"

नर्स (सन् १९५९, पृ० ६२), ले० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, पात्र पु०४, स्त्री ४, अक. ३, दृश्य-रहित।

घटना-स्थल : घर, नर्स का क्वार्टर।

इस सामाजिक नाटक मे अपनी पत्नी को छोड प्रेयसी के चक्कर मे पडने वाले की दुर्दशा दिखाई गई है। कमल अपनी सुघड पत्नी को छोड अन्य लडकियो से प्रेम करता है। इसी अनाचार के कारण कमल की पत्नी ऊपारानी आत्महत्या कर लेती है। तव कमल अपनी प्रेमिका नर्स सध्याकुमारी के पास जाता है जहाँ उसे यह फटकार मिलती है—'तुम ऊपा से घृणा करते थे और सध्या तुम जैसे कामी पुरुपो से घृणा करती है। तुम्हारे लिये वस यही उचित है कि तुम इस घर की सुनसान वीरान दीवारो से अन्धकार मे टक्करे मारो और ऊपा के लिए तडप-तडप कर मर जाओ।' इस तरह कमल न इधर का ही रह सका और न उधर का ही।

नल दमयन्ती नाटक (सन् १९००, पृ० ११६), ले० ब्रह्मदत्त शास्त्री, प्र० गयाप्रसाद ऐण्ड सन्स, वुक सेलर्स, शफाखाना रोड, आगरा, पात्र पु० २१, स्त्री ६; अक ३, दृश्य १०, १०, १०।

यह नाटक नल-दमयन्ती की अपूर्व प्रणय गाथा को अपने मे समाहित किए हुए है। विवाह के उपरान्त नल जुए मे सव कुछ हार कर दमयन्ती के साथ वनवास का दण्ड पाता है। जगल मे दोनो विछुड जाते है। परन्तु अन्त मे फिर दैवयोग से दोनो का मिलन हो जाता है और दोनो एक दूसरे को समर्पित हो जाते है।

नल दमयन्ती ले० . चन्द्रभान 'चन्द्र,' प्र० देहाती पुस्तक भंडार, चावडी वाजार, दिल्ली, पात्र पु०१२, स्त्री ६, अक ३।

इस पौराणिक नाटक मे राजा नल की जीवन-गाथा विवाह पूर्व से लेकर पुन. राज्य प्राप्ति तक वर्णित है। राजा नल स्वप्न मे दमयन्ती को देखकर उसके दर्शन के लिये व्याकुल हो उठता है। सरोवर मे तैरते हुए राजहस को पकडकर दमयन्ती के पास सन्देश भेजता है। हस दमयन्ती को नल का सन्देश सुनाता है। वह भी नल से मिलने के लिये व्याकुल होती है। उसने नल को जयमाला पहनाने की प्रतिज्ञा की। भीमसेन ने अपनी पुत्री के विवाह के लिये स्वयवर की घोषणा की। नल स्वयवर मे उपस्थित होने के लिए जा रहे है। इन्द्र आदि देवता अपना दूत दमयन्ती के पास भेजते है। स्वयवर मे देवता नल का ही वेश वना उसके पास वैठते है। दमयन्ती देवताओ के छल से परेशान व दुखी होकर उनमे विनती करती है। देवता प्रसन्न होकर नल-दमयन्ती को वर देकर चले जाते है। दमयन्ती नल के गले मे जयमाला डालती है। कलि भी दमयन्ती से विवाह करने का इच्छुक था। जव नल-दमयन्ती के विवाह का इन्द्र से समाचार मिला वे क्रुद्ध होकर नल को नष्ट करने का उपाय सोचने लगे। कलि पुष्कर को प्रेरित कर नल को जुआ मे हराकर राज्य से निकाल देता है। दमयन्ती वच्चो को अपने पीहर भेजती है और जगल मे भूख-प्यास से तडपती हुई नल के साथ भटकने लगती है। नल एक दिन सोती हुई दमयन्ती को छोड-कर भाग जाता है। दमयन्ती जगने पर पति-वियोग मे विलाप करती है। अजगर,

शिकारी के अत्याचारो को सहती हुई एक दिन दमयन्ती पगली बनी हुई नगरी मे पहुँचती है जहाँ राजमाता दासी का काम देकर उसकी रक्षा करती है। दमयन्ती सुनन्दा की दासी बन कर रहने लगती है। एक दिन एक ब्राह्मण दमयन्ती को पहचान लेता है और दमयन्ती को पीहर पहुँचा देता है।

राजा नल कोरटक के वरदान से रूप बदल कर राजा ऋतुपर्ण के सारथी बनकर अपने दुख के दिन बिताते है। दमयन्ती नल को खोजने के लिये सब देशो मे दूत भेजती है। अवध से लौटे दूत ऋतुपर्ण के सारथी वाहक की विलक्षणता का समाचार दमयन्ती को देते है। दमयन्ती को विश्वास हो जाता है कि नल ही सारथी का रूप बनाकर दुख के दिन व्यतीत कर रहे है। दमयन्ती के पुन· स्वयम्वर मे ऋतुपर्ण के साथ सारथी रूप मे नल आते है। दमयन्ती और नल का मिलन होता है। नल निषध देश पहुँचकर पुष्कर को जुए मे हराते है और राज्य पुन. प्राप्त करते है।

नल-दमयन्ती (सन् १९००, पृ० ९६), ले० · भक्त हरगोविन्द गाधी, उर्फ गोविन्द; प्र० . अग्रवाल बुक डिपो, देहली, पात्र पु० १६, स्त्री ९, अक-रहित।

इस नाटक मे प्रसिद्ध नलदमयन्ती की ेम कथा का वर्णन है। राजा नल को धोखे े उनका भाई पुष्कर निकाल देता है। वे जंगलो मे मारे-मारे फिरते है। दमयन्ती भी बिछुड जाती है। अन्त मे राजा नल इन्द्र आदि देवताओ की सहायता से अपना राज्य वापस पाते है तथा अपने भाई पुष्कर को अपराध स्वीकार करने के कारण क्षमा करके अपनी उदारता का भी परिचय देते है।

नल दमयन्ती नाटक (सन् १९०५, पृ० ५२), ले० : महावीरसिंह वर्मा; प्र० इडियन प्रेस, प्रयाग, पात्र : पु० ७, स्त्री २, अक ५, दृश्य : ३, ३, ३, ३, ३। *घटना-स्थल* : राजभवन, घोरवन, अयोध्या की राजसभा।

इस पौराणिक नाटक मे दाम्पत्य जीवन के सत्य प्रेम की विजय दिखाई गई है। नल दमयन्ती का विवाह वैदिक विधि से होता है। इन्हे एक पुत्र और एक कन्या उत्पन्न होती है। द्वापर और कलि की छलना से नल अपने अनुज पुष्कर के हाथ द्यूत-क्रीडा मे हार जाते है। दम्पति वन मे जाते है। भूख से सन्तप्त राजा एक पक्षी पकडने को वस्त्र फेकते है। पक्षी उसे लेकर उड जाता है। राजा दमयन्ती को निद्रावस्था मे छोड कर चले जाते है। दमयन्ती किसी प्रकार पितृगृह पहुँचती है। कालान्तर मे उसका पुन स्वयवर होता है। छद्मवेशी महाराज नल स्वयंवर मे पहुँचते है। राजा भीम अपने जामाता नल को पहचान लेता है और उन्हे राज देकर सन्यास ले लेता है। राजा नल पुन निषध देश मे आते है और पुष्कर से अक्ष-क्रीडा मे राज्य जीत लेते है।

नाटक का उद्देश्य है इस कथा को श्रवण और कीर्तन करके धर्म मे बुद्धि स्थिर करना। नाट्यकार की दृष्टि अभिनय की ओर नही रही है।

नल दमयन्ती या दमयन्ती स्वयंवर नाटक (सन् १८९७, पृ० ३०) ले० . बालकृष्ण भट्ट, प्र० ., पत्रिका (हिन्दी प्रदीप) *अक : १०*।

इस पौराणिक नाटक मे नल दमयन्ती की कष्ट सहिष्णुता और सत्यप्रियता का परिचय मिलता है। विदर्भ देश के राजा भीम की पुत्री दमयन्ती अपने सौन्दर्य के लिये सारे देश मे प्रसिद्ध है। उसका चित्र पाकर नल उसके सौन्दर्य पर आसक्त होता है। दमयन्ती भी नल के अद्भुत गुणो की चर्चा सुनकर उस पर मोहित होती है। नल स्वर्ण हस के द्वारा अपने विवाह का प्रस्ताव दमयन्ती के पास भेजता है। दमयन्ती नल से विवाह करने का सकल्प करती है। पिता आयोजित स्वयवर मे दमयन्ती नल को पति रूप मे वरण करती है। इससे रुष्ट होकर कलिदेव नवदम्पति को दण्ड देने के उद्देश्य से

द्यूतक्रीडा की युक्ति निकालता है। राजा नल जुए मे सब कुछ हार कर जगल को प्रस्थान करता है।

दमयन्ती को वन मे अत्यन्त कष्ट मे देखकर नल उसे सोती हुई छोड़ घने वन मे छिप जाते हे। एक ऋषि की सहायता से दमयन्ती चेदि नगर के राजा के यहाँ दासी रूप मे जीवन निर्वाह करती है। कुछ समय मे अपने पिता भीम के यहाँ पहुचा दी जाती है। दमयन्ती के पिता पुत्री के सुझाव पर दूसरे स्वयंवर की आयोजना करते है। यह युक्ति सफल हो जाती है और अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण के सारथी रूप मे नल भी स्वयवर मे सम्मिलित होते है और दोनो का मिलन हो जाता है।

नल दमयन्ती (सन् १६४४, पृ० १०३), ले० : डॉ० लक्ष्मण स्वरूप एम० ए०, प्र० : प्रकाश चन्द गुप्त, स्वतन्त्र भारत प्रकाशन, ४२३, कूचा बुलाकी वेगम, एस्प्लेनेट रोड, दिल्ली, *पात्र* · पु० ३६, स्त्री ७, *अक* : ३, *दृश्य* . ४, ५,५।

यह पौराणिक नाटक पश्चिमी विद्वानो मे नलोपाख्यान की लोकप्रियता के कारण लिखा गया। आख्यान मे परिवर्तन का कारण देते हुए नाट्यकार लिखता है "मेरे विचार मे नाटक की दृष्टि से ये परिवर्तन आवश्यक है। कथा के आधारभूत अशो को छोडा नही गया। उनको वैसा ही रहने दिया गया है। परिवर्तनो का उद्देश्य आधार-भूत अशो को अधिक उज्जवल और अधिक स्पष्ट करना है।"

प्रथम अक के प्रथम दृश्य मे महाराज भीम के दरवार का विस्तृत विवेचन तथा रगमच सज्जा के स्पष्ट सकेत देकर दरवार मे महाराज का प्रवेश और विन्ध्याघाटी मे वीरतापूर्वक लडकर काम आने वाले वीरो को उपाधियाँ तथा धन देने की घोषणा की जाती है। राजा सेनापति वज्रसिंह की विधवा पत्नी विजयादेवी की पुत्री अनन्ता की शादी का भार अपने ऊपर लेता है और उसकी तैयारी शुरू करता है। इसी समय राजा को सूचना मिलती है कि हस्तिशाला का हाथी विगड गया है। उसने महावत को मार दिया है और वह नगर की ओर उप-द्रव करता वढ रहा है। राजा मन्त्री सुनीति से हाथी पकडकर प्रजा की रक्षा का आदेश देता है। इतने मे रानी चन्द्रकान्ता अपनी राजकुमारी के प्राण रक्षा की चिन्ता प्रगट करती है। वह अपनी सखी से मिलने नगर को गई थी। राजा दमयन्ती की शूरता के प्रति आश्वस्त है। किन्तु सूचना मिलती है कि लौटते समय मार्ग मे कहार और रक्षक अपने अस्त्र-शस्त्र छोडकर भाग गये है और दमयन्ती अकेली पड गई है। संयोग से हाथी एक परदेशी का पीछा करता है और दमयन्ती के कुशल वाण-चालन से परदेशी की रक्षा ही नही होती, वल्कि राजकुमारी भी निरापद हो जाती है और अपने महल को वापस पहुँचती है।

दूसरे दृश्य मे वसन्त श्री का वर्णन है जिसमे दमयन्ती के यौवन-विकास का सुन्दर वर्णन तथा सखियो के साथ वाटिका भ्रमण है। वाटिका मे दमयन्ती की सखी द्वारा एक परदेशी, जो वाग मे अनधिकृत प्रविष्ट हो राजकुमारी के प्रति मस्त हाथी से रक्षा किये जाने के प्रति कृतज्ञता प्रगट करना चाहता था, वन्दी रूप मे लाया जाता है और राजा नल के शौर्य, सौन्दर्य, पराक्रम, विद्वता आदि का वर्णन कर दमयन्ती को प्रभावित करता है। दमयन्ती उसे दूत वनाती है और उसके स्वयवर मे प्रवेश की व्यवस्था करती है। तृतीय दृश्य मे वाग मे चलने वाले और माली के हास्य विनोद पूर्ण सवाद के साथ चण्ड और दामोदर का प्रवेश होता है। चण्ड महाराज नल की वीरता और अपनी पराजय से क्षुब्ध प्रति-शोध की अग्नि मे प्रज्ज्वलित हो रहा है और नल को पराजित करने की योजना प्रगट करता है। चतुर्थ दृश्य मे नल के दरवार, उसके सभासद और भेट देने वाले विभिन्न देशो के राजाओ द्वारा राजा नल के शौर्य, ऐश्वर्य एवं प्रताप का वर्णन है। इसी दृश्य मे हस दमयन्ती का चित्र प्रस्तुत करता है और राजा नल कुण्डिलन के राजा भीम द्वारा आयोजित दमयन्ती के स्वयवर मे जाने का निर्णय करता है

तथा दामोदर पर विद्रोह का अभियोग लगाकर उसे बन्दी बनाया जाता है। इस प्रकार प्रथम अक मे पक्ष और प्रतिपक्ष के समस्त नायक अपने चरित्रगत विशेपता के साथ प्रगट हो जाते है।

दूसरे अक मे प्रथम दृश्य नायक नल के विरुद्ध प्रति नायक चण्ड तपस्या करके देवताओ का सहयोग प्राप्त करता है और इन्द्र के प्रति वचनबद्ध होकर नल उसके दूत का कार्य करने के लिये तत्पर हो जाता है। दूसरे दृश्य मे नल इन्द्र की मुद्रिका के प्रभाव से अदृश्य रहकर दमयन्ती के भवन मे प्रवेश करता है और उसके अनिद्य सौन्दर्य से प्रभावित होता है। नल प्रगट होकर दमयन्ती से देवराज इन्द्र का सन्देश देता है किन्तु क्षत्रिय कुमारी नल मे दृढ आस्था प्रगट करती है। भेद खुलने के भय से हस (दूत) के पहुँचने पर वह पुन अन्तर्धान हो जाता है। किन्तु दमयन्ती को हस द्वारा पता चल जाता है कि यह दूत नल ही था। उधर तीसरे दृश्य मे चण्ड और नल द्वारा अपमानित पुष्पपुरी के राजा नायक को परास्त करने की रणनीति तैयार करते है। चौथे दृश्य मे स्वयवर होता है जिसमे देवता नल का रूप धारण कर भ्रम पैदा करते है किन्तु सती दमयन्ती की प्रार्थना पर देवता अपने रूप धारण कर लेते है और दमयन्ती नल को पहचान कर जयमाला पहना देती है। इसके उपरान्त की घटना प्रसिद्ध कथा के आधार पर है।

लाहौर कालेज फार वी मेन की तरफ से ११ नवम्बर सन् १६३६ ई० को लाहौर की प्रसिद्ध रगशाला प्लाजा थियेटर मे अभिनीत हुआ।

नल दमयन्ती नाटक (पृ० ६६), ले० स्वर्गीय दुर्गा प्रसाद जी, प्र० उपन्यास वहार आफिस, काशी, बनारस, *पात्र* पु० ११, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* ६, ६, ६।

इस पौराणिक नाटक की रचना दाम्पत्य प्रेम की पवित्रता प्रदर्शित करने के लिये हुई। कथावस्तु पूर्ववत है।

नव प्रभात (सन् १६६४), ले० विष्णु प्रभाकर, प्र० सस्ता साहित्य मडल, नई दिल्ली, *पात्र* पु० ५, स्त्री ३, अक ३। *घटना-स्थल* राज भवन, जगल, स्वयवर।

प्रस्तुत ऐतिहासिक नाटक मे सम्राट अशोक के हृदय परिवर्तन की कथा को आधार बनाया गया है। बौद्ध धर्म की महिमा दिखाना ही लेखक का उद्देश्य है।

सम्राट अशोक कलिग विजय के पश्चात् चिंतित हो जाता है। कलिग के युवराज कुमार को बन्दी बना लिया जाता है। किन्तु वह अपने स्वाभिमान के कारण अशोक के सामने नही झुकता। इससे क्रुद्ध हो अशोक उसे प्राण-दण्ड की आज्ञा देता है। कुमार अशोक का तिरस्कार करता है। अशोक के हृदय मे कुमार की बातो से द्वन्द्व उठता है। इसी बीच कुमार की बहिन भिक्षुणी के रूप मे अशोक की भर्त्सना करती है। कुमार और उसकी बहिन की बातो से अशोक को युद्ध से घृणा हो जाती है—वह अहिसा की बाते सोचने लगता है। अशोक प्राण दण्ड की आज्ञा वापिस ले लेता है। इस शुभ समाचार को अशोक की बहिन सघमित्रा कलिग के युवराज कुमार को सुनाने जाती है, क्योकि वह उससे प्रेम करती है। परन्तु कुमार अपनी कटार से आत्महत्या कर लेता है। अन्त मे सभी बौद्ध धर्म ग्रहण कर लेते है।

नवयुग (सन् १६३४, पृ० १११), ले० प्रेमशरण सहाय सिनहा, प्र० केसरीदास सेठ, सुपरिटेडेट, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, *पात्र* पु० ७, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* ६, ७, ५।
घटना-स्थल आश्रम, राजप्रासाद।

यह आधुनिक सदर्भ मे लिखा हुआ एक सामाजिक नाटक है। इसमे सेवा, प्रेम एव समाज मे होने वाले व्यभिचारो पर प्रकाश डाला गया है। डॉ० सी० पी० हाटक और तारा की प्रेम कहानी है। डॉ० हाटक और तारा आश्रम बनाकर ससार की सेवा मे लग जाते है।

साधु राजकुमार नष्टपुर और

राजकुमारी भीपणपुर की प्रेम कहानी भी मिलती है। नाटक मे अँग्रेजी शब्दो का भी प्रयोग है।

नवविहान (सन् १९६५ पृ० ११६), ले० ओकारनाथ दिनकर, प्र० वोरा एण्ड कम्पनी, लि० काल्वादेवी, वम्वई ३; *पात्र* पु० ९, स्त्री ४, *अक* · ३, *दृश्य* . १, १, १।

घटना-स्थल मूर्तिकार मृगाक की शिल्प-निर्माण शाला, डॉ० अणु का चिकित्सालय तथा कला-भवन।

इस राजनीतिक नाटक मे भारतीय संस्कृति, उद्योग, व्यापार एव विज्ञान की प्रगति दिखाई गई है। मृगाक मूर्तिकार अपनी शिल्पशाला मे मूर्तियाँ वनाने मे सलग्न है। वह देश की स्थिति से अधीर हो ही उठता है कि शरणार्थी मधुसूदन दत्त अपनी व्यथा लिये मृगाक के पास आते है। वे प्रकट करते है कि वे अपहृत पुत्री आरती को गत १७ वर्ष से खोज रहे है किन्तु वह अभी तक उन्हे मिली नही है। वे उसकी मूर्त्ति वनवाकर अपने कलाभवन मे स्थापित करना चाहते है। मूर्तिकार स्वीकार कर लेता है। उसके वाद एक व्यापारी आता है और उसी मूर्ति का सौदा करता है जिसे मृगाक अस्वीकार कर देता है किन्तु व्यापारी कुटिलता से धन राशि उसकी अनुपस्थिति मे छोड जाता है। तव एक आदर्श व्यापारी उसके पास आता है और वह प्रकट करता है कि मूर्तिकार ने जो मॉडल वनाये है विदेशो मे उनकी माँग है। वह उन्हे निर्यात करेगा और विदेशी मुद्रा उपलब्ध होगी।

द्वितीय अक मे डाक्टर अणुजित के कक्ष मे अर्चना और वन्दना कला तथा विज्ञान की महत्ता पर तर्क-वितर्क करती हैं। डॉ० अणु विज्ञान का महत्त्व प्रदर्शित कर अणु शक्ति के शान्तिमय प्रयोगो पर प्रकाश डालते है। विज्ञान के वढते चरण, विज्ञान के अनुसधानो का परिचय सामाजिको को देते है। विज्ञान कल्याणकारी है, विध्वसंक नही। वह व्यापार, उद्योग, चिकित्सा सभी क्षेत्रो मे विज्ञान देखता है। मशीनो, वाँधो, खेतो-खलिहानो मे सर्वत्र विज्ञान की उपादेयता सिद्ध करता है।

तृतीय अक मे विशाल कला-भवन मे विज्ञान, कृपि, उद्योग, व्यापार, कला और सस्कृति की प्रगति दिखाई गई है। मानो कला-भवन तीर्थ-स्थल एक सगम वन गया है। कृपि विज्ञान और उद्योगो का कला-सस्कृति के माध्यम से उत्तर से दक्षिण, पूर्व और पश्चिम मे ऐक्य भावना का प्रतिविम्व सर्वत्र झलकता है। नाटक का उद्देश्य देश मे कला-सस्कृति, उद्योग, व्यापार, वैज्ञानिक दृष्टि तथा स्वस्थ समाज का दिग्दर्शन है।

नवीन भारत (सन् १९२२, पृ० १३३), ले० . किशन चन्द 'जेवा', प्र० · लाजपतराय पृथ्वीराज साहनी, लाहौर, *पात्र* : पु० १४, स्त्री ५, *अक* : ३, *दृश्य* : ८, ६, ४।

घटना-स्थल . भागीरथी का तट, मन्दिर, महल, ऋपि-आश्रम, कवीर का मकान, मार्ग, सार्वजनिक सभा भवन।

इस राजनीतिक नाटक मे कवीर के जीवन द्वारा देश मे ऐक्य स्थापन की पद्धति पर विचार किया गया है। नाट्यकार भूमिका मे लिखता है—"आजकल भारत मे हर तरफ इत्तिहाद की ध्वनि गूज रही है। जिस कदर भारत को इस वक्त एकता की जरूरत है उतनी जरूरत स्वराज्य की भी नही। हमने वर्तमान राजनैतिक अवस्था पर जितने नाटक लिखे है उनमे इस वात की वाकई कमी थी और उनमे एकता के मुतालिक कोई प्लाट न था। इस कमी को पूरा करने के लिए दैवयोग से महात्मा कवीर का जीवन चरित्र स्मरण हुआ और उसी का नाटक लिखना आरम्भ किया।"

महात्मा कवीर हिन्दू और मुसलमानों को समीप लाने का जीवन भर प्रयत्न करते है। वह सवको प्रेममन्त्र मे वाँधते है। सिकन्दर लोदी गौरक्षक शासक है। ईद के दिन गौ हत्या वन्द कराने के लिये महात्मा कवीर कृतसंकल्प है। कवीर की धर्म पुत्री कमाली हिन्दू लडकियो के साथ गौरक्षा की पताका फहरा रही है। कवीर प्रतिज्ञा करते है कि यदि कसाई गौहत्या नही वन्द

करते तो वह अपना सर उनकी तलवार के सामने रख देगे। गुल्फी खॉ नामक नेक मुसलमान कवीर का साथ देता है। कुर्वानी पर तुले मुसलमान कुरवानी के लिये गाय का जलूस निकालते है। कवीर, दादू कमाली के साथ सामने जाकर मुसलमानो को समझाते है। किन्तु जल्लाद कमाली की छाती मे तमाचा मारता है। कमाली की दोनो छातियो से दूध की चार धारे होकर निकलती है। भगवान लक्ष्मीनारायण दर्शन देते है। शेषनाग के दोनो ओर मस्जिद और मन्दिर का दृश्य दिखाई देता है।

सुशीला नामक एक हिन्दू विधवा की रक्षा कवीर मुसलमानो से करते है और उसके पुत्र के लिये अपने पुत्र कमाल का बलिदान करते है। लोई कहती है—तेरे वच्चे को जिलाया आप खेला जान पर। क्या हुआ जो मर गया बच्चा मेरा ईमान पर।

नवीन वेदान्त नाटक (सन् १९४७, पृ० १८), ले० · जगन्नाथ भारती, प्र० . काशी समब्रह्म यन्त्रालय, मेरठ, *पात्र* . पु० ३, स्त्री २; *अक* . *दृश्य-रहित*।

इस नाटक मे आर्यधर्म के विविध सम्प्रदायो का परस्पर खडन-मडन है। इस पुस्तक मे कथा की अपेक्षा घटनाओ का क्रम इस प्रकार है—'एक वेदान्ती का प्रवेश होता है जो ससार को स्वप्नवत वताकर सम्पूर्ण जगत मे ब्रह्म की लीला का कथन करता है। तत्पश्चात एक वैष्णव चक्रान्ती उसका खडन करता है। पुन. वेदान्ती उसके तर्को का खडन करता है। दोनो एक दूसरे का खडन और अपना-अपना प्रतिपादन करते है। इसी बीच 'एक आर्य का प्रवेश' होता है जो वेदान्ती को चुटकी काटता है। वेदान्ती 'मरा-मरा' कहकर चिल्लाने लगता है और 'आर्य' उसकी चिल्लाहट को दृष्टात बनाकर ब्रह्मवाद का खडन करता है। उसका कथन है—'अरे तू ब्रह्म कैसा? कही ब्रह्म भी मरा-मरा कहता है।' वह अपने तर्को से वेदान्ती और चक्रान्ती के सिद्धान्तो को भ्रमपूर्ण वताकर शास्त्रवाद को प्रमाण मानता है। वेदान्ती उसका विरोध करता है। 'इतने मे एक सर्प निकलता है और वेदान्ती डर कर भागता है।' आर्य पुन. उसके आचरण का दृष्टात देकर ब्रह्मवाद को गलत ठहराता है। अन्त मे वैष्णव भी आर्य के मतो का पोषण करते हुये वेदाती के ज्ञानवाद को अनुचित कहता है। इस पर आर्य का कथन है—'हम किसी के दोष नही देखते। हम तो यही कहते है किसी मार्ग मे क्यो न हो जिसका अन्त करण से सच्चा भाव है उसी की मोक्ष है वाहर का स्वाग दिखाने से नही।'

नहुष नाटक (वि० २०११, पृ० १०१), ले० महाकवि गिरधर दास; प्र० · नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, *पात्र* : पु० ३१, स्त्री ३, *अक* . ६।

घटना-स्थल राजभवन, आश्रम आदि।

नहुष नाटक (वि० १८९८), ले० · बाबू गोपाल चन्द्र (उपनाम गिरिधरदास) प्र० कविवचन सुधा मे काशी ना० प्र० सभा, *पात्र* . पु० १२, स्त्री ३।

कृष्ण-स्तुति नान्दी के उपरान्त सूत्रधार विनयपूर्वक सभासदो से अपने प्रस्तुत नाटक को देखने की प्रार्थना करता है। नाटककार 'गिरिधरदास' का महाराज रूप मे परिचय भी देता है इतने मे ही नेपथ्य से 'अरे शैलूपाधम ।·· कहै तेहि वैठि है मानव क्षुद्र अरे नट पापी गवार लवार।' की आवाज आती है। इन्द्र के आगमन की सूचना से सूत्रधार 'अव इत रहनो उचित नहि' कह कर चला जाता है। साथ ही प्रस्तावना का अन्त तथा प्रथम अक का आरम्भ होता है। 'गौर शरीर अवीर से लोचन' की पूर्व निर्दिष्ट वेष भूषा मे इन्द्र प्रवेश करता है। क्रोध मुद्रा मे रगमच पर इधर-उधर घूमता है। उसे नेपथ्य से यह सुनाई पडता है—'काटि के ब्राह्मन मस्तक से यह अपने को धरमात्मा मानै' और साथ ही ब्रह्महत्या विकराल शरीर धारण कर सामने आती दिखाई पडती है। इन्द्र इसके पूर्व ही भाग जाता है। 'भाग्यौ जाय है' कहती हुई जयन्त और कार्तिकेय का प्रवेश होता है। जयन्त

कार्तिकेय से वृत्तासुर वध के विषय मे वार्तालाप होता है। कार्तिकेय को इस पर आश्चर्य होता है और वह कहता है 'क्या तुम युद्ध मे नही थे जो इस प्रकार पूछ रहे हो ?' जयन्त ने बतलाया जबसे पिता ने शत्रुभय से घर छोडा है तब से 'गिरिधारन के ध्यान मे समय विताया करती है हम उसी की परिचर्या मे लीन थे, युद्ध मे साथ न रहे।' कार्तिकेय ने जयन्त से पूरा वृत्तान्त सुनाया। उसने बतलाया कि देवताओ की विनय पर दधीचि की हड्डी से बने वज्र द्वारा ही वृत्रासुर का वध हो सकेगा। ऐसी आकाशवाणी होने पर देवताओ ने दधीचि से उनकी हड्डी लेकर वज्र बनवाया (विश्वकर्मा से) और इन्द्र प्रमुख सब युद्ध मे उतरे। वृत्तासुर भी अपनी प्रचण्ड सैन्यशक्ति से इन्द्र के प्रतिपक्ष मे उतरा। घोर युद्ध मे 'शक्र चाप टकारि कै हने अनेकन पत्र, तिनहि सहत दौरत भयौ महाकाल समवृत्र।' यहाँ तक कि देवताओ मे हाहाकार मच गया। लेकिन मातलि के रथ ले आने पर उस पर सवार हो इन्द्र वज्र प्रहार से उसकी एक भुजा काट डालता है। परिघ प्रहार से वज्र उसके शरीर मे से पृथ्वी पर गिरता है। इन्द्र लज्जावश उसे उठाना नही चाहते। परन्तु वृत्रासुर स्वय उन्हे समझाता हे कि 'जहाँ सभा तहाँ इक जीतत इक परत ध्रुव' ताते तुम भय लाज तजि वज्र उठावहु हाथ समर करहु मम साथ'। शत्रु की इस धर्मप्रवणता से मुग्ध होकर इन्द्र स्वय उसकी प्रशसा करता है और वज्र उठाकर उसकी दूसरी भुजा भी काट देता है। भुजा और अस्त्र के विना वृत्र मुँह फैलाकर रथ सहित इन्द्र को निगल जाता है। पर कृष्ण कवच प्रभाव से उसके कच्छ भाग से उसे काट देते है और सकुशल बाहर आ जाते है। पुन 'कई वरस मे काटि के महिमास्थो अरिमाथ'। अन्त मे उसकी ज्योति निकलकर आकाश मे लीन हो जाती है। आगे शत्रु, को मारकर वे कहाँ गये—यह उसे नही मालूम है। मातलि का प्रवेश इसी क्षण होता है। वह बतलाता है कि हत्या के लगने से वह कहाँ गए वह भी नही जानता।

नहुष-निपात (सन् १९६१), ले० उदयशकर भट्ट, प्र० आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, पात्र · पु० १, स्त्री १, अक-रहित।
घटना-स्थल स्वर्ग।

'नहुप-निपात' नहुप के स्वर्ग पतन की पौराणिक कथा पर आधारित गीतिनाट्य है। उदयशकर भट्ट ने नहुप के स्वर्गारोहण तथा उसकी अन्ध कामवृत्ति के कारण स्वर्गावतरण की घटना को आधुनिक परिप्रेक्ष्य मे प्रस्तुत किया है। भट्ट जी के अनुसार "आज के जीवन मे नहुप की चेतना उसका कार्य-कलाप उसका प्रच्छन्न लक्ष्य जैसे मनुष्य का अवान्तर रूप वन गया है, जिसे वह अपने अन्तरतम की अवचेतना मे सहज आवद्ध पाता है।" मनोविज्ञान की पृष्ठभूमि पर आधुनिक मानव की कामवृत्ति का अबाध-प्रवाह मानो नहुष मे आकर पुँजीभूत हो गया है। अपने तप-बल से नहुप इन्द्र का पद प्राप्त करने मे सफल हो जाता है किन्तु स्वर्ग मे इन्द्राणी के रूप पर मोहित नहुष धर्म की मर्यादा भी भूल जाता है। इन्द्राणी के अनुरोध पर वह सप्तऋषियो के कधो पर उससे मिलने जाता है। यह मिलन-आकाक्षा इतनी प्रवल हो जाती है कि नहुप ऋषियो पर पदाघात करने मे भी सकोच नही करता। परिणामस्वरूप सर्पयोनि मे उसका पतन होता है। यदि लेखक के प्रारम्भिक वक्तव्य देखे विना गीतिनाट्य पढा जाय तो लेखक का उद्देश्य गौण पड जाता है। काव्योत्कर्ष की दृष्टि से नहुष-निपात अधिक सफल नही कहा जा सकता। स्वर्गादि के वर्णन भी भट्ट जी के अन्य गीति-नाट्यो की भाँति काव्य माधुर्य से पूर्ण नही हो पाए है। सक्षेप मे नहुप-निपात गीतिनाट्य की आत्मा के स्पर्श मे असफल रहा है।

नाग पुत्र शालिवाहन (सन् १९००, पृ० ९२), ले० हरी कृष्णजित जौहर साहित्यालकार, प्र० उपन्यास बहार आफिस, वनारस, पात्र पु० ९, स्त्री १।
घटना-स्थल . राजभवन, जगल, युद्धक्षेत्र।

इस ऐतिहासिक नाटक मे लोकप्रिय

राजा शालिवाहन की विजय दिखाई गई है। इसमे दक्षिण भारत का सम्राट सुशर्मा जब राज्य छोड संन्यास धारण कर लेता है तब उसका मन्त्री शूद्रक राज्य लेना चाहता है किन्तु प्रजा उसे नही चाहती। अन्त मे नागपुत्र शालिवाहन अपनी वीरता से शूद्रक को हरा दक्षिण भारत का लोकप्रिय राजा बनता है।

नागरी विलाप (सन् १८८५, पृ० ३२), ले० रामगरीब चतुर्वेदी, प्र० केदार नाथ जी, बनारस लाईट यन्त्रालय, बनारस; *अक-रहित दृश्य* ५।
घटना-स्थल खडहर, बाबू हरिश्चन्द्र का द्वार, प्रिसपल का बगला।

इस राजनीतिक नाटक मे अग्रेजी उर्दू के अत्याचार से नागरी का विलाप दिखाया गया है। गौरवर्णा देवनागरी उज्ज्वल वस्त्र पहने उजडे स्थानो को देखकर विलाप करती है कि "सारा देश ही सत्यानाश हो गया। हे विधिना मेरी परोसिन मियाँ मुगल खाँ की बहू बीबी उर्दू जान का घर तो भली भाँति उत्तम बना है, पर मेरी क्या दशा।" नागरी आत्मघात करने को प्रस्तुत होती है उसी समय एक लडखडाती सी आवाज सुनाई पडती है 'तुहार एक पुत्र हरिश्चन्द्र काशी मे बाटे वहाँ झाऊ छब हाल कहिहेगा।'

नागरी हरिश्चन्द्र के द्वार पर पहुँचती है। हरिश्चन्द्र जी के भ्राता राधाकृष्ण दास उसका रोदन सुनकर उसका दुख पूछते है। दोनो मे वार्त्तालाप होता है। नागरी प्रार्थना करती है कि सूबे के गवर्नर सर अलफर्ड लायल महोदय से प्रार्थना कीजिए। वह हमारा दुख दूर कर सकते है। वहाँ से नागरी क्वीस कालेज के प्रिसपल के बँगला पर जाती है और उनसे अपनी व्यथा सुनाती है। प्रिसपल प्रभावित होकर टाउनहाल मे एक सभा करते है जिसमे सुमतचन्द प्रिसपल साहब के प्रस्ताव का समर्थन करते है। नागरी अपनी अर्जी पढकर सुनाती है। सभाजन समर्थन करते है और गवर्नर के पास अर्जी भेजी जाती है। सम्पूर्ण सभाजनो के हस्ताक्षर को नत्थी कर दिया जाता है।

नाच रही जलधार (सन् १९६३), ले० मनोहर प्रभाकर, प्र० कल्याणमल एण्ड सस, जयपुर,

'नाच रही जलधार' सगीत-रूपक मे पावस ऋतु की भिन्न भावात्मक तथा सवेदनात्मक झाँकियाँ प्रस्तुत की गई है। सावन के आते ही उल्लसित वातावरण मे पीहू-पीहू की प्रणयपुकार चहुँ ओर गुजायमान हो उठती है, जो सयोगियो के लिए तृप्ति-पर्व के रूप मे उपस्थित होती है। वियोगियो के लिये यही सावन कष्टकर होता है। इन सबसे प्रथम लेखक ने सावन को कल्याणकारी रूप मे प्रस्तुत किया है। रूपक के अन्त मे सावन की स्तुति की गई है।

नाटक तोता-मैना (सन् १९६२), ले० : लक्ष्मीनारायण लाल; प्र० : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, *पात्र* . पु० ६, स्त्री २, *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल मुक्ताकाशी लोकमच।

प्रस्तुत नाटक स्त्री और पुरुष के उत्तम और अधम गुणो को कलात्मक ढग से प्रस्तुत करता है। यह तोता-मैना की प्रसिद्ध लोककथा पर आधारित है।

तोता-मैना पुरुष-स्त्री के प्रतीक है और दोनो ही अपने को श्रेष्ठ घोषित करते हुए तर्क देते है और इसको प्रमाणित करने के लिए क़िस्सो का आधार ग्रहण करते है। लेखक इन किस्सो को रगमचीय आधार देता है। तोता-मैना की नोक-झोक चलती रहती है और दोनो ही अपने को श्रेष्ठ मानते है। अन्त मे हस आकर उनका समझौता कराते हुए विवाह करा देता है।

नाटक सम्भव (सन् १९०४, पृ० ६६), ले० किशोरीलाल गोस्वामी, प्र० काशी लहरी मे प्रथम बार मुद्रित, *पात्र* पु० ११, स्त्री ५, *अक-रहित, दृश्य* ६।

बीच मे अकावतार पृ० ७३ से ८७ तक है। प्रारम्भ मे प्रस्तावना फिर विष्कम्भक है और तब पहला दृश्य प्रारम्भ होता है।

इसमे नाटक की समीक्षा रूपक के माध्यम से व्यक्त की गयी है। नाटक के स्थायी महत्त्व को जन साधारण तक पहुँचाने का अच्छा माध्यम लेखक ने चुना है। नाटक मे भरत नाटक के महत्त्व को बताते हुए कहते है कि 'यदि सासारिक जन नाटक विधा पर पूर्ण श्रद्धा करके इसमे कुशल होगे तो उन्हे सभी इच्छित पदार्थ अनायास प्राप्त होगे। क्योकि नाटक की महिमा ही ऐसी है।' सब देवता नाट्यदेवी की प्रार्थना करते है—

जय जय वीनापानि,
सरोज बिहारिनि माता।
नाटक रूपिनि, देवि,
करौ नित सुखद प्रभाता।
सब की रुचि या माहिहोय।
सोई वर दी जै।
कृपा कटाछनि हेरि,
बेगि दुख परि हरि लीजै।।

नाना फड़नवीस (सन् १९४६, पृ० ११४), ले० परिपूर्णानन्द वर्मा, प्र० सिटी बुक हाउस, कानपुर; *पात्र* पु० १८, स्त्री ३, *अक* : ३, *दृश्य* ५, ६, ५।

इस ऐतिहासिक नाटक मे प्रसिद्ध मराठा राजनीतिज्ञ नाना फडनवीस की वीरता और नीतिमत्ता का वर्णन है। इस नाटक मे उस काल की घटनाओ का उल्लेख है जब बगाल मे वारेन हेस्टिग्स का शासन था। उस समय ईस्ट इण्डिया कम्पनी का विस्तार हो रहा था। मुगल साम्राज्य का दीपक बुझ रहा था और उसका स्थान मराठे आदि ले रहे थे। नाटक मे नाना फडनवीस के तत्कालीन कार्यो का वर्णन है।

नोट—पुस्तक के दो भाग है। प्रथम भाग मे नाना का जीवन-चरित्र है तथा दूसरे भाग मे नाटक है। जीवन-चरित्र ९० पृ० का है। कुल पृष्ठ है—११४।

नायकक नाम जीवन (सन् १९७१, पृ० २+११२), ले० : नचिकेता, प्र० : अखिल भारतीय मिथिला सघ, ९/१, खेलात घोष लेन, कलकत्ता, *पात्र* पु० १६, स्त्री २, *अक* ५, *दृश्य* १९।

घटना-स्थल नाट्यकार का आवास, शून्य स्थान, ड्राइगरूम, कालू सरदार का अखाडा, शक्ति का प्रकोष्ठ, पार्क, ड्राइगरूम, विनय का घर एव नवल का घर इत्यादि।

इस सामाजिक नाटक मे चोरबाजारी, गुडागर्दी और नशाखोरी की समस्याये उठाई गई है। इसकी कथा-वस्तु त्रिकोणात्मक है। व्यवसायियो के बीच चोरबाजारी, गुण्डो द्वारा लडकियो और बच्चो के अपहरण, नशाखोरी का दुष्परिणाम सम्बन्धी तीन कथाये साथ चलती है। लोभी, स्वार्थी, उच्चाभिलाषी व्यवसायी शक्ति अपने प्रपच जाल मे अर्थ-सर्वस्व, महत्त्वाकाक्षी व्यवसायी लखपति को फँसाकर स्वयं उच्च कोटि का व्यवसायी बनना चाहता है। अर्थ पिशाच गुण्डा कालू सरदार अपने बल-प्रयोग द्वारा सब पर विजय प्राप्त करने की कोशिश करता है किन्तु परिस्थिति इस तरह परिवर्तित हो जाती है जिसके फलस्वरूप उसके गुट मे वैमनस्य और फूट हो जाती है और मन्नूराम दल से अलग हो जाता है। व्यवसायी भी इन गुण्डो को अपने व्यवसाय मे अत्यधिक प्रश्रय देते है। चोरबाजारी मे पिता और पुत्र के बीच सघर्ष होता है। जहाँ पिता लोभ-ग्रस्त होकर चोरबाजारी करने मे दत्तचित्त है वही पुत्र समाज-सुधार की बाते करता है। सदर्भ मे व्यवसायियो की अनैतिक दुष्चरित्रता का पर्दाफाश भी किया है। विनय शराब के लिये अपनी पुत्री सुनीता को शक्ति के इशारे पर नाचने का आग्रह करता है।

यह नाटक अखिल भारतीय मिथिला सघ कलकत्ता द्वारा आयोजित विद्यापति पर्व के अवसर आन्ध्र एसोसियेशन हॉल मे प्रथम बार अभिनीत हुआ था। इसकी सफलता का अनुमान इसके बगला भाषा मे अनूदित कर मचस्थ होने से भी लगाया जा सकता है।

नारद की वीणा (वि० २००३, पृ० १३६), ले० . लक्ष्मीनारायण मिश्र; प्र० . किताव महल, प्रयाग, पात्र : पु० १२, स्त्री २, अक ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल आश्रम, राजमहल, युद्धक्षेत्र।

मिश्रजी ने प्रागैतिहासिक काल की एक घटना के आधार पर 'नारद की वीणा' नामक नाटक की रचना की है। 'देवी भागवत' मे नर और प्रह्लाद के युद्ध का जो वर्णन है, उसके माध्यम से धर्म और आपद्धर्म की विवेचना इस नाटक मे की गई है। इसका कथानक हिरण्यकशिपु के वध के उपरान्त प्रारम्भ होता है। अपने पिता की मृत्यु का कारण प्रह्लाद क्यो और कैसे हुआ इसका वौद्धिक उत्तर देने का प्रयास इस नाटक मे मिलता है। आर्यो के भारत-आगमन से यहा के मूल निवासियो के सम्मुख जो विकट समस्या खडी हुई, उसके सुझाव मे शैवो और वैष्णवो मे मतभेद हुआ। शैवागम मूढाग्रह के कारण विकट परिस्थिति मे भी धर्म मे परिवर्तन नही चाहता, किन्तु वैष्णव धर्म उदार और समन्वयवादी होने से आततायी से भी समझौता करता है। हिरण्यकशिपु शैव और प्रह्लाद वैष्णव था। जातीय हित के लिए एक शैव का वध अनिवार्य वन गया। अत सिह की खाल के आवरण मे छिपकर मानव हिरण्यकशिपु का वध करता है। इस षड्यन्त्र मे प्रह्लाद का हाथ है, यह नाट्यकार की नवीन स्थापना है।

आर्य जाति इस देश मे आने पर भी कच्चा मास खाती व यायावर के रूप मे स्थान-स्थान पर घूमती रहती थी। आर्य किशोर-किशोरियो के साथ स्वच्छन्द विहार करते। इसके प्रतिकूल यहाँ के मूल निवासी आश्रमो मे रहते, अध्यात्म-विद्या की खोज करने के लिए सयममय जीवन विताते और परिणय मे कन्यादान को महत्त्व देते।

कालान्तर मे आर्य अपनी सन्तान को इन आश्रमो मे शिक्षा के लिए भेजना प्रारभ करते है। गुरुवर्ग अनार्य है, किन्तु अपने सहज औदार्य से आर्य-सन्तान की उचित शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था करता है। सस्कृत, सोमश्रवा, सुमित्र आर्यकुमार है, चन्द्रभागा आर्य-कन्या आश्रम मे ही सुमित्र और चन्द्रभागा मे प्रेम होता है। अनार्य महर्षि नर, आचार्य नारायण और वैष्णव भक्त नारद और प्रह्लाद के सहयोग से सुमित्र और चन्द्रभागा का विवाह अनार्य-पद्धति पर होता है। इस परिणय मे अनार्य-विधि कन्यादान का सर्वप्रथम प्रयोग होता है। आर्य कच्चा मास खाना छोड देते है। आर्यो की यज्ञ-व्यवस्था अनार्य आश्रम मे स्वीकृत होती है।

ऋषियो के हाथ मे अस्त्र-शस्त्र देख प्रह्लाद हिसा का विरोध करते है। नर और प्रह्लाद मे युद्ध होता है। नर प्रह्लाद को हरा देता है। किन्तु नारायण अनासक्त भाव से यह सब देखता है। नारायण जैसे आचार्य की बुद्धि एव आश्रम का इतना प्रभाव पडता है कि आर्य भी अपने शव को गाडना छोडकर उन्हे भस्म करने लगते है। वे भारत की उपनिषदो की मूलभूत ब्रह्म भावना को स्वीकार कर लेते है।

नर और प्रह्लाद के युद्ध मे प्रह्लाद एक ऐसे नवीन आग्नेयास्त्र का प्रयोग करते है कि सभी वीर चकित रह जाते है। किन्तु उनकी मुखमुद्रा युद्धकाल मे क्रोधावेश के कारण नितान्त परिवर्तित हो जाती है। उनके नेत्रो से आग निकलने लगती है। इस कारण उनकी पराजय होती है और महर्षि नर की विजय। नारायण नितान्त शान्त मुद्रा मे अपना कार्य करता हुआ कहता है "सघर्ष और तप मे ही यह प्रकृति पूर्ण है और प्रकृति के पूर्ण होने मे ही हम भी पूर्ण है। द्रोह और वैर मे नही। दो नदियो के मिलने मे पहले-पहले सघर्ष होता है और फिर एक धार हो जाती है।" प्रह्लाद की हार का कारण वताते हुए नारायण कहता है, "प्रह्लाद वीर है, विख्यात धनुर्धर है, किन्तु तव भी इनकी उत्तेजना पराजित करेगी। जो भीतर मे शान्त नही है, वह विजय के समीप नही जा पाता।"

वैदिक काल के नर-नारायण महाभारत काल मे अर्जुन और कृष्ण वनते है।

नारदमोह नाटिका (सन् १९६६, पृ० ७४), ले० : शुकदेव नारायण, प्र० .

मैथिल प्रिंटिंग वर्क्स, मधुबनी, पात्र पु० १८, स्त्री ५, अंक-रहित, दृश्य . ११।

नारद पर्यटन करते हुए हिमालय की एक रम्य गुहा मे विष्णु के ध्यान मे मग्न हो जाते है। उन्हे समाधि मे स्थिर देख दो गधर्व यह अनुमान लगाते है कि अमरावती का ऐश्वर्य तथा इन्द्र पद प्राप्ति हेतु ये तपस्या कर रहे है। वे इन्द्र के पास जाकर यह सूचना देते है। इन्द्र डर जाता है और उनका तप भग करने के लिये कामदेव के साथ रभा को भेजता है। दोनो के अनेक प्रयत्नो के बावजूद मुनि का ध्यान भग नही होता। अत वे हारकर मुनि की स्तुति करते है। ध्यान से जगने पर सारा वृत्तात बताते हुए वे मुनि के शरण मे जाते है। मुनि उन्हे क्षमा कर देते है। पश्चात् नारद स्पष्ट बताते है—"मुझे राज्य से क्या प्रयोजन, यह रमणीय स्थान देखा नारायण का स्मरण हुआ अतएव ध्यान करने को बैठ गया। जाओ इन्द्र से कह देना कि नारद को राज्य पद की अभिलाषा नही है। वह अपने मन मे किसी बात की चिंता न करे।"

समाचार पाकर इन्द्र लज्जित होकर अपने किए पर पछताता है। इधर कामदेव से अविजित रह जाने से नारद के मन मे अभिमान जगता है। वे महादेव जी के पास जाकर सारा वृत्तात कह सुनाते है। महादेव उन्हे इस शिक्षा के साथ विदा करते है—'ये बाते विष्णु को कदापि कर्ण सुखदायी न होगी। अत जिस प्रकार से काम चरित्र मुझसे कह सुनाया है, विष्णु से कभी न सुनावेगे।' किन्तु नारद घूमते-घामते विष्णु के पास पहुँच जाते है और सारी बाते पूर्ववत् कह डालते है। उनके चले जाने पर विष्णु नारद के मन मे जमे गर्व के अकुर को उखाडने और अपने भक्त की रक्षा करने के लिए विश्वकर्मा को नारद के मार्ग मे एक अपूर्व माया प्रेरित नगर के निर्माण का आदेश देते है जहाँ अपूर्व सुन्दरी राज्य कन्या का स्वयवर समारोह रचा जा रहा हो। विश्वकर्मा आदेश का पालन करते है। मार्ग मे जाते हुए नारद उस वैभवशाली नगर के राजा के महल मे पहुँचते है। राजा शीलनिधि उनका आदर-सत्कार कर, अपनी कन्या के स्वयवर समारोह की सूचना देते है और कन्या के शुभाशुभ भविष्य फल बताने की प्रार्थना करते है। नारद कन्या को देखते ही उसके रूप सौन्दर्य पर आसक्त हो जाते है और हाथ की रेखाओ का यह फल जानकर उसके साथ विवाह करने की उत्कठा उनके मन मे प्रबल होती है कि इससे विवाह करने वाला अविजित और सर्वसेव्य होगा। चचलचित्त नारद कन्या को सुलक्षणा बताकर शीघ्र ही उसको प्राप्त करने का उपाय ढूँढने के लिए वहाँ से चल देते है। नारद उसके विरह से व्यथित वन मे विलाप करते है और विश्वमोहिनी नामक उस कन्या को आकृष्ट करने के लिये विष्णु से उनका रूप-सौन्दर्य मागने के उद्देश्य से स्तुति करते है। स्मरण करते ही विष्णु प्रकट होते है। नारद अपनी बात कह सुनाते है। भक्त की भलाई के लिये भगवान बदर का रूप देकर नारद को इस ढग से विदा करते है कि वह निश्चिन्त रहे और भाप न सके। इधर विष्णु स्वय राजा का वेष बनाकर स्वयवर मे जा पहुँचते है।

समय से स्वयवर आयोजित होता है। अनेक देश के राजे-महाराजे उपस्थित होते है। विश्वमोहिनी के पहुँचते-पहुँचते नारद भी एक स्थान प्राप्त कर लेते है। जयमाला लिये विश्वमोहिनी क्रमश नयपाल, मैथिल नरेश, अवधेश, हस्तिनापुराधीश आदि के वृत्तात और गुण कार्य सुनती हुई आगे बढती है। नारद की ओर एक बार देखकर पुन उधर नही देखती। अन्त मे वह राजा के वेष मे स्थित विष्णु के गले मे जयमाल डाल देती है। स्वयवर से निकलने पर नारद निराश और दु खी होते है। ब्राह्मणवेषधारी शिव के दो गण उनका उपहास करते है। वे उनके रूप की प्रशसा कर उन्हे जल या शीशे मे अपना मुँह देखने की राय देते है। जल मे अपनी बदर की आकृति देख नारद अत्यन्त क्रुद्ध हो पहले उन गणो को राक्षस होने का शाप देते है, फिर आगे लक्ष्मी और विश्वमोहिनी सहित विष्णु को देख उन्हे खरी खोटी सुनाते हुए यह शाप देते हैं कि 'जिस देह से ठगे हो वही देह धारण करो, तुमने

मेरी वदर की आकृति की है इसलिए तुम्हारी सहायता बंदर ही करेंगे और जिस प्रकार मैं स्त्री-वियोग मे दु खी हुआ हूँ उसी प्रकार तुम भी नारी-वियोग मे दु खी होगे ।' विष्णु शाप को अगीकार कर अपनी माया खीच लेते है जिससे वे अपनी कथनी और करनी पर पछताते हुए लज्जित होते है । विष्णु उन्हे शिव का जप करने का आदेश और आशीर्वाद देकर अन्तर्धान हो जाते है । नारद उन गणो को विष्णु के हाथो मर कर मुक्त होने का वरदान देते है।

नारी (पृ० ६१), ले० . वैकुण्ठनाथ दुग्गल; प्र० · राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, *पात्र* पु० ६, स्त्री ३, *अक* . ३, *दृश्य* २, १, २ ।
घटना-स्थल ड्राइगरूम, पार्क, शिव मन्दिर, जेल एव बैठक ।

इस सामाजिक नाटक मे नारी के पावन प्रेम से पति की रक्षा दिखाई गई है । वीणा एक सुगृहिणी है । वह पति को ही भगवान मानती है । वीणा का पति जीवन आधुनिक विचारो का युवक है । वह क्लबो मे जाना पसद करता है लेकिन वीणा को यह सब अरुचिकर है जिससे जीवन वीणा पर कभी-कभी व्यंग्य कसता है। जीवन रजनी नाम की एक आवारा लडकी की रक्षा एक वद-माश से करता है लेकिन रजनी जीवन को ही दोषी ठहराती है । जिससे जीवन पुलिस के चक्कर मे फँस जाता है । लेकिन किसी तरह वच निकलकर घर पहुँचता है । घर पर रामचन्द्र नाम के वदनाम वकील से वीणा को विचार-विमर्श करते देख उसके चरित्र पर सन्देह हो जाता है और घर छोडकर भाग जाता है । जीवन आत्मघात करना चाहता है, इस प्रयास मे वह वन्दी वना लिया जाता है । वीणा भी जीवन से निराश होकर गगा जी मे कूदना चाहती है लेकिन उसका मन उसे रोक देता है । एक मदिर मे उसकी भेट प्रकाश नाम के दार्शनिक युवक से होती है जिससे वीणा वहुत प्रभावित होती है । सयोग-वश वीणा को खोजते हुए रामचन्द्र वकील भी वही पहुँच जाता है जिसकी वीणा हत्या करा देती है । प्रकाश वीणा का यह अपराध खुद स्वीकार कर लेता है और वीणा को जीवन की रक्षा के लिए भेज देता है । वीणा के प्रयास से जीवन छूट जाता है । प्रकाश भी पागल करार करके छोड दिया जाता है ।

नारी की साधना (सन् १९५४, पृ० ६०), ले० अभयकुमार यौधेय, प्र० शशाक प्रकाशन, मेरठ छावनी; *पात्र :* पु० ४, स्त्री ४, अक २, *दृश्य* · ३, २ ।
घटना-स्थल कमरे का भीतरी भाग, सभी दृश्य एक कमरे मे प्रदर्शित ।

इस सामाजिक नाटक मे क्रूर पति के कारण आजीवन कष्ट सहन करके पातिव्रत की साधना करने वाली नारी की करुण कहानी है । भारतीय सस्कृति मे परिपालित करुणा अपने पति राजन को जब स्वामिन् कहकर सबोधित करती है तो वह क्रुद्ध होकर डारलिंग आदि अँग्रेजी शब्दो के प्रयोग के लिये उसे बाध्य करता है । एक दिन राजन करुणा की भारतीयता पर क्रुद्ध होकर उसे बेतो से पीट रहा था कि उसका (करुणा का) वडा भाई भैया बहिन की रक्षा करता है और अपने वहनोई को उसकी क्रूरता का दड देना चाहता है पर बहिन अनुनय-विनय करके भैया को अपने घर भेज देती है और उससे हस्तक्षेप न करने का आग्रह करती है। राजन करुणा पर अकारण क्रुद्ध होकर अन्यत्र चला जाता है और उसकी सुधि भी नही लेता । करुणा स्वय जीविकोपार्जन को विवश होती है । मकान का किराया न देने पर मकान मालिक उसे अपनी पत्नी वनाना चाहता है और धन का लोभ दिखाता है । राजन का मित्र कौल उस पर वलात्कार करना चाहता है पर वह पतिव्रता नारी वीरता से सबका सामना करती है । पति की रुग्णावस्था का समाचार देने वाले दो युवको के साथ दासी गौरी को रुपया देकर भेजती है । दोनो युवक मोटर मे गौरी से रुपया छीन कर उस पर वलात्कार करना चाहते है । जव वह चिल्लाती है तो उसकी रक्षा को सयोग से करुणा का भाई भैया पहुँच

जाता है। युवक भैया को बन्दूक से आहत करते है। उसी दशा मे बेहोश गौरी को उठाकर भैया करुणा के पास पहुँचा देता है। करुणा की सखी सुषमा पॉच सहस्र रुपया अपनी सखी को देती है जिसको छीनने के लिये गुडे प्रयत्न करते है। इधर राजन रुग्णावस्था मे ही अस्पताल से भी बाहर कर दिया जाता है। वह पटरी पर कराहता रहता है। पति की दुर्दशा सुनकर करुणा उसके पास पहुँचकर उसकी सेवा-शुश्रूषा करती है। भैया की लाश देखकर राजन पश्चात्ताप करता है और करुणा से क्षमा याचना करता है। करुणा उसके चरणो पर गिरकर रोती है। अन्त मे दोनो अपने घर चले आते है। नाटक रगमच को दृष्टि मे रखकर लिखा गया है।

नारी जागरण नाटक (पृ० १२७), ले० गोपाल शास्त्री 'दर्शन केशरी'; प्र० व्यवस्थापक 'शास्त्री मडल' गार्डन कालोनी वाराणसी, *पात्र* पु० २५, स्त्री ३, *अक* ७, *दृश्य* ३, २, १, ५, २, ३, २।

इस पौराणिक नाटक मे नारी जाति के प्रति उत्पन्न हीनभावना को सतियो के आदर्श द्वारा पुन दूर करने का प्रयास किया गया है। इसमे गार्गी तथा आत्रेयी आदि भारतीय नारियो का सच्चरित्र वर्णित है। साथ ही द्रोपदी जैसी आर्य पत्नी के सतित्व का और सीता की अग्नि परीक्षा के साथ उनकी पतिपरायणता का अच्छा परिचय मिलता है। पराधीन लोगो मे स्त्रियो के प्रति उन्नत भावनाएँ विलीन हो जाती है। मानव की यह उदासीनता आजादी के बाद जब देश स्वतन्त्र हो जाता है तो पुन आर्य महिला विशेषज्ञो द्वारा दूर कराया गया है। वे नारी को कुदृष्टि से देखने वाले का ध्यान नारी जागरण की ओर आकृष्ट करते है। प्राचीन काल की नारिया हमेशा अपने भारतीय मर्यादा के अन्दर रहती थी किन्तु आधुनिक नारिया उस मर्यादा का उल्लघन करती है। इनके समस्त दोष का मूल कारण पुरुष वर्ग है। इसमे द्रोपदी जैसी नारियो का साहस दिखाया गया है। जो वीरतापूर्वक व्यग्य भरे शब्दो से अपने पति को उपदेश देती है। नाटककार ने बाल-विवाह समस्या को भी दूर करने का प्रयास किया है।

नारी हृदय (पृ० १४७), ले० हनुमान तुलसीदत्त सैंदा, प्र० श्री व्यास साहित्य मदिर, कलकत्ता, *पात्र* . पु० ४, स्त्री ५, *अक* ३, *दृश्य* ८, ८, ६।
घटना-स्थल वनभूमि, राजमहल, उद्यान।

उज्जैन के विख्यात राजा विक्रम मनोरमा से जगल मे गधर्व-विवाह करते है। एक दिन दूत द्वारा मातेश्वरी के शोकग्रस्त होने का समाचार पाकर वे वहॉ से राजधानी चल पडते है। जाते वक्त वह 'रक्षा' दे जाते है जो विपत्ति के समय काम आ सकता है। एक दिन एक भिखारी के आने पर विक्रम का पुत्र राज उस तावीज को भीख मे दे देता है। भिखारी स्वर्ण लेकर कागज लौटा देता है। राज जब कागज को पढता है कि "कुँवारी कन्या को कलक का टीका लगाया, जिसे गर्भ रहा" तो मॉ पर क्रोधित होता है किन्तु मा के द्वारा यह बताने पर कि उसने विक्रम से विवाह किया था, उसका क्रोध शान्त हो जाता है। वह अपने पिता से मिलने उज्जैन जाता है और बडी चालाकी से उन्हे भ्रम मे डालकर मन्दिर मे बन्द करता है। दूसरे दिन कृत्रिम बोली बोलकर राजा को फँसाने के अपराध मे पकडा जाता है, तो अपना अपराध स्वीकार करते हुए उनका पत्र दिखाता है। राजा बीस वर्ष पहले की घटना को स्मरण करके अपने पुत्र को प्रसन्नतापूर्वक छाती से लगाते है।

नर्तकी रम्भा नारी चरित्र से राज से विवाह करने की योजना बनाती है किन्तु विक्रम को यह मजूर नही। वे एक महल बनाकर रम्भा को कैद कर लेते है और पुत्र से कहते है कि रम्भा से भूलकर भी न मिले। विक्रम पुत्र राज की अगूठी दिखाकर सकल बकल रम्भा के दरवाजे के चौकीदार को बताते है कि आज से मै यहॉ नौकरी करूँगा। सकल बकल की सहायता से रम्भा कैदखाने से बाहर आ जाती है तथा ग्वालिन का वेष बनाकर राज से मिला करती है। राजकुमार राज से उसको पुत्र होता है। राजा विक्रम को नौकरो द्वारा यह समाचार मिला कि

रम्भा के घर मे लड़के के रोने की आवाज आ रही है। वे रम्भा को बुलाने के लिए आदेश देते है। रम्भा योगिनी के वेष मे सजीवनी विद्या सीखती है। सभा मे सभी रम्भा को पापिनी की सज्ञा देते है। पूछने पर राज भी बताते है कि वे रम्भा से कभी नही मिले। अन्त मे रम्भा दूध बेचने वाली ग्वालिन और योगिनी के रूप मे सजीवनी विद्या सिखाने वाली का स्मरण कराकर राज से स्वीकार करा लेती है कि वह राज की प्रेयसी है। राजा विक्रम नारी चरित्र का स्मरण दिलाकर विजयोद्घोष करता है। राजा विक्रम राजकुमार और रानी रम्भा के जय जयकार के बीच सभा बन्द करते है।

नाश की नसेनी (सन् १९६३, पृ० ६६), ले० : प्रतापनारायण उपाध्याय; प्र० : राकेश प्रकाशन मदिर, लश्कर; *पात्र* पृ० १६, स्त्री २, अक ३, दृश्य ७, ५, ५।

इस सामाजिक नाटक मे मद्यपान के दोषो को दिखाकर समाज को सुधारने का प्रयास किया गया है। भूतपूर्व जमीदार रामसिह शरावी है तथा मोतीसिह और डरू श्रमिक रामसिह के शरावी दोस्त है जिसके कारण जमीदार से लेकर मजदूर वर्ग तक सबमे शराब की आदत पड गयी है। किन्तु उसकी पत्नी सुखिया और रामसिह की पत्नी राजकुमारी के प्रयासो से सबकी आदते छूटती है और सभ्य समाज की स्थापना होती है।

'निगाहे गफलत उर्फ भूल मे सूल, काँटो मे फूल' नाटक ले० विनायक प्रसाद 'तालिब', प्र० इस नाटक का प्रकाशन विक्टोरिया मण्डली के द्वारा सभवत खाली-वाला, दी रुमनेद जी, नगरवान जी, बम्बई मे हुआ, पात्र पु० ४, स्त्री २।

इस सामाजिक नाटक मे उतावलेपन को अनर्थ की जड सिद्ध किया गया है। नाजिम नामक अपनी पतिपरायणा पत्नी नरगिस के साथ प्रेमपूर्वक अपना निर्वाह करता है। धूर्त 'शातिर' उनके मधुर दाम्पत्य जीवन मे प्रवेश कर भ्रम उत्पन्न करता है और नाजिम को छल से नरगिस के कुलटा होने का विश्वास उत्पन्न करा देता है। उस निर्दोषा सती के चरित्र को लाछित कर स्थिति यहाँ तक पहुँचा देता है नाजिम उस अबला की गोद मे पुत्र काजिम को छोड अन्यत्र चला जाता है। नरगिस अपने पुत्र के साथ किसी प्रकार से कपडे सी कर अपना निर्वाह करती है। उसकी ऐसी दशा पर करुणा विगलित उसके चाचा सलीम चाची जीनत नरगिस की बडी सहायता करते है।

नरगिस और उसकी बहिन सम्बुल शातिर नाजिम को नरगिस की सौतेली बहिन सम्बुल को, जो सर्वथा रूप साम्य है। अपने पति मसरुर से प्रेमालाप करते दिखाकर शातिर नाजिम के मन मे शका उत्पन्न करा देता है कि नरगिस मसरुर से फँसी है। नाजिम उस झूठे सत्य को यथार्थ मान कर अपनी पत्नी को कलकिनी समझता था क्योकि मसरुर बडा दुश्चरित्र व्यक्ति था। वह इस धोखे को न समझ पाकर और 'शातिर' की चाल का शिकार हो गया।

शातिर और औरग ठग विद्या के बल पर अत्यधिक धनराशि एकत्रित करते है। यह समस्त धनराशि वह अपनी दो पुत्रियो मे बाँट गया था। उनके पास से नोटो का बण्डल बरामद हो जाता है और उसे उन लडकियो को वापस दिया जाता है।

उधर मसरुर अपनी पत्नी सम्बुल को छोडकर अन्य प्रेयसी के साथ वहा से पलायन कर जाता है। सम्बुल नैराश्यान्धकार। मे अपना पथ निर्धारित नही कर पाती और नदी की लहरो मे अपना जीवन झोक कर ससार के दु:खो से छुटकारे का प्रयास करती है। नाजिम भी उसी नदी मे अपने आपको विसर्जित कर नरगिस के वियोग की अग्नि मे मुक्ति पाने गया था। नाजिम अपनी साली सम्बुल को डूबने मे बचा लेता है। सम्बुल होश मे आती है और उसके द्वारा शातिर के षड्यन्त्र का रहस्य खुल जाता है। नाजिम अपनी साली के साथ घर आता है। वह अपनी पत्नी से और सम्बुल अपनी बहिन से मिलती है। नगर

कोतवाल शेरखाँ और चाचा सलीम की सहायता से शातिर और औरग दोनो ठग वदी होते है और दण्डित होकर अपने कर्मो का फल पाते है।

निमाड केशरी या तालिया भील (पृ० १२७), ले० शिवदत्त श्यनी, प्र० नाना मुकुन्द नवले श्री शिवाजी प्रिंटिग प्रेस, हरदा, (सी० पी०), *पात्र* पु० १०, स्त्री २; *अक* ३, *दृश्य* . ६, ६, ७।
घटना-स्थल नदी तट।

इस राष्ट्रीय नाटक मे निमाड केशरी तालाभील का वीर चरित्र वर्णित है। इस नाटक मे देश-भक्ति की भावना दिखाई गई है। राष्ट्र-जाति समाज की सेवा ही इस नाटक का मूल उद्देश्य है। गँवार भील के चरित्र को उदात्त वनाया गया है। तालिया यशोदा, विसनीया, दौलिया, शिवा पटेल, हिम्मत पटेल, जालिम आदि ऐतिहासिक पात्र है। अन्य पात्र काल्पनिक है। नाटक तालिया की मृत्यु यशोदा के साथ विषपान द्वारा होती है। भूमिका मे नाटककार ने लिखा है "नाटक" का कुछ अश प्रकाशक ने किसी कारणवश छोड दिया है जिससे कथावस्तु मे यत्र-तत्र कुछ वैपम्य आ सकता है।"

निर्भय-भीम-व्यायोग (वि० १९७२, पृ० १६), ले० रामदहिन मिश्र "काव्य-तार्थ", प्र० ग्रन्थ माला कार्यालय, वाँकीपुर श्री लक्ष्मीनारायण, प्रेस, वनारस सिटी मे मुद्रित, *पात्र* पु० ६७, स्त्री ३।
घटना-स्थल पर्ण कुटीर, जगल।

इस पौराणिक नाटक मे भीम की वीरता द्वारा व्राह्मण पुत्र की रक्षा दिखाई गई है। सस्कृत मध्यम व्यायोग की कथा के आधार पर इसका कथानक निर्मित है। हिडिम्वा की आज्ञा से उसका पुत्र घटोत्कच एक व्राह्मण को कष्ट दे रहा है। व्राह्मण के मध्यम पुत्र को घटोत्कच मार डालना चाहता है। भीम उस व्राह्मण की रक्षा के लिए ठीक समय पर पहुँच जाते है। और उस व्राह्मण के स्थान पर स्वय अपने प्राण देने के लिये राक्षसी हिडिम्वा के सामने उपस्थित होते है। हिडिम्वा अपने पति को पाकर मुग्ध हो जाती है। वह इस रहस्य का उद्घाटन करती है कि उन्ही से मिलने के लिए यह युक्ति निकाली गई थी। वह घटोत्कच को उसके पिता का परिचय देती है। इस प्रकार निर्भय भीम व्राह्मण की रक्षा के साथ-साथ हिडिम्वा और घटोत्कच को भी सन्तुष्ट करते है।

निर्मोहिया (सन् १९६३), ले० श्री महात्म्यसिह चौहान, *पात्र* पु० ५, स्त्री २, *अक-रहित*, *दृश्य* ३९।
घटना स्थल पाठशाला, थाना, जज का वँगला।

गीता और विनोद एक कक्षा मे साथ-साथ पढते है। दोनो अपनी कक्षा के मेधावी छात्र है। परीक्षा मे विनोद का सदैव प्रथम तथा गीता का द्वितीय स्थान रहता है। दोनो प्रेमसूत्र मे वँध जाते है। जमीदार अपने व्यक्तिगत प्रभाव से प्रधानाचार्य आदि पर दवाव डालकर चाहता है कि उसकी पुत्री गीता को प्रथम स्थान दिया जाय।

जमीदार विनोद तथा उसके वड़े भाई खेलावनसिह से कुछ विरोध भाव रखता है। खेलावनसिह एक अच्छे पहलवान है। जमीदार के पहलवान को कुश्ती मे हार खानी पडती है। यहाँ वेगारी के खिलाफ लोगो को जमीदार के विरुद्ध उभाडने मे खेलावनसिह सक्रिय भाग लेता है। जमीदार खेलावनसिह को नीचा दिखाने के लिए प्रत्येक सम्भव उपायो को अपनाता है। अन्त मे दरोगा को घूस देकर खेलावनसिह के खिलाफ चोरी के अभियोग मे मुकदमा चलवाता है। परन्तु खेलावनसिह तथा जमीदार के आपसी मतभेद का गीता-विनोद के प्रेम पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नही पडता। विनोद जव विलायत चला जाता है तो वहाँ से गीता के नाम भेजे गये पत्रो को पढकर जमीदार गीता की शादी किसी अन्य से कर देना चाहता है। परन्तु गीता स्पष्ट कहती है कि वह विनोद के अतिरिक्त अन्य किसी से भी शादी नही करेगी। अन्त मे जव विनोद डिस्ट्रिक्ट जज होकर आता है तो

गीता उससे मिलती है। अन्त मे दोनो विवाह सूत्र मे बँध जाते है और जमींदार अपनी सारी सम्पत्ति विनोद के नाम कर देता है।

निर्वासन (सन् १९५७, पृ० ९२), ले० : श्री भगवतीप्रसाद राकेश, प्र० विजय प्रकाशन माला जेलपथ, आगरा, पात्र पु० २२, स्त्री ६, अक . ४, *दृश्य* ४, ३, ३,४ ।

घटना-स्थल : महर्षि वशिष्ठ का आश्रम, राजोपवन, विशाख रजक का निवास, राजमहल, राजोपवन, वाल्मीकि का आश्रम, कैलाश, राजमहल का एक प्रकोष्ठ, सरयू-तट, आश्रम, राजसभा।

इस पौराणिक नाटक मे सीता का एक निश्चित लक्ष्य है, और वह है—नारी—जाति की सम्मान रक्षा।

नाटक का प्रथम अक महर्षि वशिष्ठ के आश्रम से प्रारम्भ होता है, वशिष्ठ की आदर्श लोकतन्त्रात्मक शिक्षा को शिरोधार्य कर राम एक आदर्श प्रजा-राज की परिकल्पना मे जुट जाते है। राम का अन्त सघर्ष प्रथम अक के चतुर्थ दृश्य से प्रारम्भ हो जाता है जब वे सीता के प्रति प्रजा की सशकित भावनाओ से परिचित होते हे। राम नाटक के सबसे अधिक सतप्त पात्र है। सीता नाटक के सम्पूर्ण सवेदना की केन्द्र-बिन्दु है। अपना निर्वासन स्वय स्वीकार कर तथा धरती की गोद मे समाकर सीता अपना स्वाभिमान सिद्ध करती है। परन्तु राम अपनी यन्त्रणाओ मे मानो अपने को ही पराजित करते रहे है अथवा गुरुवशिष्ठ की आज्ञा से स्वय को बहलाते, झुठलाते रहे है। अन्य सहायक पात्रो मे लक्ष्मण और उर्मिला का प्रथम स्थान आता है। लक्ष्मण की अपेक्षा उर्मिला का चरित्र अधिक वैविध्य रखता है, 'वह भावना लोक की रानी है। उसका स्थान सदा छोर पर है।'' ' 'वह मूर्तिमती कविता है, तो साकार क्रान्ति भी है।' सम्पूर्ण नाटक मे स्थान-स्थान पर नारी को गौरव प्रदान कर तुलना मे पुरुषो पर कटूक्तिया की गई है। अत मे लेखक के विचार वशिष्ठ द्वारा अधिक परिपुष्ट होते है—'युग-युग मे जब-जब मानव नारीत्व का मूल्याकन करने बैठेगा, उसकी आँखो के सामने सीता का आदर्श होगा। जब-जब पुरुषो की उच्छृखलता सक्रिय होने की चेष्टा करेगी, इस महीयसी महिला का आत्मोत्सर्ग उसे सही रास्ता दिखालायेगा।

निर्वासिता (सन् १९६२, पृ० ६६), ले० कुमार युगल, प्र० सत्यनारायण गुप्त, श्री गगा पुस्तक मन्दिर पटना ४, *पात्र* पु० १४, स्त्री १, *अक-रहित, दृश्य* १३।

घटना-स्थल . मगध का राजदरबार, वन प्रदेश, राजमहल का एक हिस्सा, वन प्रदेश के कटकाकीर्ण मार्ग, वन प्रदेश मे महादेवी की कुटी, पहाडी का किनारा नदी के किनारे पहाड का टीला, युद्ध भूमि, वन प्रदेश मे पहाडी टीले पर झोपडी।

इस ऐतिहासिक नाटक मे माता-पुत्र का अगाध स्नेह दिखाया गया है। मगध के महाराज महेन्द्रराज अपनी पत्नी महादेवी को असत्य आचरण के आरोप मे निर्वासित कर देते है। वह भटकती हुई वन मे एक शकराज के यहा शरण पाती है। कुछ दिनो बाद महादेवी को पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है। चौदह वर्ष की आयु मे ही बालक जितेन्द्र सभी कलाओ मे निपुण हो जाता है। वह अपनी वीरता का प्रभाव शकराज पर डाल कर जगल का प्रधान और विदेशी सम्राट् पृथ्वीसेन का सेनापति बन जाता है।

अचानक मगध के युवराज रतिपाल और जितेन्द्र मे मुठभेड हो जाती है जिसमे युवराज घायल हो जाता है। महाराज महेन्द्रसिह भी महादेवी की याद मे शोकाकुल रहते है। मगधराज द्वारा विदेशी राजा पृथ्वीसेन का धर्म अस्वीकार करने के कारण दोनो मे घमासान युद्ध होता है। मगध युवराज रतिपाल विदेशी सेनापति जितेन्द्र के क्रूर प्रहारो से बुरी तरह घायल होकर गिर जाता है। अचानक युद्ध स्थल पर महाराज महेन्द्र महादेवी के साथ आ जाते है। घायल रतिपाल अपनी निर्वासिता माँ को देखकर प्रसन्नतापूर्वक उसकी गोद मे प्राण त्याग देता है। महाराज महेन्द्रराज भी राज्य-भार पृथ्वीसेन

और जितेन्द्र को सौप कर महादेवी के साथ तप करने चले जाते है।

निशीथ (वि० १९९०, पृ० ८७), ले० . कुमार हृदय, प्र० · तरुण भारत ग्रन्थावली कार्यालय दारागज, प्रयाग, *पात्र* पु० ९, स्त्री ५, *अक* . ३; *दृश्य* : ५, ५, ५ ।
घटना-स्थल सुमेरपुर।

इस सामाजिक नाटक मे विधवा समस्या उठाई गई है । सुन्दरी एक विधवा ब्राह्मणी है। व्रजेन्द्र, सुमेरपुर का जमीदार अपने शक्ति के बल पर कामतृप्ति के लिये सुन्दरी का अपहरण कर लेता हैं। सुन्दरी व्रजेन्द्र के यहाँ से निष्कलक निकल जाती है। गगा तट पर एक पाखडी साधु से भेट होती है वह भी सुन्दरी को अपने जाल मे फँसाना चाहता है। सुन्दरी गगा मे कूद कर उनसे पीछा छुडाती है। महत लक्ष्मीनारायण उसे अचेतावस्था मे गगा से निकाल कर अपने आश्रम मे रखते है। इसी प्रकार सुन्दरी दर-दर भटकती रहती है। समाज मे उसे कही सच्चा आश्रय नही मिलता। वह भागती-फिरती है और व्रजेन्द्र के गण उसके पीछे लगे रहते है। शिरीप एक क्रान्तिकारी युवक है जो सुन्दरी को पुन व्रजेन्द्र के जाल मे पडने से बचा लेता है। इसी प्रकार समाज के नियमो से आक्रात दु ख झेलते हुए सुन्दरी व्रजेन्द्र के जाल मे पुन फँसती है और उसी के पिस्तौल से उसकी और अपनी हत्या कर लेती है।

निष्कलक (सन् १९७०, पृ० १०८), ले० जनार्दन झा, प्र० जन प्रकाशन समिति, १६/३, उषानगर, कलकत्ता—३१; *पात्र* पु० १५, स्त्री ३, *अक* : २; *दृश्य* · १२।
घटना-स्थल मुजफ्फरपुर का एक उपवन, दयाशकर का आवास, विमल का घर, नूनू-वावू का मकान, श्मशान, कमल का निवास-स्थान, शिवालय, ग्रीन होटल की एक गुप्त कोठरी एव मजिस्ट्रेट कोर्ट इत्यादि।

इस सामाजिक नाटक मे प्रेम के विभिन्न स्तरो और रूपो को दिखाया गया है। नाट्य-कार डाक्टर और नर्स की प्रेम-कथा को केन्द्र विन्दु वनाता है। पूर्णिमा अवैध प्रेम के फल-स्वरूप उत्पन्न पुत्री है जो अपने जीविको-पार्जन का एकमात्र व्यवसाय नर्स होने मे मानती है। विमल का जन्म एक सम्पन्न परि-वार मे हुआ है। वह व्यवसाय से डाक्टर है। डाक्टर और नर्स का प्रेम होता है। एक अन्य पात्र पूर्णिमा से शादी करना चाहता है; किन्तु इसी वीच पूर्णिमा का अपहरण भी हो जाता है और आपस मे लडाई शुरू हो जाती है। पूर्णिमा के सतीत्व को भग करने की नानाविध चेष्टा की जाती है, किन्तु पूर्णिमा के सतीत्व पर कोई आँच नही आने पाती। इस दुर्घटना से विमल अधिक उदास हो जाता है। दयाशकर के कहने पर भी पूर्णिमा की शादी का विमल को विश्वास नही होता। कोर्ट मे लोगो को अनेक रहस्यमय वातो की जान-कारी होती है। राधा सारी बातो पर प्रकाश डालती हुई वताती है कि पूर्णिमा का जन्म कैसे हुआ। वह इस वात का भी विश्वास दिलाती है कि पूर्णिमा निष्कलक है। अन्तत: विमल को सफलता मिलती है। विमल और पूर्णिमा का विवाह हो जाता है।

निष्फल प्रेम जर्मन नाटक के आधार पर (सन् १९४१, पृ० ४४), ले० सरस राम गुप्ता 'उम्मीद', प्र० उपन्यास वहार आफिस, काशी; *पात्र* पु० ५, स्त्री ३, *अक* · २; *दृश्य* ४२।
घटना-स्थल साधारण घर, वाटिका।

इस सामाजिक नाटक मे एक नायिका के दो प्रेमियो की कहानी है। नाटक की नायिका सरला के दो प्रेमी है—फणीन्द्र और विपिनविहारी। फणीन्द्र सच्चा प्रेमी है किन्तु विपिनविहारी पैसे का साथी। फणीन्द्र इगलैड चला जाता है तो सरला वहुत दु:खी होती है। विपिनविहारी के प्रति सरला के हृदय मे घृणा है। विपिनविहारी यह जान कर सरला के प्रति दुर्व्यवहार करता है। वह सरला के पिता से दहेज मे रुपया चाहता है। सरला दु खी होकर एक स्थान पर कहती है—

"मेरे पिता के पास तुम्हे दहेज मे देने के लिए रुपया नही रहा, मेरा भाई चोर है, और तुम एक प्रतिष्ठित खंजाची बन गए हो, इसलिए तुम मुझसे विवाह नही कर सकते।"

अन्त मे वह आत्म हत्या कर डालती है।

निस्तार (सन् १९५५, पृ० ८३), ले० . वृन्दावनलाल वर्मा, प्र० मयूर प्रकाशन, झाँसी, पात्र . पु० ४, स्त्री ३, अक ३; दृश्य ८, ७, ४।
घटना-स्थल गाव का दृश्य।

वर्मा जी ने अछूतोद्धार की समस्या को लेकर प्रस्तुत नाटक की रचना की है। देश मे एकता और समानता को स्थापित करने के लिए छुआछूत को मिटाना कितना आवश्यक है—यही इस नाटक का उद्देश्य है।

बरसातीलाल (गाव का मुखिया) और जटाफिकर (अपने को ऊची जाति का मानने वाला) दोनो ही सारे गाव के अछूतो को अपने गाँव के कुँओ से पानी नही लेने देते। अछूतो के लिए एक कहार है जो बडी मुश्किल से उन्हे पानी देता है। एक दिन प्यास के कारण मोहना हरिजन की पत्नी चाई और पुत्र नन्दू कुए से पानी भरने का प्रयत्न करते है क्योंकि कहार उन्हे पानी देने से इन्कार कर देता है। जिसके फलस्वरूप सारा गाव उनका विरोधी हो जाता है। इधर सारे हरिजन हडताल कर देते है। उपेन्द्र अहिसा के द्वारा गाव मे सुधार लाने का प्रयत्न करता है। इसके विपरीत हरिजनो का नेता लीलाधर विद्रोह और लडाई की बात करता है। उपेन्द्र हरिजनो और गाव के अन्य लोगो को (जो अपने को ऊँची जाति का समझते है) समझाता है। उसकी सब बातो का समर्थन जटाफिकर की बहिन कादम्बिनी और बरसाती लाल की पुत्री सेवती भी करती है। उपेन्द्र के प्रयत्नो के फलस्वरूप हरिजनो को कुओ से पानी लेने और मन्दिरो मे प्रवेश पाने का अधिकार मिल जाता है।

नीव की दरारे (सन् १९६४, पृ० ११८) ले० : श्री कृष्णकिशोर श्रीवास्तव, प्र० : राजपाल एण्ड सन्स, *पात्र :* पु० ५, स्त्री ३।
घटना-स्थल : घर, खडहर।

इस प्रतीकात्मक नाटक मे भाषापरक राज विभाजन से देश की क्षति दिखाई गई है। एक माँ के तीन पुत्र एक ही घर मे रहते है। परन्तु किन्ही कारणो से उनमे मतभेद हो जाता है और वे परस्पर सघर्ष करके घर का बटवारा कर लेते है। उस घर की नीव मे गहरी दरार पड जाती है, किन्तु उनमे से किसी को उस दरार की चिन्ता नही है। प्रत्येक व्यक्ति स्वार्थ से प्रेरित होकर अपनी ही सुख समृद्धि मे सलग्न है। नीव मे दरार पडी है अतः परिणाम यह होता है वह भवन ध्वस्त हो जाता है और सबकी माँ उसी के नीचे दबकर मर जाती है।

यह एक साकेतिक नाटक है जिसका उद्देश्य है भारत के प्रत्येक जाति मे एकता की स्थापना।

नाट्यकार इसकी भूमिका मे कहते है कि "हमारे कई साथियो के लिए नीव की दरारे कितने अशो मे जीवित है उसे समय ही बतायेगा। मुझे तो इतना ही बतलाना है कि अपने देश मे भाषा के आधार पर राज्यो के पुनर्गठन की प्रतिक्रिया मे जो वियोजन तथा विखडन हुआ है यह उससे अनुप्राणित है तथा भावनात्मक एकता के बारे मे जो प्रायश्चित की ध्वनियाँ निहित है यह उससे प्रतिध्वनित है।"

इस नाटक का उद्देश्य है भारत मे विद्यमान भेद-भाव के अनेक दरारो को मिटा देना।

नीच [क्रान्तिकारी सामाजिक नाटक] (सन् १९३१, पृ० १४८), ले० नरेन्द्र, प्र० चाद कार्यालय, इलाहाबाद, पात्र . पु० १४, स्त्री ३, अक . ४, दृश्य . ५, ६, ६, ५।
घटना-स्थल मन्दिर, कमरा, गंगातट।

नाट्यकार इसे समस्या नाटक कहते है।

समाज के कतिपय ऊचे कहलाने वाले इसमे महापुरुषो द्वारा 'नीच' कहलाये जाने वाले व्यक्तियो के ऊपर किये गये अत्याचारो का चित्रण किया गया है।

रामनाथ एक कट्टर सनातन धर्मी है। वह मन्दिर मे पूजा करने जाता है। विहारी एक भगी है। वह नाली साफ करता है और रामनाथ से प्रार्थना करता है कि ठाकुर जी का दर्शन मुझे भी करने दीजिए पर रामनाथ कहता है 'अवे! तेरी तकदीर मे दर्शन करना वदा होता तो तू मेहतर क्यो वनता।' विहारी का वेटा पीरु आर्यसमाज मन्दिर मे होने वाले व्याख्यान की चर्चा करता है जिसमे अछूत को भी ठाकुर जी के दर्शन का अधिकार वताया जाता है। रामनाथ के मन्दिर मे मालती वेश्या का गान होता है। रामनाथ पुजारी का पुत्र श्यामनाथ मालती वेश्या से प्रेम दिखाता है। वह उसे समझाती है कि तुम अपनी स्त्री से प्रेम करो। प्रेम परमेश्वर के समान अनादि है।

श्यामनाथ का एक दुश्चरित्र मित्र राधाकृष्ण है। वह विहारी भगी की कन्या तारा को वलात् अपने वश मे करना चाहता है पर तारा अटल रहती है। भीमराज नामक जमीदार भी उसके साथ अत्याचार करना चाहता था पर तारा अटल रही। भीमराज जीवन के अन्त मे तारा से क्षमा मागता है "कौन कहता है तुम नीच हो, तुम भगिन हो, सतीत्व की मूर्ति, सत्य के प्राण को कौन दुष्ट नीच कहता है। तारा! तुम ससार मे सवसे वडे व्राह्मण से भी वडी हो। अपने पैरो की धूल दो, मै उसे अपने सिर पर रखकर स्वर्ग को निष्कटक जाऊँ।"

नीलकंठ ले० : वृन्दावन लाल वर्मा, प्र० . सत्यदेव वर्मा वी ए एल एल वी०, मयूर, प्रकाशन, झासी, पात्र पु० ५, स्त्री १, अक ३, दृश्य ५, ५, ५।
घटना-स्थल उज्जैन नगर।

इस वैज्ञानिक नाटक मे साहित्य सगीत और विज्ञान का सम्बन्ध दिखाया गया है। मदनलाल हरनाथ को पारदर्शी यन्त्र के अनुसधान कार्य मे आर्थिक सहायता के उपलक्ष मे इस व्यापार मे आधे का अधिकारी होना चाहता है जिसे हरनाथ स्वीकार करना है, पर प्रयोगशाला के निर्माण हेतु १० लाख की माग (Demand) करता है जिसके वाद वर्षो से तैयार नुस्खे को मदनलाल को दिखाता है। मदनलाल कुछ आश्वासन देकर चल देता है।

उज्जैन के सार्वजनिक भवन के हाल मे हरनाथ के सभापतित्व मे सभा होती है जिसमे उनके आदेशानुसार वदलू खा तथा गगा और उर्मिला का सहगान होता है फिर सभा का विसर्जन होता है। वदलू के साथ सोटू और फत्ते चोर उचक्के भी आते हैं।

उज्जैन की एक गली मे कुछ स्त्रियो के साथ जाते हुए सोटू और फत्ते साँय-साँय की आवाज से अशाति पैदा करते है इसी वीच सोटू गगा के गले से हार खीचकर ले भागता है शिवकठ की सहायता से पुलिस आती है और आवश्यक जानकारी के वाद थाने मे रिपोर्ट लिखी जाती है।

उज्जैन मे मदनलाल की कोठी पर सोटू और फत्ते आते है। सोटू चक्कू निकालता है पर मदन का रिवाल्वर देख सहम जाता है और क्रोध मे "कमीना कही का" कहकर चला जाता है।

एक उद्यान मे काशीनाथ पौराणिकता मे विश्वास कर हठयोग के महत्त्व को सिद्ध करते है। हरनाथ आधुनिक विज्ञान युग को ध्यान मे रखकर मानव समाज के लाभ हेतु उपाय वताता है। स्वय को "वुद्धिवादी" कहता है। काशीनाथ वैज्ञानिक यन्त्र आदि की कटु आलोचना करता है। हरनाथ के अनुसार "विज्ञान विवेक पर आधारित है।" इसी प्रत्याख्यात मे मदनलाल आ जाते है। प्रसग वदल जाता है और हार आदि की चोरी के वारे मे चर्चा प्रारम्भ हो जाती है।

शिप्रा नदी पर सोटू और फत्ते की हार सम्वन्धी चर्चा होती है। फत्ते को सोटू पर अविश्वास होता है। और उसे चक्कू मार घायल कर नदी पार चला जाता है। घायल सोटू पुलिस द्वारा पकडा जाता है और उचित कार्यवाही के वाद अस्पताल भेज दिया जाता है।

अस्पताल मे पुलिस अफसर जांच हेतु

काशीनाथ आदि के साथ जाते है और जॉच करते है पर पुलिस अफसर को सफलता नही मिलती।

सिद्धिहर नामक तीर्थ स्थान पर साधुओ के बीच फत्ते साधू वेश मे आता है किन्तु पुलिस उसको गिरफ्तार करती है। समाचार पत्र बेचने वाले प्रमुख खबरो को कहकर सडको पर अखवार बेचते हुए जाते है।

हरनाथ के मकान पर गगा, उर्मिला कहानी और कुछ चित्र लेकर आती है। कहानी का शीर्षक है 'नीलकठ' जिसमे समुद्र-मथन की पौराणिक गाथा को आधार मानकर (१४ रत्नो के अतिरिक्त) १५ वे 'प्रकृति पर विजय' १६ वे 'मन पर विजय की कथा' और जोडी गई है। गगा कहानी सुनाती है उर्मिला चित्र दिखाती है। इसी बीच काशीनाथ आकर योगशाला की भूमि प्राप्ति की वात वताते है। मदन लाल भी आते है कुछ देर वाद फत्ते को साथ लिए पुलिस आती है और उचित जानकारी के वाद चोरी की घटना स्पष्ट होती है पर हरनाथ, फत्ते बयान देने से इन्कार करते है पर पुलिस वाले फत्ते को घसीटते हुए ले जाते है।

इधर सोटू नदी पर जाकर चोरी न करने की कसम खाता है। इसी बीच सिपाही धोवी के साथ आकर सम्मन के तामिल हेतु सोटू को गाव ले जाते है।

उज्जैन मे हरनाथ प्रयोगशाला मे नए प्रयोग को बताते है (जिसकी प्रेरणा गगा, उर्मिला से प्राप्त हुई थी) शिवकठ भी आते है। हरनाथ शिवकठ नाम से मिलते-जुलते शब्द 'नीलकठ' को आधार बनाकर नीलकठ से मनोविनोद युक्त वार्ता करता है। पुन कहानी के आधार पर अपना उद्देश्य बताता है। "समाज के हला-हल को पीते रहो, उसे पेट मे न पहुँचा कर गले मे रखे रहो—दूसरे के दृष्टिकोण को समझते रहने की कोशिश करते रहो, नि स्वार्थ परसेवा करो, विज्ञानियो की तटस्थता और त्यागियो के अहकार से दूर बने रहो" काशीनाथ प्रतिवाद करने के लिए उत्सुक होता है पर उचित समय पर गगा स्वरचित गीत (उपर्युक्त उद्देश्य से युक्त) गाती है—'आगे चले चलो, आगे वढते चलो' यही पटाक्षेप हो जाता है।

नीलकंठ निराला (सन् १९५९), ले० : रामेश्वर कश्यप, प्र० : राष्ट्रीय प्रकाशन मडल, पटना; *पात्र* पु० ६, स्त्री १, *अक-रहित; दृश्य* १। *घटना-स्थल* कमरा।

'नीलकठ निराला' गीति-नाट्य महाकवि निराला के महान् व्यक्तित्व के प्रति एक श्रद्धाजलि है। निराला जी के जीवन से कतिपय प्रसगो का चयन कर लेखक ने उन्हे नाटकीय रूप देने का प्रयत्न किया है। निराला जी ने जीवन मे जो भी प्राप्त किया उसे मुक्तहस्त से निर्धनो मे लुटा दिया। इसके पीछे लेखक एक मनोवैज्ञानिक सत्य का अवलोकन करता है। उसका निष्कर्ष है कि निराला जी अपने जीवन की उपलब्धियो से सन्तुष्ट नही थे। इसीलिए उनमे विद्रोही व्यक्तित्व विकसित हुआ। उनके प्रलाप इस तथ्य की ओर संकेत करते है। ये प्रलाप उनकी विभिन्न मन - स्थितियो के द्योतक है। यद्यपि इसके सभी पात्र काल्पनिक है तथापि इन पात्रो का निराला के जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। हजारी, श्यामलाल तथा भिखारिन उन व्यक्तियो का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिन्हे निराला का सहयोग प्राप्त था। डॉ० लाल निराला के कवि जीवन की उपेक्षा का प्रतीक है। साहित्य-प्रेमी भविष्य मे निराला-कृति के मूल्याकन की ओर सकेत करता है। बीच-बीच मे 'सरोज-स्मृति' के अश निराला की आन्तरिक करुणा के द्योतक है।

नील देवी (सन् १८८१), ले० . भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्र० भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, *पात्र* पु० १४, स्त्री ५, *अक* · १०।

इस गीतिरूपक मे धर्मनीति और राजनीति का सामंजस्य एवं हिन्दू ललना की शूरवीरता दिखाई गई है। नाटक समर्पण करते हुए भारतेन्दु जी इसका उद्देश्य इस प्रकार स्पष्ट करते है—जिस भाँति अँग्रेज स्त्रियाँ अपना स्वत्व पहचानती है, अपनी जाति और अपने देश की सम्पत्ति विपत्ति को

समझती है, उसमे सहायता देती है, उसी भाँति हमारी गृहदेवियाँ भी वर्तमान हीनावस्था का उल्लंघन करके कुछ उन्नति प्राप्त करे, यही लालसा है।' इसी उद्देश्य से पजाब के राजा सूर्य देव की पत्नी नील देवी का शौर्य इस नाटिका मे दिखाया गया है।

राजा सूर्यदेव पर रात्रि मे अचानक धावा बोलकर अमीर अब्दुश्शरीफ खा सूर उसके राज्य को जीत लेता है। राजा को एक पिंजड़े मे बन्दकर धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य किया जाता है। राजा के अस्वीकार करने पर सैनिक उसका वध करने दौडते है। वह कई यवनो का सहार कर वीरगति पाता है। राजा की मृत्यु के कारण अधिकाश राजपूत सैनिक युद्धक्षेत्र से भाग जाते है। रानी नीलदेवी विजय की कोई आशा न देख नर्त्तकी के छद्मवेश मे अमीर अब्दुश्शरीफ खा के मनोविनोद मे पहुँचती है, और मदिरा से चूर अमीर जब उसे पकड़ने को उछलता है तो वह छिपे अस्त्र से उसका सहार करती है। रानी अन्त मे यह कहते हुए सुनी जाती है—'मेरी यही इच्छा थी कि मैं इस चाडाल का अपने हाथ से वध करूँ—सो इच्छा पूर्ण हुई। अब मैं सुख पूर्वक सती हूँगी।"

नूरजहां (सन् १९२५), ले० आरसीप्रसाद सिंह, प्र० गाधी हिन्दी पुस्तक भण्डार, झाँसी, *पात्र* . स्त्री २, *अक-रहित*, *दृश्य* · १।
घटना-स्थल कमरा।

नूरजहाँ के चारित्रिक औदात्य को उभारना ही इस ऐतिहासिक नाटक का प्रमुख उद्देश्य है। इस गीतिनाट्य मे पूर्व स्मृति द्वारा नूरजहाँ के चरित्र पर प्रकाश डाला गया है। नूरजहाँ तथा उसकी पुत्री लैला के वार्त्तालाप द्वारा ज्ञात होता है कि बीते यौवन के प्रति उसमे आज भी आकर्षण है। इसी रूप के द्वारा अपने पति शेर अफगन की मृत्यु के पश्चात् वह सम्राट् को जीत सकी थी। इसके लिए उसमे पश्चात्ताप नही है क्योकि उस असहाय अवस्था मे सम्राट् को अपनाना ही उचित मार्ग था। इसके अतिरिक्त वैभव की आकाक्षा सबमे होती है।

नूरानी मोती (सन् १९४८, पृ० ६४), ले० : न्यादर सिंह 'बेचैन', प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, चावडी बाजार, दिल्ली, *पात्र* · पु० ९, स्त्री ७, *अक* ३, . *दृश्य* · ७, ५, ५।

इस तिलस्मी नाटक मे दान, धर्म, सत्य मार्ग पर चलने वाले एक मनुष्य की सुख-दुख भरी कहानी है। नीतिसेन सेठ श्यामलाल का परोपकारी इकलौता पुत्र है। किशन और उसके स्त्री-बच्चे कई दिनो से भूख से तडप रहे है। नीतिसेन सौ रुपए देकर उनकी सहायता करता है। अकाल-पीडित किसान नीतिसेन के पास सहायता मागने आते है तो वह उन्हे पशुओ के लिए एक हजार रुपये देता है। एक साधु ससार की असारता को बतलाने वाला गीत गाता हुआ जाता है, नीतिसेन उस साधु को दस हजार रुपया सबके मना करने पर भी दे देता है। सेठ ने गुस्से मे नीतिसेन को घर से निकाल दिया। नीतिसेन की माता कान्ता चलते समय अपने बेटे को दो लड्डू देकर कहती है कि अगर कभी लगातार चार पहर भोजन न मिले तो ये लड्डू खा लेना।

नीतिसेन काम की तलाश मे कई दिनों तक भटकता फिरा लेकिन उसे कोई रोजी का ठिकाना नही मिला। हताश होकर वह अपने ससुराल जा पहुचा और वेश बदलकर, हरिनाम रखकर वही नौकर बन गया। रेणुका नामक स्त्री की पाप वासना को तृप्त न करने पर वह शोर मचाती है कि जबरदस्ती मेरी इज्जत लूट रहा था। हरि के मना करने पर भी मोहल्ले वाले उस बेचारे को बहुत पीटते है।

नीतिसेन इस विपत्ति मे अपने सगे लोगो को भी पराया बनते देख बहुत दुखी हो विश्राम करने के लिए एक पेड के नीचे जा बैठता है। नीद मे उसे गुरु साधु कहता है कि तू राजा यशवन्तसिंह के पास जा और नेपाली जादूगर को मारकर उनकी लडकी से शादी कर। नीतिसेन राजा यशवन्तसिंह के पास पहुँचा और उनको राजकुमारी का

रोग दूर कर देने का वचन दिया है। राजकुमारी के भवन मे नीतिसेन जैसे ही घुसा वैसे ही नेपाली जादूगर आ पहुँचा। नीतिसेन साधु की दी माला की शक्ति से जादूगर को मारकर राजकुमारी को रोगमुक्त करता है। राजा राजकुमारी का विवाह नीतिसेन के साथ करता है और उसे आधा राज्य भी दे देता है। नीतिसेन राजकुमारी को साथ लेकर रेणुका के पास पहुँचा जो होली के दिन बडी बेकरारी से उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। नीतिसेन अंगूठी दिखलाकर उसके व्यभिचार की याद दिलाता है। रेणुका अपने अपराध के लिए क्षमा माँगती है। राजकुमारी के कहने पर वह रेणुका को भी अपने साथ ले चलता है। अब नीतिसेन अपनी दोनो पत्नियो के साथ सुशीला के पास गया। श्यामलाल अपने बेटे को घर से निकाल देने पर बहुत पछताता था। कान्ता तो बेटे के वियोग मे रो-रोकर अन्धी हो गई। नीतिसेन दोनो पत्नियो के साथ घर पहुँचता है तो माँ-बाप को बहुत सुख-सन्तोष होता है। नीतिसेन गुरुजी को याद करता है। साधु प्रकट होकर नीतिसेन को माला देता है जिससे वह अपनी माता की आँख ठीक कर देता है।

नृसिंहावतार अर्थात् प्रह्लाद नाटक (सन् १९०६, पृ० ६४), ले० रामभजन मिश्र, प्र० : बाबू कन्हैयालाल बुकसेलर और पब्लिशर, पात्र पु० १२, स्त्री ३, अक · ३, दृश्य. ४, ७, ११।

घटना-स्थल इन्द्र का दरबार, राजभवन, मुनि कुटी, तपोवन, राजसभा, इन्द्रलोक, कैलाश पर्वत, बाजार, पाठशाला, नगर का मार्ग, श्मशान।

यह दृश्यो मे नही अको मे विभाजित है। इस पौराणिक नाटक मे हिरण्यकश्यप द्वारा प्रह्लाद पर किये गये अत्याचारो का वर्णन है। तथा प्रह्लाद को बचाने के लिए भगवान का नृसिंहावतार धारण करने की कथा है। इसमे चौपाइयो के साथ ही हिन्दी गजलो का भी प्रयोग है। इसके शेर लैला-मजनू के शेरो के समान है। पूरा नाटक गेय है।

नेक व बद का फैसला उर्फ खूबसूरत वक्ता (सन् १९०७, पृ० ११८), ले० · अशान्त बाबू, प्र० . वैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, बनारस, पात्र पु० १३, स्त्री ८, अक ३, दृश्य ६, १४, ५।

घटना-स्थल · सकेत नही।

यह नाटक प्रेमकथा से भरा है। यह दिखाया गया है कि अच्छे का फल अच्छा और बुरे का फल बुरा होता है। ताफीक और मरहम शाह विरजिस के वफादार जनरल व सिपहसालार है और कल्लू बेग तथा उसका बेटा तुगरल बेवफा सिपहसालार है। शम्शा—फिरोजाबाद की सुल्तानाशाह की दगाबाज बहन है। यही मुख्य पात्र है शेप पात्र प्रेम कथाये पैदा करने के लिए रखे गये है। बेवफा सिपहसालार कल्लूबेग तथा धोखेबाज शाह की बहन शम्शा दोनो षड्यन्त्र रचते है। शम्शा राज्यलिप्सा मे अपने पति और भाई का कत्ल करा देती है। शाह के लडके को कल्लू की सहायता से बन्दी बना लेती हैं और उसे एक मकान मे रख उस मकान को सुरग से उडा देना चाहती है पर ठीक समय पर शाह के लडके के रक्षक आ जाते है। लडका बच जाता है। कल्लू तथा शम्शा पकड लिए जाते है। शम्शा अपने पिस्तौल से कल्लू को गोली मारकर स्वय गोली मार लेती है और उन दोनो को कुकृत्यो का फल मिल जाता है।

नेताजी सुभाष बोस (सन् १९५१), ले० · कर्नल शाहनवाज खाँ के आजाद हिन्द फौज के इतिहास पर आधारित। प्र० . गया प्रसाद एण्ड सन्स, आगरा।

काग्रेस से मतभेद के बाद नेताजी, देश से भागकर काबुल पहुँचते है। उत्तमचन्द और भगतराम से भेट। जर्मनी मे हिटलर से साक्षात्कार। सिंगापुर मे सेना की तैयारी और युद्ध। जापान के शस्त्रसमर्पण के बाद आजाद हिन्द सेना की पराजय। नेताजी का अन्तर्धान होना दिखाया गया है, मृत्यु नही। अन्त मे, सहगल, ढिल्लन और शाहनवाज इत्यादि पर मुकदमा चलता

है। आजाद हिन्द सेना की मुकदमे मे विजय।

नेत्रोन्मीलन नाटक (वि० १९७१, पृ० १३९), ले० प० श्यामविहारी मिश्र, एम० ए० एव प० शुकदेव विहारी मिश्र, बी० ए०, प्र० साहित्य सम्वर्द्धिनी समिति, कलकत्ता, *पात्र* पु० २८, स्त्री ४; *अक* ५, *दश्य* ७, ६, ६, ४, ३।
घटना-स्थल घर, न्यायालय।

इस सामाजिक नाटक मे सामयिक समस्याओ पर गम्भीरता से विचार किया गया है। इसमे आपसी वैमनस्य के कारण मारपीट होती है। परिणाम स्वरूप दोनो पक्ष न्यायालय मे जाते है। न्यायालय मालिक वाग का महाजन प्रजापति नाटक का मुख्य पात्र है जो लडाई करता है। झगडे और मारपीट का फल न्यायालय की हैरानी, अपव्यय वकीलो और गवाहो की सिफारिश, अधिकारियो की रिश्वत आदि मे दिखाया गया है। दोनो पक्ष निर्धन होकर परेशान रहते है। न्यायालय मे विजेता भी अपव्यय के कारण निर्धन वन जाता है तव दोनो की आँखे खुलती है।

नाटक मे रोचकता लाने के लिए वकीलो की वहस, गवाहो के साथ जिरह, न्यायाधीश की चुटकी आदि का सहारा लिया गया है।

नेफा की एक शाम (नाटक) ले० ज्ञानदेव अग्निहोत्री, *अक* २, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल पहाडियो के पास झोपडी, पुल आदि।

इस राजनीतिक नाटक मे नेफा की सीक्याग नदी के तट पर कुकुरमुत्तो की आकृति वाली झोपडियो मे वसी आदिवासियो की चीनी आक्रमण के समय अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिये किए गए शौर्य एव वलिदान पूर्ण गुरिल्ला लडाइयो का चित्र प्रस्तुत किया गया है। प्रथम अक मे मातई के दो पुत्रो देवल और नीमो की पारस्परिक कटुता का कारण सुहाली वनती है। मातई और देवल दोनो ही उमे शंका की दृष्टि से देखते है किन्तु नीमो उसके प्रेमपाश मे वंधा होने के कारण उसको छोडता नही है। यह चीनी कैम्प की जासूस सिद्ध होकर वाद मे नीमो के द्वारा ही मारी जाती है। इसी प्रथम अक मे गोगो की पार्टी का गुप्त सगठन भी प्रकट होता है, देवल जिसका सदस्य है। यह सगठन अपनी छापामार लडाइयो से चीनी सेना का प्रतिरोध करता है। चीनी जासूस वॉगचू घायल होकर मातई द्वारा वचाया जाता है और वही आकर देवल तथा गोगो को मारना चाहता है। मातई को भी पीडित करता है किन्तु सुहाली द्वारा प्रेरित नीमो यही से वॉगचू की गतिविधि को समझता है और वडी समझदारी से वॉगचू को मारकर देवल, गोगो और मातई की रक्षा करता है तथा दूसरे अक मे सभी मिलकर चीनी आक्रमण का विरोध करते है। दूसरे अक मे शिकाकाई नाम की युवती आकर इनके दल मे मिल जाती है। चीनी सीक्याग नदी को पार करना चाहते है। यही पर पुल उडाने के प्रयास मे मातई के दोनो पुत्र पुल उडाने की सफलता के साथ युद्ध मे काम आ जाते है। मातई वीरागना की भाति अपने पुत्रो को मातृभूमि की वेदी पर वलि देकर अन्त मे भारतीय सेना द्वारा चीनियो पर विजय का विगुल सुनती है। शिकाकाई जो देवल की पत्नी वन चुकी थी, गर्भवती है। उसकी सतान का नाम 'लालटेन' रखा जाता है।

नेहरू : अन्तिम झलक (सन् १९६४, पृ० ११७) ले०. डॉ० प्रेमनारायण टंडन, प्र०. हिन्दी साहित्य भडार, गगाप्रसाद रोड लखनऊ-३, *पात्र* पु० ३, स्त्री १, *अक* : १; *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल प्रधानमन्त्री के भवन का भीतरी कक्ष।

इस राजनीतिक नाटक मे भारत के प्रधानमन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के परिवार एवं उनके व्यक्तिगत जीवन की अन्तिम स्थिति का चित्राकन किया गया है। प्रस्तुत नाटक का अधिकाश छायाचित्र के रूप मे दिखाया गया है। वस्तुत. नेहरू का मृत्यु दिवस भारत के इतिहास मे सवसे अभागा दिन माना जायगा। उनके अकस्मात् निधन का

समाचार जब ससार मे फैलता है तब सारा ससार शोक-निमग्न हो जाता है । अतएव जीवन की अन्तिम घड़ी मे वह देश के विभिन्न वर्गो के लोगो से अपने उत्तरदायित्व को संभालने के लिए आग्रह करते है।

नोक-झोक (सन् १६१८, पृ० १०५), ले० : गगाप्रसाद श्रीवास्तव; प्र० हिन्दी पुस्तक एजेसी, बनारस, *पात्र* . प्रथम खड, पु० १, स्त्री १, द्वितीय खड पु० ४, स्त्री ३, तृतीय खड चुम्बन मे पु० १, स्त्री १, *अक* ३, *दृश्य* २, ३, २।
घटना-स्थल · झपसट राय का मकान, सडक, नरसिकलाल का मकान।

अभिनय द्वितीय खण्ड 'अल्क की मरम्मत' का अभिनय पी० एल० डी० क्लब द्वारा गोडा मे १६ अक्टूबर १६१८ को।

प्रथम खड मे चार झाँकिया है जिनमे प्रेमी प्रेयसी के मिलने की तैयारी, भेट, बिछुडने और वियोग का हास्यमय वर्णन एक यात्री नाटको की शैली मे मिलता है। ये झाँकियाँ 'इन्दु' मे सन् १६१३ और १६१४ मे प्रकाशित हुई।

दूसरे खड का नाम अक्ल की मरम्मत है। नायक वदहवासराय बी० ए० का विवाह उसका पिता झपसटराय सुशीला नामक अनपढ स्त्री के साथ कर देता है। वदहवासराय स्त्री की न पढने पर भर्त्सना करता है। उसके रूठ जाने पर मनाने के लिये उसके पैर पर गिरकर माफी माँगता है। आँख मूँदे हुए है इसलिए पिता को आते नही देखता। सुशीला पिता को देखकर छिप जाती है और झपसटराय पिता को दडवत् करते देखकर प्रसन्न होकर उसे गले मिलने को कहता है। वदहवासराय उसे सुशीला समझकर कहता है, प्यारी जब तक मुझे इत्मीनान न होगा कि मेरी बाते मानी जायेगी तब तक मैं सर न उठाऊँगा—झपसटराय उनकी प्रेम लीला समझकर कहता है 'हम बूढो को अच्छा बेवकूफ बनाते हो। मैं समधी को बुलाकर सुशीला को नइहर भेज देता हूँ।'—वदहवास का मित्र रसिकलाल स्त्री को प्रसन्न रखने का मार्ग बताता है कि स्त्री जो कहे उसके लिए उससे कह दो 'अच्छा'। सुशीला के कुछ दिन मैके रहने पर वदहवास अपने मित्र से मिलकर उपाय निकालता है। वह पुलिस मे रिपोर्ट करता है कि उसकी स्त्री सुशीला का किसी ने वध कर दिया है। सुशीला रसिकलाल के घर पर मिलती है। पुलिस कहती है कि मकतूल की लाश मिल गई। रोजनामचा अली दरोगा सुशीला को डाक्टरी के लिए पकडते है और औरते उन्हे झाडू से मारती है।

न्याय (सन् १६०१, पृ० ७०), ले० : आत्मानन्द, प्र० उपन्यास बहार, ऑफिस, काशी, बनारस, *पात्र* पु० ७, स्त्री ३, *अक* : ३, *दृश्य* १०, ६, ४।
घटना-स्थल : शाही किले का मैदान, बाग, सग्रामसिह का महल।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। इसमे जहाँगीर की न्यायप्रियता पर प्रकाश डाला गया है। नाटक मे रामू नामक गरीब धोबी की हत्या की गयी है। लाश जहाँगीर के पास जाती है और वह खूनी के साथ उचित न्याय करता है।

न्याय की रात (सन् १६५६, पृ० १५२), ले० चन्द्रगुप्त विद्यालकार; प्र० . अतर चन्द कपूर, दिल्ली, *पात्र* पु० ५, स्त्री २, *अक* · ३।
घटना-स्थल . मकान की बैठक, सरकारी दफ्तर, ड्राइगरूम।

इस राजनीतिक नाटक मे सरकारी अफसरो और मत्रियो की भ्रष्टाचार उद्घाटित किया गया है।

युवक राजीव ईमानदार आई० सी० एस० और बिहार मे सिविल सप्लाई का चीफ कट्रोलर है। वह आफिसों मे भ्रष्टाचार और मत्रियो की करतूते देखकर त्यागपत्र देता है। उसकी स्त्री उमा सन्तोष से रहने वाली भद्र महिला है। उमा का भाई हेमन्त व्यवसायी व्यक्ति है और मशीन टूल्स का नया कारखाना खोलना चाहता है। हेमन्त का मित्र सदानद कहता है कि यदि राजीव रेड्डी से सिफारिश कर दे तो नया परमिट आसानी से मिल जाये पर राजीव इसके लिए तैयार नहीं होता।

आॅफिसो मे नौकरी योग्यता के कारण नही सिफारिश के बल पर मिलती है। वैंकटाचारी का प्रिय विजयराघव की नियुक्ति पहली नियुक्ति को रद्द करके की जाती है। व्यापारी अफसरो के पास लडकियाँ भेजकर उनके द्वारा अपना काम निकलवाते है। कमला नामक एक लडकी आर्थिक कठिनाइयो के कारण सरकारी अधिकारी सदानद की सहायक बनती है। उसे व्यापारियो और अफसर के सब रहस्य ज्ञान होते है। भंडा फूटने के डर से हेमन्त बन्दूक तानकर कमला से जबरदस्ती एक पत्र पर हस्ताक्षर कराता है। सबका पाप उसके सिर मढा जाता है। राजीव के विरोध करने पर हेमन्त उसे भी मार डालना चाहता है। चतुराई से हेमन्त के सभी टेलीफोनो का रिकार्ड होता रहता है। अन्त मे हेमन्त को भी आत्महत्या करनी पडती है। वही रात न्याय की रात मानी गई है।

न्याय के न्याय (पृ० १६८), ले० . दुर्गाशकर प्रसाद सिह 'नाथ'; प्र० नवसाहित्य मन्दिर, शाहाबाद, *पात्र* पु० १६, स्त्री ६, *अक* · ३, *दृश्य* · ६, ६, ७।
घटना-स्थल राजभवन, विध्याटवी, वाल्मीकि आश्रम।

भोजपुरी बोली मे लिखा यह नाटक प्रगतिवाद के आधार पर राम का चरित्र वर्णन करता है। राम जन्म के समय राजकोश का धन खर्च नही किया जाता। उसे राम-रावण युद्ध मे खर्च करना दिखाया गया है। राम कथा की प्रमुख घटनाओ-विशेपत सम्बूक वध, ब्राह्मण पुत्र को पुनरुज्जीवित करना, सीता का पुन निष्कासन धर्म सगत एव विधान सगत दिखाया गया है। सम्पूर्ण रामकथा को तीन अको मे दिखाना नाट्यकार की कला का सूचक है। सीताजी वाल्मीकि आश्रम मे लवकुश के साथ आकर शरण लेती है। मुनि आर्शीवाद देते है—"वेटी तोहार मनसा अच्छर-अच्छर पूरा होसी।" नाटक के अन्त मे राम सिहासन पर लव को युवराज पद पर असीन करते है। रगमच का सकेत विस्तार से दिया गया है।

न्याय सभा नाटक (सन् १८८०, पृ० ७१), ले० रत्न चन्द्र वकील, प्र० धार्मिक मत्रालय प्रयाग, *पात्र :* पु० ५, अन्य स्त्री ०, *अक* · ३, *दृश्य* ४, २, ५।
घटना-स्थल : आगरा, वादशाह की कचहरी खास, बीरबल का स्थान।

इस ऐतिहासिक नाटक मे वादशाह अकबर की न्यायप्रियता दिखाई गई है। उनके अधिकारी कही प्रजा के साथ अन्याय या अत्याचार तो नही कर रहे है, इसका सम्राट् को पूरा ध्यान रहता है। इसमे न्याय की विजय और अन्याय की पराजय पर अलग-अलग प्रकाश डाला गया है। राजा और प्रजा के धर्म और राज्याधिकारियो को शिक्षा की वाते बताई गई है।

अकबर को न्याय करने मे मित्र बीरवल की बुद्धिमानी से कितनी सहायता मिलती थी इसका भी चित्र खीचा गया है।

न्याय आयुष्मती सुशीला (वि० १६८५, पृ० १३६), ले० · कृष्णानन्द सोख्ता, प्र० हनुमान पुस्तकालय, श्री सुधारक साहित्य व सगीत समिति, भिवानी (पजाव); *पात्र* · पु० ६, स्त्री ५, *अक* ३।
घटना-स्थल महल, दरवार, कोमिक महल, बाग, कोठी, अगला महल, रास्ता, गगा तट कारागार, सेवा समिति भवन।

इस सामाजिक नाटक का उद्देश्य पुनर्निवाह के सस्कार को कार्यरूप मे परिणित करना ही है।

एक धनाढ्य वैश्य वीरसेन अपनी विधवा पुत्री सुशीला के भविष्य के प्रति चिन्तित है। अपने सभासद सुवोध के साथ सुशीला के पुर्नविवाह के प्रस्ताव पर राजी हो जाता है, परन्तु एक सभासद शगुनी उनकी वात का विरोध करता है और वह जनेऊ तथा शिखा को हाथ मे लेकर शपथ खाता है कि वह कभी ऐसी अनीति नही होने देगा। सुवोध कहता है—"साहसी पुरुपो की तरह, सकुचित भावो से नही वल्कि आत्मा को विकासमय करके विधवाओ पर दया करो"। भोजनभट्ट शगुनी वीरसेन के पुत्र जयमल को भी अपने पक्ष मे मिला लेते है। उसे लालच देता हे कि वीरसेन, सुशीला

सुबोध तीनो का काम तमाम कर सुशीला के नाम की गई सम्पत्ति के मालिक तुम बनो। वह धन के लोभ से पिता को बन्दी कर देता है और बहन को भूल जाता है पर अन्त मे सुबोध के सफल प्रयासो द्वारा वीरसेन मुक्त हो जाते है। सुशीला बचा ली जाती है और सुशीला सुबोध का विवाह हो जाता है। आनन्दीबाई नामक एक अन्य बाल विधवा के माध्यम से नाटककार ने उन ढोगी पडितो की पोल खोल दी है जो धर्म का ढोग रचाकर स्वय वासना मे जकडकर विधवाओ को वैधव्य मे पडे रहने पर विवश करते है। वे पुर्नविवाह का विरोध करते है। ऐसे पण्डितो का अन्त मे विचार परिवर्तन हो जाता है। भोजनभट्ट को आनन्दी से विवाह करना पडता है।

न्यू-जेंनटिल-मैंन वा नये बिगडैल (सन् १९२३, पृ० ६१), ले० हरशकर उपाध्याय, प्र० श्री काशी नाटक माला, कार्यालय, न० १०, मिश्र पोखरा, काशी, *पात्र* पु० ६, स्त्री ३; *अक-रहित*, *दृश्य* ८।
घटना-स्थल : सुसज्जित कमरा, दौलतराम का भीतरी महल इत्यादि।

प्रस्तुत प्रहसन के लिखने का उद्देश्य बताते हुए लेखक लिखता है "आजकल बाबू लोग, महाशयगण, पर्दे की आड मे क्या कर रहे है। जनता उनके धोखे मे आकर कैसी फसती है। फल क्या होता है वही आगे और दिखाने का विचार है।" रईस दौलतराम अपनी बैठक सजाये बैठा है। मस्तराम उसकी बडाई कर रहा है। दौलतराम अपनी बैठक को विदेशी रग-ढग से सजाता है। उसका मत है कि जब तक हम अपने को विदेशी ढग से नही सजायेगे रईस नही कहलायेगे—

यदि हम स्वदेशी वस्तु को,
निज देश मे अपनायेगे।
रईस नही कहलायेगे,
पदवी नही फिर पायेगे॥

दौलतराम मोहनीबाई को अपने रखैल के रूप मे रखता है। दौलतराम का भाजा राजाराम का मत है कि जो सच्चे रईस है, वे वेश्याओ से ही प्रेम करेगे और अपना धन नष्ट करेगे। दौलतराम तत्कालीन परिवेश को रूपायित करते हुए कहता है "सुनो, आजकल पहले अपना बबुआना, इसके बाद रखैल को गहना बनवाना, जोरू को चिथडे पहिनाना और रण्डी को पैरो पड मनाना ही रईसी का बाना है।" भाई खाने को न पाये लेकिन रण्डी का भाई सारा माल हजम कर जाये। फिर भी मूछो पर ताव रहेगा। दौलत राम का मन्त्री मस्तराम मोहिनी बाई के सहारे दौलतराम का सब धन ले लेता है और शेष नष्ट भी करा देता है।" अन्त मे मोहनी दौलतराम का साथ छोडकर मस्तराम को अपना लेती है। दौलतराम लौटकर अपने भाई के पास आता है और उससे प्रयाश्चित रूप मे अपने को उससे पीटने के लिए याचना करता है। उसका भाई भ्रातृत्व प्रेम का आदर्श प्रस्तुत करते हुए कहता है "ऐसा हो नही सकता। दया धर्म का मूल है। भाई-भाई को न माने तो यह उसकी भूल है।" और अन्त मे दोनो भाई गले मिलते है। दौलतराम सुधर जाता अपने परिवार मे सबसे प्यार करने लगता है।

न्यू लाइट (सन् १९३४, पृ० ३७), ले० : शिवराम दास गुप्त, प्र० . उपन्यास बहार ऑफिस, काशी, *पात्र :* पु० ४, स्त्री १, *अक* १, *दृश्य* ६।
घटना-स्थल · मकान, बाग, मार्ग, सभाभवन, ऑफिस।

इस प्रहसन मे आधुनिक जीवन की अग्रेजियत के प्रभाव से आने वाली विडंबनाओ पर व्यंग्य है। डाक्टर लाइमजूस फैशनेबुल बेटी सरला तथा खद्दरधारी दामाद मोहनदास के साथ बाते करते हुए बार-बार न्यूलाइट के अनुसार जीवन बिताने का उपदेश देता है। सरला अपने पिता की शिक्षा के अनुसार पुरुषो के साथ टेनिस खेलने जाती है पर मोहनदास विरोध करता है। इस कारण श्वसुर और दामाद मे कलह उठ खडा होता है पर सरला एक ऊँचे पद पर नियुक्त हो जाती है। मोहन भी न्यू लाइट मे रग जाता है। दोनो का वार्त्तालाप इस

प्रकार है—

सरला—माई डीयर हस्बैंड ।

मोहन—माई डीयर वाइफ ।

सरला—तुम कब देशी जूते और हिन्दुतानी धोती का वायकाट करोगे ।

मोहन—जब तुम विलायती वर्दरिया से भारत की देवी वन जाओगी । इसी प्रकार आफिस मे काम करने वाले क्लर्कों मे होने वाले हँसी-मजाक पर व्यग्य किया गया है ।

यह एक सफल प्रहसन है जो अल्प पात्रो के द्वारा खेला जा सकता है ।

प

पञ्च-प्रपञ्च (वि० १९८२, पृ० २०), ले० कमलनाथ अग्रवाल, प्र० अग्रवाल बुक डिपो चौखम्भा, काशी, *पात्र* पु० ८, अन्य स्त्री ०, अक-रहित, केवल पाच दृश्यो मे ।
घटना-स्थल : कम्पनी वाग, एक चौरास्ता, सेठ वशीलाल का कमरा ।

यह प्रहसन चुनावो मे धन लेकर वोट डालने वालो पर व्यग्य करता है । सेठ वशीलाल काशी के नामी सेठ है उनके विरुद्ध एक असहयोगी स्वराज्य दल वाले उम्मीदवार वैशाखनन्दन एलेक्शन लडते है। पहले तो सेठ जी का बोलवाला रहता है परन्तु जनता के जग जाने पर चुनाव मे सेठ जी हार जाते है और गाधी जी के दल के नेता वकील गिरधारीलाल को जनता अपना उम्मीदवार चुन लेती है । अत अन्य उम्मीदवार हार जाते है ।

पञ्चभाषा विलास नाटकम् (सन् १९६७, पृ० २२), ले० शहाजी (शाहजी), प्र० · तजाऊर गरभोजी महाराजा सरस्वती महल लाइब्रेरी, तजौर (मद्रास), *पात्र* पु० ४, स्त्री ४, *अक-दृश्य-रहित* ।

धर्मराज युधिष्टिर के राजसूय यज्ञ मे अनेक देशो के राजा सपरिवार आते है । इसमे श्रीकृष्ण भी सम्मिलित होते है । उस समय चार राजकुमारियाँ श्रीकृष्ण के रूप-सौन्दर्य पर मुग्ध हो जाती है और उन से प्रेम करते लग जाती है । द्रविड देश की राजकुमारी कान्तिमति, आन्ध्रदेश की राजकुमारी कलनिधि, महाराष्ट्र की राजकुमारी कोकिलवाणी, उत्तर प्रदेश की राजकुमारी सरसशिखामणी पूर्वराग एव विरह ताप का अनुभव कर, श्रीकृष्ण के समक्ष अपनी-अपनी भापा मे प्रेम निवेदन करती है। सौतिया-डाह के मारे एक दूसरे से झगडती है । अन्त मे श्रीकृष्ण उन सबको स्वीकार करते है और उन-उन भापाओ मे उनसे वातचीत कर उन सबको सन्तुष्ट करते है । मगल गीत के साथ नाटक समाप्त होता है ।

इस नाटक मे सूत्रधार सस्कृत भापा का प्रयोग करता है । इस प्रकार इस नाटक मे सस्कृत, तमिल, तेलुगु, मराठी और हिन्दी पॉच भापाओ का प्रयोग किया गया है ।

पंचमांगी (सन् १९६१, पृ० ११८), ले० राजकुमार, प्र० हिन्दी प्रचार पुस्तकालय, वाराणसी, *पात्र* : पु० ८, स्त्री ०; *अक* · ३, *दृश्य* · २, २, २ ।
घटना-स्थल . भारत चीन की सीमा, युद्ध भूमि ।

इसमे राष्ट्र की ज्वलन्त समस्या को आधार मानकर पर्वतीय क्षेत्रो की यथार्थ स्थिति को तीखे व्यग्य के साथ प्रस्तुत किया गया है। नाटक का मुख्य विपय है चीनी गुप्तचरो और साम्यवादी एजेन्टो द्वारा सीमावर्ती क्षेत्रो मे साम्यवादी प्रचार, भारत पर सीमा के अतिकमण को साधारण और

न्यायोचित घटना बताना, चीनियो के विभिन्न षड्यन्त्रो और षड्यन्त्र के तरीको का उद्-घाटन करना और भारत की जनता, पुलिस और अन्य अधिकारियो को सचेत करना। चीनी एजेन्ट सीमावर्ती क्षेत्रो मे वहा के निवासियो को उनकी गरीवी, सरलता आदि से लाभ उठाकर देशद्रोही बना अपना उल्लू सीधा करते है। वे सीमा के प्रश्न को वना-वटी साम्राज्यवादियो द्वारा उत्पन्न किया गया, पूंजीपतियो की युद्धप्रियता का निदर्शन आदि कहकर उसे टालने का प्रयास करते है। वे जनता को भडकाकर पुलिस का ध्यान अपनी ओर से हटाकर और उलझनो मे डालते है ताकि उनका षड्यन्त्र सफल हो सके। उन्हे सैनिक भेद लेने मे भय नही लगता, वे सीमा पार से प्रचार साहित्य का वडल प्राप्त करते रहते है और चीनियो के विरुद्ध युद्ध-विरोधी प्रचार करने मे नही चूकते। सीमा-वर्ती पर्वतीय क्षेत्रो की यथार्थ स्थिति—उनकी असहाय निरावलम्ब स्थिति, उनका धर्म के नाम पर शोषण, चुनाव के समय उनकी खुशामद और तदनन्तर उपेक्षा, मह-गाई, प्रतिदिन की आवश्यक वस्तुओ-कपडा, नमक, तेल आदि के अभाव, आदि का चित्रण कर लेखक ने वास्तविकता से परिचित कराने का प्रयास किया है।

पंचवटी (सन् १९५५), ले० शम्भू दयाल सक्सेना, प्र० नवयुग ग्रन्थ कुटीर,बीकानेर; *पात्र* पु० १, स्त्री २।

महाराज राम विमान से गोदावरी तट पर उतरकर अपने परिचित स्थानो को देखते है। राम सोचते है कि वह गुरु वशिष्ठ की आज्ञा से सभी पवित्र तीर्थो मे स्नान कर आये है लेकिन उन्हे मानसिक शान्ति क्यो नही मिल रही है। राम को गोदावरी के तट पर कुछ शीतलता का अनुभव होता है। राम को सीता की सखी वासन्ती दिखाई देती है। वह राम को नही पहचान पाती क्योकि अब वह वनवासी राम न होकर अयोध्या-नरेश राम है। राम के अपना परिचय देने पर वह पहचान लेती है। राम अपना अप-राध स्वीकार कर लेते है। वह कहते है—राम के दो रूप है एक रूप मे वह महाराजा है दूसरे रूप मे केवल रामचन्द्र। राम सीता को निरपराधनी मानते है और उनके वियोग मे अश्रु वहाते है। राम को वासन्ती अनेक स्थलो की सैर कराती है। घूमते-२ राम जब सेहुड के वृक्ष के पास आते है तो वहा सीता द्वारा सुन्दर अक्षरो मे अपना नाम लिखा देखकर व्याकुल हो जाते है। इसके साथ ही राम को अश्वमेघ यज्ञ का ध्यान है। धनु-भग का चित्र देखकर तो रो पडते है। वासन्ती रामचन्द्र जी को विमान पर चढा कर स्वय मूर्छित होकर भूमि पर गिर पडती है।

पंचवटी प्रसंग (सन् १९३१), ले० सूर्य-कान्त त्रिपाठी निराला।

इस नाटक मे रामायण के प्रसिद्ध प्रसग सूर्पणखा के प्रणय निवेदन का, विना किसी परिवर्तन के चित्रण हुआ है। इसके साथ ही राम-लक्ष्मण सीता के पचवटी-जीवन का चित्रण है। छद की दृष्टि से यह नाटक कविन्त की आधी पक्ति को आधार वनाकर मुक्त छद मे लिखा गया है। इस गीतिनाट्य मे गीतिमय स्वर आरम्भ से अन्त तक अन-स्यूत है। इस कृति मे प्रेम और सौन्दर्य के प्रति अधिकाधिक सूक्ष्म और अतीन्द्रिय रूप का सद्भाव व्यक्त हुआ है। इस कथा ने अधि-काश स्थलो पर कवि मात्र सकेतो से सवोधन देता हुआ आगे वढ गया है।

पंजाब केशरी (सन् १९२८, पृ० ११६), ले० जमना दास मेहरा, प्र० नारायण दत्त सहगल, लाहौर।
घटना-स्थल . घर, विद्यालय।

लाला लाजपतराय के जीवनी के आधार पर यह नाटक प्रस्तुत किया गया है। जिसमे छात्र एव अध्यापक के कर्त्तव्य दिखाये गये है। नाटक मे लाला लाजपतराय और एक अध्यापक का सवाद दिखा कर उन कठि-नाइयो का विवरण दिया गया है जो इस देश मे शिक्षा प्रचार के मार्ग मे बाधा डालने वाली है। इस अशिक्षित और निर्धन देश मे विद्यादान को महादान समझा जाता है किन्तु निर्धनता के कारण विद्यार्थी पुस्तक नही

खरीद पाता। वेतन की कमी के कारण अध्यापक अपना परिवार नही पाल पाता तो भी लाला लाजपतराय एक स्थान पर कहते है कठिनाइया सहकर भी जो अध्यापक विद्यार्थियो को विद्यादान देते है वे पुण्य कमाते है। शिक्षा प्रसार हेतु दीन-हीन विद्यार्थियो को पुस्तक की सहायता सस्था की ओर से होनी चाहिए।

पंजाब मेल (सन् १९३६, पृ० १२७), ले० मुँशी अब्बास अली साहब, प्र० . उपन्यास बहार आफिस काशी, बनारस, अक . ३, दृश्य ७, ७, ९।
घटना-स्थल नगर रामगढ, स्टेशन, घर आदि।

इस जासूसी नाटक मे धन लोभ, वासना पूर्ति के कारण हत्याये दिखाई गई है। नाटक के प्रथम अक मे स्टेशन मास्टर प्रेमचन्द के भ्रष्ट जीवन को प्रगट किया गया है। वह पत्नी विहीन है। वह अपनी पुत्री पद्मावती की शादी रामगढ के वृद्ध राजा मानसिंह से करके निश्चिन्त हो गया है। प्रेमचन्द कुलियो द्वारा रेल गोदाम से सभी उपभोग्य सामानो की चोरी करता है। स्वय मुसाफिरो को लूटता है। इस चोरी के धन को मैत्री के नाम पर रेल कर्मचारियो की पत्नियो के घर पहुँचाता है और बदले मे अपनी वासना-पूर्ति करना चाहता है। वह धनीराम गार्ड की पतिव्रता पत्नी सुन्दरी पर भी गुप्त मिलन प्रारम्भ करता है और चनापा मद्रासी बुकिंग क्लर्क की शिक्षित कन्या रमा को भी गाँठने का प्रयास करता है। धनीराम की अनुपस्थिति मे रेलवे पुलिस की सहायता से एक चोरी का चाँदी का पार्सल सुन्दरी को देकर अपना प्रणय निवेदन करता है। वह सती उसे दुतकारती है कि उसी समय धनीराम आ जाता है और प्रेमचन्द के दिये हुये हार को सुन्दरी के हाथ मे देखकर शका करता है। धनीराम का नौकर घमीटाराम, जो छिपकर प्रेमचन्द की पाप वार्ता को सुन रहा था, धनीराम को वास्तविकता से परिचित कर सती की रक्षा करता है। प्रेमचन्द चाँदी के पार्सल की चोरी के अभियोग मे उसे पकडना चाहता है कि धनीराम सिपाही को गोली मारकर फरार हो जाता है। प्रेमचन्द भी सुन्दरी को चोरी के अभियोग मे हवालात भिजवा देता है। करीमबेग, धनीराम की सहायता के लिए पहुँचता है और उसके पुत्र मोहन को धनीराम के पास भेजने का प्रबन्ध करता है। मोहन के पास २००० रु० देखकर कुली प्रेमचन्द की सहायता से उसका वध कर रु० लेना चाहता है। मोहन तो छिप जाता है किन्तु प्रेमचन्द का लड़का रतीलाल शराब के नशे मे उसी मे सो जाता है और मोहन के धोखे मे मारा जाता है। करीम बेग प्रेमचन्द और इन्सपेक्टर की साजिश को बैरा बनकर तोडता है और कप्तान के द्वारा इन्सपेक्टर को मुअत्तिल कराके सुन्दरी की जमानत करता है।

धनीराम और घमीटाराम मानसिंह की पुत्री चद्रिका को चम्पतराय द्वारा आभूषण छीन कर वध करने से रक्षा करते हैं। क्योकि प्रेमचन्द की युवा पुत्री पद्मावती बूढ़े से क्या प्रसन्न हो सकती थी। उसने चम्पतराय के द्वारा चन्द्रिका का वध कराकर अपना मार्ग निश्कटक बनाना आवश्यक समझा। राजा भी इस षड्यन्त्र मे रानी के हाथ होने की शका करता था कि भेद ही सारा प्रकट हो गया। राजा ने धनीराम गार्ड को दीवान बनाया। दीवान धनीराम रानी पद्मा को मुक्त कराता है और चम्पतराय को भी क्षमा प्रदान करता है। पद्मा अपने भाई के वध का समाचार पाती है। सुन्दरी न्यायी जन द्वारा निर्दोष सिद्ध हो जाती है। और करीमबेग की चतुराई ने घायल सिपाही को प्रस्तुत कर धनीराम भी हत्या के केस से मुक्ति पाता है। दोनो धनीराम के पास पहुँचते है। धनीराम सुन्दरी को रानी की नौकरानी और मोहन को भी नौकर रख लेता है। पद्मा पुन चम्पतराय को अपने मोहनी मत्र से षड्यन्त्र का पात्र बनाती है और मानसिंह को मार कर उसके वध का अभियोग सुन्दरी पर लगाना चाहती है। सुन्दरी सत्य और स्वामिभक्ति मे उसके षड्यन्त्र को असफल बनाती है, परन्तु अपराधिनी बनकर कारागार की हवा खाती है।

चनापा (मद्रासी) के घर प्रणय के अभद्र प्रदर्शनो मे प्रेमचन्द के स्थान पर

रामाराव बाजी मार लेता है और प्रेमचन्द तथा चनापा शराब के साथ अपनी-अपनी लगन का प्रबन्ध कर रहे है। प्रेमचन्द रभा से लगन करना चाहता है ओर चनापा किसी विधवा।

रानी पद्मावती पुन. चम्पतराय के साथ षड्यन्त्ररत दिखाई देती है। वह उसको अपना प्रेमी राजा बनाना चाहती है। उधर धनीराम पर भी प्रेम का ढोग करती है और उसे पति तथा राजा का लोभ दिखा न्याय के नाम से सुन्दरी का वध कराना चाहती है। राज्य लिप्सा और रूप आकर्षण धनीराम को पतित कर देते है और वह अपनी निरपराध सती का वध करने का दण्ड देता है। करीमवेग फकीर बनकर मोहन सुन्दरी की रक्षा करता है और धनीराम को धिक्कारता है। वही चम्पतराय को सचेत करता है और रानी आत्महत्या करती है। चन्द्रिका रानी तथा मोहन उसका पति बन जाते है। पद्मावती की विलासिता और अनाचार का अन्त होता है।

प्रेमचन्द भी अपने पुत्र की हत्या मे हाथ होने और स्टेशन दुर्घटना के कारण पकडा जाता है। वह अपना अपराध स्वय अनुभव करता है।

पन्द्रह अगस्त (सन् १९६०, पृ० ४६), ले० ठाकुरप्रसाद सिह, प्र० · राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ, *पात्र* पु० ८, स्त्री १, *अक* ४, *दृश्य-रहित*।

इस प्रतीकात्मक नाटक मे स्वतन्त्र भारत के आरम्भिक वर्षो मे होने वाली उथल-पुथल का चित्रण है। नाटक मे अको के प्रारम्भ मे पूर्वार्ध तथा अन्त मे काव्यार्थ का आयोजन परिस्थितियो के स्थापन एव अवसान का सूचक है। नाटककार रामाप्रसन्न, वलराज, चेतन, नन्दिनी, वल्लभ, जितेन्द्र इत्यादि पात्रो के द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् देश की उथल-पुथल चित्रित करता है। देश मे कैसे साम्प्रदायिकता की लहर फैली, सैकडो व्यक्ति पतझड के पत्तो की तरह अलग हो गये परन्तु देश इन सब अवरोधो के बीच से आगे वढा और सह-अस्तित्व, सद्भाव के महत् उद्देश्य की प्राप्ति हेतु प्रयास करता गया। इन घटनाओं को प्रतीकात्मक कथा के माध्यम से संवाद के रूप मे दिखाया गया है। विभिन्न प्रतीको मे 'मशाल' भविष्य का सकेत करता है जबकि 'तलवार' अतीत की परम्पराओ का द्योतन करती है।

पग-ध्वनि (सन् १९५२, पृ० १०५), ले० आचार्य चतुरसेन शास्त्री, प्र० आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, *पात्र* पु० २०, स्त्री १२, *अक : ६; दृश्यरहित*।

राष्ट्रपिता महात्मा गाधी के आदर्शो पर आधारित प्रस्तुत समस्या नाटक मे नोआखली के हिन्दू-मुस्लिम विद्रोह का चित्र खीचा गया है। छ अको वाले इस नाटक मे प्रत्येक अक मे केवल एक दृश्य है और वे न परस्पर सम्बद्ध है और न उनमे कोई सगठित कथानक ही है। उसमे केवल भावना के रेखाचित्र है। लेखक के शब्दो मे "भूमि मे केवल प्यार की पीडा है, प्रस्तावना मे पूजा है। प्रथम अक मे गाधी-दर्शन, दूसरे मे गाधी-भावना, तीसरे मे गाँधी-प्रभाव, चौथे मे गाँधी जीवन और पाँचवे मे विरोध-निराकरण और छठे मे गाधी-आदर्श है।" प्रथम अक मे गुरुदेव रवीन्द्र तथा शान्तिनिकेतन के एक अध्यापक के वीच वार्तालाप द्वारा यह प्रतिष्ठित कराया गया है कि युद्ध पशु की प्रकृति है और मानव जीवन प्रत्यक्ष धर्म और सत्य पर आश्रित हुए बिना अपूर्ण है। गाधी जी ने इन्ही को अपनाया है जिससे वे 'कालपुरुष' हो गए है। दूसरे अक मे नोआखाली मे हुए अनाचार और हिसा के ताण्डव नृत्य का सकेत कर यह सन्देश दिया गया है कि मानव को भय से भयभीत नही होना चाहिए। वह शोक और मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकता है उनकी अवमानता और उपेक्षा द्वारा। तीसरे और पाचवे अंक मे गाधी जी के सौम्य व्यक्तित्व का मुसलमानो के हृदय पर पडने वाले प्रभाव का वर्णन है जिससे कट्टर मुसलमान भी उनके भक्त बन जाते है। चौथे अक मे वा की करुणापूर्ण मृत्यु तथा ब्रिटिश शासन की निष्ठुर हृदयता का परिचय दिया गया है। छठे अक मे प्रतीकवादी पद्धति पर नागरिकता, सभ्यता, अहिंसा, राजनीति हिंसा

पूंजी, सत्य, धर्म, सत्याग्रह और असहयोग को पात्रो के रूप मे प्रस्तुत कर उनमे विरोधी पात्रो का संघर्ष दिखा यह वताया गया है कि अहिसा की शरण लेने और सत्य मार्ग का अनुसरण करने से ही मानव का कल्याण है।

पगली (सन् १९५९, पृ० ६४), ले० जगदीश शर्मा, प्र० . देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, पात्र पु० ६, स्त्री २, *अक* ३, दृश्य-रहित।

यह एक सामाजिक नाटक है। इसमे एक मासूम भिखारिन की कहानी है जिसे प्रकृति ने सुन्दरता तो दी है किन्तु समाज ने उससे सव कुछ छीन लिया। अन्त मे वह 'पगली' वन निर्दयी-समाज मे घूमती रहती है।

पठान ले० पृथ्वीराजकपूर, प्र० . पृथ्वी थियेटर्स, वम्वई, *अक* ३, *दृश्य* . १।

इस राजनीतिक नाटक मे हिन्दू मुसमान का स्वाभाविक प्रेम दिखाया गया है। इस नाटक मे पश्चिमी सीमा प्रान्त मे वसे हिन्दू मुसलमान, सिख परिवारो के परस्पर प्रेम का स्वस्थ चित्रण किया गया है। इस नाटक का आशय धर्म की आड़ मे लडाई और वैमनस्य को पनपाने वालो के लिए एक सीख है। नाटक मे दिखाया गया है कि किस तरह हिन्दू और पठान सकट आने पर एक दूसरे के सहायक होते है तथा मर मिटने के लिए तैयार रहते है। ऐमे ही आदर्श पठान परिवारो के त्यागमय जीवन की इस नाटक मे अमर कथा कही गई है। इस नाटक की पृष्ठ भूमि रुमानी है तथा नाटक का आरम्भ होते ही पाठक और प्रेक्षको को यह आभास सरलता से मिल जाता है कि वह सीमाप्रान्त के परिवारो का प्रत्यक्ष साक्षात् कर रहा है।

पडोसी (सन् १९६२, पृ० ८०), ले० वीरेन्द्र नारायण, पात्र पु० ५, स्त्री ४, *अक* ३।

इस राष्ट्रीय नाटक मे पजावी, मद्रासी तथा वगाली पडोसी परिवारो को एक दूसरे की मुसीवतो को सुलझाने मे अपना सहयोग देते दिखाया गया है।

किसी वडे शहर के किसी वडे मकान मे पजावी, मद्रासी तथा वगाली परिवार साथ-साथ रह रहे है। चावला, अय्यर तथा वनर्जी परिवारो के वच्चे पम्पी, सरला तथा अरुण एव ममता के वीच जाति भेद का स्वर उठता है किन्तु वनर्जी उसे नही मानते। वे वरावर जाति भेद को दूर कर राष्ट्र की एकता का स्वर मुखरित करते है। एक वार मद्रासी अय्यर की पत्नी वीमार होती है तो उनको रक्त की जरूरत पडती है। वनर्जी साहिव खून देने के लिए तैयार हो जाते है। इस प्रकार अय्यर पत्नी के जीवन की रक्षा होती है। वनर्जी को अपनी वेटी ममता की शादी करनी है। लडके वालो की माग दस हजार की है। इस सदर्भ मे अय्यर साहव उनकी सहायता करने का वायदा करते है। लडका नौकरी की तलाश मे है। जहा वह नौकरी करना चाहता है वहा अय्यर का एक रिश्तेदार है। अय्यर नौकरी उसे कह कर दिलवा देगे तथा लडके के पिता से कहेगे कि दस हजार के वदले नौकरी स्वीकार करो और यदि ऐसा नही होगा तो अय्यर को अपनी एक लडकी की शादी करनी है, वह यह मान लेगा कि दो लडकियो की शादी करनी है। चावला भी ममता को अपनी ही वेटी समझकर उसके लिए यथोचित सहायता करने का प्रण करते है। इस प्रकार ममता की शादी कलकत्ता मे तय हो जाती है और तीनो परिवारो की सहायता से उसकी तैयारी शुरू हो जाती है। सिद्ध हो जाता है कि देश एक है।

पड़ोसी (पृ० ६४), ले० · शिवदत्त मिश्र, प्र० . ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स वुकसेलर, वाराणसी, *पात्र* पु० ५, स्त्री २, *दृश्य* १६।
घटना-स्थल · गॉव, नगर, जगल, घर।

इस सामाजिक नाटक मे एकता के वल पर डाकुओ पर विजय दिखाई गई है। प्रदीप कुमार एक साहसी तथा उपकारी नौजवान है। जो डाकू अमरोला के गिरोह से अपने गाव की रक्षा करना चाहता है। देवेन्द्रसिह

की लडकी देवकुमारी अपनी इच्छा से प्रदीप कुमार के गले मे माला डालती है जिससे पिता नाराज हो जाते है। अचानक प्रदीप कुमार डाकुओ द्वारा गिरफ्तार कर लिया जाता है। लेकिन अपनी तीव्र बुद्धि से डाकुओ से छुटकारा पा जाता है। छुटकारा पाने पर प्रदीप कुमार अपनी पत्नी देवकुमारी के आभूषणो को बेचकर तथा सग्रामसिह द्वारा डाकुओ के इकट्टा किये हुए धन से एक सगठन तैयार करता है जिसमे लालसिह सहित कुछ ग्रामीणो की मदद से डाकुओ को भगाने मे तथा उन पर विजय प्राप्त करने मे सफल होता है।

पतन (सन् १९३७, पृ० १५६), ले० : जी० पी० श्रीवास्तव, प्र० माधो पब्लिशिग हाउस, प्रयाग; *पात्र* . पु० १५, स्त्री ३, *अक-रहित दृश्य* ६, ४।
घटना-स्थल सडक, कच्चा मकान, फुलवारी, मकान, आश्रम, स्टेशन आदि।

इस सामाजिक नाटक मे स्वेच्छा प्रेम और उसका परिणाम दिखाया गया है। भूमिका के आरम्भ मे नाट्यकार लिखते है "अपने ढग का यह अद्वितीय तथा निराला सामाजिक नाटक मै हिन्दी प्रेमियो की सेवा मे उपस्थित कर रहा हूँ। भाषा इसकी अत्यन्त सरल तथा प्रतिदिन के सकेत की है।" आगे लिखते है "कि चित्रपट के लिए ऐसे भावपूर्ण नाटको की सख्या कम होने के कारण यह चित्रपट के लिए विशेष रूप से लिखा गया है।"

सतीशचन्द्र एक आदर्श मध्यवर्गीय मनुष्य है जो डी० पी० आई के ऑफिस मे क्लर्की करता है। स्वाभिमानवश वह अपने लखपति चचेरे भाई विमलचन्द्र के पास नही जाता परन्तु विमलचन्द्र की मृत्यु के पश्चात् मित्र प्रफुल्ल के प्रयत्न से वह विमलचन्द्र की अचल सम्पत्ति की देख-रेख करने लगता है। उसकी आदर्श पत्नी कमला की सर्प-दश से मृत्यु हो जाने के बाद पुत्री प्रभा ही उसके लिए सब कुछ है। षोडशी प्रभा विजय नामक भ्रष्ट आचरण युवक के भुलावे मे पडकर उससे प्रेम करने लगती है। जबकि प्रभा के व्याह की तैयारी हो रही थी तभी विजय उसे अपने प्रेमजाल मे फँसाकर भगा ले जाता है। सतीशचन्द्र प्रभा की चिट्ठी से यह समझते है कि वह मर गई और विरक्त होकर अपनी सारी सम्पत्ति अनाथालय और धर्मशाले को दान दे देते है तथा स्वय सन्यास ले लेते है। उधर प्रभा विजय की दुश्चरित्रता तथा उपेक्षा से पीडित होकर भाग जाती है परन्तु कही न शरण पाने के कारण भिक्षाटन करती हुई मर जाती है। मृत्यु के पश्चात् उसकी लाश विजय और प्रफुल्ल आदि के समक्ष आती है। विजय को बडा ही पाश्चात्ताप होता है और वह स्वय भी अपनी सारी सम्पत्ति दान कर सन्यास ले लेता है तथा सतीश के साथ धार्मिक जीवन व्यतीत करने लगता है।

पतित पंचम (सन् १८८८), ले० बालकृष्ण भट्ट।

इस प्रहसन मे काग्रेस विरोधियो का परिहास दिखाया गया है। 'हिन्दी प्रतीप' मे इसका धारावाहिक प्रकाशन १८८८ ई० मे हुआ था। प्रस्तुत नाटक मे भट्ट जी ने काग्रेस विरोधियो की कटु आलोचना की है क्योकि ये लोग अग्रेजो के सहायक है। इस युग मे सर सैयद अहमद खॉ और शिवप्रसाद ये दोनो अग्रेजो के प्रसिद्ध खुशामदी है। काग्रेस की एक सभा हो रही है उसमे पाच काग्रेस विद्रोही आते है और सभा मे विघ्न डालते है। लेकिन सभा मे उनको कोई नही पूछता और अपना मुह लेकर लौट आते है।

कुतर्क वागीस भट्टाचार्य, मुहम्मद फालिज, सरसैयद अहमद खॉ, एक जमीदार और मुशीमार्जार ये पाच व्यक्ति काग्रेस के शत्रु है। नाटक मे इनका कलुषित चरित्र चित्रित किया गया है।

पतित सुमन (वि० १९९९, पृ० ७८), ले० . सेठ गोविन्ददास, प्र० गयाप्रसाद एण्ड सन्स आगरा, *पात्र* पु० २, स्त्री ४, *अक* : ५, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल शहर का उद्यान, देहात का मकान, शहर का मकान।

सुमन महामाया की पालित लडकी है।

वह उसके पुत्र विश्वनाथ के साथ खेलकर पली है। दोनो मे आपस मे वडा प्रेम है। जब ये दोनो काफी वडे हो जाते हैं तो महा-माया सुमन के जन्म का रहस्य खोल देती है। सुमन एक वेश्या की लडकी है। इसका परिणाम सुमन और विश्वनाथ दोनों के लिए ही वुरा निकलता है। सुमन का विवाह एक देहाती विक्रमसिंह के साथ हो जाता है। इधर विश्वनाथ का विवाह देवयानी से हो जाता है। विश्वनाथ एक दिन जमीदार एसोशियेशन के सभापति के रूप मे विक्रमसिंह के गाव मे आते है। वहा पर विश्वनाथ की भेट सुमन से हो जाती है। विश्वनाथ विक्रम को २०० रु० माहवार पर अपने यहा रख लेते है। परन्तु सबको सुमन के जन्म पर सदेह हो जाता है। उसके चरित्र पर भी लोग सन्देह करने लगते है। इस प्रकार के घृणित जीवन से ऊब कर अन्त मे सुमन अपनी हत्या कर लेती है।

पति-पत्नी (सन् १९६७, पृ० ११०), ले० : अमृत कश्यप, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, *पात्र* पु० ६, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल : घर।

इस सामाजिक नाटक मे पति-पत्नी को सुखी जीवन का मार्ग दिखाया गया है। इसमे दो गृहस्थो का वर्णन है। इसकी कथा सारे समाज की कथा है। विवाह होने से परस्पर पति-पत्नी के क्या कर्त्तव्य होने चाहिए इसका ही चित्रण इसमे है। पत्नी को पति पर हावी नही रहना चाहिए जैसाकि लक्ष्मी करती है। और न पति को पत्नी पर अत्याचार ही करना चाहिए जैसाकि निहाल चन्द करता है। आज के समाज मे दोनो का समान स्तर है तथा दोनो के बरावर सतुलित रहने पर ही गृहस्थ की गाडी चल सकती है। यह शिक्षाप्रद नाटक है तथा वर्तमान समाज के खोखलेपन का स्पष्ट अकन करता है।

पति परमेश्वर (सन् १९००, पृ० ४८), ले० दौलतराम कुकरेजा, प्र० · सूर्य प्रकाशन मन्दिर, वीकानेर; पात्र पु० ५, अक : २।

इस सामाजिक नाटक मे पति के अन्यायों को सहन करते हुए भी भारतीय नारी की पतिभक्ति दिखाई गई है। भक्तराम की तीन लडकियाँ हैं—रुक्मणी, कमला और रजनी। रुक्मणी का विवाह एक नपुसक व्यक्ति से हो जाता है। अत वह पितृ गृह लौट आती है। कमला को घर का कार्य इतना अधिक करना पडता है कि वह वीमार हो जाती है। उचित पथ्य, औषधि न मिलने से कमला की अकाल मृत्यु हो जाती है। भक्त-राम के वड़े लडके राम का विवाह हो जाता है। छोटा पुत्र लक्ष्मण कैप्टन वन जाता है। कुछ समय पश्चात् छोटी पुत्री रजनी का विवाह सुरेश नाम के युवक से हो जाता है जो कुसगति मे पडकर अपनी पत्नी और पुत्र को घर से निकाल देता है। इधर भक्त राम का स्वर्गवास हो जाता है। राम सुरेश को सम-झाता है परन्तु वह उसको भी अपमानित करता है। रजनी स्वय पढ-लिखकर एक कॉलेज की प्रिंसिपल वन जाती है। अन्त मे सुरेश ठोकरे खाकर सन्मार्ग पर आता है। जब वह अपनी पत्नी रजनी से मिलता है तो उसे मालूम होता है कि रजनी अब भी उसे परमेश्वर की तरह पूजती है।

पति भक्ति (पृ० ११२), ले० . विश्वनाथ पोखरेल, प्र० . ठाकुर प्रसाद गुप्ता वुक्सेलर, वाराणसी, *पात्र* : पु० ६, स्त्री २, *अक* : ३, *दृश्य* ६, ४, ३।

इस शिक्षाप्रद सामाजिक नाटक मे पत्नी की साधुता से पति का सुधार होता है। इसमे लक्ष्मी पतिभक्त पत्नी है। लक्ष्मी का पति अमीरचन्द शराव के नशे मे एक वेश्या कुन्दन से प्यार करने लग जाता है और लक्ष्मी तथा पुत्र महेन्द्र को घर से निकाल देता है। आत्माराम एक रईस व्यक्ति है जो अमीरचन्द को वुरे कर्मों से वचने के लिए समझाता है तथा दुखी लक्ष्मी को सान्त्वना देता है। अकस्मात् अमीरचन्द तथा कुन्दन मे बिगाड हो जाता है। गुण्डा युसुफ कुन्दन से प्रेम करता है किन्तु वह गुण्डे को नही चाहती। वह अमीरचन्द का कत्ल कर देता है जिसके अपराध मे मानिकचन्द

गिरफ्तार हो जाता है। अन्त मे मित्र आत्मा राम की मदद से लक्ष्मी जज के समक्ष हत्या का अपराध अपने ऊपर मान लेती है। लक्ष्मी की पतिभक्ति को देखकर कुन्दन वेश्या भी वहा प्रकट होकर सारा वृत्तान्त बता देती है। अन्त मे सभी को छुटकारा मिल जाता है किन्तु युसुफ को काला पानी की सजा दी जाती है।

पतिभक्ति (सन् १६२३, पृ० १०४), ले० श्यामाचरण जौहरी, प्र० उपन्यास बहार ऑफिस, काशी, *पात्र* . पु०, स्त्री, *अक* . ३; *दृश्य* . ७, ३, ३।
घटना-स्थल तपोवन, शिविर, फुलवारी, नदी तट, राजदरबार, जंगल का रास्ता।

इसमे सतीसुकन्या के पातिव्रत की महिमा दिखाई गई है। सुकन्या बाल्यकाल मे सखियो के साथ एक तपोवन मे जाती है। उसे दो चमकते हुए रत्न जैसे पदार्थ मिट्टी के ढेर मे दिखाई देते है। सुकन्या उनमे काटे चुभा देती है। उन रत्नो से रक्त की धारा प्रवाहित होती है। फिर किसी के कराहने की आवाज सुनाई पडती है। ज्ञात होता है कि वह च्यवन ऋषि वहाँ तपस्या कर रहे थे। अत सुकन्या माता-पिता के मना करने पर भी बूढ़े च्यवन से विवाह कर आजीवन उनकी सेवा करती है। उसकी तपस्या से च्यवन वृद्ध से युवा बन जाते है।

पतिभक्ति नाटक अर्थात् (सती अनुसूया) (सन् १६६५, पृ० ७३), ले० दाऊदयाल गुप्ता 'साहित्य रत्न' प्र० . हिन्दी पुस्तकालय, मथुरा, *पात्र* पु० १२, स्त्री ६, *अक* . ३; *दृश्य* · १०, ५, ४।

इस पौराणिक नाटक मे सती अनुसूया की पतिभक्ति दिखाई गई है। सती अनुसूया अपने पति के लिए जल की तलाश मे व्यग्र भाव से घूमती हुई भागीरथी से प्रकट होकर जल देने की प्रार्थना करती है और जल पाकर पति को भी गगा का दर्शन कराती है। वह अपने सतीत्व के प्रताप से तपस्विनी सत्यवती को सदेह स्वर्ग भेजती है जिससे स्वर्ग मे कुहराम मच जाता है। सत्यवती स्वर्ग से वापस आती है और नित्यानन्द सूरदास से शादी कर उनकी सेवा करती है। एक दिन पति-मृत्यु के ऋषि शाप को सतीत्व के बल से रोक लेती है। एक दिन वह सती सूर्य को उगने से रोक देती है। पर अन्त मे पति के मरने पर प्राण त्यागती है पर अनुसूया के प्रताप से दोनो जीवित हो जाते है। त्रिदेवियाँ काम भेजकर सती अनुसूया की परीक्षा लेती है। 'काम' अत्रि के वेश मे सती को छलना चाहता है। सती तप से उसे पहचान जाती है। काम नतमस्तक हो स्वर्ग लौट जाता है।

त्रिदेवियाँ अपने-अपने पतियो ब्रह्मा, विष्णु, महेश से सती अनुसूया की परीक्षा लेने को कहती है। वे तीनो जाते है और अत्रि मुनि के आदेश से तीनो को छ-छ. मास के पुत्र बनाकर अनुसूया हाथ से अपना दुग्ध पिलाती है। त्रिदेवियाँ विचलित होकर सती के पास सन्यासिनी बनकर आती है और अपने-अपने पति माँगती है। सती पहचान जाती है और अत्रि के आदेश से उन्हे अपने स्वरूप मे होने की अनुमति प्रदान कर तीनो देवियो को सौपती है। उसके सतीत्व से त्रिदेवियाँ, इन्द्र, काम, त्रिदेव आदि नतमस्तक होते है।

नाटक मे मध्यान्तर के निमित्त हास्य कथा का आयोजन किया गया है। अक्खडनाथ, किचलू, बदलू, ककाली आदि के प्रसग अधिकारी कथा के साथ-साथ चलते रहते है। नाटककार ने सती धर्म की प्रतिष्ठा तथा नैतिक शिक्षा देने के लिये ही नाटक लिखा है।

पत्नी-प्रताप वा सती अनुसूया नाटक (सन् १६०७, पृ० ११७), ले० मुशी नायक साहब, शिवराम दास गुप्त, प्र० उपन्यास बहार ऑफिस, बनारस, *पात्र :* पु० ४, स्त्री ६, *अक* ३, *दृश्य :* ८, ६, ३।

इसकी कथा उपर्युक्त नाटक जैसी ही है।

पत्नी-प्रताप (पृ० १७७), ले० नारायण प्रसाद बेताब, प्र० . बेताब प्रिंटिंग वर्क्स, देहली; *पात्र :* पु० ८, स्त्री ७, *अक :* ३; *दृश्य :* ८, ८, ६।

यह एक पौराणिक नाटक है। इसमे अत्रि और अनुसूया की प्रसिद्ध कथा है। देवी अनुसूया के पास ब्रह्मा, विष्णु, महेश अतिथि के रूप मे आते है और अनुसूया से दिगम्बरा रूप मे भोजन कराने के लिए आग्रह करते है। तब अनुसूया त्रिदेवो को अपने शिशु रूप मे देखकर भोजन कराने को प्रवृत्त होती है और उसी समय स्तनो से दूध गिरने लगता है फलत ब्रह्मा, विष्णु, महेश, दत्तात्रेय भगवान के रूप मे प्रकट हो अनुसूया को कृतार्थ करते है।

पत्नी प्रसाद (सन् १९७०, पृ० ११), ले० शंकरदेव, प्र० : हिन्दी विद्यापीठ, आगरा; *पात्र* . पु० ६, (बालक-वृन्द और ब्राह्मण समूह), स्त्री २, (बहुत सी ब्राह्मण वधुएं और गोपियाँ), *अंक-दृश्य-रहित* ।

इस पौराणिक नाटक मे ब्राह्मणियो का कृष्ण प्रेम दिखाया गया है। एक दिन कृष्ण गोपगणो के साथ गोचारण हेतु वृन्दावन मे घूमते-घूमते एक अशोक वृक्ष की छाया मे क्षुधातुर होकर बैठे है। गोपगण कृष्ण से अपनी क्षुधा की चर्चा करते हुए भोजन की व्यवस्था का आग्रह करते है। पास मे ब्राह्मण एक यज्ञ कर रहे है। कृष्ण भूखे ग्वालो को यज्ञ मे ब्राह्मणो से याचना के लिए भेजते हैं किन्तु गर्व से भरे ब्राह्मण ग्वाल बालो की यज्ञ मे प्रार्थना ठुकरा देते है। ग्वाल बाल कृष्ण से ब्राह्मणो की भर्त्सना की चर्चा करते है। तब कृष्ण ग्वालो को ब्राह्मण स्त्रियो के पास भेजते है। ब्राह्मण स्त्रिया कृष्ण का संदेश सुनकर ग्वाल बच्चो को भोजन देती है और कृष्ण की श्रद्धापूर्वक आराधना करती है। ब्राह्मण अपनी स्त्रियो को कृष्ण की आराधना से रोकते है और एक निर्दय ब्राह्मण तो अपनी स्त्री को घर मे बन्द कर देता है। वह ब्राह्मणी कृष्ण के चरणो का ध्यान करती हुई शरीर त्याग देती है। उस निष्ठुर ब्राह्मण के हृदय मे परिवर्तन होता है और वह अपने निष्ठुर कृत्यो पर पश्चात्ताप करता है। फिर कुमारियाँ कृष्ण के पास आती है। कृष्ण और ब्राह्मण कुमारियो का मार्मिक संवाद होता है। यज्ञ मे द्विज कुमारियो को आमन्त्रित देवताओ का प्रत्यक्ष दर्शन होता है। कृष्ण की शक्ति देखकर यज्ञकर्त्ता ब्राह्मण चकित रह जाते है और अपना गर्व त्यागकर कृष्ण की भक्ति करने लग जाते है।

पत्नी व्रत वा ऋतुध्वज मदालसा (सन् १९२१, पृ० १०३), ले० श्रीयुत चन्द्र बरेली; प्र० उपन्यास बहार ऑफिस, काशी, बनारस, *पात्र* पु० ३, स्त्री २, *अंक* : ३; *दृश्य* . ६, ८, ७।
घटना-स्थल राजमहल शत्रुजित का दरबार।

इस पौराणिक नाटक मे सती मदालसा की कथा के द्वारा सतीत्व की महिमा दिखाई गई है। यह नाटक लेखक ने १८ वर्ष की अवस्था मे लिखा है। सवाद पद्य-गद्यात्मक है। मदालसा कहती है—दामिनि दमके चहुतरफ रह्यो है मघवा छाय। रिमझिम पड़त फुहार सखीरी पिय अबहूँ नही आय।

सखिया—आवेगे श्री महाराज, महारानी करलो शृगार। नाटक के अन्त मे महाराज ऋतुध्वज एवं मदालसा को सौपकर तपस्या के लिए तपोवन चले जाते है। इस प्रकार इस नाटक मे सतीत्व की महिमा का वर्णन है।

पद्मिनी (सन् १९२६, पृ० १६०), ले० : किशनचन्द जेबा, प्र० नेशनल बुक डिपो नई सडक, देहली, *पात्र* पु० ६, स्त्री ५; *अंक* ३, *दृश्य* : ६, ५, ६।
घटना-स्थल वाटिका, राजा भीमसिंह का राज प्रसाद, शाही ईवान, रास्ता, रनवास, चिता की राख।

इसमें इतिहास-प्रसिद्ध सती नारी पद्मिनी के बलिदान की घटना व्यक्त की गई है। पद्मिनी के सौंदर्य की प्रशसा सुनकर अलाउद्दीन चित्तौड पर आक्रमण करता है। वह दर्पण मे पद्मिनी की छाया देखकर उसे अधिकार मे करने की चेष्टा करता है। तीसरे अंक मे रूह प्रकट होकर अलाउद्दीन को समझाती है पर वह अडिग रहता है। नेकी और बदी भी पात्र बनकर उसे समझाती है पर वह घोडे से राजपूतो को अपनी विशाल शक्ति

से पराभूत करता है। राजपूत युद्ध मे कट मरते है और पद्मिनी सहित राजपूतनियाँ जौहर मे भस्म हो जाती है। राख की ढेर देखकर अलाउद्दीन प्रतिज्ञा करता है—

न हो पूजन जहाँ दोनो का
ऐसा घर नही होगा,
गौ और धर्म को भारत मे
कोई डर नही होगा ।।

भारतीय पतिपरायण नाटक माला का यह प्रथम रत्न है।

पद्मिनी (सन् १९५४, पृ० ६८), *ले०* : पी० दामोदर शास्त्री, *प्र०* विजय प्रकाशन मथुरा; *पात्र* पु० १०, स्त्री ३, *अक* : ४; *दृश्य* . ४, १०, ४, १।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। पद्मिनी के बलिदान के आधार पर राजपूत स्त्रियो का सतीत्व दिखाया गया है। अलाउद्दीन अपनी गुजरात विजय के बाद कमलादेवी से प्रेमालाप कर रहा है। कमलादेवी अपने अकेलेपन से ऊब चुकी है। वे अपने साथ देवलदेवी तथा अन्य रानियो के रहने के लिए आकाक्षा करती है। तब अलाउद्दीन कहता है कि मै तुम्हारे साथ रहने के लिए चित्तौड की पद्मिनी को लाऊगा जो कि बहुत सुन्दर है तथा उसकी प्रशसा मैंने बहुतो से सुन रखी है। तब कमलादेवी कहती—है किन्तु वह राजपूत रमणी है, ध्यान रखना। उसका यही कथन ही पद्मिनी के शौर्य का प्रमाण देता है। अलाउद्दीन चित्तौड पर आक्रमण करता है किन्तु उसकी विजय नही होती। पर अन्त मे वह धोखे से भीमसिंह को गिरफ्तार कर लेता है। गोरा बादल अलाउद्दीन के विरुद्ध युद्ध करते है किन्तु हारते है। अलाउद्दीन जीतने के बाद राजमहल मे प्रवेश करता है पर तब तक पद्मिनी चिता मे जलकर जौहर कर लेती है और वह हाथ मलता रह जाता है।

नाटककार इसके बाद चौथे अंक मे चित्तौड़ को पुन सगठित होने की कल्पना कर अजयसिह को महाराजा बनाता है तथा चित्तौड की स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण बनाने का प्रयास करता है।

पद्मिनी (सन् १९५६, पृ० २३४), *ले०* प० रूपनारायण पाण्डेय, *प्र०* रामकुमार प्रेस, बुक डिपो, लखनऊ, *पात्र* पु० १४, स्त्री ६, *अक* ५, *दृश्य* ६, ५, ६, ८, ६। *घटना-स्थल* : चित्तौड, युद्ध भूमि, जौहर।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है जिसमे अलाउद्दीन की क्रूरता, राजपूतो की शूरता और राजपूतनियो की वीरता प्रदर्शित है। दिल्ली के तख्त पर अलाउद्दीन खिल्जी अपने चाचा जलालुद्दीन को मारकर बैठ गया। वह उस समय वजीर की पुत्री नसीबन से प्रेम करता था किन्तु सम्राट बनते ही उसे त्याग दिया। यद्यपि उसका निकाह हो चुका था। नसीबन चित्तौड मे आकर शरण लेती है। जब बादशाह के सिपाही गुजरात जीतने जाते है तब वह उनसे मिलती है। गुजरात की रानी कमलादेवी अपने पति के मारे जाने के बाद अलाउद्दीन के हरम की रानी बन जाती है। अलाउद्दीन उसकी प्रशसा करता है तब नसीबन कहती है कि चित्तौड की रानी इससे कई गुना सुन्दर है। ऐसी तो उसकी बाँदिया है। यह सुन अलाउद्दीन उसे देखने और प्राप्त करने की प्रतिज्ञा करता है पर नसीबन कहती है कि आप जीते जी उसे देख नही सकते। अलाउद्दीन चित्तौड पर आक्रमण करता है पर हार जाता है तब वह कूटनीति से काम लेता है और राणा भीमसिंह का मेहमान बन अन्दर जाता है। फिर राणा भीमसिह उसे पहुँचाने जाता है तब अलाउद्दीन उसे गिरफ्तार करवा लेता है। पद्मिनी गोरा और बादल की सहायता से ७०० डोलियो मे आत्मसमर्पण करती है किन्तु इसमे सभी सिपाही थे बादल राणा को अलाउद्दीन के अधिकार से भगा लाता है। इसमे नसीबन बडी मदद करती है। अन्त में बादशाह की सेना चित्तौड को घेर लेती है। राणा भीमसिंह और पद्मिनी आपस मे मिलते है और एक साथ जौहर करके चिता मे जल जाते है तथा पद्मिनी अपने सतीत्व की रक्षा करती है।

जायसी के पद्मावत से इस कथा मे बडा अन्तर है। पात्र और कथा मे काफी परिवर्तन है जो कि नाटककार की कल्पना

का प्रमाण मालूम पड़ती है।

पनाह (सन् १९५७, पृ० १३६), ले० · बलराम चौहान, प्र० आदर्श पुस्तक भंडार, कलकत्ता, पात्र · पु० १३, स्त्री ३, अंक ३; दृश्य : ८, ७, ६।
घटना-स्थल राजदरबार, शाही महल, युद्ध-स्थल, शिविर, शाही बाग, राजपथ।

ऐतिहासिक धरातल पर आधारित 'पनाह' नाटक राजपूतों के शौर्य, स्वाभिमान की उज्ज्वल गाथा है। शरण में आये हुए की हर प्रकार से अपनी जान की बाजी लगाकर भी रक्षा करना भारतीय आदर्श है—यही स्पष्ट करना नाट्यकार का उद्देश्य है।

प्रथम अंक का प्रथम दृश्य शिविर का है जहाँ मीर मुहम्मद जलीलों की गुलामी बर्दाश्त न कर सकने के कारण रणथम्भौर के राजा हम्मीर की पनाह में जाता है। दूसरा दृश्य राजदरबार का है—जहां राजा हम्मीर की न्यायप्रियता का चित्रण हुआ है। भाई होते हुए भी भोजदेव को उसके विश्वासघात के दण्डस्वरूप निर्वासन देते हैं तथा अलाउद्दीन के शौर्य की परवाह न करते हुए उसके बागी मीर मुहम्मद को पनाह देते हैं। तीसरा दृश्य शाही महल का है जिसमें बागी मीर मुहम्मद को पनाह देने वाले राजा हम्मीर पर आक्रमण की बात होती है। चौथा दृश्य शाही महल का है जिसमें शाहजादा मुबारक के माध्यम से राजाओं की विलासिता का यथार्थ चित्रण किया गया है। बादशाह का कानून केवल प्रजा के लिए है। शहजादे के लिए नहीं जो शराब के प्यालों में डूबा हुआ है। नसरत खाँ शाहजादा मुबारक को शहर कोतवाल की लड़की नादिरा के लिए उकसाता है और दोनों नादिरा के पास जाते हैं। पाचवें दृश्य में अलाउद्दीन गुजरात की रानी कमला की जिद्द को देखते हुए उसे हथकड़ियाँ पहना खाना बन्द करने का हुक्म देता है। छठे दृश्य में शाहजादा मुबारक के लाख प्रलोभनों पर भी नादिरा नहीं मानती और वे उसे पाँच दिन का वक्त सोचने के लिए देते हैं—कारण नादिरा मीरमुहम्मद को चाहती है। सातवाँ दृश्य शाही महल का है। सिपाही भोजदेव को कैदी जासूस समझ राजा के सामने पेश करते हैं। अलाउद्दीन भोजदेव को राजा हम्मीर का भाई जानकर उससे मित्रता बढ़ाकर शाही महल में रहने की व्यवस्था करते हैं तथा रणथम्भौर पर हमला करने के लिए फौज कूच करती है। आठवां दृश्य शाही बाग का है जहां कमला भोजदेव को अपने कर्त्तव्य के प्रति सचेष्ट करती है तथा भोजदेव शाहजादा मुबारक के इरादे को नाकाम कर देता है और नादिरा भाग जाती है।

दूसरे अंक के पहले दृश्य में राजदरबार में अलाउद्दीन का पत्र पढ़कर आक्रमण की तैयारी की जाती है जिससे राजपूतों का शौर्य झलकता है। दूसरे दृश्य में पठान सिपाही दुश्मन की ताकत से परेशान हैं और शाहजादा मुबारक इश्क में अन्धा होकर किले की तरफ बढ़ता है जहां नादिरा भागकर छिप गई है। तीसरे दृश्य में पुरुषवेश में नादिरा को मीर मुहम्मद पहचान नहीं पाता और रतिपाल नादिरा को जासूस समझ कर मीरमुहम्मद की वफादारी पर शक करते हैं। मीरमुहम्मद झूठा इल्जाम नहीं सह सकता और अकेले दुश्मन से जूझने के लिए चल पड़ता है। चौथे दृश्य में मीरमुहम्मद नसरत खाँ को कत्ल कर शाहजादे का पीछा करता है और राजा हम्मीर नादिरा को रणथम्भौर ले जाते हैं। पाँचवें दृश्य में राजा हम्मीर विजय के उपलक्ष्य में मीरमुहम्मद नादिरा को सौंप देते हैं। छठे दृश्य में पठान सैनिक अपनी हार का कारण शाहजादा मुबारक को मानकर उसे परेशान करते हैं। सातवें दृश्य में भोजदेव अलाउद्दीन को कमला पर जुल्म करने से रोकता है। और भोजदेव पर अलाउद्दीन के वार करने पर बीच में आकर कमला अपने प्राण दे देती है।

तीसरे अंक में अलाउद्दीन अपनी हार को जीत में बदलता है। सन्धि के नाम पर तथा भोजदेव का झूठा नाम लेकर छल से रणथम्भौर जीत लेता है। इसमें राजा हम्मीर की शरणागत वत्सलता का सुन्दर चित्रण है। वे अपनी मौत से पहले मीरमुहम्मद को किसी सुरक्षित स्थान पर भेज देना चाहते हैं और मीर भी उनकी पूरी सहायता करता है।

पन्ना धाय (पृ० १२०), ले० · [illegible] चारण, प्र० : महर्षि मालवीय [illegible]

परिषद् उपासना मन्दिर उगड्डा (गढवाल), पात्र पु० १७, स्त्री ७, अक ३; दृश्य · १०, १०, ७।
घटना-स्थल चित्तौड कमलणर, वनमार्ग राजप्रासाद।

प्रस्तुत ऐतिहासिक नाटक मे सिसोदिया कुल के वशधर की रक्षा करने वाली पन्ना धाय का पुत्र-बलिदान दिखाया गया है। राजा विक्रमादित्य को वनवीर मार डालता है। विक्रमादित्य के मारे जाने से प्रजा वनवीर के विरुद्ध हो जाती है। वह उदयसिह को भी मार डालने की बात करता है परन्तु पन्ना धाय इस बात को सुन लेती है और उसे बचा लेती है। बडा होकर उदयसिह छोटी सी सेना और दूसरे राजाओ का सहारा लेकर वनवीर पर चढाई कर देता है। वनवीर हार जाता है। अन्त मे वनवीर को राजगद्दी से उतरना पडता है तथा उदयसिह वनवीर को क्षमा भी कर देता है।

परदा (सन् १९३६, पृ० ५९), ले० : श्रीयुत महावीर बेनुवश, प्र० हिन्दी प्रचारिणी सभा यवतमाल, *पात्र :* पु० १३, स्त्री ८, अक १, *दृश्य* ८।
घटना-स्थल घर, सभास्थल।

'परदा' एक सामाजिक नाटक है। इसमे पर्दाप्रथा पर प्रहार किया गया है। नाटक की एक पात्र चम्पा के शब्दो मे—"हमारी सभा प्रस्ताव करती है कि स्त्री समाज मे पर्दारूपी एक असाध्य बीमारी घुसी हुई है, इससे स्त्रियो का शारीरिक, नैतिक और आत्मबल नष्ट होकर स्त्रियॉ डरपोक और कायर बन जाती है। अन्त मे क्षय जैसी बुरी बीमारी के चगुल मे फसकर शीघ्र ही काल के जाल मे समा जाती है। इसलिए स्त्रियो को पर्दा एकदम हटा देना चाहिए।

परदे की ओट अक्ल की चोट उर्फ मूर्खानन्द (सन् १९६४, पृ० ६२), ले० · मूलचन्द बेताब, प्र० जवाहर बुक डिपो, मेरठ, *पात्र* · पु० ७, स्त्री ७।
घटना-स्थल सेठ का घर, विवाह मडप।

इस सामाजिक नाटक मे चार विवाह करने वाले मूर्खानंद का चित्रण है।

यह एक देहाती ड्रामा है। जबलपुर शहर के सेठ लक्ष्मी चन्द जौहरी के चार लडके है। उनमे से तीन की शादी हो चुकी है। सबसे छोटे विक्रमसेन उर्फ मूर्खानन्द ही सदैव शादी से इन्कार करता था, किन्तु जब उनकी तीनो भाभिया माला, बाला, उर्मिला उसे ताने मारने लगती है, तब वह अपने साहस, बुद्धि आदि से 'राजा, वजीर, नट और सेठ की लडकी से कुल चार शादिया करता है। इस तरह विक्रमसेन उर्फ मूर्खानन्द काफी मालदार और राजा बन बैठता है।

परमभक्त प्रह्लाद-नाटक (सन् १९३३, पृ० १८४), ले० : राधेश्याम कथावाचक, प्र० · राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, *पात्र* पु० १०, स्त्री ५, *अक* ३, *दृश्य* ७, ६, ६।
घटना-स्थल हिरण्यकश्यप की राजधानी राक्षस-दुर्ग, खम्भा।

इस पौराणिक नाटक मे प्रह्लाद की सत्यनिष्ठा और ईश्वर-भक्ति दिखाई गयी है; हिरण्यकश्यप एक आततायी एवं परम अभिमानी राजा है। वह ईश्वर को नही मानता तथा स्वयं को ईश्वर कहता है। ईश्वर का नाम लेने वालो को वह मृत्युदण्ड देता तथा नाना प्रकार से प्रताडित करता है। पर उसी का पुत्र प्रह्लाद ईश्वर का परम भक्त है। हर कष्ट के बाद भी वह ईश्वर का नाम लेना नही छोडता जिसके परिणाम-स्वरूप हिरण्यकश्यप उसे मार डालना चाहता है, परन्तु भगवान् स्वय नरसिह के रूप मे प्रकट हो उसकी प्राण रक्षा करते है एव हिरण्यकश्यप को मार डालते है।

परमवीर चक्र (वि० २०१०), ले० कुँवर वीरेन्द्र सिह रघुवंशी, प्र० आर्मी मस्कैट्री स्टोर्स, दिल्ली, *पात्र* पु० १८, स्त्री २, *अक* २, *दृश्य* ८, ७।

इस सामाजिक नाटक मे प्रेमी-प्रेमिका का कष्ट सहन के उपरान्त मिलन और देश-हित दिखाया गया है।

नाटक का नायक रणधीर अपने सहयोगी विजय सिह एव जमाल के सहयोग से असामाजिक तत्त्वो के चगुल मे फँसी अछूत कन्या

निर्मला का उद्धार करता है। निर्मला अपने उद्धारकर्त्ता रणधीर के प्रति सहज रूप मे आकृष्ट हो जाती है। विजय सिंह निर्मला की विधर्मी सखी नसीम के प्रेमपाश मे आबद्ध हो जाता है, परन्तु पारिवारिक विरोध के कारण वे प्रेमी-प्रेमिका वैवाहिक वन्धन मे बँध नही पाते। हताश होकर रणवीर एवं विजय सैनिक प्रशिक्षणार्थ विदेश चले जाते हैं। निर्मला एव नसीम 'परिचारिका' का पद ग्रहण कर देश-सेवा का मार्ग पकडती है। कतिपय स्वार्थान्ध व्यक्तियो के कारण देश का विभाजन होता है। काश्मीर पर पाकिस्तानी सैनिक प्रवल आक्रमण करते है। जनरल करियप्पा के अनुरोध पर रणधीर एवं विजय अपने प्राणो पर खेल कर शत्रुओ पर प्रवल आक्रमण करते हैं। अपने बुद्धि-चातुर्य से वे शत्रुओ से घिरी भारतीय सेना की रक्षा करने मे सफल होते है। इस प्रयत्न मे रणधीर एव विजय दोनो स्वय युद्ध के अग्रिम मोर्चे मे घिर जाते है। सकट की वेला मे निर्मला एव नसीम दोनो किसी प्रकार अपनी प्राण-रक्षा करती हैं। शत्रु का पराभव हो जाता है। रणधीर एव विजय को अपने शौर्यपूर्ण कार्यो के लिए "परमवीर चक्र" का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त होता है। रणधीर निर्मला और विजय तथा नसीम वैवाहिक वन्धन मे आवद्ध हो जाते है।

परशुराम नाटक (सन् १९३१ पृ० १२६), ले० अज्ञात, प्र० वाबू वैजनाथ प्रसाद वुकसेलर राज-दरवाजा, वनारस, *पात्र*. पु० ६, स्त्री ४, अक ३, *दृश्य* ६, ७, ५। *घटना-स्थल* आश्रम-स्थान, वन, धनुषयज्ञ।

यह पौराणिक नाटक है। इसमे, परशुराम की पौराणिक कथा नाटकीय ढग से प्रस्तुत की गई है।

परशुराम कार्त्तवीर्य सहार (सन् १९५०, पृ० ११२), ले० विश्व, प्र० . वाबू वैजनाथ प्रसाद वुकसेलर, वनारस, पात्र पु० ६, स्त्री ?, अक ३ दृश्य ६, ७, ५। *घटना-स्थल* · तपोवन, युद्धक्षेत्र, राजप्रासाद।

यह एक पौराणिक नाटक है, जिसमे परशुराम पितृवध का वदला कार्त्तवीर्य से लेते हैं। ऋषि जमदग्नि के यहाँ भगवान विष्णु परशुराम के रूप मे क्षत्रियो के अत्याचार को पृथ्वी से हटाने के लिए अपना छठा अवतार लेते है। परशुराम पितृभक्त है। एक वार उनकी माँ रेणुका अपने पति जमदग्नि के लिए गगा से जल लेने जाती है, किन्तु वहा सध्या के सुहावने वातावरण को देखने मे देर हो जाती है अत ऋषि को सध्या मे अनावश्यक विलम्ब होता है। इससे वे वडे कुपित होते है और परशुराम को आज्ञा देते हैं कि पति की अनुज्ञा करने वाली इस स्त्री का सिर काट लो। परशुराम पिता की आज्ञा सर्वोपरि मान ऐसा ही करते हैं किन्तु जमदग्नि पुन. अपने तपोवल से रेणुका को जीवित कर देते है।

जमदग्नि के पास इन्द्र की दी हुई कामधेनु गाय है, जिसे कार्त्तवीर्य हठात् लेने का उपक्रम करता है और जमदग्नि के न देने पर उनकी हत्या करता है। परशुराम को पता चलने पर वे कार्त्तवीर्य को समूल नष्ट करने की प्रतिज्ञा करते है। आखिरकार वे कार्त्तवीर्य, उनकी पत्नी, एव पुत्र निमिवीर्य की हत्या कर क्षत्रियो को समूल नष्ट कर अपने पिता की हत्या का वदला लेते हैं।

परशुराम-विजय व्यायोग (सन् १४३५, पृ० ३०), ले० गणपति श्री कपिलेन्द्रदेव; प्र० हिन्दी विद्यापीठ, आगरा, *पात्र* . पु० ३, स्त्री २; *अक-दृश्य-रहित*। *घटना-स्थल* . शिव निवास, कैलास, गगातट, मार्ग।

इस पौराणिक नाटक मे परशुराम और सहस्त्रबाहु का युद्ध दिखाया गया है।

भगवान् विष्णु, कृष्ण और रुक्मिणी की स्तुति के उपरान्त सूत्रधार जगन्नाथ-महोत्सव की दर्शनार्थी जनता को नाटक के अभिनय की सूचना देता है। इसके वाद सूत्रधार पारिपार्श्विक से शकर के शिष्य उस परशुराम की प्रशसा करता है जो तीनो कालो के विज्ञाता है। पारिपार्श्विक भी कपिलेन्द्र से उसका परशुराम से देता है। इसके वाद परशुराम जी आकर भगवान् शकर के आशीर्वाद तथा अपने पौरुष का वर्णन करते है। [illegible] नि:-निप्र [illegible] की आवाज सुनकर

पहचान लेते है। शाडिल्य के मुख से पितृवध का समाचार सुनकर वे शोक-सतप्त हो जाते है और पितृवध कर्त्ता कार्त्तवीर्य के भुज समूह को नष्ट करने तथा विकराल रक्त-पान की स्थिति उत्पन्न करने की प्रतिज्ञा करते है। इसके उपरान्त परशुराम शाडिल्य से अलग होकर सहस्रबाहु को ढूढने चले जाते हे तथा शाडिल्य भी सहस्रबाहु के पास जाकर परशुराम के क्रोध का सारा कारण वताते है। सहस्रवाहु क्रुद्ध होता है तथा परशुराम और शाडिल्य को मारना चाहता है, लेकिन विदूषक उसे इस कुकृत्य से रोकता है। फिर भी राजा सहस्रवाहु तीनो लोको को ब्राह्मणो से रहित कर देने की प्रतिज्ञा करता है। इसी वीच राजमहिपी चन्द्रवदना आकर राजा से अपने स्वप्न का सारा हाल वताती है। वह स्वप्न मे देखती है कि एक ब्राह्मण-कुमार हाथ मे धनुप-वाण लिये हुए आता है और वह राजा सहस्रबाहु का सिर काट डालने को कहता है। चारो तरफ रुधिर की वृष्टि हो रही है। यह सुनकर राजा अपने सेनापति धनुप्रताप को चतुरगिणी सेना तैयार करने का आदेश देता है। इतने मे परशुराम का आगमन होता है। युद्ध का आह्वान होता है। परशुराम अपने परशु से हैहयराज सहस्रवाहु की सव भुजाओ को काट देते है।

यह नाटक सस्कृत मे है किन्तु गीत हिन्दी मे है।

परियो की हवाई मजलिस उर्फ कमरुज्जमा और माहलका नाटक, (सन् १८८३), ले० · मोहम्मद मियाँ 'मजूर', पात्र · पु० ६, स्त्री २, अक ३।

घटना-स्थल परिस्तान, राजमहल, आकाश

इस पद्यबद्ध तिलस्मी नाटक मे शाहजादा और शाहजादी की प्रेमकथा जादू और तिलस्म के आधार पर वर्णित है।

बादशाह जहादारशाह, हलब नामक नगर का राजा था। उसका पुत्र शाहजादा स्वप्न मे कोहकाफ (काकेशस पर्वत) के बादशाह शाहे जीन की पुत्री माहलका को देख उस पर मुग्ध हो जाता है। उसका स्वप्न प्रात देर तक चलता रहा। शाहजादे को देर तक सोता देख नौकर उसे जगाता है। कमरुज्जमा स्वप्न मे व्याघात उत्पन्न करने पर क्रुद्ध हो नौकर को मारने दौडता है। वह मन्त्री की शरण जाता है। कमरुज्जमा वजीर के विरुद्ध भी तलवार उठाता है किन्तु शाहजादी की तलाश मे सहायता का वचन देने पर वह उसे छोड देता है। अव दोनो शाहजादी माहलका की खोज मे चल पडते है, किन्तु माहलका का महल परिस्तान होने के कारण दैवी शक्तियो से सुरक्षित है। उसमे प्रवेश के लिये जादू और तिलस्म का ज्ञान आवश्यक है। सयोग से कमरुज्जमा को इस साहसिक यात्रा मे एक सिद्ध मिलता है। सिद्ध अपने दिव्य ज्ञान से शाहजादे की अभिलाषा ताड कर उसे एक 'असा' (गदा) देकर समझाता है कि इससे वह सारी कठिनाइयो पर विजयी होगा। अव क्या था? कमरुज्जमा माहलका के रक्षको को 'असा' से किनारे लगा कोहकाफ तक पहुँच जाता है।

परिस्तान की हवाई मजलिस मे परियाँ माहलका के लिये गजल पेश करती है और वह पवन-मार्ग से अदृश्य होती है। उसकी दाया शाहजादे कमरुज्जमा के पहुँचने का समाचार उसे देती है, किन्तु शाहजादी तो विरह-विह्वला उन्मना ही बनी रहती है। दाया उसे समझाती है और कहती है तेरी शादी तो उससे ही हो गई है। उधर शाहजादे को देखकर देव दग रहता है किन्तु 'असा' से वह नतमस्तक हो ताली वजाकर माहलका को बुलाता है। दोनो एक दूसरे को देखकर अपना प्यार प्रकट करते है। सयोग से जीन का शाह भी उपस्थित होता है और अपना आश्चर्य प्रकट करता है। कमरुज्जमा शाहे जीन से अपनी इच्छा प्रकट करता है, और शाह दोनो के हाथ पकडा देता है। नृत्य-गीत के साथ नाटक समाप्त हो जाता है।

यह नाटक इतना प्रसिद्ध हुआ कि इसके अनुकरण पर हाफिज अब्दुला ने 'हवाई मजलिस व हतफ नौरग तिलस्मे', मुशी 'रौनक' ने परियो की हवाई मजलिस, मौलवी मोहम्मद अब्दुल ने जलस-ए-परिस्तान, 'आराम' ने कमरुज्जमा व बज्मआरा लिखा। उक्त

समस्त नाटको की कथा-वस्तु समान है। केवल नामो मे अन्तर पाया जाता है। इम्पीरियल थियेट्रिकल कपनी द्वारा सन् १८८३ मे धौलपुर मे अभिनीत।

'परिवर्तन ही उन्नति है (सन् १९६९, पृ० ६६), ले० महादेव प्रसाद शाडिल्य 'माधव', प्र० रामकुँवर प्रकाशन, वालाघाट, पात्र· पु० १४, स्त्री ०, अक · ३, दृश्य · ५, ३, ५।
घटना-स्थल राजस्थान का गाव, राजमहल।

यह नाटक सामयिक समस्याओ पर आधारित है। राजस्थान मे सन् १९४७ मे भीषण अकाल पडता है, जिससे जनता मे त्राहि-त्राहि मच जाती है। राजा कर्णसिह जनता की मदद के लिए चिन्तित है। वे नगर के सेठो से सहयोग चाहते है किन्तु व्यावसायिक मण्डली के मत्री सेठ गिरधारी लाल समय से फायदा उठाने के लिए सभी सेठो से अनाज को गोदामो मे दवा देने का सुझाव देते है। फलत सभी व्यापारी ऐसा ही करते है जिससे अकाल की स्थिति और विगड जाती है, किन्तु राजा कर्णसिह के नियम और प्रयासो से स्थिति मे सुधार आता है और व्यापारी अन्नभडार जनता को सौप देते है। इसी परिवर्तन से प्रजा मे आनन्द की लहर आ जाती है और राजा साहव के प्रयास की सराहना होती है।

चोर-वाजारी, घूसखोरी, सामन्तशाही आदि का निराकरण प्रस्तुत नाटक का वडा उद्देश्य है। साथ ही इसमे कोई भी स्त्री पात्र नही है। यह इसकी दूसरी विशेषता है। इसका राजस्थान मे अभिनय भी हो चुका है।

परिवर्तन (सन् १९१४, पृ० १७२), ले० प० राधेश्याम कथावाचक, प्र० · श्री राधेश्याम पुस्तकालय, वरेली, पात्र पु० ७, स्त्री ८, अक ३ दृश्य १०, ११, २।
घटना-स्थल नगर, गाँव, घर, वेश्यागृह।

यह एक सामाजिक नाटक है, जो शिक्षाप्रद होने के साथ-साथ मनोरजक भी है। आजकल के नवयुवक कुसगत मे पडकर किस प्रकार से अपना सर्वनाश कर वैठते है और किस प्रकार उनका घर नरक के तुल्य वन जाता है, ये वाते इस नाटक मे भलीभाति दिखाई गई है। नाटक का नायक श्यामलाल आरम्भ मे सदाचारी एक हिन्दू, सद्गृहस्थ, आदर्श पति तथा आदर्श पिता है। श्यामलाल अपनी पत्नी लक्ष्मी से अत्यधिक प्रेम करता है। वही श्यामलाल आगे चलकर एक वेश्या पर आसक्त होकर सव कुछ भूल जाता है। जिस समय उसका वफादार नौकर शम्भू उसको लक्ष्मी की मृत्यु की सूचना देता है और उसकी अन्त्येष्टिक्रिया के लिए श्यामलाल से घर चलने की प्रार्थना करता है, उस समय वही श्यामलाल अपनी पत्नी लक्ष्मी की इतनी भर्त्सना करता है जिसकी कल्पना भी नही की जा सकती। कितना विकट परिवर्तन है सहसा विश्वास नही होता। विहारी एक दुराचारी व्यक्ति है। उसका नौकर रमजानी भी वडा ही दुष्ट प्रकृति का है। दोनो मिलकर श्यामलाल को वेश्या के चक्कर मे फँसा देते है। लक्ष्मी अपना भेष वदलकर उसी वेश्या चन्दा के यहा नौकरी कर लेती है, जो कि एक अस्वाभाविक वात हो सकती है।

नाटक मे विद्या तथा ज्ञानचन्द्र वकील की वाते वडी मनोरजक है। माया की अपेक्षा विद्या के प्रति वकील साहव के विचार वहुत सुन्दर है। शम्भू दादा की स्वामिभक्ति भी आदर्शमय है। गोल्डन गोली एक औषधि है, जिससे ससार के समस्त रोगो को दूर करने का दावा किया जाता है। नाटक मे एक आदर्श कोर्ट की स्थापना की गई है जिसमे अपराधी को जैसे को तैसा दण्ड दिया जाता है। अन्त मे चन्दा वेश्या का पश्चात्ताप और प्रायश्चित्त भी अच्छा हुआ है। अतएव चन्दा वेश्यावृति छोडकर नारी जाति के उद्धार का कार्य अपने हाथ मे लेती है। परिवर्तन मे प्रारम्भ से लेकर अन्त तक परिवर्तन ही परिवर्तन है। नाटक के सभी पात्रो मे परिवर्तन ही होता चला गया है।

इसका प्रथम अभिनय साहित्य सम्मेलन के कलकत्ता अधिवेशन के समय सन् १९२५ मे हुआ।

परिवर्तन (सन् १९३७, पृ० १५६), ले० . वावू गगाप्रसाद एम० ए०; प्र० :

पहचान लेते है। शाडिल्य के मुख से पितृवध का समाचार सुनकर वे शोक-सतप्त हो जाते है और पितृवध कर्त्ता कार्त्तवीर्य के भुज समूह को नष्ट करने तथा विकराल रक्त-पान की स्थिति उत्पन्न करने की प्रतिज्ञा करते है। इसके उपरान्त परशुराम शाडिल्य से अलग होकर सहस्रबाहु को ढूढने चले जाते है तथा शाडिल्य भी सहस्रवाहु के पास जाकर परशुराम के क्रोध का सारा कारण वताते हैं। सहस्रवाहु क्रुद्ध होता है तथा परशुराम और शाडिल्य को मारना चाहता है, लेकिन विदूषक उसे इस कुकृत्य से रोकता है। फिर भी राजा सहस्रबाहु तीनो लोको को ब्राह्मणो से रहित कर देने की प्रतिज्ञा करता है। इसी बीच राजमहिषी चन्द्रवदना आकर राजा से अपने स्वप्न का सारा हाल वताती है। वह स्वप्न मे देखती है कि एक ब्राह्मण-कुमार हाथ मे धनुष-वाण लिये हुए आता है और वह राजा सहस्रबाहु का सिर काट डालने को कहता है। चारो तरफ रुधिर की वृष्टि हो रही है। यह सुनकर राजा अपने सेनापति धनुप्रताप को चतुरगिणी सेना तैयार करने का आदेश देता है। इतने मे परशुराम का आगमन होता है। युद्ध का आह्वान होता है। परशुराम अपने परशु से हैहयराज सहस्रवाहु की सव भुजाओ को काट देते है।

यह नाटक सस्कृत मे है किन्तु गीत हिन्दी मे है।

परियो की हवाई मजलिस उर्फ कमरुज्जमा और माहलका नाटक, (सन् १८८३), ले० मोहम्मद मियाँ 'मजूर', *पात्र* · पु० ६, स्त्री २, *अक* ३।
घटना-स्थल परिस्तान, राजमहल, आकाश

इस पद्यबद्ध तिलस्मी नाटक मे शाहजादा और शाहजादी की प्रेमकथा जादू और तिलस्म के आधार पर वर्णित है।

वादशाह जहादारशाह, हलब नामक नगर का राजा था। उसका पुत्र शाहजादा स्वप्न मे कोहकाफ (काकेशस पर्वत) के बादशाह शाहे जीन की पुत्री माहलका को देख उस पर मुग्ध हो जाता है। उसका स्वप्न प्रात. देर तक चलता रहा। शाहजादे को देर तक सोता देख नौकर उसे जगाता है। कमरुज्जमा स्वप्न मे व्याघात उत्पन्न करने पर क्रुद्ध हो नौकर को मारने दौडता है। वह मन्त्री की शरण जाता है। कमरुज्जमा वजीर के विरुद्ध भी तलवार उठाता है किन्तु शाहजादी की तलाश मे सहायता का बचन देने पर वह उसे छोड देता है। अव दोनो शाहजादी माहलका की खोज मे चल पडते है, किन्तु माहलका का महल परिस्तान होने के कारण दैवी शक्तियो से सुरक्षित है। उसमे प्रवेश के लिये जादू और तिलस्म का ज्ञान आवश्यक है। सयोग से कमरुज्जमा को इस साहसिक यात्रा मे एक सिद्ध मिलता है। सिद्ध अपने दिव्य ज्ञान से शाहजादे की अभिलाषा ताड कर उसे एक 'असा' (गदा) देकर समझाता है कि इससे वह सारी कठिनाइयो पर विजयी होगा। अव क्या था? कमरुज्जमा माहलका के रक्षको को 'असा' से किनारे लगा कोहकाफ तक पहुँच जाता है।

परिस्तान की हवाई मजलिस मे परियाँ माहलका के लिये गजल पेश करती है और वह पवन-मार्ग से अदृश्य होती है। उसकी दाया शाहजादे कमरुज्जमा के पहुँचने का समाचार उसे देती है, किन्तु शाहजादी तो विरह-विह्वला उन्मना ही बनी रहती है। दाया उसे समझाती है और कहती है तेरी शादी तो उससे ही हो गई है। उधर शाहजादे को देखकर देव दग रहता है किन्तु 'असा' से वह नतमस्तक हो ताली वजाकर माहलका को बुलाता है। दोनो एक दूसरे को देखकर अपना प्यार प्रकट करते है। सयोग से जीन का शाह भी उपस्थित होता है और अपना आश्चर्य प्रकट करता है। कमरुज्जमा शाहे जीन से अपनी इच्छा प्रकट करता है, और शाह दोनो के हाथ पकडा देता है। नृत्य-गीत के साथ नाटक समाप्त हो जाता है।

यह नाटक इतना प्रसिद्ध हुआ कि इसके अनुकरण पर हाफिज अब्दुला ने 'हवाई मजलिस व हतफ नौरग तिलस्मे', मुशी 'रौनक' ने परियो की हवाई मजलिस, मौलवी मोहम्मद अब्दुल ने जलस-ए-परिस्तान, 'आराम' ने कमरुज्जमा व बज्मआरा लिखा। उक्त

समस्त नाटको की कथा-वस्तु समान है। केवल नामो मे अन्तर पाया जाता है। इम्पीरियल थियेट्रिकल कपनी द्वारा सन् १८८३ मे धौलपुर मे अभिनीत।

परिवर्तन ही उन्नति है (सन् १९६६, पृ० ६६), ले० महादेव प्रसाद शाडिल्य 'माधव', प्र० रामकुँवर प्रकाशन, बालाघाट, *पात्र :* पु० १४, स्त्री ०, *अक* ३, *दृश्य* ५, ३, ५।
घटना-स्थल राजस्थान का गाव, राजमहल।

यह नाटक सामयिक समस्याओ पर आधारित है। राजस्थान मे सन् १९४७ मे भीषण अकाल पडता है, जिससे जनता मे त्राहि-त्राहि मच जाती है। राजा कर्णसिह जनता की मदद के लिए चिन्तित है। वे नगर के सेठो से सहयोग चाहते है किन्तु व्यावसायिक मण्डली के मत्री सेठ गिरधारी लाल समय से फायदा उठाने के लिए सभी सेठो से अनाज को गोदामो मे दबा देने का सुझाव देते है। फलत सभी व्यापारी ऐसा ही करते है जिससे अकाल की स्थिति और बिगड जाती है, किन्तु राजा कर्णसिह के नियम और प्रयासो से स्थिति मे सुधार आता है और व्यापारी अन्नभडार जनता को सौप देते है। इसी परिवर्तन से प्रजा मे आनन्द की लहर आ जाती है और राजा साहब के प्रयास की सराहना होती है।

चोर-बाजारी, घूसखोरी, सामन्तशाही आदि का निराकरण प्रस्तुत नाटक का बडा उद्देश्य है। साथ ही इसमे कोई भी स्त्री पात्र नही है। यह इसकी दूसरी विशेषता है। इसका राजस्थान मे अभिनय भी हो चुका है।

परिवर्तन (सन् १९१४, पृ० १७२), ले० प० राधेश्याम कथावाचक, प्र० श्री राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, *पात्र* पु० ७, स्त्री ४, *अक* ३ *दृश्य* १०, ११, २।
घटना-स्थल नगर, गॉव, घर, वेश्यागृह।

यह एक सामाजिक नाटक है, जो शिक्षाप्रद होने के साथ-साथ मनोरजक भी है। आजकल के नवयुवक कुसगत मे पडकर किस प्रकार से अपना सर्वनाश कर बैठते है और किस प्रकार उनका घर नरक के तुल्य बन जाता है, ये बाते इस नाटक मे भलीभाति दिखाई गई है। नाटक का नायक श्यामलाल आरम्भ मे सदाचारी एक हिन्दू, सद्गृहस्थ, आदर्श पति तथा आदर्श पिता है। श्यामलाल अपनी पत्नी लक्ष्मी से अत्यधिक प्रेम करता है। वही श्यामलाल आगे चलकर एक वेश्या पर आसक्त होकर सब कुछ भूल जाता है। जिस समय उसका वफादार नौकर शम्भू उसको लक्ष्मी की मृत्यु की सूचना देता है और उसकी अन्त्येष्टिक्रिया के लिए श्यामलाल से घर चलने की प्रार्थना करता है, उस समय वही श्यामलाल अपनी पत्नी लक्ष्मी की इतनी भर्त्सना करता है जिसकी कल्पना भी नही की जा सकती। कितना विकट परिवर्तन है सहसा विश्वास नही होता। बिहारी एक दुराचारी व्यक्ति है। उसका नौकर रमजानी भी बडा ही दुष्ट प्रकृति का है। दोनो मिलकर श्यामलाल को वेश्या के चक्कर मे फँसा देते है। लक्ष्मी अपना भेप बदलकर उसी वेश्या चन्दा के यहा नौकरी कर लेती है, जो कि एक अस्वाभाविक बात हो सकती है।

नाटक मे विद्या तथा ज्ञानचन्द्र वकील की बाते बडी मनोरजक है। माया की अपेक्षा विद्या के प्रति वकील साहब के विचार बहुत सुन्दर है। शम्भू दादा की स्वामिभक्ति भी आदर्शमय है। गोल्डन गोली एक औषधि है, जिससे ससार के समस्त रोगो को दूर करने का दावा किया जाता है। नाटक मे एक आदर्श कोर्ट की स्थापना की गई है जिसमे अपराधी को जैसे को तैसा दण्ड दिया जाता है। अन्त मे चन्दा वेश्या का पश्चात्ताप और प्रायश्चित्त भी अच्छा हुआ है। अतएव चन्दा वेश्यावृति छोडकर नारी जाति के उद्धार का कार्य अपने हाथ मे लेती है। परिवर्तन मे प्रारम्भ से लेकर अन्त तक परिवर्तन ही परिवर्तन है। नाटक के सभी पात्रो मे परिवर्तन ही होता चला गया है।

इसका प्रथम अभिनय साहित्य सम्मेलन के कलकत्ता अधिवेशन के समय सन् १९२५ मे हुआ।

परिवर्तन (सन् १९३७, पृ० १५६), ले० बाबू गगाप्रसाद एम० ए०; प्र० :

भारतीय साहित्य मन्दिर, चाँदनी चौक, दिल्ली, *पात्र* . पु० ६, स्त्री ६; *अक रहित*; *दृश्य* ३।

इसमे स्त्री-स्वातत्र्य की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है। 'परिवर्तन' मे परपरा द्वारा निश्चित वर्तमान स्त्री-समाज के शोचनीय बन्धन पद के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन है। अविवाहित अवस्था मे माता-पिता से नि सीम अधिकार प्राप्त नारी विवाहित जीवन मे पति के निरकुश और अनुचित दबाव के विरुद्ध क्षोभ एव क्रान्ति का आन्दोलन करती है।

परिवार के शत्रु (सन् १९६१, पृ० ११४), ले० : इन्द्रसेन सिह 'भावुक', प्र० · मनोरमा प्रकाशन गृह, नई दिल्ली, *पात्र* पु० ११, स्त्री ४, *अक* ३ *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल ठाकुर साहब की बैठक।

इस सामाजिक नाटक मे जमीदारी उन्मूलन के उपरान्त शराबी जमीदारो की दुर्दशा दिखाई गई है। ठाकुर रणविजय सिह पुराने जमीदार है। वे शराब, गाजा, भाग के पक्के शौकीन है। जमीदारी समाप्त होने पर अपनी आदत और शान को बनाये रखने के लिए मजबूर है। सारा परिवार इसी नशे का दास है। पुत्र रामसिह, सूर्य, कमल नाती-पोते सब शराबी है। भगवती, जानकी देवी आदि इसका विरोध करती है। इसीलिए सभी लोग उन्हे परिवार का शत्रु कहते है। ठाकुर अपनी इसी आदत के कारण सेठ छटकी का कर्जदार हो जाता है। बाद मे कमल के सुधर जाने से वह कर्ज चुका देता है किन्तु घर छोड देता है। अन्त मे सब के घर छोडने पर ठाकुर साहब अपने को ही इसका दोषी मानते है और बन्दूक से आत्महत्या कर के प्रायश्चित्त कर लेते है।

परीक्षित (सन् १९००, पृ० १०८), ले० आनन्दप्रसाद कपूर, प्र० · उपन्यास बहार ऑफिस, काशी, *पात्र* पु० ६, *अक* · ३, *दृश्य* ८, ७, ५।

यह एक धार्मिक नाटक है। महाभारत के युद्ध के उपरान्त कुमार परीक्षित ही सम्राट् बनते है। एक दिन राजा परीक्षित शिकार खेलने गए जहा पर उन्हे बडी प्यास लगी। वे भिण्डी ऋषि के आश्रम मे प्यास बुझाने जाते है। ऋषि तपस्या मे लीन है। परीक्षित उनसे पानी मागते है किन्तु ऋषि तप मे निरत होने से परीक्षित की बाते नही सुनते। तब परीक्षित पास ही पडे एक मरे हुए साप को उनके गले मे डाल देते है और वहा से प्यासे ही लौट आते है। कुछ देर के उपरान्त भिण्डी ऋषि का पुत्र शृगी ऋषि पिता का अपमान समझ परीक्षित की दुष्टता जान लेता है और शाप देता है कि राजा परीक्षित को आज से सातवे दिन तक्षक सर्प डसे और उसका विनाश हो।

जब इस शाप को भिडी ऋषि सुनते है तो अपने अबोध पुत्र की अज्ञानता से दुखी होते है और कुमुर्क के द्वारा राजा परीक्षित को सूचना भिजवाते है कि वह अपने मोक्ष का साधन प्राप्त कर ले। फलस्वरूप राजा हरिद्वार मे अपने मोक्ष का उपाय करते है। तक्षक जब उन्हे डसने जाता है तब धनवन्तरी राजा की रक्षा को तत्पर होता है किन्तु तक्षक अपने वार्तालाप से उसको परास्त करता है और कहता है कि "जिसकी मृत्यु आ जाती है उसको कोई नही बचा सकता। भगवान् श्रीकृष्ण को वधिक के हाथ मरना पडा था।" अन्त मे तक्षक सूक्ष्म रूप धारण कर परीक्षित को डसने के लिए चल पडता है। हरिद्वार मे राजा परीक्षित को शुकदेव एक फूल सूघने को देते है। उसमे कीडे के रूप मे बैठा तक्षक उन्हे काट लेता है और उनकी मृत्यु हो जाती है।

पर्व-दान (सन् १९५२), ले० मोहनलाल 'जिज्ञासु', प्र० · भारत भारती, लिमिटेड, दिल्ली, *पात्र* पु० १२, स्त्री १२, *अक* · ३; *दृश्य* ५, ६, ७।
घटना-स्थल वन, जाह्नवी-तट।

इस पौराणिक नाटक मे कृष्ण और अर्जुन के युद्ध की स्थिति दिखाई गई है। महाभारत के युद्ध के पश्चात् कृष्ण-अर्जुन अपनी-अपनी पत्नी सत्यभामा और द्रौपदी के साथ वन-विहार के लिए जाह्नवी-तट पर जाते है पर उनके वन-विहार का आनन्द

नारद के षड्यन्त्र से कलुषित हो जाता है। उनकी प्रेरणा से पहले से ही उच्छृखल गन्धर्व ऋषिकुमारो को त्रस्त करते है और गन्धर्वराज चित्ररथ गालव ऋषि की अजलि मे उच्छिष्ट मदिरा डालकर उन्हे क्रुद्ध कर देता है। नारद गालव को कृष्ण के पास भेजकर तथा स्वय भेट के समय उपस्थित होकर कृष्ण से चित्ररथ का शिरच्छेद करने की प्रतिज्ञा करा लेते है। उसके वाद नारद एक ओर द्रौपदी और दूसरी ओर चित्ररथ को वहकाकर जाह्नवी-तट पर ले जाते है और वहां चित्ररथ की पत्नी से रुदन के द्वारा द्रौपदी के हृदय मे उसके प्रति करुणा जाग्रत कर पर्व-दान करा देते है। पर्व-दान का अभिप्राय है चित्ररथ को अभयदान। द्रौपदी के पर्व-दान की रक्षा के निमित्त अर्जुन को, जिन्हे कृष्ण की प्रतिज्ञा के सम्बन्ध मे कोई ज्ञान न था, कृष्ण से युद्ध के लिए सन्नद्ध होना पडता है। परन्तु कौशिक आदि गालव-शिष्यो के प्रयत्नो से ऋषि को ब्राह्मणत्व का वोध और नारद के षड्यन्त्र का रहस्य ज्ञात हो जाता है और गालव के कहने से युद्ध शान्त हो जाता है।

पवनंजय (सन् १९५८, पृ० १५९), ले० ओकार नाथ दिनकर, प्र० एज्यूकेशनल पब्लिशर्स, व्यावर, अजमेर, *पात्र* पु० १४, स्त्री ४, *अक* ३; *दृश्य* ४, ३, ५। *घटना-स्थल* . गृह, उद्यान, मैदान।

हिसा पर अहिसा की विजय प्रतिष्ठित करना ही इस नाटक का उद्देश्य है। जैन-रामायण और जैन-पद्म-पुराण से प्रेरणा ग्रहण कर लिखा गया सस्कृति-प्रधान पौराणिक नाटक है, जिसमे पवनजय की वीरता की कथा अजना के घर से आरम्भ होती है। अजना का विवाह पवनंजय से हो जाता है पर मिश्रकेशि की कुटिलता के कारण पवनजय अजना को त्याग देते है। शान्ति के पूजक प्रह्लाददेव की भी रावण से युद्ध के लिए पवनजय को अनुमति मिल जाती है। अजना को ठुकराकर पवनजय युद्धक्षेत्र मे चले जाते है। यही प्राकृतिक शोभा तथा पशु-पक्षियो का पारस्परिक अकृत्रिम अनुराग देखकर उनका मन द्रवित हो जाता है। अचानक क्रौंचपक्षी का हृदय-द्रावक विलाप उन्हे अपनी प्रिया का स्मरण दिला देता है। वस, उनके हृदय के सयम के वांध टूट जाते है। प्रेमी पवनजय आधी रात को ही प्रिया के द्वार खटखटाते है। प्रिया नीद से जागकर उनके चरणो मे गिरती है। अजना अपने सत्कार से अपने प्रिय को रिझाकर उसमे समष्टि-कल्याण की भावना जागृत करती है।

युद्धस्थल से लौटे पवनजय मे अनीति तथा अत्याचार के प्रति घोर घृणा है। अजना के उपदेशो की शक्ति से उन्होने वलवान रावण के समक्ष भी अपने को विजयी वनाया है। पवनजय की चारित्रिक-पवित्रता, निष्ठा एव दृढता ने रावण का गर्व चूर कर दिया। प्रह्लाददेव की मनोकामना भी पूर्ण हुई। सत्य-अहिसा का आधार ग्रहण कर पवनजय, विद्युत्प्रभ और मिश्रकेशि के भी विचारो मे आमूल परिवर्तन कर उनको भी लोक-कल्याण के मार्ग मे प्रवत्त करते है। पवनजय भरत चक्रवर्ती का जय-जयकार ध्वनित करते हैं।

पशु-वलि (सन् १९४०, पृ० ९४), ले० : शिवरामदास गुप्त, प्र० उपन्यास वहार आफिस, काशी, *पात्र* पु० ८, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* : ६, ८, ६।

यह नाटक प्रभात की फिल्म अमृत-मथन के आधार पर लिखा गया है। देवी के मन्दिर मे पशु-वलि और हिसा का साम्राज्य छाया हुआ है जिसके समर्थन मे राजगुरु शास्त्री है। राजा रविवर्मा अपने राज्य मे हिसा को समाप्त कर पशु-वलि को वन्द करना चाहता है, किन्तु राजगुरु उसे ऐसा करने से रोकता है। माधव गुप्त, मोहनी, सुमित्रा, विश्वास गुप्त को विरोध के कारण सफलता नही मिलती। अन्त मे वौद्धो के प्रभाव से राज्य मे पशु-वलि समाप्त होने पर अहिसा का स्वच्छ वातावरण स्वत निर्मित होता है और माधवगुप्त तथा मोहनी का आपस मे मिलन हो जाता है।

पश्चात्ताप (सन् १९५६, पृ० ५३), ले० · कृष्ण मुकुट नाट्याचार्य, प्र० · जवाहर बुक डिपो, मेरठ, पात्र पु० ९, स्त्री ३; अक : २, दृश्य · १, १ ।

इस सामाजिक नाटक मे अछूतोद्धार की समस्या का समाधान प्रस्तुत किया गया है। इसमे मन्दिर मे अछूत प्रवेश का विरोध समाप्त किया गया है। पुजारी का लडका मतू चमार के लडके की मदद करता है और दोनो आपस मे दोस्त होते है। अन्त मे पुजारी की लडकी मूर्त्ति के प्रयासो से रामलाल चमार को मन्दिर मे आने की अनुमति मिल जाती है और पुजारी स्वत कह उठता है "मतू चमार नही महापुरुष है।"

पश्चात्ताप (सन् १९०१, पृ० ७३), ले० · जगमोहन नाथ अवस्थी, प्र० · न्यू लिटरेचर, इलाहाबाद, *पात्र* . पु० ६, स्त्री ३, *अक-रहित*, *दृश्य* ११।
घटना-स्थल आगरे का दुर्ग, चित्तौड का राजमहल, सैनिक शिविर।

इस ऐतिहासिक नाटक मे अकबर का चित्तौड पर आक्रमण दिखाया गया है। अकबर की बन्दूक से जयमल आहत होता है। राजपूतनियाँ जौहर की ज्वाला मे जलती है। अकबर बीरबल के साथ दुर्ग मे प्रवेश करता है। वहाँ पर प्रज्वलित अग्नि ज्वालाये देखता है। बीरबल कहता है—"हिन्दुत्व, सतीत्व एव वीरत्व साथ-साथ जल रहे है।"

अकबर को अपने कृत्यो पर पश्चात्ताप होता है। वह पागल-सा होकर कहता है—"हाय! जीवन! घोर अन्धकार, घोर पाप और घोर अन्याय! मैने यह क्या किया? मुझे धिक्कार है।"

पहला राजा (सन् १९६९, पृ० ११७); ले० · जगदीशचन्द्र माथुर, प्र० राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, *पात्र :* पु० ७, स्त्री ५, *अक :* ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल आश्रम, वृक्ष, नदी

इस नाटक मे वैदिक, पौराणिक तथा ऐतिहासिक कथा को आधार बनाकर समसामयिक समस्याओ का अन्वेषण किया गया है।

लेखक ने तीन कथासूत्रो को, साथ-साथ पिरोया है—पृथु और अर्चना, कवष और उर्वि, अत्रि, गर्ग और शुक्राचार्य की घटनाये है। सुनीथा की कथा इनकी सहायक बनती है। इसमे शव-मथन-प्रक्रिया मे प्रतीकात्मकता है। ऋषियो द्वारा मत्र-बल से ब्रह्मावर्त के शासक वेन को मारना ऐसी परम्परा का अत है, जो दुर्विनीत और उद्दड राजाओ की थी। उसके शव-मथन का अर्थ है कि उससे सत्य का तेजोमय और सर्वग्राही अश प्राप्त किया जाए। इस मथन से तेजोमय प्रताप वाला कृष्णवर्ण का एक व्यक्ति पृथु निकलता है, जिसे वेन के पापो का प्रतीक माना जाता है। पृथु को आर्य-जाति का पहला राजा घोषित किया जाता है। वह अपनी शक्ति से धरती का दोहन कर अनेक सम्पदाओ को खोज निकालता है। धरती को पृथु राजा के कारण ही 'पृथिवी' की सज्ञा दी जाती है। पृथु पुरुषार्थ का प्रतीक है, जिसे उर्वि (पृथ्वी का ही दूसरा नाम) चुनौती देती है। पृथु उसकी चुनौती को स्वीकार कर स्वय परिश्रम करके उन्नति करता है। इसलिए उर्वि पृथु की प्रिया बनी रहती है जबकि उसकी पत्नी अर्चि का सबध कामजन्य सतोष तक ही रहता है। इस प्रकार लेखक ने कर्म और काम का सुन्दर समन्वय दिखाया है। ऋषिगण जो विभिन्न मत्रालयो का प्रतिनिधित्व करते है—पृथु को सहयोग नही देते। लेकिन पृथु स्वय कुदाली लेकर परिश्रम करने के लिए उपस्थित हो जाता है।

पहिली भूल (सन् १९३२, पृ० १७१), ले० शिवरामदास गुप्त, प्र० सत्यनाम प्रेस, बनारस सिटी, *पात्र* पु०, १२ स्त्री; ६ *अक* ३, *दृश्य* . ११, १०, ४।
घटना-स्थल पहाडी, उद्यान मार्ग, महल, बाग, नदी का किनारा, मकान, दरबार, कुटी, कारागार, झोपडी, नदी।

इस सामाजिक नाटक मे प्रेम को विचारो की पवित्रता, सहनशीलता, स्वार्थत्याग,

आत्म समर्पण के बलपर श्रेयस्कर और कपट, छल, प्रतिशोध, वासना, दुष्कामना के आधार पर विनाश कर दिखाया गया है। नाटक का नायक गोपाल गोविन्द सिंह की पुत्री लक्ष्मी से प्रेम करता है और उसीसे विवाह करता है। परित्यक्ता हीरा गोपाल की बचपन की बातो को याद रख, उससे प्रेम करती है परन्तु उसका प्रेम कपट, प्रतिकार की भावना से पूर्ण होता है। गोपाल और लक्ष्मी के विवाह होने की सूचना पाकर वह कामुक अरुण से मिलकर प्रतिशोध लेना चाहती है। लक्ष्मी ने अरुण को अपशब्द कहे थे इसलिए वह भी लक्ष्मी तथा गोपाल से प्रतिशोध लेने के लिए जाल बुनता है। लक्ष्मी की सखी गोपाल के प्रति अपशब्द कहती है, परन्तु गोपाल को यह भ्रम हो जाता है कि लक्ष्मी ने ही अपमानजनक शब्द कहा है। अत. वह विवाह के बाद उसका मुह न देखने की प्रतिज्ञा कर लेता है, जो उसकी 'पहिली भूल' प्रमाणित होती है। हीरा लक्ष्मी की दासी बन गोपाल की दी हुई अगूठी चुरा लेती है और लक्ष्मी पर दुश्चरित्रता का मिथ्या दोषारोपण कर घर से निकलवा देती है। लक्ष्मी के पिता गोविन्दसिंह भी पुत्री को तिरस्कृत कर देते है। अरुण सिंह का सत्य-वक्ता सेनापति अश्वपति, जिसे गोपाल डाकुओ के हाथो से बचाता है, साधु वेप मे एक कुटी मे जीवन विताते हुए लक्ष्मी तथा उसकी सखी कमला को शरण देता है। अन्त मे हीरा का हृदय-परिवर्तन चित्रित किया गया है। वह अपने कुकर्मो का प्रायश्चित्त करने के लिए गोपाल को अपने वस्त्र पहनाकर भागने पर विवश करती है और अन्त मे पहले अरुण का वध कर स्वय भी आत्महत्या कर लेती है। गोपाल लक्ष्मी को ढूँढते हुए जगल मे पहुँच जाता है। अश्वपति के शिष्य उसे बचा लेते है। समरसिंह तथा गोविन्दसिंह भी अपनी भूल पर पछताते हुए आ पहुँचते है।

समरसिंह के पुत्र गोपाल तथा लक्ष्मी के माध्यम से आदर्श प्रेम का चित्रण किया गया है। भारतीय नारी सहर्ष सब बाधाओ को झेल लेती है, पर अपनी मर्यादा पर आच नही आने देती।

पाँच बड़े (सन् १९५७, पृ० ९४), ले० : वीरेन्द्र कश्यप; प्र० · नवयुग प्रकाशन, दिल्ली, *पात्र* . पु० ५, स्त्री ३, *अक* : ३, *दृश्य* : १, १, १।
घटना-स्थल घर, पेटर का कमरा, भोज-नालय।

इस सामाजिक नाटक मे साहित्यकार के द्वारा देश और समाज मे परिवर्तन दिखाया गया है।

एक परिवार के पाँच सदस्य अपने-अपने को बडा समझते है। लड़का स्टेट ऐक्टर, लडकी राइटर, बीबी पेण्टर तथा पति सिंगर और नौकर बावर्ची खाने का माहिर। नाटक मे शुरू से अन्त तक लेखको की प्रशसा तथा उनके द्वारा समाज, भाषा, रहन-सहन सब कुछ बदला जा सकता है, इसी का प्रभाव दिखाया गया है। सविता इसकी प्रशसा मे अपना सबसे अधिक समय गंवाती है। नौकर पाण्डुरग अपने महाराष्ट्री हिन्दी बोलने के कारण एक हास्य पात्र का रूप धारण कर लेता है।

अभिनय—विभिन्न सस्थाओ द्वारा अभिनीत।

पांचाली (रेडियो गीति-नाट्य) (सन् १९६८ 'तमसा' मे सगृहीत), ले० · जानकी वल्लभ शास्त्री, प्र० . राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,

'पाचाली' गीति-नाट्य उपेक्षिता द्रौपदी की पीडा और उसकी मार्मिक व्यथा को अभि-व्यक्ति करता है। सामाजिक आदर्श, मर्यादा तथा प्रणयाकाक्षा का द्वन्द्व द्रौपदी के स्वयवर-प्रसग द्वारा अभिव्यजित किया गया है। पाँचो पाडवो से घिरी पाचाली की घुटन, आर्तक्रन्दन नाटकीय-परिवेश मे मुखर हो उठा है।

द्रौपदी-स्वयवर मे जब कर्ण, शल्य, दुर्योधन, शाल्व आदि महारथी लक्ष्य-वेध मे असफल रहते है, तब द्रुपद की असहाय एव कातरवाणी सुनकर विप्र वेशधारी अर्जुन लक्ष्यवेध करके पाचाली को प्राप्त कर लेता है। मार्ग मे भीम द्रौपदी को वस्तुस्थिति से अवगत कराते हुए बताता है कि लक्ष्य वेधने

वाला कोई और नही वरन् अर्जुन ही था। इस पर अर्जुन की चिरप्रशंसिका द्रौपदी प्रफुल्लित हो उठती है। घर आकर उस नवीन भिक्षा का माँ को दर्शन कराने की लालसा मे अर्जुन तथा द्रौपदी जीवन के लिए एक अभिशाप ले बैठते है। माँ के मुँह से निकला एक वाक्य—"पाँचो मिलकर भोगो, यहाँ पाँचाली का क्रन्दन प्रारभ होता है, जो अन्त तक प्रभावित करता है। पाँच हृदयो को अभयदान देने वाली नारी स्वय जीवन-पर्यन्त विष पीती रहती है।

प्रस्तुत कथा मे कतिपय मौलिक उद्भावनाएँ भी की गई है। महाभारत मे कर्ण को अवैध बताकर स्वयवर से वचित रखा गया था किन्तु 'पाचाली' मे वह भी प्रयत्न करता है। इसके साथ ही कवि ने अर्जुन के लक्ष्यवेध का कारण द्रौपदी के पिता द्रुपद की दयनीय स्थिति बताया है। इस प्रकार द्रौपदी एव कुन्ती के माध्यम से नारी-हृदय की शतरूपा वेदना का चित्रण किया गया है।

पांचाली (सन् १९६३जसमा तथा अन्य सगीत रूपक मे सकलित।), ले० . मनोहर प्रभाकर, प्र० कल्याणमल एड सस, जयपुर,

इस संगीत रूपक मे द्रौपदी के अपमान का दुष्परिणाम दिखाया गया है।

'पाचाली' सगीत-रूपक महाभारत की प्रसिद्ध कथा पर आधारित है, जिसके अन्तर्गत द्रौपदी-स्वयवर, युधिष्ठिर की द्यूत-क्रीडा, उसमे पत्नी तथा भाइयो का हार जाना तथा अन्त मे स्वर्गारोहण आदि घटनाएँ नैरेशन द्वारा व्यजित की गई है।

पांडव प्रताप (सन् १९१७, पृ० ११०), ले० . हरिदासमाणिक, प्र० . माणिक कार्यालय, काशी, *पात्र* पु० १७, स्त्री ७, अक . ३, *दृश्य* : ८, ८, ५।
घटना-स्थल राज सभा, इन्द्रप्रस्थ का नगर-भाग, राजगृह, मगध का नगर मार्ग, जरासध का अन्तर गृह, उपवन, मार्ग, वन्दीगृह, राजसभा।

इस पौराणिक नाटक मे महाभारत के आधार पर पाडवो की विजय-कथा प्रदर्शित की गई है। धर्मराज राजसूय-यज्ञ के विषय मे परामर्श करने के लिए ढोलक शास्त्री को कृष्ण के पास द्वारका भेजते है। कृष्ण युधिष्ठिर को समझाते है कि जरासन्ध को मारे बिना यज्ञ पूरा नही हो सकता। ढोलक शास्त्री जरासन्ध के दरबार मे जाते है, पर उन्हे बलि चढाने को जरासन्ध के सिपाही पकड ले जाते है। जरासन्ध और भीम का मल्ल युद्ध होता है, जिसमे जरासन्ध मारा जाता है। जरासन्ध की मृत्यु पर अनेक बन्दी राजा उसके कारागार से मुक्त किए जाते है। युधिष्ठिर यह सुनकर प्रसन्न होते है कि उनके भ्राता विजयी होकर धन-धान्य सहित लौटे है।

तीसरे अक मे कृष्ण के द्वारा शिशुपाल का वध होता है और महाराज युधिष्ठिर सम्राट् पद ग्रहण करते है।

यह नाटक सात जून सन् १९१२ को काशी की प्रसिद्ध नागरी नाटक मडली द्वारा काशीनरेश की उपस्थिति मे अभिनीत हुआ।

पाकिस्तान (सन् १९४६, पृ० १६८), ले० : सेठ गोविन्ददास, प्र० . किताब महल, इलाहाबाद; *पात्र* : पु० १०, स्त्री ६, *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल : ड्राइगरूम।

इस राजनीतिक नाटक मे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को एक राष्ट्र के रूप मे देखने का स्वप्न है।

मुसलिम लडकी जहाआरा और एक हिन्दू लड़के शान्तिप्रिय मे शुद्ध भाई-बहन का सबंध है। वे एक दूसरे से प्रेम करते है। एक दिन टेनिस कोर्ट मे जहाआरा, शान्तिप्रिय, पीरबख्श, दुर्गा, अमरनाथ तथा कुछ अन्य स्त्री-पुरुषो मे पाकिस्तान पर चर्चा चलती है और मत वैभिन्न के कारण तकरार सी हो जाती है। अमरनाथ राष्ट्रवादी काग्रेसी है और काग्रेस की नीति के आधार पर वह पाकिस्तान का स्वप्न देखने वाले कट्टर साम्प्रदायिक मुसलमानो की आलोचना करता है। इस प्रकार दो दल हो जाते है। दोनो दलो मे यह निश्चय होता है कि सारे

देश मे चुनाव हो और उसी के अनुसार देश का बटवारा हो। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दो अलग-अलग राष्ट्र बनते है। पाकिस्तान के मन्त्रिमडल की प्रधान जहाआरा और मन्त्री पीरबख्श होता है, हिन्दुस्तान के शान्तिप्रिय और दुर्गा देवी। अमर और महफूज दोनो ही राष्ट्रवादी है किन्तु इनकी कोई नही सुनता है।

दोनो ही राष्ट्रो के अल्प-सख्यको द्वारा झगडा आरभ होता है। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के मत्रियो को त्यागपत्र देना पडता है। इस प्रकार राष्ट्रीय आन्दोलन आरभ हो जाता है।

नाटक मे कही-कही पर हिन्दू-मुसलमानो को बडा मित्र दिखाया गया है, किन्तु पाकिस्तान की कुत्सित भावनाओ के कारण दोनो राष्ट्रो मे खिचाव बढ जाता है।

पाकिस्तान की पोल (सन् १९६४, पृ० ६४), ले० . ज्ञानीराम शास्त्री, प्र० . ज्ञान प्रकाशन, मार्फत जयहिन्द कॉलेज, लुधियाना, पात्र पु० ८, स्त्री नही, *अक-रहित*, *दृश्य* ७।
घटना-स्थल कवि का घर।

इस गीतिनाट्य मे पाकिस्तान की मनोवृत्ति का परिचय दिया गया है।

सन् १९६४ मे भारत पर पाकिस्तान के आक्रमण तथा उसके परिणामो का वर्णन ही इस नाटक का उद्देश्य है। विशेषत: स्वय कवि ही नाटक का पात्र बन हरियाणा के ग्रामीण किसानो को पाकिस्तान के सैनिकों की गद्दारी तथा भारत के वीरो का दृश्य वार्तालाप के रूप मे दिखाता है। लालबहादुर शास्त्री के प्रयासो तथा उनके देश-प्रेम को भी इस नाटक मे वर्णित किया गया है।

वस्तुत यह गीतिनाट्य हरियाणवी के प्रभाव से ओतप्रोत है।

पाटलीपुत्र का राजकुमार (सन् १९६८, पृ० ७८), ले० : चतुर्भुज, प्र० साधना मन्दिर, पटना-४, पात्र : पु० ६, स्त्री २; *अक* ३, *दृश्य* ६।
घटना-स्थल महल, पथ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे कुणाल को अन्धा करने का एकमात्र कारण तक्षशिला की दुष्टता को सिद्ध किया गया है।

अशोक-पुत्र कुणाल बडा सुन्दर था तथा साथ ही योग्य भी। धारणा है कि तिष्यरक्षिता ने उससे प्रणय न पा उसकी आँखे निकलवा ली। नाटककार ने ऐतिहासिकता की रक्षा करते हुए यह दिखाया है तिष्यरक्षिता के मन मे उसके लिए पुत्र-भाव था तथा कुणाल उसकी पूजा माँ समझ कर करता था। लेकिन तक्षशिला के प्रधान की दुष्टता के कारण कुणाल नेत्रहीन बना। बाद मे यह रहस्य खुला।

पाथेय (सन् १९६८, पृ० १०, ५१), ले० : गुणनाथ झा, प्र० : घनानाथ साहित्य सदन, ग्राम-पत्रालय—रैयाम, जिला दरभगा; *पात्र* : पु० ४, स्त्री १, *अक रहित*; *दृश्य* . १।
घटना-स्थल . गंगाधर मिश्र का डेरा।

इस सामाजिक नाटक मे शहरी जीवन से ग्राम्य-जीवन को सुखकर दिखाया गया है।

मिहिर सतत रगीन वातावरण का चित्रण कर सुनीता के हृदय मे स्वाभाविक रूप से प्रेम जाग्रत करता रहता है। मिहिर से प्रेरित होकर सुनीता सर्वत्र अपने भावी जीवन की कल्पना करती रहती है; किन्तु इस पर तुषारपात तब होता है, जब मिहिर यह निश्चय करता है कि वह नौकरी नही करेगा और शहरी वातावरण का परित्याग कर ग्रामीण-जीवन व्यतीत करेगा। सुनीता की अभिलाषा के प्रतिकूल ही वह यह निर्णय लेता है। इसमे नाट्यकार ने इस ओर सकेत किया है कि समाज की उन्नति तभी सभव है जब कि शिक्षित व्यक्ति शहरी मनोमुग्धकारी परिवेश का त्याग कर ग्रामोन्मुख होगे।

पादुकाभिषेक (वि० २०२५, पृ० ११०), ले० सीताराम चतुर्वेदी, प्र० अखिल भारतीय विश्व परिषद्, काशी; पात्र।

पु० २६, स्त्री १६; अक . ३, दृश्य : ४, ५, ४।
घटना-स्थल · राजोद्यान, वन-पथ, राज-वाटिका, धनुष-यज्ञ का मडप, कुटिया, वीथिका, कोप-भवन, अन्त पुर की वीथिका, विलास-कक्ष, चित्रकूट।

इस पौराणिक नाटक मे सीता-स्वयवर से लेकर भरत के चित्रकूट से वापस आने तक की कथा दिखाई गई है।

विश्वामित्र के साथ राम-लक्ष्मण-प्रस्थान से लेकर खरदूषण-वध, अहल्या-उद्धार, धनुपभंग, सीता-राम-विवाह, मंथरा के कुचक्र से राम का बनवास, चित्रकूट मे भरत की विनती पर राम का पादुका प्रदान, अयोध्या के सिंहासन पर राम की पादुका का अभिपेक वर्णित है।

इसे वसत कन्या महाविद्यालय काशी ने १९६९ मे खेला। इसे चित्रमय, दृश्यपीठात्मक तथा चक्रिल मंच पर सफलतापूर्वक खेला जा सकता है।

पाप की छाया (सन् १९६०, पृ० ३३), ले० · प० सीताराम चतुर्वेदी, *पात्र :* पु ६, स्त्री २, अक : ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल गृहस्थ का मकान, सेठ की कोठी, डाक्टर का अस्पताल।

इस मनोवैज्ञानिक नाटक मे धरोहर का धन न लौटाने पर मानसिक पीडा दिखाई गई है।

कमलाकान्त एक धार्मिक विचार के पुरुष है। उनके मित्र श्याम मोहन उनके पास दस हजार रुपये तथा अपनी पत्नी के आभूषण धरोहर रूप मे रखकर किसी कार्यवश आसाम चले जाते है। जहा उनकी कुछ समय बाद मृत्यु हो जाती है। इस बीच कमलाकान्त के पुत्र श्रीकान्त अमरीका के एक विश्वविद्यालय मे पढने के लिए जाने को तैयार हो जाते है। यात्रा के खर्च के लिए कमलाकान्त धरोहर का रुपया अपने पुत्र को दे जाते है तथा आभूपण वेचकर एक कम्पनी का शेयर खरीदते है। उन्हे वडा घाटा होना है, जिस कारण कमलाकान्त को सदैव यह चिन्ता सताने लगी है कि श्याममोहन का रुपया कैसे अदा किया जाएगा। कभी-कभी उन्हे श्याममोहन की मृत छाया भी दिखाई पडने लगी। कुछ लोग उन्हे समझाते है कि अब कौन मागने आएगा पर इसी बीच श्याममोहन का पुत्र ब्रजमोहन रुपया मागने आता है जिसे कमलाकान्त के मैनेजर एक हजार रुपया देकर टालना चाहते है; पर श्याममोहन की पत्नी को वडा असन्तोष होता है, जिससे उसकी मृत्यु हो जाती है। अब तो कमलाकान्त को दो मृतात्मा की छाया दिखाई पडने लगी है। इसी बीच अमरीका मे उनके पुत्र श्रीकान्त को एक कार-दुर्घटना मे गभीर चोट आ जाती है। अब पुन. कमलाकान्त और अधिक विचलित होता है। विक्षिप्तावस्था मे वह अपना रुपया तथा पत्नी का आभूषण ब्रजमोहन के नाम करके उद्धार पाने का उपक्रम करता है और तभी श्रीकान्त के अच्छा होने का समाचार भी मिलता है। परिस्थिति अनुकूल एव सहायक होने पर कमलाकान्त का मानसिक द्वन्द्व समाप्त होता है और पाप की छाया अदृश्य हो जाती है।

पाप-परिणाम (सन् १९२४, पृ० १९७), ले० · जमुनादास मेहरा, प्र० : रिखबदास बाहिती, प्रोप्राइटर दुर्गा प्रेस, और आर० डी० वाहिती एण्ड को०, न० ४ चोर वगान, कलकत्ता, *पात्र :* पु० १८, स्त्री ६; *अक* · ३, *दृश्य* . ११, ९, ६।
घटना-स्थल वेश्या-घर, मध्यम वर्ग का घर।

इस सामाजिक नाटक मे वेश्यागामी तथा अन्य पाप-कर्मियो को पाप का दुप्परिणाम भोगते दिखाया गया है।

समय के परिवर्तन से वेश्याओ की अधिकता होती है। कितने ही मनुष्यो का अपव्ययी और कुकर्मी बन जाना, वर्तमान समय के कपटी मित्रो तथा झूठे स्वामिभक्त और दुर्जन सेवको आदि की सामाजिक विकृतियो का सजीव चित्रण इसकी अपनी विशेपता है।

पारस (सन् १९६६, पृ० ८२), ले० प० सीताराम चतुर्वेदी, प्र० : टाउन डिग्री कालेज, वलिया, *पात्र* · पु० ८, स्त्री २, अक . ३, दृश्य रहित।

घटना-स्थल झोपडी और चौपाल ।

इस सामाजिक नाटक मे ग्रामीण जीवन की झाँकी प्रस्तुत की गई है ।

इसमे यही दिखाया गया है कि किस प्रकार गाँव के विभिन्न वर्गो मे सघर्ष होता है, किन्तु उनका नायक अपनी सज्जनता और साधुता के कारण सवके हृदय पर विजय प्राप्त करके सबका प्रिय पात्र बन जाता है। इसे १९५९ मे टाउन डिग्री कॉलेज बलिया स्थित पीठ आकाश रेखा रगमच (स्टेटिक सेटिंग स्काई लाइन थियेटर) पर खेला गया। इसे पेटिका मच पर भी खेला जा सकता है ।

पारिजात हरण (सन् १९६८, पृ० ३५), ले० . शंकर देव, प्र० हिन्दी विद्यापीठ, आगरा, पात्र · पु० ८, स्त्री ६, *अक-दृश्य-रहित* । *घटना-स्थल* द्वारिकापुरी, प्राग्ज्योतिषपुरी, अमरावती पुरी, कामरूप ।

इस अकिया नाटक मे कृष्ण के पारिजात-हरण की कथा प्रस्तुत की गई है ।

सर्वप्रथम सस्कृत मे कृष्ण द्वारा पारिजात-हरण का वर्णन किया गया है। फिर सूत्रधार पारिजात-हरण नाट के अभिनय का संदेश दर्शको को सुनाता है। इसके बाद कृष्ण के नखशिख का वर्णन होता है। नारद इन्द्र के साथ आकर भगवान् कृष्ण को पारिजात का पुष्प देकर उसकी महिमा का वर्णन करते है कि इसकी गध जिस घर मे होती है वह घर सब प्रकार के वभव से भरा रहता है। श्रीकृष्ण वह पुष्प रुक्मिणी के माथे पर चढाते है। इसके बाद नारद नरकासुर के उत्पात का वर्णन करते है। इसी समय पुरन्दर भी आकर नरकासुर द्वारा वरुण का छत्र छीनने का सदेश सुनाता है। कृष्ण तुरन्त प्राग्ज्योतिषपुर जाकर उसको दडित करने का आश्वासन देते है। नारद वहाँ से सत्यभामा के पास जाकर कृष्ण द्वारा पारिजात पुष्प रुक्मिणी को देने की वात बताते है तथा सत्यभामा को सपत्नी का अभ्युदय सहने पर धिक्कारते है। यह सुनकर सत्यभामा दुखी होती है। सत्यभामा के दुखी होने का सदेश नारद कृष्ण के पास पहुँचाते है जिससे कृष्ण आकर सत्यभामा को शतपुष्प लाने का वचन देते है ।

अब भगवान् कृष्ण सत्यभामा के साथ गरुड पर सवार होकर प्राग्ज्योतिपपुर पहुँचते है। वहाँ पर भगवान् और नरकासुर मे युद्ध होता है। भगवान् चक्र सुदर्शन से उसका सिर काट देते है। उसके पुत्र भगदत्त को कामरूप का राजसिंहासन देते हुए सोलह सहस्र कन्याओ को मुक्त कर देते है। वहाँ से भगवान् अमरावतीपुरी पहुचते है। वहाँ सत्यभामा को पारिजात वृक्ष का दर्शन कराते है। सत्यभामा पारिजात वृक्ष लेने का आग्रह करती है जिससे भगवान् नारद को पारिजात वृक्ष लेने के लिए भेजते है। नारद जाकर इन्द्र से निवेदन करते है तो इन्द्राणी और इन्द्र दोनो उसे देने से इन्कार कर देते है। नारद आकर सारा हाल कृष्ण से वताते है। पुन सत्यभामा पारिजात वृक्ष के लिए आग्रह करती है। इधर इन्द्राणी भी देवदुर्लभ पारिजात वृक्ष को मनुष्य तक ले जाने के लिए इन्द्र को धिक्कारती है।

इधर इन्द्र युद्ध की तैयारी करता है और उधर शची भी सत्यभामा से कृष्ण की निन्दा करती है, तथा सत्यभामा भी इन्द्र की सारी बुराई खोलती है। इन्द्राणी इन्द्र को धिक्कारती है जिससे इन्द्र भगवान् कृष्ण से युद्ध करने को प्रस्तुत होता है। इन्द्र प्रहार करता है। भगवान् उसे सहन कर लेते है। भगवान् के चक्रसुदर्शन को देखते ही इन्द्र भागता है। इन्द्र को भागता देख सत्यभामा उसे लज्जित करती है। तब इन्द्र सत्यभामा को कृष्ण-पत्नियो मे सबसे बडी बताता है तथा अपने को धिक्कारता हुआ कृष्ण को दण्डवत् प्रणाम करता है। कृष्ण उन्हे ज्येष्ठ भ्राता होने का आश्वासन देते है। फिर इन्द्र पारिजात वृक्ष को प्रसन्नतापूर्वक कृष्ण को देते है। पारिजात वृक्ष को लेकर सत्यभामा रुक्मिणी के पास जाती है और अपने सौभाग्य की महिमा का वर्णन करती है। रुक्मिणी भी जगद्गुरुस्वामी कृष्ण की महिमा का वर्णन करते हुए कहती है कि उनको धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आसानी से करतल हो जाता है। अन्त मे सत्यभामा की प्रार्थना पर भगवान् पारिजात वृक्ष का रोपण उसके द्वार पर करते है।

अन्त मे भगवान् कृष्ण की लीलाओ का उल्लेख करते हुए नाटक समाप्त होता है।

पार्वती (सन् १९५८ पृ० ९७), ले० : उदयशंकर भट्ट, प्र० हिन्दी भवन इलाहाबाद *पात्र* · पु० ४, स्त्री ६, अक २, *दृश्य* · ३, ४।

यह सामाजिक नाटक समाज की कतिपय ज्वलन्त समस्याओ का उद्घाटन करता है। परमानन्द एक निर्धन परिवार का व्यक्ति है जिसको उसकी गरीब माँ ने बडे कष्टो से पाला-पोसा है। इसके विपरीत उसकी पत्नी गुलाब एक बडे घर की बेटी है इसलिए दोनो के सस्कारो मे विरोध है। गुलाब अपनी महानता के दर्प एव आधुनिकता के दभ मे अपनी सास को अपमानित करके घर से निकाल देती है। खर्चीलि जीवन के निर्वाह के लिये वह स्वयं तहसीलदार पति की आँखो की आड मे छोटे कर्मचारियो से मनमाना रिश्वत लेती है। ऐसे ही एक रिश्वत के सदर्भ मे पकड़े जाने पर परमानन्द दण्डित किया जाता है और उसे नौकरी से अलग होना पडता है। परमानन्द की नौकरी छूटने पर गुलाव को वास्तविकता का ज्ञान होता है और उसे अपनी सास पार्वती के अपमान करने का वडा पश्चात्ताप होता है। अन्त मे वह रास्ते पर आ जाती है और उसका पारिवारिक जीवन सुखी वन जाता है।

पार्वती और सीता (सन् १९२५), ले० : आनन्दीप्रसाद श्रीवास्तव, 'झाँकी' मे सग्रहीत; *प्र०* : गाधी हिन्दी पुस्तक भडार।

'पार्वती और सीता' गीति-नाट्य रामायण की चिर-परिचित कथा पर आधारित है। प्रारभ मे सीता के गौरी-पूजन से पार्वती प्रसन्न होती है तथा सीता को उसका भविष्य वताती है कि राम से विवाह होने पर कितनी कठिनाइयाँ उपस्थित होगी। इस स्थल पर पार्वती सीता के अनिश्चित भविष्य का व्यापक चित्र प्रस्तुत करती है। राम-वन-गमन, रावण द्वारा सीता हरण, राम द्वारा सीता की अग्नि परीक्षा, लोकोपवाद के कारण पुन. सीता-त्याग, सीता का दो पुत्रो को जन्म देना, वाल्मीकि के प्रयत्नो से दोनो का पुनः मिलन तथा प्रजा के आग्रह पर सीता से पुनः पवित्रता के प्रमाण की माँग आदि घटनाएँ पार्वती द्वारा सूक्ष्म रूप मे प्रस्तुत की गई है। इस पर भी राम के प्रति सीता की अचल निष्ठा देखते हुए पार्वती आशीर्वाद देती है।

पाषाणी (सन् १९५८), ले० · आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री; प्र० : लोक भारती, इलाहाबाद; *दृश्य* : ३।

इस गीतिनाट्य के कथानक का आधार रामायण की कथा है। इसमे पाषाणी का अन्तर्द्वन्द्व दिखाया गया है। गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या ही पाषाणी है। इसमे तृप्त-अतृप्ति और अतृप्त-तृप्ति का अन्तर्द्वन्द्व है। इस गीतिनाट्य मे सगीत का सहारा लिया गया है। वस्तुतः एक रात का समय ही इसकी मूल घटना मे व्यतीत होता है। अतएव कथावस्तु को एक रात मे गायी जाने वाली समस्त रागरागनियो मे अनुबन्धित कर गीतो के माध्यम से पाषाणी के हृदय के अन्तर्द्वन्द्व को प्रस्तुत किया गया है। इसमे तपोवन का परिवेश भी सगीत मे सहायक हुआ है। पाषाणी अन्त तक अतृप्त एव तृपित पाषाणी रूप मे ही रहती है।

पिताहत्या नाटक (सन् १९५५), ले० : राम अयोध्या राय; प्र० . दूधनाथ पुस्तकालय एड प्रेस, कलकत्ता; पात्र पु० ३, स्त्री ४; *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल . वेश्यागृह, घर, मार्ग।

धनी परिवार के वेश्यागामी लडके कुचेष्टाओ का शिकार होकर अपने पिता के धन, मान और प्राण के ग्राहक हो जाते है। यही इस सामाजिक नाटक का कथ्य है।

महेश्वर युवावस्था मे पैर रखते ही वेश्यागामी हो जाता है। शादी के उपरान्त भी पुरानी आदत नही छूटती है। पत्नी के वस्त्राभूपण वेचता है। पिता अव वेश्या के यहाँ जाकर पुत्र को धिक्कारता है तो वह पिता को गोली मार देता है। विवाहिता पत्नी सास

से रुपया लेकर घूस के द्वारा उसे छुडा देती है। महेश्वर फिर भी पत्नी की उपेक्षा करता है। महेश्वर अन्त मे कोढी हो जाता है और अपनी पत्नी के पास आना चाहता है। पत्नी आधी रात को वेश्या के घर से उठा कर उसे अपने घर लाती है। रास्ते मे साधू को स्त्री के पैर की ठोकर लगती है और वह शाप देता है कि तू प्रात काल विधवा हो जा। पत्नी श्यामवती अपने सतीत्व बल से सूर्योदय को रोक लेती है। भगवान् विष्णु प्रकट होते हैं और सती नारी की कामना पूर्ण होती है।

पिम्परा (वि० १५७५, पृ० ६), ले० *:* गुचुरा झुमुरा माधवदेव, प्र० . हिन्दी विद्यापीठ, आगरा, *पात्र·* पु० ३, स्त्री ३, *अक-दृश्य-रहित*।

घटना-स्थल नन्द गाँव, गोकुल।

इस अकिया नाट मे सस्कृत विरचित नान्दी के उपरान्त कृष्ण-गोपी का संवाद पाया जाता है। कृष्ण नवनीत खाने के लिए गोपियो के घरो मे घुस जाते है। गोपियाँ कृष्ण से घर मे घुसने का कारण पूछती है। कृष्ण अपनी चोरी को छिपाने के लिए अनेक झूठ बनाते हैं। गोपियाँ कृष्ण को यशोदा के पास ले जाती है और कृष्ण की सारी बाते बताती हे। यशोदा गोपियो को उल्टी-सीधी बाते कहती है, तथा साथ ही साथ कृष्ण को खूब डॉट सुनाती है। यशोदा की बाते सुनकर कृष्ण के साथी उनकी महिमा का वर्णन करते हुए यशोदा और गोपियो की वातो का विरोध करते है। इस तरह से सारे नाटक मे सवाद ही दिखाया गया है।

पियामोर वालक (वि० १९६७, पृ० ६४), ले० रामचन्द्र चौधरी, प्र० . वीणा प्रकाशन, लहेरिया सराय, दरभगा, *पात्र* पु० २३, स्त्री १०, *अंक* ४, *दृश्य* २४। *घटना-स्थल* कुशेश्वर स्थान का महादेव मदिर, मध्यम श्रेणी के गृहस्थ का आवास, दरवाजा, मध्यम श्रेणी के ब्राह्मण का दरवाजा, विवाह मण्डप, कमला नदी की धारा, प्राङ्गण, स्टेशन, आशुतोष कॉलेज का प्राङ्गण, नवजीवन होटल, शयनकक्ष, नलिनी का शयनकक्ष, गगा तट, अलीपुर चिडियाघर, शयनकक्ष, रेलवे स्टेशन एवं आर्य समाज मदिर।

इस सामाजिक नाटक मे अनमेल विवाह की समस्या की ओर संकेत है। कुमुदिनी का अन्धप्रेमी शेखर उससे विवाह करने को व्यग्र है किन्तु जव दोनो की शादी नही हो पाती तव शेखर कुमुदिनी के पिता को दु.खी करना प्रारभ करता है। शभुनाथ के द्वारा स्थिर शादी को भी वह विघटित करने का प्रयास करता है, किन्तु मधुकर के पिता नरोत्तम, शेखर की सर्वथा उपेक्षा कर वारात सजाकर आते है एव मधुकर और कुमुदिनी की शादी हो जाती है। कुछ समय के वाद कुमुदिनी ससुराल चली जाती है। मधुकर प्रथम श्रेणी मे मैट्रिक पास करने पर विद्योपार्जन के निमित्त कलकत्ता जाता है। वहाँ उसकी भेट नलिनी नामक लडकी से होती है जो पी-एच० डी० कर रही है। धीरे-धीरे नलिनी और मधुकर मे सामीप्य हो जाता है और अपनत्व की भावना वढने लगती है। नलिनी मधुकर की द्रव्य से भी सहायता करती है और अन्तत. दोनो मिलकर आर्य-समाज के मदिर मे जाकर शादी कर लेते है।

पीरअली (सन् १९५७, पृ० ६४), ले० *:* लक्ष्मीनारायण, प्र० पीपुल्स पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली। *अक-रहित*, *दृश्य :* ८।

इस राजनीतिक नाटक मे गुप्त वेशधारी क्रान्तिकारियो का स्वातत्र्य प्रेम दिखाया गया है। प्रथम दृश्य अहमद और जसवंत के वगावत सम्वन्धी वार्तालाप से आरम्भ होता है। इन्ही की वार्ताओ से 'पीरअली' का भी परिचय मिलता है। पीर-अली वगावत करनेवालो का नेता है। उसके पकडने के लिए सूवेदार हिदायत और अग्रेज आफिसर 'नेशन' प्रयत्न पर हैं। वह उनके सामने से फकीर के वेश मे निकल जाता है। एक पत्र भी, कोतवाल मेहदी अली के नाम से 'नेशन' लिख कर देता है, परन्तु शीघ्र ही सिपाही आकर वताता है कि यह छद्म-वेशधारी फकीर पीरअली ही है तो वे अपनी पिस्तौले सँभाल कर पीरअली के पीछे दौडते है। 'पीरअली' को पकडने या शूट करने का उनका प्रयत्न असफल ही रहा, परन्तु उसे

बचाने मे सुल्तान नामक व्यक्ति, जो कि पीरअली का अभिन्न सहायक था—गोली का शिकार होता है। 'या अल्ला' की आर्तवाणी के साथ ही 'पीरअली' का प्रथम दृश्य भी समाप्त होता है।

द्वितीय दृश्य मे पीरअली अपना नाम परिवर्तित कर अब्दुल्ला नामक पुस्तक विक्रेता बनकर पटना के एक बाजार मे दिखाई देता है। बगावत के कार्य का सचालन वह गुप्त सूत्रों से कर रहा है। पटने के कमिश्नर टेलर साहब की मुनादी (घोषणा) होती है कि जो जीवित या मृत किसी भी रूप मे पीरअली को प्रस्तुत करेगा, दो हजार रुपयो से पुरस्कृत किया जायगा। 'करामात' नामक सी० आई० डी० इन्स्पेक्टर उसकी दूकान से पुस्तके ले जाते है और 'पीरअली' (अब्दुल्ला) से इनाम पाने पर उसके मूल्य चुकाने का वादा करते है। पीरअली के एक सहायक का प्रवेश होता है। वह एक पत्र पीरअली को देता है। शीघ्र ही हो हल्ला होता है। सब लोग दूकाने बन्द करते हैं।

इसी प्रकार विविध वेशो मे पीरअली अपने साथियो को अग्रेजो के विरुद्ध उभाडता है और पकडे जाने पर जज टेलर साहब से देश स्वातत्र्य के लिए बहस करता है।

पुण्य पर्व (वि० २००६, पृ० १३८), ले०: सियारामशरण गुप्त, प्र० . साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, *पात्र :* पु० ६, स्त्री ३, अन्य राज्य कर्मचारी, *अक :* ३; *दृश्य :* ३, २, ३।
घटना-स्थल तक्षशिला का गुरुकुल, नरमेध स्थल, राजभवन।

इस सास्कृतिक नाटक मे राजा ब्रह्मदत्त का हृदय-परिवर्तन दिखाया गया है। वाराणसी का निष्कासित राजा ब्रह्मदत्त सोमवती अमावस्या की रात्रि को नरयज्ञ मे बलि देने के लिए एक सौ एक मनुष्यो को अपने अनुचरो द्वारा बन्दी बनाता है। इन्द्रप्रस्थ के राजा सुतसोम (बोधिसत्व) तक्षशिला के गुरुकुल मे ब्रह्मदत्त के सहपाठी थे। वे, नर-यज्ञ की बात सुनकर जनता के प्राणरक्षणार्थ ब्रह्मदत्त को सुधारना चाहते है। इसी बीच ब्रह्मदत्त के एक अनुचर द्वारा सुतसोम बन्दी रूप मे ब्रह्मदत्त के पास लाए जाते है। बन्दी सुतसोम ब्रह्मदत्त को नरमेध बन्द करने के लिए समझाते है। ब्रह्मदत्त प्रथम तो सहमत नही होता, लेकिन अन्त मे अन्त करण मे प्रभावित हो जाता है। तभी सुतसोम अन्य बन्दियो को मुक्ति दिलवाने के लिए बलि होने को तैयार हो जाता है। इनसे प्रभावित होकर ब्रह्मदत्त नरमेध का विचार त्याग देता है। वह सुतसोम के समक्ष आत्मसमर्पण कर उन्हे अपना आचार्य स्वीकार कर लेता है। दोनो का प्रगाढ प्रेम-सम्बन्ध स्थापित हो जाता है।

पुजारी (सन् १९५९, पृ० ७२), ले०: जगदीश शर्मा, *प्र०* देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, *पात्र* · पु० ८, स्त्री २, *अक* . ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल : मन्दिर।

इस सामाजिक नाटक मे एक पुजारी के जीवन की घृणित लीलाओ को व्यक्त किया गया है।

मन्दिर का पुजारी गंगाराम धर्म की आड़ मे न जाने कितने दोषो का भागी बनता है। एक दिन अवसर पाकर पुजारी शराब के नशे मे कम्मो महतरानी को बाँहों मे कस लेता है और फिर होश आने पर अपने ऊपर गंगाजल छिडककर पवित्र पुजारी का ढोग रचता है।

पुराने ढर्रे का बाप और नई चाल का बेटा (सन् १९१७, पृ० ४५), ले० : पं० मगनीराम शर्मा; *प्र० :* स० ध० कुमार सभा, मेरठ; *पात्र :* पु० २, स्त्री १; *अक :* २, *दृश्य :* १।
घटना-स्थल : घर।

इस सामाजिक नाटक मे पिता-पुत्र की विचार-विभिन्नता के कारण कटुता दिखाई गई है।

पुराने विचारो के पिता और आधुनिक तथा निर्लज्ज प्रतीत होने वाले पुत्र के बीच

विवाद होता है। पुत्र पिता के समक्ष सिग्रेट पीता है और तथाकथित सुधारवादी पिता उसे उसके दुर्गुणो को समझाता है। पिता और पुत्र का कटु सम्बन्ध इसमे चित्रित किया गया है।

पिता पुत्र को सूर्योदय से पूर्व उठने, सिग्रेट छोडने का उपदेश देता है। अपने आदर्शो की पुष्टि के हेतु वह आधुनिक भारतीय मनीषियो—तिलक, गोखले, स्वामी विवेकानन्द इत्यादि के जीवन-चरित्र को उदाहरणार्थ अपने पुत्र के समक्ष रखता है। धर्म-शास्त्रो की महत्त्वपूर्ण मान्यताओ के अतिरिक्त वह स्वदेशप्रेम तथा मातृभाषा का महत्त्व भी अपने पुत्र को समझाता है। पुत्र, पिता से अपनी सहमति तथा असहमति प्रकट करता रहता है।

पुरु और एलेक्जेण्डर (सन् १९४२, पृ० ७५), ले० हरिश्चन्द्र सेठ, प्र० इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग, *पात्र* पु० १०, स्त्री २, *अक* ५, *दृश्य* ६, ७, ८, ७, ६।
घटना-स्थल तक्षशिला विद्यापीठ, राज-भवन, कारागार, सिन्ध नदी।

इस ऐतिहासिक नाटक मे ग्रीक का भारत पर आक्रमण दिखाया गया है। एलेक्जेडर का भारतीय आक्रमण हिन्दूकुश और सिन्ध के मध्यवर्ती प्रदेश से आरम्भ होता है। यहाँ पर अश्वक नामक क्षत्रिय-जाति एलेक्जेडर के छक्के छुडाती है। नौ मास बाद एलेक्जेडर नाना तरह के अत्याचार करता है। सिन्धु को पार करने के लिये वह तक्षशिला-नरेश आम्भी को अपनी तरफ मिला लेता है और सन्धि के अनुसार फारस से लूटा हुआ सोना-चाँदी आम्भी को देता है, अत उसके सेनापति तक रुष्ट हो जाते है। वह फिर पुरु से सन्धि कर लेता है। उसके लौटने के समय उसका राज्य झेलम से लेकर व्यास तक फैल जाता है।

पुरु-विक्रम नाटक (सन् १९०५, पृ० १३५), ले० खेमराज श्री कृष्णदास, प्र० श्री वैंकटेश्वर स्टीम यन्त्रालय, बम्बई। *पात्र* पु० ९, स्त्री ६; *अक* . ५, *दृश्य* : २, १, २, १, ३।
घटना-स्थल . कोहिमा, वितस्ता नदी के किनारे पर बनाया हुआ राजा तक्षशिला का मन्दिर।

यह नाटक सिकन्दर शाह की शूरवीरता पर आधारित है।

इलविला, जो पुरुराज से प्रेम करती है, सिकन्दरशाह के जेल मे बन्द रहती है। वह पुरुराज को पत्र लिखती है। पुरु अलेक्जेडर मे युद्ध होता है और वह छूट जाती है तथा दोनो का मिलाप होता है।

पुरु-विक्रम नाटक (सन् १९०५, पृ० १३५), ले० शालिग्राम वैश्य, प्र० वेकटेश्वर प्रेस, बबई। *पात्र* पु० ४, स्त्री ८, *अक* ५; *दृश्य* ९।
घटना-स्थल पर्वत प्रदेश, पुरु का डेरा।

इस ऐतिहासिक नाटक मे भारत पर सिकन्दर के आक्रमण की घटना इतिहास को दृष्टि मे रखकर लिखी गई है। इस नाटक की नायिका इलविला ने सिकन्दर के आक्रमण के पूर्व पंचनद नरेश पुरु को अपना प्रियतम स्वीकार किया था, किन्तु आक्रमण के उपरान्त देश की लज्जा बचाने के लिये उसने प्रतिज्ञा की कि यवनो को देश से निष्कासित करने वाले वीर योद्धा को ही वह पति-रूप मे स्वीकार करेगी। यवनो से युद्ध करने से पूर्व पुरुराज इलविला से जब प्रेम-प्रदर्शन करते है तो वह कर्त्तव्य की स्मृति दिलाते हुए कहती है कि "जाओ राजकुमार! प्रथम युद्ध मे जय-लाभ करो, यह प्रेमालाप का वक्त नही है।"

युद्ध के उपरान्त जब यह मिथ्या अफवाह फैलती है कि पुरुराज की मृत्यु हो गई है, तो इलविला देश-हित अपने को बलिदान करने के लिये सन्नद्ध हो जाती है और सकल्प करती है कि देश की रक्षा के उपरान्त अपने प्रियतम पुरु से स्वर्ग मे मिलने के लिये लौकिक लीला समाप्त कर दूंगी।

नाटक के अन्त मे पुरुराज यूनानियो को पराजित करने मे समर्थ होते है और इलविला और पुरुराज का परिणय सपन्न

होता है।

पुलिस (सन् १९००, (लीथो मे) पृ० ३१), ले० प० मूलचन्द वाजपेयी, अक-दृश्य-रहित।

इस सामाजिक नाटक मे पुलिस का अत्याचार और थानेदारो का भ्रष्टाचार दिखाया गया है।

नाटक का नायक धनदास बहुत ही सात्विक विचारो का व्यक्ति है वह अहिसा को परम धर्म मानता है। एक दिन वह अपने इलाके के थानेदार को घर पर आमत्रित करता है। थानेदार ऐसा मासाहारी है कि एक दिन भी मुर्गा, मछली के बिना भोजन करता ही नही। धनदास धर्म-सकट मे पड जाता है। वह थानेदार से मासाहार के विषय मे अपनी असमर्थता प्रकट करता है और उन्हे निरामिप ही भोजन देता है। थानेदार का साथी छट्टू मिया घोर मासाहारी है अत धनदास और छट्टू मिया मे वादविवाद छिड जाता है और वह छट्टू मिया को कायल कर देता है कि मासाहार मानव शरीर के लिए सर्वथा आवश्यक नही।

[कुछ लोग इसे एकाकी नाटक मानते है पर इसे लघु नाटक कहना उचित है।]

पूरण भक्त (करुणा और भक्ति प्रधान ऐतिहासिक नाटक), (सन् १९१७, पृ० १०१), ले० प० रामप्रसाद मिश्र 'श्याम' मस्ताना; प्र० . प्रोप्राइटर सरयूप्रसाद श्रीवास्तव, अयोध्या, *पात्र* पु० १३, स्त्री ६, *अक* ३; *दृश्य* १४, ८, ४।
घटना-स्थल शिव मन्दिर, जगल, कुँआ।

स्यालकोट-महाराज शखपति पुत्र पैदा होने की सूचना पाकर बहुत खुश होते है लेकिन ज्योतिष के अनुसार मूल नक्षत्र अशुभ होने से १६ वर्ष तक शिशु-मुख देखना वर्जित होने के कारण राजा बहुत दुखी होते है। राजमहल मे एक तरफ बधाई बजती है दूसरी ओर महारानी इच्छरा की आँखो मे पट्टी बाँध दी जाती है। इच्छरा बच्चे को देखने के लिये तडपती है। उसी समय उसी स्थान पर ज्योतिषी जी मंत्री के साथ बच्चे को लेने आ जाते है, अत. बच्चे को ले जाने से इच्छरा बहुत दुखी होती है।

सोलह वर्ष व्यतीत हो जाने पर ज्योतिषी जी पूरन को उसके माता-पिता के पास लाते है। पूरन अपने माता-पिता को प्रणाम कर छोटी माता को प्रणाम करने के लिये जाता है। विमाता लूना को प्रणाम कर आशीर्वाद प्राप्त करता है। लूना पूरन को बुलाने के लिये नौकरानी को आज्ञा देती है। पूरन को पुन चलते समय अनेक अपशकुन मिलते है लेकिन महल मे जाकर लूना को प्रणाम करता है। लूना बुरी निगाहो से उसे अपना पति बनाने का प्रस्ताव रखती है। पूरन के अस्वीकार करने पर राजा के द्वारा राजकुमार को फाँसी दे दी जाती है। फाँसी पर चढते ही शंखपति एक-दो तीन बोलता है तो बिजली की चमक के साथ फासी टूट जाती है और भारत माता प्रकट हो जाती है, परियाँ माला पहनाती है। लूना के हठ करने पर जगल मे पूरन के हाथ को काटकर लाश को कुँए मे फेक दिया जाता है। गोरखनाथ की कृपा से पूरन कुँए से बाहर आ जाते है। भारत माता की कृपा से हाथ आकर जुड जाते है। कालान्तर मे गुरु कीआज्ञा से पूरन अपने घर जाता है और इच्छरा की आँख ज्यो की त्यो हो जाती है। पूरन अपने माता-पिता को प्रणाम कर फिर गुरु गोरखनाथ के पास आ जाता है।

पूर्व की ओर (सन् १९५५, पृ० १९६), ले० : वृन्दावनलाल वर्मा, प्र० · मयूर प्रकाशन, झाँसी, *पात्र* · पु० १०, स्त्री २, *अक* ४, *दृश्य* ७, ८, ८, ७।
घटना-स्थल · राजभवन, महाचैत्य, समुद्र, द्वीप।

इस ऐतिहासिक नाटक मे मगध-राजकुमार अश्वतग की विजय दिखाई गई है।

धान्यकटक के राजा वीरवर्म्मा पल्लवेन्द्र के भतीजे अश्वतुग अपने विदूपक साथी गजमद तथा सात सौ सैनिको के साथ प्रतिष्ठान नगर पर आधिपत्य करने के लिए कुचक्र

रचते है। प्रतिष्ठान को नियन्त्रण मे लेने से पूर्व अश्वतुग अपने साथियो सहित नागार्जुनी कोडा के स्थविर जय से मिलता है तथा चोल-नरेश के काची पर आक्रमण होने तथा द्रव्य की अपार आवश्यकता वताते हुए, नागार्जुन की स्वर्ण-निर्माण-विधि को जानने का प्रयत्न करता है। स्थविर के न वताने पर उसे वन्दी वना लिया जाता है। नागार्जुनी-कोडा के निकट के एक गाँव के श्रेष्ठी चन्द्रस्वामी को भी, काची की मुक्ति के लिए स्वर्ण न देने पर वृक्ष से वाँध दिया जाता है। प्रतिष्ठान नगर पहुँचकर अश्वतुग उस प्रान्त पर अपने शासक नियुक्त होने का आदेश-पत्र भट्टनागर को देता है। इसी समय महादडनायक अश्वतुग को वन्दी वनाने की राजाज्ञा लेकर उपस्थित होता है और अश्वतुग सहित सभी साथियो को वन्दी वनाकर धान्यकटक की ओर प्रस्थान करता है। राजा वीरवर्म्मा अश्वतुग तथा उसके सभी साथियो को महाचैत्य के अपमान, चन्द्रस्वामी को लूटने, प्रतिष्ठान के भट्टनागर के अपमान आदि अपराधो के लिए देश से निष्कासित करने की आज्ञा देते हैं।

अश्वतुग अपने सभी साथियो-सहित श्रेष्ठी चन्द्रस्वामी के जलयान द्वारा एक द्वीप मे निष्कासित होता है। समुद्र मे तूफान आने से सभी यात्री प्रवल लहरो द्वारा नागद्वीप के किनारे फेक दिए जाते हैं। नागद्वीप के नर-भक्षी निवासी गजमद, चन्द्रास्वामी, महानाविक, अश्वतुग आदि को पकडकर लक्कडो से वाँधकर पेडो से टिका देते है। महानाविक अपने कुछ नाविको के साथ वन्धनो को तोडकर भाग खडे होते हैं और समुद्र के किनारे खडे यान पर चढ जाते है। द्वीपवासी उन्हे पकडने आते हैं किन्तु महानाविक के तीर से वृद्ध की मृत्यु होती है। साथ ही महानाविक यान को समुद्र मे सरकाने मे भी सफल हो जाता है।

इधर अश्वतुग, गजमद आदि के वलिदान की तिथि पूर्णिमा निश्चित की जाती है। द्वीप की सवसे अधिक शक्तिशाली नारी धारा भारतीय भाषा से अपरिचित होने पर भी अश्वतुग की ओर आकर्षित होती है। द्वीप के मुखिया वनने तथा अश्वतुग से शादी करने के प्रश्न पर द्वीप की एक अन्य स्त्री तूम्वी से धारा का युद्ध होता है। धारा लौह-वाण से तूम्वी को पराजित करती है और उसे वन्दी वनाकर अग्नि मे स्वाहा करने को तत्पर होती है। अश्वतुग के प्रयत्न से धारा तूम्वी को छोड़ देती हैं तथा उससे मित्र वने रहने की शपथ ले लेती है। इसके उपरान्त महानाविक, जयस्थविर, कन्दर्पकेतु, गौतमी आदि को लेकर पुन. नागद्वीप आता है और अश्वतुग को वापस चलने को विवश करता है। द्वीप की रानी धारा भी नागद्वीप का शासन तूम्वी को सौंपकर अश्वतुग के साथ चल देती है।

वारुणद्वीप जाते हुए महायान पर गौतमी तथा धारा मे द्वन्द्व छिड जाता है किन्तु अश्वतुग के प्रयत्न से धारा गौतमी से क्षमा माँगती है। वारुणद्वीप पहुँचकर अश्वतुग अन्न-समस्या को सुलझाकर भूमि को उर्वर वनाने मे जुट जाता है। वारुणद्वीप की प्रजा अश्वतुग को अपना शासक नियुक्त करती है। अश्वतुग वारुणद्वीप मे उत्कृष्ट शासन, कला आदि के आयोजन के साथ भारतीय सस्कृति के तत्त्वो को स्थापित करने की प्रतिज्ञा करता है और भारत की जयजयकार के साथ नाटक समाप्त होता है।

पूर्व भारत नाटक (वि० १९७९, पृ० १७६), ले० . श्याम विहारी मिश्र एव शुकदेव विहारी मिश्र, प्र० . गंगा पुस्तकालय कार्यालय, लखनऊ, पात्र पु० १७, स्त्री ३, अक : ३, दृश्य ९, ११, ११।

इस पौराणिक नाटक मे महाभारत युद्ध से पूर्व घटित घटनाये दिखाई गई हैं।

कौरव-पाण्डवो की कथा के साथ हिडिम्व और हिडिम्वा नामक राक्षसो की कथा और द्वितीय अक मे एक ग्रामीण की दो चण्डूवाजों मे वातें, ग्रामीण वोलचाल की भाषा मे प्रदर्शित की गई है। जैसे—

हिडिम्वा—अरी देखु न कहीं मनई है। कहूँ कइयो जने जानि परत नाटैं।

हिडिम्वा—अरे उइका परे अहै देखु न।

सम्पूर्ण नाटक पूर्व महाभारत की कथा के साथ हास्योत्पादक कथा का भी निर्वाह

करता है।

पृथुचरित्र अथवा वेणु सहार नाटक (वि० २००४), ले० : बालकृष्ण भट्ट, प्र० नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सर्वप्रथम 'हिन्दी प्रदीप' के कार्तिक से फाल्गुन वि० १९६६ तक के अक मे धारावाहिक प्रकाशित, *पात्र* · पु० १२, स्त्री १, अक · ३, दृश्य ८ : (गर्भाक)

सुनीथा-पुत्र वेणु राजगद्दी पाकर निरकुश हो जाता है। वह राज मे ढिंढोरा पिटवा देता है कि कोई भी यज्ञ, दान, हवन आदि न करे। इससे नागरिक चितित हो जाते है। वेणु के राज्य मे कुप्रवृत्ति अपना प्रभाव फैलाने लगती है। अत नागरिकगण भृगु मुनि के आश्रम मे जाकर राजा के अत्याचार का विवरण देते है। मुनि उन्हे आश्वस्त करते है। दुर्दैव और अनीति भी उसी ओर से अश्लील कथोपकथन करते हुए जाते है। इधर राजा की आज्ञा के अनुसार 'सुचालवर्द्धिनी' सभा के सभापति को १० वर्ष के कारावास का और 'विद्याविनोदिनी' पाठशाला के अध्यापक को देश-निर्वासन का दड दिया जाता है। इसके विपरीत महाराज की हा मे हा मिलानेवाले और स्वार्थ के लिए देश की हानि करनेवाले को क्रमश 'महामहोक्ष' तथा 'अर्थपिशाच' की पदवी से अलकृत किया जाता है। राजपुरोहित कुक्कुट मिश्र अपने प्रभाव और पाडित्य का स्वय बखान करते हुए पडितानी द्वारा डाटे जाते है। राजा के कुशासन, स्वार्थी खुशामदियो की चहल-पहल, ऋषियो के अनादर और यौवन, धन, प्रभुतासपन्न घमडी राजा के अविवेक के विरुद्ध वृद्धश्रवा नामक कचुकी अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करता है। वेणु सार्वभौम चक्रवर्ती होकर बुद्धिमान् विद्वान् को अपने आगे नीच समझता है। वह अपने को सर्वपूज्य देवता सिद्ध करता है। उसकी नीति से वर्णाश्रम-धर्म विश्रृ खलित हो जाता है। चारो ओर ब्राह्मणो की दुर्गति होती है। इन सब अत्याचारो से ऊबकर ऋषिगण वेणु के यहा जाते है। वेणु उनका अपमान करता है। अस्तु उसे मदोद्धत देख पहले तो भृगु समझा-बुझाकर न्याय मार्ग पर चलने की शिक्षा देते है परन्तु पुन. अपमानित होने पर वे वामदेव, अत्रि, मत्रवरुणि आदि की सहायता से मारणमत्र पढकर कुशा से कमडल का जल वेणु के ऊपर डालते है जिससे वेणु निर्जीव होकर सिंहासन के नीचे गिर पडता है।

पृथ्वी कल्प (सन् १९६०), ले० · गिरिजाकुमार माथुर, खण्ड ४। प्र० कल्पना पत्रिका अप्रैल १९६१।

इस गीतिनाट्य के कथानक मे आधुनिक विज्ञान के समस्त आविष्कारो के चित्रण के साथ युद्ध और शान्ति की अन्तर्राष्ट्रीय पृष्ठभूमि को ग्रहण किया गया है। स्वर्णादित्य की अध्यक्षता मे भयंकर असामयिक शक्तियो के साथ मानवीय जीवन का चरम सघर्ष दिखाया गया है। नाटक के अन्त मे नागरिक जीवन के प्रतीक 'जनमोहन' की विजय दिखाई गई है। यह समस्त रचना चार खण्डो मे विभाजित की गई है। इसके पहले खण्ड मे नीहारिका चक्र है जिसमे मनोमाया फेण्टेसी को प्रस्तुत किया गया है। दूसरा—स्वर्णादित्य, खण्ड है जिसमे वर्तमान व्यावसायिक पद्धतियो को प्रतीक के रूप मे चित्रित किया गया है। तीसरे—लौहदेश मे राज्यवाद, सैन्यवाद, अधिनायकवाद, समष्टिवाद अथवा यंत्रवादी सामूहिक तन्त्रो की वस्तुस्थितियो को प्रस्तुत किया गया है। नाटक के अतिम भविष्य खण्ड मे विश्व के परिवर्तित मूल्यों को मानव-समाज के कल्याण मे बदलते हुए चित्रित किया गया है।

पृथ्वीराज (सन् १९५१, पृ० २०२), ले० हरिशरण श्रीवास्तव, प्र० राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, *पात्र* पु० १६, स्त्री २, *अक* ४ *दृश्य* ६, ५, ६, १०।
घटना-स्थल : आबूपर्वत पर आश्रम, अजमेर मे वाटिका, पृथ्वीराज का आखेट शिविर, युद्धक्षेत्र, अचलगढ, गजनी गोरी का दरबार, पट्टन मे भीमदेव का दरबार, नागौर का रणक्षेत्र, कर्णाट की वेश्या का महल, कन्नौज मे सयोगिता स्वयंवर, शाहेगोर का दरबार।

इस ऐतिहासिक नाटक मे पृथ्वीराज का

शौर्य और उसका पतन दिखाया गया है।

प्रत्येक अंक मे प्रहसन का दृश्य स्वतन्त्र रूप से जोड दिया गया है। प्रस्तावना मे नट कहता है कि पृथ्वीराज रासो और मराल कविकृत चौहान-चरित्र के आधार पर पृथ्वीराज के जीवन को नाटक रूप मे खेलना है। महाराज सोमेश्वर अपनी रानी से पृथ्वीराज की प्रशसा करते हुए कहते है कि मैने चन्द जैसा पडित, कैमास जैसा राजनीतिज्ञ, कान्हराय, निठुरराय, जैतसिह जैसे सामन्त एकत्र कर दिए है। हिन्दू-राज का यश विश्वविख्यात होगा। एक दिन पृथ्वीराज के दरबार मे सुल्ताने गोर का दूत अरब खाँ शाही पर्वाना लेकर आता है कि हमारे विद्रोही बन्धु हुसेन खा को हमे दे दो। पृथ्वीराज दर्प से उसका अनादर करता है। इधर भारत मे संयोगिता के विवाह के कारण कई राजा पृथ्वीराज के वैरी हो जाते है। पृथ्वीराज अपने सेनापति चामुड राय को अपमानित करके बन्दी बना लेता है। गोरी कई बार पराजित होता है पर अन्त मे जीत जाने पर दिल्ली मे कत्लेआम कराता है। पृथ्वीराज गोरी के दरबार मे बन्दी बना लिया जाता है। गोरी उसकी इस मूर्खता पर हँसता है कि उसने हमे पराजित करके फिर छोड दिया। गोरी जल्लादो को बुलाकर पृथ्वीराज की आँखे निकलवा लेता है। बन्दीगृह मे पृथ्वीराज और चन्दवरदाई एक दूसरे को बाणो से मारकर मर जाते है।

पृथ्वीराज चौहान (सन् १९५२, पृ० ९०), ले० न्यादर सिंह 'बेचैन', प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, पात्र पु० १२, स्त्री ७, अक: ३, दृश्य ७, ३, ७।

इस ऐतिहासिक नाटक मे पृथ्वीराज चौहान के वीरतापूर्ण कार्यो का चित्रण किया गया है। पृथ्वीराज धन-लोलुप शाहबुद्दीन को युद्ध मे अनेक बार पराजित करता है और हर बार क्षमा मागने पर उसे छोड भी देता है। अनंगपाल अपने नाती पृथ्वीराज चौहान को दिल्ली का राज सौप देता है। पृथ्वीराज को दिल्ली का राज्य मिलने से जयचन्द चिढ जाता है और वह दिल्ली का राज हस्तगत करने का उपाय सोचकर राजसूय यज्ञ तथा साथ ही सयोगिता का स्वयवर करने का निश्चय करता है। पृथ्वीराज को अपमानित करने के लिए उसकी मूर्ति द्वार पर रखवा देता है तथा पृथ्वीराज के पास राजसूय-यज्ञ का निमन्त्रण भेजा जाता है लेकिन वह जयचन्द का निमन्त्रण ठुकरा देता है। सयोगिता अपना प्रेम-पत्र जोधामल के द्वारा पृथ्वीराज के पास भेजती है और उनसे स्वयवर के समय आकर अपनाने का आग्रह करती है। पृथ्वीराज सेना तैयार करके कन्नौज जा पहुँचता है। सयोगिता स्वयवर-द्वार पर रखी पृथ्वीराज की मूर्ति को जयमाला पहना देती है। जयचन्द सयोगिता को तलवार निकालकर मारने दौडता ही है कि पृथ्वीराज सयोगिता को घोडे पर बैठा कर दिल्ली चल पडता है।

पृथ्वीराज कैमास को कर्नाटकी के साथ व्यभिचार करते देख तीर से उसे मार देता है। चामुण्डराय पृथ्वीराज के पागल हाथी को जनता तथा अपनी रक्षा के लिए मारता है। पृथ्वीराज इस बात से नाराज होकर चामुण्डराय को बन्दी बनाता है। पृथ्वीराज अब राज-काज छोडकर भोग-विलास मे लिप्त हो जाता है। माहोबा की लडाई मे अपनी बहुत बडी सेना व्यर्थ ही नष्ट करता है। शाहबुद्दीन उपयुक्त समय देख कर भारत को जीत इस्लाम धर्म का झडा फहराने के लिए भारत आता है। शाहबुद्दीन और जयचन्द पृथ्वीराज पर आक्रमण करते है। पृथ्वीराज लडते-लडते मुगल सेना से घिर जाता है। विजयसिह को सेना लेकर मदद करने की आज्ञा देता है लेकिन वह धोखा देकर जयचन्द से जा मिलता है। शाहबुद्दीन पृथ्वीराज को कैद करके उसकी आँखे फोड देता है। जयचन्द को भी विश्वासघात का इनाम कत्ल के रूप मे मिलता है। शाहबुद्दीन पृथ्वीराज को अधा करके गजनी कैदखाने मे डाल देता है। चन्द्र कवि साधु का वेश धारण कर गजनी पहुँचता है और पृथ्वीराज से मिलता है। चन्द्र कवि के कहने पर शाहबुद्दीन पृथ्वीराज को शब्द-वेधी बाण का करिश्मा दिखाने का प्रबन्ध करता है। चन्द्रवरदाई के सकेत देने पर पृथ्वीराज

शाहवुद्दीन को वाण से मार डालता है और पृथ्वीराज और चन्द्रकवि भी कटार मारकर आत्महत्या कर लेते है।

इस प्रकार नाटक मे पृथ्वीराज और जयचन्द के वैर का परिणाम दिखाया गया है।

पैंतरे(सन् १९५२, पृ०१६०),ले० · उपेन्द्रनाथ 'अश्क'; प्र० नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद; *पात्र* · पु० २० स्त्री १०; अक : ३; *दृश्य* . २, २, २।
घटना-स्थल बंबई का फ्लैट, मकान की सीढी

'पैंतरे' व्यंग्य-हास्य-प्रधान, बम्बई के फिल्मी क्षेत्रो मे काम करनेवाले कवि, अभिनेता, लेखक रगरूट, निर्देशक आदि के जीवन का चित्र उपस्थित करनेवाला त्रिअकीय नाटक है। इसमे प्रमुख समस्या आवास की अप्राप्ति की है तथा अनुवर्ती समस्या है—भारतीय चलचित्रो मे छद्म व्यवहार। परिशिष्ट मे अश्क ने स्वय लिखा है कि उनको इसकी मूल प्रेरणा मकानो की समस्या से प्राप्त हुई है।

नाटक के प्रथम अक मे अभिनेता रशीद-भाई सामाजिक फिल्म के डाइरेक्टर कादिर को सपरिवार चाय पर आमन्त्रित करता है और उस फिल्म मे काम पाने के प्रलोभन से वम्बई नगर मे मकान की समस्या जटिल होते हुए भी अपना आवास-स्थान डाइरेक्टर को समर्पित कर देता है और स्वयं अपने मित्र शाहवाज़ के यहा निवास प्रारम्भ करते हुए यह आश्वासन देता है कि डाइरेक्टर साहब की कृपा से आपको भी फिल्म मे समुचित कार्य दिला दूगा। इसी प्रलोभन से शाहवाज अपना आवास गृह रशीद को समर्पित कर स्वय नौकरो के साथ सीढी पर सोता है। शाहवाज रशीद भाई की सव प्रकार के मस्केवाजी करता है और उन्हे मदिरालय मे प्राय सन्तुष्ट करने का प्रयास करता है। तीसरे अक मे कादिर और शाहवाज के पडोसी पजावी किरायेदारो और गुजराती सेठो के वीच नित्य होनेवाले कलह का वीभत्स चित्रण है। नाटक का पर्यवसान उस स्थान पर होता है जहा शाहवाज नौकरो के साथ सीढी पर सोते हुए कहता है

"अरे भाई, एक फिल्म मे हमे नौकर का पार्ट अदा करना है। कुछ दिन तुम्हारे पास सीढी पर सोकर देखे कि तुम लोगो पर कैसी गुजरती है। तभी तो अच्छा पार्ट कर पाएँगे।"

इस नाटक मे दो प्रमुख पात्र है रशीद और प्रकाश। रशीद के द्वारा बडे नगरो मे आवास-समस्या व कृत्रिम फिल्मी-जीवन का भण्डाफोड तथा प्रकाश के द्वारा उन साहित्यकारो की प्रतिभा का हनन दिखाया गया है जो फिल्मी क्षेत्र के असाहित्यिक परिवेश मे उत्तरोत्तर ह्रासोन्मुख एवं आदर्शच्युत हो जाते है।

पैसा (सन् १९५५), ले० : पृथ्वीराज कपूर; प्र० पृथ्वी थियेटर्स, बम्बई, *पात्र* पु० ६ स्त्री ४ *अक* . ४।
घटना-स्थल बम्बई नगर।

नाटक मे पैसे की भूख से शातिलाल नरपिचाश बन जाता है। शान्तिलाल बैंक का मैनेजर है जिसका मासिक वेतन ४००) है। परिवार सुखी है। परन्तु उसी बम्बई मे रहने लगता है जहाँ मनुष्यो के बजाय यत्र रहते है। इसका जीवन दु खमय हो जाता है। घर के कलह से छुटकारा पाने के लिये एक धूर्त मित्र कालिदास के काले बाजार मे भागीदार बन जाता है।

शान्तिलाल पैसे के लोभ मे अपनी लडकी का विवाह एक वृद्ध से करता है। वह धन-लोभ-विरोधी अपने पुत्र मोहन को घर से निकाल देता है। कालिदास को भी दिवालिया बना देता है। कालिदास आत्महत्या के लिये विवश हो जाता है। अन्त मे स्वय भी मानसिक रोग का शिकार हो जाता है। वह हर समय पैसा-पैसा चिल्लाता है। अपनी पुत्री के वैधव्य की भी परवाह नही करता है। जब पत्नी सुशीला की आँखे खुलती है तो पश्चात्ताप करती है क्योकि उसी के असंतोष ने पति को ऐसा लोभी वनाया। भूल मानकर लडकी का पुन विवाह करती है। सारा धन दीन-दुखियो मे वाँट देती है।

अभिनय—अनेक वार विज्ञान भवन

दिल्ली मे १९५९ मे।

पैसा परमेश्वर (सन् १९५२, पृ० १८४), ले० : रामनरेश त्रिपाठी, प्र० : हिन्दी मदिर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पात्र पु० २६ स्त्री ८, अक · ३, दृश्य : १०, ११, ११।

पैसा परमेश्वर वस्तुत अजनबी नाटक का सशोधित और परिवर्द्धित रूप है। उस नाटक मे जहाँ आधुनिक जीवन मे व्याप्त छल-छद्म और भ्रष्टाचार पर जोर दिया गया है वहा इसमे पैसा को परमेश्वर सिद्ध किया गया है। कथानक मे समानता है पर पैसा को परमेश्वर सिद्ध करने के लिए लेखक ने कुछ नये दृश्य जोड दिये है। इस नाटक मे ११ दृश्य अतिरिक्त है। प्रस्तुत शीर्षक को स्पष्ट करते हुए लेखक ने स्वय कहा है "वर्तमान सभ्यता मनुष्य की सभ्यता नही पैसे की सभ्यता है। इस सभ्यता मे सर्वत्र ईर्ष्या, राग द्वेष, पर-निन्दा, छल-कपट, मिथ्याभिमान और असत्य ही के दृश्य देखने को मिलते है। यह सभ्यता तो वास्तव मे पैसे की छीना-झपटी का एक सुसस्कृत रूप है और शिष्टाचार, नम्रता, मधुर वाक्य-विलास मे आदि सब पैसे की रुक्षता को कम करने के लिये है।"

नाटक का नायक अजनबी समाज के सभी वर्गो के प्रतिनिधियो से मिलता है। सभी उसका सम्मान करते है और वह बडी सफाई से सब की पैसे की भूख से अवगत हो जाता है। सेठ, वकील, डॉक्टर, शिक्षक, लेखक, सम्पादक, चोर, डाकू, साधु, महत, वेश्या, बुद्धिजीवी सभी पैसे को ही सब कुछ मानते है और उसे प्राप्त करने के लिए घृणित से घृणित कार्य करने मे भी सकोच नही करते। पैसे के साम्राज्य मे दो वर्ग हो गए है—व्यापारी वर्ग और श्रमिक अथवा किसान वर्ग। व्यापारी वर्ग कुछ ऐसी तरकीब निकाल लेता है जिससे सारा पैसा लौटकर पुन उसी के पास आ जाता है, और किसान अथवा श्रमिक पुन. गरीब का गरीब बना रहता है। लेखक अनेक रुचिकर उदाहरणो द्वारा यह सिद्ध करने की चेष्टा करता है कि आधुनिक युग मे पैसा ही परमेश्वर है।

पैसा बोलता है (सन् १९७१), ले० . रमेश मेहता, प्र० कला ससार, दिल्ली, पात्र · पु० ७, स्त्री ४, अक . २, दृश्य-रहित। *घटना-स्थल :* मकान का ड्राइगरूम।

इस सामाजिक नाटक मे पैसे का महत्त्व और उसकी आवश्यकता दिखाई गई है।

सरकारी कर्मचारी राधेगोपाल अवकाश प्राप्त होने पर ४००) मासिक पेशन पाता है। उसकी स्त्री तारा नामक नौकरानी की सहायता से घर का कामकाज चलाती है। सुरेश और उमेश दो लडके है जिन्हे कही नौकरी नही मिलती। बडा लडका सुरेश फिल्म मे रुचि रखता है। नौकरानी के गाँव-घर का एक ग्रामीण व्यक्ति पचू राधेगोपाल के घर का दिन भर काम करके केवल रोटी पर ही अपमानित भाव से जी रहा है। बडा लड़का सुरेश एक दिन पचू को जूतो से इसलिए पीटता है कि वह (पचू) बाजार से उसकी अपेक्षा चीजे सस्ती क्यो लाता है। सुरेश लाता तो पैसा बचाता। तारा नौकरानी बेचारे पचू को भूख और अपमान से बचाने का प्रयास करती रहती है पर उसे नित्य लात-घूसा सहना पडता है।

एक दिन लाटरी का टिकट बेचने वाले वल्ली बाबू राधेगोपाल के घर आकर सूचना देते है कि पचू के नाम से एक लाख पचहत्तर हजार रुपए की लाटरी आई है। अब पचू को कोट-पैंट पहनाकर सोफासेट पर बिठाया जाता है और राधेगोपाल उसे घर का मालिक घोषित करता है। सुषमा का प्रेम-पत्र पंचू भूल से मेज पर छिपाकर रख देता है जो उसके विवाह सम्बन्ध की चर्चा करते समय लडके के पिता के हाथ लग जाता है और सम्बन्ध टूट जाता है। जहाँ पंचू को घरवालो की मार पडती थी वहाँ लाटरी मिलने पर उसके पैसे को हथियाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति उसकी सिफारिश करता है और माँ-बाप लडकी सुषमा का ब्याह उसी के साथ करने की योजना बनाते हैं। कभी-कभी बाप-बेटे उसके दोनो हाथ अपनी-अपनी ओर खीचते हैं तो वह विकल होकर कहता है कि 'मैं किसी की नही मानूंगा अपने मन की करूँगा।' इतने मे पता चलता है कि पचू के नाम लाटरी नही

आई है। अब फिर राधेगोपाल और उसके घर वाले उसे लात मारकर निकाल देते है। इतने मे फिर पंचू को वास्तव मे लाटरी का रुपया मिलता है और तब नौकरानी तारा पंचू को समझाकर उसे साथ ले गठरी-पोटली बाँध गाँव को चल पडती है। राधेगोपाल, उसकी स्त्री-बच्चे मुँह फाडे यह सब घटनाये सपने की तरह देखते रह जाते है।

अभिनय : लकीस्टार और कला ससार द्वारा ता० ८ सित० १९७२ को दिल्ली मे अभिनीत हुआ।

यह नाटक शभू मित्रा और अमित मैत्रेय के कचन रग पर आधारित है, फिर भी इसके रूपान्तर मे मौलिकता है।

पौरस सिकन्दर (सन् १९२८, पृ० ९५), ले० बा० कन्हैयालाल मिश्र तसव्वर, प्र० : ठाकुर प्रसाद एण्ड सस बुकसेलर, वाराणसी; पात्र पु० ८, स्त्री ४, अक ३, दृश्य ९, ६, ४।
घटना-स्थल पहाडी नदी का तट, यूनानी शिविर, बाग, किले का मैदान, दरबार, राजमहल, तहखाना, रास्ता, कारागार।

पारसी नाट्य-शैली का यह नाटक सिकन्दर और पौरस के युद्ध की इतिहास-प्रसिद्ध घटना पर आधारित है। बन्दी पौरस सिकन्दर के समक्ष निडर रहता है। राजोचित व्यवहार की कामना प्रकट करने के अतिरिक्त शेष सभी घटनाएँ सर्वथा काल्पनिक है। सिकन्दर द्वारा पौरस के पुत्र दिवाकर को बन्दी बनाना, उसकी हत्या की चेष्टा, अटक की राजकुमारी इन्दिरा के सहयोग से सुरक्षित बच निकलना, अम्बालिका की सिकन्दर के प्रति आसक्ति, युद्ध-भूमि मे धोखे से तक्षशील के प्रहार से पौरस का आहत हो बन्दी होना, तक्षशील द्वारा इन्दिरा को बहन बनाकर पौरस का उसके साथ विवाह कर अफगानिस्तान और तुर्किस्तान राज्य को दहेज स्वरूप दे देना, तक्षशील का आत्मघात आदि सर्वथा काल्पनिक घटनाएँ है। उर्दू-शैली के पद्यात्मक सवादो की रवानगी के बीच संस्कृत के तत्सम शब्दो के गलत प्रयोग भी मिलते है। पौरस, सिकन्दर तथा तक्षशील के अतिरिक्त शेष सभी पात्रो के नाम काल्पनिक है।

प्यास (सन् १९६२, पृ० ६०), ले० : जगदीश शर्मा; प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, पात्र : पु० ५, स्त्री १, अक २।
घटना-स्थल घर।

इस सामाजिक नाटक मे धन लोभ, और शराब का दुष्परिणाम दिखाया गया है।

बाबू कुन्दन को जुए का शौक है। वह अपनी हार पर जी भरकर शराब पीता है और उसकी यह आदत इस कदर बढ चुकी है कि उसे अपनी बढती प्यास पर काबू पा लेने का कोई भी जरिया नही सूझ पाता है। दूसरी ओर कुन्दन का छोटा भाई इतनी सादगी से जिन्दगी बिता रहा है कि बहुत छोटी सी आमदनी मे भी वह अपने परिवार को अच्छी तरह पाल लेता है। कुन्दन के दिल मे छोटे भाई के लिये जितनी नफरत है, हीरालाल के सीने मे बडे भाई के लिये उतना ही आदर है। किन्तु कुन्दन की स्त्री के कारण दोनो भाई अलग हो जाते है।

कुन्दन का पिता एक बन्द तिजोरी छोडकर मरा है और साथ ही अपने दोनो बेटो के नाम एक-एक खत भी, जिनके अनुसार तिजोरी हीरालाल के पास है, पर कुन्दन तिजोरी लेना चाहता है। कुन्दन तिजोरी के लिये अपने साथी को एक हजार रुपया देकर एक रात मे अपने छोटे भाई पर हमला कर उसके खून मे हाथ रग लेता है।। कुदन तिजोरी पर कब्जा कर, खूब शराब पीकर उसे तोडने लगता है। कुन्दन तिजोरी तोडते वक्त हाँफ रहा है। वह दौलत की खुशी बरदाश्त नही कर पा रहा है। उस तिजोरी मे कागजो मे लिपटी एक गड्डी निकलती है किन्तु गड्डी नोटो की नही बल्कि नसीहत की होती है।

कुन्दन का रोम-रोम काँप जाता है। वह महसूस करता है कि "महज मेरी अन्धी ख्वाहिश ने मुझे भाई का लहू बहा देने पर मजबूर किया" और कुन्दन…अपनी प्यास …अन्धी ख्वाहिश, और हत्यारे शरीर पर

खिलखिला कर हँस पडता है···वह कुन्दन के पागलपन की···कभी न खत्म होने वाली हँसी थी।

प्रकाश (सन् १९३५, पृ० २१८), ले० सेठ गोविन्ददास, प्र० भारतीय साहित्य मदिर दिल्ली, *पात्र* · पु० ९, स्त्री ७, *अक* · ३; *दृश्य* ९, ७, ८।
घटना-स्थल . गाँव का घर, राजमहल, सहभोज, विशाल सभा, वन्दीगृह।

यह सामाजिक नाटक तत्कालीन राजनीति के परिप्रेक्ष्य मे उच्च मध्य वर्ग की सामाजिक एव नैतिक अवस्था को चित्रित करता है।

राजा अजयसिह एक समृद्ध जमीदार और अग्रेजी राज का भक्त है। उसकी परित्यक्ता पत्नी तारा अपने पुत्र प्रकाश का गाँव मे किसी प्रकार पालन-पोषण करती है। युवा प्रकाश गाँव से नगर मे आकर सयोगवश राजा अजयसिह के दरवार मे प्रवेश पा जाता है; पर अजय और प्रकाश पिता-पुत्र के नाते से अनभिज्ञ रहते है।

एक दिन राजा अजयसिह गवर्नर को पार्टी देते है जिसमे हिन्दू महासभावादी मिनिस्टर प० विश्वनाथ, मुस्लिम लीग के नेता मौलाना शहीदबख्श, पत्रकार कन्हैयालाल वर्मा, वकील डॉ० नेस्टफील्ड भी सम्मिलित होते है। ये सभी पात्र स्वार्थी, ढोगी, जनता के शोषक एवं अग्रेज भक्त है। पार्टी मे स्वदेशी एव विदेशी मिष्ठानो और पकवानो की व्यवस्था है। विदेशी राजभक्त स्वदेशी वस्तुओ का तिरस्कार करते है। अत प्रकाश आवेश मे आकर उनका विरोध करते हुए वक्तृता देता है। स्वदेश-भक्त उस सहभोज का सामूहिक रूप से बहिष्कार करते है। प्रकाश जनता मे राज्याधिकारियो और धूर्त राज-भक्तो का भडाफोड करता है। अपनी माता तारा की शिक्षा-दीक्षा, अपने शुद्ध आचरण एव जनसेवा के बल पर वह जनता का प्रिय नेता बन जाता है। राजा अजयसिह की जमीदारी मे विद्रोह फैलाने के अपराध मे वह बन्दी बनाया जाता है। उसी समय राजा अजयसिह को प्रकाश मिलता है कि प्रकाश उसकी परित्यक्ता पत्नी तारा का पुत्र है।

प्रकाश-स्तम्भ (सन् १९५४, पृ० १२०), ले० हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० हिन्दी भवन, जालन्धर और इलाहाबाद, *पात्र* पु० ७, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* २, ३, २।
घटना-स्थल सरोवर के तट के निकट आम्र-वृक्ष, गुफा, मन्दिर।

इस ऐतिहासिक नाटक मे चित्तौड के राणा बप्पा का विवाह अरबी सेनापति की कन्या हमीदा से कराया गया है।

कालभोज बप्पा चित्तौड-नरेश मानसिह की बहिन का पुत्र है। राजकुमार बप्पा वास्तविकता से अनभिज्ञ होने के कारण अपने को भील जाति का ही लडका समझता है। वह गुरु हारीत से शिक्षा-दीक्षा ग्रहण करता है। बचपन मे बप्पा का नागदानरेश की पुत्री पद्मा से खेल-खेल मे विवाह हो जाता है। पद्मा इस विवाह को नही मानती। कायर मानसिह को बन्दी बनाकर लाया जाता है। तब बप्पा की माँ ज्वाला रहस्योद्घाटन करती है कि बप्पा क्षत्रिय है। पद्मा बप्पा से प्रेम करने लगती है। नागदा नरेश बप्पा के क्षत्रिय होने का प्रमाण मागते है। बप्पा के गुरु हारीत सेना संगठित करते है और बप्पा अपने शत्रुओ से प्रतिशोध लेता है। अरबी सेना से घमासान युद्ध होता है। बप्पा विजयी होता है। रणक्षेत्र मे बप्पा को एक अरबी सेनापति की कन्या हमीदा मिलती है वह उसको घर पहुँचाने के लिए कहता है लेकिन अरबी कन्या नही मानती। बप्पा का विवाह अरबी कन्या हमीदा से हो जाता है। यही नाटक का अन्त होता है।

प्रगति की ओर (पृ० ७१) ले० जगदीश मिश्र, प्र० . किशोर प्रकाशन, कानपुर, *अक* ३; *दृश्य* ७, ७, ७।
घटना-स्थल . भवन, पचायत, अदालत, सभा स्थल, वेश्यागृह, हरिजन कमल की झोपडी।

इस सामाजिक नाटक का मूल उद्देश्य जनता मे फैली हुई कुरीतियो की ओर ध्यान दिलाना तथा योजनाओ का महत्त्व बतलाना

है ।

पचीस वर्षीय महेन्द्र धनिक एव सम्भ्रान्त नागरिक है। वह अपने मित्रो की प्रसन्नता के लिए सकोचशीलतावश शराब के साथ अन्यान्य दुर्व्यसनो से आक्रान्त होकर अपना चरित्र, धन और स्वास्थ्य सब कुछ खो देता है। मनमोहन महेन्द्र का अन्तरग साथी है पर अन्त मे सभी कुरीतियो को छोडकर देश का सच्चा कार्यकर्ता बन जाता है। करुणा महेन्द्र की लज्जाशीला पत्नी है। पति द्वारा तिरस्कृत होने पर ग्राम-सेविका बन वह देश सेवा मे लग जाती है। उसका पति महेन्द्र सलोनी नामक वेश्या के जाल मे तब तक फँसा रहता है जब तक उसकी सारी सम्पत्ति लुट नही जाती। सलोनी एक दिन फटकारते हुए कहती है—"इस कमीने को यहाँ से निकाल बाहर करो, लाख कहा, यहाँ से निकलने का नाम ही नही लेता है, बेशरम!"

तीसरे अक मे महेन्द्र चर्खा चलाती हुई करुणा के स्वच्छ एव सादे कक्ष मे पहुँचकर क्षमा याचना करता है। करुणा पति के चरणो को स्पर्श करके उन्हे देश-सेवा के लिए प्रेरित करती है। महेन्द्र प्रतिज्ञा करता है—

"दीन-दुखियो को गले से लगाते हुए एक बार अवश्य ही भारत को स्वर्ग-सा बना देंगे।"

इसी प्रकार अट्ठाइस वर्षीय उत्साही युवक किशोर हरिजन-कन्या चन्द्रा से विवाह करके अपने आदर्श की रक्षा करता है। सलोनी वेश्या भी अपने अधम आचरण से दुखी होकर वेश्यावृत्ति त्याग सामाजिक कार्यो मे जुट जाती है।

प्रणवीर (वि० १९८२, पृ० १२९), *ले० :* वलदेव प्रसाद खरे, *प्र० .* निहाल चन्द एंड कम्पनी, कलकत्ता, *पात्र* · पु० २१, स्त्री ४, *अक .* ३, *दृश्य* ९, ६, ५।
घटना-स्थल : उद्यान, जगल, भवन।

इस सामाजिक नाटक मे आदि से अन्त तक दानी-धर्मात्मा महाराज हरिश्चन्द्र सम्बन्धी घटनाओ को आधार मानकर आज के समाज का चित्र प्रस्तुत किया गया है। रायवहादुर, काशीनाथ राव, सुजान सिंह, अब्दुल अजीज दीनानाथ झा, आदि भ्रष्ट सरकारी अधिकारी है। मोहनलाल, एक सच्चा देशभक्त है जो अनेक कठिनाइयो के आने पर भी अपने सिद्धान्त से विचलित नही होता। धोखे से उसका घरबार सब कुर्क हो जाता है। सबको त्यागकर उसे दर-दर की ठोकरे खानी पडती है। परन्तु अन्त मे मोहन की विजय होती है। नाटक सामाजिक होते हुए भी घटनाएं एव दृश्य कही-कही पौराणिक जैसे है; जैसे देवियो का प्रकट होकर मोहन की स्त्री सरस्वती की रक्षा करना एव शकर जी का प्रकट होकर भविष्यवाणी करना।

प्रताप-प्रतिज्ञा (सन् १९२९, पृ० ११२), *ले०* जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द, *पात्र* पु० १५; *अक* ३; *दृश्य* ६, ७, ९।
घटना-स्थल : हल्दीघाटी, जगल, युद्ध-मैदान।

इस ऐतिहासिक नाटक मे महाराणा प्रताप का स्वातत्र्य प्रेम दिखाया गया है।

शिशोदिया वंश की महिमा के ठीक विपरीत आचरण करने के कारण जनता जगमल से राजदण्ड छीनकर महाराणा प्रताप सिंह के हाथो मे सोपती है। आखेट के अवसर पर अनुज शक्तिसिह द्वारा किए गए उद्दण्ड व्यवहार के कारण महाराणा प्रताप सिह उसे निष्कासित करते है। प्रतिशोध की भावना से शक्तिसिह मुगल बादशाह अकबर से जा मिलता है। दक्षिण विजय से लौटते हुए राजा मानसिंह प्रतापसिंह के यहाँ जाता है किन्तु भोजन के समय राणा को अनुपस्थित पाकर वह अपने को अपमानित अनुभव करता है। इस अपमान के प्रतिशोध के लिए वह अकबर से आक्रमण की अनुज्ञा प्राप्त करता है। मानसिंह एवं शक्तिसिंह के नेतृत्व मे मुगल सेना राणाप्रताप पर आक्रमण करती है। हल्दीघाटी के इतिहास प्रसिद्ध युद्ध मे प्रताप अपने प्राणो पर खेल जाना चाहते है, परन्तु वीर चन्द्रावत राणा के छत्र को अपने सिर पर रख कर उनके प्राणो की रक्षा करता है। प्रताप को इस प्रकार वचकर निकलते देख दो मुगल सैनिक उनका वध करना चाहते है, परन्तु शक्तिसिह मुगल

सैनिको की हत्या कर प्रताप के प्राणो की रक्षा करता है। स्वातन्त्र्य रक्षा के लिए राणा जंगलो मे अनेक विपत्तियाँ झेलते है, परन्तु ऊदविलाऊ द्वारा पुत्री के हाथ से घास की रोटी छिन जाने पर उनका धैर्य टूट जाता है। विचलित हो वे अकवर के पास सन्धि-प्रस्ताव भेजते है, परन्तु पृथ्वीसिंह अकवर के पूछने पर पत्र की सत्यता मे सदेह व्यक्त करते है और प्रताप के पास वीरोचित पत्र प्रेषित कर उन्हे उद्वोधित करते है। पृथ्वीसिंह के उद्वोधन एव भामाशाह से प्राप्त धन के आधार पर राणा पुन. सैन्य एकत्रित कर मेवाड के अतिरिक्त शेष सभी स्थल हस्तगत करने मे सफल हो जाते है। मेवाड-स्वाधीनता की कामना लिए हुए ही महाराणा स्वर्ग सिधार जाते है।

प्रतिशोध (सन् १९३७, पृ० १४४), *ले०* : हरिकृष्ण प्रेमी, *प्र०* · हिन्दी भवन, रानी मण्डी, इलाहावाद, *पात्र* : पु० १९, स्त्री ६, *अक* . ३; *दृश्य* : ८, ९, ८।
घटना-स्थल विन्ध्यवासिनी का मदिर, पर्वत, वन, युद्ध-मैदान।

लालकृत, 'छत्रप्रकाश' की घटनाओ को आधार वनाकर, राष्ट्रीय भावनाओ से ओत-प्रोत वीर छत्रसाल पर लिखा गया ऐतिहासिक नाटक है। प्रारम्भ मे देवी विन्ध्यवासिनी, छत्रसाल के पिता चम्पतराय, तथा माँ लालकुँवरि की त्याग-गाथा है। मातृ-पितृ-विहीन छत्रसाल को प्राणनाथ कुल का इतिहास वताते हुए कर्त्तव्य के प्रति सजग करते है। छत्रसाल योजना वनाकर अगदराय के साथ औरगजेव की सेना मे भर्ती होकर युद्ध मे वादशाह का साथ देता है किन्तु यश का अधिकारी अन्य व्यक्ति ठहराया जाता है। इस कपटपूर्ण व्यवहार से क्षुब्ध होकर, शाही-आश्रय को तिलाञ्जलि देता हुआ छत्रसाल शिवाजी के पास जाता है। शिवाजी के अस्तित्व से उसे नया जीवन मिलता है। वह स्वतन्त्रता की प्रतिज्ञा को दुहराता हुआ वुन्देलखण्ड लौट जाता है। इधर ओरछे की कुटिल रानी हीरादेवी आस-पास के राजाओ को वुलाकर छत्रसाल के विरुद्ध षड्यन्त्र रचती है, लेकिन प्राणनाथ की प्रेरणा से छत्रसाल स्वतन्त्रता के लिए कमर कस लेता है। तभी औरगजेव के सेनापति आक्रमण करते हैं किन्तु छत्रसाल उन्हे पछाड देता है। अपनी पराजय सुनकर औरगजेव काँप जाता है। अनेक वीरो के सम्मिलित प्रयास से छत्रसाल अपना प्रतिशोध पूरा करता है। वुन्देलखण्ड मे स्वतन्त्रता-सूर्य चमकता है। छत्रसाल आरती सजाकर देवी विन्ध्यवासिनी के चरणो मे अपने को सर्मपित कर देता है।

प्रतिशोध (सन् १९६५, पृ० १२८), *ले०* : वीरेन्द्र नारायण; *प्र०* . हरिनाम कला पुस्तक भण्डार, नई सडक, दिल्ली, *पात्र* · पु० ५, स्त्री २, *अक* ५; *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल . स्वरूप का घर, युद्ध-मैदान।

प्रस्तुत नाटक भारत-पाकिस्तान युद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित है। एक दिन स्वरूप के घर उसका दोस्त अहमद आता है। वास्तव मे अहमद भारत के खुफिया विभाग का अफसर होता है परन्तु वह अपना वास्तविक परिचय किसी को नही देता। कई कारणो से स्वरूप और उसके छोटे भाई को अहमद पर शत्रु के जासूस होने का सदेह होने लगता है। अहमद गुप्त रूप से रहस्य जान लेता है और शत्रुओ के जासूसो के षड्यंत्रो को असफल बनाने का पूरा प्रयत्न करता है। अन्त मे स्वरूप को अहमद के वास्तविक रूप का पता चल जाता है और वह पूरा प्रतिशोध लेता है।

प्रबुद्ध यामुन (वि० १९८६, पृ० १७९), *ले०* · वियोगी हरि, *प्र०* गगा पुस्तकालय कार्यालय, लखनऊ; *पात्र* पु० १७, स्त्री १०, *अक* . ५, *दृश्य* . ५, ५, ६, ५, ४।
घटना-स्थल अरण्यप्रदेश, वन, मदिर।

यह धार्मिक एव दार्शनिक नाटक आलवदार यामुनाचार्य और उनकी पत्नी सौदामिनी देवी के जीवन की घटनाओ को लेकर लिखा गया है। युवराज यामुन नीलाचल के सीमात पर अरण्य प्रदेश मे पहुँचते है। वहाँ इनकी साधना और तपस्या से प्रसन्न होकर भक्ति

दर्शन देती है। यामुन की पत्नी सौदामिनी पतिचरण के दर्शन कर महाराज वीरसेन की रानी मजुभाषिणी के साथ वन मे पहुँचती है। यामुनाचार्य अपने शिष्यो के सहित श्रीरग के मदिर मे पहुँचते है। वहाँ विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त के प्रतिपादन के लिए एक नवीन भाप्य लिखना चाहते है। काचीपूर्ण और यामुनाचार्य मे शकर भाष्य पर विवाद होता है। यामुनाचार्य कहते है कि यद्यपि शकराचार्य ने प्रकट रूप से भक्ति का निरूपण नही किया, तथापि उनके हृदय मे अखड भक्ति की दिव्य ज्योति प्रज्ज्वलित रहती थी।

पंचम अक मे यामुनाचार्य अपनी माता का कुशल समाचार जानने को उत्सुक होते है। ज्ञात होता है कि उनकी माता, पत्नी सौदामिनी के साथ ६ महीने से उन्हे खोज रही है। यामुनाचार्य कावेरी तट पर एक झोपडी मे कुश शय्या पर लेटी मा का दर्शन करते है। सौदामिनी उनके चरणो पर गिरकर क्षमायाचना करती है। यामुन की माता श्रीरग के मन्दिर मे जाती है, जहाँ वह सिद्ध वैष्णव महात्मा ध्यान पूजा मे अर्हनिश डूबे रहते है।

प्रबुद्ध सिद्धार्थ (सन् १९५६, पृ० १६४), ले० : रामप्रसाद विद्यार्थी 'रावी', प्र० : रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा; पात्र पु० १६, स्त्री ६, अक . ४, *दृश्य* : ६, ६, ८, ३।
घटना-स्थल · जगल, राज्यसभा, कपिलवस्तु, बुद्ध संघ।

गौतम बुद्ध की शिक्षा का प्रभाव स्पष्ट करने के उद्देश्य से लिखा गया यह ऐतिहासिक नाटक सर एडविन आर्नल्ड की प्रसिद्ध काव्य-कृति "दि लाइट आफ एशिया" तथा वुद्ध जीवन सम्वन्धी अन्य पुस्तको मे पाई जाने वाली घटनाओ और प्रसगो पर आधारित है। उसके पात्र भी कतिपय स्वकल्पित पात्रो को छोडकर वौद्ध-ग्रथो मे पाए जाने वाले पात्र ही है। नाटककार गौतम के जीवन की लगभग सभी प्रसिद्ध घटनाओ—देवदत्त के वाण से आहत हस और उसको लेकर राज्यसभा मे प्रस्तुत न्याय प्रसग, धावन प्रतियोगिता और उसमे बुद्ध की उदारता, रूप-प्रतियोगिता का आयोजन, उसमे गौतम का यशोधरा के प्रति आकर्षण और तदुपरान्त विवाह, महाभिनिष्क्रमण, कृच्छ् साधना और उससे असतोष, पुत्र की मृत्यु से सतप्त माता को सान्त्वना, ग्वाले द्वारा मूर्छित बुद्ध को क्षीरपान कराना, बिम्बसार का राज्यार्पण, सुजाता द्वारा खीर खिलाना, तपस्या के समय आने वाली बाधाएँ और प्रलोभन तथा उन पर विजय, कौण्डिक को अष्टाग मार्ग की शिक्षा, कपिलवस्तु मे भिक्षाटन के कारण पिता का रोष, पर बाद मे सघ मे सम्मिलित होना, दस्यु-नायक का हृदय-परिवर्तन, मृत्यु-समय सुभद्र को दीक्षा और उनके उदेपश, सिद्धान्त, और ज्ञान-चर्चा आदि को नाटक में समाविष्ट किया गया है।

प्रबोधनाट (वि० १७००, पृ० ३३), ले० : जसवन्त सिह, प्र० जसवन्त सिंह ग्रन्थावली मे प्रकाशित, *पात्र अक*, *दृश्य* और *घटना-स्थल* का उल्लेख नही।

प्रबोधनाट की दो हस्तलिखित प्रतियाँ उदयपुर और जोधपुर के भाडागारो मे उपलब्ध है। उदयपुर की प्रति मे प्रवोधनाट और जोधपुर की प्रति मे प्रबोध नाटक नाम दिया गया है। यह न तो सस्कृत के प्रवोधचन्द्रोदय नाटक का अनुवाद है और न रूपान्तर। नाट्यकार उक्त संस्कृत नाटक की कथा के आधार पर स्वतंत्र रचना करता है अत. वह कही भी अनुवाद का उल्लेख नही करता। जहाँ प्रबोध चन्द्रोदय नाटक ६ अंको मे विभक्त है वहाँ प्रबोधनाट मे कोई अक नही। संस्कृत नाटक मे प्रत्येक अक का सम्बद्ध विषय के अनुसार नामकरण किया गया है किन्तु इस नाट मे इस प्रकार का कही विभाजन नही। प्रवोध चन्द्रोदय की मूल कथा को व्रजभापा गद्य और १७ छदो मे निवद्ध किया गया है।

सूत्रधार मगलपाठ के अन्त मे नटी को बुलाकर कहता है कि परम विवेकी महाराज अपने सभासदो मे विवेक उत्पन्न कराने के लिए प्रवोधनाट का अभिनय करने की आज्ञा देते है। यह वचन यवनिका से काम सुनता है

अन रति के साथ रगमच पर सम्मुख आकर कहता है—"जौलौं ए मेरे बान है नौ लौ विवेक को कहा सामर्थ है और प्रबोध कैसे होइगो।" काम रति को समझाते हुए कहता है कि "हमारो अरु विवेक को एक ही पिता है पर मन की दोऊ स्त्री है। एक तौ प्रवृत्ति एक निवृत्ति। प्रवृत्ति तैं उपजे तिनमैं मोह प्रधान। अरु निवृत्ति तैं उपजे तिनमैं विवेक प्रधान।"

उसी समय विवेक मति सहित आते है और विवेक मति को समझाते हुए कहते है "जद्यपि पुरुष बुद्धिवान धीरजवान है तऊ स्त्री हर्यौ है मन जाको तिन सहजै धीरज छाड्यो, माया के सग तैं आपनपौ भूल्यो।"

महाराज विवेक बधनमुक्त होकर ब्रह्म-एकता की प्राप्ति का उपाय बताते हैं। उसी समय दम्भ आकर ब्रह्मज्ञानी, अग्निहोत्री एव तपस्वियो का चरित्रगत भडाफोड करता है। यहाँ महामोह का सेवक क्रोध, यवनिका मे कहता है—"मैं सुन्यौ शाति श्रद्धा आस्ति-कता महाराजा महामोह को द्वेष करै है।" यहाँ काम प्रतिज्ञा करता है कि "हौ सब सृष्टि को अधकरौ, अधीर करौ, अज्ञान करौ।"

इधर आस्तिकता आज्ञा देती है कि "राजा विवेक सौ जाइ कहौ कि महामोह कौ निरमूल करै।" राजा विवेक वस्तुविचार को महामोह सेना से लडने को भेजता है। शत्रु सेनापति क्रोध से लडने के लिए धीरज को और लोभ पर विजय प्राप्त करने हेतु सन्तोष को नियुक्त करता है। विवेक वाराणसी नगरी मे गगातट पर बैठकर युद्ध-लीला देखता है। श्रद्धा आस्तिकता को युद्ध का वृत्तान्त सुनाती है कि वस्तु विचार न्याय वैशेषिक को, धीरज मीमासा पातजल को, सतोष वेदान्त-साख्य को मोह की सेना से लडने भेजते है। महामोह अपने सैनिक काम, क्रोध, लोभ, पाखड शास्त्र और नास्तिक तर्क को रणक्षेत्र मे भेजता है। युद्ध मे महामोह की सेना पराजित होती है, अतः वह कही छिप जाता है "मनहूँ पुत्र पौत्र वियोग तैं प्रानत्याग करिबे कौ भयौ है।"

अब पुरुष प्रसन्न होता है और उपनिषद् उसे समझाता है कि "ईश्वर तोतै न्यारौ नोही ! तुमहूँ ईश्वर तैं न्यारे नोही पै अग्यान करिकै न्यारे भए हौ।" पुरुष प्रसन्नता से देवी आस्तिकता के चरणो पर गिरकर निवेदन करता है—"देवी के प्रसाद तै कहा कठिन होय"। अन्त मे सूत्रधार आशीर्वाद देते हुए कहता है कि जब तक गगा का प्रवाह पृथ्वी मडल पर है तब तक राजा विवेक सुख-सम्पत्ति सहित नवखड पर राज्य करे।

प्रभावती हरण (सन् १६१५, पृ० ७२), ले० जगतप्रकाश मल्ल, प्र० डॉ० लेख-नाथ मिश्र, ग्राम पौना, पोस्ट अररेहाट, जिला दरभगा, पात्र पु० ११, स्त्री ६, अक के स्थान पर दिवस का उल्लेख है; दृश्य विभाजन नही।

इस पौराणिक नाटक मे प्रभावती और प्रद्युम्न का प्रेम दिखाया गया है।

नेपाल और मैथिली नाटक की परम्परा मे 'प्रभावती हरण' एक कडी है। नान्दी-पाठ के पश्चात् सूत्रधार और नटी रगमच पर उपस्थित होकर पुन अभिनयोपयुक्त वेश धारण करने के लिए रगशाला मे चले जाते है। कृष्ण, सत्यभामा और रुक्मिणी उपवन मे उपस्थित होकर शृगार रस पूर्ण वार्तालाप करके अन्त पुर मे प्रवेश करते है। वज्रनाभ असुर की हत्या के उद्देश्य से इन्द्र का आदेश पाकर हस और हसी प्रभावती तथा प्रद्युम्न का मिलन कराने जाते है। जिस समय हस और हसी सरोवर की शोभा देखते है उसी समय प्रभावती वहाँ पहुँच जाती है। प्रभावती हस और हसी की रूप-सुषमा से प्रभावित हो जाती है। वार्तालाप के मध्य कृष्ण-पुत्र प्रद्युम्न-की चर्चा होती है। प्रभावती अपने पिता और कृष्ण की शत्रुता की चर्चा करती है; किन्तु हसी द्वारा वारम्बार आग्रह करने पर वह उसकी स्वीकृति दे देती है। प्रभावती की विरह-ज्वाला से मुक्ति के लिए हसी उपाय करती है। घटनाओ का सयोजन इस प्रकार किया गया है कि वज्रनाभ और हसी दोनो की भेट होती है। तत्पश्चात् वज्रनाभ द्वारा प्रेषित दूत भद्र कृष्ण के समीप जाते है। उप-युक्त अवसर पाकर देवेन्द्र निवेदन करते है कि तुरत प्रद्युम्न को भेजकर वज्रनाभ-वध द्वारा देवताओ का उपकार कीजिये। कृष्ण प्रद्युम्न को हस-हसी के साथ भेज देते है।

सभी वज्रनाभ के समक्ष प्रस्तुत होकर राम-जन्म का नृत्य करते है। नृत्य को देखकर राजा अत्यधिक प्रसन्न होते है। इधर मालिनि प्रभावती को माला देने के लिए जाती है और प्रद्युम्न भ्रमर का छद्म वेष धारण कर वहाँ पहुँचते है। उस समय प्रभावती हंसी से अपनी विरह-वेदना कहती है। तत्क्षण प्रद्युम्न भ्रमर रूप का परित्याग कर अपना सही रूप प्रकट करते है। हसी प्रभावती और प्रद्युम्न का परिचय कराकर वहाँ से चली जाती है। इस प्रकार हस और हसी के प्रयास से प्रभावती और प्रद्युम्न का मिलन सभव होता है। प्रभावती की सखियाँ प्रद्युम्न के विषय मे सारी बाते जानकर प्रसन्न होती है। प्रभावती की माँ वज्रनाभ को सूचित करती है कि प्रभावती के भवन मे किसी पुरुष का आगमन हुआ है। इससे वज्रनाभ क्रोधावेश मे आकर प्रद्युम्न को घेर लेता है। इसी अवसर पर कृष्ण भी अपने परिजनो के साथ प्रवेश करते है। दोनो दलो मे भयकर युद्ध होने पर वज्रनाभ मारा जाता है। कृष्ण प्रद्युम्न का राज्याभिषेक वज्रपुर मे करते है। तत्पश्चात् सभी द्वारका लौटते है।

'प्रभावती हरण' मे गद्य और पद्य दोनो सहयायी है। बीच-बीच मे सस्कृत श्लोको का भी प्रयोग हुआ है।

प्रभावती हरणम् (सन् १८६५, पृ० २८), ले० . भानुनाथ, प्र० राजकीय यन्त्रालय मे हरिभक्त नारायण द्वारा मिथिला मे प्रकाशित, पात्र . पु० १०, स्त्री ३, *अक* : ४, *दृश्य-रहित* ।

इस पौराणिक नाटक मे प्रभावती और प्रद्युम्न का परिणय दिखाया गया है।

वज्रपुर के राजा वज्रनाभ की पुत्री प्रभावती कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न के साथ प्रेम करती है। इसमे शृगारिक विषय-वस्तु की अधिकता है। अनेक स्थलो पर नाट्यकार अपहरण सबधी दृश्यो का चित्राकन करता है। इसकी कथा-वस्तु जगत प्रकाशमल्ल कृत प्रभावती हरण से मिलती है। इसका 'पारिपार्श्विक' भी रत्नपाणि के 'तटस्थ' के समान काम करता है। वह उद्धरणो पर अपनी सम्मति भी देता चलता है। इसमे हास्य के कुछ उदाहरण मिलते है। इस नाटक के कतिपय मैथिली गीतो पर विद्यापति का प्रत्यक्ष प्रभाव है।

प्रभास मिलन नाटक (वि० १९६०, पृ० १४४), ले० वलदेव प्रसाद मिश्र, प्र०. वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई, *पात्र* पु० ६, स्त्री ५, *अक* ६, *दृश्य* ६, ४, १, ३, ३, २।

घटना-स्थल · प्रभास क्षेत्र।

इस पौराणिक नाटक मे कृष्ण एव ब्रजवासियो का प्रभास क्षेत्र मे पुर्नमिलन दिखाया गया है।

नाटक भक्ति रस प्रधान है। इसमे भक्ति की महिमा का वर्णन किया गया है तथा उसे जीवन मे सर्वोपरि व आदर्श स्थान दिया गया है। नाटक का मुख्य भाव यह है कि बिना कृष्ण के चरणारविन्दो मे मन लगाये किसी की गति नही होती।

प्रयाग रामागमन (सन् १९११, पृ० ३४), ले० . बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन', प्र० · आनन्द कादम्बिनी यन्त्रालय, मिरजापुर; *पात्र* ६, *अक दृश्य रहित*।

घटना-स्थल प्रयास भारद्वाज का आश्रम, गगातट, वन।

इस धार्मिक नाटक मे राम-लक्ष्मण और सीता का प्रयाग मे आगमन दिखाया गया है।

इसमे गगा-स्तुति स्वरूप नादी और अत मे आशीर्वाद स्वरूप भरतवाक्य है, और पात्रो के प्रवेश का सकेत भी कर दिया गया है। निषाद अवधी, सीता ब्रजभाषा और अन्य पात्र खडी बोली हिंदी का प्रयोग करते है। नाटक मे कुल १५ पद्यो का व्यवहार हुआ है। नाटककार की भूमिका के अनुसार प्रयाग की युक्तप्रातीय प्रदर्शिनी के अवसर पर अभिनय के लिए इसकी रचना सन् १९१० मे हुई थी। 'इसमे रामचन्द्र जी का वनयात्रा मे प्रयाग आना और भारद्वाज का अतिथि होना वर्णित है। कथा का आधार वाल्मीकि रामायण है।'

निपाद द्वारा नाव से गगा पार होने के पश्चात् राम उसे विदा करते है और भाई तथा पत्नी से गगा तथा वन की शोभा और प्रयागराज की महिमा का वर्णन करते हुए भारद्वाज के आश्रम मे पहुँचते है । वहा आतिथ्य स्वीकार कर प्रात काल चल देते है ।

प्रलय और सृष्टि (सन् १९५७), ले० सेठ गोविन्ददास, प्र० · भारतीय विश्व प्रकाशन, दिल्ली, (शाप, वर तथा अन्य एक पात्री नाटक मे सकलित), *अक दृश्य रहित* ।

यह मोनोड्रामा है । इसमे एक व्यक्ति चश्मा, नोटबुक, कलम, लाइट हाउस, टावर, घण्टा, चिमनी, बादल, धरती इत्यादि से बाते करता हुआ प्रस्तुत किया जाता है । इसका एक पात्री नायक मजदूरो की हडताल कराता है । तदुपरान्त हडतालियो के जुलूस का नेतृत्व करने जाता है । मार्ग मे वह उपर्युक्त जड पात्रो से बाते करता है । वार्तालाप मे साम्यवाद के सिद्धान्त रखता है । विविध राजनीतिक वादो पर विचार करता हुआ वह साम्यवाद को भी अन्य वादो की तरह एकागी मानता है । एक स्थान पर कहता है—"मेरा मकान भी गिरा ···मै मजदूरो का नेता, मेरा मकान कैसे गिरा ? यह इकगा कैसे हो गया··· । तो क्या मेरा वाद भी इकगा है ।" इस प्रकार राजनीतिक जीवन, सामाजिक स्थितियो और मान्यताओ पर व्यंग्य किया गया है ।

प्रलय से पहले (सन् १९३८, पृ० ८२), ले० ज्वालाप्रसाद सिहल, प्र० सद्ज्ञान सदन, इन्दौर, *पात्र* · पु० २१, स्त्री १, *अक रहित*, *दृश्य* २२ ।
घटना-स्थल राज दरबार, इन्द्र-सभा, हिमालय पर्वत, चौराहा ।

नाट्यकार का कथन है "अब रात भर खेले जाने वाले नाटको की आवश्यकता नही है । अब तो केवल दो घटे मे समाप्त होने वाले नाटको की जरूरत है । अक भी दो से अधिक न हो । उनमे बातचीत भी छोटे वाक्यो द्वारा हो । घटनाक्रम तेज हो । नाटक की कला उसकी ललित भाषा मे न होकर उसके घटनाक्रम और अभिनय की यथार्थता मे है ।"

इस नाटक मे प्रह्लाद, हिरण्यकश्यप, और होलिका की प्रसिद्ध कथा दी हुई है । हिरण्यकश्यप प्रह्लाद को अधर्म की ओर ले जाना चाहता है किन्तु वह अडिग रहता है । रानी कायाधु उसे बहुत समझाती है किन्तु वह पहाड से गिरने और आग मे जलने को तैयार हो जाता है पर सत्य को नही छोडना चाहता ।

होलिका उसे गोद मे लेकर आग मे जलने बैठ जाती है । वह कहती है "मेरे पास अग्नि-भेदक लेप लगी चादर है, उसको ओढ़ लूँगी तो जलूँगी नही" । किन्तु होलिका जल जाती है । अन्त मे प्रह्लाद को खभे मे बाँधकर मारने की तैयारी होती है । हिरण्यकश्यप जब तलवार उठाकर मारने चलता है तो एक तीर उसकी तलवार के दो टुकडे कर देता है और दूसरा हिरण्यकश्यप की छाती को वेध देता है । दो तीर हिरण्यकश्यप के दूसरे दोनो बेटो को लगते है । वे भूमि पर गिर जाते है । इसी समय आर्यावर्त के सम्राट् नरसिह देव घोडे से उतरते है । नारद मुनि आकर प्रह्लाद को आशीर्वाद देते है ।

प्रवास (वि० १९९८, पृ० १७८), ले० : कमलकान्त वर्मा, प्र० : तुलसीप्रसाद खेतान, खेतान हाउस, कलकत्ता; *अक* . २; *दृश्य* : १५, १६ ।
घटना-स्थल चौपाल, वन का दृश्य, बैठक, घर का बरामदा, राजाराम के घर का भाग, हिमालय पर्वत का एक शिखर ।

यह नाटक देहाती चौपाल मे अलाव के चतुर्दिक बैठे किसानो के वार्त्तालाप से आरम्भ होता है । कलकत्ता मे स्वच्छन्द घूमने वाली स्त्रियो को हिडिम्बा की सतान बताकर उनका मजाक उडाया जा रहा है । अलगू, शकर, दामोदर ऐसी ही बाते कर रहे है । मनोहर हरदत्त से उसके पुत्र विमल को लेकर कलकत्ते जाना चाहता है । हरदत्त के रोकने पर भी वह कलकत्ता पहुँचता है । मनोहर ग्रामीण किसान अब कलकत्ता मे लक्षाधीश हो जाता है और उसकी कन्या कृष्णा रेडियो पर सगीत का कार्यक्रम देने लगी है । रात्रि की

अतिवेला मे भी वह अकेले लौटती है। ग्राम की वही लडकी नगर मे कितनी स्वच्छन्द विचरती है। माता को उसके विवाह की चिन्ता है पर कृष्णा निश्चिन्त है। मूल कथा के साथ कलकत्ते के बाजार का दृश्य जोड दिया गया है। मच्छी की बडी बडाई की गई है। बगाली डाक्टर मच्छी की और पुरविहा पापड की प्रशसा करता है। इसी प्रसग मे सन्देह रोग को सबसे भयंकर माना गया है।

मनोहर के पुत्र श्यामल का कुचक्री मित्र, एक डाकू सरदार का लडका राजाराम कृष्णा से रुपये के लोभ मे विवाह करना चाहता है। इस नाटक मे कलकत्ते के जीवन, वेश्याओ की दशा, ग्रामीण परिवार के समृद्ध होने पर सन्तान के स्वच्छन्द जीवन का चित्रण है। ग्राम से बगाल मे प्रवासी बनने वाले परिवार की जीवनगाथा, प्राचीन और नवीन सस्कृतियो का सघर्ष दिखाया गया है।

अभिनय—यह नाटक भागलपुर मे होने वाले अखिल भारतवर्षीय मारवाडी सम्मेलन के चतुर्थ अवसर पर अभिनीत—

प्रह्लाद चरित (सन् १८९५, पृ० ६६), ले० लाला श्रीनिवास दास, प्र० खेमराज श्री कृष्ण दास वेंकटेश्वर छापाखाना, बम्बई, पात्र पु० ८, स्त्री १, अक रहित, दृश्य . ११।
घटना-स्थल : पाठशाला।

इस पौराणिक नाटक मे प्रह्लाद और हिरण्यकश्यप के आख्यान द्वारा भक्त की महिमा दिखाई गई है।

इसकी कथा प्रसिद्ध विष्णुभक्त प्रह्लाद और नरसिहावतार द्वारा हिरण्यकश्यप के वध पर आधारित है। इस नाटक का प्रमुख पात्र प्रह्लाद एक उपदेशक गुरु प्रतीत होता है। वह अपने गुरु को भी उपदेश देता है। इसमे होली, प्रह्लाद की बुआ के रूप मे प्रस्तुत नही की गई है। हास्य की योजना प्रह्लाद के साथियो के माध्यम से पाठशाला मे की गई है। पुराणो के प्रति नाट्यकार का मोह इस नाटक मे अलौकिक घटनाओ को जोडने के लिए प्रेरित करता रहा है।

प्रह्लाद चरितामृत नाटक (सन् १९०३, पृ० ६२), ले० : जगन्नाथशरण, प्र० : सारन सुधाकर प्रेस, छपरा, अंक ' ४, दृश्य ' ३, ३, ३, ४।
घटना-स्थल राजमन्दिर एव राजसभा।

इस पौराणिक नाटक मे प्रह्लाद की भक्ति का प्रभाव दिखाया-गया है।

इसमे भक्त प्रह्लाद का चरित्र है। प्रह्लाद की भक्तिभाव एव उसके पिता के कुकृत्य का इसमे वर्णन है। नाटक के अन्त मे भगवान् नरसिह प्रकट होकर प्रह्लाद की रक्षा एव उसके पिता का वध करते है। अन्त मे प्रह्लाद के गुणगान के साथ नाटक समाप्त होता है।

प्रह्लाद नाटक (सन् १९१६), ले० सुन्दरलाल शर्मा त्रिवेदी, प्र० हिन्दी प्रेस, प्रयाग, अक ४।
घटन-स्थल पाठशाला, पहाड होलिका।

इस पौराणिक नाटक मे प्रह्लाद के शिक्षाकाल से हिरण्यकश्यप के वध तक की कथा द्वारा भक्ति महिमा दिखाई गई है।

हिरण्यकश्यप तप द्वारा ब्रह्मा को प्रसन्न कर यह वरदान प्राप्त कर लेता है कि उसे मनुष्य, देव, दानव, पशु आदि किसी से कभी भय न होगा। मृत्यु उसकी दासी बनी रहेगी। किसी भी काल या स्थान मे वह न मारा जा सकेगा। इस वरदान से वह उन्मत्त और स्वच्छद होकर अत्याचार पूर्वक शासन करता तथा लोगो को सताता है।

इसका पुत्र प्रह्लाद इसके विपरीत पाडे जी के पढाये पाठ के प्रतिकूल विष्णु को महान् और पिता को हीन कहता-मानता है। इसका अनुशरण पाठशाला के अन्य विद्यार्थी भी करते है। पाडे जी की शिकायत पर हिरण्यकश्यप प्रह्लाद से अपने वश-शत्रु के नाम जाप का निषेध करता है जिसे वह अस्वीकार करता है। फलतः उसे मार डालने के अनेक उपाय किये जाते है। फिर भी वह ऊँचे पहाड से गिराने, होलिका के गोद मे बैठाकर जला डालने, समुद्र मे फेकने, पागल हाथी से कुचलवाने, शूली पर चढाने

से भी वच जाता है। अन्त मे हिरण्यकश्यप स्वय तलवार से उसके वध को उद्यत होता है और प्रह्लाद को अपने राम की सहायता से वच निकलने की चुनौती देता है। प्रह्लाद के एकाएक यह कहते ही कि इसी खभे मे राम है, खभे को फाडकर नृसिंह प्रकट होते हैं और हिरण्यकश्यप का वध कर डालते है।

इसका अभिनय प्रयाग मे सन् १९११ मे हुआ।

प्राणेश्वरी (सन् १९३१, पृ० ९७), ले० : डॉ० धनीराम प्रेम, प्र० चाँद कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद, *पात्र* : पु० ६, स्त्री ३, अक २, दृश्य ५, ६।
घटना-स्थल . सगीत सभा।

इस सामाजिक नाटक मे प्रेयसी और प्रेमी की मिथ्या आशका का निवारण दिखाया गया है।

मदन मालती का प्रेमी है। मालती के पिता दयाशकर दोनो के प्रेम को देखकर एक रात्रि मे सगीत सभा का आयोजन करते है। उसमे मदन व मालती के विवाह की घोषणा करना चाहते है। वे एक सगीत मण्डली को बुलाते है परन्तु सगीत मण्डली के अध्यक्ष प्राणनाथ देर से आते है। दयाशकर उन्हे निकाल देते है। वाद मे मण्डली के दो सदस्य गोपाल व गणेश भी वहाँ पहुँचते है। मालती इस सभा मे कलकत्ते के राजा श्यामदास व रानी को भी निमन्त्रित करती है परन्तु किसी कारण वे नही आते। मालती गोपाल को राजा कहकर परिचय कराती है परन्तु वाद मे असली राजा रानी भी आ जाते है। गोपाल का भेद खुलता है। उधर गोपाल की पत्नी, को जो वही आ जाती है— मिर्गी के दौरे पडते है। वह मदन के गले लिपटती है। गोपाल के कहने पर मदन उसे प्राणेश्वरी कहकर जान छुडाता है, परन्तु मालती यह देख लेती है और मदन को अपमानित कर देती है। वाद मे गोपाल मालती को सही वात वताता है। इस पर मालती मदन से क्षमा-याचना करती है। इस प्रकार दोनो प्रेमी मिल जाते हैं।

प्रियदर्शी (सन् १९६२, पृ० १०५), ले० : जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द, प्र० गया प्रसाद एण्ड सन्स, आगरा, *पात्र* . पु० ६, स्त्री ४, अक : ३; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल राजभवन, युद्ध-क्षेत्र, ग्राम।

इस ऐतिहासिक नाटक मे किसानो के योगदान तथा सैनिको की शक्ति द्वारा राज्य-क्राति से उन्नति दिखाई गई है।

पाटलिपुत्र मे उपगुप्त अशोक को सौतेले भाई राजकुमार सुमन के खिलाफ युद्ध करने के लिए उत्साहित करता है। सुमन अयोग्य एव क्रूर व्यक्ति है, पर मरणासन्न राजा-बिंदुसार उसी को अपना उत्तराधिकारी घोषित करना चाहता है। अशोक युद्ध के लिए तैयार हो जाता है। इसी समय रगमच पर सैनिक महावल पत्नी विमला सहित आता है। विमला महावल को एक मौन सैनिक मात्र नही रहने देना चाहती। वह कहती है कि "आपमे वीरता के साथ-साथ विवेक की मात्रा भी वढनी चाहिए"। अन्त मे महावल उसके आग्रह से अशोक के समर्थन मे आन्दोलनकारियो का साथ देने की इच्छा व्यक्त करता है। तपन एक लेखक है, वह राजनीतिज्ञो की अवसरवादिता एव द्विमुखता की कडी आलोचना करता है। वह परिहास मे अपनी पत्नी से कहता है 'अपने राम तो तटस्थ ही रहेगे।······केवल शब्दो का उपयोग करेगे। कभी एक पक्ष की आलोचना कभी दूसरे की······जव किसी एक पक्ष के पूर्ण विजयी होने की पूरी सम्भावना देख लेगे तव अपनी तटस्थता की माया समेटकर प्रकट रूप मे उसी के साथ हो जायँगे"। शीला और तपन के जाने के वाद सुशील और सरला वार्तालाप करते हुए प्रवेश करते है। ये ग्रामीण दम्पति तथा पाटलिपुत्र के ग्रामीण निवासी भी सुमन के उद्दण्ड व्यवहारो से ऊव चुके है। किसान कहते है "संसार मे कभी ऐसा युग भी तो आना चाहिए जिसमे किसान सर्वोपरि हो"— राजनीति मे किसानो का महत्त्व सैनिको से वहुत अधिक होना चाहिए, क्योकि सैनिक जिस धन के दास वनकर शासको की शक्ति वढाते है उस धन के मूल स्रोत तो किसान

ही है।" अन्त मे किसान ग्रामसभा मे सुमन के विरुद्ध युद्ध के लिए कृत सकल्प होते है।

द्वितीय अक सघमित्रा (अशोक-पुत्री) के गान से शुरु होता है। महेन्द्र और सघमित्रा के वार्तालाप से ऐसा स्पष्ट हो जाता है कि सुमन के साथ राज्य सिहासन प्राप्ति का सघर्ष असख्य नर-सहार के बाद समाप्त हुआ है। अब अशोक राजा बन चुका है। सघमित्रा और महेन्द्र के प्रस्थान के पश्चात् उपगुप्त और अशोक आते है। कृतज्ञता से पूर्ण अशोक गुरु उपगुप्त के सामने उनकी सहायता और सहानुभूति के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता है। युद्ध मे सहायक ग्रामीणो को उपयुक्त पद प्रदान करता है।

प्रियदर्शी सम्राट् अशोक (सन् १९३५, पृ० १५३), ले० दशरथ ओझा, प्र० साहित्य पब्लिशिग हाउस, कानपुर, *पात्र* पु० ११, स्त्री १०, अक ५, *दृश्य* ६, ४, ६, ३, ३।

घटना-स्थल यज्ञशाला, पाटलीपुत्र, राजप्रासाद, सौधप्रागण, रणक्षेत्र, कश्मीर मे पर्ण कुटीर।

इस ऐतिहासिक नाटक मे बौद्ध धर्म की महत्ता दिखाई गई है।

कर्मकाडी ब्राह्मणो के यज्ञ मे पशुबलि होने को बकरे एकत्र है। बौद्ध भिक्षु महाधर्मरक्षित पशुबलि के स्थान पर स्वय बलि चढने को तैयार है। उनकी बलि की जाती है। इससे जनता मे पशुबलि के विरुद्ध जनमत तैयार हो जाता है। अशोक के ज्येष्ठ भ्राता युवराज सुसीम को अपने दीक्षा-गुरु भिक्षु महाधर्म रक्षित की हत्या से बडा दुख होता है। वह मन्त्रिमडल मे वैदिक कर्मकाड का विरोध करते है किन्तु मन्त्रिगण सुसीम का विरोध करते है और उसके लघु भ्राता अशोक को राजा बनाना चाहते है। अशोक की माता सुभद्रागी पुजारी को प्रलोभन देकर सुसीम, उसकी माता देवी और सम्राट् को प्रसाद मे विष दिलाना चाहती है। सम्राट् का स्वर्गवास हो जाता है। अशोक मन्त्रिमडल की राय से सैन्य सग्रह कर उज्जैन से सुसीम पर आक्रमण करने को प्रस्थान करता है। सुसीम की माता देवी अपने पुत्र को युद्ध करने से रोकती है अतः अशोक के सैनिक युवराज को बन्दी बना लेते है। अशोक और मन्त्रिमडल सुसीम पर सम्राट् की हत्या का मिथ्या दोष लगाकर उसे अग्निकुड मे डाल देते है। अशोक के लघु भ्राता महेन्द्र अपनी भगिनी संघमित्रा के साथ गुप्त मार्ग से दुर्ग से निकल भागते है। सुसीम का पुत्र निग्रोध भी किसी प्रकार बच निकलता है। मार्ग मे दस्युदल निग्रोध की हत्या करना चाहता है उसी समय कलिग कुमार दस्युओ को बन्दी करके निग्रोध की रक्षा करते है। दस्युओ को देवी मृत्यु दड से बचा लेती है और वे सब बौद्ध बन जाते है। तृतीय अक मे कुणाल और तिष्यरक्षिता के विवाद और प्रेम की घटनाओ का उल्लेख है। इसी अक मे सघमित्रा और महेन्द्र अरण्य प्रदेश मे विचरण करते हुए एक परिया की दुखभरी कहानी सुनकर सवर्णो के अत्याचार का विरोध करते है। चतुर्थ अक मे अशोक कलिग पर आक्रमण करता है और कलिग कन्या चारुमती के बलिदान, युद्धक्षेत्र मे सहस्रो शवो को देखकर और अर्धमृतको के चीत्कार से अशोक के हृदय मे परिवर्तन होता है। अशोक बौद्ध धर्म स्वीकार करता है। उसी समय कुणाल, तिष्यरक्षिता, देवी, महेन्द्र और सघमित्रा उपस्थित हो जाते है। कलिग कुमारी चारुमती भी बौद्ध धर्म स्वीकार करती है और देश-विदेश मे बौद्ध धर्म की पताका फहराने लगती है।

इस नाटक का अभिनय कानपुर मे सन् १९३८ मे हुआ।

प्रेम और प्रेरणा (सन् १९६७), ले० डॉ० विनय, प्र० सजीव प्रकाशन, मेरठ।

इस गीति-नाट्य मे उस कवि का अन्तर्द्वन्द्व प्रदर्शित है, जो काव्य-रचना के लिए प्रेरणा की खोज मे रहता है। प्रारभ मे कवि इस अन्तर्द्वन्द्व मे उलझा हुआ है। उसी समय उसे काव्य-प्रेरणा के रूप मे प्रेम के दर्शन होते है, किन्तु प्रेम के मासल-पक्ष और उदात्त-पक्ष को लेकर उसमे पुनः अन्तर्द्वन्द्व होता है। प्रेम का काल्पनिक स्वप्न

व्यावहारिक जगत् मे सभव नही। इसीलिए एक युवती करुणा प्रेम की व्यापक परिभाषा देते हुए उसे सत्य, शिव और सुन्दरं गुणो से विभूषित करती है। अन्त मे कवि जग से पलायन का खडन करके जीवन की कठोर भूमि को ही अपना कार्यक्षेत्र बनाता है क्योकि एकाकीपन, निराश्रित तथा अनास्था-पूर्ण अतृप्त स्थितियो को प्रेम ही परस्पर सम्बद्ध किए रहता है।

प्रेम की ज्वाला (पृ० ६०), ले० . प० शिवदत्त मिश्र, प्र० . ठाकुर प्रसाद एंड संस, बुकसेलर, वाराणसी, *पात्र* · पु० ५, स्त्री २; *अक-रहित*, *दृश्य* ६। *घटना-स्थल* घर, नगर, जगल, आश्रम।

यह एक सामाजिक नाटक है। ईश्वरभक्त-वेद की पत्नी रमा पतिव्रता नारी है। वेदराम का लडका शोभाराम बचपन से ही भगवान की भक्ति मे लीन हो जाता है। रमा के आग्रह पर इन्द्रकुमार शोभाराम को ईश्वर-भक्ति से मोडने के लिए एक रूपवती युवती चन्द्रावती को उसके पास भेजता है। शोभाराम पहले तो चन्द्रावती को साधारण नारी समझकर उससे कुछ बाते कर लेता है जिससे चन्द्रावती को शोभाराम को पथ-भ्रष्ट करने की आशा प्रतीत होती है और उसे अपने प्रेम मे बाधने का प्रयास करती है। लेकिन अन्त मे शोभाराम के दृढ वैराग्य से चन्द्रावती की आँखे खुल जाती है और वह पश्चात्ताप करती है। पश्चात्ताप से हृदय निर्मल होता है। निर्मलता से सुधार, सुधार से ज्ञान और ज्ञान से ही मोक्ष प्राप्त होता है।

प्रेम की वेदी (सन् १९३९ पृ० ७०), ले० प्रेम-चन्द, प्र० हस प्रकाशन इलाहाबाद, *अक-रहित*, *दृश्यों मे विभाजित*।

यह सामाजिक नाटक प्रेम के क्षेत्र मे धर्म का बन्धन अस्वीकार करके प्रेम की वेदी पर उसका बलिदान करता है।

इस नाटक मे प्रेमचन्द ने विवाह की एक समस्या उठाई है। इस समस्या के अन्तर्गत धर्म की रूढिबद्धता तथा सकुचित परिभाषा के प्रति विभिन्न तरह के विद्रोही स्वर को प्रस्तुत करना चाहा है। इसमे जेनी नामक एक ईसाई लडकी योगराज नामक हिन्दू से विवाह करना चाहती है। धर्म दोनो की अभिलाषा मे बाधक होता है। नायिका जेनी के हृदय मे प्रेम तथा धार्मिकता के मध्य सघर्ष चलता है, और अन्ततोगत्वा धर्म को ढकोसला घोषित करती हुई सारे बनावटी बधनो को, अपने आत्मगत प्रेम की वेदी पर अर्पित करती है।

प्रेम के तीर (सन् १९३५, पृ० २१८), ले० राजा चक्रधर सिंह, प्र० . साहित्य समिति, रायगढ, *पात्र* · पु० ११, स्त्री ५ इत्यादि, *अक* ३, *दृश्य* · ७, ८, ७।

इस सामाजिक नाटक मे राजकुमारी के अपहरण द्वारा विवाहेच्छा की पूर्ति का परि-णाम दिखाया गया है।

कन्नौज महल के एक हिस्से मे महाराज सूर्यसिह अपने मन्त्री प्रभाकर सिंह के साथ टहलते हुए कुछ बाते कर रहे है। मालवाधि-पति अजीतसिंह एकान्त ऊसर के मदान मे टहलते हुए डाकुओ के एक दल के सरदार कालू को उज्जैन की राजकुमारी प्रभा का अपहरण करने के लिए डेढ लाख रुपये देते है। डाकू प्रभा को उडाकर अपने पास ला उसे अपनी रानी बनाने को उत्सुक होता है, किन्तु रानी के अस्वीकार करने से वह उस का जबरदस्ती हाथ पकडता है। इसी समय चन्द्र अपने साथियो सहित उसे घेर लेता है, चन्द्रसिंह उसको पिस्तौल से मार देता है। अब अजीतसिंह प्रभा को लेने आ जाता है। चन्द्रसिह से युद्ध होता है। चन्द्रसिंह उसके सीने पर चढकर तलवार भौक देना चाहता है लेकिन अन्त मे वह चन्द्रसिंह से क्षमा मागता है। प्रभा अपने घर जाकर अपने पिताजी को प्रणाम करती है और उसी राज-भवन मे प्रभा और चन्द्रसिंह का विवाह हो जाता है।

प्रेम प्रशंसा (सन् १९१४, पृ० ९०), ले० : पाण्डेय लोचन प्रसाद; प्र० हरिदास एंड

कम्पनी, कलकत्ता, पात्र पु० ६, स्त्री ६, अक : ४, दृश्य · ३, ३, ३, ३ ।
घटना-स्थल घर, गाँव ।

इस प्रहसन मे सम्मिलित हिन्दू कुटुम्व की स्थिति का पूरा चित्रण किया गया है। भाई-भाई मे विरोध कराने वाली स्त्रियो के कलह से घर मे अशान्ति दिखाई गई है।

गृहस्थाश्रम के सुख-दु ख, स्त्री जाति की निन्दा और स्तुति, माया-मोह से आत्मोन्नति मे वाधा आदि विषयो का चित्रण मिलता है।

प्रेम वन्धन (सन् १९२५, पृ० ८५), ले० : रामशरण 'आत्मानन्द', प्र० उपन्यास वहार आफिस काशी, बनारस, पात्र पु० ६, स्त्री २, अक . ३, दृश्य १०, १२, ५ ।

इस सामाजिक नाटक मे एक व्यक्ति अपने मित्र के कारण दुराचरण का झूठा आरोप स्वीकार करता है किन्तु उसका परिणाम सुखद होता है।

हेडमास्टर और वीना दो अलग-अलग शरीर है किन्तु उनकी आत्मा एक है। पर प्रतिष्ठित जमीदार भानुप्रताप अपनी पुत्री वीना की शादी अपने मित्र गोकुल के लडके सुरेश के साथ करना चाहते है। सुरेश विलायत पास एक दुराचारी युवक है। वह स्वय भोला की लडकी गौरी के साथ दुर्व्यहार करता है, किन्तु इसका झूठा आरोप हेडमास्टर पर लगाता है। हेडमास्टर इस आरोप को भानुप्रताप की श्रद्धा और भक्ति तथा वीना के सत्य-प्रेम के कारण स्वीकार कर लेता है। अत मे इस रहस्य का भडाफोड हो जाता है जिससे वीना और सुरेश की शादी भी स्थगित हो जाती है और हेडमास्टर को जेल से मुक्ति मिल जाती है। वीना तथा युवक हेडमास्टर का विवाह भानुप्रताप आदरपूर्वक सम्पन्न कराते है।

प्रेम वाटिका (सन् १८९२), ले० : राजेन्द्र वहादुर सिंहदेव बर्मा, प्र० भारत जीवन प्रेस, काशी, पात्र : पु० १२, स्त्री ६, अक-रहित, दृश्य . ८ ।
घटना-स्थल · राजसभा, वाटिका, राजमार्ग।

इस धार्मिक नाटक मे महाराज दशरथ की सभा मे विश्वामित्र के आगमन से परशुराम की क्षमा याचना तक की कथा को आठ दृश्यो मे प्रदर्शित किया गया है। इसको रामलीला की दृष्टि से लिखा गया है। इसका गद्यभाग नाट्यकार द्वारा विरचित है किन्तु पद्यभाग गोस्वामी तुलसीदास के रामचरित मानस से उद्धृत किया गया है। नाटक का प्रारम्भ और अन्त दोनो गोस्वामी जी के विनय पदो से ओतप्रोत है।

प्रेम मजरी ((सन् १९५१, पृ० ९६), ले० · महाराजाधिराज श्री भिनगाधिपदेवनिदेशेन विरचित, प्र० : भारत जीवन यन्त्रालये बाबू रामकृष्ण वर्म्मणा, काशी मे मुद्रित; पात्र : पु० ३, स्त्री ५, अक-रहित, दृश्य ३ ।
घटना-स्थल नन्दन भवन ।

नाटक मे कृष्ण और गोपियों के प्रेम-सम्वन्ध की कहानी का वर्णन है। उद्धव जी गोपियो को उपदेश देते हुए कृष्ण के प्रेम-मय चरित्र का रहस्योद्घाटन करते है। राधाकृष्ण का चरित्र ही अद्भुत है। मनुष्य निरन्तर दूसरो के विषय भोग का वर्णन अथवा मनन करने मे निष्फल परिश्रम करता है क्योकि इस प्रक्रियारूपी घृत की आहुति से भोगाग्नि कव शान्त होती है। हाँ ऐसे प्राणी परमात्मा की लीला का मनन करने से वासनारहित हो सकते है।

पूरा नाटक दोहा और चौपाइयो मे लिखा गया है।

प्रेम-महिमा (सन् १९६१, पृ० १५८), ले० भाऊ कलचुरी, प्र० आदि के० ईरानी, मेहरे पब्लिकेशन्स, किंग्स रोड, अहमदनगर, महाराष्ट्र, पात्र पु० ७, स्त्री ३; अक · ३, दृश्य . ६, ६, ६ ।
घटना-स्थल · विश्वनाथ का घर, विहारी का घर, सडक, घसीटा की झोपडी, मेहर बाबा का स्थान।

इस धार्मिक नाटक मे प्रेम द्वारा कलह

का नाश दिखाया गया है। भूमिका मे बताया गया है कि 'प्रेम-महिमा' प्रेमावतार मेहरे बाबा की ईश्वरीय अभिव्यक्ति के क्रम मे उनकी एक और दिव्य-किरण है जिसके प्रकाश मे अनेक जन, जो माया के मौजूदा घोर अन्धकार मे भटक रहे हैं, मार्ग पर जा सकेंगे।" इसमे युगावतार मेहरे बाबा के कुछ प्रेम सन्देशो का सग्रह है।

एक पुराने जमीदार विश्वनाथ मेहर बाबा के उपासको मे है। बिहारी पण्डित उनका कट्टर विरोध करता है। वह अपने भाई घसीटा को घर से निकाल देता है क्योंकि वह मेहर बाबा की शिक्षा का प्रचार करता है। विश्वनाथ एव घसीटा मेहर केन्द्र की स्थापना करते है परन्तु बिहारी, बाँके, झगड़ू आदि कट्टर पन्थियो को लेकर उनके जप मे विघ्न डालता है। विश्वनाथ की पत्नी आशा भी पुराने अन्ध-भक्तो मे है तथा विश्वनाथ की भतीजी शोभा को मेहर-भक्त होने के नाते कष्ट दिया करती है। बिहारी का पुत्र सुरेश धर्म पर किताब लिख रहा है एव धर्म के प्रेममय रूप पर ही विश्वास करता है। वह पिता बिहारी द्वारा घर से निकाली फुफेरी बहन पद्मा की सदा हिमायत करता है तथा उसे मेहर केन्द्र मे आश्रय दिलाता है। कई घटनाओ के कारण अन्त मे बिहारी पण्डित, आशा तथा बाँके आदि की आँखे क्रमश खुल जाती है। वे प्रेम एव धर्म के वास्तविक तत्त्व को समझ लेते हैं और आपस के विरोधो को मिटाकर प्रेम महिमा के प्रचार मे लग जाते है।

प्रेम या पाप (सन् १९४६, पृ० ९४), ले० . सेठ गोविन्ददास, प्र० रामदयाल अग्रवाल, इलाहाबाद, *पात्र* पु० ३, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य-रहित*।

इस सामाजिक नाटक मे कला के नाम पर होनेवाले दुराचरण का चित्र खीचा गया है।

शेयर बाजार के व्यापारी लक्ष्मी निवास की पत्नी कांति नृत्य-सगीत के द्वारा अपना नाम सार्थक करना चाहती है। लाला जी कीर्ति का संगीत नृत्यादि की शिक्षा देने के लिये कलानाथ कवि को नियुक्त करते हैं। अपने व्यापारिक कार्यों मे व्यस्त रहने के कारण लाला जी को अपनी रूप-लावण्यमयी पत्नी की देखभाल का समय नही मिलता। क्रमशः कलानाथ और कीर्ति का अवैध प्रेम सम्बन्ध बढता जाता है। वह कीर्ति की कला पर एक महाकाव्य की रचना करना चाहता है, परन्तु जब कीर्ति इस कार्य मे उसको असमर्थ देखती है तो इस प्रेम को पाप समझकर वह नरेन्द्र नामक एक सिनेमा डायरेक्टर के सम्पर्क मे आती है जहा उसका पूर्ण रूप से पतन होने लगता है।

रूपगर्विता, वासना लोलुप सौन्दर्योपासक कीर्ति नृत्य एवं गान मे तब तक मस्त रहती है जब तक उसके घर की सुख शान्ति, पति का प्रेम, घर का पावन वातावरण नष्ट नही हो जाता।

कीर्ति यश-मोह से इतनी पागल है कि जो उसकी प्रशसा करता है उसी के साथ प्रेम करने लगती है।

प्रेम-योगिनी (वि० १९७९, पृ० १५२), ले० रामेश्वरी प्रसाद 'राम', प्र० बाढ, जिला पटना, *पात्र* पु० १३, स्त्री ९, *अक* ३, *दृश्य* २२।

पिता अपनी पुत्री के विवाह की चिन्ता से चिन्तित है। अन्त मे वह एक वृद्ध रईस से उसका विवाह करना निश्चित करता है। उसकी पत्नी इस बात का विरोध करती है किन्तु पिता दस हजार रुपये के लालच मे आकर अपना निर्णय नही बदलता। वृद्ध रईस एक धूर्त ब्राह्मण को अपने विवाह सम्बन्धी कार्यो के लिए नियुक्त करता है। युवती पुत्री माधव नामक एक युवक से प्रेम करती है। उस राज्य का प्रधान मंत्री युवती का अपहरण कर लेता है तथा अपनी कुत्सित वासना की पूर्ति करना चाहता है। युवती के अपूर्व साहस के आगे वह कुछ नही कर पाता। फकीर वेश धारण किए हुए राजा के द्वारा समस्त षड्यन्त्रो का उद्घाटन होता है तथा मत्री को कैद कर लिया जाता है। युवती को मुक्त कर दिया जाता है। युवती योगिनी बनकर अपने प्रिय को ढूँढने निकल पड़ती है।

प्रेम योगिनी (सन् १८७४), ले० : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र; प्र० . हिन्दी पुस्तक भंडार, लहरिया सराय, दृश्य :·४।

यह नाटक अपूर्ण है। प्रथम दृश्य मे काशी के गुण्डे और दुष्चरित्र व्यक्तियो का वर्णन और दूसरे मे महात्माओ और दर्शनीय स्थानो का उल्लेख है। वास्तव मे इस नाटक मे कोई सम्वद्ध कथा नही है, अपितु बाबू वज्ररत्नदास के अनुसार 'यह तो किसी रमते-राम का एक तीर्थ स्थान मे जाकर उसकी विशेपता का ऐसे रूप मे वर्णन करने का प्रयास है।' बाद मे जोडे गये दृश्यो मे से एक मे 'बहरी तरफ' जाने की प्रथा का वर्णन है तथा गैबी मे एकत्र होने वाले गुण्डो, भडेरियो और दलालो के द्वारा देश की पतनोन्मुख परिस्थिति को इगित किया गया है, पछियो की खोज मे निकले धनदास तथा वनितादास की बातचीत से यह स्पष्ट हो जाता है।

दूसरा दृश्य स्टेशन का है। इसमे यह दिखलाया है कि किस प्रकार पण्डे काशी की महत्ता का गुणगान कर भोली स्त्रियो को फँसाते है। इस नाटक की महत्ता केवल इतनी ही है कि इसके प्रत्येक पात्र काशी के सामयिक समाज का प्रतिनिधित्व करते है। इस नाटक मे काशी की धार्मिक तथा अभिजात वर्ग के लोगो के व्यसनो और बुराइयो का उद्घाटन यथार्थरूप मे हुआ है।

प्रेम लोक (सन् १९३४, पृ० ११८), ले० रामनरेश त्रिपाठी, प्र० : हिन्दी मन्दिर, प्रयाग, अक ५, दृश्य · २९।

यह नाटक स्त्रियोपयोगी है। इसमे ससार की असारता एव दुखो की अतिशयता का चित्रण करने के साथ ही त्रिपाठी जी ने अनेक काल्पनिक चित्रो का सबल ग्रहण कर प्रेम की महत्ता का प्रतिपादन किया है। इस दु खमय ससार से दूर किरण और तारा प्रेम की खोज मे चन्द्रलोक जाते है और चन्द्रलोक मे कुछ समय रहकर वे अपने अनुभवो को सचित कर पुन पृथ्वी पर लौट आते है। सपूर्ण नाटक मे प्रेमानद का चित्रण हुआ है।

प्रेम विकास नाटक (सन् १८९०, पृ० १४), ले० ब्रजजीवन दास, दीक्षावाक गुजराती ठाकुर विष्णुदत्त जी; प्र० विक्टोरिया प्रेस, बनारस; *पात्र* पु० २, स्त्री २, अक घटनानुसार दो भागो मे विभाजन, प्रत्येक भाग ४ अको मे।
घटना-स्थल . वृन्दावन कुज।

इस नाटक मे कृष्ण एव राधा तथा उनकी सखी ललिता के प्रणय-सवाद मे प्रेम के स्वरूप का वर्णन किया गया है।

प्रेम सुन्दर नाटक (सन् १८९२, पृ० १०६), ले० शिवदयाल सिह वकील 'मुशी', प्र० यूनियन प्रेस क०, जबलपुर, *पात्र* पु० १७, स्त्री ६, *अक* ४, *दृश्य* . ३, ६, ५, ४।

इस नाटक का विषय प्रेम है और इसका नामकरण भी नायक और नायिका के नाम पर किया गया है। नायक प्रेम रूपवान् होने के साथ सभी गुणो से युक्त है। नायिका 'सुन्दर' भी प्रेम के नाम से प्रणय का अनुभव करती है और बाटिका मे प्रथम दर्शन मे ही वह 'प्रेम' के लिये अपने आपको सर्मापित कर बैठती है। नायक और नायिका का प्रणय बन्धन इतना दृढ है कि वे ससार के समस्त कष्टो और रुकावटो का सामना करते हुए अन्त मे विवाह बन्धन मे आवद्ध हो सर्वदा के लिये जीवन साथी बन जाते हैं।

नाटककार ने प्रथम दशन के प्रणय को वैवाहिक जीवन मे परिणत कर नाटक की परिसमाप्ति की है। नायिका 'सुन्दर' की रचना लेखक ने रीतिकालीन नायिकाओ के रूप मे ही की है, क्योकि नायिका के विरह वर्णन मे चन्दनादि शीतल सुवासित पदार्थो को दाहक रूप मे प्रस्तुत किया है।

फ

फंदी (सन् १९७१ पृ०, १०९), ले० . शंकर शेष, प्र० : अनादि प्रकाशन इलाहाबाद, *पात्र :* पु० ३ अक ३।
घटना-स्थल जेल, कन्सलटेशन रूम।

आधुनिक यान्त्रिक एव कृत्रिम जीवन के सत्रास को झेलने वाले युवक की करुण कथा है। फदी अपने पिता को कैंसर की असह्य यन्त्रणा से मुक्ति देता है लेकिन वह स्वय विसगतियो एवं परिस्थितियो के नाग-फॉस मे जकड उठता है। एक पशु मनुष्य की करुणा का पात्र हो सकता है पर एक व्यक्ति समाज की करुणा का पात्र नही हो सकता है। कैंसर की असाध्य यन्त्रणा से तडपते पिता को मौत से मुक्ति देना अपराध है। वकील द्वारा फंदी को बचाने के तर्क, पूर्वाभ्यास, अदालत मे बहस सब कुछ है लेकिन न्यायाधीश के निर्णय को पाठको और दर्शको पर छोड दिया गया है।

अभिनय जबलपुर २-१-७२।

फर्ज और मुहब्बत (सन् १९५९, पृ० ८०), ले० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, *पात्र* पु० ५, *अक* ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल प्रभात भारती का मकान।

इस नाटक मे प्रेम और कर्त्तव्य का द्वन्द्व दिखाया गया है। प्रभात भारती अपने निर्देशन मे कला सीखने वाली शारदा कुमारी से प्रेम करता है, किन्तु उसकी तरफ प्रभात-भारती का मित्र राजेश भी आकर्षित है। इसलिए मित्र के फर्ज को निभाने के लिए प्रभात-भारती अपना प्रेम दबाकर शारदा को राजेश के घर भेज देता है, किन्तु राजेश प्रेम को पवित्र रखने के लिए शारदा कुमारी को प्रभात-भारती के चरणो मे समर्पित कर देता है, ताकि एक कलाकार की कला न मिटने पावे। फर्ज और मुहब्बत की यह अजीब-सी कहानी है।

फिर बाजेगी शहनाई (सन् १९६४ पृ०७२), ले० सतीश डे, प्र० देहाती पुस्तक भडार दिल्ली, *पात्र* पु० ६, स्त्री २, *अक-रहित*, *दृश्य* ३।
घटना-स्थल धोबी का घर।

इस नाटक मे वैमनस्य को दूर कर आपस मे प्रेमभाव स्थापित करने का प्रयास है। यह नाटक धोबियो के दो ऐसे खानदानो से सबधित है, जिनमे उत्पन्न दो प्रेमी अपने घरानो की पुरानी दुश्मनी की वजह से एक दूसरे से न तो प्रेम ही कर सकते है और न ही शादी। किन्तु नई पीढी पारिवारिक पुरानी नफरत और दुश्मनी पर पर्दा डाल देती है, और इस प्रकार वर्षो की शत्रुता मैत्री मे वदल जाती है।

फुलवारी लीला (सन् १९३६, पृ० ४८), ले० · मुन्शी वागेश्वरी दयालु, प्र० भार्गव पुस्तकालय बनारस सिटी, *पात्र* · पु० १२, स्त्री ४, *अक* · २, *दृश्य* ९, २।
घटना-स्थल मिथिलापुर के निकट का स्थान, वाटिका, जनकपुर, राजा जनक की सभा।

इस पौराणिक नाटक मे भगवान् श्री राम और लक्ष्मण के द्वारा मिथिला की सुन्दर वाटिकाओ का सौन्दर्य दिखाया गया है। दूसरे दृश्य मे जनकपुर का बाजार तथा तत्कालीन सस्कृति का परिचय दिया गया है, जहाँ मालिन राम से पूछती है कि "हे प्रभु! सब फूलो मे तो आप ही निवास करते है अब किस फूल का गजरा बनाकर आप के गले मे डारे।" मालिन की बात सुन भगवान् राम प्रसन्न होकर लक्ष्मण को उसे पुरस्कार देने

का आदेश देते है। राम और लक्ष्मण विश्वामित्र की आज्ञा से नगर का अवलोकन करने जाते है। जनकपुर की अट्टालिकाओ पर बैठी (सुन्दरियाँ) नारियाँ राम और लक्ष्मण को देखकर मोहित हो जाती है।

जानकी जी राम का रूप देखकर विमोहित हो जाती है। राम-लक्ष्मण जनकपुरी का अवलोकन कर सध्या करने के लिए आश्रम मे लौट आते है। सीता भी उदासमना सखियो के साथ घर लौट जाती है।

फुलवारी लीला-नाटक (सन् १९३६, पृ० ६३), *ले०* मु० रामगुलाल लाल, *प्र०* वैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, बनारस, *पात्र* · पु० ६, स्त्री २, *अक* २; *दृश्य :* १०, १। *घटना-स्थल* · जनकपुर का मीना बाजार, जनक की सभा, मिथिलापुर की वाटिका।

इस पौराणिक नाटक मे जनकपुर की फुलवारी लीला का वर्णन है। राम, लक्ष्मण मुनि विश्वामित्र के साथ जनकपुर के सुन्दर उपवन मे निवास करते है। दोनो भाई गुरु की आज्ञा से नगर का परिभ्रमण करते है। जनकपुरी के निवासी राम-लक्ष्मण के अलौकिक सौन्दर्य पर मुग्ध हो जाते है। वे सब सीता के अनुरूप राम को 'वर' पसन्द करते है किन्तु धनुष-यज्ञ की शर्त से दुश्चिन्ता मे भी पड जाते है। सारा समाज राम मे आस्था रखता हुआ उन्ही के द्वारा धनुप चढाये जाने की कामना करता है।

राम-लक्ष्मण जनक-वाटिका मे फूल लेने वहाँ पहुँच जाते है जहाँ सीता भी गौरी-पूजन के लिए पहुँचती है। अचानक दोनो के चार नेत्र होते ही राम और सीता एक-दूसरे पर मुग्ध होते है। सीता गौरी से अपने अनुकूल वर-प्राप्ति का आशीर्वाद प्राप्त करती है। नाटक के अन्त मे केकय देश के राजा सत्यकेतु के पुत्रो मे सबसे प्रतापी राजा भानुप्रताप की कथा स्वय विश्वामित्र सुनाते है।

फूल और अंगारे (सन् १९२०, पृ० ६४), *ले०* · शारदेन्दु रामचन्द्र गुप्त, *प्र० :* ठाकुर प्रसाद एण्ड सस बुकसेलर, वाराणसी; *पात्र :* पु० ७, स्त्री २, *अक* ७, *दृश्य* · ५, ४, ३, २, १, २, ३। *घटना-स्थल* रामदास का घर, जगल, मार्ग।

इस प्रेम-प्रधान नाटक मे असहाय कन्या की प्रतिष्ठा की रक्षा की गई है। एक असहाय गरीब की सुन्दरी कन्या फुलवा के पिता रामदास को जगल का सरदार मगलासिह मार डालता है और फुलवा को लेकर भाग खडा होता है। रास्ते मे गोपाल मिलता है। मगलासिह और उसकी लडाई होती है और अन्त मे मगलासिह हार जाता है। फुलवा अपने प्रेम और प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए गोपाल के साथ आग मे जल जाती है।

फूलों का देश (सन् १९६०, पृ ८०), *ले०* सुमित्रानन्दन पत, *पात्र :* पु० ३, *अक-रहित*।

इस गीति नाट्य मे अध्यात्मवाद, आदर्शवाद एव वस्तुवाद-सम्बन्धी सघर्ष की अभिव्यक्ति और उनमे व्यापक समन्वय स्थापित करने की चेष्टा की गई है। विश्व-जीवन मे बहिरग-सन्तुलन तथा परिपूर्णता लाने के लिए दोनो की ही उपयोगिता दिखाई गई है। इसके पात्र है . कलाकार, वैज्ञानिक और विद्रोही। कवि और वैज्ञानिक के वार्तालाप से मानव-समस्या को सुलझाने का प्रयास किया गया है। उत्तर शती मे सन् १९५१ पात्र बनकर आता है और १९००-१९५० तक विश्व मे होने वाली क्रान्तियो का उल्लेख करता है। अंत मे भरतवाक्य के रूप मे आशा प्रकट की गई है।

फूलों की बोली (सन् १९४०, पृ०, ८०), *ले०* . वृन्दावनलाल वर्मा, *प्र०* · मयूर प्रकाशन, झाँसी, *पात्र* पु० ४, स्त्री २, *अक* · ३, *दृश्य* ३, ४, ५। *घटना-स्थल :* घर, जगल।

अरव-यात्री अलवरूनी भारत-यात्रा करते हुए उज्जैन भी जाता है। वहाँ पर उसे स्वर्ण-रसायन और व्याडी के विषय मे पता चलता है, जिसके लोभ मे हमारे देश के कुछ लोग अधे हो रहे है। इस नाटक मे लेखक का उद्देश्य है कि असली कमाई

पसीना बहाने से प्राप्त होती है न कि कुकृत्यो और अपराधो से।

कामिनी और माया दो प्रसिद्ध गायिकाएँ है। माया की कला के पुजारी नगर-सेठ माधव और व्यवसायी पुलिन, इन गायिकाओ की कला का रसास्वादन करने के लिए उनके पास जाते है। वहाँ उन्हे एक सिद्ध नामक ठग मिलता है जो साधु के रूप मे स्वर्ण-रसायन मन्त्र बताने के बहाने इन का सारा धन लूटना चाहता है। वह कामिनी व माया को अपना शिकार बनाकर पुलिन व माधव (व्याडी) पर भी प्रभाव जमाता है। दूसरे दिन वह (सिद्ध) कामिनी और माया से मिलकर कहता है कि वह उनका सारा स्वर्ण हीरे-मोतियो मे परिवर्तित कर देगा और स्वर्ण-रसायन का भेद बतायेगा। वह उनके सारे आभूषण एक मटके मे मँगवाकर रख लेता है और माया को स्नान करने के लिए भेज कर सारे आभूषण लेकर अपने साथी बलभद्र के साथ भाग जाता है। नगर से बाहर जाकर आभूषणो मे से आधा हिस्सा लेकर भागता है पर दोनो मे लडाई होती है। सिद्ध अपनी लाठी से बलभद्र के सिर पर घाव करके भाग जाता है। पुलिन घायल बलभद्र को उठाकर माया के घर ले जाता है। बाद मे सिद्ध भी पकडा जाता है। माया, कामिनी, माधव व बलभद्र सब उसे क्षमा कर देते है। अन्त मे माया का बलभद्र से और कामिनी का माधव से विवाह हो जाता है।

फेरार (सन् १९५०, पृ० ५६), ले० · श्री शारदानन्द झा, प्र० नीर मुक्ति पब्लिकेशन्स, १ सर पी० सी० बनर्जी रोड, इलाहाबाद, पात्र पु० २१, स्त्री १, अक ३, दृश्य १७।
घटना-स्थल अनूप का घर, दरोगा का क्वार्टर, पोस्ट आफिस, जमीदार की कचहरी।

इसमे सन् १९४२ के भारतीय स्वतन्त्रता-सग्राम की राजनीतिक घटना का वर्णन है। ब्रिटिश शासक अपनी दमन-नीति के द्वारा इस प्रकार की क्रातियो को कुचलना चाहते थे। भारतीय भी प्राणो की बाजी लगाकर अपनी मातृभूमि को स्वतन्त्र करना चाहते थे। इसी के फलस्वरूप जगह-जगह पर ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ बगावत होती है। रेलवे-स्टेशन, पोस्ट-आफिसो एव थानो को लूटा जाता है। स्वतन्त्रता-सग्राम के सैनिको के खिलाफ सरकार की ओर से मुकदमा चलाया जाता है तथा उन्हे हिरासत मे लेने की भरपूर कोशिश की जाती है, किन्तु सरकार के सभी प्रयास नाकामयाब सिद्ध होते है। अन्तत व्यक्तियो को अपराधी घोषित कर उन पर मुकदमा चलाया जाता है जिसके फलस्वरूप एक को काले पानी की सजा और दूसरे को जुर्माना होता है जिसके साथ नाटक समाप्त होता है।

फैसला (सन् १९५६, पृ० ८०), ले० रमेश मेहता, प्र० बलवत राय ऐण्डको दिल्ली; *पात्र* पु० १३ स्त्री ३ अक ३।
घटना-स्थल घर, पचायत भवन।

इस सामाजिक नाटक मे हिन्दू विधवा के प्रति समाज की कठोरता, निर्ममता एव अत्याचारो के साथ उसकी दैन्य-दशा तथा उस के करुणापूर्ण अन्त का हृदयविदारक चित्र अकित है। 'राधा' ऐसी ही अभागिन विधवा है, जो समस्त परिवार की मनोयोग-पूर्वक सेवा के उपरान्त भी अपमान एव तिरस्कार ही प्राप्त करती है। शोभा तथा चोखेलाल का व्यवहार भी 'राधा' के प्रति अत्यन्त कठोर एव निर्मम है। इस परिवार मे यदि कोई 'राधा' के प्रति सहानुभूति रखता है तो वह है एकमात्र 'बिहारी' जो चोखेलाल का भतीजा है, और इसी कारण वह बेचारा भी चोखेलाल के परिवार के आँख की किरकिरी है। 'जमना' उसकी हत्या के लिए अपने बचपन के प्रेमी हकीम भैरो प्रसाद से एक औषधि प्राप्त करती है और उसे दूध मे घोलकर पिलाती है। फलत. बिहारी पागल हो जाता है और उसकी वाक्-शक्ति नष्ट हो जाती है।

चमेली का भतीजा सुरेश एक दिन रात्रि मे राधा से अपनी वासना-पूर्ति की याचना करता है, परन्तु मानवता की देवी 'राधा' उसे बुरी तरह से फटकारती है। सुरेश के साथ चोखेलाल की पुत्री शोभा भाग जाती है।

चोखेलाल राधा पर अनैतिकता का दोषारोपण कर उसे घर से निकालने की योजना बनाता है। इस षड्यन्त्र मे बिरादरी के पचो की भी सहायता ली जाती है। चार पच जो किसी न किसी रूप मे चोखेलाल के आभारी है, एकमत से राधा को दोषी ठहराते है। पॉचवे पच भगत बालकराम इस निर्णय का विरोध करते है, परन्तु सरपच हीरालाल बालकराम के कथनो की अवज्ञा करते हुए अपना निर्णय सुना देते है। 'चमेली' अत्यन्त निर्ममतापूर्वक राधा को अपशब्द कहती है और उसे शीघ्र ही घर से निकल जाने का आदेश देती है। परन्तु 'राधा' सारा अत्याचार चुपचाप सहन करते हुए विष पीकर यह कहते-कहते अपने प्राणो का अन्त कर देती है कि—"नेक बहुओ की घर की चौखट से अर्थी निकलती है पॉव नही।" इस प्रकार एक हिन्दू विधवा का जीवन हिन्दू समाज के इस अत्याचारपूर्ण विधान एव दुर्व्यवहार की अग्नि मे स्वाहा हो जाता है।

अभिनीत—थ्रीआर्ट्सक्लब दिल्ली द्वारा।

फैसला (सन् १९५८, पृ० ९६), ले० · भुवनेश्वर सिह, प्र० ग्रथालय प्रकाशन, दरभगा, पात्र पु० १६, स्त्री ३; *अक* : ३; दृश्य ५, ५, ५।
घटना-स्थल डॉ० वसन्त की कोठी, अदालत।

'फैसला' एक मध्यवर्ती परिवार का चित्र प्रस्तुत करता है। धनराज अपनी सम्पूर्ण धन-सम्पत्ति को अपने पुत्र विनय की पढाई मे लगाकर स्वय निर्धन हो जाता है। धनराज के मित्र डॉ० वसन्त विनय की सहायता की दृष्टि से उसे अपनी बेटी वीणा के लिए ट्यूटर के रूप मे रख लेते है। वीणा विनय के प्रति आकृष्ट है और वीणा की मॉ रम्भा भी इसके पक्ष मे है, परन्तु रमेश (प्रतिनायक) डॉ० वसन्त के मन मे शका उत्पन्न कर विनय को उनके घर से निकलवाने मे सफल हो जाता है। अवसर का लाभ उठाकर वह डॉ० वसन्तलाल की मूल्यवान् वस्तुओ को चुरा ले जाना चाहता है, परन्तु डॉ० वसन्त चोरी करते हुए पकड लेते है पर वह उनकी हत्या कर भाग जाता है। रमेश छलबल से डॉ० वसन्त की हत्या का दोषारोपण विनय पर कर उस पर अभियोग चलाता है। अदालत मे साक्ष्य के अभाव से विनय अपने को निरपराध सिद्ध करने मे असफल ही रहता है। फलत अदालत द्वारा उसे मृत्यु-दण्ड की घोषणा होती है। रमेश वीणा के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखता है, किन्तु वह अपनी इस योजना मे असफल रहता है। अदालत मे विनय के मृत्यु-दण्ड का समाचार पाकर वीणा रमेश की पिस्तौल से आत्मघात करना चाहती है परन्तु पिस्तौल पर अपने पिता का नाम अकित देखकर अचेत हो जाती है। रमेश के पास से निकली डॉ० वसन्त की पिस्तौल उसके षड्यन्त्रो का भण्डाफोड कर देती है। अन्त मे विनय को ससम्मान मुक्त कर रमेश पर हत्या का अभियोग चलाकर उसे मृत्यु-दण्ड दे दिया जाता है।

फ्रेम-बिना तसवीर (सन् १९५७, पृ० १०६), ले० विद्यावती कोकिल, प्र० · ज्योति प्रकाशन, इलाहाबाद, पात्र : पु०४, स्त्री ३, अक · ४, *दृश्य* १, १, १, १।
घटना-स्थल इगलैड मे डॉक्टर का कमरा, भद्र परिवार का घर, इगलैड मे भारतीय शैली का सजा कमरा।

इस नाटक के माध्यम से प्राचीन सभ्यता-संस्कृति और मानवतावाद पर प्रकाश डाला गया है।

जन्तु-विज्ञान की प्रोफ़ेसर डॉ० एनी स्लेटरन को विज्ञान मे सर्वथा नये दृष्टिकोण का सूत्रपात करने के उपलक्ष्य मे उनकी पुस्तक 'द रियल मैन' पर एक लाख का जेम्स पुरस्कार मिलता है, पर उन्हे इससे कोई प्रसन्नता नही होती। डॉ० एनी आइन्सटीन, शेक्सपियर, मार्क्स, फादर स्लटेर की वृत्तियो का सामजस्य एक व्यक्ति मे करना चाहती है। वैज्ञानिक होने के नाते उन्हे सर्वत्र विज्ञान के द्वारा लायी हुई मूर्ति ही दीखती है। वह कहती है—"ससार के सारे धर्म और उनके भेदभाव, बात की बात मे, मिटने जा रहे है। धर्म जो कुछ अपना सिर पटककर भी न कर पाया, उसे विज्ञान सहज ही सुलभ बना रहा है। परन्तु धीरे-धीरे उनका दृष्टिकोण बदल जाता है। वे वैज्ञानिकता से अधिक मानवतावाद पर विश्वास करती है

और कहती है—भौतिकता ने पश्चिम को एकदम हृदयहीन बना डाला है। शिक्षित सामर्थ्यशाली मानव पशु से ऊपर है पर पूर्ण मनुष्यता से अभी नीचे है। भारत-भ्रमण के पश्चात् तो उनका कायापलट ही हो जाता है। लेखिका ने भारतीय आदर्शों का सुन्दर अकन किया है। पश्चिम की भौतिकता, वैज्ञानिकता, अन्वेषणशीलता अब धीरे-धीरे मानवतावाद की ओर बढ रही है। पश्चिम क्षणिक प्रसन्नता, क्षणिक सुख-शाति की तलाश मे है। लेखिका अन्त मे कहती है—"दुनिया के खाली पडे फ्रेम मे उस मानवता के राजा की फोटो को फिट करो। दुनिया उसके दर्शन करे, उसके चरणो का अनुसरण करे।"

ब

बद कमरे की आत्मा (सन् १९७२, पृ० ५०), ले० चतुर्भुज, प्र० मगध कलाकार प्रकाशन, १०६, श्रीकृष्ण नगर, पटना, *पात्र* · पु० ५, स्त्री १, *अक-रहित*, *दृश्य* ५।
घटना-स्थल · दो कमरे।

एक रोमाचकारी रहस्यपूर्ण सामाजिक नाटक जिसका नायक एक ऐसा युवक है जो मरा हुआ समझा जाता है, जिसका दाह-सस्कार तक हो गया है।

बंदी (सन् १९५४, पृ० ३८), ले० जगदीश चन्द्र माथुर, प्र० · नेशनल पब्लिशिग हाउस, दरियागज, दिल्ली, *पात्र* पु० ६, स्त्री २; *अक* . ३, *दृश्य-रहित*।

घटना-स्थल गाँव का एक प्राचीन ढंग का बगला' (तीनो अको मे एक ही स्थान।)

इस नाटक मे गाँव की दशा बताकर उसे बदीगृह का रूप दिया गया है।

राय तारानाथ कलकत्ता नगर मे अपनी पुत्री हेमलता, आया और नौकर चेतराम के साथ वर्षों से निवास कर रहे है पर मूलत. वह एक गाँव मे उत्पन्न हुए थे जहाँ वर्षो के बाद इस उद्देश्य से लौटे हैं कि नौकरी से अवकाश ग्रहण करने पर वह शेष जीवन अपनी जन्मभूमि पर बितायेगे। उनकी पत्नी का स्वर्गवास हो चुका है। वह गाँव मे उन स्थानो को जहाँ उनकी पत्नी पूजा करती थी अपनी कन्या हेमलता को दिखाकर ग्रामीण जीवन के खेत की हरियाली, हँसती हुई चाँदनी, बाँस की झुरमुटो पर ज्योत्स्ना की मुस्कान का वर्णन करते हुए मुग्ध हो जाते है। उनकी कन्या का बचपन गाँव मे बीता है इसलिए उसके मन मे ग्रामीण जीवन के प्रति एक प्रकार का ममत्व है।

वीरेन नामक एक युवक कलकत्ते से इस परिवार के साथ गाँव मे रहने आया है और वह ग्रामोद्धार समिति का निर्माण करना चाहता है। इसी गाँव मे बालेश्वर उर्फ बी० पी० सिनहा अपने मित्र करमचन्द के साथ एक क्लब चलाना चाहते हैं।

दूसरे अंक मे जज साहब के आगमन के पन्द्रह दिन बाद गाँव के चौधरी और उसके भतीजे बालेश्वर मे झगडा होता है और बालेश्वर अपने चाचा पर प्रहार करता है गाँव मे घर-घर झगडा, भूखे-भिगमगो की टोली, चीथडो मे लिपटी औरते, गरीबी और गदगी देखकर जज साहब का मन ऊब जाता है। वीरेन बाबू की ग्रामोद्धार समिति मे केवल बहसे होती है, ऊपर का दिखावा अधिक है और काम कुछ नही।

गाँव मे अनेक दल बन गये है। एक दल-सिन्हा जिन्दाबाद कहता है तो दूसरा दल करमचन्द की जय-जयकार और सिन्हा मुर्दाबाद करता है। वीरेन बाबू के ग्रामोद्धार-समिति के उत्सव मे दोनो पार्टी के लोग लट्ठ लेकर पहुँचते हैं और चुनाव मे दलबन्दी होने के कारण मारपीट हो जाने से वीरेन बाबू घायल हो जाते हैं। वीरेन का पुराना सहपाठी लोचनसिंह कॉलेज छोडकर मुसहरो के बीच

देहाती वेश मे गरीबो की सेवा करता है और झगडे मे स्वय लाठी सहकर वीरेन के प्राण बचाता है। लोचन, जज साहब, हेमलता और वीरेन से ग्रामीणो की सेवा के लिए प्रार्थना करता है किन्तु गाँव के झगडे, गन्दी राजनीति और दारिद्रय आदि को देखकर जज साहब के परिवार को वितृष्णा हो जाती है और वे गाँव को छोडकर सदा के लिए कलकत्ता मे बसने चले जाते है। केवल जज साहब का नौकर चेतराम और लोचन कृत सकल्प रहते है। लोचन चेतराम से कहता है "यकीन रखो चेतराम मै घुटने नही टेकूँगा चाहे जजीरे मुझे लहूलुहान कर दे चाहे रास्ते के काँटे मेरे तलुवो को छलनी बना दे किन्तु तुम लोगो के बढते कदमो के लिए मै अपनी हस्ती मिटाने के लिए सदा तैयार रहूँगा।" लोचन चेतराम के साथ जमीन की खुदाई करने चलता है। उसे घायल तथा थका जानकर चेतराम आराम करने के लिए कहता है लेकिन लोचन कहता है "मुझे अपने पसीने के दर्पण मे कभी न मिटने वाली छाया देखनी है।" वह कुदाली उठाकर चल पड़ता है।

बधन (सन् १६४७, पृ० ११२), ले० · हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० हिन्दी भवन,, रानी मडी, इलाहाबाद, *पात्र* पु० ५, स्त्री ३, *अक* : ३, *दृश्य* · ६, ६, ५।
घटना-स्थल : झोपडी, कारागार।

इस सामाजिक नाटक मे पूँजीपति और मजदूरो के सघर्ष का चित्रण है। युवक मजदूर-नेता मोहन मिल-मालिक रायबहादुर खजाचीराम के अत्याचारो के विरुद्ध अहिसक क्राति करता है। सारे मजदूर हडताल कर देते है। रायबहादुर का पुत्र प्रकाश और पुत्री मालती, मोहन की सहायता करना चाहते है लेकिन मोहन अस्वीकार कर देता है। एक दिन मालती अपने कुछ गहने मोहन की बहन सरला को सहायतार्थ देती है। मोहन उन गहनो को वापस करने राय बहादुर के घर जाता है। रायबहादुर उसे चोरी के अपराध मे जेल भिजवा देते है। मोहन के जेल जाने के बाद मजदूरो की दशा बिगडती जाती है। प्रकाश एक मजदूर को अपने ही घर चोरी करने के लिए भेजता है ताकि मजदूरो की हडताल सफल हो। चोरी करते समय रायबहादुर आ जाते है। मजदूर रायबहादुर को गोली मारकर चला जाता है। प्रकाश इस खून का इलजाम अपने ऊपर ले लेता है। इसी बीच मोहन जेल से छूटकर वापस आ जाता है। मोहन प्रकाश को बचाने के लिए अपने को अपराधी बताता है। दोनो जेल जाते है, परन्तु छूट जाते है। रायबहादुर भी बच जाते है किन्तु उनका हृदय परिवर्तित हो जाता है। अत मे मोहन को मालती के साथ विवाह-बधन मे बधना पडता है। भूमिका मे मिलता है कि यह नाटक प्रकाशित होने से पहले खेला जा चुका है।

बंधन अपने-अपने (सन् १६७०, पृ० १४६), ले० · शकर शेष, प्र० अनादि प्रकाशन, इलाहाबाद, *पात्र* पु० ४, स्त्री १, *अक* ३, *दृश्य* १, १, १।
घटना-स्थल · विख्यात लिपिशास्त्री जयत के घर का ड्राइग रूम।

यह नाटक उस विद्वान् के जीवन पर आधारित है जिसे अपने जीवन के अन्तिम दिनो मे केवल निराशा ही मिलती है।

नाटक का नायक डॉ० जयत अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति का प्राध्यापक है, जो पचास वर्ष की आयु तक केवल अध्ययन और चिन्तन मे तल्लीन रहता है। अनादि प्रोफेसर जयत का छोटा भाई है। वह भी अध्यापक है लेकिन उसका मन चिन्तन और अनुसंधान से परे है। वह हमेशा संगीत-कला, क्रीडा और नाटक से प्रेम करता है। चेतना एक विदुषी तथा सीधी-सादी लडकी है जो प्रोफेसर जयत के निरीक्षण में पी-एच० डी० कर रही है। घर मे एक बूढे नौकर के अलावा और कोई नही है। अचानक नौकर भी रुग्ण होकर गाँव चला जाता है जिससे घर का सारा काम चेतना स्वय करती है। अनादि और चेतना मे एक दूसरे के प्रति आकर्षण है। दोनो वैवाहिक बन्धन मे बँधना चाहते है लेकिन प्रोफेसर साहब के अविवाहित रहने से अनादि शादी करने को तैयार नही होता है।

एक बार प्रोफेसर जयत को उनके मित्र

तर्कतीर्थ मजूमदार नामक चित्रकार के मरने का हाल सुनाते है। मजूमदार भी अविवाहित विख्यात चित्रकार था। उसने भी अपना सारा जीवन चित्रकारी मे बिताया। अचानक उसकी मृत्यु हो जाती है। परिवार मे कोई न होने से उसकी लाश सड जाती है और मृत्यु के तीसरे दिन पडोसी उसकी अन्तिम क्रिया करते है। यह हाल सुनकर प्रोफेसर साहब के मन मे अत्यन्त दुख होता है। उनमे परिवार की भावना जागृत होती है। तर्कतीर्थ और चेतना दोनो प्रोफेसर साहब को शादी के लिए प्रेरित करते है। वे सब प्रोफेसर साहब के अकेलेपन और सूनेपन को दूर करने का प्रयास करते है।

एक बार प्रोफेसर जयत एक अनुसधान-कार्य के लिए पेरिस जाते है। वहाँ बीमार हो जाने से वे काफी अस्वस्थ हो जाते है। उन्हे मन मे एक अजीब सूनेपन का अनुभव होता है। वहाँ से लौटने पर चेतना अपने गुरु की काफी सेवा करती हे जिससे उन्हे शीघ्र ही स्वास्थ्य-लाभ हो जाता है। पुन तर्कतीर्थ और चेतना के कहने पर वे शादी करने के लिए तैयार हो जाते है।

प्रोफेसर जयत चेतना को अपना जीवन-साथी बनाना चाहते है लेकिन वे चेतना से प्रत्यक्ष रूप मे कहने से अपने को असमर्थ पाते है। वे चेतना के लिए एक प्रेमपत्र लिखते हैं। चेतना प्रेमपत्र पढकर व्याकुल हो जाती है क्योकि सदैव उसने उनको पिता और बडे बन्धु की दृष्टि से देखा है और उनकी विद्वत्ता का भक्ति-भावना से आदर किया है। वह बहुत दुखी होती है और घर छोडकर बाहर जाने लगती है। अनादि उसे पुन घर मे वापस ले आता है। दोनो मे प्रेम-वार्तालाप होता है जिसे प्रोफेसर जयत ओट मे खडे होकर स्तब्ध भाव से सुनते रहते है। फिर वे चेतना और अनादि के पास आकर प्रेमपत्र के टुकडे-टुकडे कर देते है। और अपने पुस्तकालय की समस्त पुस्तको को शिष्या चेतना को प्रदान करते है किन्तु किताबो के रैक से लिपटकर रोते हुए कहते है "नही मैं इन्हे नही छोड सकूगा। इनसे हटकर मैंने ससार से केवल एक वस्तु मागी थी। वह भी नही मिली। पुस्तके मेरा जीवन है, मेरी दिनचर्या, मेरे माता-पिता, बन्धु-सखा यही मेरी चेतना है।"

बन्धु भरत (सन् १९३८, पृ० ७५), ले० : तुलसीदास राम शर्मा 'दिनेश', प्र० : मीरा मदिर, बम्बई, *पात्र* : पु० २३, स्त्री १४; अकों के स्थान पर घटना के अनुरूप शीर्षक दिया गया है।
घटना-स्थल : महारानी कैकेयी के राज-प्रासाद का प्रथम आगन।

इसमे भरत-शत्रुघ्न के अपने ननिहाल से आने, दशरथ के मरने रामवनगमन की कथा से लेकर भरत द्वारा पादुका-प्राप्ति तक का वर्णन किया गया है।

कैकेयी के व्यवहार से भरत का हृदय विदीर्ण हो जाता है। वे दुखी होकर कौशल्या से कहते है—

"माँ, मैं दुनिया की नजरो मे राम का बधु नही, कैकेयी का पुत्र हूँ। उस राक्षसी के गर्भ मे नव मास रहा हूँ। उस का वर्षो दूध पिया है। भला ये बाते दुनिया कैसे भूलेगी? आज लोगो के सामने मेरा रोना भी "खसम मार सती होय" की कहावत चरितार्थ करेगा।" इस प्रकार से बन्धु भरत का सच्चा भ्रातृत्व निरुपित किया गया है।

बगावत नाटक (सन् १९५९, पृ० ७२), ले० किरन लखनवी, प्र० . श्रीकृष्ण पुस्तकालय, चौक, कानपुर, *पात्र* पु० १०, स्त्री ३, *दृश्य* ८, ६, २।
घटना-स्थल महल।

नृत्य-गायन और मद्यसेवन मे मस्त शाहशाह कासिम अपनी प्रजा को सुख के बदले दुख देता है और अपने आपको धन्य मानता है।

सफदर खा उसे शराब छोड़कर शाहशाह के कर्त्तव्य निभाने की सलाह देता है, किन्तु शाहंशाह उसे शेरसिंह का प्रतिनिधि समझ गिरफ्तार करने और वध करने की आज्ञा देता है। सफदर खां वीरता से युद्ध कर बच निकलता है। मलिका भी उसे वैश्याओं के जाल से निकालने और प्रजा-हित मे न्याय का उपदेश देती है। फलत: कासिम उसके

चरित्र पर लाछन लगाता है।

शाहजादा असलम जोहरा नाम की एक भिखारिन के पीडा भरे कण्ठ पर मुग्ध हो जाता है और उसे अपनी प्राणेश्वरी बनाने की इच्छा मलिका से व्यक्त कर शाहशाह से स्वीकृति चाहता है। वह उसके लिए दीवाना हो जाता है और अन्त मे मृत जोहरा को प्राप्त करता है।

बागी-दल असलम की दयालुता और न्याय-प्रियता से प्रसन्न रहते है। शाहशाह काशगर जाकर डाकुओ का दमन करना चाहता है। उसे दिलावर बन्दी बनाकर उसके अत्याचारो का बदला लेना चाहता है। शाहंशाह कैद मे सिर पटक कर मर जाता है।

सफदर खाँ और उसके बागी साथी शाही फौज को हराकर राज्य पर अधिकार कर लेते है। मलिका को वह ताज सौपते है। मलिका उस ताज मे शाहशाह के अन्यायो के रक्त के छीटे अनुभव कर सफदर को प्रजा की भलाई के लिए ताज सौप देती है।

बज्मे फानी नाटक (सन् १८९८, पृ० ७२), ले० · मेहदी हसन 'अहसन', प्र० : पारसी थियेट्रिकल कम्पनी; पात्र: पु० १०, स्त्री ३; *घटना-स्थल :* घर, युद्धक्षेत्र।

इस नाटक मे फिरोजाबाद के फिरोज गफरुद्दौला और जहूरुद्दौला नामक दो प्रसिद्ध परिवारो की कथा को शेक्सपियर के 'रोमियो जूलियट' के आधार पर लिखा गया है।

इस मे प्रेम और युद्ध का चित्रण है। गुलनार के कारण फिरोज और मुशरिफ मे युद्ध होता है। मुशरिफ मारा जाता है और नायक-नायिका का विवाह हो जाता है। अतः 'रोमियो जूलियट' की ट्रेजेडी यहाँ सुखात हो जाती है। इसके सभी पात्र एक वर्ग के है।

बज्मेफर्रुख नाटक मारूफबे फर्रुख सभा हाफिज नाटक (सन् १८८३, पृ० ७८), ले० . हाफिज मोहम्मद अब्दुल्ला, प्र० : पारसी थियेटर कम्पनी।
घटना-स्थल : फर्रुख सभा।

यह ओपेरा पारसियों की 'फर्रुखसभा' के आधार पर लिखा गया है। इस रचना मे लेखक ने नाम-मात्र को ही कथा का सहारा लिया है। समस्त कृति नाट्यकार की अपनी कल्पना द्वारा अत्यन्त नवीन रूप मे प्रस्तुत है। नाट्यकार ने परिचय मे स्वयं कहा है कि—"अगरचे इस नाटक का किस्सा करीब-करीब पारसियो के 'फर्रुखसभा' का है लेकिन दोनो मे इस कदर फर्क शायरी व बयान मे है कि अगर उसको जमीन तसव्वर करे तो यह आसमान है।" कही से ईट कही से रोडा एकत्रित कर हाफिज ने अपना उद्देश्य पूरा किया। रचना का उद्देश्य मनोरजन ही है।

इस नाटक का प्रथम अभिनय १५-१६ जून सन् १८८३ ई० को धौलपुर मे किया गया।

बज्मे फीरोज सुल्तान मारूफबे जश्ने परिस्तान, (सन् १८८३, पृ० ८५), ले० · हाफिज मोहम्मद अब्दुल्ला, *पात्र* . पु० ६, स्त्री ५, *अक* २; *दृश्य :* ६।
घटना-स्थल . सरन्दीप नगर, जंगल, फिरोजशाह का दरबार, कारागार।

इस ओपेरा मे परी का किसी मानव पर आसक्त होने के रोमासपरक कथानक द्वारा मसनवियों का स्पष्ट प्रभाव दिखाया गया है।

सरन्दीप नगर की परम सुन्दरी राजकुमारी गुलफाम स्वप्न मे भारत के राजकुमार शमशाद पर मुग्ध हो जाती है। जागरण मे वह वियोगदग्धा अपने प्रियतम के लिए अत्यन्त विकल होती है। वह अपनी प्रिय सखी गुल अन्दाम से अपनी कठिनाई सुनाकर उससे सहायता की प्रार्थना करती है। गुल अन्दाम उसे स्वप्नदर्शन के झूठे प्रणय से विरत होने की शिक्षा देती है, परन्तु प्रेम की दीवानी गुलफाम उसके हितोपदेश पर ध्यान न देकर अपनी पीड़ा मे सहायता का वचन लेती है। वह उसके साथ सिद्धनामी नगर के फकीर करामातशाह के पास पहुँचकर प्रार्थना करती है। फकीर अपने चमत्कार से गुलफाम को शमशाद से मिला देता है। एक दिन शमशाद मृगया मे हिरन का पीछा करते घने जंगल मे पहुँच जाता है।

वहाँ सनोवर परी उसके ऐश्वर्यपूर्ण सौन्दर्य से आहत हो शमशाद को अपने साथ भोग-विलास तथा आनन्द लेने का निमन्त्रण देती है। राजकुमार उसके जाल मे फँसकर 'गुलफाम' के पास पहुँचा देने के वचन प्राप्त कर लेने पर सनोवर परी की कामपिपासा शान्त करने के हेतु विवश हो जाता है। सनोवर परी के एक मानव के साथ अभिसार को दैवी-विधान-खण्डन का अपराध समझ एक देव फिरोज को इसकी सूचना देता है और फीरोज शमशाद तथा सनोवर परी को बन्दी बनाकर कारागार मे डाल देता है।

द्वितीय अक मे 'गुलफाम' अपने प्रियतम को प्राप्त करने के लिए योगिनी बन गृह से निकल पडती है। वह अनेक आपत्तियाँ झेल कर परिस्तान पहुँचती है। परिस्तान का देव उस वियोगिनी योगिनी के सगीत की प्रशसा फीरोजशाह से करता है। फीरोज उसके सगीत-माधुर्य का आनन्द लेने के लिए दरबार मे आने की अनुमति देता है। योगिनी के मधुर कंठ और करुण-ध्वनि से प्रभावित होकर उसे वरदान मांगने का आग्रह करता है। गुलफाम उपयुक्त अवसर जानकर शमशाद की मुक्ति का वरदान मागती है। विवश फीरोज उन दोनो को कारागार से मुक्त कर देता है। दोनो बिछुड़े हृदय मिल जाते है।

बड़ा पापी कौन ? (सन् १९४८, पृ० ५३), ले० सेठ गोविन्ददास, प्र० · राजकमल दिल्ली, *पात्र* ७; *अंक* · ३, *दृश्य-रहित*। *घटना-स्थल* . त्रिलोकीनाथ का मकान, केन्द्रीय असेम्बली।

रमाकान्त और त्रिलोकीनाथ दोनो खानदानी रईस एक दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी हैं। त्रिलोकीनाथ को अपने वश की प्रतिष्ठा बनाये रखने की चिन्ता है, तो रमाकान्त को सार्वजनिक कीर्ति प्राप्त कर अपना व्यापार चमकाने की चिन्ता है। दोनो ही चैम्बर के प्रैसीडेन्सी के लिए उम्मीदवार है। त्रिलोकीनाथ का अधिक बोलबाला है, क्योकि वह पुराना रईस है। त्रिलोकीनाथ वैश्या-संसर्ग मे लिप्त है, इधर रमाकान्त गृहस्थो की बहू-बेटियो और विधवाओ को अपनी वासना का शिकार बना रहा है। त्रिलोकीनाथ उस तरह के पाप करता है जो समाज मे निन्दनीय माने जाते है। ये सभी पाप उल्टा त्रिलोकीनाथ को ही हानि पहुँचाते है। नया रईस छिपे तौर से पाप करता है जिससे समाज मे अनैतिकता फैलती है। त्रिलोकीनाथ का वैभव समाज को उसमे नीचे ले जाता है। रमाकान्त का वैभव समाज को परम्परा से परे घोर पतन की ओर ले जाता है।

अन्त मे त्रिलोकीनाथ की मृत्यु हो जाती है और रमाकान्त सार्वजनिक कीर्ति प्राप्त करने मे सफल होता है। इन दोनो पापियो मे यह पता नही लगता कि सबसे बडा पापी कौन है ?

बड़े खिलाड़ी (सन् १९६७, पृ० १४४), ले० : उपेन्द्रनाथ अश्क, प्र० नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, *पात्र* · पु० ५, स्त्री ५, *अक* : ३; *दृश्य-रहित*। *घटना-स्थल* मध्यवर्गीय परिवार के घर का दृश्य, (कमरा, बरामदा, रसोई, आँगन)।

इस सामाजिक नाटक मे विवाह की समस्या के संदर्भ मे निम्न मध्यवर्ग के ओछेपन, सकीर्णता और अशिष्टता को व्यंग्यात्मक ढग से स्पष्ट किया गया है।

मध्यवर्गीय परिवार की गृहिणी रत्नप्रभा अपनी पुत्री सुजला की शादी के लिए एक सकीर्ण हृदय वाले युवक केवलराम को पसन्द करती है। घर के सभी सदस्य इसका विरोध करते है। सुजला का भी मजाक उडाया जाता है, परन्तु वह इस संबध का विरोध नही कर पाती। केवल राम और उसकी बहन चतुराई से कार्य लेते हैं, जिससे यह विवाह नही हो पाता।

बड़े दिन की लहर (सन् १९३८, पृ० ६४), ले० मास्टर जान कन्हैया दानी; प्र० · नार्थ इडिया क्रिश्चियन ट्रैक्ट ऐंड बुक सोसायटी, *पात्र* पु० १६, स्त्री २; *अक* के स्थान पर भाग दो हैं; *दृश्य* : १२। *घटना-स्थल* . बैतलहम का अरण्य प्रदेश।

नाटक का प्रारम्भ नेपथ्य गायन से होता है जिसमे बैतलहम के समीप धर्मरूपी सूर्य

उदय होने की सूचना दी जाती है। ओलिम्पस पहाड के निवासी गेसपेशर और भारतवासी विश्वमित्र का वार्तालाप होता है। प्रथम भाग मे ईसामसीह के आगमन की भूमिका है और दूसरा भाग स्वर्गदूत के आगमन से प्रारम्भ होता है। स्वर्गदूत यूसुफ से कहता है कि माता मरियम और नवजात शिशु को लेकर मिस्र देश को जाओ क्योकि हेरोद राजा बच्चे के प्राण का भूखा है। मरियम बच्चे को गधे पर लादकर मिस्र देश पहुँच जाती है। इस बच्चे के जन्म से पूर्व ज्योतिषियो ने एक अद्भुत तारा पृथ्वी पर आते देखा था। सफीरा ज्योतिषियो को सूचना देती है कि वही स्वर्गीय तारा यूसुफ के घर मे बालक रूप मे उत्पन्न हुआ है। यही बालक बडा होकर ईसामसीह बनता है।

नाट्यकार का कथन है कि इस पुस्तक मे कोई ऐसी बात नही रखी गई है जिससे मसीहा-भक्ति तथा आराधना मे बाधा पडे।

बनवीर नाटक (सन् १८८२, पृ० ११२), ले० गोपालदास गहमर निवासी, *पात्र* . पु० ३, स्त्री० । अक-*दृश्य-रहित* ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे मेवाड के राणा विक्रमादित्य, उदयसिह और जाति भाई बनवीर की इतिहास-प्रसिद्ध घटनाएँ दी गई है। इसमे बनवीर के बलिदान की महत्ता दिखाई गई है। वह कहता है "फिर एक दूसरा राजा होगा, यह सिहासन उसका होगा। मैं राजा कहकर उसका आदर-मान करूँगा! भला यह मुझसे कैसे हो सकेगा! इससे तो यही खडे-खडे वे बादल वज्र गिराये, उनकी चोट की भी कुछ बिसात नही। तुममे कितना लोभ है राजसिहासन! कौन महाशक्ति तुममे है। ओफ्! कितना गौरव कितना सन्मान कितना प्रभाव तुम मे है। तुम मे कितनी उच्चता है। किस माया बल पर तुमने मुझको नीचा कर दिया। किस आकर्षण से तुमने मेरा मन, प्राण, ध्यान, ज्ञान, चिन्ता सब खीच लिया।"

बलिदान अर्थात् पुनीत प्रेम (सन् १९३६, पृ० ६८), ले० : वैकट राव आनन्द, मेरठ कालिज मेरठ; *पात्र* : पु० १२, स्त्री ३, *अक* . ३; *दृश्य* · ५, ५, ५।
घटना-स्थल . भद्रकाली का मन्दिर।

इस दुखान्त सामाजिक नाटक मे उस समय का चित्र खीचा गया है जब धर्म के नाम पर शासन द्वारा घोर अत्याचार किया जाता था। नाटक की नायिका कपाल कुडला अपने प्रेम-बाधक पिता अघोरघट की हत्या कर देती है। कपाल कुडला का प्रेमी आनन्द ही उसके पिता का शत्रु बन जाता है। किन्तु कपाल कुडला द्वारा अपने पिता की हत्या कर दिए जाने पर आनन्द उसे बहुत फटकारता है। फिर भी दोनो का परस्पर प्रेम बना रहता है। अत मे कपाल कुडला मर जाती है और दुखी आनन्द (कुडला का प्रेमी) अपने सीने मे त्रिशूल मार कर आतमहत्या कर लेता है।

वल्लभ कुल दम्भ दर्पण नाटक (सन् १९०७, द्वि० स० पृ० ३६), ले० स्वामी ब्लाकटानन्द प्र० : यूनियन प्रेस, इलाहाबाद, *पात्र* · पु० ११, स्त्री ८, *अक* ४, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल वल्लभ-सम्प्रदाय का आश्रम।

वल्लभ-सम्प्रदाय के एक शिष्य द्वारा विरचित इस नाटक मे सम्प्रदाय के अन्तर्गत फैले दुराचरण और दभ का भडाफोड किया गया है। चेलो को सावधान करने के लिए यह नाटक लिखा गया है। इसमे बल्लभ-सम्प्रदाय के गोस्वामी बालकृष्ण लाल का भ्रष्टाचार दिखाया गया है। वह स्त्री वेश बनाकर गनगौर के उत्सव मे सम्मिलित होते है। वहाँ अनेक वेश्याये एकत्र है। यमुना नामक दासी मध्यस्थ का काम करती है।

सम्पूर्ण नाटक शेर, ख्याल, गाना, सवैया से परिपूर्ण है। इसको दो भागो मे बाँटा गया है पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध।

वल्लभाचार्य (सन् १९६७ पृ० ८६), ले० सेठ गोविन्ददास, । प्र० वल्लभ सम्प्रदाय वृन्दावन, *पात्र* पु० ६, स्त्री १, अक ३।
घटना-स्थल . पाठशाला, राजसभा।

इस नाटक मे महान् पुरुष वल्लभाचार्य की विद्वत्ता, जीवन सम्बन्धी घटनाओ का

परिचय मिलता है।

आरम्भ से ही वल्लभाचार्य जी अपनी अलौकिक प्रतिभा के कारण ग्यारह वर्ष की अवस्था मे ही वेद विद्या मे पारगत हो जाते है तथा चौदह वर्ष की अवस्था मे कृष्ण-देवराय की सभा के शास्त्रार्थ मे विजयी होने से इनको अपार ख्याति मिल जाती है।

बसन्त (सन् १९६१, पृ० ६०), ले० · सीताराम चतुर्वेदी, प्र० वेनिया वाग, वाराणसी, *पात्र* . पु० ८, स्त्री ३, *अक :* ३, *दृश्य* ३, ३, ३।
घटना-स्थल राजकुमार का मकान, हरगोविन्द का घर, सडक।

इस सामाजिक नाटक मे समाज की वेकारी-समस्या का चित्र प्रस्तुत किया गया है।

राजकुमार तथा निर्मल कुमार दो सगे भाईयो मे वडा भाई राजकुमार रोजगार करता है। छोटा भाई निर्मल कुमार वी० ए० पास कर वेकार वैठा है। एक दिन निर्मल को उसका वडा भाई राजकुमार कुछ वुरा-भला कहता है। निर्मल घर से तग आकर अपना भाग्य आजमाने निकल पडता है। उसने किसी आफिस मे क्लर्कशिप के लिए एक अर्जी दे रखी थी उसका जवाव आता है। उसका नौकर मज्जू किसी तरह पत्र निर्मल के पास पहुँचा देता है। निर्मल वडा प्रसन्न होता है पर वहाँ पहुँचने पर धोखे और घूसखोरी के हथकण्डे नजर आते है। जीवन मे कोई भी आशा न देखकर विष-पान करने का निश्चय कर लेता है। विष की शीशी खोलता ही है कि उसका मित्र हरगोविन्द पहुँचकर उसकी उस मानसिक स्थिति को वदलता है और अपने व्यवसाय का परिचय देता है। क्षण-भर उसे भी इस दिशा मे कुछ सोचने का अवसर मिलता है परन्तु कोई स्पष्ट नीति नजर नही आती। कुछ दिनो वाद उसके वच्चो सहित उसके भाई राजकुमार भी वहुत चिंतित होकर उसे खोजते है। कोई पता नही चलता। एक दिन वसन्त (राजकुमार का लडका) किसी तरह पता पाता है कि मनोहर हरगोविन्द के घर है, उसका चाचा निर्मल भी वही है। उसे खोजने के लिए घर से जा रहा था कि वीच मे एक साइकिल वाला उसे साइकिल के पहिये से दवाकर वेहोश कर देता है। हरगोविन्द उसे उठाकर घर ले आता है। पीछे से राजकुमार, लीला आदि सभी वहा आते है। अव निर्मल कुमार ने भी खिलौने वनाने का कार्य शुरू कर दिया है। सवका सप्रेम मिलन होता है। पुन एक नूतन शाति का प्रादुर्भाव होता है। इस प्रकार वेकारी के शिकार निर्मल को अन्त मे कर्त्तव्य मे लगाकर लेखक ने वेकारी का सुझाव पेश किया है।

नाटक काशी मे अभिनीत।

बसान (सन् १९५८, पृ० ६४), ले० : गोविन्द झा, प्र० दरभगा प्रेस कम्पनी, (प्राइवेट) लिमिटेड, दरभगा, *पात्र :* पु० ११, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* २८।
घटना-स्थल छात्रावास की कोठरी, दरवाजा, वकील साहव का घर, जोतखी जी का दालान, वट वृक्ष की छाया, नगर का विशाल पार्क, दिगम्बर की कोठरी, सेवाश्रम का कार्यालय, गाँव से वाहर शिव मदिर, पुष्पा की कोठरी एव विवाह मडप।

इस सामाजिक नाटक मे आधुनिक युग के आदर्श को चित्रित किया गया है।

आधुनिकतावादी पुत्र कृष्णकान्त नवीन सभ्यता से प्रभावित होकर पिता द्वारा निर्धारित विवाह को अस्वीकार कर देता है। इसका कारण है कि भावी पत्नी पुष्पा उसके समान सुशिक्षिता नही है। इसी के आधार पर वह मिथिला की सभी लडकियो को अपमानित करता है तथा आधुनिकता से प्रभावित लिली के सौदर्य पर मुग्ध हो जाता है। ऐसी स्थिति मे पुष्पा के हृदय मे स्वाभिमान की भावना जगती है और वह आत्म-हत्या के वहाने घर से वाहर निकल जाती है। कृष्णकान्त के इस दुर्व्यवहार से क्षुब्ध होकर उसके पिता घर से वाहर चले जाते है। जव कृष्णकान्त को इसकी खवर मिल तव वह भी चिन्तित होकर लिली के रूपी प्रेम जाल को तोड़कर वाहर आ

है। कृष्णकान्त इधर-उधर भटक कर अपने पिता को खोजता है किन्तु उसे मफलता नही मिलती है। वह विक्षिप्तावस्था मे आत्म-हत्या का निश्चय कर रेल से कटने के लिए एक सेवाश्रम के नजदीक पहुँचता है। वही उसकी पिता से भेट होती है। उस सेवाश्रम की सचालिका पुष्पा के सुन्दर स्वरूप को देखकर वह लज्जित हो जाता है। इसी बीच कृष्णकान्त के वियोग से दुखी लिली भी वहाँ पहुँच जाती है। लिली के प्रेम को देखकर पुष्पा उसकी शादी कृष्णकान्त के साथ करा देती है।

बहादुरशाह (सन् १९६४, पृ० ८०), ले० . चतुर्भुज, प्र० . साधना मन्दिर, पटना-४; *पात्र* पु० १०, स्त्री १; *अक* . ३, *दृश्य* . ५।
घटना-स्थल शिविर, महल, मकबरा।

सन् १८५७ ई० की क्रान्ति पर आधारित यह ऐतिहासिक नाटक है। अग्रेज सेनापति निकोलसन की वीरता, लाल-किले के भीतर षड्यन्त्र, क्रान्तिकारियो मे मतभेद, गोरो का साहस, बहादुरशाह का देश प्रेम, इलाहीवख्श की गद्दारी, दिल्ली का घोर सग्राम और अत मे बहादुरशाह का बन्दी होना—आदि घटनाएँ वर्णित है जिनसे हमारा इतिहास भरा है।

बहादुरशाह (सन् १९६२, पृ० ९२), *ले०* : परिपूर्णानन्द वर्मा, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, *पात्र* . पु० १३, स्त्री ४; *अंक* : ३; *दृश्य* · ८, ८, ६।
घटना-स्थल : बिठुर, बरसाती गगा, बिठूर मे गंगा का तट।

इस ऐतिहासिक नाटक मे सन् सत्तावन के स्वाधीनता-सग्राम की कुछ घटनाओ का उल्लेख है। अँग्रेजी शासको की क्रूरता अत्याचार, भारतवासियो के खून मे नया जोश पैदा कर देता है और बहुत से भारतीय देश-रक्षा के लिए कुर्बान हो जाते है।

अग्रेजो के अत्याचार से बहादुरशाह की हिम्मत टूट जाती है। उसकी पत्नी जीनत-महल उसे आत्मबल देती है। बहादुरशाह इस पर कहता है 'याद रखो दुनिया वालो! तुम अपनी इस जिन्दगी मे जो करम कर रहे हो उसका फल तुम्हारी औलाद को भोगना पड़ेगा।'

अग्रेजो के निर्दयी सिपाही बहादुरशाह के तीन पुत्रो को कत्ल कर देते है।

बाँस की फाँस (सन् १९४७, पृ० ६५), ले० वृन्दावन लाल वर्मा, *पात्र* पु० ४, स्त्री ४; *अक* · २, *दृश्य* ४, ३।
घटना-स्थल रेलवे प्लेटफार्म, अस्पताल।

इस सामाजिक नाटक मे मानव के प्रेम तथा दया भाव निहित है।

इसमे दो कथाएँ एक साथ मिली हुई है। एक कथा के मुख्य पात्र गोपाल और फूल चन्द है। दो नारी पात्र है। मदाकिनी एक पढी-लिखी युवती है तथा पुनीता एक भिखारिन है। गोपाल और फूलचन्द की मदाकिनी और पुनीता से प्लेटफार्म पर अचानक मुलाकात होती है। दोनो ही दोनो से आकृष्ट होते है। दोनो ही परिचय प्राप्त करने के लिए मदाकिनी के प्रति अवसर की ताक मे रहते है। मदाकिनी कही बाहर जाती है। गाडी आते ही फूलचन्द मदाकिनी का सामान उठाकर गाडी पर रखता है, किन्तु दुर्भाग्यवश गाडी आगे जाकर दुर्घटनाग्रस्त हो जाती है। मदाकिनी और पुनीता दोनों ही घायल अवस्था मे अस्पताल लाई जाती है। फूलचन्द, मदाकिनी की जान की रक्षा के लिए अपना खून देता है। गोपाल भी इस गाढे समय पर पुनीता को न केवल खून ही देता है अपितु अपना मास भी देता है। फूलचन्द अपने सद्‌कार्यो और त्याग को बताते हुए मदाकिनी के समक्ष अपने विवाह का प्रस्ताव रखता है। इस प्रस्ताव पर मदाकिनी अपने पिता तथा परिवार की सहमति के लिए कहती है किन्तु फूलचन्द इसके लिए तैयार नही होता है। तब मदाकिनी इसके प्रस्ताव को ठुकरा कर चल देती है। दूसरी ओर पुनीता गोपाल की सद्‌भावना तथा उसके आश्वासन पर ही उससे विवाह के लिये तैयार हो जाती है।

वाण-शय्या (वि० १९८९, पृ० १३८), ले०· लक्ष्मण प्रसाद 'मित्र', प्र० लक्ष्मण प्रसाद 'मित्र', अमीरगंज, महमूदाबाद, अवध, *पात्र* पु० २१, स्त्री २, *अक*· ३, *दृश्य*· ८, ६, ८ ।
घटना-स्थल कुरुक्षेत्र, वाण-शय्या ।

इस पौराणिक नाटक मे भीष्म पितामह की वीरता का वर्णन है। उनका जीवन सत्य, धर्म, वीरता और दृढता से पूर्ण है। पाण्डव महाभारत के युद्ध मे भीष्म द्वारा किए जा रहे नरसहार को देखकर अत्यन्त चिन्तित हो जाते है। वे भीष्म-पितामह से युद्ध न करने का आग्रह करते है परन्तु भीष्म इसे इन्कार करते हुए पाण्डवो को अपना मृत्यु-भेद वता देते है जिससे अर्जुन उन्हे युद्ध मे वाणो की शय्या पर धराशायी कर देते है। वाणो की शय्या पर भी भीष्म अपनी असीम वीरता का परिचय देते है। वे उत्तरायण आने तक इच्छानुसार उसी वाण-शय्या पर जीवित रहते है।

वादलो का शाप (सन् १९५४), ले० सिद्धनाथ कुमार, प्र० पुस्तक मदिर, वक्सर, *पात्र* पु० २, स्त्री २, *अक-दृश्य-रहित* ।

इस गीतिनाट्य मे आज के रसहीन शुष्क जीवन से पीडित, अभिशप्त मानव जीवन की झाकी दिखाई गई है। वह सुख-सुविधाओ के अभाव मे पल-पल घुट रहा है। इन अभावो का कारण है—भाग्य का लेख, प्रकृति का शाप अथवा कर्मो का फल। इस प्रतीकात्मक गीतिनाट्य मे अभाव-ग्रस्त नैराश्यपूर्ण कुठित जीवन का विवेचन वादलो के माध्यम से किया गया है। वादल हमारी सुख-समृद्धि का प्रतीक है। परस्पर विश्वास के अभाव मे मानव-कृत्य ही इसके दोपी है। अन्त मे कवि ने विश्वास को माध्यम वनाकर अभिशप्त जीवन के शाप के निवारण की ओर सकेत किया है।

वादशाह वाजिदअलीशाह (सन् १९६२, पृ० ६१), ले०· परिपूर्णानन्द वर्मा, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, *पात्र :* पु० २०, स्त्री ३; *अक* ३, *दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल· छतर मजिल का आलीशान वडा कमरा, फरद वख्श की कोठी, वादशाह की जर्द महल कोठी।

इस ऐतिहासिक नाटक मे वादशाह वाजिदअलीशाह की राज-काज-सम्वन्धी व्यवस्था पर प्रकाश डाला गया है। इसमे राज्य के शासन से लेकर शाह की मृत्यु तक का वर्णन है। शाह ने उपदेशात्मक रूप मे यह शेर कहा है कि—

'दरो दीवार पर हसरत से नजर करते है।
खुश रहो अहले वतन, हम तो सफर करते है।।

वाप-वेटी (सन् १९६१, पृ० ६४), ले० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भडार, दिल्ली, *पात्र* पु० ४, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य-रहित* ।
घटना- स्थल· वावूजी का मकान ।

सामाजिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया यह एक ऐसा नाटक है जिसमे वाप जिन हाथो से एक वेटी की परिवरिश करता है, वेटी वाप के उन्ही हाथो मे हथकडियाँ डलवा देती है। उसके इस क्रूर व्यवहार से क्रुद्ध होकर उसका प्रेमी केशव कहता है—"अगर तुम अपने वाप की नही हो सकी, तो मेरी क्या वन सकोगी ?"

वापू-दर्शन (सन् १९२५, पृ० ६०), ले० दास, प्र०. उपन्यास-वहार आफिस, काशी, *पात्र* पु० ५, *अक-रहित*, *दृश्य* ११।
घटना-स्थल भारत, अफ्रीका, सभा, जलूस।

इस नाटक मे गाधी जी के जीवन का वह भाग दिखाया गया है जिसमे वे भारत की स्वतन्त्रता के लिए अग्रेजो से वार्तालाप करते है तथा अफ्रीका मे हिन्दुस्तानियो की सेवा करते हुए उनकी आजादी के लिए असहयोग आन्दोलन चलाते है। देश की सम्पूर्ण जनता वापूदर्शन से ही अपने जीवन को सफल समझती है।

बापू ने कहा था (सन् १६५८, पृ० १४८), ले० : शम्भूदयाल सक्सेना, प्र० : नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर; पात्र : पु० २४, स्त्री ६; अक : ३; दृश्य : ११, १०, १२ ।
घटना-स्थल : स्टेशन शाहदरा, बिडला भवन, बापू का कमरा, सेट्रल जेल ।

इस राजनैतिक नाटक मे बापू के विचारो को अभिव्यक्त किया गया है ।

नाटक की कथावस्तु १० सितम्बर १६४७ ई० से आरम्भ होकर गाधी जी की हत्या पर समाप्त होती है । इसमे भारत-विभाजन के समय का मूर्त्त रूप प्रस्तुत है । भारत-विभाजन के बाद लूटमार, पैशाचिक हत्याकाण्ड, गुण्डा-गर्दी आदि अत्याचारो को प्रोत्साहन मिलता है । पाकिस्तान मे लाखो हिन्दुओ को प्रति-दिन कत्ल किये जाने और शरणार्थियो की दुर्दशा देखकर गाधी जी के हृदय पर आघात पहुँचता है । अहिसा के पुजारी गाधी जी मानवता के पाठ पर जोर देते है । देश की विभिन्न पार्टियो की विचारधाराओ को भी प्रस्तुत किया गया है ।

अन्तिम दृश्य मे गाधी जी के जीवन की अन्तिम झाकी प्रस्तुत है । नत्थूराम गोडसे अपने पिस्तौल का घोडा दबाता है और बापू 'हे राम' कहकर पृथ्वी पर गिर पडते है ।

बाबा का ब्याह (वि० १६७०, पृ० ६४), ले० जीवानन्द शर्मा, प्र० हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद ।
घटना-स्थल सजा कमरा, साधु कुटीर ।

इस प्रहसन मे सामाजिक समस्याओ पर व्यग्य किया गया है । पुस्तक की भूमिका से ज्ञात होता है कि प्रहसन रचना का उद्देश्य इसे अभिनीत करना है । इसमे अगरेजिहा बाबू जैसे पात्र का सर्जन किया गया है । अमा-वस्या बाबा जैसे पात्र वेदव्यास के उपदेशो की चर्चा करते है । संस्कृत के 'नीवि मोक्षोहि मोक्ष' जैसे श्लोक पढकर प्रहसन के अन्दर परिहास उत्पन्न किया गया है । बीच-बीच मे वेश्याओ के गान की भी योजना है । किस प्रकार पचाग्नि तापने वाला व्यक्ति नारी-सौंदर्य से मोहित होकर सामाजिक नैतिकता का अतिक्रमण करता है ?

बाबा की दाढी (सन् १६४०), ले० . कृष्ण जी बागीपुरी, प्र० . कृष्ण जी बागीपुरी, पात्र · पु० ८, स्त्री २, अक-दृश्य-रहित ।
घटना-स्थल साधु कुटीर, खुला मैदान ।

इस नाटक मे उन पाखडी साधुओ की जीवन-विडम्बना दिखाई गई है जो इस निर्धन देश मे गाजा, भाग आदि दुर्व्यसनो के द्वारा जनता की कठिन कमाई का धन फूंकते है । ये अशिक्षित साधू न तो अपना कल्याण कर पाते है और न ही देश का । नाटक का प्रमुख पात्र मूर्ति देश की दुर्दशा पर वेदना प्रकट करता हुआ कहता है "समुचित शिक्षा जिसका नाम है सो तो बहुत दूर की बात है आज तो फीसदी मे दो-चार लडके ही शिक्षा पा रहे है । इनके लिए शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए ।" मूर्ति साधुओ को कामान्ध और चाडाल बताते हुए उद्घोष करता है कि ऐसे लोगो के हाथ से पैसा बचाकर देश की निरक्षरता दूर करने से देश की उन्नति होगी । शिक्षा प्रचार के बिना देश की उन्नति सम्भव नही ।

बाबा की सारगी (सन् १६५८, पृ० ६६), ले० बाबूराम सिह 'लमगोडा', प्र० साधना प्रकाशन, वाराणसी, पात्र पु० १२, स्त्री ३, अक ३, दृश्य ४, ६, ३ ।
घटना-स्थल गाव का घर, वेश्यागृह, आश्रम ।

इस नाटक मे सारगी की महत्ता दिखाते हुए उसे जीविकोपार्जन का साधन बताया गया है ।

मातृ-पितृ-विहीन रहमत को सारगी पैतृक सम्पत्ति स्वरूप प्राप्त होती है । सारगी बजाकर ही वह अपनी जीविका चलाता है । रहमत की असह्य विपदा से द्रवित हो उसका मामा उसे अपने घर ले जाता है, परन्तु पुत्र की मृत्यु के कारण वह भी इसकी शारीरिक-मानसिक रूप से प्रताडना करता है । वहाँ से निकल कर रहमत सगीताचार्य अरुणहर्ष का आश्रय ग्रहण करता है । अरुण-हर्ष उसे सगीत मे पारगत कर गुरु-दीक्षा स्वरूप उससे आजीवन ब्रह्मचारी रहने तथा कला को जीवित रखने का वचन लेता है । गुरु की मृत्यु के उपरान्त रहमत नीरा नाम्नी वेश्या की दत्तक पुत्री वहीदन का सगीत-

शिक्षक नियुक्त होता है। रहमत के कारण उस्ताद गलीमत को आजीविका से हाथ धोना पडता है। नवाब वव्वन वहीदन के साथ रात व्यतीत करने के लिए पाँच हजार रुपए तक देना चाहता है, परन्तु नीरा उसके इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर देती है। सुलेमान वहीदन से विवाह करना चाहता है। प्रतिहिंसा से प्रेरित गलीमत वहीदन की हत्या करना चाहता है, परन्तु सुलेमान द्वारा प्रतिरोध के कारण वह उसकी हत्या नही कर पाता है। सुलेमान मरते-मरते गलीमत को मौत के घाट उतार देता है। सुलेमान द्वारा गलीमत को फेंक कर मारे गए छुरे से वहीदन के आहत हो जाने के कारण वह नृत्यादि के अयोग्य हो जाती है। रहमत वहीदन और सर्वसुन्दर गुरु का विवाह करा दक्षिणा स्वरूप उनकी पहली सन्तान को माँग लेता है। वहीदन और सर्व सुन्दर रहमत के उक्त अनुरोध को सहर्ष स्वीकार कर चले जाते हैं। आश्रम मे रहमत सत्यकल्प एव पुण्य को सारगी-वादन मे प्रवीण कर स्वर्ग जाते है। अत मे सर्व सुन्दर और वहीदन अपने पुत्र को आश्रम मे छोड जाते हैं।

बालकृष्ण व कृष्ण चरित्र नाटक (सन् १९२८, पृ० १११), ले० . दुर्गाप्रसाद गुप्ता, प्र० . उपन्यास वहार आफिस, काशी, अक ३
घटना-स्थल : गोकुल, वृन्दावन, मथुरा, स्वर्गलोक।

इस सचित्र पौराणिक नाटक मे कृष्ण की वाल लीला, रास लीला, कस की क्रूरता, देवकी वसुदेव की व्याकुलता, देवताओ और पृथ्वी माता की कस के अत्याचार से कष्टमय पुकार, भगवान् का अभयदान, कंसवध आदि प्रसगो को पारसी थियेट्रिकल नाट्य शैली पर प्रस्तुत किया गया है। नाटक का उद्देश्य कृष्ण-भक्ति की भावना को दृढ़ करना है। इसमे अनेक अलौकिक तत्वो का समावेश किया गया है। अनेक गीत जोडे गए है।

बाल खेल व ध्रुव-चरित्र (सन् १८८६, पृ० २४), ले० दामोदर शास्त्री, प्र० . खड्ग विलास प्रेस, वाँकीपुर, पटना, पात्र पु० ७, स्त्री २; अक ५, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल क्रीडा भूमि, राजमहल, तपोवन।

यह पौराणिक नाटक ध्रुव चरित्र को लेकर लिखा गया है। राजा उत्तानपाद की गोद मे वैठकर ध्रुव आनन्द का अनुभव करते है। इसी समय विमाता सुरुचि वहाँ पहुँच कर उसे गोद से उठा देती है। ध्रुव रोदन करते है। उनकी माता सुनीति रोने का कारण पूछती है। माता के उपदेश से ध्रुव घोर तपस्या करते है। नारद प्रकट होकर ध्रुव की सत्यनिष्ठा की परीक्षा लेते है और आशीर्वाद देते है कि तुम्हे भगवद् दर्शन हो। ध्रुव घोर तपस्या करते है और भगवान् प्रसन्न होकर उन्हे दर्शन देते है। भगवान् से ध्रुव प्रार्थना करते है कि 'शुद्ध पुरुषो के शुद्ध आन्तरिक विचार आनन्दपूर्ण और अचल हो।' भगवान् उनकी प्रार्थना स्वीकार करके आदेश देते है कि जाओ सुख से राज्य करो, और सासारिक सुखो से पूरे तृप्त हो जाओ। पितर और प्रजा को सन्तुष्ट करके पुन. मेरे पास आना।

वाल विधवा-संताप नाटक (सन् १८८२, पृ० ५२), ले० : काशीनाथ खत्री, प्र० खड्ग विलास प्रेस, वाँकीपुर, पात्र पु० १२, स्त्री २, *अक-दृश्य* के स्थान पर ३ प्रवेश।
घटना-स्थल खुला मैदान, लीक पीटनदास के घर की वैठक, भवन का कक्ष।

इस पुस्तक के दो खंड है। प्रथम खड मे विधवा पुनर्विवाह को शास्त्र-सम्मत सिद्ध करने के लिए पराशर-सहिता, मनुसहिता, वृहन्नारदीय, याज्ञवल्क्य-सहिता, आदित्य-पुराण, वशिष्ठ सहिता, महाभारत आदि से उद्धरण दिए गए हैं। काशीनाथ जी प्रस्तावना मे लिखते है—'राधाकृष्णदास जी का "दु खिनी वाला" नाटक पढकर मेरे चित मे आया कि मैं भी इस विषय मे अपनी लेखनी की परीक्षा करूँ।···मेरे कुटुम्व मे एक परम गुणवती सुशीला कन्या पर जव वह नौ वर्ष की थी, यह दैवी आपत्ति पड़ चुकी है।"

यह नाटक प्रथम हरिश्चन्द्र चन्द्रिका और मोहन चन्द्रिका में छप चुका था। पुस्तका-

कार छपाने का उद्देश्य बताते हुए खत्री जी लिखते है—'इस उपहार को द्वितीय बार समर्पण करने का यह प्रयोजन नही है कि मुझे आप से किसी प्रकार के पारितोपिक प्राप्ति की लालसा है किन्तु मेरा यह अभिप्राय है कि आप मुझ निस्पृह की दशा पर कृपापूर्वक ध्यान देकर मेरे बाल-विधवा सताप सतप्त चित्त को अपनी अनुकूलता रूपी सुधा-सिचन से ··अक्षय पुण्य ग्रहण करे। ···मै एक दीन स्वदेश हितैपी हूँ और मनसा-वाचा-कर्मणा यही चाहता हूँ कि देशोन्नति की ओर मुझ मद मति का परिश्रम तनिक भी सुकार्थ हो जाय तो मैं अपने तई अतीव कृतार्थ समझूं। जब से विदेशीय विरुद्ध मतावलबियो ने इस देश पर आक्रमण किया है और अपने अत्याचारो से हमको सर्वथा हतपौरुप और निस्सत्व कर दिया तब से यहाँ श्रुति-स्मृति-निरूपित मर्यादा का क्रमश लोप होता गया।"

इस नाटक मे लोक रीति और शास्त्राज्ञा का सघर्ष दिखाया गया है। लीक पीटनदास की कन्या अबला देई नौ वर्ष की अवस्था मे विधवा हो जाती है। कुपथीराम पुरोहित उन्हे समझाते है कि ब्रह्मा के अक किसी के मेटे नही मिटते। उनके मित्र पूरनचन्द्र, कुल-प्रकाशचन्द्र और वशीधर भी उन्हे सान्त्वना देते है। किन्तु पडित ज्ञानोदय विधवा के पुर्नविवाह को शास्त्र-सम्मत सिद्ध करके अबला देई का विवाह कराने के पक्ष मे है। कुपथीराम पुरोहित पुर्नविवाह का विरोध करता है और शास्त्र से उद्धरण देता है किन्तु शास्त्री जी उन्ही उद्धरणो का अनुकूल अर्थ निकालते है।

अबला देई को किसी भी मंगल कार्य से इसलिए दूर रखा जाता है कि कही अमगल न हो जाए। वह अपने पिता के घर मे भी भाभियो से अमगलकारिणी समझी जाती है। माँ रोती हुई बेटी को रामायण पढने का उपदेश देती है।

बाली-वध (सन् १९५१, पृ० ५६), ले० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, चावडी बाजार, दिल्ली, *पात्र :* पु० ६, स्त्री ४; *अक-रहित, दृश्य* · ६।

घटना-स्थल . कुटिया, राजप्रासाद, अशोक वाटिका।

इस पौराणिक नाटक मे बालि-वध की कथा वर्णित है।

दुष्ट रावण चोरी से सीताजी का अपहरण कर लेता है। राम-लक्ष्मण सीता को खोजते हुए भीलनी की कुटिया पर पहुँच कर प्रेम से जूठे बेर खाते है। सहसा भगवान् राम की वानरराज सुग्रीव के साथ मित्रता होती है। सुग्रीव के कष्ट निवारण हेतु राम व्यभिचारी बालि का वध करते है। वानरराज *सुग्रीव हनुमान, जामवत आदि* अनुचरो को सीता का पता लगाने के लिए भेजते है। समुद्र किनारे बैठकर विचार-विमर्श करते हुए बन्दरो को सम्पाती द्वारा यह पता चलता है कि सीताजी को दुष्ट रावण अपहृत करके लका मे ले गया है। हनुमान जी राम द्वारा दी गई मुद्रिका को लेकर लका पहुँचते है। मार्ग मे वे लकिनी को मारकर अशोक वाटिका मे प्रवेश करते है जहाँ पर वियोगिनी सीता रहती है। सीता को देखकर *हनुमान* राम द्वारा दी गई मुद्रिका सीता के समक्ष गिराते है, जिसे देख सीता आश्चर्यचकित होती है। फिर हनुमान जी प्रकट होकर अपना सारा परिचय बताते है। सीता की आज्ञा से वे अशोक वाटिका के सुन्दर फलो का भक्षण कर वाटिका को नष्ट कर देते है और अन्त मे रावण की शक्ति का अनुमान लगाने के लिए राक्षसो द्वारा स्वयं बन्दी बन जाते है।

बाल विवाह दूषक (सन् १८८५, पृ० ४२), ले० : देवदत्त मिश्र; प्र० · मैनेजर खड्ग विलास, *पात्र* पु० ५, स्त्री २, *अक* . ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल ग्राम समीप उद्यान।

इस सामाजिक नाटक मे बाल-विवाह का विरोध दिखाया गया है।

एक पुरुप का विवाह ६ वर्ष की अवस्था मे होता है। ५ वर्ष उपरान्त उसका द्विरागमन होता है। वह अपने पुत्र का विवाह बिना मुहूर्त के ही करता है। उसका गुरु उसे धिक्कारता है कि तुमने इतनी कम अवस्था मे अपने लडके का विवाह एक नीच कुल मे क्यों किया ? लडके की *अवस्था* छोटी है और

कन्या उससे बहुत बडी होती है। गुरु कहता है कि यह विवाह नही बल्कि बच्चे के लिए दाई ले जाते हो।

नाटक के अन्त मे दुराचार सिह उस स्त्री को नौका पर बिठाकर नदी पार ले जाता है। यही नाटक का अन्त होता है।

यह नाटक श्रीमन्महाराजकुमार युवराज खड्ग बहादुर मल्लजूदेव मझौली-नरेश की आज्ञा से लिखा गया था।

बिजली नाटिका (सन् १९३४, पृ० ५६), ले० ठाकुर वीरेश्वरसिंह प्र० साहित्य-मण्डल, दिल्ली; *पात्र* पु० ५, स्त्री ५, *अक* ३, *दृश्य* २, २, ३।

इस सामाजिक नाटक मे एक वीरागना बिजली की कथा वर्णित है। अपनी माँ की इकलौती लडकी है। एक दिन जब उसे मालूम होता है कि एक कैदी, जिसने उस की माँ को प्रेम का भुलावा देकर गर्भवती छोड दिया जिससे बिजली नामक सतान पैदा हुई, तब उसके अन्दर कैदी के प्रति प्रतिशोध की भावना जागृत होती है। वह मेवाड की सेना मे भर्ती होकर युद्ध मे अपनी बहादुरी दिखाती है। वह उस कैदी को पकडकर निर्भयता से अपनी माँ के समक्ष लाकर कत्ल कर देती है। बिजली युद्ध मे बुरी तरह घायल हो जाती है और अन्त मे वह वीरतापूर्ण मृत्यु का आलिगन करती है।

बिन बाती के दीप (सन् १९७१, पृ० ९४), ले० डॉ० शकर शेष, प्र० लोक सेवा प्रकाशन, जबलपुर, *पात्र* पु० ३, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* १, १, १।
घटना-स्थल शिवराज का बगला।

शिवराज नाटक का खलनायक है। उसकी अन्धी पत्नी विशाखा अपने उपन्यासो को बोल-बोलकर पति द्वारा लिपिबद्ध कराती रहती है। लेकिन शिवराज उन्हे विशाखा के नाम से नही बल्कि अपने नाम से प्रकाशित कराता है। आकाशवाणी पर उसके नाटको की प्रशसा हो रही है। विशाखा का नाम चर्चाओ मे है, यह बात टेप किए हुए रिकार्ड्स की सहायता से सिद्ध होती रहती है। मजु उसकी टाइपिस्ट है। मजु शिवराज को स्वय समर्पित नही होती बल्कि इसकी विवशता उसे समर्पित कराती है। अन्त मे आनन्द द्वारा इसका रहस्योद्घाटन हो जाता है जिससे शिवराज अपने कृत्यो पर पश्चात्ताप करता है। विशाखा के नेत्रो की ज्योति लौट आती है। आदर्श भारतीय नारी विशाखा अपने पति से कहती है कि "तुम ऐसा ऐलान मत करना कि उपन्यास मेरे नही मेरी पत्नी के लिखे है अन्यथा साहित्यकारो पर से लोगो का विश्वास उठ जाएगा।" नाटक एक मुखर आदर्श लेकर चलता है।

अभिनय काल एव स्थान—भोपाल मे सन् १९७० एव बम्बई मे फरवरी '७१।

बिना दीवारो के घर (सन् १९६५, पृ० १२८), ले० मन्नू भडारी, प्र० अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, *पात्र* पु० ६, स्त्री ५, *अक* ३, *दृश्य* २, ३, ३।
घटना-स्थल ड्राइग रूम।

इस नाटक मे लेखिका ने मध्यवर्गीय परिवार मे स्त्री-पुरुष के टूटते हुए सबधो को स्पष्ट किया है। इस की मूल समस्या 'स्त्री स्वातत्र्य और पुरुष के अह की टकराहट से 'पारिवारिक विघटन' की है।

शोभा अपने एक मित्र जयत की मदद से कॉलेज-प्रिंसिपल नियुक्त हो जाती है, जिससे ईर्ष्यालु अजीत के अह को ठेस लगती है। वह शोभा के सितार-वादन आदि पर भी प्रतिबध लगा देता है। दोनो के सम्बन्ध बिखरते जाते है। इसी तनावपूर्ण वातावरण में अजित नौकरी छोड देता है ताकि वह एक अच्छी जगह पर नौकरी पा सके—लेकिन उसे नौकरी नही मिलती। शोभा के कहने पर जयत गुप्तरूप से अजित के लिए कोशिश करता है। अत मे अजित को नौकरी मिल जाती है। एक पार्टी मे दोनो के कुछ मित्र उन पर व्यग्य करते है, जिससे अजित शोभा से बुरी तरह लड पडता है। परिणामस्वरूप शोभा अपनी पुत्री लेकर जाने को तैयार होती है लेकिन अजित के मना करने पर वह को छोडकर अकेली ही घर मे चली

है। उसका द्वन्द्व नाटक के अतिम सवाद मे स्पष्ट हो जाता है—"तो मै अकेली ही चली जाऊँगी। जहाँ मैने अपने भीतर की पत्नी को मारा है, वही अपने भीतर की माँ को भी मार दूँगी।"

मिराडा कॉलेज, (दिल्ली विश्वविद्यालय मे अभिनीत, सन् १९६६ मे)

बिलखती विधवा नाटक (सन् १९३०, पृ० १३४), ले० . केदारनाथ बजाज, प्र० : नौजवान ग्रन्थमाला दिल्ली, *पात्र* पु० ६, स्त्री २, *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल · मकान, पचायत, अदालत।

इस सामाजिक नाटक मे तत्कालीन भारतीय समाज की विधवाओ की दुर्दशा का वर्णन है।

इसमे ईश्वरचन्द्र विद्यासागर को भी पात्र रूप मे सम्मिलित किया गया है जोकि महान् शिक्षा-शास्त्री व समाज-सुधारक थे। नाटक का मूल उद्देश्य विधवाओ की दयनीय दशा सुधारना तथा उन्हे पुर्नविवाह की अनुमति देना है।

बिस्मिल की बहक (सन् १९६५, पृ० ८०), ले० · श्यामलाल 'मधुप', प्र० मनोरमा प्रकाशन गृह, नई दिल्ली, *पात्र* पु० १४, स्त्री २, *अक-रहित*, *दृश्य* १४।
घटना-स्थल सभा, इलाहाबाद, कानपुर, अदालत, जेल।

यह राजनीतिक नाटक स्वतन्त्रता-सग्राम से सम्बन्धित है। इसमे क्रातिकारी बिस्मिल का अमर बलिदान चित्रित है। बिस्मिल अग्रेजो के अत्याचारो से क्षुब्ध होकर अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए क्रातिकारी सग्राम मे कूद पडते है। उनकी शायरी से प्रभावित होकर आजाद, भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव, राजेन्द्र लाहिड़ी आदि भी क्रान्तिकारी बन जाते है। अन्त मे काकोरी षड्यन्त्र केस मे अग्रेज सरकार बिस्मिल को फॉसी की सजा देती है।

बी० ए० पास मजदूर (सन् १९६८, पृ० ७०), ले० न्यादर सिंह 'बेचैन', प्र० . देहाती पुस्तक भण्डार, चावडी बाजार, दिल्ली; *पात्र* . पु० १३, स्त्री ४; *अक* : ३, *दृश्य* : ६, ३, ७।
घटना-स्थल · मकान, कॉलेज, हस्पताल, फैक्टरी आदि।

इस सामाजिक नाटक मे बी० ए० पास बेरोजगार, ईमानदार युवक की दर्दभरी कहानी वर्णित है। शिवसहाय अपने लडके उमेश को अपनी सम्पत्ति बेचकर तथा लखीमल से कर्ज लेकर पढाता है। सेठ लखीमल को एक गुण्डा धन के लालच मे छुरा मारता है। शिवसहाय स्वय घायल होकर लखीमल की रक्षा करता है। घायल शिवसहाय की अचानक मृत्यु हो जाती है जिससे उमेश बहुत दुखी होता है। वह माता पुष्पा के कहने पर द्वितीय श्रेणी मे बी० ए० पास करता है। उमेश नौकरी के लिए बहुत प्रयास करता है, फिर भी उसे नौकरी नही मिलती। वह मजबूर होकर एक कुली की मदद से स्टेशन-कुली का काम करने लगता है। एक दिन वह गाडी से उतरी एक विद्यावती नामक स्त्री को तागे मे बिठाकर उसके घर ले जाता है। रास्ते मे विद्यावती का प्रेमी विनायक कुछ गुण्डो के साथ विद्यावती को मारने के लिए आक्रमण करता है। उमेश अपनी वीरता से गुण्डो को मार भगाता है। विद्यावती उसे अपनी फैक्टरी मे काम करने के लिए कहती है लेकिन उमेश उसे इन्कार करते हुए विनायक से प्रतिशोध लेने के लिए उसके यहाँ चपरासी का काम करने लगता है। विनायक उमेश की मदद से विद्यावती को मारने का षड्यन्त्र रचता है। उमेश विनायक के इस षड्यन्त्र की सूचना कोतवाली मे दे देता है। उमेश के बुद्धि-चातुर्य से विनायक विद्यावती के धोखे मे चचल की हत्या कर देता है। उमेश तथा धनपतराम की मदद से कोतवाल विनायक को गिरफ्तार कर लेता है। धनपतराम उमेश की ईमानदारी तथा वफादारी मे प्रसन्न होकर उसे अपनी मिल का डायरेक्टर बना देते है।

वीर कुमार छत्रसाल नाटक (सन् १९३२, पृ० १५७), ले० : भँवर लाल सोना, प्र० :

साहित्य निकेतन कार्यालय, इन्दौर, पात्र पु० १२, स्त्री ५, अक ३, दृश्य ७, ४, ५। घटना-स्थल विचित्र स्थान।

इस ऐतिहासिक नाटक मे स्वाभिमानी वीर कुमार छत्रसाल की अद्भुत वीरता दिखाई गई है।

महोवा के युवराज छत्रसाल एक असाधारण देशभक्त एव परमवीर है। उस समय भारत पर मुगलो का अधिकार होता है। जयसिंह के अनुरोध पर छत्रसाल देवगढ का किला अपने वश मे कर लेता है परन्तु छत्रसाल इस विजय पर हर्षित नही होता। जयसिंह इस विजय की खुशी मे छत्रसाल को इस आशय से दिल्ली बुलवाते है कि सम्भवत औरगजेब प्रसन्न होकर छत्रसाल का राज्य स्वतन्त्र कर दे। परन्तु औरगजेब इसे अस्वीकार कर देता है। वीर युवराज छत्रसाल अभिमान के साथ यह कहता चला जाता है कि "जिस तलवार से देवगढ फतह किया वही अब बिजली की भाँति चमककर बुन्देलखण्ड को स्वाधीन करेगी।" बुन्देलखण्ड का हर एक बुन्देला छत्रसाल की तरह वीरता और परिश्रम से लडता हुआ अपने देश को क्रूर औरगजेब के हाथों से मुक्त करा लेता है।

बीरबल (सन् १९५०, पृ० ११६), ले० . वृन्दावनलाल वर्मा, प्र० . मयूर प्रकाशन, झाँसी, पात्र पु० १२ स्त्री ४। घटना-स्थल जगल, मठ, मदिर।

इस ऐतिहासिक नाटक मे अकबर के नवरत्नो मे सर्वप्रमुख बीरबल के व्यक्तित्व की झाँकी प्रस्तुत की गई है। नाटक शिकार के लिए गए हुए अकबर, बीरबल आदि के हास्य-विनोद से प्रारम्भ होता है। पुरी जमात के साधु अकबर से सहायता का वचन लेकर गिरियो से शस्त्रो के साथ भिड जाते है। जसवन्त इस युद्ध का चित्र उतारता है। इस धर्मान्ध-युद्ध से अकबर के मस्तिष्क मे सच्चे मजहब का प्रश्न उठता है। अकबर बीरबल से इस विषय पर वाद-विवाद करता है किन्तु कोई निर्णय नही हो पाता। इधर जसवन्त अकबर के कहने से दिल्ली की शेखजादी हसीना का स्त्रीवेश मे चित्र उतारने जाता है। गोमती जसवन्त के बनावटी रूप को पहचान लेने पर भी उसके प्राण तथा कला की रक्षा करने का वचन देती है।

शहजादे के जन्म की खुशी मे अकबर फतेहपुर सीकरी मे भव्य इमारते बनवाने की घोषणा करता है। अकबर बीरबल के साथ गाँव का मेला देखने जाता है और वहाँ अपने ही दरबार का स्वाग देखकर भौचक्का रह जाता है। वह हिन्दू-जनता को प्रसन्न रखने तथा रिश्वतखोरी को समाप्त करने की प्रतिज्ञा करता है। मुल्ला दोप्याजा अकबर का बीरबल के प्रति स्नेह देख सशकित रहने लगता है किन्तु अकबर की फटकार के सामने सब कुछ भूल जाता है और महाभारत का फारसी मे अनुवाद करना स्वीकार कर लेता है। अकबर एक ओर राजपूतो के बलिदान तथा बहादुरी की प्रशसा करता है किन्तु साथ ही राजपूती बहादुरी से भी बढकर बहादुरी दिखाने के लिए, तलवार की नोक को अपने पेट मे भोकने को तत्पर होता है। बीरबल अकबर को सन्मार्ग पर लाने का प्रयत्न करता है। एक दिन कृष्ण की त्रिभगी मूर्ति अकबर के मन-मदिर मे प्रवेश करती है। वह वृन्दावन मे कृष्ण-मन्दिर बनवाने की आज्ञा देता है। अकबर अहिंसा, सूर्य-पूजा आदि को ग्रहण करके दीन इलाही-धर्म की घोषणा करता है। इसी समय शेखजादी हसीना दरबार मे आकर अकबर से इन्साफ चाहती है और अकबर उसे बहन बनाकर अपने पाप युक्त-पूर्व निश्चय का प्रायश्चित करता है। जसवन्त गौतमी के प्रेम मे पागल होकर आत्म-हत्या कर लेता है। बीरबल अकबर की कामुकता तथा मुल्ला दोप्याजा की शरारत को कम करने के लिए अगियाबेताल का जाल फैलाता है। मुल्ला दोप्याजा बीरबल को काबुल की लडाई के लिए भिजवाकर ही मानता है। बीरबल काबुल की लडाई मे वीरगति प्राप्त करता है किन्तु उसकी मृत्यु अकबर को बेचैन बना देती है। वह अपनी पश्चात्ताप पूर्ण मानसिक स्थिति मे आगरे जाने का निर्णय करता है।

वीरबन्दा बैरागी (सन् १९२९ पृ० १०९), ले० : सुवर्णसिंह वर्मा, प्र० : शिवराम

दास गुप्त उपन्यास बहार आफिस, बनारस, पात्र पु० १०, स्त्री २, अक : ३, दृश्य ७, ६, ४।
घटना-स्थल : अँधेरी गुफा, जगल, नवाब अब्दुस्समद खॉ तुर्रानी का दरबार, मार्ग।

इस ऐतिहासिक नाटक मे 'वीरबन्दा वैरागी' की जीवनपरक घटनाओ पर प्रकाश डाला गया है। वीरबन्दा बैरागी गुरु गोविन्द सिह द्वारा उत्साहित किया हुआ वीर है। इस विषय मे इसकी भूमिका मे लिखा है— "इसमे सिक्खो के सच्चे दशवे बादशाह, राष्ट्र-निर्माता अद्वितीय वीर मेरे हृदय को सान्त्वना देने वाले श्री 'गुरु' गोविन्दसिह साहब के द्वारा जागृत किए हुए वीरबन्दा बैरागी का पँवारा है।"

इसमे दया-शाति की व्यवस्था और हिन्दू-मुस्लिम एकता पर प्रकाश डाला गया है। वीरबन्दा के इस वीर चरित्र मे सिक्ख धर्म, सिक्ख जाति और हिन्दू जाति का सच्चा प्रेम भली-भाँति दिखाया गया है। गुरु गोविन्द-सिह ने वैरागी को वीरता की शिक्षा दी है। गोविन्द सिह के कहने पर कि 'हे छलिय जाहि, डूब मर चूल्लू भर पानी मे ··' बैरागी कहलाता है 'गुरु जी, मै सब कुछ हूँ, परन्तु कायर नही हूँ।'

नाटक के अत मे कनकसिह इत्यादि सवकी गरदने काट दी जाती है। बन्दा पर फूलो की वर्षा होती है।

बीसवी सदी (सन् १९५७, पृ० ६९) ले० : वाल भट्ट मालवीय, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, चावडी बाजार, दिल्ली, पात्र पु० ८, स्त्री २, अक : २, दृश्य-रहित।

इस नाटक मे भारतीयता और बढती अग्रेजीयत के वीच सघर्ष का यथार्थ चित्रण किया गया है। गौ-भक्त पारसनाथ अपनी मसूरी की कोठी का नाम गोलोक रख कर उसके वाहर गौ की मूर्ति स्थापित करते है। वे गौशाला मे गायो की वडी श्रद्धा से सेवा करते, लेकिन उनके पुत्र मायामणि तथा वहू लोपा उनकी गौभक्ति से घृणा करते है। ईर्ष्यावश लोपा एक कुतिया लिण्टी पालती है। वह कोठी का नाम गोलोक की जगह 'लिण्टी पैलेस' रखती है। मायामणि गौशाला की जगह शराब, डास करने के लिए क्लब बनाना चाहता है। पारसनाथ अपने बेटे-बहू के व्यवहार से दुखी होकर अपनी समस्त सम्पत्ति व जायदाद गौशाला के नाम कर देना चाहते है। गरीबदास अपने पिता के विचार से पूर्ण सहमत हो जाता है। मायामणि और लोपा इसका विरोध करते है। माया-मणि अपने पिता को मारकर जायदाद हडपने की योजना बनाता है। धर्म-द्रोही मायामणि हलुए मे तेजाब मिलाकर पारसनाथ को देता है, जिसे खाते ही पारसनाथ को खून की उल्टियॉ होने लगती है। हलुआ खिला देने से एक बछडे की भी मृत्यु हो जाती है। अचानक लोपा की कुतिया भी मर जाती है। वह गुस्से से गौशाला मे जाकर गाय की मूर्ति तोडने लगती है। मायामणि भी चार-पाच आदमियो के साथ मूर्ति तोडने आ जाता है। पारसनाथ के मना करने पर मायामणि उस को धक्का दे देता है, जिससे पारसनाथ का सिर फट जाता है। गरीबदास पुलिस इस्पेक्टर बनकर मायामणि को गिरफ्तार कर लेता है।

लोपा पति के जेल मे बन्द हो जाने पर एक ईसाई मिण्टल के साथ तिजोरी से सारे गहने और रुपये लेकर भाग जाती है। इसी समय कोहिनूर बैंक भी फेल हो जाता है जिसमे पारसनाथ के रुपये जमा थे। लोपा ने जहर देकर गौ मार दी। पारसनाथ अव मजदूरी करके गुजारा करता है। मनव्वर खॉ मुसलमान होते हुए भी हिन्दू आचार-विचार का है। वह पारसनाथ की लडकी गगा को अपनी बहन समझकर उनकी गरीवी अवस्था मे मदद करता है। एक दिन लोपा भिखारिन के रूप मे पारसनाथ के दरवाजे पर भीख मॉगने आती है। दयालु पारसनाथ उसे पुन घर मे स्थान दे देता है। इसी समय मिण्टल भी आ जाता है। अव गरीवदास सारे भेद का रहस्योद्घाटन कर देता है। अन्त मे सभी मिलकर मायामणि और लोपा को वहकाने वाले धन-लोभी को पुलिस द्वारा गिरफ्तार करवा देते है।

बुढ़ापे का नशा (सन् १९३६, पृ० ९६), ले० : जयपाल 'निर्मोही प्र० : भारती

आश्रम हेविट रोड, इलाहावाद; *पात्र :* पु० ९, स्त्री ६, *अक* · ३, *दृश्य* २८। *घटना-स्थल* कानपुर की आर्य पुत्री पाठशाला।

इस सामाजिक नाटक मे हिन्दू-समाज मे उत्पन्न वुराइयो पर प्रकाश डाला गया है। हिन्दू-समाज मे स्त्रियो की दशा वडी ही दयनीय है। इसमे नवयुवको का समाज के प्रति सच्चा कर्त्तव्य दिखाया गया है। समाज की सभी समस्याओं के समाधान का प्रयास किया गया है।

लेखक के अनुसार यह नाटक दुखित जीवन के कटु अनुभवो का सकलन मात्र है।

बुढापे की हवस (सन् १९२६, पृ० ३३), ले० . लक्ष्य वरेली, प्र० . शिवराम दास गुप्त उपन्यासवहार वनारस; *पात्र* पु० ३, स्त्री ३, *अक-रहित*, *दृश्य* · ६। *घटना-स्थल* घसीटामल का मकान।

यह एक प्रहसन है। इसके द्वारा वृद्धावस्था मे उत्पन्न काम-पिपासा की इच्छाओ को मानव दुर्दशा का कारण वताया है। वृद्ध घसीटामल कूडामल की १८ वर्षीया कन्या रम्या से विवाह करता है। इसके वदले मे वह ५०० रुपए भी कूडामल को देता है। रम्या वच्चन नामक एक धूर्त युवक से भी अपने प्रेम सम्वन्ध वनाये रखती है। एक दिन वच्चन घसीटा का वेप धारण करके रम्या को घर से ले जाता है तथा असली घसीटा को नकली पति सावित करके पडोसियो द्वारा उसकी दुर्दशा करवा देता है।

बूढ़े मुँह मुँहासे लोग देखें तमाशे (वि० १९५१ पृ० ३९), ले० राधाचरण गोस्वामी; प्र० भारत जीवन यन्त्रालय काशी; *पात्र :* पु० ४, स्त्री ६, *अक :* २, *दृश्य* ४। *घटना-स्थल :* तालाव के ऊपर नीम के पेड की छाँह।

इस सामाजिक नाटक मे जमीदारो के कुकृत्यो तथा शोषण वृत्ति का वर्णन है।

जमीदार लाला नारायणदास एक पतित मनोवृत्ति का व्यक्ति है। वह लगान के वदले मौला नामक मुसलमान युवक की पत्नी को लेना चाहता है। वह गाँव की निप्पी नामक लडकी पर भी अपनी कुदृष्टि डालता है। सितावो, मौला की पत्नी छन्नो को एक उजडे शिवालय मे लाला से मिलने के लिए ले जाती है। विद्याधर की सहायता से मौला भूत वन कर वहाँ उपस्थित होता है तथा नेपथ्य से भयानक ध्वनि करता है। यह सव देखकर वे लोग अत्यन्त भयभीत हो जाते हैं। फिर मौला अपने वास्तविक वेप मे प्रकट होता है। विद्याधर लाला से जुर्माने के रूप मे दिया सौ रुपए मौला को दिलवाता है। अन्त मे लाला नारायणदास अपने कुकृत्यो पर पश्चात्ताप करता है।

बुद्धशरणं गच्छामि (सन् १९५८, पृ० ११९), ले० कर्तारसिंह दुग्गल, प्र० · एम० गुलावसिंह एण्ड सस दिल्ली प्रा० लि०, *पात्र :* पु० ६, स्त्री ३, *अक-दृश्य-रहित*। *घटना-स्थल* · अजन्ता मे वर्तमान गुफा नं० २६।

यह ऐतिहासिक नाटक वौद्ध-शिल्पी मधरवन्धु के असफल प्रणय-प्रसग की आलोच्य कथा पर आधारित है। थेर मधरवन्धु के सौन्दर्य पर आकृष्ट हो अपना घर-वार त्यागकर उसे खोजती हुई अजन्ता की गुफाओ तक पहुँच जाती है। मधरवन्धु अपने मन को मूर्ति-विदीर्ण कर जीवन पर्यन्त भरमाये रखना चाहता था परन्तु 'महापरिनिर्वाण' के दृश्यांकन मे रह-रहकर उसका मन उचट जाता है। इसी से आवेश मे आकर वे मधरवन्धु कोने मे छुपकर अपनी ओर निहारती हुई थेर को छैनी की चोट से घायल कर देता है। महापरिनिर्वाण के दृश्याकन के उपरात मधरवन्धु सुध-बुध खो वैठता है। 'भगवान मर गए भगवान मर गए,' कहकर वह अन्य भिक्षुओ को अजन्ता छोडने का परामर्श देता है। मधर के प्रेम-रहस्य से अवगत हो जाने पर थेर अपनी पुत्री मजुश्री और जामाता सुभूति का विवाह करा कर लौट जाती है। सर्प-दश से समानक की मृत्यु और सिंह-भय से भिक्षु धर्मदत्त के अजन्ता गुफा छोड़ जाने से नाटक की परिसमाप्ति होती है।

बुद्धदेव (वि० १९९७, पृ० १९२), ले० : विश्वम्भर सहाय 'व्याकुल', सं० मुरारीलाल मागलिक, प्र० : भारती भण्डार, लीडर प्रेस इलाहाबाद, *पात्र* : पु० १७, स्त्री ५, *अक* · ३; *दृश्य* : ७, ६, ७ ।
घटना-स्थल बौद्ध-विहार, एकान्त वन, मैदान, कपिलवस्तु ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे बौद्ध-धर्म से पूर्व फैले अधर्मो पर प्रकाश डाला गया है । धर्म का गला पाखण्ड ने दबा रखा है, दया पर हिसा खड्ग तोल रही है । इसी अधर्म को दूर करने के लिए भगवान् तथागत अवतार लेते है । वे मित्रो के साथ नगर-दर्शन करते समय अनुभव करते है—'किसान की रोटी मे किस प्रकार मिठास के साथ कड्वाहट मिली हुई है ।' सासारिक दृश्यो से आक्रान्त हो देवदत्त की हिसा के विरोधी हो जाते है। इधर गौतम मे भी वैराग्य जागता है, उधर शुद्धोदन इनके विवाह की तैयारी करते है। विवाहोपरान्त दु ख मे घुटते गौतम गोपा तथा पुत्र को त्यागकर विश्व-कल्याण के लिए निकल जाते है । घोर तपस्या से शरीर सूख जाने पर भी कल्याण का मार्ग नही उपलब्ध हो पाता । अचानक नर्त्तकियो के गान से उन्हे 'मध्य-मार्ग' अपनाने का ज्ञान-बोध होता है। वे शूद्र स्त्री की खीर खाकर ससार मे ज्ञान के प्रचारार्थ निकल पडते है । उनके विचारो से प्रभावित हो अनेक लोग उनके अनुयायी हो जाते है। अपने विरोधियो को भी अपने तप से पराजित कर वे अपने नगर लौटते है । पिता शुद्धोदन माता गौतमी उन्हे सिद्धार्थ सन्यासी रूप मे पाकर व्यथित होते है। यशोधरा भी 'बुद्धशरण गच्छामि' प्रसन्नता से कहती है। विश्व-कल्याणार्थ गौतम सर्वत्र दया, धर्म तथा शान्ति का प्रसार करते है ।

बुद्धदेव चरित्र (सन् १९०२ पृ० १००), ले० . महेन्द्रनाथ आचार्य, प्र० भारत जीवन यन्त्रालय काशी, *पात्र* · पु० ८, स्त्री २, *अक* . ६, गर्भाक (३, ३, २, २,२, ३)
घटना-स्थल : राजप्रासाद प्रमोद कानन, अरण्य प्रदेश ।

यह नाटक भगवान् बुद्धदेव के चरित्र की प्रमुख घटनाओ के आधार पर निर्मित है। सिद्धार्थ को मृगया के लिए बलदेव-वासुदेव आग्रह करते हैं पर वह जीवन के गहन रहस्यो को सुलझाने मे व्यस्त है । एक दिन राजपथ पर वह शव ले जाते हुए कुछ व्यक्तियो को देख लेते है । उनके मन मे वैराग्य भाव उठता है । तृतीय अक मे काषाय वस्त्र पहने भिक्षु को देख लेने से उनका वैराग्य दृढ होता है। चतुर्थ अक मे सिद्धार्थ और राजा शुद्धोदन का वार्त्तालाप है। पचम अक मे छन्दक सिद्धार्थ को लेकर जगल मे जाता है। षष्ठ अंक मे विन्ध्याचल प्रदेश मे सिद्धार्थ पहुँचते है। वहाँ राजा बिबसार भगवती का पूजन करके पशुओ की बलि देना चाहता है। भगवान् बुद्ध महाराज बिबसार को उपदेश देते है और वह पशुबलि वर्जित कर देते है। बुद्ध कोडिन्य को भी उपदेश देते है। बुद्ध भगवान् यह भी कह देते है कि मै ही जगन्नाथ के रूप मे उत्कल प्रदेश मे अवतरित होकर देश का कल्याण करूँगा ।

बेचारा केशव (वि० १९९०, पृ० ६१), ले० सीताराम चतुर्वेदी , प्र० . हिन्दी नाटक समिति, हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी, *पात्र* पु० १०, स्त्री १; *अक-रहित*, *दृश्य* ५ ।

'बेचारा केशव' हिन्दी-नाटक-समिति काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तुत प्रथम नाटक है। नाटक की कथा आदर्शवादी भावना से परिचालित है। वयोवृद्ध प० दीनदयालु जी के पुत्र केशवचन्द्र पर एम० ए० की परीक्षा पास कर लेने के बाद भी नवीन शिक्षा का कोई प्रभाव नही पडता और वह प्राचीन परम्परा के अनुसार पिता के वचन को वेदवाक्य मानता रहता है। एक दिन उसका पुराना मित्र रमेशचन्द उसे धोखा देकर मदिरा पिला देता है। परिणामत केशवचन्द्र भी झूठ, चोरी और मदिरा का अभ्यासी बन जाता है । एक दिन वह अपने घर मे ही चोरी करके मित्रो के साथ भाग जाता है। परन्तु मित्रो के धोखा करने पर केशवचन्द्र का विवेक जागृत होता है।

उसके विरोध करने पर मित्र उसे बाँध देते है। अचानक मित्रो को पुलिस पकड लेती है केशवचन्द्र पागल हो जाता है जब उसे इस बात का ज्ञान होता है कि पापियो को उचित दड मिल गया है तो उसका पागलपन दूर हो जाता है।

इसका अभिनय आर्ट्स कालेज काशी मे हुआ है।

बेटा तिकड़मचन्द (सन् १९४०, पृ० १५०), ले० : ज्योति प्रसाद निर्मल, प्र० अज्ञात, *पात्र* पु० १६ स्त्री ६।
घटना-स्थल सजा कमरा, क्लब, होटल, सिनेमा।

नाटक की नायिका मालती आधुनिक ढंग की युवती है उसको अपने योग्य कोई वर नही दिखाई पडता। वह भारत के सारे नवयुवको को अयोग्य समझती है। वह कहती है कि टेढी कमर, बालिस्त भर मूँछ, हाथ भर की चोटी, झडी की तरह दाढी, लम्बी नाक, खाली पेट, कोई घुटने के ऊपर धोती पहनने वाले, कोई पजामे के ऊपर पतलून पहनने वाले हिन्दुस्तान के सारे मर्द निकम्मे होने के कारण शादी के नाकाबिल है।" नाटक मे नायक के दोषो का विस्तृत वर्णन किया गया है किन्तु कही यह नही स्पष्ट किया गया कि किन गुणो के कारण आधुनिक युग की नवयुवती किसी नवयुवक पर विवाह के लिए मुग्ध होती है।

बेन-चरित्र नाटक (वि० १९७९, पृ० १७६), ले० पं० बदरीनाथ भट्ट, प्र० : रामप्रसाद ऐण्ड ब्रदर्स, आगरा; *पात्र* : पु० १२, स्त्री ४; *अक* : ३; *दृश्य* ७, ७, ४।
घटना-स्थल . राजमहल एवं आस-पास के स्थान।

इस नाटक मे अराजकता के भीषण परिणाम दिखाये गये है। राजा के खिलाफ शूद्रो मे असंतोष पैदा होता है। राज्य कर्मचारियो के भ्रष्ट आचरण से आतकित होकर जनता विद्रोह करती है। राजा का पुत्र बेन भी अपनी राज्यलिप्सा और स्वार्थ से पथ-भ्रष्ट हो प्रजा पर जुल्म ढाता है। किन्तु अन्त मे प्रजा की विजय होती है। बेन राज्य-विद्रोह के अपराध में कैद किया जाता है। वह अपने कर्मो का फल भुगतता है, क्योकि बेन ही प्रजा को पथभ्रष्ट करने मे प्रमुख रहता है। अन्त मे ऋषि मुनियो की प्रार्थना से नाटक समाप्त होता है।

बेनजीर बदरेमुनीर नाटक (सन् १८७६, पृ० ९६) ले० : महमूद खाँ रौनक; प्र० विक्टोरिया ग्रुप, बम्बई, *पात्र* पु० ८, स्त्री १; *अक* ३; *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल सरनद्वीप, जंगल, वनमार्ग।

इस ऐतिहासिक नाटक मे प्रेमी-प्रेमिका का अटूट प्रेम दिखाया गया है।

प्रथम अंक मे माहरुख परी, जीन के शाहजादे बेनजीर पर मुग्ध होकर उससे अपना प्रणय निवेदन करती है। लेकिन बेनजीर उसके प्रणय को अस्वीकार करता है। परी फिर भी बेनजीर को सैर करने के लिए उडन खटोला देती है। वह उस पर सैर करता है। उसके माता-पिता अपने पुत्र के शोक मे योगी बन जाते है।

दूसरे अक मे सरनद्वीप की राजकुमारी बदरेमुनीर के अनिद्य सौन्दर्य को देखकर बेनजीर उस पर मुग्ध हो जाता है। राजकुमारी भी राजकुमार के प्रणय का शिकार हो जाती है। माहरुख परी अपने प्रियतम पर बदरेमुनीर की इस डकैती को चुनौती देने के लिए बेनजीर को बन्दी बनाती है। बदरेमुनीर राजकुमार के वियोग मे क्षीण हो जाती है। वह अपनी प्रिय सखी नजमुन्निसा से राजकुमार को खोजने की प्रार्थना करती है। नजमुन्निसा योगिनी बन कर बेनजीर की खोज मे चली जाती है।

तीसरे अंक मे नजमुन्निसा की भेट बेनजीर के योगी माता-पिता से हो जाती है। वे तीनो ही बेनजीर की खोज मे आगे बढे। नजमुन्निसा को जगल मे जीन के बादशाह फिरोजशाह मिल जाते हैं। उनकी सहायता से बेनजीर बन्धन मुक्त होता है। बादशाह बदरेमुनीर और उसके पिता को बुलाकर दोनो का विवाह करा देता है। माहरुख परी को क्षमा प्रदान कर भविष्य मे ऐसा न करने की चेतावनी दी जाती है।

वेला-चमेली नाटक (सन् १९०२) ले० . अज्ञात; प्र० मुरारीलाल केडिया द्वारा प्राप्त । पात्र . पु० ६ स्त्री २ अक-रहित ।

इस सामाजिक नाटक मे जादूगर द्वारा जादू की क्रिया-कलापो का बहुत अच्छा वर्णन मिलता है। इसमे जादू की कई रहस्यपूर्ण घटनाओ का समावेश होने के कारण नाटक बडा ही मनोरजक तथा हास्यप्रद है। कही-कही पर सुन्दर गायन का भी आयोजन है। वेला चमेली की प्रेमकथा वर्णित है।

बैंकर सभा (सन् १९१६, पृ० २२), ले० · हरिहर प्रसाद जिजल; प्र० अग्रवाल प्रेस, गया; पात्र · पु० ५, स्त्री ४, अक · २, दृश्य : ५, १।
घटना-स्थल रास्ता, मकान।

यह एक प्रहसन है। इसमे चरित्रहीन लोगो को उपहास का विषय बनाया गया है।

शहर का एक बैंकर ढोगल साहु है जिसका काम ही मात्र सभा करना और वेश्या रखना है। वह नित्य नई रगीनियो के बीच, भोग-विलास मे लिप्त रहता है। शामत जान उसकी रखी गई वेश्या है। वह शामत जान के अलावा अन्य नई वेश्याओ के साथ भी भोग-विलास की कामना करता है। इस कार्य मे उसके नए नौकर फुदना, बहेलिया, बखेडिया आदि मदद भी करते है।

ढोगल को जुए का भी शौक है। वह वेश्याओ के साथ जुआ खेलता है और सब कुछ हार जाता है। इसके बाद वह बहुत ही पश्चात्ताप करता है। सभी उसकी खिल्ली उडाते हैं।

वैर का वदला (सन् १९२२, पृ०५८), ले० तामसकर गोपाल दामोदर, प्र० . कृष्ण राव भावे जवलपुर; पात्र पु० ९, स्त्री ३; अक ३; दृश्य ७, २, ६।
घटना-स्थल . दरवार, सडक, वाग, महल कारागृह, गगा तट, अत पुर, जगल।

इस ऐतिहासिक नाटक मे प्रेम को महान् तथा द्वेप को घृणित वताया गया है।

कौशल राज्य काशी के अधीन है। कौशल-नरेश के राज्य कर न देने पर काशी का प्रधान मंत्री विजयसेन कौशल-नरेश दिधीति को देशद्रोही बताकर अपने राजा ब्रह्मदत्त को युद्ध के लिए भड़काता है।

कौशल का राजकुमार दीर्घायु काशी राज की लडकी से प्रेम करता है। यह बात विजयसेन को पसद नही आती क्योकि वह अपनी लडकी की शादी दीर्घायु के साथ करना चाहता है। महाराज दिधीति प्रधानमंत्री का यह प्रस्ताव अस्वीकार कर देते है, जिससे वह उनसे बदला लेने के लिए कौशल पर चढाई कर देता है। युद्ध मे महाराज दिधीति कैद कर लिए जाते है। दीर्घायु भी काशी मे ही गिरफ्तार हो जाता है। मरते समय महाराज दिधीति अपनी पत्नी से पुत्र के लिए सदेश दे जाते है कि "द्वेष से द्वेप शान्त नही होता द्वेप प्रेम से शान्त होता है।" अत. किसी से वदला लेने की जरूरत नही है।

राजकन्या मालती की मदद से दीर्घायु छूट जाता है। वह अपनी माँ द्वारा पिता के अतिम सदेश को सुनता है, फिर भी वह प्रतिशोध की भावना से काशी-नरेश के यहाँ नौकरी करता है। दीर्घायु अपने गुणो से काशी-नरेश को प्रभावित करके उनका विश्वासपात्र वन जाता है। एक दिन दीर्घायु राज परिवार के साथ आखेट के लिए जाता है। जंगल मे हिरण का पीछा करते हुए काशी-नरेश और दीर्घायु वहुत दूर निकल जाते है। दोनो परिश्रान्त हो विश्राम करते है। काशी-नरेश के सो जाने पर दीर्घायु उन्हे मारने के लिए तलवार निकालता है लेकिन पिता के अन्तिम शब्द के याद आ जाने से प्रहार नही कर पाता। इसी समय महाराज की भी नीद खुल जाती है। वे दीर्घायु के हाथ मे तलवार देखकर इसका कारण पूछते है। दीर्घायु महाराज को सारी घटना वता देता है।

विजयसेन की करतूतो को सुनकर महाराज उसे कैद करवा देते है। तथा मालती और दीर्घायु की शादी करके सारा राज्य-भार उन्हे सौंप देते है। अन्त मे दीर्घायु विजयसेन का भी अपराध क्षमा करा देता है।

बोधिसत्व (सन् १९५०, 'नई धारा' के नवम्बर अक मे प्रकाशित), *ले० :* रुद्र, *पात्र :* पु० २, स्त्री २; *अक-दृश्य-रहित* ।

महात्मा बुद्ध के आत्मज्ञान पर आधारित 'बोधिसत्व' एक लघु सगीत रूपक है। प्रारभ मे सरस्वती विजीर्ण वसुधा के लिए शोक प्रकट करती है। तभी गरूड पर सवार श्री नारायण आकर विश्व की दु खद स्थिति के उद्धार हेतु गौतम बुद्ध के अवतार का सकेत कर सरस्वती का शोक निवारण करते है। वनदेवी तथा उरु वेला परस्पर वार्तालाप द्वारा बुद्ध की प्रशस्ति करती है। एक नारी सुजाता भी खीर बनाकर उनका भोग लगाती है। वह खीर बुद्ध को आत्मिक शक्ति प्रदान करती है और गौतम 'मार' के आक्रमण को भग करके वोधिसत्व प्राप्त कर गौतम बुद्ध वन जाते है।

ब्रजबाला (सन् १९४७, पृ० ३३), *ले०* · राजा महेन्द्र प्रताप, *प्र०* ससार सघ, प्रेस, महाविद्यालय, वृन्दावन, *पात्र* पु० ५, स्त्री २; *अक-रहित*, *दृश्य* ६।
घटना-स्थल श्याम का मकान, जगल, तीर्थ-यात्रा ।

इस सामाजिक नाटक मे ऊँच-नीच, जाति-पाति का भेद-भाव मिटाकर प्रेम का साम्राज्य स्थापित किया गया है।

श्याम जी सरस्वती से प्रेम करता है किन्तु लोग उसे बुरा मानते है। अफीम वेचने वाला बसन्ता सिपाहियो के रहने पर श्याम को विष देता है, जिससे वह मर जाता है। फिर सरस्वती सुन्दर के साथ तीर्थयात्रा पर निकलती है और अपनी माँ से मिलकर अपनी दु खद कहानी कहती है। अन्त मे उसका विवाह सुन्दर नामक अहीर से हो जाता है।

ब्रह्मचर्य नाटक (सन् १९४१), *ले०* · स्वामी शिवानंद, *प्र०* . जरनल प्रिंटिग वर्क्स लि०, ८३, पुराना चीना वाजार स्ट्रीट, कलकत्ता, *पात्र* . पु० २५ स्त्री १४; *अक* ४, *दृश्य* . ३, २, २, ४।
घटना-स्थल युद्धक्षेत्र, ब्रह्मलोक।

इस सामाजिक नाटक मे काम, क्रोध, मद, लोभ और लालसा आदि वुरी प्रवृत्तियाँ मानव की चित्तवृत्ति को दुष्प्रेरित कर विश्व मे अमंगल का सृजन कर रही है।

रति कामदेव के पास जाकर विवेक राजा ब्रह्मचर्य पार्षद और विभेद की वढती हुई शक्ति से उसे अवगत कराती है। काम देव उसे आश्वस्त करता है। महारानी लालसा अपने अनुचर काम की प्रेरणा से विवेक के विरुद्ध युद्ध छेडने का निश्चय करती है। इधर विवेक राजा का मत्री विभेद और ब्रह्मचर्य, काम, उसके सहायको तथा लालसा को नष्ट करने की योजना वनाते है। उसके मित्र तथा सेवक इस उद्देश्य के लिए सचेष्ट होकर युद्ध की तैयारी करते है। फलत लडाई छिड जाती है जिसमे लालसा के वीर सैनिक-क्रोध, मोह, द्वेष, कपट, अहकार मारे जाते है। ब्रह्मचर्य अपने शत्रुओ को परास्त कर विवेक-राजा विचार, विवेक, विभेद आदि के साथ ब्रह्म से मिलने जाते है। इधर घायल लालसा भी महामाया की सेवा से स्वस्थ होकर महा-माया के साथ ब्रह्म से मिलने जाती है। अपने दुष्कृत्यो के लिए क्षमा-प्रार्थी होती है। अन्त मे ब्रह्म सबको आशीष देकर कहते हैं—'जब ब्रह्मचर्य का पालन होता है तव सद्भाव, शाति, आनन्द एव उन्नति का विधान स्वय होता है।'

यह नाटक ६ अप्रैल, १९४० को विलि-पुरम् मे बी० एस० सुन्दरम् द्वारा रेड्क्रास सोसायटी के सहायतार्थ अभिनीत हुआ।

ब्रह्ममोहन झुमुरा (सन् १५९७, पृ० ५), *ले०* अनिश्चित किन्तु सम्भवत माधवदेव के किसी शिष्य द्वारा विरचित, *प्र०* . हिन्दी विद्यापीठ, आगरा; *पात्र* . पु० ५, स्त्री ०, *अक-दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल : नन्दगृह, वृन्दावन।

इस अकिया नाट मे भगवान् कृष्ण की महिमा और शौर्य का वर्णन है।

प्रातः काल कृष्ण अपने ग्वाल-वालो के साथ वृन्दावन प्रस्थान करते है। अचानक

मौका देखकर अघासुर कृष्ण को मारने के लिए प्रकट होता है। अघासुर अपना रूप विशाल-काय बनाकर कृष्ण को निगलने के लिए मुँह फैलाता है। कृष्ण उसकी गर्दन को पकडते हुए प्रसन्न मुद्रा मे दिखाई देते है। कृष्ण को प्रसन्न देख सभी ग्वाल-बाल उसके पेट मे घुस जाते है। अन्त मे कृष्ण भी उसके पेट मे घुसकर अपनी सजीवनी दृष्टि से सभी मृतक ग्वालो को जीवित कर कर देते है।

ब्रह्मा द्वारा अपहृत गोपगण और गोप-वत्सो को जीवित करने के लिए कृष्ण स्वत: सबका रूप धारण कर लेते है जिसे देखकर ब्रह्मा विस्मय-विभोर हो उठते है। वे कृष्णकी महिमा से प्रभावित होकर दंडवत् प्रणाम करते है। तत्पश्चात् कृष्ण ब्रह्मा को विदा कर सभी ग्वालो को आनन्द से विभोर करते हुए अघासुर के मारने का सदेश सुनाते है।

भ

भँवर (सन् १९५३, पृ० ३३) ले० · उपेन्द्रनाथ 'अश्क', प्र०: नीलाभ प्रकाशन; इलाहाबाद *पात्र* · पु० ६, स्त्री ६, *दृश्य* ३।
घटना-स्थल : ड्राइंग रूम, कमरा।

इस सामाजिक नाटक मे एक सम्भ्रान्त परिवार के वैवाहिक जीवन की विडम्बना की झाँकी दिखाई गई है। दिल्ली मे नाटक-कार को कभी अभिजातवर्ग की ऐसी तीन लडकियो से परिचय हुआ था जो कई वातो मे समान थी। सुशिक्षिता होने के साथ ही वे तीनो अपने को प्रवल बुद्धिवादिनी मानती थी। तीनो ही यौवनारम्भ के समय किसी न किसी ऐसे व्यक्ति से प्यार करती है जिसे वे आगे चलकर अपना जीवन-साथी नही वना पाती। तीनो ही स्वेच्छा से विवाह करती है किन्तु वैवाहिक जीवन से असन्तुष्ट होकर सम्वन्ध-विच्छेद कर लेती है। नाटक की नायिका प्रतिमा का प्रथम साक्षात्कार प्रोफेसर नीलम से होता हे, किन्तु उसकी उदासीनता से वह अपने सहपाठी सुरेश के प्रति आकृष्ट होती है। शीघ्र ही दोनो विवाह-वन्धन मे वँध जाते हैं। अपनी अन्य वहिनो की तरह वह भी पति सुरेश से सम्वन्ध-विच्छेद कर लेती हे। प्रोफेसर जान फ्रायड के यौन विचार के प्रतीक के रूप मे प्रतिमा से साक्षात्कार कर उससे पुनर्विवाह का प्रस्ताव करते हैं, किन्तु-प्रतिभा के मन पर प्रो० नीलम का गहरा असर होता है। अत वह प्रोफेसर जान को नही स्वीकार कर पाती है। यही विडम्बना इस नाटक का अंत है, जो कि एक भँवर के समान सदैव गोल दायरे मे चक्कर मारती घूमती रहती है।

भंडाफोड़ (सन् १९००, पृ० ३४), ले० बाबू आनन्द प्रसाद जी कपूर; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी, *पात्र :* पु० ४, स्त्री २; अक · १; दृश्य ५।

ज्योतिष के नामो के आधार पर प्रहसन लिखने का प्रयास है। तुला सुन्दर स्त्री है किन्तु बृहस्पति इससे इस शर्त पर शादी करता है कि वह रोज अपनी पत्नी तुला से पाँच डण्डे मार खाया करेगा। अत मे जव वह परेशान हो उठता है तो शनिश्चर के ज्योतिष के प्रभाव से तुला को पातिव्रत धर्म समझाया जाता है और वह सुधर जाती है।

इस प्रतीक नाटक मे नारी को पातिव्रत धर्म समझाने का प्रयत्न हे।

भक्त अंवरीष या ईश्वर भक्ति (सन् १९४१, पृ० ११९), ले० · विश्वम्भर नाथ वर्मा 'वाचाल', प्र० · नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, *पात्र :* पु० १९, स्त्री ८; *अक* · ३, *दृश्य* · १०, ७, ७,।
घटना-स्थल राजमहल, गगातट।

इस पौराणिक नाटक मे राजा अम्वरीष

की विजय दिखाई गई है। प्रारम्भ मे सुदर्शन और गरुड आपस मे तपस्या और भक्ति की प्रधानता पर विचार करते है, गरुड तपस्या को श्रेष्ठ बतलाता है, और सुदर्शन भक्ति को। अयोध्या-नरेश नाभाग के दो पुत्रो मे अम्बरीप भक्त और आस्तिक है, किन्तु मणिकात नास्तिक। मणिकान्त छोटा होते हुए भी राज्य का अधिकारी बनता है। अम्बरीष राज्य लेने से इन्कार करता है। राज्य मे एक बार घोर अकाल पडता है। मणिकात की अकर्मण्यता देख भक्त अम्बरीष राज्य का सारा धन प्रजा को बाँट देता है, इससे मणिकात दुर्वासा से शिकायत करता है। दुर्वासा अम्बरीप को धोखेबाज, पाखडी कहकर अपमानित करता है। पर जब उसे भक्ति का महत्त्व मालूम होता है, तब दोनो मित्र बन जाते है। दुर्वासा शिष्यो-सहित अम्बरीष के यहाँ भोजन करने आते है किन्तु अम्बरीष के द्वादशी पारण के समय गगा-स्नान से नही लौटते। अम्बरीष पारण का समय बीतते देख तुलसीदल मुँह मे डाल लेते है। इस पर क्रुद्ध दुर्वासा अम्बरीप को नष्ट करने के लिए अपनी जटाओ से कृत्यानल पैदा करते है, किन्तु सुदर्शन उसे नष्ट कर देते है और दुर्वासा को मारने जाते है। दुर्वासा यह देखकर भागते है। ब्रह्मा-शकर सबके पास जाते है किन्तु कोई रक्षा नही करता। अन्त मे विष्णु के पास जाते हैं। तब विष्णु कहते है कि भक्त अम्बरीष से क्षमा माँगो, तब तुम्हारी रक्षा होगी। अन्तत दुर्वासा ऐसा ही करते है। तब सुदर्शन से उनकी जान छूटती है। भक्त अम्बरीष की विजय से सभी प्रसन्न होते है।

भक्त चन्द्रहास (सन् १९२१, पृ० ४८), ले० जमुनादास मेहरा, प्र० निहाल चन्द ऐण्ड कम्पनी, नारायण प्रसाद बाबू लेन, कलकत्ता, पात्र पु० १७, स्त्री १०, अक · ३, दृश्य · ८, ६, ६।
घटना-स्थल · मंदिर, महल, जगल।

इस धार्मिक नाटक मे लक्ष्मी से अधिक महत्त्व धर्म को दिया गया है।

अगद देश के राजा सुधार्मिक के मन्दिर से प्रकट होकर लक्ष्मी अपने भक्तो की श्रेष्ठता और अपनी महत्ता की डीग हाँकती है। धर्म उसका प्रतिवाद करता है और अपने तथा अपने भक्तो की श्रेष्ठता का प्रतिपादन करता है। इस पर धर्म के चुनौती-स्वरूप लक्ष्मी उसके भावी भक्त चन्द्रहास को धनहीन करने का सकल्प करती है। फलत राजकुमार चन्द्रहास के जन्मोत्सव के समय राक्षसो और राक्षसियो के आक्रमण मे राजा मारे जाते है। महल ध्वस्त हो जाता है। रानी मरने के पूर्व सुशीला को गुप्त रास्ते से बन की ओर भगाकर चन्द्रहास की रक्षा करती है। सुशीला राजकुमार को पालपोस कर बडा करती है और सर्प-दश से मरती है। इधर कुतलपुर के प्रधान धृष्टबुद्धि द्वारा यज्ञ मे अपमानित होने से राजगुरु गालव उसकी कन्या विजया का विवाह कगाल बालक चन्द्रहास से होने का शाप देते है। धृष्टबुद्धि मुनि के वचन को असत्य करने पर तुल जाता है और हीरजी से परामर्श कर उस बालक की हत्या का षड्यन्त्र रचता है। हीरजी के प्रयत्न से चन्द्रहास प्रधान के घर माली के काम पर नियुक्त होता है। इधर विपया चन्द्रहास पर आसक्त होती है और उसे पिता तथा भाई से छिपाकर भोजनादि से सन्तुष्ट करती है। तीन जल्लाद चन्द्रहास को बाँधकर वन मे ले जाते है किन्तु कृष्ण की कृपा से वे उसका वध करने मे असमर्थ रहते है। इसी बीच बालक के मामा पुत्रहीन कुलिद सिह-शिकार करते-करते वहाँ पहुँचते है। वे बालक के कारण कृष्ण का दर्शन पाते है, और उसे राजकुमार रूप मे स्वीकार कर लेते है। इधर विपया चन्द्रहास के प्रेम मे अधीर रहकर उसी को पति रूप मे प्राप्त करना चाहती है। अपने षड्यंत्र मे अकृतकार्य होने पर धृष्टबुद्धि हीर जी से मिलकर (राजा वीरसिह की इच्छानुसार) चन्द्रहास को धृष्टबुद्धि की वाटिका मे ले जाकर वही विष देने की योजना बनाता है। नीद के कारण चन्द्रहास वही बेच के सहारे सो जाता है। वाटिका का माली सिपाही द्वारा मदन के पास ले जाने वाला प्रधान का पत्र पाता है लेकिन वह भी उसे लिये-लिये वही जमीन पर सो जाता है। प्रातःकाल होने पर विषया वाटिका मे कुँवर को देखकर फूली नही समाती और भूल-सुधार की दृष्टि से माली

लेता। उसका पुत्र भगवान् का अनन्य भक्त है। पिता के समझाने पर भी भगवद्-भक्ति नही छोडता है। हिरण्यकशिपु प्रह्लाद को ढुढा की गोद मे बैठाता है और उसके चारो तरफ आग लगा देता है लेकिन प्रह्लाद सुरक्षित रह जाता है और ढुढा जल जाती है। वह और भी यातनाएँ देता है। अत मे जब वह भगवद्-भक्ति नही छोडता तो हिरण्यकशिपु जैसे ही खड्ग उठाकर मारना चाहता है वैसे ही सर्वव्यापी परमेश्वर नृसिह रूप मे प्रकट होकर अपने तेज नाखूनो से हिरण्यकशिपु को मार डालते है। ब्रह्मदेव सहित सभी देवता प्रह्लाद के मस्तक पर राजमुकुट रखते है।

भक्त प्रह्लाद (सन् १९६४, पृ० ६४), ले० : बालभट्ट, मेरठ निवासी, प्र० . गिरधारी लाल थोक पुस्तकालय देहली, *पात्र* · पु० ११, स्त्री ४; *अक* : ३; *दृश्य* ६, ४, २।

इस धार्मिक नाटक मे भगवान् को अपने भक्तो की रक्षा करते दिखाया गया है। भक्त प्रह्लाद की जगत् प्रसिद्ध कथा ही इसका ...र है। अपने पिता हिरण्यकशिपु द्वारा अनेक कष्ट पाने पर भी वह उसकी आज्ञा की अवहेलना करता हुआ भगवद्-भक्ति मे लीन रहता है। अन्त मे भगवान् को नृसिह अवतार धारण कर हिरण्यकशिपु का वध करना पड़ा और भक्त प्रह्लाद की रक्षा करनी पडी।

भक्त प्रह्लाद (सन् १९१७, पृ० १२२), ले० : हरिदास मणिक, प्र० बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, बनारस, *पात्र* : पु० ७, स्त्री ०; *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल · राजप्रासाद, तपोवन।

इस पौराणिक नाटक मे भक्त प्रह्लाद की शिक्षाप्रद उत्कट भक्ति का वर्णन किया गया है। हिरण्यकशिपु के भाई हिरण्याक्ष को भगवान् विष्णु सूअर का रूप धारण करके मार डालते है। भाई का बदला लेने के लिए हिरण्यकशिपु घोर तप करके भगवान् से आशीर्वाद प्राप्त कर लेता है कि उसे कोई न मार सके। इस आशीर्वाद के बाद वह अपने को भगवान् समझने लगता है, किन्तु उसका पुत्र प्रह्लाद इसका विरोध करता है। वह भगवान् का भक्त हो जाता है। हिरण्यकशिपु अपने पुत्र को मारने के लिए अनेक उपाय करता है, जैसे पर्वत पर से गिराना, साँपो के मध्य प्रह्लाद को छोड़ना। पर किसी से भी उसकी मृत्यु नही होती। भगवान् उसकी रक्षा करते है।

अत मे जब हिरण्यकशिपु का अत्याचार अधिक बढ जाता है तब भगवान् विष्णु नृसिह रूप धारण कर उसकी हत्या कर देते है। भक्त प्रह्लाद को सिंहासन दे अन्तर्धान हो जाते हैं।

भक्त प्रह्लाद (सन् १९४७, पृ० ५७), ले० : गोविन्ददास 'विनीत'; प्र० : गुप्ता ऐण्ड को, थोक पुस्तकालय दिल्ली, *पात्र* · पु० ७, स्त्री २; *अक* : ३, *दृश्य* : ६, ६, ५।
घटना-स्थल : राजमहल।

यह पौराणिक नाटक भक्त प्रह्लाद की कथा पर आधारित है। भगवान् के भक्त प्रह्लाद को उसका पिता हिरण्यकशिपु अनेक कष्ट देता है जैसे आग मे जलाना, पर्वत से गिराना, होलिका के साथ आग मे जलाना आदि। किन्तु भगवान् की कृपा से भक्त प्रह्लाद का बाल भी बाँका नही होता और अन्त मे स्वयं हिरण्यकशिपु को नृसिह भगवान् के हाथो मरना पडता है।

भक्त मीरा (सन् १९४६,), ले० : गौरीशकर मिश्र; प्र० : इडियन प्रेस लिमिटेड इलाहाबाद, *पात्र* पु० १२, स्त्री ७; *अक* · ३; *दृश्य* ३, ४, ३।
घटना-स्थल . मारवाड़ का गाँव, साँगा का महल, वृन्दावन।

मीरा का विवाह धूमधाम से राजा भोजराज के साथ होता है किन्तु उसे प्रसन्नता नही होती। वह बाल्यकाल से राधा-कृष्ण का खेल खेलती रही है। वह श्वसुर-गृह मे भी साधु-सतो के साथ कीर्तन करती है। इधर भोजराज मीरा की स्वतंत्रता के कारण रुष्ट होकर उसके प्राण लेना चाहता है। ऐसी धारणा बनती जा रही है कि राजा ने उसे नदी मे डुबाना चाहा तो नदी सूख गई

और भगवान् कृष्ण ने दर्शन दिये। मीरा का चमत्कार देखकर अंत मे सभी वैरी क्षमा याचना करते है। मीरा द्वारका जाती है तो ठगो से मुठभेड हो जाती है। पर भगवान् की कृपा से उसकी रक्षा हो जाती है। मीरा द्वारका के मन्दिर मे पहुँचती है तो एकाएक विजली तडपती है उस समय मीरा मे कृष्ण, कृष्ण मे मीरा दिखाई देते है।

भक्त मोरध्वज (सन् १९६९, पृ० ६६), ले० प्रेम ब्रजवासी, प्र० राधावल्लभ शर्मा गौड, गौड बुक डिपो, श्याम प्रेस, हाथरस, *पात्र* पु० ६, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल राजप्रासाद, वनभूमि।

राजा मोरध्वज की भक्ति-भावना और साधु-सतजनो की सेवा के प्रताप से डाकू अक्षमान का हृदय-परिवर्तन हो जाता है। धर्मराज की परीक्षा मे राजा-रानी सफल होते है। वे पुत्र को स्वय आरे से चीरकर अहिसक सिह को खिलाते है।

भक्त मोरध्वज (सन् १९५८, पृ० ८४), ले० वेणीराम त्रिपाठी, श्रीमाली प्र० वावू वैजनाथ प्रसाद वुकसेलर वनारस, *पात्र* पु० १५, स्त्री ७, *अक* ३, *दृश्य* ८, ६, ३।
घटना-स्थल राजप्रासाद, तपोभूमि।

भगवान् कृष्ण अपने अनन्य शिष्य एव मित्र अर्जुन के साथ रूप परिवर्तन के द्वारा भक्त मोरध्वज की परीक्षा लेते है। भक्त परीक्षा मे सफल होता है और भगवान् मोरध्वज की भक्ति की प्रशसा करते है। कृष्ण मोरध्वज के पुत्र को जीवित कर देते है। अर्जुन का अज्ञान दूर होता है।

भक्त मोरध्वज (सन् १९६०, पृ० ६४), ले० मास्टर न्यादरसिह 'बेचैन' देहलवी, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, चावडी बाजार, दिल्ली, पात्र पु० १४, स्त्री ७, अक ३, *दृश्य* ७, ५, ४।
घटना-स्थल राजमहल, तपोवन।

कृष्ण जी अर्जुन के अज्ञान और अह को दूर करने के लिए भक्त मोरध्वज की कठिन परीक्षा लेते है। भक्त-शिरोमणि राजा अतिथि-सत्कार मे अतिथियो की अभिलापा-पूर्ति के लिए पुत्र का बलिदान करता है। अर्जुन पर इसका वडा प्रभाव पडता है। भगवान् राजा को दर्शन देते है और उसको वरदान तथा पुत्र को जीवनदान देकर पुरस्कृत करते है।

भक्त सुधन्वा (सन् १९३०, पृ० ८६), ले० उमाशकर चतुर्वेदी 'उमेश', प्र० सकीर्तन कार्यालय मेरठ; *पात्र* पु० ९, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* ६, ४, ३।

भक्त सुधन्वा एक पौराणिक शिक्षाप्रद नाटक है। भक्त सुधन्वा कृष्ण के दर्शनो के प्यासे है। युधिष्ठिर के अश्वमेध के घोडे की रक्षा करते हुए अर्जुन सुधन्वा के पिता हसध्वज की राजधानी चाणक्यपुरी पहुँचते है। हसध्वज के पुरोहित शख और लिखित ने घोपणा की कि अमुक समय जो सभा मे उपस्थित नही होगा उसे खौलते तेल के कडाहे मे डाल दिया जायेगा। धर्मसकट के कारण सुधन्वा उस समय सभा मे उपस्थित नही हो सका। उसे खौलते तेल मे छोड दिया गया पर उस का बाल भी वॉका नही होता। परीक्षा के लिए कडाह मे एक नारियल डाला जाता जो फटकर दोनो पुरोहितो को लगता और वे मारे जाते है। सुधन्वा और अर्जुन मे युद्ध होता है। कृष्ण अर्जुन के सारथी वनते है। सुधन्वा की लालसा पूर्ण होती है। कृष्ण के हाथो सुधन्वा मारा जाता है एव उसका तेज कृष्ण मे मिल जाता है।

भक्त सूरदास (सन् १९२३, पृ० १०६), ले० व प्र० जैरामदास, *पात्र* पु० ९, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* ६, ७, ८।
घटना-स्थल महल, चिंतामणि वेश्या का मकान, नदीतट, मार्ग, घर का द्वार, वृन्दावन।

रम्भा का विवाह धनी व्यक्ति रामदास के पुत्र विल्वमगल से होता है, किन्तु थोडे ही दिनो मे विल्वमगल अपनी रम्भा को त्यागकर चितामणि नामक वेश्या के जाल मे

लेता। उसका पुत्र भगवान् का अनन्य भक्त है। पिता के समझाने पर भी भगवद्-भक्ति नही छोडता है। हिरण्यकशिपु प्रह्लाद को ढुढा की गोद मे बैठाता है और उसके चारो तरफ आग लगा देता है लेकिन प्रह्लाद सुरक्षित रह जाता है और ढुढा जल जाती है। वह और भी यातनाएँ देता है। अत मे जब वह भगवद्-भक्ति नही छोडता तो हिरण्यकशिपु जैसे ही खड्ग उठाकर मारना चाहता है वैसे ही सर्वव्यापी परमेश्वर नृसिह रूप मे प्रकट होकर अपने तेज नाखूनो से हिरण्यकशिपु को मार डालते है। ब्रह्मदेव सहित सभी देवता प्रह्लाद के मस्तक पर राजमुकुट रखते है।

भक्त प्रह्लाद (सन् १९६४, पृ० ६४), ले० : बालभट्ट, मेरठ निवासी, प्र० . गिरधारी लाल थोक पुस्तकालय देहली, *पात्र :* पु० ११, स्त्री ४; *अक* · ३; *दृश्य* · ६, ४, २।

इस धार्मिक नाटक मे भगवान् को अपने भक्तो की रक्षा करते दिखाया गया है। भक्त प्रह्लाद की जगत् प्रसिद्ध कथा ही इसका आधार है। अपने पिता हिरण्यकशिपु द्वारा अनेक कष्ट पाने पर भी वह उसकी आज्ञा की अवहेलना करता हुआ भगवद्-भक्ति मे लीन रहता है। अन्त मे भगवान् को नृसिह अवतार धारण कर हिरण्यकशिपु का वध करना पडा और भक्त प्रह्लाद की रक्षा करनी पडी।

भक्त प्रह्लाद (सन् १९१७, पृ० १२२), ले० : हरिदास मणिक, प्र० : बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, बनारस, *पात्र :* पु० ७, स्त्री ०; *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल : राजप्रासाद, तपोवन।

इस पौराणिक नाटक मे भक्त प्रह्लाद की शिक्षाप्रद उत्कट भक्ति का वर्णन किया गया है। हिरण्यकशिपु के भाई हिरण्याक्ष को भगवान् विष्णु सूअर का रूप धारण करके मार डालते है। भाई का बदला लेने के लिए हिरण्यकशिपु घोर तप करके भगवान् से आशीर्वाद प्राप्त कर लेता है कि उसे कोई न मार सके। इस आशीर्वाद के बाद वह अपने को भगवान् समझने लगता है, किन्तु उसका पुत्र प्रह्लाद इसका विरोध करता है। भगवान् का भक्त हो जाता है। हिरण्यक अपने पुत्र को मारने के लिए अनेक करता है, जैसे पर्वत पर से गिराना, सांपो मध्य प्रह्लाद को छोडना। पर किसी से उसकी मृत्यु नही होती। भगवान् उसकी र करते है।

अत मे जब हिरण्यकशिपु का अधिक बढ जाता है तब भगवान् विष्णु नृ रूप धारण कर उसकी हत्या कर देते है भक्त प्रह्लाद को सिहासन दे हो जाते है।

भक्त प्रह्लाद (सन् १९४७, पृ० ५७), ले० गोविन्ददास 'विनीत'; प्र० : गुप्ता ऐण्ड थोक पुस्तकालय दिल्ली, *पात्र* . पु० स्त्री २; *अक :* ३, *दृश्य :* ६, ६, ५।
घटना-स्थल : राजमहल।

यह पौराणिक नाटक भक्त प्रह्ला की कथा पर आधारित है। भगवा के भक्त प्रह्लाद को उसका हिरण्यकशिपु अनेक कष्ट देता है जैसे मे जलाना, पर्वत से गिराना, होलिका के आग मे जलाना आदि। किन्तु भगवान् कृपा से भक्त प्रह्लाद का बाल भी बाँका न होता और अन्त मे स्वय हिरण्यकशिपु नृसिह भगवान् के हाथो मरना पडता है।

भक्त मीरा (सन् १९४६,), ले० गौरीशकर मिश्र; प्र० : इडियन प्रेस लि० इलाहाबाद, *पात्र* . पु० १२, स्त्री ७, *अक* ३, *दृश्य* ३, ४, ३।
घटना-स्थल . मारवाड का गाँव, साँगा . महल, वृन्दावन।

मीरा का विवाह धूमधाम से भोजराज के साथ होता है किन्तु उसे नही होती। वह बाल्यकाल से राधा का खेल खेलती रही है। वह श्वसुर-गृह भी साधु-सतो के साथ कीर्तन करती है इधर भोजराज मीरा की स्वतंत्रता के का रुष्ट होकर उसके प्राण लेना चाहता है ऐसी धारणा बनती जा रही है कि राजा उसे नदी मे डुबाना चाहा तो नदी सूख

और भगवान् कृष्ण ने दर्शन दिये। मीरा का चमत्कार देखकर अंत में राणा उससे क्षमा याचना करते हैं। मीरा द्वारका जाती है तो ठगों से मुठभेड़ हो जाती है। पर भगवान् की कृपा से उनकी रक्षा हो जाती है। मीरा द्वारका के मन्दिर में पहुँचती है तो एकाएक बिजली तड़पती है तब भक्त मीरा में कृष्ण-कृष्ण में मीरा दिखाई देते हैं।

भक्त मोरध्वज (सन् १९३६, हि० ६६). ले० : प्रेम रूपवाणी; प्र० : नावेल्टी नाट्य गौड़, गौड़ बुक डिपो, ज्ञान प्रेम हृदयस्थः पात्र : पु० ६, स्त्री ३: अंक : ३: दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : राजप्रासाद, वनभूमि।

राजा मोरध्वज की भक्ति-भावना और साधु-संतजनों की सेवा के प्रताप से प्रभु भगवान का हृदय-परिवर्तन हो जाता है। धर्मराज की परीक्षा में राजा-रानी सफल होते हैं। वे पुत्र को स्वयं आरे से चीरकर अतिथि सिंह को खिलाते हैं।

भक्त मोरध्वज (सन् १९५८, हि० ८४), ले० : केदारनाथ त्रिपाठी, 'मौनगी'; प्र० : बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, बनारस; पात्र : पु० १५, स्त्री ७: अंक : ३, दृश्य : ८, ६, ३।
घटना-स्थल : राजप्रासाद, रणभूमि।

भगवान् कृष्ण अपने अनन्य शिष्य एवं मित्र अर्जुन के साथ रूप परिवर्तन के द्वारा भक्त मोरध्वज की परीक्षा लेते हैं। भक्त परीक्षा में सफल होता है और भगवान् मोरध्वज की भक्ति की प्रशंसा करते हैं। कृष्ण मोरध्वज के पुत्र को जीवित कर देते हैं। अर्जुन का अज्ञान दूर होता है।

भक्त मोरध्वज (सन् १९६०, हि० ३४), ले० : मास्टर ध्यानसिंह 'विचित्र' देहलवी; प्र० : देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; पात्र : पु० १४, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य : ३, ५, ४।
घटना-स्थल : राजमहल, तपोवन।

कृष्ण जी अर्जुन के अज्ञान और अहं को दूर करने के लिए भक्त मोरध्वज की कठिन परीक्षा लेते हैं। भक्त-शिरोमणि राजा अतिथि-सत्कार में अतिथियों की अभिलाषा-पूर्ति के लिए पुत्र का बलिदान करता है। अर्जुन पर इसका बड़ा प्रभाव पड़ता है। भगवान् राजा को दर्शन देते हैं और उसको बलिदान एवं पुत्र को जीवनदान देकर पुरस्कृत करते हैं।

भक्त सुधन्वा (सन् १९३०, हि० ८६). ले० : उमाशंकर चतुर्वेदी 'उमेश'; प्र० : हरिकीर्तन साहित्य सेवक; पात्र : पु० ९, स्त्री ३: अंक : ३: दृश्य : ६, ५, ३।

भक्त सुधन्वा एक पौराणिक ऐतिहासिक नाटक है। भक्त सुधन्वा कृष्ण के भक्तों में से है। युधिष्ठिर के अश्वमेध के घोड़े की रक्षा करते हुए अर्जुन सुधन्वा के पिता हंसध्वज की राजधानी चम्पापुरी पहुँचते हैं। हंसध्वज के पुरोहित शंख और लिखित ने घोषणा की कि अमुक समय जो सेना में उपस्थित नहीं होगा उसे खौलते तेल के कड़ाह में डाल दिया जायेगा। धर्मसंकट के कारण सुधन्वा उस समय सेना में उपस्थित नहीं हो सका। उसे खौलते तेल में छोड़ दिया गया पर उस का बाल भी बाँका नहीं हुआ। परीक्षा के लिए कड़ाह में एक नारियल डाला जाता जो उछल कर दोनों पुरोहितों को लगता और वे मारे जाते हैं। सुधन्वा और अर्जुन में युद्ध होता है। कृष्ण अर्जुन के सारथी बनते हैं। सुधन्वा की कामना पूर्ण होती है। कृष्ण के हाथों सुधन्वा मारा जाता है एवं उसका तेज कृष्ण में मिल जाता है।

भक्त सूरदास (सन् १९७३, हि० १०६); ले० व प्र० : दीनानाथ; पात्र : पु० ९, स्त्री ५: अंक : ३; दृश्य : ६, ७, ८।
घटना-स्थल : सड़क, चिन्तामणि वेश्या का मकान, नदीतट, नदी, घर का द्वार, वृन्दावन।

रत्ना का विवाह धनी व्यक्ति चन्द्रभान के पुत्र बिल्वमंगल से होता है, किन्तु थोड़े ही दिनों में बिल्वमंगल अपनी पत्नी को त्यागकर चिंतामणि नामक वेश्या के जाल में

लेता। उसका पुत्र भगवान् का अनन्य भक्त है। पिता के समझाने पर भी भगवद्-भक्ति नही छोडता है। हिरण्यकशिपु प्रह्लाद को ढुढा की गोद मे बैठाता है और उसके चारो तरफ आग लगा देता है लेकिन प्रह्लाद सुरक्षित रह जाता है और ढुढा जल जाती है। वह और भी यातनाएँ देता है। अत मे जब वह भगवद्-भक्ति नही छोडता तो हिरण्यकशिपु जैसे ही खड्ग उठाकर मारना चाहता है वैसे ही सर्वव्यापी परमेश्वर नृसिह रूप मे प्रकट होकर अपने तेज नाखूनो से हिरण्यकशिपु को मार डालते है। ब्रह्मदेव सहित सभी देवता प्रह्लाद के मस्तक पर राजमुकुट रखते है।

भक्त प्रह्लाद (सन् १९६४, पृ० ६४), ले० : बालभट्ट, मेरठ निवासी, प्र० गिरधारी लाल थोक पुस्तकालय देहली, *पात्र* पु० ११, स्त्री ४; *अक* ३, *दृश्य* ६, ४, २।

इस धार्मिक नाटक मे भगवान् को अपने भक्तो की रक्षा करते दिखाया गया है। भक्त प्रह्लाद की जगत् प्रसिद्ध कथा ही इसका आधार है। अपने पिता हिरण्यकशिपु द्वारा अनेक कष्ट पाने पर भी वह उसकी आज्ञा की अवहेलना करता हुआ भगवद्-भक्ति मे लीन रहता है। अन्त मे भगवान् को नृसिंह अवतार धारण कर हिरण्यकशिपु का वध करना पडा और भक्त प्रह्लाद की रक्षा करनी पडी।

भक्त प्रह्लाद (सन् १९१७, पृ० १२२), ले० : हरिदास मणिक, प्र० . बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, बनारस, *पात्र :* पु० ७, स्त्री ०; *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल : राजप्रासाद, तपोवन।

इस पौराणिक नाटक मे भक्त प्रह्लाद की शिक्षाप्रद उत्कट भक्ति का वर्णन किया गया है। हिरण्यकशिपु के भाई हिरण्याक्ष को भगवान् विष्णु सूअर का रूप धारण करके मार डालते है। भाई का बदला लेने के लिए हिरण्यकशिपु घोर तप करके भगवान् से आशीर्वाद प्राप्त कर लेता है कि उसे कोई न मार सके। इस आशीर्वाद के बाद वह अपने को भगवान् समझने लगता है, किन्तु उसका पुत्र प्रह्लाद इसका विरोध करता है। वह भगवान् का भक्त हो जाता है। हिरण्यकशिपु अपने पुत्र को मारने के लिए अनेक उपाय करता है, जैसे पर्वत पर से गिराना, सांपो के मध्य प्रह्लाद को छोडना। पर किसी से भी उसकी मृत्यु नही होती। भगवान् उसकी रक्षा करते है।

अत मे जब हिरण्यकशिपु का अत्याचार अधिक बढ जाता है तब भगवान् विष्णु नृसिह रूप धारण कर उसकी हत्या कर देते है। भक्त प्रह्लाद को सिहासन दे अन्तर्धान हो जाते है।

भक्त प्रह्लाद (सन् १९४७, पृ० ५७), ले० : गोविन्ददास 'विनीत'; प्र० : गुप्ता ऐण्ड को, थोक पुस्तकालय दिल्ली, *पात्र* पु० ७, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य :* ६, ६, ५।
घटना-स्थल : राजमहल।

यह पौराणिक नाटक भक्त प्रह्लाद की कथा पर आधारित है। भगवान् के भक्त प्रह्लाद को उसका पिता हिरण्यकशिपु अनेक कष्ट देता है जैसे आग मे जलाना, पर्वत से गिराना, होलिका के साथ आग मे जलाना आदि। किन्तु भगवान् की कृपा से भक्त प्रह्लाद का बाल भी वाँका नही होता और अन्त मे स्वय हिरण्यकशिपु को नृसिह भगवान् के हाथो मरना पडता है।

भक्त मीरा (सन् १९४६,), ले० : गौरीशकर मिश्र; प्र० : इडियन प्रेस लिमिटेड इलाहाबाद, *पात्र* पु० १२, स्त्री ७, *अक* ३, *दृश्य* ३, ४, ३।
घटना-स्थल मारवाड़ का गाँव, साँगा का महल, वृन्दावन।

मीरा का विवाह धूमधाम से राजा भोजराज के साथ होता है किन्तु उसे प्रसन्नता नही होती। वह बाल्यकाल से राधा-कृष्ण का खेल खेलती रही है। वह श्वसुर-गृह मे भी साधु-सतो के साथ कीर्तन करती है। इधर भोजराज मीरा की स्वतत्रता के कारण रुष्ट होकर उसके प्राण लेना चाहता है। ऐसी धारणा बनती जा रही है कि राजा ने उसे नदी मे डुबाना चाहा तो नदी सूख गई

बताता है। वह राजा को उस बालक से १२ वर्ष अलग रहने का परामर्श देता है। पुत्र-स्नेह-विह्वल राजा पूरन को अवधि से पूर्व ही बुला लेता हे। पूरन के दिव्य गुणो एव यौवन-सुलभ आकर्षक व्यक्तित्व के सम्मुख राजा की छोटी रानी नूनादे आत्मसमर्पण कर देती है। पूरन माँ के अवाछित व्यवहार मे सम्मिलित नही होता। अत काम-पीडिता नूनादे प्रतिशोध की अग्नि मे उसे प्रज्ज्वलित करने का संकल्प करती है। वह त्रिया-चरित्र से राजा के सम्मुख पूरन पर बलात्कार का दोष मँढती है। राजा पुत्र का वध करके गाँव के एक कुएँ मे डलवा देता है।

भ्रमणशील गुरु गोरखनाथ गाँव के उस कुएँ मे से पूरन को निकाल जीवित कर देते हैं। वह उनका शिष्य बन जाता है। उसकी उत्कट भक्ति, योग मे सिद्धि देख शिष्य-वर्ग ईर्ष्यालु हो जाता है और पूरन को सुन्दरी से भिक्षा लाने भेजता है। सुन्दरी गुरु गोरख नाथ से पूरन को वर रूप मे माँगती है किन्तु पूरन की भक्ति से प्रभावित स्वय ही गुरु-मत्र लेने के लिए प्रस्तुत हो जाती है।

पूरन अपनी माता से भिक्षा माँगने जाता है। पुत्र-शोक विह्वला माता अन्धी हो जाती है। वह माता के नेत्रो मे रोशनी देता है। नूनादे अपना अपराध स्वीकार करती है। पूरन क्षमा प्रदान करता है। माता नूनादे, मत्री, भाई-बन्धु, प्रजा की इच्छा और गुरु की आज्ञा से वह रिक्त सिंहासन स्वीकार करता है।

भगतसिंह (सन् १९५२, पृ० ९९), ले० न्यादरसिंह 'बेचैन', प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, चावडी बाजार, दिल्ली, *पात्र* : पु० ९, स्त्री ६, *अक* ३, *दृश्य* ७, ८, ४। *घटना-स्थल* जलियावाला बाग असेंबली भवन।

यह नाटक भारत-स्वतत्रता-आदोलन के आतंकवादी नेता भगतसिंह के बलिदान की गौरवगाथा का उज्ज्वल पक्ष प्रस्तुत करता है। देशभक्त पिता का पुत्र सशस्त्र क्राति मे भारतमाता का उद्धार देखता है और युवा पीढी की तडपन को देश-भर मे अग्रेजी साम्राज्यवाद के विरुद्ध बिगुल बजाकर व्यक्त करता है।

वीर भगतसिंह जलियावाला बाग की ब्रिटिश-नृशसता का प्रतिशोध साण्डर्स की हत्या से लेता है और साम्राज्य के गुप्तचरो की आँखो मे धूल झोक कर उत्तर प्रदेश तथा बगाल के क्रातिकारियो से सम्पर्क स्थापित करता है। देश के समस्त भागो के युवक भगतसिंह के नेतृत्व मे सगठित होते है। क्रातिकारी अग्रेजो के प्रत्येक शोषण और अन्याय प्रक्रिया का विरोध करते है। अग्रेजो द्वारा प्रस्तुत पब्लिक सेफ्टी बिल के विरुद्ध जनमत जागृत करने के उद्देश्य से भगतसिंह असेम्बली भवन मे बम फेकता है और अपने आपको अग्रेजो के हवाले करके उनकी न्यायपटुता के दम्भ का पर्दाफाश करता है। अग्रेजी सरकार बर्बरतापूर्वक भारतमाता के इस पुजारी को लूट और कत्ल के झूठे अपराध मे २३ मार्च १९३१ ई० को फाँसी पर चढा देती है।

भगवती के भक्त (सन् १९६४, पृ० ११४), ले० डॉ० घनानाथ झा, प्र० विद्यापति प्रकाशन, दरभगा, *पात्र* पु० १५, स्त्री ७, *अक* ३, *दृश्य* ७। *घटना-स्थल* पूजा स्थल, चौपटानन्द का आश्रम, कामाख्या का सिहपीठ, कालीमन्दिर, तात्रिक का आश्रम, शिलाखण्ड, जलाशय, गोविन्ददास झा का घर।

प्रस्तुत नाटक मे महाकवि गोविन्ददास के जीवन की प्रमुख घटनाओ का उल्लेख है। जिस प्रकार महाकवि गोविन्ददास अपनी भक्ति के लिए प्रसिद्ध थे उसी तरह उनकी अपूर्व कवित्व शक्ति भी थी। नाटक मे गोविन्ददास की भक्ति भावना पर प्रकाश पडता है। इसमे नाट्यकार धर्मद्रोही, वैष्णव नामधारी तथाकथित महन्तो की निन्दा करता है, जो सतत समाज की आँख मे धूल झोककर ऐश-आराम का जीवन व्यतीत करते है। ये मनुष्यो की हत्या निर्ममता-पूर्वक करते है। वस्तुत ये लोग सामाजिक मर्यादा की हत्या करने मे तनिक भी नही चूकते। यही कारण है कि धर्म के नाम पर ये लोग लाखो महिलाओ के सतीत्व को नष्ट

फँस जाता है। रम्भा का श्वसुर यह दुखद समाचार सुनकर शोक से प्राण त्याग देता है। रम्भा भगवान् की उपासिका बन जाती है। बिल्वमगल एक रात चितामणि के घर मे द्वार बन्द होने से साँप को रस्सी समझकर उसके सहारे प्रवेश करता है। चितामणि इसे भगवान् की चेतावनी समझकर उसे सचेत करती है। वह आँखे फोडकर अधा हो जाता है। बिल्वमगल को वैराग्य हो जाता है, और ब्रज की यात्रा करता है। कृष्ण का साथ उसे मार्ग मे मिलता है वह कृष्ण का हाथ पकड लेता है। भगवान् हाथ छुडाकर जाते है तो वह कहता है —

हाथ छुडाके जात हो, निर्बल जान के मोहि
हृदय मे से जाइयो, तो मै कहूँगा तोहि।

इसी प्रकार चिन्तामणि भगवान् शंकर को अपना कलेजा प्रदान करती है। उसी समय बिल्व, जिनको पुन आँखे मिल गई थी, चितामणि को माता कहकर सम्बोधन करते है। नाटक के अत मे शकर, कृष्ण, राधिका विराजमान है, और चितामणि व बिल्वमगल स्तुति करते है।

भक्त सूरदास अर्थात् बिल्वमंगल (वि० १६८०, पृ० १२५), ले० प० तुलसीदास शैदा, प्र० : रामलाल वर्मा, प्रोप्राइटर बर्मन प्रेस, आर० आर० बर्मन ऐण्ड क०, अमर चितपुर रोड, कलकत्ता, *पात्र* पु० ६, स्त्री ५, *अक* ३, *दृश्य* ६, ६, ४। *घटना-स्थल* . वेश्यागृह, तपोवन।

यह एक लोककथा परक नाटक है। इसमे यह दिखाया गया है कि किस प्रकार चिन्ता-मणि वेश्या ससारी मोहमाया को छोडकर कृष्ण की अनुरागिनी बन जाती है। और उसका प्रेमी बिल्वमगल अर्थात् सूरदास जीवन्मुक्ति के सर्वोच्च सिहासन पर बैठ जाता है।

भक्त सूरदास बिल्वमंगल (सन् १६२०, पृ० १०६), ले० मुहम्मदशाह आगा हश्र कश्मीरी, प्र० अग्रवाल बुक डिपो, थोक पुस्तकालय, खारी बावली, दिल्ली, *पात्र* पु० ७, स्त्री ४, *अक* : ३, *दृश्य* ६, ६, ६। *घटना-स्थल* रामदास का महल, वेश्या की रंग स्थली तथा यमुना का तट।

बिल्वमगल नगर-रईस ब्राह्मण रामदास का एकमात्र पुत्र है। वैभव-विलासी बिल्व नगर की प्रसिद्ध वारवनिता चिन्तामणि के अप्रतिम सौन्दर्य पर मुग्ध होकर धन, कुल-मर्यादा तथा यौवन न्यौछावर कर देता है। पिता पुत्र के कलकित जीवन से दुखी होता है। वह पुत्र को सुमार्ग पर लाने के लिए परम सुन्दरी कुलीन नारीरत्न रम्भा से उसका विवाह कर देता है, किन्तु मद्य तथा वेश्यागमन के पंक मे सना *बिल्व* रम्भा से दूर अपने पापमय जीवन मे जीना ही श्रेयस्कर समझता है। दुखी रम्भा अस्वस्थ वृद्ध श्वसुर की सेवा करती हुई परित्यक्ता की स्थिति मे जीवन बिताती है।

बिल्व पतन की पराकाष्ठा पर है। कामान्ध वासना का कीट बिल्व घोर वर्षा, भयानक तूफान अंधकारपूर्ण अर्ध रजनी मे शव को लकड़ी का तख्ता समझ उफनती यमुना पार करता है। वह चितामणि के बन्द घर मे सर्प को रस्सी समझ उसके सहारे ऊपर जाता है। चिन्तामणि उसके मोह का नग्न रूप दिखा उसे ज्ञान देती है और वे दोनो वैरागी हो जाते है। बिल्व सुई से नेत्र फोडकर सूरदास हो जाता है। सूरदास कृष्ण-भक्ति मे ख्याति-प्राप्त सत होता है और सूरसागर की रचना करता है।

अभिनय-पारसी थियेट्रिकल कपनियो द्वारा अभिनीत है।

भगत पूरनमल (सन् १६५२, पृ० ६४), ले० न्यादरसिह 'बेचैन'; प्र० . देहाती पुस्तक भडार, चावडी बाजार, दिल्ली; *पात्र* पु० ६, स्त्री ६, *अक* ३, *दृश्य* ८, ६, ३। *घटना-स्थल* स्यालकोट का राजमहल तथा पंजाब के गॉव।

यह धार्मिक नाटक है। स्यालकोट-नरेश सलेवान के अतिम समय मे उनकी बडी रानी इच्छरादे ने पूरन को जन्म दिया। ज्योतिषी पूरन को यशस्वी, विशिष्ट गुण-युक्त बालक

उज्जैन, पात्र पु० १०, स्त्री २, अक . ३, दृश्य १४।
घटना-स्थल मेवाड, राजस्थान प्रदेश।

इस ऐतिहासिक नाटक मे मेवाड केसरी महाराणा संग्रामसिंह के जीवन-वृत्त द्वारा राजपूती गौरव का सुन्दर चित्रण किया गया है। संग्रामसिह अपने प्रबल पराक्रमी व्यक्तित्व से राजपूत सामन्तो का सुदृढ सगठन करता है। वह एक पराक्रमी राजपूत राज्य की स्थापना के लिए प्रयत्नशील है। उसकी महत्त्वाकांक्षा दिल्ली को अपने कब्जे मे लाने की है। वह मुगल-विजेता बावर का वडी वीरता से सामना करता है। राणा सग्रामसिंह की मृत्यु सामन्तो द्वारा विषपान कराने से होती है।

भद्रायुरभ्युदयमु (सन् १८८५, पृ० ४४), ले० नादल्ले पुरुपोत्तम कवि; प्र० . श्री नादल्ले मेधा दक्षिणमूर्ति शास्त्री मछली पट्टणम्, पात्र पु० ७, स्त्री ५, अक-रहित, दृश्य : २३।
घटना-स्थल : मछली पट्टणम् और आन्ध्र के अन्य नगर।

दशार्ण देश का राजा बज्रबाहु अपनी राजमहिपी सुमति से अधिक प्रेम करता है। इससे सुमति की सपत्नियाँ उससे जलती रहती है। सुमति के गर्भवती हो जाने से वे और ईर्ष्यालु हो जाती है, और उसको विष खिला देती है। उस विष प्रयोग से सुमति मरती तो नही पर उसका सारा शरीर व्रणभूयिष्ठ हो जाता है। उसके गर्भ से उत्पन्न शिशु की भी यही दशा हो जाती है। रोगग्रस्त और व्रणभूयिष्ठ माता और पुत्र को वन मे छोड आने का राजा आदेश देते है। वहाँ वे दोनो अनेक कष्ट भोगते है। अत मे पद्माकर नामक वैश्य उनकी दुर्दशा पर तरस खाकर उन्हे अपने यहाँ ले जाता है और उनकी सेवा-शुश्रुषा का प्रवन्ध करता है। पर वह बालक बचता नही। उसी समय ऋपभ योगी वहाँ पधारते है और उस बालक को जीवित कर उसका भद्रायु नाम रखते है।

भद्रायु क्रमश वलशाली युवक बनता है और ऋषभ योगी की कृपा से सभी शास्त्रो मे पारगत हो जाता है। मगध-राजा के हाथो अपने पिता की पराजय की बात सुनकर युद्ध मे भाग लेता हुआ शत्रुओ का नाश कर देता है। किन्तु, अपने पिता को अपना परिचय दिए बिना अपनी माता के पास लौट जाता है। माता को आश्वासन देता है कि अव आगे पिता को शत्रुओ के हाथो अपदस्थ नही होने दूँगा।

भयंकर भूत (सन् १६२२, पृ० १३६), ले० : आचार्य गोस्वामी 'विन्दु जी' महाराज; प्र० : ठाकुर प्रसाद ऐण्ड संस वाराणसी, पात्र पु० २०; स्त्री ६, अक . ३; दृश्य ७, १०।
घटना-स्थल भारत भूमि।

यह एक सामाजिक नाटक है। इसमे प्यारा देश भारतवर्ष है जिसमें सत्ता, धर्म तथा प्रेम विशेप देवता है और अभिमान एक भयकर भूत है। अभिमान अपनी शक्ति से देश को नष्ट करना चाहता है। देश भी अपनी शक्ति दिखाने के लिए राजा उग्रसेन के पुत्र रूपसेन मे प्रेम का, शातिसेन की पुत्री रीता मे सत्य का और शातिसेन मे धर्म का प्रवेश करने को भेजता है। उधर अभिमान भी अपना प्रभाव उग्रसेन पर दिखाता है, पर शाति से अपनी पुत्री रीता की शादी रूपसेन के साथ करने को उग्रसेन के पास पत्र भेजता है तो उग्रसेन अभिमान मे आकर शातिसेन से लडाई करता है। शातिसेन की मदद एक इस्लामी देश का राजा आलम करता है फिर भी शातिसेन और आलम बन्दी बना लिये जाते है। अन्त मे उग्रसेन का मत्री बुद्धिसेन इस अत्याचार को देखकर बडी फौज के साथ लड़ाई करके उग्रसेन को वन्दी बना लेता है। देश तथा उसके तीनो देवता उग्रसेन को इसका कारण बताते है, जिससे उग्रसेन प्रायश्चित करता है और अन्त मे रूपसेन की शादी रीता से हो जाती है और अभिमान भी देश की स्वतन्त्रता के सामने अपना सिर झुकाता है।

भयकर भूल अर्थात् कृष्ण अर्जुन युद्ध (सन् १६३४, पृ० ६६), ले० . शाति प्रसाद

कर देते है ।

अभिनय—घना साहित्य-मदन द्वारा अभिनीत ।

भगवान् बुद्ध (सन् १६४७, पृ० ६४), *ले०* · सीताराम चतुर्वेदी; *प्र०* अखिल भारतीय विक्रम परिषद् काशी, *पात्र* पु० ६, स्त्री ४; *अक* : ३, *दृश्य* ३, ४, ३ ।
घटना-स्थल तपोवन, लुम्बिनीवन-सन्यासी-शिविर, एकान्तवन ।

भगवान् बुद्ध के जीवन पर आधारित पद्यात्मक सगीत नाटक हे। कथा का आरम्भ मायादेवी के स्वप्न से होता हे। लुम्बिनीवन मे गौतम के जन्म की सूचना मिलती है। वडे होकर गौतम यशोधरा को वरण करते है। उद्यान मे भ्रमण करते समय उन्हे देवदत्त के वाण से आहत पक्षी पर दया आ जाती है। वे उसे करुणा का दान देते हैं। छन्दक के साथ रथ मे वैठकर नगर-यात्रा करते है। वृद्ध, रोगी तथा मृतक को देखकर विराग जगता है। मुण्डित सिर सन्यासी को मार्ग मे देखकर उन्हे भी सन्यास धारण करने की लगन लग जाती है। सोती हुई यशोधरा और पुत्र को छोडकर चले जाते है। तपस्या करते है। मार, रति, अरति पर विजय प्राप्त करते है। सुजाता की खीर खाते है, तथा ज्ञान प्राप्त कर राज्य को लौट आते है। सभी को जीवन के सत्य ज्ञान का बोध कराते हुए यशोधरा तथा राहुल को भी अपने सघ मे ले लेते है।

भगवान् बुद्ध (सन् १६५४, पृ० १३६), *ले० :* ओकारनाथ दिनकर; *प्र०* . पायोनियर पब्लिशर्ज, दिल्ली, *पात्र :* पु० १६, स्त्री ७, *अक :* ३, *दृश्य* १८, ६, ७ .
घटना-स्थल · कपिल वस्तु राजप्रासाद, उद्यान, तपभूमि ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे सिद्धार्थ के जन्म से महाराजा की पुत्र-अभिलाषा की पूर्ति तो होती है किन्तु उनके चक्रवर्ती सम्राट् और महान् धर्मोपदेशक बनने की भविष्यवाणी राजा के लिए दुश्चिन्ता का विषय सिद्ध होती है। राजा राजकुमार के लिए सासारिक सुख-सुविधा की सारी व्यवस्था बना देता है। वह परम सौन्दर्यमयी भगवती यशोधरा को उसकी सहधर्मिणी चुनता है तो भी राजकुमार वैराग्य-भाव से इस क्षणिक सुख को त्याग देता है। सिद्धार्थ भ्रमण के समय वृद्ध मृतक, रोगी और संन्यासी को देखकर ससार मे दु.ख का कारण खोजने के लिए अपने आपको समर्पित कर देते है। वह गृह-त्याग करके समाधि लगाते है। एक दिन वोध-वृक्ष की छाया मे बुद्धत्व को प्राप्त करते है। नर-नारी उनके दर्शनार्थ उमट पडते है।

बुद्ध की अलौकिक प्रतिभा से ससार प्रभावित होता है। महाराज विम्वसार बौद्ध-धर्म की दीक्षा लेते है। देवदत, रम्भा आदि अपने कुटिल व्यवहार पर लज्जा अनुभव कर पाप-प्रक्षालन करते है। बुद्ध कपिल-वस्तु भी पहुँचते हे। सम्राट् परिवार-सहित उनका स्वागत करते हे। राहुल भी धर्म की दीक्षा लेता है। अत मे बुद्ध यशोधरा के पास पहुँचकर भिक्षा-पात्र सामने कर देते है। यशोधरा और शुद्धोधन भी बौद्ध-धर्म स्वीकार कर लेते है।

भगवान् शकराचार्य (सन् १६३४, पृ० १६६), ले० . मेलाराम त्रिपाठी, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, पात्र : पु० २०, स्त्री १२, *अक* · ३, *दृश्य* . ११, ८, ५ ।

यह एक दार्शनिक नाटक है। शकराचार्य द्वारा प्रतिपादित अद्वैतवाद सिद्धात की स्थापना ही इसका मुख्य उद्देश्य है। आत्मा-परमात्मा, माया-ब्रह्म आदि की ऐसी व्याख्या शकराचार्य करते है जिसे बौद्ध मतावलम्बी नही मानते । इसलिए वे शंकराचार्य की परीक्षा उन्हे विप पिलाकर, सर्प पकडवाकर करते है, जिसमे शकराचार्य सफल होते है। इस अलौकिक प्रभाव को देखकर बौद्ध-मतावलम्बी अपनी हार स्वीकार करते है तथा शकराचार्य की ब्रह्म-व्याख्या को ही सर्वोपरि मान उन्हे प्रतिष्ठा देते है।

भग्न प्राचीर (सन् १६७२, पृ० ११२) ले० : हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० . मानकचन्द, बुक डिपो,

आग्रह करते है पर राम ऐसा नही करते। राम और भरत के प्रेम-मिलन को इसमे उसी सहृदयता से दिखाया गया है जैसे मानस मे मिलता है।

भरथरी चरित्र (सन् १९३९, पृ० ४५), ले० सूर्यवली प्रसाद 'शाह', प्र० दूधनाथ पुस्तकालय प्रेस, ६३, जमुना लाल वजाज स्ट्रीट, कलकत्ता; पात्र · पु० ७, स्त्री ३; अक ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल राजमहल, जगल, आश्रम।

राजा भरथरी प्रजावत्सल, प्रेमी, दयालु और भोगी राजा अपनी पत्नी को बहुत प्यार करते है। एक दिन शिकार मे उन्होने एक हिरन को मारा। हिरनी राजा को शाप देती है जैसे मैं अपने हिरन के वियोग मे तडप रही हूँ वैसे ही तुम्हारे योगी बन जाने पर तुम्हारी रानी वियुक्त हो तड़पेगी। राजा पर प्रसन्न हो एक शिव-भक्त ब्राह्मण उन्हे अमृत फल खाने को देता है। राजा उस फल को स्वय न खाकर अपनी प्रियतमा रानी को देता है। रानी उसे रख देती है। गोरखनाथ भरथरी के यहाँ आते है और राजा को योगी बनने की शिक्षा देते है। राजा योग से भोग को श्रेष्ठ मान उनकी माँग अस्वीकार कर देता है। गोरखनाथ रानी से अमृत फल लेकर अपने प्रेमपाश मे बाँध उसकी पीठ पर कोडे की मार का निशान कर देते है। वह राजा के दरवार मे उपस्थित हो राजा को योग स्वीकार करने को कहते है। राजा के मना करने पर गोरखनाथ मिथ्या स्त्री-प्रेम तथा भोग की निस्सारता का प्रमाण अमृतफल और रानी की पीठ पर चाबुक का चिन्ह दिखाते है। राजा राज्य त्याग कर योगी बन जाते है। वह सर्वप्रथम रानी से भिक्षा माँगकर उसे माँ सम्बोधित करते है और योग तथा ज्ञान के प्रचारक बन जाते है।

भविष्यवाणी (सन् १९५७), ले० सेठ गोविन्ददास, प्र० भारती साहित्य मंदिर दिल्ली, पात्र पु० १०, स्त्री २, अक · ३; दृश्य १, ५, १।
घटना-स्थल . चाँदनी चौक मे तिमजला मकान, कमरे आँगन, कर्जन रोड पर भव्य भवन।

हास्य-रस प्रधान इस नाटक मे उन पुराने रूढिवादी मूर्खो का मजाक उडाया गया है जो ज्योतिष की भविष्यवाणियो, हस्त-रेखा-विज्ञान, सामुद्रिक, रमल या जन्मपत्रियो मे विश्वास करते है। ज्योतिषी सच्ची-झूठी वात कह देते है, विवेकहीन उन्ही पर विश्वास कर लेते है। दुख तो यह है कि अनेक समझदार और पढ़े-लिखे व्यक्ति अपना भविष्य जानने के लिए रुपया व्यर्थ नष्ट करते है और बुरी तरह ठगे जाते है।

इस नाटक का प्रमुख पात्र एक ज्योतिषी है जिसका नाम है, महर्षि भृगुकुलावतन्स, ज्योतिष-ज्योति, सामुद्रिकाचार्य, रमल-मार्त्तण्ड महापडित श्री १००८ भविष्यानंद जी महाराज। पण्डित शालिग्राम भविष्यानन्द के गिरोह मे है, जो भविष्य पूछने वालो के हाल का पता लाते है और आगे की वात झूठ-झूठ वताकर लोगो को मूर्ख वनाते है। नाटक मे पाँच वर्गो के प्रतिनिधियो की मूर्खताएँ चित्रित की गयी है। ठाकुर उमारमण-सिह एक जमीदार है, रायसाहव सेठ लक्ष्मीचन्द एक मारवाडी व्यापारी है, सरस्वतीचन्द्र एक गुजराती साहित्यिक है, आर० एन० मजूमदार एक विज्ञान का विद्यार्थी और सिख सरदार त्रिलोकसिंह है, जो एक ठेकेदार और राज्य सभा का सदस्य है।

ज्योतिषी जी सभी प्रश्नकर्त्ताओ को भिन्न-भिन्न बाते वतलाते है। सरस्वतीचन्द्र को उसकी भविष्यवाणी के अनुसार हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से पुरस्कार अवश्य मिलता है, पर शेप सबको वताई हुई बाते झूठ सावित होती है। ठाकुर उमरावसिंह अपने पुत्र की कुण्डली मिलवाने आये है। तीन जन्मपत्रियो मे से जिस कन्या से कुण्डली मिलती है, वह काली-कलूटी वदशक्ल निकलती है और विवाह होते-होते गडवडी हो जाती है। सेठ लक्ष्मीचन्द को रूई और चाँदी खरीदने की सलाह दी जाती है पर इस व्यापार मे सेठ को बहुत वडा घाटा पडता है। मजूमदार को वताया जाता है कि वह वी० एस-सी० मे तमाम युनिवर्सिटी मे प्रथम आयेगा, पर वह

फेल होता है। सरदार बहादुर तिरलोकसिंह अपने मरने की आयु पूछता है, पर वह भी झूठ-मूठ बता दी जाती है। तीसरे अक मे ये सब असतुष्ट व्यक्ति भविष्यानन्द से बदला लेने मार-पीट करने को दलबल सहित आते है, पर तब तक ज्योतिषी भी रफूचक्कर हो जाते है। इन सबको खूब धोखा लगता है। लक्ष्मीचन्द व्यापार मे बिगड जाते है और सरदार तिरलोकसिंह अपनी सारी जायदाद बॉट देते है और भिखारी-से बन जाते है। किराये के उस मकान मे, जहाँ ज्योतिषी जी रहते थे, खूब हल्ला होता है। एक बम फट जाता है और किवाडो को आग भी लगाई जाती है। बम की आवाज के कारण एक सब-इन्स्पेक्टर पुलिस कई जवानो सहित घटनास्थल पर पहुँच जाता है और उन्हे देखते ही भीड तितर-बितर हो जाती है।

इस प्रहसन मे अन्धविश्वास के कारण धोखा खाने वाले उन व्यक्तियो का खाका खीचा गया है, जो ज्योतिष, सामुद्रिक या रमल इत्यादि मे विश्वास करते है। अनपढ स्त्रियाँ तो इन भविष्यवक्ताओ का शिकार बनती ही है, पढे-लिखे सभ्य व्यक्ति, व्यापारी, ठेकेदार, विद्यार्थी और नेता इत्यादि भी इनके चगुल मे फँस जाते है।

भर्तृहरि निर्वेद (वि० १९६९, पृ० ४१), ले० धनेश मिश्र, प्र० कुमार छत्रपति सिंह, कालाकाकर, *पात्र* पु० ४, स्त्री २, *अक* ५, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल राजप्रासाद, बन।

इस नाटक मे राजा भर्तृहरि की कथा है। राजा रानी मे बहुत प्रेम है। राजा शिकार खेलने जाते है, और रानी के पास झूठी खबर भिजवा देते है कि उन्हे बाघ खा गया। यह धक्का असह्य होने से रानी मर जाती है। राजा वियोग मे पागल हो उठते है। बाबा गोरखनाथ उन्हे दार्शनिक ढग से वियोग से मुक्ति दिलाते है और राजा योगी होकर राजपाट त्याग देते है।

भर्तृहरि राजत्याग नाटक (सन् १८९८, पृ० २८), ले० कृष्णबलदेव वर्मा, प्र० भारतजीवन प्रेस, बनारस *पात्र* पु० ३, स्त्री २; *अक:* ३; *दृश्य* ' ८, ९, ६।
घटना-स्थल राजमहल, जंगल, आमश्र।

यह पौराणिक नाटक है इसमे राजा भर्तृहरि के राज्य त्याग की कथा नाटकीय ढग से बहुत विस्तार के साथ कही गई है।

भाई-भाई (सन् १९१७, पृ० ७९), ले० . चन्द्रकिशोर जैन; प्र० ' ठाकुर प्रसाद ऐण्ड सस, बुकसेलर, वाराणसी, *पात्र* पु० ११, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य :* ८, ८, ३।
घटना-स्थल युद्धक्षेत्र, मराठा, दरबार, अग्रेज शिविर।

यह एक शिक्षाप्रद ऐतिहासिक नाटक है। हिन्दू-मुसलमान भाई-भाई है यही इस से शिक्षा मिलती है। इसमे अलीवर्दी अफगान मुस्तफा खॉ मरहठो पर आक्रमण करके उनकी धज्जियाँ उडाता है। शाहजादे सिराज मरहठो की रक्षा और अफगानियो को बर्बाद करता है। पेशवा के प्रतिनिधि भास्कर राव बगाली मुसलमानो का सफाया करना चाहते है लेकिन एक हिन्दू-कन्या माधुरी अपनी तीव्र बुद्धि से भास्कर राव से मुसलमानो को बचा लेती है। अन्त मे सिराज शाहजादा हिन्दू-मुस्लिम को गले मिलाता है और भास्कर राव, तानाजी तथा मुस्तफा खाँ के अन्दर भ्रातृत्व भाव पैदा करता है। सभी विद्रोही अपनी भूल के लिए पश्चात्ताप करते है। अन्त मे सभी एक होकर अग्रेजो के ऊपर हमला करते है। इस प्रकार अग्रेजो के शिकजे से अपने प्यारे देश भारत को स्वतंत्र करते है।

भाई-भाई (सन् १९६९, पृ० ९३), ले० . हरिकृष्ण प्रेमी; प्र० : मानकचन्द बुक डिपो, सती दरवाजा, उज्जैन, *पात्र* . पु० ४, स्त्री ३; *अक* ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल राजप्रासाद, युद्धक्षेत्र।

मेवाड की कनिष्ठ राजमाता सूर्यकुमारी का पुत्र मोकल मेवाड का मनोनीत महाराणा है। सूर्यकुमारी का पिता रणमल अपने कुचक्रो से राजमहिषि के बड़े पुत्र चूडाजी को महल से निकाल देता है और छोटे पुत्र रघुजी की हत्या करवा देता है। मोकल की धाय माँ चमेली अपनी चतुरता से मोकल की रक्षा

करती है। दूसरी ओर चूडाजी मालव के सुलतान और मेवाड के भील सरदार की सहायता से रणमल के षड्यन्त्रो को विफल बनाकर मुकुल की रक्षा करते है। रणमल मरते समय अपने पापो को स्वीकार कर लेता है। अत मे सरदार ऊजला जी मोकल के मस्तक पर राजमुकुट रखते है और अपने अँगूठे के रक्त से उसका तिलक करते है।

भाई-विरोध या भाभी विलाप (सन् १६३७, पृ० २२), ले० भिखारी ठाकुर, प्र० दूधनाथ पुस्तकालय ऐण्ड सस, कलकत्ता, *पात्र* पु० ६, स्त्री ४, *अक-दृश्य-रहित*। *घटना-स्थल* गाँव की झोपडी।

इस सामाजिक नाटक मे पारिवारिक प्रेम और विरोध का मिश्रण है।

इसमे उपकारी, उपदर और उजागर तीन भाई है। विवाह से पूर्व तीनो भाई बडे प्रेम से एक घर मे रहते है किन्तु उपदर का विवाह हो जाने पर उसकी पत्नी सबसे अलग होने का आग्रह करती है। उसके कथन का प्रभाव पति पर इतना पडता है कि वह अपने बडे भाई उपकारी से अलग हो जाता है। उपदर की पत्नी अपने पति को उजागर की हत्या करने की प्रेरणा देती है और वह पत्नी की बात मानकर भाई की हत्या कर देता है।

उपदर की पत्नी सुन्दर वस्त्र और बहुमूल्य आभूषण के लिए पति को चोरी के लिए प्रेरित करती है। चोरी करने पर उपदर पकडा जाता है। उपदर की भाभी उपकारी की पत्नी अपने देवर के बन्दी होने पर बहुत दुखी होती है और पति को देवर के मुक्त कराने की प्रेरणा देती है। भाभी का विलाप इस नाटक का सबसे आकर्षक प्रसग है। जिस भाभी के साथ देवर ने दुर्व्यवहार किया था वही अन्त मे रक्षक सिद्ध होती है।

अभिनय-बिदेसिया शैली मे शताधिक गाँवो मे अभिनीत।

भाग्य चक्र (सन् १६४०, पृ० १५७), ले० : सुदर्शन; प्र० मोतीलाल बनारसीदास, सैयद मिट्ठा बाजार, लाहौर, *पात्र* पु० १०, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* ६, ११, ८।
घटना-स्थल . सडक, गगा का किनारा, नाटक कम्पनी।

यह एक सामाजिक नाटक है। पजाब के प्रसिद्ध लखपति हीरालाल अब एक गरीब किरायेदार है जिनके ऊपर नालिश करके मकान मालिक मकान खाली करा लेता है। हीरालाल का भाई शामलाल इस कारण रुष्ट है कि वसीयतनामे मे उन्होने सारी सम्पत्ति अपने बेटे के नाम कर ली और भाई को कुछ नही दिया। नगर का बदमाश शकर उसे समझाता है कि आजकल धर्मात्माओ को पूछता ही कौन है। अतः तुम भाई से बदला निकालो। शामलाल की पत्नी अपने पति को शकर दास नामक बदमाश से दूर रहने की प्रार्थना करती है, किन्तु वह उसी गुडे से मिलकर अपने भतीजे दलीप का अपहरण करवा देता है। उसकी पत्नी उसे बहुत कोसती है। बीस साल के बाद काशी से ५-६ मील की दूरी पर दलीप घायल पडा मिलता है। उसकी स्मरण शक्ति समाप्तप्राय हो जाती है। बीस साल तक वह एक भिखारी सूरदास के यहाँ पलता रहता है। उसका प्रेम इस अवधि मे रूपकुमारी नामक शिक्षिता युवती से हो जाता है। जब दलीप लाहौर लौटता है तो उसकी स्मृति और भी बिगड जाती है। सूरदास सपना देखता है कि उसका दलीप लौटकर आ गया है। इधर शामलाल-हीरालाल, दलीप, डाक्टर आदि काशी मे सूरदास के घर जाने वाले है। पुराना किरायेदार दुर्गादास साधु-वेश मे आशीर्वाद देता है। शामलाल उसे धन देना चाहता है पर वह स्वीकार नही करता। उसके आशीर्वाद से दलीप का मस्तिष्क ठीक होने लगता है। कालीदास नाटक कम्पनी का विज्ञापन बँटता है कि काशी का सूरदास लाहौर आ रहा है। अत काशी बिना गए ही कार्य-सिद्धि हो जाती है।

भादो की एक रात (सन् १६६३, पृ० ३२), ले० मनोहर प्रभाकर, प्र० कल्याणमल ऐण्ड सस, जयपुर, *पात्र* • पु० ८, स्त्री ३; *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल कस का बदीगृह।

'भादो की एक रात' एक लघु संगीत-रूपक है, जिसमे कृष्ण जन्म की चिर-प्रचलित पौराणिक कथा वर्णित है।

भायप (वि० २०१५, पृ० ११६), ले०. गुप्तवन्धु, प्र० : सर्वसुलभ साहित्य सदन, अश्वत्थामापुर, फतेहपुर, *पात्र* पु० १२, स्त्री ६, *अक* : ३, *दृश्य* : ५, ४, २।
घटना-स्थल : मार्ग, कोपभवन, सौधद्वार, कौशल्या भवन, गंगातट, पर्ण कुटी।

भ्रातृ-प्रेम की महिमा के लिए राम के जीवन की कथा ग्रहण की गई है। राम के राज्याभिषेक मे कैकयी के द्वारा विघ्न उपस्थित होता है। राम-लक्ष्मण और सीता वन को प्रस्थान करते है।

द्वितीय अंक मे भरत-शत्रुघ्न ननिहाल से लौटते है। राजतिलक के लिए आग्रह करने पर भरत राम के पास चित्रकूट पहुँचते है। तृतीयाक मे लक्ष्मण भरत पर रोष प्रकट करते है। पर राम उनको समझाते है। राम भरत का मिलन होता है। चित्रकूट मे अयोध्यावासी और भरत राम से लौटने का अनुरोध करते है। पर राम सबको भली प्रकार समझा देते है। राम की अनुपस्थिति मे राजकाज चलाने को भरत सहमत हो जाते है। राम के वन मे रहने पर वनवासी उल्लास का प्रदर्शन करते है।

भारत-आरत (सन् १८८२, पृ० २४), ले० : खड्ग बहादुरमल्ल, प्र० खड्ग विलास, प्रेस, पटना *पात्र* पु० ५, स्त्री; *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल : विद्यालय, कोतवाली।

इसके प्रमुख पात्र विद्यार्थी है जो तत्कालीन अँग्रेजी राज्य की तीव्र आलोचना करते है। एक छात्र जब अँग्रेजी राज्य के कर्मचारियो की आलोचना करता है और अपने देश की दुर्दशा का कारण अँग्रेजी राज्य को घोपित करता है तो उसे राज-विद्रोह के अपराध मे कोतवाल बदी वना लेता है। विद्यार्थी अपने को निर्दोप सिद्ध करने के लिए अँग्रेज अफसर से कहता है कि राजा का धर्म है कि वह प्रजा की कप्ट-कहानी को सुनकर उसका निवारण करे। हम विद्रोही नही राजभक्त है। हमारे दु ख निवारण करने के स्थान पर आप हमे वन्दी वना रहे है। क्या यही राजधर्म है ?

भारत का आधुनिक समाज (वि० १९८३, पृ० ७२), ले० , वैजनाथ चावल वाला; प्र० : कुजीलाल गुप्त, नयागंज, कानपुर; *पात्र* : पु० १८, स्त्री४ ; *अक* : ३; *दृश्य* : ८, ८, ८।
घटना-स्थल . गाँव, नगर।

प्रस्तुत नाटक मे दिखाया गया है कि तत्कालीन भारत के सभी समाज किस प्रकार विशृंखल हो रहे है तथा वे अपने किये कुकर्मो को किस प्रकार छिपाकर निर्दोप वनना चाहते है। नाटक का मुख्य नायक आदर्श पात्र है। इसके द्वारा समाज के पुरुषो और कुमार्गियो को सदाचार का मार्ग दिखाया गया है।

भारत-उद्धार अर्थात् धर्म-विजय (सन् १९२२, पृ० १२७), ले० : लाला किशनचन्द 'जेवा', प्र० : ज्योति प्रसाद गुप्त, नई सडक, दिल्ली, *पात्र* : पु० १६, स्त्री ७; *अक* : ३, *दृश्य* : १८।
घटना-स्थल : दरवार, आश्रम।

इस नाटक मे भक्त प्रह्लाद तथा हिरण्यकशिपु की पौराणिक कथा है। पाप का परिणाम नैराश्य और सत्यानाश है। लोहे के गर्म दहकते हुए स्तम्भ को पकडने के लिए प्रह्लाद को हुक्म दिया जाता है। वह सत्य मार्ग मे एक ही पग उठाता है कि स्तम्भ फट जाता है और परमात्मा नृसिंह रूप से हिरण्यकशिपु का अन्त कर देते है। इस प्रकार पाप का नाश और धर्म की जय होती है।

भारत-गौरव (सन् १९२२, पृ० २०२), ले० : जिनेश्वर प्रसाद, 'मापल', प्र० : भारतीय पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, *पात्र* पु० १६, स्त्री ७; *अक* : ३; *दृश्य* : ७, ४, ८।
घटना-स्थल : झेलम नदी का किनारा।

यह ऐतिहासिक नाटक है। इसमे विश्वप्रसिद्ध सिकन्दर और भारत के सम्राट् चन्द्रगुप्त की कथा है। सिकन्दर अपनी सेना के साथ अपने देश वापस लौटना चाहता है, उसी समय उसकी सेना मे सैन्य-कला सीख रहा एक भारतीय सिपाही चन्द्रगुप्त सिकन्दर के समक्ष जासूसी के आरोप मे उपस्थित किया जाता है। कारण पूछने पर वह प्रकट करता

है कि वह जासूसी न कर यूनानी सैन्य विधियाँ ताडपत्र पर अंकित कर रहा था ताकि वह अपने पिता पर अत्याचार करने वाले राजा धननन्द से बदला ले सके। आगे चलकर धननन्द के भोज मे अपमानित होकर चाणक्य उसके विनाश की शपथ लेता है और चन्द्रगुप्त की सहायता से धननन्द पर विजय प्राप्त कर उसे वन्दी वना लेता है। इस प्रकार चन्द्रगुप्त और चाणक्य दोनो की प्रतिज्ञा पूरी होती है। इसके वाद सिकन्दर की मृत्यु के उपरान्त सेल्यूकस भारत पर हमला करता है परन्तु उसकी हार होती है। सेल्यूकस वन्दी वनाया जाता है। चन्द्रगुप्त उसे विना किसी दण्ड के स्वतन्त्र कर देता है और सेल्यूकस की वेटी हेलेन से विवाह कर लेता है।

भारत छोड़ो (सन् १९४७, पृ० ९५), ले० : राधाकृष्ण, प्र० · भोलानाथ 'विमल', पुस्तक जगत, पटना; *पात्र* : पु० १०, स्त्री ३; *अक-दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल : सडक, वन, सभा।

यह एक राजनीतिक नाटक है। जैसा कि नाम से ज्ञात है, ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध देशवासियो के 'भारत छोडो' आन्दोलन का नाटकीय रूप है।

भारत जननी (सन् १८८७, पृ० १२), ले० : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्र० : खड्ग विलास प्रेस, वाँकीपुर, *पात्र* . पु० ४, स्त्री १; *अक-दृश्य रहित* ।
घटना-स्थल : वडा भारी खडहर।

वंग भाषा की 'भारत माता' नाटिका के अनुसार भारतेन्दु वावू ने इस लघु नाटक मे तत्कालीन भारत की दुर्दशा का चित्रण किया है। टूटे देवालय मे मलिन वसना भारत जननी निद्रित दशा मे वैठी है एवं पास ही भारत सपूत सो रहे हैं। सर्वप्रथम भारत-सरस्वती भारत-जननी को सम्वोधित करती हुई गाती है जिसमे वह प्राचीन भारतीयो के ज्ञान एवं विद्या की सर्वोच्च स्थिति का वखान करते हुए पूछती है "कहो क्यो वुद्धि गुन ज्ञान नसाई' एव यह भी वता देती है कि यवन मुझे ले जा रहे है—पुर्नमिलन असभव है। तत्पश्चात् भारत-दुर्गा का प्रवेश होता है जो प्राचीन शौर्य का स्मरण कराती है एव पूछती है कि इस प्राचीन वीर भूमि की वीरता कहाँ चली गयी। प्रस्थान करते हुए वह कहती है कि अव मै परदेश गमन कर रही हूँ; अव मिलन असंभव है। इसके वाद भारत-लक्ष्मी का प्रवेश होता है—वह कहती है कि अव चूँकि भारत सतान उद्यम नही करती अत मैं जलधि के पार जा रही हूँ। यह सुनकर भारत जननी की आँखे खुलती हैं। पश्चात्ताप करते हुए वह अपनी सतानो को जगाती है। सभी पुत्र जो अकर्मण्य एव आलसी हो चुके हैं, उद्यम करने मे असमर्थता दिखाते है। तभी धैर्य का प्रवेश होता है जो भारत जननी को धैर्य धारण करने की प्रार्थना करता है। भारत-जननी परम-पिता से अपनी सतान के लिए वैभव एव कला-कौशल के वर प्रदान की प्रार्थना करती है।

भारत डिम डिम (सन् १९११, पृ० ८०), ले० · जगत नारायण, प्र० गोरक्षा पुस्तकालय, दशाश्वमेध, वनारस; *पात्र* · पु० २५, स्त्री ३; *अक* · ४, *दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल . ग्राम।

नाटक मे गौ की सेवा ही प्रधान विषय है। गौ का स्थान सर्वश्रेष्ठ है, यह वताया गया है। कलियुग मे गौ की हत्या के विरुद्ध कदम उठाने और गौ-रक्षा धर्म पालन का उपदेश दिया गया है।

भारत-दर्पण या कौमी तलवार (सन् १९२२, पृ० १५८), ले० · लाला कृष्ण चन्द्र, 'जेवा'; प्र० लाजपतराय पृथ्वीराज साहनी, पुस्तक विक्रेता, लोहारी दरवाजा, लाहौर, *पात्र* : पु० १४, स्त्री ४; *अक* . ३, *दृश्य* : ६, ७, ४।
घटना-स्थल . भारत।

नाटक का उद्देश्य सोये हुए भारतीयो में पुनर्जीवन का सदेश देना है, जिसमे ये भारतीय परतंत्रता की वेडियो को काट स्वतंत्रता की ओर अग्रसर हो सके। नाटक के पात्रो में

पजाब केसरी लाला लाजपतराय और महात्मा गाधी का नाम प्रमुख है। महात्मा गाधी भारतीयो को विदेशी सरकार से असहयोग व सत्याग्रह जैसे आत्मिक शस्त्र देते है। इन्ही का महत्त्व नाटक मे दर्शाया गया है।

भारत दशा (सन् १९१९, पृ० ८०), ले० : 'दास', प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, बनारस, *पात्र* पु० ६, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* : ७, ७, ५।
घटना-स्थल गाँव, विवाह, मडप।

इस सामाजिक नाटक मे आज के समाज का चित्र देखने को मिलता है। इसमे विश्वनाथ दहेज-प्रथा तथा अपने भाई रघुनाथ सिह के जुल्मो से दब जाता है। रघुनाथ सिह सेठ-गगा प्रसाद की सहायता से विश्वनाथ का हल छीन लेता है तथा रूपवती का विवाह गगा प्रसाद के साथ कराना चाहता है। रूपवती एक सुदृढ, गुणवती युवती है जो प्रेमदास की मदद से गगा प्रसाद को अच्छे रास्ते का ज्ञान कराती है। दयानन्द एक दयावान् व्यक्ति है जो विश्वनाथ की हर दु ख-सुख मे सहायता करता है। रहीम खाँ जाति का मुसलमान होते हुए भी अपने मालिक विश्वनाथ के प्रति अपने प्राणो की बाजी लगाकर हिन्दू-मुस्लिम की एकता का अच्छा परिचय देता है। अन्त मे रघुनाथ सिह अपने किए हुए पापो का प्रायश्चित्त करता है। युवती कन्या की दयानन्द के पुत्र प्रेमनाथ के साथ शादी हो जाती है।

भारत दुर्दशा (सन् १९२१, पृ० ४२), ले० प्रताप नारायण मिश्र, *पात्र* : पु० ३, स्त्री २; *अक* ३, *दृश्य* : ४।
घटना-स्थल शयनकक्ष, युद्धक्षेत्र।

इस नाटक मे प्रतीक शैली द्वारा परतत्र भारत की समस्याओ का चित्रण किया गया है। नाटक का नायक भारत स्वप्न मे देश पर कलियुग का आतक देखता है। पत्नी विद्या उसे जगाती है। भारत कलियुग के भयानक आक्रमण का प्रतिरोध करता है। राष्ट्रीय युवा वर्ग विद्या का तिरस्कार करता है और आलस्य की विशेषता सुन उसके प्रति आकर्पित होता है। भारत युद्ध मे प्रबल आघात खाकर मूर्छितावस्था मे निश्चेष्ट पड जाता है। प्रजा के समस्त वर्गो के प्रतिनिधि उसे चैतन्य करने का उपाय करते है। वहाँ भी वर्गीय मत-विरोध तीव्रता से प्रकट होता है। आर्थिक कठिनाई के कारण भिन्न-भिन्न समुदाय भिन्न-भिन्न उपाय सुझाते है। किन्तु सकीर्ण प्रवृत्ति, पारस्परिक कलह और विरोध का रूप धारण कर लेती है। कलियुग उसी समय आक्रमण कर ईसाई, मुसलमान और बगाली को वन्दी बनाता है। शेष बच निकलते है। पारस्परिक फूट का ताडव दुर्दशा मे परिणत हो जाता है।

भारत दुर्दशा (सन् १८९५, पृ० ४८), ले० भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्र० पुरुषोत्तमदास मोदी एम० ए०, मोतीलाल मोदी ऐण्ड सस गोरखपुर, *पात्र* पु० ७, स्त्री ३; *अक* : ६, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल भग्न मन्दिर, सुसज्जित कक्ष, तपोवन का प्रान्त।

इस नाटक मे प्राचीन भारतीय गौरव एव पराधीन भारत की दुर्दशा का प्रतीक शैली मे चित्रण किया गया है। एक योगी भारत की प्राचीन महती परम्परा का स्मरण कर वर्तमान दुर्दशा के प्रति क्षोभ प्रकट करता है। सुनसान भग्न मन्दिर मे कुत्ते, कौवे, और स्यारो के साम्राज्य मे भारत प्रवेश करके डूबती नाव की रक्षा के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हुआ मूर्छित हो जाता है। उसे आशा उठाकर ले जाती है।

भारत दुर्दैव अपना राक्षसी गीत गाते हुए सत्यानाशी फौजदार को भारत राष्ट्र पर आक्रमण का आदेश देता है। फौजदार भारतीय समाज मे कुरीतियो का कुचक्र पहले ही फैला देता है। सतोष, अपव्यय, कचहरी, फैशन और सिफारिश की सेना से भारत पर विजय-पताका फहरा कर आनन्द का अनुभव करता है। आधुनिक सज्जा से सुसज्जित कक्ष मे विराजमान विजयी भारत-दुर्दैव, रोग, आलस्य, मदिरा तथा अन्धकार का देश मे

प्रसार करने की आज्ञा देता है। भारत इन आपदाओ मे निमज्जित हो जाता है। किताब-खाने के भारतीय अध्यक्ष की अध्यक्षता मे बगाली, महाराष्ट्री, एडीटर, कवि आदि भारत की रक्षा के लिए अपने-अपने विचार प्रकट करते है। इसी समय देशद्रोह पुलिस वर्दी मे प्रकट होकर इन्हे बन्दी बना लेता है।

गम्भीर वन के प्रागण मे एक वृक्ष के नीचे भारत निस्पन्द पडा है। भारत-भाग्य प्राचीन योद्धाओ, महात्माओ की गाथा सुनाकर भारत को जगाने का प्रयत्न करता है। वह भारत की तत्कालीन दुर्दशा का चित्रण भी करता है।

भारत पराजय (सन् १६०८, पृ० ७६), ले० हरिहर प्रसाद, प्र० . अग्रवाल प्रेस, गया, पात्र · पु० १४, स्त्री ७; अक . ५, दृश्य ४, ६, ४, ४, ४।
घटना-स्थल : बागीचा, महल, दरबार, नदी का किनारा, कारागार।

यह ऐतिहासिक नाटक है। इसमे पृथ्वीराज और मुहम्मद गोरी की कथा है। पृथ्वीराज के मत्री का पुत्र विजयसिह छल करता है। युद्ध मे पृथ्वीराज हारते है और हीरे की अपनी अँगूठी चाट कर मर जाते है। विजयसिंह शर्त के अनुसार मुहम्मद गोरी से अपने लिए राज्य माँगने जाता है और गोरी उसके कुकृत्यो पर फटकार कर उसे मृत्यु-दण्ड देता है।

भारत माता (सन् १६८४, पृ० ३६), ले० . राधेश्याम कथा वाचक, प्र० श्री राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली; पात्र : पु० ५, स्त्री १; *अक-रहित, दृश्य :* ३।
घटना-स्थल · सभागृह, शयनकक्ष।

प्रस्तुत नाटक 'भारत माता' मे भारत का उस समय का चित्र खीचा गया है जब कि देश ब्रिटिश शासनाधीन था। नाटक मे भारत माता एक पात्र है जिसे जगाने का अर्थात् उन्नति की ओर अग्रसर करने का प्रयत्न किया गया है। इसके अतिरिक्त नाटक में राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, दादा भाई नैरोजी, स्वामी दयानन्द आदि भी पात्र रूप मे है। धर्म को भी पात्र का रूप दिया गया है।

भारत माता (सन् १६५७, पृ० ११६), ले० : रघुवीर शरण मित्र, प्र० : भारतीय साहित्य प्रकाशन, स्वराज्य पथ, सदर मेरठ, *अक ·* ३, *दृश्य* ८, ७, ७, ।
घटना-स्थल मैदान, बगाल, बाग, पहाडी और जलाशय।

प्रस्तुत नाटक अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद, सरदार भगतसिह, यतीन्द्रनाथ दास, राजगुरु, सुखदेव आदि वीर दिवगत आत्माओ के जीवन-चरित्र को लेकर लिखा गया है।

विदेशी सरकार के बर्बर अत्याचार, शोषण एव हिंसक दमन नीति, 'भारत माँ' के लाल चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिह, राजगुरु आदि की गुप्त बैठक, जालिम साडर्स की हत्या, असेम्बली भवन मे बम-विस्फोट तथा भगतसिह, सुखदेव, राजगुरु की गिरफ्तारी तथा फाँसी को नाटकीय ढग से दिखाया गया है।

चन्द्रशेखर आजाद की चिता पर माता, पिता, बहन एव भावी पत्नी का करुण क्रन्दन सुनाई पडता है। स्वतन्त्रता सग्राम मे पूर्णाहुति देने के लिए कटिबद्ध होना, आजाद हिन्द के जनरल हिम्मत सिह, अकबर खाँ आदि वीरो का त्याग, अग्रेजो का विवश होकर भारत को स्वतन्त्र करना, राजनैतिक बदियो की मुक्ति, स्वतन्त्र भारत मे उल्लास और उत्सव किन्तु बलिदान होने वाले देशभक्तो की विधवाओ के रुदन का चित्रण हुआ है।

भारत रमणी (सन् १६२६, पृ० ११८), ले० हिन्दी के दो प्रसिद्ध नाटककार, प्र० : उपन्यास बहार आफिस काशी, बनारस, *पात्र* पु० १४, स्त्री ६, *अक :* ३, *दृश्य ·* ८, ६, ५।
घटना-स्थल रंगमच, जगल, नदी, रास्ता, बैठक, महल, बारहदरी, एकान्त महल, लग्न मडप, झोपडी, दरबार।

भारत रमणी नाटक भारतीय नारी के

आदर्श पर प्रकाश डालता है। प्रधान की कन्या रोहिणी का सम्बन्ध राजकुमार चन्द्रकान्त से होना स्थिर होता है, परन्तु आखेट मे निकले चन्द्रकान्त की नजर अचानक ऋपि-कन्या शान्ता पर पड जाती है। शान्ता को देखते ही वह अपना हृदय हार वैठता है और उसके पिता ऋपि राज का आशीर्वाद लेकर उसे अपनी परिणीता वना लेता है। रोहिणी इस समाचार से अत्यन्त क्षुब्ध होती है, उसका हृदय प्रतिहिंसा की आग से धधक उठता है। चन्द्रकान्त और शान्ता मे विद्रोह उत्पन्न करने के लिए वह तान्त्रिक को सहारा लेती है। तान्त्रिक अपने तन्त्र-वल से शान्ता को शिशु-घातिनी सिद्ध कर दता है। चन्द्रकात अपने लाख प्रयत्नो के वावजूद भा उसे निर्दोष सावित नही कर पाता और राजा तंत्र के भ्रम मे निरपराध शान्ता को मौत की सजा दे देते है। शान्ता को हत्या के लिए जगल ले जाया जाता है परन्तु जल्लाद को दया आ जाती है। और वह उसे जीवित ही छोड देता है। रोहिणी एव चन्द्रकात के विवाह की चर्चा पुन प्रारम्भ होती है परन्तु चन्द्रकात शान्ता को अपने हृदय से नही निकाल पाता। शान्ता पुरुप का रूप धारण कर चन्द्रकात से मित्र-सबध स्थापित करती है तथा स्वय को शान्ता का भाई वताकर उसे समझाती रहती है एव रोहिणी से शादी के लिए राजी कर लेती है, रोहिणी से विवाह हो जाने के उपरान्त भी चन्द्रकात उसे पूरी तरह अपना नही पाता। रोहिणी पति की उदासीनता का कारण समझते हुए अपने कर्म पर पश्चात्ताप करती है। पश्चात्ताप की अग्नि जव असह्य हो उठती है तव रोहिणी राजा के सामने अपराध स्वीकार कर शान्ता को निर्दोप सिद्ध कर देती है। तभी तान्त्रिक और शान्ता भी प्रकट होते है। तान्त्रिक अपने कुकर्म के फलस्वरूप कोढी हो जाता है। तान्त्रिक के स्पष्टीकरण से रोहिणी भी वच जाती है। अन्त मे शान्ता और चन्द्रकान्त का मिलन हो जाता है।

भारत रमणी (सन् १९०८, पृ० १०८), ले० आगा मुहम्मदशाह काश्मीरी, प्र० ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स, बुकसेलर, वाराणसी, *पात्र* पु० ८, स्त्री ८; *अंक* : ३, *दृश्य* : ८, ६, ५। *घटना-स्थल* : जगल, नदी, वनमार्ग, मदिर।

यह एक शिक्षाप्रद सामाजिक नाटक है। इसमे भारतीय रमणी ऋषि-पुत्री शान्ता की सुशीलता, बुद्धिमत्ता तथा कार्य-कुशलता की झाँकियाँ देखने को मिलती है। शान्ता के ऊपर वाल-वध का झूठा आरोप तान्त्रिक द्वारा लगाया जाता है। अत. राजा उसे मृत्यु दड देता है। जगल मे शान्ता जल्लादो द्वारा जीवित छोड दी जाती है। रोहिणी चन्द्रकात से शादी करना चाहती है। शान्ता के निकाल दिये जाने पर रोहिणी की चन्द्रकात के साथ शादी हो जाती है। अन्त मे रोहिणी शान्ता के ऊपर लगाये गये आरोप का रहस्य खोलकर अपने को अपराधी मान लेती है। जब राजा द्वारा रोहिणी और तान्त्रिक को मृत्यु दड दिया जाता है तो शान्ता अपने वास्तविक रूप मे प्रकट होकर रोहिणी और तान्त्रिक के प्राणो की रक्षा करती है। अन्त मे रोहिणी और शान्ता दोनो साथ-साथ चन्द्रकात के साथ अपना सुखमय जीवन व्यतीत करती है।

भारत रहस्य (वि० १९७१, पृ० ८२), ले० · राधामोहन गोस्वामी, प्र० . गोस्वामी राधामोहन शर्मा, चित्तीखाना, आगरा, *पात्र* . पु० ५, स्त्री ७, परिच्छेद ७।
घटना-स्थल राज सभा, कलियुग का सिंहासन, रमरगिया उद्यान।

नाटक के प्रारम्भ मे सरस्वती और भारत-माता का वार्तालाप होता है। भारत माता ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र नामक अपने चारो वेटो के दुर्गुणो का वर्णन करके दु खी होती है। सरस्वती समझाती है कि चारो वेद आन की रक्षा करेगे। कलियुग की अर्द्धागिनी मदिरा-देवी लाल रग की साडी पहने वैठी है और कुल-पुरोहित दुर्व्यसन देव कुमति भार्या के साथ विराजमान है। अधर्म नामक मन्त्री विद्यमान है। सव मिलकर भारत को कलुपित करने की योजना वनाते है। अलखनदा के तट पर धर्म-कर्म ऋपियो के वेप मे आते है, और लक्ष्मी मे सवका वार्तालाप होता है। अय्याश खा, शैतान खा, वदगुमान खा भारत को नष्ट करने की योजना वनाते है। अन्त मे सरस्वती, भक्ति,

लक्ष्मी, वेद-पुराण, धर्म-कर्म, धृति-स्मृति करुणा, नव ऋद्धि, अष्टसिद्धि, महात्मा आदि दुखी भारत माता को अपने साथ लिए भारतोद्धार की चेष्टा से श्री वैकुठलोक की ओर चले जाते है। विष्णु भगवान् प्रसन्न होकर भारतोद्धार की आज्ञा देकर अन्तर्धान हो जाते है। देवसमाज जय-जयकार करता है।

भारतवर्ष (सन् १९०६, पृ० १११), *ले० :* दुर्गा प्रसाद गुप्त, *प्र० .* उपन्यास वहार आफिस, काशी, *पात्र* पु० ११, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* ५, ५, ३।
घटना-स्थल . मकान, आनन्द भवन, गौशाला।

यह एक राष्ट्रीय नाटक है जिसमे भारतमाता देश का कल्याण-मार्ग वताती हुई कहती है कि जव तक भारत मे विश्व-प्रेम का भाव न फैलेगा और ऊँच-नीच के अभिमान का भाव न जायगा, तव तक ईर्ष्या-द्वेष का नाश नही हो सकता। इस नाटक मे धर्मदत्त नामक व्यक्ति एक मुसलमान लडके अहमद को पालता है। धर्मदत्त का अपना लडका गणेशदत्त अपना चरित्र गिराता जाता है। अहमद उसके उत्थान पर तुला है।

भारतवर्ष, (सन् १९२७, पृ० १२६), *ले० .* हरिहरशरण मिश्र, *प्र०* सूर्यकमल ग्रथमाला कार्यालय, लखनऊ, *पात्र :* पु०, स्त्री, *अक* ३, *दृश्य .* ७, ६, ६।
घटना-स्थल : काशी गगातट।

नाटक का प्रारम्भ कारुणिक द्वारा भारत के अतीत के स्मरण से होता हे। कारुणिक देश की वर्तमान दशा की तुलना अतीत से करते हुए सोच रहे है कि अतीत अपने गौरवमय प्रकाश से आलोकित था किन्तु आज न तो पडितो मे पाडित्य रहा और न शूरवीरो की तलवार मे तेज। व्यापारी वर्ग भी अपनी हीनता और गरीवी को कोस रहे है।

कारुणिक के चरित्र से प्रभावित होकर कादिर हिन्दू वन जाते हैं। कादिर कारुणिक की हत्या का षड्यन्त्र रचने वाले अब्दुल और अफजल को समझाते है। अब्दुल धन का लोभ देकर पूर्णानन्द को मुसलमान वनाता है। ये तीनो दुष्ट कारुणिक और कादिर की हत्या करना चाहते है लेकिन पकडे जाते है। कारुणिक दया करके इन्हे छुडवा देता हे। इधर करोडीमल भी विदेशी फैशन-परस्ती का राग अलापते-अलापते कौसिल का सदस्य वनने के लिए कर्ज लेने पर भगवान् मेठ के चगुल मे फँस जाते है। अन्त मे उनके हृदय मे भारतीयता की आग जलती है। कारुणिक के चरित्र से प्रभावित करोडीमल की पत्नी धनीमानी सेठ भगवान् की पुत्री से अपने पुत्र की शादी का प्रस्ताव ठुकरा कर सच्चरित्रा वालविधवा मालती के साथ विवाह निश्चित करती है। प्रारम्भ मे इस विवाह का विरोध करने वाले करोडीमल भी कारुणिक की शरण मे आ जाते है। पूरन खा, अब्दुल और अफजल भी अपने कुकृत्यो, हिंसक तथा नीच कर्मो को त्यागकर कारुणिक की शरण मे आते है।

भारतवर्ष और कलि (सन् १८७६, पृ० ८०), *ले०* धनजय भट्ट, *प्र०* भारतेन्दु चन्द्रिका पत्रिका, *पात्र :* पु० ४, स्त्री २, *अक-दृश्य-रहित।*

यह एक प्रतीक नाटक है। इसमे अग्रेजी शासन के समय मे होने वाली दुर्दशा का चित्रण किया गया है। कलि अग्रेजी शासन का प्रतीक है। कलि, अपनी स्थिति मे समूचे भारत मे अपने दमन तथा अत्याचारपूर्ण आधिपत्य से उत्पन्न अव्यवस्था और भारतीयो की तत्कालीन दीनता पर आत्मगौरव अनुभव करता हुआ एक लम्वा वक्तव्य देता है इसी अवसर पर पीडित वूढे भारत का रुदन सुनाई पडता है, कलि उसके निकट जाकर उसे और भी पीडित करने की चेष्टा करता हे। भारत अपनी तत्कालीन स्थिति पर विलाप करता है। इसी समय उसकी दोनो स्त्रियाँ सरस्वती और लक्ष्मी रगमच पर प्रवेश करती है। सरस्वती और लक्ष्मी आलस्य, उद्यमहीनता, अनुत्साह, सकीर्णता, दुर्व्यसन, अशिक्षा, मूर्खता, कुचाल आदि के कारण उपस्थित दुर्दशा का उल्लेख करती है जिसे कलि अपना गौरव मानता हुआ अट्टहास करता है और इसी क्रम मे वह रगमंच से विदा हो जाता है।

भारत विजय (सन् १६०६, पृ० १६), ले० · कन्हैयालाल मास्टर, प्र० : मुशी मूलचन्द, लढी मुहाल, कानपुर; पात्र स्त्री २ *अक-दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल . खुला मैदान ।

इस नाटक मे क्रमवद्ध घटनाओ का पद्यात्मक वर्णन है। गद्य का प्रयोग नही है। इक्कीस पदो मे पूरी घटना है। विषय इस प्रकार है—चटकीली ओर सीधी-सादी दो स्त्रियाँ है इन्ही मे प्रश्नोत्तर होता है। चटकीली भारत आती है भारतवासियो पर उसका असर होता है। भारतवासी उसे अपनी सीधी-सादी (सादी पात्रा) की दशा दिखलाते है। और वे चटकीली को पूर्णतया अपना लेते है। सीधी-सादी यहाँ बहुत टिकने का प्रयत्न करती है पर वह असफल होती है तथा परमात्मा और सरकार को धन्यवाद दे विश्राम ले लेती है। चटकीली भारत पर विजय प्राप्त कर लेती है।

भारत विजय (सन् १६२२, पृ०१००), ले० गोकुलदास वैश्य, प्र० · दिल्ली नेशनल बुक डिपो, *पात्र* पु० ५, स्त्री २, *अक* २, *दृश्य* · ३।
घटना-स्थल (देश भक्त भगत लाल सिंह का मदिर।

यह एक सामाजिक नाटक है। इसमे मद्यपान की बुराइयो का चित्रण है। राज्य की सुरक्षा के प्रहरी सैनिक मद्यपान मे उन्मत्त रहते हैं। राज्य और प्रजा की रक्षा के स्थान पर मद्यप सिपाही कुपथ का अनुसरण करते है। वे स्वय के पतन का कारण बनते है और समाज की इस व्यापक बुराई को शिक्षाप्रद ढग से प्रस्तुत करते है।

भारत विजय (सन् १६५०, पृ० १५६), ले० . दशरथ ओझा, प्र० सरकार ब्रदर्स, दिल्ली, *पात्र* पु० २०, स्त्री १०, *अक* ५, *दृश्य* ३, २, २, ३, २।
घटना-स्थल मथुरा, युद्ध-भूमि, अहिछत्र, राजभवन।

आर्यावर्त्त के यशस्वी सम्राट् समुद्रगुप्त की विजय गाथाओ पर आधारित नाटक है। कथारम्भ मथुरा पर विदेशी अधिकार की सूचना से होता है। मथुरा के यौधेयराज की घोर विपत्ति मे समुद्रगुप्त सहायता करते हुए शको को वहाँ से खदेड देते है। मथुरा की राजकुमारी द्वारा समुद्रगुप्त से विवाह करने की इच्छा व्यक्त करने पर भी, वे राष्ट्रीय रक्षा के महत्त्व की घोषणा करते हुए बात टाल जाते है। मथुरा से लौटने पर समुद्रगुप्त से ज्ञात होता है कि उनके पिता (चन्द्रगुप्त प्रथम) को वाकाटको ने बन्दी बना लिया है। शीघ्र ही वह युद्ध के द्वारा पिता को मुक्त करा लेते है। युद्ध-शिविर मे समुद्रगुप्त के पिता उनको अपना उत्तराधिकारी घोषित करते हुए सन्यास धारण कर लेते है। पर अहिछत्र की राजमहिषी समुद्रगुप्त को राजलोभी कहकर धिक्कारती हुई कल्याण वर्मा को राज्य देने के लिए कहती है। समुद्रगुप्त का कहना है कि राज दिया नही जाता, पुरुषार्थ से प्राप्त किया जाता है। क्रोधित रानी कल्याण वर्मा को लेकर मगध पर चढाई कर देती है तथा समुद्रगुप्त के छोटे भाई कच को भी अपनी ओर मिला लेती है। समुद्रगुप्त इस विषम परिस्थिति मे भी विजय प्राप्त करते है। इधर वसुबन्धु के प्रयत्नो से दक्षिणापथ के सभी राजा समुद्रगुप्त से सन्धि कर लेते है तथा इस सन्धि मे उनका प्रस्ताव है कि दक्षिणापथ की राजकुमारी ही साम्राज्ञी होगी। प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए समुद्रगुप्त उसे साम्राज्ञी बना देते है। अपनी सौतेली माँ को राजमहिषी, कच को मगध का राजा तथा स्वय को वहाँ का सैनिक मानकर उनके ही नाम का सिक्का चलाते है। समुद्रगुप्त की सहृयता देखकर अहिछत्र की राजमहिषी कल्याणवर्मा से रुष्ट होकर समुद्रगुप्त से मिल जाती है, क्योकि समुद्रगुप्त का शत्रु बना कल्याणवर्मा शक राजा से मिल जाता है। आक्रमणकारी शको की पराजय होती है। इस प्रकार अखण्ड आर्यावर्त्त समुद्रगुप्त के झण्डे के नीचे आ जाता है। अन्त मे योगिराज शिवानन्द की इच्छा से तथा रानी के आग्रह पर समुद्रगुप्त भिक्षुणी प्रेमिका से विवाह करते है। सस्कृति-समन्वय मे महायान

वसुवन्धु और शिवोपासक शिवानन्द का सराहनीय योग रहता है।

भारत सौभाग्य (सन् १८८३, पृ० ४७), ले० · अम्बिकादत्त व्यास, प्र० खड्ग विलास प्रेस, वाकीरपु पटना; पात्र : पु० ७, स्त्री १०, अक-रहित, दृश्य ४।
घटना-स्थल खुला मैदान।

महारानी विक्टोरिया के पचास वर्ष अखण्ड राज्य करने के महोत्सव पर लिखा गया नाटक है। यह प्रतीकात्मक नाटक है। भारत दुर्भाग्य, विषय-भोग, प्रताप उत्साह, शिल्प, मूर्खता, फूट, शिक्षा, एकता आदि को पात्र बनाकर इनके माध्यम से तत्कालीन परिस्थिति का विवेचन है। ब्रिटिश साम्राज्य की नीव इन्ही कारणो से भारत मे टिकी रही है। भारतीय शक्तियाँ आपस मे टकराकर शक्तिहीन हो जाती है, जिनका भरपूर लाभ ब्रिटिश उठाया करते है।

भारत सौभाग्य रूपक (सन् १८८९, पृ० १२८), ले० वदरीनारायण चौधरी, प्रेमघन, प्र० आनदकादविनी प्रेस, मिर्जापुर, पात्र पु० ५३, स्त्री ४२, अक · ६, दृश्य . ४, ४, ४, ५, ३, ४।
घटना-स्थल हिमालय का उच्चशिखर, गढ का फाटक, राजप्रासाद, लंदन पार्लियामेंट, पाडाल इडियन नेशनल काग्रेस।

इस राष्ट्रीय नाटक के प्रथम अक के द्वितीय गर्भाक मे हंसारूढ सरस्वती का आकाश मार्ग मे गान होता है। सरस्वती भारतवासियो को सावधान करती हुई जैमिनि-गौतम-कणाद, व्यास, पाणिनि, धन्वन्तरि आदि का स्मरण कराती है और इसे छोड़कर जाते हुए वह दुखी होती है। भूमि फोडकर फूट और वैर का प्रवेश होता है और वे कलह मचाते है। आगे चलकर सुकृत देवी अशोक वृक्ष की छाया मे विलाप करती है कि इसकी विद्या नष्ट हो गई। इसके वीर मिट गए। भारत अचेत पड़ा है और पिशाचियो का ताडव होता है। मेरठ की छावनी मे हिन्दू-मुसलमान सम्मिलित रूप से विद्रोह करते हैं। किन्तु कतिपय गद्दार अग्रेजो की मदद करते हैं।

कलकत्ता मे इडियन नेशनल काग्रेस का अधिवेशन होता है। देश-भर के प्रतिनिधिगण उपस्थित होते है। वे राजसुधार के प्रस्ताव पास करते है और महारानी के चिरजीवन की कामना करते है। अग्रेजी राज मे भारत के हित का ध्यान नही रखा जाता। टैक्स लगाया जाता है। अग्रेज अपनी भलाई के लिए लडाइयाँ लडते है। विलायती कपड़े का प्रचार किया जाता है।

नाटक के अन्त मे हिन्दू, क्रिस्तान, जैन मुसलमानो का एक साथ देशोद्धार मे लग जाने का आह्वान है।

अभिन ययह नाटक इडियन नेशनल काग्रेस के वार्षिक अधिवेशन पर खेलने के लिए लिखा गया था। म्योर सेंट्रल कॉलेज इलाहाबाद के छात्रो ने डेलिगेटो के सत्कार मे इसे खेलने की योजना बनाई थी।

भारती हरण (सन् १८९८), ले० : देवकीनन्दन, प्र० . विद्यावर्द्धन यत्रालय, इलाहाबाद पात्र . पु० ५, स्त्री ३, अक-दृश्य रहित।

यह नायिका प्रधान सामाजिक नाटक है। इसमे भारतीय नारी की दुर्दशा प्रदर्शित की गई है। ब्रह्मा की पुत्री सरस्वती का एक श्वेताग अपहरण करता है। सरस्वती विलाप करती है। वह अपहृत नारी के करुण-क्रन्दन मे भारतीय नारी के पतन को मुखरित करती है। वह निज के प्रयासो द्वारा विदेशी बन्धन से मुक्त होती है और पुन. अपनी मातृभूमि मे पहुँचती है।

भारतीय छात्र (सन् १९००, पृ० ९९), ले० दास, प्र० . नव साहित्य कार्यालय काशी; पात्र . पु० ८, स्त्री २, अक ३, दृश्य · ८, ७, ३।

यह सामाजिक नाटक है। इसमे परतन्त्र भारत मे शिक्षा की दुर्दशा तथा छात्रो का स्वतंत्रता आन्दोलन मे महत्त्व बडी सावधानी से प्रस्तुत किया गया है। अग्रेजो के दासत्व मे शिक्षालयो की दशा शोचनीय है।

शिक्षा का प्रबन्ध विदेशियो अथवा निहित स्वार्थियो के हाथ मे है । प्रबन्धको का उद्देश्य छात्रो से अधिकाधिक फीस वसूल करना है। निर्धन कृषक अपनी सन्तान को घर का थाली-लोटा बेचकर भी शिक्षित करना चाहता है, परन्तु शिक्षालय उन्हे कुप्रबन्ध के कारण मझधार मे ही शिक्षा से विरत कर पगु रखने मे तल्लीन है। भारतीय छात्रवर्ग स्वतन्त्रता की लहर मे कूद पडता है। प्रत्येक अन्याय तथा अत्याचार के विरुद्ध छात्र राज्य की जेल भर देते है । अध्यापक वर्ग उनको उचित सह-योग एव दिशा-निर्देश देता है। भारतीय जनता के प्रतिनिधि कृषक तथा श्रमिक छात्र नेताओ का शानदार स्वागत करते है । राज्य कर्मचारी भी छात्रो से प्रभावित होते है ।

भारतेन्दु (नाट्यरूपक) (सन् १९५०, पृ० १०५), ले० भानुशकर मेहता, प्र० · नागरी प्रचारिणी सभा, काशी; *पात्र* · पु० ३०, स्त्री ८, *अक* २, *दृश्य* १६। *घटना-स्थल* कमरा, बाजार, हाल,

प्रस्तुत नाटक मे भारतेन्दु के जीवन सम्बन्धी सभी घटनाओ का समावेश किया है । कवि के व्यक्तित्व और कृतित्व दोनो का ही प्रदर्शन है। लेखक का उद्देश्य केवल भारतेन्दु का गुणगान करना है।

अभिनय इसे काशी मे १८ सितम्बर १९५० के दिन भारतेन्दु जन्म दिन पर भारतेन्दु नाट्य मडली द्वारा खेला गया है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द (सन् १९५५, पृ० १२०), ले० . सेठ गोविन्ददास, प्र० ओरियटल बुक डिपो, दिल्ली *पात्र* · पु० १६, स्त्री ३, *अक* ५, *दृश्य* . ३, ३, ३, ३, ३ । *घटना-स्थल* भारतेन्दु का घर, कोठा ।

नाटक मे हरिश्चन्द्र जी के जीवन की प्रमुख घटनाये क्रमवद्ध है। कविवर के पिता गोपाल चन्द्र जी ने उनके प्रथम दोहे पर महाकवि होने का आशीर्वाद दिया था। भारतेदु जी की प्रेमिकाओ के दृश्य भी इस मे चित्रित है। सेठ जी ने बाबू जी के कुछ दोहो का भी उल्लेख किया है।

नाटक मे हरिश्चन्द्र जी पर एकमात्र पत्नी मन्नो देवी से प्रेम न करने का भी आरोप है।

भारतोद्धारक नाटक (सन् १८८८, पृ०७०), *ले :* शरत् कुमार मुखोपाध्याय, प्र० भारत माता प्रेस, रीवा, *पात्र* · पु० ७, स्त्री २; *अक* · ४, *दृश्य :* ४, ४, ३, १ ।

प्रस्तुत नाटक तत्कालीन भारत मे हिन्दी की दुर्दशा का वर्णन करता है तथा भारतवासियो को हिन्दी को उच्चपद पर प्रतिष्ठित करने का आह्वान करता है। नाटक मे हिन्दी को कन्या का रूप दिया गया है फारसी को स्त्री रूप दिया गया है। फारसी हिन्दी को कैद कर लेती है जिसे बाद मे भारत माता का पुत्र आर्य अपने सेनापति मधुसूदन सहित मुक्त करता है। फारसी को पकड कर उसका वह वध करना चाहता है परन्तु हिन्दी अपनी उदारता से उसे छुडवा देती है। अन्त मे हिन्दी-फारसी तथा उनके साथ हिन्दू-मुसलमान वैरभाव त्याग कर एकता की शपथ लेते है।

भारतोदय (सन्० १८८७, पृ० १५८), ले० . रामगोपाल मिश्र, प्र० : गोपालराम गहमर; *पात्र :* पु० ३०, स्त्री ७, *अक* ३, *दृश्य :* ७, ८, ७ । *घटना-स्थल* स्वर्ग, गली, घनाजगल, राज-सभा, जगली रास्ता, राजमहल ।

प्रस्तावना मे भगवान् बुद्ध सत्य स्वर्ग मे ध्यान लगाये बैठे है। धर्म, शान्ति, प्रेम ऐक्य हाथ जोडकर खडे होते है। भगवान् उन्हे पृथ्वी का उद्धार करने के लिए भेज देते है। पृथ्वी पर भारतवर्ष को फूट, दुर्दैव, मदिरा, आलस्य, दुश्चरित्र अपने दुष्प्रभाव से जर्जर बना रहे है। ये पात्र सत्य, एकता आदि का परिहास करते है।

नाटक का आरम्भ कशगर (भावलपुर) के शासक शाह अब्बास के राज्य मे हिन्दू-मुस्लिम कलह से होता है। कलन्दर खॉ तथा अन्य कट्टर मुसलमान शाह अब्बास को हिन्दुओ के विरुद्ध भडकाते है। शाह अब्बास का भाई फैज आलम बादशाह को बहुत समझाता है पर उसे हिन्दुओ का पक्षपाती

कहकर राज्य से निकाल दिया जाता है। फैज आलम यशवन्त पुर के महाराज के यहाँ शरण लेता है। भावलपुर की सेना यशवंत पुर पर चढाई करती है।

इधर एक भारतीय राजा हरभक्तसिह देशोद्धार के लिए राजत्याग फकीरी ग्रहण करता है। भावलपुर का राजा दाऊद खाँ भी फकीरी ग्रहण कर जगल मे जाता है, और फकीरो द्वारा देश-उद्धार के लिए जनता को जागृत करता है। यशवत सिंह के वडे कुँवर विलास प्रिय कृष्ण सिंह का अपनी पुत्री हुस्ने आरा के प्रति दुर्व्यवहार देखकर फैज आलम, कुँवर का वध करता है। पर महाराज योधसिह फैज आलम पर प्रसन्न होकर उन्हे एक जागीर प्रदान करते है। यशवन्तपुर के सेनापति समरसिंह की पुत्री कमलेश्वरी दाऊदखाँ को मुसलमान होने से पहले व्याही गई थी। वाद मे उसका नाम गुलनार पडा था। समरसिंह के पुत्र चद्रसिंह का व्याह महाराज योधसिंह की कन्या कुमारी रजनी से तय होता है। रजनी के आग्रह से चन्द्रसिंह भावलपुर की सेना से युद्ध करने जाता है। युद्ध मे यशवत सिह की विजय होती है, पर चद्रसिंह वीरगति को प्राप्त होता है। महाराज योधसिह अपनी सेना को भावलपुर पर चढाई करने से रोक देते है, और सदेश भेजते है कि होली के अवसर पर भावलपुर फाग खेलने आऊँगा।

रजनी चन्द्रसिंह के वियोग मे आत्म-हत्या कर लेती है। फैज आलम जीवन से ग्लानि के कारण दुखी होता है और शाह अव्वास को आत्म-समर्पण करने के इरादे मे छिपकर चल देता है। पराजय से दुखी शाह अव्वास फैज आलम के उपदेश से अपनी भूल स्वीकार करता है। सारे अनर्थो की जड़ कलन्दर खाँ को मरवा डालता है। देश मे हिन्दू-मुसलिम ऐक्य स्थापित होता है।

भिक्षु से गृहस्थ और गृहस्थ से भिक्षु (सन् १९५७, पृ० ९४), ले० . सेठ गोविन्ददास, प्र०: भारती साहित्य सदन, फव्वारा, दिल्ली, पात्र पु० ५, स्त्री ३, अक . ५।
घटना-स्थल : कक्ष, राजप्रासाद, कुटी।

यह ऐतिहासिक नाटक है। नायक कुमारायन भारत के राजमन्त्री का पुत्र है जो युवावस्था मे ही सव कुछ त्याग कर भिक्षु हो जाता है। कुमारायन कूची के राज्य का राजगुरु वन जाता है। कूची के राजा की कन्या जीवा को कुमारायन से प्रेम हो जाता है। अत. कुमारायन और जीवा का विवाह हो जाता है। कुमारायन भिक्षु से गृहस्थी वन जाता है। पुत्र-प्राप्ति के पश्चात् कुमारायन और जीवा भिक्षु-भिक्षुणी वन जाते है। कुमारायन अव गृहस्थ से भिक्षु वन जाता है। इनका पुत्र कुमारजीव वौद्धधर्म के प्रचार के लिए चीन जाता है। वृद्धावस्था मे कुमारायन और जीवा भी चीन पहुँच जाते हैं।

भिक्षुक महाकाल (सन् १९६९, पृ० १८), ले० · चन्द्रमौलि उपाध्याय; प्र० · आवेग पत्रिका मध्य प्रदेश; *पात्र* . पु० १७, स्त्री २। अक . १, *दृश्य* . ५।
घटना स्थल : कक्ष, खुला मैदान।

प्रस्तुत नाटक 'एव्सर्ड' नाटको की कोटि मे आता है। इसमे परम्परागत मूल्यो के प्रति अनास्था प्रकट की गई है। नाटककार ने मानव को उसी के प्रारभिक रूप मे अर्थात् आदिम रूप मे प्रस्तुत करने की चेष्टा की है। लेखक ने इसमे घटनाक्रम का विल्कुल ध्यान नही रखा जिससे सारा नाटक स्फुट वार्त्तालाप मात्र लगता है।

भीम-प्रतिज्ञा (सन् १९३३, पृ० १००), ले० कैलाशनाथ भटनागर; प्र० हिन्दी भवन लाहौर, पात्र पु० १९ स्त्री, ६, अक· ३, *दृश्य* ७, ५, ५।
घटना-स्थल . राजमहल, वन, भवन, अन्त पुर, युद्धभूमि, सरोवर का किनारा, युधिष्ठिर का शिविर।

नाटक का कथानक महाभारत से लिया गया है। नारी-अपमान के परिणाम से कौरवकुल का सत्यानाश किस प्रकार हो जाता ह, यही इस नाटक मे दिखाया गया है। जुवे मे हारे हुए पाण्डवो के सामने भरी कौरव सभा मे दु.शासन द्वारा कृष्णा का

केश खीचा किया जाता है, तथा उस देवी को नग्न करने का प्रयत्न किया जाता है। जब कुरुराज दुर्योधन उस सती साध्वी को देख अपनी बायी जॉघ पर हाथ रखकर अपमान-सूचक इशारा करता है, तब क्रुद्ध भीम प्रतिज्ञा करते है कि मै युद्ध मे दुशासन की छाती फाडकर उसका गर्म लहू पिऊगा और मदमर्दनकारी अपनी गदा से दुर्योधन की जॉघ को तोडकर उसके रक्त से रजित लाल हाथो से कृष्णा के केश बाधूगा। भीम अपनी यह सारी प्रतिज्ञा वीरता से तथा कुशलता से पूरी करते है तथा नारी-अपमान का बदला लेते है।

भीम-प्रतिज्ञा (सन् १९१६, पृ० १२४), ले० जीवानन्द शर्मा, काव्य तीर्थ, प्र० बिहार एजल प्रेस ऐण्ड स्टोर्स, भागलपुर, *पात्र* पृ० १३, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* ७, १५,८। *घटना-स्थल* : सभा भवन, युद्धभूमि।

यह पौराणिक नाटक महाभारत पर आधारित है। दुर्योधन के कहने पर युधिष्ठिर जुआ खेलते है और सब कुछ हार जाते है। दुर्योधन भरी सभा मे द्रौपदी का अपमान करता है जिससे क्रोधित होकर भीम दुर्योधन की जघा को गदा-प्रहार से तोडने की प्रतिज्ञा करता है। अन्त मे जब युद्ध होता है तो भीम, दुर्योधन और दुश्शासन को गदा-प्रहार से मार कर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करता है।

भीम प्रतिज्ञा (सन् १९६२, पृ० ८८), ले० अनिरुद्ध यदुनन्दन मिश्र 'स्नेह-सलिल', प्र० श्री गंगा पुस्तक मन्दिर पटना ४, *पात्र* पु० ६, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* ४,४,४। *घटना-स्थल* : विराट नगर, दरबार।

यह नाटक महाभारत के कथानक के आधार पर लिखा गया है। जब पाण्डवो को कौरवो ने एक साल के लिए अज्ञातवास के लिए कहा, तब पाण्डव छद्मवेश मे मत्स्य देश के विराट् नगर मे अपना नाम बदलकर रहने लगते है। युधिष्ठिर जुआरी कक, भीम रूपकार अर्जुन वृहन्नला, नकुल अरिष्टनेमि, सहदेव ग्रथिक, द्रोपदी सौरन्ध्री के नाम से राजा विराट् के दरबार मे काम करने लगते है। वहा पर राजा विराट् की पत्नी सुवेष्ण का भाई कीचक सौरन्ध्री (द्रोपदी) पर आसक्त होकर भरे दरबार मे उसका अपमान करता है। सौरन्ध्री भीम से इसका बदला लेने को आधी रात के समय चुपके से कहती है। तब भीम कीचक के मारने की प्रतिज्ञा करता है और अन्त मे कीचक को मारकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करता है।

भीष्म-प्रतिज्ञा (सन् १९०४, पृ० ११२), ले० आगा हश्र कश्मीरी, प्र० देहाती पुस्तक भडार, चावडी बाजार, दिल्ली, *पात्र* पु० १८, स्त्री ७, *अक* ३, *दृश्य* ७, ६, ५। *घटना-स्थल* आश्रम, युद्ध-क्षेत्र।

नाटक मे भीष्म पितामह के उज्ज्वल-चरित्र का सुन्दर चित्रण किया गया है। इस नाटक मे आठ बसु अपनी पत्नियो की प्रेरणा से महर्षि वसिष्ठ की नन्दिनी गाय को चुराते है। महर्षि उन्हे मर्त्य-लोक के दुख झेलने का शाप दे देते है। बसुओ की प्रार्थना पर गगा जी रूपवती कन्या बनती है और शान्तनु से अपनी शर्त पर विवाह करती है। वह सात बसुओ को जन्मते ही गगा मे प्रवाहित कर देती है। आठवे बसु देवव्रत को शान्तनु के विरोध पर छोड कर चली जाती है।

देवव्रत माँ गगा के आशीर्वाद से बडे पराक्रमी राजकुमार होते है। वह अपने पिता शान्तनु की धीवर-राज की कन्या सत्यवती से शादी करने के लिए आजीवन कौमार्य व्रत ले लेते है। वह विचित्रवीर्य की शादी के लिए काशिराज की तीनो कन्याओ का अपहरण करते है। अम्बा भीष्म के सम्मुख अपना प्रणय निवेदन करती है और भीष्म अपने कौमार्यव्रत के कारण उसका निषेध करते है। अम्बा प्रतिशोध हेतु परशुराम की शरण लेती है। गुरु-आज्ञा और कौमार्यव्रत मे द्वन्द्व उत्पन्न होता है। गुरु-शिष्य मे भयानक युद्ध होता है। भीष्म विजयी होते है। महाभारत के युद्ध मे भीष्म का पराक्रम दिखाई देता है और उनकी वीरगति होती है।

भीम-विक्रम (सन् १९२०, पृ० ९६), ले० : रामेश्वर शर्मा चौमुवल, प्र० हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, २०३, श्रीराम रोड, कलकत्ता;

पात्र : पु० १४, स्त्री ७, *अंक* : ३; *दृश्य* · ५, ७, ६।
घटना-स्थल : विराट नगरी, युद्धक्षेत्र।

इस नाटक का कथानक श्रीमद्भागवत-पुराण से लिया गया है। इसमे कुन्ती कुमार भीम अनेक योद्धाओ, दानवो और राक्षसो को मार कर भीम-विक्रमी का पद प्राप्त करता है। इसमे उस समय की घटना का वर्णन है जब उन्होने अज्ञातवास की वेला मे अत्याचारी कीचक के वध करने मे पराक्रम दिखाया था और सती साध्वी द्रौपदी को अपमान आदि कलक मे बचाया था।

भीम-शक्ति (सन् १९१०, पृ० ६४), ले० : शिवदत्त मिश्र, प्र० : ठाकुर प्रसाद ऐण्ड सन्स बुकसेलर, वाराणसी, *पात्र* . पु० १८, स्त्री ७, *अंक-रहित*, *दृश्य* १४।
घटना-स्थल युद्धभूमि।

इस नाटक मे महाभारतकालीन समाज को दिखाने का प्रयास किया गया है। मुख्य रूप से भीम की शक्ति का ही प्रदर्शन है। भीम द्रौपदी के अपमान करने वाले दुश्शासन, कीचक आदि को अकेले ही मार डालते हैं। साथ ही महाभारत के कौरव और पाण्डवो की अन्य लडाइयो का भी सकेत मिलता रहता है।

भीष्म (सन् १९१८, पृ० १०३), ले० : विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक; प्र० . रविनारायण मिश्र, प्रताप कार्यालय, कानपुर; *पात्र* पु० २१, स्त्री ९; *अक* . ३, *दृश्य* : ११, ८, ९।
घटना-स्थल · धीवर के भवन का भाग, युद्ध क्षेत्र।

इस नाटक के नायक भीष्म महाराज शान्तनु के पुत्र हैं। इनकी कथा बहुत प्रख्यात है। नाटक के अनुसार भीष्म गगा नामक दासी के गर्भ से जन्म लेते है। वृद्धावस्था मे राजा शान्तनु एक धीवर कन्या पर मुग्ध होते हैं। परन्तु धीवर राजा ने वचन माँगता है कि उसकी पुत्री से उत्पन्न पुत्र ही राज्याधिकारी होगा। यह बात राजा को सोच मे डाल देती है एव वे चिन्तित हो जाते हैं। पिता की चिन्ता दूर करने के लिए भीष्म प्रतीज्ञा करते हैं कि वे राज्य के अधिकारी नही होगे। वे आजीवन अविवाहित रहेगे।

भीष्म स्वयवर से काशीराज की पुत्री अम्बा का हरण विचित्रवीर्य से विवाह करने को कर लेते हैं किन्तु उसके इस अनुनय पर कि उसने शाल्व राज से प्रेम किया है, छोड देते हैं, परन्तु शाल्वराज उसे स्वीकार नही करता। अम्बा तपस्या कर शिव से भीष्म-वध का वरदान प्राप्त करती है। दूसरे जन्म मे शिखण्डी का रूप धारण कर महाभारत के युद्ध मे भाग लेती है। अर्जुन शिखण्डी को आगे कर भीष्म पर तीर चलाते हैं क्योकि भीष्म जैसे अद्वितीय वीर मे पार पाना कठिन था। भीष्म यह जान कर कि शिखडी पूर्व जन्म की स्त्री है युद्ध मे बाण न चला कर स्वयं अर्जुन के बाणो से विद्ध बन शर-शैय्या पर लेट जाते हैं।

भीष्म-प्रतिज्ञा (सन् १९७०, पृ० ८६), ले० चतुर्भुज, प्र० · मगध कलाकार प्रकाशन, १०६, श्री कृष्ण नगर, पटना १।
घटना-स्थल महल, उद्यान, आश्रम, रगभूमि, शिविर।

नाटककार के मतानुसार भीष्म का चरित्र कई अशो मे राम से भी महान् था। पिता के सुख के लिए वे आजन्म अविवाहित रहते हैं, वचन निभाने के लिए गुरु परशुराम से युद्ध करते हैं। अत मे महाभारत के युद्ध मे इन की मृत्यु होती। है

भीष्म-व्रत (सन् १९५६, पृ० ६७), ले० : मूल जी मनुज; प्र० · शारदा मन्दिर, नई सडक, दिल्ली, *पात्र* पु० १७ स्त्री ५, *अक* . ३; *दृश्य* ६, ६ ६।
घटना-स्थल गुरुकुल।

नाटक का उद्देश्य महाभारत के उज्ज्वल रत्न भीष्म पितामह के निर्मल-चरित्र पर प्रकाश डालना है। गगापुत्र आठवें वसु, देवव्रत गुरुकुल मे महर्षि व्यास से निष्काम सेवा और स्वार्थत्याग की शिक्षा प्राप्त करते है। इस व्रत का वह सत्यवती की शान्तनु से

विवाह कराकर स्वयं कौमार्यव्रत द्वारा आजीवन उसका निर्वाह करते है। देवव्रत अम्बा का प्रणय ठुकराते है। वह प्रतिशोध मे परशुराम की शरण लेती है। गुरु-आज्ञा और भीष्मव्रत मे विरोध के फलस्वरूप गुरु-शिष्य सग्राम होता है। परशुराम अपनी पराजय के साथ शिष्य को व्रत मे सफलता का आशीर्वाद देते है।

चित्रागद की मृत्यु पर सत्यवती की वशवृद्धि की प्रार्थना को अस्वीकार करके काशिराज की कन्याओ का अपहरण तथा विचित्रवीर्य का पाणिग्रहण कराते है। वह उसका राजतिलक भी करते है। इसमे अम्बा की शिवोपासना तथा शिव से उसकी द्रुपद-कन्या होने का आशीर्वाद भी चित्रित है। भीष्म दुर्योधन को युधिष्ठिर के साथ शान्ति से रहने का उपाय भी बताते है। वह कृष्ण के शान्ति-सन्देश पर पाण्डवो की रक्षा के लिए प्रयत्न करते है। दुर्योधन के हठ पर वह महाभारत के युद्ध का नेतृत्व ग्रहण करके इच्छा-मृत्यु वरण करते है।

भूख (सन् १९४३, पृ० ८९), ले० : वीरदेव 'वीर', प्र० · इडियन प्रेस लिमिटेड, अम्बाला कैंट, *पात्र :* पु० १३, स्त्री ९, *अक* ३, *दृश्य* ६, ६, ६।
घटना-स्थल प्रार्थना भवन, बगले का कमरा, कलकत्ते का बाजार, दफ्तर, बस्ती, बागीचा।

यह एक हृदयविदारक सामाजिक नाटक है। इसमे दो भाव विशेष रूप से अकित है। एक मनुष्य का मनुष्यत्व की ओर उद्गार और दूसरा हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य का सपादन। राधा अपने पति डाक्टर कौल से भावी जीवन के लिए धन एकत्र करने को कहती है लेकिन वह मनुष्यता के नाते गरीबो से खून चूसकर धन एकत्र नही करता। उसकी पत्नी सभी पुरुषो से घृणा करती है। जब कि डॉ० कौल सभी मनुष्यो के साथ प्रेम से मिलते है और अच्छा व्यवहार करते है। अचानक कोई हत्यारा फिरोज के परिवार के सभी लोगो की हत्या कर देता है जिसके अपराध मे शकावश फिरोज को लम्बी कैद की सजा हो जाती है। जब उसे कैद से छुटकारा मिलता है तो वह डॉ० कौल के पास जाता है क्योकि उसके सिवा और कोई परिवार मे नही है। कौल उसका आदर करते है तथा खाने-पीने और सोने का प्रबन्ध करते है। फिरोज उसी सोने वाले कमरे मे रखी सोने की शमादान देखता है, जिसे वह चुराकर भाग जाता है। बेचते समय वह पुन पकड़ा जाता है और पुलिस द्वारा कौल के पास लाया जाता है। कौल की उदारता उसे मुक्त करा देती है। फिरोज अपनी चोरी का कारण देश की गरीबी, नादानी और भूख बताता है। वह उस सोने के शमादान को बेचकर ५० हजार रुपये प्राप्त करता है, जिसकी पूंजी पर एक मिल-मालिक तथा लखपति बन जाता है। वह मिल की मिल्कियत कौल को देना चाहता है। हिन्दू-मुस्लिम इत्तिहाद से भुखमरी को दूर करना चाहता है। कौल की उदारता पत्नी राधा की उलझनो को हल कर देती है तथा बिगडे हुए मनुष्य फिरोज को अच्छे मार्ग प्रदर्शित कर उसे उच्च बनाती है।

भूखा (सन् १९४१, पृ० ११२), ले० · कविचन्द्र कालीचरण पट्टनायक, प्र० : राष्ट्रभाषा पुस्तक भण्डार, बाका बाजार, कटक, *अक* . ५, *दृश्य* ६, ७, ५, २, ।
घटना-स्थल · गॉव खेत।

हरिपुर गॉव का एक गरीब किसान रघु भादो के महीने मे अपने खेतो मे काम कर रहा है और उसकी बेटी मीरा उधार आटे की रोटी लेकर अपने पिता के पास जा रही है। रास्ते मे उसे जमीदार का पुत्र कुमार देख लेता है। मीरा अपने पिता को रोटी खिलाना चाहती है कि लगान लेने के लिए गुमाश्ता आ जाता है। रघु के लगान न दे सकने से उसे नत्थू कचहरी मे कैद करा देता है। एक रोज नत्थू मीरा से कुछ बाते कर रहा है कि कुमार आ जाते है। नत्थू खिसक जाता है। कुमार रघु को छुडाने के लिए मीरा को बीस रुपया दे देते है। जिससे रघु छूट कर घर आ जाता है। मीरा अपने घर मे धान साफ करते हुए गाना गा रही है कि कुमार छिपकर गाना सुनते हुए 'मिरो

'मीरा' पुकार कर फिर छिप जाते है। मीरा उसे नत्थू समझ कूँचे से मार देती है जिससे कुमार के माथे से खून निकल आता है। मीरा कुमार को देखकर भौंचक्का हो खून को अपने आँचल से पोछना चाहती है किन्तु आँचल गन्दा होने से रुक जाती है। कुमार उसे सान्त्वना दे खुद उसके आँचल को उसके हाथो को पकडे हुए खून पोछकर अपनी अँगूठी उसकी अँगुली मे पहना कर चले जाते है। कालान्तर मे रघु अपने घर मे हैजा से बीमार पड़ता है। कुमार और मीरा के समक्ष डाक्टर नाडी देख रहा है। थोडे ही समय मे रघुकुमार और मीरा का हाथ मिलाकर चल बसता है। कुछ दिनो के बाद कुमार का विवाह एक जमीदार की लडकी से तय हो जाता है लेकिन कुमार उसे अस्वीकार कर देता है। जमीदार मीरा को छल से ताले मे बन्द करवा देता है लेकिन वह रेनु के माध्यम से बाहर निकल जाती है, और दूर भाग कर सेवा सदन मे रहती है। सेवा सदन मे जमीदार जाता है। तहसीलदार के सेवा-सदन फुकवाना अस्वीकार करने पर पिस्तौल चलाता है। कुमार के हाथ मे गोली लगी देख पिस्तौल उसके हाथो से गिर जाती है। फिर मीरा और कुमार दोनो छुपे रहते हैं। जमीदार दोनो को जब पा जाता है तो दण्ड देना चाहता है। दण्ड के रूप मे मीरा और कुमार का हाथ मिला देता है।

भूखा-मसखरा (सन् १९५८, पृ० ७१), ले० रघुनाथ राम शर्मा; प्र० : सकरकन्द केशव यन्त्रालय, बनारस; पात्र : पु० ४, स्त्री ९; *अंक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल . सेठ जी का मकान।

यह एक हास्य-प्रधान नाटक है। एक सेठ और सेठानी को नौकर की आवश्यकता है। बगलर के बाबू सहाब से सेठानी के कुछ प्रणय-सम्बन्ध के आभास मिलते है। सेठ और सेठानी मे आपस मे बनती नही। बहुत प्रयत्न के बाद बाबू साहब नौकर खोज लाते हैं। नौकर की विशेषता यह है कि उसे दिन-भर मे कम से कम दस बार भोजन चाहिए। किसी प्रकार नौकर रख लिया जाता है और सेठ जी का आदेश है कि सेठानी जो कुछ कहे उसे धीरे से कान मे आकर कह दे। हास्य का चरमोत्कर्ष यही होता है जब नौकर धीरे से कहने वाली बात को जोर से कहता है और ऊँचे स्वर मे कहने वाली बात को धीमे स्वर मे कहता है। सेठानी जब कहती हैं—कि सेठ से जाकर कह दो घर में चावल नही है, तो इसे वह दुकान मे जाकर पूरी आवाज के साथ कहता है। और जब कहती है जाकर कह दो कि सेठ की माँ मर गयी है तो इसे वह सेठ के कान में कहता है। इसी प्रकार आग लगने की घटना को निम्न स्वर मे और लडके होने की घटना को उच्चस्वर मे कहता है। नौकर का 'फजीहत' नाम यही चरितार्थ होता है। बाबू साहब के २५०) को सेठ जी ब्याज के सहित जोडकर ५००) बना देते हैं। घर मे आग लगने की घटना सुनकर बाबू साहब मौका पाते है और दुकान से सेठ की बही को ले जाकर आग मे डाल देते है।

भूदान (सन् १९५०, पृ० ६४), ले० : सेठ गोविन्द दास; *पात्र* पु० १२, स्त्री ३; *अंक* ३, *दृश्य* ४, ४, ४।
घटना-स्थल : ग्राम तिलगाना, आश्रम, गृह।

तिलंगाना और नालगुडा के कुछ व्यक्ति विनोबा से प्रार्थना करते है कि साम्यवादियो की हिंसात्मक प्रवृत्तियो से वे तंग आ गये हैं। साम्यवादी क्रूर तरीको मे भूमिपतियो की जमीनें छीनकर उन्हे भूमि दे रहे हैं, जिनके पास भूमि नही है। वे विनोबा से प्रार्थना करते है कि उस स्थान पर जाकर महात्मा गाधी के महान् मंत्र हृदय-परिवर्तन का प्रयोग करें। विनोबा तिलगाना जाने का वचन देते है। विनोबा को सफलता मिलती है और लोग भूमिदान देते हैं। एक साम्यवादी बैठक मे किसी सदस्य को भीषण रक्तपात से ग्लानि होती है। उसे भूदान यज्ञ मे कुछ सफलता जान पडती है। साम्यवादी उसे कायर जानकर गोली से उडा देते हैं।

विनोबा जी साम्यवाद के विरोध मे

बोलते हुए कहते है । "मार-काट से इस देश की कोई भी समस्या हल नही हो सकती । सबसे अच्छा उपाय हृदय-परिवर्तन ही है । हिन्दुस्तान मे सद्भावना काफी है इसको जगाना चाहिए । प्रेम विचार की तुलना मे कोई शक्ति टिक नही सकती । जनता की सद्भावनाये जगाने मे ही मनुष्य का पुरुषार्थ है। क्रान्ति परिवर्तन लाती है। वे परिवर्तन चाहते है। भूमिदान ही एकमात्र इसका साधन है, हृदय परिवर्तन साध्य है ।" जो लोग भूदान यज्ञ मे विश्वास नही करते थे, व भी विनोबा जी के यहाँ आने पर धीरे-धीरे इसकी उपयोगिता मानने लगते है। साम्य-वादी भी अपनी गलती मान लेते है। उनका भी यह विश्वास हो जाता है कि इतना खून बहाना व्यर्थ है। एक साम्यवादी नेता रुद्रदत्त अपनी सारी भूमि एव धन देकर भूदान यज्ञ मे मिल जाता है ।

भूमि लुटिया झुमुरा (सन् १५७५, के आसपास पृ० ६), ले० माधव देव, प्र० हिन्दी, ।वद्य। ।०, आगरा, *पात्र* पु० २, स्त्री १, *अक-दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल घर, कमरा ।

इसमे कृष्ण अपनी माता यशोदा से अपने नवनीत, दूध तथा मुरली के विषय मे पूछते है, तथा नवनीत लेने के लिए रोते है । माता यशोदा उनको मनाती है लेकिन वे नवनीत के लिए हठ करते है । अन्त मे यशोदा उनको हरिपूजा के लिए रखे गए नवनीत देती है, जिसे पाकर कृष्ण प्रसन्न होते है ।

भूल-चूक (सन् १६२८, पृ० १५०), ले० . जी० पी० श्रीवास्तव, प्र० वी० पी० सिन्हा, गोडा, *पात्र* पु० ५, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* २, २, ३ ।
घटना-स्थल शक्कीमल के मकान के सामने, डाक्टर साहब का मकान, सडके ।

भूल-चूक एक प्रहसन है । सुशीला डाक्टर राघव की लडकी है । वह बाल विधवा है । डाक्टर विधवा-विवाह का घोर विरोध करते है, लेकिन सुशीला जब युवती हो जाती है तो रामदास से प्रेम करने लगती है। उसकी याद मे दिन-रात तडपने लगती है। डाक्टर के बहुत कडी निगाह रखने पर वह जहर खा लेती है, लेकिन कम्पाउडर की भूल से बदहजमी की शीशी पर जहर का लेबिल लगा होता है। अत: कै और मूर्छासी आती है। वह बच जाती है। डाक्टर अपनी गलती महसूस करके उसकी शादी रामदास से करने को तैयार हो जाता है।

नाटक का एक अन्य मुख्य पात्र शक्कीमल है जो अपनी पत्नी पार्वती पर शक करता है क्योकि रामदास की सिली भोदूराम की टोपी उसकी औरत की चारपाई पर पडी मिलती है। लेकिन जब पता चलता है कि पार्वती की महरिन के कूडा फेकने पर वह कूडा भोदूराम पर पडता है और वह महरिन को टोपी से मारता है इसलिए टोपी उसकी औरत के पास मिलती है तो शक्कीमल को उसकी भूल पर पश्चात्ताप होता है क्योकि वह अपनी औरत को जूतो से पीटता है।

भूल नाटक (सन् १९६२, पृ० ९५), ले० · गुलाब खण्डेलवाल, प्र० पारिजात प्रकाशन, डाक बॅगला रोड, पटना; *पात्र* . पु० ८, स्त्री २, *अक* : ३;
घटना-स्थल -. सुरेन्द्र सिह का मकान ।

यह एक सामाजिक नाटक है। दो युवक सुरेश एव ऋषि स्टेशन पर मिलते है। एक अपना गवना कराने जहाँ जा रहा है दूसरा वही जीवन बीमा करने के लिए। दोनो की ससुराल वही है। दोनो की पत्नियाँ एक-दूसरे से बदल जाती है। बाद मे बिना किसी दुर्घटना के ही भूल-सुधार हो जाती है।

भूल-भुलइयाँ (सन् १९३६, पृ० ८०), ले० · आगाहश्र, प्र० : उपन्यास बहार, आफिस, काशी, *पात्र* . १० पु०, स्त्री २, *अक* . ४; *दृश्य* : ४, ७, १२, ३ ।

दुष्ट बादशाह द्वारा भेजे गए विवाह-प्रस्ताव को अस्वीकार करने के कारण जाफर

और दिलआरा को अपना देश त्यागना पडता है। मार्ग मे तूफान आने से वे दोनो भाई-वहिन विछुड जाते है परन्तु अन्त मे दोनो तातार देश मे पहुँच जाते है। दिलआरा वहाँ के नवाव जमील पर मुग्ध हो जाती है जो पहले से ही शकीला नाम की युवती को दिल दे वैठा है। दिलआरा पुरुष वेष मे जमील के यहाँ नौकरी करती है और नवाव का सन्देश लेकर शकीला के पास जाती है, जो उसे देखते ही उससे प्रेम करने लगती है। इस प्रकार यह प्रेम का त्रिकोण और भाई-बहिन का रूप-साहश्य कुछ समय तक सबको परेशान करता है परन्तु अन्त मे शकीला और दिलआरा के भाई जाफर का जो उसी की शक्ल का है तथा दिलआरा और नवाव का प्रणय बन्धन हो जाता है। इस मूल कथानक के साथ नवाब के सेवक अब्दुल करीम और शकीला की सेविका ऐयारा के प्रणय की भी कहानी जोड़ दी गई है जिसमे रोमास और साहसिकता का पुट है।

भूषण-दूषण (सन् १९०९, पृ० ६), *ले० :* गौचरण गोस्वामी, *प्र० .* श्रीकृष्ण चैतन्य पुस्तकालय, वृन्दावन; *पात्र :* पु० ४, स्त्री ३, *अक .* ५, *दृश्य* ५।
घटना-स्थल : लाला रामरतन का घर।

लाला रामरतन अपनी स्त्री से अपने वच्चो को आभूषण न पहनाने को कहते है परन्तु उनकी स्त्री मर्यादा का ख्याल कर ऐसा करने से इन्कार करती है। और वही दुर्घटना होती है जिसका लाला को भय था। गाँव के दो उचक्के दोनो वच्चो का आभूपण छीनकर वच्चो की हत्या कर कूएँ मे फेक देते हैं। लाला पश्चात्ताप कर रह जाते है और वच्चों को आभूपण न पहनने की सलाह देते हुए रूपक समाप्त होता है।

भूषण हरण झुमुरा (सन् १५९७, पृ० ६), *ले० .* अज्ञात 'माधव देव' के नाम से भ्रमवश प्रचारित, *प्र० .* हिन्दी विद्यापीठ, आगरा, *पात्र* पु० २, स्त्री ३, *अक-दृश्य-रहित।*
घटना-स्थल . यमुनातट, यशोदा का घर, कदम्ब-वृक्ष।

सूत्रधार श्रीकृष्ण के पाद-पद्म मे ब्रह्म-रुद्रादि का ध्यान करता है। उसके वाद श्री कृष्ण की चचलता और वचपन का वर्णन करता है। एक वार भूपणों से अलकृत हो माता के मारने के भय से कदम्व वृक्ष के नीचे जाकर सो जाते है। राधा पानी भरने के लिए जाती है और वह कृष्ण के सारे आभूपण चोरी से उठा लाती है और लाकर यशोदा को देती है। कृष्ण को यह सब पता चल जाता है। घर आकर वह माता यशोदा से राधा की चोरी का सारा हाल कह सुनाते है। कृष्ण यशोदा से राधा द्वारा इसमे पहले चुराई गई गेंद का भी हाल वताते है और राधा को प्रसिद्ध चोर कहते है। कृष्ण की विनयावली सुनकर यशोदा पुत्र-स्नेह से सिक्त होकर राधा को फटकार कर भगा देती है। और कृष्ण को गोद मे लेकर आश्वस्त करती है।

भोज नन्दन कंस (वि० २०१६, पृ० ११०), *ले० :* अम्विका प्रसाद 'दिव्य', *प्र०* साहित्य सदन, आजमगढ, पन्ना (म० प्र०), *पात्र :* पु० २०, स्त्री ११, *अक* ५; *दृश्य :* ५, ५, ५, ५, ७।

यह नाटक एक पौराणिक कथा को लेकर लिखा गया है। वसुदेव और देवकी का वैवाहिक सम्वन्ध हो जाने पर कस उन दोनो को विदा करने जाता है परन्तु उसी समय आकाशवाणी होती है कि जिन्हे तू वडे प्रेम से विदा कर रहा है उन्ही का आठवाँ वच्चा तेरा घातक होगा। कंस उन्हे कारागृह मे डाल देता है। कस उनके पुत्रो को उत्पन्न होने के साथ ही समाप्त कर देता है परन्तु आठवाँ वच्चा, जो कि श्रीकृष्ण थे, वच जाता हैं और अन्त मे कृष्ण द्वारा ही कस की ऐहिक लीला समाप्त होती है।

भोजन विहार झुमुरा (सन् १५९४, पृ० ८), *ले० :* माधवदेव; *प्र०* हिन्दी विद्यापीठ, आगरा, *पात्र .* पु० ५, स्त्री ०; *अक-दृश्य-रहित।*
घटना-स्थल . वृदान्वन, यमुनातट।

सर्वप्रथम अनन्त शक्ति-सम्पन्न ब्रह्म-

मूर्ति अखिल जगत्-गुरु विश्वेश्वर श्रीकृष्ण को नमस्कार किया गया है। सुबह होते ही सारे ग्वाल कृष्ण के पास आकर यमुना तट पर गाय चराने के लिए कहते है। कृष्ण ग्वाल बालो के साथ यमुना तट पर गाये चराने जाते है। वहाँ दोपहर के समय ग्वाल-बालो के बीच बैठकर भोजन करते है तथा भोजन करते समय हास-परिहास करते है। श्रीकृष्ण अपने सखागणो के बीच इस प्रकार अच्छे लगते है जिस प्रकार कमल-पुष्प के मध्य पकज-केशर।

भोजन-विहार मे बिलम्ब हो जाने से गोवत्स तृणलोभ मे काफी दूर तक चले जाते है। कृष्ण उन्हे खोजने के लिए वृन्दावन तक चले जाते है लेकिन गोवत्सो का पता नही चलता है। वहाँ से कृष्ण-यमुना तट पर पुन: वापस आते है तो अपने सखा तथा भाई बलराम को न पाकर बड़े दुखी होते है। अन्त मे कृष्ण ध्यान करके देखते है तो उन्हे पता चल जाता है कि गोपालको और गोवत्सो की चोरी ब्रह्मा ने की है। यही पर नाटक समाप्त होता है। नाटककार ने नाटक को अधूरा छोड दिया है।

भोली बी (सन् १९१७, पृ० १८), ले० हरिहर प्रसाद जिदल, प्र० अग्रवाल प्रेस, गया (बिहार), *पात्र* · पु० ६, स्त्री ३; *अक* · २, *दृश्य* : ३, ४।
घटना-स्थल मकान, छत्तर का चिडियाँ बाजार, गगा का किनारा।

यह एक हास्य-व्यग्य-प्रधान लघु प्रहसन है जिसमे मध्यमवर्गीय भोग-विलासप्रिय पुरुषो को बाजारू औरतो (नाचने वाली रण्डियो) के चक्कर मे पड़कर सर्वस्व खो देते हुए दिखाया गया है। प्रारम्भ मे एक कोठे पर अख्तर जान एव उसकी बहन सौसन गाने मे वार्तालाप करती है। उसी समय अख्तर का नौकर बुधुआ किसी लाला के नौकर के आगमन की सूचना देता है। नौकर अपने स्वामी तारेश्वरप्रसाद (जमीदार युवक) के मुग्ध हो जाने एव विरह मे पीडित होने की सूचना देकर अख्तर को साथ लेकर चलता है। उधर घर मे तारेश्वर विलाप करते है। वह बार-बार दोहराते है "नौकर भी हाय न अब तक फिर कर आया"। उनकी इस दशा पर तारेश्वर का मित्र सुखदेव लाल कहता है कि इसका परिणाम बुरा होगा। अख्तर जान आ आती है और अपने जिस्म के बदले तारेश्वर से उसकी सम्पत्ति अपने नाम लिखवा लेती है। एक बार छत्तर के मेले मे वही अख्तर अहमद नामक एक अन्य युवक के साथ भाग जाती है एव तारेश्वर रोता बिलखता रह जाता है।

म

मंगल नाटक (सन् १८८७, पृ० १३७), *ले०.* जीवानन्द ज्योतिर्विद; *प्र० :* भारत प्रेस, काशी; *पात्र* पु० २८, स्त्री ३, *अक :* ६, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल . मदिर

यह नाटक पौराणिक है। 'श्री मार्कंडेण्य पुराण तथा श्री काली पुराणो का आशय लेकर सृष्टि स्थितिलयात्मिका श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती रूपा भगवती का दिखाना आरम्भ होता है उसी का मगल-प्रभाव कीर्तन समग्र पुरुषार्थ का साधक है जैसे एक ही कुजी ताले को मुद्रित करने तथा खोलने मे भी उपयोगी है वैसे ही एक ही माया सेवक के इच्छानुरूप भोग और मोक्ष को भी देने में समर्थ है। इससे यह चरित्र अवश्य मगलदायक जानकर इसका नाम मंगल नाटक प्रसिद्ध किया गया। देवी की कृपा का सविस्तार वर्णन है। महिपासुर के प्रसंग को लेकर देवदानव युद्ध का वर्णन है।

नाटक मे संस्कृत भापा का प्रयोग है।

जो पात्र जिस भाषा के उपयुक्त है उससे उसी भापा का प्रयोग कराया गया है।

मंगल सूत्र (सन् १९५३, पृ० ८५), ले० : वृन्दावन लाल वर्मा, प्र० मयूर प्रकाशन, झाँसी, *पात्र* · पु० ८, स्त्री ३; *अक* ३; *दृश्य* · ७, ५, ७।

इस नाटक मे नारी-उद्धार की अभिव्यक्ति है। धनलोलुप पीताम्बर अपने पुत्र कुन्दनलाल का विवाह धनाढ्य व्यवसायी रोहन की पुत्री अलका से कर देता है। इस विवाह मे उसे पाँच हजार रुपए दहेज स्वरूप प्राप्त होते है। कुन्दनलाल का अपनी पत्नी के प्रति व्यवहार अत्यन्त अमानवीय है। अपनी शकालु प्रकृति के कारण ही वह उसे शारीरिक एव मानसिक प्रतारणा देता है। अपने पति के अमानवीय व्यवहार से त्रस्त होकर वह पिता की सहमति से एक हितैषी बुद्धमल के घर आश्रय लेती है। पीताम्बर अपने पुत्र कुन्दनलाल के सहयोग से बुद्धमल का घर जलाने का असफल प्रयास करता है। अलका अपने पिता के परामर्श से ही कुन्दनलाल से सम्बन्ध-विच्छेद करके गोपीनाथ के साथ पुनर्विवाह कर लेती है। इस पुनर्विवाह के अवसर पर अलका के पिता उसे मगल-सूत्र भेट करते है।

मंगल हो तुम्हारा (सन् १९४५, पृ० ४७), ले० · वि० द० घोटणो, *पात्र* पु० ४, स्त्री २, *अक* · ३; *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल बम्बई शहर का एक छोटा कमरा।

इस नाटक मे आधुनिक प्रेम का स्वरूप प्रस्तुत किया गया है।

केदार और काका प्रातःकाल शोभा के द्वार पर पहुँचते है। शोभा अपने श्वशुर काका का अपमान करती है। शोभा नई रोशनी की स्त्री है। मजू उसकी पडोसिन है। वह मजु और विकास को चाय पिलाने अपने घर ले जाती है। शोभा विलास का पूरा स्वागत करती है। शोभा के पति केदार एक प्रसिद्ध डाक्टर और समाजसेवी है। उनको घर बैठने का अवकाश कहाँ। मजु विलास के पास बैठ जाती है। सब मे परिहास चलता है। स्त्री की महती शक्ति पर चर्चा होती है। विलास उन्मुक्त प्रेम का पुजारी है। वह कहता है—ब्याह करके भी कोई कभी सुखी हुआ है। पैसे कमाकर पत्नी के लिए एक घोसला बनाना। इतना करने पर भी पत्नी का जी ऊब न जाय इसलिए उसको खेलने के लिए बच्चे पैदा करना-बस"—

पर विलास अन्त मे विवाह के लिए तैयार हो जाता है। मजु और विलास का विवाह आर्य-समाज-मन्दिर मे होता है। मजु शोभा से पूछती है—बहिन तुम खुश हो ना।

इस प्रकार आधुनिक प्रेम के स्वरूप का इसमे चित्र खीचा गया है।

मंगू (सन् १९६०, पृ० ७२), ले० बाबा डिके, प्र० बलवन्तराय ऐण्ड कम्पनी, दिल्ली, *पात्र* : पु० ८, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य-रहित*।

इस नाटक मे डाकू समस्या पर प्रकाश डाला गया है। नाटक मे महाजन गोकुलदास डाकुओ को धन दे करके अपने जान-माल की रक्षा का उपाय करता है। चाची और गिरधारी इस समझौतावादी रीति का विरोध करते है। वे डाकुओ का प्रतिरोध करना कर्त्तव्य समझते है। गिरधारी गाँव को आत्म-रक्षा के लिए स्वावलम्बी बनाना चाहता है। गाँव मे आग लग जाती है। पारस्परिक सहयोग से ग्रामवासी आग बुझाते गिरधारी दैन्य और अर्थ-सचयी प्रवृत्ति मे डाकू उत्पन्न होने का कारण देखता है। वह सहयोग, सहानुभूति और प्रेम को महत्त्व देता है। गाँव के लोग डाकुओ के आतक से गाँव छोड़ जाते है। गिरधारी और चाची डाकुओ का मुकाबला करने के निमित गाँव मे रह जाते हैं।

डाकू मगू गाँव लूटने आता है। चाची उसके साथ पुत्रवत् स्नेह का व्यवहार करती है। वह उसका दूध से सत्कार करती है। वह कहती है—अरे तू बडा हो गया है, किन्तु मेरे लिए तो मगू ही रहेगा। प्यार-भरा

व्यवहार मगू का हृदय पिघला देता है। वह स्वीकार करता है कि समाज के निहित स्वार्थी तथाकथित महाजन और राजा जैसे लोगो ने उसको वहकाया और कुकृत्य के लिए प्रोत्साहन दिया। गिरधारी मगू को धन-लोलुप समाज-द्रोहियो से सावधान करता है। वह मगू को पीडितो के हित मे शक्ति लगाने की प्रेरणा देता है।

गोकुलदास जोरा और मालया से मिलकर समाज-सुधारको के विरुद्ध, षड्यत्र करता है। ठाकुर स्वराज्य और परिवर्तन की वात को ढकोसला समझता है। वह प्राचीन रूढिवादी नीति के अनुसार यथास्थिति कायम रखने के लिए दुरभिसधियो का सहारा लेता है। गिरधारी उसकी डकैती, राहजनी, लूट और शोषण की नीति से देश के वर्बाद होने की चेतावनी देता है। वह मगू को भी डकैती जैसे बाभत्स कुत्सित कृत्य को त्याग सामाजिक जीवन बिताने की प्रेरणा देता है। मंगू आत्मसमर्पण करता है। ठाकुर गिरधारी को गोली मारना ही चाहता है कि मगू उसका हाथ पकड लेता है। मगू उसको क्षमा कर जेल ले जाता है। नाटक मे गाधी जी के ट्रस्टीशिप और हृदय परिवर्तन का सिद्धात प्रस्तुत किया गया है।

मंजरी (पापाणी मे सगृहीत रेडियो गीत-नाट्य) (सन् १९५८, पृ० ८०), ले० · जानकी वल्लभ शास्त्री; प्र० · लोक भारती, इलाहाबाद; *पात्र* . पु० ३; स्त्री २, *अक-रहित*, *दृश्य* ५। *घटना-स्थल :* राजप्रासाद।

प्रारम्भ मे राजा, रानी तथा विदूपक के हल्के परिहासात्मक स्थल है। इसी दृश्य मे रानी के गुरू अपने योग-चमत्कार से विश्व-मोहिनी राजकुमारी मजरी को प्रकट करते है। रानी मजरी को बन्दी बना देती है। उधर राजा उसके वियोग मे एक दिवस छिपकर उससे प्रणय-निवेदन करता है, जिसके अस्वीकृत हो जाने पर राजा मूर्छित हो जाता है। योगी योग-वल से मजरी द्वारा राजा के प्रणय-प्रस्ताव को स्वीकार करा देता है किन्तु शीघ्र ही मंजरी उससे रूठ जाती है। मजरी विवाहित राजा से विवाह करने का विचार त्याग देती है। उस समय मजरी को ज्ञात होता है कि राजा उसके लिए युद्ध की तैयारी कर रहा है। युद्ध-आशका से वह यह सम्वन्ध स्वीकार कर लेती है। अन्तर्द्वन्द्व से ग्रस्त मजरी कटार द्वारा आत्मघात कर लेती है। प्रेमोन्मत्त राजा के प्रलाप के साथ गीतिनाट्य समाप्त होता है।

मन्दिर की दीवारें (सन् १९०५, पृ० ४४), ले० शरदेन्दु रामचन्द्र गुप्त; प्र० . ठाकुर प्रसाद ऐड सस बुकसेलर, वाराणसी, *पात्र :* पु० ६, स्त्री ५, *अक* . ४, *दृश्य :* २, ५, ५, ६।

इसमे मन्दिर की उन दीवारो की गाथा है, जिनके नीचे ईश्वरभक्त मीरा गीत मे सुख-चैन की बासुरी बजाती रहती है। वह गीतो मे ही अपने अरमानो के दीप जलाती है। अचानक एक दिन वे ही दीवारे उस वेगुनाह लडकी के लिए कब्र वन गई, जिसके नीचे मीरा को छिपना पडा। वह न केवल अपने प्रियतम मोहन की निगाहो से वल्कि दुनिया-भर के निगाहों से सर्वदा के लिए ओझल हो जाती है।

अनाथ लडकी कल्याणी मीरा की सखी है। वह भी मन्दिर की दीवारो की तरफ पहला ही कदम उठाती है कि उसे किसी के रिवाल्वर का शिकार बनना पडता है। मोहन तथा गणेश दो विछुडे हुए भाई भी एक साथ मिल जाते है तथा मीरा और कल्याणी को रिवालवर का शिकार बना देते है। इस सामाजिक नाटक मे प्रेम की विषमता दिखाना नाटककार का उद्देश्य प्रतीत होता है।

मगध-महिमा (इतिहास के आँसू मे सकलित) (सन् १९५१, पृ० ८०), ले० : रामधारी-सिह दिनकर, प्र० · अजन्ता प्रेस लि०, पटना; *पात्र :* २ अमूर्त पात्र, *अक-रहित*; *दृश्य* ८।

'मगध-महिमा' गीति-नाट्य मगध के गौरवशाली अतीत का भव्य चित्र प्रस्तुत करता है। इतिहास और कल्पना दो पात्रो

के माध्यम से दिनकर ने सैल्यूकस की पराजय तथा कलिंग-विजय की दृश्य-कल्पना की है। भारत का गौरवशाली विश्व-वन्दनीय अतीत दया, धर्म, करुणा से ही अनुप्राणित रहा है, दिनकर मगध-महिमा मे यह मूलभावा लेकर चले है। यह लघु कथ्य वैचारिक स्तर पर विकसित हुआ है। कार्य-व्यापार अधिकाशतः सूच्य है।

मगध सुन्दरी (सन् १८७१, पृ० ५६), ले० . रामेश्वर सिह नटेश्वर; प्र० साहित्य सगम, गया, पात्र : पु० ५, स्त्री २, अक : ३; दृश्य ३, ३ २ ।
घटना-स्थल . शाही महल तथा वन प्रान्त ।

यह ऐतिहासिक नाटक गुप्तकाल की अपूर्ण सुन्दरी चित्रलेखा के प्रेम के आधार पर लिखा गया है। सामन्त बीजगुप्त मगध की राजनटी को प्यार करता है किन्तु उसके हृदय मे योगी कुमार गिरि की छाया भी अकित है जिसे वह निकाल नही पाती है। चित्रलेखा अपने प्रणय पर अडिग कुमार गिरी के आश्रम मे रहने लगती है। वह तपस्विनी भेष मे योगिनी बनी रहती है। बीजगुप्त उसके प्यार मे व्याकुल रहता है किन्तु शुद्ध प्रेम के समक्ष उसकी असफलता ही दृष्टिगोचर होती है। अत मे चित्रलेखा अपनी कला पर पुन. उतर आती है और बीजगुप्त उसे प्राप्त करता है।

मजदूर की दुनिया (सन् १९५६, पृ० ५९), ले० रेवती कान्त सिंह; प्र० : राष्ट्रभाषा पुस्तकालय, पटना ४, पात्र · पु० १६, स्त्री १, अक · ३, दृश्य ५, ५, ४।
घटना-स्थल : गाँव एव कारखाना ।

इस सामाजिक नाटक मे लेखक ने मजदूरो की दुर्दशा का स्पष्ट चित्र खीचने की चेष्टा की है। इसमे मगल, बुझावन तथा सहतू गाँव के किसान है जो बाद मे मजदूर हो जाते है। इन किसानो को जमीदार तथा मिल मालिक शमशेर सिह अपने मिल मैनेजर, पाण्डेय जी तथा पुलिस अफसरो की मदद से जबरदस्ती जमीन से बेदखल कर देते है। किसान मिलकर इसका विरोध करते है तथा न्यायालय मे मुकदमा पेश करते है लेकिन इस स्वार्थी तथा मुनाफाखोरी दुनिया मे पैसे के बल पर ही न्यायालय मे न्याय होता है जिससे वहाँ पर उनको निराशा ही हाथ आती है। मगरू आदि किसानो को छ. छ मास की सजा हो जाती है। अन्त मे सभी किसान शमशेर सिंह की मिल मे कार्य करने लग जाते है। वहाँ भी मजदूरो को बहुत दबाया जाता है। उनको तीन-तीन माह का वेतन तथा बोनस नही दिया जाता है तथा वेतन बढाने के बजाय और घटा दिया जाता है। मजदूर नेता प्रकाश भी पैसे के लालच मे आकर मजदूरो के खिलाफ हो जाता है। लेकिन मजदूर राजेश तथा मिल मालिक के लडके मनोहर तथा पत्नी सुधा सभी मिलकर मिल मे हडताल करा देते है। मिल मालिक का लडका मनोहर तथा सुधा मजदूरो का बडी हिम्मत से साथ देते है। वह अपने पिता की परवाह नहीं करते। मनोहर हडताल को पूर्ण सफल बनाये रखने की कोशिश करता है। उसे पुलिस की लाठियाँ खानी पडती है जिससे वह घायल हो जाता है। अन्त मे मिल मालिक शमशेर सिह तथा मैनेजर को मजदूरो की एकता के सामने झुकना पडता है। शमशेर सिंह अपने पुत्र मनोहर तथा मजदूरो के सामने अपने किये हुए कर्मो लिए बडा क्षोभ प्रकट करता है। वह मिल का सारा कार्यभार मनोहर को सौंप देता है। मनोहर मिल के सभी मजदूरो को मजदूर न समझकर मिल का समान अधिकारी मानता है। सभी मजदूर मनोहर को एकता कायम रखने के लिए धन्यवाद देते है।

मझली महारानी (सन् १९५३, पृ० १३८), ले० सद्गुरु शरण अवस्थी, प्र० इडियन प्रेस, प्रयाग, पात्र · पु० २२, स्त्री ११, अंक . ३; दृश्य ८, ९, ९ ।
घटना-स्थल . राजप्रासाद, जगल, एकान्त की रगस्थली ।

यह नाटक पं० माखनलाल चतुर्वेदी की प्रेरणा से लिखा गया। इसमे राम वनवास के

पूर्व अभिषेक की प्रारम्भिक चर्चा से लेकर कैकेयी द्वारा वनवास तथा अन्त मे राज्यभिषेक की कथा नाटक के रूप मे वर्णित है। इसमे मझली रानी कैकेयी के चरित्र मे अभूतपूर्व परिवर्त्तन दिखाया गया है। कैकेयी वशिष्ठ मुनि से प्रार्थना करती है कि मुझ पति-घातिनी का उद्धार कैसे होगा। वशिष्ठ जी समझाते है—"समय मृत्यु से उनकी असमय मृत्यु कही अच्छी है।" आगे चलकर वशिष्ठ जी कैकेयी को समझाते हुए कहते है—"वे (राजा दशरथ) स्वर्ग मे अपनी प्रिय पतिव्रता पत्नी की प्रतीक्षा कर रहे है।"—नाटक के अन्त मे कैकेयी अपने हाथ से राम का राज्याभिषेक करते हुए मूर्च्छित हो जाती है।

मझौआ के बागड़ (वि० २००८, पृ० ६५), ले० डॉ० सत्यनारायण, प्र० . जनवाणी प्रकाशन, हरिसन रोड, कलकत्ता; *पात्र* पु० १२, स्त्री १, *अक* ३, *दृश्य :* ४, ५, ५।

यह हास्य रस प्रधान नाटक है। इस नाटक मे वागड सिह सिपाही थाने के दारोगा गिरगिट चौवे के साथ गाँव मे तहकीकात करने जाता है। वागड सिह दारोगा की हर वात को काटता जाता है। इन दोनो का वार्तालाप हास्य रस पूर्ण है। दारोगा गाँव के जमीदार राजा अक्लमर्दन पाण्डेय के यहाँ रुकता है। राजा अक्लमर्दन पाण्डेय और गिरगिट चौवे मे वार्तालाप होता है। पाण्डे की लडकी ने मैट्रिक की परीक्षा दी है, वह इसके विवाह के लिये चिन्तित है। गिरगिट चौवे उसके विवाह के लिये अपने लडके भपोल का प्रस्ताव करता है। दरोगा का लडका वडा मूर्ख है। जव वह विवाह करने जाता है तो गाँव वाले उसकी मूर्खता का मजाक उडाते है और कहते है कि वह तो अज्ञात का लडका है। दारोगा समझता है कि पाण्डे भी मजाक करने वालो मे सम्मिलित है। वह अक्लमर्दन पाण्डे के पास सन्देश भेजता है कि वह क्षमा माँगे। उसी रात अक्लमर्दन अपनी लडकी की शादी एक गरीव ब्राह्मण के साथ कर देता है और अपनी जायदाद भी उसी को देना चाहता है।

दारोगा महाजन को २०,०००) रु० का ठेका दिलाता है। वह बदले मे एक टीन तेल, घी तथा नयनसुख कपडा चाहता है। महाजन घटिया सामान देकर दारोगा को झासा देता है। दारोगा इस पर गुस्सा होता है।

मणि गोस्वामी (वि० १६८८, पृ० ७४), ले० कृपानाथ मिश्र; प्र० : पुस्तक भडार, लहेरिया सराय, पटना, *पात्र* . पु० ६, स्त्री ३, *अक-रहित*, *दृश्य :* ६।
घटना-स्थल · बगाली जमीदार का घर, बरामदा और आँगन।

नाटक की नायिका शामा अपने भाई का विवाह समाज के विरोध करने पर भी एक शूद्र के साथ करने को तैयार हो जाती है। किन्तु शामा का पिता इस विवाह का विरोध करता है। यह एक ब्राह्मण कुल का है जिसमे जाति-पाति का बधन विवाह के लिए आवश्यक माना जाता है। नाटककार अन्त मे शामा की विजय ही दिखलाते है क्योकि पिता अत मे बाध्य होकर अपने पुत्र का विवाह शूद्रा के साथ करने की सहमति दे देता है।

इस नाटक की भूमिका मे नाटककार 'सत्यमेव जयते नानृतम्' का विरोध करता है। उसका कथन है कि इस युग मे सत्य की पराजय और असत्य की विजय देखी जाती है।

मतवाली मीरा (सन् १६३७, पृ० १२६), ले तुलसीराम शर्मा; प्र . मीरा मन्दिर, वम्वई, *पात्र* · पु० ३, स्त्री २; *अक* २, *दृश्य-रहित*।

इस ऐतिहासिक नाटक मे मीरावाई के जीवन से सम्वन्धित क्रमवद्ध घटनाओ का वर्णन है। मीरा के जीवन-दृश्य के साथ उनके पदो का भी खूव प्रयोग किया गया है। इसकी विशेषता मीरा के जीवन को नाटकीय रूप मे ढालने के साथ उपयुक्त स्थान पर उनके पदो का समावेश है।

मत्स्यगधा (सन् १९३७, पृ० ६४), ले उदयशकर भट्ट; प्र आत्मा राम ऐण्ड सन्स, दिल्ली, पात्र पु० २, स्त्री २, अक-रहित, दृश्य ६।
घटना-स्थल गगा तट, क्रीडा उद्यान।

'मत्स्यगधा' पौराणिक वृत्तान्त पर आधारित एक मनोवैज्ञानिक गीतिनाट्य है। सम्पूर्ण गीतिनाट्य का केन्द्र-बिन्दु मत्स्यगधा है, जो इतिहास मे सत्यवती के नाम से प्रसिद्ध है।

मत्स्यगधा अपनी अन्तरग सखी के साथ पुष्प-चयन करती है। इसी समय छायामय अनंग का प्रवेश होता है। वह यौवन के प्रति मत्स्यगधा को सचेष्ट करता है, उसका रहस्य समझाता है तथा उसे कामदान दे अदृश्य हो जाता है।

सूने तट पर एकाकी मत्स्यगंधा विचार-मग्न बैठी है। तभी पराशर ऋषि नदी पार कराने का अनुरोध करते है। पराशर को देखकर मत्स्यगंधा को यौवनाकाक्षा का आधार मिल जाता है।

मत्स्यगधा और पराशर नौका मे बैठे है। वासनाभिभूत पराशर मत्स्यगधा से रतिदान मागते है। मत्स्यगधा स्वय काम-विह्वला है। परिणामस्वरूप पार उतरने से पूर्व ही अपनी वासना की तृप्ति करके उसे चिर-यौवन का वरदान दे जाते है।

मत्स्यगधा शान्तनु की पत्नी के रूप मे प्रस्तुत होती है। शीघ्र ही मत्स्यगधा वैधव्य को प्राप्त होती है।

उसका चिरकाम्य यौवन वैधव्य मे अभिशाप बन जाता है, जिसके परिणाम-स्वरूप कामाग्नि मे झुलसती मत्स्यगंधा कराह उठती है। इतने मे ही अनग आता है। मत्स्यगधा उसे यौवन के उपभोग-निमित्त आमन्त्रित करती है। नधर अनग उसे प्रताडित करता है, जिससे कामविह्वला मत्स्यगधा चीत्कार कर उठती है।

मदन दर्शन (सन् १९५६, पृ० ६७), ले० . अनिल कुमार, प्र० . अज्ञात सभवत स्वय-लेखक, पात्र पु० ३ स्त्री० १, अंक दृश्य-रहित।
घटना-स्थल पर्वत।

इस गीतिनाट्य की कथा का आधार रामायण है। इसमे शिव के द्वारा कामदेव को भस्म कर देने की पौराणिक गाथा को कवि ने नए अर्थो और प्रतीको के साथ प्रस्तुत किया है। इस नाटक के अनुसार शृंगार और सहार विश्व की दो शक्तियाँ है। प्रथम निर्माण का प्रतीक है तथा दूसरा विनाश का द्योतक न होकर वास्तव मे कवि के अर्थो मे नव निर्माण का प्रतीक है। मदन के रूप मे विश्व की विलासिता, अपराजेय विरक्त पौरुष से टकराती है जिसमे वह जल कर क्षार हो जाती है। ऐसा होने के उपरान्त एक नए निर्माण को स्थान मिलता है, क्योकि जिस स्थान की रिक्तता मदन के क्षार होने से होती है, उसकी पूर्ति के लिए एक नवीन सस्कार का उदय होना है।

मदन-दहन 'तमसा' मे सकलित रेडियो गीति नाट्य (सन् १९६८, पृ० ७०), ले० : जानकी वल्लभ शास्त्री; प्र० : राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पात्र पु० ४, स्त्री ५, अक-रहित; दृश्य ३।
घटना-स्थल कैलास पर्वत।

यह 'मदन-दहन' काम-दहन के पौराणिक प्रसग पर आधारित गीतिनाट्य है। असुरो से पराजित देवगण शिव को प्रसन्न करने के लिए स्तुति करते है क्योकि शिव-पुत्र द्वारा ही राक्षसो का वध होगा। ब्रह्मा तथा इन्द्र को अनायास ही कामदेव का विचार आता है और उसे अपनी लक्ष्य-पूर्ति का साधन बनाने का निश्चय करते है। वासन्तिक वातावरण मे वसन्त तथा मदन दोनो से उमा की सखियाँ ऐसी युक्ति पूछती है, जिससे उमा शंकर की कृपा प्राप्त कर सके, किन्तु शिव की योग-साधना से भयभीत कामदेव अपनी असमर्थता व्यक्त करता है। इस पर रति नारी-हृदय का पक्ष लेती हुई उस पर व्यग्य करती है। कामदेव इस चुनौती को स्वीकारते हुए उमा को आश्वासन देता है। उधर प्रकृति के मादक वातावरण से प्रभावित शिव की समाधि भग होती है। उमा के

सम्मुख रखकर काम को शर-सन्धानते हुए देखकर शिव कुपित हो जाते है और आग्नेय नेत्रो से काम को भस्म कर देते है। रति के विलाप पर आकाशवाणी द्वारा काम की अशरीरी सत्ता की उद्घोषणा के साथ ही गीतिनाट्य समाप्त हो जाता है।

मदन-मंजरी (सन् १८८४, पृ० ९३), ले० अमनसिह गोटिया और जगेश्वर दयाल, प्र०· भारत जीवन प्रेस, वाराणसी, *पात्र :* पु० ५, स्त्री ५, *अक* ८, इस नाटक मे दृश्य की जगह अको के साथ-साथ जीव का पतन एव उत्थान दिखाया गया है।
घटना-स्थल . पुष्प वाटिका, राजा मदन मोहन की सभा, मजरी का मदिर।

इस नाटक मे नाटककार ने नर-नारी का प्रेम दर्शाया है। मजरी राजा को देख कर उन पर मत्र मुग्ध हो जाती है और उनका प्रणय पाने के लिए व्याकुल हो जाती है। अन्त मे दोनो का मिलन होता है परन्तु मजरी अपने पति की परीक्षा लेती है कि वह परायी स्त्री पर कही अपना दिल तो नही दे बैठे है परन्तु राजा उस परीक्षा मे सफल हो जाता है।

मदनिका 'आरसी' ग्रन्थावली मे संकलित सगीत रूपक (सन् १९४१, पृ ७०), ले० आरसीप्रसादसिह; प्र०· तारामडल मुजफ्फरपुर; *पात्र* स्त्री ३, *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल नदी।

'मदनिका' वसन्त ऋतु की मादकता से परिपूरित एक लघु सगीत-रूपक है। माधविका मजुलिका तथा मदनिका आदि स्वर्ग अप्सराएँ पृथ्वी पर मदनोत्सव मनाती है। वसन्तागमन पर जहाँ प्रकृति तक अद्भुत मादकता से आप्लावित रहती है। वहाँ मानव को इस वातावरण के प्रति नि स्पृह देखकर लेखक को क्षोभ होता है। वह देखता है कि आज इन सास्कृतिक पर्वो के प्रति मानव का रागात्मक स्रोत लुप्त हो रहा है। कदाचित् इसीलिए मानव युद्धोन्मुख हो रहा है।

मदिरा देवी (सन् १९२५, पृ० ९८), ले० : आरज़ू साहब; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी, बनारस ; *पात्र :* पु० १०, स्त्री ५, *अक :* ३, *दृश्य* ६, ४, ५।
घटना-स्थल . मदिरालय, बैंक, मकान।

यह एक शिक्षाप्रद सामाजिक नाटक है। इस मे दिखाया गया कि किस प्रकार रामचन्द्र (नाटक का नायक) बैंक फेल होने पर निर्धन हो जाता है और व्यथा भुलाने को मदिरा पीना शुरू कर देता है परन्तु मदिरा उसे और भी पतन के गर्त मे ढकेलती है। नाटक उद्देश्यपूर्ण है। पारसी थियेट्रिकल कम्पनी मे खेलने की दृष्टि से लिखा गया है।

मधु ऋतु मुस्काई (सन् १९६३, पृ० ४०), ले० · मनोहर प्रभाकर, प्र० कल्याणमल ऐंड सस, जयपुर।

जसका तथा अन्य सगीत-रूपक मे सकलित।
'मधु ऋतु मुस्काई' ऋतु सम्बन्धी एक लघु सगीत-रूपक है, जिसमे वसन्त के मादक रूप का वर्णन किया गया है।

मधुर मिलन (वि० १९८०, पृ० ९८), ले०: जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, प्र० · हिन्दी पुस्तक भवन, १८१, हरिसन रोड, कलकत्ता; *पात्र :* पु० १६, स्त्री ८, *अक* ३, *दृश्य* ७, ९, ६।
घटना-स्थल : बाग का कमरा, विवाह मडप देवी दयाल का कमरा।

यह एक सामाजिक नाटक है, जिसमे हिन्दू समाज विशेषकर मारवाडी समाज और देश की विभिन्न परिस्थितियो को दर्शाया गया है।

मध्यान्तर (वि० २०१८, पृ० ६४), ले० अनिरुद्ध यदुनन्दन मिश्र, , प्र०: श्री गगा पुस्तक मदिर, पटना-४, *पात्र*· पु० ७, स्त्री २, *अक-रहित*, *दृश्य*· १०।

यह एक पारिवारिक जीवन पर लिखा गया नाटक है बीमारी से सभी चिन्तित है। बहुत प्रयास करने पर भी पिता का जीवित

रहना कठिन है। मृत्यु से कोई नहीं लड सकता, किन्तु राजू कहता है कि नहीं, नहीं बाबूजी, यह कभी नहीं हो सकता। मैं आपको कभी न मरने दूंगा। इस प्रकार परिवार की अन्य स्नेहयुक्त बातो, और समस्याओ से पूर्ण यह नाटक आज की स्थिति प्रगट करता है।

मन की उमंग (वि० १९४३, पृ० ३२), ले० अम्बिका दत्त व्यास; प्र०. देवी प्रसाद नारायण यंत्रालय, मुजफ्फरपुर; पात्र: पु० ६, स्त्री १; *अक-दृश्यरहित*।
घटना-स्थल . कोई उल्लेख नही। केवल वार्तालाप है।

व्यास जी ने धर्म समाओ के उत्सवो में अभिनय के लिए वार्तालाप के आधार पर कई लघु रूपक लिखे थे। उनको इसमे इस रूप मे संकलित कर दिया गया है कि एक रूपक बन जाए। इन लघु रूपकों का अभिनय धर्म-सरक्षिणी सभा मुजफ्फरपुर में हुआ। देवी प्रसाद जी लिखते हैं—"इनके अभिनय को देखते न जाने कहाँ से भक्ति बरस पड़ी कि सबके कठ भर गये, आँख भींग गई और रोये खडे हो गये।"

नाटक के प्रारम्भ मे भारत दुखी होकर धर्म से कहता है कि आप हमे छोड़कर कहाँ जा रहे है? धर्मक हता है कि भारतवासी धर्म-कर्म भूलते जा रहे हैं। पर तुम धीरज धरो, अभी इस देश मे धर्मात्मा हैं। तदुपरान्त धर्म और अधर्म मे सस्कृत मे विवाद होता है। अधर्म कृपाण निकालकर धर्म की हत्या करना चाहता है किन्तु धर्म के सहायको को देख कर अधर्म भाग जाता है। तदुपरान्त संस्कृत भाषा विलाप करती है। इन्द्रलोक मे गन्धर्व-आता है। वह भारत मे जन्म लेने की इच्छा प्रकट करता है।

प्रस्तुत नाटक मे सतीत्व के गौरव पर बल दिया गया है। इसकी नायिका मनोरंजनी अनेक विघ्न-बाधाओ के होते हुए भी अपने सतीत्व पर दृढ़ रहती है।

मनोरथ (सन् १९६६, पृ० ८०), ले० : श्री भाग्यनारायण झा; प्र० . योगी प्रकाशन, कारज, दरभंगा; पात्र पु० १३, स्त्री २; *अंक: ३; दृश्य १५*।
घटना-स्थल : पूजागृह, गाँव की पाठशाला, कालेज-छात्रावास।

'मनोरथ' की कथावस्तु मिथिला के लोक-जीवन पर आधारित है। इसमे मानव-हृदय की भावनाओं को सुन्दर ढंग से व्यक्त किया है। नाटक एक दरिद्र परिवार की कथावस्तु को लेकर चलता है। राजे-झा के पास पैसे का अभाव है फिर भी वह अपने बेटे लक्ष्मीनाथ की शिक्षा की उचित व्यवस्था करता है। गाँव के कुछ ऐसे लोग हैं जो आधुनिक शिक्षा के साथ ही साथ राजे-झा की कटु आलोचना करते हैं। ऐसी स्थिति मे गंगानाथ झा इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि उसने ठीक ही किया कि अपने बेटे को आधुनिक शिक्षा की गन्ध तक नहीं लगने दी। इधर कालेज छात्रावास मे द्रव्याभाव के कारण लक्ष्मीनाथ और उनके मित्र उदयकान्त और भोगेन्द्र अत्यधिक चिन्तित हैं। अन्ततः वे लोग घर के लिए प्रस्थान करने का निर्णय कर लेते हैं। भोगेन्द्र के कहने से वे लोग उस दिन रुक जाते हैं। राजे झा और उनकी पुत्री शीला अपनी आर्थिक स्थिति पर

सम्मुख रखकर काम को शर-सन्धानते हुए देखकर शिव कुपित हो जाते है और आग्नेय नेत्रो से काम को भस्म कर देते है। रति के विलाप पर आकाशवाणी द्वारा काम की अशरीरी सत्ता की उद्घोषणा के साथ ही गीतिनाट्य समाप्त हो जाता है।

मदन-मंजरी (सन् १८८४, पृ० ६३), ले० : अमनसिंह गोटिया और जगेश्वर दयाल, प्र०· भारत जीवन प्रेम, वाराणसी, पात्र : पु० ५, स्त्री ५, अक . ८, इस नाटक मे दृश्य की जगह अको के साथ-साथ जीव का पतन एव उत्थान दिखाया गया है।
घटना-स्थल पुष्प वाटिका, राजा मदन मोहन की सभा, मजरी का मदिर।

इस नाटक मे नाटककार ने नर-नारी का प्रेम दर्शाया है। मंजरी राजा को देख कर उन पर मत्र मुग्ध हो जाती है और उनका प्रणय पाने के लिए व्याकुल हो जाती है। अन्त मे दोनो का मिलन होता है परन्तु मजरी अपने पति की परीक्षा लेती है कि वह परायी स्त्री पर कही अपना दिल तो नही दे बैठे है परन्तु राजा उस परीक्षा मे सफल हो जाता है।

मदनिका 'आरसी' ग्रन्थावली मे सकलित गीत रूपक (सन् १९४१, पृ ७०), ले० आरसीप्रसादसिंह, प्र० तारामडल मुजफ्फर पुर; पात्र· स्त्री ३, *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल नदी।

'मदनिका' वसन्त ऋतु की मादकता से परिपूरित एक लघु सगीत-रूपक है। माधविका मंजुलिका तथा मदनिका आदि स्वर्ग अप्सराएँ पृथ्वी पर मदनोत्सव मनाती है। वसन्तागमन पर जहाँ प्रकृति तक अद्भुत मादकता से आप्लावित रहती है। वहाँ मानव को इस वातावरण के प्रति नि स्पृह देखकर लेखक को क्षोभ होता है। वह देखता है कि आज इन सास्कृतिक पर्वो के प्रति मानव का रागात्मक स्रोत लुप्त हो रहा है। कदाचित् इसीलिए मानव युद्धोन्मुख हो रहा है।

मदिरा देवी (सन् १९२५, पृ० ९८), ले० : आरजू साहव; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी, बनारस ; *पात्र* · पु० १०, स्त्री ५, *अक* · ३; *दृश्य* ६, ४, ५।
घटना-स्थल · मदिरालय, बैंक, मकान।

यह एक शिक्षाप्रद सामाजिक नाटक है। इस मे दिखाया गया कि किस प्रकार रामचन्द्र (नाटक का नायक) बैंक फेल होने पर निर्धन हो जाता है और व्यथा भुलाने को मदिरा पीना शुरू कर देता है परन्तु मदिरा उसे और भी पतन के गर्त मे ढकेलती है। नाटक उद्देश्यपूर्ण है। पारसी थियेट्रिकल कम्पनी मे खेलने की दृष्टि से लिखा गया है।

मधु ऋतु मुस्काई (सन् १९६३, पृ० ४०), ले० · मनोहर प्रभाकर, प्र० कल्याणमल ऐंड सस, जयपुर।

जसका तथा अन्य संगीत-रूपक मे सकलित।
'मधु ऋतु मुस्काई' ऋतु सम्बन्धी एक लघु सगीत-रूपक है, जिसमे वसन्त के मादक रूप का वर्णन किया गया है।

मधुर मिलन (वि० १९८०, पृ० ९८), ले०: जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, प्र० : हिन्दी पुस्तक भवन, १८१, हरिसन रोड, कलकत्ता, *पात्र* : पु० १६, स्त्री ८, *अक* ३, *दृश्य* ७, ९, ६।
घटना-स्थल · बाग का कमरा, विवाह मडप देवी दयाल का कमरा।

यह एक सामाजिक नाटक है, जिसमे हिन्दू समाज विशेषकर मारवाडी समाज और देश की विभिन्न परिस्थितियो को दर्शाया गया है।

मध्यान्तर (वि० २०१८, पृ० ६४), ले० : अनिरुद्ध यदुनन्दन मिश्र, , प्र०: श्री गगा पुस्तक मदिर, पटना-४; *पात्र*. पु० ७, स्त्री २; *अक-रहित*, *दृश्य*. १०।

यह एक पारिवारिक जीवन पर लिखा गया नाटक है बीमारी से सभी चिन्तित है। बहुत प्रयास करने पर भी पिता का जीवित

रहना कठिन है। मृत्यु से कोई नही लड सकता, किन्तु राजू कहता है कि नही, नही वावूजी, यह कभी नही हो सकता। मैं आपको कभी न मरने दूंगा। इस प्रकार परिवार की अन्य स्नेहयुक्त वातो, और समस्याओ से पूर्ण यह नाटक आज की स्थिति प्रगट करता है।

मन की उमंग (वि० १९४३, पृ० ३२), ले० अम्बिका दत्त व्यास, प्र० देवी प्रसाद नारायण यत्रालय, मुजफ्फरपुर, *पात्र* पु० ६, स्त्री १; *अक-दृश्यरहित* ।
घटना-स्थल . कोई उल्लेख नही। केवल वार्तालाप है।

व्यास जी ने धर्म सभाओ के उत्सवो मे अभिनय के लिए वार्तालाप के आधार पर कई लघु रूपक लिखे थे। उनको इसमे इस रूप मे संकलित कर दिया गया है कि एक रूपक वन जाए। इन लघु रूपको का अभिनय धर्म-संरक्षिणी सभा मुजफ्फरपुर मे हुआ। देवी प्रसाद जी लिखते है—"इनके अभिनय को देखते न जाने कहाँ से भक्ति वरस पड़ी कि सवके कठ भर गये, आँख भीग गई और रोये खडे हो गये।"

नाटक के प्रारम्भ मे भारत दुखी होकर धर्म से कहता है कि आप हमे छोडकर कहां जा रहे है? धर्म कहता है कि भातरवासी धर्म-कर्म भूलते जा रहे है। पर तुम धीरज धरो, अभी इस देश मे धर्मात्मा हैं। तदुपरान्त धर्म और अधर्म मे सस्कृत मे विवाद होता है। अधर्म कृपाण निकालकर धर्म की हत्या करना चाहता है किन्तु धर्म के सहायको को देख कर अधर्म भाग जाता है। तदुपरान्त संस्कृत भाषा विलाप करती है। इन्द्रलोक से गन्धर्व-आता है। वह भारत मे जन्म लेने की इच्छा प्रकट करता है।

मनोरंजनी नाटक (सन् १८९०, पृ० १२४), ले० रघुवीर सिंह वर्मा प्र० वावू महावीर प्रसाद, मंत्री आर्य समाज, कलकत्ता, *पात्र* . पु० ११, स्त्री १; *अक* ६; *दृश्य* १, १, २, २, २, ११।

प्रस्तुत नाटक मे सतीत्व के गौरव पर वल दिया गया है। इसकी नायिका मनोरंजनी अनेक विघ्न-वाधाओ के होते हुए भी अपने सतीत्व पर दृढ रहती है।

मनोरथ (सन् १९६६, पृ० ८०), ले० : श्री भाग्यनारायण झा; प्र० योगी प्रकाशन, कारज, दरभंगा, *पात्र* पु० १३, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* १५।
घटना-स्थल . पूजागृह, गाँव की पाठशाला, कालेज-छात्रावास।

'मनोरथ' की कथावस्तु मिथिला के लोक-जीवन पर आधारित है। इसमे मानव-हृदय की भावनाओं को सुन्दर ढंग से व्यक्त किया है। नाटक एक दरिद्र परिवार की कथावस्तु को लेकर चलता है। राजे-झा के पास पैसे का अभाव है फिर भी वह अपने वेटे लक्ष्मीनाथ की शिक्षा की उचित व्यवस्था करता है। गाँव के कुछ ऐसे लोग है जो आधुनिक शिक्षा के साथ ही साथ राजे-झा की कटु आलोचना करते है। ऐसी स्थिति मे गंगानाथ झा इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि उसने ठीक ही किया कि अपने वेटे को आधुनिक शिक्षा की गन्ध तक नही लगने दी। इधर कालेज छात्रावास मे द्रव्याभाव के कारण लक्ष्मीनाथ और उनके मित्र उदयकान्त और भोगेन्द्र अत्यधिक चिन्तित है। अन्तत वे लोग घर के लिए प्रस्थान करने का निर्णय कर लेते हैं। भोगेन्द्र के कहने से वे लोग उस दिन रुक जाते हैं। राजे झा और उनकी पुत्री शीला अपनी आर्थिक स्थिति पर अत्यधिक चिन्तित हो जाते है कि लक्ष्मीनाथ को समय पर पैसा नही मिलेगा तो वह क्या पढेगा? जमीन वेचने के कारण गंगा नाथ राजे झा की अत्यधिक आलोचना करते हैं, किन्तु राजे झा का यह विश्वास है कि वे जमीन वेचकर हीरा उपार्जित कर रहे है। इसी समय उनका कनिष्ठ पुत्र आकर यह सूचित करता है कि लक्ष्मीनाथ सैकेण्ड डिविजन से पास कर गये है। प्रसन्नता की सीमा नही रहती है। अव नसीव झा की पत्नी साधना अपने वेटे को पढाने के लिए तत्पर हो जाती है। अन्तत: लक्ष्मीनाथ की

शादी अच्छी जगह नथुनी के माध्यम हो जाती है और अच्छी नौकरी भी मिल जाती है। शनै शनैः राजे झा की दरिद्रता समाप्त हो जाती है और उनका मनोरथ पूर्ण हो जाता है।

ममता (सन् १९६७, पृ० ११६), ले०. हरिकृष्ण 'प्रेमी', प्र० राजपाल एड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, *पात्र* पु० ६, स्त्री २; *अक* २, *दृश्य :* ५, ५।
घटना-स्थल ' मकान की बैठक, रजनीकान्त का मकान।

रजनीकान्त एक वकील है जो कला नामक नवयुवती से प्रेम करता है। एक दिन रजनीकान्त के पिता के मित्र रमाकात अपनी पुत्री लता के साथ उसके घर आते है। रमाकात रजनीकात से कहते है कि तुम्हारे पिता ने मेरी वेटी को अपनी बहू बनाना स्वीकार किया है। रजनीकात लता से विवाह के लिए इन्कार कर देता है। इस घटना से पूर्व ही लता के भाई यशपाल पर खून करने का अपराध लग जाता है। रजनीकान्त इसके लिए उसकी सहायता का वचन देता है। यशपाल असली खूनी को पकडने के लिए चला जाता है। एक दिन अचानक दुलहिन के वेश मे लता रजनीकान्त के पास जाती है और कहती है कि हमारा मैनेजर विनोद मुझसे बलपूर्वक विवाह करके सारी सम्पत्ति हड'पना चाहता है, अत तुम मेरी रक्षा करो। रजनीकान्त कला के कहने पर लता से विवाह कर लेता है।

कुछ समय पश्चात् एक दिन विनोद लता के पास आता है और उसे अपने जाल मे फँसाकर कैदी बना लेता है, जिससे वह लता की सारी सम्पत्ति प्राप्त कर सके। रजनीकान्त लता के वियोग मे शराबी बन जाता है। इसी बीच रजनी कला से विवाह करता है, परन्तु लता घर वापिस आ जाती है। विनोद पकडा जाता है। कला के भाई यशपाल पर खून करने का अपराध झूठा सिद्ध होता है। क्योकि वास्तविक खूनी और ही होता है। अन्त मे लता और कला एक साथ रहने की प्रतिज्ञा करती है।

मयंकमंजरी (सन् १८९१, पृ० १५६), ले० किशोरीलाल गोस्वामी, प्र० : नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, *पात्र :* पु० १०, स्त्री ६, *अक :* ५, *दृश्य* रहित।
घटना-स्थल ' मनोरमा का भवन, सुमन्तदेव पुष्पोद्यान की बारहदरी।

सुमन्तदेव की कन्या मयकमंजरी का वीरेन्द्रदेव से स्वाभाविक प्रेम हो गया है। और वह पतिरूप मे वरण करना चाहती है किन्तु उसके पिता बेटी का व्याह वसन्तदेव के साथ करना चाहते है। वसन्तदेव मयकमजरी से कहता है 'तुम राजा की रानी बनोगी और मै सदा के लिए गुलाम बना ही हूँ।' किन्तु मयंकमजरी का मन वीरेन्द्रदेव मे लगा है।

दूसरी कथा मत्री अनन्तदेव के पुत्र वसन्तदेव की है जिसने अवन्तीपति के मत्री की ब्याही बालिका को पुर्नविवाह के लिए बन्दी बनाकर रखा है। वीरेन्द्रदेव वसन्तदेव को धमकाता है कि यदि तू अभी कन्या को नही प्रगट करेगा तो तुझे प्राणदण्ड की आज्ञा दी जायेगी। वसन्तदेव के दुश्चरित्र सिद्ध होने पर सुमतदेव अपनी कन्या मयकमजरी का विवाह नरेन्द्रसिह के साथ कर देता है और पुत्री के साथ अन्याय करने की क्षमा-याचना करता है। जावालि ऋषि नवदम्पति को आशीर्वाद देते है। इस भरत वाक्य के साथ नाटक समाप्त होता है—

सब मेटि अन्ध परम्परा आनन्द मही मंगल भरै ॥

मर्दानी औरत (सन् १९४७, पृ० १८०), ले० : जी० पी० श्रीवास्तव; प्र० हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, *पात्र* ' पु० २६, स्त्री ६; *अक* ' ३, *दृश्य* ८, ६, ९।
घटना-स्थल मदन का मकान।

यह एक सामाजिक हास्यपूर्ण शिक्षाप्रद नाटक है। इसमें नाटककार सम्पादक वन्टाधार की कटु आलोचना करता है। मोहन एक प्रसिद्ध लेखक है जिसे साहित्य को सुधारने के लिए अपने जीवन मे अनेक कठिनाइयो का सामना करना पडता है लेकिन

फिर भी वह अपने पथ पर अडिग रहता है। सत्यानाशी एक मर्दानी औरत है, जो अपने को जीवन के सभी पहलुओ पर मर्दो के समान समझती है। यह भी एक प्रसिद्ध लेखिका है। वह अपने पति द्वारा बार-बार ठुकराये जाने पर भी लेखन-कार्य को नही छोडती। वह अनेक कठिनाइयो को झेलते हुए साहित्य को अच्छा रूप प्रदान करने मे लगी रहती है। अन्त मे सत्यानाशी की कार्य-कुशलता तथा मर्दानगी से उसे शोभारानी नाम द्वारा सुशोभित किया जाता है। सच्चे साहित्यकारो की दुर्दशा तथा नाटक-मडलियो के सचालक, सेठ एव मूर्ख सम्पादको की धन बटोरने की आदतो का भी सकेत किया गया है।

मर्यादा (सन् १९५०, पृ० ९६), *ले०*. तुलसी भाटिया 'सरल', *प्र०*. भावना क्षितिज, राम नगर, आलम बाग, लखनऊ, *पात्र* पु० ९, स्त्री ३; *अक* ३; *दृश्य*. ६, ६, ५।
घटना-स्थल बैठक, डिग्री कॉलेज, कमरा, प्रतियोगिता भवन।

इस सामाजिक नाटक मे सहपाठी छात्र छात्रा की प्रणय कथा है।

मनोज एक शरणार्थी युवक है। वह पाकिस्तान से विस्थापित होकर भारत आया है। शरणार्थी जीवन की कटुता से वह विक्षिप्त-सा रहता है, परन्तु उसकी बहन मजु उसे निरन्तर धैर्य तथा साहस देती रहती है। वह रवीन्द्र कॉलेज के आचार्य की अनुकम्पा से वहाँ का छात्र बन जाता है तथा एक वाद-विवाद-प्रतियोगिता मे उक्त कॉलेज की प्रतिभाशालिनी छात्रा अर्चना से अधिक अक प्राप्त करता है। अर्चना 'इस पराजय मे विजय का यह मधुर अभिमान कैसा' बोध करती हुई मनोज की तरफ आकर्षित होती जाती है और क्रमश. वे प्रणय-सूत्र मे बँध जाते है। मधुरिका इस प्रणय-प्रसग मे व्यवधान उपस्थित कर मनोज को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न करती है। आर्थिक कठिनाइयो के कारण मनोज अपना अध्ययन स्थगित कर मधुरिका को पढाना स्वीकार कर लेता है। उधर मधुरिका अर्चना पर नैतिक एव सामाजिक दबावो का भय दिखाकर उससे स्वीकार करवा लेती है कि वह मनोज को राखी बाँध दे। राखी बाँधने के अनन्तर भी वे एक-दूसरे को भुला नही पाते और उनका अन्तर्द्वन्द्व अत्यन्त प्रबल हो उठता है। अन्तत वे अपनी मूल भावनाओ को बदलने मे असमर्थ रहते है तथा भाई-बहन के ढोग को त्याग कर पति-पत्नी का सम्बन्ध स्थापित कर लेते है। मधुरिका अपने सभी प्रयत्नो मे विफल रहती है तथा अर्चना की बडी बहन मृणालिनी उन्हे अभयदान दे देती है।

महात्मा ईसा (वि० १९७९, पृ० १४७), *ले०*. बेचैन शर्मा 'पाण्डेय उग्र', *प्र०* : मनमोहन पुस्तकालय, काशी; *पात्र* : पु० १६, स्त्री ५, *अक* : ३, *दृश्य* : १२, १२, १२।
घटना-स्थल. काशी की सडक, हरोद का महल।

इस नाटक मे ईसा मसीह को काशी के विद्वान् सन्यासी विवेकाचार्य का शिष्य माना गया है। ईसा मसीह की अवस्था बीस वर्ष की है। विवेकाचार्य उन्हे भगवद्गीता, बुद्ध-चरित्र के द्वारा कर्मयोग का पाठ पढाते है। विवेकाचार्य की शिष्या एक अनाथ बालिका शान्ति यूरोशलीम मे कोढियो की सेवा के लिए जा रही है। उसी समय हेरोद का सेनापति शाबेल उसका हाथ पकडकर कहता है "प्रिये, तिरस्कार न करो। प्यारी! आओ हृदय मे छिपा लूँ।" शान्ति कटार निकाल कर उसे मारने चलती है तो ईसा उसे क्षमा कर देने का आग्रह करते है। इसी प्रकार शाबेल की क्रूरता से ईसा को सूली दी जाती है। मरियम रोदन करती है। ईसा के कपडे उतार लिये जाते है और उसके हाथ-पैर मे कीले ठोक दी जाती है। शान्ति भी चिता पर जल जाती है। ईसा की मृत्यु के उपरान्त उनके अनेक शिष्य बन जाते है और महात्मा ईसा की जय-जयकार के साथ नाटक समाप्त होता है।

महात्मा कबीर (सन् १९२२, पृ० १३६), ले० श्रीकृष्ण हसरत, प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी, *पात्र* पु० २२, स्त्री ९; *अक* ३, *दृश्य* : ८, ७, ५।

इस नाटक मे हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक सौहार्द्र उत्पन्न करने का सुन्दर प्रयास किया गया है।

इसमे महात्मा कबीर के जीवन सम्बन्धी कार्यों का उल्लेख है। कबीर जीवन के प्रारभ मे जुलाहा है। कपडे बुनकर अपने परिवार का भरण-पोषण करते है। उन्हे हिन्दू-मुसलमान दोनो प्रिय है। गुरु रामानन्द से शिक्षा लेकर समाज-सुधार मे लग जाते है जनता को अध्यात्म-चितन एव एकता से रहने का उपदेश देते है। इसलिए कबीर के मरने के बाद हिन्दू-मुसलमान दोनो मे उनकी लाश के लिए झगडा होता है। पर अन्तत लाश के स्थान पर दोनो को पुष्प ही प्राप्त होते है।

मशरिकी हूर (सन् १९२७, पृ० १७८), ले० राधेश्याम कथा वाचक, प्र० श्री राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, *पात्र* पु० ८, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* : ७, ६, ४।
घटना-स्थल घर, राजमहल।

नाटक की नायिका हमीदा नाटक मे प्राण-प्रतिष्ठा करने वाली प्रमुख पात्रा है। हमीदा एक वीर पिता की बेटी है। उसके हृदय मे दया और उदारता की स्रोतस्विनी वह रही है। वह एक बहादुर लडकी है जो छोटे-छोटे परिन्दो पर तीर चलाना पसन्द नही करती। वह कहती है 'मुझे तो शेर के शिकार का शौक है।' वह परोपकार मे अपने प्रेमी दिलेर जग को शाहजादी रोशन-आरा के हाथो मे उसके सौभाग्य साधन के लिए सानन्द समर्पण कर देती है। हमीदा नाटक मे अत तक लडके के रूप मे काम करती है। जब रोशन आरा से प्रेम बढ जाता है तो वह हमीद से (हमीदा) शादी के लिए कहती है पर जब उसे रहस्य मालूम होता है तो व्याकुल हो जाती है। लेकिन हमीदा तभी अपने प्रेमी को उसे समर्पण करती है।

न्यू अल्फ्रेड नाटक कम्पनी ऑफ बम्बई द्वारा अभिनीत।

महत्त्व किसे ? (सन् १९४७, पृ० ७५), ले० : सेठ गोविन्ददास; प्र० साहित्य भवन लिमिटेड प्रयाग, *पात्र* पु० ६ स्त्री १। *घटना-स्थल* सेठ की कोठी।

कर्मचन्द असहयोग-आन्दोलन के आवेश मे आकर प्रचार कार्यों, दीन जनो और सार्वजनिक सस्थाओ को दान देता है, भावुकता-वश कृषको तक से रुपया वसूल नही करता। रुपया डूबने के स्थान पर कर्ज वसूली के लिए वह सरकारी अदालतो मे नालिश नही करना चाहता। परिणाम यह निकलता है कि कर्मचन्द निर्धन हो जाता है। जो पुरुष उसकी पहले प्रशसा किया करते थे अब कर्मचन्द को मिथ्या आरोपो से दूषित करने लगते है। उसमे हर तरह की चारित्रिक दुर्बलताए आ जाती है। एक पूँजीपति तो अधिक से अधिक व्याज वसूल करते रहने पर भी उसकी गिरफ्तारी का वारण्ट निकलवा देता है और जेल भेजने मे कोई कसर नही रखता। इस आपत्ति के समय मे चतुर सत्यभामा अपना खोया हुआ कारोबार फिर से प्राप्त करने मे लगी रहती है। जब कारोबार पहले की तरह हो जाता है तो कर्मचन्द को समाज आदर की दृष्टि से देखने लगता है।

कर्मचन्द के क्षेत्र के लोग उसको सार्व-जनिक क्षेत्रो मे बढावा देते है। अब कर्मचन्द चुनाव के बाद मत्री बनने की सोचता है। प्रश्न यह उठता है कि महत्त्व किसे ? त्याग को या धन को ? उत्तर है कि हमेशा त्याग से काम नही चलेगा, सम्पन्नता का भी निजी महत्त्व है।

महर्षि वाल्मीकि (सन् १९५२, पृ० १८८), ले० प० राधेश्याम कथावाचक, प्र० : श्री राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, *पात्र* :

पु० १४, स्त्री ४; अक : ३, दृश्य ६, १०, ४।
घटना-स्थल जंगल।

यह एक पौराणिक नाटक है। सम्पूर्ण नाटक मे एक ही चरित्र की प्रधानता है।

ससार मे सीता-चरित्र की विमलता को सिद्ध करने के लिए वाल्मीकि ने रामायण की रचना की। सीता से स्नेह रखते हुए भी भगवान् राम अपनी गद्दी को कलंक से वचाने के लिए सीता को त्याग देते है। अन्त तक राम और सीता दोनो ही अपने-अपने धर्मो को निभाते हैं। वाल्मीकि सीता के सतीत्व को सिद्ध करके उनको राम की सहर्धमिणी स्वीकार करवाते हैं। अन्त मे वाल्मीकि की विजय होती है।

महल और झोपड़ी (सन् १९६८, पृ० ११३), ले० : दशरथ ओझा, प्र० फैंक व्रादर्स, चाँदनी चौक, दिल्ली, पात्र . पु० ११, स्त्री ४, अक : ४, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल कुम्भलगढ का पर्वतीय प्रदेश, उदयसागर का तट, हल्दीघाटी का पर्वतीय, युद्धशिविर (कुम्भलगढ)।

चित्तौड का त्याग करने के आठ वर्ष उपरान्त सन् १५७६ से १५८० ई० तक की, अकवर और महाराणा प्रताप के सघर्प की घटनाओ के आधार पर यह नाटक लिखा गया है। कुम्भलगढ़ मे महाराणा प्रताप सरदारो से वार्त्तालाप कर रहे हैं। उनके भाई जगमल की अध्यक्षता मे मुगल-सेना कुम्भलगढ़ पर आक्रमण करती है। जगमल के हृदय मे कुम्भलगढ को देखकर परिवार के प्रति प्रेम उमडता है। वह प्रताप को वन्दी वनाने का सकल्प छोडकर भाई के प्राणो की रक्षा करता है। जगमल को पाकर महाराणा का परिवार प्रसन्न हो उठता है। भील-कन्या राजमती जगमल्ल से प्रेम करती है। वह उसे मुगल सैनिको से वचाती है, दूसरे अक मे राजा मानसिंह सन्धि का प्रस्ताव लेकर महाराणा प्रताप से मिलने आते है। पर महाराणा प्रताप मानसिह के साथ भोजन नही करते अत. मानसिह अपने को अपमानित समझकर क्रुद्ध हो यह कहकर चले जाते हैं कि तुम लोग इस झोपडी मे भी न रहने पाओगे।

तृतीय अक मे हल्दीघाटी की लड़ाई होती है। मानसिह के रुष्ट होने से अकवर महाराणा प्रताप को कुचलने के लिए आसफ खाँ, गाजी खाँ, जगन्नाथ कछवाहा, करना, माधोसिह आदि हल्दीघाटी की लडाई करते है। वदायूँनी युद्ध का इतिहास युद्ध-क्षेत्र के एक कोने मे वैठकर लिखता है। शक्तिसिह अपने भाई प्रताप के प्राणो की रक्षा सकट के समय उनका राजछत्र अपने सिर पर धारण करके करते है। युद्ध-क्षेत्र मे शक्तिसिह और जयमल मारे जाते हैं। राणा प्रताप चेतक के प्रयास से प्राण वचाने मे समर्थ होते है। चतुर्थ अक मे मानसिह के प्रयत्न से पुन मुगलो का आक्रमण होता है। महाराणा के सैनिक छापा मार कर मुगलो पर धावा वोलते है। एक दिन खानखाना और मानसिह का परिवार छापामारो के हाथ आ जाता है। मुगल सन्धि को विवश हो जाते है। महेशानद के आश्रम मे दोनो पक्षो मे सन्धि होती है। खानखाना के प्रयास से मुगल-सेना कुम्भलगढ से हटा ली जाती है।

महाकवि कालिदास नाटक (वि० २००९, पृ० १७०), ले० : 'हृदय' और 'रुद्र', प्र० · अमर भारती, काशी; पात्र पु० १५, स्त्री ६, अक . ६, दृश्य . ५, ५, ४, ३, ४, ५।
घटना-स्थल . महाकालेश्वर मन्दिर का मडप।

यह नाटक महाकवि कालिदास के जीवन पर आधारित है। यह नाटक दो भागो मे विभाजित है—

(१) पूर्व कालिदास (२) उत्तर कालिदास। पूर्व कालिदास की कथा मे कालिदास की मूर्खतावश विद्योत्तमा से विवाह, विद्योत्तमा द्वारा उनका गृह निष्कासन काली के प्रसाद से उनका विद्वान् वनना तथा विक्रमादित्य के रत्नो मे प्रवेश होने की कथा है। उत्तर कालिदास मे कालिदास के मित्र देवह की कन्या जया को शकराज हरण कर ले जाता है। विक्रमादित्य तथा शको मे युद्ध

होता है। एक बार विक्रमादित्य लहूलुहान कालिदास के पास आते है और कालिदास से उत्साहित होकर पुन युद्ध करते है और उनकी विजय होती है । उधर शकराज की पुत्री डोला कालिदास से प्रभावित होकर जया के साथ आकर उनसे मिलती है। एक राज-द्रोही विचित्र शक्ति जो शको से मिला था कालिदास को वाण से घायल कर देता है परन्तु वन्दी वना लिया जाता है। उधर डोला घायल कालिदास का उपचार कर उन्हे शको के वाणो से मुक्ति दिलाती है और इस उपलक्ष्य मे अपने पिता शकराज को मुक्त करा लेती है। विचित्रशक्ति पागल हो जाता है। उसी विजय के उपलक्ष्य मे विक्रम-सवत् नाम से नया सवत् प्रचलित किया जाता है।

महाकवि कालिदास (वि०२००१, पृ०६४), ले० · सीताराम चतुर्वेदी, प्र० . अमर भारतीय प्रकाशन, काशी, *पात्र* ·पु० १३, स्त्री ५, *अक* : ३, *दृश्य* . ५, ५, ४।
घटना-स्थल : महाकालेश्वर का मन्दिर, राज पथ, अन्त पुर, घर, उपवन, राजसभा, राज-भवन, शयन कक्ष, मार्ग, गृह।

उज्जैन के अधिपति विक्रमादित्य के नवरत्नो मे महाकवि कालिदास को विश्व-ख्याति प्राप्त होती है। प्रारम्भ मे वे एक मूर्ख एव गाय के चरवाहे होते है। विद्योत्तमा नाम की तत्कालीन विदुषी के पाडित्य से पराजित होकर पंडित लोग षड्यन्त्र रचते है और कालिदास के साथ विद्योत्तमा का विवाह करा देते है परन्तु पहले ही दिन मूर्खता प्रकट हो जाने पर विद्योत्तमा कालिदास को गृह से निष्कासित कर देती है। काली के मदिर मे जाकर कालिदास मन्त्र जप करके वाक्-सिद्धि प्राप्त करते है और जब वे वाक्सिद्धि प्राप्त करके लौटते है तो विद्योत्तमा उन्हे स्वीकार कर लेती है। इसके वाद वे विक्रमा-दित्य की सभा के राजपंडित नियुक्त हो जाते है।

महाकवि विद्यापति (सन् १९६५, पृ० ६६), ले० . राजेश्वर झा; प्र० : अमरनाथ प्रकाशन, रसुआर सहरसा; *पात्र* . पु० ८, स्त्री ५; *अक* ५, *दृश्य* : २०।
घटना-स्थल विद्यापति का सगीतालय, हरिमिश्र की पाठशाला, शिवसिह का राज-महल, देवसिह की राजसभा, दिल्ली सुलतान महमूदशाह का दरबार, कैलाश नगर एव विद्यापति-गृह।

इस ऐतिहासिक नाटक मे विद्यापति और उनके आश्रयदाता महाराजा देवसिह का चित्रण है। विद्यापति अपनी प्रतिभा से अपने आश्रयदाताओ को अत्यधिक प्रसन्न रखते है। महारानी लखिमा विद्यापति के सगीत से अत्यधिक प्रभावित है और वे उनकी प्रशसा सर्वदा करती है। इसी समय दिल्ली का सुलतान महमूदशाह मिथिला पर आक्रमण करता है और युद्ध-स्थल से शिव-सिह बदी होकर दिल्ली चले जाते है। सम्पूर्ण मिथिला मे शोक का वातावरण परि-व्याप्त हो जाता है। विरहानुभूति मे लखिमा धीरे-धीरे क्षीण होने लगती है जिससे विद्या-पति अधिक चिन्तित हो जाते है। वे महमूद-शाह के साथ युद्ध करने के लिए भी तत्पर हो जाते है, किन्तु लखिमा उन्हे अस्त्र-प्रयोग करने का आदेश नही देती है। कारण वह जानती है कि किसी भी तरह युद्ध मे हम उनसे विजयी नही हो सकेगे। अतएव लखिमा विद्यापति से शास्त्र-विषयक ज्ञान का प्रयोग करने का आग्रह करती है। विद्यापति अपने सगीत-रूपी तीर से यवनपति की छाती को बेध देते है और वह प्रसन्न होकर शिवसिह को बन्धन-विमुक्त कर देता है। पुन सम्पूर्ण मिथिला मे प्रसन्नता का वातावरण परि-व्याप्त हो जाता है। लखिमा शिवसिह को देखकर आनन्द-विह्वल हो जाती है और विद्यापति का समुचित सम्मान करती है।

महाकाल (रेडियो गीत-नाट्य), (सन् १९५३ पृ० ६४), ले० : भगवती चरण वर्मा; प्र० : भारतीय भण्डार, प्रयाग; *पात्र* : पु० ५, स्त्री ५; *अंक* · १, *दृश्य* : ३।

तीन लघु दृश्यो मे सयोजित 'महाकाल' सृष्टि एव प्रलय के दार्शनिक तथा वैज्ञानिक

तथ्यों पर आधारित एक प्रतीकात्मक गीति-नाट्य है। महाकाल असीम का प्रतीक है, जिसे वेदान्त ब्रह्म तथा भौतिक विज्ञान शक्ति-पुञ्ज कहता है। कवि ने महाकाल के इस शक्ति-पुञ्ज में चेतना की कल्पना की है। महाकाल में शक्ति तत्त्व के साथ चेतना तत्त्व की जाग्रति, सृष्टि, सुषुप्ति तथा प्रलय है। मानव इस सृष्टि का अतिविकसित रूप है। इसीलिए इसे प्राण का प्रतीक माना गया है। चेतना ने मानव को प्रेम, दया, त्याग, करुणा सत्य, ज्ञान आदि गुण प्रदान किए हैं, जिसकी प्रतिक्रिया स्वरूप लोभ, मोह, काम, क्रोध तथा मत्सर नामक विकार उत्पन्न होते हैं। मानव की इस क्रिया प्रतिक्रिया का निरन्तर संघर्ष चलता रहता है। प्रत्येक भौतिक उपलब्धि के साथ वह अधिक अहंवादी होता जाता है। यही अहं उसके विनाश का कारण है। लेखक यहाँ संदेश देता है कि यदि मानव अपना अस्तित्व बनाए रखना चाहता है तो उसे अहम् पर विजय प्राप्त करनी होगी।

महात्मा (सन् १९३०, पृ० ९४), ले० : सत्यनारायण शर्मा; प्र० : श्रीकृष्ण पुस्तकालय, कानपुर; पात्र : पु० १२, स्त्री ४; अंक : ३; दृश्य : ७, ८, ४।
घटना-स्थल : हरिजन बस्ती।

यह नाटक हरिजनोद्धार के लिए लिखा गया है। महात्मा एकनाथ का पुत्र हरीनाथ अछूतों का विरोध करता है। जब चम्पा; अछूत राजू की पुत्री, अपने यहाँ महात्मा को भोजन खिलाने का निमंत्रण देने आती है तब हरीनाथ उसे पीटता है तथा अपने सनातनी स्वभाव का परिचय देता है। ब्राह्मण होकर वह अछूतों से मिलना नहीं चाहता। पर स्वामी एकनाथ की स्वीकृति से उसे विस्मय होता है। महात्मा एकनाथ चम्पा के यहाँ भोजन कर सभी मनुष्यों को बराबरी का दर्जा देते हैं। अन्त में स्वयं हरीनाथ भी अपनी भूलों को मानकर सबको बराबर समझता है।

महानाश की ओर (सन् १९६०, पृ० ८८), ले० : चावलि सूर्यनारायण मूर्ति; प्र० : भारतीय साहित्य मंदिर; पात्र : पु० २२, स्त्री ४; अंक : ३; दृश्य : ७, ३, ३।
घटना-स्थल : राजसभा।

इस नाटक में महाभारत के कथानक के आधार पर युद्ध और शान्ति की समस्या पर प्रकाश डाला गया है। पाण्डव बारह वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञात वास पूरा करनेवाले हैं। दुर्योधन चिन्तित है। वह पाण्डवों को अधिकार-वंचित करना चाहता है। वह शकुनि से परामर्श करता है। उसे कर्ण जैसे योद्धाओं का समर्थन प्राप्त है। समस्त गुरुजनों की राज्य वापस करने की शिक्षा की वह अवहेलना करता है। बलराम और महाराज विराट आदि के द्वारा दुर्योधन को समझाने का प्रयत्न करते हैं पर वह युद्ध के लिए तत्पर है। कृष्ण कुरु पारिवारिक कलह की शान्ति के लिए शान्ति-दूत-कर्म स्वीकार करते हैं। दोनों दलों के हितैषियों द्वारा संजय को कौरवों का पक्ष प्रस्तुत करने के लिए दूत बनाया जाता है। संजय पाण्डवों को युद्ध-विरत करने का प्रयास करते हैं। पाण्डव अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए दृढ़ हैं। दूसरी ओर कृष्ण कौरवों के राजसी सम्मान को छोड़कर विदुर का आतिथ्य ग्रहण करते हैं। विदुर के समस्त उपदेश धृतराष्ट्र के पुत्र-मोह के कारण प्रभावहीन सिद्ध होते हैं। कृष्ण अपने मिशन में असफल होते हैं और युद्धभूमि में मिलने का वचन लेकर पाण्डवों के पास पहुँचते हैं। धर्मराज अति खिन्न हैं। अर्जुन, भीम और द्रौपदी अधिकारों के लिए युद्ध को तत्पर हैं। कुन्ती कृष्ण के परामर्श पर कर्ण से पाण्डव का पक्ष लेने का अनुरोध करती है। कर्तव्य और भ्रातृ-स्नेह के कारण कर्ण अर्जुन के अतिरिक्त अन्य किसी पाण्डव को न मारने की प्रतिज्ञा कर लेता है।

महाप्रभु वल्लभाचार्य (वि० २०१५, पृ० १०५), ले० : गोविन्ददास; गीताप्रेस, गोरखपुर; पात्र : पु० २६ स्त्री ३; अंक : ५; दृश्य : ३, ३, ३, ३, ३।
घटना-स्थल : मैदान, गोकुल में ठकुरानीघाट, शयनागार।

शुद्धाद्वैत सिद्धान्त के प्रवर्तक महाप्रभु वल्लभ के दार्शनिक सिद्धातो का प्रतिपादक यह जीवनी परक नाटक है। नाटकारम्भ मे इल्लमागारू (वल्लभ की माता श्री) ने अठमासे पुत्र का परित्याग कर दिया है, परन्तु गुरुकुल के प्रागण मे अग्निदेव द्वारा उस बालक की रक्षा हो जाती है। ग्यारह वर्ष की अवस्था मे वल्लभ गुरु नारायण भट्ट के सान्निध्य मे समस्त विद्याओ मे पारगत होते है और वह शुद्धाद्वैत सिद्धान्त का प्रतिपादन करते है। काशी के वेदज्ञ ब्राह्णो द्वारा कठोर प्रतिवाद के उपरान्त भी वल्लभ अपने सिद्धातो पर अडिग रहते है। विजय नगर के महाराजा कृष्णदेव राय की सभा मे अपने सिद्धातो की सतर्क पुष्टि कर विल्वमगल के अनुरोध पर विष्णुस्वामी सम्प्रदाय का आचार्य पद ग्रहण करते है। वह कृष्णदेवराय को अपने सम्प्रदाय मे दीक्षित कर भक्ति-मार्ग का प्रवर्तन करते है। अपने सिद्धातो के प्रति किए गए प्रश्नो का समाधान करते हुए अपनी पत्नी से सन्यास की आज्ञा चाहते हैं, परन्तु अक्का जी उन्हे सन्यास की अनुमति नही देती है। दैव योग से वल्लभाचार्य की वैठक मे आग लग जाती है और अक्का जी उनसे निवेदन करती है कि आप घर से वाहर जाएँ और अन्त मे वे गगा-लहरियो पर चलते दिखाई पड़ते है।

महाभारत (सन् १९१३, पृ० १२७), ले० *:* नारायण प्रसाद वेताव, प्र० . वेताव पुस्तकालय, धर्मपुरा, दिल्ली; *पात्र* · पु० १८, स्त्री ५, *अक* . ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल · हस्तिनापुर, इन्द्रप्रस्थ, कुरुक्षेत्र।

यह एक पौराणिक शिक्षाप्रद नाटक है। नाटक का प्रारम्भ युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ से होता है। कौरव-राज दुर्योधन यज्ञ मे आमन्त्रित है। वह पाण्डवो के ऐश्वर्य, धन, महल आदि को देख ईर्ष्या-अग्नि मे प्रज्ज्वलित हो उठता है। महल की चमत्कारिक रचना मे उसे द्रौपदी तथा पाण्डवो के परिहास का पात्र वनना पडता है जिसका प्रतिशोध वह द्यूत-क्रीडा मे विजय तथा द्रौपदी के चीरहरण से लेता है। पाण्डव १३ वर्ष का वनवास कष्ट उठाकर व्यतीत करते है। वे एक वर्ष का अज्ञातवास विराट् के यहाँ छिपकर गुजारते है। समय व्यतीत होने के साथ विराट् पर हुए कौरवो के आक्रमण को पाण्डव विफल करते है।

कुरुराज दुर्योधन सुई की नोक वरावर भूमि भी पाण्डवो को नही देना चाहते। कुलश्रेष्ठो, शुभचिन्तको और कृष्ण का समझाना-वुझाना व्यर्थ जाता है। महाभारत-युद्ध मे कौरवो की पराजय होती है और उनकी अहम्मन्यता तथा जडतापूर्ण शासन पर पाण्डवो का सुशासन स्थान प्राप्त कर लेता है। महाभारत के समस्त घटना-चक्र मे युद्ध और प्रेम मे सघर्ष रहता है।

महाभारत नाटक (पूर्वार्द्ध), (सन् १९१६, पृ० १०९), ले० माधव शुक्ल, रामचन्द्र शुक्ल वैद्य, प्र० . कूचा श्यामदास, प्रयाग, *पात्र* · पु० २३, स्त्री ७, *अक* २, *दृश्य :* ८, ५, ३, ।
घटना-स्थल : जंगल, लाक्षागृह, युधिष्ठिर की सभा, द्यूतभवन।

इस पौराणिक नाटक मे दुर्योधन और शकुनि राज मे भवन कूट मन्त्रण करते हैं। कौरव पाण्डवो को लाक्षागृह मे जीवित जलाने की योजना बनाते है। पाडव अपना वैभव वढाने मे समर्थ होते है। दुर्योधन युधिष्ठिर के राजवैभव को देखकर चकित रहता है। वह जल को स्थल और स्थल को जल समझ कर चोट खाता है। भीमादि उसकी हँसी उडाते है। तीसरे अक मे शकुनि की मन्त्रणा से द्यूत-क्रीडा मे युधिष्ठिर हार जाते है। अर्जुन-भीम के मना करने पर भी युधिष्ठिर नही मानते। द्रौपदी को भी दाव पर लगा देते है। हार जाने पर दु शासन द्रौपदी की साडी खीचता है। दोपदी आचल वचाकर जघा से वैठकर दवा लेती है। ईश्वर से हाथ उठाकर प्रार्थना करती है। कृष्ण प्रकट होते है। द्रौपदी मे अग्नि के समान तेज आ जाता है। दु शासन भयभीत होकर दूर खडा हो जाता है। पाडव हाथ जोडे कृष्ण के चरणो की ओर सिर नीचा कर वैठ जाते है।

मालवीय काशी विश्वविद्यालय की स्थापना करते है। देश के विभिन्न कोनो से सहायतार्थ अनेक रकमे आती है और महामना मालवीय का स्वप्न साकार होता है।

महामाया (सन् १९२६, पृ० १०१), ले० दुर्गाप्रसाद गुप्त, प्र० एस० आर० बेरी ऐण्ड कम्पनी, २०१, हरिसन रोड, कलकत्ता, *पात्र* पु० १०, स्त्री ५, *अक* ३, *दृश्य*. ७, ६, ४,।
घटना-स्थल मेवाड, औरगजेब का महल, नदी-तट।

प्रस्तुत नाटक मे मेवाड की 'महामाया' की कथा है। नाटक की नायिका महामाया है जो कि मेवाड़ के राणा जसवन्तसिह की पत्नी है। जसवन्त सिह को औरगजेब की वीवी गुलनार कत्ल करवा देती है। उसी का वदला लेने के लिए महामाया औरगजेव की सेना से युद्ध करती है और मेवाड को स्वतन्त्र करवा लेती है। तत्पश्चात् वह अग्नि मे कूदकर सती हो जाती है।

महामोह विद्रावण (सन् १८८७, पृ० ५८), ले० : विजयानन्द; प्र० : प० रामनाथ जी काशिक, काशिक यन्त्रालय, काशी, *पात्र* पु० ५, स्त्री २, *अक-दृश्य-रहित*।

"ब्राह्मण भाग भी मन्त्र संहिता के सदृश वेद ही है"—इस विपय का यह प्रमाण निरूपक नाटक है। सवादो के द्वारा इसे सिद्ध किया गया है।

महाराजा भरथरी (सन् १९४०, पृ० ९५), ले० मास्टर न्यादर सिह वेचैन, प्र०' देहाती पुस्तक भण्डार, चावडी वाजार, दिल्ली, *पात्र* : पु० १६ स्त्री ६, *अक* ३, *दृश्य* ११, ७, ६।
घटना-स्थल राजप्रासाद, वेश्यागृह, आश्रम।

यह एक धार्मिक नाटक है। इसमे उज्जयिनी का राजा भर्तृहरि वामना और मद्य मे लिप्त होने के कारण अपने कर्त्तव्य तथा न्याय से विमुख रहता है। वह अपनी कनिष्ठा रानी पिंगला की प्रेरणा से अपने भाई विक्रम को निर्वासित करता है। एक दिन आत्मानन्द द्वारा प्राप्त अमर फल उसके अज्ञानान्धकार को दूर करता है क्योकि राजा परम प्रिया पिंगला को महात्मा द्वारा प्राप्त अमर फल देता है। रानी उसे अपने व्यभिचारी सहचर अश्वपाल को दे देती है। अश्वपाल राजनर्तकी कलावती को प्रसन्न करने के लिए वह अमर फल प्रदान करता है। किन्तु राजा के प्रति सत्य अनुरागवाली कलावती पुनः वही अमर फल ले जाकर राजा को दे देती है और छल-छद्म को त्याग वह संन्यास ले लेती है। राजा का मोह भी हटता है। वह गुरु मछन्दर नाथ की शरण लेता है और तप द्वारा शिव के चरणो मे स्थान पाता है।

महाराजा भर्तृहरि (सन् १९३५, पृ० १०४), ले० श्याम सुन्दर लाल दीक्षित 'श्याम'; प्र० बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, राजा दरवाजा, बनारस सिटी, *पात्र* पु० ११, स्त्री ४, *अक* ३; *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल राजा भर्तृहरि का राजमहल।

महाराजा भर्तृहरि के चरित्र पर आधारित यह एक लोक नाटक है। इसमे भर्तृहरि और पिंगला के प्रेम का वर्णन है। भर्तृहरि कहते है कि 'योगी का कर्त्तव्य ईश्वर पूजा है और राजा का कर्त्तव्य प्रजा-पालन है।' माया चक्र से वचने के लिए एक स्थल पर वह भगवान् से अपनी रक्षा की प्रार्थना करते है।

महाराणा प्रताप नाटक (सन् १९१५, पृ० १०८), ले० नरोत्तम व्यास तथा गुप्त बन्धु, प्र० हरिदास वैद्य, हैरिसन रोड, कलकत्ता, *पात्र* पु० १३, स्त्री ७, *अक* : ५, *दृश्य* . ४, ४, ४, ६, ४।
घटना-स्थल जगल, युद्धक्षेत्र, उदयपुर का राजमहल।

यह ऐतिहासिक नाटक है। इसमे मेवाड के प्रसिद्ध राजा महाराणा प्रताप की कथा है। महाराणा चिंतित होते है कि जिस मेवाड को

देवता तक आदर की दृष्टि से देखते हैं उसकी कितनी दुर्दशा हो रही है। वह मुक्ति का उपाय सोचते है। इसी बीच अकबर की ओर से समझौता लेकर मानसिंह आते है जिसका प्रताप तिरस्कार कर देते है। युद्ध होता है, परन्तु महाराणा पराजय नही मानते। जगलो मे भटकते है, नाना प्रकार का कष्ट सहते है। परन्तु मेवाड की शान के लिए अन्त तक लोहा लेते है। जगल मे भामाशाह प्रताप को वहुत-सी आर्थिक मदद देते है जिसकी सहायता से महाराणा सेना इकट्ठी करके पुन लोहा लेते है और मुगलो से मेवाड छीन लेते है। राणा की जय-जयकार से नाटक समाप्त होता है।

महाराणा प्रताप नाटक (सन् १९५०, पृ० ७९), ले० न्यादर्रसिह 'बेचैन', प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, चावडी वाजार, दिल्ली, *पात्र* पु० ९, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* ७, ६, ४।

यह एक चरित्र प्रधान ऐतिहासिक नाटक है। इसमे अकबर के दरवारी मानसिंह के साथ भोजन न करने के कारण प्रतिशोध के लिए अकबर सलीम के नेतृत्व मे सेना भेजकर चित्तौड पर आक्रमण करता है।

प्रताप जीवन-पर्यन्त जगलो मे नाना विपत्तियाँ उठाकर भी स्वतन्त्रता से अपना मस्तक ऊँचा रखता है और अन्त मे विजयी होता है।

महाराणा प्रताप (सन् १९५७, पृ० ८०), ले० लक्ष्मणसिंह माण्डोठिया, अग्रवाल वुक डिपो, थोक पुस्तकालय, खारी वावली दिल्ली; *पात्र* पु० १०, स्त्री ३, *अक*. ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल चित्तौड, रण भूमि तथा वन प्रान्त।

अकवर के सेनानी महाराजा मानसिह महाराणा प्रताप सिंह से मिलने जाते है। महाराणा उनका सम्मान करते, किन्तु उनके साथ भोजन नही करते। मुगल वादशाह अकबर पहले से ही इस दुर्दमनीय राष्ट्राभिमानी के गर्वोन्नित मस्तक पर क्षुब्ध है। वह मानसिंह के अपमान के प्रतिशोध मे शाहजादा सलीम को भारी सेना देकर युद्ध के लिए भेजते है। राणा का भाई शक्तिसिह भी शत्रु-पक्ष से मिल जाता है। राणा वीरतापूर्वक लड़कर भी पराजित होते है और सपरिवार स्वराष्ट्राभिमानी राजपूतो के साथ जंगल की शरण लेते है। घास की रोटियो को सन्तान से छिनती देख राणा अकवर को सन्धि-सन्देश भेजते है। अकवर के दरबारी राजपूती गौरव के अभिमानी पृथ्वीराज ने सन्धि-पत्र को जाली कहकर राणा को समझाया। राणा भामाशाह की सहायता से पुन राज्य वापस लेते है। रहीम की न्यायप्रियता तथा राजपूती दबाव के कारण अकवर अपना युद्ध अभियान बन्द करता है।

महाराणा प्रताप सिंह (वि० १९५४, पृ० ८०), ले०. राधाकृष्णदास, प्र०. नागरी प्रचारणी सभा, काशी; *पात्र* पु० ७, स्त्री २, *अक*. ७, *दृश्य*. ३, ४, ४, ५, ६, ६, ८।
घटना-स्थल : दरबार, कुटीर, युद्ध क्षेत्र।

इस नाटक मे दो कथानक साथ-साथ चलते दिखाई पडते है। यह सहवर्तिनी काल्पनिक घटना ऐतिहासिक वृत्त को अधिक आकर्षक, रोचक और चरित्र-विधायक बनाती चलती है। एक ओर तो महाराणा प्रताप और अकवर की दृढता, मानसिह, सलीम और मुहव्वत खाँ के आक्रमण की विभीषिका और युद्ध का कोलाहल सुनाई पडता है, तो दूसरी ओर गुलाव और मालती का मधुर प्रेमालाप, व्रजवासियो के गीत चित्त को आकर्षित करते है। राजनीतिक चालो मे अकवर की कूटनीति, मानसिंह का महाराणा के प्रति द्वेष, खानखाना द्वारा महाराणा की प्रशसा और पृथ्वीराज का महाराणा को स्वातन्त्र्य-रक्षा के लिए प्रोत्साहन ऐसे प्रसग है, जो दर्शकों के हृदय-पटल पर नाना भावो को सजीव खडा कर देते है।

प्रेमालाप करनेवाले गुलाव और मालती को भी नाट्यकार ने अन्त मे वीर नर-नारी

के रूप मे दिखाया है। युद्ध मे आहत गुलावसिंह का शव ढूँढनेवाली मालती को सन्यासिनी के वेश मे देखते ही शृगाररस करुण-सागर मे विलीन हो जाता है। यह वीररस-प्रधान नाटक शृगार और करुण के सम्मिलन से मनोरम बन जाता है।

स्वतन्त्रता की वेदी पर परिवार सहित हँसते-हँसते वलि होनेवाला प्रताप, धीरता, वीरता, क्षमाशीलता और दृढता का मानो आदर्श देवता है। मंत्री भामाशाह का सचित धन द्वारा राष्ट्रहित मे योग देनेवाला जीवन, धनी-मानी अधिकारियो को त्याग की प्रेरणा देता हुआ आदर्श मन्त्रित्व का रूप खडा कर देता है। इन साहित्यिक सद्‌गुणो के अतिरिक्त इसकी अभिनेयता का यह प्रमाण है कि न जाने कितने रगमचो से इसका अभिनय दिखाया जा चुका है और आज भी इस नाटक की उपयोगिता कम नही हुई है।

नाटक की भाषा मे नाट्यकार ने आद्योपान्त इस बात का ध्यान रखा है कि मुसलमान पात्र उर्दू का प्रयोग करे। 'दरह्‌दात', 'दाद गुस्तरी' आदि शब्द इसके प्रमाण है। जो पात्र मुसलमान नही है, उनकी भाषा कही साहित्यिक है और कही बोलचाल की। पात्रो का ध्यान रखकर भाषा का प्रयोग किया गया है।

अभिनय · काशी मे अनेक बार अभिनीत। प्राचीनकाल के नाटको मे सबसे अधिक अभिनीत।

महाराणा प्रतापसिंह (सन् १९३४, पृ० ८८), ले० वेणीराम त्रिपाठी, प्र० ठाकुर प्रसाद ऐण्ड सस बुकसेलर, वाराणसी, पात्र पु० २०, स्त्री ४, *अक* : ३, *दृश्य* : ७ ६, ५।
घटना-स्थल . उदयपुर का राजदरबार, उदयसागर का किनारा, बीकानेर राज का उद्यान, अकवर का दरबार, जनपथ, हल्दीघाटी, जंगल, सलीम का खेमा, दुर्ग छावनी, उदयपुर का राजप्रसाद।

नाटक की कथा मानसिंह के अपमान, शक्तिसिंह-विद्रोह, हल्दीघाटी-युद्ध, प्रताप के परिवार का कष्टमय जीवन, क्षणिक दौर्बल्य, शक्तिसिंह-मिलन आदि इतिहास-प्रसिद्ध घटना-प्रसंगो पर आधारित है। इतिहास-प्रसिद्ध इन घटना-प्रसगो को नाटककार ने अपनी इच्छानुकूल तोडा-मरोडा है। पारसी नाट्य-शैली पर लिखे इस नाटक की भाषा पर उर्दू का प्रभाव अधिक है।

महाराणाप्रताप सिंह वा देशोद्धार नाटक (सन् १९५०, पृ० ६४), ले० · लक्ष्मी नारायण 'सरोज'; प्र० · बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, वाराणसी, *पात्र* : पु० १३, स्त्री ४, *अक* · ३, *दृश्य* . ६, ५, ४।
घटना-स्थल . उदयपुर का राजदरबार, अकबर की राज सभा।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। इसमे महाराणा प्रताप और अकवर की लडाई का वर्णन है। महाराणा प्रताप चित्तौडगढ की आजादी के लिए सदैव लडते रहते है। उनके इस कार्य मे भामाशाह और भील आदि भी मदद करते है। मानसिह की गद्दारी भी उन्हे पथ से विचलित नही करती। अन्त मे महाराणा की छोटी-सी सेना चित्तौडगढ को अपने अधिकार मे बनाए रखने मे समर्थ होती। वीर क्षत्राणियाँ भी युद्ध के लिए सदैव तैयार रहती है। भामाशाह की पुत्री मालती की अनोखी वीरता का प्रभाव भी दिखाया गया है।

महाराणा राजसिंह (वि० १९७४, पृ० १०१), ले० रामप्रसाद मिश्र; प्र० . नाट्य ग्रन्थ प्रसारक मडल, ए० बी० रोड, कानपुर, *पात्र* पु० १०, स्त्री ५; *अक-रहित*, *दृश्य* ७, ७, ७।
घटना-स्थल . राजमार्ग, उपवन, जगल, रूपनगर का बाहरी भाग।

प्रस्तुत ऐतिहासिक नाटक मे महाराणा राजसिह की वीरता दिखायी गयी है। मुगल अत्याचार उनके लिए वहुत असह्य हो गया है। पाप का भण्डा एक दिन फूट जाता है। औरगजेब राजपूतो की कुल-कामिनियो के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर जाल विछा देता

है। एक दिन एक वृद्धा रूपनगर मे जाकर चित्र बेचने के बहाने से राज-कन्या चचल-कुमारी को यौवन-वैभव मे फँसाना चाहती है परन्तु उसने पहले ही महाराणा राजसिंह को अपना वर चुन लिया है। तथा वृद्धा द्वारा औरगजेब की प्रशंसा करने पर उसका चित्र पदाघात से चूर कर डालती है। यह बात औरगजेब तक पहुँचती है तो वह बडा क्रोधित होता है। इधर राज-कन्या चचला कुमारी की शादी राणा से हो जाती है। औरगजेब अपने दाव खाली देख आपे से बाहर हो जाता है, तुरन्त चित्तौड पर चढाई की आज्ञा दे देता है। राजसिंह इसका प्रतिरोध करता है फल वही हुआ जो होना चाहिए था—धर्म की जय और पाप का क्षय।

महाराणा संग्रामसिंह (सन् १९४०, पृ० १०६), ले० · शिवप्रसाद 'चारण'; प्र० · महर्षि मालवीय इतिहास परिषद, उपासना मदिर, दुगड्डा; पात्र · पु० १७, स्त्री ६; *अक* ३; *दृश्य* ३, ५, ५। *घटना-स्थल* · मालवा का ग्राम, वाटोरी, मथुरा, राजमार्ग।

यह राजस्थानी वीरो का एक ऐतिहासिक नाटक है। पृथ्वीराज के भय से वन-वन भटकने वाला गडरियो और डाकुओ के सग रहकर पेट पालने वाला सग्रामसिह मेवाड के सिहासन पर बैठते ही, किस प्रकार साहसी महान् प्रतापी और हिन्दुस्तान की दासता को मिटाने के लिए आजीवन सघर्ष करने वाला बन जाता है। हिन्दू जाति और भारत-व्यापी दुर्दशा को देखकर सग्रामसिह के मन मे जो तीव्र लगन उत्पन्न होती है। उसका वर्णन इस नाटक मे किया गया है।

महारानी किरण प्रभा (सन् १९४०, पृ० ३४), ले० · देवीप्रसाद 'प्रीतम', प्र० : श्रीराम श्रीकृष्ण, ३८१४, मुहल्ला न्यारियाँ, जी० बी० रोड, दिल्ली, पात्र पु० ८, स्त्री ७, अक : ३, दृश्य ६, ६, ४। *घटना-स्थल* : शाही दरबार देहली।

इस ऐतिहासिक नाटक मे राजस्थान के प्रसिद्ध राज्य बूँदी के महाराजा जसवन्त सिह की महारानी किरण प्रभा वश और कुल की लज्जा तथा सतीत्व की पवित्रता को, एक दुष्ट चापलूस और प्रपची दरबारी शेरखाँ का दर्प दलन करके बचाती है अपने और पतिदेव महाराजा जसवन्त सिह के मान और प्राण की रक्षा करती है। शहशाह दरबार मे है और किरण प्रभा को दोषी बताने पर जसवन्त सिह निर्दोषी कहता है। शेरखाँ किरणप्रभा को प्रेयसी बताता है। शहशाह शेरखाँ से एक महीने के अन्दर सबूत माँगता है। सही सबूत पर जसवन्त सिह को फाँसी अन्यथा शेरखाँ को कतल का फैसला होता है। जसवन्त सिह वही दरबार मे रोक दिये जाते है। शेरखाँ के द्वारा भेजे जाने पर तमीजन जसवन्त सिह के घर उसकी बुआ बनकर जाती है और रानी के बाये घुटने के पास लस्सन देख लेती है और जसवन्त के द्वारा दी हुई कटारी जिस पर दोनो के नाम लिखे थे प्राप्त कर शेरखाँ के पास आ जाती है। शेरखाँ शहशाह के दरबार मे सही सबूत दिखाता है लेकिन जसवन्त सिह घर के लिए आज्ञा लेकर जाते है। रास्ते मे उनकी एक महात्मा से भेट हो जाती है और महात्मा धैर्य धारण रखने के लिये कहता है। जसवन्त सिह भगवान् की प्रार्थना करते हुए कटारी वाली खूँटी को देखने जाते है। कटारी न मिलने पर दिल्ली को वापस लौट जाते है। महारानी किरण प्रभा सब अनुमान लगाकर अपनी पाँच सखियो के साथ युद्ध के सारे अस्त्र-शस्त्र पहन और घोड़ा तैयार कराके योद्धाओ के वेश मे दिल्ली के लिए चल देती है और थोडे ही समय मे पहुँच जाती है। दिल्ली से दूर ही ढोल पीटने वाले के द्वारा पता लग जाता है कि शाम ६ बजे राजा फाँसी पर चढेगे। महारानी अच्छे-अच्छे वस्त्र धारण कर शाही दरबार मे नाचने के लिए सखियो के साथ चल देती है। और दरबार मे ऐसा नाचती है कि शहशाह मुग्ध होकर वरदान देने के लिए तैयार हो जाता है। रानी एक न्याय कराना चाहती है। वह कहती है कि शेरखाँ ने

मुझसे पाँच रुपये लेकर वापस नही किये। शेरखाँ इसका प्रविवाद करता है। तुरन्त रानी अपने रानी के पोशाक मे होकर कहती है कि जब इन्होने मेरी शक्ल नही देखी तो कटारी और लहसन कैसे प्राप्त किये। इसके बाद शेरखाँ सब सत्य बात बता देता है और उस दूती को कुत्तो से कटवा दिया जाता है। शेरखाँ को फाँसी हो जाती है, राजा निर्दोष छोड़ दिये जाते है।

महारानी कौशल्या (सन् १९५५, पृ० ८०), ले० उमरावसिंह 'रावत', प्र० उमराव सिंह 'रावत', प्रिंसिपल डी० ए० बी० इण्टर कॉलेज, दुगड्डा (गढवाल), पात्र · पु० ६, स्त्री ७, प्रथम भाग अक ३, दृश्य १५; द्वितीय भाग अक ५, दृश्य . २८। *घटना-स्थल :* अयोध्या का राजप्रसाद।

प्रस्तुत नाटक रामकथा पर आधारित है। कौशल्या की इस महानता पर बार-बार सकेत किया गया है कि वे वैधव्य का दु.ख भोगती है, फिर भी कैकेयी को दोष नही देती और उसे क्षमा कर देती है। राम को सदैव उचित राह पर चलने की सलाह देती है तथा किसी का भी दिल दुखाना नही चाहती। नाटक के अत मे राम के अयोध्या लौट आने पर कौशल्या का यह कथनविशेष महत्वपूर्ण हो गया है कि आज दशरथ यह शुभ दिन देखने के लिए नही है। वे होते तो आज गद्गद् हो जाते।

महारानी दुर्गावती अथवा रक्तवन्या (सन् १९२९, पृ० ७६), ले० : कृष्णकुमार मुखोपाध्याय, प्र० . बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, राजा दरवाजा, बनारस सिटी, पात्र पु० ९, स्त्री २, अक : ३, दृश्य . ८, ६, ७।
घटना-स्थल गोडवाना का राजभवन तथा मुगल बादशाह का भवन और युद्धस्थल।

यह ऐतिहासिक नाटक है। इसमे महारानी दुर्गावती की स्वतंत्रता तथा राजपूती गौरव पर प्रकाश डाला गया है। भारत-सम्राट् अकबर गोडवाने की स्वतंत्रता का अपहरण करना चाहता है। वह आसफखाँ को गोडवाना पर सैन्य-अभियान का आदेश देता है। अप्रतिहत आसफखाँ राजपूती वीरता का लोहा मानता है, इसलिए प्रलोभन देकर एक सरदार गिरधरसिह को द्रोह का हथियार बनाता है। गिरधरसिह मुगल बादशाह के जाली पत्र को प्रस्तुत कर गोडवाने के सेनापति बदनसिह और मत्री आधारसिह मे विरोध उत्पन्न कर देता है। रानी भी बदनसिह को देशद्रोही कहकर निर्वासित कर देती है। प्रतिशोध की अग्नि मे प्रज्ज्वलित बदनसिह मुगलवाहिनी का साथ देता है। बदनसिह की राजपूत पत्नी सुमति अपने पुत्र जयसिह को लेकर राष्ट्र-रक्षा मे कूद पड़ती है। दोनो माँ-बेटे पागल और भैरवी के नाम से गोडवाने की रानी का साथ देते है।

युद्ध के मध्य मंत्री आधारसिह का देशद्रोह तथा षड्यत्र खुल जाता है। बदन-सिह प्रतिशोध की प्रतिक्रिया मे मुगलो का साथ देने पर पश्चात्ताप करता है। मुगल दरबारी पृथ्वीराज भी राजपूती गौरव की याद दिलाकर सेनापति को गोडवाने की रक्षा के लिए प्रेरित करता है। सुमति बिखरी शक्ति को सगठित कर मुगल-सेना का प्रतिरोध करती है। वीरागना रानी युद्ध का नेतृत्व करती है और सभी राजपूत वीरगति प्राप्त करते है। अकबर अपनी राज्यलिप्सा पर दुखी होता है।

महारानी दुर्गावती (सन् १९४७, पृ० ८०), ले० बाबू चौकसे वकील, प्र० आदर्श पुस्तक माला, गढा फाटक, जबलपुर, *पात्र .* पु० ४, स्त्री २, अक · ३, *दृश्य-रहित*। *घटना-स्थल* पर्वत मालाएँ, पिसनहारी के मदिर, मदल महल।

नाटक मे अकबर अपने पक्के शत्रुओ पर पहले विजय पाने के लिए सोच रहा है। दीवान खास मे बादशाह अकबर और नबाब बहलोल एक ताडपत्र लिये बैठे है। शाही फौज गोडवाने से तैलगाना और गोल-कुण्डा पर एकदम चढाई करने के लिए तैयार है, परन्तु यह तभी संभव है जब दुर्गावती अपने राज्य से शाही सेना को

गुजरने दे। बादशाह सन्धि करना चाहता है परन्तु महारानी अस्वीकार कर देती है।

रानी का सेनापति सम्पत सिह है। उसकी लड़की शैलजा बहादुर राजपूतनी है। महारानी का पुत्र वीरनारायण शैलजा से विवाह करना चाहता है परन्तु शैलजा इसको अस्वीकार कर देती है। रानी भी इस पर अप्रसन्न हो जाती है और शैलजा को अपने पास नही रखती।

मुगल सेना गोडवाना पर चढाई करती है। रानी परिवार-सहित युद्ध-अग्नि मे स्वाहा हो जाती है। शैलजा भी यह खबर पाते ही अन्तिम साँस लेती है।

महारानी पद्मावती (सन् १८९३, पृ० ५४), ले० . राधाकृष्णदास, प्र० साहित्य निधि प्रेस, मुजफ्फरपुर; पात्र पु० ९, स्त्री ४, अक ६; दृश्य . ३, ३, ३, ३, ३, ३।
घटना-स्थल . चित्तौड़ का राज दरबार, अलाउद्दीन का शयनागार, अलाउद्दीन का उपवेश मण्डप।

इस ऐतिहासिक नाटक मे महारानी पद्मावती के वीर चरित्र पर प्रकाश डाला गया है।

महारानी पद्मावती चौहान के हमीरवश की बेटी है। महाराणा रतनसेन सिंहलद्वीप (लका) से विवाह करके लाते है। अलाउद्दीन पद्मावती को पाने का अथक प्रयत्न करता है। पद्मावती ७०० डोलो के साथ दिल्ली जाती है। अपने पति को वहाँ से भगा देती है। घनघोर युद्ध होता है। चित्तौड़ के सब वीरो के मरने के बाद पद्मावती जौहर व्रत करती है और सभी वीर नारियो के साथ जल कर भस्म हो जाती है। नाटक मे गोरा और बादल की वीरता का भी वर्णन है।

महारानी पद्मिनी अथवा चित्तौड़ का फूल (सन् १९४०, पृ० ९६), ले० . देव शर्मा अमित, प्र० . देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, पात्र पु० ६, स्त्री ३, *अक-दृश्य-रहित।*
घटना-स्थल चित्तौड का राज महल।

इस नाटक मे पद्मिनी के जौहर तथा सतीत्व रक्षा का चित्रण है।

चित्तौड का राजा रतनसेन हीरामन से पद्मिनी की सुदरता सुन उसे सिंहल द्वीप मे प्राप्त करता है। चित्तौड आने पर राघव-चेतन राजा से नाराज हो पद्मिनी की सुन्दरता का वर्णन अलाउद्दीन से करता है। वह पद्मिनी को प्राप्त करने के लिए चित्तौड पर आक्रमण करता है और रतनसेन को गिरफ्तार कर दिल्ली लाता है। गोरा बादल रतनसेन को छुड़ाने के लिए अलाउद्दीन से लडते है पर मारे जाते हैं। अलाउद्दीन अन्त मे पद्मिनी को प्राप्त करने के लिए चित्तौड़ आता है जहाँ पद्मिनी पहले ही चिता मे जलकर अपने सतीत्व की रक्षा करती है और अलाउद्दीन निराश हो लौट जाता है।

महारास नाटक (सन् १८८५, पृ० ६८), ले० · लाल खड ग (खड्ग) बहादुरमल्ल, प्र० . साहिब प्रसाद सिन्हा, खडग विलास प्रेस, बाकीपुर, *पात्र* पु० १, स्त्री ३, *अक* ४, *दृश्य* ३, ४, २, २।
घटना-स्थल वृन्दावन का यमुना तट, कुज, यमुना की रेत, रास चबूरा।

नाटक का प्रारम्भ सूत्रधार-नटी के सवाद से होता है। शरद पूर्णिमा के रमणीय अवसर के उपयुक्त कृष्ण के महारास नाटक खेलने की योजना बनती है। गोपियाँ, रात्रिवेला मे कृष्ण की मुरली-ध्वनि पर रीझ कर प्राण-प्यारे के पास यमुना तट पर स्थित वृन्दावन कुज मे दौडती हुई पहुँचती है। कृष्ण गोपियो की भर्त्सना करते हैं किन्तु उनका सत्य प्रेम देखकर कृष्ण योग माया को वस्त्राभूषण लाने का आदेश देते है और गोपियों के सग रास रचाने जाते है। तीसरी झाकी मे राधा-कृष्ण की मनोहर झाँकी देखकर गोपियाँ मुग्ध हो जाती है। इस सौन्दर्य को देखकर मृगादि पशु-पक्षी भी चलना-फिरना, उडना और घास चरना भूल जाते हैं। रास लीला प्रारम्भ होती है। कृष्ण मुरली बजाते और गाना गाते है। प्राचीन कवियो के

सम्बन्धी पदो का गान होता है। गोपियो को गर्व हो जाता है कि कृष्ण हमारे अनुगत है। हम जैसा चाहेगी उससे नाच नचायेगी। कृष्ण राधा को लेकर लुप्त हो जाते है और गोपियाँ व्याकुल होकर उन्हे ढूँढती है। इधर राधा को भी गर्व होता है और वह कृष्ण के कन्धे पर चढने का आग्रह करती है। कृष्ण पुन. अन्तर्धान हो जाते है और राधिका विलाप करने लगती है। ललिता वहाँ पहुँच जाती है और सब गोपियाँ राधिका के साथ कृष्ण को ढूँढती है। गोपियो को व्याकुल देख कृष्ण प्रगट होते है। वह गोपियो को समझाते है कि मै न किसी से प्रीति रखता हूँ न द्वेष; केवल प्रेम का भूखा हूँ। मुझे तुम्हारी प्रीति की परीक्षा करनी थी। गोपियाँ क्षमा-याचना करती है। चौथे अक मे राधा कृष्ण का परिणय होता है। वृषभानु अपनी कन्या को प्रदान करते हुए नन्द के चरणो पर गिरते है। हर्षित होकर यशोदा जी गारी गाती है। अन्तिम दृश्य मे कृष्ण गोपियो को रासविलास की चर्चा किसी से करने को वर्जित करते है। राधा कृष्ण से अपराधो की क्षमा याचना करती है। गोपियाँ कृष्ण से मिलकर अपने-अपने घर जाती है।

महावीर चरित (सन् १९०० के आसपास),
लें० अज्ञात, *अक-रहित*।
घटना-स्थल . अयोध्या, जनकपुरी, लकागढ।

प्रस्तुत नाटक मे लगभग सम्पूर्ण रामायण चित्रित है। आरम्भ मे भगवान् राम और लक्ष्मण-सीता एव उर्मिला को बाग मे देखते है। ऋषि विश्वामित्र को जनक के स्वयवर का पता लगता है, और वे राम लक्ष्मण सहित सभा मे जाते है। सभा मे बड़े-बड़े ऋषि, राजा-महाराजा उपस्थित है। ऋषि विश्वामित्र भी आदर सहित आसन पर विराजमान हो जाते है। सामने शिव का धनुष उपस्थित है जो महारथी उसको तोड देगा वही सीता का अधिकारी होगा। रावण जैसे बडे-बडे योद्धा धनुप को हिलाने मे असमर्थ है। अत मे गुरु जी की आज्ञा लेकर राम धनुप-भजन करते है। उसी समय शिवभक्त परशुराम आते है और राम के साथ वाद-विवाद होता है।

तत्पश्चात् राम के राज्याभिषेक की तैयारी होती है, परन्तु उसे कैकेयी नही होने देती और राजा को अपने दो वरो की स्मृति करा कर राम को १४ वर्ष का वनवास और भरत के लिए राज्य माँगती है। राम वन मे जाते है। वहाँ शूर्पणखा की नाक लक्ष्मण द्वारा काटी जाती है। इससे क्रुद्ध होकर रावण सीता हरण करता है। रामचन्द्र जी वानरी सेना की सहायता से रावण को मारते है और अन्त मे सीता जी की अग्निपरीक्षा होती है। टिप्पणी: नागरी प्रचारिणी सभा मे एक प्रति है जिसका ऊपर का पृष्ठ न होने से आवश्यक सूचनाये नही मिल पाई।

महासती सुकन्या (सन् १९५२, पृ० ६०),
ले० . शिवदत्त मिश्र, प्र० : ठाकुर प्रसाद ऐण्ड सस, बुकसेलर, वाराणसी; *पात्र* : पु० ६, स्त्री ४, *अक-रहित*, *दृश्य* . ११।
घटना-स्थल च्यवन का आश्रम, इन्द्रपुरी।

यह एक धार्मिक नाटक है। राजकुमारी सुकन्या एक बार च्यवन महर्षि की आँख मे सीक डाल देती है जिससे च्यवन अन्धे ऋषि सुकन्या को अपनी पत्नी बना लेते है। विवश हो यद्यपि सुकन्या और उसकी माता गौरी नही चाहती है, लेकिन पिता शर्य्याति की आज्ञा से सुकन्या च्यवन ऋषि की पत्नी बनकर उनकी सेवा करती है। स्वर्ग के राजा देवराज सुकन्या की सुन्दरता पर मोहित होते है। वे अश्वनी कुमार की सहायता से सुकन्या को स्वर्ग मे बुलाकर अपनी पत्नी बनाना चाहते है लेकिन सुकन्या उन्हे अपने सतीत्व का प्रभाव दिखाती है जिससे देवराज उससे क्षमा चाहते है। महासती सुकन्या अपने सतीत्व के प्रभाव से महर्षि च्यवन और देवराज मे चल रहे आपसी छोटे-बड़े के भेद को दूर कर देती है जिससे देवराज च्यवन को दिये हुए शाप को वापस लेते है ऋषि च्यवन पुन. जवान हो जाते है।

महेन्द्र कुमार (सन् १९३६, पृ० ७२),
ले० : अर्जुनलाल सेठी; प्र० : अमीचन्द जैन

रईस, मालिक प्रेममाला, कार्यालय, गोहाना (रोहतक), पात्र पु० ११, स्त्री ५, अक . ३, दृश्य : ८, ४, ६ ।
घटना-स्थल बाजार, स्वयम्बर, कन्याश्रम, बाग ।

इस नाटक मे नाटककार ने मनुष्यो की कमजोरियाँ और उनकी स्त्री की गुलामी को दर्शाया है । प्रस्तुत नाटक स्त्री की गुलामी पर अधिक जोर देकर लिखा गया है । महेन्द्रकुमार अपनी स्त्री का दास बनने से जीवन मे कोई प्रगति नही कर पाता ।

माँ (सन् १९६१, पृ० ७५), लें०: सूर्यनारायण अग्रवाल, प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, २३, दरियागज, दिल्ली, पात्र : पु० ५, स्त्री ४, अक-रहित, दृश्य : ३ ।
घटना-स्थल : ब्याह की वेदी और भोज-स्थल ।

यह एक सामाजिक नाटक है । विवाह समस्या वहू का कर्त्तव्य, सास और वहू का प्रेम, सास और माँ के दायित्व आदि का चित्रण ही इस नाटक का उद्देश्य है। इसके अतिरिक्त समाज मे व्याह के समय जो भोज और दहेज की प्रथा है, उसका भी माँ द्वारा विरोध किया गया है और अन्त मे विवाह निर्भोज एवं बिना दहेज के सीधा-सादा सम्पन्न होता है। समाज की इस नयी प्रथा से कितने गरीबो का भला होता है ।

माँ का कलेजा (सन् १९२२, पृ० ६४), ले० मा० श्रीराम, छेदीराम, प्र० ' ठाकुर प्रसाद ऐण्ड सस, बुकसेलर, वाराणसी, पात्र पु० ९, स्त्री ३, अक-रहित , दृश्य १३ ।
घटना-स्थल . विजय नगर का राजमहल ।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है । राजा भानु उदयसिंह चन्दा के सुन्दर रूप को देख कर उस पर मोहित हो जाते है । चन्दा उसे अपनी माँ का कलेजा लाने को कहती है । राजा माँ का कलेजा लेने को जाते है । रास्ते मे एक हत्या का भयानक परिणाम देखकर डर जाते है और नकली कलेजा लाकर चन्दा को देते हे । चन्दा फटकारती है, जिससे राजा सारा भेद बता देते है । अन्त मे राजा युद्ध द्वारा चन्दा को प्राप्त करते है । राजा भानुउदय के पिता राजा रामचन्द्रभानु सिंह अपनी पत्नी रूपमती को छोडकर एक वेश्या विजय से प्रेम करने लग जाते हे । जब भानु-उदय को माँ का सारा दु ख मालूम होता है तो वे विजया को मारने की प्रतिज्ञा करते है लेकिन माँ द्वारा सौगध खिलाने पर वे विजया की हत्या नही करना चाहते । माँ के सौगन्ध से राजा भानुउदय सिंह अनेक प्रकार की यातनाएँ सहते है लेकिन विजया वेश्या की हत्या नही करते है । अन्त मे जब विजया के अत्याचार की सीमा का हद हो जाता है तब भानुउदय की सती पतिव्रता मा रूपमती अपनी सौगन्ध वापस लेती है तब भानुउदय अपनी तलवार से विजया वेश्या का बध करते है और पिता-माता और पत्नी चन्दा के सहित विजय नगर का राज्य करते है ।

मांस का विरोध (सन् १९४९, पृ० ७०), ले० · रामसिहासन राम 'उन्मुक्त,' प्र० : पुस्तक मदिर, बक्सर, पात्र · पु० ३, स्त्री ३; अक-रहित, दृश्य : ६ ।

इस गीति नाट्य मे गाधीजी के सघर्षशील पचास वर्षों के जीवन-चित्रण द्वारा लेखक मानव-सस्कृति का नवीन अध्याय दिखाना चाहता है ।

गाधीजी ने मानव की पाशविक वृत्तियो को सदैव आत्मवल से विजित करने का प्रयास किया है । सत्य, प्रेम, अहिंसा के प्रति उनकी दृढ आस्था इसी ओर सकेत करती है। आत्मा और माँस के सघर्ष मे कभी-कभी मास भयकर रूप धारण कर लेता है । अहिंसा के पुजारी गाधीजी का हिंसात्मक अन्त मास के इस भयकर विद्रोह का द्योतक है । किन्तु मास के इस विद्रोह से आत्मा को और भी वल मिलता हे। परिणामस्वरूप गाधीजी का मानवतावादी स्वर समस्त विश्व मे व्याप्त हो जाता है ।

माखन चोर (सन् १९३०, पृ० ६३), ले० गुरदित्ता राम वैष्णव 'गुर', प्र० अग्रवाल बुक डिपो, दिल्ली, *पात्र* : पु० १, स्त्री २, *अक-रहित*, *दृश्य* १० ।
घटना-स्थल . गोकुल की ब्रजभूमि ।

यह पौराणिक नाटक है । भगवान् कृष्ण की बाल-लीलाओ का ही इसमे सर्वत्र चित्रण है । माखन-चोरी, ऊखल मे बधना, रास स्थान, गोपियो को छेडना आदि का दृश्य अधिकाशत गाने के माध्यम से दिखाया गया है ।

माटी जागी रे (सन् १९६४,पृ० ९२), ले० · ज्ञानदेव अग्निहोत्री, प्र० आत्माराम ऐण्ड सस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, *पात्र* : पु० ६, स्त्री ३, *अक* : ३, *दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल : भोला का घर, गॉव का वृ. ८ ।

गाव का साहूकार दीनदयाल गॉव मे फूट डालने वाले तथा शोषक वर्ग का प्रतीक है । खडहर गाव के विघटन का प्रतीक है । खडहर मे सॉप का बार-बार प्रकट होना—गॉव मे उपस्थित बुराई का प्रतीक है । भोला आदर्श भारतीय किसान है—बसतू नव जागरण का सदेश देने वाला और प्रकाश सबको जागृति की ओर ले जाने वाले व्यक्ति के प्रतिनिधि है एकता के अभाव मे बिखरा हुआ भोला किसान का गॉव अत मे एकता के कारण ही विकसित हो जाता है ।

माता का प्रसाद (सन् १९५५, पृ० ८०), ले० . श्री सुरेश्वर पाठक विद्यालकार, प्र० : ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना , *पात्र* पु० १२, स्त्री ३ , *अक* ३ , *दृश्य* ६,६,५ ।
घटना-स्थल . निर्जन जगल मे ठाकुर वाडी ।

इसमे सन् १९४२ के आन्दोलन की एक झलक दिखाई गई है ।

अग्रेजो का उत्पात वढ रहा है । भारतीय घवड़ा रहे है और जल्द ही आन्दोलन होने वाला है । लाइन, तारे काटी जा रही है और एक क्रान्तिकारी युवक शैलेन्द्र और उसके मित्र दिनेश, रमेश एक पुराने खण्डहर मे विद्रोह के विषय मे बाते कर रहे है । एक बाजार के धनीमहल मे डकैती होती है अँधेरी रात मे शैलेन्द्र डकैत वेश मे अपने साथियो के साथ आजादी के लिये एक सेठ के घर से छह हजार रुपये लेकर चला आता है । शैलेन्द्र रुपये और पिस्तौल को रागिनी के यहाँ रख देता है । रागिनी के यहाँ शैलेन्द्र और किशोर के बीच वार्तालाप होता है । किशोर डाका न डालने के लिए कहता है और रागिनी आजादी के लिये पचास हजार रुपया देने को तैयार हो जाती है । शैलेन्द्र स्वीकार कर लेता है । कालान्तर मे इस्पेक्टर साहब ठाकुर वाडी मे मीना की उपस्थिति मे किशोर का पता लगाने आते है और मीना के कठोर वचनो से बहुत शर्मिन्दा होते है । इधर किशोर, शैलेन्द्र इत्यादि साथी आजादी की लडाई मे लगे हुए है । और बराबर रुपये का इन्तजाम कर रहे है । किशोर शैलेन्द्र प्रत्येक समय रागिनी से राय लेकर काम करते है ।

इधर रागिनी के सामने हिदू वीर जलूस निकाल रहे है । इन्स्पेक्टर के मना करने पर सब नारा लगा रहे है—"इन्कलाब जिदाबाद" । उस जलूस मे रागिनी, मीना और सुशीला भी है । रागिनी के ऊपर लाठी पडने पर वह बेहोश गिर जाती है । अस्पताल मे जाकर कुछ होश मे आने पर मदन से मुलाकात करना चाहती है । सहसा वही मदन, जो इस्पेक्टर था, आ जाता है । परिचय होने पर अपनी माता के पैरो पर गिर जाता है । रागिनी बेटे को प्रायश्चित्त करने के लिए कहती है और मीना का हाथ मदन के हाथ मे दे देती है ।

मातृ-भक्ति नाटक (सन् १९५०, पृ० ७६), ले० प० तुलसीदत्त 'शैदा' स्नेही, प्र० मेहरचन्द लक्ष्मणदास, दिल्ली, *पात्र:* पु० ४, स्त्री ३; *अक:* ३, *दृश्य* ८, ८, ५ ।
घटना-स्थल . अश्वमेध यज्ञ, युद्ध-क्षेत्र, कैलास ।

प्रवीर अपने बहनोई स्वाहा के पति अग्निदेव से यह वरदान प्राप्त कर लेता है

कि वह सर्वाधिक यशस्वी वीर से युद्ध मे विजय प्राप्त करेगा।

कौरवो से राज्य प्राप्त कर पाण्डव अश्वमेध-यज्ञ करते हे और यज्ञ के घोड़े के साथ यह घोषणा करवाते हैं कि जो इस घोड़े को पकडेगा उसे विश्व-विजयी से युद्ध करना पड़ेगा। प्रवीर पत्नी के आग्रह पर वह घोडा पकड लेता है। यद्यपि महाराज नीलध्वज उसे छोडने का आदेश देते हैं, परन्तु उसकी माँ उसे युद्ध की प्रेरणा देती है।

प्रवीर पहले दिन युद्ध मे अपनी माँ की चरण-धूलि लेकर अर्जुन और भीम को हराने मे सफल होता है। अर्जुन और भीम कृष्ण की शरण ग्रहण करते है। कृष्ण प्रवीर से अत्यधिक प्रभावित होते हुए भी मित्र की मर्यादा की रक्षा के लिए माया का विस्तार करते हैं और अन्ततोगत्वा प्रवीर युद्ध मे मारा जाता है। उसकी पत्नी मदनमजरी भी सती हो जाती है।

अपने भक्त नीलध्वज को कृष्ण दर्शन देकर कृतार्थ करते है। महारानी जना पुत्र-वियोग मे पागल हो गगा मे डूब जाती है। कैलाश पर्वत पर प्रवीर और मदनमंजरी महादेव के निकट दृष्टिगत होते है। कृष्ण वहाँ पहुँच मदनमजरी का ऋण उतारने के लिए रास-लीला दिखाते है।

मादा कैक्टस (सन् १९५९, पृ० ८३), ले०. डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल, प्र० नेशनल पब्लिशिग हाउस, २३, दरियागज, दिल्ली, *पात्र* . पु० ५, स्त्री २, *अक* । ३; *दृश्य रहित* ।
घटना-स्थल अरविन्द का बगला और आर्ट गैलरी।

फाइन आर्ट कॉलेज का प्रिंसिपल अरविंद आधुनिक कला का कुशल चित्रकार है। वह अपनी पुरातन परम्परा की अनुयायिनी विवाहिता पत्नी सुजाता को इसलिए छोड देता है कि वह आधुनिका फैशन परस्त तितली नही बन पाती है। वह सुन्दरी तथा आधुनिका प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण विश्वविद्यालय की चित्रकार प्राध्यापिका आनन्दा की ओर आकर्षित है। सुधीर आनन्दा का अनुज है। वह जिद्दी, आवारा तथा मुँहफट स्वभाव का है। वह मिस खान के प्रति आसक्त है। आनन्दा माता-पिता के विरोध पर भी भाई का विवाह मिस खान से करवा देती है।

आनन्दा उन्मुक्त स्वच्छन्द प्रणय का आनन्द लेती है। वह अरविन्द के साथ अपने सौन्दर्य और स्वास्थ्य को नष्ट होता देखती है। उसका पिता आनन्दा की शादी अरविंद से करना चाहता है, किन्तु अरविन्द शादी नही करता है।

कॉलेज की कला-प्रदर्शनी मे अरविन्द आनन्दा के चित्रो को गैलरी के मध्य मे सजाता है। आनन्दा बीमार पड जाती है। कला प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर पर वह खाट पर ही पड़ जाती है। अरविन्द की कला पर सुजाता का एक समीक्षात्मक लेख उसी दिन प्रकाशित होता है। सुजाता अरविन्द से आनन्दा के स्वास्थ्य पर बात करने आती है और प्रसिद्ध उपन्यासकार दिवाकर के साथ अपनी शादी की सूचना भी देती है। वह अब कानपुर के गर्ल्स कॉलेज की प्राध्यापिका है। अरविन्द सुजाता के नवीन सम्बन्ध पर आवेश मे आ जाता हे तभी वह देखता है कि उसका मादा कैक्टस का पौधा सूखा हुआ पडा है। मादा कैक्टस आनन्दा का प्रतीक है। उसी समय सुधीर आनन्दा के फेफडो का एक्सरे लाकर अरविन्द को देता है, जिसे देखकर वह विक्षिप्त हो जाता है। सुधीर कहता है यह चित्र आर्ट गैलरी मे लगाया जायेगा।

माधव-विनोद (वि० १८०९, पृ० १६३), ले० सोमनाथ चतुर्वेदी कवि, प्र० : सोमनाथ गुप्त, बापू नगर, जयपुर, *अक* : १०, *दृश्य-रहित* ।

नाटक की कथा का आधार भवभूति कृत मालती माधव नाटक है। यह नाटक स्वांग की शैली पर आद्योपान्त छन्दोबद्ध है। प्रारम्भ मे सूत्रधार और नटी के वार्तालाप से कामन्दकी जोगिन के अभिनय की समस्या सामने आती है। उसकी शिष्या अवलोकिता का पाठ करना भी कठिन माना गया।

प्रत्येक पात्र की वेशभूषा का वर्णन मिलता है। स्वाग की शैली पर कामदकी और अवलोकिता अपना नृत्य दिखाकर सभा को रिझाती है। इसी प्रकार नृत्य और सगीत के द्वारा लवगिका, सौदामिनि, देवरात, भूरिवित्त का क्रिया-कलाप और वार्त्तालाप दिखाया गया है। मालती और माधव के प्रथम दर्शन और उनके मिलन-विरह और पुन मिलन का मनोहारी वर्णन मिलता है। अन्त मे मालती के मन की शंका का निवारण होता है।

माधव सुलोचना (सन् १८९८), लें० हरसहाय लाल, प्र० स्वत: लेखक, *पात्र* पु० ४, स्त्री ४, *अक-रहित।*
घटना-स्थल पुष्पवाटिका, विवाह मडप।

भारतेन्दु युग मे विद्या सुन्दर नाटक की शैली पर स्वच्छन्द प्रेम के विषय को लेकर ... नाटक लिखे गये। माधव सुलोचना ... शैली का नाटक है। इस मे नायक माधव तथा नायिका सुलोचना के हृदयो मे प्रेम-सूत्र जोडने वाली मालिन है। उसी के प्रयत्न और दूरदर्शिता से इस नाटक मे कई युवा-युवतियो का प्रेम सम्बन्ध स्थापित होता है। माधव और सुलोचना के अतिरिक्त मदन और रति मे, अधीर और चन्द्रकला मे, अपचेष्टा और चतुरिका मे पारस्परिक प्रेम के द्वारा पाणिग्रहण की स्थिति आती है।

माधवानल कामकन्दला (सन् १८८९, पृ० २२४); ले० लाला शालिग्राम वैश्य, *प्र०* : खेमराज श्रीकृष्णदास, मुबई, *पात्र* पु० ३१, स्त्री ११, *अक* १०, *दृश्य* : ३४ गर्भांक।
घटना-स्थल पुष्पारण्य।

नाटक की नायिका कामकन्दला कामकौमुदी नामक वेश्या की पुत्री है। वह नर्तकी का कार्य करती है। राजदरबार मे कामकन्दला का रमणीय नृत्य देखकर राजकुमार माधवानन्द उसकी ओर आकृष्ट होता है और राजभवन से विविध आभूषण उस नर्तकी को प्रदान करता है। राजा दोनो पर अत्यन्त क्रुद्ध होता है और प्राणदण्ड देने की धमकी देता है। माधवानन्द और कामकन्दला एक-दूसरे की मृत्यु होने की आशका से अपना प्राण बलिदान करते है। किन्तु अन्त मे अमृत के द्वारा दोनो को जीवित कर लिया जाता है। कामकन्दला वेश्या-पुत्री होने पर भी एक पुरुष के साथ विवाह करके आजीवन पातिव्रत-धर्म का पालन करना ही श्रेयस्कर समझती है।

माधवानन्द नाटक (सन् १९६२, पृ० ३८), ले० : हर्षनाथ, प्र० . दरभगा प्रेस कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड, दरभगा, *पात्र* . पु० २, स्त्री ३; *अक* : ५, *दृश्य-रहित।*
घटना-स्थल यमुना-तट, वन-प्रात।

प्रस्तावना के पश्चात् कृष्ण रगमच पर उपस्थित होते है। उनके हृदय मे राधा के रूप-सौन्दर्य को देखकर पूर्वराग का प्रादुर्भाव होता है। राधा और कृष्ण एक ही क्षण मे प्रेमपाश मे आबद्ध हो जाते है किन्तु इस प्रकार की प्रेम-लीला स्थायी नही होती है। राधा कृष्ण के व्यवहार और वचन-चातुरी पर शीघ्र ही क्रोधित होकर मान कर लेती है। कृष्ण द्वन्द्व मे पडकर राधा का मान भग करने के लिए बहुत प्रयत्नशील होते है। अन्तत: राधा प्रसन्न हो जाती है, और नाटक समाप्त हो जाता है।

माधवानल (वि० १७७०), ले० : राजकवि केश, प्र० : हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, *पात्र* पु० ४, स्त्री २, *अक-दृश्य-रहित।*
घटना-स्थल पुष्पावती, कामावती नगरी, शिव-मन्दिर।

पुष्पावती के राजा गोविन्दचन्द के राज्य मे माधवानल नामक ब्राह्मण सौन्दर्य और गुणगरिमा से पूर्ण राजा का पुरोहित है। वह शास्त्र ज्ञान-पारगत और ललित कलाओ का ज्ञाता है। उस पर नगर की कितनी ही

स्त्रियाँ आकर्षित है। नगर पुरुषो के प्रतिनिधि-मण्डल की शिकायत पर राजा उसे निर्वासित कर देते है। कामावती के राजा कामसेन उसकी कला मर्मज्ञता के कारण उसको शरण देते है। राजनर्तकी कामकन्दला भी माधवानल से प्रभावित है। नृत्य के एक प्रदर्शन मे कामकन्दला भ्रमर को अपने उच्छवासो तथा नि.श्वासो से उडाती है जिससे माधवानल ही समझ पाता है। वह राजा को भी अज्ञानी कहने पर वहाँ से भी निर्वासित होता है। दो दिन कामकन्दला के साथ सहवास सुख ले वहाँ से चला जाता है। वह अपने विरह का वर्णन शिव-मन्दिर की दीवारो पर लिख देता है, जिसे देख कर विक्रमादित्य उसकी सहायता करते हैं। किन्तु विरहताप से कामकन्दला आत्महत्या कर लेती है। राजा शिव की प्रार्थना से कामकन्दला को जीवत करता है और प्रेमी युगल उसके राज्य मे सुखपूर्वक रहने लगते हैं।

माधुरी (सन् १८८५ के आसपास), ले० . भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्र० : खग विलास प्रेस, बाकीपुर, *पात्र* · पु० १, स्त्री ७; *अक-दृश्य-रहित ।*
घटना-स्थल एक वृक्ष के नीचे ।

माधुरी कृष्ण के प्रति गुप्त प्रेम करती है। वह वियोगिनी उनके प्रेम की निराशा मे दुखी होकर एक वृक्ष के नीचे बैठी है। चंपकलता उसकी दशा देखकर यह बात भाँप लेती है। इस निमित्त वह कई प्रश्न करती है। माधुरी मन के असली भाव को छिपाती है। अन्त मे उस पर मन का भेद खोल देती है। दोनो के वार्तालाप से प्रकट होता है कि प्रेम की यह बात ठकुरानी जी तक भी पहुँच चुकी है जिससे माधुरी और कृष्ण के मिलन मे भय और बाधा उत्पन्न हो गई है। माधुरी को अनेक ढग से समझाती और सात्वना देती हुई चंपकलता उसके वियोग जनित प्रेम की आकुलता और तीव्रता का अनुभव करती है। अब दोनो एक दूसरे से कृष्ण के प्रति प्रेमसवध की अपनी-अपनी कथा-व्यथा कहती,है मालती लता-ओट से माधुरी की बाते सुनती है जिसका अनुमान लगने और बात फूट जाने के डर से माधुरी व्याकुल हो जाती है। अब मालती अपनी चार सखियो—सारग, सुजान, गुनवती, श्यामा के साथ उन दोनो को घेर लेती है। सभी बारी-बारी से डाह भरे व्यंग्य वचन बोलती ताना मारती और परिहास करती हैं। तदनंतर सभी कृष्ण से माधुरी के मिलन का उपक्रम करती हैं और उसे ले जाती हैं। माधुरी कृष्ण के विरह मे अनेक प्रकार के विलापात्मक वचन कहती हुई मूर्छित होती है।

अक-दृश्य-रहित होने के कारण गणना नही है तथापि नाटकीय तत्त्व के कारण यह काव्य अभिनेय बन सकता है। इसे काव्य नाटक कह सकते है।

मानव निश्चय ही लौटेगा—'स्वर्णोदय' मे संग्रहीत गीति-नाट्य (सन् १९५१, पृ० ४०), ले० : केदारनाथ मिश्र 'प्रभात', प्र० : ज्ञानपीठ प्रकाशन, प्रा० लि०, पटना, *पात्र* पु० ४, स्त्री ३; *अक-रहित; दृश्य* · १।

मानव आज आत्मप्रेरणाओ को त्याग कर वर्तमान की भौतिक उपलब्धियो की ओर अग्रसर हो रहा है, किन्तु वर्तमान की सीमाएँ शीघ्र ही जब अतीत मे विलीन हो जाएँगी तब मानव पुनः वापस लौटेगा। एक दृश्य मे समाप्त प्रस्तुत कथा मे आत्मा तथा मानव-छाया आत्मप्रेरणा के रूप मे चित्रित हुई है, जिन्हे मानव त्याग चुका है। आत्मा का यह विश्वास कि मानव एक न एक दिन निश्चय ही लौटेगा शीघ्र ही प्रतिफलित होता है। मानव को अपनी त्रुटियो का आभास होता है और वह पश्चात्ताप की ज्वाला मे जलने लगता है। आत्मा उसका मार्ग प्रदर्शन करती है।

मानव प्रताप (सन् १९५२, पृ० १२३), ले० : देवराज 'दिनेश', प्र० : आत्मा राम ऐण्ड सस, दिल्ली, *पात्र* पु० १५, स्त्री ५, *अंक:* ३; *दृश्य* : ७, ३, ५।
घटना-स्थल चित्तौड़, हल्दीघाटी तथा प्रान्त ।

राणाप्रताप अरावली पर्वतमाला से कुछ दूर मेघा जी से युद्ध के सम्बन्ध मे बाते कर रहे है। इस युद्ध मे हाकिम खॉ पठान प्रताप की हरावल का सेनापति है। रसद का भार अमर सिंह के ऊपर है। राणा को समाचार मिलता है कि राजा मानसिह की सेना शिकार मे व्यस्त है, और उस पर छिपकर आक्रमण बडी आसानी से किया जा सकता है, परन्तु प्रताप अपने पूर्वजो की आन का ध्यान करके इस योजना को सर्वथा ठुकरा देते है। हल्दीघाटी के मैदान मे रात को युद्ध समाप्त होता है और राणाप्रताप बच निकलते है। शक्तिसिह राणा को पहचान कर उनके पीछे दौडने वाले दो सैनिको को मारता है और फिर भाई के प्रति प्रेम उमडने से राणा के पैरो मे गिर पड़ता है। दोनो भाई फूट-फूटकर रोते है। शक्तिसिह को अपनी भूल का पश्चात्ताप होता है। राणा युद्ध मे चेतक को खो बैठते है।

राणा परिवार का कष्ट देखकर अकबर सन्धि के लिए तैयार हो जाते है। परन्तु भामाशाह के साहस दिलाने पर वह अपने प्रण पर अटल रहते है।

अभिनय : विद्यालयो मे अभिनीत।

मानव-विजय (वि० १९८३, पृ० ३०), ले० हनुमान शर्मा, प्र० श्री वेंकटेश्वर प्रेस, बबई, *पात्र*. पु० १२, स्त्री-रहित, *अक*-रहित; *दृश्य* : ९।
घटना-स्थल : युद्ध-भूमि।

प्रस्तुत नाटक आमेर-नरेश महाराज मानसिह की विजय का वर्णन करता है। महाराणा मानसिह ने ६५ लडाइयॉ जीती थी। परन्तु उन सब लडाइयो मे काबुल की लडाई सबसे कठिन है परन्तु मानसिह उसमे भी विजयी होते है और साढे तीन वर्ष वहॉ स्वच्छन्द शासन करते है। इस नाटक मे उसी लडाई का संक्षेप मे दिग्दर्शन कराया गया है।

मानी बसन्त (सन् १९६५, पृ० १७५), ले० गोपाल शर्मा; प्र० : लक्ष्मीधर वाजपेयी, आगरा, *पात्र* . पु०२, स्त्री १; *अक-दृश्य*-*रहित*।
घटना-स्थल घर का एक कक्ष, मैदान।

इस नाटक मे आधुनिक विवाह-समस्या पर प्रकाश डाला गया है। नाटक का नायक रघुनाथ राव इस दुविधा मे पडा है कि विवाह करना उचित है या नही। अन्त मे वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि पुराने जमाने मे शादी नही करेगे ऐसा विचार भी लडके के सिर मे नही आता था। जब माँ बाप की इच्छा हुई कि शादी होनी चाहिए, शादी हो गई किन्तु आज-कल के लड़के अपने आप शादी करेगे। अपनी पत्नी आप ही देखेगे।

मालती बसन्त नाटक (सन् १९५६, पृ० ३५), ले० . प० बज्जर प्रसाद, प्र० हितचिन्तक प्रेस, बनारस, *पात्र* . पु० २, स्त्री ६, *अक* ३, *दृश्य* : २, १, १।
घटना-स्थल : नन्दन वन।

यह नाटक सामाजिक नाटक है जिसमे दो पात्रो (बसन्त और मालती) का प्रेम दिखाया गया है। मालती बसन्त से प्रेम करती है और विरोध के होते हुए दोनो का विवाह हो जाता है।

मालन तारा (सन् १९५८, पृ० ५१), ले० मूलचन्द 'बेताब', प्र० : जवाहर बुक डिपो, मेरठ, *पात्र* . पु० ७, स्त्री ३, *अक* ३; *दृश्य* · २०।
घटना-स्थल नेपाल का राजभवन और बीहड जगल।

यह देहाती लेखक का नाटक है। नेपाल देश मे एक राजा नारायणसिंह है। जयपाल सिह डाकू राजा को गद्दी से उतार कर स्वय राजा बन जाता है। नारायणसिह अपनी रानी तारा को लेकर जंगल मे भाग जाते है, जहाँ से तारा मालन बनकर राजमहल मे आया करती है। जयपालसिह ने अपने रनिवास मे कह रखा है कि यदि रानी के लड़की होती

है तो उसका सिर काट लिया जाएगा। रानी के लडकी हुई जिसे तारा मालन चुपके से अपने लडके से बदल देती है। यही लडका वडा होकर राजा बनता और अपनी मालन माँ को पुन. राजमाता का पद देता है।

मास्टर जी (सन् १६६०, पृ० ६२), ले०: आनन्द प्रकाश जैन, *प्र०* आत्माराम ऐण्ड सस, दिल्ली, *पात्र* : पु० २, स्त्री २, *अक* : ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल . गाँव एव पाठशाला।

प्रस्तुत नाटक मे अछूतोद्धार की समस्या को उठाया गया है। गाँव के स्कूल-मास्टर दीनानाथ गाँव के हरिजन लोगो का पक्ष लेते है, जिसके कारण गाँव के धनी व्यक्ति जीवनराम चौधरी उनके दुश्मन वन जाते है परन्तु दीनानाथ की विनम्रता के कारण उन्हे झुकना पडता है और अन्त मे कहते है— "गाँव मे पक्का स्कूल बनाऊँगा, और उसमे हरिजनो और ब्राह्मणो के बच्चे-बूढे साथ-साथ पढेगे।"

मिट्टी का शेर (प्रहसन) (सन् १६३४, पृ० ५८), ले० · जी० पी० श्रीवास्तव, प्र० . साहित्य मडल, दिल्ली, *पात्र* · पु० ४, स्त्री ३; *अक-रहित*, दृश्य ८।
घटना-स्थल कमरा, वाहरी हाता, रास्ता, सडक।

इस प्रहसन मे एक अधेड डरपोक और मूर्ख व्यक्ति शेर बहादुर की कायरता को हास्य रूप मे दिखाया गया है। स्वार्थी नाथ एक वूढा और स्वार्थी व्यक्ति अपनी भतीजी विलासिनी का विवाह अधेड एवं मूर्ख शेर बहादुर के साथ केवल इसलिए करना चाहता है क्योकि वह विवाह मे उसका कोई खर्चा नही कराना चाहते। विलासिनी का प्रेम वसन्त के साथ है। वह अपने चाचा को पत्र लिख देती है कि वह अभी पढना चाहती है और विवाह के पक्ष मे नही है। स्वार्थी नाथ उससे बहुत ही रुष्ट होता है। वसन्त को जब विलासिनी के विवाह की सूचना मिलती है तो वह हडवडी मे भागा शेरबहादुर के घर जाता है। हडवडी मे विलासिनी का चित्र उसके हाथ से छूट जाता है। उस चित्र को पाकर शेर बहादुर के मन मे विलासिनी के विवाह के प्रति सन्देह होता है। वह अपनी स्त्री को वसन्त से वातें करते देखकर बहुत ही क्रुद्ध होता है। वसन्त विलासिनी के पास पहुँचता है और उसे वहुत फटकारता है। विलासिनी उसकी कायरता पर उसकी भर्त्सना करती है वसन्त और स्वार्थी नाथ का सवाद यह प्रमाणित करता है कि पहले स्वार्थी नाथ वसन्त को विवाह का आश्वासन दे चुके थे। स्वार्थी नाथ वसन्त के साथ विलासिनी का विवाह कर देते है।

मिट्टी की बेटी (सन् १६५८, पृ० १२०), ले० सागर वालूपुरी, *प्र०* मजुल प्रकाशन राम निवास बिल्डिग, रामनगर, नई दिल्ली, *पात्र* पु० ८, स्त्री ५, *अक-रहित*, *दृश्य* : १०।
घटना-स्थल कुम्हार का घर।

यह नाटक गाँव के कुम्हार की वेटी की कहानी है। कुम्हार शनम की वेटी घर मे बर्तन वनाती हुई शेखर से वाते कर रही है कि शनम आ जाता है। दरवाजा खुलने पर शनम शेखर को देखकर क्रुद्ध हो जाता है। शेखर चला जाता है। शनम वेटी निनिया को भी डाँटता है। इतने मे शनम का दोस्त चमन आ जाता और निनिया की शादी के लिए वचन देता है। गाँव मे मुखिया-पटवारी यह रिश्ता कराना नही चाहते है। इधर अफसर शेखर को शनम के घर देख कर विरुद्ध रिपोर्ट सैक्रेट्री के यहाँ भिजवा रहा है। शनम अपनी वेटी का रिश्ता करने जाता है तब तक निनिया किसी के साथ घर चली जाती है। इधर शनम को चोरी का केस लगा कर पुलिस थाने मे ले लाती है। निनिया सरपंच के घर लाई जाती है और सरपंच उससे शादी करना चाहता है। कालान्तर मे गाँव मे डाकू आ जाते है और सरपंच की वेटी को गोली मारते है। पचायत मे उपसरपच और उसके साथी मेम्बर

है। एक ओर निनिया, मीना बेटी, इत्यादि को पट्टी बँधी है। उस समय निनिया अपनी शादी अस्वीकार कर लडकियो को पढाने के लिए कहती है। फिर सभा मे जज फैसला करता है। सरपच अपनी गल्तियाँ स्वीकार कर लेता है। निनिया और शनम के अलावा सबको सजा होती है। फिर निनिया जज से अर्ज करके सबको जीवन दान देती है। शनम निनिया का हाथ शेखर के हाथ मे दे देता है।

मिथिला नाटक (वि० १६८०, पृ० ५२), ले० रघुनन्दन दास, प्र० कविवर मुशी रघुनन्दन दास, बनारस सिटी, *पात्र* पु० २६, स्त्री ४; *अक* ६; *दृश्य-रहित*। *घटना-स्थल* क्रोध का भवन, एक पथ, धर्म का निवास, भवन कलि का निवास भवन एव नेपथ्य मे गान।

प्रस्तावना के पश्चात् क्रोधान्ध कलियुग अपने सैन्य-समूह—क्रोध, लोभ, पिशुन, ईर्ष्या आलस्य आदि वृत्तियो को मिथिला के अतीत गौरव और समृद्धि को नष्ट करने के लिए भेजता है। मिथिला का मुख मलिन है, वेश जीर्ण-शीर्ण तथा वाणी मे मार्मिक पश्चात्ताप की भावना स्पष्ट हो रही है उसे अपने विगत दिनो की याद आती है। यहाँ के वासियो को कलि के प्रभाव से बचाने की चेतावनी दे देती है। एक बगाली भी मिथिला की गौरव-गरिमा का गुणगान करता है कि कलियुग का सैनिक धूर्त उसे पीटकर परेशान कर देता है। सतोष एवं धर्म इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि अब हम लोगो का यहाँ निर्वाह सभव नही है क्योकि कलियुग का प्रभाव सर्वत्र व्याप्त है। मिथिला का सर्वत्र अनादर होता है। दुर्मुख और दुस्साहस गुप्त रीति से सभी काम सम्पन्न करना चाहते है, मिथिला के प्रभाव से वे लोग भी डरते है। अतएव प्रत्यक्ष रूप से कुछ भी काम होना असभव जान पडता है। यहाँ सबसे अधिक प्रभाव क्रोध का पडता है। कलियुग के प्रभाव के फलस्वरूप लोगो मे पारस्परिक वैमनस्य, ईर्ष्या, द्वेष, इत्यादि दुष्प्रवृत्तियो का अत्यधिक विकास होता है। अन्ततः मिथिला पर कलि का आधिपत्य हो जाता है। अपनी परिस्थिति को देखकर कलि के प्रभाव से मिथिला मे निर्लज्जता, निर्दयता, निरुत्साह लोलुपता कटप एवं वंचकता इत्यादि का प्रचार-प्रसार होता है। मिथिला अपने अच्छे दिनो को याद कर आँसू बहाती है।

मिथिलेश कुमारी नाटक (सन् १८८८, पृ० ६६), ले० विन्ध्येश्वरी प्रसाद त्रिपाठी; प्र० खग विलास प्रेस, बाकीपुर, पटना; *पात्र* पु० ५, स्त्री २; *अक* ६, *दृश्य-रहित*। *घटना-स्थल* . घर, जगल, विवाह-मडप।

प्रस्तुत नाटक मे मिथिलेश कुमारी केतकी की प्रणय कथा है। उसका प्रेमी माधव है। प्रेम मार्ग मे अनेको बाधाये आती है। अन्त मे वे सफल होते है और विवाह सूत्र मे बँध जाते है।

मिरजा जंगी (सन् १९४५, पृ० ६१), ले० अजीम बेग चगताई; प्र० छात्र हितकारी पुस्तक माला, दारागज, प्रयाग, *पात्र* पु० ११; स्त्री-रहित, *अक* ३ *दृश्य* ३, ८, ३। *घटना-स्थल* दीवान खाना, वृक्ष की छाया, बादशाह का दरबार।

इस प्रहसन मे वाजिदअलीशाह के कर्मचारी मिरजा जंगी बटेर की टाँगे मुँह मे लिये बैठे है। गोलन्दाज बव्वन खाँ को कानपुर से आने वाली आक्रमणकारी अँग्रेज पलटन पर गोलाबारी की आज्ञा मिलती है। बव्वन खाँ तोपो का दृश्य बताते है कि एक तोप मे बिल्ली ने बच्चे दिए है, दूसरी बटेरो का दाना रखा है। तीसरी मे रहते है चौथी मे घरवाली कोयले बुझा कर रखती है। छत से एक बिल्ली कूदती है तो सब लोग डर कर भागने लगते है। मिरजा जंगी एक तलवार लेकर बिल्ली को मारने चलते है तो वह फण करके भीत पर उछलकर चढ जाती है। मिरजा जगी अवाक् रह जाते है और बिल्ली भाग जाती है। बादशाह के दरबार

मे तीन भिखारी पकड़े जाते है और उन्हे जीवित दीवाल मे चुनवा देने की आज्ञा दी जाती है।

अँग्रेज-फौज जब लखनऊ मे आती है तो मिरजा जगी बब्बन खाँ हुक्का पी रहे हैं। कुछ लोग अफीम घोल रहे है, कुछ बटेर लडा रहे है। लडने के लिए न तो किसी के पास हथियार हैं और न गोलाबारी की व्यवस्था। वाजिदअली शाह को अग्रेज पकड ले जाते है।

मिर्जा साहिब 'पंजाब की प्रीत कहानियो मे' सकलित सगीत रूपक (सन् १९६०), ले० हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० आत्माराम ऐण्ड सस, दिल्ली, *पात्र :* पु० ५, स्त्री ३; *अक-दृश्य-रहित।*
घटना-स्थल . नदी तट, जंगल।

इस संगीत रूपक मे पंजाब की आचलिक पृष्ठभूमि पर मिर्जा एव साहिबा के उस परिपक्व प्रेम का प्रतिपादन किया गया है जो बाल्यकाल की देहरी पार करके यौवन मे गुजायमान होने लगा है। उस प्रेम-मिलन मे अवरोध बनती है—साहिबा की माँ। इस स्थिति को देखते हुए मिर्जा की मौसी मिर्जा को दानाबाद भेज देती है। कुछ समय पश्चात् साहिबा के विवाह की सूचना पाकर मिर्जा उससे मिलने आता है तथा अपनी मौसी की सहायता से साहिबा को भगाकर दानाबाद ले जाता है। मार्ग मे एक स्थान पर वे विश्रामार्थ रुकते है। यहाँ साहिबा मे अन्तर्द्वन्द्व होता है कि अब अगर उसके भाई आ गए तो निश्चय ही झगडा होगा। अनिष्ट आशंका उसे विकल करती है। तभी उसे एक उपाय सूझता है और वह मिर्जा के समस्त तीर तोड देती है, जिससे न होगा बाँस न बजेगी बाँसुरी। इसी क्षण उसके भाई पीछा करते हुए आ जाते है और मिर्जा को ललकारते हैं। संघर्ष मे तीरो के अभाव मे मिर्जा की मृत्यु हो जाती है। उधर साहिबा भी मृत्यु की गोद मे अनन्त काल के लिए सो जाती है। प्रेम के इस दुखद अन्त के साथ ही रूपक समाप्त होता है।

मिलन-यामिनी ('पुनरावृत्ति' मे सकलित) (सन् १९५१, पृ० ४०), ले० · हसकुमार तिवारी; प्र० ज्ञानपीठ लि०, पटना; पात्र पु० ४, स्त्री १; *अक-दृश्य-रहित।*
घटना-स्थल . वेश्यागृह, मार्ग, कुटिया।

रूप और कला की अधिष्ठात्री वासवदत्ता तथा बौद्ध भिक्षु उपगुप्त के उदात्त-प्रेम पर आधारित एक संगीत रूपक है। कथा के रूप मे सकेत-मात्र दिये है। अमावस की एक रात को वासवदत्ता अभिसार-हेतु निकलती है तथा रात्रि के सघन अधकार मे परम सौम्य सन्यासी उपगुप्त से टकरा जाती है। इस पर रूपगर्विता वासवदत्ता उपगुप्त के काचन रूप पर मुग्ध होकर उसे आमत्रित करती है किन्तु वैराग्य-वैभव का स्वामी उपगुप्त फिर आने को कहकर चला जाता है। समय बदलता है। कभी प्रेमी-भ्रमरो से घिरी वासवदत्ता अब गलित काया लेकर नगर के बाहर रूप-यौवन का अभिशाप भोग रही है। पूर्व प्रतिज्ञा के अनुसार उसी रात उपगुप्त आता है और वासवदत्ता के उपेक्षित अस्तित्व को मिलन-यामिनी से अभिसिंचित करता है।

मिस अमेरिकन (सन् १९२६, पृ० १५४), ले० . बदरीनाथ भट्ट; प्र० : इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग; *पात्र :* पु० ५, स्त्री ३; *अक :* ३; *दृश्य :* ६, ६, २।

इस प्रहसन मे पाश्चात्य सभ्यता एवं आचरण का उपहास उड़ाया है। इसमे वहाँ की सभ्यता तथा नैतिकता को व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। जहाँ कि सदाचार के लिए कोई स्थान नही है तथा जिनके जीवन का एकमात्र केवल यही लक्ष्य रहता है कि जैसे भी हो अधिक से अधिक धन की प्राप्ति करना। इसमे श्रीमती अमेरिकन अपनी पुत्रियो को समझाती है—"मेरी प्यारी दुलारी, न सही गोरा, कोई हिन्दुस्तानी ही सही। अपने यहा तो यदि रुपया मिले तो सूअर से भी विवाह या मित्रता करने मे संकोच नही किया जाता है।" यथार्थ रूप मे नाटककार का लक्ष्य इसमे उस च

भोगवाद को भी अनावृत करना रहा है, जिसमे कि जीवन की नैतिकता का मूल्य धन के सम्मुख तुच्छ है। इस प्रहसन मे चुभते हुए व्यग्यो के माध्यम से तत्कालीन परिवेश को स्पष्ट किया गया है। यह विशेषकर उन व्यक्तियो के लिए लिखा गया है जो भारतीय सस्कृति को पाश्चात्य सस्कृति से हेय समझते है और अपने जीवन को उसी साँचे मे ढालते हैं।

मिस ३५ का पति निर्वाचन (सन् १९३५, पृ० ३९), ले० सत्य जीवन वर्मा 'श्री भारतीय', प्र० सरस साहित्य सदन, प्रयाग, *पात्र* पु० ११, स्त्री १, *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल सिविल लाइन्स का सुन्दर बगला।

यह एक हास्य-प्रधान नाटक है जिसमे एक मिस आधुनिक सभ्यता से प्रभावित होकर अपने पति की खोज के लिए कवि, साहित्यकार, प्रोफेसर, आर्टिस्ट, कुवर से साक्षात्कार करके बार्तालाप करती है। सभी लोग अपने-अपने पेशे को सर्वोत्तम बता कर अपने को योग्य प्रमाणित करते है किन्तु मिस इसी ऊहापोह मे जीवन-भर अविवाहित रहकर योग्य वर की प्रतीक्षा ही करती रहती है। वह जीवन साथी को चुनाव के माध्यम से अपनाना चाहती है। इसी लिए उसकी मानसिक उलझने सभी के पेशे की विशेषताओ को देखकर सुलझती नही। अन्तत मिस एक आफिस मे काम करने वाले मिस्टर क्लर्क को अपना प्रेम दिखाकर उससे विवाह का प्रस्ताव करती है किन्तु वह भी अपने मामा की स्वीकृति लेने के बहाने धोखा देकर चला जाता है और मिस प्रतीक्षा ही करती रह जाती है।

मिस्टर डब्ल्यू टी (सन् १९७०, पृ० ६८), ले० रामनिरजन शर्मा 'अलख'; प्र० साधना मदिर, पटना, *पात्र* पु० १०, स्त्री १, *अक* २, *दृश्य* ७, ७।
घटना-स्थल स्टेशन, रेल का डब्बा।

यह एक सामाजिक नाटक है। इसमे मि० डब्ल्यू टी, कुमार, किशोर तथा कचन बिना टिकट यात्रा करने वाले शैतान व्यक्ति है जो गाडी मे सफर करने वाले भले मनुष्यो का नाजायज गला घोटते है। उनकी जेबे काटते है तथा गाड़ी मे रखे हुए सामान को चोरी से लेकर उतर जाते है। जगह-जगह पर जजीर खीचकर गाडी को रोक देते है जिससे गाडी के ठीक समय से न पहुँचने पर लोगो को बहुत बडे-बड़े कष्ट उठाने पडते है। रमेश एक अच्छे बाप का लडका है जो कई विद्यार्थियो के साथ इनका विरोध करता है लेकिन फिर भी वे नही मानते। अन्त मे एक बार मिस्टर डब्ल्यू टी मजिस्ट्रेट-चैकिग से डरकर चलती गाडी से कूद जाता है जिससे उसके दोनो पैर कट जाते है और बाद मे अपने को पक्का शैतान बताता हुआ छुरा मारकर मर जाता है और उसके अन्य साथी गिरफ्तार कर लिए जाते हैं।

मिहिरकुल (सन् १९५५, पृ १०४), ले० कैलाशनाथ भटनागर ; प्र० भारतीय गौरव ग्रन्थमाला, नई दिल्ली; *पात्र* पु० ६, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* १४, ११, ९।
घटना-स्थल कश्मीर की राजसभा, बौद्ध-बिहार, शाकल की राजसभा, मन्दिर।

बौद्ध-धर्म के अहिंसा, भूतदया आदि सिद्धान्तो से प्रभावित हूण शासक मिहिरकुल शाकल के सघ-स्थविर से एक धर्म-मर्मज्ञ उपदेशक भेजने की प्रार्थना करता है जो उसे धर्म मे दीक्षित कर उसका मर्म समझा सके। परन्तु संघ-स्थविर कुछ तो घृणा-भाव से और कुछ समता का दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के लिए अच्छा उपदेशक न भेजकर मिहिरकुल को अपने सेवक से ही यह कार्य लेने का सुझाव देता है जिससे स्वभावतः क्रोधी मिहिरकुल रुष्ट ही नही होता अपितु बौद्धधर्म का शत्रु भी बन जाता है। जब उसने प्रतिशोध की भावना से बौद्ध-विहार नष्ट-भ्रष्ट करने प्रारंभ किए, तो बौद्ध धर्मावलंबी मगधराज बालादित्य दे उसे कर देना बन्द कर देता है। यह सूचना पाते ही मिहिरकुल मगध पर

आक्रमण करता पर वालादित्य की युद्ध-नीति के कारण वह परास्त होकर, बन्दी बनाया जाता और उसे प्राण-दंड की आज्ञा दी जाती। परन्तु राजमाता के हस्तक्षेप और राजकुमारी के प्रणय-भाव के परिणामस्वरूप मृत्यु-दंड प्रेम-दड मे वदल जाता है। राजकुमारी और मिहिरकुल प्रणय-बंधन मे बंध जाते हैं। विवाहोपरान्त मिहिरकुल अपने राज्य शाकल जाता है पर उसे ज्ञात होता है कि वहाँ तो उसके भाई खिखिल ने आधिपत्य जमा रखा है। अतः परम निराशा की स्थिति मे वह काश्मीर जाता है। वहाँ का राजा न केवल उसे आश्रय देता है अपितु कुछ शासनाधिकार सौपकर उसे भट्टारक का पद भी प्रदान करता है। कुछ समय वाद रहस्यमय स्थिति मे काश्मीर नरेश की मदिरा पान करते-करते मृत्यु हो जाती है। काश्मीर के वे व्यक्ति जो मिहिरकुल से द्वेष करते थे उसी पर राजा की हत्या का आरोप लगाते हैं, उसे अपदस्थ करने का यत्न करते हैं पर वह दृढ़ता से स्थिति का सामना करता है। वहाँ के निवासियो पर नृशसंता से शासन करता है तथा शैव-धर्म का प्रचार करता है। गाधार विजय के वाद मिहिरेश्वर मन्दिर की स्थापना के समय उसका भाई खिखिल भी यहाँ आकर अपने विगत कुकृत्य के लिए क्षमा मागता है। दोनो के मेल से हूणो की शक्ति वढ जाती है।

मीर कासिम (सन् १९६२, पृ० ७२), ले० चतुर्भुज शर्मा ; प्र० साधना मन्दिर, पटना ; पात्र० · पु० १३, स्त्री २, अक : ३, दृश्य . ६, ६, ४।
घटना-स्थल : वंगाल के नवाव का महल तथा वक्सर का युद्ध-क्षेत्र।

सेनापति मीर कासिम अंग्रेजो की दुरभिसन्धि का शिकार होकर मीरजाफर के विरुद्ध विद्रोह करता है और वंगाल, विहार तथा उडीसा का नवाब वनता है। अंग्रेज उसे कठपुतली की तरह नचाना चाहते हैं। वह उनसे निकलने के लिए कटिवद्ध होकर फ्रांसीसी सोम्बर, अवध के नवाब सुजाउद्दौला तथा मुगल-सम्राट से सहायता लेकर अँग्रेजो के विरुद्ध सघर्ष करता है। छल, कूटनीति, षड्यत्र, घूस और पतन के गर्त मे भारत का यह नवाव युद्ध मे वलि चढ जाता है और अँग्रेजो का प्रभुत्व दिल्ली तक स्थापित हो जाता है।

मीर साहव (प्रहसन) (सन् १९५८, पृ० ७९) ले० · सीताराम गुप्त ; प्र० किताव महल, इलाहावाद ; *पात्र* पु० ११, स्त्री १ ; अक-रहित प्रत्येक प्रहसन मे तीन दृश्य।
घटना-स्थल वेश्या भवन, मार्ग, मकान, वाग, रास्ता।

इसमे ६ प्रहसन हैं—(१) गड़वड शर्मा (२) रगेसियार, (३) मीरसाहव (४) वुद्ध (५) चौपटानंद (६) स्वर्ग के दूत। प्रत्येक नाटक मे तीन दृश्य और तीन या चार पात्र हैं। स्वर्ग के दूत मे पुरुषपात्र ११ स्त्री-पात्र कोई नही है। प्रथम प्रहसन मे गडवड शर्मा समाज का नेता है जिसे सादा जोड़ घटाना नही आता। चियरू कौंसिल का मेम्बर है जो मूर्ख सदस्यो की एक पार्टी वनाता है, मुस्लिम नेता मौलवी लालटेन उल्ला साहव हैं। ये सव नेता फजीता वेगम नामक नर्तकी का गाना सुनने उसके कोठे पर जाते हैं। वहाँ शराव पीते हैं। चिरु फजीता को लेकर भाग जाता है। शेप एक-दूसरे के गले मिलकर रोते हैं।

मीरा के स्वर (सगीत रूपक) (सन् १९६३ पृ० ३२), ले० : मनोहर प्रभाकर, प्र० : कल्याणमल ऐण्ड संस, जयपुर; *पात्र* : पु० रहित, स्त्री १।
घटना स्थल . कृष्ण मदिर।

'मीरा के स्वर' सगीत रूपक के अंतर्गत मीरा के कृष्ण-प्रेम की एकाग्रता, उत्कृष्टता तथा मार्मिकता को अभिव्यजित करते हुए वीच-वीच मे मीरा के पदो का सयोजन किया गया है। जसपा तथा अन्य सगीत रूपक मे संग्रहीत।

मीरा नाटक (सन् १९३९, पृ०१३४), ले० . प्र० : सन्त गोकुल चन्द्र शास्त्री, लाहौर, *पात्र* . पु० १६, स्त्री १०; अक ३, *दृश्य* ' ८, ७, १० ।
घटना-स्थल राजभवन, उद्यान, गोपाल-मदिर ।

इस नाटक के अनुसार मीरा का विवाह भोजदेव के साथ हुआ है । इसी घटना क्रम को लेकर यह नाटक रचा गया है । विकास के कट्टर विरोधी मीरा का मुकाबला करते है। उसके मार्ग मे बाधाएँ उपस्थित की जाती है उसे विष आदि देकर मार डालने के षड्यन्त्र रचे जाते है पर सत्याग्रह के दृढ चट्टान पर खडी मीरा उन सबका सफलता से सामना करती है ।

मीराबाई (सन् १९२०, पृ० ११०), ले० दुर्गाप्रसाद गुप्त ; प्र० उपन्यास बाहर आफिस, बाराणसी ; पात्र पु० ३, स्त्री २ ; *अक* ३ ; *दृश्य* ८, ६, ३ ।
घटना-स्थल बाग, रास्ता, मकान, देवमदिर, कोहबर, भूतमहल, मीरा की धर्मशाला, राणा का दीवानखाना ।

नाटक का प्रारम्भ सखियो सहित मीरा के रास से होता है । मीरा के पिता जैमल साधु-महात्माओ को अपने घर बुलाकर सम्मान करते है। मीरा उनका पूजन करती है। मीरा को एक दिन एक साधु गिरिधर लाल की मूर्ति देता है । इस नाटक के प्रथम अक के पाँचवे दृश्य मे एक ढोगी साधु रामदास की चरित्रगत बुराइयों का भी आभास मिलता है ।

रामदास को सुशीला दक्षिणा रूप मे रुपया देती है पर रामदास उसके धन अलकार से ही प्रसन्न नही होता उसके शरीर पर भी अधिकार जमाना चाहता है । जब उसके सतीत्व को नष्ट करने के लिए आगे बढता है तो सुशीला अपने कमडल से जल गिराती है जिससे अग्नि उत्पन्न हो जाती है । दल्लू नामक ग्रामीण भक्त यह चमत्कार देखकर चकित रह जाता है और चना-गुड़ का नैवेद्य लगाता है । भगवान् प्रकट होकर उसे दर्शन देते है । इस प्रकार भक्ति उपासना के दोनो रूपो का दर्शन कराया गया है ।

मीरा गिरिधर की मूर्ति लेकर ससुराल जाती है । उसकी सास और ननद उसकी उपासना-पद्धति को स्वीकार नही करती । मीरा न घूँघट काढती है और न शर्माती है । मीरा के पति कुम्भ उसे भक्ति-उपासना से विरत करना चाहते है पर मीरा के अस्वीकार करने पर उसके कंठ पर तलवार चलाते है किन्तु राणाजी तलवार रोक लेते है । पर कुम्भ मीरा को भूत भवन मे बन्द कर देते है । एक दिन भूतभवन मे उसका वध करने कुम्भ पहुँचते है पर अपनी बहन के समझाने पर वह मीरा की मृत्यु विषपान द्वारा कराने को उद्यत हो जाते है । सौत मीरा को वृन्दावन के चरणामृत के बहाने विष देती है, किन्तु मीरा पर विष का कोई प्रभाव नही पड़ता । अकबर बीरबल और तानसेन मीरा की भक्ति-भावना से प्रभावित होकर उनके दर्शनार्थ मीरा की धर्मशाला मे पहुँचते है । अकबर मीरा की परीक्षा के लिए छुप जाते है । बीरबल मीरा की परीक्षा लेते है । अकबर प्रसन्न होकर मोतियो का हार देना चाहते है पर मीरा उसे दीन-दुखियो को बाँटने के लिए निवेदन करती है । इतने पर भी कुम्भ साँप का पिटारा भेजते है, जिसमे कृष्ण भगवान् की मूर्ति निकलती है । मीरा भगवान् की स्तुति करती है ।

मीराबाई (सन् १९३९), ले० मोहम्मद इब्राहीम 'मशहर' अंबालवी, प्र० जे० एस० सन्तसिंह ऐण्ड संस, लाहौर ; *पात्र* पु० ३, स्त्री ४ ; अक ३ ।
घटना-स्थल ' राजस्थान, ब्रजभूमि तथा कृष्ण मन्दिर ।

यह नाटक मध्यकालीन प्रसिद्ध कवयित्री मीरा के जीवन पर आधारित धार्मिक नाटक है । नाटककार ने मीरा पर गुजरी अतिवादी घटनाओ के द्वारा उसके संकटग्रस्त जीवन पर प्रकाश डाला है ।

मीराबाई (सन् १९२५, पृ० ८२), ले० रघुनन्दन प्रसाद शुक्ल; प्र० बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, बनारस सिटी, *पात्र :* पु० १०, स्त्री ६, *अक* ३; *दृश्य* ९, ६, ३ ।
घटना-स्थल : मेवाड का राजमहल, वृन्दावन ।

यह एक भक्तिरस पूर्ण धार्मिक नाटक है । मीराबाई अपने प्रभु गिरिधर गोपाल की भक्ति मे लीन हो जाती है । उसके अन्दर सासारिक वासनाओ से अनुपम विराग, लौकिक सुखो का अलौकिक त्याग तथा भगवान् के चरणो मे अनूठा अनुराग देखने को मिलता है । वह बचपन से ही भगवान् की अनन्य भक्त है । मीरा का विवाह उसके माता-पिता राणा सागा के पुत्र कुम्भाजी के साथ कर देते है । दहेज मे मीरा के माता-पिता उसे बहुत सारी चीजे देते है लेकिन मीरा उन सभी उपहारो को न ग्रहण करके अपने साथ मे गिरधरगोपाल जी की मूर्ति ही ले जाती है । ससुराल जाने पर मीरा को उसकी सास द्वारा तथा कुल ननद-देवता की पूजा के लिए दबाव डाला जाता है लेकिन मीरा उनके कुल देवता की पूजा नही करती । वह तो केवल गिरधरगोपाल की पूजा मे ही लवलीन रहती है, जिससे उसके पति कुम्भाजी मीरा पर बहुत क्रोधित होते है और मार डालने के लिए उसे भूत महल मे डलवा देते है । लेकिन वहाँ से मीरा सुरक्षित निकल आती है, जिससे कुम्भा जी बडे आश्चर्यचकित होते है । वे मीरा को विष का प्याला भेज देते है । मीरा राणा द्वारा भेजे गये जहर के प्याले को हँसती हुई पी जाती है । विष दिये जाने पर भी जब मीरा नही मरती तो उसे कुम्भा जी स्वय मारने के लिए तलवार उठाते है लेकिन कृष्ण-प्रताप से उनकी तलवार टूट जाती है ।

अनेक यातनाओ के सहने के बाद भी मीरा कृष्ण-भक्ति को नही छोडती । अन्त मे वह दुखी होकर तुलसीदास जी को पत्र लिखती है जिसके जवाब मे तुलसीदास जी मीरा को घर छोडकर 'वृन्दावन' कृष्ण के पास जाने के लिए लिखते हैं । पत्र पाते ही मीरा वृन्दावन चली जाती है । इधर शची भी राणा के ऊपर से अपनी माया का प्रभाव हटा लेती है जिससे राणा भी मीरा के बिना पागल हो जाते हैं और वे मीरा को ढूँढने के लिए वृन्दावन की ओर चले जाते है । राणा के चले जाने पर प्रजा के सभी लोग बडे दुखी होते है और वृन्दावन जाकर मीरा से घर वापस लौटने के लिए प्रार्थना करते है । वहाँ पर शची (इन्द्राणी) भी प्रकट होकर मीराबाई से क्षमा याचना करती है । अन्त मे मीरा सभी लोगो को भगवद्-भक्ति का उपदेश देकर स्वर्ग-लोक चली जाती है ।

मीराबाई नाटक (सन् १९३६, पृ० १२५), ले० मुकुन्दलाल वर्मा, प्र० भार्गव पुस्तकालय, बनारस, *पात्र :* पु० ७, स्त्री ४, *अक* · ३, *दृश्य* · ८, ७, ७ ।
घटना-स्थल मेवाड़ का राजमहल, वृन्दावन का मन्दिर ।

यह भक्ति-रस-पूर्ण ऐतिहासिक नाटक है । इसमे सुप्रसिद्ध कृष्ण-भक्त और कवयित्री मीरा के सम्पूर्ण जीवन को चित्रित किया गया है । मीरा का विवाह मेवाड के प्रसिद्ध राणा वंश के भोजराज के साथ होता है । मीरा अपने पतिगृह मे कुल देवता के पूजन को मना करने पर सास-ननद तथा परिवार की कोप-भाजन बनती है । मीरा के दस वर्ष के अल्प दाम्पत्य जीवन का पति की मृत्यु के साथ अन्त हो जाता है । वह कुल-परम्परा के अनुसार पति के साथ सती नही होती है । वह रणछोड के मन्दिर मे कृष्ण-भक्ति मे लीन हो जाती है । राणा-परिवार मीरा के इस कृत्य को परिवार के लिए कलक मानता है और परिवार का मुखिया विक्रमादित्य मन्त्री जुझारसिंह की राय से विषपान तथा शालिग्राम की पेटारी मे नाग भेजकर मीरा की इहलीला समाप्त करना चाहता है । मीराबाई राणा का महल छोड वृन्दावन आती है और कृष्णभक्ति मे लीन हो जाती है । मन्त्री जुझारसिंह राणा विक्रम को पदच्युत कर राज्य हस्तगत करने का

प्रयत्न करता है। राणा भी अब कुल-मर्यादा समझ मीरा को वापस लाने का सकल्प करते है। मीरा को कृष्ण का वियोग सहन नही होता है। राणा के सम्मुख ही उसका जीवन समाप्त हो जाता है और मीरा कृष्ण-चरणो मे सर्वदा के लिए स्थान बना लेती है।

मीराबाई नाटक (सन् १९५०, पृ० ८८), लें० : न्यादरसिह 'बेचैन' 'देहलवी'; प्र० : देहाती पुस्तक भडार, चावडी बाजार, दिल्ली, *पात्र* पु० १५, स्त्री १२; *अक* : ३; *दृश्य* : ७, ५, ३।
घटना-स्थल · मेवाड का राजमहल, वृन्दावन, मन्दिर।

यह एक धार्मिक नाटक है। महाराज जयमल अपनी कन्या मीरा का विवाह चित्तौड के राणा भोजराज के साथ कर देते है। मीरा विवाह से पूर्व ही कृष्ण की अलौकिक शक्ति के सम्मुख अपने आप को समर्पित कर देती है। पतिगृह उनके लिए पीडा, यातना, कलक का बन्दीगृह बन जाता है। वह साधु-सत-सत्सग के कारण काल कोठरी, विष-पान और नाग-दशन का दण्ड पाती है। भगवान् अपने भक्त की सब प्रकार से रक्षा करते है। मीरा की ख्याति दूर-दूर तक फैल जाती है। सम्राट् अकबर, बीरबल और तानसेन भी मीरा की भक्ति की परीक्षा करते है। अपने जीवन से पीडित मीरा भक्त तुलसीदास से परामर्श करती है और "छाँडि मन हरि विमुखन को सग।" के मत्र पर गृहत्याग देती है। राणा भी अपनी भूल पर पश्चात्ताप करते है। मीरा पूर्ण सम्मान के साथ परिवार मे गृहीत होती है।

मुञ्जदेव (सन् १९५८, पृ० १२९), लें० ओकार नाथ दिनकर, प्र० गुरदास कपूर ऐण्ड संस, एज्यूकेशनल पब्लिशर्ज, चावडी बाजार, दिल्ली; *पात्र* पु० १०, स्त्री ७; *अक* : ३; *दृश्य* · ८, ६, ६।
घटना-स्थल · अवन्तिका।

इस ऐतिहासिक नाटक मे विक्रम की ग्यारहवी शती के मध्यकालीन राजा मुञ्जदेव के चरित्र का चित्रण किया गया है। नि सन्तान अवन्तिका-नरेश सिहदत्त द्वितीय को देशाटन के मध्य मुञ्जायन प्रदेश मे एक पुत्र मिल जाता है। कुछ काल पश्चात् महारानी को भी पुत्र सिधुल उत्पन्न होता है। राजा मुञ्जदेव को ही उत्तराधिकारी नियुक्त करता है। मुञ्जदेव भी नि सन्तान होने पर दुखी रहता है। जबकि सिधुल को भोज नामक पुत्र उत्पन्न हो जाता है। महारानी चित्रागदा तो भोज को पुत्रवत् मानकर सतुष्ट हो जाती है, किन्तु मुञ्जदेव की खिन्नता बनी रहती है। मत्री रुद्रादित्य भोज को समाप्त करने की दुरभिसन्धि मे मुञ्जदेव से आदेश लिखवा लेता है और बग-नरेश वत्सराज को उसे समाप्त करने का भार सौपता है। वत्सराज भोज को मारता नही, वह उसे छिपा देता है। मुञ्जदेव इस जघन्य कृत्य पर पश्चात्ताप करता है, तब वत्सराज भोज को वापस कर देता है। इसी मध्य तैलगाधीश तैलपराज द्वितीय अवन्तिका पर आक्रमण कर देता है। अपनी बाल विधवा भगिनी मृणालवती के परामर्श से तैलपराज स्यूनराज भिल्लमराज को पराजित कर अपना सामन्त बना लेता है। यही भिल्लमराज मुञ्जदेव को मल्लयुद्ध मे परास्त कर उसे बन्दी बना लेता है। राजा उसे मृत्यु-दण्ड देना चाहता है। मृणालवती उसे एक कारावास से बदलकर दूसरे बन्दीगृह मे डाल देती है। मुञ्जदेव को वह अपना गुरु बनाती है और कुछ काल पश्चात् प्रेमपाश मे बँधकर तैलपराज को मारने के षड्यत्र मे भाग लेती है। मुञ्जदेव असफल होता है और उसे प्राणदण्ड मिलता है।

तैलपराज का सन्धि-विग्राहक कवि पद्मगुप्त ही उक्त षड्यत्र का सूत्रधार होता है। कवि की प्रेरणा से भिल्लमराज की पुत्री कचनमाला भोज की ओर आकर्षित होती है और अवन्तिका मे पहुँच उससे परिणय करती है। भिल्लमराज भोज को सामन्त बना देता है। वह मुञ्ज को छुडाने तैलंग जाते है किन्तु वहाँ पहुँच कर—"गत मुञ्जे यश. पुजे निरवलम्बा सरस्वती" की घोपणा सुनते है।

मुशी प्रेमचन्द (सन् १९६८, पृ० ९९), ले० देवीप्रसाद 'धवन', प्र० चैतन्य प्रकाशन मदिर, कानपुर; *पात्र :* पु० ६, स्त्री १; *अक* ३; *दृश्य* ८, १०, ६।
घटना-स्थल घर, दफ्तर, गोष्ठी।

उपन्यास सम्राट् प्रेमचन्द जी के जीवन के बारे मे विशेषत· उनके आर्थिक संकट, हिन्दी प्रवेश, साहित्यिक गोष्ठी एव सगठन को लेकर इस नाटक की रचना हुई है। प्रेमचन्द का प्रारम्भिक जीवन वडा कष्टमय है। उनकी पहली पत्नी आर्थिक सकट के कारण ही उनका घर छोड देती है। फिर प्रेमचन्द शिवरानी देवी से विवाह करते है जिससे उन्हे वडा सुख और सन्तोप मिलता है। सरकारी नौकरी के समय प्रेमचन्द जी किसी से रिश्वत नही लेते है और अपना काम स्वय करते है। कानपुर के साहित्यकार इससे उनकी प्रशसा करते है। 'नमक का दरोगा' कहानी की प्रशसा इसी वहाने करते है। फिर प्रेमचन्द अपनी साहित्यिक सेवाओ के बारे मे साहित्यकारो से वात करते हुए बताते हे कि मै मजदूर, गरीब, अमीर सबको समान देखना चाहता हूँ। नाटक के अन्त मे नवीन, कौशिक, सनेही, अवस्थी आदि साहित्यकार उनके साहित्यिक कार्यो का विवेचन करते है। नाटक मे मुशी प्रेमचन्द को यथा-रूप प्रस्तुत करने का प्रयास है।

मुकद्दर की चोट कृष्ण की ओट उर्फ लुहार वाढी (सन् १९५८, पृ० ४९), ले० मूलचन्द 'वेताव', प्र०· जवाहर वुक डिपो, मेरठ, *पात्र* पु० ७, स्त्री ३, अक-रहित, *दृश्य* ९।
घटना-स्थल गाँव।

यह देहाती लेखक की रचना है। विन्ध्य-देश के कर्णपुर गाँव मे घनश्याम दास लुहार और शोभाराम वढई रहते है। इनमे से लुहार के लडके की शादी नही होती और वढई के लडके की शादी हो जाती है। शोभाराम अपनी मित्रता द्वारा स्त्री की वुद्धि पर पर्दा डालता हे और खुद होनहार नारी से हार मानता है और कृष्ण की ओट मे शिकार खेलता है तब उसे अपने आप का ज्ञान होता है।

मुकुन्द इन्दिरा (वि० २०१५, पृ० १४७), ले० बालकृष्ण सम, प्र० रत्न पुस्तक भडार नेपाल, *पात्र* पु० ११, स्त्री ५, *अक* ५, *दृश्य* ३, ३, ५, ४, ३।
घटना-स्थल गाँव, जंगल, खेत, मडप।

इस सामाजिक नाटक मे दो ग्रामीण प्रेमियो की कहानी है। दोनो एक दूसरे से प्रेम करते है और अनेक कहानियो के वाद विवाह कर पाते है।

मुकुट (सन् १९५०, पृ० १०२), ले० नित्यानन्द हीराचन्द वात्स्यायन, प्र० हिन्दी भवन, जालन्धर; *पात्र·* पु० ८, स्त्री २; *अक·* २, *दृश्य* ७, १३।

नाटक का नायक है मध्यवर्ग का डॉ० मोहन, जो दीन-दरिद्र मजदूरो के कष्ट से द्रवित हो न धन की, न मान की और न विलासमय जीवन की ही चिन्ता करता है। वह अपना जीवन गरीब मजदूरो की सेवा मे अर्पित कर देता है। इसके लिए उसे न केवल अपनी वाल-सहचरी का ही परित्याग करना पडता है, अपितु अपने पिता के मित्र मिल-मालिक सेठ जगदीशचन्द्र और उनके पुत्र कैलाश चन्द्र से भी सघर्ष करना पडता है। नौकरी से हटना पडता है, जेल जाना पडता है और सच्ची सहानुभूति से मजदूर परिवार की सेवा करने पर भी विधवा युवती से प्रेम करने का लाछन सहना पडता हे। उसका विरोधी है कैलाशचन्द्र जो मजदूरो का शत्रु है, मजदूरो की युवा स्त्रियो को खिलौना समझकर उनसे खेलना चाहता है। अपनी इन्द्रिय-तृप्ति के लिए दमन का आश्रय लेता है। उद्देश्यपूर्ति के लिए छल-कपट और कूट-नीति का प्रयोग करना है परन्तु भण्डाफोड हो जाने पर स्वय उसका पिता वस्तुस्थिति को पहचान एक ओर मजदूरो की सव माँगें स्वीकार कर हड़ताल समाप्त करा देता है और दूसरी ओर डॉ० मोहन को अपना जामाता स्वीकार कर लेता है।

मुक्त पुरुष—'तमसा' मे संग्रहीत रेडियो गीति-नाट्य (सन् १६६८), ले० · जानकी बल्लभ शास्त्री; प्र० · राजकमल प्रकाशन, दिल्ली; *पात्र:* पु० ६, स्त्री ३; *अक-रहित; दृश्य:* ६ ।
घटना-स्थल : कस का कारागार, नन्द भवन, गोवर्धन पर्वत, शयनागार ।

'मुक्त पुरुष' कृष्ण के लोक-कल्याणकारी रूप पर आधारित गीति-नाट्य है । मन तथा वाणी से विभक्त मानव सामाजिक विषमता का शिकार हो रहा है । विषमता की इन गाँठो को केवल मुक्त पुरुष ही खोलेगा क्योकि वह पूर्ण पुरुष सर्वसमर्थ होगा । इसके पश्चात् मुक्त पुरुष कृष्ण का अवतार होता है और वह कालीयदह मे नाग-नाथना, गोवर्धन-धारण, वृन्दावन-निवास, राक्षसो का वध आदि घटनाओ द्वारा लोकरक्षण करता है । इन विविध-घटनाओ के अनन्तर कृष्ण के मथुरा-गमन के साथ ही गीति-नाट्य समाप्त हो जाता है ।

मुक्ति का रहस्य (वि० १६८६, पृ० ११३), ले० *:* लक्ष्मीनारायण मिश्र, प्र० . साहित्य भवन, इलाहाबाद, *पात्र* . पु० ७, स्त्री १, *अक :* ३, *दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल : सड़क किनारे दुमजिला मकान ।

इस समस्या नाटक मे प्रेम का आधुनिक रूप दिखाया गया है ।

इस नाटक मे डिप्टी-कलक्टर उमाशंकर असहयोग आन्दोलन के दिनो मे देश भक्ति से प्रेरित होकर सरकारी पद से त्याग-पत्र दे देता है । फलस्वरूप वह राजद्रोही घोषित होता है और दो वर्ष के लिए कारावास का दण्ड पाता है । बन्दीगृह से मुक्त होने पर आशादेवी नामक एक युवती से उस का सहवास हो जाता है । आशादेवी उमाशंकर पर अनुरक्त होती है । यह लीला देखकर और उमाशंकर को पारिवारिक उत्तरदायित्व के निर्वाह के लिए धन-अर्जन से सर्वथा पराङ्मुख पा, उमाशंकर के चाचा काशीनाथ विक्षुब्ध हो उठते है । आशादेवी के साथ उसका (उमाशंकर) सहवास पारिवारिक मर्यादा के विरुद्ध होने के कारण उन्हे खटकता रहता है । तन-मन-धन से देश-सेवा की ओर प्रवृत्त होने के कारण उमाशकर धन-अर्जन करने मे असमर्थ होता है और चाचा के ऋण से उऋण होने के लिए अपनी पैतृक संपत्ति उन्हे प्रदान कर देता है ।

इधर आशादेवी उमाशंकर को पति बनाने के स्वप्न मे, उसी के एक मित्र, डाक्टर त्रिभुवननाथ से विष लेकर उसकी पत्नी को दे देती है । आशादेवी की इस दुर्बलता से अनुचित लाभ उठाकर डाक्टर उसका कौमार्य भंग करता है । इससे क्षुब्ध होकर आशादेवी अपना प्राणात करने के लिए विष खा लेती है पर डाक्टर के उद्योग से बच जाती है । डाक्टर को अपनी दुर्बलता का बोध होने पर पश्चात्ताप होता है और वह अपने कुकृत्यो के लिए आशादेवी से क्षमा-याचना करता है । आशादेवी का हृदय उसकी ओर आकर्षित होता है । वह उसके साथ विवाह कर दोनो को भावी पतन से बचा लेना चाहती है । इसके लिए वह शर्माजी की अनुमति चाहती है । शर्माजी अपनी स्त्री की मृत्यु और डाक्टर के साथ आशादेवी के अवैध सम्बन्ध का रहस्योद्घाटन होने पर खिन्न होते है और उन्हे सासारिक प्रपचो से इतनी वितृष्णा होती है कि ऐसे जीवन से मृत्यु को अधिक कल्याणकर समझ पिस्तौल से आत्महत्या करना चाहते है । परन्तु आशादेवी के आग्रह और मनोहर के प्रेम के कारण आत्महत्या करने से विरत हो जाते हैं ।

मुक्तिदूत (सन् १६६०, पृ० ८२), ले० उदयशंकर भट्ट, प्र० आत्माराम ऐण्ड सस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, *पात्र* पु० १५, स्त्री ६, *अक* . ३, *दृश्य* ५, ६, ४ ।
घटना-स्थल . राजमहल, मार्ग, जंगल ।

यह नाटक राजकुमार सिद्धार्थ के जीवन पर आधारित है । इसके प्रथम अक से ही उन्हे उदासीन और विरक्त दिखाया जाता है । उन्हे भौतिक सुखो मे ले आने के लिए महाराज शुद्धोदन द्वारा किये गये सारे प्रयास उलटा प्रभाव डालते है । इसी बीच ये मानव मात्र के दुःख-निवारण-हेतु रात

मे पत्नी-पुत्र को सोता छोड जगल की राह लेते है। ज्ञान की खोज मे भटकते-भटकते उन्हे एक दिन बुद्धत्व की सिद्धि हो जाती है। बुद्ध होने पर वे लौटकर आते है और पत्नी को वत्से और माँ शब्दो से सबोधित कर आशीर्वाद देते हे।

मुक्ति देवता ! प्रणाम–'अनुक्षण' मे सकलित सगीत रूपक (सन् १९५८, पृ० ९६), ले० डॉ० प्रभाकर माचवे, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ काशी, *पात्र* पु० ३, स्त्री ३, *अक-दृश्य रहित*।
घटना-स्थल खुला मैदान।

यह नाटक भारत की उन महान् विभूतियो के प्रति गीतात्मक श्रद्धाजलि है, जिन्होने जीवन के विभिन्न क्षेत्रो मे मुक्ति मत्र फूँका है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल के गाधी जी तक होने वाले मुक्ति-प्रयासो का वर्णन वाचक-वाचिका द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

वैदिक काल मे मानव मुक्ति का आकाक्षी था किन्तु शीघ्र ही जन-मानव रूढिग्रस्त होता गया। ऐसे समय मे गौतम, कबीर आदि महात्माओ ने जन-मन को रूढिमुक्त करके सत्य-अहिंसा, दया, सेवा आदि मानवीय गुणो के रूप मे जीवन का स्वस्थ दर्शन प्रदान किया। अन्त मे स्वतन्त्र भारत मे समत्व विधान की कामना के साथ यह सगीतरूपक समाप्त होता है।

मुक्ति यज्ञ (सन् १९६७, पृ० १२०), ले० ओकारनाथ दिनकर, प्र० · प्रगतिशील समाचार समिति, भीलवाडा, राजस्थान; *पात्र* पु० १०, स्त्री ३, *अक* · ३, *दृश्य* : ५, ४, ४।
घटना-स्थल · चित्तौड का राजप्रासाद और शयन-कक्ष।

उस ऐतिहासिक नाटक मे राजपूती पतन एव सिंहासन-लिप्सा का सुन्दर प्रतिपादन हुआ है। चित्तौड के महाराणा लाखा (लक्षसिंह) राणा वश के गौरव के उन्नायक है। वह मडोवर के राव के निर्वासित राजकुमार रणमल को शरण देते है। कालान्तर मे राव मडोवर राजकुमार चण्ड से कुमारी हंसा का सम्बन्ध निश्चित करने के लिए राणा लाखा के पास नारियल भेजता है। राणा ने परिहास मे—"इस श्वेत दाढी वाले के लिए आप नारियल लेकर खेल करने न आए होगे।" कह दिया। परिणामत चण्ड उस नारियल को लाखा को अपने लिए स्वीकार करने का आग्रह कर स्वय आजीवन कौमार्य व्रत का सकल्प कर लेता है। हसा चित्तौड-महारानी होती है। उससे मुकुल नामक पुत्र भी उत्पन्न होता है।

राणा लाखा गया मे म्लेच्छो का दमन करने जाते है। चण्ड अल्पवयस्क मुकुल को उत्तराधिकार समर्पित कर स्वय उसका संरक्षक होता है और शासन-सूत्र का सचालन करता है। राणा लाखा की मृत्यु के बाद रणमल अपनी बहन हसा को अपने प्रभाव मे कर लेता है। षड्यत्र द्वारा वह चण्ड को निर्वासित करके चित्तौड हस्तगत करना चाहता है। दासी-पुत्र वीर सेनानी ओलेर भी सीसोदिया लोगो की घृणा का प्रतिशोध लेने के लिए अपना अलग कुचक्र चलाता है। वह राजकुमार मुकुल का वध कर स्वयं शासक बनता है। रणमल और चण्ड के भाई राघव देव मे विरोध हो जाता है। रणमल साजिश करके राघव देव का वध करा देता है। चित्तौड षड्यत्र, कुचक्र और अराजकता, हिंसा तथा द्रोह का घर बन गया।

महारानी हसा चण्ड को, जिसने मॉडू मे शरण ली थी, राज्य सभालने का निमत्रण देती है। चण्ड अपने त्याग, न्याय, राष्ट्रीयता और स्वामिभक्ति से राष्ट्र की रक्षा का भार उठा लेता है। विलासी रणमल एक रमणी के शील-भग के प्रतिशोध-स्वरूप मारा जाता है।

मुक्ति-यज्ञ (सन् १९३७, पृ० १३७), ले० सत्येन्द्र, प्र० साहित्य रत्न भडार, आगरा; *पात्र* · पु० ८, स्त्री १५, *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल सभा, आश्रम।

इस नाटक का नायक स्वामी प्राणनाथ

है जो भारत मे ऐसे समाज की कल्पना कर रहा है जो जाति और वर्ण मे विभाजित न होगा। वह देश की मुक्ति मानवतावाद मे मानता है। उसका मत है कि ससार मे केवल एक जाति है, वह है मनुष्य जाति, और किसी जाति का बन्धन स्वीकार करके इस ससार के झझटो को बढाना है। स्वामी प्राणनाथ का मत है कि केवल जातीय विश्वास से इस देश की मुक्ति नही हो सकती। वह मानवतावाद का सदेश सब को सुनाता है और इसी को युग का आदर्श मानता है।

मुद्रा राक्षस (सन् १९५०, पृ० १२२), ले०. बलदेव शास्त्री, न्यायतीर्थ, प्र०: एस० चॉद-ऐण्ड कम्पनी, दिल्ली; *पात्र:* पु० २०, स्त्री ३, *अंक* ७; *दृश्य-रहित।*
घटना-स्थल. राजसभा, जगल, घर, फॉसी घर।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। चन्द्रगुप्त नाटक का नायक है। चन्द्रगुप्त पाटलीपुत्र का राजा है। चाणक्य राजनीति का प्रसिद्ध प्रकाड पडित है जो विष्णुगुप्त और कौटिल्य नाम से जाना जाता है। राक्षस एक राज-नीतिज्ञ तथा नद वश का प्रिय भक्त प्रधान मत्री है। उसको चाणक्य अपनी राजनीति से चन्द्रगुप्त का मंत्री बनाना चाहते है। चाण्क्य स्वार्थसिद्ध को मार डालता है। फिर भी राक्षस मलयकेतु को अपने साथ मिलाकर चन्द्रगुप्त के विनाश का प्रयत्न करता है। चाणक्य अपनी नीति से राक्षस के विरुद्ध विप-कन्या के द्वारा अपने मित्र पर्वतेश्वर को मरवा डालने का झूठा प्रचार करता है। वह साथ ही साथ स्वपक्ष और पर-पक्ष दोनो के हितैषियो और द्वेषी जनो को जानने की इच्छा से सिद्धार्थक तथा जीवसिद्ध आदि गुप्तचरो को नियुक्त कर देता है। अत मे चाणक्य अपनी चतुरता से नद वश के विनाश की खबर राक्षस के पास पहुँचाता है। चाणक्य, चन्दन दास को बहुत बार समझाता है लेकिन वह अपने मित्र राक्षस के परिवार का पता चाणक्य को न बताकर स्वय मरने को तैयार हो जाता है। जब चन्दनदास को फॉसी के तख्ते पर ले जाया जाता है तब राक्षस स्वयं प्रकट होकर चन्दनदास को मुक्त करा देता है और अपने साथ मे अस्त्र धारण करता है। अत मे चाणक्य तथा चन्द्रगुप्त भी आकर सारी गुप्त गतिविधियो का ज्ञान राक्षस को कराते है, जिससे चाणक्य, चन्द्रगुप्त और राक्षस की आपस मे मैत्री हो जाती है।

यह नाटक मुद्राराक्षस का अनुवाद नही है। किन्तु उसी की कथावस्तु का अनुसरण कर स्वतन्त्र रूप से लिखा गया है।

मुनिक मतिभ्रम (सन् १९५९, पृ० ४०) ले० : योगानन्द झा, प्र० विद्यापति प्रकाशन, *पात्र* · पु० ६, स्त्री ४, *अक* १, *दृश्य* ३।
घटना-स्थल राजमहल की कोठरी, तपोवन, च्यवन का आश्रम, लतामंडप एवं राजा शर्याति का विश्राम कुटीर।

राजा शर्याति की कन्या सुकन्या तपो-वन की रमणीयता के दर्शनार्थ जाती है। वस्तुत सुकन्या तपोवन की सौन्दर्य-सुषमा से प्रभावित हो जाती है। इस पर उसकी अन्तरगिणी सखी लतिका व्यग्य करती है कि जगल से वापस होने पर कही आप राज कुमारी रहे। एक टीले मे रोशनी आते देखकर सुकन्या उत्सुकतावश उसमे एक साही के कॉंटे को भोकती है। वस्तुत: वह टीला नही है। च्यवन ऋषि तपस्या मे तल्लीन है। उनका शरीर मिट्टी से आवृत है। उस कॉंटे के चुभने से उनकी ऑंख फूट जाती है। इसका प्रभाव महाराज शर्याति और उनकी प्रजा पर अत्यधिक पडता है। शर्याति च्यवन की सेवा मे जंगल मे उपस्थित होते है, किन्तु वे उनकी एक बात भी नही सुनते है। च्यवन के हृदय मे उनकी कोमल षोडपी कन्या सुकन्या के प्रति वासनात्मक भाव का उदय हो जाता है, अतएव वे शादी का प्रस्ताव रखते है। सुकन्या के हृदय मे त्याग की भावना अति प्रबल है। वह माता-पिता एव बन्धु-सखा आदि की इच्छा के विरुद्ध अपने आपको मुनि की सेवा मे सर्मपित कर विश्व के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत करती है।

मुन्नी, धूप और हवा (सन् १९५९, पृ० ४९), ले० श्री नरेश, प्र० . जन-सम्पर्क विभाग, विहार (पटना); पात्र पु० ८, स्त्री २, अक-रहित, दृश्य ४।
घटना-स्थल . साधारण मध्यवित्त परिवार का एक कमरा, सुनील के मकान का वाहरी भाग, लम्वा वरामदा, खपरैल के घर का दृश्य, हरीश का कमरा।

भारत की स्वतन्त्रता के बाद उत्पन्न कुठा, वेकारी और तनावपूर्ण जीवन के बीच सरला और हरीश की टूटती हुई आस्था से नाटक का आरम्भ होता है। जीवन जीने की खोज मे हरीश वार-वार फिसल जाता है, फलस्वरूप उसके भीतर क्रान्ति की कुठा उत्पन्न हो जाती है। हरीश के क्रान्तिमूलक विचारो का आधार ही है विपन्नता। इसलिए अपनी विपन्न स्थिति से ऊवकर हरीश कहता है कि "वेहतर होता कि मै, तुम, मुन्नी कोई पैदा ही न होता।" हरीश का मित्र सुनील गाधीजी की शान्तिमूलक-क्रान्ति का समर्थक है और प्रत्येक समस्या का निदान सरकार पर न छोडकर अपने पौरुष के वल पर अपने समाज का नवनिर्माण करना चाहता है, वह हरीश को अपने कुटीर-उद्योग मे कार्य करने का अवसर देकर उसकी रचनात्मक मेधा को समाजोनुकूल वनाने का प्रयास करता है। इस नई जिन्दगी को पाकर सरला सन्तुष्ट है लेकिन कुठा से पीडित हरीश सुनील के कुटीर-उद्योग मे हडताल करवाने का प्रयत्न करता है। वह अपने प्रयत्न मे असफल होकर शहर लौट जाता है। वहाँ उसे एक फर्म मे अच्छी नौकरी मिल जाती है और उसकी क्रान्तिकारी चेतना मे परिवर्तन आता है।

मूर्ख-मडली (सन् १९१८, पृ० ११०), ले० . रूपनारायण पाडेय, प्र० . दुलारे लाल अध्यक्ष, गगा-पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ; पात्र . पु० १२, स्त्री ८; अक : ३, दृश्य . ५, ५, ४।
घटना-स्थल भगवती प्रसाद का वैठकखाना, राजमहल का वाग, राज-सभा, अंत-पुर, चमेली के सोने का कमरा, राजा की वैठक, रास्ता, रानी के सोने का कमरा, विवाह-मंडप।

यद्यपि इसका आधार द्विजेन्द्रलाल राय कृत एक नाटक है किन्तु नाटककार की अपनी प्रतिभा इसे मौलिक नाटक के आस-पास खड़ा कर देती है।

राजा विजयसिंह की रानी चपा पति से कई कारणो से रुष्ट रहती है। राजा चाहता है कि रानी चम्पा का निधन हो जाये तो वह अपनी पाँचवी शादी कर सके। वह रानी के दूर के नाते की वहन चमेली पर मुग्ध है, पर चमेली उसके पौत्र किशोरसिंह से प्रेम करती है। इधर राजा के मुसाहिव कुजविहारी, वनवारी, मथुरा इत्यादि मूर्खता की वातें करते है। राजा गप्पों से मनोविनोद करता है। एक दिन जैसे ही वह चमेली को अक मे लिपटा कर चुम्वन करने जा रहा था त्योंही चमेली की चिल्लहाट सुनकर रानी चम्पा आ जाती है। राजा उसे छोडकर भागता है। राजा चमेली से व्याह करने पर तुला है पर उसका लडका गोपाल रुष्ट होकर कहता है—मै यह व्याह कभी न करने दूँगा। रानी मरने का वहाना वनाती है। नौकर सूचना देता है कि "रानी मर कर भी सौत का नाम सुनते ही जी उठी। हम लोगो ने वहुत मना किया पर उन्होने सुना नही। तड से जीकर उठ वैठी और चूडिया उडाने लगी।"

तीसरे अक मे राजा विवाह-मडप मे वैठता है। उसका लडका गोपाल वलात् उसे उठाकर कहता है—'इस लडकी से मेरा व्याह होगा।' राजा कहता है कि तेरे लिए कल लडकी ढूँढ दूँगा। आज मेरा व्याह होने दे।

नाटक के अन्त मे डाक्टर भगवती कहता है—'प्रेम एक विचित्र वीमारी है। व्याह होने के दो-तीन साल वाद ही अच्छी हो जाती है।

मूर्खानन्द (सन् १९०५, पृ० ४०), ले० आनन्द प्रसाद ठाकुर; प्र० . ठाकुर प्रसाद ऐण्ड सस, वाराणसी, पात्र : पु० ४, स्त्री २; अक १, दृश्य ५।
घटना-स्थल घर, औपधालय।

मूर्खानन्द नाटक हास्यप्रद नाटक है। इसमे पति-पत्नी के गहरे प्रेम को दर्शाया गया है। पति-पत्नी दोनो प्रेम मे इतना विलीन हो जाते है कि उन्हे अपने जीने-मरने का भी होश नही रहता। मूर्खानन्द वहम से अपनी पत्नी द्वारा बनाये गये भोजन को नही खाते है क्योकि उनको उसमे विष मिला होने का भय हो जाता है। उस भोजन को गणेश खाता है। वह बिल्कुल चैतन्य रहता है और अपनी पत्नी चमेली से खूब प्यार करता है। जब उसे भोजन मे विष होने का पता चल जाता है तो वह शका भूल जाता है और मरने लग जाता है। जब उसकी शका धन्वन्तरि द्वारा दूर कर दी जाती है तो पुन. मूर्खानन्द और गणेश दोनो ठीक हो जाते हैं।

मूर्तिकार (सन् १९४९, पृ० ७५), ले० बलवन्त गार्गी; प्र० : अतरचन्द कपूर ऐण्ड सस, कश्मीरी गेट, दिल्ली; *पात्र* पु० ७, स्त्री ५, *अंक* : ३; *दृश्य* : १, २, २। *घटना-स्थल* : मिस्टर मेहता का वगला और जयदेव मूर्तिकार का स्टूडियो।

नाटक मे पदमुक्त प्रोफेसर की एकमात्र कन्या शान्ति के उन्नीसवे जन्म-महोत्सव पर वैचारिक सघर्ष प्रकट होता है। सुवीरा माता-पिता-विहीन शरणार्थी युवती है। उसके एकमात्र भाई सुन्दर को श्रमिक आन्दोलन मे भाग लेने से अफीम के अवैध व्यापार के दोषारोपण मे बन्दी बना दिया जाता है। उसकी अनुपस्थिति मे सुवीरा प्रोफेसर की कृपा पर उसके साथ रहती है। वह सुन्दरता से शान्ति के जन्मोत्सव पर १९ मोमबत्तियो को सजाती है और शान्ति से प्रशसा प्राप्त करती है। जयदेव वहाँ पर अपनी बुर्जुआ रोमाटिक रँगीनी कला की कुरूपता मे सौन्दर्य की व्याख्या करता है। शान्ता का मामा मिल में मजदूरो की हडताल के कारण पार्टी मे सम्मिलित नही होता है। मिसेज मेहता श्रमिको की निन्दा करती है। सुवीरा जयदेव की कला को सामन्ती-साम्राज्यवादी चिन्तन का प्रतीक समझती है। वह जयदेव द्वारा निर्मित मूर्तियो से प्रमाण भी प्रस्तुत करती है।

जयदेव अपने स्टूडियो मे भूखी-नंगी तड़पती लड़की की छवि अकित करने के लिए रूपा को मॉडल मे उतारने मे व्यस्त है। वह उसे भूखी रख कर सामने एक ही मुद्रा मे बिठाये रखता है। मूर्ति पर उसे पुरस्कार मिलता है किन्तु रूपा भूख की तडपन से मर जाती है।

पुरस्कृत मूर्ति 'भूखी लडकी' पर जयदेव का स्वागत समारोह मि० बला के घर होता है। मध्यवर्गीय मेहता आदि प्रशसा करते है। सुवीरा मूर्ति के माध्यम से मध्यवर्गीय पूंजीपति विचारधारा पर प्रहार करती है और अँग्रेजी राज्य के प्रभावो की भी वखिया उधेडती है। वह कला को अर्थ-लोलुपता की साधना कहकर पार्टी से चली जाती है। उसी समय मृत रूपा की माँ रूपा के लिए दिए गए रूपये को जयदेव को वापस करती हुई कहती है कि 'इस रुपये मे रूपा का रक्त है।' कलाकार मर्माहत होकर पश्चात्ताप करता है और अपनी त्रुटि को स्वीकारता है।

मृत्युञ्जय (सन् १९६६, पृ० ११८), ले० : ओकार नाथ दिनकर, प्र० . साहित्य निकेतन, हाथीमाल, अजमेर ; *पात्र:* पु० १४, स्त्री २ ; *अक* ३ ; *दृश्य-रहित।* *घटना-स्थल* . मेवाड़।

यह ऐतिहासिक नाटक राष्ट्रीयता के उद्देश्य से लिखा गया है। मुगल सम्राट् जहाँगीर महाराणा अमर सिह का अपमान करने के उद्देश्य से सगरसिह को मेवाड का सिहासन सौप देता है। सगरसिह को मेवाड की प्रजा अपना महाराणा नही स्वीकार करती है। सगरसिह आत्मग्लानि की अनुभूति के साथ सिहासन अमरसिह को सौप देता है। जहाँगीर क्रुद्ध होकर सगरसिह को बन्दी बनाकर दरबार मे बुलाता है। इस पर दुर्व्यवहार-त्रसित सगर आत्मघात करके इह लीला समाप्त कर लेता है। जहाँगीर मेवाड़ को पददलित करने का सकल्प करता है।

आनन्दभोगी ऐश्वर्योन्मत्त अमर को राज्य के वीर राजपूत योद्धा आक्रमण का प्रतिरोध करने की प्रेरणा देते है। सैना के

हिरावल पद के लिए चूडावतो और शक्तावत सरदारो मे द्वन्द्व होता है। निर्णय किया जाता है कि जो दल ऊटला दुर्ग को शक्ति द्वारा अधिकृत करेगा वही हिरावल का अधिकारी माना जाएगा । दोनो पक्ष ऊटला-विजय को तत्पर होते है। भयकर प्रतिरोध मे शक्तावत बल्लजी फाटक पर अपना शरीर लगा देते है, जिससे हाथी चोट न खाये और फाटक तोड़-काटकर चूड़ावत सरदार जैतसिह अपना सिर दे । और दुर्ग प्रागण मे फिकवा देता है ताकि हिरावल चूडावतो को ही प्राप्त हो। हिरावल प्राप्त करने के लिए दोनो महान् विभूतियाँ अपना बलिदान कर देती है।

मृत्यु की ओर (सन् १९५०, पृ० १०६), ले० सन्तोष कुमार ; प्र० . सज्जो प्रकाशन, पो० ब० नं० २५६२, देहली , *पात्र*. पु० ८, स्त्री ७, *अंक* ३, *दृश्य* . ३, ३, ५ ।
घटना-स्थल . कँवल का घर, अस्पताल ।

कँवल और नीला सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं परन्तु क्रोध, दुर्भाग्य, शका, अविश्वास आदि कँवल के इस सुखी जीवन मे काँटे बिछाने की कोशिश करते है। दुर्भाग्य के इस आचरण को देखकर बुद्धि और कर्म कँवल की रक्षा करना चाहते है लेकिन दोनो कुछ कर सकने ने सफल नही होते है । क्रोध, दुर्भाग्य, शका आदि दुष्टात्माओ की चाल चल जाती है और वे कँवल के सुखमय जीवन मे विष बोने मे सफल हो जाते है। एक तरफ बुद्धि और कर्म अपनी असफलता पर आँसू बहाते है तो दूसरी तरफ, दुर्भाग्य, क्रोध, शंका, अविश्वासादि अपनी सफलता पर अट्टहास करते हैं।

मृत्यु-सभा (सन् १८९५), ले० : दरियाव सिह , प्र० कल्याण लक्ष्मी वेकेटश्वर प्रेस, बम्बई ; पात्र . पु० ५, स्त्री० १ ; अक : ४; *दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल . यमपुरी, सभा ।

इस नाटक मे शराबियो की सभा होती है और वे बडी रुचि से मद्यपान करते है। इस सभा मे मद्यपान के पक्ष मे नाना प्रकार के तर्क-वितर्क होते है। सांसारिक दुखो से मुक्ति पाने का यह सबसे सुन्दर साधन माना जाता है । मद्यपान के पक्ष मे दूसरा तर्क यह है कि ससार मे जीवन सुख से व्यतीत करने के लिए शरीर का नीरोग होना अत्यावश्यक है और सुरापान शरीर को नीरोग रखने मे बडी सहायता करता है। अत मद्यपान का निषेध करने वाले मूर्ख है और प्रत्येक व्यक्ति को मद्यपान से लाभान्वित होना चाहिए ।

मेघदूत ('कालिदास' मे संग्रहीत, सन् १९५० पृ० ४१), ले० . उदयशंकर भट्ट ; प्र० : आत्माराम ऐण्ड संस, दिल्ली; *पात्र* · पु० २ स्त्री १, *अक-दृश्य-रहित* ।

'मेघदूत' सगीतरूपक कालिदास के मेघदूत मे वर्णित कुबेर-शापित यक्ष के विरह तथा मेघ को दूत बनाकर प्रिया के पास भेजने की प्रख्यात कथा पर आधारित है। उसके अन्तर्गत मूल कथा के विभिन्न मार्मिक स्थलो का कलात्मक चित्रण किया गया है ।

मेघदूत ('पुनरावृति' मे संकलित), (सन् १९५१, पृ० ४०), ले० · हंसकुमार तिवारी; प्र० · ज्ञानपीठ प्रा० लि०, पटना, *पात्र* ; पु० २, स्त्री १।

'मेघदूत' एक संगीत-रूपक है, जिसमे कालिदास के 'मेघदूत' मे वर्णित कथा को ही सक्षिप्त रूप मे प्रस्तुत किया गया है।

मेघदूत (वि० २०२५, पृ० १११), ले० : कमला कान्त वर्मा, प्र० : शिक्षा संवर्धिनी सभा, ग्राम भरोली, बलिया ; *पात्र* : पु० ७, स्त्री ६ ; *अंक* · २ ; *दृश्य* : २, २ ।
घटना-स्थल रामगिरि आश्रम, उज्जयिनी का राजभवन ।

राजकुमारी विद्या पाती है कि इस काव्य की नायिका यक्षिणी का चित्रण कवि की प्रेयसी राज-नर्तकी विद्युत् के ही व्यक्तित्व और मन स्थिति का अधिक वर्णन

करता है। इससे इन्हे थोडा स्त्रियोचित कष्ट अवश्य होता है, किन्तु वे विद्युत् द्वारा ही मेघदूत का प्रस्तुतीकरण कराने की व्यवस्था करती है जिससे स्वय विद्युत् भी सकुचित होती है। सम्राट् कवि की इस काव्य-कृति से क्षुब्ध हो विद्युत् को उज्जयिनी से निष्कासित करने की व्यवस्था करते है, किन्तु राजकुमारी विद्या ऐसी किसी भी व्यवस्था को अस्वीकार करती है।

वर्षा मगलोत्सव के अवसर पर कालिदास को सूचना मिलती है कि राजकुमारी ज्वर-ग्रस्त है और सम्राट् ने उन्हे तुरन्त उज्जयिनी लौटने का आदेश दिया है। वे इस सूचना से चिन्तित भी होते है और कुछ लज्जित भी। उनकी इस मन स्थिति मे उनके अपने ही नाटको की पात्राएँ—मालविका उर्वशी, और शकुन्तला नारी के परकीया रूप के प्रति उनके आकर्षण की भर्त्सना करती है।

उज्जयिनी मे राजकुमारी ज्वर-ग्रस्त है। कवि को राजनर्तकी से प्रेम है अत राजकुमारी का आग्रह है कि उन दोनो का विवाह हो जाना चाहिए। सम्राट् भी इसके लिए तैयार हो गये किन्तु राजनर्तकी स्वय इसके लिए तैयार नही। वह इसे राजकुमारी के प्रति अन्याय समझती है, और उज्जयिनी से गुप्त रूप से भाग निकलना चाहती है। इसी समय कालिदास उससे मिलते है, और उसे भागने से रोककर बताते है कि वे एक नई काव्य-साधना के लिए स्वय कही बहुत दूर चले जाना चाहते है।

कालिदास चले जाते है। राजनर्तकी-विकल हो उठती है, किन्तु राजकुमारी अचल है।

मेघनाद (सन् १९३९, पृष्ठ ९२), ले० आचार्य चतुरसेन शास्त्री, प्र० गौतम साहित्य निकेतन, नई सडक, दिल्ली; *पात्र* पु० १९, स्त्री ६, *अक* . ५, *दृश्य* : ४, ६, ६, ९, ९।
घटना-स्थल : लका का राजमहल, गिरिप्रान्त, युद्धभूमि।

इसमे राम-रावण युद्ध मे चित्रागदा अपने पुत्र वीरवाहन की मृत्यु पर शोकाकुल हो रावण के दरबार मे जाती है। रावण उसे समझा कर स्वयं युद्ध मे प्रस्थान को प्रस्तुत है। मेघनाद उस समय प्रमोद वन मे सुरा और सुन्दरियो के मध्य समाचार पाता है। वह युद्ध के लिए तत्पर होता है। किन्तु रावण उसे निकुम्भला यज्ञ-सपादन के बाद युद्ध मे जाने तथा नेतृत्व करने का आदेश देता है।

देवशक्ति-युक्त राम दुर्बलता के शिकार चित्रित होते है। लक्ष्मी उनकी रक्षा के लिए इन्द्र से अनुरोध करती है और उन्हे शक्ति की उपासना द्वारा रावण-विजय का सुझाव दिया जाता है। राम शक्ति-उपासना करते है। भाई लक्ष्मण के शक्तिबाण से आहत होने पर सीता के उद्धार को कठिन समझते है और दुर्बल हो विलाप करते है। इन्द्र पार्वती के कहने पर दुर्गम हिमकूट पर तपस्यारत शिव की शरण लेते है। शिव महामाया के पास दिव्यास्त्र के लिए भेजते है और लक्ष्मण को स्वप्न मे मेघनाद वध का उपाय दिखाई देता है।

बन्दिनी सीता भी मलीना, क्रान्तिहीना एव अत्यन्त अधीरा दिखाई देती है। लक्ष्मण पूर्व-निर्देश एव विभीषण की सहायता से यज्ञरत मेघनाद का वध करते है। वीरागना सुलोचना दैत्य-बालाओ की सेना के साथ राम की सेना के पास पति के शव के साथ सती होती है।

सती सीता स्वय को राम-लक्ष्मण और सभी आपत्तियो का कारण समझती है। रावण विद्वान्, वीर, विवेकी-न्यायी तथा राम दुर्बल, दैवीशक्ति हीन चित्रित किए गए हैं।

मेघनाद (सन् १९६०, पृ० ९६), ले० . चतुर्भुज एम० ए०, प्र० . साधना मन्दिर, पटना; *पात्र* पु० १३, स्त्री ५; *अक* . ३; *दृश्य* ७, ६ ४।
घटना-स्थल · पर्वत, जगल, राम-सभा, रण-भूमि।

यह एक धार्मिक नाटक है। मेघनाद भगवती की पूजा करके अमर होने का वरदान माँगता है। भगवती प्रसन्न होकर उसे अमर होने का आशीर्वाद तो देती है किन्तु कहती है

कि तुम किसी ऐसे पुरुष से युद्ध मत करना जो बारह वर्षों तक स्त्री का सहवास न किये हो अन्यथा तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी। मेघनाद अपने अपूर्व बल से इन्द्रजित कहलाने लगता है। रावण जब सीता का हरण कर लेता है तब उसमे और राम मे लडाई छिडती है। अपने पिता की ओर से मेघनाद राम से युद्ध करता है और लक्ष्मण को मूर्छित कर देता है। तब सुषेण वैद्य संजीवनी बूटी से लक्ष्मण की चेतना वापस लाते है। चेतना होने पर लक्ष्मण मेघनाद के वध की प्रतिज्ञा करते है और युद्ध मे उसे मार गिराते है। मेघनाद के मरने के बाद उसकी पत्नी सुलोचना विलाप करती है तथा छिपकर अपने पति के हत्या करनेवाले लक्ष्मण को क्रोधाग्नि मे भूनना चाहती है। पर राम के कहने से लक्ष्मण उस सती से अपने अपराध की क्षमा-याचना करते है। साध्वी सुलोचना लक्ष्मण को क्षमा कर अपने पति मेघनाद के शव के साथ सती हो जाती है।

मेघनाद वध (सन् १८९४, पृ० ४०), ले० बालकृष्ण भट्ट, प्र० हिन्दी प्रदीप, नवम्बर-दिसम्बर १८९४ के अक से प्रकाशित, *पात्र* पु० ४, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* : ९।

मेघनाद के लिए चिंतित सुलोचना उसके सम्बन्ध मे विचक्षण से बाते करती है। इसी समय आकस्मिक रूप से उपस्थित होकर मेघनाद सुलोचना के आगे अपनी वीरता का बखान करता है। इधर, अपहृत सीता के लिए राम वानरो और रीछ की सेना के साथ समुद्र पार कर राक्षसो से कठिन युद्ध ठान देते हैं। मेघनाद के रणकौशल तथा असाधारण वीरता से राम के वीर सेनानी निराश हो जाते है। अन्त मे लक्ष्मण द्वारा उसका वध होता है।

मेरी आशा (सन् १९५०, पृ० ११२), ले० शिवरामदास गुप्त, प्र० . उपन्यास बहार आफिस, काशी, बनारस, *पात्र* . पु० ८, स्त्री ५, *अक* ३, *दृश्य* ९, १०, ३।
घटना-स्थल . घर, वेश्यागृह।

यह एक शिक्षाप्रद सामाजिक नाटक है। इसमे भोलानाथ अमीर पिता की सम्पत्ति पा जाने पर स्त्री-प्रेम मे लीन हो जाता है। वह माँ बाप को दर-दर की ठोकरे खिलाता है। अन्त मे माँ पुत्र-विरह मे मर जाती है। उसकी सारी सम्पत्ति नष्ट कर देता है जिससे भोला को माँ-बाप के विरह का एहसास हो जाता है और उसकी आँखे खुल जाती है। गौरीनाथ अपनी वासना-तृप्ति के लिए एक सती नारी गौरी को प्रलोभन देकर उठा लाता है। वह उसका सर्वस्व हरण कर उसे घर से निकाल देता है। वह गौरी को मार डालता है जिसके अपराध मे उसे काला पानी की सजा दी जाती है।

इसमे भोलानाथ की पुत्री सरस्वती तथा मुन्नी वेश्या का चरित्र बडा ही उत्तम है। मुन्नी वेश्या के रूप मे साक्षात् देवी है जो सरस्वती के पति भगवान् को उसकी पत्नी का वास्तविक ज्ञान कराती है तथा अपने सुखो की परवाह न करके सरस्वती के लिए आत्म-समर्पण कर देती है। सरस्वती भी दुःख के समय अपने पति की सहायता करती है जिससे मदान्ध भगवान् को फाँसी की सजा से मुक्ति मिल जाती है।

मेरी पसन्द (सन् १९५८ पृ० ११३), ले० गुरुदत्त, प्र० . भारतीय साहित्य सदन, नई दिल्ली, *पात्र* पु० ६, स्त्री ७, *अक* : ३; *दृश्य* ' ८, ९, ६।
घटना-स्थल गाँव, नगर का घर।

यह एक सामाजिक नाटक है। प्रभाकर मिश्र एक कवि है। वह आधुनिक समाज की लडकी को पसन्द करता है, किन्तु उसकी माँ अपनी पसन्द की बहू घर मे लाना चाहती है। प्रभाकर गाँव की लडकी सुग्गी से बचपन से प्रेम करता है। किन्तु शहर के वातावरण मे आने से उसका विचार आधुनिक तडक-भडक मे अटक जाता है और सुग्गी को उपेक्षित मानता है किन्तु उधर उसकी माँ तथा सखियाँ सुग्गी को आधुनिक बनाने का प्रयास करती है। अन्त मे उसी से प्रभाकर की

शादी होती है किन्तु जब उसे मालूम होता है कि यह वही गाँव की सुग्गी है तो उसे उसके परिवर्तन से आश्चर्य होता है।

मेरे देश की धरती (सन् १९६८, पृ० ७८), ले० विजय कुमार गुप्त ; *प्र०* · भाग्योदय प्रकाशन, मथुरा ; *पात्र* · पु० १३, स्त्री ४ ; *अक* ३ , *दृश्य* : ४, ३, ३ ।
घटना-स्थल सीमा प्रांत का गाँव ।

यह नाटक देश के अन्दर होने वाले षड्-यन्त्रो को स्पष्ट दिखाने का प्रयास करता है। देश का सीमा प्रान्त दुश्मनो से घिरा है किन्तु कुछ पूँजीपति, मुनाफाखोर, जखीरेबाज, गद्दार देश को बेचने मे तनिक भी नही हिचकिचाते। देश मे भारी अन्न-सकट है। अपने देश की धरती यदि ठीक तरह से जोती-बोई जाए तो अन्न-सकट न रहे। इसी प्रकार देश की सुरक्षा आन्तरिक दुश्मनो से सभव नही इन्हे भी दूर करके देश को बलवान बनाना होगा। राष्ट्रीय चेतना और कर्त्तव्य को जगाने वाला यह नाटक वर्तमान परिस्थितियो का सही चित्रण करता है।

मेवाड़ का सूर्य महाराणा प्रताप (सन् १९५१, पृ० ७२), ले० . प्रेम ब्रजवासी, प्र० : गौड़ बुक डिपो हाथरम। *पात्र* पु० ८, स्त्री २, *अंक-दृश्य*-रहित ।
घटना-स्थल जंगल, युद्ध क्षेत्र ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे महाराणा प्रताप के शौर्य और मेवाड की देश-भक्ति का चित्र खीचा गया है। अकबर से सतत युद्ध करते हुए महाराणा प्रताप किसी प्रकार मेवाड के गौरव की रक्षा करते है।

मेहरारुन के दुरदसा (सन् १९४८, पृ० ४८), ले० : राहुल साकृत्यायन, प्र० किताब महल, इलाहाबाद; *पात्र*. पु० २, स्त्री ५, *अक* ४; *दृश्य-रहित*।

भोजपुरी के इस चार अक के नाटक मे स्त्रियो की दुर्दशा का चित्रण है। जसोदरा के भतीजा होने की खुशी मे सोहर, गीत और नाचना-वजाना हो रहा है। लेकिन इससे पहले उसकी तीन भतीजियाँ हुईं तो घर मे शोक, उदासी छा गई थी। लछिमी कहती है कि बेटा-बेटी, आदमी-औरत मे दो आँख से देखा जाता है। पहले लाखो स्त्रियाँ आदमी के मर जाने पर उसके साथ ही चिता मे जला दी जाती थी और पुरुषो ने दुनिया को धोखा देने के लिए उसे 'सती-प्रथा' का सुन्दर और आकर्षक नाम दे रखा था। स्त्रियो को शिक्षा-प्राप्ति का भी अधिकार नही दिया गया। यह सब इसीलिए किया गया कि औरते आदमियो के गुलाम और उनकी वासनाओ के खिलौने बनकर रहे। यदि लडकियो को पढाया भी जाता है तो केवल इसलिए कि पढे-लिखे लडको से शादी हो जाये और दहेज कम देना पडे। जब तक स्त्रियाँ आर्थिक रूप मे स्वावलम्बी नही होगी तब तक वे पुरुषो की चेरी बनी रहेगी।

रामखेलावन आठ आने मे शादी करके औरत ले आता है। रामखेलावन अपनी औरत को गाडी से उतार कर घूंघट से ढँककर एक तरफ खडा करता है और सामान उतारने लगता है कि उसकी औरत को फरगुद्दी उपधिया अपनी औरत समझकर ले जाता है। रामखेलावन रोने-पीटने लगा तो सीता और लछिमी उसकी स्त्री को खोज देती है। फरगुद्दी की औरत धोखे मे किसी और के साथ चली जाती है। फरगुद्दी रोते-पीटते अपनी स्त्री को खोजने चल पडता है। रामकली सालिगराम की पूजा करती है। इस सालिगराम को गुरुजी ने काशीजी से लाकर दिया है। एक दिन लछिमी ने पोथी मे पढ़कर अपनी माँ को वताया कि औरत को सालिगराम की पूजा करने पर छप्पन कल्प कुम्भीपाक नरक मे रहना पड़ता है। ऊधो ने भी पोथी बाँचकर इस वात की पुष्टि की। बच्चे प्रायश्चित्त कराने के लिए अपनी माँ से ठाकुरजी के भोग के लिए १५ रुपया महीना ऐंठ लेते है। ठाकुरजी को सिगरेट की डब्बी मे वन्द कर दिया जाता है और रुपयो की मिठाई खा ली जाती है। सकरपुर को बहुरिया धनराजी कुँअरि को जायदाद मे हक दिलवाने के लिए स्त्रियाँ टाउनहाल मे एक सभा करती है

और एक प्रस्ताव पास करके सरकार से माँग करती है कि ईसाइयो तथा मुसलमानो की तरह हिन्दू स्त्रियो को भी पति और बाप की जायदाद मे से हक मिलना चाहिए। राजकाज चलाने मे जो हक पुरुषो को मिला हुआ है वही हक औरतो को भी मिलना चाहिए।

मैना सुन्दरी नाटक (सन् १९२४, पृ० ५०), ले० । कान्ति प्रसाद बाबूलाल, प्र० जैन नाटक कमेटी, रेवाडी, *पात्र* . पु० १०, स्त्री ६; *अक-रहित*; *दृश्य* : ३६।
घटना-स्थल . राजमहल, उज्जैन नगर, जंगल, दरबार, रणभूमि।

उज्जैन के राजा पुहुपाल की रानी निपुणसुन्दरी और पुत्रियाँ सुरसुन्दरी और माया सुन्दरी है। दोनो कन्याये पडितो, मुनियो और श्रीमती अरजिका से विद्याध्ययन करके घर लौटती है।

चम्पापुर देश का राजा श्रीपाल जब गद्दी पर बैठता है, तो उसके राज्य मे कुष्ठको रोग फैलता है। उसका चाचा श्रीपाल को राज्य से निकाल देता है। मैना सुन्दरी तप के प्रभाव से गंगोदक छिडक कर राज्य से कुष्ठ रोग को दूर कर देती है। मैना सुन्दरी का विवाह अरिदमन के पुत्र से होता है।

कालान्तर मे श्रीपाल समुद्र मे तैरता है। उसकी पत्नी रैन मजूषा भगवान् से प्रार्थना करती है और श्रीपाल मत्र का जाप करते जल से बाहर आ जाते है। एक बार दुष्ट धोखा देकर श्रीपाल को सूली की सजा राजा से दिला देते है किन्तु रैन मजूषा के प्रयास से वास्तविक घटना का पता लगाने से श्रीपाल के प्राण बच जाते है। यह सब चमत्कार मैना सुन्दरी के तप के प्रभाव से होता है। नाटक के अन्त मे मैना सुन्दरी का पिता अपनी भूल स्वीकार करता है। श्रीपाल का चाचा भी क्षमा माँगता है और जैन धर्म का सर्वत्र गुणगान होता है।

नाटक अभिनय रास शैली मे अनेक बार अभिनीत-प्रचार की दृष्टि से लिखा गया है।

मोरध्वज (पौराणिक नाटक) (सन् १९१९, पृ० १०६), ले० : जमुनादास मेहरा; प्र० : रिखबदास वाहिनी, नं० ७४, बडतल्ला स्ट्रीट कलकत्ता, *पात्र* . पु० १०, स्त्री ३; *अक* : ३; *दृश्य* ९, ८, ३।

मोरध्वज का जन्म गो-ब्राह्मणो की रक्षा के लिए होता है जिससे उन दैत्यो व दानवो का नाश हो जो तत्कालीन समाज को प्रताड़ित कर रहे थे। मोरध्वज ईश्वर से परम बलशाली होने का वर प्राप्त करते है और धर्म की स्थापना करते है। वे सबको ईश्वर-भक्ति की प्रेरणा देते है।

मोर्चे पर (सन् १९६३, पृ० ४१), ले० : चतुर्भुज, प्र० : साधना मन्दिर, पटना, *पात्र* : पु० ६, स्त्री १, *अक-रहित*, *दृश्य* : १
घटना-स्थल . पहाडी इलाका।

सन् १९६२ ई० के चीनी आक्रमण पर आधारित ऐतिहासिक तथ्यो को उद्घाटित करने वाला देशभक्तिपूर्ण नाटक।

मोहन मोहिनी (सन् १९२९, पृ० ९२), ले० . लक्ष्मीनारायण चतुर्वेदी ; प्र० : वही; *पात्र* पु० १०, स्त्री ५, *अक* : ३, *दृश्य* : ३, ३, ४।
घटना-स्थल : माधव चन्द्र का बैठकखाना, जयपुर मे नारायण चन्द्र का बैठकखाना।

मालती अपने पति माधव से ७ वर्षीय पुत्र का शीघ्र विवाह करने की चर्चा करती है। माधवचन्द्र कहता है कि बाल-विवाह करने से समाज मे नाना प्रकार की बुराइयाँ फैलती है। किन्तु पत्नी के दबाव डालने पर पुत्र का रिश्ता ठीक करने के लिए वह जयपुर के नारायण चन्द्र के पास पत्र लिखते है। उनकी पत्नी अपने पति के यह समझाने पर कि अशक्त मूर्ख सन्तान तो पृथ्वी पर भार होती है, अधविश्वासो में लिपटे रहने से देश का अहित होता है, वह पति के विचारो से सहमत हो जाती है। किन्तु माधव को नारायण पत्रोत्तर द्वारा विवाह की स्वीकृति भेज देते है। पंडित सुरेन्द्रचन्द्र

उस बालक के विवाह का मुहूर्त वसन्त पंचमी के दिन रख देते है। सगुन-असगुन के बीच विवाह सम्पन्न हो जाता है।

एक दिन नारायण चन्द्र का कोचवान करीम उनकी पुत्री मोहनी को बाहर घुमाने ले जाता है। उसके हठात् बदले तेवर एव दुर्व्यवहार से आतकित मोहिनी उसे जोर से थप्पड लगा देती है। इसी बीच नारायण चन्द्र के मुनीम का लडका हीरालाल भी वही आ जाता है और प्रेम निवेदन करने लगता है। अपने सतीत्व की रक्षा के लिए मोहिनी उससे मीठी-मीठी बाते करती है और फिर मिलने का वचन देकर अँगूठी का आदान-प्रदान करके घर लौट पडती है।

अल्प अवस्था मे विवाह होने के कारण पति मोहन क्षय रोग से ग्रसित हो जाता है। बाध्य होकर मोहिनी को अपने पिता के घर लौटना पडता है। अपनी बदनामी और लोकलज्जा से बचने के लिए अपनी सखियो के सामने मोहिनी विषपान करके चिर निद्रा मे सो जाती है। इधर मोहन भी यातना की पराकाष्ठा पर पहुँच इस संसार से चल बसता है।

मोहिनी (सन् १९६४, पृ० ७१), ले० : परितोष गार्गी; प्र० : आत्माराम ऐण्ड सस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, *पात्र*-पु० ४, स्त्री २; अक : ४, दृश्य-रहित।

घटना-स्थल : बैठक।

मोहिनी ऐसी आधुनिक नारी है जो अपने पति सुरेश और घर के परिवेश से सतुष्ट नही है। सुरेश का मित्र प्रेम प्रायः उनके घर आता है। मोहिनी उसकी तरफ आकर्षित है। सुरेश उस युवक का प्रतीक है जिसका अपना कोई व्यक्तित्व नही और जो प्रत्येक की बात मान लेता है। सुरेश अपने इसी स्वभाव के कारण प्रेम को अपने घर आने से मना कर देता है, क्योकि उसका एक अन्य मित्र त्रिलोक प्रेम के विरुद्ध कुछ बाते कहता है। त्रिलोक व्यावहारिक और चालबाज व्यक्ति है। वह सुरेश के घर आकर रहने लगता है और मोहिनी को अपनी ओर आकर्षित करना चाहता है। वह उसे प्रत्येक बात पर सुझाव देता है। मोहिनी उसकी कोई बात पसद नही करती परन्तु सुरेश उसकी प्रत्येक बात का समर्थन करता है। धीरे-धीरे मोहिनी त्रिलोक के साथ आत्मीयता बढा लेती है, जिसे अब सुरेश सहन नही कर पाता। वह प्रेम के कहने पर त्रिलोक का अपमान कर उसे घर से निकाल देती है। वह मोहिनी पर भी आरोप लगाता है कि तुम त्रिलोक से प्रेम करती हो। अत मे मोहिनी सुरेश को छोडकर चली जाती है और सुरेश की पागल बहन, भाई पर व्यंग्य कसती है।

य

यक्ष की नगरी-प्रत्यक्ष की नगरी (सन् १९५२, पृ० ९४), ले० : भागवत प्रसाद ; प्र० . सकल्प सस्थान, राउरकेला ३; *पात्र* : पु० ५, स्त्री २, अक ४।
घटना-स्थल : झोपडी, कब्रिस्तान, खुला आकाश।

इस नाटक मे मानव की लालची प्रवृत्तियो तथा शकाओ का सघर्ष दिखाया गया है।

आदिवासी किसान चरुवा फाल्गुन पूर्णिमा को आसमान से किसी प्रेतात्मा के अवतरण की विचित्र-सी ध्वनि सुनकर चकित हो जाता है। और वह प्रेतात्मा पास की कब्र पर अवतरित होता है। दोनो मे वार्तालाप होता है। प्रेतात्मा अपने कफन को हटाकर लोप हो जाता है। चरुवा कुछ बीमार-सा हो जाता है। सहसा दाहिनी

ओर की कब्रगाह से एक छाया आकृति उभर कर चरुवा के पास आती है। चरुवा आकृति को पहचान कर कहता है "चाचा डेविड नमस्ते।"

ययाति (सन् १९५१, पृ० १२८), ले० गोविन्द वल्लभ पंत; प्र० साहित्य सदन, देहरादून, *पात्र* पु० ७, स्त्री ४; *अक* . ४, *दृश्य*-रहित।
घटना-स्थल . राजभवन, तपोभूमि, पहाडी मैदान, वनस्थल।

इस पौराणिक नाटक मे राजा ययाति की काम-लोलुपता और कुरु का सच्चा त्याग दिखाया गया है।

ययाति राजा के देवयानी और शर्मिष्ठा नामक दो रानिया हैं। शर्मिष्ठा दासी-कर्म करती है। उसके दोनो पुत्र उससे अपने पिता का नाम पूछते है। शर्मिष्ठा इसे सुन कर वेहोश हो जाती है। तभी ययाति आकर सारी घटना बता देते है। इधर देवयानी भी राजा पर व्यग्य कसती है। राजा अपने पुत्रो से एक वर्ष के लिए उनका यौवन दान-स्वरूप मागना है। सभी पुत्रो मे केवल पुरु ही पिता को यौवन-दान करने को सहर्ष तैयार हो जाता है। ययाति यौवन-लीला के लिए एक रम्य वन मे जाकर कामदेव की मूर्ति के समक्ष तपस्या करते है। एक किसान-कन्या मालती राजा को पुरु समझ कर उस पर आसक्त होती है। वही अनेक अप्सराए भी आती है। राजा उस अप्सरा से विवाह का प्रस्ताव करते है। तव तक एक वर्ष पूरा हो जाता है। राजा के पुत्र आकर उससे राज्य मागते है। अप्सरा स्वर्ग चली जाती है। राजा पुरु को राज्य देते है लेकिन त्यागी पुरु अपने वडे भाई को राज्य देकर किसान का जीवन व्यतीत करता है।

यशस्वी भोज (सन् १९५५, पृ० ११२), ले० देवराज दिनेश, *पात्र* पु० १७, स्त्री ५; *अक* ३, *दृश्य* . ५, ३, ४।
घटना-स्थल . हरिहर दास का गाँव, विंध्य का पहाडी प्रदेश, धारानगरी, अत पुर का एक कक्ष।

इस नाटक मे राजा भोज की न्याय-प्रियता, प्रजावत्सलता तथा उनकी क्रिया-शीलता चित्रित की गई है। महाराज भोज प० हरिहर दास के गाँव मे जाकर श्रेष्ठि-पुत्र के वेश मे उनका आतिथ्य स्वीकार करते है। वे गुप्त रूप से वहाँ के निवासियो के दुख-सुख का निरीक्षण करते है। डाकुओ से जनता की रक्षा कर उन्हे हर तरह की सहायता दिलाने का आश्वासन देते हैं। प० हरिहर दास की नि स्वार्थ सेवा पर प्रसन्न होकर उनके द्वारा खोली गई पाठशाला की उन्नति के लिए आर्थिक सहायता करते हैं। धारानगरी आकर सर्वप्रथम प० हरिहर दास की गुणवती कन्या ज्योत्स्ना से शादी करते है। इसके वाद प्रजा की सेवा करते हुए सुखमय जीवन विताते हैं। राजा भोज अपने जीवन-काल मे कवियो और विद्वानो को भी वहुत आदर देते है।

यहूदी की लडकी (सन् १९१३, पृ० १०२), ले० मुहम्मद हश्र कश्मीरी, प्र० उपन्यास वहार आफिस, बनारस, *पात्र* पु० ९, स्त्री ६, *अक* ३, *दृश्य* ८, ७, ४।
घटना-स्थल अग्नि प्रज्वलितघर सीजर का महल, कचहरी।

नाटक का मुख्य उद्देश्य साम्प्रदायिक वैमनस्य एवं भेदभाव को दूर करना है। रोमन वादशाह यहूदी जाति के साथ अत्याचार-पूर्ण व्यवहार करता है। इजरा नामक यहूदी रोमन पादरी ब्रूटस की लडकी एक्टेविया की अग्नि से रक्षा करता है। वह उसका पालन-पोषण करता है। वडी होने पर उसका प्रेम सीजर से हो जाता है। इजरा सीजर को यहूदी धर्म ग्रहण करने को वाध्य करता है, पर वह अस्वीकार करता है। एक्टेविया यहूदी धर्म अस्वीकार कर सीजर से अपना विवाह तय कर लेती है। इजरा वादशाह से न्याय की माग करता है। परन्तु एक्टेविया की प्रार्थना पर सीजर के विरुद्ध लगाये गये आरोप वापस ले लिये जाते हैं, तथा इजरा को फासी की सजा मिलती है। अत मे रहस्योद्-घाटन होने पर ब्रूटस को अपनी पुत्री मिलती है। तथा हन्ना सीजर से एक्टेविया का विवाह

उस बालक के विवाह का मुहूर्त वसन्त पचमी के दिन रख देते है। सगुन-असगुन के बीच विवाह सम्पन्न हो जाता है।

एक दिन नारायण चन्द्र का कोचवान करीम उनकी पुत्री मोहनी को बाहर घुमाने ले जाता है। उसके हठात् बदले तेवर एव दुर्व्यवहार से आतकित मोहिनी उसे जोर से थप्पड लगा देती है। इसी बीच नारायण चन्द्र के मुनीम का लडका हीरालाल भी वही आ जाता है और प्रेम निवेदन करने लगता है। अपने सतीत्व की रक्षा के लिए मोहिनी उससे मीठी-मीठी बाते करती है और फिर मिलने का वचन देकर अँगूठी का आदान-प्रदान करके घर लौट पडती है।

अल्प अवस्था मे विवाह होने के कारण पति मोहन क्षय रोग से ग्रसित हो जाता है। बाध्य होकर मोहिनी को अपने पिता के घर लौटना पडता है। अपनी बदनामी और लोकलज्जा से बचने के लिए अपनी सखियो के सामने मोहिनी विपपान करके चिर निद्रा मे सो जाती है। इधर मोहन भी यातना की पराकाष्ठा पर पहुँच इस संसार से चल बसता है।

मोहिनी (सन् १९६४, पृ० ७१), ले० : परितोप गार्गी; प्र० : आत्माराम ऐण्ड सस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पात्र. पु० ४, स्त्री २; अक : ४; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : बैठक।

मोहिनी ऐसी आधुनिक नारी है जो अपने पति सुरेश और घर के परिवेश से सतुष्ट नही है। सुरेश का मित्र प्रेम प्रायः उनके घर आता है। मोहिनी उसकी तरफ आकर्षित है। सुरेश उस युवक का प्रतीक है जिसका अपना कोई व्यक्तित्व नही और जो प्रत्येक की बात मान लेता है। सुरेश अपने इसी स्वभाव के कारण प्रेम को अपने घर आने से मना कर देता है, क्योकि उसका एक अन्य मित्र त्रिलोक प्रेम के विरुद्ध कुछ बाते कहता है। त्रिलोक व्यावहारिक और चालबाज व्यक्ति है। वह सुरेश के घर आकर रहने लगता है और मोहिनी को अपनी ओर आकर्षित करना चाहता है। वह उसे प्रत्येक बात पर सुझाव देता है। मोहिनी उसकी कोई बात पसद नही करती परन्तु सुरेश उसकी प्रत्येक बात का समर्थन करता है। धीरे-धीरे मोहिनी त्रिलोक के साथ आत्मीयता बढा लेती है, जिसे अब सुरेश सहन नही कर पाता। वह प्रेम के कहने पर त्रिलोक का अपमान कर उसे घर से निकाल देती है। वह मोहिनी पर भी आरोप लगाता है कि तुम त्रिलोक से प्रेम करती हो। अत में मोहिनी सुरेश को छोडकर चली जाती है और सुरेश की पागल बहन, भाई पर व्यंग्य कसती है।

य

यक्ष की नगरी-प्रत्यक्ष की नगरी (सन् १९५२, पृ० ६४), ले० भागवत प्रसाद ; प्र० सकल्प सस्थान, राउरकेला ३, पात्र : पु० ५, स्त्री २, अक . ४।
घटना-स्थल : झोपडी, कब्रिस्तान, खुला आकाश।

इस नाटक मे मानव की लालची प्रवृत्तियो तथा शकाओ का सघर्ष दिखाया गया है।

आदिवासी किसान चरुवा फाल्गुन पूर्णिमा को आसमान से किसी प्रेतात्मा के अवतरण की विचित्र-सी ध्वनि सुनकर चकित हो जाता है। और वह प्रेतात्मा पास की कब्र पर अवतरित होता है। दोनो में वार्तालाप होता है। प्रेतात्मा अपने कफन को हटाकर लोप हो जाता है। चरुवा कुछ बीमार-सा हो जाता है। सहसा दाहिनी

ओर की कब्रगाह से एक छाया आकृति उभर कर चरुवा के पास आती है। चरुवा आकृति को पहचान कर कहता है "चाचा डेविड नमस्ते।"

ययाति (सन् १६५१, पृ० १२८), ले० गोविन्द वल्लभ पंत, प्र० साहित्य सदन, देहरादून; पात्र : पु० ७, स्त्री ४; अंक ४, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : राजभवन, तपोभूमि, पहाड़ी मैदान, वनस्थल।

इस पौराणिक नाटक मे राजा ययाति की काम-लोलुपता और कुरु का सच्चा त्याग दिखाया गया है।

ययाति राजा के देवयानी और शर्मिष्ठा नामक दो रानियां हैं। शर्मिष्ठा दासी-कर्म करती है। उसके दोनो पुत्र उससे अपने पिता का नाम पूछते है। शर्मिष्ठा इसे सुन कर बेहोश हो जाती है। तभी ययाति आकर सारी घटना बता देते हैं। इधर देवयानी भी राजा पर व्यग्य कसती है। राजा अपने पुत्रो से एक वर्ष के लिए उनका यौवन दान-स्वरूप मागता है। सभी पुत्रो मे केवल पुरु ही पिता को यौवन-दान करने को सहर्ष तैयार हो जाता है। ययाति यौवन-लीला के लिए एक रम्य वन मे जाकर कामदेव की मूर्ति के समक्ष तपस्या करते है। एक किसान-कन्या मालती राजा को पुरु समझ कर उस पर आसक्त होती है। वही अनेक अप्सराएं भी आती हैं। राजा उस अप्सरा से विवाह का प्रस्ताव करते हैं। तब तक एक वर्ष पूरा हो जाता है। राजा के पुत्र आकर उससे राज्य मागते है। अप्सरा स्वर्ग चली जाती है। राजा पुरु को राज्य देते है लेकिन त्यागी पुरु अपने बड़े भाई को राज्य देकर किसान का जीवन व्यतीत करता है।

यशस्वी भोज (सन् १६५५, पृ० ११२), ले० : देवराज दिनेश; पात्र पु० १७, स्त्री ५; अंक ३; दृश्य : ५, ३, ४।
घटना-स्थल : हरिहर दास का गाँव, विंध्य का पहाडी प्रदेश, धारानगरी, अंत:पुर का एक कक्ष।

इस नाटक मे राजा भोज की न्याय-प्रियता, प्रजावत्सलता तथा उनकी क्रिया-शीलता चित्रित की गई है। महाराज भोज पं० हरिहर दास के गाँव मे जाकर श्रेष्ठि-पुत्र के वेश मे उनका आतिथ्य स्वीकार करते हैं। वे गुप्त रूप से वहाँ के निवासियो के दुख-सुख का निरीक्षण करते है। डाकुओ से जनता की रक्षा कर उन्हे हर तरह की सहायता दिलाने का आश्वासन देते है। पं० हरिहर दास की नि:स्वार्थ सेवा पर प्रसन्न होकर उनके द्वारा खोली गई पाठशाला की उन्नति के लिए आर्थिक सहायता करते हैं। धारानगरी आकर सर्वप्रथम पं० हरिहर दास की गुणवती कन्या ज्योत्स्ना से शादी करते है। इसके बाद प्रजा की सेवा करते हुए सुखमय जीवन बिताते हैं। राजा भोज अपने जीवन-काल मे कवियो और विद्वानो को भी बहुत आदर देते है।

यहूदी की लड़की (सन् १६१३, पृ० १०२), ले० : मुहम्मद हश्र कश्मीरी, प्र० उपन्यास बहार आफिस, बनारस, पात्र पु० ६, स्त्री ६, अंक : ३, दृश्य : ८, ७, ४।
घटना-स्थल : अग्नि प्रज्वलितधर सीजर का महल, कचहरी।

नाटक का मुख्य उद्देश्य साम्प्रदायिक वैमनस्य एवं भेदभाव को दूर करना है। रोमन बादशाह यहूदी जाति के साथ अत्याचार-पूर्ण व्यवहार करता है। इजरा नामक यहूदी रोमन पादरी ब्रूटस की लडकी एक्टेविया की अग्नि से रक्षा करता है। वह उसका पालन-पोषण करता है। बडी होने पर उसका प्रेम सीजर से हो जाता है। इजरा सीजर को यहूदी धर्म ग्रहण करने को बाध्य करता है, पर वह अस्वीकार करता है। एक्टेविया यहूदी धर्म अस्वीकार कर सीजर से अपना विवाह तय कर लेती है। इजरा बादशाह से न्याय की मांग करता है। परन्तु एक्टेविया की प्रार्थना पर सीजर के विरुद्ध लगाये गये आरोप वापस ले लिये जाते हैं, तथा इजरा को फांसी की सजा मिलती है। अंत मे रहस्योद्-घाटन होने पर ब्रूटस को अपनी पुत्री मिलती है। तथा हन्ना सीजर से एक्टेविया का

करा देती है।

अभिनय सन् १९१३ मे लाहौर मे शेक्सपियर थियेट्रिकल कम्पनी द्वारा।

यहूदी की लड़की (सन् १९५६, पृ० ९६), ले० : टीकमसिह शर्मा, प्र० : अग्रवाल बुक डिपो, थोक पुस्तकालय, खारी बावली, दिल्ली; पात्र : पु० ९, स्त्री ६; अक ' ३ ।
घटना-स्थल : आग मे जलता घर, सीजर का महल, कचहरी।

इस नाटक मे रोमन और यहूदियो की पारस्परिक घृणा और साम्प्रदायिक कटुता का वर्णन है। इसका विषय आगा हश्र कश्मीरी के अनुसार ही है। केवल पात्रो मे इजरा को अजरा और शाहजादा सीजर को मारकिस कर दिया है। एक्टेविया को डासिया और हन्ना को राहिल नाम दे दिया गया है। कंशेस, घसीटा, मसीटा आदि कुछ पात्र बढा दिये गये है।

इसका आरम्भ यहूदियो पर रोमन के अत्याचारो से होता है। रोमन बादशाह आदेश करता है कि "नौरोज का दिन है ऐश मुसर्रत का हुकम है और गम व फिकर की कदगन है।" इसका यहूदी विरोध करते है और उनके कारण ही वे धार्मिक असहिष्णुता का शिकार होते है।

युग बदल रहा है (सन् १९६२, पृ० ४४), ले० : सीताराम चतुर्वेदी ; प्र० . टाउन डिग्री कॉलेज, बलिया, *पात्र :* पु० ९, स्त्री १, *अक* ३; *दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल ' भवन का बाहरी प्रकोष्ठ, शतरंज का खेल।

इस सामाजिक नाटक मे आधुनिक युवको के पतन का कारण दिखाया गया है। आजकल के युवक बड़ो का अपमान करते है और उनकी उपेक्षा करके अनेक कष्टो का सामना करते है। अन्त मे बडो के आदेश और सहयोग से ही उनका उद्धार होता है। इसका अभिनय सन् १९६१ मे टाउन डिग्री कालेज, बलिया द्वारा हो चुका है। यह एक पर्दे पर मे ही पूरा खेला जाता है।

युगल विहार नाटक (सन् १८९६, पृ० २३९), ले० : कृष्णदत्त द्विज; प्र० हिन्दी प्रभा प्रेस, लखीमपुर (अवध); *पात्र .* पु० १, स्त्री ९; *अक-दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल : वृन्दावन, कुज, यमुना तट।

यह राधा-कृष्ण की प्रेम कथा पर आधारित पद्यात्मक नाटक है। इसके प्रत्येक सवाद विभिन्न पदो मे है। छप्पय, दोहा, चौपाई, सोरठा, पद, शेर, श्लोक, गजल आदि छन्दो का इसमे प्रयोग किया गया है।

युग सन्धि : रंगमहल मे सग्रहीत (सन् १९६९,), ले० : विनय; प्र० सजीव प्रकाशन, मेरठ; *पात्र* पु० ७, स्त्री १; *अक . रहित; दृश्य* ४।
घटना-स्थल : पर्वत प्रदेश।

युग परिवर्तन की सन्धि बेला मे प्राचीन तथा आधुनिक आदर्शों के संघर्ष को स्वर प्रदान किया गया है। युग परिवर्तन के साथ-साथ युग की मान्यताएँ, मूल्य तथा आदर्श भी परिवर्तित होते रहते है। अतः प्राचीन रूढियो का पूर्णतः त्याग तथा नवीन आदर्शो का पूर्णरूपेण ग्रहण असम्भव है। यही सघर्ष युग की आत्मा को विक्षुब्ध कर रहा है। लेखक ने इस संघर्ष का परिहार प्राचीन आदर्श तथा सामाजिक यथार्थ के समन्वित मार्ग द्वारा किया है।

युगे-युगे क्रान्ति (सन् १९६९, पृ० ८८), ले० : विष्णु प्रभाकर, प्र० . राजपाल ऐण्ड सन्स, दिल्ली, *पात्र :* पु० ८, स्त्री ६ ; *अक-दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल प्रतीकात्मक मंच पर एक घर।

यह सामाजिक नाटक विवाह के क्षेत्र मे हुए परिवर्तित मूल्यो और वैवाहिक सम्बन्धों को प्रदर्शित करता है। इसमे क्रान्ति का सकेत विविध वैवाहिक सम्बन्धो के द्वारा वर्णन किया गया है। एक पुरुष अपनी पत्नी के मुख पर से परदा उठा कर देख लेता है, जिसके कारण उसे अपने पिता से पिटना पडता है। कल्याणसिंह का पुत्र प्यारेलाल विधवा से विवाह करके

इस क्रान्ति की गति को आगे बढाता है। परन्तु उसे भी घर की छत्रछाया से हाथ धोना पडता है। कथा मे प्यारेलाल की पुत्री शारदा राष्ट्रीय आन्दोलन मे भाग लेकर स्वय अपनी इच्छा से विवाह कर लेती है। यह भी उस युग की क्रान्ति है। शारदा का पुत्र प्रदीप एक ईसाई युवती से विवाह कर लेता है। प्रदीप के पुत्र और पुत्री विवाह मे विश्वास नही करते। वे मुक्त सम्बन्धो को ही अच्छा मानते है।

अभिनय रेडियो से अनेक बार प्रसारित।

युद्धकाण्ड (सन् १८८७, पृ० १५२), ले०: दामोदर शास्त्री, प्र० बाबू साहिब प्रसाद सिंह, खगविलास प्रेस, बाकीपुर मे मुद्रित, *पात्र* पु० १५, स्त्री ६, इसमे अंक की जगह स्थान सूचक सकेत है।
घटना-स्थल · सेतु, लका में युद्धक्षेत्र।

इस पौराणिक नाटक की कथा रामचरितमानस पर आधारित है। इसका दूसरा नाम लकाकाण्ड भी है। राम की वानरी सेना समुद्र पर सेतु बाँधकर लका पहुँचती है। सीता को दुष्ट रावण से मुक्त कराने के लिए राम और रावण मे भयकर युद्ध होता है। इन्ही सब प्रसगो का इसमे वर्णन है।

यौवन योगिनी (सन् १८६० के आस-पास) ले० · गोपाल राम 'गहमरी'; प्र० · स्वयं लेखक, *पात्र:* पु० ४, स्त्री १; *अक-दृश्य-रहित*।

इस ऐतिहासिक नाटक मे प्रेमिका का सच्चा प्रेम प्रणय चित्रित किया गया है।

इस नाटक की नायिका पृथ्वीराज की प्रेमिका माया है। एक बौद्ध भिक्षु माया को धोखा देकर मोहम्मद गोरी के शिविर मे पहुँचा देता है। गोरी उस बौद्ध भिक्षु का वध करता है और माया भी आत्म-हत्या के द्वारा प्राण विसर्जन कर देती है। इस तरह से नाटक दु खान्त होता है।

र

रगीली दुनिया (वि० १९८१, पृ० ९८), ले० ईश्वरी प्रसाद शर्मा; प्र० राम लाल वर्मा, वर्म्मन प्रेस कलकत्ता, *पात्र* पु० १४, स्त्री ७, *अक* ३, *दृश्य:* १०, ६, ६।
घटना-स्थल: छबील का कमरा, दीवान जगजीवन का मकान, भुवन चौधरी का कमरा, राजमार्ग।

इस नाटक मे राज्य के उच्चाधिकारियो द्वारा जनता पर किया गया अत्याचार चित्रित है। नाटककार शासन-व्यवस्था पर एक तीखा व्यग्य करता है तथा रगीले शासको द्वारा जनता पर हुए अत्यांचारो का प्रदर्शन कर सामाजिक की जनता के प्रति सहानुभूति को उभारता है।

रक्तदान (सन् १९६२, पृ० २०७), ले० हरिकृष्ण प्रेमी; प्र० राजपाल ऐण्ड सन्स-दिल्ली; *पात्र* पु० १०, स्त्री १; *अक:* ३, *दृश्य* ३, ३, ५।
घटना-स्थल · अग्रेजो का महल, मुगलो का राजदरबार।

इस ऐतिहासिक नाटक मे नारी की खोयी हुई दुर्बलताओ और भीरुता का रूप चित्रित है। नाटक की नायिका जीतमहल अपने षड्यन्त्र से बहादुरशाह जफर को शराब पिलाकर सुध-बुध-रहित रखती है। वह अग्रेजो के पक्ष मे मिल जाती है जिसके विरोध मे उसका पुत्र जवाबख्त कहता है—"वे भी माताएँ होती हैं, जो अपने पुत्रो को शस्त्रो से सजाकर देश और धर्म पर प्राण देने के लिए

इस ऐतिहासिक नाटक मे मित्र का सच्चा त्याग तथा प्रेमी-प्रेमिका का अटूट प्रेम चित्रित किया गया है।

पाटन का निर्वासित राजकुमार रणधीर अपने मुसाहबो के साथ सूरत आकर राज महल के निकट ठहरता है जहाँ सूरत के राजकुमार रिपुदमन की प्राण-रक्षा करने से उससे उसकी मित्रता हो जाती है। इसी बीच सूरत की राजकुमारी प्रेम मोहिनी रणवीर की प्रशसा सुनकर उसकी ओर आकृष्ट होती है। सूरत-नरेश उसे साधारण परदेशी समझकर उसकी उपेक्षा करता है। वह प्रेममोहिनी के स्वयवर मे रणधीर को नही बुलाता, फिर भी, रणधीर वहाँ बिना बुलाये ही पहुँचकर अपने व्यवहार से राजा को रुष्टकर देता है। लेकिन उसके शौर्य को देख प्रेममोहिनी का प्रेम उसके प्रति द्विगुणित हो जाता है। उसी समय वह प्रेममोहिनी की अँगूठी भी प्राप्त करता है। दूसरे दिन पुनः स्वयवर आयोजित होता है। रणधीर पुनः पहुँचत है और सरोजिनी वेश्या को मोतियो का हार पुरस्कार स्वरूप देकर सूरतपति के मन मे अपने चरित्र के प्रति सन्देह उत्पन्न कर देता है। रणधीर के चले जाने के बाद सूरतपति के भडकाने से स्वयवर मे आये राजकुमार जाकर उसे घेर लेते है। घनघोर लडाई मे अनेक लोग मारे जाते है और रणधीर घायल होकर राजमहल के निकट प्रेममोहिनी की उपस्थिति मे प्राण त्याग देता है। मित्र की सहायता के लिए लडाई मे कूदने से रिपुदमन भी गम्भीर रूप से घायल होकर मरता है। प्रेममोहिनी रणधीर के शव पर विलाप करती हुई प्राणान्त करती है। दुखी रिपुदमन भी रणधीर की मृत्यु का समाचार पाकर विचलित होता है। इधर पत्र भेजकर पाटनपति बुलाये जाते है। रणधीर को राजकुमार जानकर सूरतपति भी विलाप करता है।

रणबाँकुरा चौहान (सन् १९२५, पृ० १८६), ले० मनसुखलाल सोजतिया ; प्र० एम० एम०सोजातिय एण्ड कम्पनी, वडा सर्राफ, इन्दौर, पात्र · पु० १७, स्त्री ? ; अक : ३ ; दृश्य : ६, ८, ६।

घटना-स्थल : महाराज पृथ्वीराज का महल, दिल्ली नगर का राजमंडप, कन्नौज शहर मे गगा के किनारे वाटिका।

यह ऐतिहासिक नाटक पृथ्वीराज के वीरतापूर्ण कार्यो पर आधारित है। इसमे वीररस, प्रेमरस, हास्यरस व करुणारस का सफल समन्वय है। इसके छठवे दृश्य मे पृथ्वीराज, मीरसाहब और उज्जक्कार्पीर को मारकर मीरसाहब के मामा ख्वाजा साहब की राय से अजमेर का राज्य छोड देते है। साथ ही देहली मे अपने नाना अनगपाल का राज्य प्राप्त करते है। वीर चामुण्डा राय और कैमास की अपूर्व स्वामिभक्ति भी दिखलाई गई है।

पृथ्वीराज सयोगिता का हरण करते है। वीर केसरी सेनापति महाराज जयचन्द के आक्रमण से पृथ्वीराज को बचाता है। मुहम्मद गोरी पृथ्वीराज को बदी बनाता है। उनकी आखे निकाल ली जाती है। अन्त मे पृथ्वीराज अपने कुशल कवि चन्द की सहायता से गोरी को शब्दवेधी बाण मारते है। रणबाँकुरा चौहान के वीररस पूर्ण कृत्यो और शौर्य का वर्णन करते हुए मद्यपो की दुर्दशा पर प्रकाश डाल गया है।

रत्नावली (सन् १९६६, पृ० ६६), ले० : विश्वनाथ शुक्ल, प्र० सरस्वती निकेतन, छत्री चौक, उज्जैन, *पात्र* पु० ८, स्त्री ४ ; अक ३ ; *दृश्य* ५, ४, ४।

इस नाटक मे सत तुलसीदास की कथा नाट्य रूप मे प्रस्तुत की गई है।

राजापुर निवासी मालाराम दूबे, अभुक्त मूल मे जन्मे बेटे को त्याग देते है। उनकी पत्नी हुलसी पुत्र-शोक मे स्वर्गवासी हो जाती है। दुर्भाग्य से दाई भी मर जाती है और बालक रामबोला भिखारी का जीवन व्यतीत करने लगता है। बाबा नरहरिदास रामबोला को सम्पूर्ण शिक्षा-दीक्षा देते है। शिक्षा समाप्ति पर रामबोला गुरु की आज्ञा से भ्रमण करने निकल जाता है। मार्ग मे उसका परिचय रहीम से होता है और वे

दोनो घनिष्ठ मित्र बन जाते है ।

रामवोला सुदर्शन के साथ उसके ससुराल महोवा जाते है वहाँ सीता जी के मन्दिर मे श्रीधर पाठक की पुत्री रत्नावली से उनका प्रेम हो जाता है। रामवोला रत्नावली को व्याह कर गाँव लौटते है । वे हमेशा रत्नावली के प्रेम सौन्दर्य मे ही डूबे रहते है। एक दिन रत्नावली उनको विना वताये ही पीहर चली जाती है। राम बोला यह वियोग सहन न कर सकने के कारण चोरी से रत्नावली के कमरे में पहुँच जाते है। इस अवसर पर रत्नावली उन्हे अस्थिचर्ममय देह से प्रीति हटाकर मात्र राम मे प्रीति करने की सलाह देती है। रामवोला की दार्शनिक कवि आत्मा यह प्रेरणा पाकर पूर्णरूप से जाग उठती है। वह उसी समय घनघोर रात्रि मे पत्नी, गृहादि का मोह त्यागकर राम की खोज मे निकल पडते है ।

रामवोला अव काशी पहुँचकर सत तुलसीदास वन जाते है। वे वहाँ पर जनभाषा मे महान् ग्रथ रामचरितमानस की रचना करते है। रत्नावली वियोगिनी की तरह जीवन व्यतीत करती है। एक दिन सुदर्शन मानस की एक हस्तलिखित प्रति लाकर रत्नावली को देते है। वह उस पुस्तक को छाती से चिपकाकर निहाल होकर गिर पडती है ।

रसीला जोगी उर्फ जोग शक्ति (सन् १९२४, पृ० ५०), ले० मुहम्मद इब्राहीम 'महशर', प्र० जे० एस० सन्तसिंह ऐण्ड सस, लाहौर, पात्र पु० ६, स्त्री ३, अक के स्थान पर अवाव और सीन ।
घटना-स्थल महल, जगल, मार्ग ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे दैवी शक्तियो का प्रभाव दिखाया गया है ।

राजा सलामत सिह की रुग्णावस्था देखकर लालसिह राजा की पुत्री महलावती और राज्य दोनो पर अधिकार करना चाहता है। वह अपनी अभिलाषा-पूर्ति के लिए राजवैद्य की मदद से राजा को विप देने का निश्चय करता है। सयोग से राजा अपनी स्वाभाविक मृत्यु को प्राप्त होता है। राजकुमारी पिता के मरते ही लालसिह को अपने भवन मे वुलाकर उसे शादी का वचन दे देती है। राज्य के स्वामिभक्त प्रधान विसल देव और सेनापति करनसिह को यह सम्बन्ध अच्छा नही लगता और वे दोनो लालसिह का वध कर देते हैं। महलावती को लालसिह का वध असह्य हो जाता है। वह अत्यन्त क्रुद्ध हो अपने राज्य के समस्त पुरुष कर्मचारियो को निर्वासित कर उनके स्थान पर स्त्रियो की नियुक्ति करती है ।

केसरीसिह भी महलावती की ओर आकृष्ट हो उसके पास अपने दूत द्वारा विवाह का संदेश भेजता है सव प्रभुत्व सम्पन्न राजकुमारी उसका सदेश ठुकरा देती है। केसरी सिह आक्रमण कर जवरदस्ती उसे अर्धांगिनी वनाने का अभियान चलाता है। महलावती मच्छन्दर नाथ से विवाह कर उसकी योगशक्ति द्वारा केसरीसिह को पराजित करती है। वह वारह वर्ष तक मच्छन्दर नाथ के साथ अद्भुत चमत्कारो की दुनिया मे आनन्द उठाती है। गोरखनाथ अपने गुरु मच्छन्दर नाथ को उस नारी से मुक्त करके गुरु को अपने साथ ले जाते है। केसरी पुन शुभ अवसर देखकर आक्रमण कर महलावती को जीतना चाहता है। किन्तु मच्छन्दर नाथ के पुत्र मनु गोरख की दैवी शक्ति का सहारा लेता है। अन्त मे गुरु गोरखनाथ मनु के सिर पर 'राजमुकुट' पहनाकर उसे चक्रवर्ती होने का आशीष देते हैं।

रहस्य प्रकाश (सन् १९०४, पृ० ८६), ले० वद्रीदास, प्र० इण्डियन प्रेस, इलाहवाद, पात्र पु० १०, स्त्री १, अक ५, दृश्य ४, ३, ३, ५ ।
घटना-स्थल न्यायालय ।

यह एक सामाजिक दुखान्त नाटक है। न्यायाधीश द्वारा वसत और उनके शत्रु के वीच मुकदमो मे न्याय दिखाया गया है। न्यायाधीश वसत के विरुद्ध लगाये गये आरोप को झूठा सावित कर मुकदमे का उचित निर्णय देता है ।

रहीम (सन् १९५५, पृ० १९८), ले० ·

गोविन्ददास , प्र० . औरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली , *पात्र* . पु० ६, स्त्री ३ ; *अक* ५; *दृश्य* ३,३,३,३,३ ।
घटना-स्थल युद्ध क्षेत्र, अहमदाबाद, फतेहपुर सीकरी, आगरा, सोरो, चित्रकूट, बुरहानपुर, लाहौर और दिल्ली ।

रहीम के दोहो के आधार पर उनके जीवन का उत्थान और राजनैतिक पतन दिखाया गया है । उन्नीस वर्ष का नवयुवक रहीम अकबर के राज्य मे अहमदाबाद का सूबेदार बनता है। वह याचको को अपना रत्नजटित कलमदान भी प्रदान कर देता है । दूसरे अक मे रहीम आगरे की हवेली मे दिखाई पडते है जहाँ अकबर आकर देखते है कि सिहासन के पीछे एक ऊँची चौकी पर सुरागाय की पूँछ के चवर रखे है । दूसरी छोटी चौकी पर राधाकृष्ण की मूर्तियाँ है। अकवर के पास रहीम कवि आते है । राजा को एक लाख रुपया प्रदान करते है। अन्य —वियो और शायरो को पुरस्कार देते है। अकबर रहीम पर प्रसन्न होता है और मत्री बना लेता है। रहीम तुलसीदास के दर्शनार्थ जाते है और उनके मुख से राम-चरितमानस का एक अश सुनकर मुग्ध हो जाते है। कट्टर पथियो के कान भरने से रहीम पदच्युत किये जाते है और चित्रकूट मे निवास करते है। किन्तु सत्यज्ञान होने पर उन्हे पुन दक्षिण भारत मे युद्ध के लिए भेजा जाता है। इधर अकबर की मृत्यु पर जहागीर का शाहजादा खुर्रम पिता से विद्रोह करके दक्षिण मे रहीम के पास सहायता के लिये पहुँच जाता है पर रहीम के अस्वीकार करने पर उनको सपरिवार वन्दी बनाता है । जहाँगीर रहीम को बधन मुक्त करके लाहौर बुलाता है, और उनकी खिताव व जागीर लौटा देता है । पर रहीम का मन स्थित व्रज की स्थिति के लिए तड़पता है और वह पत्नी माहेवान् और पुत्री जानाबेगम के साथ व्रज-मंडल मे वस जाता है।

राक्षस का मन्दिर (वि० १९८९, पृ० १४९), ले० *:* लक्ष्मीनारायण मिश्र ; प्र० *:* हिन्दी प्रचारक, वाराणसी ; *पात्र* पु० ६, स्त्री ५ , *अक* ३ ; *दृश्य-रहित* ।

घटना-स्थल रघुनाथ का कमरा, विधवा आश्रम ।

इस नाटक मे समसामयिक जीवन का यथार्थ रूप प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है। आधी रात के समय रामलाल नामक वकील का लडका रघुनाथ अपने कमरे मे गीत लिखने मे व्यस्त होता है । रामलाल की रखैल अश्करी रघुनाथ के कमरे मे आकर उससे प्रेम निवेदन करती है। रघुनाथ उसकी उपेक्षा करता है । इसी छीना-झपटी के समय रामलाल दोनो को आकर देखता है। अश्करी रामलाल के सामने रघुनाथ पर दोष लगाती है । रामलाल इससे क्रोधित होकर उसे घर से निकाल देता है उसी समय रामलाल का पूर्व परिचित मुनीश्वर, मनोहर के वेश मे उसके यहाँ आता है । उसने भी अश्करी के प्रेम मे अपनी पत्नी और पुत्र को छोड दिया है। रामलाल यहाँ अश्करी को मुनीश्वर के साथ आलिगनबद्ध देखकर विरक्त हो जाता है। वह शराब आदि का त्याग कर देता है। अश्करी घर को छोडकर निकल जाती है ।

दूसरे अक मे अश्करी को ललिता नामक युवती के साथ दिखाया जाता है । इस स्थान पर रघुनाथ का प्रवेश होता है । ललिता उसकी भव्य रचना से प्रभावित होकर उससे प्रेम करने लगती है । अश्करी दोनो के प्रेम-भाव को समझ कर अपने प्रेम को दबा लेती है । परन्तु जब ललिता को अश्करी के मुसल-मान होने का पता चलता है तो वह उसे घर से निकाल देती है। इस ख्याल से दुखी होकर रघुनाथ ललिता को ठुकराकर चला जाता है ।

तीसरे अंक मे मुनीश्वर रघुनाथ के पिता का सारा धन मातृमन्दिर (विधवा आश्रम) के लिए धोखे से ले लेता है। रघुनाथ मुनीश्वर से बदला लेने का अवसर खोजता है। मातृ-मन्दिर के उद्घाटन-अवसर पर ललिता, मुनीश्वर, अश्करी और रघुनाथ सभी एकत्रित होते है रघुनाथ ललिता की उपेक्षा करता है। ललिता प्रेम मे असफल होकर समाज सेवा का व्रत लेती है। रघुनाथ

भी मातृमन्दिर को छोडकर चला जाता है अश्करी की बातो से मुनीश्वर का हृदय परिवर्तित हो जाता है। दोनो मातृमन्दिर के द्वारा समाज सेवा का सकल्प करते है।

राखी उर्फ रक्षावंधन (सन् १९५८, पृ० ६१), ले० मूलचन्द वेताव, प्र० जवाहर बुक डिपो, मेरठ; पात्र . पु० ९, स्त्री ६; अक २, दृश्य ३, ४।
घटना-स्थल घर, मन्दिर।

यह एक सामाजिक नाटक है। वहन अपने भाई को राखी बाँधती है। जमुना गगू को राखी बाँध अपनी रक्षा का आश्वासन लेती है। सम्पूर्ण नाटक मे वहन भाई का प्रेम ही प्रदर्शित किया गया है।

राखी की लाज (सन् १९४६, पृ० ९४), ले० वृन्दावन लाल वर्मा, प्र० मयूर प्रकाशन, झासी, पात्र . पु० ५, स्त्री २, अक ३; दृश्य . ८, ७, ७।
घटना-स्थल बालाराम का मकान, ललितपुर गाँव।

यह एक सामाजिक नाटक है। वहन भाई को राखी बाँधती है और भाई उसको कुछ भेट देता है। वहन द्वारा भाई के हाथ मे राखी बाँधने पर उन दोनो के बीच प्रेम का अटूट सम्वन्ध स्थापित हो जाता है और भाई पर वहन की रक्षा का भार आ जाता है। एक धनाढ्य व्यक्ति की वालाराम एक सच्चरित्र लडकी चम्पा एक आवारा सपेरे के हाथ मे राखी बाँधती है और सपेरा मेघराज राखी बाँधने वाली वहन को उपहार स्वरूप कोई दिव्यवस्तु देना चाहता है। करिमुन्निसा चम्पा की पडोसिन लडकी है जो गाँव के नवयुवक सोमेश्वर तथा अपने भाई चाँद खाँ को राखी बाँधती है। करीमन चम्पा से सोमेश्वर को राखी बाँधने के लिए कहती है लेकिन वह उसको राखी नही बाँधती, क्योकि चम्पा और सोमेश्वर एक-दूसरे को पति-पत्नी वनाना चाहते है। एक वार राखी वाले दिन ही रात को मेघराज सहित डाकुओ का एक दल वालाराम के मकान पर डाका डालने के लिए जाता है। जव डाकुओं का सरदार बालाराम को मारना चाहता है तो उसी समय बालाराम अपनी पुत्री चम्पा को बुलाते हैं। चम्पा उठती है और अपने सामने डाकू वेश में खड़े मेघराज के हाथ मे बँधी हुई राखी की लज्जा रखने के लिए चिल्ला उठती है। मेघराज को राखी की याद आती है। वह सभी डाकुओ को भाग जाने के लिए शोर मचाता है। इतने मे गाँव के नवयुवक सोमेश्वर और करीम खाँ वगैरह आकर मेघराज की खूब पिटाई करते हैं। सोमेश्वर आदि मेघराज को चम्पा के घर पहुँचा देते है। चम्पा मेघराज की सेवा करके उसे ठीक कर देती है। मेघराज चम्पा तथा बालाराम से क्षमा प्रार्थना करता है। बालाराम चम्पा की शादी ललितपुर गाँव मे एक लड़के के साथ तय करते है इसमे चम्पा तथा सोमेश्वर बड़े दुखी हो जाते है। चम्पा आत्महत्या करना चाहती है किन्तु करीमन तथा मेघराज की मदद से बालाराम दोनो की शादी करने को तैयार हो जाता है। मेघराज चम्पा तथा सोमेश्वर की शादी के अवसर पर आता है और अपनी कमाई के ग्यारह रुपए थाल मे रखकर अपनी बहन चम्पा के पति सोमेश्वर को टीका करता है।

भोज का चाचा मुज अपने स्वार्थी मत्री देवरत्न की सहायता से भोज को राज्याधिकार से वंचित कर स्वतः राजा वनने का स्वप्न देखता है। कारण यह है कि उज्जैन नरेश सिन्धुल अत्यंत रुग्णावस्था मे पडे है और जीवन की आशा छोड चुके है। रानी वीरमती राजकुमार भोज के राजतिलक का प्रश्न उठाती है किन्तु सिन्धुल महामंत्री को यह आज्ञा पत्र लिखकर देते है। "मेरी मृत्यु के पश्चात् मेरा भाई मुज राज्य का अधिकारी हो।" परन्तु भोज के पूर्ण युवा हो जाने पर राज्य भोज को ही सौपा जाता है।

इधर सिन्धुल की मृत्यु के उपरात मुज राजगद्दी पर वैठता है और महामंत्री बुद्धिसागर को हटाकर देवरत्न को मत्री दनाता है। मुज निष्कटक राज्य के लिए भोज के वधकार्य मे वधिक वत्सराज को नियुक्त करता है। वत्सराज गुरुकुल मे भोज को विद्याध्ययन मे निमग्न देख सशय मे पड जाता है। और उससे प्रभावित होकर वत्सराज कहता है · "राजकुमार! तुम्हारे आत्मिक वल की ज्योति ने मेरा अन्धकार मिटा दिया है।" वत्सराज तलवार रख देता है। अव वह अपने प्राणो की चिन्ता मे पडता है। पर उसकी समझदार पत्नी मुक्ता किसी युक्ति से भोज का कृत्रिम सिर थाल मे रखकर मुज के सामने उपस्थित करती है। मुज भोज का पत्र पढ कर दुखी होता है और पश्चात्ताप रूप मे अपने प्राणोत्सर्ग हेतु प्रस्तुत होता है। ज्योही वह चिता मे वैठने जाता है भोज प्रकट होकर कहता है—"इम खूनी मुकुट को ग्रहण करने मे मै मर्वथा असमर्थ हूँ। इसका उपयोग चाचा जी ही करे।"

राजतिलक अर्थात् किरातार्जुन युद्ध नाटक (वि० १९८८, पृ० १३१), ले० जगन्नारायण देवशर्मा, प्र० अध्यक्ष ज्योति भवन रामनगर, काशी, *पात्र* पु० १४, स्त्री १२; *अक* ३; *दृश्य* ११, ९, ७।
घटना-स्थल . राजदरवार, जंगल।

इस पौराणिक नाटक में किरात और अर्जुन का युद्ध-वर्णन है।

महाराज धृतराष्ट्र का पुत्र दुर्योधन अत्यंत लालची है। वह छल से पाण्डवो का राज्य हडप कर लेता है। पाडव जंगल में जा वसते है। बाद मे द्रौपदी को गुप्तचर द्वारा कौरवों के वैभव का पता चलता है। वह युधिष्ठिर को युद्ध के लिए प्रेरित करती है। महर्षि व्यास दुर्योधन के अन्याय को देखकर अर्जुन को मत्र-विद्या देते है। अर्जुन की तपस्या से घबराकर इन्द्र अप्सराओ का आश्रय लेता है। पर वह अपने प्रयत्न मे विफल रहता है। शिव प्रसन्न होकर अर्जुन को वरदान देते है। तत्पश्चात् व्यास जी अर्जुन का राजतिलक कर देते है।

राजनैतिक कृष्ण (सन् १९५२, पृ० ८४), ले० विश्वम्भर दयाल वैद्यराज ; प्र० · अनुभूत योगमाल बसलोकपुर इटावा ; *पात्र* · पु० ११, स्त्री ७, *अक* : ३ ; *दृश्य* : ८, ६, ९।
घटना-स्थल राजभवन, युद्ध-क्षेत्र।

इस नाटक में कृष्ण को आधुनिक राजनीतिक परिवेश मे दिखाया गया है। पाण्डव व कौरव के मध्य कृष्ण की भूमिका को नाटकीय रूप मे प्रदर्शित किया गया है।

राजपूत रमणी (सन् १९३७, पृ० १०८), ले० चन्द्रशेखर पाण्डेय 'चन्द्रमणि'; प्र० · राजपूत पब्लिशिंग हाउस, वनारस, *पात्र* : पु० १२, स्त्री ९, *अक* ३; *दृश्य* ७, ६, ६।
घटना-स्थल मन्दिर, दरवार, पहाडी, जंगल, युद्धभूमि।

इस वीररस प्रधान ऐतिहासिक नाटक की कथावस्तु सुप्रसिद्ध राजपूत रमणी हाडी रानी से सम्वन्धित है। रूपनगर की राजकुमारी सखियो सहित परिहास-रत है। तभी एक चित्र वेचनेवाली आकर उसे चित्र दिखाती है। रूपमती औरंगजेव के चित्र को भूमि पर पटककर उसे पैरों से कुचल देती है और उदयपुराधीश

राजसिह के चित्र पर मुग्ध हो जाती है। अपने अपमान की सूचना पाकर औरगजेब रूपनगर के जमीदार शिवरत्नसिह को पत्र द्वारा यह सदेश भिजवाता है कि इसी चैत्र मास की अतिम तिथि को रूपमती से विवाह करने के लिए मै रूपनगर आ रहा हू। इस पर राजसिह की पूर्वानुरागिनी रूपमती उन्हे पत्र लिखकर विवाह करने और मुगल-सम्राट के दुस्साहस को विफल करने का निमत्रण भेजती है। राजसिह इस आमंत्रण को स्वीकार करता है। इस कार्य के लिए यह निश्चित होता है कि राजसिह डेढ हजार घुडसवार सैनिको को साथ लेकर सीधे रूपमती से विवाह करने जायेगे और चन्द्रावत सेना के साथ तब तक मुगलो को रोके रहे जब तक राजसिह ससुराल उदययुर न पहुँच जाये। रण-प्रयाण के अवसर पर सेनापति चन्द्रावत नवविवाहिता पत्नी लीलावती के भविष्य के प्रति चिंतित दिखाई देते है। पति को कर्तव्यच्युत होते देख हाडी रानी अपना सिर काटकर उसके पास भिजवाती है। हाडी रानी के अपूर्व त्याग से प्रेरित होकर चन्द्रावत रौद्र रूप धारण कर रण-प्रयाण करता है। युद्ध-भूमि मे वह औरंगजेब पर घायल सिह की भाँति टूट पडता है।

सम्राट् प्राण-भिक्षा की मिन्नत करता है, और कुरान की शपथ लेकर मेवाड पर आक्रमण न करने का वचन देता है। इस पर युद्ध बद हो जाता है। किन्तु अत्यधिक घायल होने से चन्द्रावत की मृत्यु हो जाती है। उदयपुर पहुँचने पर महाराज को हाडी रानी और चन्द्रावत के अद्भुत साहस और त्याग की सूचना मिलती है। राजपूती आन को आदर्श मान पति-पत्नी की पुण्य स्मृति मे समाधि बनवाकर राजसिह रूपमती के साथ इन अमर शहीदो की समाधि पर माल्यार्पण करते है।

राजपूतो का जौहर (सन् १९३८, पृ० ६४), ले० तारा नाथ रावल, प्र० नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर, पात्र पु० ३, स्त्री २; *अक : ६, दृश्य · १९, ४, १७, २।* *घटना-स्थल :* राजप्रासाद, जौहर, चित्तौड़, युद्धक्षेत्र।

इस ऐतिहासिक नाटक मे राजपूतो का अद्भुत जौहर प्रदर्शित किया गया है। प्रथम ज्वाला अक मे सिधु पर मुसलमानो के आक्रमण, हिन्दुओ के अहकारी महाराज दाहिर की पराजय, देवल पर कासिम की विजय, राजप्रासाद के सामने चिता पर राजपूतनियो के जौहर का वर्णन किया गया है। दूसरी ज्वाला मे अलाउद्दीन की विजय के उपरान्त जैसलमेर के महारावल जयतसी और रतनसी की स्त्रियो का जौहर दिखाया गया है। तीसरी-चौथी ज्वाला मे चित्तौड की जौहर-ज्वाला का वर्णन है। पाँचवी ज्वाला मे चित्तौड पर अकबर का आक्रमण चित्रित है। जयमल और फत्ता की मृत्यु के उपरान्त राजपूतनियो का जौहर नाटकीय ढग से दिखाया गया है। छठी ज्वाला मे दुर्गादास का बलिदान, औरगजेब की क्रूरता, राजपूतो का शौर्य और राजपूतनियो का जौहर प्रदर्शित है।

राजमुकुट (सन् १९३५, पृ० १२६), ले० पं० गोविन्दवल्लभ पन्त, प्र० *गगा ग्रथागार, पात्र : पु० ८, स्त्री ४, अक · ३; दृश्य ६. ५, ५।* *घटना-स्थल* चित्तौड़ के महाराना विक्रम का निवास-कक्ष।

इस ऐतिहासिक नाटक मे राजपूतो के राजमुकुट का महत्त्व चित्रित किया गया है।

राजमुकुट राजपूताने की एक प्राचीन गौरव गाथा है। नाटक का आधार पन्ना नामक स्त्री है। विरोधी पात्रो मे शीतल देवी भी एक स्त्री है। इसमे स्त्रियो की प्रबल शक्ति और उनकी असीम सत्ता का वर्णन है। पन्ना देश-रक्षा के लिए अपने प्राणो से भी प्यारे पुत्र का बलिदान कर देती है। यह पन्ना के कठोर बलिदान का परिचायक है। वह राजकुमार उदय को लेकर विभिन्न स्थानो पर शरण के लिए भटकती फिरती है। अत मे आशाशाह के यहाँ शरण लेती धनवीर के राज्य मे उसके अभद्र व्यव कारण विद्रोह होता है तथा व

पुरोहित अनन्त मिश्र बगल मे झोली लटकाए शिव-शिव जपते हुए उदयपुर को प्रस्थान करते है। मार्ग मे चोर उन्हे पकड-कर उनसे पत्र और अँगूठी छीन लेते है। पत्र पढकर धन के लोभ से उसे औरगजेब के पास पहुँचाना चाहते है। उसी समय उदयपुर के राजा मानसिह वहाँ पहुँच जाते है। चोर उन्हे पहचान कर क्षमा माँगते है। राजसिह के आज्ञानुसार चोर मानिक-सिह ब्राह्मण को साथ लेकर राज-दरबार मे पहुँचता है।

इधर मुगल सेना रूपनगर पहुँचती है। महाराजा विक्रम विद्युतप्रभा के विवाह की तैयारी करते है।

राजसिह सेना सहित पहाडी मार्ग मे विद्यमान है। वह मानिकसिह को मुगल सेनापति की वर्दी मे देखकर प्रसन्न होते है। उसे रूपनगर भेजते है और किसी बहाने से पालकी के साथ-साथ रहने का आदेश देते है। माणिकसिह प्रणाम करके प्रस्थान करता है। इधर रूपनगर कुमारी विलाप करती है और उसकी सखी निर्मला उसे समझाती है। उसी समय अनन्त मिश्र वहाँ पहुँच जाते है। विद्युतप्रभा को आश्वासन देते है कि महाराज तुम्हारी रक्षा करेगे, मुगल सेना से युद्ध करने की सौगन्ध खाई है।

मुगल सेना के सरक्षण मे विद्युत प्रभा का डोला एक पहाड़ी पर पहुँचता है। मुगलो पर पत्थरो की वर्षा होने लगती है। मुगल सेना तोप दागती है। विद्युतप्रभा निर्भीक होकर मुगल सेनापति से कहती है कि "मै हिन्दू कुल की कन्या हूँ। यवन के पास जाने से मेरा धर्म नष्ट होता है, इसलिए मैने रक्षा के लिए राणा जी को स्मरण किया है।"

राजसिह प्रकट होते है और मुगल सेना-पति से युद्ध का आह्वान करते है। माणिक-सिह रूपनगर के राजा विक्रमसिह से २००० सैनिक राजकुमारी की चारो ओर से रक्षा करने के लिए माँग लाता है। मुगल सेना चारो ओर से घिर जाती है। मुगल सैनिक भाग जाते है। राजसिह और विद्युत प्रभा का मिलन हो जाता है।

राजा गोपीचन्द गीति नाट्य (सन् १८८५, पृ० ६४), ले०. विष्णुदास भावे , प्र० श्री शिवाजी छापाखाना, पूना ; पात्र पु० ४, स्त्री २ ; अक . ३ ।

यह एक शिक्षाप्रद गीतिनाट्य है। इस मे गोपीचन्द का मनोभाव चित्रित है। राजा गोपीचन्द की माता अपने पति की मृत्यु के बाद योगी जालन्धर की शिष्या बन जाती है और अपने विलासी पुत्र को ब्रह्म-ज्ञान का उपदेश देती है। परन्तु उस पर कोई प्रभाव नही पडता। वह अपनी माता का जालन्धर आदि जोगियो से सम्पर्क की बात सुनकर जालन्धर को महल की खाई मे डलवा देता है। जालंधर का उद्धार मच्छन्दर नाथ द्वारा होता है। अन्त मे राजा भी योगी मच्छन्दर नाथ की चमत्कारिक क्रियाओ से प्रभावित होकर वैराग्य धारण कर लेता है।

राजा गोपीचन्द नाटक (वि० १९३४, पृ० ११२), ले० : अण्णा जी ईनामदार ; प्र० भाऊ गोविन्द, बम्बई, पात्र पु० ८, स्त्री ४ , अक . ३ ; दृश्य . १३ । घटना-स्थल . महल, दरबार, खाई, वन ।

इस पौराणिक नाटक मे योग की महत्ता अभिव्यक्त की गई है। बगाल के राजा त्रिलोकचन्द के राज्य मे प्रजा सुखी तथा सम्पन्न है। उसकी रानी मैनावती है। राजा की मृत्यु के बाद उसका पुत्र गोपीचन्द राज-सिहासन पर बैठता है। राजा जगत् के भोग-विलास में समय व्यतीत करता है। पति-वियुक्ता रानी अपने महल मे एकान्तवास करती है। रानी अपने पुत्र की भोग-लिप्सा देख अत्यन्त दुखी होती है। एक दिन स्नान करते समय राजा अपनी माँ की पीडा का कारण पूछता है। रानी अपने पुत्र को ब्रह्मज्ञान का उपदेश देती है, किन्तु राजा पर उसका कोई प्रभाव नही पडता और वह अपने भोग-विलास मे लिप्त रहता है। किसी रानी द्वारा राजा गोपीचन्द अपनी माता का जलधर से घनिष्ठ सम्पर्क सुनकर बड़ा क्रुद्ध होता है। वह योगी जलधर को बुलाकर उसे खाई में डाल देता है और ऊपर नौ लाख घोड़ो

की लीद डलवाकर ढँक देता है। रानी भी पुत्र के जीवन पर शाप की मँडराती अँधेरी से भयभीत होकर कानिफा से निस्तार का उपाय पूछती है। कानिफा रानी की वेदना और साधुता से प्रभावित होकर मच्छन्दर नाथ द्वारा उसका उद्धार कराती है।

राजा दिलीप (सन १९२७, पृ० १५१), ले०. गोपाल दामोदर, तामस्कर ; प्र०. इडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग ; पात्र पु० १२, स्त्री ५ , अक ५, दृश्य ६, ६, ६, ७, २।
घटना-स्थल राजमहल, आश्रम, वन, गोशाला।

इस पौराणिक नाटक मे रघुवश के नायक राजा दिलीप की कथा वर्णित है। इसमे हिन्दुओं की गोमाता के प्रति सच्ची प्रेम-भावना का वर्णन रघुवश के आधार पर है।

राजा परीक्षित (सन् १९५१, पृ० ५३), ले० गौरीशकर मिश्र 'द्विजेन्द्र' , पात्र पु० ६, स्त्री ७ , अक ३।
घटना-स्थल . जगल, महल।

इस पौराणिक नाटक मे राजा परीक्षित की आकस्मिक मृत्यु का वर्णन है। इसमे नाट्यकार ने सत्य शिव सुन्दरम् का सुन्दर रूप प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इस गीतिनाट्य का उद्देश्य ही है भावो की मार्मिक व्यञ्जना, कथोपकथनमय के द्वारा राजा परीक्षित की मृत्यु दिखाना।

राजा शिवि (सन् १९२३, पृ० ११६), ले० बलदेव प्रसाद खरे, प्र० दुर्गा प्रेस और आर० डी० बाहिती ऐण्ड क० न० ४, चोर बगान, कलकत्ता , पात्र . पु० २१, स्त्री ७ , अक . ३ , दृश्य : ७, ६, ४।
घटना-स्थल . राजप्रासाद।

इस पौराणिक नाटक मे राजा शिवि की आदर्श कथा का वर्णन किया गया है। इन्द्र और अग्नि द्वारा राजा शिवि की परीक्षा होने पर वह धैर्य का उदाहरण प्रस्तुत करते है।

राज्यश्री (वि० १९७-, पृ० ६०), ले० : जयशकर प्रसाद , प्र० काशी 'इन्दुकला' ६; भारतीय भण्डार, काशी, खड १; पात्र : पु० २२, स्त्री ५ , अक ३, दृश्य ७, ७, ४।
घटना-स्थल : नदी-तट, उपवन, वनपथ, बन्दीगृह, युद्ध-भूमि, तपोवन, जगल।

मौखरि वशीय कन्नौजराज ग्रहवर्मा का मालवनरेश देवगुप्त से द्वेष है। राज्यश्री की सुन्दरता पर मुग्ध मालवेश उसे प्राप्त करने के लिए नाना प्रकार के उपाय एव षड्यन्त्र करता है। वह ग्रहवर्मा को छलपूर्वक मारकर कन्नौज हस्तगत कर लेता है और राज्यश्री को भी वन्दिनी बना लेता है।

देवगुप्त को बन्दी बनाया जाता है। उसके उपद्रवपूर्ण कार्यो से रुष्ट होकर राज्यवर्धन उसका प्रतिकार करता है। राज्यवर्धन और देवगुप्त परस्पर आमने-सामने आते है और दोनो मे समर अवश्यम्भावी हो जाता है। मालवेश देवगुप्त युद्ध मे मारा जाता है। उसके दुष्कृत्यो का पूर्ण परिष्कार होता है। भिक्षु विकटघोष भी राज्यश्री की रूपमाधुरी पर मुग्ध हो जाता है। वह इसी से राज्यवर्धन की सेना मे आता है। और वन्दिनी राज्यश्री को मुक्त करता है। षड्यन्त्रो द्वारा उन साध ले अपनी उद्दाम वासना की तृप्ति के उद्देश्य से जगल के एकात प्रदेश मे पहुँच कर अपनी कुभावनाओ को व्यक्त करता है। दिवाकर मित्र की सहायता से राज्यश्री की रक्षा होती है। इधर गौड-नरेश छल से राज्यवर्धन की हत्या करता है। हर्ष मुलकेशिन को जीतकर लौटता है हर्ष और राज्यश्री सब अपराधियो को क्षमादान देते है। सुएनचाग लुटेरे भी मुक्त कर दिए जाते है। मालिन सुरमा और विकटघोष भी सुएनचाग के पैर पर गिरते है। हर्ष और राज्यश्री लोक सेवा मे जीवन विताते है।

राज्यश्री (सन् १९४३, पृ० ११२), ले० भानुप्रताप सिह, प्र० प्रकाशन गृह, इला-बाद , पात्र पु० २२, स्त्री ५ , अक दृश्य ३, ४, ६, ६, ४।
घटना-स्थल कान्यकुब्ज, जगल,

वन्दीगृह ।

प्रभाकर वर्द्धन थानेश्वर का राजा है। राज्यवर्द्धन और हर्षवर्द्धन उसके दो पुत्र है और राज्यश्री उसकी पुत्री है जो इस नाटक की नायिका है। मालवा मे गुप्त राजाओ की शक्ति प्रायः नष्ट हो जाती है। इस समय बंगाल मे एक नवीन शक्ति का प्रादुर्भाव होता है। शशाक नाम का व्यक्ति गौड-राज्य की स्थापना करके कर्णसुवर्ण को अपनी राजधानी बनाता है। प्रभाकर वर्द्धन की मृत्यु के पश्चात् भारतवर्ष की राजनैतिक स्थिति डावाडोल हो जाती है। उत्तर-पश्चिम की ओर शक्तिशाली हूणो का आक्रमण हो जाता है। राज्यश्री युवावस्था को प्राप्त हो जाती है। उसका सौन्दर्ययश सारे भारतवर्ष मे व्याप्त हो जाता है। राज्यश्री का अपूर्व सौन्दर्य वर्णन सुनकर भारत के अनेक राजा उसे प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हो जाते है। राज्यश्री का विवाह कान्यकुब्ज के राजकुमार ग्रहवर्मा से हो जाता है। कामरूप का राजा आकर हर्ष से मैत्री कर लेता है। मालवेश देवगुप्त भी मैत्री स्थापित कर कान्यकुब्ज पर आक्रमण कर देता है। राज्यश्री का पति युद्ध मे मारा जाता है और राज्यश्री बन्दी बना ली जाती है। समाचार पाने पर राज्यवर्द्धन युद्ध के लिए तैयार होता है। शशाक का साहस युद्ध के लिए नही होता। शशाक राज्यवर्द्धन को विवाह मे अपनी वहन देने के प्रलोभन से छल के बल अपने शिविर मे ही उसका वध कर देता है।

हर्ष राज्यवर्द्धन की मृत्यु का समाचार सुनकर विशाल वाहिनी के साथ शशाक के विरुद्ध प्रस्थान करता है। राज्यश्री कारागृह से निकल जगल मे चली आती है। राज्यश्री का यह समाचार पाकर शशाक के विरुद्ध युद्ध करने के लिए भाण्डे को भेजकर हर्ष अपनी भगिनी राज्यश्री को ढूंढने मे प्रवृत्त हो जाता है। हर्ष अपार कष्ट सहकर वन मे अपनी बहन को ढूंढता है। अन्त मे दिवाकर मित्र मुनि की सहायता से राज्यश्री को उस समय बचाता है जब वह चिता मे जलकर भस्म होना चाहती है।

रात के राही (सन् १९५७, पृ० ४८), ले० शारदेन्दु रामचन्द्र गुप्ता, प्र० ठाकुर प्रसाद ऐण्ड सन्स, बुकसेलर, बनारस, पात्र . पु० ४, स्त्री ३, अक ६।

इस सामाजिक नाटक मे समाज-सुधार की भावना चित्रित की गई है। धरती का पति डॉ० सेठ चन्दन के जन्म के समय किसी कारण से पत्नी को निकाल देता है। धरती भिक्षाटन से पुत्र का पालन करती हुई मर जाती है।

एक उदार व्यक्ति अशोक शिशु चन्दन को लेकर उसके पिता डॉ० सेठ के पास जाता है। डॉ० सेठ उसे पहचानकर भी नही वोलते और उसे अस्पताल जाने को कहते है। वे उसकी आँख का परीक्षण कर उपचार के लिए डॉ० अल्फ्रेड के पास जाने को बाध्य करते है। उनकी पुत्री मीना पिता की वार्ता सुनकर अधे भाई चन्दन के प्रति सहानुभूतिपूर्वक रुपया, आभूषण आदि लेकर चन्दन और अशोक के साथ घर छोडकर चली जाती है। वह न्यूयार्क पहुँचकर डॉ० अल्फ्रेड को चन्दन की आँख दिखाती है, किन्तु वह भी चन्दन की आँख की रोशनी न लौटने का निर्णय देता है। मीना वहाँ से लौटकर भारत के एक गाँव मे अशोक की सहायता से अस्पताल चलाती है। दोनो जनता-जनार्दन की सेवा मे ख्याति प्राप्त करते है और अधा चन्दन भी दोनो के साथ आनन्दपूर्वक समय बिताता है।

गाँव मे एक दिन मुठभेड़ मे प्रकाश की अशोक बुरी गत बनाता है। किन्तु प्रकाश का मीना पर प्रेम देख वह मीना को वही छोड गाँव चला जाता है। वह गम भुलाने के लिए शराबी हो जाता है। इधर चन्दन घर मे जलकर मर जाता है। चोरो की रोकथाम मे प्रकाश भी चल बसता है। अशोक शराब से जर्जरित हो पुन प्रकाश की मृत्यु के बाद मीना के पास पहुँचता है, किन्तु वह उस शराबी को निकाल देती है। वह वही शराब के अति सेवन से मर जाता है। निराश मीना भी नदी मे कूदकर मर जाती है।

राधा (सन् १९४१, पृ० ५५), ले० : उदयशकर भट्ट , प्र० आत्माराम ऐण्ड सन्स, दिल्ली , पात्र पु० २, स्त्री ३, *अक-रहित*, *दृश्य* ४।
घटना-स्थल . यमुना का किनारा, निर्जन निकुज, चौबुरजा।

आध्यात्मिक प्रेम पर आधारित इस भाव-नाट्य मे प्रतीकात्मक पद्धति का आश्रय लिया गया है । प्रथम दृश्य मे प्रेम-सौन्दर्य के अवतार कृष्ण के प्रति राधा आसक्त है। वह एक दिन व्यथित होकर अपनी अन्तरग सखी विशाखा से यह भेद प्रकट कर देती है। विशाखा राधा को आगामी अवरोधो से अवगत कराती है। फिर भी राधा नही मानती । राधा की इस अवस्था को देखते हुए विशाखा भी कृष्ण के प्रति अपना प्रेम प्रकट करती है जिससे राधा को संतोप होता है कि एक वही विरह मे नही जल रही है, अन्य भी उसके पथ-साथी है।

द्वितीय दृश्य मे यमुना-तट पर कृष्ण मुरली वादन मे लीन है। राधा किसी आकर्षण मे खिची अस्तव्यस्त चली जाती है और प्रेम-विभोर हो कृष्ण से उनका रहस्य पूछती है। उत्तर मे कृष्ण वशी की तान को विपय-कालिमा से आच्छादित प्रेम-पीयूप-सरिता की जागृति का कारण बताते है। इस पर राधा कृष्ण पर दोपारोपण करती है कि उनका रूप और मुरली की तान ही समस्त व्रज-वासियो की विकलता का कारण है। इस आरोप का खडन करते हुए कृष्ण उदात्त प्रेम का सदेश देते है जिसके लिए राधा स्वय को असमर्थ पाती है। वह प्रेम मे समर्पण के साथ एकलय हो जाना चाहती है।

तृतीय दृश्य के अन्तर्गत राधा एव विशाखा अपने-अपने प्रेमोद्गार व्यक्त करती है। उसी के अनन्तर कृष्ण आकर अपने मथुरागमन का समाचार सुनाते हुए राधा को समाज, कुल मर्यादा तथा प्रेम-रक्षा का सदेश देते है।

चतुर्थ दृश्य मे विरह-विदग्धा राधा का चित्रण है। इसी समय भक्ति-अहकार से आप्लावित नारद का प्रवेश होता है जो राधा के मान को उद्बुद्ध करके कृष्ण को विस्मृत करने का सुझाव देते है। किन्तु राधा के एकनिष्ठ प्रेम के समक्ष नारद का अहम् पराजित हो जाता है। इधर राधा भी प्रतिदान-रहित-प्रेम के औचित्य को प्राप्त करती है।

राधा कन्हैया का किस्सा (रचनाकाल लगभग सन् १८४६), ले० वाजिदअली शाह 'अख्तरे', प्र० अज्ञात; पात्र · पु० ५, स्त्री ८, *अक* ३; *दृश्य* ८।

इस नाटक मे कृष्ण लीला चित्रित की गई है । एक दुखिनी स्त्री साहरा, जोगिन बन जाती है। अपने नौकर गुरवत से कहती है "चौबीस बरस हुए एक रज है और वह रज है—राधा कन्हैया का नाच नही देखा।" गुरबत उसकी इस अभिलापा की पूर्ति के लिए इफरीयत देव के पास जाकर उसके गम का निवेदन करता है। देव, परी जोगन को बुला कर राधा कन्हैया नाच का आह्वान करता हैं।

गीत आरम्भ हो जाता है। कृष्ण राधा को मनाते है, सखियाँ भी मनाती है। कृष्ण मुसाफिर से पूछते है और कहते है कि "हम मुरली ढूँढत है, कि मुरगी ?" मुसाफिर उन्हे पनिहारिनो के पास भेजता है और पनिहारिन मक्खन मागती है। तब कृष्ण मक्खन वालियो के पास जाते है। इस प्रकार मक्खन लीला आदि के माध्यम से कृष्ण लीला दिखाई गई है।

राधा नन्द कुमार (सन् १९६०, पृ० ३५), ले० रामसरन दास , प्र० माधोगोविन्द दास जैन, प्रभाकर प्रेस, बनारस , पात्र पु० ८, स्त्री ४ , *अक* ४ , *दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल रगशाला।

यह शृगारिक नाटक है। इसमे राधा तथा कृष्ण का परस्पर प्रेम-वर्णन है।

राधामाधव नाटक (सन् १९२० के आसपास, पृ० १०४), ले० एक नाटक प्रेमी , प्र० . उपन्यास बहार आफिस, काशी, बनारस ; पात्र पु० ६, स्त्री ४ ; *अक* ३; *दृश्य :*

५, ५, २ ।
घटना-स्थल सडक, मकान, यमुनातट ।

इस धार्मिक नाटक मे राधामाधव की मधुर प्रणय-लीला का सरस चित्रण मिलता है। राधामाधव के प्रेम मे डूबकर अपने घर और पति को भी छोड देती है। उसके हृदय मे केवल एक ही भाव है और वह है माधव का नाम। वह माधव से पवित्र प्रेम करती है। सब लोग राधा की पवित्रता पर सदेह करते है किन्तु वह इस कसौटी पर खरी उतरती है।

राधा वंशीधर विलास (सन् १६८४ से १७११ के मध्य, पृ० ६४), *ले०* शहाजी (शाहजी), *प्र०* तजाउर, महाराजा शरभोजी सरस्वती महल लाइब्रेरी, तजौर, (मद्रास), *पात्र* : पु० ४, स्त्री २ ; *अक* ३ ; *दृश्य* ४ ।
घटना-स्थल यमुनातट, शीतल निकुज, वन, भवन ।

एक बार यमुनातट पर विहार करते समय कृष्ण से रूठकर राधा अपनी सहेली के साथ एक कुज मे चली जाती है। कृष्ण राधा के वियोग को देर तक सह नही सकते है और उनको ढूंढने के लिए उद्धव को भेजते है। उद्धव राधा को शीतल निकुञ्जभवन के बीच बैठे पाते है पर राधा को लौटा लाने मे वे असफल हो जाते हैं। वे खाली हाथ कृष्ण के पास लौट आते है। तब उनसे कृष्ण अपने विरह को व्यक्त करते है।

वेदना से व्याकुल देखकर एक सिद्ध योगी उन्हे बाँसुरी की तान छेडने को कहता है। कृष्ण अपनी बाँसुरी की मूर्छनाओ से वातावरण को सगीत से प्लावित कर देते है। बाँसुरी-नाद की प्रतिध्वनि के रूप मे राधा की धमनियाँ बज उठती है और वह स्वय खिचकर कृष्ण के पास आ जाती है। कृष्ण से क्षमायाचना करती है। कृष्ण उसे क्षमा कर आनन्दमग्न कर देते है। प्रणयकलह के मिट जाने पर दोनो प्रसन्न हो जाते है।

राधामाधव अर्थात् कर्मयोग (सन् १९२२, पृ० १०४), *ले०* तामसकर गोपाल दामोदर, *प्र०* जबलपुर, कृष्णराव भावे, *पात्र* पु० ३, स्त्री ४, *अक* : ५ ; *दृश्य* : ६, ७, ८, ६, ३ ।
घटना-स्थल प्रयाग, सडक, बाग, गगा-किनारा, मकान, दूकान, हवालात ।

इस सामाजिक नाटक मे राधा-माधव का प्रेम दिखाया गया है। माधव, एक पाखण्डी एवं लोभी साधु चिदानन्द के चक्कर मे पडकर वैराग्य धारण करना चाहता है। केशव के समझाने पर भी नही मानता। ढोगी साधु चिदानन्द के कहने पर माधव अपनी सारी सम्पत्ति बेच डालता है। अन्त मे चिदानन्द की वास्तविकता का पता लगने पर माधव उससे सम्बन्ध-विच्छेद करके सच्चे साधु की तलाश मे बनारस पं० अनुभवानन्द के यहाँ जाता है। माधव की प्रेयसी राधा श्यामलाल से शादी के प्रस्ताव को अस्वीकार कर माधव के ही पीछे बनारस चली जाती है।

श्यामलाल केशव को अपने मार्ग का कंटक समझकर उसकी हत्या करना चाहता है। उसका साथी मनमोहन राधा के पिता को झूठी सूचना देता है कि उसकी बेटी किसी अपरिचित युवक के साथ बनारस भाग गई। सेठ लक्ष्मणदास इस घटना से दुखी होकर आत्महत्या के लिए यमुना मे कूदते है किन्तु मौके पर श्यामलाल पहुँचकर उसकी प्राण-रक्षा करते है। वे बेहोश लक्ष्मणदास के पास राधा, माधव आदि के विरुद्ध एक पत्र छोड जाते है।

पुलिस माधव, राधा, केशव और रमा को इसी पत्र के आधार पर कैद कर लेती है। श्यामलाल, चिदानन्द और उनके साथी भी कैद कर लिये जाते है। माधव और केशव कुछ दिनो के बाद जेल से मुक्त हो जाते है, किन्तु चिदानन्द और उसके साथियो को कुकृत्यो का दुष्परिणाम मिलता है।

अन्त मे राधा-माधव, और केशव-रमा की शादी हो जाती है। चारो देश-सेवा की शपथ लेते है।

रानी भवानी (वि० १९९५, पृ० ८५), *ले०* : परिपूर्णानन्द, *प्र०* पटना पब्लिशर्ज, पटना ; *पात्र* पु० ५, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* :

८, ७, ५ ।
घटना-स्थल . रनिवास, राजपथ, घना जगल, कचहरी, राजदरबार ।

इस ऐतिहासिक नाटक की नायिका नाठौर के राजा उमाकात की स्त्री रानी भवानी है। मुगल साम्राज्य के पतन पर मुर्शिदाबाद का निवासी अलीवर्दी खाँ नवाब बनता है उसके अधीन नाठौर रियासत थी। राजा रमाकात नवाब की भाँति अय्याश हो जाता है। रमाकात के अपव्यय और छोटे भाई देवीदास के प्रति उसकी क्रूरता के कारण राज्य की स्थिति बिगड जाती है। रमाकांत के चचा दयाराम नवाब के सम्मानित दरबारी हैं। नवाब रमाकात को दडित करना चाहता है। नवाब की लगान भी नहीं पहुँचती। रमाकात गद्दी से हटाये जाते हैं और देवीदास राज्याधिकारी बनते है। रमाकात के साथ उनकी स्त्री द्वार-द्वार मारी-मारी फिरती है इधर देवीदास को राजमद हो जाता है और नीचता पर उतर आता है। रानी भवानी की दुर्दशा, रमाकात का प्रायश्चित्त और पश्चात्ताप देखकर दयाराम को क्षोभ होता हे। अत. देवीदास के स्थान पर रमाकात पुन राज्य प्राप्त करते हे। रानी भवानी की तपस्या, सत्यनिष्ठा से रमाकात का कल्याण हो जाता है।

रानी सुन्दरी (वि० १९८२, पृ० १२३), ले० . ईश्वरप्रसाद शर्मा, प्र० अनन्तकुमार जैन, वीर मन्दिर, आरा, *पात्र* पु० ६, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* ८, १०, ५, ।
घटना-स्थल पुरन्दरपुर, भगतराम का मकान, भयानक जंगल, राजदरबार, रानी सुन्दरी का कमरा ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे नारी-धर्म की रक्षा दिखायी गयी है। राजा वीरसिंह का भाई धीरसिंह किसी की विधवा बहन के साथ कुछ छेडछाड़ करने के पश्चात् उसके घर एक पत्र लिखता है कि वह अपनी बहन को एक रात के लिए उसके पास भेज दे। राजा वीरसिंह को यह बात मालूम हो जाती है तो वह सशय मे पड जाते है। जब संयोग-वश उसकी महारानी अपने देवर धीरसिंह से वास्तविकता का पता लगा लेती है तो वीरसिंह उन्हे सबक सिखाने के लिए कैद कर देता है और कहता है कि कही हिन्दू नारियाँ भी नीच कुलच्छनी होती है ?

राम अवतार (सन् १९१५, पृ० ६०), ले०. त्रिलोकी नाथ खन्ना, प्र० : गिरधारी लाल, थोक पुस्तकालय, दिल्ली, *पात्र* पु० १८, स्त्री ४, *अक* · ३, *दृश्य* · ८, ४, २ ।

इस धार्मिक नाटक मे भगवान् राम के गुणो का हृदयग्राही चित्रण है। राम दशरथ के घर अवतार लेकर देवताओ के कष्ट को दूर करते हैं। राजा दशरथ शिकार के समय भूल से श्रवणकुमार को जानवर समझ बाण मार देते है, जिससे उसकी मृत्यु हो जाती है। ऋषि शान्तनु (श्रवणकुमार के पिता) दशरथ को शाप देते हे कि जैसे मैं अपनी अन्तिम अवस्था मे पुत्र-वियोग के कारण प्राण त्याग रहा हूँ वैसे तुम भी मरोगे। दशरथ के लिए वह शाप वरदान बन जाता है क्योकि तब तक उनके कोई सतान न थी। कालान्तर मे राजा दशरथ के चार पुत्र पैदा होते हैं और शापानुसार पुत्र-वियोग मे राम वनवास के समय उनकी मृत्यु होती है।

राम की अग्नि परीक्षा (सन् १९४९, पृ० ६०), ले० : गिरिजाकुमार माथुर; संकलन मे प्रकाशित, *पात्र :* पु० ७, स्त्री १, *अक-रहित, दृश्य* ३ ।

इस पद्य नाटक मे रामकथा वर्णित है। उदार राजा राम एक मृतक ब्राह्मण-पुत्र को जिलाने का प्रयास करते हैं। उसकी अकाल मृत्यु से चिंतित है। वे ब्राह्मण-पुत्र के लिए स्वय अपना जीवन देने को तैयार हो जाते हैं। इसके माध्यम से जनरजक राम के चरित्र की गरिमा को व्यक्त किया गया है। लखनऊ रेडियो से प्रसारित

रामचरित नाटक (सन् १९४१, पृ० १३८), लें० श्याम बिहारी मिश्र, प्र० अवध प्रिंटिंग वर्क्स, लखनऊ पात्र . पु० ४; अक ३ ; दृश्य ८, ९, ६।
घटना-स्थल : महल, वन, आश्रम।

इस धार्मिक नाटक का आधार रामायण है। इसमे राम को नायक के रूप मे प्रस्तुत किया गया है। इस नाटक मे युग-परिवर्तन के साथ सीता के चरित्र-चित्रण मे पर्याप्त स्वतन्त्रता से काम लिया गया है। सीता को वन भेजने मे नारी के सर्वोपरि धर्म-पालन का ही ध्यान रखा गया है।

सीता रावण की राज्य-व्यवस्था का गुरु वसिष्ठ के सम्मुख गुणगान करती है।

"गुरुवर ! आर्य पुत्र के लिए यह योग्य ही था कि परीक्षा के पीछे मुझे अगीकार करते। जैसी प्रचण्ड मूर्खता करके मैने देवर लक्ष्मण की अनुचित भर्त्सना की थी वैसा ही फल पाकर प्राय दस मास लका मे कारागार-सा भोगा। इतना मै फिर भी कहूँगी कि रावण के साम्राज्य मे सभ्यता उच्चकोटि की थी।" इस तरह राम और सीता के गुणो का वर्णन इसमे मिलता है।

राम चरित्रोद्दीपन (सन् १९३६, पृ० ८०), लें० रघुवर दयाल पाण्डे, प्र० हिन्दी नाट्य पुस्तकालय, रजीत पुरवा, कानपुर ; *पात्र* . पु० २५, स्त्री ५, अक १०, दृश्य १०, २, १, ११, १, १, २, १, १, ८।
घटना-स्थल जनकपुरी, धनुपयज्ञ।

इस धार्मिक नाटक का आधार रामचन्द्र द्वारा धनुपयज्ञ मे धनुप तोडने की कथा है। नाटक गद्य और पद्य दोनो ही विधाओ मे एक साथ रचा गया है।

रामदास चरित्रम् (सन् १८८६, पृ० ७४), लें० नादेल पुरुषोत्तम कवि, प्र० हिन्दी साहित्य भडार, लखनऊ, पात्र पु० १५, स्त्री ४ ; *अक-रहित, दृश्य* ४८।
घटना-स्थल मछली पट्टणम् और आन्ध्र के अन्य नगर।

इस धार्मिक नाटक मे प्रेममय आदर्श चरित्रो का वर्णन है।

गोपन्न जो रामदास के नाम से प्रख्यात हुए, रामभक्त कचन लिगन्न तथा कामाबा के पुत्र है। उन पर बचपन से ही रामभक्ति का प्रभाव पड़ता है। माता-पिता की मृत्यु के बाद गोपन्न कबीर दास से रामनाम की दीक्षा ग्रहण करते है। उनका विवाह कमला से होता है। वे अपने मामा अवकन और मादन्न की सहायता से भद्राचलम् के तहसील-दार नियुक्त होते है। गोपन्न अपने साधु-स्वभाव के कारण राज्यकर पूरा-पूरा वसूल कर बादशाह की प्रशसा प्राप्त करते है।

भद्राचलम पर स्थित राममन्दिर जीर्णा-वस्था मे था। उस वर्ष प्राप्त राज्यकर के छह लाख रुपये से गोपन्न उस मन्दिर का पुन-र्निमाण करवाते है। बडे ठाठ-बाट से श्री रामचन्द्र जी का कल्याणोत्सव मनाकर अपने जीवन को सार्थक मानते है।

बादशाह उन्हे बंदी बनाकर और रकम वसूल होने तक तरह-तरह की यातनाए देने का आदेश देते है। यातनाए सहने मे असमर्थ गोपन्न भगवान् से विनय करते, डॉट सुनाते, उपालम्भ देते हुए १४ वर्ष व्यतीत करते है। सब तरह से हारकर वह सीता मैया से निवेदन करते है।

माता सीता के स्मरण दिलाने पर राम और लक्ष्मण रातोरात तानाशाह के पास पहुँच छह लाख मुद्राएँ देकर रसीद प्राप्त करते है और उस रसीद को रामदास को देकर चले जाते है। इस कृत्य को देखकर बादशाह की आँखे खुल जाती है और वह गोपन्न को मुक्त कर छह लाख मुद्राए भी वापस दे देते है। गोपन्न रामदास बनकर भद्राचलम पहुँच शेप जीवन रामचन्द्र जी की सेवा मे व्यतीत करते है।

राम-भारद्वाज मिलन अभिनय (सन् १९१०, पृ० ८०), लें० सुधाकर द्विवेदी, प्र० अज्ञात, *पात्र* . पु० ४, स्त्री ३, *अक* ३; *दृश्य* २।
घटना-स्थल जगल, भारद्वाज-आश्रम।

इस नाटक मे राम वनवास की प्रमुख

घटना राम-भारद्वाज ऋषि के मिलन के रूप मे प्रदर्शित की गई है। राम के साथ सीता भी वन मे नाना प्रकार के कष्ट सह रही है। कुश, डाभ और नाना प्रकार के कटको से पैर विध जाते हैं किन्तु पति के साथ सीता को तनिक भी कष्ट की अनुभूति नही होती।

राम भारद्वाज ऋषि से मिलकर बहुत प्रसन्न होते है और दोनो मे अध्यात्म विषयक चर्चा होती है। तुलसीकृत रामायण के आधार पर इस नाटक की रचना हुई है।

राम-राज्य (सन् १९४०, पृ० ९९), ले० : श्रीमृत , प्र० नरवदा बुक डिपो, जबलपुर ; पात्र पु० १५, स्त्री २ , अक . ४; दृश्य . ४, ५, ५, ३ ।
घटना-स्थल राजमहल, गगातट, आश्रम, वन, यज्ञ-शाला ।

इस धार्मिक नाटक मे भगवान् रामचन्द्र के उत्तरचरित का वर्णन है। एक धोबी के लाछन लगाने पर राम बडी कठोरता एव निर्ममता से सीता को निर्वासित कर देते हैं। शोक-विह्वल लक्ष्मण परित्यक्ता सीता को वन मे छोड आते है। दुःख-कातर सीता अपमान से व्यथित होकर गगा मे कूदना चाहती है किन्तु ऋषि वाल्मीकि उनकी रक्षा कर अपने आश्रम मे लाते हैं। आश्रम मे ही सीता जी के लव-कुश नामक दो तेजस्वी पुत्र उत्पन्न होते हैं। निरपराधिनी सीता को दण्ड देने के कारण अयोध्या मे अकाल पड जाता है। राम प्रजा के दुःख को दूर करने के लिए अश्वमेध यज्ञ करने का निश्चय करते है। सीता जी की स्वर्णमयी प्रतिमा का निर्माण कर यज्ञ आरम्भ होता है। लव-कुश नगरवासियो तथा रामचन्द्र जी के सम्मुख वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण का गान करते है। सारी प्रजा उनके कठ पर मन्त्र मुग्ध हो जाती है।

दुर्मुख के सेनापतित्व मे यज्ञ का घोडा विश्व-विजय के लिए छोडा जाता है। वन-प्रान्त मे लव-कुश राम का अन्याय मिटाने के लिए घोडे को पकडते हैं। लक्ष्मण दो छोटे-छोटे ऋषि कुमारो की धृष्टता का दण्ड देने के लिए विभीषण, अंगद और हनुमान तथा भारी सेना के साथ जाकर लव-कुश से युद्ध करते है लेकिन युद्ध में लक्ष्मण आदि को पराजय का मुख देखना पड़ता है। अन्त मे राम स्वय प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए बालको से लड़ने चल पड़ते है। लव-कुश भी राम से जा भिड़ते हैं। सीता पिता-पुत्र के मध्य युद्ध को न देख सकी तो दौडकर अपने बेटो को युद्ध करने से रोकती है और उन्हें बताती है कि भगवान् राम ही तुम्हारे पिता है। भगवान् राम के दर्शन करके सीता जी धरती में समा जाती हैं। लव-कुश को लेकर भगवान् राम अयोध्या लौट आते है।

राम-राज्य (सन् १९३६, पृ० ७५), ले० ए० एल० कपूर, प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, चावडी बाजार, दिल्ली ; पात्र . पु० १८, स्त्री ४, अक : ३, दृश्य . १२, १२, १३ ।
घटना-स्थल : राजदरबार, गंगातट, आश्रम, वन ।

इस धार्मिक नाटक मे राम द्वारा सीता-त्याग की कथा चित्रित है। एक ब्राह्मण राम के दरबार मे आकर अपने बच्चे की अकाल मृत्यु का दोष उन पर लगाता है। मृत्यु-कारण का पता लगने पर ज्ञात होता है कि एक शूद्र तपस्या कर रहा है जिससे ब्राह्मण-पुत्र की मृत्यु हुई। राम उस शूद्र को दण्ड देते है। बिना आज्ञा लिये मैके चले जाने के कारण धोबन को धोबी मारता है और उसे घर से निकालते हुए कहता है कि 'तूने मुझे राम समझ लिया है जो सीता को रावण के पास रहने पर भी अपने घर पर रखे हुए हैं।" कर्तव्यपरायण गुप्तचर दुःख-भरे हृदय से यह समाचार राम को सुनाता है।

भगवान् राम की आज्ञा से लक्ष्मण सीता को वन मे छोड आते है। असहाय सीता दुःख-शोक से व्याकुल होकर गंगा मे डूबना चाहती है किन्तु वाल्मीकि उनकी रक्षा कर अपने आश्रम मे ले आते है। वही पर सीता के लव-कुश नामक दो पुत्र पैदा होते हैं। राम प्रजा का दुःख दूर करने के लिए अश्वमेध यज्ञ का आयोजन करते है। यज्ञ किया घोडा शत्रुघ्न के स

नारायण प्रेस, पात्र. पु० २६, स्त्री १६; अंक-दृश्य के स्थान पर ६२ गीतो मे विभाजित।
घटना-स्थल · राजमहल, जगल, गगातट, फुलवारी, धनुषयज्ञ, दरबार।

राम की सम्पूर्ण कथा को प्रसगो मे विभाजित किया गया है। रामजन्म, धनुषयज्ञ, रामवनवास, केवट प्रसग, भरत-मिलाप, शूर्पणखा-प्रसंग, शबरी प्रसग, सीताहरण, अशोक वाटिका मे हनुमान, लक्ष्मणशक्ति, राम-विलाप, रावण-अहिरावण वध, राम का अयोध्या प्रत्यागमन प्रसंग विभिन्न राग-रागिनियो मे पारसी थियेटर को दृष्टि मे रखकर लिखे गये है। लावनी, ठुमरी, पजाबी ठेका, सोहनी, कव्वाली, मल्हार आदि तर्जो पर सीधी-सादी भाषा मे गीतो का सर्जन किया गया है। इसे गीति-नाट्य भी कहते है।

रामलीला नाटक (सन् १९१२ के आसपास) ले० विनायक प्रसाद 'तालिब', प्र० खुरशेद जी, मेहरवान जी मडली द्वारा दी ज न पेटिट पारसी आरफनेज कप्टन प्रिंटिग प्रेस, बम्बई, *पात्र* पु० ४, स्त्री ६, *अक* ४।
घटना-स्थल जनकपुर, अयोध्या, चित्रकूट, पचवटी, लका।

यह धार्मिक नाटक तुलसीकृत 'रामायण' के आधार पर लिखा गया है। नाटक मे सीता-स्वयवर से रावण-वध तक की समस्त घटनाओ को समेटने का प्रयास किया गया है। रावण-वध के बाद राम-सीता का मिलन दिखाया गया है। १४ वर्ष की अवधि पूरी होने के कारण राम अयोध्या लौटने की तैयारी करते है।

अभिनय खुरशेद जी मेहरवान मडली द्वारा अभिनीत।

रामलीला नाटक (सन् १९४६, पृ० ४७९), ले० · विश्वेश्वर दयाल गुप्त 'कुशल', प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, चावडी बाजार, दिल्ली, *पात्र* पु० ६, स्त्री ३, *अक* · १२, *दृश्य* · १०, ८, १३, ६, ५, १४, १३, १६, १८, १३, १८, १८।
घटना-स्थल अयोध्या, कैलाश पर्वत, पंचवटी तथा लका।

यह नाटक रामलीला शैली मे रामचरितमानस के आधार पर सम्पूर्ण रामचरित को १२ अको मे प्रस्तुत करता है। नाटक का उद्देश्य धार्मिक प्रचार है। नाटक मे राम-जन्म की पृष्ठभूमि मनु-शतरूपा की तपस्या से प्रारम्भ होती है। इसमे रामजन्म, नारदमोह, ताडका-वध, अहिल्या उद्धार, सीता-स्वयवर, रामविवाह तथा वनगमन, राम का राक्षसो से जनता की रक्षा की प्रतिज्ञा, सीता-हरण, राम-सुग्रीव मैत्री, हनुमान का लका दहन, रावण-वध तथा विभीषण को लका सौपने तक की घटनाओ का समावेश है।

रामलीला नाटक (सन् १९६३, पृ० ७२), ले० जी० एस० मधुप, प्र० गिरधारी लाल थोक पुस्तकालय, ४५६ खारी बावली, देहली, *पात्र* पु० १४, स्त्री ५, *अक* · ३, *दृश्य* १२, ८, ९।
घटना-स्थल अयोध्या, कैलाश पर्वत, जगलमार्ग, गगातट।

इस धार्मिक नाटक का आधार तुलसी का रामचरितमानस है। प्रारम्भ मे शिव-पार्वती सवाद है तथा त्रिलोक मे अत्याचार के कारण त्राहि-त्राहि मची है। इसी हेतु रामावतार होता है। रामकथा को नाटकीय रूप मे वर्णित किया गया है।

नाटक को पूर्णतया अभिनेय बनाया गया है। रामकथा के साथ ही अहिल्याआदि की प्रासगिक कथाएँ वर्णित है।

रामलीला प्रभाकर नाटक (बालकाण्ड) (सन् १९१६, पृ० १०४) ले० रूपनारायण सिंह शर्मा, प्र० खेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई-१, *पात्र* पु० ७, स्त्री ६, अक के स्थान पर प्रभा ५४।
घटना-स्थल मायापुर, अयोध्या, सरजुतट।

इस धार्मिक नाटक मे नारद-मोह से लेकर राम-विवाह तक की कथा रामलीला की दृष्टि से लिखी गई है। प्रथम प्रभा मे नारद मायापुर के भूप शिवविरचि की कन्या पर आसक्त है। विष्णु से विवाह के लिए सहायता माँगते है। द्वितीय प्रभा मे कालकेतु और भानुप्रताप की कथा है।

इसी प्रकार बालकाण्ड की कथा को विभिन्न छन्दो मे आबद्ध किया गया है। यहाँ तक कि गजल, चैता आदि छन्दो का भी प्रयोग मिलता है।

रामलीला विजय नाटक (वि० १९५४) ले० बलदेव जी अग्रहार, प्र० विचार सभा, इटावा, *पात्र* पु० ८, स्त्री नही, *अक* ७।
घटना-स्थल रामलीला क्षेत्र।

इस धार्मिक नाटक मे हिन्दू-मुस्लिम झगडे तथा उनके साम्प्रदायिक दगो का वर्णन है।

सुपरिटेडेट बुलर साहब विचार-सभा के मत्री पर दबाव डालकर रामलीला का विमान उठाने की आज्ञा देते है। उधर मौलवी, अधिकारियो से बात कर हाई स्कूल के उत्तर सडक पर दखल जमाने के लिए मुसलमानो को इकट्ठा करता है। हिन्दुओ की गिरफ्तारी होती है। रामलीला-सम्बन्धी इस झगडे का मुकदमा कमिश्नर के न्यायालय मे विचारार्थ पेश होता है। इसी बीच होडे साहब हिन्दू-मुसलमान को एक दूसरे के धार्मिक कार्यों मे बाधा न डालने तथा रामलीला और मुहर्रम का जुलूस भिन्न-भिन्न निर्धारित समय पर निकालने की आज्ञा देते है। परन्तु इसके बावजूद मुसलमान जमा होकर गदर की स्थिति पैदा करते है। होडे की आज्ञा से सुपरिटेडेट पुलिस उनकी घेरेबन्दी आरम्भ करते हैं। इधर रामलीला के बालको की रक्षा हेतु हिन्दू भी तैयार होते है। होडे साहब गोरो की फौज बुलाते है। वे मुसलमानो को हटाकर रामलीला-रथ ले जाने के लिए फौज को रास्ता साफ करने का आदेश देते हैं। हठ करने पर लोग मारे-पीटे जाते है, कुछ पकडे जाते हैं और शेष भाग खडे होते है। इधर रामलीला की समाप्ति पर हिन्दू, वकील रामचन्द्र की आरती उतारता है। इस घटना से हिन्दू प्रसन्न होते है। अब प्रत्येक दिन पुलिस के सरक्षण मे रथ उठता है, परन्तु अतिम दिन मे पूर्व शहर मे बलवा हो जाता है, जो वीर पुलिस की तत्परता से दबा दिया जाता है। साहबो की देखरेख मे भरत-मिलाप के रथ उठते हैं और लीला सफलतापूर्वक समाप्त होती है। राजगद्दी के दिन आरती के पश्चात् विचार-सभा के कार्यकर्त्ता बलदेव प्रसाद-वैद्य का व्याख्यान होता है, जिसमे वे साहबो के इसाफ की प्रशसा और मुसलमानो की हठधर्मिता की निंदा करते है।

राम वन यात्रा नाटक (सन् १९१०, पृ०९९) ले० गिरिवर धर वकील, प्र० राजनीति प्रेस, पटना, *पात्र* पु० १० स्त्री ४, *अक* ७, *दृश्य* ३, ३, ५, ३, ३, ४, २।
घटना-स्थल राजमहल, रानी कैकेयी का कोपभवन, जगल मार्ग, तमसा नदी का तट।

इस पद्यबद्ध नाटक मे देवताओ की दुर्दशा तथा रावण के अत्याचार से चिंतित इन्द्र राम को बन भेजने का उपाय निकालते है। वह सरस्वती को बुलाकर अपना उद्देश्य बताते है। पहले तो वह आपत्ति प्रकट करती है फिर जग के दुख को दूर करने और देवमार्ग को नष्ट होने से बचाने के लिए मन्थरा की जिह्वा पर जा विराजती है।

इधर राम के राजतिलकोत्सव की तैयारी मे व्यस्त पुरवासी मथरा के पूछने पर उसे वस्तुस्थिति से अवगत कराते है। वह राजनीति से अनभिज्ञ होने के कारण राम को इसके अयोग्य बनाती है। वह राम के राज्याभिषेक की सूचना से उत्पन्न अपना दुख कैकेयी से प्रकट करती है। मथरा के समझाने से उसकी भी मति फिर जाती है और कुवेश बनाकर कोपभवन मे जाती है। सूचना पाकर राजा दशरथ घबराते हुए वहाँ जाते है और आश्वासन देकर उसे मनाते है। अनेक व्यग्य-बोली के पश्चात् व सुर-असुर सग्राम मे राजा द्वारा दिए व के अनुसार दो वर का प्रस्ताव रखती है

नारायण प्रेस, पात्र पु० २६, स्त्री १६, अंक-दृश्य के स्थान पर ६२ गीतो मे विभाजित।
घटना-स्थल . राजमहल, जगल, गगातट, फुलवारी, धनुषयज्ञ, दरबार।

राम की सम्पूर्ण कथा को प्रसंगो मे विभाजित किया गया है। रामजन्म, धनुष-यज्ञ, रामवनवास, केवट प्रसग, भरत-मिलाप, शूर्पणखा-प्रसग, शबरी प्रसग, सीताहरण, अशोक वाटिका मे हनुमान, लक्ष्मणशक्ति, राम-विलाप, रावण-अहिरावण वध, राम का अयोध्या प्रत्यागमन प्रसग विभिन्न राग-रागिनियो मे पारसी थियेटर को दृष्टि मे रख-कर लिखे गये है। लावनी, ठुमरी, पजाबी ठेका, सोहनी, कव्वाली, मल्हार आदि तर्जो पर सीधी-सादी भाषा मे गीतो का सर्जन किया गया है। इसे गीति-नाट्य भी कहते है।

रामलीला नाटक (सन् १९१२ के आसपास) ले० विनायक प्रसाद 'तालिब', प्र० खुरशेद जी, मेहरवान जी मडली द्वारा दी ज न पेटिट पारसी आरफनेज कप्टन प्रिटिग प्रेस, बम्बई, *पात्र* पु० ४, स्त्री ६, *अक* ४।
घटना-स्थल जनकपुर, अयोध्या, चित्रकूट, पचवटी, लका।

यह धार्मिक नाटक तुलसीकृत 'रामायण' के आधार पर लिखा गया है। नाटक मे सीता-स्वयवर से रावण-वध तक की समस्त घटनाओ को समेटने का प्रयास किया गया है। रावण-वध के बाद राम-सीता का मिलन दिखाया गया है। १४ वर्ष की अवधि पूरी होने के कारण राम अयोध्या लौटने की तैयारी करते है।

अभिनय खुरशेद जी मेहरवान मडली द्वारा अभिनीत।

रामलीला नाटक (सन् १९४९, पृ० ४७९), ले० विश्वेश्वर दयालु गुप्त 'कुशल'; प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, चावडी बाजार, दिल्ली, *पात्र* पु० ९, स्त्री ३, *अक* : १२, *दृश्य* : १०, ८, १३, ६, ५, १४, १३, १६, १८, १३, १८, १८।
घटना-स्थल अयोध्या, कैलाश पर्वत, पंच-वटी तथा लका।

यह नाटक रामलीला शैली मे राम-चरितमानस के आधार पर सम्पूर्ण राम-चरित को १२ अको मे प्रस्तुत करता है। नाटक का उद्देश्य धार्मिक प्रचार है। नाटक मे राम-जन्म की पृष्ठभूमि मनु-शतरूपा की तपस्या से प्रारम्भ होती है। इसमे रामजन्म, नारदमोह, ताडका-वध, अहिल्या उद्धार, सीता-स्वयवर, रामविवाह तथा वनगमन, राम का राक्षसो से जनता की रक्षा की प्रतिज्ञा, सीता-हरण, राम-सुग्रीव मैत्री, हनुमान का लका दहन, रावण-वध तथा विभीषण को लका सौपने तक की घट-नाओ का समावेश है।

रामलीला नाटक (सन् १९६३, पृ० ७२), ले० जी० एस० मधुप, प्र० गिरधारी लाल थोक पुस्तकालय, ४५६ खारी बावली, देहली, *पात्र* पु० १४, स्त्री ५, *अक* : ३; *दृश्य* १२, ८, ९।
घटना-स्थल अयोध्या, कैलाश पर्वत, जगलमार्ग, गगातट।

इस धार्मिक नाटक का आधार तुलसी का रामचरितमानस है। प्रारम्भ मे शिव-पार्वती सवाद है तथा त्रिलोक मे अत्याचार के कारण त्राहि-त्राहि मची है। इसी हेतु रामावतार होता है। रामकथा को नाटकीय रूप मे वर्णित किया गया है।

नाटक को पूर्णतया अभिनेय बनाया गया है। रामकथा के साथ ही अहिल्याआदि की प्रासगिक कथाएँ वर्णित है।

रामलीला प्रभाकर नाटक (बालकाण्ड) (सन् १९१६, पृ० १०४) ले० रूपनारायण सिह शर्मा, प्र० खेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई-१, *पात्र* पु० ७, स्त्री ६, अक के स्थान पर प्रभा ५४।
घटना-स्थल . मायापुर, अयोध्या, सरजुतट।

इस धार्मिक नाटक मे नारद-मोह से लेकर राम-विवाह तक की कथा रामलीला की दृष्टि से लिखी गई है। प्रथम प्रभा में नारद मायापुर के भूप शिवविरंचि की कन्या पर आसक्त है। विष्णु से विवाह के लिए सहायता माँगते है। द्वितीय प्रभा मे कालकेतु और भानुप्रताप की कथा है।

इसी प्रकार बालकाण्ड की कथा को विभिन्न छन्दो मे आबद्ध किया गया है। यहाँ तक कि गजल, चैता आदि छन्दो का भी प्रयोग मिलता है।

रामलीला विजय नाटक (वि० १६५४) ले० बलदेव जी अग्रहार, प्र० विचार सभा, इटावा, पात्र पु० ८, स्त्री नही, अक ७।
घटना-स्थल रामलीला क्षेत्र।

इस धार्मिक नाटक मे हिन्दू-मुस्लिम झगडे तथा उनके साम्प्रदायिक दगो का वर्णन है।

सुपरिटेडेट बुलर साहब विचार-सभा के मत्री पर दबाव डालकर रामलीला का विमान उठाने की आज्ञा देते है। उधर मौलवी, अधिकारियो से बात कर हाई स्कूल के उत्तर सडक पर दखल जमाने के लिए मुसलमानो को इकट्ठा करता है। हिन्दुओ की गिरफ्तारी होती है। रामलीला-सम्बन्धी इस झगडे का मुकदमा कमिश्नर के न्यायालय मे विचारार्थ पेश होता है। इसी बीच होडे साहब हिन्दू-मुसलमान को एक दूसरे के धार्मिक कार्यो मे बाधा न डालने तथा रामलीला और मुहर्रम का जुलूस भिन्न-भिन्न निर्धारित समय पर निकालने की आज्ञा देते है। परन्तु इसके बावजूद मुसलमान जमा होकर गदर की स्थिति पैदा करते है। होडे की आज्ञा से सुपरिटेडेट पुलिस उनकी घेरेबन्दी आरम्भ करते है। इधर रामलीला के बालको की रक्षा हेतु हिन्दू भी तैयार होते है। होडे साहब गोरो की फौज बुलाते है। वे मुसलमानो को हटाकर रामलीला-रथ ले जाने के लिए फौज को रास्ता साफ करने का आदेश देते है। हठ करने पर लोग मारे-पीटे जाते है, कुछ पकड़े जाते है और शेष भाग खडे होते है। इधर रामलीला की समाप्ति पर हिन्दू, वकील रामचन्द्र की आरती उतारता है। इस घटना मे हिन्दू प्रसन्न होते है। अब प्रत्येक दिन पुलिस के सरक्षण मे रथ उठता है, परन्तु अतिम दिन मे पूर्व शहर मे बलवा हो जाता है, जो वीर पुलिस की तत्परता से दबा दिया जाता है। साहबो की देखरेख मे भरत-मिलाप के रथ उठते है और लीला सफलतापूर्वक समाप्त होती है। राजगद्दी के दिन आरती के पश्चात् विचार-सभा के कार्यकर्त्ता बलदेव प्रसाद-वैद्य का व्याख्यान होता है, जिसमे वे साहबो के इसाफ की प्रशसा और मुसलमानो की हठधर्मिता की निंदा करते है।

राम वन यात्रा नाटक (सन् १६१०, पृ०६६) ले० गिरिवर धर वकील, प्र० राजनीति प्रेस, पटना, *पात्र* पु० १० स्त्री ४, *अक* ७, *दृश्य* ३, ३, ५, ३, ३, ४, २।
घटना-स्थल राजमहल, रानी कैकेयी का कोपभवन, जगल मार्ग, तमसा नदी का तट।

इस पद्यबद्ध नाटक मे देवताओ की दुर्दशा तथा रावण के अत्याचार से चिंतित इन्द्र राम को वन भेजने का उपाय निकालते है। वह सरस्वती को बुलाकर अपना उद्देश्य बताते है। पहले तो वह आपत्ति प्रकट करती है फिर जग के दुख को दूर करने और देवमार्ग को नष्ट होने से बचाने के लिए मन्थरा की जिह्वा पर जा विराजती है।

इधर राम के राजतिलकोत्सव की तैयारी मे व्यस्त पुरवासी मथरा के पूछने पर उसे वस्तुस्थिति से अवगत कराते है। वह राजनीति से अनभिज्ञ होने के कारण राम को इसके अयोग्य बताती है। वह राम के राज्याभिषेक की सूचना मे उत्पन्न अपना दुख कैकेयी से प्रकट करती है। मथरा के समझाने से उसकी भी मति फिर जाती है और कुवेश बनाकर कोपभवन मे जाती है। सूचना पाकर राजा दशरथ घबडाये हुए वहाँ जाते है और आश्वासन देकर उसे मनाते है। अनेक व्यग्य-बोली के पश्चात् वह सुर-असुर संग्राम मे राजा द्वारा दिये वचनो के अनुसार दो वर का प्रस्ताव करती है। वे

राम की शपथ खाकर प्रतिज्ञा पूर्ण करने को तैयार हो जाते है। वह मागती है—"शिर बाँधि जटा कटि छाल मृगा तनछार लगा करि तापस साजू। बन रामहि चौदह वर्ष रखौ मम पूत बुलाई करौ युवराजू।।" राजा शोकग्रस्त हो विलाप करते है।

प्रात काल बदीजनो के गान पर भी सोकर न उठने के कारण सुमंत वहाँ जाकर भूमि पर पडे राजा की दुर्दशा देखते है और क्षमा मागते हुए कैकेयी से इसका कारण पूछते है। कैकेयी राम को बुला लाने का आदेश देती है। राम प्रणामपूर्वक कैकेयी से दुर्दशा का कारण पूछते है और प्रतिज्ञा आदि का विवरण जानने पर भाई को राज्य देकर सहर्ष वन जाने को तैयार हो जाते है। यह घटना नगर मे चारो ओर फैल जाती है। दशरथ सुमत को यह आदेश देकर उनके साथ वन भेजते है कि उन्हे चार दिन वन दिखाकर हठपूर्वक लौटा लाना। राम, सीता-लक्ष्मण के साथ वन की ओर प्रस्थान करते है।

अयोध्या से चलकर और सुमत से अनेक विषयो की चर्चा करते हुए चारो व्यक्ति तमसा के तट पर पहली रात व्यतीत करते है और राम, सीता-लक्ष्मण को जगाकर चुपके से रात मे ही घोर वन की ओर चल देते है।

प्रात काल सुमन्त रोते हुए शोकातुर अवध की ओर लौटते है।

इधर दशरथ कौशल्या-भवन मे पुत्र-शोक मे व्याकुल पूर्व शाप का स्मरण करते है। इसी बीच सुमन्त पहुचकर राम के वनगमन की सूचना देते है, जिससे राम-राम कहते दशरथ शरीर त्याग देते हैं। कौशल्या विलाप करती है।

राम विजय नाटक (सन् १५६७, पृ० १२८), ले० शकर देव, प्र० हिन्दी विद्यापीठ, आगरा; पात्र. पु० १२, स्त्री ४, *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल . अयोध्या, यज्ञ, मिथिलापुर।

प्रारम्भ मे नाट्यकार राम और सीता के सौन्दर्य का विस्तार के साथ वर्णन करता है। राम के सौन्दर्य को सुनकर सीता मोहित होती है और सखियो से अपने पूर्व जन्म की तपस्या तथा नारायण को अपने स्वामी के रूप मे प्राप्त करने की इच्छा प्रकट करती है। भगवान् की प्राप्ति न होने से वह बहुत दुखी होती है। राक्षसो से परेशान होकर एक दिन विश्वामित्र अपने यज्ञ की रक्षा-हेतु राम-लक्ष्मण को माँगने के लिए राजा दशरथ के पास जाते है। राजा दशरथ राम-लक्ष्मण को अपनी आँखो से ओझल नही होने देना चाहते। जब विश्वामित्र उनसे राम की ईश्वरीय शक्ति का वर्णन करते है तथा उन्हे हरि का अश अवतार बताते है तब दशरथ आश्वस्त होकर राम-लक्ष्मण को जाने की अनुमति देते है। मार्ग मे राम अपने बाण-सधान से ताडका राक्षसी का वध करते है। एक दिन विश्वामित्र दोनो भाइयो को सीता स्वयवर दिखाने ले जाते है। मार्ग मे विश्वामित्र सीता के सौन्दर्य तथा जनक की प्रतिज्ञा का समाचार सुनाते है। सीता के सौन्दर्य को सुनकर राम के मन मे विवाह की इच्छा उत्पन्न होती है। विश्वामित्र दोनो भाइयो को लेकर मिथिलापुर पहुचते है। वहा राम के रूप को देखकर जनक मोहित हो जाते है। विश्वामित्र जनक से दोनो भाइयो का परिचय कराते है। जनक जी उनका आलिगन करते है। जनक की आज्ञा से मत्रिगण राजसमाज एकत्रित करते है और जनक शकर का धनुष अपने कन्धे पर रखकर सीता को वस्त्र-अलकार से सुसज्जित कर सभा मे आते है और सभी राजाओ से शिव-धनुष पर प्रत्यचा चढाने पर सीता का विवाह होने का आदेश सुनाते है। सीता की सुन्दरता को देखकर सभी राजा काम-पीडित होते है। शतधनु, चन्द्रकेतु आदि सभी राजा बारी-बारी से प्रत्यचा चढाने की कोशिश करते है, लेकिन नही चढा पाते। अन्त मे मुनि विश्वामित्र की आज्ञा से राम धनुप पर प्रत्यचा चढाकर उसे भग करते है। सभी राजा क्रोधित होकर राम से युद्ध करते है। राम की विजय होती है। दशरथ के आने पर राम-सीता का विवाह होता है।

अब राजा दशरथ राम, सीता और लक्ष्मण के साथ अयोध्या वापस आते है। रास्ते मे अपने गुरु के धनुप के टूटने की

आवाज सुनकर परशुराम क्रोधित होकर दशरथ तथा विश्वामित्र सहित राम-लक्ष्मण को कटु वचन कहते है, जिससे राजा दशरथ, विश्वामित्र बहुत डर जाते है। लक्ष्मण जी भी बहुत क्रुद्ध होते है। लक्ष्मण को शान्त करके रामचन्द्र जी स्वयं अपने धनुष की प्रत्यचा चढाते है। श्री राम के धनुष की टकार सुनकर परशुराम विकम्पित हो आगे झुककर प्रार्थना करते है तथा अपने अपराध के लिए क्षमा और प्राणदान मागते हैं।

अभिनय-कुचविहार के राजा और दीवान के आग्रह पर अभिनय के लिए लिखा गया और अनेक बार अभिनीत।

रामविनोद नाटक (वि० १९७१, पृ० १६८), ले० जयगोविन्द शर्मा, प्र० खेमराज श्री कृष्णदास, बम्बई, पात्र पु० १०, स्त्री ३, अक १०, दृश्य कुल ३०।
घटना-स्थल तपोवन।

इस पौराणिक नाटक मे, दोहा, चौपाई, सोरठा, सवैया, घनाक्षरी, भुजंगप्रयात आदि अनेक छन्दो, पदो व सस्कृत श्लोको द्वारा भगवान् श्रीरामचन्द्र के जन्म से लेकर विवाह पर्यन्त तक की कथा का चित्रण किया गया है।

राम-हनुमान युद्ध 'नाटक' (सन् १९०६, पृ० ८६), ले० दलीली, प्र० : देहाती पुस्तक भडार, दिल्ली, पात्र पु० ७, स्त्री ३, अक-रहित, दृश्य १३।
घटना-स्थल राजमहल, जगल, तपोवन।

इस धार्मिक नाटक मे भक्ति की विजय दिखाई गई है।

राम के भाई लक्ष्मण, भरत, और शत्रुघ्न हनुमान की असीम प्रभु-भक्ति से असतुष्ट होकर निश्चय करते है कि व सीता की सहायता से सभी अपनी सेवा का भाग राम से माँगे। उन्हे हनुमान द्वारा राम की समस्त सेवा अच्छी नही लगती है।

उधर हनुमान जी सीता माँ से मिले हुए अमरता के वरदान से इसलिए सतुष्ट नहीं है कि जब राम त्रेता के अन्त पर द्वापर मे चले जायेगे तो हनुमान को वियोग का दुख सहना पड़ेगा। उसी समय वह सीता को सिन्दूर लगाते देख उसका लाभ पूछते है। सीताजी उन्हे बताती है कि इससे प्रभु राम बडे प्रसन्न होते है तो वह सिन्दूर अपने समस्त शरीर मे लपेट कर राम के पास जाते है। राम प्रजा-हित के लिए सभा करते है। वहा नारद एक क्षत्रिय राजा को विश्वामित्र से प्रणाम न करने की सलाह देते है। राजा के प्रणाम न करने पर विश्वामित्र अपना अपमान समझ उसे मृत्यु-दण्ड देते है।

राजा नारद से प्राण बचाने की प्रार्थना करता है। वह उसे हनुमान की माँ अजनी के पास भेज देते है और अजनी हनुमान की शक्ति से राजा की रक्षा का वचन दे देती है। अजनी हनुमान से भी उसकी रक्षा का वचन ले लेती है। हनुमान को जब पता चलता है कि वह राजा अन्य कोई नही उसके पूज्य राम है तब वह बहुत घबराता है और नारद से मिलकर उपाय करता है। हनुमान जी राजा को भक्ति की शिक्षा दे राम-राम, सियाराम जै हनुमान के जाप से उसे बचा लेते है। वसिष्ठ के आग्रह पर विश्वामित्र ससार की रक्षा तथा राम की मर्यादा की रक्षा के लिए अपनी आज्ञा वापस ले लेते है।

रामानन्द नाटक (वि० १९९२, पृ० ८४), ले० . अवध किशोर दास 'श्री वैष्णव', प्र० श्री रामानन्द ग्रन्थमाला कार्यालय, अयोध्या, पात्र . पु० ७, स्त्री ३; अक ३, दृश्य २०।
घटना-स्थल काशी मे रामानन्द का आश्रम।

इस जीवनीपरक नाटक मे स्वामी रामानन्द के गुणो को चित्रित किया गया है। समाज मे बढते हुए अन्याय और अत्याचार को देखकर भगवान् स्वामी रामानन्द के रूप मे अवतार ग्रहण करते है। वे बडे होने पर अपने अनेक सखाओ के साथ समाज-सुधार के लिए निकल पडते है और काशी मे आसन

जमाते है। उनके चमत्कारी रूप से प्रभावित होकर सभी उनकी ओर आकृष्ट होते है। उनका प्रभाव देखकर मुस्लिम प्रचारक तथा जैन एव तात्रिक साधना के मतावलबी उन से जलने लगते है और उन्हे हानि पहुँचाने के लिए उनके आश्रम मे आते हैं। यहाँ रामानन्द के चमत्कारी कार्यो से वे न केवल प्रभावित होते है अपितु पराजय स्वीकार कर उनके समक्ष आत्मसमर्पण कर देते है। अत मे स्वामी रामानन्द अपने सप्रदाय का प्रचार करते हुए समाधिस्थ हो जाते है।

रामानुज (सन् १९५२, पृ० १५९), ले० रागेय राघव, प्र० किताव महल, इलाहाबाद, *पात्र* पु० १६, स्त्री ५, *अक* ६, *दृश्य* ६, ३, ४, ७, १, ६, ।
घटना-स्थल · रामानुज का आश्रम।

यह नाटक स्वामी रामानुजाचार्य के जीवन-चरित्र को चित्रित करता है। रामानुज चमारो को समाज मे पूर्ण अधिकार देते है। नाटक के प्रारम्भ मे ही अपने गुरु की पक्षपातपूर्ण नीति के विरुद्ध दिखाई पडते है। गुरु यादवप्रकाश उनके यश की ध्वजा को लहलहाते नही देखना चाहते। दक्षिण मे मुसलमानो एव ईसाइयो का प्रवल आतक छाया है। मुसलमान लूट-पाट मे लगे है और ईसाई धर्म-परिवर्तन कराने मे। रामानुज इन दोनो का विरोध कर सबको समान देखने का अवसर देते हैं। ब्राह्मणवाद की कट्टरता से उन्हे चिढ होती है। वे बौद्धो के दु खवाद के स्थान पर आनन्दवाद की स्थापना करते है। राजलक्ष्मी इसी प्रकार के विचारो से प्रभावित है। पहले वह प्रेम करती है, जब उसे प्रेम मे निराशा होती है तव वह दुखी होती है किन्तु रामानुज के प्रभाव से उसे यथार्थ का ज्ञान होता है और वह उनकी अनुगामिनी वनकर जय-जयकार करने लगती है।

रामाभिषेक नाटक (सन् १९१०, पृ० ११८), ले० गगा प्रसाद गुप्त, प्र० : हिन्दी साहित्य प्रकाशक, वनारस सिटी; *पात्र* पु० ५, स्त्री ८, *अक* ५, *दृश्य* : ९, ३, २, २, ९।
घटना-स्थल अयोध्या का राजपथ।

गद्य-पद्यात्मक इस धार्मिक नाटक मे राम के राज्याभिषेक की तैयारी से लेकर राम-बनवास तक की कथा का वर्णन है। राजा दशरथ से कैकेयी वर प्राप्त करती है, और षड्यत्र रचकर राम को वनवास दिलाती है।

दशरथ की मृत्यु और राम वन-गमन का प्रसग वडा ही रोचक वन पडा है। दु ख के साम्राज्य मे भी शाति का पूर्ण प्रभाव है। नाटक मे राम के राजा रूप का प्रभाव दिखाया गया है।

रामायण (सन् १९१५, पृ० २३९), ले० प० नारायण प्रसाद 'बेताब', प्र० बेताब पुस्तकालय, दिल्ली, *पात्र* पु० ११, स्त्री ४, अक ३; दृश्य के स्थान पर प्रवेश ९, १२, ७।
घटना-स्थल अयोध्या का राजमहल, जनकपुरी, वनमार्ग, लका।

यह धार्मिक नाटक है। इस की कथा वाल्मीकि रामायण और तुलसीदास के मानस से ली गई है। प्रारंभ मे रावण को शकर से चन्द्रहास तलवार मिलती हैं। रावण के बध का कारण ऋषि-कन्या वेदवती बताई गई है इसमे राम-जन्म से लेकर सीता स्वयंवर, राम वनवास, सीता हरण, रावण मरण, अयोध्या आगमन और राम राज्याभिषेक आदि का वर्णन है रावण का अत्याचार विशेष रूप से दिखाया गया है। रामायण की अनेक छोटी घटनाए सक्षेप रूप मे सूच्य वनाकर ही दिखा दी गई है।

अभिनय-बबई मे सन् १९१४ मे। नाटक मे कुल २४ गाने है। कावसजी खटाऊ ने स्वय दशरथ का पार्ट किया।

रामायण नाटक (सन् १९२४, पृ० ११०), ले० श्रीकृष्ण हसरत, प्र० उपन्यास बहार आफिस, बनारस, *पात्र* पु० २५, स्त्री ६; *अक* ३, *दृश्य* ७, ५, ६।
घटना-स्थल · अयोध्या तथा वन।

यह धार्मिक नाटक तुलसीकृत रामायण का नाटकीय रूप है। इसमे राम-जन्म से लेकर वन-गमन, सीताहरण, रावण-वध, विभीषण-राज्याभिषेक तथा राम की अयोध्या वापसी तक की सभी कथाएँ है।

रामायण नाटक (सन् १९३५, पृ० १२०), ले० न्यादरसिंह बेचैन, प्र० देहाती पुस्तक भडार, दिल्ली, पात्र · पु० २५, स्त्री ८, अक . ३, दृश्य ११, ७, ९।
घटना-स्थल पृथ्वी, अयोध्या, स्वयवर सभा, वन।

नाटक का आधार रामचरित मानस है। प्रारम्भ मे गऊ, पृथ्वी तथा ऋषिगण समार मे व्याप्त अत्याचार से रक्षा-हेतु विष्णु से प्रार्थना करते है और विष्णु दशरथ के घर मे जन्म लेने और पृथ्वी का भार उतारने की घोषणा करते हैं।

तदनन्तर राम-जन्म, सीता-स्वयवर तथा वनवास की घटनाये है। द्वितीय अक मे वन-गमन और सीता-हरण तक की घटनाये तथा तृतीय अक मे सीता की खोज, हनुमान मिलन, सुग्रीव-मैत्री, लका-दहन तथा रावण का पराभव प्रदर्शित है। अन्त मे राम के अयोध्या आने पर उनका राज्याभिषेक होता है और रामराज्य की स्थापना होती है। भगवान् रामचन्द्रजी राक्षसो का वध कर पृथ्वी को अत्याचार से उबारने की प्रतिज्ञा पूर्ण करते हैं।

रामायण भूषण अर्थात् रामलीला नाटक (सन् १९०६), ले० भाई दयालु शर्मा, प्र० पारीख व्यास, लक्ष्मीनारायण प्रेस, मुरादाबाद, पात्र · पु० ३२, स्त्री ११, *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल अयोध्या का राजमहल, वन-मार्ग, पचवटी, लका।

इस धार्मिक नाटक मे सम्पूर्ण रामायण की कथा निहित है। वसिष्ठ मुनि राजा दशरथ को पुत्रेष्टियज्ञ के लिए परामर्श देते है चारो लडको का जन्म होता है। पुरवासियो के समारोह मे मगल गान होता है। बड़े होने पर विश्वामित्र राजा दशरथ से राम-लक्ष्मण को मागते हैं, राजा तथा मुनि का कथोपकथन होता है। तदुपरान्त मुनि का हठ करना और राम लक्ष्मण को साथ ले जाना, मार्ग मे अहल्या को तारना, उनका मुनि के साथ जनकपुर जाना, बाग मे राम और सीता का मिलन, धनुपयज्ञ का आयोजन, धनुपयज्ञ मे लक्ष्मण का क्रोध, धनुप का टूटना और परशुराम का आना, राम-सीता का विवाह, अयोध्या आगमन, मंथरा बादी और कैकेयी का वार्तालाप, कैकेयी द्वारा राम को वनवास और भरत के लिए राज्य का वरदान मागना माता से विदा लेकर राम का लक्ष्मण और सीता के साथ वनगमन, कौशल्या का विलाप, भरत का राम के वनगमन का समाचार पाकर विलाप करना, भरत की वन-यात्रा, भरत-निषाद वार्तालाप, सीता को अनसूया का समझाना, शूर्पणखा के कारण खरदूषण का राम पर आक्रमण, मृग मारने के लिए राम का लक्ष्मण को समझाकर जाना, लक्ष्मण का राम के पास पहुँचना, राम का घबडाना, राम का विलाप, सुतीक्ष्ण मुनि और शवरी की स्तुतियाँ, सुग्रीव राम मिलन और मित्रता, सीता की खोज मे वानरो को भेजना, बालिवध पर तारा का विलाप, अशोक वाटिका मे रावण सीता सवाद, त्रिजटा का स्वप्न, लका मे हनुमान का आगमन और मुद्रिका गिराना, हनुमान का लका जलाना, राम का समुद्र के किनारे शिवजी की स्तुति करना, अगंद का रावण की सभा मे जाना, मदोदरी रावण सवाद। युद्ध की तैयारी, लक्ष्मण को शक्ति-बाण लगना, हनुमान राम वार्तालाप, राम का विलाप, हनुमान का सजीवनी के लिए जाना और लौटने मे हनुमान का विलम्ब, राम का घबडाना और विलाप करना, हनुमान का आगमन और लक्ष्मण का सजीवनी से जीवित होना, लक्ष्मण का मेघनाद को मारना, सुलोचना-विलाप, अहिरावण का राम लक्ष्मण को देवी की बलि के लिए ले जाना और हनुमान द्वारा उनका उद्धार, रावण को मारकर राम जी का अयोध्या को प्रस्थान, पुरवासी तथा भरत का उनके स्वागत के

लिए आना, रामजी का स्वागत और अभिनन्दन, राम-प्रशसा के गीत गान, और शिव की स्तुति के साथ नाटक समाप्त होता है। सम्पूर्ण नाटक गीतबद्ध है।

राय पिथौरा (सन् १६५८, पृ० १७६), ले० भगवती प्रसाद वाजपेयी, प्र० श्री भारत भारती प्राइवेट लिमिटेड, दरियागज दिल्ली, *पात्र* पु० २०, स्त्री १०, *अक* . ३, *दृश्य* ८, १०, ११।
घटना-स्थल · अजमेर, कन्नौज, चित्तौड।

इस ऐतिहासिक नाटक मे महाराज पृथ्वीराज के जीवन का सर्वागीण स्वरूप चित्रित किया गया है। महान् पराक्रमी क्षमाशील राजा पृथ्वीराज अनेक बार मुहम्मद गोरी को पराजित कर हर बार उसे क्षमा कर देते है, किन्तु एक बार पृथ्वीराज भी मुहम्मद गोरी से पराजित हो जाते है। परिणामस्वरूप मुहम्मद गोरी उन्हे कैदी बनाकर बडी निर्दयता के साथ उनकी ऑखे निकलवा लेता है किन्तु राजकवि चन्द वरदाई बडी चतुरता से पृथ्वीराज के पास पहुँच कर उन्हे शव्द वेधी वाण चलाने का सकेत देता है। उसके सकेत पर पृथ्वीराज शव्द भेदी वाण चलाते है जिससे मुहम्मद गोरी की तत्काल ही समाप्ति हो जाती है।

रावण (सन् १६४८, पृ० ११२), ले० देवराज दिनेश, प्र० · प्रेम साहित्य निकेतन, दिल्ली, *पात्र* पु०११, स्त्री ८, *अक* . ३, *दृश्य* ७, ८, ८।
घटना-स्थल वन भूमि, पचवटी, लका, समुद्र, मैदान, वाटिका, युद्ध-भूमि।

इस पौराणिक नाटक मे महाबली रावण के छल, दम्भ और कुकृत्यो का दुष्परिणाम दिखाया गया है।

शूर्पणखा के अपमान का बदला लेने के लिए रावण मारीच के पास जाकर सीता-हरण की योजना बनाता है। रावण से प्रथम तो मारीच सहमत नही होता है, लेकिन धमकाने पर मान जाता है। सीता-हरण होता है और पत्नी को खोजते हुए राम जटायु से मिलते है। वे तपस्वी वेश मे अनेक मुनियो के पास जाते है, शबरी का आतिथ्य-ग्रहण करते है। हनुमान सुग्रीव से मित्रता एव वालि का वध करते है। इधर मन्दोदरी रावण के कृत्यो पर दुखी होती है। हनुमान सीता का पता पाकर अशोक वाटिका उजाडते तथा लका दहन करते है। राम रावण पर चढाई करते है। खरदूषण मारे जाते है। मेघनाद द्वारा लक्ष्मण को शक्ति लग जाती है। भेदी विभीपण के कारण रावण अपनी योजनाओ मे असफल रहता है। क्रुद्ध राम लका के सभी योद्धाओ के वध के साथ महावली शिव-भक्त रावण का वध करते है। मरते समय रावण बुद्धिमानी के साथ विभीपण राम-मैत्री के स्थायित्व की कामना करता है। वह शूर्णपखा से कहता है "तू मुझ से रूठ कर कहाँ चली गई थी। तेरे कारण ही मेरा नाम भी दुनिया वाले किसी न किसी रूप मे लेते ही रहेगे। तू ही मेरे उत्थान का कारण हुई।" तभी शिवजी के मुख से निकल पडता है कि 'हमने अपने युग का श्रेष्ठ मानव खो दिया।'

राष्ट्र का प्रहरी (सन् १६६५, पृ० ७२), ले० . निरजन नाथ आचार्य, प्र० : दि स्टूडेण्ट्स बुक कम्पनी, जयपुर, जोधपुर; *पात्र* पु० ४, स्त्री नही; *अक-रहित*, *दृश्य* : १०।
घटना-स्थल हिमालय, भारत-भूमि, पर्वत, मैदान।

इस ऐतिहासिक नाटक मे भारत की पवित्र भूमि पर चीन के क्रूर आक्रमणो का वर्णन है।

हिमालय भारतीय सस्कृति, साहित्य एव सभ्यता का उद्गम स्थल ही नही अपितु भारत के सिर का मुकुट तथा प्राण भी है। जव वधु का छद्मवेश धारण कर दुष्ट चीनी हिमालय को रक्त से लाल कर देते है तव सुप्त भारतीय-आत्मा राष्ट्रीय-सम्मान की रक्षा के लिए तडप कर जाग उठती है। हिमालय चिर समाधि से जागकर ऑखे खोलता है। उसकी पुकार पर सैनिक, किसान,

कलाकार, युवक-युवतियाँ आदि सम्पूर्ण भारतीय अपना सर्वस्व वलिदान कर अपनी मातृ-भूमि की रक्षा करते है। भारतीयो की एकता, साहस और वलिदान की उग्र भावना को देखकर चीनी समझकर पीछे हट जाते है। चीन दुस्साहस से हिमालय की अर्चना करता है लेकिन नगराज उसकी इस छलना से साव-धान होकर उससे मित्रता न कर रोषपूर्ण शब्दो मे दुत्कार देते है।

राष्ट्र धर्म (सन् १९६७, 'रंगब्रह्म' मे सग्रहीत), ले० : विनय, प्र० : संजीव प्रकाशन, मेरठ, *पात्र*, पु० २, स्त्री १, *अक-रहित*, *दृश्य* · २।
घटना-स्थल कक्ष।

इस गीति-नाट्य के अन्तर्गत आपत्का-लीन राष्ट्र-धर्म का प्रतिपादन किया गया है।

इसमे नाट्यकार ने यद्यपि गाधी के अहिसा सिद्धात, प्रेम और विश्वास पर अपनी आस्था व्यक्त की है तथापि मानव के आदर्शो की रक्षा के लिए युद्ध का भी समर्थन किया है। अत क्रान्ति के लिए मानव को आन्तरिक एवं वाह्य दो स्तरो पर युद्ध लडना होगा। तभी मानव एवं राष्ट्र का पूर्ण विकास हो सकता है।

राष्ट्र ध्वज (सन् १९३९, पृ० १०१), ले० : रघुवीरशरण 'मित्र'; प्र० भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ; पात्र · पु० १६, स्त्री ५ ; *अक* ३, *दृश्य* ५, ३, ३।
घटना-स्थल . विजय चौक, सूनी सडक, वैकुण्ठ, हिमालय, शयनागार, शीशमहल।

इस ऐतिहासिक नाटक मे देश के आपसी मतभेद को ही भारत की पराधीनता का मुख्य कारण वताया गया है। फिर राष्ट्र-प्रेमी सत्य और अहिसा के द्वारा देश को विदेशी दासता से मुक्त कराने के लिए अपने जी-जान की वाजी लगाकर आपसी फूट को दूर करते है। सच्चे भारतीय सपूत स्वर्ग मे भी अपने देश की दुर्दशा को नही सहन कर पाते। वे इसे दूर करने के लिए पुन. भारत मे ही अवतरित होते है। उनके त्याग और वलिदान से प्रसन्न होकर भगवान् लक्ष्मी और पार्वती को भी यही भेज देते है। अन्त मे सच्चे देश-प्रेमी अपने अथक प्रयास से राष्ट्र को एक ध्वज के नीचे सगठित कर लेते हैं।

राष्ट्रपिता बापू (सन् १९६२, पृ० ६७), ले० न्यादर सिह 'वेचैन', प्र० . देहाती पुस्तक भंडार, चावडी वाजार, दिल्ली ; *पात्र* पु० १२, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* ७, ५, ४।
घटना-स्थल दक्षिणी अफ्रीका, रेलगाडी का डिव्वा, कारागार, भारत के नगर।

इस ऐतिहासिक नाटक मे गाधीजी के दक्षिणी अफ्रीका मे किये गये सत्याग्रह आन्दो-लन को चित्रित किया गया है। गाधीजी वका-लत करने के लिए अफ्रीका जाना चाहते हैं पर उनके माता-पिता अग्रेजो से डरकर उन्हें जाने से रोकते है। गाधीजी अग्रेजो के शिकजे से देश को मुक्त कराने का निश्चय करते है। वे कस्तूरवा के साथ अफ्रीका जाते है। रास्ते मे अग्रेज गाधी और कस्तूरवा को रेल से उतार देते है और उनका सामान फेंक देते है। कतिपय अग्रेज गाधीजी को मारने का षड्यन्त्र रचते है किन्तु सभ्य अग्रेज गाधीजी की मदद करते हैं। गोरे अंग्रेज काले भारतीयो, किसानो और कुलियो पर भीषण अत्याचार करते हैं। गाधीजी किसानो एवं कुलियो को संगठित कर अहिसात्मक सत्या-ग्रह द्वारा अग्रेजो के जुल्मो का विरोध करते है। अग्रेज सैनिक भारतीय मजदूरो और किसानो को मार-मारकर काम करने के लिए विवश करते है। गाधीजी वडी दृढता से अग्रेजो का मुकावला करते है। सैटिक की पुत्री मिस सैलीन गाधी के विचारो से प्रभावित होती है और वह अग्रेजो के खिलाफ गाधी जी की मदद करती है। वह अनेक भारतीयों को जेल से रिहा करवाती है। और गांधी जी की सहायता के लिए अपने पिता का भी कत्ल करने को तैयार हो जाती है, किन्तु गाधीजी उसे अहिसा का उपदेश देते हैं।

दक्षिणी अफ्रीका मे अहिंसात्मक सत्याग्रह का सफल सचालन करने के बाद गाधी जी पुन भारत लौट आते है। उनके माता-पिता उन्हे भारत को आजाद करने का आशीर्वाद देते है।

रास झुमुरा (सन् १५९६ के आसपास, पृ०४), ले० · अज्ञात, माधवदेव के नाम से भ्रमवश प्रचलित; प्र० . हिन्दी विद्यापीठ, आगरा; द्वि० स० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, देहली, *पात्र* : पु० २, स्त्री २, *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल · वृन्दावन।

इस अकिया नाटक मे कृष्ण के रास झुमुरा नृत्य का वर्णन है।

मंगल-चरण के समाप्त होने के बाद रत्न-भूषणो से सुसज्जित कृष्ण के साथ राधा आकर श्रीकृष्ण से अधर पान का दान माँगती है। कृष्ण राधा की वचन-चातुरी समझ कर उन्हे सबसे अधिक सौभागिनी मानते है। राधा भी कृष्ण की महिमा का वर्णन करते हुए कहती है कि जिसका पार वेद नही पाते हैं उसकी महिमा को मैं एक पामर गोपनारी क्या जान सकती हूँ। वह पुन कृष्ण से हाथ जोडकर अधर-पान की भिक्षा माँगती है। राधा के वचन को सुनकर श्रीकृष्ण को परम सन्तोप होता है और वे राधा की मनोभिलाषा पूर्ण करने के लिए नृत्य करते हुए परम आनन्द प्राप्त करते है।

रास्ते, मोड़ पगडंडी (सन् १९५९, पृ०७४), ले० · कृष्ण किशोर श्रीवास्तव; प्र० राम प्रकाश एण्ड सस आगरा; *पात्र* पु० ४, स्त्री २; *अक* २; *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल घर का कमरा।

इस समस्यामूलक नाटक मे एक कर्त्तव्य-परायण पुत्र अमर और उसकी आधुनिका पत्नी सरिता के सघर्षमय जीवन की कथा चित्रित है। प्रेम-विवाह होने पर भी अमर के पितृ-प्रेम और सरिता की हृदयहीनतामय स्वार्थ-प्रवृत्ति के परिणामस्वरूप दोनो का दाम्पत्य जीवन दुखमय रहता है। अमर के पिता मुरारीलाल से अकारण उनकी पुत्रवधू सरिता घृणा करती है जिससे मुरारीलाल को गृह-त्याग करना पडता है। परन्तु पुत्र के विवाह की पहली वर्षगाठ पर उसका पितृ-हृदय पुत्र और पुत्र-वधू को आशीर्वाद देने के लिए व्याकुल हो उठता है। और वे वर्षगाँठ से एक दिन पूर्व उनके पास पहुँच जाते है। सरिता उत्सव से पूर्व ही उन्हे घर से निकाल देना चाहती है परन्तु पितृ-निष्ठ अमर उसका विरोध करता है। अन्त मे पितृ-प्रेम के सम्मुख पत्नी की स्वार्थपरता पराजित होती है और सरिता मुरारीलाल को रोक लेती है। इसमे हृदय-परिवर्तन का माध्यम बहन अचला है जो सरिता के प्रति अमर के हृदय मे उत्पन्न सन्देह को दूर करने और परिस्थिति को सभालने मे सहायक होती है।

रुक्मिणी परिणय नाटक (सन् १८९४, पृ० १०५), ले० · अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'; प्र० . भारत जीवन यत्रालय, काशी, *पात्र* पु० १६, स्त्री ५, *अक* ६, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल कुडलपुर का राजद्वार, द्वारिका पुरी का राजद्वार।

इस पौराणिक नाटक मे कृष्ण-रुक्मिणी-परिणय की कथा वर्णित है।

भीष्मक अपने पुत्र रुक्म और रुक्मेश तथा मन्त्री और सभासदो के साथ सभा मे बैठकर रुक्मिणी के योग्य वर के निश्चय के लिए परामर्श करते है। पुष्पोद्यान मे कृष्ण के प्रेम से वशीभूत रुक्मिणी विरह की तीव्रता से दुखी हो प्रलाप करती है। अनामा और अनाभिधाना नामक सखियाँ उसे धैर्य देती है। रुक्मिणी को अपने भाई के हठपूर्वक शिशुपाल के यहाँ टीका भेजने से बडी निराशा है। वह कृष्ण को पति-रूप मे पाना चाहती है और शिशुपाल को देखना भी नही चाहती। कृष्ण के ध्यान मे डूबी रुक्मिणी ब्राह्मण के हाथो गुप्त रूप से कृष्ण के नाम अपना प्रेम संदेश भेजती है।

पाँचवे अक मे विवाह का दिन आने पर रुक्मिणी चिंतित एवं दुखी होती है। वह

शिशुपाल से विवाहित होने की अपेक्षा प्राण-त्याग देना श्रेयस्कर समझती है। इसी बीच द्वारिका से एक ब्राह्मण उसके पास पहुँचकर यह सदेश देता है कि कृष्ण बलराम के साथ एक बडी सेना लिये उद्धारार्थ आ रहे है। यह सुनकर रुक्मिणी प्रसन्न होती है। कृष्ण को ससैन्य आया हुआ जानकर जनवासे मे शिशुपाल के साथ बैठे जरासध, शाल्व, विदूरथ, रुक्म, दतवक्र आदि अनिष्ट की आशका से परामर्श करते है। जरासध कृष्ण को परमवीर मानता है पर अन्य उसका विरोध करते है। तदनतर द्वारपाल देवी-पूजन के निमित्त रुक्मिणी को नगर के बाहर जाने की सूचना देता है। शिशुपाल की आज्ञा से उसके योद्धा राजनदिनी की रक्षा के लिए जाते है।

देवी पूजन को जाती हुई और सखियो के साथ कृष्ण-ध्यान मे डूबी रुक्मिणी के पीछे-पीछे योद्धागण जाते है। वहाँ अकस्मात् कृष्ण एक रथ मे पहुंचकर रुक्मिणी की चिता दूर करते है और उसे रथ पर बिठाकर भाग निकलते है। रुक्मिणी-हरण की सूचना पाकर शिशुपाल अपनी वीरता का बखान करता हुआ कृष्ण के वध के लिए वीरो को प्रोत्साहित करता है। यादवसेना को शत्रु सेना के प्रतिरोध का आदेश दे कृष्ण रुक्मिणी-सहित रथ मे द्वारका की ओर बढते हैं। दोनो सेनाओ मे घमासान युद्ध मचता है और बलराम के मूसलाघात से शिशुपाल, सात्यिकी के खड्ग-प्रहार से शाल्व, और कृतवर्मा की मार से दतवक्र पराजित होते है। शिशुपाल की सेना भाग चलती है। फिर जरासध-बलराम युद्ध मे जरासध मारा जाता है। यह स्थिति देख रुक्म अपनी सेना के साथ धावा करता है। कृष्ण-रुक्म युद्ध मे कृष्ण उसे शस्त्ररहित कर ज्यो ही तलवार से मारने को उद्यत होते है, रुक्मिणी उन्हे रोक देती है और दड-स्वरूप रुक्म के सिर और दाढी-मूँछ के बाल मुँडवा कर कृष्ण उसे रथ से बाँध देते है। तत्पश्चात् बलराम के अनुरोध से उसे मुक्त कर कृष्ण द्वारका आते है और रुक्मिणी के साथ विधि-वत् विवाह करते है।

रुक्मिणी-मंगल (सन् १९२८, पृ० १४८), ले० प० राधेश्याम कथावाचक, प्र० श्री राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, पात्र पु० १२, स्त्री ८, अक ३, दृश्य ८, ७, ३। *घटना-स्थल* द्वारिका, मथुरा।

यह पौराणिक नाटक कृष्णावतार नाटक का दूसरा भाग है। इसमे भगवान् श्रीकृष्ण का कसवध के बाद का चरित्र चित्रित किया गया है। नाटक मे श्रीकृष्ण के चरित्र की उपयोगिता के भिन्न-भिन्न पहलुओ पर प्रकाश डाला गया है।

रुक्मिणी-हरण (सन् १९४१ के आसपास पृ० ४१), ले० शकरदेव, प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, *पात्र* पु० १६, स्त्री ५, *अक-दृश्य-रहित*। *घटना-स्थल* द्वारिका, कुण्डन नगर, विदर्भ।

नाटक का प्रारम्भ नान्दी मे होता है। एक श्लोक मे शिशुपाल के विजेता तथा रुक्मिणी के साथ पाणिग्रहण करने वाले कृष्ण को नमस्कार किया गया है। कृष्ण अपने सखा उद्धव के साथ रगशाला मे प्रवेश करते है। तदुपरान्त सखियो-सहित रुक्मिणी का आगमन होता है। रुक्मिणी नृत्य करके एक पार्श्व मे खडी हो जाती है। उसी समय कुण्डनपुर से सुरभि नाम का भिक्षु आता है। रुक्मिणी की सौन्दर्य-सुषमा का वर्णन सुन कर कृष्ण के हृदय मे रुक्मिणी के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है। हरीदास नामक एक भाट द्वारिका से कुण्डनपुर आता है और राजनन्दिनी रुक्मिणी से श्रीकृष्ण के रूप-गुण की महिमा का वर्णन करता है। रुक्मिणी भाट को पुरस्कार देकर विदा करती है। इसी समय रुक्मिणी के पिता भीष्मक मत्रिमडल के सहित रगमच पर आते है और अपने मंत्रियो से सौभाग्यकाक्षिणी रुक्मिणी के योग्य वर कृष्ण की चर्चा करते है। राजमहिषी शशिप्रभा राजा का समर्थन करती है और कृष्ण को बुलाकर कन्यादान करना चाहती है।

रुक्मिणी का सहोदर भाई रुक्मी कृष्ण को

अत्याचारी, पापी घोषित करते हुए अपनी भगिनी का विवाह चेदिराज शिशुपाल से करने को सहमत होता है। शिशुपाल सुसज्जित होकर कुण्डनपुर आ धमकता है। रुक्मिणी यह सुनकर चिन्तातुर होती है और भगवान् कृष्ण को स्मरण करती है। वह अपने हितैषी वेदनिधि ब्राह्मण को कृष्ण के पास भेजती है। कृष्ण द्वारिकापुरी मे वेदनिधि का आगमन सुनकर उसका पद-प्रक्षालन करते है और रुक्मिणी का पत्र पढते है। रुक्मिणी के करुणापूर्ण पत्र से कृष्ण के हृदय मे आतरिक व्यथा होती है और वह रथ सजा कर कुण्डनपुर पहुँचते है। राजमडली मे कृष्ण की निराली छटा देखकर अन्य राजा हतप्रभ हो जाते हैं, किन्तु जरासध अपने अभिमान मे चूर रहता है। युद्ध निश्चित हो जाता है और बलदेव सेना लेकर द्वारिका से चल पड़ते है। बलभद्र और जरासध का युद्ध होता है। कृष्ण शिशुपाल का किरीट काटकर समग्र शत्रु-सेनाओ को दूर भगा देते है और रुक्मिणी को लेकर द्वारिका प्रस्थान करते है। रुक्मी कृष्ण को युद्ध के लिए ललकारता है। दोनो का युद्ध होता है। जब कृष्ण रुक्मी का शीश काटते है तो रुक्मिणी भाई की रक्षा के लिए हाहाकार मचाती है। कृष्ण रुक्मी के प्राणो की तो रक्षा करते है लेकिन उसका केशमुण्डन करके द्वारिका लौट आते है। द्वारिका मे भीष्म अपने हाथो रुक्मिणी का कन्यादान करते है। ब्रह्मा, नारद आदि विवाह मे सम्मिलित होते है। शकर नृत्य करते है।

अभिनय-आसाम के एकशरणिया सत्र मे अनेक बार अभिनीत। सर्वप्रथम जगतानन्द के द्वारा बरपेटा (आसाम) के समीप आयोजित सन् १५४१ के आसपास।

रुपया तुम्हे खा गया (सन् १९५५, पृ० ८३), ले० : भगवतीचरण वर्मा, प्र० : मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, *पात्र* . पु० ७, स्त्री २; *अक* . ३; *दृश्य* ' ३, २, २।
घटना-स्थल : शयनागार, लान, दफ्तर।

नाटक का नायक मानिकचन्द उस मानव का प्रतीक है जो रुपये को देवता मान कर रात-दिन उसकी पूजा करता रहता है। मानिकचन्द दस हजार रुपये की चोरी करता है और समझता है कि वह दस हजार रुपये खा गया। वह इसी रुपये से व्यापार करता है। ब्लैक के धन से वह करोडपति बन जाता है। मानिकचन्द अपने पैसे की धुन मे सबको भुला देता है। वह अपनी पत्नी, पुत्र और पुत्री सभी की इच्छाओ का दमन करता है। एक दिन मानिकचन्द को किशोरीलाल आकर बताता है कि "मानिकचन्द, उस दिन जब तुम दस हजार रुपया चुराकर लाये थे तब तुमने समझा था कि तुम रुपया खा गये लेकिन तुमने गलत समझा था। मै कहता हूँ कि तुमने रुपया नही खाया था रुपया तुम्हे खा गया। तुम अपने जीवन को देखो, तुममे ममता नही, दया नही, प्रेम नही, भाव नही। तुम्हारे अन्दर वाला मानव मर चुका है। आज तुम्हारे अन्दर अर्थ का पिशाच घुस गया है।"

मानिकचन्द का पुत्र, उसकी पत्नी, उसकी लड़की, उसके नौकर-चाकर कोई भी तो उसके नही है। हरएक व्यक्ति की नजर उसके रुपयो पर है। अन्त मे मानिकचन्द भी अनुभव करता है कि वह व्यक्ति की हैसियत से मर गया है। दस हजार रुपया चुराने से पहले मानिकचन्द गरीब भले ही रहा हो, पर भावना का प्राणी था। दूसरे उसके थे, वह दूसरो का था। बीमारी मे पड़ा हुआ बीस वर्ष बाद वाला मानिकचन्द एक नितान्त अकेला और दयनीय प्राणी है। इसे वह स्वयं अनुभव करता है।

रूपलक्ष्मी अंबपाली (सन् १९५८, पृ० ९१), ले०. कृष्णचन्द शर्मा 'भिक्खु'; प्र० : साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद, *पात्र* : पु० १२, स्त्री ३, *अक-रहित*, *दृश्य* ११।
घटना स्थल . वैशाली का राजउद्यान।

इस ऐतिहासिक नाटक मे युवती अंबपाली की सुन्दरता का परिचय मिलता है।

वैशाली के राजउद्यान मे अंबपाली एक सुन्दरी एव रूपवती युवती है। उदामी तथा कालमित्र अंबपाली की सुन्दरता पर मुग्ध होकर उसको अपनी पत्नी बनाना चाहते है। दोनो युवको मे आपसी मतभेद के कारण

लड़ाई होती है जिसमे अंबपाली के वृद्ध पिता की मृत्यु हो जाती है। अंबपाली को राज-दरबार मे ले जाया जाता है। राजाज्ञा से अंबपाली को लिच्छवियो की सामान्य पत्नी घोषित किया जाता है। मगध सम्राट बिंबसार भी अंबपाली की सुन्दरता पर मुग्ध हो जाता है। वह गुप्त रूप से अंबपाली से मिलने लगता है। कुछ दिन बाद अंबपाली के गर्भ से विमलकाण्डव नामक एक पुत्र पैदा होता है। विमल गौतम बुद्ध के धर्म तथा उपदेशो का अनुयायी हो जाता है। इधर अंबपाली की सुन्दरता का यश सुनकर बिंबसार का पुत्र अजातशत्रु अपने मुख्य राजनीतिक पडित वस्सकार की सहायता से उसका राज्य की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी बनने का विरोध करता है। वस्सकार उसकी सुन्दरता पर मुग्ध होकर अंबपाली से अपनी हार मान लेता है। मगध-सम्राट् तथा लिच्छविगण की लगातार लड़ाई चलती रहने से अंबपाली बडी दुखी होती है और वह अपनी सारी सम्पत्ति आहत हुए लिच्छवियो के लिए समर्पण कर देती है। अन्त मे आहतो की दशा देखकर वह रथ पर सवार होकर बडी तेजी से भागती है। रास्ते मे उसके पुत्र विमल के आवाज लगाने पर वह रथ रोक देती है और अपने पुत्र के कहने पर गौतम बुद्ध की शरण मे जाती है जहाँ उसे 'मज्झिमा परिपदा' का मार्ग बताया जाता है।

रूपवती नाटक (सन् १६०६, पृ० ३१), ले० परमेश्वर मिश्र, प्र० सिद्धेश्वर प्रेस बनारस, *पात्र* पु० ११, स्त्री ४, *अक* ६, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल मेवाड।

इस ऐतिहासिक नाटक मे मेवाड के राजपूतो की वीरता, साहस और उदारता प्रदर्शित है। कुटिल औरंगजेब बलात् रूपनगर की राजकन्या को वरने जाता है। राजकुमारी इस दुर्घटना से व्याकुल हो, उदय पुर के राणा की शरणागत होती है। राणा अपने पराक्रम से राजकुमारी की रक्षा करते हैं और चूडावत सरदार अपने पराक्रम से औरंगजेब का रग फीका कर देते है।

रेणुका (वि० १६८७, पृ० ३५), ले० मगल प्रसाद 'विश्वकर्मा', प्र० साहित्य सदन चिरगाँव झाँसी, इस सग्रह मे पद्य रूपक सवादो के माध्यम से विरचित है। प्रत्येक पद्य रूपक मे २ या ३ पात्र ह।
घटना स्थल राजमहल का एक कमरा।

इस पौराणिक नाटक मे उत्तरा और अभिमन्यु का पुराण-प्रसिद्ध पति-पत्नी का वह सम्भापण प्रस्तुत किया गया है जो अभिमन्यु के रण-प्रयाण मे पूर्व उनके मध्य होता है। अभिमन्यु उत्तरा से विदा माँगता है परन्तु भावी दुर्शका से आक्रात उत्तरा उसे विदा नही देना चाहती। वीर अभिमन्यु उसे विजय का विश्वास दिलाकर रणक्षेत्र मे चला ही जाता है। 'श्रीकृष्ण और सुदामा' मे कृष्ण सुदामा को विस्मरण करने के अपराध के लिए क्षमा माँगते है। अतीत की उन मधुर स्मृतियो से आह्लाद पाते हैं जो गुरुआश्रम के जीवन को पुनर्जीवित कर देती है तथा उस वेणुवादन का स्मरण करते है जिसे सुन सकल जड-चेतन-प्रकृति स्तब्ध हो जाया करती थी। 'राधा' मे राधा और कृष्ण के पारस्परिक प्रेम की अनन्यता का काव्यमय चित्रण है तो 'लोगी' मे एक राजकुमार और भील-कन्या के प्रणय का वर्णन है जिससे मृगया मे भटके हुए राजकुमार की भेट होती है पर जिसे वह राजा के आदेश से फिर आने का वचन देकर छोड जाता है। 'शाह-जहाँ' मे मुमताज की मृत्यु पर शाहजहाँ के शोक, औरगजेब द्वारा वन्दी बनाए जाने और जहाँआरा द्वारा बूढे वन्दी पिता की सेवा की कथा पद्यबद्ध है। इसमे सम्भापण द्वारा शाहजहाँ अपनी पुत्री से औरगजेब की निठुरता, अपने पुत्रो की मृत्यु और मुमताज महल के प्रेम का वर्णन करता हुआ ताजमहल की ओर मुँह कर मर जाता है। 'देवदासी' की कथा एक ऐसी निरीह कन्या की कहानी है जो बाल्यावस्था मे श्रीकान्त नामक राजकुमार के प्रति आकृष्ट होती है जो मन्दिर मे अपनी विमाता द्वारा उत्पीडित होकर रहने लगा था। वह बार-बार समर्पण के लिए तत्पर होती है पर ठीक मौके पर उसकी अन्तरात्मा उसे रो-

देती है। इन दोनो के प्रणय की सूचना जब मन्दिर के आचार्य को मिलती है, तो वह श्रीकान्त की भर्त्सना करते है पर देवदासी इसके लिए स्वय को अपराधिनी बताती है।

'चित्रलेखा' मे चित्रलेखा और उषा नामक दो सखियो का संवाद प्रस्तुत किया गया है। उषा स्वप्न मे किसी राजकुमार को देख प्रणयविद्ध हो उसके दर्शन के लिए आतुर होती है। उसकी सखी चित्रलेखा उसके मुख से राजकुमार का रूप-वर्णन सुन उसका चित्र अकित करने के लिए प्रस्तुत हो जाती है यदि उषा उसे अपना प्रेम-रग प्रदान करे।

रेवा (सन् १९५७, पृ० १७७), *ले०* चन्द्रगुप्त विद्यालकार, *प्र०* राजपाल ऐण्ड सन्स, दिल्ली, *पात्र* पु० १०, स्त्री २, *अक* ५; *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल समुद्री चट्टान, कुमारी द्वीप।

विदेशो मे फैली हुई भारतीय सस्कृति का इस ऐतिहासिक नाटक मे चित्रण किया गया है। गुरुदेव रेवा को उसके जीवन का रहस्य बताते हुए कहते है कि एक विदेशी युवक ऊँचे पालो वाला जहाज पर आयेगा, वही तुम्हारा पति होगा। यह कह कर वे समुद्र की लहरो मे अन्तर्धान हो जाते है। अब रेवा सुबह-शाम शिवमन्दिर मे आकर अपने प्रेमी की प्रतीक्षा करती है।

इधर पुण्डरीक के बहुत समझाने पर भी यशोवर्मा शस्त्रबल से विश्व-विजय करने चल देता है। चम्पा को जीत लेने पर भी अग्निचूर्ण (बारूद) के कारण यशोवर्मा हार जाता है। वह जनार्दन के साथ दर-दर की ठोकरे खाता फिरता है। इसी समय कृष्ण-वर्मा यशोवर्मा के साथियो और स्वय अपने पिता को भी कारागार मे बद करके काम्बोज का राज अपहरण कर लेता है।

कुमारी द्वीप मे यशोवर्मा की भेट मकरन्द से होती है। मकरन्द उनकी सहायता के लिए भारत की ओर जहाज से चल पडता है। परन्तु वह भारत न पहुँचकर एक स्वर्णिम अपरिचित नगरी आशाद्वीप मे जा पहुचता है। रेवा शिवमन्दिर की चट्टान से ऊँचे पालो वाले जहाज को आते देखकर समझ जाती है कि मेरा चिर प्रतीक्षित प्रेमी आ रहा है। रेवा अपने चिर-सचित उल्लास एव उमग के साथ युवराज का राजकीय स्वागत करती है। रेवा अपने महलो मे युव-राज को रखकर अपने हृदय का समस्त प्रेम उन पर लुटा देती है। किन्तु द्वीप निवासियो को यह बात पसन्द नही आती। वे रेवा से द्वीप की प्रतिष्ठा पर कलक न लगाने का अनुरोध करते है। रेवा विवश होकर गभीर और शोकातुर नयनो से अपने प्रेमी को विदा देती है। किन्तु एक बार पुन: भविष्य मे मिलने की प्रार्थना करती है।

यशोवर्मा रेवा से अग्निचूर्ण का उपहार लेकर काम्बोज लौटता है। कृष्णवर्मा अपने साथियो द्वारा ही मार दिया जाता है। पुण्ड-रीक इन्दिरा के साथ यशोवर्मा की सहायता करने के लिए विदेश यात्रा पर निकल पडता है। कुमारीद्वीप मे उन्हे मकरन्द से सब मालूम होता है। जब वे सब काम्बोज पहुँचते है तो उस समय यशोवर्मा का राज्याभिषेक हो रहा होता है। पुण्डरीक के कहने पर यशोवर्मा इन्दिरा को अपनी साम्राज्ञी बना लेता है किन्तु रेवा अब भी अपने प्रियतम की, मदिर के चट्टान पर बैठी-बैठी, प्रतीक्षा करती रहती है। एक दिन भयकर समुद्री तूफान और भूकम्प से समस्त आशाद्वीप उसके निवासी और रेवा काल के गाल मे समा जाते है। पुण्डरीक रेवा से पुन एक बार मिलने के लिए आशाद्वीप की ओर चल देता है। वहाँ वह सागर की अथाह जल-राशि के बीच रेवा को न पाकर अत्यन्त दुखी होता है।

रेवा प्रांगण (सन् १९५७, पृ० १४८), *ले०* लीला अवस्थी; *प्र०* . अनिल प्रकाशन, देवनगर, दिल्ली, *पात्र* पु० १०, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* १०, ६, १०।
घटना-स्थल गगातट, मन्दिर, मैदान, पर्वत, युद्धभूमि।

रेडियोरूपक शैली मे सास्कृतिक तथा ऐतिहासिक स्थलो पर प्रकाश डालने वाला

नाटक है। इसमे नर्मदा, चौरागढ, रामगिरि, पवनार, असीरगढ, रतनपुर तथा त्रिपुरी का सास्कृतिक वर्णन है। नर्मदा का प्रसिद्ध तट अनेक मुनियो, तपस्वियो, बौद्धो तथा महन्तो की कहानी छिपाये पडा है। अनेक मन्दिरो से अलकृत यह तटवर्ती प्रदेश तीर्थस्थान रहा है। चौरागढ तथा नर्मदा के पास अनेक बार राजाओ ने आक्रमण किए है। अकबर तथा रानी दुर्गावती का कलह-केन्द्र भी यही रहा। रामगिरि, कालिदास के अनेक दृश्यो का केन्द्र रहा है।

इसमे अनेक घटनाओ का जमघट है। रेडियो-नाटक मे एक दृश्य दूसरे दृश्य से पर्दे द्वारा पृथक् नही किया जा सकता अत अन्तराल सगीत द्वारा दृश्य विभाजन पूरा किया गया है।

रेशमी रूमाल (वि० १९८०, पृ० ६४), ले०: रामसिहवर्मा, प्र० एम० आर० बेरी ऐण्ड कम्पनी, कलकत्ता, पात्र पु० ५, स्त्री ५, अक-रहित, दृश्य ९।
घटना-स्थल मकान, महल का बाहरी भाग, मार्ग, बगीचा।

इस सामाजिक नाटक मे यह दिखाया गया है कि प्रेमपथ मे एक क्षुद्र बात भी भयंकर रूप धारण कर लेती है।

रुपये-पैसे के लोभी वकील शैटो अपनी पुत्री शान्ति का विवाह वकीलो के धनाढ्य दलाल निताई कुण्डू से करने के लिए वचन-बद्ध होते है किंतु उनकी पत्नी राजलक्ष्मी और पुत्री शान्ति कुण्डू से विवाह करने के पक्ष मे नही है। शान्ति जामिनीकान्त से विवाह करना चाहती है। अपने पिता के हठ धर्म से दुखी शान्ति जामिनी का दिया हुआ रेशमी रूमाल जिस पर "जीवनपर्यन्त मै तुमसे प्रेम करू—" जामिनी लिखा था, क्षुब्ध होकर फेक देती है। वह रूमाल पास के एक गृहस्थ रामलोचन की पत्नी अन्ना को मिल जाता है। अन्ना जामिनी शब्द के आधार पर यह समझती है कि उसका पति जामिनी से प्रेम करता है, उधर उसका पति भी अपनी पत्नी पर सदेह करता है। सयोग से प्यार का मारा जामिनी उसके घर आता है और भ्रम मे यह जानकर कि उसकी प्रेयसी शान्ति राम से शादी कर चुकी है, माथा पीट कर बेहोश हो जाता है। राम की पत्नी उसे जल पिलाकर होश मे लाती है किन्तु राम के मन मे सन्देह रह ही जाता है।

एक दिन शैटो कुण्डू को शराबियो एव नर्तकियो की सभा मे आनन्द लेते देखकर प्रतिज्ञा करते है कि वह अपनी पुत्री का विवाह ऐसे दुश्चरित्र से नही करेगे। अब वे जामिनी के साथ ही अपनी पुत्री का हाथ पीला करना चाहते है। उधर राम जामिनी के रेशमी रूमाल को लेकर शैटो के पास आता है और कहता है कि जामिनी छिपकर मेरी पत्नी से मिलता है, उस पर अदालती कार्यवाही की जाय। वह अपने उस्ताद से मिलकर जामिनी को मार देना चाहता है किन्तु उस्ताद ऐसा नही करता। सामने बात करने पर जामिनी राम से कहता है कि अन्ना तो मेरी मा के समान है। उन्होने मूर्छितावस्था मे मेरे प्राण बचाये है। राम को दुख होता है कि व्यर्थ ही वह जामिनी के पीछे पडा था। वह शैटो के घर की ओर चल पडता है। इधर शैटो अपनी पुत्री का विवाह दूसरे किसी लडके से करना चाहते है, किन्तु उसका मित्र राम बताता है कि जल्दबाजी मे कुछ भी करना ठीक नही क्योकि शान्ति जामिनी को छोडकर किसी को नही चाहती। शान्ति की प्यारी सखी के इस रहस्योद्घाटन से कि "ओ हो! रूमाल तो शान्ति ने ही पास के मकान मे एक दिन दुखी होकर फेका था," सब कुछ साफ हो जाता है। दोनो के बीच रेशमी रूमाल रखकर विवाह करा दिया जाता है।

रोटी और बेटी (सन् १९६०, पृ० ८२), ले० रमेश मेहता, प्र० चौ० बलवन्तराय ऐण्ड क० दिल्ली, पात्र पु० ७, स्त्री २, अक : ३।
घटना-स्थल गॉव, मकान, स्कूल, न्यायालय।

रविदास चमार का पुत्र राजू घोर परिश्रम के फलस्वरूप प्रतियोगिता मे प्रथम-

आता है और न्यायाधीश नियुक्त हो जाता है। पुत्र की इस प्रगति की सूचना प्राप्त कर रविदास अपनी पत्नी गगो के साथ प्रसन्नता से फूले नही समाते। रविदास की दत्तक पुत्री सोनिया राजू से प्रेम करती है और गगो भी दोनो के विवाह का निश्चय किए हुए है। प्रेमस्वरूप जज का त्यक्त पुत्र मस्तराम सोनिया का प्रेमी है। सोनिया उसके स्वप्नो की देवी है। सोनिया उसके प्रेम का उत्तर घृणा एव फटकार द्वारा देती है। राजू मस्तराम का वचपन का साथी है। राजू नलिनी से प्रेम करता है। वह इस रहस्य को मस्तराम पर प्रकट करता है और यह बताता है कि वह उससे विवाह करने की प्रतिज्ञा कर चुका है।

सूदखोर मोची सुखपाल अपनी वेटी मुलिया की सगाई राजू से करने के लिए रविदास से प्रार्थना करता है किन्तु रविदास उसके समस्त प्रलोभनो तथा प्रार्थना को ठुकरा देता है। इस अपमान का प्रतिशोध लेने के लिए सुखलाल नलिनी को रविदास के घर ले आता है और यह प्रत्यक्ष दिखाता है कि उसका भावी पति राजू चमार का बेटा है और चमार रविदास का मकान सुखलाल का धरोहर है। कुलीन नलिनी वस्तु-स्थिति का बोध होने पर राजू का अपमान करती है। इसी बीच मस्तराम इस रहस्य का उद्घाटन करता है कि वह नलिनी के चाचा प्रेमस्वरूप का त्यक्त पुत्र है। नलिनी यह सुनकर लज्जित हो जाती है और अपने चाचा से इस कथन की पुष्टि करती है। प्रेमस्वरूप ५०० रुपये मस्तराम को इसलिए भेंट करते है कि वह यह कहे कि उसने नलिनी से जो कुछ कहा था वह मदिरा के नशे मे कहा था और वह सब मिथ्या है। परन्तु मस्तराम इस भेंट को ठुकरा देता है और उसका स्वाभिमान जागृत हो उठता है।

नलिनी अपनी माँ से मस्तराम के कथन की पुष्टि करती है तदुपरान्त राजू से क्षमा प्रार्थना करने जाती है। राजू के कहने पर प्रेमस्वरूप का मस्तराम को प्रेषित पत्र लेकर नलिनी लौट जाती है और राजू से विवाह का निश्चय करती है। जब यह समाचार हिन्दू समाज के ठेकेदारो को ज्ञात होता है तो सनातनी नेता पंडित हीरानन्द जी अनेक अनुयायियो को साथ लेकर इस विवाह के विरोध मे रविदास के मकान के सामने प्रदर्शन करता है।

प्रदर्शनकारी रविदास के घर को जला-कर राख कर देने की धमकी देते है। पुलिस इस्पेक्टर इस वलवे को दवाने का प्रयत्न करता है। इसी समय प्रेमस्वरूप स्वयं वहाँ उपस्थित होते है और उन्हे देखकर सब प्रदर्शनकारी खिसक जाते हैं।

प्रेमस्वरूप रविदास से नलिनी तथा राजू की सगाई का निवेदन करता है। दोनो प्रसन्नतापूर्वक वर्ण-भेदभाव को मिटाकर दो कुलो का रोटी और बेटी का सम्वन्ध स्थापित करते है।

ल

लंका दहन (सन् १९४०, पृ० ६४), ले० प० शिवदत्त मिश्र, प्र० ठाकुर प्रसाद ऐण्ड सस, बुकसेलर, वाराणसी; *पात्र* पु० ८, स्त्री ४, अक-रहित; *दृश्य* १७।
घटना-स्थल जंगल, आश्रम, किष्किंधा पर्वत, अशोक वाटिका।

इस धार्मिक नाटक मे सीताहरण से लेकर लका दहन तक की कथा वर्णित है। भगवान् राम, लक्ष्मण और सीता अपने आश्रम मे बैठे है। दुष्ट मारीचि मृग का भेष धारणकर वहाँ आता है। सीता के अनु-रोध पर राम उसी सुनहरे मृग की खाल लेने

जाते है। राम के वाण-सधान करने पर मृग सहसा लक्ष्मण-सीता की आवाज लगाता है। सीताजी लक्ष्मण को भाई की मदद के लिए भेजती है। लक्ष्मण के चले जाने पर दुष्ट रावण विप्र-भेष मे सीता का हरण कर लेता है। राम-लक्ष्मण आश्रम मे सीता को न पाकर व्याकुल होते है। दोनो भाई सीता को खोजते-खोजते किष्किन्धा राज्य मे पहुँच जाते है। वहाँ पर हनुमान की मदद से वानर-राज सुग्रीव से राम की मित्रता होती है। राम की गाथा सुनकर हनुमान-सहित सभी बन्दर सीता की खोज मे निकल पडते है। हनुमान विभीषण की मदद से अशोक वाटिका मे सीता के पास जाकर राम का संदेश सुनाते है और अक्षयकुमार सहित बहुत सारे राक्षसो का वध करते है। मेघनाद हनुमान को ब्रह्म-फाँस मे बाँधकर रावण के पास ले जाता है। दुष्ट रावण राक्षसो द्वारा हनुमान की पूँछ मे आग लगवा देता है जिसके फलस्वरूप हनुमानजी सारी लका को जलाकर विध्वस कर देते है।

लंकेश्वर (वि० २०१२, पृ० १०६), ले० अम्बिका प्रसाद दिव्य, प्र० साहित्य सदन, अजयगढ, *पात्र* पु० १०, स्त्री ४, *अक* ७, *दृश्य* ५, १, ४, ५, ५, ६, १।
घटना-स्थल लका नगरी।

यह धार्मिक नाटक रामायण की कहानी के आधार पर लिखा गया है। इसमे रावण के चरित्र को प्रधानता दी गई है, परन्तु राम के चरित्र को और भी उज्ज्वल बनाने की चेष्टा की गई है। युद्ध मे रावण की पराजय होती है। वह अपनी हार का एकमात्र कारण अपने भाई विभीषण को मानता है। यथार्थ रूप मे राम विभीषण के ही षड्यन्त्र से रावण पर विजय प्राप्त करते है। इस दशा मे विभीषण का चरित्र बहुत ही गिर जाता है। किन्तु विभीषण भी ससार के हित के लिए ही ऐसा करने को तत्पर होता है जिससे उसका सारा दोष छिप जाता है।

लक्ष्मीबाई (सन् १९६१, पृ० ११२), ले० कचनलता सब्बरवाल, प्र० कौशाम्बी प्रकाशन दारागज, प्रयाग, *पात्र* पु० २६, स्त्री ३; *अक*: ४, *दृश्य* ७, ७, ८, ३।
घटनास्थल झाँसी, वन, झोपड़ी।

इस ऐतिहासिक नाटक मे सन् ५७ के प्रथम स्वाधीनता-सग्राम की गाथा का नाटकीय चित्रण किया गया है। लक्ष्मीबाई (मनु) बचपन से ही शक्ति, शील की शिक्षा प्राप्त करती है। ग्वालियर-नरेश गगाधरराव से विवाह होने के बाद तो वह और भी अधिक तेजस्विनी एव शक्तिशालिनी हो जाती है। पति के देहान्त के बाद लक्ष्मीबाई अग्रेजो के झासी राज्य हडपने के षडयन्त्र को विफल कर देने के लिए जी-जान से लडती है। देश एव धर्म की रक्षा के लिए यह वीरागना अग्रेजो की सेना से लडती हुई वीरगति प्राप्त करती है। विश्वासपात्र रामचन्द्र देशमुख के द्वारा वन मे बनी झोपडी मे लक्ष्मीबाई का दाह-सस्कार होता है।

लक्ष्मी सेवा सदन (सन १९३६, पृ० ९६), ले० अनुसूया प्रसाद पाठक, प्र० राष्ट्र-भाषा पुस्तक भडार, कटक, *पात्र* पु० ९, स्त्री ५, *अक* ५, *दृश्य* २७।
घटना-स्थल भजनी का घर, सभा मण्डप, हनुमानजी का मन्दिर, रणवीर का घर।

इस सामाजिक नाटक मे ग्राम-सगठन तथा मानव-शिक्षा पर बल दिया गया है। लेखक ने गाँवो मे फैले छुआछूत, भ्रष्टाचार, ऊँच-नीच के भेदभाव तथा विधवाओ की दुर्दशा आदि का चित्रण किया है। भजन की पत्नी लक्ष्मी को गाँव वालो के षड्यन्त्र से आघात लगता है जिससे उसकी मृत्यु हो जाती है। परिणाम-स्वरूप प० नरहरि लक्ष्मी की याद मे 'लक्ष्मी सेवा सदन' तथा 'विद्या मन्दिर' की स्थापना करते है। जमीदार रणवीरजी दिल खोलकर दान देता है और विधवा विवाह कर एक आदर्श स्थापित करता है। 'लक्ष्मी सेवा सदन' मे गाँव की स्त्रियाँ कार्य करके स्वावलम्बी बनना सीखती है। विद्या-मन्दिर मे गाँव के बालकों को शिक्षित करने के अतिरिक्त प्रौढ़ो को भी

शिक्षा दी जाती है। लोगो को शिक्षित एव स्वावलम्बी बनाने के लिए विद्या-मन्दिर तथा लक्ष्मी-सेवासदन की ५२ शाखाएँ खोली जाती है। अन्त मे मानवतावादी विचारो को प्रधानता देते हुए परस्पर एक-दूसरे पर विश्वास करने की शिक्षा दी गई है।

लखपती (सन् १९३६, पृ० ८५), ले० सतीश डे, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, पात्र पु० ६, स्त्री २, अक २, दृश्य १, २।
घटना-स्थल चाँद का मकान।

इस सामाजिक नाटक मे वेश-परिवर्तन द्वारा हास्य उत्पन्न किया गया है। चाँद कुमार और सूरज बेकारी के कारण मकान मालिक बनवारी लाल, नाई कल्लन और पठान काबली खाँ के कर्जदार हो जाते है। एक दिन तीनो अपना रुपया वसूलने के लिए चाँद के घर जाते है। चाँद और सूरज उनसे बचने के लिए स्त्री-वेश धारण करके काबली से प्रेम का ढोग रचते है और उससे ५ हजार रुपया पुन ले लेते है। इधर चदा राजकुमार कर्णवीर सिह और उसकी सेक्रेटरी किरण हिम्मतसिह बन जाती है। वे दोनो भी विवाह करने के उद्देश्य से राजकुमारी को देखने चाँद के घर जाते है। काबली पद्मनी से शादी करने के लिए उतावला हो जाता है लेकिन राजमाता चालाकी से उसे अर्दली बना लेती है। राजमाता चदा और किरण के सम्मान मे खाली कप-प्लेटे रखकर हवाई नाश्ता कराती है। काबली उनका भडाफोड करके राजकुमारी पद्मनी को जबरदस्ती उठा ले जाता है। इसी बीच जीवनप्रसाद आकर सूरज से सारा रहस्य ज्ञात कर लेते है। बनवारी कर्णसिह की मौसी लज्जावती और कल्लन हिम्मतसिह की फूफी चचलकुमारी के रूप मे शादी की बात पक्की करने आते है। जीवनप्रसाद भी पद्मनी की बडी बहन चाँदनी रानी के भेष मे आते है। सहसा बात ही बात मे इन सबका रहस्योद्‌घाटन हो जाता है। अन्त मे चाँद की शादी चदा से और सूरज की शादी किरण से हो जाती है।

लगाम (सन् १९६६, पृ० ४८), ले० रूपकान्त ठाकुर, प्र० पूनम प्रकाशन, हरिपुर, दरभगा, *पात्र* . पु० ६, स्त्री ५, *अक* : १, *दृश्य* : १।
घटना-स्थल सहदेव का दरवाजा, घर, विवाह-स्थल, रसोईघर, बारात, रेल-स्टेशन एव कमला का शयन कक्ष।

मैथिल समाज मे प्रचलित अनेक समस्याओ को जन-साधारण के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। एक ओर तो विवाह के अवसर पर तिलक दहेज की मनोनुकूल प्राप्ति न होने पर लोग बेहिचक दूसरी शादी कर लेते है और दूसरी ओर आधुनिकता के परिवेश मे नवयुवको की महत्त्वाकाक्षा तीव्रतर होती जा रही है। लोग इतने साधन-सम्पन्न नही है कि प्रत्येक की आवश्यकता की पूर्ति कर सके। अतएव इसके भी अनेक दुष्परिणाम देखने को मिलते है। उपर्युक्त द्वन्द्वो की पृष्ठभूमि मे नाट्यकार ने मैथिल समाज की वैवाहिक समस्याओ की ओर सकेत किया है।

लयलो-निहार उर्फ तकदीर का खेल (सन् १८८४, पृ० ५०), ले० मुशी विनायक प्रसाद तालिब, प्र० खुरशेद जी बालीवाला मालिक विक्टोरिया मडली। पुन १९०८ मे लाहौर मे प्रकाशित, *पात्र* पु० ८, स्त्री ४; अक के स्थान पर बाब और मीन मे विभाजित।
घटना-स्थल जंगल, घर, विवाहमडप।

यह नाटक 'लार्ड लिटन' के प्रसिद्ध उपन्यास 'नाइट ऐण्ड मोरिग' के आधार पर लिखा गया है। लेखक के अनुसार 'जब फरिश्ते भी पाप के जाल से नही छूट सके तो मनुष्य तो गलतियो का पुतला है' फिर अपराधो से निर्मित मानव-समाज भला उससे कैसे मुक्त हो सकता है। इस नाटक मे फीरोज और दिल-अफरोज तथा अशरफ और नश्तरन के दोनो जोडे परस्पर प्रणय-सूत्र मे आबद्ध है। इनके मध्य सासारिक प्राणियों के कुत्सित विचार, धोखेबाजी और जालसाजी के ताने-बाने मे कथावस्तु का

सघर्ष और कथा का विकास प्रदर्शित किया गया है। नाटक मे जहाँसीर के बेटे फिरोज और अनवर के साथ उनके चाचा फकलसीर के कुकृत्यो का कुपरिणाम दिखाया गया है। अन्त मे दोनो भाई विपदाओ को पार कर दाम्पत्य जीवन के सुख और शान्ति का लाभ उठाते है।

ललित विक्रम (सन् १९५३, पृ० १२८), ले० . वृन्दावनलाल वर्मा, प्र० मयूर प्रकाशन, झाँसी, पात्र · पु० १२, स्त्री १, अक · ४; दृश्य ६, ७, ८, ६।
घटना-स्थल अयोध्या का राजभवन, धौम्य ऋषि का आश्रम।

इस ऐतिहासिक नाटक मे वैदिककाल की एक झाँकी चित्रित की गई है। अयोध्या-नरेश रोमक के शासन-काल मे अकाल पडता है। दुर्भिक्ष से अन्न की उपज कम होने लगती है। राजा रोमक राज्य की ओर से अन्न-वितरण कराने का प्रबन्ध करता है। इधर आचार्य मेघ राजकुमार ललित की उद्दण्डता तथा दुश्शीलता की शिकायत करने के लिए रोमक के पास आते हैं। आचार्य मेघ ललित के नीलमणि के साथ किए अभद्र व्यवहार तथा भरे दरबार मे अपने अपमान से क्रोधित होकर राजा रोमक को शाप देकर चले जाते है। मेघ के जाने के उपरान्त नीलमणि उपस्थित होकर रोमक से कपिजल शूद्र के अनुसन्धान के लिए सहायता माँगता है। राजा उसकी रक्षा का वचन देता है। कपिजल नीलमणि के बन्धन से अपने को मुक्त करके धौम्य ऋषि के आश्रम मे पहुँचता है। धौम्य ऋषि उसे शूद्र जानकर भी आश्रय देते है तथा नीलमणि और राजा के अनुचरो को भगा देते है। धौम्य ऋषि कपिजल को, उसकी योग्यता का निरीक्षण करके शिष्य बनाने का वचन देते है। इधर आचार्य मेघ चुप नही बैठते और अयोध्या के सभा-भवन मे राजा पर अनेक दोषारोपण करते हुए, परम्परा-विरोधी पापी राजा रोमक को पदच्युत करने के लिए जनता मे जागृति उत्पन्न करने की स्पष्ट चेतावनी देते है।

धौम्य ऋषि कपिजल को शिष्य बनाकर गोमती के निकट समाधि लगाने की आज्ञा देते है। मेघ राजा के पापो का चिट्ठा खोलकर सुबाहु आदि व्यक्तियो को अपने पक्ष मे कर लेता है। राजा रोमक अकाल को रोकने के लिए अपने व्यक्तिगत स्वर्ण-रजत आदि मे कुल्या और सरोवर खुदवाने का आदेश देता है। राजकुमार ललित साथियो-सहित आखेट को जाता है। शूकर से घायल होने पर कपिजल उसकी रक्षा करता है और उसे उसके साथियो को सौप देता है। राजा रोमक ललित की शिक्षा-दीक्षा के प्रति चितित रहते है। एक दिन वह अपनी पत्नी ममता के परामर्श से उसे धौम्य ऋषि के आश्रम मे छोड आते है। मेघ रोमक के राज्य मे होने वाली शूद्रो की तपस्या, ब्राह्मणो के अपमान तथा निरन्तर अकाल आदि की आड से जनता को अपने बहुमत मे लाने मे सफल होता है और अयोध्या की समिति राजा रोमक को उतने समय तक अपदस्थ करती है जितने समय तक वे अपने पाप का अनुसन्धान करके परिमार्जन न कर ले।

राजा रोमक जनता के दुख और दुर्भिक्ष के कारण स्वय पापो को जानने के लिए निकलता है। जनता राजा को पापी समझकर उसका मुँह देखना भी पाप समझती है। अत मे रोमक ममता के कहने से धौम्य ऋषि के पास जाकर अपने पापो के मार्जन की प्रार्थना करता है। धौम्य ऋषि राजा की परीक्षा के लिए कपिजल के वध की बात कहते है किन्तु साथ ही कपिजल की रक्षा की व्यवस्था भी कर देते है। मार्ग मे ललित पिता के विवेक को जाग्रत करता है और रोमक-वध का विचार त्याग, प्रायश्चित्तस्वरूप कपिजल के सम्मुख जाकर उसे प्रणाम करता है। इधर राज्य मे वर्षा हो जाती है और ईशान, सोम, ममता आदि धौम्य ऋषि के आश्रम मे दर्शनार्थ उपस्थित होते है। धौम्य ऋषि अपने दीक्षान्त भाषण मे राजा के पापो का उल्लेख करके रोमक को जनपद कल्याण मे लगने की सलाह देते है और अन्त मे ग्रामीणो के 'हम विविध सत्कर्म करते सौ बरस जीते रहे' गीत से नाटक समाप्त होता है।

ललिता नाटिका (सन् १८८३, पृ० ३८), ले० अम्बिकादत्त व्यास, प्र० हरिप्रकाश यत्रालय, काशी, *पात्र* पु० ४, स्त्री ४, *अक* ४, *दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल गोप कस की सभा, गोप-आँगन ।

इस पौराणिक नाटक मे कृष्ण-गोपी तथा भक्ति का परिपाक चित्रित है ।

विशाखा एक लावनी द्वारा ललिता की विरहदशा का वर्णन करती हुई कृष्ण का पता लगाने के लिए मनसुखा से मिलती है । सदेश पाकर कृष्ण उसी रात विशाखा को ललिता से मिलने का वचन देते है । इधर ललिता गीत गाकर विरह का बोझ हलका करती है । उसी समय विशाखा से कृष्ण-मिलन का सदेश पाकर वह प्रसन्न होती है । उधर मनसुखा जाकर विशाखा को बताता है कि ललिता का पति गोवर्द्धनगोप कस की सभा मे जाने की तैयारी कर रहा है अत कृष्ण-ललिता मिलन का वही उपयुक्त अवसर है । लेकिन गोवर्द्धन जाते समय माँ को कृष्ण से ..।व न कर जाता है । अवसर पाकर कृष्ण गोवर्द्धन के भेष मे ललिता के पास पहुँचने मे सफल हो जाते है । कस की सभा मे अधिक न ठहरकर आशकित गोप अविलब आ पहुँचता है । उसकी माता भ्रमवश गोवर्द्धन को पत्थर से मारती है और वस्तु-स्थिति का ज्ञान होने पर दोनो पछताते है । वह कृष्ण की खोज मे शीघ्रता से घर के अन्दर जाता है । किन्तु उसके आगमन की सूचना पाते ही कृष्ण खिडकी से कूदकर बाहर निकल जाते है । असफल गोप ललिता को डाँटता-फटकारता है । फिर विशाखा वहाँ पहुँचकर ललिता से प्रात काल का वर्णन करती हुई उसे स्नान आदि करने को कहती है । कृष्ण-ललिता मिलन से चितित गोवर्द्धन गोप आँगन मे बैठकर अपने कुल पर लगे कलक पर विचार करता है । परन्तु माँ समझाती है कि जिसके घर कृष्ण का आगमन हो जाता है उसका जन्म सफल है । माँ के इस कथन पर वह उससे रुष्ट हो जाता है । इसी समय कृष्ण की महिमा का गान करते हुए नारद पहुँचते है और गोवर्द्धन की शंका का निवारण कर समझाते है कि कृष्ण परमेश्वर के अवतार है । गोवर्द्धन अपने कृत्य पर पश्चात्ताप कर माँ के साथ कृष्ण का दर्शन करने जाता है ।

लव जी का स्वप्न (सन् १८९५, पृ० ४), ले० . काशी नाथ खत्री; प्र० . प्रयाग धार्मिक यत्रालय, *अक-दृश्य रहित* ।
घटना-स्थल . राजमहल, युद्धक्षेत्र ।

यह एक ऐतिहासिक रूपक है जो मध्यकाल कि एक कथा से लिया गया है । इसमे मुसलमान सरदार व बादशाह की विषयासक्त प्रवृत्ति और दुराचरणो का दुष्परिणाम दिखाया गया है । मुसलमानो के घोर अत्याचार के विरुद्ध हमारे प्राचीन राजा धर्म, श्रद्धा तथा पवित्रता से अपनी प्रजा का पालन करते है, क्योकि महान् पुरुष स्वप्न मे भी पर-स्त्री सम्बन्ध नही रखते है । राजा लव की वीरता दिखाई गई है ।

लहरो के राजहंस (सन् १९६३, पृ० १४०), ले० · मोहन राकेश, प्र० राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, *पात्र* . पु० ६, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल राजकुमार नन्द के भवन मे सुन्दरी का कक्ष ।

यह ऐतिहासिक और सास्कृतिक नाटक है। इस नाटक मे नन्द के अन्तर्द्वन्द्व का वर्णन है। महात्मा बुद्ध के सौतेले भाई 'नन्द' की पत्नी 'सुन्दरी' कामोत्सव का आयोजन करने जा रही है। उसी दिन महात्मा बुद्ध की पत्नी यशोधरा भिक्षुणी बनने जा रही है अत उत्सव मे कोई सम्मिलित नही होता । नन्द के यहाँ महात्मा बुद्ध भिक्षा लेने आते है लेकिन कोई उत्तर न पाकर लौट जाते है। जब नन्द को पता चलता है कि महात्मा बुद्ध आये थे तो वह अवचेतन प्रेरणा से बुद्ध के पास खिचे चले जाते है। नन्द का गौतम बुद्ध बनकर लौटना सुन्दरी के अहम् व आत्मविश्वास पर आघात पहुँचाता है। नन्द और सुन्दरी मे तर्क-वितर्क होता है और अन्त मे नन्द घर त्याग कर चले जाते है।

अभिनय-सन् १९६३ मे इलाहाबाद मे तदुपरांत अनेक सस्थाओ द्वारा अनेक बार अभिनीत ।

लाल किले की ओर (सन् १९३५, पृ० २५६), ले० कुशवाहा कान्त, प्र० . जयन्त कुशवाहा, चिनगारी प्रकाशन, वाराणसी; पात्र पु० १०, स्त्री ८, अक-दृश्य-रहित । घटना-स्थल . मार्ग, सभाभवन ।

यह कुशवाहा कान्त के उपन्यास 'लाल-रेखा का नाटकीय रूपान्तर है। इसमे हास्य-रस का भी समावेश कर दिया गया है।

स्वतन्त्रता के भीषण रण मे,
जन्मभूमि के विमल गगन मे,
जीर्ण शीर्ण युवको के तन मे,
आतम त्याग की आग फूंक कर
धवल ध्वजा फहरा दें ।

इसमे सवादो का बाहुल्य यत्र-तत्र रग निर्देश होते हुए भी उपन्यास की ही शैली प्रमुख है। अभिनय के लिए लिखना रूपान्तर-कार का उद्देश्य है। इसे सवादप्रधान उपन्यास ही कहा जा सकता है।

लावण्यवती सुदर्शन नाटक (सन् १८९२, पृ० ६४), ले० · शालिग्राम वैश्य, प्र० : हरिप्रसाद भगीरथ, बम्बई; अक . ७, दृश्य २, ४, १, ४, १, ३, २ ।
घटना-स्थल . लावण्यवती का शयनागार, सुदर्शन का भवन, हेमकूट पर्वत, श्मशान ।

इस नाटक मे नायक-नायिका का प्रेम चित्र-रचना के द्वारा पल्लवित किया गया है। लावण्यवती स्वप्न मे सुदर्शन नामक अति सुन्दर पुरुष का दर्शन करके उसके विरह में व्याकुल हो जाती है। सखियाँ विविध राजकुमारो का चित्र बनाती है किन्तु केवल सुदर्शन के चित्र से ही लावण्यवती आकृष्ट होती है। सुदर्शन भी लावण्यवती के प्रेम मे विकल होकर दिन-रात उसी का चिंतन करता है। लावण्यवती की सखी प्रेमलता योगिनी बनकर देश-विदेश मे राजकुमार सुदर्शन को खोजती है। विरह-विह्वला लावण्यवती केवल ककालमय शेष रह जाती है। वह ज्योंही आत्महत्या का उपक्रम करती है उसी समय उसकी सखी सुदर्शन के आगमन का शुभ सन्देश लाती है। अन्त मे दोनो का मिलन होता है। लावण्यवती का पिता सुदर्शन को बन्दी बनाकर प्राणदण्ड देना चाहता है किन्तु लावण्यवती अपने प्रियतम की प्राणरक्षा के लिए प्रस्थान करती है। किन्तु उसके पूर्व ही सुदर्शन को प्राणदण्ड दे दिया जाता है। प्रियतम की मृत्यु से दुखी होकर लावण्यवती भी आत्महत्या कर लेती है, जिसके परिणामस्वरूप लावण्यवती की माता और सखी प्रेमलता भी चिता मे कूदकर जीवन-लीला समाप्त कर लेती हैं।

लीला—(सन् १९६१, पृ० ८०), ले० : मैथिलीशरण गुप्त; प्र० · साहित्य सदन. चिरगाँव, झासी ; *अक-रहित; दृश्य* : ९ । *घटना-स्थल* अयोध्या का राजभवन, आश्रम, जनकपुरी की स्वयंवर सभा, जगल ।

यह गीति-नाट्य है। यद्यपि प्रकाशन से चालीस वर्ष पूर्व लिखा गया था, परन्तु तब भी उसे तद्वत् प्रकाशित करना ही गुप्त जी ने उचित समझा । वे स्वय लिखते है "मनुष्यत्व के प्रति मेरी तब जो आस्था थी, वह अब भी है।" इसके प्रथम दृश्य मे सोलह पदो की वस्तु-निर्देशात्मक षोडशपदा नान्दी है, जिसमे पृथ्वीदेवी रत्न-सिंहासन पर बैठकर रामावतार की आशा से प्रसन्न हो रही है। वे भारत-भाग्य के परिवर्तन की आशा प्रकट करती है तथा ससार को भारत के माध्यम से पूर्ण आदर्श चरित्र की शिक्षा देने का संकल्प करती है।

'लीला' के द्वितीय दृश्य मे वन भाग मे राजा दशरथ के राजकुमार राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न अपने बालसखा धीर और गम्भीर के साथ मृगया की योजना बनाते है। इतने मे 'वीर' नामक पात्र प्रस्तुत होकर विश्वामित्र मुनि के आगमन की सूचना देता है। वे सब प्रस्थान करते है। तृतीय दृश्य मे कुशल-प्रश्नो के पश्चात् अयोध्या के राजभवन मे विश्वामित्र जी राजा दशरथ

से यज्ञ-रक्षा के निमित्त राजकुमारो की याचना करते है। परन्तु दशरथ जी प्रथम तो अपने प्राणाधिक प्रिय पुत्रो को देने मे मीन-मेख करते है किन्तु राम-लक्ष्मण के ही विनय करने पर उन्हे कहना पडता है, "मेरे दोनो हाथ राम-लक्ष्मण प्रस्तुत है। लीजिए अब से पिता आप है, ये दो सुत है।" चतुर्थ दृश्य मे राम-लक्ष्मण को विश्वामित्र साथ ले जाते है। तदुपरान्त खिनमना कौशल्या को सुमित्रा समझाती है। पचम दृश्य का प्रारम्भ अराल-कराल नामक राक्षसो के वार्तालाप मे होता है और अन्त ताडका के वध मे। षष्ठ दृश्य मे धीर, गम्भीर, भरत और शत्रुघ्न के वार्तालाप मे राम-लक्ष्मण की कुशलता और जनकपुर के धनुष-यज्ञ की सूचना मिलती है। सप्तम दृश्य मे सीता-उर्मिला आदि से राम-लक्ष्मण का प्रथम साक्षात्कार होता है। अष्टम मे दो राजाओ का आपस मे धनुष तोडने के विषय मे वार्तालाप दिखाया गया है तथा नवम दृश्य जनकपुर मे धनुष-भग, परशुराम लक्ष्मण-सवाद और सीता-राम-विवाह के समारोह के साथ समाप्त किया जाता है।

लेडीस लिमिटेड (सन् १९६०, पृ० ११५), ले० महावीर प्रसाद पोद्दार, प्र० पुस्तक प्रतिष्ठान, कानपुर, पात्र पु० १०, स्त्री ८। घटना स्थल · बैरिस्टर निर्मल का दफ्तर, घासी पैलेस, तिजारती दफ्तर।

नाटककार 'आग्रह' मे लिखते है "बडे से बडे नेता या महान् कुबेर व्यापारी वर्ग ही लेडीस लिमिटेड नामक रचना से कुछ सीख-समझ सकता है···प्राय व्यापारी वर्ग या धनवान् श्रेणियो के व्यक्तियो के निर्दोष मनोरजन के लिए ही इस पुस्तक की रचना हुई है।"

प्रथम दृश्य मे बैरिस्टर निर्मल अपने मित्रो-सहित 'लेडीस लिमिटेड' की प्रेसीडेण्ट लेडी लाहौल से मिलने की बातचीत पर सलाह करते दिखाई पडते है। दूसरे दृश्य मे आलीशान तिजारती दफ्तर का वर्णन हुआ है—जहाँ लेडी लाहौल तथा राधा की बातचीत—"हम स्त्रियाँ कुदरतन आदमी से हजार बार बैटर और हरएक सिद्धान्त मे बुद्धि मे, विद्या मे, रूप मे, गुण मे, यहाँ तक कि बिजनेस मैनर्स मे भी श्रेष्ठ है"—से पश्चिमी स्त्रियो के अभिमान की गन्ध आती है। इसी प्रसग मे कपास के नमूने लिए हुए सेठ घासीराम प्रवेश करते है और लेडी लाहौल मे उनकी भागीदारी मे मजूरी चाहते है। बातचीत कर दस हजार रुपये का चेक काट देते है और उन्हे दूसरे दिन चाय पर निमत्रित करते है। इतने मे ही यहाँ के विज्ञापन प्रतिनिधि मिस्टर अहरावत पहुँचते है पर उन्हे निराश होकर लौटना पडता है। मिस्टर निर्मल भी अपने चारो दोस्तो सहित वहाँ पहुँचते है—और लेडी लाहौल उनका सहयोग स्वीकार कर उन्हे व्यापार मे भागीदार बना लेती है।

दूसरे दृश्य मे घासीराम की कन्या जमना की मोहनलाल से मित्रता हो जाती है, जिन्हे वह अपने घर ले आती है। घासीराम मोहन से जमना की शादी तय कर देते है।

चौथे दृश्य मे बैरिस्टर निर्मल अपने तीन मित्रो के साथ ताश खेल रहे है, तभी मिस्टर मोहन आकर उन्हे सीरियस घटना से अवगत कराता है और दावत खिलाने की सूचना देता है। सहसा उनको फोन पर घासी पैलेस मे लेडी लाहौल का निमन्त्रण मिलता है और वे चारो मित्र वहाँ पहुँचते है।

अन्त मे घासी पैलेस मे लेडी लाहौल के लेडीस लिमिटेड के प्रति पूर्ण सहयोग की कामना तथा गीत से नाटक का अन्त हो जाता है।

इसमे सेठ घासीराम जैसे व्यापारियो का सजीव चित्रण हुआ है। लेडी लाहौल सर्वथा स्त्री की गरिमामयी बुद्धि का गान करती दिखाई पडती है।

लैला-मजनू (सन् १८७९, पृ० ६४), ले० · मुहम्मद मियाँ रौनक बनारसी, प्र० राम नारायण लाल अग्रवाल, लखनऊ, पात्र · पु० १०, स्त्री ६, *अक-रहित*, पारसी थियेट्रिकल कम्पनी के नाटको की तरह फिर बाब

मे विभाजित ।
घटना-स्थल घर, मदान, वेश्यागृह ।

लैला मजनू की प्रसिद्ध प्रेम-कहानी को भारतीय जामा देकर प्रदर्शित किया गया है । वास्तव मे यह कथानक इस्लाम से पूर्व चिरविश्रुत बन चुका था । इस नाटक मे बल देकर लैला और मजनू को भारतीय मुसलमान सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है । इसमे तर्रार, जुहरा, खैला आदि वेश्याओ का वर्णन भी मिलता है । यद्यपि इसे पारसी थियेटर के उद्देश्य से लिखा गया था किन्तु कम्पनी ने इसमे काव्य गुण की ही प्रधानता देकर इसे पसन्द नही किया । सम्पूर्ण नाटक मसनवी-आबद्ध है । नाटककार लम्बी भूमिका मे इस नाटक की विशेषता और आवश्यकता पर बल देता है ।

अभिनय-१८७६ से पूर्व पारसी थियेट्रिकल कम्पनी द्वारा अभिनीत नश-लखनवी ने १६३१ मे स्टेज के लिए लिखा ।

लैला मजनू की प्रेम कहानी का जो रूप प्रसिद्ध है उसका इसमे निर्वाह नही पाया जाता ।

लैला-मजनू (सन् १६१६, पृ० १३२), ले० जनावमु० दिल साहब , प्र० ला० शकर दास सॉवल दास, बुकसेलर, दरीवा कला, दिल्ली ; *पात्र* पु० १८, स्त्री ५, *अक* ३ , *दृश्य* १०, ७, ५ ।

इस नाटक मे नाटककार ने लैला और मजनू की प्रेम गाथाएँ और उनका वार्तालाप दिखाया है ।

अभिनय-प्रकाशित होते ही धूमधाम से अभिनीत ।

लैला मजनू (सन् १६३० के आसपास, पृ० ६१), ले० रामशरण आत्मानन्द, प्र० उपन्याम बहार आफिस, काशी, *पात्र* पु० ६, स्त्री १०, अक ३, सीन, ७, ५ [कामिक (हास्य) के सीन प्रत्येक अक मे अलग है ।]
घटना-स्थल महल, जगल ।

यह नाटक ईराक की प्रसिद्ध प्रेमी-प्रेमिका लैला मजनू की प्रेम-कथा पर आधारित है । इसमे लैला मजनू के आपसी पवित्र मुहब्बत का ही वर्णन है । मजनू लैला के लिए पागल हो जाता है और लैला मजनू के लिए सदैव बेकरार रहती है । ईराक का शाहजादा बख्त भी लैला से अपना प्रेम दिखाते हुए कहता है—पवित्र प्रेम की कथा दिखाना ही नाटक का उद्देश्य है ।

"शमा है हुस्न की रोशन,
बना है दिल यह दीवाना"

लैला उत्तर देती है—बडी मुश्किल मे है लैला खुदा । तेरी दुहाई है ।

लैला मजनू नाटक उर्फ पाक मुहब्बत (सन् १६४० के आसपास, पृ० ६४), ले० वेणीराम त्रिपाठी 'श्रीमाली', प्र० . ठाकुर प्रसाद ऐण्ड सस, वाराणसी , *पात्र* पु० ८, स्त्री ४ , *अक* ३ , *दृश्य* ७, ६, ६ ।
घटना-स्थल महल, जगल ।

इस नाटक मे लैला मजनू का प्रसिद्ध प्रेम चित्रित है । लैला के लिए मजनू अनेक कष्ट और यातनाएँ सहकर भी अपनी मुहब्बत को पाक बनाए रखता है । साथ ही लैला भी मजनू के इश्क मे अपने सारे जीवन को लगा देती है ।

लोक देवता जागा (सन् १६६४, पृ० ८७), ले० रामगोपाल शर्मा, प्र० बालभारती इलाहाबाद , *पात्र* पु० ११, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* : ५, ५, ४ ।
घटना-स्थल ग्रामीण मकान, गॉव का स्कूल ।

इस सामाजिक नाटक मे ग्रामीण समस्याओ को उसी वातावरण मे नाटकीय रूप से चित्रित किया गया है । ग्राम्य जीवन की मूल समस्या निर्धनता और अशिक्षा को नाटककार ने सहकारिता के द्वारा दूर करने का प्रयास किया है । सेठ लोग सूदखोरी छोडकर समाज के साथ हिल-मिलकर सभी के सुख-दुख मे साझीदार बन सेवा कार्य करने के लिए तैयार हो जाते है । गॉव का जीवन सामूहिक परिवार का एक अग बन जाता है ।

लोकमान्य (वि० २०१४, पृ० ८४), ले० : रामबालक शास्त्री , प्र० साहित्य मंदिर, वाराणसी , *पात्र* पु० २१, स्त्री नही , *अंक* ३ , *दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल पूना का पोस्ट ऑफिस, व्यायाम-शाला, पूना केशरी कार्यालय ।

इस जीवनीपरक नाटक मे लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का अगाध देश-प्रेम चित्रित किया गया है। विदेशी शासन मे सार्जेटो द्वारा नागरिको पर किये अत्याचार को सहन न करके बाल-गंगाधर सार्जेटो से लडाई कर लेते है। इस कारण सिटी कॉलेज से बालगंगाधर को निकाल दिया जाता है। सप्रे, पराजपे तथा आगारकर बाल के कर्मठ साथी है, जो बाल की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते है। सिटी कॉलेज से निकलने के बाद कॉलेज के प्रो० वर्वे द्वारा बाल के पिता महीधर को पुत्र के निष्कासन का पता चल जाता है। फिर भी बाल वे कर्मठ पिता इससे दुखी नही होते बल्कि के पुत्र वे किये गये कामो से बड़े प्रसन्न होते है। आगारकर की मदद से बाल गगाधर का दाखिला फर्ग्यूसन कॉलेज मे हो जाता है। वे बडी ही तीव्र बुद्धि के तेजस्वी युवक है। वे अपनी परीक्षा प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण करने के बाद अपने कर्मठ साथियो के साथ पूना मे एक विद्यालय की स्थापना करते है जिसका नाम महाराष्ट्र विद्यालय रखा गया। इसमे स्वदेशी शिक्षा के साथ अग्रेजो के हाथ से भारत को मुक्त कराने की शिक्षा दी जाती है। धीरे-धीरे बालगगाधर अपने कर्मठ साथी सप्रे, आगार-कर, खापर्डे, डावरे तथा रानाड के साथ स्वतन्त्रता की लडाई शुरू कर देते है। पूना के महाराष्ट्र विद्यालय मे बाल गंगाधर तिलक के भाषण से जनता मंत्र-मुग्ध होकर उन्हे लोकमान्य की पदवी देती है । इस स्वतन्त्रता की लडाई मे उन्हे एक बार ६ वर्ष की सजा हो जाती है लेकिन उनकी अनु-पस्थिति मे उनके अनुगामी देश के काम को सुचारु रूप से चलाते है। जेल से लौटने के बाद लोकमान्य तिलक अपने साथियो के साथ इस स्वतंत्रता की लडाई को और भी आगे बढाते है तथा भारतीय नागरिकों मे स्वातन्त्र्यभाव उत्पन्न करते है। समस्त भारतीय नागरिक लोकमान्य तिलक के विचारो का श्रद्धा से स्वागत करते है।

लौट के बुद्धू घर को आये (सन् १९६२, पृ० ६४), ले० जगदीश शर्मा; प्र० : देहाती पुस्तक भडार, *पात्र* पु० ६, स्त्री २, *अंक* २, *दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल : फिलम-स्टूडियो ।

यह एक हास्यप्रद नाटक है। स्टूडियो मे फिलम के माध्यम से हास्य का चित्रण किया गया है। छबीला अपने स्टूडियो मे तरह-तरह की फिल्मे रखता है और उनका रेट बहुत बढाता जाता है। सी. आई. डी. मि० चोपडा एक केस के सिलसिले मे स्टूडियो जाते है जहाँ उन्हे सभी मामले का पता तो चल जाता है किन्तु घसीटा के वाक्-चातुर्य से वे स्वय बुद्धू बन जाते है और उनके पल्ले कुछ भी नही पडता।

लौह देवता 'सृष्टि की साँझ और अन्य काव्य रूपक, मे सकलित रेडियो गीति-नाट्य, (सन् १९५४, पृ० ६४), ले० सिद्धनाथ कुमार, प्र० पुस्तक मन्दिर, बक्सर, *पात्र* पु० ३, स्त्री १, *अंक-दृश्य-रहित* ।

'लौह देवता' (यन्त्रयुग तथा तज्जन्य सामाजिक विषमता की ओर सकेत करता है। प्राय कहा जाता है कि यंत्र सभ्यता के विकास ने मानवीय श्रम को बचाया है। मशीनो के द्वारा अल्प समय मे अधिक और परिष्कृत उत्पादन सभव हो गया है किन्तु फिर भी जन-सामान्य इन उप-लब्धियो एव सुविधाओ से वचित है। वह आज भी बेकारी, भूख और मानसिक सत्रास से ग्रस्त है। यान्त्रिक विकास के मूल मे मुट्ठी-भर पूँजीवादी है, जिन्होने अर्थबल के आधार पर श्रमिको का श्रम क्रय करके उत्पादन पर अपना एकाधिपत्य जमा लिया है। उत्पादन का असमान वितरण ही सामाजिक विषमता तथा तनाव का मूल कारण है।

गीति-नाट्य के आरम्भ मे समवेत स्वर मे जन-समुदाय पृथ्वी पर व्याप्त विपन्नता के परिहार हेतु लौह-देवता की प्रार्थना करता है। लौह-देवता प्रसन्न होकर उन्हे नवीन शक्ति प्रदान करता है। यह शक्ति स्वर्ण-मुद्राओ के द्वारा पुजारी खरीद लेता है और यन्त्रो पर सर्वाधिकार प्राप्त करता है। यंत्र-विकास के साथ-साथ श्रमिक भूखो मरने लगते है, जिसके परिणामस्वरूप जनता विद्रोह कर बैठती है। यान्त्रिक सभ्यता का विध्वस करने को उद्यत जनता को लौह-देवता समझाता है कि इस सामाजिक विषमता का मूल यन्त्रो मे न होकर समाज मे ही है। इस प्रकार अर्थ-वैषम्य के मूल की खोज मे प्रस्तुत गीति-नाट्य समाप्त होता है।

व

वकील साहब (सन् १९३५, पृ० १०९), ले० नारायण विष्णु जोशी, प्र० हिन्दी ज्ञान मन्दिर, बम्बई, *पात्र* पु० ८, स्त्री २; *अक* ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल . बैठक का कमरा।

इस सामाजिक नाटक मे मजदूर वर्ग की जागृति और आन्दोलन की जीती-जागती-तस्वीर चित्रित है। बैरिस्टर मधुसूदन कांग्रेस पक्षी वकील है किन्तु व्यवसाय के कारण उन्हे मिल-मालिको के भी मामलो की पैरवी करनी पडती है। शर्माजी एव रघुनाथ बाम-पक्षी मजदूर नेता है। वकील साहब मजदूरो के खिलाफ मिल-मालिको की पैरवी करते है किन्तु उनकी पत्नी शारदा वकील साहब के इस आचरण से दुखी रहती है। मजदूर और मालिक के बीच होनेवाले सघर्ष से साम्प्रदायिक नाजायज फायदा उठाते है। वे इस घटना को हिन्दू-मुसलमान दगे का रूप देना चाहते है और भण्डारी की सहायता से वकील को प्रलोभन देकर पैरवी के लिए तैयार कर लेते है। शारदा पति द्वारा स्वीकार किये हुए पाँच हजार रुपये के चेक को टुकडे-टुकडे कर देती है। अपने पति के विचारो से दुखी शारदा सात दिन उपवास भी करती है।

इधर मिल-मालिक मजदूर नेता रघुनाथ को मिलाने के लिए खान के हाथ लिफाफे मे रुपया भरकर उसकी पत्नी चन्द्रकान्ता के पास भेजता है। किन्तु चन्द्रकान्ता रुपये लेने से इन्कार कर देती है। वह कहती है कि "खान साहब, हिन्दू-मुसलमान एक है, उनमे धर्म का अन्तर हो सकता है किन्तु मानवता का तो पालन करना ही होता है।" खान भी उसकी बातो से प्रभावित होता है और भविष्य मे ऐसा काम न करने की शपथ खाता है। शर्माजी, शारदा तथा रमजान आदि मजदूर नेता रघुनाथ की मदद से मिल मे हडताल करने की बात सोचते है। भण्डारी इसकी सूचना पुलिस को देता है, जिससे उन्हे गिरफ्तार किया जाता है। पुलिस सुपरिण्टेडेण्ट मिल-मालिक और भण्डारी के कामो का पता लगाते है जिससे उन्हे भी पता चल जाता है कि भण्डारी मिल-मालिको से मिलकर मजदूरो को परेशान करता है। वे उसको गिरफ्तार करके मजदूरो के सामने ले जाते है। मजदूर इन्कलाब जिन्दाबाद और शारदा जिन्दाबाद का नारा लगाते है। इसी के साथ नाटक समाप्त होता है।

वचन का मोल (सन् १९५१, पृ० ७८), ले० . उमाशकर बहादुर, प्र० बेटर बुक्स कम्पनी, पटना, *पात्र* पु० १४, स्त्री ४; *अक* ३, *दृश्य* ३, ५, ४।
घटना-स्थल उद्यान।

द्रोपदी के चीर-हरण की कथा को आधुनिक आलोक मे देखने का प्रयास किया गया

है। पद्मा और प्रमिला नामक आधुनिक नारियो को इसमे स्थान दिया गया है। इन्ही दोनो के वार्तालाप से प्रस्तावना के रूप मे युधिष्ठिर की राजगद्दी का प्रसग आता है। इसमे शकुनी और दुर्योधन की कूटनीति द्वारा पाडवो के वनवास की कथा वर्णित है। धर्मराज युधिष्ठिर का जूआ मे हारना दु ख का कारण बनता है। वनवास के समय कुन्ती अपने बेटो मे लिपटकर रोती है। और अन्त मे अपने सभी पुत्रो को युधिष्ठिर के साथ वन जाने की आज्ञा देती है। अर्जुन को आशीर्वाद देते हुए कहती है—"मेरे वीर बेटे! तुम्हारी वीरता के लिए वन नही, नगर ही उपयुक्त स्थान है। बेटा! किन्तु जाओ, अपने भाई धर्मराज के साथ जाओ। उन्ही के धर्म से तुम्हारा कल्याण होगा।"

वचन वैष्णव (सन् १९६५, पृ० ७२), ले० : रूपकान्त ठाकुर, प्र० पूनम प्रकाशन हरिहर पुर, दरभगा, *पात्र* : पु० ७, स्त्री १, अक १, दृश्य १०।
घटना-स्थल रास्ता, स्कूल, दिनेश का घर, प्रार्थना, सिमरिया घाट, पटना जकशन एव महेश का घर इत्यादि।

इस प्रहसन के माध्यम से समाज के विभिन्न पक्षो पर व्यग्य करने का प्रयास किया गया हे। आज के युग मे मुफ्त मे काम करवाना तो आवश्यक-सा हो गया है। विद्यार्थी बिना दक्षिणा दिये हुए विद्या अध्ययन का आकाक्षी है तो रोगी विना खर्च किये रोग का निदान चाहता है। ऐसी स्थिति मे कैसे समाज का कल्याण हो सकता है? परम्परा के प्रति आस्तिकता की भावना इतनी जकडी हुई है कि लोग उसके बधन से विमुक्त भी नही होना चाहते है। इसी के फलस्वरूप सुथनी खाने के पश्चात् प्रायश्चित्त के लिए गगा-किनारे जाते है। इसकी पृष्ठभूमि मे नायक चीनी जासूसो के उस जत्थे को पकडने मे समर्थ हो सका है जिसके लिए वह वर्षो से हैरान था।

वतन की आबरू (सन् १९६६, पृ० ६४), ले० ज्ञानदेव अग्निहोत्री, प्र० उमेश प्रकाशन, नई सडक, दिल्ली; *पात्र* · पु० ६, स्त्री ३, *अक* २, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल · मस्जिद के पीछे चहार दीवारी और पहाडियाँ।

पाकिस्तानी आक्रमण की पृष्ठभूमि पर आधारित इस नाटक मे जासूसो की कार्य-कुशलता और आत्म-बलिदान चित्रित किया गया है। महबूब नामक जासूस युद्ध के समय सीमाप्रान्त के पास आकर देश-भक्त इलाही बक्श और पशनीना जैसी निडर युवतियो को फुसलाता है। रहस्योद्घाटन हो जाने पर वह अपनी जान दे देता है किन्तु मेजर जावेद जैसे कमीने शत्रुओं को अपना रहस्य नही बताता। नाटक राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत है।

वत्सराज (सन् १९५०, पृ० १४२), ले० : लक्ष्मीनारायण मिश्र, प्र० हिन्दी भवन जालन्धर और इलाहाबाद, *पात्र* . पु० ६, स्त्री ४, *अक* ३; *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल राजमहल, वन, वाटिका, आश्रम।

वासवदत्ता का पुत्र कुमार तथागत के उस श्रमण-धर्म मे दीक्षित हो जाता है, जिसे महाराज उदयन देश के पौरुष और कर्म को हानि पहुँचाने वाला समझते है। उदयन युद्ध मे वीर धर्म और गीता-उपनिषद् के कर्मयोग का मानने वाला है। उसकी अनुमति बिना उसके पुत्र को श्रमण-धर्म की शिक्षा देने वाले गौतम कौशाम्बी आ रहे है और प्रजा उनके स्वागत का आयोजन कर रही है। इस प्रकार राजा और प्रजा के धार्मिक विचारो में असामजस्य होने के कारण एक जटिल समस्या खडी होने की सम्भावना है, किन्तु दूरदर्शी उदयन उसे सुलझाने के लिए आदेश देता है—"मेरे सैनिक कोई ऐसा कार्य न करे जिससे तथागत तथा श्रमणो का अपकार हो।" किंतु रानी वासवदत्ता को सघाराम का भविष्य अन्धकारमय लगता है तब वह स्पष्ट कहती है—"सघारामो मे कुमार-कुमारी छिपकर प्रेम करेगे। वहाँ भी शिशु ··के हाँ···के हाँ करेगे, उनका पिता कौन है, यही कोई नहीं

जानेगा। ऐसी दशा मे इस देश की नाव डूब जाएगी।" उदयन गौतम के प्रति श्रद्धा रखते है किन्तु उनके धर्म को कायरो का धर्म कहते है।। यौगन्धरायण भी तथागत के धर्म को नष्ट करना चाहता है। उसका मत है कि जो मृत्यु से डरकर भागा वह मृत्युञ्जयी कैसे हो सकता है ? इस नाटक मे उदयन तेजस्वी, प्रजापालक, कर्मयोगी वीर दिखाया गया है। उसके सम्बन्ध की घटनाओ का मनोवैज्ञानिक मानवीय और बौद्धिक रूप उपस्थित करते हुए नाटककार ने तप और योग का समन्वय दिखाया है जो भारतीय सस्कृति का मेरुदण्ड है।

वफाती चाचा (सन् १९३९, पृ० १०८), ले० रामनरेश त्रिपाठी, प्र० . हिन्दी मन्दिर, प्रयाग, *पात्र* पु० १७, स्त्री० ६, *अक* ३, *दृश्य* ४।
घटना-स्थल गाँव।

इस सामाजिक नाटक का मूल स्वर तो हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य ही है पर लेखक ने तत्कालीन गाधीवाद का पोषण भी सकेतो द्वारा कर दिया है। रतन पाण्डे गाँव के जमीदार और वफाती मियाँ उनके एक गरीब पडोसी है। रतन पाण्डे अपने पुत्र-जन्म के उपलक्ष्य मे आयोजन करते है। वे हिन्दू-मुसलमान दोनो को आमन्त्रित करते है और एक साथ बैठाकर उन्हे भोजन कराते है। वफाती उनके घर के सदस्य की तरह रहने लगता है। पाडे जी की स्त्री वफाती की स्त्री को कुछ न कुछ दे दिया करती है जिससे उनका कार्य चलता रहता है। पाडे जी कुछ खेत भी जोतने को उसे दे देते है जिससे वफाती अपनी रोटी-रोजी चलाता है। अन्त मे कुछ कारणो से कतिपय मुसलमान युवक रतनपाडे का विरोध करने लगते है और यह विरोध बडा उग्र हो जाता है। वफाती अपनी जान की बाजी लगाकर रतन पाडे के पक्ष मे मुसलमानो से सघर्ष करता है और यह दिखा देता है कि हिन्दू-मुस्लिम एक है। उनमे वैमनस्य नही होना चाहिए। बीच-बीच मे स्वस्थ सामाजिक परम्पराओ की स्थापना के लिए गाधीवाद का आधार लिया गया है।

वरदान (सन् १९६७, पृ० १०६), ले० ललित सहगल, प्र० समकाल प्रकाशन, दीवान हाल, दिल्ली, *पात्र* पु० ६, स्त्री ३, *अक* २, *दृश्य* ३, ३।
घटना-स्थल गाँव, शहर, मतदान केन्द्र।

इस सामाजिक नाटक मे मताधिकार जैसे ज्वलत विषय का यथार्थ चित्रण है। मगल चौधरी का अपने गाँव मे पूरा आतक है और वह हर साल अपनी इच्छा से उस उम्मीदवार को विजयी बनाने का प्रयत्न करता है जो उसे दस-पन्द्रह हजार रुपये दे देता है। एक बार बलदेवराज और रासविहारी नामक दो उम्मीदवार चुनाव के लिए खडे होते हैं। मगल चौधरी बलदेवराज के पक्ष मे चुनाव प्रचार करता है तथा साथ ही साथ वह पूरन की लडकी रुक्मिनी को बदनाम करने का प्रयास करता है और इसका झूठा आरोप रासविहारी पर लगा देता है। रुक्मिनी का मगेतर विरजू उसकी इस चालाकी को समझ जाता है। वह गाँव वालो से अपना वोट योग्य तथा ईमानदार उम्मीदवार को देने के लिए कहता है। विरजू गाँव वालो को मगल के छिपे कारनामो तथा कुकृत्यो से अवगत कराता है। वह सभी ग्रामीणो को वोट का उद्देश्य तथा वोट देने का ढग बताता है। उसके अथक प्रयास से मगल का प्रत्याशी बलदेवराज हार जाता है और सच्चे उम्मीदवार रासविहारी की जीत होती है।

वरमाला (वि० १९८२, पृ० १०४), ले० गोविन्द वल्लभ पन्त, प्र० गगा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ, *पात्र* पु० ३, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* ४, २, ३।
घटना-स्थल स्वयवर सभा, जगल।

इस नाटक की नायिका वैशालिनी नायक अवीक्षित को न चाहते हुए भी उसी के गले मे वरमाला डालती है—ऐश्वर्य के लिए नही, राज्य-वैभव के लोभ से नही, गुरुजन की मान-रक्षा के लिए नही बिना किसी के दबाव के अपनी इच्छा से वह 'घृणा' को प्यार करती है। लेखक ने बुद्धि-चातुर्य से प्रेम

को घृणा मे और घृणा को प्रेम मे परिवर्तित किया है। नायक अवीक्षित के प्रेम निवेदन पर वैशालिनी उसे ठुकरा देती है। नायक स्वयवर-सभा से उसका हरण करता है और जब वह उससे प्रेम करने लगती है तो नायक नायिका को ठुकरा देता है। नायिका जगल मे भटकती है। कामुक राक्षस उसका पीछा करता है। शिकार करता हुआ जगल मे नायक, नायिका की रक्षा करता है और दोनो एक-दूसरे से मिल जाते है।

वर्धमान महावीर (सन् १९५०, पृ० ७९), ले० . ब्रजकिशोर 'नारायण', प्र० ' श्री अजन्ता प्रेस, लिमिटेड, नया टोला, पटना, *पात्र* ' पु० १२, स्त्री २, *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल क्षत्रिय सिद्धार्थ का राज प्रासाद, पहाडी प्रात, गॉव।

यह सास्कृतिक नाटक भगवान् महावीर के चरित्र पर आधारित है। उनके जीवन-चरित्र के बारे मे नाटककार का कथन "भगवान् महावीर का जीवन शुरू से आखीर तक ऐसा रहा है जैसे एक सेनापति ऊँचे मच पर खडा होकर घटनाओ, दृश्यो और पात्रो रूपी सैनिको द्वारा सलामी ले रहा है। सभी घटनाऍ, पात्र, पात्रियॉ, दृश्य आदि व्यक्ति का क्रमिक रूप लेकर आते है और भगवान् महावीर के चरित्रोत्कर्प मे चार चॉद लगाकर चले जाते है।"

वैशाली के भगवान् महावीर श्रमण-जीवन धारण कर विरक्त हो जाते है। सन्यासी के उदात्त जीवन को लोक-रजित करके रूपायित करना ही इस नाटक का मूल उद्देश्य है।

अभिनय—इसका प्रदर्शन कई वार हो चुका है।

वर्षकार (वि० २००७, पृ० ५९), ले० उमाशकर वहादुर, प्र० . बेटर वुक्स कम्पनी, पटना, *पात्र* पु० ५, स्त्री १, *अक* : ३; *दृश्य* ' ३, ४, ५।
घटना-स्थल मगध राज्य, वैशाली राज्य।

इस ऐतिहासिक नाटक मे वर्पकार की कूटनीति दिखाई गई है।

मगध-अधिपति अजातशत्रु वैशाली-गणतन्त्र पर आधिपत्य जमाने के लिए सतत प्रयत्नशील है। वैशाली-आक्रमण के लिए अजातशत्रु प्रत्यक्षत गगा के निकटवर्ती प्रदेशो-जहॉ दोनो राज्यो का सम्मिलित अधिकार है—की समस्त खनिज-सम्पत्ति पर बज्जियो (वैशाली वासियो) द्वारा बलात् अधिकार करने का प्रबल विरोध करता है, परन्तु अप्रत्यक्ष रूप मे वह वैशाली की अनिद्य सुन्दरी राज्य-नर्तकी अम्बपाली का अपहरण करना चाहता है। युद्ध मे वज्जियो को परास्त करने के लिए अजातशत्रु के कई प्रयास असफल हो जाते है। वैशाली का महामत्री वर्षकार अजातशत्रु की तीव्र उत्कट इच्छा को जानकर कपट नीति से कार्य करता है। अजातशत्रु वर्षकार को अपमानित कर देश-निष्कासित करा देता है। दण्डित वर्षकार वैशाली मे आश्रय लेता है। वैशाली नगरवासी वर्षकार को सम्मानजनक पद, 'विनिश्चय महामात्य', पर अधिष्ठित करते है। यहॉ रह कर वर्षकार शनै -शनै वज्जियो के सहज सगठन मे फूट डाल देते है जिससे उचित समय पर अजातशत्रु वैशाली पर आक्रमण कर उसे जीन लेता है, परन्तु आम्रपाली के अभाव मे वह जीतकर भी हारे सदृश हो जाता है। वैशाली मे राजपाल नियुक्त कर वह हारे हुए से विमुख लौट जाता है।

वर्षा मंगल (सन् १९५२, पृ० ३६), ले० ' व्योहार राजेन्द्र सिह, प्र० मानस मंदिर, जबलपुर, *पात्र* ' पु० ८, स्त्री ३, *अक-रहित*, *दृश्य* ४।
घटना-स्थल ' व्रज, इन्द्रपुरी।

इस रूपक मे ग्रीष्म, वर्षा, पृथ्वी आदि को पात्र रूप मे चित्रित किया गया है। वर्पा-ऋतु आनन्ददायिनी ऋतु बताई गई है। ग्रीष्म-ऋतु के वाद शीतलता का सवाद लेकर आने वाली वर्पा प्राणि-मात्र मे शान्ति और आनन्द का सचार करती है। पचतत्त्व जड होते हुए भी इस आनन्ददायक काल मे चेतन और सरस हो उठते है। वर्षा-जलदेव

इन्द्र के सजल दूत आपस मे विवाद करते है। इसी समय व्रज मे श्रीकृष्ण इन्द्र की पूजा भी वन्द करते है। इससे इन्द्र को क्षोभ उत्पन्न होता है। पृथ्वी जिस प्रकार क्षमा और सहनशीलता का प्रतीक है उसी प्रकार विद्युत प्रकृति के रोष की। सजल सरस वादल वर्षाकाल के सौन्दर्य और आनन्द को व्यक्त करते है मानव हृदय मे जो अनुराग उत्पन्न होता है। राधामाधव की प्रेम लीला उसी को प्रदर्शित करती है।

वलिदान (सन् १९४०, पृ० २६), ले० सत्य प्रकाश पाटनी, प्र० मिलन प्रेस, इलाहावाद, *पात्र* पु० ६, स्त्री नही, *अक* : ५, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल गाँव, मन्दिर।

इस नाटक मे ईश्वरभक्ति को महत्त्व दिया गया है। इस मे सुरेन्द्र और क्रिस्टोफर को लेकर लेखक ने ससार की पाप-वासना से दूर रहने तथा मरने से पूर्व हृदय को ईश्वर का पवित्र मन्दिर वनने का मार्ग दर्शाया है।

वसन्त तिलका (सन् १९६५, पृ० १४९), ले० रूपवती किरण, प्र० सन्मति प्रकाशन, जवलपुर, *पात्र* पु० ५, स्त्री ६।
घटना-स्थल · अगदेश, कुभकटक द्वीप।

इस पौराणिक नाटक का आधार प्राकृत वसुदेव-हिण्डी और जिनसेन कृत सस्कृत हरिवंश पुराण है।

अगदेश मे भानुदत्त नामक एक सेठ के घर उसकी पत्नी सुभद्रा से एक पुत्र पैदा होता है जिसका नाम चारुदत्त रखा जाता है। वडे होने पर चारुदत का विवाह मित्रवती से होता है किन्तु वह विद्या-व्यसनी होने के कारण पत्नी के प्रति उदासीन रहता है। अतएव उसकी मा पत्नी के प्रति उसे आकृष्ट कराने का कार्य रुद्रदत्त को सौपती है। वह चारुदत्त का परिचय नगर की प्रसिद्ध वेश्या वसत तिलका से कराता है। धीरे-धीरे दोनो मे प्रेम हो जाता है। चारुदत्त वसत तिलका के लिए अपना धन पानी की तरह वहाने लगता है। एक दिन वसत तिलका की माँ वसत माला उसे अचेतावस्था मे घर से निकाल देती है। वह अपने घर पहुँचता है, जहाँ पिता भानुदत्त अपने पुत्र के कुसगति मे पडने के कारण विरक्त हो जाते है। माता और पत्नी दीन-हीन अवस्था मे दुख भोग रही होती है। अत. चारुदत्त अपनी स्त्री के वचे हुए गहने लेकर व्यापार के लिए वहाँ से निकल पडता है। अनेक देशो की यात्रा करने के वाद कुभकटक नामक द्वीप मे कर्कोटप पर्वत पर उसकी मुलाकात एक मुनि से होती है जिसका मुनि होने मे पूर्व चारुदत्त ने वडा उपकार किया था। मुनि चारुदत्त को पहचान कर अपने विद्याधर पुत्रो से उसका परिचय कराता है। फिर वे लोग चारुदत्त को विपुल धन देकर घर को विदा करते है। यात्रा से लौटने के वाद चारुदत्त अपनी वियोगिनी पत्नी मित्रवती से भेट करता है, जहाँ वसन्त तिलका भी उनके वियोग मे पीडित है। दोनो के प्रेम को देखकर चारुदत्त पुन उनसे प्रेम करने लगता है तथा वसत तिलका मित्रवती और चारुदत्त की सेवा मे रहकर अपना जीवन निर्वाह करती है। उसने वेश्याजीवन मे भी दाम्पत्य प्रेम को ही सर्वाधिक महत्त्व देकर अपने पवित्र प्रेम का परिचय दिया है।

वसन्त तिलका कुल मर्यादा की रक्षा के लिए वेश्या जीवन से विरक्ति लेकर चारुदत्त के साथ एक साध्वी नारी का जीवन व्यतीत करती है और दिखा देती है कि वेश्या को भी पति-प्रेम मिले तो वह भी शुद्ध नारी वन सकती है। मित्रवती से वह तनिक भी घृणा नही करती वरन् उससे प्रेम तथा सहयोग की आकाक्षा करती हुई चारुदत्त के कल्याण की चिन्ता मे रहती है।

वागीश्वर (सन् १९७०, पृ० १६२), ले० ओकारनाथ दिनकर; प्र० कृष्ण ब्रदर्स, कचहरी रोड, अजमेर, *पात्र* . पु० ९, स्त्री ८, *अक* : ३; *दृश्य* ७, ६, ७।
घटना-स्थल अवंती का राजमहल, मुञ्जवन, तैलगण।

इस ऐतिहासिक नाटक मे राष्ट्रीयता का चित्रण किया गया है । अवती के राना सिह दन्त और उनकी राजमहिपी पुत्र अभाव के कारण देशाटन के लिए' चले जाते है। उनको मुञ्जवन मे एक नवजात शिशु मिलता है। राजमहिपी उसे मुज नाम से अपना पुत्र घोषित कर देती है, जो बाद मे वाम्पतिराज के नाम से प्रसिद्ध होता है। कुछ समय पश्चात् राजमहिषी के स्वय एक पुत्र सिंधुल पैदा होता है। कालान्तर मे मुज अवन्तिका की शासन-व्यवस्था मे निरत हो जाते है । सिधुल को भोज नामक पुत्र प्राप्त होता है, किन्तु मुञ्जदेव वाम्पतिराज को कोई पुत्र नही होता ।

भोज के विद्याध्ययन से लौटने पर रुद्रादित्य और वाम्पतिराज के मित्र वत्सराज मिलकर भोज को मारने का षडयत्र रचते है । वे वाम्पतिराज को भी अपने वश मे कर लेते है, किन्तु वत्सराज भोज को मारने मे असफल रहता है। वाम्पतिराज को इससे ग्लानि होती है और वे भोज को अवन्तिका का युवराज पद प्रदान कर तैलगण विजय के लिए चले जाते है। इस युद्ध मे वाम्पतिराज वदी बन जाते है।

वाम्पतिराज के सभाकवि पद्मगुप्त भिल्लनमराज (तैलगण का महासामत) की महिपी तथा उनकी पुत्री कोस्वातत्र्य का पाठ पढाता है। इसी बीच मृणालवती तैलपराज वाम्पति राज को अपनी भगिनी का शिक्षक नियुक्त करते है। दोनो मे अनुराग जागृत होता है। और वह एक रात्रि वाम्पतिराज को तैलपराज के शयनकक्ष मे ले जाती है। दोनो मे युद्ध होता है, जिसमे तैलपराज की हार होती है। मृणालवती के कहने पर वाम्पतिराज उसे छोडकर स्वय पुन बदी हो जाते है। उधर भिल्लमराज भोजराज के साथ अपने परिवार सहित अवन्ति चले जाते है क्योकि सभा-कवि ने भिल्लमराज की पुत्री मे भोज के प्रति प्रेम जगा दिया था ।

अत मे वाम्पतिराज मारे जाते है किन्तु तैलपराज उनकी महानता को स्वीकार कर लेता है।

वारिदनाद-वध व्यायोग (सन् १९०४, पृ० ४९), ले० . वामनाचार्य गिरि, प्र० बाबू देवकीनन्दन खत्री, लहरी प्रेस, लाहौर टोला, काशी, *पात्र* पु० ६, स्त्री नही, *अक दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल . युद्ध-स्थल, वृक्ष, देवलोक ।

यह व्यायोग रामायण की कथा 'मेघनाद वध' के आधार पर लिखा गया है ।

रावण का भाई विभीषण युद्ध के भय से एक वृक्ष पर चढकर राम को पुकारता है। नेपथ्य से उसे अभय वाणी सुनाई पडती है। लक्ष्मण हनुमान के कन्धे पर बैठकर मेघनाद के साथ भीषण युद्ध करते है। इस युद्ध को आकाश से इन्द्र-रुद्र तथा देवगण देखते है। इन्द्र मेघनाद के गर्जन से मूर्छित हो जाता है। देवतागण दोनो पक्षो के कौशल की प्रशसा करते है। अन्त मे जब लक्ष्मण के बाणो से मेघनाद मारा जाता है, तो उसके भीषण चीत्कार से ब्रह्मा और इन्द्र मूर्छित हो जाते है। लक्ष्मण अपने साथियो सहित विजयी होकर राम का आशीर्वाद प्राप्त करते है ।

वासन्ती (सन् १९५८, पृ० ६४), ले० जानकी वल्लभ शास्त्री, प्र० लोक भारती, इलाहाबाद, *पात्र* पु० ३, स्त्री २, *अक-रहित*, *दृश्य* २।

इस प्रतीकात्मक गीतिनाट्य मे प्रकृति की सुन्दरता तथा उसके उग्ररूप का वर्णन है। प्रकृति के रूप मे पतझड आता है। जब जीवन की सन्ध्या का यौवन-सुमन मुरझा जाता है, तब अन्य सभी विकार-निराशा, अविश्वास आदि का प्रभाव भी उस सुमन पर छा जाता है । पतझड के बाद प्रकृति मे वसत के माध्यम से पल्लवन का आगमन होता है। वसन्त के अवसर पर जीवन मे आशा-उत्साह आदि का सहज ही उदय हो जाता है जिसमे पतझड के द्वारा पहले प्रकट किया हुआ रोष, आक्रोश, भय आदि विलीन हो जाते है। प्रकृति मे शान्ति और नव आशा का सचार ही इस नाटक का

अभीष्ट है।

वासवदत्ता का चित्रलेख (सन् १९५०, पृ० २१४), ले० : भगवतीचरण वर्मा, प्र० भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, पात्र पु० १०, स्त्री ४, अंक-रहित, दृश्य ९१ ऐतिहासिक सिनारियो।
घटना-स्थल मथुरा, काशी आदि।

इस ऐतिहासिक नाटक मे वासवदत्ता की जीवन-झाँकी चित्रित है। वासवदत्ता एक प्रभावशाली नर्तकी तथा मथुरा के राजा क्षेमेन्द्र की प्रेयसी है। उपगुप्त नामक एक बौद्ध भिक्षु पर वासवदत्ता मोहित हो जाती है, किन्तु उपगुप्त उसकी उपेक्षा करता है। इस पर वासवदत्ता एक सेठ धनराज से प्रणय करती है। सेठ की पत्नी उपगुप्त से अपने पति को वासवदत्ता से छुडाने के लिए कहती है। उपगुप्त उसकी मदद करता है। रुष्ट वासवदत्ता क्षेमेन्द्र के पास जाकर नगर के सभी बौद्ध भिक्षुओ को बाहर करती है और साथ ही कुछ बौद्ध भिक्षुओ की नरबलि भी करवाना चाहती है। किन्तु क्रुद्ध जनता उसे घायल कर नगर के बाहर फेक देती है। उपगुप्त आकर उसका उपचार करता है।

कलाकार एक मजदूर। ये सभी-समस्याएँ मध्यम वर्ग की है, जिनके लिए वर्तमान मानसिक सत्रास तथा भविष्य गहन अधकार मात्र रह गया है। इस कुठा, बेकारी घुटन और शून्य से विक्षुब्ध मानव जहाँ रहते है—वह विकलागो का देश है। लेखक के अनुसार सम्पूर्ण पृथ्वी ही विकलागो का देश है।

विकास (सन् १९४१, पृ० १००), ले० सेठ गोविन्ददास, प्र० हिन्दी साहित्य सदन, इलाहाबाद, पात्र पु० १, स्त्री २, अंक-दृश्य रहित। (एक नाटकीय संवाद है)
घटना-स्थल शयनागार।

एक आधुनिक शयनागार मे दो पलग बिछे है और एक सुन्दर युवक तथा एक सुन्दरी युवती निन्द्रा निमग्न हैं। कमरे मे बिजली की नीली बत्ती का प्रकाश है। एकाएक अँधेरा हो जाता है। थोडी देर पश्चात् पुन प्रकाश फैलता है और शयनागार के स्थान पर क्षितिज दिखाई देता है। क्षितिज पर चन्द्रमा का प्रकाश फैला हुआ है। दूर पर धुँधली पर्वत-श्रेणी झलकती है। जिस पर वृक्ष, पुष्प-गुच्छ और फल-समूह दिखाई देते है। इसी समय गान होता है।

बाब ३।
घटना-स्थल : उज्जैन नगर।

इस ऐतिहासिक नाटक मे राजा विक्रम की उदासीनता दिखाई गई है। उज्जैन नगर के राजा विक्रम करनाटकी कन्या मदन मजरी से गन्धर्व विवाह कर, उसके पिता द्वारा दिए गए शाप के कारण भूल जाता है लेकिन अपने पुत्र एव मदनमजरी को सामने देख पुन स्मृति लौट आती है, और उसे अपना लेता है। नाटक की दूसरी कथा मे राजा विक्रम के मित्र ठाकुर लेखराज की कन्या मनोरमा त्रियाचरित्र को सब चरित्रो से बडा प्रमाणित करती है। वह अपने कथन की पुष्टि राजा-सहित सातो दरबारियो को अधा सिद्ध करके करती है। नाटक मे पुतलियो की सर्जना, प्रश्न तथा राजा के उत्तर चमत्कारिक है। प्रश्नोत्तरो के माध्यम से प्रजा तथा राजा के लिए न्याय, दया, क्षमा आदि गुणो की अनिवार्यता प्रतिपादित की गई है।

विक्रमादित्य (सन् १९६३, पृ० ८९), ले० : उदयशकर भट्ट; प्र० . हिन्दी भवन, जालधर, इलाहाबाद, *पात्र* . पु० १०, स्त्री २; *अक* ५; *दृश्य* ३, ३, ५, ३, ६।
घटना-स्थल रामेश्वरम, चोल, काची, गौड़, सिहल।

इस ऐतिहासिक नाटक मे राजा विक्रमादित्य की जीवन-झाँकी चित्रित है।

सोमेश्वर, विक्रमादित्य और जयसिह नामक तीन राजकुमार है। विक्रमादित्य इन सब मे चतुर एव बलशाली कहा जाता है। विक्रमादित्य पिता का राज्य बढाने की लालसा से चोल, पाड्य, काची, गौड, कामरूप, सिहल आदि प्रदेशो को जीतकर लौटते समय अपने पिता की मृत्यु का समाचार पाता है जिससे वह मूछित हो गिर पडता है। सोमेश्वर बडा होने के नाते राज्याधिकारी बनता है, परन्तु उसके मन मे विक्रमादित्य का भय खटकता रहता है। इसी बीच मे चोल-नरेश अपनी सुन्दरी लड़की चन्द्रलेखा का विवाह विक्रमादित्य से कर देता है। यह विवाह सोमेश्वर की ईर्ष्या रूपी अग्नि मे घृत का कार्य करता है। भयवश लोग विक्रमादित्य के नाम से दूर रहने लगते है। विक्रमादित्य के पास भी सेना है। चोल राज्य पर आक्रमण हो जाने से विक्रमादित्य उसकी सहायता के लिए अपनी सेना लेकर चल देता है। इधर सोमेश्वर भी विक्रमादित्य को नष्ट करने की धुन मे है। सोमेश्वर द्वारा किए गए कुचक्रो से विक्रमादित्य सकट मे पड जाता है। अवसर पाते ही एक सैनिक के रूप मे चन्द्रलेखा सोमेश्वर का वध कर देती है। भाई की घातक चन्द्रलेखा को विक्रमादित्य अज्ञान मे मार देता है। अन्त मे विक्रमादित्य ही राज्य का उत्तराधिकारी बन जाता है।

विक्रमोर्वशीय (सन् १९५०, 'कालिदास' मे सग्रहीत रूपक), ले० उदय शकर भट्ट; प्र० : आत्माराम ऐण्ड सस, दिल्ली, *पात्र :* पु० ८, स्त्री० ७; *अक-दृश्य-रहित*।

महाकवि कालिदास के 'विक्रमोर्वशीय' नाटक मे वर्णित उर्वशी पुरुरवा की कथा पर आधारित यह एक सगीत-रूपक है। इसमे पुरुरवा और उर्वशी की प्रणय कथा वर्णित है।

विग्रहराज विशालदेव (सन् १९५७, पृ० १४५), ले० · ओकरनाथ 'दिनकर', प्र० : दत्त ब्रदर्स, अजमेर; *पात्र* · पु० १७, स्त्री ८; *अक* ३, *दृश्य* ५, ७, ७।
घटना-स्थल : इन्द्रपुरी।

इस ऐतिहासिक नाटक मे विग्रहराज विशालदेव की दिग्विजय एव म्लेच्छ राज को परास्त करने की गौरव-गाथा वर्णित है। सपादलक्ष परमभट्टारक आल्हादेव की तृतीय पत्नी इसाविश अपने पति की हत्या कर देती है, ताकि उसके सौतेले पुत्रो का राज्य-सिहासन पर अधिकार न हो सके, किन्तु विग्रहराज पड्यन्त्रकारियो को पकड कर उचित दण्ड देते है। वह देश मे म्लेच्छो का हमला होने पर उसका प्रतिकार करते है और पुन. दिग्विजय के उद्देश्य से चल पडते है। अन्त मे सम्राट् इन्द्रपुर की कन्या देसलदेवी से

उनका विवाह हो जाता है।

विचित्र नाटक (सन् १७०० के आसपास, पृ० ७६), ले० गुरु गोविन्द सिंह, प्र० गुरुद्वारा शिरोमणि प्रबन्धक कमेटी, अमृतसर, *पात्र* पु० ५, स्त्री नही, अक के स्थान पर १४ अध्याय है।
घटना-स्थल युद्धक्षेत्र।

अवतारवाद के सिद्धान्त को स्पष्ट करने के लिए यह ग्रथ लिखा गया। इसमे दैवी और आसुरी शक्तियो का युद्ध दिखाकर अवतारवाद का सामाजिक महत्त्व सिद्ध किया गया है।

इस जीवनीपरक नाटक मे नाटककार ने स्वय अपनी आत्मकथा का वर्णन किया है। अकाल पुरुष गुरु गोविन्द सिंह परोक्ष अध्यात्म सत्ता को चेतना मानकर उससे वार्तालाप करते है। उन्होने अपनी जीवन-कथा मे जुझारसिह युद्ध तथा फतहशाह युद्ध का वर्णन किया है। गुरुजी अपने जीवन मे हरि-राम को उद्देश्य मानकर सच्चे-धर्म का प्रचार करते है। मुसलमानो के कोप का वर्णन तथा भगवान् की कृपा से सन्तो की रक्षा के साथ नाटक की समाप्ति होती है।

विचित्र विवाह या मृणालिनी परिणय (सन् १९३२, पृ० १४४), ले० प० बलदेव प्रसाद मिश्र, प्र० लक्ष्मण प्रसाद मिश्र, साहित्य समिति, रायगढ, *पात्र* पु० ११, स्त्री ९, *अक* ३, *दृश्य* ६, ७, ९।
घटना-स्थल बैरागढ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे इतिहास और किवदन्ती दोनो का समन्वय है। चाँदा जिले के अन्तर्गत बैरागढ नामक स्थान के नरेश बैरागढिया राजकुमार के नाम से प्रख्यात है। वे बडे ही पराक्रमी राजा है। उनका विवाह चाँदा की राजकुमारी मृणालिका के साथ होता है। उन दिनो की पुरानी प्रथा के अनुसार विवाह के लिए राजकुमार को अश्व-पराक्रम दिखाना पडता है और इसके लिए उनको भीमकाय लोहे की साग की चोटे खानी पड़ती है।

विजय-पर्व (सन् १९६३, पृ० ११०), ले०: डॉ० रामगोपाल शर्मा, प्र० स्टूडेण्ट ब्रदर्स ऐण्ड कम्पनी, भरतपुर, *पात्र* : पु० १०, स्त्री ३, *अक* : ३, *दृश्य* . ५, ७, ५।
घटना-स्थल : चित्तौड का राजमहल।

चित्तौड के राजा रायमल के तीनो पुत्रो--संग्रामसिंह, पृथ्वीराज और जयमल मे उत्तराधिकारी बनने के लिए कलह होता है। पृथ्वीराज और जयमल संग्रामसिंह को युवराज बनाने के विरुद्ध है। इनका सग्रामसिह से युद्ध होता है। सग्रामसिह युद्ध मे घायल होकर भाग जाता है। जयमल ताराबाई के प्रेम मे मारा जाता है। रायमल अपने पुत्रो के कलह से दु खी होकर पृथ्वीराज को निर्वासित कर देता है।

सूरजमल चित्तौड को हथियाने के लिए रायमल के खिलाफ षड्यन्त्र रचता है किन्तु निर्वासित पृथ्वीराज द्वारा पकडा जाता है। सग्रामसिंह, जो युद्ध से भागकर दस्यु बन गया था, पृथ्वीराज की शरण मे आ जाता है। पृथ्वीराज चालुक्य राज्य की मुक्ति के लिए म्लेच्छराज पर हमला करता है। इधर सूरज-मल, सारगदेव और मुजफ्फरशाह चित्तौड पर सेना लेकर धावा बोल देते है। पृथ्वीराज चालुक्य राज्य का उद्धार करके अपने पिता रायमल की सहायता से दुश्मनो को बुरी तरह हरा देता है। सभी विजयी सैनिक शिविर मे विजयोल्लास मनाते है और म्लेच्छ राज अपनी कन्या पृथ्वीराज को सौप देता है।

विजय वेलि अथवा कुरुष (सन् १९५०, पृ० १३२), ले० : गोविन्ददास, प्र० भारतीय विश्व प्रकाशन, दिल्ली; *पात्र* पु० १४, स्त्री ३, *अक* . ५, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल · राजमहल, आश्रम, युद्धक्षेत्र।

कुरुष अतिथिग्व का दौहित्र है। अतिथिग्व अपने सेनापति हरयागस को आदेश देता है कि वह उसके दौहित्र को जन्म होते

ही मार दे क्योकि सम्राट् ने स्वप्न मे पुत्री के गर्भ से एक बेलि उपजी देखी, जो सारे ससार पर छा गई है। उसे यह भय है कि कही यह बच्चा ससार पर न छा जाए। सेनापति उस बालक के प्राण न लेकर उसे एक ऋषि के सरक्षण मे रख देता है। बडा होने पर विवाह के पश्चात् कुरुष अपने माता-पिता के पास जाता है, जहाँ उसका नाना अतिथिग्व भी रहता है। भेद खुलने पर अतिथिग्व हरयागस को दण्डित करता है और कुरुष से युद्ध की घोषणा भी, परन्तु कुरुष हतोत्साह नही होता। पश्चिम के राज्यो को जीतता हुआ तथा उनसे सास्कृतिक सबध जोडता हुआ भारत की ओर बढता है। किंतु आदिम जातियो के साथ युद्ध मे घायल हो भारतीय सीमा पर स्थित ऋषि जरतुस्त के आश्रम मे पत्नी द्वारा लाया जाता है, जहाँ उसका देहान्त हो जाना है। नाटक का उद्देश्य कुरुष की दिग्विजय की कथा को नाटकीय रूप देना मात्र है।

विजय-पर्व (सन् १९६३, पृ० ११०), ले० : रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', प्र० . स्टूडेण्ट ब्रदर्स ऐण्ड कम्पनी, भरतपुर (राजस्थान) ; *पात्र* · पु० १७, स्त्री ३, *अक* : ३, *दृश्य* : ५, ७, ५।
घटना स्थल : उदयपुर का राजमहल, जगल।

इस ऐतिहासिक नाटक मे सूरजमल की कूटनीति और पृथ्वीराज की बुद्धिमत्ता दिखाई गई है।

उदयसिह का पुत्र सूरजमल अपनी कूटनीति से रायमल के तीनो पुत्रो—सग्राम सिंह, पृथ्वीराज और जयमल मे विद्रोह पैदा कर स्वय मेवाड का महाराणा बनना चाहता है। तीनो योद्धा राज्य से निकल जाते है। सूरजमल डाकू बनकर जनता को लूटता है। जयमल सुरताण की शूरवीर कन्या तारा का अपमान करने के कारण मारा जाता है। सग्रामसिंह जगलो मे भटकता है। अन्त मे पृथ्वीराज सुरताण और उसकी कन्या तारा के सहयोग से सूरजमल के षड्यन्त्र को असफल कर देता है। पृथ्वीराज और तारा का विवाह हो जाता है।

विजयिनी (सन् १९६६, पृ० ८०), ले० : सुरेन्द्र मोहन, प्र० कुन्तला प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, *अक-रहित*, *दृश्य* ३।
घटना-स्थल वैशाली का राजउद्यान।

इस ऐतिहासिक गीति-नाट्य मे वैशाली गणतन्त्र की राजनर्तकी आम्रपाली की मन-स्थितियो द्वारा कतिपय आधुनिक प्रश्नो पर विचार किया गया है।

वैशाली की राजनर्तकी आम्रपाली कला के आवरण मे रूप-यौवन की अनन्त विभूति सँजोये हुए है। इसलिए वह रूप-यौवन की विक्रेता मात्र नही, वरन् सृष्टि मे सामजस्य स्थापित करने वाली सास्कृतिक चेतना है। महाराज विम्बसार उसके रूप पर मोहित होकर उसे अपनी पटरानी बनाना चाहते है किन्तु आम्रपाली इसे नारी का अपमान समझती है क्योकि वह कला साधिका है, शासन की पुतली नही बन सकती है। यहाँ बिम्बसार और आम्रपाली मे नारी के परम्परागत भोग्य रूप तथा उसके आधुनिक सास्कृतिक रूप पर विवाद होता है। वह तथागत बुद्ध के समक्ष मोक्ष पर वाद-विवाद करती है। उसके अनुसार त्याग जीवन मे निषेधात्मक दृष्टि विकसित करता है जो कुण्ठाओ को जन्म देती है। इसीलिए वह आगत-विगत की आकाक्षाओ से मुक्त कर्मठ वर्तमान को ही मुक्त जीवन का प्रतीक मानती है।

विजयी कुँवर सिंह (सन् १९५९, पृ० ८८), ले० प्रताप नारायण सिह, प्र० . लेखक स्वय, सिन्द्री, धनवाद, *पात्र* पु० ११, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* . ५, ५, ५।
घटना-स्थल जगदीश पुर की राजधानी का देवस्थान, कानपुर मे नानासाहब का राजप्रासाद, झाँसी का राजमहल, गगातट पर सैनिको का मार्च।

यह ऐतिहासिक नाटक स्वतन्त्रता-संग्राम की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। इसमे स्वतन्त्रता प्राप्ति के लगभग सौ साल पहले

भारतीयो द्वारा अग्रेजो के पैर उखाडने के सफल प्रयासो का चित्रण किया गया है। प्रारम्भ मे कुँवर, अमर तथा अन्य बालको द्वारा मगलाचरण होता है। जगदीशपुर के जमीदार महाराज कँवरसिह तथा उनके भाई अमरसिह की कीर्ति चारो तरफ फैली हुई है। एक दिन गगातट पर कुवरसिह को एक सन्यासी मिलता है। वह उन्हे नानासाहव का सदेश बताते हुए क्रान्ति मे कूदने की प्रेरणा देता है। उधर रानी लक्ष्मीवाई भी क्राति की पूरी तैयारी कर लेती है। अचानक ही पूरे देश मे क्राति की लहर फैल जाती है। वृद्ध कुँवरसिह क्राति का सचालन करते हैं। शत्रुओ को मुँह की खानी पडती है। कुँवरसिह की प्रेरणा से अमरसिह भी स्वतन्त्रता-सग्राम मे कूद पडते है परन्तु एक-एक कर स्वतन्त्रता सेनानियो का पतन उन्हे क्षुब्ध कर देता है। सन्यासी के रूप मे प्रेरणा देने वाले और कोई नही वह तो अमर सेनानी तात्या टोपे होते है। घोर सग्राम के बीच गगा पार करते समय अग्रेजो की गोली उनके हाथ मे लगती है। वे अपना हाथ काट कर गगाजी मे डाल देते है। अपनी सारी सेना के क्षत-विक्षत होने पर अन्त तक शत्रुओ से लडते हुए मृत्यु वरण करते है।

विजयी धर्म (वि० १९८३, पृ० ३३), ले०: गोविद, प्र० गोविन्द पुस्तकालय, सिरोज, *पात्र* पु० ६, स्त्री ३, *अंक-रहित*, *दृश्य*: ८।
घटना-स्थल: जगल, पुष्पवाटिका।

यह प्रतीक नाटक है जिसमे धर्म, अधर्म, क्रोध, नीति, भक्ति, सुगति, ज्ञान, प्रेम, सत्य को पात्र बनाया गया है। भक्ति का प्राधान्य दिखाया गया है। वह ज्ञान को अज्ञान के नाश का, वैराग्य को मोह-विनाश का, बोध को क्रोध-निवारण का, सत्य को झूठ-विनाश का आदेश देती है। अधर्म के सिहासनासीन होने से मिथ्या, क्रोध अपनी शक्ति दिखाना चाहते है। पर भक्ति के अनुयायियो की विजय होती है। भक्ति का एक हाथ धर्म के ऊपर, दूसरा सुगति के ऊपर, एक चरण अधर्म की छाती पर होता है। क्रोधादि जजीरो मे जकडे पृथ्वी पर छटपटाते हैं। सत्य के हाथ मे मिथ्या की चोटी है। भक्ति धर्म से कह रही है—"धर्म तुम विजयी हुए।"

विजेता (सन् १९५५, पृ० ५१), ले० · रामवृक्ष बेनीपुरी, प्र० बेनीपुरी प्रकाशन, पटना, *पात्र* पु० ३, स्त्री २, अक · ४; *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल चाणक्य का राजदरबार, राजभवन, जगल, झोपडी।

इस ऐतिहासिक नाटक मे चाणक्य की नीति दिखाई गई है। चाणक्य सिकन्दर से अपने अपमान का बदला लेने के लिए वीर चन्द्रगुप्त को अपनी ओर मिला लेता है। वह चन्द्रगुप्त को सिकन्दर के रणकौशल की शिक्षा देता है। चन्द्रगुप्त की माँ द्वारा लाई गई चन्द्रा अथवा धूल का फूल चाणक्य को जादूगर बताती है। किन्तु चन्द्रगुप्त अपने गुरु पर पूर्ण विश्वास रखता है। वह गुरु की आज्ञानुसार ही महानन्द को हराकर गद्दी पर बैठता है। चाणक्य चन्द्रगुप्त को विश्व-विजयी बनाना चाहता है। गुरु-आज्ञा से चन्द्रगुप्त सेल्यूकस को हराता है। सेल्यूकस अपनी लडकी को भेट स्वरूप चन्द्रगुप्त को दे देता है। अब चन्द्रगुप्त और उसकी माता दोनो चन्द्रा के लिए दुखी होते है। दुख मे सदा साथ देनेवाली चन्द्रा को अब सुख के समय पुन. उस फूल को धूल पर ही छोड दिया जाता है। चन्द्रा कहती है "सम्राट् मैं सेवा करने के लिए हूँ, मुझे आपकी सेवा करने मे ही प्रसन्नता है।" माँ के आग्रह से चन्द्रा का पाणिग्रहण चन्द्रगुप्त से हो जाता है। कुछ समय पश्चात् चन्द्रगुप्त अपना जीवन एक छोटी झोपडी मे तपस्यापूर्वक बिताकर भारत-माता के लिए स्वाहा कर देते है।

वितस्ता की लहरें (सन् १९५३, पृ० १२३), ले० लक्ष्मीनारायण मिश्र, प्र०: आत्माराम ऐण्ड सस, कश्मीरी गेट, दिल्ली; *पात्र*: पु० १२, स्त्री ५; अक ३; *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल · पुरु केकय का राजभवन, केकय-नरेश पुरु का राजभवन, युद्धक्षेत्र।

यह सस्कृति-प्रधान ऐतिहासिक नाटक है। अलिकसुन्दर गान्धार और पारसपुर को जीतकर केकय पर आक्रमण करने को उद्यत होता है। केकय-नरेश पुरु द्वन्द्व-युद्ध के लिए कहते है जिसे अलिक सुन्दर स्वीकार कर लेता है। अलिक सुन्दर की सेना चोरी से वितस्ता को पार करना चाहती है किन्तु पुरु की सेना के आगे उसको मुँह की खानी पडती है। तक्षशिला के स्नातक अलिक सुन्दर की प्रेयसी ताया का अपहरण कर लेते है। ताया के वियोग मे अलिक सुन्दर सन्धि करने को उद्यत हो जाता है। अलिक सुन्दर का सेनापति सेल्यूकस पुरु की सेना का लोहा मान लेता है। पुरु का हाथी अलिक सुन्दर को सूँड मे लपेटकर धरती पर पटकने वाला होता है कि वह पुरु की आज्ञा से अलिक सुन्दर को पीठ पर बैठा लेता है। अलिक सुन्दर शत्रु की दया से आत्म-विभोर हो जाता है। तक्षशिला के आचार्य विष्णुगुप्त ताया को अलिक सुन्दर के हाथ सौप देते है। ताया रतीय सस्कृति की महानता को स्वीकार करते हुए कहती है कि भारतीय सस्कृति मे नारी को आदर की दृष्टि से देखा जाता है।

विदा (सन् १९५८, पृ० ८०), ले० हरि-कृष्ण प्रेमी, प्र० हिन्दी भवन, इलाहाबाद; *पात्र* पु० ५, स्त्री २, *अंक* ३, *दृश्य* ६, ५, ६।
घटना-स्थल औरगजेब का राजदरबार, उदयपुर।

इस ऐतिहासिक नाटक मे औरगजेब की कुटिल-नीति तथा अकबर का देश-प्रेम और स्वाभिमान चित्रित है। मुगल सम्राट् औरग-जेब की पुत्री जेबुन्निसा को पिता की मूर्ति-कला-विरोधी भावना से घृणा है। औरगजेब की जसवन्त सिह के पुत्र को मुसलमान बनाने की नीति का दुर्गादास विरोध करता है। दुर्गादास के नेतृत्व मे भीमसिह और समरसिह की सेना का संगठन होता है। इस युद्ध मे औरगजेब की हार होती है। उसका पुत्र अकबर सेनानायक नियुक्त होता है परन्तु वह विद्रोही बन जाता है। राजपूत सरदार अकबर का विरोध करते है। किन्तु दुर्गादास अकबर का साथ देते है। वे राजपूतों को छोडकर चले जाते है। औरगजेब अपने पुत्र अकबर की हत्या कराना चाहता है किन्तु बेगम उदयपुरी रोक लेती है। शाहजादा अकबर अपने बच्चो को दुर्गादास को सौपकर स्वय ईरान प्रस्थान करता है। यह नाटक देश की आन्तरिक दुर्बलताओ पर प्रकाश डालता है।

विदाई (सन् १९५९, पृ० ८०), ले० : जगदीश शर्मा; प्र० · देहाती पुस्तक भडार दिल्ली, *पात्र* पु० ४, स्त्री ४, *अक* · ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल : मकान, विवाह-मडप।

इस सामाजिक नाटक मे आदर्श प्रेम चित्रित किया गया है। शकुन्तला जय से प्रेम करती है किन्तु सामाजिक बन्धनो के कारण उसका विवाह जय से नही हो पाता। दीनदयाल शकुन्तला को इसके लिए बहुत डॉटता है और उसकी शादी दूसरे से कर देता है किन्तु जब शकुन्तला भॉवर डालकर मडप मे बैठती है तो वह देवी अपने प्रेमी जय मे लीन होकर कहती है—"आदर्श नारी अपने हृदय मे केवल एक ही पुरुष को स्थान देती हैं मेरे हृदय ने जय को पति मान लिया है यदि मै हृदय की पवित्रता को भग कर दूसरे को स्थान दूँ तो मुझमे और एक वेश्या मे क्या अन्तर रह जाएगा?" शकुन्तला का यह कथन वास्तव मे प्रेम की उच्चता को प्रदर्शित करता है।

प्रस्तुत नाटक कश्मीर न्यू थियेटर द्वारा अभिनीत भी किया जा चुका है।

विद्यापति (सन् १९६४, पृ० ८८), ले० · विद्यानाथ राय बी० ए०, प्र० श्री विद्यापति प्रकाशन, दरभगा, *पात्र* पु० १९, स्त्री ३, *अक* ; ३, *दृश्य* · १४।
घटना-स्थल गणेश्वर सिंह का दरबार, शिव मदिर, देवसिह का दरबार, महादेव का मदिर, लोदी का दरबार, फुलबाडी, निर्जन स्थान, बहलोल लोदी का बाग, शिवसिंह का दरबार, जंगल, नेपाल तराई, विद्यापति का निवास-स्थान।

इस ऐतिहासिक नाटक मे परम्परा के अनुसार महाकवि विद्यापति के सम्पूर्ण जीवन की प्रत्येक उल्लेखनीय घटना का विवरण मिलता है। इसके अन्तर्गत विद्यापति के प्रमुख आश्रयदाताओ और उनकी रचनाओ की भी चर्चा प्रसगानुकूल की गई है। इतिहास के अतिरिक्त विद्यापति के सबध मे प्रचलित जनश्रुतियो का भी उल्लेख स्थान-स्थान पर मिलता है। कही-कही पर राधा-कृष्ण विषयक प्रेम-सबधी गीतो का, शिव-सबधी नचारियो और कूट गीतो का प्रयोग भी नाट्यकार ने नाटक को रोचक बनाने की दृष्टि से किया है।

विद्यापति नाटक (सन् १९३६, पृ० ७५), ले० : रामशरण 'आत्मानन्द'; प्र० उपन्यास बहार आफिस, बनारस, *पात्र* : पु० ७, स्त्री ३; *अक* ३ ; *दृश्य* : ८, ७, ३।
घटना-स्थल : बाग, मार्ग, मन्दिर, महल, ठाकुरद्वारा।

इस ऐतिहासिक नाटक मे कवि विद्यापति की जीवनपरक घटनाओ का समावेश है।

इसमे विद्यापति एक प्रसिद्ध विद्वान् गायक है। राजा शिवसिह की पत्नी लक्ष्मी विद्यापति के गाने पर मुग्ध होकर उनके प्रेम-बन्धन मे बेसुध हो जाती है। यह बात विद्यापति को मालूम होने पर वह मन्दिर मे मुरारीजी की मूर्ति के आगे कहता है कि "हे करुणेश महारानी को सुबुद्धि प्रदान करो कि वह अन्धकार की गहन-गुफा से निकलकर प्रकाश मे आ जाये। प्रभो नारी का सब-कुछ पति के लिए होता है। भगवन्, राज दम्पति को दाम्पत्य-प्रेम का अमर वरदान दो।" शिवसिह यह सब सुनता है तो प्रसन्न होकर निर्दोषी विद्यापति को गले से लगाता है। इधर लक्ष्मी विद्यापति के प्रेम मे ऐसी पागल हो जाती है कि सहसा उसकी मृत्यु हो जाती है।

विद्यापीठ (सन् १९४४, पृ० ६८), ले० : शम्भू दयाल सक्सेना ; प्र० : नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर, *पात्र* पु० ५, स्त्री ३, *अक-रहित*, *दृश्य* ११।
घटना-स्थल महर्षि शुक्राचार्य का आश्रम।

इस पौराणिक नाटक मे कच-देवयानी की प्रचलित कथा का चित्रण किया गया है।

असुर अपने आचार्य शुक्राचार्य की सजीवनी विद्या के प्रयोग से देवताओ को मस्त करते है। इससे मुक्ति पाने के लिए देव-गुरु वृहस्पति का पुत्र 'कच' सजीवनी विद्या सीखने शुक्राचार्य के पास आता है। वहा पर शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी के प्रयास से उसे विद्या सीखने के लिए आश्रम मे स्थान मिल जाता है। कालान्तर मे मन-ही-मन देवयानी कच से प्रेम करने लगती है परन्तु कच देवयानी को गुरु-पुत्री समझकर बहन की तरह मानता है। विद्या सीख कर लौटते समय कच से देवयानी अपनी मन स्थिति बताकर प्रणय निवेदन करती है परन्तु कच उसे परम्परा-अनुसार बहन स्वीकार कर उसके अनुरोध को अस्वीकार कर देता है। देवयानी क्रोध और उत्तेजना के वशीभूत हो कच की सीखी हुई विद्या को निष्फल हो जाने का शाप देती है और कच देवयानी के कामान्धपूर्ण इस अनुचित कार्य पर उसे किसी ऋषिकुमार के न वरण करने का शाप देकर देवलोक चला जाता है।

विद्या विनोद नाटक (सन् १८९२, पृ० ५९), ले० गोपालराम गहमरी, प्र० हनुमन प्रेस, कालाकाकर, *पात्र* पु० १२, स्त्री २, *अक* ७, *दृश्य* १, २, २, २, २, १, १।
घटना-स्थल राजा ढोगासेन का दरबार, देवी का मदिर, विद्या का शयनागार, महल, कचहरी, जगल।

इस सामाजिक नाटक मे अनमेल-विवाह का दुष्परिणाम दिखाया गया है। इसमे एक ऐसे राजा की कहानी है जो पुत्रोत्पत्ति की आशा मे चार-पॉच शादिया करता है, किन्तु अनमेल विवाह करने के कारण युवतियाँ उसे पसद नही करती।

राजा ढोगलसेन एक ऐसे ही राजा है। वह अपने मत्रियो से पुत्र की अभिलाषा व्यक्त

करते हुए तीसरी शादी की बात भी करते है। यद्यपि उनकी आयु बहुत अधिक है, फिर भी पुत्र की कामना से शादी के लिए बाते करने के लिए वे अपने भाट एव पुरोहित को दूसरे देश मे भेजते है। राजा भोदूसेन की अतीव सुन्दरी पुत्री विद्या विनोद नामक एक राजकुमार से प्रेम करती है। वह विनोद से ही शादी करना चाहती है।

दुर्भाग्यवश विद्या की शादी राजा ढोगलसेन से हो जाती है। विद्या ढोगलसेन से नफरत करती है इसलिए पति कहने के बजाय वह उसे पिता कहना ज्यादा अच्छा समझती है। फलस्वरूप राजा क्रुद्ध होकर विद्या को देश-निकाले की सजा दे देता है। वह जगलो मे साधु-वेष मे घूमती एक ऐसे स्थान पर पहुँचती है जहाँ प्रेमी विनोद से उसकी भेट होती है। दोनो आनद से विह्वल होकर आपस मे एक-दूसरे से लिपट जाते है।

विद्या विलाप(सन् १७०० के आस-पास, पृ० ३२), ले० महाराज भूपतीन्द्र मल्ल, प्र० · अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, बैकरोड, प्रयाग , *पात्र* पु० ८, स्त्री ५, अक के स्थान पर दिवस का उल्लेख मिलता है। *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल कही भी आभास नही मिलता।

नैपाली परम्परा पर आधारित इस नैपाल-विरचित नाटक मे प्रेमी-प्रेमिका का गहन प्रेम प्रदर्शित किया गया है। उज्जैन के राजा वीरसिह की विद्यावती नाम की एक प्रतिभाशाली कन्या है। वह प्रतिज्ञा करती है कि वह शादी उसी के साथ करेगी जो उसे तर्क-वितर्क मे पराजित कर देगा। अनेक राजकुमार राजकुमारी के समक्ष प्रस्तुत होते है किन्तु किसी को सफलता नही मिलती। इससे वीरसिह अत्यधिक चिन्तित हो जाते है। वे उद्भट विद्वान् राजकुमार सुन्दर से इस प्रसग मे वातचीत करने का निश्चय करते है। वे अपने दरबारी कवि को गुणसिन्धु के पास भेजते है। दूसरी ओर सुन्दर भी विद्यावती के अपूर्व सौन्दर्य को सुनकर मन-ही-मन उसके साथ शादी की कल्पना करता है। वह उज्जैन मे राजमहल के समीप अपना निवास-स्थान ठीक कर लेता है। राजकुमार राजकुमारी के समीप पहुँचकर उससे अपनी इच्छा प्रकट करता है। इधर राजकुमारी के हृदय मे भी राजकुमार के प्रति ममत्व की भावना जागृत हो जाती है, किन्तु कोई सुगम मार्ग नही दिखाई पडता। इसी बीच उज्जैन के राजा-रानी राजकुमार और राजकुमारी के प्रेम-सम्बन्ध से अवगत होते है। सुन्दर को राजा के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। राजा उसे चोरी के आरोप मे सजा देना चाहता है किन्तु दरबारी कवि के वापस आने पर सारा भेद खुल जाता है। दरबारी कवि बताता है कि महाराज गुणसिन्धु का लडका सुन्दर ही कैदी है। यह सुनकर राजा तुरन्त उसे बन्धन-मुक्त कर देते है और विद्यावती के साथ उसका विवाह करते है।

विद्या विलासी व सुखबन्धनी नाटक (सन् १८८४, पृ० १००), ले० · श्रीकृष्ण उर्फ तकरू ; प्र० . नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, *पात्र* : पु० २६, स्त्री ७, अक के स्थान पर तमाशा, दृश्य के स्थान पर झाँकी। तमाशा ६, झाँकी ७, ६, १, ४, ३।
घटना-स्थल . गाँव, बारात।

यह एक सामाजिक नाटक है जिसमे बाल विवाह, विवाह-बारात मे सामर्थ्य से अधिक व्यय, स्त्री-शिक्षा के अभाव के कारण होने वाली सामाजिक दुर्दशा का चित्र खीचा गया है। जगदानन्द और नन्दकुमार रईस व्यक्ति है। विद्या विलासी जगदानन्द की लडकी है और सुखबंधनी नन्द कुमार की। दोनो परिवारो मे लडके लडकियो का विवाह बाल्यावस्था मे होता है। बारात मे बडी परेशानियाँ उठानी पडती है।

दूसरी कथा स्वामी विद्यानन्द की है। चद्रिका और रघुनाथ १२ वर्ष के छात्र है पर उनका विवाह हो जाता है। वे पहली क्लास से अग्रेजी पढते है। स्वामी विद्यानद उन्हे

अपने साथ आश्रम मे ले जाते है और भारतीय शास्त्र की पूरी शिक्षा देते हैं। दोनो छात्र अपने गुरु के परम ऋणी बन रहते है।

विद्या सुन्दर नाटक (सन् १८८६, पृ० ६२), ले० : हरिश्चन्द्र, प्र० भारत जीवन प्रेस, काशी, *पात्र* · पु० ६, स्त्री ५, अक . ३, दृश्य ४, ३, ३।
घटना-स्थल . उज्जैन नगर, राज दरबार, कारागार।

इस ऐतिहासिक नाटक मे प्रेमी-प्रेयसी का प्रेम चित्रित है तथा विद्या के अद्भुत गुणो का वर्णन किया गया है।

राजकुमारी विद्या यह निश्चय करती है कि जो भी उसे शास्त्रार्थ मे पराजित कर देगा, उसी के साथ वह विवाह करेगी। अनेक राजकुमार अपने प्रयत्नो मे असफल हो जाते है। इससे राजा अत्यन्त चितित होते है। एक मत्री काचीपुर के युवराज सुदर के गुणो की प्रशंसा करता है तथा उसे राजकुमारी के योग्य वर बताता है। इधर सुदर भी विद्या के गुणो की चर्चा सुन कर चुपचाप उमसे मिलने के लिए चल देता है। वहाँ राजकुमारी से उसका प्रेम हो जाता है और दोनो गाधर्व विवाह कर लेते है। एक दिन वह राज-सैनिको द्वारा पकड लिया जाता है। राजा उसको कारावास का दड देते है। किंतु बाद मे यह ज्ञात हो जाने पर कि वह अपराधी नही वरन् राजकुमार सुदर है, राजा अपनी पुत्री का विवाह उसके साथ सम्पन्न कर देते है।

विद्रोहिणी अम्बा (सन् १९३५, पृ० १०२), ले० उदयशकर भट्ट; प्र० बनारसीदास, मोतीलाल, लाहौर, *पात्र* पु० १३, स्त्री ४; अक · ३, *दृश्य* ६, ५, ७।
घटना-स्थल काशीराज का महल, गंगातट।

श्रीमद्भागवत की एक कथा के आधार पर लिखा गया यह दुखान्त पौराणिक नाटक है। काशीराम अपनी तीनो पुत्रियो-अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका के स्वयवर मे हस्तिनापुर के राजा शातनु के पुत्र को आमत्रित नही करते क्योकि उमकी माता धीवर-कन्या है। इस अपमान का बदला लेने के लिए भीष्म तीनो कन्याओ का अपहरण करते है। अम्बिका और अम्बालिका तो विचित्रवीर्य के साथ विवाह करने को तैयार हो जाती है लेकिन अम्बा को, जिसने एक-दूसरे राजा को पहले ही पति रूप मे स्वीकार कर लिया है, राजा शाल्व के यहाँ भेज दिया जाता है जो उसे अस्वीकार कर देता है। वहाँ से अपमानित अम्बा क्रुद्ध होकर भीष्म से अपने अपमान का बदला लेने के लिए चल पडती है। चारो ओर से अपने को असमर्थ पाकर वह शिव की उपासना करके भीष्म के नाश का वरदान माँगती है। वरदान प्राप्ति के उपरात वह गगा मे कूदकर आत्म-हत्या कर लेती है। नाटक के अत मे शिखडी के रूप मे अवतरित होकर भीष्म की मृत्यु का कारण बनती है।

विधवा (सन् १९४०, पृ० ५५), ले० : जगदीश शर्मा; प्र० : देहाती पुस्तक भडार, दिल्ली, *पात्र* पु० ४, स्त्री २, अक ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल विवाह मडप।

इस सामाजिक नाटक द्वारा समाज में प्रचलित ईर्ष्या-द्वेषमयी भावनाओ की कटु निंदा की गई है।

प्रकाश और सध्या मे प्रेम हो जाता है। दोनो अपने प्रेम की रक्षा के लिए सदैव धर्म पर चलना चाहते है पर समाज उन्हे ऐसा नही करने देता। सध्या का फलदान कर दिया जाता है और प्रकाश का भी व्याह रचा दिया जाता है। लेकिन प्रकाश अपनी सध्या की याद मे व्याह की वेदी पर ही अपनी साँसे तोड देता है जिसे देख संध्या भी आजीवन उसी के लिए तडपती रहकर अपना जीवन-निर्वाह करना चाहती है पर समाज की कटूक्तियाँ उसे आत्महत्या के लिए विवश कर देती है। अत मे वह भी आत्महत्या कर लेती है और समाज के ठेकेदार अपनी विजय पर हँसते है।

विधवा विलाप (सन् १९२८, पृ० २४), *ले०* : भिखारी ठाकुर, *प्र०* दूधनाथ पुस्तकालय ऐण्ड प्रेस, सलकिया, हावडा, *पात्र* : पु० ४, स्त्री ३, *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल ग्रामीण घर, जगल, वनमार्ग।

इस सामाजिक नाटक मे व्यभिचारी व्यक्ति की मनोदशा और उसकी कृतियो का चित्रण है।

एक युवती का बूढे के साथ विवाह हो जाता है जो थोडे ही दिनो मे विधवा हो जाती है। वह नि सहाय विधवा अपने भतीजे उदवास को घर का स्वामी बना देती है। उदवास की पत्नी उस विधवा से छुटकारा पाने के लिए अपने पति को बाध्य करती है कि वह (विधवा काकी) को किसी निर्जन स्थान मे ले जाकर हत्या कर दे। उदवास अपनी पत्नी की बात मानकर विधवा काकी को तीर्थ-यात्रा के बहाने निर्जन स्थान पर ले जाकर हत्या करना चाहता है। अचानक एक साधु के आ जाने से वृद्धा की रक्षा हो जाती है। साधु के उपदेश से वह वृद्धा उस अरण्य प्रदेश मे भगवान् की उपासना करती है, जिससे प्रसन्न होकर भगवान् उसे दर्शन देते है और अत मे वह विश्व की मगल-कामना करती हुई स्वर्ग चली जाती है।

विधवा विवाह सताप नाटक (सन् १८८१, पृ० २५), *ले०* काशीनाथ, *प्र०* . खड्ग विलास प्रेस, बॉकीपुर, *पात्र* पु० ६, स्त्री २, *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल . लीक पीटन दास के घर की बैठक।

यह नाटक राधाकृष्णदास विरचित 'दुखिनी बाला' के प्रभाव से लिखा गया। नाट्यकार प्रस्तावना मे लिखते है, "दुखिनी वाला नाटक पढकर मेरे चित्त मे आया कि मैं भी इस विपय मे अपनी लेखनी की परीक्षा करूँ।" लीक पीटन दास की कन्या अवला देवी नौ वर्प की आयु मे विधवा हो जाती है। ब्याह के ६ महीने बीतने पर उसका ११ वर्ष आयु वाला पति स्वर्गवासी हो जाता है। पुरोहित और मित्र लड़की पर भाग्य को कोसते है किंतु सस्कृत, अग्रेजी के विद्वान् बाबू कुलप्रकाश चन्द हिंदुओ की निदनीय रीति का विरोध करते है। पडित ज्ञानोदय शास्त्री विधवा-विवाह की व्यवस्था देते हुए कहते है कि 'पराशर सहिता मे स्पष्ट आज्ञा है कि विधवा पुर्नविवाह होना योग्य है।" वह पराशर संहिता का श्लोक उद्धृत करते है—"नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीवे च पतिते पतौ। पञ्चस्वापत्सु-नारीणा पतिरन्यो विधीयते।"

पंडित ज्ञानोदय ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की सम्मति भी उद्धृत करते है। कुपंथी राम पुरोहित शास्त्री जी का विरोध करते है।

६ वर्ष के उपरात अबला देवी ताऊ की लडकी के विवाह मे सम्मिलित होने जाती है तो उसे विधवा समझकर मंगल कार्य मे सम्मिलित नही किया जाता। इस अपमान से दुखी होकर वह फूट-फूटकर रोने लगती है। माता उसके दु ख को बहलाने के लिए उससे रामायण का पाठ सुनती है।

नाटक के अंत मे विधवा-विवाह-निषेध का उत्तर दिया गया है।

विपद कसौटी नाटक (सन् १९२३, पृ० १३९), *ले०* : जमुनादास मेहरा, *प्र०* : रिखबदास बाहितो, कलकत्ता, *पात्र* . पु० १३, स्त्री ७, *अक* ३, *दृश्य* ७, ७, ३।
घटना-स्थल : विष्णुलोक, अयोध्या।

इस पौराणिक नाटक मे धर्मात्मा राजा-माधाता की धर्म-कथा चित्रित है। पहला अक विष्णुलोक मे विष्णु एव लक्ष्मी के सवाद से प्रारम्भ होता है। विष्णु कहते है, "भक्त के कार्य को पूर्ण करने के लिए मुझे भी मृत्युलोक मे जाना पडेगा।" राहु, केतु, धर्म और प्रेम आदि को भी नाटक का पात्र वनाया गया है। भगवान् विष्णु राजा माधाता के धर्म की परीक्षा लेते है। भगवान् के परीक्षा लेने पर धर्मरक्षक राजा मान्धाता अपने पुत्र के सीने का मास काटकर रीछ को देते है। अत मे धर्म की विजय होती है।

वियोगिनी शकुन्तला नाटक (सन् १९४८, पृ० १४४), ले० शम्भूदत्त शर्मा, प्र० : बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, बनारस सिटी, पात्र पु० १०, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य ७, ८, ३ ।
घटना-स्थल दुष्यन्त का राजप्रासाद, जगल, आश्रम ।

यह नाटक सस्कृत के 'अभिज्ञान शाकुतलम्' पर आधारित है। लेखक पर पारसी थियेट्रिकल व्यावसायिक कम्पनियो का प्रभाव है। भाषा मे तुकवदी और मनोरजन के लिए हास्य-दृश्यो की योजना है। नाटक मे गीत, छद तथा सवादो मे गद्य का भी प्रयोग है।

विरुढक (सन् १९५५, पृ० १५५), ले० . रागेय राघव, प्र० . साहित्य कार्यालय, आगरा, *पात्र* पु० ७, स्त्री ७, *अक* . ३; *दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल : कोसल की राजधानी सैनिक शिविर ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे बुद्ध की प्रमुख घटनाओ के साथ मौर्य-साम्राज्य पर प्रकाश डाला गया है।

प्रसेनजित का पुत्र विरुढक एक महत्त्वाकाक्षी व्यक्ति है। इसकी मृत्यु के बाद कोसल राज्य निर्बल हो जाता है। इसके वश का एक व्यक्ति छत्ता, पडोसियो द्वारा कोसल के हडप लिए जाने पर तक्षशिला भाग जाता है। कालातर मे वही व्यक्ति पुनः कोसल को जीतकर अपने वश मे कर लेता है।

अन्ततोगत्वा कोसल का राज्य मगध सहित प्रायः समस्त भारत पर शासन करता है।

विल्वमगल नाटक (सन् १९२८, पृ० १६५), ले० आनन्द प्रसाद कपूर , प्र० उपन्यास वहार आफिस, काशी , पात्र . पु० १४, स्त्री ८ , *अक* . ३, *दृश्य* : ९, ९, ४ ।
घटना-स्थल : गोकुल, परलोक ।

इस पौराणिक नाटक मे कृष्ण-कथा नाटक रूप मे चित्रित की गई है। कृष्ण की विविध कथाओ—बाललीला, रासलीला, कंस की क्रूरता, देवकी वासुदेव की कातरता, देवताओ की पृथ्वी पर कातर पुकार, भगवान् का अभयदान आदि अनेकानेक लीलाओ का वर्णन है। इसमे भक्ति, माया आदि को भी पात्र-रूप मे उपस्थित किया गया है। अत मे एक शूद्र डाकू ईश्वर भजन करता है। मगल नामक एक सवर्णपात्र इसका विरोध करता है परन्तु कृष्ण उपस्थित होकर समस्या का समाधान करते है कि—"भक्ति किसी की पैत्रिक सम्पत्ति नही, इस पर सब का समान अधिकार है, इससे सब का मगल होता है।"

विवाह विज्ञापन (सन् १९२६, पृ० १३०), ले० . बद्रीनाथ भट्ट , प्र० : गगा पुस्तकालय कार्यालय, लखनऊ , *पात्र* · पु० ६, स्त्री २ । *अक* १, *दृश्य* ५ ।
घटना-स्थल सुहागरात का कमरा ।

इस प्रहसन मे समसामयिक विधुर जीवन के प्रति वस्तु-स्थिति को हास्यास्पद बनाया गया है। वस्तुत विधुर ऊपरी मन से विवाह के लिए उत्सुकता जाहिर नही करता किन्तु उसकी यह हार्दिक इच्छा और ललक रहती है कि किसी अनुपम सुन्दरी से उसका विवाह सम्पन्न हो जाये। इस कार्य के लिए वह समाचार-पत्रो का सहारा लेता है और तदनुसार उसका विवाह हो जाता है। किन्तु जब अधेड उम्र का ढलता हुआ नायक सुहागरात को अपनी नई दुल्हन का मुख देखता है तब उसकी आशाओ पर एटम बम गिर जाता है। उसकी पत्नी उसकी अभिलाषा के विपरीत स्थिति की होती है। उसके दात, बाल और नाक सभी नकली होते है। वास्तव मे इस प्रहसन मे परिस्थिति पर कुटिल व्यग्य की सयोजना की गई है जो कि कथावस्तु की उच्चता को प्रकट करती है। इसके मूल मे बनावटी सौन्दर्य और पश्चिमी सभ्यता की छाप दिखाई पडती है।

विवाह विडम्बन नाटक (सन् १८८४, पृ० १३२), ले० तोताराम वकील, प्र० भारत बधु यन्त्रालय, अलीगढ , *पात्र* पु०

१४, स्त्री ६ ; अक : ४; दृश्य-रहित ।
घटना-स्थल काशीपुर, रतनलाल का आँगन ।

इस सामाजिक नाटक मे हिन्दू-विवाह मे प्रचलित कुरीतियो का वर्णन किया गया है । जसवन्ती की पुत्री रेवती जब तीन वर्ष की हो जाती है तो माता को उसके विवाह की चिन्ता सताने लगती है । तीन वर्ष की कन्या का विवाह विवाह की विडबना नही तो और क्या है ।

विवाहिता विलाप नाटक (वि० १९५५, पृ० ५२), ले० निद्दीलाल मिश्र जमीदार, प्र० खेमराज श्री कृष्णदास, श्री वेकटेश्वर प्रेस, बम्बई , पात्र पु० १, स्त्री ४, अक के स्थान पर ५ झाकियाँ है । दृश्य-रहित ।
घटना-स्थल : ग्रामीण मकान, शहर ।

इस सामाजिक नाटक मे विवाहिता युवतियो के दुखो का मार्मिक चित्रण है । नाटक का नायक मनधीर अपनी पत्नी चम्पा को छोडकर दूसरी स्त्री ललित मोहिनी से प्रेम करने लग जाता है । चम्पा के अतिशय दुख का वर्णन ही नाटक की कथावस्तु है ।

विशाख (सन् १९२६, पृ० ९३), ले० : जयशकर प्रसाद, प्र० भारती भडार, इलाहाबाद ; पात्र पु० ६, स्त्री ५, अक · ३ , दृश्य १, १, १ ।
घटना-स्थल नेपथ्य, रास्ता, बौद्धमठ, पहाडी झरना ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे प्रेमानन्द संन्यासी के द्वारा आज से १८०० वर्ष पूर्व घटित होने वाली देश की राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक समस्याओ का समाधान दिखाया गया है । एक क्षत्रिय राजा कश्मीर मे स्थित नागो की भू-सम्पत्ति हरण करके बौद्धमठ को दान दे देता है । नागराज सुश्रवा की कन्या चन्द्रलेखा अपनी बहन इरावती के साथ पेट की ज्वाला से सतप्त होकर अपने अपहृत भूभाग मे सेम की फलियाँ तोड रही है । इसी समय खेतो का स्वामी बौद्ध भिक्षु आता है और चन्द्रलेखा तथा इरावती को बलात् मठ मे ले जाना चाहता है । गुरुकुल का एक स्नातक विशाख उनकी रक्षा के लिए भिक्षु से सघर्ष करता है । इतने मे ही सुश्रवा भी आ जाता है । युवा भिक्षुओ का दल सुश्रवा को पीटने के लिए पकड लेता है किन्तु चन्द्रलेखा के आग्रह पर सुश्रवा को मूर्च्छित छोडकर उसको (चन्द्रलेखा) ही मठ मे ले जाते है । विवश होकर स्नातक विशाख राजा नरदेव के दरबार मे सहायता के लिए पहुँचता है, और सभासद महापिंगल की सहायता से राजा चन्द्रलेखा की मुक्ति का आदेश देते है । विशाख और उनके गुरु प्रेमानन्द बौद्ध सघाराम जाते है और वहाँ के महत सत्यशील से चन्द्रलेखा की मुक्ति का आग्रह करते है । मठाधीश सत्यशील इनका निरादर करता है किन्तु राजा नरदेव जब उसे बन्दी बनाता है तो चन्द्रलेखा वहाँ से मुक्त होती है जिसे देखकर नरदेव कहता है "आह ! ऐसा रगरूप तो मेरे रगमहल मे भी नही ।" नरदेव सत्यशील को बन्दी बनाता है, और बौद्धविहार मे आग लगाने की आज्ञा देता है । उसी समय प्रेमानन्द पहुँचकर नरदेव को समझाते है कि विहार जलाने की आज्ञा बन्द करो । सुन्दर आराधना की, करुणा की भूमि को नृशसता और बर्बरता का राज्य मत बनाओ । इसी समय एक दीवाल जलकर गिर पडती है और सब लोग वहाँ से चले जाते है ।

दूसरे अक मे चन्द्रलेखा और विशाख का प्रेम-सम्बन्ध प्रगाढ बनता है । नरदेव के मन मे भी चन्द्रलेखा से विवाह की इच्छा उत्पन्न होती है । वह महापिंगल के साथ चन्द्रलेखा की पर्णकुटी पर पहुँचता है और विवाह का प्रस्ताव रखता है किन्तु चन्द्रलेखा कहती है "राजन् मुझसे अनादृत न हूजिए, बस यहाँ से चले जाइए ।" राजा क्रुद्ध होकर चला जाता है । चन्द्रलेखा हाथ मे एक दीपक लिए चैत्य के समक्ष नमस्कार करती है और विशाख के साथ विवाह का वरदान माँगती है । चैत्य की आड से एक भिक्षु भयानक गर्जन करता है, चन्द्रलेखा घबडाकर गिर जाती है । प्रेमानन्द वहाँ पहुँचकर

चन्द्रलेखा को आश्वासन देता है · बेटी ! डरो मत, यह पाखडी भिक्षु था, भगवान् किसी को पाखड की आज्ञा नही देता । धैर्य धरो । इसी समय विशाख वहा पहुचता है । वह पाखडी भिक्षु का वध करना चाहता है किन्तु प्रेमानन्द उसे रोक लेता है ।

तीसरे अक मे वितस्ता के तट पर राजा नरदेव अपनी महारानी के साथ विराजमान् हैं किन्तु उनके मन मे चन्द्रलेखा का सौन्दर्य समाया हुआ है । महारानी राजा को बहुत समझाती है कि "आपने कुपथ पर पैर रखा है और मैं आपको बचा न सकी परिणाम बडा बुरा होनेवाला है । कहे जाती हूं कि अन्याय का राज्य बालू की भीत है । अब मै रहकर क्या करूगी ।" वह नदी मे कूद पडती है । इधर महापिगल विशाख को समझा-बुझाकर चन्द्रलेखा का विवाह राजा से करना चाहता है किन्तु विशाख तलवार खीचकर महापिगल का प्राण ले लेता है और सैनिक विशाख को घेर लेते है । वह चन्द्रलेखा के साथ पकड लिया जाता है । इधर सुश्रवा के सरक्षण मे नाग विद्रोह करते हैं । नरदेव चन्द्रलेखा और विशाख को सूली की आजा देता है । नागजाति राजद्वार पर कोलाहल मचाती है । वे लोग चन्द्रलेखा और विशाख की मुक्ति चाहते है । उसी समय प्रेमानन्द पहुँच जाते है और नरदेव को स्त्री पर अनाचार न करने का उपदेश देते ह किन्तु नरदेव सारी जनता को दण्ड देने का आदेश देता है । सैनिक प्रहार करते हैं । महल मे आग लग जाती है । नाग चन्द्रलेखा और विशाख को लेकर भाग जाते ह । प्रेमानन्द राजा को अग्नि मे घुसकर उठा लाते हैं और पीठपर लादकर उसकी रक्षा करते ह । एक जडी का रस उसके मुह मे टपकाते है । इरावती दूध लाकर राजा को पिलाती है । स्वस्थ होने पर राजा प्रेमानन्द से क्षमा माँगता है । क्षमा माँगकर कहता है "गुरुदेव मै आपकी शरण हू, मुझे फिर से शान्ति दीजिए ।" चन्द्रलेखा राजा के बच्चे को प्रचण्ड दावाग्नि से निकालकर प्रस्तुत करती है । नरदेव बच्चे को गोद मे लेकर चन्द्रलेखा से क्षमा माँगता है । विशाख वहाँ पहुचकर नरदेव को धिक्कारता है किन्तु राजा उससे क्षमा-याचना करता है । और प्रेमानन्द के उपदेश पर भगवान् से स्तुति करता है ।

विश्व प्रेम (मन् १९१७, पृ० ८०), ले० · सेठ गोविन्ददास ; प्र० स्वयं प्रकाशन, अक ५, दृश्य ७, ७, ७, ६, ६ ।
घटना-स्थल उद्यान, वन का एक भाग, बैठक खाना, दालान, कक्ष ।

शूरसेन नेह नामक नगर का जमींदार है और मोहन उनके यहा पला हुआ एक युवक है । मोहन का शूरसेन की पुत्री कालिन्दी से प्रेम हो जाता है । परन्तु अनाथ होने के कारण मोहन का कालिन्दी से विवाह बिल्कुल असम्भव है । बातों का पता लगने पर शूरसेन मोहन को घर से निकाल देता है । अयोध्या का मन्त्री रूपसेन मोहन को अपने यहाँ शरण देता है । मन्त्री उसके भरोसे पर अपना सब कुछ छोड कर यात्रा के लिए चला जाता है । रूपसेन उसको एक पत्र दे जाता है, जिसमे लिखा है कि "मेरी सारी सम्पत्ति और पुत्री मोहन की है ।" इधर कालिन्दी मोहन के वियोग मे बीमार हो जाती है । उसका पिता उसकी शादी चन्द्रसेन से करना चाहता है । किन्तु कालिन्दी की हालत अधिक बिगडते देखकर शूरसेन मोहन को बुलवाता है और अपना विचार बदलकर कालिन्दी का विवाह उसके साथ करना चाहता है । उसी समय कालिन्दी के प्राण-पखेरू उड जाते है । मोहन शोकातुर होकर लौटता है । अन्ततोगत्वा मोहन और रूपसेन की लडकी रूपवती की शादी हो जाती है । अन्त मे शूरसेन भी अपनी सारी सम्पत्ति मोहन को दे देता है ।

विश्व बोध (वि० १९८०, पृ० ३२), ले० : मनोहर प्रसाद मिश्र, प्र० हिन्दी ग्रन्थ भण्डार, कार्यालय, बनारस सिटी पात्र पु० २, स्त्री ४ अक ३ ; दृश्य : ४, ४, ३ ।
घटना-स्थल पुष्पोद्यान, निर्जन वन पथ, गृह, एक धान्य कोठरी ।

इस सामाजिक नाटक मे मानव हृदय के प्रेममय स्वरूप को चित्रित किया गया है ।

नाटक का श्रीगणेश राधा के तितली पकडने के आशा-नैराश्य से होता है। उसका माधव से परिचय होता है। तितली पकडने मे असफल राधा माधव के सहयोग से उसे पकड लेती है। फिर राधा माधव के वार्तालाप के क्रम मे कैलाश द्वारा उसके (राधा के) पति के मरने का दु खद सदेश ज्ञात होता है। दार्शनिक माधव राधा से मृत्यु के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए उसे जीवन का नियामक बताता है।

लोग राधा-माधव के ससर्ग को कुत्सित दृष्टि से देखते है। माधव का निर्वासन हो जाता है, जिससे राधा व्यथित होकर विधवा-जीवन के दुखमय स्वरूप को इगित करती है। राधा माधव से मिलना चाहती है पर लोकबन्धन के फलस्वरूप मिल नही पाती। वह उन्माद-ग्रसित हो जाती है। माधव उसे देखकर स्वय दास बनकर पुन. प्रकृतस्थ करता है। इसमे नाटककार ने जातीय बधन पर कटु-व्यग्य किया है। नाटक के अन्त मे राधा प्रकृति प्रेमी बन जाती है।

विश्वातीत विलास नाटकम् (सन् १७०० के आसपास पृ० १६), *ले०* शाहजी महाराज, *प्र० :* तजौर महाराजा सरफोजी सरस्वती महल लाइब्रेरी, तजौर, मद्रास, *पात्र* पु० ५, स्त्री ३, *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल परलोक।

शिव महिमा दिखाने के लिए यह नाटक लिखा गया। एक बार महाविष्णु और ब्रह्माजी के बीच नारदजी झगडा पैदा कर देते है और इसे पराकाष्ठा तक पहुँचाकर दोनो को जगदम्बा पार्वती के पास ले जाते हैं। जगदबा से यह निर्णय करने के लिए कहा जाता है कि दोनो मे बडे कौन है। वे कहती है कि एक परमशिव के चरणो की पूजा करे और दूसरे सिर की पूजा करे। जो अपना काम कर, पहले मेरे पास आवे मै उन्हे बडा मानूँगी। पार्वतीजी के आदेशानुसार शिवजी के चरणो की पूजा करने के लिए विष्णु जी और सिर की पूजा करने के लिए ब्रह्माजी निकल पडते है। इस बीच लक्ष्मी और सरस्वती दोनो पार्वतीजी के पास आकर अपनी विरह-वेदना को व्यक्त करती है।

अपने लक्ष्य मे असफल हो ब्रह्मा और विष्णु दोनो लौट आते है और शिवजी को सर्वश्रेष्ठ मानते है। तब शिवजी दर्शन दे, आध्यात्मिक ज्ञान का उपदेश देते है। मगल-गीत के साथ नाटक समाप्त होता है।

विश्वामित्र (सन् १६५०, पृ० ६०), *ले०* दुर्गाप्रसाद गुप्त, *प्र०* बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, बनारस, *पात्र* पु० ४, स्त्री १।
घटना-स्थल आश्रम, जगल।

इस पौराणिक नाटक में महामुनि विश्वामित्र का पथ से विचलित होना दिखाया गया है। विश्वामित्र की तपस्या भग करने के लिए इन्द्र मेनका नामक एक अप्सरा को भेजते है। वह अपने रूप एव सेवा-भाव से ऋषि विश्वामित्र को एक बार कामासक्त कर देती है। फलस्वरूप विश्वामित्र की तपस्या भग हो जाती है और इन्द्रासन को न प्राप्त कर पुन तप ही करते रहते है।

विश्वामित्र नाटक (सन् १८६७, पृ० ८०), *ले०* कैलाशनाथ वाजपेयी, *प्र०* मैडिकल प्रेस, कानपुर, *पात्र* पु० १५, स्त्री ३५, नाटक मे ३ भाग है। प्रथम भाग—५ अक, दूसरा भाग-३, अक तीसरा भाग-४ अंक, *दृश्य* सब मिलाकर ४१।
घटना-स्थल मुनि वसिष्ठ का आश्रम, मिथिला पुरी।

इस पौराणिक नाटक मे विश्वामित्र के सम्पूर्ण जीवन चरित्र को समेटने का प्रयास किया गया है। विश्वामित्र मुनि वसिष्ठ से नदिनी गाय मागते है, परन्तु बलपूर्वक ले जाने की चेष्टा से कुपित होकर वसिष्ठ विश्वामित्र को सम्पूर्ण सेना-सहित नष्ट करते है। विश्वामित्र पुत्र को राज्य देकर बहुत तपस्या करके ऋषि-पद प्राप्त करते है। वे राजा दशरथ से राम लक्ष्मण को यज्ञ-रक्षा के लिए माग लेते है। विश्वामित्र राम लक्ष्मण को मिथिला ले जाते है और वहाँ पर सीता विवाह के साथ नाटक का अन्त होता है। इसी प्रकार द्वितीय तृतीय भाग मे विश्वामित्र

की अन्य कथाये है।

विश्वामित्र (सन् १९२१, पृ० ९९), ले० जमुनादास मेहरा, प्र० रिखवदास वाहिती कलकत्ता, पात्र पु० १२, स्त्री ६, अक ३, दृश्य कुल २२।
घटना-स्थल जगल, आश्रम, इन्द्रपुरी।

इस पौराणिक नाटक मे विश्वामित्र तथा मुनि वसिष्ठ का द्वन्द्व दिखाया गया है। विश्वामित्र कामधेनु को वलपूर्वक वसिष्ठ से छीन लेते है। इसी वात पर दोनो मे युद्ध होता है। वसिष्ठ के तेज-पराक्रम से विश्वामित्र पराजित होते है। गणिका द्वारा विश्वामित्र की तपस्या खडित कर दी जाती है। त्रिशकु को लेकर दोनो पक्षो मे विवाद होता है। अन्त मे पुन' विश्वामित्र और वसिष्ठ मे प्रेम हो जाता है।

विश्वामित्र (सन् १९३८, पृ० ६४), ले० : उदयशंकर भट्ट, प्र० आत्माराम एण्ड सस, दिल्ली, पात्र पु० १, स्त्री २, अक १, *दृश्य* ७।
घटनास्-थल . हिमालय की तलहटी।

इस पौराणिक नाटक मे नर-नारी के शाश्वत सघर्ष की एक झाँकी चित्रित है।

प्रारम्भ मे विश्वामित्र अपनी तप-साधना के वल पर सृष्टि मे स्वय को अजेय मान वैठते है। यहाँ उनके अहकार और दभ को नष्ट करने के लिए मेनका तथा उर्वशी नामक दो अप्सराओ का आगमन होता है। विश्वामित्र को देखकर उर्वशी घृणा का प्रदर्शन करती हुई पुरुष के अत्याचार और अधिकार के प्रति आक्रोश व्यक्त करती है। उर्वशी के विपरीत मेनका के हृदय मे पुरुप के प्रति ऐसे कोई भाव नही हैं। उसे नारी के प्रेम एव सौन्दर्य के अमोघ अस्त्रो पर पूर्ण विश्वास है और उन्ही के द्वारा वह विश्वामित्र को पराजित करती है। मेनका के प्रथम दर्शन से ही विश्वामित्र अपने हृदय मे परिवर्तन अनुभव करते है किन्तु अहंवश वे मेनका की सत्ता को नकारते हैं। उधर ऋपि के अस्तित्व की अवहेलना कर उनके अह को और उद्वुद्ध करती है तथा उनकी प्रेम-भावना को तीव्र वनाती है। ऋपि अपने को ब्रह्मज्ञानी समझकर समाधिस्थ होना चाहते है, किन्तु शृंगार भाव, प्रेम और विलास का अद्भुत जगत् उनके सयम को खडित कर डालता है। वे काम-विह्वल हो समस्त सृष्टि को मेनका पर न्योछावर करने को उद्यत हो जाते है। अपनी पराजय पर विष्णु-रमा, शिव-पार्वती आदि सभी के भोग-वैभव के वर्णन द्वारा अपने मन को सात्वना देने का उपक्रम करते है। तप उन्हें व्यर्थ लगने लगता है। वासना से पराभूत हो मेनका के आलिंगन के लिए विकल हो उठते है। विरहाग्नि मे दग्ध विश्वामित्र आत्महत्या करने को तत्पर होते है। इसी समय मेनका आकर आत्म-समर्पण कर देती है।

१२ वर्ष पश्चात् ऋपि-पुत्री शकुन्तला मेनका की गोद मे है। मातृत्व प्राप्त कर मेनका प्रसन्न है किन्तु विश्वामित्र पश्चाताप की अग्नि मे जलने लगते है। उधर उर्वशी के ध्यानाकर्षण से मेनका मे आत्म-चेतना जाग्रत होती है और वह शकुन्तला को ऋपि के हाथो मे सौपकर चली जाती है। विश्वामित्र मे पुन अन्तर्द्वन्द्व उत्पन्न होता है। नर-नारी की स्थिति पर विचार करते हुए बालिका को वही छोडकर विश्वामित्र पुन ज्ञान-साधना हेतु प्रस्थान कर जाते है।

विश्वास (वि० २००७, पृ० ४८), ले० सीताराम चतुर्वेदी, प्र० अखिल भारतीय विक्रम परिपद्, काशी, पात्र पु० १३, स्त्री नही; *अक* ' ३, *दृश्य* २, १, १।
घटना-स्थल चन्द्रदेव का मकान।

नाटक का आधार सामाजिक जीवन है जिसमे मनुष्य के आदर्श और नैतिकता को महत्त्व दिया गया है। नाटक की कथा चुनाव-सम्वन्धी घटना की धुरी पर घूमती है। वैरिस्टर चन्द्रदेव अपने मित्र गोरखनाथ को चुनाव मे खडे होने का आग्रह करते है क्योकि वह एक सीधा, सच्चा और कर्मनिष्ठ समाज-सेवक है। वैरिस्टर चन्द्रदेव उनको चुनाव मे हर प्रकार की सहायता करने का वचन देते है। दूसरी ओर एक पूंजीपति सेठ गणेश प्रसाद भी चुनाव मे खडे होते है, जिनके सहायक ज्योतिशंकर नामक एक धूर्त वकील

और मुहम्मद अब्बास नामक वाचाल मुख्तार है। ऐसी स्थिति मे गोरखनाथ अपना चुनाव लडने का विचार छोड देता है। परन्तु चन्द्रदेव उसको ऐसा नही करने देते। ज्योतिशंकर तथा मुहम्मद अब्बास चन्द्रदेव से सेठ गणेशप्रसाद की सहायता करने का आग्रह करते है परन्तु वह स्पष्ट मना कर देते है क्योकि गोरखनाथ को वह अपना वचन दे चूके है। वे दोनो इस बात पर रुष्ट होकर चले जाते है। चन्द्रदेव के पिता ने इनको विदेश भेजने के समय गणेश प्रसाद से सात हजार रुपया ऋण लिया था, जिसका भुगतान अभी तक नही हुआ था। ज्योतिशकर गणेश प्रसाद पर रुपए का दबाव डाल कर सात दिन मे ऋण चुकाने के लिए कहते है। चन्द्रदेव इसके लिए कुछ अधिक समय मागते है परन्तु ज्योतिशकर मना कर देता है। चन्द्रदेव का सहपाठी रघुनायक जो ठेकेदारी का काम करता है इसके यहाँ आकर उसे दस हजार रुपये दे जाता है। दूसरी ओर गोरखनाथ चन्द्रदेव को सचेत करता है कि सम्भव है इस चुनाव से उनकी और गणेश प्रसाद की शत्रुता हो जाए परन्तु चन्द्रदेव अपनी बात पर दृढ रहते है। मुहम्मद अब्बास के बार-बार समझाने का भी उन पर कोई प्रभाव नही पडता। चन्द्रदेव का मित्र कमलाकर जो एक प्रगतिशील समाचार पत्र का सम्पादक है। इनकी सहायता करने का वचन देता है। साथ ही चन्द्रदेव के पडोसी अध्यापक अलीहुसेन खाँ भी उनकी आर्थिक सहायता करने का वचन देते है। कमलाकर ने चन्द्रदेव से कहा कि यदि रुपये के सम्बन्ध मे कोई लिखित पत्र नही है तो यह केवल एक सदेश मात्र है। इसमे भारतीय संस्कृति, सभ्यता तथा जीवन की सच्ची झलक दिखाई पडती है। विश्व के लिए एक सन्देश है।

नाटक आदर्श प्रधान है तथा भारतीय सस्कृति का चित्रण है। इसमे भारतीय सस्कृति, सभ्यता तथा जीवन की सच्ची झलक एक वार तो पाठक को उसी युग में खीच ले जाती है।

यह नाटक सं० २००२ की अनन्त चतुर्दशी को काशी की अभिनव रगशाला मे तथा स० २००७ एव स० २००८ को बम्बई में खेला गया।

विश्वास कहाँ (सन् १९५८, पृ० १०६), ले० शोभित झा 'आनन्द', प्र० साहित्य सदन लहेरिया सराय; *पात्र* . पु० २०, स्त्री ४, *अक* ४; *दृश्य* . ७, ८, ४, ४।
घटना-स्थल घर, वाटिका, दालान, फुलवारी दरवाजा, पुलिस दफ्तर, झरना, सड़क, विद्यालय, इजलास।

इस सामाजिक नाटक मे वर्ग-सघर्ष की चेतना तथा नवयुवको की भावुकता दिखाई गई है। गौरव अपनी माँ की बीमारी का समाचार सुनकर वी०ए० का अन्तिम प्रश्नपत्र छोडकर गाँव चला आया है। परन्तु आने पर माँ की अवस्था इतनी शोचनीय नही पाता जितनी उसे वताई गई थी। वहाँ माँ को आघात लगने के भय से अपनी असली स्थिति स्पष्ट नही करता। दौलतराम गाँव का रईस है। उसकी पुत्री आशा गौरव का सम्मान करती है। फूटेश्वर नामक एक युवक गौरव के विरुद्ध भ्रामक प्रचार करता है जिससे वह दौलतराम द्वारा प्रताडित होता है तथा स्नेही माता पिता से भी सम्बन्ध खो बैठता है। फूटेश्वर एक तरफ तो दौलतराम को भडकाता है दूसरी तरफ गाँववालो को दौलतराम के विरुद्ध कर गौरव को उनका अगुवा बनवा देता है। फूटेश्वर और दौलतराम की करतूतो से गौरव को जेल की हवा भी खानी पडती है। वह हर कदम हर कार्य मे गलतफहमियो और अपमान का शिकार होता है। अन्त मे फूटेश्वर की हर चाल का इजलास मे रहस्योद्घाटन हो जाता है। सभी पुन. आपस मे मिल जाते है। किन्तु फूटेश्वर वही मूर्च्छित होकर गिरता है और मर जाता है। नाटक नायक के अन्त एवं बाह्य द्वन्द्वो को लेकर आगे बढता है और अन्त मे उसे सफल बनाकर सुखान्त रूप में परिवर्तित हो जाता है।

विश्राम (सन् १९४९, पृ० ११२), ले० मधुसूदन चतुर्वेदी, प्र० चतुर्वेदी प्रकाशन समिति आगरा, *पात्र* . पु० ४, स्त्री ५; *अक* ३, *दृश्य* . ७, ८, १०।

घटना-स्थल · उजड़ा उद्यान, क्लब घर, आर्य समाज मन्दिर, गाँव की गली, श्मशान।

दार्शनिक पृष्ठभूमि पर लिखे गए इस नाटक का सम्पूर्ण कथानक नायक विश्राम का सच्चा आदर्श प्रेम चित्रित करता है। पहले अक मे रविशकर और माधव वाते करते दिखाई पडते हैं। एक स्वच्छता को फैशन परस्ती समझता है तो दूसरा स्वच्छता, सादगी और शिक्षा को ग्रामीण जीवन का वरदान मानता है। आर्य समाजी गुरु स्वामी के सम्पर्क मे शिक्षित विश्राम माधव मे दार्शनिक चर्चा के सदर्भ मे वताता है कि शरीर और आत्मा दोनो दो चीजें है जिससे देह-नाश के वाद भी आत्मा का नाश नही होता। पहले तो वह विवाह आदि के विरुद्ध था किन्तु स्वामी जी की वाते मानकर विद्या नाम की लडकी से विवाह करने के लिए तैयार हो जाता है। वे किसी विश्राम की वागदत्ता विद्या विवाह रूप मे बधने के पहले ही चल वसती है। इस अप्रत्याशित दुर्घटना से विश्राम विचलित हो जाता है। अव उसे कही भी शाति नही मिलती। उसे किसी से कोई सम्बन्ध नही। वह इधर-उधर घूमता फिरता है। धर्मोपदेश और तीर्थाटन उसके जीवन का अग वन जाता है।

विश्राम माधव के गाँव मे अध्यापन करने लगता है। सव लोग उसे दूसरा विवाह करने की सलाह देते है किन्तु अपनी धुन का पक्का विश्राम एक नारी के साथ मानसिक सम्बन्ध हो जाने के वाद दूसरी के बारे मे सोच भी नही सकता। विद्यालय मे अध्यापन करते समय भी वह अपने स्वतन्त्र विचारो पर आँच नही आने देता। विद्यालय के प्रबन्धक द्वारा छुट्टी के सम्बन्ध मे दवाव डालने पर वह विद्यालय को हमेशा के लिए छोड देता है। उसे कही भी शान्ति नही मिलती। बसन्त-पचमी के दिन वह ईमन नदी के किनारे जाता है। श्मशान मे लकडी की चिता जलाकर अपनी प्रेयसी विद्या से मिलने के लिए उसमे प्रवेश कर जाता है।

विषपान (सन् १९५८, पृ० १२२), ले० · हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० . आत्माराम एण्ड सस दिल्ली; पात्र . पु० ४, स्त्री ३; अक : ३; दृश्य ५, ८, ४।
घटना-स्थल मेवाड।

इस ऐतिहासिक नाटक मे राजस्थान की प्रसिद्ध करुण घटना मेवाड की राजकुमारी कृष्णा का विषपान चित्रित है।

मेवाड के महाराणा भीमसिंह घरेलू समस्याओ के कारण अत्यन्त दु.खी होते हैं। उनकी पुत्री कृष्णाकुमारी के विवाह के लिए जोधपुर और जयपुर के नरेशों ने विद्रोह उत्पन्न हो जाता है। कृष्णा के विवाह का टीका पहले जोधपुर के महाराज मानसिंह के पास जाता है। उस समय महाराज मानसिंह भीमसिंह से युद्ध करते हैं जिसमे भीमसिंह मारे जाते हैं। इसके पश्चात् कृष्णाकुमारी का टीका जयपुर के महाराज जगतसिंह के पास जाता है। मानसिंह इसका भी विरोध करते है। इन्ही झगडो के फलस्वरूप कृष्णा विषपान कर अपनी जीवन-लीला समाप्त कर लेती है।

वीर अभिमन्यु (सन् १९६७, पृ० ६४), ले० मुकुन्दलाल जी 'मीभाव'; प्र० : अग्रवाल बुक डिपो, दिल्ली, पात्र . पु० १८, स्त्री ४, अक ३, दृश्य ६, ९, ४।
घटना-स्थल समर भूमि, पाण्डवों का शिविर।

इस पौराणिक नाटक मे अभिमन्यु का रणकौशल, दृढ सकल्प और अद्भुत पराक्रम दिखाया गया है। इसकी प्रसिद्ध कथा महाभारत से उद्धृत है। वीर अभिमन्यु कौरवों द्वारा रचित चक्रव्यूह भेदन के लिए रणक्षेत्र मे जाता है। वहाँ वह धोखे से कौरवों द्वारा मारा जाता है। किन्तु वह मरते दम तक वडी वीरता से लडता रहता है।

वीर अभिमन्यु ऐतिहासिक नाटक (सन् १९३२, पृ० १४३), ले० वावू वैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, राजा दरवाजा, बनारस सिटी, पात्र . पु० १५, स्त्री ३, अक : ३; दृश्य ९, ५, ७।
घटना-स्थल रण क्षेत्र।

यह पौराणिक नाटक अभिमन्यु की वीरता

और शौर्य को प्रदर्शित करता है। पुरुषो के चरित्र-चित्रण मे अभिमन्यु तथा स्त्रियो मे सुभद्रा के चरित्र पर विशेष बल दिया गया है। अभिमन्यु चक्रव्यूह मे अपने शौर्य का कुशल प्रदर्शन करता है परन्तु कौरव सेना उसे धोखे से मारने मे सफल हो जाती है।

वीर अभिमन्यु (सन् १९५०, पृ० १९२), ले० प० राधेश्याम कथावाचक; प्र० राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, पात्र पु० २१, स्त्री ५; अक . ३; दृश्य ७, ७, ५।
घटना-स्थल : रणक्षेत्र, पाण्डव शिविर।

इस पौराणिक नाटक मे अभिमन्यु का चरित्र-चित्रण किया गया है। अभिमन्यु इस नाटक का नायक है। इसकी रग-रग मे वीरता समाई हुई है। पाण्डव सभा मे चक्रव्यूह तोडने की प्रतिज्ञा करने के बाद अभिमन्यु युद्धस्थल मे जाने से पहले उत्तरा के पास जाता है। उत्तरा उसे जाने से रोकती है, परन्तु वह नही मानता। जब उत्तरा को ज्ञात होता है कि उसके पति प्रतिज्ञा-पालन करने मे तत्पर है तब वह प्रसन्नतापूर्वक अपने प्राणप्रिय को विदा करती है। सुभद्रा भी अपने इकलौते पुत्र और युवराज बेटे को चक्रव्यूह मे जाने के लिए विदा करती है। चक्रव्यूह मे पहुँचकर अभिमन्यु जयद्रथ, द्रोणाचार्य तथा दु शासन जैसे पराक्रमी योद्धाओ को अपनी वीरता तथा रणकौशल से परास्त कर देता है। चक्रव्यूह-भेदन मे अनेक योद्धाओ को परास्त करने के बाद १६ वर्षीय अभिमन्यु की विजय होती है। पाण्डव सभा मे की हुई प्रतिज्ञा अभिमन्यु पूरी करता है और अन्त मे अपनी वीरता दिखाने के पश्चात् वह सदा को समाप्त हो जाता है।

अन्त मे अर्जुन द्वारा जयद्रथ का वध होता है तथा केवल सुखान्त के लिए अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित का राज्याभिषेक कर दिया जाता है।

वीर अभिमन्यु (सन् १९५०, पृ० ७२), ले० न्यादरसिह 'बेचैन', प्र० देहाती पुस्तक भडार, चावडी बाजार, दिल्ली, पात्र : पु० १९, स्त्री ७, अक . ३; दृश्य ८, ७, ५।
घटना-स्थल रणक्षेत्र, शिविर।

इस पौराणिक नाटक मे कीचक-वध से जयद्रथ-वध तक की कथा का सरस चित्रण है। द्रोपदी सहित पाँचो पाडव अपना अज्ञात-वास राजा विराट के यहाँ व्यतीत करते है। दुष्ट कीचक सैरन्ध्री का सतीत्व नष्ट करना चाहता है। भीम अपनी गदा के प्रहार से कीचक को मार डालते है। युधिष्ठिर श्रीकृष्ण को शाति सधि करने के लिए दुर्योधन के पास भेजते है किन्तु दुर्योधन पाडवो को पाच गाँव भी देने को तैयार नही होता। फलत महाभारत का युद्ध होता है। द्रोणाचार्य अर्जुन की अनुपस्थिति मे चक्रव्यूह की रचना करते है। ऐसे विषम समय मे वीर अभिमन्यु व्यूह-भेदन के लिए तैयार होता है। भीम आदि वीर अभिमन्यु के साथ चक्रव्यूह का भेदन करने के लिए जाते है किन्तु प्रथम द्वार-रक्षक जयद्रथ अन्य पाडवो को व्यूह मे नही घुसने देता। अकेला अभिमन्यु ही व्यूह के अन्दर प्रवेश कर वीरता के साथ शत्रुओ का सहार करता है। अपनी पराजय देख दुर्योधन आदि छल से निहत्थे अभिमन्यु को मार डालते है। अभिमन्यु की मृत्यु से सभी पाडव शोकातुर हो उठते है। उधर शत्रुओ को पराजित कर अर्जुन भी वापस लौटते है। वे पुत्र-मरण का दुखद समाचार सुनकर अत्यन्त दुखी होते है। शोकातुर अर्जुन दूसरे दिन सूर्यास्त से पहले ही जयद्रथ-वध करने की प्रतिज्ञा करते है। दोनो दलो मे घमासान युद्ध होता है। कृष्ण की माया से सूर्यास्त के पहले ही बादल घिर आने से सूर्य दिखाई नही देता। अर्जुन अपनी प्रतिज्ञा की असफलता से दुखी एव निराश होकर चिता मे जाने की तैयारी करते है। दुर्योधन और जयद्रथ उन्हे चिता मे जलते देखने के लिए बाहर निकल आते है। इसी बीच कृष्ण मायारूपी बादलो को हटाकर पुन सूर्य को प्रकाशित कर देते है। अब श्रीकृष्ण की आज्ञा से अर्जुन जयद्रथ का सिर काटकर उसके पिता वृद्धक्षेत्र की गोद मे डाल देते है जिसके परिणामस्वरूप जयद्रथ के पिता भी भस्म हो जाते है।

वीर अभिमन्यु वध (सन् १६४६, पृ० ६६), ले० रामलग्न पाण्डेय 'विशारद', प्र० भार्गव पुस्तकालय, बनारस, *पात्र* . पु० १७ स्त्री ३, *अक* . ३, *दृश्य* ६, ५, ८।
घटना-स्थल . पाण्डव शिविर, चक्रव्यूह, रणक्षेत्र।

इस पौराणिक नाटक मे अभिमन्यु की वीरता तथा उसकी दुखद मृत्यु का वर्णन है। महाभारत की लडाई के समय द्रोणाचार्य द्वारा बनाए चक्रव्यूह का भेदन अर्जुन के अतिरिक्त केवल अभिमन्यु ही जानता है किन्तु वह भी छह द्वार तक। सातवे द्वार का उसे ज्ञान भी नही है। कौरव सेना इसी चक्रव्यूह की लडाई मे सातवे द्वार पर अभिमन्यु का छल के साथ वध करती है।

वीर अभिमन्यु नाटक (वि० १९९२, पृ० १२८), ले० वेणीराम त्रिपाठी 'श्रीमाली', प्र० बैजनाथ प्रसाद, बुकसेलर, बनारस, *पात्र* पु० १७, स्त्री ९, *अक* ३, *दृश्य* ८, ५, ६।
घटना-स्थल पाण्डव शिविर, चक्रव्यूह।

यह वीररस-पूर्ण एक पौराणिक नाटक है। इसमे 'महाभारत' के अर्जुन-पुत्र वीर अभिमन्यु की कथा वर्णित है। पूरे कौरव एव पाण्डव वीरो मे चक्रव्यूह-भेदन की कला द्रोणाचार्य एव अर्जुन को छोड किसी को ज्ञात नही। अर्जुन-पुत्र अभिमन्यु यह कला गर्भावस्था मे ही पिता द्वारा माता को बताते हुए सीख लेता है किन्तु बीच मे ही माता के सो जाने के कारण वह कथा अधूरी रह जाती है। जिससे वह भी इसका आधा भाग केवल प्रवेश ही जानता है। युद्ध मे अर्जुन के दूर चले जाने के बाद कौरव-पक्ष के गुरु दोणाचार्य चक्रव्यूह की रचना करते है। वीर अभिमन्यु व्यूह भेदन की अधूरी कला जानते हुए भी वीरतापूर्वक व्यूह मे प्रवेश करता है और अपने असाधारण पराक्रम से युद्ध करता है। वह रणक्षेत्र मे कौरवो द्वारा धोखे से आक्रमण किए जाने के परिणामस्वरूप वीर गति को प्राप्त होता है।

वीरचक्र (सन् १९६४, पृ० ११६), ले० सुरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, प्र० देवेन्द्र प्रकाशन, वहला, मुजफ्फरपुर, *पात्र* पु० १६, स्त्री ६, *अक* ४, *दृश्य* १०।
घटना-स्थल मत्री का शयनकक्ष, मनोरमा का घर, सेनाओ का कैम्प, वृद्धा का आँगन, पहाडी भाग, अस्पताल एव हिमालय की तराई।

यह क्रातिकारी नाटक चीनी आक्रमण की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। इसमे देशभक्ति तथा भारतीय नारी के बलिदान का आदर्श उपस्थित किया गया है। कथा का आरम्भ नरेन्द्र द्वारा तरुणोचित भावना से राष्ट्र-रक्षा के लिए उत्तेजित होने से होता है। नाट्यकार ने सीमा की सुरक्षा की ओर भी सकेत किया है। नरेन्द्र के जीवन की विषमता-समता, आशा-निराशा, आरोह-अवरोह, उत्थान-पतन तथा धर्म-कर्म इत्यादि मे 'जननीजन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' को ही सार्थक माना गया है। वस्तुत मनोरमा शरीर, मन, प्राण तथा कणकण से पुरुष को पौरुष प्रदान करने मे समर्थ होती है। अकस्मात् उसके सीमन्त का सिन्दूर देश-रक्षा की प्रलयकारी बाढ मे बह जाता है।

वीर चन्द्रशेखर नाटक (सन् १९६७, पृ० ११४), ले० जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द, प्र० रवीन्द्र प्रकाशन, आगरा व ग्वालियर; *पात्र* पु० १२, स्त्री २, *अक :* ३, *दृश्य* . ३, ३, ३।
घटना-स्थल : काशी, लाहौर, प्रयाग, कानपुर, बम्बई।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। इसकी कथा भारतीय स्वतन्त्रता-सग्राम के सेनानी, अमर शहीद क्रातिकारी वीर चन्द्रशेखर आजाद से सम्बन्धित है। भारतीय स्वतन्त्रता के लिए आजाद द्वारा किए गए साहसी प्रयासो का उसमे पूर्णरूपेण समावेश है।

वीर चूड़ावत सरदार (वि० १९७५, पृ० १०९), ले० परमेष्ठीदास, प्र० भारत गौरव ग्रन्थ माला (पन्नालाल सिंदाई);

पात्र पु० १८, स्त्री ५, अक ३, दृश्य ६, ६, १०।
घटना-स्थल महाराजा राजसिंह का दरबार, रूपनगर का राजमहल, उद्यान।

इस ऐतिहासिक नाटक मे कुटिल औरगजेब द्वारा रूपनगर की राजकन्या प्रभावती पर किये गये अत्याचार का वर्णन है।

औरगजेब प्रभावती पर बलात्कार करना चाहता है। प्रभावती और रूपनगर का ठाकुर रामसिह और उसका छोटा भाई रणधीर मेवाड के राना के नाम पत्र भेजकर यह सूचना देते है—"दिल्ली के बादशाह औरगजेब ने यहाँ की सुख-शाति छिन्न-भिन्न कर दी है। यहाँ की राजपूत वीर बालाएँ आप से रक्षा की भीख माग रही है क्योकि आज बलात् मुझे ब्याहने के लिए अत्याचारी औरगजेब यहाँ चढा आ रहा है किन्तु यह दासी अपने प्राण जीवित रहते उसका अग तक स्पर्श न करेगी। आप मेरी रक्षा करे अन्यथा मै आत्महत्या कर लूँगी।" पत्र मे लिखी इस बात को सुनकर मेवाड के राना राजसिंह का सेनापति चूडावत सरदार रक्षा की शपथ खाता है और औरंगजेब पर १३०० सैनिको द्वारा चढाई कर उनके २०००० सैनिक मार कर उसे पराजित कर देता है। राजपूत बालाओ और प्रभावती की जान बच जाती है। अत मे प्रभावती की शादी राजसिंह से हो जाती है।

वीर ज्योति (सन् १६२४, पृ० २१४), ले० लोकनाथ द्विवेदी, प्र० गगा ग्रन्थागार, लखनऊ, *पात्र* पु० १६, स्त्री ६, *अक* ५, *दृश्य* ६, ६, ८, ७, ५।
घटना-स्थल . राज सभा, मैदान मे मुगल शिविर, दिल्ली दरबार, पहाड की तराई, राज महल, आगरा का मुगल दरबार, महोवे का राज भवन, जंगल।

नाट्यकार भूमिका मे प्राचीन मान्यता का विरोध करते है। वह धर्म की विजय और अधर्म की पराजय का सिद्धान्त अस्वीकार करते है। वह लिखते है—"हम प्रतिदिन देखते है कि धार्मिक और भले लोगो पर कपटी, कृतघ्न, छली और दुराचारी विजय प्राप्त करते है।"

इस नाटक के नायक चंपतराय बुदेलखण्ड के नाममात्र राजा है। मुगल बादशाह बुदेलखण्ड का नाम इस्लामाबाद रखना चाहते है। इससे क्षत्रियो का खून खौल उठता है। वह स्वाधीनता के लिए तडफडा उठते है। वे मुगलो से विद्रोह करना चाहते है पर मत्री उन्हे विपत्ति से सावधान करता है। सम्राट् शाहजहाँ चपतराय को दबाने के लिए सेना भेजता है पर कई बार हार जाने पर शहबाज खां को भेजता है। शहबाज खां जब वेश्याओ का मुजरा सुनने मे व्यस्त होता है तब चपतराय उस पर आक्रमण करके विजय प्राप्त करते है।

द्वितीय अक मे चम्पतराय विजय से उन्मत्त हो विलासी बन जाते है और रानी सारधा की चेतावनी पर ध्यान नही देते। ओरछे का राजपुत्र पहाडसिंह ईर्ष्यावश चम्पतराय को विप देकर मार डालना चाहता है। दो शत्रुओ से घिरने पर माता के परामर्श से वह मुगलो से सन्धि कर लेता है। विलासी होने के कारण वह सागर के बुन्देला राजा शुभकरण की बाल विधवा बहिन ललिता पर आसक्त हो जाता है। पर उसे विधवा समझकर उससे विवाह नही करता। सारधा की वाणी का चम्पतराय पर प्रभाव पडता है और वह महोवा मे आकर शातिपूर्वक राज्य करने लगता है।

शाहजहाँ की मृत्यु के उपरान्त चम्पतराय औरगजेब की सहायता दारा के विरुद्ध करते है और औरगजेब के बादशाह होने पर बारह हजारी मसबदार का पद प्राप्त करते है। किन्तु कालान्तर मे औरगजेब से खटपट होने के कारण मुगलो से युद्ध करते है। अन्त में "इसी स्वाधीनता की उपासना मे वह पत्नी-सहित वलिदान हो जाते है।"

वीर दुर्गादास (वि० १६८४, पृ० १६६), ले० लाला छोटे लाल, प्र० नेशनल बुक डिपो, नई सड़क, दिल्ली, *पात्र* पु० २३, स्त्री ८, *अक* ३, *दृश्य* १२, १०, ६।
घटना-स्थल दिल्ली का महल, राजसिंह का

विचार भवन, उद्यान।

इस ऐतिहासिक नाटक की घटनाये टाड राजस्थान के आधार पर निर्मित है। उदयपुर के सिंहासन पर राजसिंह विराजमान् है। जोधपुर की रानी महामाया सपरिवार राजसभा मे आती है। उनके साथ दुर्गादास, समरदास, कासिम आदि है। महामाया अपने पुत्र की रक्षा की याचना करती है। समरदास राजसिंह के पुत्र भीमसिंह के शौर्य का वर्णन करता है और उनकी मृत्यु का वृत्तान्त सुनाता है। राजसिंह को अपनी कायरता पर ग्लानि होती है और वह आत्महत्या करना चाहते है। समरदास छुरी छीन लेता है।

औरगजेब को इनायत खा सूचना देता है कि "राजपूतो ने शाहजादा अकबर को अपना बादशाह मान लिया है और आप को हटाकर दिल्ली के तख्त पर उसे बिठाने का वायदा किया है।" औरगजेब दिलेर खा को भेजकर राजपूतो को पराजित करने का आदेश देता है। उसकी कूटनीति से राजपूतो मे फूट पड जाती है। अकबर भागकर शम्भा जी के पास जाता है। औरंगजेब शम्भाजी को भी वन्दी बनाता है।

इधर दुर्गादास की वीरता पर गुलेनार मुग्ध हो जाती है। औरंगजेब उसे कोसता है और वह अन्तिम साँस लेती है।

औरगजेब अपने अन्तिम दिनो मे दौलताबाद आ जाता है। वह अपने कुकृत्यो को याद करता है। वह कहता है—"यह क्या जसवन्त सिंह और पृथ्वीसिंह है जिन्हे मैंने जहर के जरिए अदम पहुँचाया। ओ पाक रूहो! मुआफ करो।"—

इधर दुर्गादास के पास दिलेर खा पहुँचते है और उसकी प्रशसा करते हुए कहते है— "हिन्दुओ मे श्यामसिंह व शम्भा जैसे दगाबाज भी पैदा होते है और दुर्गादास जैसे बहादुर भी। दुर्गादास के प्रयास से महामाया के पुत्र अजीतसिंह की रक्षा होती है। जयसिंह के प्रस्ताव पर दुर्गादास अजीतसिंह के सिर पर राजमुकुट रखता है।

वीर दुर्गादास (सन् १९३४, पृ० १३६), ले० . सुवर्ण सिंह वर्मा 'आनन्द', प्र० उपन्यास वहार आफिस, काशी, पात्र पु० ११, स्त्री ४, अक . ३, दृश्य १०, ६, ७। घटना-स्थल दिल्ली स्थित औरगजेब का महल, उद्यान।

इस ऐतिहासिक नाटक मे वीर दुर्गादास की सच्ची देश-भक्ति तथा वीरता के साथ-साथ औरगजेब के क्रूर अत्याचारो की भी अभिव्यक्ति की गई है। वीर दुर्गादास औरगजेब के अत्याचारो का वडी वीरता से दमन करता हुआ हिन्दुत्व की लाज रखता है। महामाया की प्रेरणा से जयसिंह की वीर पत्नी सरस्वती भी हिन्दू अवलाओ को तथा देश को वडी कुशलता एव साहस के साथ औरंगजेब के खूनी पंजो से वचाती है।

वीर दुर्गादास राठौर (सन् १९०५, पृ० ८२), ले० चन्द्रभान 'चन्द्र', प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, चावडी बाजार, दिल्ली, पात्र पु० १७, स्त्री ४, अक ३, दृश्य : ८, ७, ५।
घटना-स्थल दिल्ली, कावुल, कैदखाना।

इस ऐतिहासिक नाटक मे वीरवर दुर्गादास की यशोगाथा का वर्णन है। औरगजेब यशवन्तसिंह को युद्ध के लिए कावुल भेजता है। वहाँ युद्ध मे यशवन्तसिंह और उनके पुत्र पृथ्वीसिंह मारे जाते है। औरगजेब महामाया और उनके नवजात पुत्र अजीत को कावुल से दिल्ली लाने के लिए नयनपाल को भेजता है। नयनपाल कावुल पहुँचकर दुर्गादास को महामाया तथा अजीत के साथ दिल्ली चलने की आज्ञा देता है। दुर्गादास औरगजेब की दुष्टता को भाँपकर वडी चतुराई से महामाया को ग्वालिन के वेश मे किले से वाहर निकाल देता है और इन्द्रा को महामाया के वस्त्र पहनाकर दिल्ली की ओर प्रस्थान करा देता है। अजीत को मृत घोषित करने की सारी वाते नयनपाल को मालूम हो जाती है। वह माँ-वेटे दोनो को सकुशल उदयपुर पहुँचाने की आज्ञा देता है। वह दुर्गादास को गिरफ्तार कर घने जगल मे छुडवा देता है और इन्द्रा को अपनी प्रेमिका वनाने के लिए उसे दिल्ली लाकर चुपके से

अपने महल मे छिपा देता है। औरगजेब नयनपाल के घर की तलाशी लेकर इन्द्रा को पकड लेता है और उसे उदयपुरी के हवाले कर देता है। औरगजेब नयनपाल को कैदखाने मे डाल देता है। नयनपाल अब अपनी गलती स्वीकार कर दुर्गादास का विश्वस्त मित्र बन जाता है। कासिम उदयपुर पहुँचकर योगी के सरक्षण मे महामाया और अजीत को छोड देता है। दुर्गादास और नयनपाल भी इन्द्रा को छुडाकर उदयपुर जा पहुँचते है।

महामाया राजसिह की सहायता से युद्ध मे औरगजेब को पराजित कर उदयपुरी को कैद कर लेती है। औरगजेब सधि करके दिल्ली लौट जाता है। वह मौका देखकर दिलेर खा और अकबर को पुन मारवाड पर हमला करने के लिए भेजता है। दुर्गादास बडी वीरता एव कुशलता से राजपूतो की सेना तैयार करके औरगजेब का सामना करता है। अकबर अपने पिता का साथ छोड़कर राजपूतो से जा मिलता है परन्तु औरगजेब अपनी कूटनीति से अकबर के प्रति राजपूतो मे अविश्वास पैदा करा देता है। सभी राजपूत अकबर को अपने पास रखने के लिए तैयार नही होते तो दुर्गादास शरणागत की रक्षा के लिए अकबर को लेकर शम्भाजी के पास जाता है। उदयपुरी दुर्गादास को गिरफ्तार कर अपने साथ शादी करने के लिए बाध्य करती है। किन्तु दुर्गादास बडी कठोरता से उदयपुरी के प्रेम को ठुकरा देता है। उदयपुरी दुर्गादास को मार देने की आज्ञा देती है लेकिन दिलेर खाँ दुर्गादास के प्राणो की रक्षा करता है। दुर्गादास अजीतसिह को जोधपुर का राजा बना कर स्वय शहर से बाहर एक कुटिया मे ईश-आराधना मे लीन हो जाता है।

वीरबन्दा वैरागी (सन् १९२९, पृ० १०६), ले० सुवर्ण सिंह वर्मा, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, *पात्र* पु० १०, स्त्री नही, *अक* ३, *दृश्य* ७, ६, ५। *घटना-स्थल* · मकान, बलिवदी।

इस ऐतिहासिक नाटक मे सिक्ख धर्म के प्रेमी वीर बन्दा वैरागी को धर्मनिष्ठा दिखाई गई है। सिक्ख धर्म और जाति की उन्नति एव प्रतिष्ठा के लिए वीर बन्दा वैरागी अपने सारे परिवार को बलिवेदी पर चढाने मे नही हिचकिचाता। लक्ष्मणसिह और कनकसिह दोनो प्रारम्भ मे शिकार खेलने जाते है जहाँ पर तीन घायल हिरन के बच्चो को तडपते हुए देख लक्ष्मणसिह के हृदय मे दया आ जाती है। वह हिसा करने से घबडाता है और भविष्य मे अहिसा का व्रत धारण करने की प्रतिज्ञा करता है।

वीर बन्दा वैरागी पजाब मे सिक्खो को जबरदस्ती मुसलमान बनाने की नीतियो का विरोध करता है। कनकसिह की धोखेबाजी से वीर बन्दा वैरागी को अनेक कष्ट उठाने पडते है। यहाँ तक कि उनके बच्चे गिरफ्तार कर लिये जाते है किन्तु बन्दा वैरागी बडे साहस से काम लेता है और सिक्ख धर्म को अवनत होने से बचा लेता है।

वीर बाला (सन् १९१२, पृ० ९६), ले० राजेश्वरनाथ जेवा, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी; *पात्र* पु० ११, स्त्री ४, *अक* ३; *दृश्य* ७, ६, ४। *घटना-स्थल* महल, मार्ग, मकान, जगल।

इस अर्द्ध ऐतिहासिक नाटक मे राजकुमार सूरसेन का अत्याचारी चाचा उसके पिता वीरबाहु को जगल मे भागने को बाध्य करता है। जगल मे छिपकर जब अत्याचारी चाचा दुर्जनसिह अपने भाई को मारना ही चाहता है तब तक वीरसिह उसका वार रोक लेता है। शोर सुनकर सूरसेन चाचा दुर्जनसिह के पास पहुच जाता है। दुर्जनसिह पुन पिस्तौल निकालता है तो सूरसेन कहता है—"ले ओ मूजी! तू ही सभाल मेरे बाप की खैरात। मै इस अधर्मी देश से जाता हूँ और इस राजपाट को ठोकर लगाता हूँ।" सूरसेन जगल मे भाग जाता है तो दुर्जनसिह वहाँ भी उसका पीछा करता हुआ पहुँचता है और उसकी हत्या करना चाहता है। दोनो मे लडाई होती है। उसी समय उसका गुरु वीरबाहु आकर सुरग तोडने का आदेश देता है। इसी समय मरदाना वेश मे सुन्दरमती

सुरंग तोडती है और सूरसेन वच जाता है। दुर्जनसिंह को जोरावर की सहायता का भरोसा है। इसी समय वीरवाहु दुर्जनसिंह को सावधान करते है—"अव भी अपने कुकर्मों से बाज आ, वरना पछतायेगा।" साथियो के साथ युद्धक्षेत्र मे मारा जायेगा। जगल मे दुर्जनसिंह और सूरसेन सेनासहित लडते है। सुन्दरमती योगिनी के भेष मे दुर्जनसिंह से लडती है। दुर्जनसिंह की मृत्यु होती है, जोरावर पकड़ा जाता है।

दूसरी कथा प्रभावती की है, जिसका पति विलासराय चम्पा नामक वेश्या के वश मे पडकर घर-वार भूल गया है। प्रभावती उस वेश्या के घर मे पहुँचकर अपने पति को मरने से वचाती है। विलासराय क्षमा-याचना करता है। मल्हराज अपने वेटे सूरसेन का सुन्दरमती से विवाह करके उसे ताज पहनाता है।

वीर भारत नाटक (सन् १९४१, पृ० १३६), ले० भवानीदत्त जोशी, प्र० . जोशी भ्रातृ वर्ग, ९०१, कटरा, इलाहावाद, पात्र पु० १६, स्त्री ३, अक . ८, दृश्य-रहित।

इस नीतिपरक नाटक का मूल आधार धर्म तथा अन्याय के युद्ध का वर्णन है। अन्त मे धर्म की विजय दिखलाई गई है। वर्तमान युद्ध-कला तथा नीतियो का भी इसमे दिग्दर्शन होता है।

वीर भारत (सन् १९४९ पृ० ९६), ले० : शिवराम दास, प्र० . उपन्यास वहार आफिस, काशी, पात्र : पु० ११, स्त्री ४; अक ३, दृश्य १०, ८, ५।
घटना-स्थल मगध की राजधानी, युद्धक्षेत्र।

यह नाटक ऐतिहासिक है। चाणक्य मगध के राजा नन्द को गद्दी से उतार देता है और चन्द्रगुप्त को वहाँ का राजा वना देता है। फिर सिकन्दर को वापस ग्रीक लौटा कर वह सिल्यूकस को युद्ध मे पराजित करता है। तथा उसकी पुत्री हेलेन का विवाह चन्द्रगुप्त से कराकर भारतीय वीरता का सुयश यूनान तक पहुँचाता है।

वीर राजपूत नाटक (सन् १९१३, पृ० ६५) ले० मागीलाल शर्मा, प्र० . के० सी० भल्ला, स्टार प्रेस, प्रयाग, पात्र पु० १२, स्त्री ५, अक ४, दृश्य . १९।
घटना-स्थल मौरीगढ का उद्यान।

इस ऐतिहासिक नाटक मे राजपूतो की वीरता दिखाई गई है। वीर राजपूत अवतार सिह मौरीगढ के राजा नरसिह की कन्या सुकेशी से प्रेम करता है। किन्तु सुकेशी अपने प्रेमी की वीरोचित परीक्षा लेना चाहती है। इसी वात से आहत होकर अवतार सिह अहमदावाद चला जाता है और वहाँ मुसलमानो के सेनापति तातार इस्माईल वेग के यहाँ चाकरी करता है। मुसलमान गौरीगढ पर आक्रमण करते है। उस समय अवतार सिह अपने अद्भुत पराक्रम से मुसलमानो को परास्त कर गौरीगढ को पराजय से वचा लेता है। राजकुमारी सुकेशी अपने वीर प्रेमी का स्वागत करती है और उसके गले मे वरमाला पहनाती है।

वीर वामा (सन् १९४०, पृ० ३४), ले० . वैजनाथ, प्र० . वड़ा वाजार सूती वही स्ट्रीट, कलकत्ता, पात्र पु० ९, स्त्री २, अक-रहित, दृश्य ९।
घटना-स्थल : वीरसिह का राज दरवार।

यह एक ऐतिहासिक संयोगान्त रूपक है। राजा वीरवर का मत्री हशमत खाँ है जो वीरवर और उनके जागीरदार वीरसिह के वीच मतभेद डालने के लिए वीरवर पर राजद्रोह का मिथ्या दोपारोपण करता है। परन्तु वीरवर कहता है कि "जव तक इन नीचो का भारतवर्ष से सर्वनाश न हो जायेगा भारत कदापि सुख की नीद न सोयेगा"। वीरसिह उसे कैद कर लेता है। किन्तु वाद मे वीरवामा से उसका अपराध मिथ्या मालूम होने पर उसे छोड देता है।

वीर विक्रमादित्य (वि० २०१२, पृ० ९२), ले० सत्यनारायण पाडेय; प्र० हिन्दुस्तानी वुक डिपो, लखनऊ; पात्र पु० २९, स्त्री ७; अक . ४; दृश्य : ८, ६, ५।

घटना-स्थल शिप्रातट, विक्रम का दरबार, शक राजदरबार, और्द्धस का शिविर, सैन्य-शिविर, कृत्रिम नन्दनवन, मार्ग ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे विक्रमादित्य की वीरता तथा शको और हूणो का क्रूर अत्याचार दिखाया गया है ।

विक्रमादित्य की सभा मे कालिदास, वररुचि (महामन्त्री), शकु आदि, युद्ध के विषय मे परामर्श कर रहे है । शको और हूणो ने आर्यवर्त पर आक्रमण कर इसका बहुत सा भू-भाग अपने अधिकार मे कर लिया है । कालकाचार्य आक्रमणकारियो से गुप्त अभिसन्धि कर रहे है अत क्षपणक को उन पर दृष्टि रखने का कार्य सौपा गया है । विक्रम के सेनापति स्वर्णकेश सौराष्ट्र, गुर्जर और मागध सेनाओ के साथ तक्षशिला युद्ध के लिए प्रस्थान कर रहे है । इसी समय वाह्लीक से राजदूत आकर सूचना देता है कि "विदेशियो की सेनाएँ वितस्ता के तट पर उमड रही है । किन्तु पश्चिमी पचनद का यवन शासक तक्षशिला के शकाधिपति पाटिक की सहायता के लिए वडी सेना लेकर पहुँच रहा है उसके प्रतिरोध के लिए विशाल वाहिनी की आवश्यकता है ।" वररुचि आश्वासन देते हैं कि "वाह्लीक अधिपति निश्चिन्त रहे । इस बार शको के साथ यवनो को भी युद्ध का उपदेश देना होगा ।"

इधर मथुरा पर शको का घोर अत्याचार वढता जा रहा है । मथुरा मे जडी-बूटियाँ ढूंढते समय वैद्यराज धन्वन्तरि को सस्कृत वोलने के कारण और एक स्त्री को एकाकिनी देखकर शक-सैनिक दोनो को पकड कर ले जाते है । वर्तुल उस स्त्री को पकड कर कहता है—'ज्योत्स्ना तो सव रमणियो के साथ भाग ही गई, अव तू वचकर कहाँ जा सकती है ।' इतने ही मे शकु पहुँचकर उसकी रक्षा करता है ।

इसी मथुरा मे जैनाचार्य कालकाचार्य गर्दभिल्ल के साथ वैदिक दर्शन और वौद्ध दर्शन पर शास्त्रार्थ करते है । वह कहते है—"वेदान्त से इस लोक का कोई सम्वन्ध नही । इसी कारण मैंने विदेशी शको को विक्रम के विरुद्ध युद्ध छेडने के लिए आमन्त्रित किया है ।" जहाँ भारतीय विद्वान् कालकाचार्य शत्रु की सहायता करते है वहाँ पार्थिया नरेश औद्धस की पुत्री प्रथा भारतीय महिला ज्योत्स्ना से भारतीय शास्त्रो का अध्ययन करते हुए अपने पिता को शको और म्लेच्छो के युद्ध मे सहायता न करने को वाध्य करती है । ज्योत्स्ना छद्मनाम वीणा के रूप मे स्वर्णकेश के पास पहुँचती है और मथुरा का विवरण देती है । सेनापति स्वर्णकेश के प्रयत्न और विक्रम के शौर्य से विदेशियो की युद्ध मे पराजय होती है । पाटिक विक्रम के शौर्य पर चकित है । वह यवन सेनापति अस्पवर्मन को आदेश देता है—"जाओ तक्ष-शिला की सेना लेकर इस पर टूट पडो । पार्थिया वाले पर पहले ही मुझे शका थी ।" किन्तु विक्रम और स्वर्णकेश के पराक्रम से यवनो और शको की हार होती है । प्रथा का आकर्पण देखकर औद्धस पुत्री का विवाह विक्रमादित्य के साथ कर देता है । सिहासन पर प्रथा के साथ विक्रमादित्य आसीन है । वररुचि उसी दिन से विक्रमाब्द का प्रचलन करते है । कावुल, वाली, स्याम, केकय, प्राच्य, पंचनद के अधिपति वहुमूल्य उपहार भेंट करते है । इनसे प्राप्त धन के द्वारा अयोध्या के मन्दिरो के जीर्णोद्धार एवं नव-निर्माण की योजना बनाई जाती है । काल-काचार्य भी पश्चात्ताप प्रकट करते है और नव सम्वत् का अभिवादन करते है ।

वीर शिवाजी (सन् १६६३, पृ० ७०), ले० न्यादरसिंह 'वेचैन', प्र० देहाती पुस्तक भडार, चावडी बाजार, दिल्ली; *घटना-स्थल* औरगजेब का राजदरबार, कारागार ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे वीर शिवाजी के साहस एवं शौर्य का चरित्र-चित्रण किया गया है । सत्य, धर्म, भारत माता और गऊ माता आदि मुसलमानो के भीषण अत्याचारो से पीडित होकर भगवान् विष्णु की आराधना करते है । भगवान् विष्णु उन्हे शिवाजी के रूप मे अवतार लेकर दुःख दूर करने का वचन देते है । शिवाजी माता और गुरु से

शिक्षा ग्रहण कर गौ-ब्राह्मण तथा स्त्रियों की मुसलमानों के अत्याचारों से रक्षा करते हैं। वे युद्ध में मुगलों को बुरी तरह पराजित कर अफजल खाँ को चालाकी से मार भगाते हैं। औरंगजेब अपने भाइयों को मार कर और अपने बाप शाहजहाँ को आगरे के किले में कैद करके खुद बादशाह बन जाता है। शिवाजी की बढ़ती हुई ताकत से डर कर औरंगजेब शिवाजी को अपने दरबार में बुलवाता है। शिवाजी औरंगजेब के दरबार में उपस्थित होते हैं लेकिन उचित सम्मान न मिलने के कारण बहुत क्रुद्ध होते हैं। औरंगजेब उन्हें गिरफ्तार करके नजरबन्द कर देता है। शिवाजी मिठाई के टोकरे में बैठकर औरंगजेब के कैदखाने से भाग निकलते हैं। शिवाजी की वीरता, साहस और धर्मनीति से उनकी विजय होती है तथा उनका राज्याभिषेक हो जाता है।

वीर स्काउट (सन् १९५५, पृ० ९२), ले० प्रेम प्रकाश वन्दा, प्र० हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, *पात्र* पु० १०, स्त्री ३, *अंक* ३, *दृश्य* ३, ४, ५।
घटना-स्थल मायादास का मकान, स्कूल, स्काउट आश्रम।

इस सामाजिक नाटक में वीर स्काउटों की दर्दनाक तथा वीरतापूर्ण घटनाओं को चित्रित किया गया है। इसमें रमेश, शम्भू, आनन्द तथा गोपाल वीर स्काउट हैं। इन्द्रा एक गरीब लड़की है जिसकी माता के सिवा और कोई नहीं है। वह एक निर्भीक तथा कर्मठ गर्ल स्काउट है। लक्ष्मीदास का पुत्र मायादास एक शराबी तथा कॉलेज का आवारा विद्यार्थी है। मायादास इन्द्रा के साथ शादी करना चाहता है लेकिन इन्द्रा उससे घृणा करती है। सहसा एक ग्रामीण युवक की मायादास की कार से दुर्घटना हो जाती है। इन्द्रा तथा गोपाल उसे स्काउट आश्रम के अस्पताल में ले जाते हैं। वहाँ पर ग्रामीण युवक का इलाज होता है और वह ठीक हो जाता है। यह युवक वीर स्काउट कृष्ण कुमार है जिसको स्काउटिंग के संस्थापक लार्ड बेडेन पावल एवं श्री वाजपेयी द्वारा स्काटउटिंग किंग्ज की उपाधि दी जाती है। स्काउट आश्रम की सुपरिंटेंडेंट यशोदा, इन्द्रा और कृष्ण कुमार एक-दूसरे को पहचान लेते हैं। जो वास्तविक सगे भाई-बहन तथा माता हैं। मायादास एक अनाथ लड़की आशा को जबरदस्ती पत्नी बनाना चाहता है लेकिन विधवा आशा बड़ी बहादुरी से अपने भाई तथा कृष्ण कुमार की मदद द्वारा उससे छुटकारा पाती है। कृष्ण कुमार उसे स्काउट आश्रम में ले जाता है जहाँ आशा की आँख में हुए मोतिया बिन्द का इलाज होता है। अचानक मायादास के पिता लक्ष्मीदास का दिवाला निकल जाता है जिससे लक्ष्मीदास की मृत्यु हो जाती है और मायादास पागल हो जाता है। पागलपन के कारण मायादास और कृष्ण वीर की लड़ाई होती है, जिसमें दोनों को काफी चोट आती है। दोनों का स्काउट-आश्रम में इलाज होता है। कुछ दिनों के बाद कृष्ण वीर तथा मायादास दोनों ठीक हो जाते हैं। मायादास सभी से अपने किये गये अन्यायों के लिए क्षमा-याचना करता है। इन्द्रा की माता यशोदा अपनी लड़की की शादी मायादास के साथ कर देती है जिससे मायादास तथा इन्द्रा बहुत ही प्रसन्न होते हैं। वीर स्काउट कृष्ण कुमार भी विधवा लड़की आशा के साथ शादी करने के लिए तैयार हो जाता है। दोनों की शादी हो जाती है। अन्त में स्कूल के प्रधानाचार्य की मदद से कृष्ण कुमार तथा इन्द्रा अपने खोये हुए पिता को तथा यशोदा अपने पति को पाकर बहुत ही प्रसन्न होते हैं।

वीर हकीकत राय (सन् १९७१, पृ० ६४), ले० घनश्याम प्रसाद शर्मा, प्र० अग्रवाल बुक डिपो, दिल्ली, *पात्र* पु० १०, स्त्री ३, *अंक* ३, *दृश्य* १०, ३, ८।
घटना-स्थल शाहजहाँ का दरबार।

इस ऐतिहासिक नाटक में शाहजहाँ की न्यायप्रियता दिखाई गई है। हकीकतराय मकतब में पढ़ते समय धर्म पर आक्षेप सुनकर वहाँ के कुछ लोगों से झगड़ता है। वह विरोधियों को कुछ भला-बुरा भी कहता है। इस पर लोग क्रुद्ध

होकर काजी की मदद से हकीकत की हत्या कर देते है। अन्त मे हकीकत राय के पिता भागमल शाहजहाँ के दरबार मे न्याय की फरियाद करते है। शाहजहाँ अपनी जान देकर खून का न्याय करना चाहता है पर भागमल क्षमा कर देता है और हिन्दू मुसलमान को एक साथ रहने की नेक सलाह देता है।

वीर हम्मीर (सन् १९११, पृ० ९०), ले० शिवचरण 'चारण', प्र० महर्षि मालवीय इतिहास परिषद्, उपासना मन्दिर, दुगडा (गढवाल), *पात्र* पु० १७, स्त्री ५, *अक* ३, *दृश्य* ४, ३, ३।
घटना-स्थल रणथम्भोर दुर्ग, अलाउद्दीन का शिविर, रणक्षेत्र, बासानदी का तट, खिलजी शिविर, राजमार्ग।

यह ऐतिहासिक नाटक वीरता, देश-प्रेम और राष्ट्रीयता से परिपूर्ण है। इसमे हम्मीर सिंह की वीरता का वर्णन किया गया है। हम्मीर अपने राज्य को सुखी बनाने के लिए अस्पताल, कुँए, तालाब आदि बनवाता है।

नूरजहाँ और उसका पति मीर मुहम्मद उलगूर खा द्वारा किए गए हमले से भागकर हम्मीरसिंह से शरण माँगते है। हम्मीरसिह उन्हे शरण देता है। उलगूर खाँ और भोम पीतम दोनो मिलकर युद्ध की तैयारी करते ही है कि हम्मीरसिह उन पर चढाई करके विजय पाता है। उसके दोनो भाई युद्ध मे मारे जाते है।

वीर हम्मीर नाटक (सन् १९१२, पृ० ४२), ले० रुद्रनाथ सिंह, प्र० जार्ज प्रिंटिग वर्क्स, काल भैरो, काशी; *पात्र* पु० २२, स्त्री ८, *अक* ३, *दृश्य* ९, ११, ११।
घटना-स्थल दिल्ली, रणथम्भौर।

इस ऐतिहासिक नाटक मे रणथम्भौर के सम्राट् हम्मीर की वीरता का वर्णन किया गया है। हम्मीर मुगल-सम्राट् अलाउद्दीन के एक सैनिक को अपने यहाँ शरण देता है जिसके फलस्वरूप अलाउद्दीन रणथम्भौर पर हमला करता है। परन्तु राजपूतो की वीरता के समक्ष यवनो के पैर उखड जाते है। युद्ध मे हम्मीर की विजय होती है। जब हम्मीर अपने सैनिको के साथ शत्रुओ की छीनी हुई पताका को लिए हुए किले की ओर लौटता है तो वीर क्षत्राणियाँ समझती है कि यवन सैनिक राजपूतो को जीतकर इधर आ रहे है जिससे रानी, कुमारी, देवल आदि अपने को अग्नि मे आहुति दे देती है। इस पर हम्मीर दुःखी होकर आत्मघात करना चाहता है, किन्तु उसके सैनिक उसे रोक लेते है।

वीरागना (सन् १९७०, पृ० ६२), ले० मालती श्री खडे, प्र० साथी प्रकाशन सागर, *पात्र* पु० ७, स्त्री ३, *अक* ४; *दृश्य* १, ३, १, १।
घटना-स्थल राजप्रासाद मे सिंहासन, नगर का मार्ग, उपवन, मैदान।

कुडनपुर के महाराज विक्रमसिह पर शत्रु आक्रमण करता है। महाराज विक्रमसिह युद्ध की तैयारी करते है। किन्तु मुख्यमंत्री महेन्द्र पालयुद्ध का विरोध करता है। वह एक सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए बाध्य करना चाहता है। किन्तु इसी समय वाग्दत्ता वधू जयश्री सन्धि का विरोध करती हुई अपनी प्रणय मुद्रिका वापस करना चाहती है। वह विक्रमसिह से कहती है कि युद्ध मे आप को कूदना ही चाहिए। सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर करने के स्थान पर आपको युद्ध करना उचित है। दूसरे अक मे विजयनगर के युवराज चन्द्रधर का ध्वज कुडनपुर मे उडाने का उद्योग मन्त्री महेन्द्रपाल करता है किन्तु कोतवाल धीरज सिंह इसका विरोध करता है। जयश्री ललकराती है कि "जो कुडनपुर के झडे के गौरव को जरा भी धक्का देने का प्रयत्न करेगा वह मौत के घाट उतार दिया जाएगा।" महेन्द्रपाल सिपाहियो की शक्ति से कुडनपुर के झडे को उतार कर विजयनगर का झडा आरोपित करता है। जयश्री बन्दिनी बनाई जाती है और युवराज चक्रधर की आज्ञा से उसके सम्मुख उपस्थित की जाती है। उसके देशप्रेम और स्वातन्त्र्य प्रेम के कारण युवराज उस पर प्रसन्न हो जाता है और उसे वीरागना

निर्णय (वि० १९८२, पृ० ४५), ले०. रुद्र-प्रसाद, प्र० ' लक्ष्मी प्रेस, सप्त सागर, काशी; *पात्र :* पु० ६, स्त्री ४; अक के स्थान पर तीन अदालतें—मुसिफ, सदर आला, सदर दीवानी।
घटना-स्थल : संशय नगर, उपासनापुर, आनंदावाद।

वेदान्त का सार, कचहरी मे चलने वाले अभियोगो के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया गया है। सवत् ५२५ के अगहन महीने के दिनाक ३ को विपयपुर परगने के आत्माराम और बोध-प्रकाश दिवानी अदालत मे विद्यमान है। कायापुर ग्राम-निवासी लोभीदास, कामाचरण, भरम लाल, महारानी अविद्या कुमारी, शक्ति माया कुमारी के ऊपर अभियोग चलाते है। आत्माराम मुद्दई नं० १ अद्वैतपुर का रहने वाला है। उसका कथन है कि "रानी अविद्या कुमारी चंचला ने मुझ मुद्दई को फरेब मे लाकर मेरे इस कायापुर को बसाया और कायापुर से एराजी (खेत) लाखराज मिनहाई निकाल कायापुर असली मे अचेतपुर, दुर्मतिपुर त्रैतापगज, विपादपुर वगैरह रानी अविद्या कुमारी के बन्दोबस्त किया।" वादी साक्षी के रूप मे संतोपीदास, शीतल चन्द, सनेही लाल, मनसाराम, विद्याधर, शीलचन्द आदि को उपस्थित करता है।

प्रतिवादी साक्षी रूस मे हठीचरण, लबारचन्द, दुष्ट प्रसाद, अधर्मीलाल, क्रोधमल, घमण्डी सिंह आदि को पेश करता है। अदालत अनेक कारणो से वादी का मुकदमा डिसमिस कर देता है। आत्माराम और बोधप्रकाश सदरआला बाबू अनुराग चन्द सेन की उपासनापुर स्थित अदालत मे अपील करते है। मुसिफ का फैसला रद्द किया जाता है और अपील-कर्त्ता को जायदाद मोकर्री पर दखल दिया जाता है। किन्तु प्रतिवादी पुन आनदाबाद जिला-स्थित सतसंग नामक दिवानी मे अपील करता है। इस अदालत मे सदरआला साहेब का फैसला बहाल रहता है। फैसले का साराश है कि 'महारानी भक्ति कुमारी से दस्तावेज मोकर्री एराजी लाखराज सुमिरनपुर वगैरह का लिखवाया वो प्रेमभाव का लगाया और उस पर काविज को दखल चला आया है तब अविद्या कुमारी वो यमराजसिह से इसको सरोकार नही है। इसकी मालिक भक्ति कुमारी है।"

वेन चरित्र अथवा राज-परिवर्तन नाटक (वि० १९७९, पृ० १७७), ले० : बदरीनाथ भट्ट, प्र० . रामप्रसाद ऐन्ड ब्रदर्स, आगरा; *पात्र* . पु० २०, स्त्री ५; *अक :* ३, *दृश्य :* ७, ७, ४।
घटना-स्थल : नगर के पास का रास्ता, राजमहल का कमरा, मार्ग, जखीना का मकान।

इस पौराणिक नाटक मे श्रीमद्भागवत मे उद्धृत वेन नामक राजा की कथा चित्रित है।

अग नामक राजा का पुत्र वेन अपनी अराजकता के लिए प्रजा मे कुख्यात है। राजा पुत्र को इस दुराचारी नीति से अलग करना चाहते है किन्तु वह जखीना नामक शूद्र की मदद से ब्राह्मणो, अबलाओ तथा गरीबो पर अत्याचार करवाता है। राजा पुत्र की दुश्चरित्रता से दुखी होकर वन मे चले जाते है। राज्य मे शूद्रो का बोलवाला हो जाता है। ऋषि एव ब्राह्मण वर्ग समझौते के लिए शूद्रों द्वारा सचालित वेन का राजत्व स्वीकार कर लेते है। वेन द्विज-जातियो का पूर्णत तिरस्कार करने के लिए जखीना नामक शूद्र को मन्त्री बना देता है। सिद्धिनाथ नामक देशभक्त केशी चाडाल का रूप धारण कर जखीना का सेवक बन जाता है। शकर आदि देशभक्त उसके षड्यन्त्र मे सहायता देते है। वेन के अत्याचार से द्विज जाति बिल्कुल खोखली हो जाती है और धीरे-धीरे शूद्र जातियो मे भी जखीना के अह से विरोध फैलता है। केशी मौके का फायदा उठाकर शराब मे मदमत्त जखीना से राजा और शूद्रो के नाम दो पत्र लिखवा लेता है। उन पत्रों के प्रचार से शूद्रों मे सनसनी फैल जाती है। फलस्वरूप द्विज और शूद्र एक होकर

"भाई-भाई गले मिलो सब भेद विरोध विसारो, अपनी प्यारी मातृ-भूमि पर तन-मन-धन सब वारो।" का नारा लगाते हुए क्राति कर देते है। जनता की जीत होती है। हजारो निरीह लोग स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर उत्सर्ग हो जाते है। वेन को सूली पर चढा दिया जाता है। नाटक के समस्त सघर्ष का निष्कर्ष सहगान से स्पष्ट होता है—'आजाद हो गया है फिर देश यह हमारा, देखो लिया है हमने कैसा स्वराज प्यारा।'

वेश्या (सन् १९००, पृ० ४०), ले० कैलाश नाथ गुप्त; प्र० : विन्देश्वरी प्रसाद बुकसेलर, बनारस; *पात्र* पु० ४, स्त्री ४, *अक* ३, *दृश्य* ५, ५, ३।
घटना-स्थल मोहनलाल का घर, वेश्यागृह।

इस सामाजिक नाटक मे समाज के कुकृत्यो का पर्दाफाश किया गया है। मोहनलाल एक धनी युवक है। वह अपनी पत्नी को छोडकर मुन्नीबाई नामक वेश्या के प्रेम मे फस जाता है। वेश्या उसका सभी धन-धान्य अपहरण कर लेती है और धक्के मारकर निकाल देती है। उधर मोहनलाल की पत्नी सुशीला भी एक पाखण्डी महात्मा के चक्कर मे पडकर अपना जीवन नष्ट कर देती है। अन्त मे सर्वस्व खोने के बाद पुन: सबको ज्ञान होता है और सभी अपने कृत्यो पर पश्चात्ताप करते है।

वेश्या नाटक (सन् १९१९, पृ० १२७), ले० : केदारनाथ, रघुनाथ प्रसाद, प्र० : आर्य बुकसेलर, मेरठ, *पात्र* पु० ११, स्त्री ३; *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल : वेश्यालय।

इस सामाजिक नाटक द्वारा वेश्या-प्रसंग से लोगो की रुचि हटाना तथा कुसग के कुत्सित प्रभाव से विकृत मनोवृत्ति का दिग्दर्शन कराना ही नाटककार को अभीष्ट है। इसमे मानव-समाज मे प्रचलित बुराइयो का समावेश करके उसके समाधान का प्रयास किया गया है।

वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति (वि० १९३०, पृ० ३६), ले० भारतेन्दु हरिश्चन्द्र; प्र० मेडिकल हॉल प्रेस, बनारस, *पात्र* पु० १०, स्त्री नही, *अक* : ४, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल यज्ञशाला, राजसभा, मार्ग।

भारतेन्दुजी ने पाखण्ड-विडम्बन मे अवैदिको का भंडाफोड किया था, अतएव यह आवश्यक था कि पाखण्डी वैदिक धर्मानुयायियो की भी खबर ली जाए और जनता को उनसे सावधान किया जाय। इसमे मासाहारी पुरोहित का उत्साह से यज्ञ करना, एव शैव-वैष्णवो का मास खाने को लालायित रहना दिखाकर पाखडियो की खिल्ली उडाई गई है। हिंसामय यज्ञ करने वाला राजा जब यमराज के सम्मुख उपस्थित होता है तो चित्रगुप्त उसका लेखा उपस्थित करता है। वह स्थल अत्यन्त ही आकर्षक है।

इस प्रहसन के द्वारा समाज को दूषित करने वाले पाखण्डियों की खूब खबर ली गई है।

वैश्य नाटक (वि० १९५०, पृ० ९२), ले०, सागर रत्न मोहनलाल, प्र० : ज्ञान सागर प्रेस, मेरठ शहर, *पात्र* : पु० ८, स्त्री ८; *अक-दृश्य-रहित*।

यह नाटक स्वाग की शैली पर लिखा गया है। इसमे सेठ-सेठानी, बहिना, चन्द्रकला, मायानन्द और शशि के वार्तालाप के द्वारा ईश्वर-भक्ति मे निष्ठा उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है। नाटक के अन्त मे उग्रसेन और मायानन्द का वार्तालाप दिखलाया गया है।

वैशाली में वसंत (सन् १९५४, पृ० १४८), ले० लक्ष्मीनारायण मिश्र; प्र० : रामनारायण लाल, प्रयाग, *पात्र* : पु० १०, स्त्री ५, *अक* ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल वीरभद्र का शयनकक्ष, तक्षशिला।

वीरभद्र वैशाली गणतत्र का वीर, पराक्रमी और लोकप्रिय सेनापति है। वैशाली

के अष्टकुल उसका सम्मान करते है। मगध के सेनापति चण्ड को वन्दी बनाने एवं अपनी उदारता से उसका हृदय जीत लेने के बाद तो उसकी कीर्ति-पताका और भी वेग से फहराने लगती है। दुर्भाग्यवश स्वर्ण विषबाण से क्रीडा करते हुए उसकी मृत्यु हो जाती है। उनके उदात्त और परिष्कृत चरित्र का अम्बपाली का यौवन और सम्मोहक रूप-लावण्य भी पथभ्रष्ट करने मे असफल रहता है। वे शयन-कक्ष मे अम्बपाली के कोमल शरीर का स्पर्श पाकर ऐसे उठ बैठते है जैसे देह से अगारे छू गए हो और भीष्म के समान प्रतिज्ञा करते है कि आजन्म ब्रह्मचारी रहेगे तथा स्वत निर्वासित हो जाएँगे। वे दूरद्रष्टा भी थे इसीलिए उन्होने उससे वैशाली को बचाने का यत्न किया किन्तु असफल रहे।

नाटक का नायक रोहित ऐसे पराक्रमी, शूरवीर और विवेकशील पुरुष का पुत्र है। तक्षशिला मे विविध ज्ञान के साथ-साथ वह गुरुपुत्री रम्भा के साथ विवाह करता है। रम्भा वस्तुत उसके पिता के अभिन्न मित्र देवदत्त की पुत्री थी पर जिनका लालन-पालन तक्षशिला विद्यापीठ के आचार्य पुष्कल ने किया था। विवाह कर वह मातृभूमि वैशाली को लौट आता है। वहाँ आते ही वे दोनो पति-पत्नी जनसमूह के हृदय का हार बन जाते है। परन्तु सेनापति सौम कुछ तो स्वार्थवश और कुछ वैशाली के विधि-विधान की मर्यादा का उल्लंघन होने के कारण उस विवाह का विरोध करता है। वह रोहित से अपनी पुत्री जयन्ती के साथ विवाह करने का आग्रह करता है।

श

शंकर दिग्विजय (सन् १९२३, पृ० ९२), ले० बलदेव प्रसाद मिश्र; प्र० राष्ट्रीय हिन्दी मन्दिर, जबलपुर; *पात्र :* पु० ८, स्त्री २; *अक :* ५, *दृश्य* ७, ८, ८, १०, ६।
घटना-स्थल गाँव, नदी, आश्रम, बौद्ध विहार, पथ।

इस जीवनी परक नाटक मे शकराचार्य के सिद्धातो की सर्वश्रेष्ठता सिद्ध की गई है।

नाटक के प्रथम अक मे करुणागार सुख के सार शकर की वन्दना मे ससार को दुखो से मुक्ति दिलाने के लिए प्रार्थना की जाती है। इस नाटक मे शकराचार्य के जीवन की प्रमुख घटनाओ को आधार बनाकर नाटक की रचना की गई है। माता से सन्यास लेने की अनुमति, विविध सम्प्रदायो के विद्वानो से शास्त्रार्थ, मोक्ष के विविध साधनो के अध्ययन आदि के आधार पर कथानक की सृष्टि हुई है। सबसे अधिक मार्मिक स्थल शकर और उनकी माता के अन्तिम संवाद के समय पाया जाता है। माता मरणासन्न अवस्था में है। वह शंकर से पूछती है, "बेटा ऐसा मार्ग बतला जिससे मेरा मोक्ष हो जाए।" शकराचार्य कहते है कि "मोक्ष बाहर की वस्तु नही, संसार मे आसक्ति छोड देना ही सच्चा मोक्ष है।"

कथावस्तु मे शंकर-सिद्धान्त का विवेचन और उसका युग पर प्रभाव दिखाया गया है। मंडन मिश्र तथा उसकी स्त्री से शास्त्रार्थ, बौद्ध दार्शनिको से विवाद, वेदान्त-दर्शन का महत्त्व प्रदर्शित किया गया है।

शंकर विनोद विज्ञान नाटक (सन् १८९७, पृ० २८५), ले० शंकरानन्द स्वामी, प्र० लक्ष्मीनारायण प्रेस, मुरादाबाद, पात्र पु० ८, स्त्री ३, अक ५, दृश्य रहित।
घटना-स्थल आश्रम, पथ।

प्रस्तुत नाटक मे अज्ञानी और माया-ग्रसित जीवो के उद्धार के लिए नन रूपी नट, वासना रूपी नटी के सहित जिस निदान

नाटक की रचना करता है, उसके देखने से दुःख का नाश और शान्ति की प्राप्ति होती है। मन रूपी नट अन्त मे ससार को मिथ्या बताकर और सारी क्रियाओ को केवल चित्-विलास कहकर आत्मा के श्रेष्ठत्व का प्रतिपादन करता है।

नाटक के पात्र प्रतीकात्मक एव अमूर्त है।

शंकराचार्य (सन् १६५६, पृ० ६६), ले० : रामबालक शास्त्री; प्र० : हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, *पात्र :* पु० १३, स्त्री ४ ; *अक* . ३, *दृश्य :* ३, ४, ४।
घटना-स्थल केरल, आलवाई नगरी का तट, माता विशिष्टा का विश्राम कुटीर, मार्ग, कोने मे एक ब्राह्मण का घर, नर्मदा तट, बौद्ध-विहार, वन-पथ, बदरिकाश्रम, हिमालय मे नवनिर्मित यज्ञशाला।

माता विशिष्टा का पुत्र शकर नदी मे ग्राह द्वारा पकड लिया जाता है। पुत्र के सन्यास लेने के सकल्प पर वह ग्राह से मुक्त हो जाता है। पुरोहित सन्यास सफल होने का आशीर्वाद देता है माँ फूट-फूटकर रोती है। शकर भिक्षा मागने चलते है। गुरुपाद शकर के गुरु बन जाते है। वह इधर-उधर उपदेश दिया करते है। एक बार माता के पास आकर भिक्षा मागते है। माता विशिष्टा उन्हे 'आप' कहकर सम्बोधित करती है और वह ,अपने आचार्यपाद एव ब्रह्मचारी वर्ग सहित प्रस्थान कर जाते है। विशिष्टा आचल से आँसू पोछ कर रह जाती है। शकर अपनी विद्वत्ता और तपस्या से सर्वत्र पूज्य बनते है और सम्पूर्ण आर्यावर्त का परिभ्रमण कर वेदान्त-सिद्धान्त का प्रसार और प्रचार करते हुए विपक्षियो को पराजित करते है। अत विद्वन्मडली उन्हे जगद्गुरु शकराचार्य की उपाधि प्रदान करती है, और भारतवर्ष की समस्त जनता स्थान-स्थान पर उनके जय जयकार से आकाश-मडल गुजित करती है।

शकुन्तला नाटक (सन् १८८६, पृ० ८४), ले० : 'हाफिज' मोहम्मद अब्दुल्ला; प्र० : इण्डियन इम्पीरियल थियेट्रिकल कम्पनी, धौलपुर; *पात्र :* पु० ६, स्त्री ४; *अंक :* (बाब) २; *दृश्य*-रहित।
घटना-स्थल : आश्रम, मार्ग, राजमहल, इन्द्र लोक।

इस नाटक को प्रसिद्ध शकुन्तलोपाख्यान के आधार पर अनुबन्धित किया गया है। नाटक सगीतमय पद्यबद्ध ओपेरा है। इसमे शकुन्तला, दुष्यन्त, मातलि, कण्व ऋषि, अनुसूया, प्रियबदा, सारथी, मन्त्री, अप्सरा आदि सभी प्राचीन पात्र अपनाये गये है। नाटक अको मे नही दो बाबो मे निर्मित है।

नाटक के कथानक मे कोई नवीनता नही है। स्थान-स्थान पर हिन्दू सभ्यता तथा सस्कृति को मुसलिम मान्यताओ की दृष्टि से देखा गया है। नाटक के मुख्य चरित्र दुष्यन्त और शकुन्तला के चरित्र मे सामान्य आशिक और माशूक की भावना आरोपित है। शकुन्तला के गीत और उसके सवाद बाजारु ढग के है। परम्परा से आती हुई इस कथा मे शैतान आदि के प्रयोगो से नयापन लाने का प्रयास है। नाटक भद्दी आशिकी से आगे नही बढ सका है। इसकी भाषा हिन्दी-उर्दू मिश्रित है।

शकुन्तला (सन् १६२३, पृ० ६६), ले० : मोहम्मद इबराहीम, 'मशहर'; प्र० : जे० एस० सन्तसिंह एण्ड सस, लाहौर; *पात्र :* पु० ६, स्त्री ४।
घटना-स्थल : आश्रम, मार्ग, राजभवन, इन्द्रलोक।

इस पौराणिक नाटक मे शकुन्तला और दुष्यन्त की प्रसिद्ध कथा को पारसी थियेटर-कम्पनी के अनुकूल ढाला गया है। नाटक का दूसरा नाम गुमशुदह अगूठी भी है। इस नाटक मे खोई हुई अगूठी को मुख्य घटना केन्द्र मानकर लिखा गया है। घटना-क्रम प्रसिद्ध शकुन्तला नाटक के अनुसार रखा गया है।

शकुन्तला नाटक (सन् १६०८, पृ० ६०), ले० मुशी रामगुलाम लाल रसिक बिहारी; प्र० : बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर,

वाराणसी ; पात्र. पु० ६, स्त्री ४; अक : ३, दृश्य · ६, ४, ४ ।
घटना-स्थल : तपोवन, मार्ग, राजभवन ।

अभिज्ञान शाकुन्तलम् की प्रसिद्ध कथा को सक्षिप्त कर तीन अको में ही दिखाने का प्रयास किया गया है। नाट्यकार की दृष्टि अर्द्ध-शिक्षित पाठको की ओर रही है अत: मुख्य कथा का सार सरल भाषा मे सवाद के रूप मे व्यक्त करने का प्रयास पाया जाता है।

शकुन्तला नाटक नवीन (सन् १८६०, पृ० १००), ले०: गणेश प्रसाद, प्र० दिलकुशा प्रेस, फतेहगढ; *पात्र* : पु० ६, स्त्री ४ ।
घटना-स्थल : आश्रम, मार्ग, जगल ।

कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तलम् की छाया लेकर यह नाटक प्रस्तुत किया गया है। नाट्यकार भूमिका मे लिखते हैं—"शकुन्तला नाटक नवीन राग-रागिनी मे व शैर मे महाभारत व श्रीमद्भागवत व वाल्मीकि रामायण का सार निकालकर तैयार किया।" नाटक मे रंगमच के सकेत गद्य मे दिये गये हैं। छन्दो मे कवित्त, लावनी, दोहा, सोरठा और गजल का प्रयोग है। नाटक का अधिकाश भाग पद्यबद्ध है। शकुन्तला का विरहगान पारसी रगमंच शैली पर है। अभिज्ञान शाकुन्तलम् के कथानक को पारसी और लोक-नाट्य शैली पर प्रदर्शित करने का प्रयत्न किया गया है। यह नाटक लीथो मे छपा है।

शक-विजय (सन् १९४९, पृ० १४४), ले० उदयशकर भट्ट; प्र० : प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली; *पात्र* : पु० १३, स्त्री २, *अक* ४, *दृश्य* ५, ४, ७, ५ ।
घटना-स्थल राजमार्ग, राजोद्यान, वृक्ष-च्छाया।

इस ऐतिहासिक नाटक मे शको और भारतीय योद्धाओं का संघर्ष दिखाया गया हैं।

डॉ० विष्णु अम्बालाल जोशी की लघु-कथा शक-विजय के आधार पर कथावस्तु का निर्माण हुआ है। नाट्यकार लिखते हैं—"मैंने शक विजय की कथा में कालकाचार्य तथा गन्धर्वसेन दोनो को गौरवपूर्ण स्थान देने की चेष्टा की है।" शक विजय का अर्थ है शको की विजय और शको पर विजय। इस नाटक मे दोनो स्थितियाँ दिखाई गई है। नाटक का उद्देश्य है—

"देश की स्वतन्त्रता, उसका सुख सर्वोपरि है"—इसी भावना को लेकर अवन्ती के राजा गंधर्वसेन और शकराज नहपान का संघर्ष दिखाया गया है। इसमे जैन साधु कालकाचार्य—जिन पर देश-द्रोह का लाछन लगता है—और राजा गन्धर्वसेन के चरित्र को ऊँचा उठाने का प्रयत्न है।

शक्ति-पूजा नाटक (सन् १९५२, पृ० १०४), ले० वी० मुखर्जी (गुञ्जन), प्र० : आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, *पात्र* : पु० ८, स्त्री ४ ; *अक* : ५, *दृश्य* . ३, ६, ३, ५, ७ ।
घटना-स्थल : इन्द्रलोक, महिषासुर का महल।

इस पौराणिक नाटक मे परम्परागत कथा को आधुनिक सदर्भ मे नियोजित करने के लिए महिषासुर की नृशंसता को 'शक्ति पूजा' के नवीन रूप मे दिखाया गया है।

महिषासुर रम्भासुर की घोर तपस्या से प्राप्त 'देव-दैत्यजयी' सन्तान है। वह असुर-संस्कृति और राज्य का नायक है। वह अपनी सस्कृति को देवताओ से किसी भी अर्थ मे हीन नही समझता और देवो तथा असुरो की परम्परा-पुष्ट-शत्रुता का वीरता-पूर्वक प्रतिरोध करता है। इन्द्र देव-प्रजा की रक्षा के निमित्त तपस्यारत रम्भासुर का वध करता है। महिषी उससे पूर्व गर्भवती रहती है। अत· पुत्र को सुरक्षित रखने तथा इन्द्र से प्रतिशोध लेने के लिये वह पति रभ के साथ सती नही होती और दानवों तथा चिक्षुर की बात को स्वीकार कर अपने राज-भवन मे चली जाती है। पुराणो मे इनके

विपरीत रंभ और महिषी की प्रज्ज्वलित अग्नि से महिषासुर के उत्पन्न होने की कथा मिलती है। नाट्यकार इसे 'देवासुर संग्राम' का रूप देता है और इन्द्र तथा देवताओं को हीन, कपटी, विलासप्रिय और दम्भी प्रस्तुत करता है। देवगुरु वृहस्पति इन्द्र को रम्भ की अमानुषिक हत्या का दोषी समझते हैं और इसके कारण भयानक झंझा और विप्लव की आशंका करते हैं। देवगुरु, मुनि कात्यायन से परामर्श करके देव-रक्षा का उपाय सोचते हैं। कात्यायन भी देवताओं की विलास-प्रियता, सोमपान और चरित्र-हीनता को पतन का कारण समझते हैं। दोनों ही देव-रक्षा में तत्पर है। उधर इन्द्र और देव-सेनापति कार्तिकेय भी सैन्य संगठन कर के युद्ध की तैयारी करते हैं। महिषासुर भी अपनी माँ द्वारा प्रतिशोध की तैयारी में व्यस्त है। उसे देव-दैत्य-जयी वर तो प्राप्त है ही, वह अमरता और पूजा का अधिकार प्राप्त करने के लिये माता से अनुमति ले ब्रह्मा की तपस्या में लग जाता है। ब्रह्मा उसकी घोर तपस्या से प्रसन्न होकर विश्व-जयी बन एक स्त्री के हाथों मारे जाने का वर देते हैं। वह 'असुरों' के अमरता तथा पूजा सम्बन्धी अधिकार को मानते हैं।

महिषासुर की अनुपस्थिति में इन्द्र और कार्तिकेय दैत्यपुरी पर आक्रमण कर देते हैं किन्तु चिक्षुर और कराल देव-सेना को पराजित कर इन्द्र तथा कार्तिकेय को बन्दी बनाते हैं। महिषासुर ब्रह्मा से वरदान प्राप्त कर लौटता है और चिक्षुर को सेनापति बनाकर कराल को तलवार पेश करता है। इन्द्र तथा कार्तिकेय को तो मुक्त करता है किन्तु समस्त देव कन्याओं, स्त्रियों और महिलाओं को बन्दी बनाता है। वह अपनी सैन्यशक्ति से त्रैलोक्य का स्वामी बनता है। अन्त में देव-गुरु तथा कात्यायन की प्रार्थना पर 'दुर्गा' समस्त देव-शक्ति का प्रतीक बनकर महिषासुर का दमन करती है। महिषासुर पुत्र को प्राणदण्ड तथा रानी अलकावती को राज्याज्ञा-उल्लंघन पर कठोर कारावास का दण्ड देता है। 'दुर्गा' उसे अमरत्व का वर दे पुत्र तथा पत्नी को क्षमा-दान कराती है और देव-माता अदिति, महिषी और ब्रह्मा की राय से सन्धि होती है।

शतमुख रावण (महाकाली सीता) (सन् १९७०, पृ० १३६), ले० चन्द्रशेखर पाण्डेय 'चन्द्रमणि', प्र० रायबरेली भारती-भवन, बन्नावाँ, पात्र पु० १४, स्त्री २, अंक ३; दृश्य : ६, १०, ४।
घटना-स्थल लंका, अयोध्या।

रावण-विजय के अनन्तर अहंकार-ग्रस्त राम, सीता से कुछ दुर्वचन कहते हैं, जिससे क्षुब्ध होकर सीता अपनी माया शक्ति का प्रदर्शन करती है। उनकी प्रेरणा से शत-मुख रावण का आविर्भाव होता है जो अपने पराक्रम से सभी को परास्त करता है। वह लंका पर अधिकार कर सिंहासन पर बैठना चाहता है; किन्तु सुदर्शन चक्र उसे ऐसा करने से रोक देता है। सुदर्शन चक्र को प्रभावहीन करने हेतु शतचण्डी नरमेध (यज्ञ) करने का निर्णय लिया जाता है।

पराजित विभीषण अयोध्यापति राम की शरण जाता है। राम ससैन्य शतमुख रावण पर आक्रमण करते हैं, किन्तु परास्त होते हैं। इस पर वह प्रतिज्ञा करते हैं कि कल प्रातःकाल से पूर्व मैं शतमुख रावण का अवश्य संहार करूँगा और यदि ऐसा न कर सका तो आत्मदाह कर लूँगा। प्रतिज्ञाबद्ध राम अपने उद्देश्य में सफल नहीं होते। अंत में नारद के सुझाव पर उसी रात अयोध्या से सीता सुप्तावस्था में हनुमान द्वारा लायी जाती है। योगनिन्द्रा-निमग्न कालिका रूपिणी सीता की सभी अभ्यर्थना करते हैं। इस पर सोते ही सोते सीता महाकाली का रूप धारण कर अपनी शक्तियों सहित शतमुख आदि राक्षसों का संहार करती है। विभीषण को पुनः राज्य प्राप्त होता है। लंकापति की प्रार्थना पर राम, सीता तथा लक्ष्मण उसका आतिथ्य स्वीकार करते हैं।

शतरंज के खिलाड़ी (सन् १९५५, पृ० ११९), ले० हरिकृष्ण प्रेमी; प्र० :

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली; पात्र पु० ५, स्त्री ८; अक . ३; दृश्य : ९, ७, ६।
घटना-स्थल महबूब की अट्टालिका मे उसकी बैठक, रेगिस्तानी, रास्ता, जैसलमेर दुर्ग के बाहर—युद्ध-भूमि।

इस ऐतिहासिक नाटक मे महबूब खाँ हिन्दू राजकुमार की रक्षा का प्रण निबाहता है। दिल्ली के सेनापति महबूब खाँ और जैसलमेर महारावल के पुत्र रत्नसिंह शतरज खेलते हुए कहते हैं कि युद्धकाल मे भी शतरज का खेल बन्द नही होगा। दिल्ली का बादशाह अलाउद्दीन जैसलमेर पर आक्रमण करता है। महबूब खाँ का भाई रहमान बन्दी बना लिया जाता है। महारावल की बाण से मृत्यु हो जाती है। अलाउद्दीन की सेना को मुँह की खानी पड़ती है लेकिन रहमान किसी प्रकार बन्दीगृह से भाग निकलता है। महबूब खाँ अलाउद्दीन से युद्ध बन्द करने के लिए कहता है। रहमान षड्यन्त्र द्वारा खाद्य-पदार्थो और युद्ध-सामग्री मे आग लगवा देता है। महारावल जीतसिंह के ज्येष्ठ पुत्र मूलराज और रत्नसिंह से शपथ लेते हैं कि वह प्राणो को न्यौछावर करके जैसलमेर की रक्षा करेगे। जैसलमेर की नारियाँ जौहर कर लेती है। रत्नसिंह अपने पुत्र गिरिसिंह की रक्षा का भार महबूब खाँ को सौंपते है। महबूब खाँ शपथ लेता है कि युद्ध के पश्चात् जैसलमेर का सम्राट् गिरिसिंह ही बनेगा। यदि अलाउद्दीन गिरिसिंह को सम्राट् नही बनायेगा तो वह सेनापति-पद का त्याग कर देगा।

शपथ (सन् १९५१, पृ० १५२), ले० : हरिकृष्ण प्रेमी; प्र० आत्माराम एण्ड सस, दिल्ली, पात्र पु० १०, स्त्री ५, अक · ३; दृश्य : ८, ६, ५।
घटना-स्थल : दशपुर, मिहिरकुल।

इस ऐतिहासिक नाटक मे देशाहुति के लिए सर्वस्व बलिदान का आह्वान है। मन्दसोर (प्राचीन दशपुर) मे यशोधर्मन नाम का व्यक्ति हूणो के विरुद्ध जनता मे उत्तेजना पैदाकर क्रान्ति का सफलतापूर्वक सचालन करता है। उसके सहायक वत्सभट्ट, धन्यविष्णु, मंदाकिनी, कचनी, हेमचन्द्र आदि हूण मिहिरकुल पर विजय की शपथ लेते हैं। कचनी वेश्या भी देश पर बलिदान होने को आतुर होती है। मदाकिनी यशोधर्मन से पराजित हूणो के भारतीय बनने की सम्भावना पर वार्तालाप करती है। विष्णुवर्धन(यशोवर्मन)कहते है—"तब उनके हृदय मे भारतीयो पर प्रभुता स्थापित करने की आकाक्षा भी समाप्त हो जायेगी।" इस नाटक मे भारतीयो के उन गुणो एव सस्कारों का उल्लेख है जिनके कारण भारत तेजस्वी, वीर और बलवान् बना और उन निर्बलताओ और त्रुटियो का भी चित्रण है जिनके कारण भारत को अनेक बार विदेशी शक्तियो से पराजित होना पडा। कचनी, सुवासिनी आदि नारियाँ देशहित पर मिटती है। सुवासिनी देशहित के लिए सर्वस्व बलिदान भी करती है।

शबरी (वि० २००९, पृ० ११६), ले० · सीताराम चतुर्वेदी, प्र० . अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशी; पात्र पु० ११, स्त्री ५, अक · ३, दृश्य · ३, ५, ५।
घटना-स्थल दडकवन, आश्रम, पथ।

इस नाटक की कथावस्तु वाल्मीकि रामायण के चौहत्तरवें सर्ग से ली गई है। इसमे राम, लक्ष्मण, मातग ऋषि और उनके आश्रम आदि का वर्णन पौराणिक सामग्री के आधार पर ही है। शबर सरदार गोमगों, कोला तथा शबरी की चारित्रिक विशेषताओ के साथ उनकी रामभक्ति को भी चित्रित किया गया है। दक्षिण भारत रावण के आतक से पीडित दिखाया गया है और राम के द्वारा ही आर्य-धर्म की रक्षा तथा राक्षसो के नाश की आशा व्यक्त की गई है। नाटक मे राम की भक्ति की महिमा गाई गई है। नाटक की भूमिका मे प्रेक्षागृह, नेपथ्य दृश्य का मानचित्र तथा पात्रो की वेपभूषा का वर्णन है।

अभिनय—काशी और बम्बई मे नाट्यकार के निर्देशन मे अभिनीत।

शबरी अछूत (सन् १९४५, पृ० ७४), ले० · गौरीशकर मिश्र, प्र० : इण्डियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग; पात्र पु० १८, स्त्री २, अक · २; दृश्य ३, २ ।
घटना-स्थल . दडक वन, पथ ।

इस पौराणिक नाटक मे अछूतोद्धार की महती भावना पर नाटक की कथा विरचित है। त्रेता-युग मे जन्मी—पति-पुत्र विहीना भीलनी शबरी की कथा के माध्यम से अछूतोद्धार की समस्या प्रस्तुत की गई है । मोक्षाकाक्षिणी शबरी दण्डक वन मे ऋषियो के सन्निकट रह कर कर्मयोग की साधना करती है। अस्पृश्य होने के कारण प्रारम्भ मे वह प्रत्येक आश्रम मे ईधन पहुँचाने, कण्टकित मार्गो को बुहार कर स्वच्छ करने का पुण्य कार्य करती है, परन्तु कतिपय ऋषियो के विरोध प्रकट करने पर वह इस पुण्य कार्य का त्याग करने पर विवश होती है । मातग ऋषि शबरी की मर्म व्यथा समझते है और उसके प्रति मानवीय व्यवहार के कारण अपने समाज से बहिष्कृत होते है। मातग ऋषि शबरी को आशीर्वाद देते है कि एक दिन स्वय भगवान् उसकी कुटिया पर चल कर आएँगे। भगवान् राम की प्रतीक्षा मे शबरी तन्मय होती है और अन्त मे राम स्वय शबरी की कुटिया मे उपस्थित होते है। शबरी की चिराकाक्षा पूरी होती है। जब सकीर्ण विचार वाले ऋषियो को वास्तविक ज्ञान होता है, तब वे भी अस्पृश्यता-निवारण को कटिबद्ध हो जाते है।

शमशाद सौसन (सन् १८८०, पृ० १२५), ले० · केशवराम भट्ट ; प्र० . बिहार बन्धु छापाखाना, बाँकीपुर , पात्र . पु० ५, स्त्री २, अक ३, दृश्य झाँकी ४, ६, ४ ।
घटना-स्थल · बाढ के रईस, मजिस्ट्रेट की कोठी, टूटा-सा मकान, पटना मे एक आलीशान मकान, गगा का किनारा, जेल खान ।।

इस सामाजिक नाटक मे प्रेमी-प्रेमिका के सत्य प्रेम की झाँकी दिखाई गई है ।

बाढ के रईस हियातबख्श की पोती सौसन हाली का गीत गाती है—'हम ही शमा इस्लाम रोशन करेगे ? बडो का हम ही नाम रोशन करेगे ।"—सौसन चौदह साल की लड़की है । हाजी हियातबख्श से उसकी शादी जल्द करने का आग्रह करता है । बाढ के दूसरे रईस शमशाद हुसैन से सौसन का बचपन से मेल-जोल है। हियातबख्श का नाती केसर भी प्राय. सौसन के यहा आता जाता है। वह अपने विषय मे स्वय कहता है 'मुझे इस कदर खुशी किसी बात मे नही मिलती, जितनी दो आदमियो को लडा देने मे मिलती है।' उसी के कारण सौसन और शमशाद मे मनोमालिन्य हो जाता है। जहाँ दोनो एक दूसरे के वियोग मे तडपते थे वहाँ एक दिन सौसन को शमशाद का गाली भरा पत्र मिलता है, जिसमे वह सौसन को फाहिशा लडकी कहता है। उसने हियातबख्श को भी लिख दिया है—'अपनी पोती की शादी और किसी से कर लीजिये, मैं अब रुखसत होता हूँ ।' शमशाद अपनी बहिन हमीदा के साथ पटना जाकर दिल बहलाना चाहता है । पटना जाने से पूर्व वह एक दस्तावेज का रुपया ज्वाइट मजिस्ट्रेट 'रो' से लेने जाता है। रो उसका दस्तावेज फाड डालता है। वह दस्तावेज अंग्रेजो की मदद करने के बदले मिला था। रो को अत्याचारी दिखाने के लिए नाट्यकार एक उपकथा निर्मित करता है। रो शमशाद से कहता है, 'टुमको एक छोटी सी नाजिनी बहन है। उसको एक डिन अमारा विस्टरा पर भेज दो।" वह विलायत की उस शादी की चर्चा करता है, जो एक या दो या कतिपय रात के लिए होती है। एक दिन रो पुलिस की सहायता से हमीदा को पकड मँगाता है और एक कोठरी मे वन्द करा देता है किन्तु कैसर के प्रयत्न से वह निकल भागती है। जेल मे कैदियो को मजिस्ट्रेट के जुल्म का पता चलता है। वे एकत्र होकर प्रतिज्ञा लेते है "हिन्दू हो चाहे, मुसलमान हो, मरहठे हो चाहे, राजपूत हो, जब तक सब न मिलेगे तब तक अग्रेजो को निकालना नामुमकिन

है।" कैदी रो के हाथ से तलवार छीन लेते है और उसकी छाती पर चढकर सीने मे तलवार भोककर एक कैदी कहता है—"काहे सारी अब न हमार जोरूआ के नष्ट करब। बोले न सरवा।" रो का काम तमाम कर सब भाग जाते हैं।

इधर शमशाद को सौसन के सच्चे प्रेम का प्रमाण मिल जाता है, और अन्त मे दोनो का विवाह हो जाता है। उसी प्रकार हमीदा और कैसर का विवाह हो जाता है। इसमे शमशाद की निष्ठुरता दिखाई गई है और अन्त मे यह निष्कर्ष निकाला गया है कि कभी किसी लड़की के चरित्र पर सन्देह नही करना चाहिए। सौसन शमशाद से कहती है—"भले आदमी की वहू-वेटियो पर वे समझे बूझे फौरन शक कर लेना मुनासिव नही।" नाटक मे हास्य का भी वातावरण उत्पन्न करने के लिए एक पेटू मौलवी को चुना गया है और ग्रामीण भाषा का प्रयोग किया गया है।

हाजी अन्त मे एक आयत कहता है—जिसका अर्थ है—"जिस कुन्वे मे मिया-वीवी मे मुहव्वत रहती है, वह खाने खुशी है, वल्कि उसे जन्नत-इ-बरी कह सकते हैं—और वरखिलाफ इसके वीरान और दोजख।"

शरद चेतना (सन् १९५१, 'रजत शिखर' मे सग्रहीत संगीत रूपक), ले० . सुमित्रानन्दन पंत ; प्र० . भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहावाद ; *पात्र* : कुछ स्वर, *अक-दृश्य-रहित*।

'शरद चेतना' एक कल्पना-प्रधान सगीत रूपक है, जिसमे हेमन्त, शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म ऋतुओ के सौन्दर्य के परिप्रेक्ष्य मे ऋतु को एक चेतना के रूप मे मानवीकृत किया गया है। शरद चेतना शरद-चन्द्र से पृथ्वी पर अवतरित चन्द्रिका है। अवतरण प्राय निम्न चेतना का ही माना जाता है किन्तु कवि के अनुसार "मानव के सम्यक् विकास के क्रम मे केवल निम्न चेतना ही नही ऊपर उठती, उर्ध्व चेतना भी नीचे उतरती है। उसी को हमारे दार्शनिको ने मर्कट-न्याय और मार्जारन्याय कहा है। वन्दर का वच्चा ऊपर उछलकर माँ के पास पहुँचता है, विल्ली नीचे झुककर अपने वच्चे को उठा लेती है। इसी को अरविन्द ने double ladder या दुहरी सीढी कहा है। अरविन्द से प्रभावित पन्त उर्ध्व चेतना का अवतरण तथा निम्न चेतना का आरोहण ही आदर्श स्थिति मानते हैं। शरद चेतना का भी कदाचित् इसी कारण स्वर्गावतरण कराया गया है।

प्रस्तुत रूपक का प्रारम्भ शरद के परिचय गीत से होता है। तत्पश्चात् क्रमशः छ ऋतुओ का सुनिश्चित क्रम मे सक्षिप्त रूप से वर्णन किया गया है। प्रत्येक ऋतु आकर शरद ऋतु का अभिवादन करती है। अन्त मे शरद-वन्दना के साथ रूपक समाप्त होता है।

शर-विद्ध स्वप्न (सन् १९७०, पृ० ६४), ले० राजेश्वर गुरु; प्र० : लोक भारती प्रकाशन, इलाहावाद, *पात्र* : पु० १५, स्त्री ५; *अक-रहित*, *दृश्य* · ३। *घटना-स्थल* : विड़ला भवन के अतिथि कक्ष का एक कमरा।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। सन् १९४७ मे जब भारतवर्ष का विभाजन होता है तो हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान दोनो मे साम्प्रदायिकता अपने चरम सीमा पर होती है। महात्मा गाँधी इस साम्प्रदायिकता के विरुद्ध दोनो देशो के लोगों को सजग करते है। हिन्दुओ को गाधी जी के शान्ति प्रयत्नो से मुसलमानो के प्रति पक्षपात-पूर्ण उदारता की वू आती है। साम्प्रदायिक स्थिति नियन्त्रण से वाहर हो जाती है, जिसको सामान्य रूप देने के लिए जनवरी मे गाँधी जी आमरण उपवास शुरू करते है। इसके फलस्वरूप विभिन्न सम्प्रदाय के लोग उन्हे शान्ति तथा सुरक्षा का आश्वासन देते है। फिर भी गाँधी जी ने यह अनुभव किया कि उनमे तथा उनके काग्रेसी सहयोगियो—जवाहरलाल नेहरू तथा वल्लभ भाई पटेल—के मतो से उनका मेल नही खाता

है। अब गाँधी जी को यह आशका पैदा हो जाती है कि उनका सपनो का भारत सत्य नही हो सकता है। इसकी उन्हे गहरी वेदना होती है। इस नाटक मे गाँधी जी की मानसिक स्थिति तथा विविध घटनाओ का स्पष्टीकरण किया गया है।

शराफत (सन् १९६२, पृ० ४८), ले० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भडार, चावडी बाजार, दिल्ली, पात्र : पु० ४, स्त्री १, अक २, दृश्य २, १।
घटना-स्थल: रमेश बावू के मकान का एक कमरा, उद्यान।

नाटक मे शराफत पर व्यंग्य किया गया है। रमेश बाबू किस प्रकार डॉक्टरी से अधिक पत्नी के इच्छुक है और आशा भी उन पर मुग्ध है। रमेश बावू अपने कुकृत्यो से वदनाम हो जाते है। उन्हे पुलिस पकडती है और अन्त मे आशा रानी की सूझ तथा लाल दुपट्टे के रहस्योद्‌घाटन से दोनो का मिलन होता है।

नाटक 'विजय कला दीप' द्वारा मचस्थ किया जा चुका है।

शराब की घूंट वा आदर्श नारी (वि० १९९३, पृ० ८५), ले० शिवराम दास गुप्त, प्र० उपन्याम बहार आफिस, काशी, पात्र पु० ६, स्त्री २, अक ३, *दृश्य* . ६, ६, २।
घटना-स्थल शराब की दुकान, जीवनदास का घर।

यह नाटक मद्य-निषेध का आन्दोलन करने के लिए लिखा गया है। रईस जीवनदास के पुत्र प्रेमनाथ और जीवनदास दोनो शराव के नशे मे अपने घर-वार एव व्यापार की उपेक्षा करते है। इस कार्य मे पचाली नामक उनका कपटी मित्र काफी सहायता तथा प्रेरणा देता रहता है किन्तु जीवनदास की सती साध्वी पत्नी आशा के अथक परिश्रम से शराव की लत छूट जाती है और साथ ही उसके प्रचार-प्रसार मे भी सहयोग देने की प्रतिज्ञा करते है।

शशिगुप्त (सन् १९४२, पृ० १५८), ले० : सेठ गोबिन्ददास, प्र० रामनारायणलाल, इलाहाबाद, *पात्र* पु० ११, स्त्री १; *अंक* : ५, *दृश्य* . ५, ५, ५, ५, ५।
घटना-स्थल . शिविर, युद्धक्षेत्र, मार्ग।

इस ऐतिहासिक नाटक मे चन्द्रगुप्त, चाणक्य और सिकन्दर की घटनाओ को नयी खोजो और नए ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखा गया है। नवीन मान्यताओ के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य नन्दवशीय नही है और न ही मगध मे उसका मूल जन्म स्थान है। इस नाटक मे इसका जन्म-स्थान सिन्धु और कुमार नदियो के मध्य कोहमोर नामक प्रदेश बताया गया है। इसमे चाणक्य तक्षशिला निवासी है। प्रारम्भ से ही चन्द्रगुप्त और चाणक्य मे घनिष्ठता है। चन्द्रगुप्त पहले सिकन्दर से मेल करता है किन्तु समय पाकर उसके विरोध मे खडा होता है। पर्वतक (पोरस) इसका समर्थक होता है। नाटक मे सिकन्दर यहाँ से विजयी होकर नही, अपितु हार कर ही लौटता है। नाटक के अनुसार चन्द्रगुप्त मोर नामक पर्वतीय क्षेत्र की अश्वक जाति का प्रतिनिधित्व करता है और चाणक्य के निर्देश पर सिकन्दर का क्षत्रप वनता है और बाद मे उसके विरुद्ध विद्रोह भी सगठित करता है। पोरस की हाथियो की सेना भागती नही, अपितु यवन सैनिको का सहार करती है। इसमे पोरस की रण-चातुरी से अविभूत होकर सिकन्दर उससे मैत्रीपूर्ण सधि करने पर विवश होता है। वापिस लौटते समय सिकन्दर को शशिगुप्त और मालव शक्ति के समक्ष पराजित होना पडता है। यही एक मालव सैनिक के तीर से सिकन्दर की मृत्यु होती है।

शहीद सन्यासी (सन् १९२७, पृ० ११६), ले० : किशनचन्द जेवा; प्र० : लाजपतराय एण्ड सस पब्लिशर्स, लाहौर; पात्र पु० १५, स्त्री ४; *अंक* . ३, *दृश्य* : ५, ६, ५।
घटना-स्थल दिल्ली, स्वामी जी का घर,

सभा ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे गाँधीयुग के श्रेष्ठ शहीद स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिखाया गया है। स्वामीजी घोर कलि-काल मे भी कर्मयोग के सच्चे अर्थों को समझकर अपना जन्म सफल करते है। वह कर्मयोगी रूप मे सन्यासी होकर देश के लिए शहीद होते हैं। उन्ही के उद्योग से अछूत भाई सामूहिक रूप से यह शपथ लेते है कि आज से हम न मधुपान करेगे और न माँस का भक्षण करेगे। दूसरे स्थान पर प्रश्न उठाया गया है कि यदि सवर्ण ऐसा करने पर भी अछूतो को गले नही लगाते है तब क्या उपाय ? इस प्रश्न का उत्तर दूसरा अछूत देता है कि हमे मन मे द्वेष भावना नही रखनी चाहिए। हिन्दू जाति हमारा मूल आदि स्रोत है और हम उसे किसी प्रकार विघटित नही होने देगे। इस नाटक मे अछूतो के उद्धार के लिए स्वामी श्रद्धा-नन्द का शहीद होना दिखाया गया है।

शहीदे आजम सरदार भगत सिंह (सन् १९४०, पृ० ८०), ले० बिशन गुप्ता शाहपुरी, प्र० आजाद बुक डिपो, अमृतसर, *पात्र* पु० २०, स्त्री २, अक ६, *दृश्य* ४, ४, ४, १, ४, ४।
घटना-स्थल लाला लाजपतराय कॉलेज, भगतसिंह का घर, खुफिया मकान, जगल, असेम्बली हाल, जेल, अदालत, कम्पनी बाग इलाहाबाद, फाँसी का तख्ता।

स्वतन्त्रता-सग्राम के सेनानी सरदार भगत सिंह के द्वारा चलाए गए आजादी के सघर्षो को इस ऐतिहासिक नाटक मे दिखाया गया है। सुखदेव, राजगुरु के साथ भगत-सिंह देशव्यापी स्वतन्त्रता-आन्दोलन करते है। लाला लाजपतराय पर अमानुपिक प्रहार से ये सब क्षुब्ध हो जाते है। स्थान-स्थान पर अंग्रेजो के खिलाफ बगावत करते हुए विदेशी शासन की योजनाओ को असफल करते है। भगतसिंह के द्वारा इलाहाबाद, बनारस, लखनऊ, कलकत्ता, दिल्ली आदि नगरो मे स्वतन्त्रता के सेनानियो का गठन होता है। चन्द्रशेखर आजाद इनके गिरोह का पक्का प्रतिनिधि बनता है। लेकिन अन्त मे अग्रेजो की विशाल शक्ति के द्वारा सरदार भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव पकडे जाते है और उन्हे फाँसी दे दी जाती है। बाहर जनता अपने प्रिय नेताओ की लाशों को पाने के लिए चिल्ला रही है किन्तु अग्रेज अफसर इन तीनो लाशो को भीतर-भीतर पिछले दरवाजे से बाहर कर देते है। जनता अपने प्रिय नेताओ की लाश तक नही देख पाती।

शहीदे नाजा (सन् १९०७, पृ० १२०), ले० : मुहम्मदशाह आगा हश्र काश्मीरी, प्र० : भार्गव पुस्तकालय-गायघाट, काशी, *अक* : ३।
घटना-स्थल : महल।

इस सामाजिक नाटक मे इसाफ और रहम मे प्रतिद्वद्विता दिखाई गई है। अदलाबाद का बादशाह जहादरशाह जमील नामी एक दुश्चरित्र व्यक्ति को दण्ड देता है। उसकी बहिन हसीना भाई की रक्षा के लिए नवाब सफदर के पास जाती है जो उस पर आशिक होकर उस इश्क के मूल्य पर जमील को छोडने की शर्त रखता है। विवश होकर हसीना तैयार हो जाती है किन्तु उसके शील और सतीत्व की रक्षा जहादरशाह द्वारा होती है। सफदर को भरी सभा मे हसीना द्वारा अपमानित होने का दण्ड मिलता है। परन्तु जहादरशाह के कहने पर रहमकर उसे क्षमा कर देती है। नाटक का अभिनय खटाऊ अल्फ्रेड पारसी कम्पनी द्वारा १९०३ मे हुआ किन्तु प्रकाशनकाल १९३२ ई० है।

शहीदो की बस्ती (सन् १९६८, पृ० १४३), ले० : प्रेम कश्यप 'सोज', प्र० उमेश प्रकाशन, दिल्ली; *पात्र* पु० ६, स्त्री ३।
घटना-स्थल : कश्मीर की घाटी।

राष्ट्रीय भावना से पूर्ण यह नाटक जम्मू-कश्मीर के सुन्दर अचल की भूमि पर

आधारित है। पाकिस्तानियो के जासूस कश्मीर मे घूमते रहते है तथा पाकिस्तान कश्मीर को हड़पना चाहता है पर कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग समझकर वहाँ लोग लडते रहते है। उन्ही लडने वालो और शहीदो की वीरता और देश प्रेम का इसमे वर्णन है।

अभिनय—दिल्ली तथा अन्य स्थानों पर अभिनीत।

शान्तिदूत (सन् १९५२, पृ० १०३), ले० : देवदत्त अटल, प्र० : आत्माराम एण्ड सस, दिल्ली; *पात्र* : पु० २०, स्त्री ७; *अक* : ३, *दृश्य* : ८, ६, ७।
घटना-स्थल : महल, शिविर।

इस पौराणिक नाटक मे महाभारत के आधार पर भगवान् कृष्ण की शान्ति-स्थापना के प्रयत्नो पर प्रकाश डाला गया है। कृष्ण पाण्डवो की धार्मिकता, सत्य परायणता से प्रभावित थे और न्यायत राज्य पर उनका अधिकार स्वीकार करते थे। यद्यपि कृष्ण को शकुनी और दुर्योधन का द्यूत-क्रीडा मे छल, अज्ञात वनवास का कष्ट, द्रौपदी का अपमान भी याद है फिर भी वह युद्ध के लिये तैयार नही होते और शान्ति-दूत बन कर कौरवो के पास जाते है। कृष्ण जन-जन मे शान्ति की आकाक्षा जगाते है; कुन्ती, द्रौपदी, गाधारी को समझाते है; कर्ण को मनाने और दुर्योधन को भी युद्ध से विरत करने का प्रयत्न करते है। धूर्त शकुनी के प्रभाव तथा कर्ण की प्रतिशोध-अग्नि के कारण दुर्योधन कृष्ण को ही बन्दी बनाने का प्रयास करता है, किन्तु शातिदूत (कृष्ण) अपनी नीति से बाहर निकल आते है।

नाटक मे द्रौपदी क्रान्ति की मशाल है तो गाधारी शान्ति की। देश की स्थिति और सामान्य जन की भावना भी युद्ध के विरुद्ध अभिव्यक्ति पा सकी है। किन्तु कृष्ण का शान्ति-मिशन असफल रहता है और युद्ध अनिवार्य हो जाता है। इसमे कृष्ण का रूप ईश्वर का नही, नेता का है। वह जन-जन मे शान्ति के लिये जागृति उत्पन्न करते है और स्त्रियों को भी राजनीति की अधिकारिणी समझते है।

शाप का वरदान (सन् १९५४, पृ० १३२), ले० : सूरज प्रसाद श्रीवास्तव; प्र० : अग्रवाल बुक डिपो, दिल्ली; *पात्र* : पु० ११, स्त्री ८; *अक* : ५, *दृश्य* : ५, ७, ७, ५, ५।
घटना-स्थल : जगल, वनमार्ग, सुनैना का मकान।

इस नाटक मे सुरेन्द्र शिकार के समय धोखे से चन्द्रायण ऋषि की हत्या कर देता है जिसके कारण ऋषि की पत्नी सुभद्रा उसे दूसरे दिन से ही साप हो जाने का शाप देती है। सुरेन्द्र दूसरे दिन साप हो जाता है। उसकी मा रोहिणी पुत्र के विलाप मे घर छोड कर चली जाती है। पुरोहित गणेशानन्द विशाल बाहु की पुत्री सुनैना का किसी राजा के साथ लग्न की भविष्यवाणी करता है। फलस्वरूप सुनैना राजकुमार सुरेन्द्र से प्रेम करती है किन्तु उनके साप-योनि मे चले जाने से दुखी है। किन्तु जोगिनी के माध्यम से वह राजकुमारी सुनैना से मिलता है तथा राजा विशालबाहु से भी बाते करता है। साप को बाते करता देख सभी आश्चर्य मे पड जाते है किन्तु अन्त मे सुनैना की तपस्या और पुरोहित के क्रिया-कर्म से सुरेन्द्र साप-योनि से मुक्त होता है और फिर उसका विवाह राजकुमारी से हो जाता है। अन्त मे उसकी मा रानी रोहिणी भी आकर मिल जाती है।

शारदीया (सन् १९५९, पृ० १२०), ले० : जगदीशचन्द्र माथुर, प्र० : सस्ता साहित्य मडल, नई दिल्ली, *पात्र* : पु० १२, स्त्री २; *अक* : ३; *दृश्य* : ३, २, २।
घटना-स्थल : एक गाँव।

शरद् पूर्णिमा की ज्योत्स्ना से धवलित महाराष्ट्र के कागल नामक ग्राम मे नरसिंह और उसकी प्रेमिका बायजाबाई का दो बार वियोग हुआ, जिसकी स्मृति दोनो को

चिरस्मरणीय बन गई है। बायजाबाई की माता अपनी बेटी का विवाह नरसिंह के साथ एक शर्त पर करने का वचन देती है। किन्तु उसकी मृत्यु के उपरान्त शर्त पूर्ण होने पर भी बायजा के पिता शर्जेराव घाटगे पुत्री का विवाह उसकी इच्छा के विरुद्ध दौलतराव सिंधिया के साथ करके अपना भाग्योदय चाहते है। बायजाबाई और नरसिंहदेव के हृदय मे एक-दूसरे के प्रति हार्दिक प्रेम स्थान पा चुका है। निजाम और मराठो के युद्ध मे नरसिंहदेव गुप्तचर का काम करता है तथा निजाम और मराठे दोनो मे धार्मिक एवं राजनीतिक शान्ति स्थापित करने का पक्षपाती है। वह निजाम की युद्ध योजनाओ को विफल बनाने मे सफल होता है, किन्तु शर्जेराव घाटगे दौलतराव सिंधिया को मद्यादि दुर्व्यसनो मे फसाकर नरसिंहराव जैसे योग्य सैनिक को मृत्युदण्ड की आज्ञा दिलाता है। पर जिन्सेवाले के प्रयास से नरसिंहराव ग्वालियर के कारागार मे बन्द कर दिया जाता है, जहाँ ज्योत्स्ना-दर्शन के लिए तरसता हुआ, निजामी कारीगरो से सीखी हुई वस्त्र-निर्माण की कला का अभ्यास करता है, और अपनी प्रेयसी की स्मृति के प्रकाश से उस अन्धगुफा मे हाथ से पाच गज की ऐसी साडी बुनता है जिसका केवल पाच तोले भार होता है।

घाटगे के षड्यन्त्र से बायजाबाई दौलतराव सिंधिया के अन्त पुर मे पहुँच जाती है। घाटगे को भी नरसिंहराव के मृत्युदण्ड मे परिवर्तन की घटना अज्ञात है। वह युद्ध मे नरसिंहराव की मृत्यु का मिथ्या समाचार देकर बायजाबाई का विवाह दौलतराव सिंधिया के साथ कर देता है। किन्तु जिस दिन बायजाबाई को नरसिंहदेव के कारावास की कहानी ज्ञात होती है वह सिंधिया से उसकी मुक्ति का आदेश प्राप्त करती है। उस आदेश-पत्र को लेकर शारदीया नरसिंहराव से उस अन्धगुफा मे मिलती है और उससे कारावास से बाहर निकलने का अनुरोध करती है। किन्तु वह अपने हाथ से बुनी साडी बायजाबाई को प्रदान कर वही रहने का आग्रह करता है। इसमे राजकर्मचारियो की परस्पर ईर्ष्या-भावना घाटगे की कुटिलता के माध्यम से दिखाई गई है। कथावस्तु मे नाटकीय कौतूहल के अनेक स्थल है। नरसिंहराव जिस दिन फाँसी पर लटकने के क्षण की प्रतीक्षा करता है उसी दिन उसका मित्र जिन्सेराव उसे आजीवन कारागार की सूचना देता है। उस अप्रत्याशित सन्देश से उसके मन मे विलक्षण अन्तर्द्वन्द्व उत्पन्न होता है। वह कहता है, 'सरदार, मैं मौत की उम्मीद का सहारा ले रहा था। आपने उसे तोड दिया। और अब यह जिन्दगी, यह गुफा की घिरी-घिरी जिन्दगी, किसके लिए?"

इस नाटक की चरम परिणति (Climax) तृतीय अक के दूसरे दृश्य मे है। जिन्सेवाले से नरसिंह राव की जीवितावस्था का शुभ समाचार पाते ही महारानी बायजाबाई के मन मे अन्तर्द्वन्द्व उत्पन्न होता है। वह सिंधिया से नरसिंहराव की मुक्ति की अनुमति प्राप्त करके कारावास मे पहुचती है।

गढपति को यह रहस्य अज्ञात है कि महारानी बायजाबाई और नरसिंहराव मे परिचय है। वह नरसिंहराव से निवेदन करता है कि अपने हाथ की बनी हुई अद्वितीय साडी महारानी को उपहार-स्वरूप देकर उनसे मुक्ति की प्रार्थना करे। नरसिंहराव अपनी प्रेयसी के लिए निर्मित साडी देना अस्वीकार कर देता है। उसके मन मे द्वन्द्व उठता है।

"यह कपडा, यह तुम्हारी स्मृतियो का ताना-बाना। यह महारानी को दूँ? असम्भव! × × चलो, तुम मुझे यहाँ से ले चलो, अपने चादी से जगमगाते अम्बर मे। राजाओ और महारानी की चमक-दमक से परे, युद्ध और हलचल से दूर, बहुत दूर, जहा तारे गाते है। ऐ! तुम कहा जा रही शारदीये।" वह कम्पित स्वर मे पुकार उठता है।

नरसिंहराव को जिस समय जिन्सेवाले से ज्ञात होता है कि महारानी स्वय उसकी शारदीया बायजाबाई है तो उसकी मनोदशा मे विलक्षण कौतूहल उत्पन्न होता है।

शास्त्रार्थ (सन् १९६७, पृ० ६५), ले० राजेश्वर झा; प्र० : अमरनाथ प्रकाशन,

रसुआर, सहरसा, पात्र · पु० ६, स्त्री ३, अक · ३, दृश्य ४, ४, ४।
घटना-स्थल · कैलाश, कुमारिल भट्ट की पाठशाला, मंडन मिश्र का भवन, महिष्मती नगरी, शास्त्रार्थ—भवन, राजा अमरूक की राजधानी, पहाड की गुफा, अमरूक का राजभवन।

इस ऐतिहासिक नाटक मे शकराचार्य, मंडन मिश्र और भारती के शास्त्रार्थ का विवरण है। मीमासकाचार्य प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति मंडन मिश्र थे। उनकी विद्वत्ता से प्रभावित होकर प्रसिद्ध अद्वैतवादी संन्यासी केरल-किशोर शकराचार्य उनसे शास्त्रार्थ करने के लिए मिथिला मे पदार्पण करते है। मडन मिश्र के गुरु कुमारिल भट्ट भी शंकराचार्य की विद्वत्ता से प्रभावित है। कुमारिल के आदेशानुसार ही शंकराचार्य मंडन से मिलने मिथिला आये है। मंडन को ढूँढते हुए उन्हे मडन मिश्र की गृह सेविका मिलती है। उसके मुँह से मीमासा के तथ्य-पूर्ण उत्तर सुनकर शंकराचार्य विस्मय-विमुग्ध हो जाते है। मडन मिश्र के साक्षात्कार होने पर शास्त्रार्थ की तैयारी होने लगती है। शास्त्रार्थ मे निर्णायक बनती है—वेद-वेदाग, इतिहास, गणित, धर्मशास्त्र आदि मे प्रवीण मडन मिश्र की पत्नी। अनेक दिनो तक शास्त्रार्थ चलता है। इसी क्रम मे भारती दोनो प्रतिद्वन्द्वियो के गले मे माला डाल देती है और घोषणा करती है कि जिसके गले की माला कुम्हला जाएगी वह पराजित घोषित किया जाएगा। सर्व प्रथम मंडन मिश्र की माला म्लान हो जाती है तब भारती शकराचार्य के विजय की घोषणा करती है और विजेता के साथ स्वय शास्त्रार्थ करने के लिए सन्नद्ध हो जाती है। भारती अपने कौशल से शकराचार्य को मौन कर देती है और शर्त के अनुसार वे काषाय वस्त्र का परित्याग कर गृहस्थाश्रम मे प्रवेश करते है।

शाहजहाँ (सन् १९२५, 'झाँकी' संग्रह मे सग्रहीत), ले० आरसी प्रसाद सिह; प्र० : गाधी, हिन्दी पुस्तक भंडार, दिल्ली, पात्र · पु० १, स्त्री १, अक-रहित, दृश्य : १।
घटना-स्थल . कारागार।

प्रस्तुत गीति-नाट्य मे शाहजहाँ के अन्तिम दिनो का चित्रण किया गया है। कारावास के दुर्दिनो मे सम्राट् के पास केवल दो सम्बल है—पुत्री जहाँनारा एव स्वर्गवासी मुमताज की मधुर स्मृतियाँ। यद्यपि औरगजेब शाहजहाँ पर अनेक अत्याचार करता है तथापि शाहजहाँ उसके कल्याण की कामना करता है। यहाँ उसमे पितृ-सुलभ-स्नेह के दर्शन होते है, जो उसके धीरज को भावात्मक स्पर्श प्रदान करता है। जहाँनारा के हृदय मे शाहजहाँ के लिए असीम आदर है, प्रेम है। इसीलिए उसके अन्तिम दिनो तक वह भी उसके साथ कारावास भोगती है। इतना ही नही, पिता के लिए वह अपने प्रथम प्रणय का भी बलिदान कर देती है और मृत्युपर्यन्त प्रेमी के दर्शन न करने का सकल्प करती है। यहाँ जहाँनारा का उदात्त प्रेम नारी के त्यागमयी रूप का सहज स्पर्श कर लेता है। एक दृश्य के इस गीतिनाट्य मे ऐतिहासिक तथ्यो को आधार बनाया गया है।

शाही लकड़हारा (सन् १९२४, पृ० १४६), ले० : कुलभास्कर जन्नत, प्र० नेशनल बुक डिपो, नई सडक, दिल्ली, पात्र : पु० १३, स्त्री ७; अक · ३; दृश्य ८, ७, ६।
घटना-स्थल . जगल, मार्ग, खंडहर।

महाराज जोधपुर एक शर्त हार जाने से अपनी रानी को १० वर्ष का वनवास देते है। जगल मे उसे पुत्र उत्पन्न होता है जो कालान्तर मे जगल मे ही खो जाता है। अत लकडहारे का जीवन बिताता है। राजा के एक प्रधान रामसिह की बेटी बीना पर जालिम नामक एक दुष्ट आसक्त होता है किन्तु बीना उससे विवाह करना स्वीकार नही करती है। जालिम युक्तिपूर्वक एक लकडहारे को राजकुमार बता कर उससे

बीना का विवाह करा देता है। भेद खुलने पर पता चलता है कि वह लकडहारा जिस से बीना का विवाह हुआ है—और कोई नही महाराजा का खोया हुआ राजकुमार है।

शिक्षादान अर्थात् जैसा काम वैसा परिणाम (वि० १९३४, पृ० ४४), ले० बालकृष्ण भट्ट; प्र० : महादेव भट्ट, अहियापुर, प्रयाग, पात्र पु० ३, स्त्री ४, अक के स्थान पर गर्भाक और पर्दा (चार तो पर्दे है पाँचवाँ गर्भाक है)।
घटना-स्थल . रसिक लाल का अग्रेजी ढग से सजा हुआ बैठकखाना, जनानखाने मे रसोईघर, शयनगृह, मोहिनी वेश्या का घर, मालती का शयनगृह।

प्रस्तुत प्रहसन मे यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि एक सभ्य लडका कुसगति मे पडकर किस प्रकार अपने चरित्र को दूषित कर देता है तथा एक कुलवन्ती स्त्री किस प्रकार अपने चरित्र-बल से अपने पति को कुमार्ग से बचाने की शिक्षा देती है।

प्रहसन का नायक रसिकलाल मित्रो की कुसगति मे पडकर मोहिनी नामक वेश्या के प्रेम-पाश मे फस जाता है और अपनी विवाहिता पत्नी मालती की उपेक्षा करने लगता है। मालती अपने पति को सुधारने के लिए एक दिन अपने घर परपुरुष को बुलाती है। रसिकलाल उसे देखकर आग-बबूला हो उठता है। वह मालती से कहता है "हम अभी तेरा सिर काट डालेगे"। तब मालती सारा रहस्य बताती है कि जिस प्रकार आपको परपुरुष मेरे साथ देखकर क्रोध आता है उसी प्रकार आप मुझे छोडकर परस्त्री के साथ घूमते हैं तो मुझे कैसा लगता होगा। और इस युक्ति से रसिकलाल अपने कुकृत्यो पर पश्चात्ताप व्यक्त करता है।

शिल्पी (सन् १९५२, 'शिल्पी' मे सग्रहीत), ले० सुमित्रानन्दन पन्त, प्र० : राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पात्र : पु० २, स्त्री १, अक-रहित, दृश्य ३।
घटना-स्थल . कलाकक्ष, देवालय।

आधुनिक युग-चेतना पर आधारित 'शिल्पी' गीतिनाट्य एक कलाकार के अन्त सघर्ष को प्रस्तुत करता है। प्रथम दृश्य मे कलाकार अपनी मूर्ति द्वारा युग को एक शाश्वत-चिरन्तन सत्य देना चाहता है। युग के परिवर्तित मानदण्ड तथा रूढि-ग्रस्त आत्मा के जड सस्कार उसके इस स्वप्न को पूरा करने मे असमर्थ रहते है। वह अनेक बार मूर्ति का निर्माण करता है और अनेक बार उसका खडन। यहाँ कला-कार मे अन्तः-सघर्प होता है। भौतिक युग के साथ-साथ अन्त. के आदर्श भी परिवर्तित होते रहते हैं। ये परिवर्तित आदर्श शिल्पी के पत्थर तथा छेनी की पकड मे आते-आते रह जाते हैं। इसी समय कुछ व्यक्ति कलाकार का कलाकक्ष देखने आते हैं जहाँ कलाकार गौतम, मसीह, राधाकृष्ण, रवीन्द्रनाथ टैगोर, गाँधी तथा सरदार पटेल की मूर्तियो के माध्यम से आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनीतिक तथा साहित्यिक दोषो पर दृष्टिपात करता है। यहाँ उसे ज्ञात होता है कि सभी आदर्श युग-सापेक्ष है। अत. किसी भी आदर्श को शाश्वत आदर्श के रूप में प्रस्तुत नही किया जा सकता।

द्वितीय दृश्य मे नगर-श्रेष्ठी द्वारा खरीदी मुरलीधर की मूर्ति की देवालय मे प्रतिष्ठा होती है। इस स्थल पर मूर्ति-पूजा को लेकर सस्कृति तथा कला सम्बन्धी वाद-विवाद छिडता है। युग-युगो से मूर्ति-पूजा, अर्चना के बावजूद भी जन-मन मृत आदर्शो से चिपका हुआ है। ऐसे आदर्शो को कला-कार मानवता के लिए अपमान समझता है। चूंकि आत्मा निरन्तर विकसित होती रहती है इसीलिए परिस्थितियो की सगठित चेतना पर ही समस्त जीवन-मूल्य अवलम्बित रहते है।

तृतीय दृश्य मे शिल्पी की शिष्या उसे उसकी कला-सामर्थ्य के प्रति सचेष्ट करती है। अन्त मे चिन्तन करते-करते कलाकार के समक्ष चिर-प्रतीक्षित स्वप्न-प्रतिमा साकार

हो उठती है। तभी श्रमिको तथा कृषको का समूह आता है और कलाकार की एकान्त-साधना पर व्यग्य करता है। वह कला को अतृप्त वासनाओ की पूर्ति, यश-लिप्सा की अभिव्यक्ति कहते हुए उन कृषक-श्रमिको को जीवन के सच्चे साधक बताता है, जो मिट्टी के सौन्दर्य को जागृत करते है। वास्तव मे ये ही प्रकृत शिल्पी है। यहाँ कलाकार को युग-सत्य के दर्शन होते है और वह जनवादी कला का समर्थन करता है।

शिवपार्वती (सन् १९२७, पृ० १०५), लें० : परिपूर्णानन्द वर्मा, प्र० · बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, राजा दरवाजा, बनारस सिटी, *पात्र* · पु० १७, स्त्री ६; *अक* ; ३; *दृश्य* . ७, १०, ५।
घटना-स्थल · वन, सड़क, यज्ञशाला, गली, इन्द्रसभा, पर्वत का झरना, गंगा तट, नगर रणक्षेत्र, महल, राजद्वार, कैलाश पर्वत, कन्दरा।

इस पौराणिक नाटक मे शिव की भक्ति राम मे दिखाई गई है।

राम और लक्ष्मण सीता को वनो मे खोजते हुए विलाप करते है। एक दिन शिव और पार्वती उधर ही से गुजरते हुए राम से मिलते है। दूर ही से शिव राम को प्रणाम करते है। पार्वती के यह कहने पर कि आप एक साधारण पुरुष को प्रणाम करते है। शिव जी उन्हे बताते है कि वे साधारण पुरुष नही बल्कि विष्णु के अवतार है। पार्वती यह बात भी मानने को तैयार नही होती और रामचन्द्र जी की परीक्षा लेने के लिए सीता का रूप बनाकर राम के सामने खडी हो जाती है। पार्वती को सीता के रूप मे देखकर रामचन्द्रजी कहते है कि माता, आप शिव जी को छोडकर यहाँ कहाँ चली आयी। यह सुनकर पार्वती जी बहुत लज्जित होकर लौट आती है। शिव जी को जब यह ज्ञात होता है कि उन्होने सीता का रूप धारण किया तो पार्वती जी को त्याग देते है क्योकि सीता को शकर जी माँ मानते थे। शिव जी द्वारा परित्यक्ता पार्वती अपने पिता दक्ष के यज्ञ मे अनिमन्त्रित जाती है और दक्ष द्वारा अपमानित होने पर यज्ञकुण्ड मे कूदकर जान दे देती है। पार्वती के मरने के बाद शिव के गण उत्पात मचाते है और दक्ष का सिर काट लेते है। मरने के बाद पार्वती जी हिमाचल के यहाँ उमा के नाम से जन्म लेती है। इधर तारकासुर नाम का एक राक्षस तप करके नारद के सुझाव पर ब्रह्मा को प्रसन्न करके यह वरदान माँगता है कि शिव जी के पुत्र के अतिरिक्त और कोई हमे मार न सके। वर प्राप्त करके वह देवताओ पर चढाई करता है और उनको बड़ा कष्ट देता है। हारकर देवगण शिवजी का विवाह उमा के साथ करने का प्रयत्न करते है। उमा भी साढे तीन सहस्त्र वर्ष तपस्या करती है तब शिवजी उसकी परीक्षा लेते है और फिर उसके साथ विवाह करते है। देवता बहुत प्रसन्न होते है।

शिव-विवाह (वि० १९६८, पृ० ९१), लें० : मुशी राम गुलाम; प्र० : बाबू कन्हैयालाल बुकसेलर, पटना; *पात्र* : पु० ६, स्त्री २; *अक* : ५, *दृश्य* : २, ६, ६, ४, ९।
घटना-स्थल : विवाह-मंडप।

इस पौराणिक नाटक मे शिव-पार्वती विवाह की सम्पूर्ण घटनाओ का बड़ा ही सरस चित्रण किया गया है। नाटक गद्य तथा पद्यमय है। पद्य मे दोहे, दादरा, चौपाई, सोरठा, हरिगीतिका और सवैया आदि का प्रयोग मिलता है।

शिवाजी (वि० १९९४, पृ० २१४), लें० : मिश्र बन्धु, प्र० : गगा ग्रंथागार, लखनऊ; *पात्र* : पु० २१, स्त्री २ ; *अक* : ५।
घटना-स्थल : दिल्ली।

इस ऐतिहासिक नाटक मे शिवाजी का राष्ट्रप्रेम दिखाया गया है।

शिवाजी अपनी माता जीजाबाई से प्रजा-कल्याण के लिए आदिलशाह से युद्ध

करने का आशीर्वाद लेते है। हिन्दू अबलाओ के साथ होनेवाले अत्याचारो से उनका रक्त उबल उठता है। इस अत्याचार से सन्तप्त कई मुसलमान भी शिवाजी का साथ देते है।

आदिलशाह के ऊपर शिवाजी की विजय का समाचार सुनकर दिल्ली-बादशाह औरगजेब बडा क्रुद्ध होता है और महाराजा यशवन्त सिह को उन्हे पराजित करने का आदेश देता है। शिवाजी और औरगजेब का युद्ध इस नाटक मे दिखाकर छत्रपति की वीरता, सहिष्णुता, प्रजा-वत्सलता आदि दिखाने का सफल प्रयत्न किया गया है।

कथावस्तु मे अल्प परिवर्तनो के साथ यह नाटक सफलता पूर्वक खेला जा सकता है। शिवाजी को नायक बनाकर लिखे गए ऐतिहासिक नाटको मे इसका उच्च स्थान है।

शिवाजी और भारत-राज्य लक्ष्मी (सन् १६२५, 'झाँकी' सग्रह मे संग्रहीत), ले० आरसी प्रसाद सिह, प्र० गाधी हिन्दी पुस्तक भडार, दिल्ली, पात्र पु० १, स्त्री १, अक-रहित; दृश्य १।
घटना-स्थल · नही है।

शिवाजी और भारत-राज्य लक्ष्मीएक ऐतिहासिक गीति-नाट्य है, जिसमे दो पात्रो के वार्तालाप द्वारा भारत राज्य-लक्ष्मी के प्रति शिवाजी के भावात्मक उद्गार व्यक्त किए गए है। राम, अशोक तथा चन्द्रगुप्त की गौरवशाली परम्परा मे पल्लवित-हिन्दू-जाति परस्पर ईर्ष्या-द्वेष, अविश्वास के कारण विदेशियो की दासता भोग रही है। राज्य-लक्ष्मी इससे विक्षुब्ध है। भारत का अन्धकारमय भविष्य उसे चिंतित करता है। शिवाजी के पराक्रम, देशभक्ति एव आत्म-बलिदान की भावना से वह कुछ आश्वस्त होती है और देशोद्धार की आकाक्षा करती है। इस प्रकार एक दृश्य के इस गीतिनाट्य का सामयिक महत्त्व है। भारत के स्वतन्त्रता-आन्दोलन के समय विद्यालयो मे अभिनीत।

शिवाशिव नाटक (सन् १६०६, पृ० १६५), ले० : विन्ध्येश्वरी दत्त शुक्ल, प्र० . खड्गविलास प्रेस, बाकीपुर, पात्र . पु० १०, स्त्री ६, अक . ६, दृश्य . ५, ३, ५, ५, ५, ५, ११, ६, १४।

इसमे नौ दिनो की लीला नौ अको मे वर्णित है। सती-मोह से कथा प्रारम्भ होकर पार्वती-विवाह और विदाई तक समाप्त होती है। ग्रथ की रचना बढ़वा निवासी प० रामदास तिवारी के प्रस्ताव पर हुई जिन्होने रामलीला नाटक लिखा था और उसका अभिनय भी अपने ग्राम मे कराया था। नाटक मे गद्य कम है, पद्य अधिक है। सवाद खडी बोली गद्य मे है। पद्य ब्रजभाषा मे है जो नाना राग-रागनियो मे निबद्ध है। बीच-बीच मे खडी बोली का पद्य भी उर्दू के ढग का है। इन्दर-सभा अमानत के ढग का यह नाटक है।

शिवा-साधना (सन् १६३७, पृ० १८६), ले० : हरिकृष्ण 'प्रेमी'; प्र० : हिन्दी भवन, जालधर शहर, पात्र . पु० ३८, स्त्री ६, अक ३, दृश्य ८, ७, ६।
घटना-स्थल . दिल्ली, बीजापुर, कैदखाना।

इस ऐतिहासिक नाटक मे महाराष्ट्र-वीर छत्रपति शिवाजी के आक्रमणो और देश की एकता के लिए किए गए सगठनो का सुन्दर चित्रण है। शिवाजी अपने सामर्थ्य से सारे भारतवर्ष मे जनता का राज्य स्थापित करना चाहते है। इससे क्रोधित होकर बीजापुर का बादशाह महमूद आदिलशाह शिवाजी के पिता को कैद कर लेता है। दूसरी ओर औरगजेब बीजापुर को अपने अधिकार मे लेकर साथ ही शिवाजी को भी समाप्त करना चाहता है। अपनी इस इच्छा को पूर्ण न होते देखकर वह धोखे से शिवाजी को बन्दी कर लेता है। परन्तु शिवाजी अपनी युक्ति और नीति द्वारा औरगजेब के कारागार से मिठाई के टोकरो मे बैठकर निकल जाते है। कुछ समय पश्चात् उनकी माता की मृत्यु हो जाती है। माता की मृत्यु से शिवाजी के मन मे वैराग्य की लहर आती

है। किन्तु गुरु रामदास उन्हे प्रोत्साहित करते है, जिससे वे पुनः स्वातन्त्र्य-युद्ध मे सलग्न हो जाते है।

शीरी-फरहाद (सन् १९२३, पृ० ११४), *ले० :* श्याम बिहारी लाल; *प्र० :* बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, बनारस; *पात्र :* पु० ८, स्त्री ५; *अक* ३; *दृश्य* . ९, ७, ४।
घटना-स्थल : जगल, रास्ता आम, बाग-शीरी, सडक तूरान की, महल मय बाग, दरबार कोहसार।

इस दुखान्त नाटक मे शीरी-फरहाद का उन्मुक्त प्रेम दिखाया गया है।

शीरी-फरहाद की प्रसिद्ध कहानी को पारसी रगमंच की दृष्टि से लिखा गया जिसमे सवादो मे भी गाने दिए गए है। नाट्यकार भूमिका मे लिखते है : "न मैं पण्डित हूँ और न शायर। मैं महज नाटक-कला का एक पुजारी हूँ।"

फरहाद एक कोहकन युवक है। वह मिस्र मे अनेक प्रकार की कारीगरी सीखकर ईरान आता है। सयोग से एक दिन ईरान की शाहजादी शीरी की जान बचाता है। शीरी की सुन्दरता पर मुग्ध होकर फरहाद उससे प्यार करने लगता है। गुलनार नाम की दूसरी लड़की फरहाद से प्यार करती है लेकिन फरहाद उसे अपनी बहन मानता है और शीरी के सिवा दूसरे के प्यार को कुछ महत्त्व नही देता है। इससे विक्षुब्ध होकर गुलनार शीरी की तस्वीर तूरान के बादशाह के पास इस ख्याल से भेजती है कि जब शीरी की सुन्दरता शाह खुसुरो देखेंगे तो शीरी से ब्याह कर लेंगे और फरहाद हमारे कब्जे मे आ जाएगा। लेकिन इसका अनुकूल परिणाम नही निकलता है। शीरी की याद मे फरहाद पागल होकर इधर-उधर भटकता है। शीरी को जब इस हाल का पता चलता है तो वह भी फरहाद से मिलने को बेचैन हो उठती है। गुलनार इससे और विक्षुब्ध हो जाती है और शाह खुसरो से सब हाल बता देती है। शाह यह सुनकर बहुत क्रोधित होते है और फरहाद को एक कुटनी द्वारा झूठी खबर सुना कर कि शीरी मर गयी, आत्महत्या करने पर बाध्य कर देते है। फरहाद के मरने की खबर सुनकर शीरी उसकी कब्र के पास जाती है। फरहाद की कब्र फट जाती है और शीरी उसी मे समा जाती है।

शीरी-फरहाद (सन् १९३९, पृ० ६८), *ले० :* तुलसी राम 'प्रेमी'; *प्र० :* एन० एस० शर्मा गौड़ बुक डिपो, श्याम प्रेस, हाथरस, *पात्र :* पु० ५, स्त्री ४, *अक :* ३, *दृश्य :* ७, ८, १०।
घटना-स्थल : जंगल, झोंपड़ी, तूरान का महल, बाग शीरी, कोहसार।

यह एक दुखान्त नाटक है। फरहाद एक मूर्तिकार है जो स्वप्न मे देखी हुई अपनी प्रेमिका की मूर्ति का निर्माण करता है जिसे देखकर फारस का बादशाह खुसरो उस पर आसक्त हो जाता है। वजीर बादशाह पर यह रहस्योद्घाटन करता है कि यह शीरी शहजादी की मूर्ति है और शीरी और फरहाद एक-दूसरे पर आसक्त है। बादशाह ईर्ष्यावश फरहाद की हत्या का आदेश देता है। लेकिन वजीर की चतुराई से फरहाद जीवित बच जाता है। इसका रहस्य तब खुलता है जब शीरी बादशाह को एक ही चट्टान को तराश कर बनाये गये महल मे रहने के लिए बाध्य करती है। उस समय फरहाद इस कार्य के लिए नियुक्त किया जाता है। फिर शीरी तथा फरहाद एक दूसरे के प्रेम मे विलीन होकर भाग जाते है। बादशाह उनको गिरफ्तार कर अनेक यातनाएँ देता है फिर भी उनका प्रेम अचल रहता है। राज्य से निष्कासित फरहाद अपने मित्र शतानन्द की सहायता से पुन शीरी के पास पहुँच जाता है फिर दोनो भाग जाते है। शतानन्द मृत्यु-दण्ड स्वीकार करता है लेकिन अपने मित्र फरहाद का पता नही बताता। अन्त मे शीरी और फरहाद अचानक जुदा हो जाते है और फरहाद शीरी की याद मे तड़पता हुआ मर जाता है

शीरी भी अपने प्यारे फरहाद के विरह मे व्याकुल हो छुरा मारकर आत्महत्या करके प्रेमी और प्रेमिका के सच्चे प्रेम की झाँकी दुनिया को दिखा देती है।

शीरी-फरहाद (सन् १९२० के आसपास पृ० ८०), ले० : कुल भास्कर वर्मा, प्र० : सर्व हितैषी व्यापार मण्डल, दरीबा कलां, देहली ; *पात्र* . पु० ५, स्त्री २ ; *अक* . ३ ; *दृश्य* . ११, ६, ७ ।
घटना-स्थल : झोपडी, जंगल, मार्ग, शीरी का बाग, कोहसार, कब्र ।

यह दुखान्त नाटक शीरी-फरहाद की प्रेमगाथा को गद्य-पद्य के माध्यम से प्रस्तुत करता है । पद्य नाटक की आधारभूमि चिरपरिचित 'शीरी-फरहाद' की अमर प्रणय-गाथा है। नाटक मे दिखाया गया है कि किस प्रकार शीरी से प्रेम करनेवाला फरहाद अन्त मे मृत्यु को प्राप्त होता है। शीरी भी उसकी कब्र पर जाकर अपनी इहलीला समाप्त कर देती है । इस प्रकार करुणा के वातावरण मे नाटक समाप्त होता है ।

शील सावित्री नाटक (वि० १९५४, पृ० ९६), ले० . कन्हैयालाल भरतपुरी, प्र० : खेमराज श्री कृष्णदास, बम्बई; *पात्र* . पु० ६, स्त्री ४; *अक* ५ ; गर्भांक : २, २, २, १, १ ।
घटना-स्थल : राज्य-भवन, वृक्ष-छाया ।

इस पौराणिक नाटक मे सावित्री के पातिव्रत का प्रभाव दिखाया गया है ।

नाटक का प्रारम्भ नादी और प्रस्तावना से होता है। भद्र देश के राजा अश्वपति की कन्या सावित्री शाल्व देश के राजकुमार सत्यवान को वर रूप मे वरण करती है। नारद राजसभा मे उपस्थित होकर कहते है 'आज के दिवस से एक सम्वत्सर व्यतीत हुए वह राजकुल-भूषण इस असार संसार को त्याग अपने पदपकज से स्वर्ग को पवित्र करेगा।' अत. सावित्री के पिता पुत्री से दूसरा वर वरण करने का आग्रह करते है पर सावित्री कहती है 'यदि अग्नि मे कमल उत्पन्न हो और जल मे अग्नि प्रज्वलित हो जाय तो भी सावित्री सत्यवान को छोड दूसरा पति अंगीकार न करेगी।' एक वर्ष के उपरान्त यमराज सत्यवान का प्राण ले लेता है किन्तु सावित्री के तप और शील से प्रसन्न होकर वह सत्यवान को प्राणदान देता है। यमराज और सावित्री का वार्तालाप चौथे अक मे बहुत ही हृदयद्रावक है ।

शाल्व देश का प्रधान तथा गौतम आदि ऋषि अरण्य प्रदेश से सावित्री-सत्यवान को अपने राज्य मे लौटने का आग्रह करते है। अन्त मे राजा और रानी सुखपूर्वक राज्य करते हैं।

शुक्रिया (सन् १९६२, पृ० ७२), ले० जगदीश शर्मा; प्र० देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; *पात्र :* पु० ६, स्त्री १; *अक :* २, *दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल · एक मकान ।

इस सामाजिक नाटक में एक कलाकार भारती के असफल प्रेम का दुखान्त चित्रण किया गया है । भारती अपने मित्र नौकर सौनी के साथ शान्ति नामक एक कुमारी के मकान मे रहते हैं। वह भारती की कला से प्रभावित होकर शादी का वचन देती है । भारती निश्चित समय पर परिणय के लिये प्रस्थान करना चाहते है किन्तु उसी समय शान्ति स्वयं आकर मना कर जाती है। शान्ति देवी के प्रति अजय का भी आकर्षण है। किन्तु उसकी बेवफाई के कारण वह उसे फटकारता है। भारती प्रेमोन्माद मे पागल, शराबी अधे तथा लगडे हो जाते हैं। शान्ति किशोर नामक धनी व्यक्ति से शादी कर लेती है। किशोर भारती को घर ले जाते है। किन्तु शान्ति देवी उससे परेशान रहने लगती है और भारती को चाय के साथ विष पिलाना चाहती है । भारती उसी के घर पर प्राण त्याग देता है और शान्ति की मक्कारी का परदा-फाश करता है।

नाटक कला कीर्ति सगम द्वारा १९६३ मे अभिनीत हो चुका है।

शुतुरमुर्ग (सन् १९६८, पृ० ७३), ले० · ज्ञानदेव अग्निहोत्री, प्र० भारतीय ज्ञान-पीठ प्रकाशन, वाराणसी, पात्र . पु० ७, स्त्री ४ , अक . १; दृश्य १।
घटना-स्थल महल का कक्ष।

इस प्रतीकात्मक नाटक मे "वैयक्तिक स्वतन्त्रता" और "राजा के दायित्व" जैसे ज्वलन्त प्रश्नो को उठाया गया है।

सूत्रधार के द्वारा नाटक का प्रारम्भ होता है। वह कथ्य को व्यजित करता हुआ नाटक का प्रारम्भ करता है। इसमे ऐसे राजा की कहानी है जो सत्य से आतकित होकर बाह्य विपत्ति से बचने के लिए 'शुतुर मुर्ग' की तरह मिथ्या आश्रय ग्रहण करता है। वह सत्य की आवाज बन्द करना चाहता है। लेकिन विरोधीलाल जैसे युवक, राजा के मिथ्या बचाव को सहन नही कर पाते। राजा नीतिपूर्वक विरोधीलाल जैसो को अपने पक्ष मे कर प्रजा को दिशाहीन करना चाहता है। लेकिन प्रजा का विद्रोह भडक उठता है—मामूलीराम जैसे व्यक्ति सचेत हो उठते है। इस चिन्त्य स्थिति मे राजा बाह्य युद्ध की घोषणा कर प्रजा से अपेक्षा करता है कि वह युद्ध का मुकाबला करे परन्तु राष्ट्र उन्हे कष्ट, आँसू और पीडा के अलावा और कुछ भी देने का वचन नही देता। लेकिन यह धोखा अधिक देर तक स्थायी नही रह पाता और राजा स्वीकार कर लेता है कि 'शुतुरमुर्ग' का कभी अस्तित्व ही नही था।

इसमे शुतुरमुर्ग को अध आत्मविनाश की वृत्ति का प्रतीक बनाकर समसामयिक राजनीतिक स्थितियो पर कटु व्यग्य किया गया है। प्रतीकात्मक पात्र, प्रतीकात्मक संवाद और प्रतीकात्मक दृश्य-बन्ध है।

अभिनय श्मामानन्द जालान ने इसे 'अपनी निजी पद्धति' मे सत्यदेव दुबे ने 'यथार्थ-वादी शैली' और स्वय लेखक ने 'फार्स शैली' मे रगमच पर प्रस्तुत किया है।

शेखर (सन् १९५०, पृ० ९९), ले० : देवदत्त 'अटल'; प्र० सूरज बलराम साहनी, एक्सप्लेनेड रोड, दिल्ली; पात्र · पु० १६, स्त्री ५; अक ५; दृश्य : ३, ४, ४, ४,४।
घटना-स्थल कानपुर, कारागार, इलाहाबाद का अल्फ्रेड पार्क।

यह एक राजनीति प्रधान ऐतिहासिक नाटक है जिसमे क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर के बलिदान मय जीवन की झाकी प्रस्तुत की गई है। क्रान्ति-कारी विनाश मे विकास सोचते हैं, तथा क्रान्ति की ज्वाला मे शीतलता का आभास पाते है। चन्द्रशेखर अपने क्रान्तिकारी साथी सनेह, सरन, शिवमूर्ति आदि के साथ महलो के सुखो को त्याग कर झोपडियो मे रहना पसन्द करते है, तथा ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते है, जिसमे मानव मानव का शोषण न करे। सबको जीवन-यापन के साधन उपलब्ध हो। पुलिस इनका पीछा करती है। कई बार इनकी कार्यकुशलता से इनको पकडने मे असफल रहती है। शेखर जगह-जगह पर अग्रेजो के अत्याचारो के खिलाफ सभाएँ करते तथा जलूस निकालते है। अन्त मे उनके क्रान्तिकारी साथी शरीफ तथा सरन गिरफ्तार हो जाते है। शरीफ को फांसी की सजा दी जाती है तथा इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क मे पुलिस पर गोलियाँ चलाते हुए शेखर भी मातृभूमि की बलिवेदी पर सदा के लिए सो जाते है।

शेरशाह (सन् १९५०, पृ० १७८), ले० : गोविन्ददास सेठ, प्र० प्रगति प्रकाशन, दिल्ली, पात्र पु० ७, स्त्री २, अक . ५; दृश्य : ५, ८, ८, ७, ६।
घटना-स्थल . चुनार, युद्धभूमि, सहसराम मे शेरशाह का भवन।

इस ऐतिहासिक नाटक मे हिन्दू और भारतीय मुस्लिम के सम्मिलित उद्योग द्वारा विदेशी मुगल-आक्रमण से भारत-मुक्ति का प्रयास दिखाया गया है।

नाटक का नायक शेरशाह अपने मित्र ब्रह्मादित्य गौड़ के साथ मिलकर मुगल-

आक्रमण का विरोध करता है। बाबर की मृत्यु के उपरान्त वह हुमायू को आगरा-दिल्ली का सिहासन छोडने के लिए बाध्य करता है। शेरशाह राजनीतिक सफलता से बादशाह तो बन जाता है पर युद्ध मे अत्यन्त व्यस्त रहने के कारण वह पारिवारिक सुख से वचित रह जाता है। चुनार के सूबेदार ताजखा का विवाह एक परम सुन्दरी महिला लाडबानू के साथ होता है। ताजखा के पास चुनार मे अतुल सम्पत्ति है। उस सम्पत्ति का देश-हित मे उपयोग करने के लिए शेरशाह ताजखाँ का वध करवाता है और सम्पत्ति अधिकारिणी लाडबानू से विवाह कर लेता है। राजनीतिक समस्याओ मे उलझे शेरशाह से पूर्ण प्रेम न पाने पर लाडबानू अपने देवर निजाम से प्यार करने लगती है। इस नाटक मे शेरशाह की युद्ध कथाओ के साथ निजाम और लाडबानू की प्यार-कथा जोड दी गई है। तीसरी कथा हुमायूं के पारिवारिक और राजनीतिक जीवन की है। हुमायूं की राजनीतिक भूलो और दुर्बलताओ के सम्मुख शेरशाह की राजनीतिक पटुता और दृढता को स्पष्ट किया गया है।

शेरशाह (सन् १९०० के आसपास, पृ० ७१), ले० · रमाकान्त; प्र० श्री गगा पुस्तक मन्दिर, खजाची रोड, पटना, *पात्र :* पु० ११, स्त्री २; *अक* · ३, *दृश्य* ३, ३, ४।
घटना-स्थल सहसराम का दुर्ग, दिल्ली, आगरा दुर्ग, युद्ध भूमि, मार्ग।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। प्रथम अंक मे नायक शेरशाह के प्रारम्भिक कष्ट के दिन तथा बिहार मे घर से निर्वासित होकर बहार खॉ के यहाँ नौकरी करते दिखाया गया है। वह बहार खा के साथ शिकार मे जाता है। वहाँ वह शेर को मार कर शेर खाँ की पदवी पाता है और बहार खॉ के मरने पर स्वय बडी चालाकी से जागीर हस्तगत कर लेता है।

हुमायूँ अपने सिपहसलार बैरम खाँ के साथ शेरशाह की शक्ति को कुचलने की इच्छा से उसके राज्य पर आक्रमण कर देते है। चुनार का किला छिनते देख शेरशाह हुमायूँ से सन्धि कर अधीनता स्वीकार कर लेता है। हुमायूँ गौड विजय कर आनन्दोत्सव के समय शराब मे मस्त हो जाता है। शेरशाह गौड से लौटते समय हुमायूँ पर आक्रमण कर उसे भगाता है और दिल्ली पर अधिकार कर लेता है।

वह राज्य विस्तार के लिये सैन्य-सगठन करता है। राज-प्रबन्ध और प्रजा-कल्याण के कार्य मे सलग्न रहता है। एक दिन बारूद-खाने का निरीक्षण करते समय आग लगने से शेरशाह परलोकगामी होता है।

शेरशाह सूरी (सन् १९६२, पृ० ४०), ले० · परिपूर्णानन्द वर्मा, *पात्र* · पु० १०, स्त्री २; *अक* ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल सहसराम मे शेरशाह सूरी का आलीशान महल, लडाई का शिविर, शेरशाह का सहसराम वाला तालाब के भीतर बना राजभवन।

इस ऐतिहासिक नाटक मे शेरशाह सूरी और उसके पुत्र सलीमशाह सूरी के कार्यो पर प्रकाश डाला गया है और इसमे वीरतापूर्ण कार्यो द्वारा न्याय एव अन्याय का भी उदाहरण पेश किया गया है। स्वय सलीम की गलती पर उसे उसका पिता दण्ड देता है। इस प्रकार शेरशाह सूरी को वीर देशभक्त, न्याय प्रिय शासक सिद्ध किया गया है।

शैला (सन् १९५७, पृ० ७९), ले० भैरूलाल व्यास, प्र० हिन्दी साहित्य समिति, बेलगाम, *पात्र* पु० ५, स्त्री ३, *अक* · २, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल · अनुसंधानशाला, औषधि की दुकान।

इस समस्या नाटक मे नारी की सामाजिक स्थिति, भारतीय समाज मे विदेशीपन के प्रति मोह, अनमेल विवाह आदि समस्याओ को उठाया गया है। विनोद नामक

डॉक्टर अपने अनुसधान के बल पर क्षयरोग से मुक्ति दिलाने के लिए नवीन औषधि का निर्माण करके ढाई वर्षो के पश्चात् घर लौटता है। घर पर अपनी पत्नी शशि और उसकी सखी शैला से उसकी भेट होती है। गुलजारी नामक व्यापारी विनोद की पत्नी शशि के माध्यम से नवीन औषधि का व्यापार-अधिकार प्राप्त करता है और अपने काले व्यापार से देश, समाज तथा मानव तीनो के प्रति द्रोह ही करता है। शशि गुलजारी के चगुल से निकलकर विनोद से क्षमा-याचना करती है "आदमी का क्या बुरा? परिस्थितियाँ उसे बनाती है, बिगाडती है।" विनोद अपनी पत्नी की चिन्ता किए बिना पुलिस को सूचना दे देता है और गुलजारी को पुलिस पकड लेती है तथा शशि प्रायश्चित्त करती है कि लोभ मे आकर उसने देश, समाज और मानव के धर्म को भुला दिया।

शोला और तूफान (सन् १९६४, पृ० १०२), ले० . सतीश डे, प्र० देहाती पुस्तक भंडार, चावडी बाजार, दिल्ली ; *पात्र : पु० ७, स्त्री ३, दृश्य ३, अक-रहित।*
घटना-स्थल बालीगज कलकत्ता मे रवीन्द्र-नाथ जी का सजा सजाया ड्राइगरूम।

मच पर आकर प्रधान, आचार्य मुकुन्द कान्ति घोप को *समाज* की उन्नति के लिए कुछ शब्द कहने की प्रार्थना करते है। आचार्य घोप समाज की उन्नति के लिए विधवा-विवाह की वकालत करते हुए एक परिवार की कहानी सुनाते है कि दुल्हन के हाथो की सुर्ख मेहदी सूखी भी नही थी कि उसका पति हत्या-काण्ड मे जेल गया और उसे फाँसी हो गई। उस विधवा का विवाह उसके देवर से करा दिया गया लेकिन वह बुजदिल युवक भाग गया। इतना कहना था कि दर्शको के पीछे कुर्सी पर बैठा एक साधु इसे सरासर झूठ बतलाते हुए मच पर आ गया और उसने अपना परिचय देते हुए बतलाया कि मैं ही सुशीलकुमार दत्ता हूँ और वह जनता को सच्ची घटना बतलाने लगा।

"बाबू रवीन्द्रनाथ जी का परिवार कलकत्ता मे एक ऊँचा घराना था। धन-सम्पत्ति के रहते हुए भी रवीन्द्र तथा उनकी पत्नी मृदुला का स्वभाव मिलता नही था। वे दोनो छोटी-छोटी बातो पर लड जाते थे। इसमे घर की सुख-शान्ति खत्म हो गई और बच्चे भी बिगड गये। रवीन्द्र के पुत्र आशिम की शादी शिवानी से हुई और वे दोनो एक दूसरे को बेहद प्यार करते थे। शिवानी शिक्षित, सुसंस्कृत एव चरित्रवान स्त्री थी। वह इस बिगड़े परिवार को प्रेम, धैर्य से सुधारने का प्रयत्न करने लगी। विवाहिता सावित्री अपनी मा मृदुला की सह पाकर अपनी ससुराल नही जाती। वह सिगरेट पीती और खलनायक सुरेश के साथ अंग्रेजी डांस करती, क्लबों मे शराब पीकर मदहोश हो जाती। सत्यवान अपनी शास्त्रानुसार विवाहिता स्त्री को अपने घर ले जाने के लिए आता लेकिन सावित्री उसे बेवकूफ बनाकर लौटा देती। आशिम और शिवानी सावित्री को बहुत समझाते है लेकिन वह अपनी बुरी आदतो से बाज नही आती। एक युवक सुशील इग्लैंड मे १६ मैच जीतकर घर लौटने वाला है और शिवानी उसके स्वागत की तैयारी करने लगती है। आशिम अपनी पिस्तौल लेकर सुशील का स्वागत करने हवाई अड्डा जाता है। लेकिन सुशील अकेले ही घर आता है और भाभी के मातृतुल्य पवित्र प्रेम से अभिभूत हो उठता है। इसी बीच सावित्री और सुरेश शराब की मदहोशी मे घर आते है और प्रेमालाप करने लगते हैं। उनके पीछे आशिम पिस्तौल लिये आता है और घर की इज्जत लुटते देख सुरेश को गोली मार देता है और पुलिस को आत्म-समर्पण कर देता है। आशिम को फाँसी लग जाती है। सुशील अपनी भाभी को जीवित रखने के लिये उसे अपने साथ घुमाने ले जाता है और हर तरह से उस की देखभाल करने लगता है लेकिन सावित्री अपने मा-बाप के कान भर देती है। सत्यवान चालाकी से सावित्री को घर ले जाता है। इधर रवीन्द्रनाथ और मृदुला परिवार की इज्जत को खतरे मे देखकर आचार्य से सलाह

नष्ट करना चाहता है भकाऊँ, चिथरू, शान्ति देवी को वहाँ पहुँचाने मे मदद देने के बदले भौचक से रुपया माँगते है। आपस मे झगडा होता है। थानेदार सिपाहियो के साथ पहुँच जाते है। गुडे सिपाहियो को छुरा भौक कर मार डालते है। थानेदार शान्ति के साथ अत्याचार करना चाहता है। तब तक झाडी मे से एक साँप निकलकर उसे काट लेता है। शान्ति आत्महत्या को तैयार होती है तब तक देवीदास पहुँच जाता है।

श्री काशी विश्वनाथ (सन् १९०१, पृ० १२०), ले० वासुदेव पाण्डे; प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी ; पात्र : पु० २७, स्त्री ८, अक ३, सीन . ८, ८, ५। *घटना-स्थल* : विश्वनाथ मन्दिर, काशी करवट, गगातट।

इस धार्मिक नाटक मे काशी के बाबा विश्वनाथ तथा माँ अन्नपूर्णा के दर्शनार्थ आने वाले यात्रियो की दुर्दशा दिखाई गई है।

ग्रामीण यात्रियो का दल बाबा विश्वनाथ का दर्शन करने आता है। वहाँ नवयुवती स्त्रियो को बहकाकर गुडे पडे बेच देते है। अशिक्षित एव भोले-भाले ग्रामीणो को धर्म और दान-पुण्य के नाम पर मनमाना करने वाले पण्डो का वीभत्स दृश्य इसमे दिखाया गया है। झूठ, धोखा, ढोग, प्रपंच के द्वारा पण्डे यात्रियो को ठगते हैं।

श्री कृष्ण अवतार (श्री कृष्ण चरित्र का पहला भाग) (सन् १९३२, पृ० १९१), ले० राधेश्याम कथावाचक, प्र० राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, *पात्र* . पु० १६, स्त्री ६, अक ३, *दृश्य* . ८, ७, ७। *घटना-स्थल* गोकुल, मथुरा।

इस पौराणिक नाटक मे कृष्ण-जन्म से लेकर उनके मथुरा जाने तक की कथा का समावेश है। गोपियो द्वारा प्रेम-प्रदर्शन एवं कृष्ण द्वारा रासलीला के अनेक रूपो का वर्णन है।

पारसी थियेट्रिकल कम्पनियो द्वारा अनेक बार प्रदर्शन।

श्री कृष्ण नाटक (सन् १९५१, पृ० ६४), ले० चतुर्भुज एम० ए०, प्र० साधना मन्दिर, पटना, *पात्र* पु० ९, स्त्री २; अक ; ३, *दृश्य* ४, ४, ६। *घटना-स्थल* . महल, युद्धभूमि, मन्दिर।

इस पौराणिक नाटक मे जरासन्ध कृष्ण युद्ध, कृष्ण कालयवन युद्ध, रुकमिणि हरण, जरासन्ध वध और शिशुपाल वध आदि प्रमुख घटनाये प्रदर्शित की गई है।

कस की रानी अस्ति कृष्ण से पति का प्रतिशोध लेने के लिये मगध नरेश जरासन्ध से प्रार्थना करती हैं। मगध नरेश अपने सेनापति, चन्देरी शिशुपाल को युद्ध अभियान की आज्ञा देता है। वह कृष्ण से सोलह बार पराजित होता है।

जरासन्ध अपने मित्र कालयवन को कृष्ण के विरुद्ध प्रेरित करता है। कालयवन अस्ति के प्रति आकर्षित होकर युद्ध-भूमि मे जाता है। कृष्ण नरसहार बचाने के लिये द्वारिका चले जाते है। कालयवन भीषण बर्बर अत्याचार कर अस्ति के वैधव्य को कलकित करने जाता है। भारतीय वीरागना अस्ति तलवार से उसे यमराज के घर पहुँचाकर आत्महत्या कर लेती है। इसी अक मे रुकमिणि हरण होता है।

पाण्डवो के राजसूय यज्ञ मे शिशुपाल कृष्ण के सम्मान का विरोध करता है और अन्त मे सुदर्शन चक्र द्वारा उसकी भी इहलीला समाप्त होती है। इसमे कृष्ण की दूरदर्शिता, प्रजारक्षण, कूटनीतिज्ञता, भक्तवत्सलता आदि का महत्त्व प्रतिपादित किया गया है।

नाटक का अभिनय सर्वप्रथम दिनाक १७-२-५१ को वीणा-पाणि-अर्चना के अवसर पर 'मगध कलाकार' द्वारा बख्तियारपुर के रगमच पर श्री चतुर्भुज (लेखक) के निर्देशन मे हुआ।

श्रीकृष्ण कथा वा कंस-विध्वंस नाटक (वि०

१९६६), ले० : वनवारी लाल; प्र० । वनवारीलाल द्वारा प्रकाशित, मुजफ्फरपुर ; पात्र : पु० ११, स्त्री ६; अक : ५; गर्भाक: १, १, २, ४, १ ।
घटना-स्थल : सभामंडप, कृष्ण की बाल-सभा ।

इस पौराणिक नाटक मे कृष्णजन्म से लेकर कस-विध्वस तक की कथा श्रीमद्-भागवत के आधार पर प्रदर्शित है। इसमें कृष्ण की वाललीला, गोपियो के साथ रास और मथुरागमन के समय गोपियो का विरह वर्णित है।

श्री कृष्ण केलिमाला (सन् १७८८ के आस-पास, पृ० ७६), ले० नदीपति; प्र० . अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, इलाहा-वाद, पात्र : पु०, ८, स्त्री ८, अक : ४ ; दृश्य-रहित ।
घटना-स्थल : व्रज, यमुनातट ।

इस पौराणिक नाटक मे कृष्ण-जीवन की प्रमुख घटना, राधा-प्रेम और रासलीला का वर्णन है।

देवकी के आठवें गर्भ से उत्पन्न होने वाले, नन्द-यशोदा-परिपालित, कंस केशि-मुष्टिक-चाणूर कुवलयपीड, रजक, अक्रूर आदि को तारने वाले कृष्ण और सखी सहित राधिका का प्रवेश होता है। गर्भ से उत्पन्न पयपान करने वाले शिशुरूप कृष्ण की जन्म-कथा का परिचय मिलता है। घोर वर्षा के मध्य वसुदेव कृष्ण को यमुना पार उतार कर वल्लवपुर पहुँचाते है और यशो-मति-मुता को लेकर पुन मथुरा के वन्दीगृह मे प्रवेश करके देवकी को सान्त्वना देते है। असुर कस देवकीगृह मे आकर चारो ओर देखता है। उमी समय नारद का प्रवेश होता है जिन्हे प्रणाम करके कंस वैठने को आसन देता है। कंस कन्या को पापाणशिला पर पटक कर मारना चाहता है पर वह देवी आकाश मे उडकर कस को जो सन्देश देती है वह नटी गाकर (भापागीत मे) सुनाती है कि हे कस यदुनाथ कृष्ण ने अवतार लिया है। वह दानव-वृन्द को जीतेंगे। कंस अपने वल का गर्व करते हुए स्वगृह को प्रस्थान-करता है। कभी कृष्ण को टोना लग जाता है, कभी वे सर्प के समान पृथ्वी पर लेटकर चलने लगते है तो नन्द और यशोदा के मन मे विभिन्न भाव उत्पन्न होते है।

कंस के आदेश से पूतना कृष्ण को पयपान के वहाने विषपान कराती है पर कृष्ण दोनो हाथो से पयोधर पकडकर इतने जोर से पयपान करते है कि उसका प्राण धारण करना कठिन हो जाता है। पूतना का विलाप सुनकर नन्द-यशोदा कृष्ण के पास पहुँच जाते है और पूतना से कृष्ण की रक्षा का दृश्य देख सहस्र गोदान का संकल्प कर ब्राह्मणो मे वितरित करते है। तदुपरान्त यमलार्जुन की घटना का नाटकीय दृश्य उपस्थित होता है। इस घटना के उप-रान्त राधिका जी यशोदा के पास आकर निवेदनकरती है कि तुम्हारा बेटा यमुना पथ पर वन से वाहर होते ही मेरा आंचल पकड़ लेता है। यदि आपको विश्वास न हो तो मेरी सखियो से पूछ लो। राधिका जी पूतना-वध, यमलार्जुन-उद्धार का उल्लेख करती हुई यशोदा को विश्वास दिलाती है कि आप का पुत्र असाधारण शक्ति-सम्पन्न है। यह कह कर वह अपने घर चली जाती है।

यशोदा जी एक दिन कृष्ण को मिट्टी खाते देख लेती है। माता के आग्रह पर कृष्ण मुख खोलते है तो उसमे सूर्य-चन्द्रमा, सात-समुद्र, महादेव, चौदहो भुवन और आकाश दिखाई पडते है। यह विचित्र दृश्य देखकर माता भयभीत हो जाती है और यही प्रथम अक समाप्त हो जाता है।

राधिका के गीत के उपरान्त श्रीकृष्ण उन्हे एक हार प्रदान करते है जिसे राधिका अपने कठ मे धारण करती है। राधा अपने गृह को हँसती-रोती लौटती हैं। उसके पिता वृषभानु यह देखकर चिन्तित होते है और उनकी (राधा) माता कलावती एक गीत के माध्यम से राधा को भूत लगने की आशका करता है। वृषभानु राधिका के समीप जाकर क्रोध भाव से पूछते हैं, 'यह

तेरी क्या दशा है ? तुझे क्या हो गया है ? राधिका आँख खोलकर पिता का मुख निहारती है। राधा की माता कलावती भी दशा देखकर बाहर चली जाती है। इसी समय कृष्ण को राधा की दशा का पता चलता है। जभी कृष्ण राधिका के पास तान्त्रिकवेश मे पहुँचते है, वह चीत्कार करके मूर्छित हो जाती है। श्री कृष्ण उसे उठाकर कहते हैं 'राधे चेतन हो जाओ।' राधा चैतन्य होकर इस टोने का कारण अपने माँ-बाप को बताती है। कृष्ण की महिमा जानकर कलावती और वृषभानु को शान्ति मिलती है।

इसी समय उसकी सखी विशालाक्षी का पत्र लेकर पत्र-वाहक प्रविष्ट होता है। राधा नारी-जन्म की असारता पर रोदन करते हुए कहती है—"इस युवावस्था मे प्रथम चरण मे ही विरह दुख और काम का कठिन सन्ताप भोगना पडा। विरह गीत गाते-गाते राधा मूर्छित हो जाती हैं। विशालाक्षी और कामाक्षी वहाँ उपस्थित हो जाती हैं। श्री कृष्ण राधिका को उठाकर अपना अपराध स्वीकार करते हैं। यहाँ राधा, उनकी सखियो और कृष्ण का तर्क पूर्ण वार्तालाप सुनाई पड़ता है। सखियो के चले जाने पर राधा श्री कृष्ण के पास जाकर निवेदन करती है कि आप निष्ठुर न बनें। मेरे ऊपर करुणा करे। यदि आप मेरी उपेक्षा करेंगे तो मुझे मृतक ही पायेंगे। चतुर्थ अंक में गोपियो के साथ कृष्ण के रास का एक गीत है और कृष्ण राधा से कहते हैं कि सोलह सहस्र गोपियो मे एक मात्र तुम्ही विलासवती हो। अत. लज्जा क्यो करती हो। कृष्ण रास-विलास के उपरान्त अपने भवन को प्रस्थान करते है।

श्रीकृष्ण चरित्र (तीसरा भाग) अथवा द्रोपदी स्वयंवर (सन् १९३०, पृ० १४२) प्र० . राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली ; पात्र : पु० २८, स्त्री ८।
घटना-स्थल : स्वयंवर सभा।

इस पौराणिक नाटक मे प्रजा का राजा पर अधिकार दिखाने का प्रयत्न है। इस पारसी नाटक मे द्रोपदी-स्वयंवर के अवसर पर अनेक राजा उपस्थित हैं। शकुनि राजा के अधिकारो पर बल देता है। तब उसका उत्तर देते हुए विदुर गणतन्त्र की विचार-धारा का विश्लेषण करते हैं और उपस्थित राज-मंडली को समझाते हैं कि राजा का प्रजा पर अधिकार तभी सम्भव है जब वह प्रजा के कष्टो का भार अपने ऊपर लेकर उनके निवारण का प्रयत्न करे। विदुर कहते हैं–

"लेकिन प्रजा का भी तो कुछ राजा के ऊपर भार है।
राजा वही बनता प्रजा करती जिसे स्वीकार है।"

गाधीवादी प्रभाव से प्रजा मे जागृति लाने के उद्देश्य से यह नाटक लिखा गया।

इसका अभिनय न्यू अल्फ्रेड नाटक मडली ने सन् १९३० मे किया।

श्रीकृष्ण-जन्म नाटक (सन् १९३३, पृ० ६८), ले० . भारतसिंह; यादवाचार्य; यादव कार्यालय, बनारस, पात्र पु० ९, स्त्री ५; अक · ३; दृश्य ६, ५, ५।
घटना-स्थल · कंस का दरबार।

इस पौराणिक नाटक मे श्री कृष्ण की जन्म कालीन घटना को नाटक रूप मे प्रस्तुत किया गया है। इसमे प्राचीनकाल के यादववश के बल एव ऐश्वर्य का वर्णन है। कृष्ण युग मे भी 'पादरी' एव मुसलमानो की नाटक तथा अन्य कलाक्षेत्रो मे रुचि दिखाई गई है। विभिन्न धर्मावलम्बी अपने धर्म का वर्णन अतिशयोक्ति रूप मे करते हैं। परन्तु उन सब मे हिन्दू धर्म को सर्वोच्च स्थान दिया गया है।

श्रीकृष्ण सुदामा (वि० १९८९, पृ० १०८), ले० : हरिनाथ व्यास, प्र०: बाबू बैजनाथ प्रसाद, बुकसेलर, राजा दरवाजा, बनारस; *पात्र* : पु० १०, स्त्री ७ ; *अंक* . ३; *दृश्य* . ८, ८, ४।
घटना-स्थल : सुदामा का कुटीर, राजभवन का द्वार।

१९६६), ले० : बनवारी लाल; प्र० : बनवारीलाल द्वारा प्रकाशित, मुजफ्फरपुर ; पात्र : पु० ११, स्त्री ६, अक : ५; गर्भांक: १, १, २, ४, १।
घटना-स्थल : सभामंडप, कृष्ण की बाल-सभा।

इस पौराणिक नाटक मे कृष्णजन्म से लेकर कस-विध्वस तक की कथा श्रीमद्-भागवत के आधार पर प्रदर्शित है। इसमें कृष्ण की बाललीला, गोपियो के साथ रास और मथुरागमन के समय गोपियो का विरह वर्णित है।

श्री कृष्ण केलिमाला (सन् १७८८ के आस-पास, पृ० ७६), ले० नदीपति; प्र० . अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, इलाहाबाद, पात्र : पु०, ८, स्त्री ८; अक : ४ ; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : ब्रज, यमुनातट।

इस पौराणिक नाटक मे कृष्ण-जीवन की प्रमुख घटना, राधा-प्रेम और रासलीला का वर्णन है।

देवकी के आठवें गर्भ से उत्पन्न होने वाले, नन्द-यशोदा-परिपालित, कस केशि-मुष्टिक-चाणूर कुवलयपीड, रजक, अक्रूर आदि को तारने वाले कृष्ण और सखी सहित राधिका का प्रवेश होता है। गर्भ से उत्पन्न पयपान करने वाले शिशुरूप कृष्ण की जन्म-कथा का परिचय मिलता है। घोर वर्षा के मध्य वसुदेव कृष्ण को यमुना पार उतार कर वल्लवपुर पहुँचाते है और यशोमति-सुता को लेकर पुन· मथुरा के बन्दीगृह मे प्रवेश करके देवकी को सान्त्वना देते है। असुर कस देवकीगृह मे आकर चारो ओर देखता है। उसी समय नारद का प्रवेश होता है जिन्हे प्रणाम करके कंस बैठने को आसन देता है। कस कन्या को पाषाणशिला पर पटक कर मारना चाहता है पर वह देवी आकाश मे उडकर कस को जो सन्देश देती है वह नटी गाकर (भाषागीत मे) सुनाती है कि हे कस यदुनाथ कृष्ण ने अवतार लिया है। वह दानव-वृन्द को जीतेंगे। कंस अपने बल का गर्व करते हुए स्वगृह को प्रस्थान करता है। कभी कृष्ण को टोना लग जाता है, कभी वे सर्प के समान पृथ्वी पर लेटकर चलने लगते है तो नन्द और यशोदा के मन में विभिन्न भाव उत्पन्न होते है।

कंस के आदेश से पूतना कृष्ण को पयपान के बहाने विषपान कराती है पर कृष्ण दोनो हाथो से पयोधर पकडकर इतने जोर से पयपान करते है कि उसका प्राण धारण करना कठिन हो जाता है। पूतना का विलाप सुनकर नन्द-यशोदा कृष्ण के पास पहुँच जाते है और पूतना से कृष्ण की रक्षा का दृश्य देख सहस्र गोदान का सकल्प कर ब्राह्मणों मे वितरित करते है। तदुपरान्त यमलार्जुन की घटना का नाटकीय दृश्य उपस्थित होता है। इस घटना के उपरान्त राधिका जी यशोदा के पास आकर निवेदनकरती है कि तुम्हारा बेटा यमुना पथ पर वन से बाहर होते ही मेरा आचल पकड लेता है। यदि आपको विश्वास न हो तो मेरी सखियो से पूछ लो। राधिका जी पूतना-वध, यमलार्जुन-उद्धार का उल्लेख करती हुई यशोदा को विश्वास दिलाती है कि आप का पुत्र असाधारण शक्ति-सम्पन्न है। यह कह कर वह अपने घर चली जाती है।

यशोदा जी एक दिन कृष्ण को मिट्टी खाते देख लेती है। माता के आग्रह पर कृष्ण मुख खोलते है तो उसमे सूर्य-चन्द्रमा, सात-समुद्र, महादेव, चौदहों भुवन और आकाश दिखाई पडते है। यह विचित्र दृश्य देखकर माता भयभीत हो जाती है और यही प्रथम अक समाप्त हो जाता है।

राधिका के गीत के उपरान्त श्रीकृष्ण उन्हे एक हार प्रदान करते है जिसे राधिका अपने कठ मे धारण करती है। राधा अपने गृह को हँसती-रोती लौटती है। उसके पिता वृषभानु यह देखकर चिन्तित होते है और उनकी (राधा) माता कलावती एक गीत के माध्यम से राधा को भूत लगने की आशका करता है। वृषभानु राधिका के समीप जाकर क्रोध भाव से पूछते हैं, 'यह

तेरी क्या दशा है ? तुझे क्या हो गया है ? राधिका आँख खोलकर पिता का मुख निहारती है। राधा की माता कलावती भी दशा देखकर बाहर चली जाती है। इसी समय कृष्ण को राधा की दशा का पता चलता है। जभी कृष्ण राधिका के पास तान्त्रिकवेश मे पहुँचते है, वह चीत्कार करके मूर्छित हो जाती है। श्री कृष्ण उसे उठाकर कहते हैं 'राधे चेतन हो जाओ।' राधा चैतन्य होकर इस टोने का कारण अपने माँ-वाप को बताती है। कृष्ण की महिमा जानकर कलावती और वृषभानु को शान्ति मिलती है।

इसी समय उसकी सखी विशालाक्षी का पत्र लेकर पत्र-वाहक प्रविष्ट होता है। राधा नारी-जन्म की असारता पर रोदन करते हुए कहती है—"इस युवावस्था मे प्रथम चरण मे ही विरह दुख और काम का कठिन सन्ताप भोगना पडा। विरह गीत गाते-गाते राधा मूर्छित हो जाती है। विशालाक्षी और कामाक्षी वहाँ उपस्थित हो जाती है। श्री कृष्ण राधिका को उठाकर अपना अपराध स्वीकार करते है। यहाँ राधा, उनकी सखियो और कृष्ण का तर्क पूर्ण वार्तालाप सुनाई पडता है। सखियो के चले जाने पर राधा श्री कृष्ण के पास जाकर निवेदन करती है कि आप निष्ठुर न बने। मेरे ऊपर करुणा करे। यदि आप मेरी उपेक्षा करेंगे तो मुझे मृतक ही पायेगे। चतुर्थ अंक मे गोपियो के साथ कृष्ण के रास का एक गीत है और कृष्ण राधा से कहते है कि सोलह सहस्र गोपियो मे एक मात्र तुम्ही विलासवती हो। अत लज्जा क्यो करती हो। कृष्ण रास-विलास के उपरान्त अपने भवन को प्रस्थान करते है।

श्रीकृष्ण चरित्र (तीसरा भाग) अथवा द्रोपदी स्वयवर (सन् १९३०, पृ०१४२) प्र० : राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली ; पात्र : पु० २८, स्त्री ८।
घटना-स्थल : स्वयंवर सभा।

इस पौराणिक नाटक मे प्रजा का राजा पर अधिकार दिखाने का प्रयत्न है। इस पारसी नाटक मे द्रोपदी-स्वयवर के अवसर पर अनेक राजा उपस्थित है। शकुनि राजा के अधिकारो पर बल देता है। तब उसका उत्तर देते हुए विदुर गणतन्त्र की विचारधारा का विश्लेपण करते है और उपस्थित राज-मंडली को समझाते है कि राजा का प्रजा पर अधिकार तभी सम्भव है जब वह प्रजा के कष्टो का भार अपने ऊपर लेकर उनके निवारण का प्रयत्न करे। विदुर कहते है—

"लेकिन प्रजा का भी तो कुछ राजा के ऊपर भार है।

राजा वही बनता प्रजा करती जिसे स्वीकार है।"

गाधीवादी प्रभाव से प्रजा मे जागृति लाने के उद्देश्य से यह नाटक लिखा गया।

इसका अभिनय न्यू अल्फ्रेड नाटक मडली ने सन् १९३० मे किया।

श्रीकृष्ण-जन्म नाटक (सन् १९३३, पृ० ६८), ले० . भारतसिह, यादवाचार्य; यादव कार्यालय, बनारस; पात्र : पु० ९, स्त्री ५, अक : ३; दृश्य ६, ५, ५।
घटना-स्थल : कंस का दरबार।

इस पौराणिक नाटक मे श्री कृष्ण की जन्म कालीन घटना को नाटक रूप मे प्रस्तुत किया गया है। इसमें प्राचीनकाल के यादववश के बल एवं ऐश्वर्य का वर्णन है। कृष्ण युग मे भी 'पादरी' एव मुसलमानो की नाटक तथा अन्य कलाक्षेत्रो मे रुचि दिखाई गई है। विभिन्न धर्मावलम्बी अपने धर्म का वर्णन अतिशयोक्ति रूप मे करते है। परन्तु उन सब मे हिन्दू धर्म को सर्वोच्च स्थान दिया गया है।

श्रीकृष्ण सुदामा (वि० १९८९, पृ० १०८), ले० : हरिनाथ व्यास, प्र० बाबू बैजनाथ प्रसाद, बुकसेलर, राजा दरवाजा, बनारस; पात्र . पु० १०, स्त्री ७ ; अक . ३; दृश्य : ८, ८, ४।
घटना-स्थल : सुदामा का कुटीर, मार्ग, राजभवन का द्वार।

प्रस्तुत नाटक कृष्ण और सुदामा की अपूर्व मैत्री को दर्शित करता है। नाटक मे दिखाया गया है कि किस प्रकार सुदामा सकुचाते हुए कृष्ण के यहाँ जाते है। कृष्ण उनका वहुत सत्कार करते है। तत्पश्चात् कृष्ण की माया से सुदामा की झोपड़ी महल मे वदल कर धनधान्य से पूर्ण हो जाती है। जब सुदामा घर लौटते है तो आश्चर्यचकित हो जाते है। पहले वे अपनी पत्नी के पातिव्रत पर शका करते है। किन्तु वास्तविक स्थिति से अवगत होने पर परममित्र कृष्ण की लीला जान गद्‌गद हो जाते है।

पारसी कपनी द्वारा अभिनीत।

श्री कृष्णावतार (सन् १९२९, पृ० १९१), लेे० : राधेश्याम कथावाचक; प्र० श्री राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, पात्र · पु० १७, स्त्री ६; *अक* ३, *दृश्य* ८, ८, ३। *घटना-स्थल*.. क्षीरसागर।

इस पौराणिक नाटक मे कृष्णावतार की कथाएँ वर्णित है। घोर अन्यायी कस के ..क से पृथ्वी थर्रा उठती है। कस अपनी ह.न और वहनोई को कारागार मे डाल देता है। देवकी के आठवे गर्भ से कृष्ण अवतार लेते है और प्रसगानुसार कृष्ण दुष्ट कस का वध करते है।

श्री छत्रपति शिवाजी (सन् १९२९, पृ० १७६), ले० · सवर्णसिह वर्मा 'आनन्द, प्र० शिवरामदास गुप्त, उपन्यास वहार आफिस, वनारस, *पात्र* पु० १३, स्त्री ४ ; *अक* · ३, *दृश्य* १०, ११, १६
घटना-स्थल . जगल, मार्ग, बीजापुर, रायगढ का पहाडी भाग।

यह एक वीररस प्रधान ऐतिहासिक नाटक है। इसमे छत्रपति वीर शिवाजी की वीरता का वर्णन है।

विशेप रूप से यह नाटक हिन्दू और मुसलमानो की एकता को दृढ करने के लिए लिखा गया है। वीजापुर के नवाव अली आदिलशाह से तानाजी के पुत्र सूर्याजी का रोषपूर्ण वार्तालाप दिखाया गया है। राष्ट्रीय भावना को जागृत करते हुए सूर्याजी कहते है—

"हर वक्त मुल्क के लिए
हम सर फरोश है।
इस पर भी अपनी जा
के कभी दाम न लेगे ।।
हँसते हुए हम मौत के हाथो मे जायेंगे।
लेकिन हम अपने मुल्क को तुमसे छुडायेंगे ।।

छत्रपति शिवाजी हिन्दू-मुस्लिम-ऐक्य के द्वारा देशोद्धार के लिए आजीवन प्रयत्न करते है।

श्री छद्म योगिनी नाटिका (वि० १९७९, पृ० ५८), ले० वियोगी हरि ; प्र० : साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग; *पात्र* . पु० ४, स्त्री ८, *अक* : ३, *दृश्य* . २, २, २। *घटना-स्थल* वरसाना ग्राम।

ब्रह्मा श्री कृष्ण से जिज्ञासा प्रकट करते है कि "गोपियो मे कौन सा परमतत्त्व धरा है कि आप उनके पीछे-पीछे दास की नाई घूमते है।" कृष्ण उत्तर देते है कि आज मैं छद्म से अपनी हृदयेश्वरी परम प्यारी राधिका की प्रेम-परीक्षा लेने जा रहा हूँ। छिपकर आप भी आज की लीला देख सकते है।"—ब्रह्मा भ्रमर बनकर वरसाने के उपवन मे पहुँचते है। श्री कृष्ण योगिनी के वेश मे एक शिला पर ध्यानावस्थित हो बैठ जाते है। ललिता, विशाखा, मजुभाविनी आदि उस योगिनी पर मुग्ध होकर चेली बनना चाहती है। सखियो की बात सुनकर श्री राधा को योगिनी के पास पहुँचाती है। योगिनी ज्ञान, विवेक, योगाभ्यास और मुक्ति की बाते करती है तो श्री राधा जी कहती है—"क्या योगाभ्यास से प्रेम स्वरूप वृन्दावन-बिहारी की प्राप्ति हो सकती है?" योगिनी वीणा वजाती है और राधा की समाधि लग जाती है। समाधि खुलने पर राधा वताती है कि उन्हे मोरपख धारण किये वनमाली का दर्शन हुआ है। ब्रह्मा यह लीला देखकर चकित रह जाते है और उनकी जिज्ञासा शान्त हो जाती है।

श्री सुदामा नाटक (वि० १९६१, पृ० ११), ले० राधाचरण गोस्वामी ; प्र० , खेमराज कृष्णदास, बम्बई ; *पात्र* पु० ५, स्त्री २, दृश्य ५, अक-रहित ।
घटना-स्थल कृष्ण भवन, सुदामा कुटी ।

इस पौराणिक नाटक मे कृष्ण-सुदामा की मैत्री दिखाई गई है । गद्य और पद्य दोनो का प्रयोग है । इस प्राचीन नाटक मे सवाद छोटे-छोटे है । सुदामा निर्धनता के कारण पत्नी सहित भूखे रहते है । वर्षा तथा आँधी से कुटिया मे दु ख झेलते हुए अपना जीवन व्यतीत करते है । सुदामा अपार दुख को सहते हुए भी अपने मित्र श्रीकृष्ण के पास मदद के लिए नही जाना चाहते किन्तु पत्नी के अनुरोध पर वे श्रीकृष्ण से मिलने जाते है । कृष्ण सुदामा का सादर आतिथ्य करते है तथा सुदामा द्वारा काँख मे दाबी हुई चावल की पोटली से एक मुट्ठी चावल खाते है । दूसरी मुट्ठी, पर रुक्मणी द्वारा रोक दिये जाते है । सुदामा कृष्ण के यहाँ से खाली हाथ उदास लौटते है पर घर आकर कुटिया के स्थान पर महल देख आश्चर्य चकित रह जाते है । कुटिया छिन जाने के विचार से चिन्तित पत्नी के विषय मे सोचते है । पत्नी को महल मे पाकर कृष्ण की माया समझ मे आती है । सुदामा कृष्ण की प्रभुता और महिमा के गीत गाते है ।

श्री निम्बार्क वितरण नाटक (वि० १९८९, पृ० १६८), ले० दानबिहारी लाल शर्मा ; प्र० . वैष्णव श्री रामचन्द्र दास, वृन्दावन, *पात्र :* पु० १४, स्त्री ५, *अक* · ३, *दृश्य* ८, ७, ६ ।
घटना-स्थल : वृन्दावन, कुटीर, आश्रम ।

इस धार्मिक नाटक मे आचार्य महाप्रभु निम्बार्क के चमत्कारी चरित्रो को प्रस्फुटित किया गया है । उनका जीवन भी भगवान् की भाँति द्वादश गुणो से ओत-प्रोत है । नाटक मे प्रहसन के रूप मे धर्मानन्द, उलूकानन्द आदि की सृष्टिकर गम्भीर विषय के वातावरण मे हास्य की छटा जोड़ दी गई है । शिकार करने वाले पाखण्डी धर्मात्माओ के श्रद्धालुओ का कुकृत्यो का यथार्थ चित्रण धर्मानन्द की शिष्य-मडली द्वारा हास्य के रूप मे मिलता है ।

श्री प्रद्युम्न विजय व्यायोग (सन् १८९३, पृ० ५९), ले० अयोध्यासिह उपाध्याय, प्र० भारत जीवन प्रेस, बनारस, *पात्र :* पु० १२, स्त्री नही, *अक-दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल युद्ध क्षेत्र ।

नादी पाठ के उपरान्त सूत्रधार और पारिपार्श्वक मे वार्तालाप होता है । सूत्रधार नाट्यकार का परिचय देते हुए उसके पूर्वजो के नाम और वश का उल्लेख करता है । धुन्नी उपाध्याय के कुल मे हरिऔध का जन्म होता है जिनके कनिष्ठ भ्राता गुरुसेवक सिह उपाध्याय है । हरिऔध विरचित श्री प्रद्युम्न विजय के खेलने की योजना बनती है । निकुभ-प्रेरित साठ सहस्र असुर कवच-कृपाण धारण कर, युद्धक्षेत्र मे आते है । उनसे युद्ध करने को श्याम शरीर वाले प्रद्युम्न धनुष धारण करते है । प्रद्युम्न और सारथी मे गद्य-पद्यमय भाषा मे वार्तालाप होता है । पात्रो के आगमन और उनकी वेश-भूषा का वर्णन भी छन्दबद्ध है । कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा की वीरता भरी मुखमुद्रा तथा उनकी वेशभूषा का सम्पूर्ण वर्णन काव्य-निबद्ध है । प्रद्युम्न सारथी को सूचित करता है कि निकुम्भ ब्रह्मदत्त और पितामह वसुदेव को यह धमका रहा है कि "यदि यज्ञ मे मुझको भाग न दोगे तो मै तुम लोगो को बाँध लूँगा और द्विज यज्ञ-कर्ता को तथा ब्रह्मदत्त की पाँच शत कन्याओ को भी हर लूँगा ।" सारथी प्रद्युम्न को सूचित करता है "महात्मा नारद ने द्वारका जाकर यह सूचना कृष्ण को दे दी है कि निकुभ ने ब्रह्मदत्त और सपत्नीक वसुदेव को बधन मे डालने की योजना बनाई है ।" प्रद्युम्न क्रोध मे आकर सारथी को पितामह के सम्मुख ले चलने का आदेश देता है । प्रद्युम्न और भीष्म के युद्ध का वर्णन इन्द्र और जयत के सवाद मे होता है । युद्ध का ऐसा वर्णन अन्य नाटक मे प्राय नही

जयंत कहता है—तागिडद तीरं छागिडदं छहे। वागिडदं वीर लागिडदं लूडे।

प्रद्युम्न युद्ध मे दुर्योधन, कर्ण आदि सभी वीरो को पराजित करते है। सम्बन्धियो की मृत्यु पर जब प्रद्युम्न खेद प्रगट करते है तो सारथी कहता है"'पिता पूज्य गुरु भ्रात हूँ पाई सौहरन माँहि। जे सकाँहि ह्वै छत्रिसुत, ते पामर कहलाँहि।"

प्रद्युम्न की विजय का समाचार सुन कृष्ण और प्रद्युम्न के पिता मिलने आते है। प्रद्युम्न रथ से उतर कर दोनो को प्रणाम करते हैं। दोनो प्रद्युम्न को निकुभ विजय के लिए आशीर्वाद देते हैं। कृष्ण की इच्छा से प्रद्युम्न बन्दी राजाओ को मुक्त करते है। बलरामजी भी इसका अनुमोदन करते है। सस्कृत मे भरत वाक्य के साथ नाटक समाप्त होता है।

इस पर भारतेन्दु के धनजय विजय व्यायोग की छाया है।

श्री पाल नाटक (वि० १९७९, पृ० १५२); ले० : दिगम्बर जैन, प्र० . श्री दिगम्बर जैन उपदेशक सोसायटी, सहारनपुर, *पात्र :* पु० १०, स्त्री ७, *अक* ४, *दृश्य :* १०, ११, ९, ७।
घटना-स्थल : दरवार, जगल, जैन मन्दिर, महल, श्री पाल का शयनागार, समुद्र, बाजार, जहाज और बाग।

इस धार्मिक नाटक मे श्री पाल का चमत्कारी जीवन दिखाया गया है।

धवल सेठ नामक व्यापारी का जहाज समुद्र मे फंस गया है। वह जल-देवता को भेंट के लिए एक व्यक्ति की खोज मे महाराज नृपकछपुर पट्टन के पास जाता है। राजा सिपाहियो को बलि देने के लिए एक व्यक्ति को लेने भेजता है। सिपाहियो को मार्ग मे श्री पाल मिलते है। उन्हे सिपाहियो पर दया आती है। वह सेठ के सामने जाकर समझाता है कि कही जीव-हत्या से देवता प्रसन्न हो सकते है। पर सेठ नही मानता और श्री पाल को वलात् समुद्र मे फेंकवा देता है। वह कुमति की वाते मानकर अपनी धर्म-पुत्री रैनमजूषा के शील पर हाथ डालता है। वह राजा को भी धोखा देता है। अत. राजा रुष्ट होकर उस सेठ को सूली पर लटका देता है। श्री पाल अपने तेज के बल से समुद्र से बच जाते है और अन्त मे श्री जितेन्द्र देव की कृपा से अपने पिता का राज चम्पापुर मे प्राप्त करते है।

श्री भक्ति विजय नाटक (वि० १९७७, पृ० १४६), ले० : बल्लभदास वर्मा; प्र० : लाला श्यामलाल जी अग्रवाल, श्याम काशी प्रेस, मथुरा; *पात्र :* पु० १४, स्त्री ४; *अक :* ३, *दृश्य :* ७, ६, ४।
घटना-स्थल . आश्रम, भवन, मन्दिर।

इस प्रतीक नाटक मे भक्ति की विजय दिखाई गई है तथा विभिन्न दर्शनो मे भक्ति-दर्शन को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध किया गया है।

तन-मन से एकाग्र हो, पढिये चित्त लगाय।
सर्व उपाधी छोड़ के भक्तिमय बन जाय॥

नाटक मे काम, क्रोध मद, लोभ, मोह आदि को भी पात्र रूप मे रखा गया है। भक्ति द्वारा ही षट्विकारो पर विजय दिखाना नाटक का उद्देश्य है।

श्री भारत पराजय नाटक (सन् १९०८, पृ० ७६), ले० : हरिहर प्रसाद, प्र० : अग्रवाल प्रेस, गया (बिहार) ; *पात्र :* पु० ८, स्त्री ५; *अक* · ५; *दृश्य .* ५, ६, ४, ४, ४।
घटना-स्थल : बगीचा, महल, दरबार, जंगल, यवन शिविर, जगल मार्ग, कन्दरा, रणक्षेत्र, रास्ता।

इस ऐतिहासिक नाटक मे पृथ्वीराज की पराजय का कारण दिखाया गया है।

यह नाटक वंगला के द्वीप-निर्व्वाण की कथा पर आधृत है। श्रीमती स्वर्णा देवी के द्वीप-निर्व्वाण की कथा को आधार बनाया गया है। पृथ्वीराज और गोरी का युद्ध-वर्णन ऐतिहासिक न होकर काल्पनिक कथा पर अवस्थित है। गोरी के आक्रमण की खबर सुनकर पृथ्वीराज आश्चर्यचकित रह जाते हैं।

यद्यपि उन्हें विश्वास नहीं होता कि जिसे कितनी बार हराया, वह आक्रमण की योजना बनायेगा तथापि वह यथार्थ स्थिति का सामना करते है। युद्ध जीत भी लेते है। जब उनकी सेना दिल्ली के लिए प्रत्यावर्त्तन करती हैं, तभी पृथ्वीराज के मत्री का पुत्र विजयसिह गोरी से जा मिलता है और घर लौटते हुए खुशी मनाती हुई सेना पर आक्रमण करने का परामर्श देता है। इस युद्ध मे पृथ्वीराज हार जाते है और भारत का पतन हो जाता है। पराजित पृथ्वीराज हीरा चाटकर मर जाते है।

श्रीमती मंजरी (सन् १९२२, पृ० १२४), ले० : दुर्गाप्रसाद दास गुप्ता; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, बनारस; *पात्र :* पु० ५, स्त्री २; अंक के स्थान पर ३ फलक हैं।
घटना-स्थल . घर, रायबहादुर की कोठी, मार्ग।

इस सामाजिक नाटक मे हिन्दू-मुसलिम एकता और विजातीय विवाह पर विचार किया गया है।

गान्धीवादी प्रभाव से प्रभावित जुगल किशोर नामक ब्राह्मण अनाथ मुसलिम बालक अलाउद्दीन का पालन-पोषण करता है किन्तु जानकी दास दोनो जातियो मे पार्थक्य समझकर उसका विरोध करता है। किन्तु अन्त मे जुगलकिशोर का जानकी दास पर ऐसा प्रभाव पडता है कि वह भी हिन्दू-मुसलिम ऐक्य का समर्थक हो जाता है।

इस नाटक का निम्नलिखित गीत एकता का प्रभाव स्पष्ट करता है—

"हम हिन्द के है दोनो हिन्दुस्ता हमारा
यह है जमीन अपनी, यह आसमा हमारा
रामो रहीम अपने, कृष्णो करीम अपने
स्वयभू हो या खुदा हो, वेदो कुरा हमारा।"

सजातीय विवाह को इस काल मे महत्त्व देते हुए श्रीमती मजरी की दासी रायबहादुर जानकीदास के विवाह के प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए कहती है कि मैं ब्राह्मण पुत्री हूँ और आप क्षत्रिय कुल के है। अत. हम दोनो का विवाह किस प्रकार सम्भव है।

श्रीमती मंजरी (वि० २०१०, पृ० ११०), ले० : वेणीराम त्रिपाठी 'श्रीमाली'; प्र० : ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स, बुक्सेलर, बनारस; *पात्र* . पु० १३, स्त्री ४, *अक* . ३; *दृश्य* : ११, ७, ६।
घटना-स्थल . राजभवन, युद्धक्षेत्र, जंगल, बन्दीगृह।

इस सामाजिक नाटक मे राजा चन्द्रोदय सत्यनिष्ठा के बल पर राज्य कर रहे है किंतु दुर्भाग्यवश युद्ध मे हारने पर उन्हे दर-दर की ठोकरे खानी पड़ती है। उनकी रानी लीलावती और पुत्री मंजरी इधर-उधर भटकती फिरती हैं और राजा को एक अप-राध मे दडित होकर जेल जाना पडता है। किन्तु अन्त मे मजरी के प्रयासो से वे सब पुन· आपस मे मिलते है और राज्य प्राप्त करते हैं।

श्रीमती मंजरी (सन् १९६७, पृ० ७२), ले० : दधीच वर्मा, प्र० . एन० एस० शर्मा गौड बुक डिपो, हाथरस; *पात्र :* पु० १०, स्त्री ४; *अक :* ३, *दृश्य* . ४, ३, ४।
घटना-स्थल : राजभवन, जगल, युद्धक्षेत्र।

यह एक सामाजिक नाटक है। इसमे जानकीनाथ मजरी को पाने के लिए पहले बनावटी प्रेम दिखाता है पर जब उसमे उसे सफलता नही मिलती तो मजरी को भय से अपने कब्जे मे करना चाहता है। वह मजरी के पिता की हत्या करवा देता है और धोखे मे उसके भाई को जेल भिजवा देता है किन्तु जलालुद्दीन की युक्ति से जानकीनाथ को सफलता नही मिलती। अन्त मे वह मंजरी की सहनशक्ति से प्रभावित होकर क्षमा माँगता है और नारी की विजय होती है।

श्री रामनन्दन चरित (सन् १९३०, पृ० १७९), ले० : श्री रामनन्दन सहाय 'ब्रह्म-विद्या'; प्र० : ओरियटल प्रिंटिंग प्रेस, रस्सी टोला, फैजाबाद; *पात्र:* पु० ११, स्त्री नही;

संस्कृत श्लोकों मे पाई जाती है। उत्तरकाड मे भारद्वाज मुनि गगा की स्तुति सस्कृत श्लोको मे करते है।

यह नाटक रामलीला मंडलियो को दृष्टि मे रखकर लिखा गया है और इसके अभिनय की दृष्टि रगमच की ओर अधिक रही है।

श्री रामलीला नाटक-बालकाण्ड (सन् १९०८, पृ० १८४), ले० : हीरालाल श्रीवास्तव, प्र० . हीरालाल बद्रीप्रसाद श्रीवास्तव, मुहल्ला पियरीकलॉ, बनारस, पात्र पु० ९, स्त्री २ , अक व दृश्य के स्थान पर मरीचि है। नाटक मे ९ मरीचियॉ है।

इस पौराणिक नाटक मे राम-विवाह तक की लीला को प्रदर्शित किया गया है।

नाटक की प्रथम मरीची मे मनु शतरूप की महाघोर तपस्या, श्री साकेत विहारी का दर्शन और पुत्र कामना की घटना है। द्वितीय मे भानुप्रताप की लीला है। तृतीय मे रावण-जन्म तथा चतुर्थ मे राम वनगमन की लीला है। पंचम मे विश्वामित्र गमन, ताडका वध, अहिल्या-उद्धार, गगास्नान, जनकपुर वास का विवरण है। पष्ठम मे नगर दर्शन और पुष्पवाटिका की लीला दिखाई गई है। सप्तम मे धनुष-यज्ञ व परशुराम-सवाद, अष्टम मे अयोध्या से बारात जाना और विवाह होना तथा नवम मरीची मे जेवनार, जनकपुर से विदाई, अयोध्या पहुँचकर विश्वामित्र की विदाई का विवरण है।

मे धर्म की ध्वजा फहराते है। तत्कालीन समाज अनेक बुराइयो से पीडित है। रामानन्द उन बुराइयो के निवारण का मार्ग बताते है। वह हिन्दू-मुसलमान को मिला कर देश और समाज का कल्याण करते है। भक्ति का आदर्श सभी जातियो और सभी धर्मो के सामने रखते है।

श्री रुक्मिणी परिणय नाटक (सन् १८९४, पृ० १०५), ले० · अयोध्यासिह उपाध्याय, 'हरिऔध', प्र० भारत जीवन प्रेस, काशी; पात्र . पु० ८, स्त्री ५; अक १०, दृश्य-रहित।

घटना-स्थल पुष्पोद्यान, राजसभा, राजभवन, देवी का मन्दिर।

इस पौराणिक नाटक मे रुक्मिणी का श्रीकृष्ण के साथ विवाह दिखाया गया है।

इस प्रसिद्ध कथा की सम्पूर्ण प्रमुख घटनाओ का इसमे उल्लेख है। इस नाटक मे कविता का बहुल प्रयोग है।

श्रीवत्स (सन् १९४१, पृ० १६८), ले० : कैलाशनाथ भटनागर, प्र० . भारतीय गौरव ग्रन्थमाला, दिल्ली , पात्र : पु० ४, स्त्री ३; अक ५, दृश्य . ७, ६, ११, ७, २।

घटना-स्थल . प्राग्ज्योतिषपुर, इन्द्रलोक।

चिन्ता के पातिव्रत धर्म से श्रीवत्स की रक्षा होती है। शनि चिन्ता का अपहरण करवा-कर एक सेठ के घर पहुँचता है किन्तु चिन्ता के शाप मे वह कोढी हो जाता है। इसी प्रकार श्रीवत्स को चोरी का अपराध लगता है किन्तु लक्ष्मी की कृपा से चिन्ता एवं श्री वत्स अपनी सत्यनिष्ठा मे खरे उतरते हैं। शनि अन्त मे अपनी काली करतूतो के लिए पछताता है तथा श्रीवत्स के न्याय को सर्वो-परि कहकर उसकी प्रतिष्ठा करता है।

श्री विश्वामित्र नाटक (सन् १८९७, पृ० ५०), ले० . कैलाशनाथ वाजपेयी, प्र० : डा० भैरोप्रसाद पाठक, मेडिकल प्रेस, कानपुर; पात्र : पु० २६, स्त्री ४, अक ३।
घटना-स्थल · गगातट, अयोध्या का राज-महल, मार्ग, धनुपयज्ञ।

इस पौराणिक नाटक मे विश्वामित्र के जीवन की प्रमुख घटनाओ का वर्णन है। इसमे जनक के धनुषयज्ञादि का दृश्य तथा भगवान श्री रामचन्द्र जी का विश्वामित्र के साथ धनुपयज्ञ मे जाना दिखाया गया है। सहसा रोहिताश्व को सर्प काटता है, राजा हरिश्चन्द्र डोम बनकर परिस्थिति वश श्मशान घाट की रखवाली करते है। वे अपना कर्त्तव्य पूरा करने के लिए अपनी पत्नी तारा से कर के रूप मे कफन माँगते है। अन्त मे विश्वा-मित्र प्रकट होकर पुन हरिश्चन्द्र का राज-पाट सब उनको वापस दे देते है। साथ ही अहिल्या से सम्बन्धित प्रासगिक कथाए है।

श्री विष्णु प्रिया नाटक (स० १९७५, पृ० २७१), ले० . हरिदास गोस्वामी, प्र० . आर्यावर्त प्रकाशन गृह, चितरजन एवेन्यू, कलकत्ता; पात्र . पु० ७, स्त्री ६, *अक* · ६, गर्भाक · ३, ४, ३, ३, ३, २।
घटना-स्थल . नवद्वीप मे जगन्नाथ मिश्र का घर।

इस विशाल नाटक मे गौराग चैतन्य महाप्रभु की जीवनी को नाटकीय रूप दिया गया है। इसमे शचीमाता और गौराग की धर्मपत्नी विष्णु प्रिया का चरित्र उभर कर आया है। श्री विष्णु प्रिया शची-माता की सेवा करते-करते कभी-कभी अपनी मनोव्यथा का दिग्दर्शन कराती है। विष्णु प्रिया की त्याग-तपस्या से प्रभावित होकर ईशान, श्री निवास तथा अन्य भक्त उनकी भूरि-भूरि प्रगसा करके उनके जीवन को धन्य मानते है। श्री निवास पचम अक मे श्री विष्णु प्रिया की स्तुति करते हुए उनसे आशीर्वाद माँगता है कि गौराग के चरणो मे हमारा अटल प्रेम हो। उनका आशीर्वाद पाकर श्री निवास नर्त्तन करने लगता है।

श्री शुक (वि० २००२, पृ० ९७), ले० · प्रभुदत्त ब्रह्मचारी ; प्र० सकीर्तन भवन, प्रयाग ; *पात्र* पु० २०, स्त्री ४, *अक* : ३, *दृश्य* १५, ५, ५।
घटना-स्थल . व्यास आश्रम, घोर वन, यज्ञ-मंडप, गगातट पर शुकदेव आश्रम।

प्रयाग राज की प्रगसा के रूप मे पीत-वसनधारी सूत्रधार मगलाचरण गाता है। नट और नटी मे भी स्त्री शक्ति की चर्चा होती है। अन्त मे शुक का पीछा करते त्रिशूलधारी शिव आ रहे है। शुक व्यास के आश्रम मे छिप जाता है और शिव उसे खोजते हुए व्यास के पास पहुँचते है। शिव कहते है कि मैं अमर गुफा मे प्रिया पार्वती को अमर कथा सुना रहा था। सयोग से उसे एक शुक शिशु ने सुन लिया। मैं उसे मार डालना चाहता हूँ। व्यास जी उन्हे जब शास्त्र रहस्य समझाते है तो शिव प्रेमो-न्माद मे नृत्य करने लगते है। इधर स्वर्ग मे पृथ्वी और धर्म विचार-विमर्श के उपरान्त देवराज इन्द्र के पास पहुँचते है। इन्द्रलोक मे पृथ्वी, धर्म, इन्द्र और ब्रह्मा मे पृथ्वी की भावी दुर्गति पर विचार होता है। उसकी रक्षा के लिए सब द्वारिकापुरी मे भगवान कृष्ण के पास आते है। भगवान् यादव कुल के विनाश की बात बताते हुए कहते है कि मैं अपने धाम जाते समय अपना सम्पूर्ण तेज, समस्त ऐश्वर्य श्रीमद्भागवत मे स्थापित करके जाऊँगा। उसकी रचना व्यासदेव करेगे। उसके ग्रहण करने योग्य पात्र के पैदा

होते ही मैं स्वधाम को चला जाऊँगा।

इसके पश्चात् व्यासाश्रम का दृश्य आता है। शुक व्यास पत्नी के पेट मे शिव के भय से छिप गया था। १६ वर्ष वही छिप कर व्यास जी की कथा सुनता रहा। व्यास पत्नी बाल क्रीडा का सुख देखना चाहती है। व्यास जी और गर्भस्थ बालक मे वार्तालाप होता है। गर्भस्थ बालक सासारिक मोह के भय से जगत् मे आना नही चाहता। नारद जी के समझाने पर भी वह बाहर नही निकलता। नारद के आग्रह पर भगवान व्यासाश्रम पधारते है। शुक जन्म लेते ही जगल का रास्ता पकडते है। व्यास जी सपत्नीक बडे दुखी होते है। व्यास जी को दुखी देख उनके शिष्य वेदशिरा, ऋश, यज्ञ मित्र आदि दुखी रहते है। इधर शुकदेव मुनि गगातट पर वट वृक्ष के नीचे बैठकर उपस्थित ऋषि मडली को कथा सुनाते है। परीक्षित वशिष्ठ, पाराशर, व्यास, जैमिनी आदि एकत्र है। नाम सकीर्तन के साथ गगा की स्तुति होते ही मकर वाहन दिव्या रूप से गगा प्रगट होती है। राजा परीक्षित प्रणाम करके उनका गुणगान करते है। गंगा प्रसन्न होकर आशीर्वाद देकर जाती है। इधर शुकदेव नगे शरीर से मस्ती मे विश्व मे विचरण करते है। एक दिन गगा तट पर पहुँचते है जहा महाराज परीक्षित भवौषधि पिलाने का आग्रह करते है। तक्षक नागो का प्रतिशोध लेने के लिए परीक्षित को डसने आता है। वह ललकारता है कि काश्यप का प्रयास भी परीक्षित को बचा नही सकता। तक्षक काश्यप की शक्ति की परीक्षा लेता है। काश्यप जले हुए वृक्ष की भस्म को अभिमंत्रित जल से जीवित कर देते है। तब तक्षक काश्यप को एक करोड मुद्रा देकर परीक्षित को जीवित न करने का आग्रह करता है। शाप के सातवे दिन परीक्षित गगा तट पर शुकदेव मुनि की कथा सुन रहे हैं। कथा सुनने पर कहते है—"अब न मुझे मृत्यु का भय है, न तक्षक का डर।" शुकदेव जी की आरती होती है और भरतवाक्य के साथ नाटक समाप्त होता है।

श्री सूरश्याम नाटक (प्रथम भाग) (सन् १९००, पृ० ८४), ले० बाबू वल्लभदास वर्मा; प्र० · राजपूत ऐंग्लो ओरियन्टल प्रेस, आगरा; *पात्र :* पु० ६, स्त्री ४; *अक* २, *दृश्य* १०, ८।

प्रस्तुत धार्मिक नाटक मे सत्सग की महिमा का वर्णन किया गया है। नाटक मे श्याम सुन्दर नारद मुनि से अपने भक्तो का वृत्तान्त पूछते है तो नारद मुनि उनसे पूछते है "प्रभु क्या कारण है कि आज आप भक्तो की सुधि कर रहे है ?" इस पर श्याम सुन्दर उत्तर देते है, "क्या तुमने नही सुना कि मेरा नाम भक्तवत्सल है मुझे अपने भक्तो की याद अहर्निश बनी रहती है। मै भक्तों के आधीन हूँ। मुझे मेरे भक्त चाहे जहाँ बेच सकते है। भक्त मेरे सर्वस्व है। भक्त मेरे और मै भक्तो का हूँ।" इस प्रकार नाटक मे भक्ति पर बल दिया गया है।

नाटक मे कोई सुव्यवस्थित घटना क्रम नही है। भक्ति भाव का उद्रेक कराने के लिए अलग-अलग घटनाये समन्वित कर दी गई है।

संगम (सन् १९४७, पृ० ४४), ले० : कमलाकान्त पाठक, प्र० गर्ग ब्रदर्स, प्रयाग; *पात्र* . पु० ११, स्त्री ३; *अक :* ३; *दृश्य :* २, ३, २।
घटना-स्थल · नोआखाली का गाँव, जमीदार की बैठक, लखीमपुर।

भारत-पाकिस्तान का स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप मे अस्तित्व प्राप्त करते समय जो साम्प्रदायिक वैमनस्य बढा तथा बंगाल और बिहार मे जो साम्प्रदायिक दंगे हुए, वे ही इस नाटक की सामाजिक और राजनीतिक विषय वस्तु बने। उसी आधार पर नोआखाली के लखीमपुर गाँव मे होने वाले हिन्दू-मुस्लिम दगो का इसमे चित्रण हुआ है। गाधी जी की नोआखाली-यात्रा का इस नाटक मे विवरण ग्रहण किया गया है। यह सोद्देश्य रचना है, जिसके अंत मे गाधी जी के साम्प्रदायिकता-विरोधी अभियान की सफलता दिखाई गयी है। उसके लिए हृदय-परिवर्तन की गाधीवादी आस्था को कार्य-

व्यापार की परिणति के रूप मे प्रस्तुत किया गया है। यहाँ साम्प्रदायिक विद्वेष के कारण भय और त्रास की वृद्धि होती है जो क्रोध का अन्धा रूप चित्रित करती है और उसी की मानवीय करुणा के रूप मे सुखान्त परिणति प्रत्यक्ष की जाती है।

इसका अभिनय वनस्थली विद्यापीठ और कस्तूरबा शिक्षण शिविर मधुवनी मे सन् १९४८ में हुआ।

संगम (सन् १९६३, पृ० १०७), ले० : कणाद ऋषि भटनागर; प्र० : किताब महल, दिल्ली; पात्र . पु० ११, स्त्री ३; अक : ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल : अदालत, गाँव, मकान।

इस सामाजिक नाटक मे जाति-पाति, ऊँच-नीच, स्त्री-स्वातन्त्र्य और राजनीतिक स्वार्थो का यथार्थ चित्र दिखाया गया है।

ठाकुर शमशेर बहादुर सिंह रायजादा बद्रीप्रसाद के पास अपने मुकदमे के लिए आते हैं क्योकि उनकी दृष्टि मे चमारो ने उनकी जमीन पर अवैध कब्जा कर लिया है। ठाकुर साहब की रियासत चली गई है परन्तु अग्रेजी प्रभाव और बल बाकी है। उन्होने आजकल बम्बई मे एक फिल्म कम्पनी खोल ली है। यही पर वह रायजादा के मुँह लगे साले नटवर लाल तथा उनकी पुत्रवधू रेखा के सम्पर्क मे आते हैं और लाल को म्यूनिसपैलिटी के चुनाव मे खडा होने के लिए उकसाते हैं। इसके मूल मे अपना स्वार्थ तथा रेखा का सौन्दर्य एव एकाकीपन है क्योकि उसका पति रणधीर (रायजादा का पुत्र) एक पराक्रमी वीर होते हुए भी चीनी आक्रमण मे अपग हो गया और मैडीकल रिपोर्ट के अनुसार पैर की चोट से कैप्टन रणधीर सदा के लिए नाकारा हो गया। ठाकुर रेखा के पिता डॉ० लाल को उकसाता है तथा चाहता है कि रेखा रणधीर को छोड दे। रेखा के व्यवहार मे भी परिवर्तन आ गया है भले ही उसने लव मैरेज की थी। ठाकुर की तरह आयगर मद्रासी होने के कारण अपने पुत्र का विवाह जोरावर सिंह की पुत्री से नही करना चाहते क्योकि वह पंजाबी है। पडित चरणदास पजाबी सूबे तथा हिन्दू धर्म के समर्थक होने के नाते जोरावर सिंह को अपने उम्मीदवार के समर्थन के लिए गाँठते हैं तथा एक असहाय मुस्लिम लडकी आयशा का बद्रीप्रसाद के सरक्षण मे रहने के कारण विरोध करते हैं। रायजादा की पत्नी दुर्गा प्राचीन विचारो की स्त्री है। वह स्त्री के स्वतन्त्र मिलने-जुलने तथा छुआ-छूत की आलोचक है परन्तु अन्त मे आयशा द्वारा अपने पुत्र रणधीर की मुसलमान आक्रमणकारी मोहम्मद से रक्षा होने पर मानवता का पाठ ग्रहण कर लेती है। रायजादा के असिस्टैंट चैटर्जी और आयशा के विवाह तथा डॉ० लाल के इस संदेश से कि रणधीर एक और ऑपरेशन से ठीक हो जाएगा, नाटक की समाप्ति हो जाती है।

संग्राम (सन् १९२२, पृ० २६३), ले० . प्रेमचन्द; प्र० . हिन्दी-पुस्तक-एजेन्सी, कलकत्ता; *पात्र* पु० ९, स्त्री ५, *अक* ५; *दृश्य* ३९।
घटना-स्थल गाँव।

इस सामाजिक नाटक मे किसानो के चरित्र को ऊपर उठाने का प्रयास किया गया है। इसी तरह गाव के जमीदार वणिक आदि व्यक्तियो पर भी विविध दोष व्यवसन, अपराधशील प्रवृत्ति का द्योतन किया गया है। इस नाटक मे अपनी समकालीन यथार्थ प्रवृत्तियो का अशत चित्रण मिलता है।

संगीत शकुन्तला (सन् १८८६, पृ० १३५), ले० : प्रतापनारायण मिश्र; प्र० : खड्ग विलास प्रेस, पटना, *पात्र* पु० २१, स्त्री ४; *अक* : ७; दृश्य २९।
घटना-स्थल . दुष्यन्त का राजमहल, वनमार्ग, जंगल, आश्रम।

महाभारत के प्रसिद्ध उपाख्यान के आधार पर मिश्र जी ने इस गीति रूपक की रचना की है। मिश्र जी ने इसके उद्देश्य को स्पष्ट करने के लिए प्रस्तावना मे कहा है—

"यह लोग शकुन्तला नाटक से क्या रीझेगे उसे तो इस समय लोगो ने मट्टी कर डाला है। किसी ने कहानी सी लिखकर झूठ-मूठ नाटक का नाम धर दिया है किसी ने अच्छर-अच्छर का उलथा करने की धुन मे भाषा को ऐसा बिगाडा है कि देखने वाले समझे कि जैसी यह है वैसी ही—ससकीरत मे भी होगी—किसी उर्दू के रसिया ने अमानत की इदर सभा से भी अधिक चौपट किया है हाय। कालिदास जी की कविता और उन्ही के देस मे उसकी यह दुरदसा ?"

संगीत सुन्दर विलास नाटक (सन् १९०६, पृ० ८८), ले० लक्ष्मणदास सालगराम; प्र० . लेखक ही प्रकाशक; *पात्र* पु० १३, स्त्री ५, *अंक* ५; *प्रवेश* · ४, ३, ३, २, ५ । *घटना-स्थल* . रग सकेत मे स्थान के बदले प्रवेश करने वाले पात्रो के नाम दिए गए है । "इतना माँहे उदेरामजी आवे छे कस्तूराबाई पिलग पर सूती छे, ऊपर का चौबारा माँहे सुन्दर बयठी छे, ठिकाणो एक कोठडी माँहे सुन्दर बयठी छे" (मारवाड़ी बोली की प्रधानता)

इस नाटक मे मारवाडी समाज मे व्याप्त पर्दा, दहेज, असमान विवाह आदि समस्याओ का चित्रण मिलता है ।

मंगलाचरण के उपरान्त नट-नटी का वार्तालाप होता है । सूत्रधार नटी को समझाता है कि, "कर मनम बिचार सुखी कोई नहि जगु मे ।" वह इसीलिए नटी को निश्चित रहने को कहता है । मूल घटना से इसका सम्बन्ध दूर का जान पडता है। प्रथम प्रवेश मे सेठ उदेराम अपनी पत्नी कस्तूरी को समझाता है 'सारा दीन गेणा कपडा की बाताँ ठीक नही ।' आगे चलकर मुनीम पन्नालाल और मोतीलाल मे पर्दे की प्रथा पर बहस होती है । पन्नालाल कहता है—'लुगाया शरम छोडने वकवा लाग जावे, इण माहे धरम तथा नीति को भग होवे नही काई ? लुगाई अगार की जगा छे ओर मोटयार घी की जगा छे ।' धनी परिवार मे स्त्री स्वातन्त्र्य के परिणामो पर प्रकाश डाला गया है ।

इसमे रामविलास और सुन्दर का परस्पर प्रेम है । पर विवाह मे होने वाले बडे खर्च के कारण समस्या उठ-खडी होती है ।

इधर धनी सेठ उदेराम अपनी स्त्री कस्तूरी के रहते छगनी नामक कन्या से विवाह कर लेता है । छगनी अपने दुर्भाग्य पर रोती है ।

संघर्ष (सन् १९५४, सृष्टि की साझ और अन्य रूपक मे संग्रहीत), ले० : सिद्धनाथ कुमार, प्र० . पुस्तक मन्दिर, बक्सर; *पात्र* पु० २, स्त्री २, *अक : दृश्य-रहित* ।

इस रेडियो गीतिनाट्य मे कला और कलाकार के परिवेश का सघर्ष दिखाया गया है । सामाजिक स्तर पर दोनो मे एक अविच्छिन्न सम्बन्ध दृष्टिगोचर होता है, जिसके टूटने पर कलाकार की आस्था और उसकी साधना खडित हो जाती है ।

प्रारभ मे पकज नामक एक मूर्तिकार मूर्ति-निर्माण मे सलग्न है । उसका अन्तर्मन उसके जीवन-मार्ग का स्पष्ट अवलोकन कराता है । पकज को, जो अब तक कला को ही जीवन-सत्य माने बैठा था, मन सचेष्ट करता है । किन्तु पकज अपने इच्छित आदर्शों की प्राप्ति मूर्ति द्वारा करना चाहता है । उसके अनुसार जीवन नश्वर है, जगत् नश्वर है—शाश्वत है कला जो कलाकार को भी अमर कर देती है । यहाँ पकज दिवास्वप्न देखता है, जिसमे उसकी कला युगो की परिवर्तन-देहरी लाघकर अमर हो जाती है । यह स्वप्न शीघ्र ही टूट जाता है और पकज हथौडे के तीव्र आघात से मूर्ति नष्ट कर देता है । यद्यपि अन्त मे कला की नवीन आशा प्रदर्शित की गई है तथापि मूर्ति का प्रत्यक्ष खडन लेखक की 'कला जीवन के लिए' मान्यता की पुष्टि करता है ।

सन्त तुलसीदास (सन् १९३२, पृ० ९०), ले० रामशरण 'आत्मानन्द', प्र० . गोपाल प्रेस, अमरोहा, *पात्र :* पु० ११, स्त्री २; *अक :* ३; *दृश्य :* ६, १०, ३ । *घटना-स्थल :* राम का राज-दरबार, काशी,

अस्सी घाट।

नाटक का आरम्भ राम के राज-दरबार से होता है। वाल्मीकि अपनी रामायण की प्रतिष्ठा के लिए हनुमान द्वारा रचित रामायण को सरयू मे प्रवाहित करने के लिए राम से प्रार्थना करते है। हनुमान वाल्मीकि से कहते है कि जिससे "पुस्तक को सरयू मे डलवाते हो उसी हनुमान की सहायता से तुम्हे भगवान् राम का दर्शन हो।" यही वाल्मीकि कलियुग मे तुलसीदास के नाम से प्रख्यात होते हैं। "त्रेता में भये वाल्मीकि मुनि ते कलियुग भये तुलसीदास मुनि।" आगे की कथा प्रसिद्ध है कि तुलसीदास अपनी पत्नी रत्नावली पर अधिक अनुरक्त तथा आसक्त हैं। पत्नी के मायके चले जाने पर उसका वियोग उन्हे ससुराल खीच ले जाता है। वहाँ पत्नी की सुरुचिपूर्ण वाणी और मोह माया का व्याख्यान सुनकर वे पत्नी को त्यागकर भगवान् राम के चरणो मे लीन हो जाते है। काशी मे उन्हे गुरु नरहरिदास के दर्शन होते है। उन्ही की सहायता से वह काशी मे अस्सी घाट पर कोढी के रूप मे हनुमान के दर्शन करते है। तत्पश्चात् हनुमान की सहायता से चित्रकूट के घाट पर राम लक्ष्मण के दिव्य स्वरूप की झाकी के दर्शन करते हैं। राम तथा हनुमान की अनुपम कृपा के कारण ही तुलसीदास का जीवन तथा रामायण ग्रंथ सुरक्षित रह पाता है। गोविन्दस्वामी, कैलाश, सुदर्शन तथा गणेशाचार्य भी अन्त मे तुलसीदास से प्रभावित दिखाई पडते हैं।

संत तुलसीदास (सन् १९५९, अशोक वन नन्दिनी मे संग्रहीत), ले० · उदयशंकर भट्ट; प्र० · भारती साहित्य मडल, दिल्ली; पात्र · पु० ३, स्त्री ३; अक और दृश्य-रहित।

इस गीति-नाट्य मे तुलसीदास के आत्म-ज्ञान प्राप्ति की जन-प्रसिद्ध घटना वर्णित है। प्रारम्भ मे दो सूत्रधार तुलसीदास के चरित्र का वर्णन करते हुए उनके कामासक्त रूप का उद्घाटन करते है। इसी बीच रत्नावली की सखियो द्वारा विगत घटनाओ की सूचना दी गई है। एक दिन रत्नावली तुलसीदास की आज्ञा के बिना अपने पितृगृह चली जाती है। विरह-विदग्ध तुलसीदास भी पीछे-पीछे ससुराल पहुँच जाते हैं और उन्मादवश समस्त परिजनो के समक्ष रत्नावली को आलिगनबद्ध कर लेते है। यह स्थिति रत्नावली को सह्य नही होती और वह पति के इस कामोद्दीप्त रूप पर तीव्र व्यग्य प्रहार करती है। इससे तुलसीदास की सुप्त आत्मा जागृत हो उठती है और वे श्रीराम के चरणो मे आत्म-चिन्तन हेतु प्रस्थान कर जाते है।

संत परीक्षा (सन् १९६५, पृ० ७८), ले० · ललितेश्वर झा, प्र० रमेश झा, बलभद्रपुर, लेहरिया सराय, दरभगा, पात्र · पु० ११, स्त्री ५, अक ३, दृश्य · १०। *घटना-स्थल* · राघव सिह का राजमहल, मत्रणा शिविर, नवाब अलीवर्दी खा का राजमहल, किलाघाट स्थित शमशेर खाँ का महल, भौडागढ एवं अमीनाबाद।

इस नाटक मे मैथिली-संत-साहित्य के प्रसिद्ध सत साहेबराम की लोकप्रियता का वर्णन है। महाराज राघवसिंह खण्डवला राजकुल के उज्ज्वल मिथिलेश है। वे भूत-प्रेतो के अत्यधिक उपद्रव से चिन्तित हो जाते हैं। उनका गुप्तचर एक साधु के तपस्या मे अत्यधिक तल्लीन होने की सूचना देता है। दूसरे दिन महाराज राघव सिंह उस सत से मिलने के लिए प्रस्थान करते हैं। अनेक प्रयास के पश्चात् संत साहेबराम उनकी विपदा से अवगत होते हैं। इसी बीच बिहार सूबा के नवाब अलीवर्दी खां मिथिला पर आक्रमण करते हैं। युद्ध मे साहेबराम बन्दी हो जाते हैं। विपक्षी सैनिको के द्वारा संत को पीडित किया जाता है। संत साहेब अपनी शक्ति से सारे सैनिको को त्रस्त-व्यस्त कर देते हैं। विपक्षी सेना सत साहेब को बद रखना चाहती है, किन्तु भगवान् की कृपा से ताला अपने आप खुल जाया करता है और

वे प्रतिदिन गगा-स्नान के लिए बाहर जाया करते है। फिर सैनिको की कडी निगरानी होने लगती है, किन्तु उसका कोई भी प्रभाव नही पडता। अत मे जब राघवसिंह लगान के रूप मे एक लाख की राशि देना स्वीकार करते है तब उन्हे मुक्ति मिलती है।

संत रविदास नाटक (सन् १९६०, पृ० ३२), ले० : गोपाल जी स्वर्ण किरण; प्र० : नथुनी प्रसाद, सिपाहीलाल, पटना; पात्र · पु० ७, स्त्री २, अक : ४, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल काशी, अयोध्या, चित्तौड़।

इस जीवनीपरक नाटक मे सत रविदास की कथा चित्रित है। नाटक का आरम्भ नेपथ्य मे एक गीत होने के बाद रविदास और उनकी पत्नी कुर्मी के सवाद से होता हैं। रविदास एकान्त, शान्ति और भक्ति योग आदि की दार्शनिक व्याख्या करते है। दूसरे अंक मे रविदास अयोध्या जाते हैं वहाँ ब्राह्मणों से बातचीत करने के पश्चात् उनसे शास्त्रार्थ होता है। वे पुन. वहाँ से चित्तौड जाते है। राज्य दरबार मे रविदास भक्ति भावना की विशेषता बताते है। अन्त मे नेपथ्य गीत से नाटक समाप्त होता है।

सन्तान-विक्रय (सन् १९००, पृ० १२४), ले० . लक्ष्य बरेली ; प्र० उपन्यास बहार ऑफिस, काशी ; पात्र पु० ११, स्त्री ३, अक : ३, दृश्य ८, ८, ७।
घटना-स्थल ' गाँव, बाजार, विधवा आश्रम।

इस सामाजिक नाटक मे समाज-सुधार का मार्ग प्रशस्त किया गया है। घसीटामल पैसे के लोभ मे अपने बच्चो को बेच देता है। हरि मोहन इसी चक्कर मे अपने जीवन मार्ग से विचलित होकर गलत कार्य करता है और दुष्ट घसीटामल का सहायक बनता है। किन्तु हरिवल्लभ के प्रयासों से सन्तान-विक्रय का कार्य रोक दिया जाता है तथा समाज मे जो लोग विधवाओ को निकाल कर अपना-अपना उत्तरदायित्व हल्का कर लेते हैं। ऐसी स्त्रियो के लिए विधवा-आश्रम की स्थापना कर समाज-सुधार दिखाया गया है।

सन्तोष कहाँ (वि० २००२, पृ० ५८), ले० : सेठ गोविन्ददास; प्र० : कल्याण साहित्य मन्दिर, इलाहाबाद; पात्र : पु० ३, स्त्री १; अक : ५; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : मनसाराम का घर, अध्यापन कार्यालय।

इस सामाजिक नाटक मे एक ही व्यक्ति की जिन्दगी के कई पहलुओ को क्रमश: प्रकाश मे लाकर इस मनोवैज्ञानिक रहस्य का उद्घाटन किया गया है कि सन्तोष आखिर कहाँ है ?

मनसाराम ६०) मासिक वेतन पाने वाला एक गरीब अध्यापक है फिर भी उसकी स्त्री उसको हृदय से प्रेम करती है। किन्तु मनसाराम अपनी स्त्री के लिये वस्त्र एवं बच्चो के लिये दूध तक भी नही खरीद सकता। वह हर समय पुस्तको मे लगा रहता है।

इसके अलावा वह अध्यापन कार्य के साथ-साथ छोटे-छोटे उद्योग करने लगता है और कुछ ही दिनो मे एक बड़ा व्यापारी बन जाता है। व्यापार की ख्याति चारों ओर फैल जाती है। सरकार ने उसको नाइट हुड भी दे दी है। लोग दान आदि लेने के लिए प्राय: आते है। परन्तु उसे अब अपनी अथाह गरीबी की तरह अपार धन से भी संतोप नही है। मनसाराम को यह ऐश्वर्यशाली जीवन भार स्वरूप जान पडता है। वह अपनी पुस्तको की तरह धन से भी मुह मोड़ने लगता है। जीवन का पुराना असन्तोष ऐश्वर्य से दब गया था किन्तु वह धीरे-धीरे फिर उभर आता है।

पत्रो मे बड़े-बड़े अक्षरो के अन्दर मनसाराम का त्याग छप कर आता है।

अब मनसाराम गाधी जी की तरह एक आदर्श आश्रम की स्थापना करता है। सब लोग आश्रम मे चरखा चलाते हैं। मनसाराम परिवार-सहित खद्दर पहनता है। उस की पत्नी धन के त्याग से दुःखी रहती है।

मनसाराम का नाम अब गरीबदास हो जाता है। कुछ दिनो बाद वह मिनिस्टर हो जाता है। किन्तु राजनीतिक बुराइयों और मिथ्या आरोपों से तंग आकर वह कैबिनेट से त्याग-पत्र दे देता है।

अब वह पहला मनसाराम गरीबो की सेवा मे लग जाता है। उसका लडका मनोहर प्रथम-श्रेणी से बी० ए० पास करता है फिर भी उसको संतोष नही होता।

संथाल बोधोद्य नाटक (वि० १९९४, पृ० ९६), ले० : स्वामी शिवानन्द तीर्थ परिव्राजक; प्र० : बाबू काली प्रसाद जी रईस, बाढी, पटना; पात्र · पु० २५, स्त्री १; *अंक* · ६, *दृश्य* · ४, २, ३, ४, २, १।
घटना-स्थल : नया बाजार, युद्धवीरसिंह की बैठक, युद्धवीरसिंह का व्याधा मिशन हाउस, कॉलेज बोर्डिंग हाउस, राजा राममोहनराय की बैठक, स्वामी दयानन्द का आश्रम, होटल, संथाली वस्ती, नारायणपुर मे संथालो का बूढा-बूढी स्थान, मांझी टाड का बूढा-बूढी स्थान, रेण्टोमस की कोठी, आर्यसमाज मदिर मोनीतरी संथाली ग्राम, मिथ्या की वाटिका, राजगृह की शतपाणि गुफा।

नाट्यकार भूमिका मे लिखते हैं "इस पुस्तक मे काव्य अथवा नाटक का कोई लक्षण नही होने पर भी मैंने जन साधारण, विशेषकर अशिक्षित निरक्षर भोले-भाले संथाल आदि भाइयों पर देखने से जल्दी असर डालने और मतवादियो के मायाजाल से बचने तथा उन्ही को सचेत करने के लिये इस को नाटक का रूप दिया है।" लेखक ने अपने श्रद्धेयगुरु मुनिश्वरानन्द जी की स्मृति मे यह नाटक लिखा है। स्वामीजी संथालो की दयनीय दशा से द्रवित होकर उनके कल्याण का मार्ग निकाला करते थे।

नाटक के प्रारम्भ मे सन्यासी, मौलाना और ईसाई पादरी मे धर्म के प्रचार के विषय मे वार्तालाप होता है। मौलाना पीरो और मुर्शिदो के द्वारा भूले-भटको को मुसलमान बनाते रहते हैं। युद्धवीरसिंह का मित्र कुतुब खा धर्म-प्रचार के लिये अपनी लड़की का व्याह मित्र के पुत्र से करके सारे परिवार को मुसलमान बनाना चाहता है। युद्धवीरसिंह कुतुबखा की लड़की को आर्य बनाने के पक्ष मे है।

दूसरे अंक मे रोमन कैथलिक और प्रोटेस्टेंट पादरी धर्म-प्रचार का मार्ग सोचते है। एक पादरी मुक्ति बताता है कि हम लोग ईसाई मेमो को हिन्दू परिवारो मे स्वेटर, दस्ताना, पैतावा बुनना सिखाने के बहाने भेजकर उनकी औरतो और लडकियो मे ईसाई धर्म का प्रचार करें। तीसरे अंक मे राजा राममोहनराय के यहा धर्मेन्द्र बाबू, नरेन्द्रबाबू, वीरेन्द्रबाबू गोष्ठी करके ब्रह्मवादी नामक सम्प्रदाय के द्वारा विधर्मियो का प्रचार रोकने को कृत संकल्प होते हैं। दूसरे दृश्य मे स्वामी दयानन्द, पं० लेखराम, महात्मा मुन्शीराम गोष्ठी मे इसका बदला लेना निश्चित करते हैं। वे स्वेच्छा से अहिन्दू को आर्य धर्म ग्रहण कराने की योजना बनाते हैं।

मौलाना फैयाज और रेवेरेंड टामस ब्रह्मसमाज और आर्यसमाज से भयभीत होते है। मौलाना फैयाज कहते हैं कि "कल्ह हम लोग चौक पर बडा भारी भीड देखा था। मालुम हुआ कि एक मुल्ला और एक क्रृष्टान अंग्रेज को आर्य बनाया जा रहा है। दोनो परामर्श करते हैं कि शिक्षित वर्ग मे प्रचार कार्य कम करके गँवार क्लास मे काम जोर से जारी करना होगा। हिमट हारने की जरूरट नैई।"

इस निर्णय के अनुसार संथालियो मे ईसाई मिशन का कार्य जोर से चल पडता है। रेवेरेंड टोमस की कोठी पर रनिया, मुनिया, कमला और सुखदा का प्रवेश होता है। पांचवें अंक मे, पाल, भक्त, रामटहल आदि कई आर्यसमाजी साप्ताहिक सत्सग मे मिशनरियो द्वारा अछूतो पर किए जाने वाले प्रचार को रोकने का विचार करते है। वे 'संथाल सेवाश्रम' खोलने का निश्चय करते हैं जहा पाठशाला, औषधालय, पुस्तकालय, शिल्पशाला, व्यायामशाला, यज्ञशाला आदि रहे। नित्यानन्द संथालो मे से ही कुछ शिक्षित व्यक्तियो को प्रचार कार्य मे लगाना चाहते हैं। दूसरे दृश्य मे वैद्यनाथ एवं पादरी एलिक के वाद-विवाद मे वैद्यनाथ वैदिक साहित्य एवं संस्कृति की महानता बताते हुए ईसाई धर्म की कमजो-

रियाँ बताते है।

संन्यासी (वि० १९८८, पृ० १८३), ले० : लक्ष्मीनारायण मिश्र ; प्र० हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, *पात्र* पु० ११, स्त्री २, *अक* : ४, *दृश्य* : ६, १, १, १ ।
घटना-स्थल . कारागार, आश्रम ।

इस सामाजिक नाटक मे प्रेम मार्ग की कुछ स्थितियो और उसके परिणाम का निरूपण है। देश-प्रेमी मुरलीधर राष्ट्र-सेवा-हित कई बार जेल-यात्रा करते है। आजीवन अविवाहित रह कर देश-सेवा का व्रत लेने पर भी किरणमयी का कौमार्य भग करते है। उनकी मृत्यु के उपरान्त किरणमयी कॉलेज के वृद्ध प्रोफेसर दीनानाथ के साथ ससार चलाने के लिए समझौता करती है, किन्तु वहाँ भी असफल रहने के कारण प्राण त्याग देती है। इसी प्रकार मालती के प्रेम मे असफल होने के कारण विश्वकान्त सन्यासी हो जाता है।

सहशिक्षा के कारण एक छात्रा का प्रेम एक छात्र से हो जाता है। इस अपराध के लिए एक ऐसे अध्यापक की प्रेरणा से प्रेमी छात्र को विद्यालय से निकाला जाता है, जो स्वयं उस छात्रा के मोह मे पड गया था। प्रथम महायुद्ध के बाद विदेशी शासको ने इस देश को जो धोखा दिया था, रोलट-एक्ट, पजाब हत्याकाड और गाधी जी के असहयोग आन्दोलन ने देश मे जो उथल-पुथल पैदा की, देश-सेवक का जीवन जिस सकट मे पडा, उसके अनेक चित्र इस नाटक मे पाये जाते है। कॉलेज-निर्वासित विश्वकान्त मालती के अनुराग के पंखों पर चढकर एशिया की मुक्ति के लिए एशियाई सघ का सयोजक बनता है।

सम्पादक की दुम (सन् १९३५, पृ० ३१), ले० ' डी० आर० सिनहा, प्र० : भारती आश्रम, इलाहाबाद, *पात्र* पु० ५, स्त्री २, *अकरहित* , *दृश्य* ३ ।
घटना-स्थल खूसटचन्द का मकान, दफ्तर, कवि सम्मेलन ।

यह एक मनोरजक लोकप्रिय प्रहसन है। मूर्ख खूसटचन्द को मैनेजर बनने की धुन लग जाती है। अन्ततोगत्वा उसका सारा कामकाज ठप्प हो जाता है और वह बिल्कुल गरीब बन जाता है। अब वह अपने को पुस्तक-पुस्तिकाओ, अखबारो का सम्पादक तथा मस्तमौला कवि होने का झूठा प्रचार करता है लेकिन वास्तविकता कुछ भी नही होती है। उसके मित्र धोतीमल एम० ए० तथा नटखट आदि उसको मूर्ख बनाकर मनोरजन का साधन मानते है। इस बार कवि सम्मेलन मे बहुत सारे कवि एकत्र होते है। वहा कवि लिस्ट मे खूसटचन्द का नाम न होने पर भी वह अपने को कवि साबित करने के लिए अनेको ऊटपटाग की कविताएँ सुनाता है जिससे कवि सम्मेलन का सारा समय नष्ट हो जाता है अन्त मे कवियो द्वारा अपमानित होकर वह भाग जाता है।

संयोग (सन् १९६३, पृ० ७६), ले० सतीश डे, प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, चावडी बाजार, दिल्ली; *पात्र* पु० ७, स्त्री १, *अक* ३, *दृश्य रहित* ।
घटना-स्थल ' सेठ का मकान, कुम्भ मेला ।

इस हास्य नाटक मे भाग्य की प्रधानता दिखाई गई है। सेठ बद्री प्रसाद की कन्या कुम्भ के मेले मे खो जाती है। वे अपनी पुत्री को खोजने के लिये प्राय घर से बाहर रहते है। उनकी अनुपस्थिति मे उनके नौकर प्रीतमसिह और बालम एक ही कमरे में दो किरायेदार मजुबाला और नरेश को ६०) महीने पर रख लेते है। मंजु दिन मे बाहर सर्विस और रात मे घर पर आराम करती है। नरेश रात भर फैक्ट्री मे रहता है, दिन मे घर पर विश्राम करता है। दोनो नौकर बारी-बारी से उनका सामान हटाते और लगाते रहते है। रविवार को दोनो बाहर रहते है। परन्तु असावधानी से दोनो को पता चल जाता है कि कोई पुरुष और पुरुष की अनुपस्थिति मे कोई स्त्री रहती है। अन्त मे सेठ आता है और उसे अपनी लडकी का हार मिल जाता है। नौकर उसे बहकाकर बम्बई भेज देता है। किन्तु नरेश और मजु एक सप्ताह की छुट्टी लेकर अपने

रूममेट की तलाश करते है। दोनो मिलते हैं उस लडकी का पिता भी वापस आकर लड़की को पहचान लेता है और नौकरो का भेद भी खुल जाता है। संयोग यहाँ तक वनता है कि मंजू और नरेश दाम्पत्य सूत्र मे वंध जाते हैं।

संयोगिता (सन् १९३९, पृ० ८२), ले० : मायादत्त नैथानी; प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, वम्वई; पात्र · पु० ८, स्त्री ५; *अक* : ३; *दृश्य* . १०, ८, ६।
घटना-स्थल . दिल्ली का राजमहल, तरावडी का युद्धक्षेत्र।

इस ऐतिहासिक नाटक मे पृथ्वीराज की वीरता द्वारा संयोगिता-हरण दिखाया गया है। राजकवि चन्दवरदाई महाराज पृथ्वीराज को सयोगिता की प्राप्ति के लिए कन्नौज राज्य पर चढाई करने की राय देता है। योजनानुसार पृथ्वीराज, भीमसिंह और अजयसिंह की सेना के साथ प्रस्थान करते है। इधर कन्नौज नरेश अपनी पुत्री सयोगिता से पृथ्वीराज के साथ विवाह न करने का आग्रह करते है किन्तु सयोगिता पृथ्वीराज से विवाह के लिए दृढ निश्चय कर लेती है। कन्नौज के राजमहल मे रानी के सामने सुनन्दा कहती है कि "जैसे ही राजकुमारी ने स्वर्णमूर्ति के गले मे माला पहनाई वैसे ही दिल्लीश्वर ने उनको अपनी वलिष्ट भुजाओ से उठाकर घोड़े पर विठाकर क्षितिज की छाती को चीरकर विलीन हो गये।" जयचन्द गजनी के वादशाह शाहावुद्दीन गोरी से पृथ्वीराज पर आक्रमण करने के लिए अनुरोध करता है। गोरी अपने मंत्री को युद्ध के लिए आदेश देता है। तरावड़ी के युद्धक्षेत्र मे घमासान युद्ध होता है। युद्ध मे भीमसिंह आहत होकर गिर जाता है। उसके पास उसकी पत्नी उर्मिला जाती है। वह एक वार पुन. अपनी आँखे खोलकर सवसे सप्रेम मिलता है और इधर युद्ध समाप्त हो जाता है।

सयोगिता स्वयवर (सन् १८८५, पृ० ६४), ले० लाला श्रीनिवास दास, प्र० : सारसुधानिधि प्रेस, कलकत्ता; पात्र · पु० ११, स्त्री ६, *अक* · ५; *गर्भाक* · ३ २, २, १, २।
घटना-स्थल : स्वयवर सभा, कन्नौज।

इस ऐतिहासिक नाटक मे सयोगिता का सच्चा प्रेम दिखाया गया है।

पृथ्वीराज द्वारा नियोजित दूती कर्णाटकी संयोगिता के पास जाती है और उसे पृथ्वीराज की ओर आकृष्ट करने मे सफलता प्राप्त करती है। फलत स्वयंवर के समय पृथ्वीराज के स्वर्ण प्रतिमा के गले मे वरमाला डालकर वह अपना प्रेम प्रकट करती है। इसी समय चंद्रकवि के साथ वेप वनाकर पृथ्वीराज जयचद की सभा मे आता है। कुछ समय वाद चद उसे पहचान जाता है। जयचंद उसे पकडने के लिए सेना भेजता है जिससे लागरीराय युद्ध करते हैं। तदनन्तर पृथ्वीराज और संयोगिता का मिलन होता है। फिर युद्ध कर पृथ्वीराज जयचद को परास्त करता है और सयोगिता को अपने साथ दिल्ली ले जाने की तैयारी करता है। पुत्री के साथ पृथ्वीराज के गान्धर्व विवाह की सूचना पाकर जयचद दान-दहेज देकर उन्हे ससम्मान विदा करता है।

संयोगिता हरण अथवा पृथ्वीराज नाटक (सन् १९१५, पृ० ९५), ले० . हरिदास मणिक, प्र० मणिक कार्यालय, वाराणसी; पात्र पु० २५, स्त्री १५, *अक* . ३; *दृश्य* : ९, ३, ३।
घटना-स्थल मदनिका का कुज, जयचन्द का कक्ष, राजदरवार, पृथ्वीराज का कमरा, मार्ग, सयोगिता की चित्रसारी, पृथ्वीराज का दरवार।

इस नाटक मे सयोगिता हरण की प्रसिद्ध घटना और उसके कारणो पर प्रकाश डाला गया है। संयोगिता और उसकी गुरुवानी मदनिका के पातिव्रत धर्म की चर्चा से नाटक प्रारम्भ होता है। मदनिका स्त्री के गुणो की चर्चा करती है जिनके कारण 'मानी पति मान को त्याग कर स्त्री के हिये का हार वन जाता है।' मदनिका तोमरवंशीय राज्यो का इति-

हास पढाती हुई अनगपाल के दौहित्र पृथ्वीराज की चर्चा करती है। ब्राह्मण और उसकी पत्नी मदनिका से पृथ्वीराज की विशेषताए सुनकर सयोगिता के मन मे उसके साथ विवाह की जिज्ञासा जगती है। इधर जयचन्द स्वयवर की तैयारी करता है। साथ ही ईर्ष्यावश पृथ्वीराज और उसके सहायक समरसिंह को बन्दी बनाने का सकल्प करते हैं। जयचन्द की महिषी रानी जुन्हाई सयोगिता का विवाह पृथ्वीराज के साथ कराने का आग्रह पति से करती है पर जयचन्द उसे फटकारते हुए कहता है—"रे कुल कलकिनी। तू जन्मते ही मर गई होती तो अच्छा होता, प्रोण रहते मैं कभी तुझे पृथ्वीराज को न दूंगा।" संयोगिता को एकान्तवास का दंड मिलता है। सयोगिता के यहा से गुरुराम नामक जगम पृथ्वीराज के पास आकर सूचना देता है—"यज्ञ मे निमत्रित हजारो राजा उपस्थित थे। इस अवसर पर जयचद ने सयोगिता का स्वयवर भी रच दिया। आपकी स्वर्ण प्रतिमा द्वारपाल के स्थान पर स्थापित तो थी ही बस उसी यज्ञ मडप मे निमंत्रित राजा आकर बैठने लगे। सयोगिता ने आपकी प्रतिमा के गले मे जयमाला डाल दी।" पृथ्वीराज सयोगिता का हरण करके उसे दिल्ली ले आता है। पृथ्वीराज की राज महिषी इच्छिनी कुमारी की सम्मति से पृथ्वीराज और सयोगिता का विवाह होता है।

काशी नागरी नाटक मडली द्वारा अभिनीत।

संरक्षक (सन् १९७०, पृ० १९४), ले० हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० भारती साहित्य मदिर, दिल्ली; *पात्र*. पु० ६, स्त्री १, *अक* : ३, *दृश्य* ६, ५, ५।
घटना-स्थल : कोटा का राजमहल, खेत, जालिमसिंह के डेरे के बाहर का मैदान।

इस ऐतिहासिक नाटक मे देश-प्रेम की सच्ची भावना चित्रित की गई है।

भारत मे अग्रेजो का राज्य है। भारत छोटी-छोटी रियासतो मे बटा है। कोटा के राजमहल मे महाराज उम्मीदसिंह रुग्णावस्था मे है। महाराज उम्मीदसिंह के सरक्षक मामा जालिमसिंह आते हैं। जालिमसिंह एक शर्त पर हस्ताक्षर कराने आता है कि कोटा राज्य मे सरक्षक का पद स्थायी और वशानुगत रहे। उम्मीदसिंह हस्ताक्षर करने से इन्कार कर देते है। उम्मीदसिंह की मृत्यु के पश्चात् ज्येष्ठ पुत्र किशोरसिंह गद्दी पर बैठते है। किशोरसिंह अंग्रेजो के विरुद्ध युद्ध करते है। जालिमसिंह और उसका पुत्र माधोसिंह अग्रेजो से मिल जाते है। किशोरसिंह का छोटा भाई पृथ्वीसिंह देश-रक्षा के लिए स्वयं को बलिदान कर देता है। अन्त मे महाराज किशोरसिंह को विजय प्राप्त होती है। जालिमसिंह और माधोसिंह अपने अपराध के लिए मृत्यु दण्ड मागते है, किन्तु महाराज किशोरसिह जालिमसिंह को गले लगा लेता है।

सवत् प्रवर्त्तन (सन् १९५९, पृ० १११), ले० : हरिकृष्ण 'प्रेमी'; प्र० : मानकचन्द बुक डिपो, उज्जैन; *पात्र* · पु० ९, स्त्री २; अक : ३, *दृश्य* . ७, ५, ४, ८।
घटना-स्थल विक्रमादित्य का राजदरबार, शक शिविर, युद्धभूमि।

इस ऐतिहासिक नाटक मे विक्रमादित्य की शक-विजय और उसके उपलक्ष मे प्रवर्तित नवीन सवत् का उल्लेख किया गया है। उज्जयिनी नरेश गर्दभिल्लदर्पण शक्ति और ऐश्वर्य के मद मे प्रजा की भावनाओ की उपेक्षा करता हुआ विलास मे रत रहता है। वह एक दिन जैन आचार्य कालक की परम लावण्यवती भगिनी सरस्वती का अपने भृत्यो द्वारा अपहरण कराकर उसे अपने अन्त पुर मे डाल लेता है। कालक के विनम्र प्रार्थना करने पर भी जब गर्दभिल्ल सरस्वती को मुक्त नही करता तो प्रतिशोध की अग्नि मे दग्ध आचार्य शको से सम्पर्क स्थापित कर उन्हे भारत पर आक्रमण करने और जैन धर्मावलम्बियो की सहायता से उन्हे गर्दभिल्ल पर विजय प्राप्त कराने मे सहायक होते हैं। गर्दभिल्ल वीरतापूर्वक रणक्षेत्र मे प्राण देता है और मरते समय अपने पुत्र विक्रम को सरस्वती के हाथो सौंप देता है जिसका लालन-पालन वह प्राचीन वैमनस्य को भूलकर

अत्यन्त निष्ठा के साथ करती है। उधर शक विजय-गर्व मे उन्मत्त हो प्रजा पर अत्याचार करते है, श्रेष्ठियो का धन और आर्य ललनाओ का सतीत्व लूटते है जिसकी प्रतिक्रिया प्रजा द्वारा विद्रोह मे होती है। विक्रमादित्य और गर्दभिल्ल के दासी-पुत्र भर्तृहरि इस विद्रोह का नेतृत्व करते है। विद्रोह सफल होता है, शक पूर्णत: पराजित होते है और उज्जयिनी मे गणतन्त्र की स्थापना होती है। यद्यपि प्रजा विक्रमादित्य को ही प्रथम गणपति बनाना चाहती है परन्तु विक्रम भर्तृहरि को उस पद पर प्रतिष्ठित कर स्वयं उनके आमात्य बन अपने विशाल हृदय का परिचय देते है। शक-विजय के उपलक्ष मे नवीन सवत् प्रवर्तित होता है।

संवर्त (वि० २००१, पृ० ७७), ले० : केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'; प्र० : पुस्तक भडार, लहेरिया सराय, पटना; पात्र पु० ३, स्त्री १।

इस प्रतीकात्मक गीतिनाट्य मे आध्यात्मिक आदर्शो द्वारा ही कल्याण की उपलब्धि दिखाई गई है तथा अहंकार, मानव-महिमा और भौतिक आग्रह को उपद्रवो का कारण बताया गया है।

महासमर के सूत्रधारो की मनोवृत्ति के मूल तत्त्वो से सघटित अह भाव, क्रोध और तृष्णा, अनृत और निकृति, विज्ञान और हिंसा की सहायता से सम्पूर्ण प्रकृति को आन्दोलित कर डालता है। उधर एक ओर धर्म ईश्वर की महत्ता का स्तवन और पार्थिव बुद्धि की असमर्थता का चित्रण करता है, दूसरी ओर ज्ञान मानव जीवन मे प्रेम की पूर्णता और विकास की अभिलाषा करता है जिससे मृत्यु तत्त्व समाप्त हो सके। इसके उपरान्त धर्म, ज्ञान और प्रार्थना के अन्तर्हृदय के गीत ध्वनित होते हैं जो न केवल उनके व्यक्तित्व की ज्योति का प्रकाशन करते हैं, अपितु मानव के वर्तमान रूप पर क्षोभ प्रकट करते हैं। दृश्य परिवर्तन पर पृथ्वी अपने स्वरूप और जीवन सस्कार का स्मरण करती है, अहं भाव की कदर्थना करती है और प्रार्थना मानव की उन्नति के लिए उद्‌बोधन गीत गाती है। पुन दृश्य बदलने पर धर्म को, जो भारत की ध्वसलोलुप छाया को देखकर खिन्न है, अहकार ललकारता है। धर्म तर्क द्वारा उसे समझाना चाहता है कि भौतिकवाद, द्वेष, घृणा और हिंसा के कारण ही विश्व-श्री नष्ट हो रही है। परन्तु अहकार का मत है कि सघर्ष और द्वन्द्व मे ही प्रगति के बीज समाहित है। इसके उपरान्त अहकार के सकेत से क्रोध धर्म का सिर काट लेता है। दृश्य बदलता है और अहकार क्रोध के साथ ज्वालामुखी पर्वत पर खडा दिखाई देता है। यह सघर्ष की चरम सीमा का संकेत है। वे मानव-महिमा का दुदुभि-घोप करते है पर ज्ञान ईश्वर को अपरूप, अनश्वर और मानव से अभिन्न तथा अहकार को मानव का घोर शत्रु बताता है। अहंकार द्वारा अपने विक्रम की प्रशसा करने पर ज्ञान उसे उसका अतीत, वर्तमान और भविष्य दिखाता है जो रक्त-रजित है। धीरे-धीरे क्रोध का तिरोधान होता है, अहकार को अपने अमर चैतन्य की अनुभूति होती है और वह जिस ज्वालामुखी पर खडा था उसी मे समा जाता है जो इस तथ्य का सकेत है कि कर्मजन्य अह ज्ञान की सन्निधि मे समा जाता है।

संशय की एक रात (सन् १९६०), ले० : श्रीनरेश मेहता; प्र० : हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, बम्बई; *पात्र* : पु० ३ तथा कतिपय छाया पात्र; *सर्ग* : २।
घटना-स्थल : वन।

संशय की एक रात राम की एक विशिष्ट मनोदशा पर आधारित पौराणिक गीतिनाट्य है, जिसे नवीन परिवेश मे प्रस्तुत किया गया है। राम के समक्ष प्रमुख समस्या है अपहृत सीता की मुक्ति, जो जन-मानव की स्वतन्त्रता की प्रतीक है। सीता का अपहरण मानव की स्वतन्त्रता का अपहरण है। किन्तु, राम के सशय का कारण इस समस्या का वैयक्तिक पक्ष है। सीता उनकी पत्नी है। पत्नी के लिए असख्य निरपराध मानवो की बलि क्या उचित है? केवल सीता के लिए वह युद्ध का विरोध करते हैं। इसीलिए मानव के रक्त पर पग धर कर आती [illegible]। उन्हें

स्वीकार्य नही। राम सत्य चाहते है किन्तु युद्ध द्वारा नही। वे 'मानव का मानव से सत्य चाहते है।' क्या यह सभव है ? नाट्यकार ने जटायु तथा दशरथ के छायारूप द्वारा युद्ध की अनिवार्यता तथा औचित्य पर प्रकाश डाला है। छायामूर्तियाँ राम के सशय का निवारण करती हुई कहती है कि युद्ध परिस्थितियो का परिणाम है। अत. युद्ध मे सशय व्यर्थ है। प्रधान है केवल कर्म। संशय स्वय मे कोई सत्य नही वरन् वह भी कर्म ही है। अन्तर केवल इतना ही है कि सशय का आधार वैयक्तिक होता है और कार्य का सामाजिक। इसीलिए काम सामूहिक अन्धता है और सशय वैयक्तिक अधता।

संसार (सन् १९६२, पृ० ९९), लेo : उग्रनारायण मिश्र; प्र० : प्रभात प्रकाशन, दिल्ली-मथुरा; पात्र . पु० ७, स्त्री ५; अक. ३, दृश्य ३, ४, ५।
घटना-स्थल गिरि, कानन, उपवन, कक्ष, पथ।

नाटककार संसार रूपी विशाल वृक्ष की जड ममता को मानता है। वह सिद्ध करना चाहता है कि एपणाये भाव वृक्ष की मुख्य शाखाये है। "जब एपणाए निश्चित सीमा का अतिक्रमण करती है तो मनुष्य के सर्वनाश का समय उपस्थित हो जाता है।" मनुष्य जब विवेक की अवहेलना कर विद्या को ठुकराता है तो ममता उसके अत्यधिक निकट आ जाती है। यदि विवेक के प्रति किंचित् भी श्रद्धा रही, तो वह पुन. विद्या को प्राप्त कर अपना जीवन आनदमय बना सकता है।"

नाटक के प्रारम्भ मे जीवानन्द, विवेक, मदन, धनेश और नामदेव परस्पर वार्त्तालाप करते है। धनेश धन सग्रह को, नामदेव ख्याति और यश को, मदन कामतृप्त को जीवन साफल्य का साधन घोपित करते हैं। विवेक इनका विरोध करते हुए मानव जीवन के उद्देश्य पर बल देता है। अपना जीवन दर्शन स्पष्ट करते हुए वह कहता है "विवाह के द्वारा वासना को मर्यादित करो, उतना ही धन कमाने की लालसा रखो, जिससे तुम्हे भोजन, वस्त्र और निवास की सुविधा हो जाय। नाम कमाने के लिए तुम्हे चिन्ता करनी ही नही चाहिए।"

द्वितीय दृश्य मे विवेक-पत्नी श्रद्धा, उसकी बहिन विद्या, ममता, शान्ति और चिन्ता मे वार्त्तालाप होता है। ममता को पुरुषो पर आक्रोश है कि उन्होने स्त्रियो को चहारदीवारी मे बंद कर नारी-विकास का मार्ग अवरुद्ध कर दिया है। अत. स्त्रियो को शासन, युद्ध, न्याय आदि कार्यों मे हाथ बँटाकर पुरुष को दिखा देना चाहिए कि वह उससे किसी भी अश मे कम नही है। श्रद्धा स्त्री पुरुष की स्वतंत्रता और समानता के सिद्धान्त को निरर्थक समझती है। वह स्त्री पुरुष की शारीरिक बनावट के अनुसार स्त्रियो को शासन, न्याय और सैनिक कार्यो के अयोग्य समझती है। तदुपरान्त जीवानन्द विवेक, विद्या और श्रद्धा मे व्यष्टि धर्म और समष्टि धर्म के विषय मे विचार विनिमय होता है। विवेक श्रद्धा के सिद्धान्तो का विरोध करते हुए कहता है कि "व्यक्ति के लिए दया, क्षमा, अहिसा आदि गुण सदा आवश्यक है परन्तु जब कभी समाज या राष्ट्र का प्रश्न सामने आता है तो निर्दयता, क्रूरता और हिसा उसके लिए उपयुक्त हो जाती है।" विद्या (विवेक की बहन) एक नया सिद्धान्त सामने रखती है कि "जब तक मानव समाज पूर्ण शिक्षित और पूर्ण ज्ञानी नही बन जाता, तब तक विश्व मे शान्ति स्थापना की बात कोरी कवि कल्पना ही है।"

द्वितीय अंक मे जीवानन्द श्रद्धा का विरोध कर ममता के मोह मे पड जाते है। ममता के तीनो सेवक मदन, धनेश और नामदेव हाथ जोडे उसके सामने खडे होते है। श्रद्धा जीवानन्द को तर्क के द्वारा सत्पथ पर लाना चाहती है पर जीवानन्द तर्क का विरोध करते हुए कहता है—"तर्क कभी किसी विषय के सतोपजनक विचार पर स्थिर नही रहने देता।" जीवानन्द अब अपनी विद्या का भी विरोध करता है। ममता के प्रभाव से जीवानन्द विलास और विनोद का

साथ करके मदिरा पान करता है। मदन के परामर्श से जीवानन्द अनेक सुन्दरियो के साथ अपनी चिन्ता मिटाने का प्रयत्न करता रहता है पर अत्यधिक विलास के कारण वह भयानक रोग से पीडित हो जाता है । जीवानन्द पुन. श्रद्धा की शरण मे जाकर क्षमा याचना करता है। पुन विवेक और विद्या के सम्पर्क मे रहकर शान्ति के समीप पहुँचकर विवाह मंडप मे विद्या से विवाह करता है।

संसार चक्र नाटक (सन् १९३२, पृ० ८२), ले० · आनन्द स्वरूप साहब, प्र० राधास्वामी सत्सग सभा, दयालबाग, आगरा, *पात्र* · पु० १८, स्त्री ५, *अक :* ४, *दृश्य :* ४, ७, ५, ४।
घटना-स्थल · भूमि गाँव के राजा दुलारेलाल की सभा, गोदावरी शहर।

भूमि गाँव के राजा दुलारेलाल राजकुमार की बीमारी की सूचना पाकर सभा मे हो रहे नाच को बद करते है। वे प्रात काल राज पंडित के साथ रोग शात्यर्थ दान-खैरात करने जाते हैं जहा एक बुढिया से उन्हें संसार के मिथ्यात्व की शिक्षा मिलती है। ससार और उसके दुख-सुख की असारता की पुष्टि करते हुए राजपुरोहित भगवान् के नाम को ही केवल सत्य बताते है। इधर राजकुमार चल बसता है। इससे राजा और रानी इन्दुमती शोक विह्वल हो बुढिया को बुलवाते है। उसके आने पर संसार की असारता पर वार्तालाप होता है। बुढिया उन्हे महात्माओ के वचनो का पाठ तथा तीर्थाटन करने का परामर्श देती है। राजा तीर्थयात्रा के लिए तैयार हो जाते है। वे पहले कुरुक्षेत्र जाते है, जहाँ गरुडमुख पडित के दलाल उन्हे दान के लिए प्रेरित करते है। गरुडमुख उनसे गोशाला आदि के नाम छ. सौ वसूल करता है और रानी को ही दान दे डालने का परामर्श देता है। राजा दुलारेलाल को उस पर सदेह होता है। वे पडित की गोशाला देखकर आशकित एवं चिंतित होते है क्योकि उसमे सिर्फ तीन गायें और एक बछडा है। जिससे उन्हे यह ज्ञान हो जाता है कि वे ठग के पाले पड़ गये हैं। फिर पडित के अभिकर्त्ता गोवर्धन से राजा की कहा सुनी हो जाती है। राजा उसे तलवार के घाट उतारने को चलता है कि रानी हाथ थाम लेती है। पर 'सोने की चिडिया' को फाँसने के लिए कृतसकल्प गोवर्धन कुछ लोगो की राय से राजा का काम तमाम करने की युक्ति करता है। किन्तु गरुडमुख की मदद से राजा ठगो के मन्सूवो से वच जाता है और फिर वहाँ से गोदावरी शहर को चला जाता है।

वहाँ तुलसीवावा की कथा मे उन्हे आत्मा, परमात्मा, जगत् और मन आदि प्रश्नो का उचित उत्तर प्राप्त होता है। तुलसीवावा भी उनसे प्रभावित होते है और दूसरे दिन भेट करने आते है। राजा दुलारेलाल की उसी समय राजा पेद्दापुरम् से भेट होती है। कथा के तथ्यो से राजा साहव का मन शात हो जाता है, हृदय की ग्रन्थिया, उनकी शिक्षाओ से खुल जाती है। अत मे राजा तीर्थयात्रा से लौट आते है, प्रजा उनका स्वागत करती है। कुछ दिन वाद राजा को कुमार उत्पन्न होता है। दरबार की गणिकाएं विवश औरतो के लिए एक कारखाना खोलने का अनुरोध करती हैं।

संसार चक्र (सन् १९०२, पृ० ६४), ले० : आशिक बी० ए०; प्र० . उपन्यास वहार ऑफिस, काशी; *पात्र :* पु० ९, स्त्री २; *अक* · ३; *दृश्य* ५, ८, ४।
घटना-स्थल मकान, जगल।

इस सामाजिक नाटक मे प्रेम की पराकाष्ठा दिखाई गई है। हीरालाल अपने भाई श्यामलाल के पुत्र दीपक का अपहरण कर लेता है क्योकि वह चन्द्रिका से प्रेम करता है। किन्तु पुजारी सूरदास के सह प्रयासो से दीपक सुरक्षित रहता है और अन्त मे अपनी प्रेमिका से मिलता है। सच्चा प्रेम देखकर हीरालाल चन्द्रिका और दीपक की शादी करा देता है और अपने कामो पर स्वयं पछताता है।

सकुन्तला नाटक (वि० १९३७, पृ० २००), ले० : कवि नेवाज; प्र० : मंगल प्रकाशन,

जयपुर; पात्र : पु० १२, स्त्री ४; तरग ४; अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल कोई उल्लेख नही।

इस पौराणिक नाटक मे पुराण प्रसिद्ध शकुन्तला की कथा चित्रित है। (व्रजभाषा पद्य वद्ध नाटक)

प्रथम तरंग मे शकुन्तला और दुष्यन्त का साम्मुख्य आश्रम मे होता है। कन्या सुलभ व्रीडा के कारण शकुन्तला का सौन्दर्य स्पष्ट नही हो पाता। शकुन्तला कभी अपने वस्त्रो को वृक्षो की उलझन से सुलझाती है कभी अपने पैरो से काँटा निकालने लगती है। इससे शकुन्तला की रागासक्ति प्रकट होती है।

द्वितीय तरग मे शकुन्तला और दुष्यन्त की मध्याह्न रति का बडा ही नग्न वर्णन है।

इसी तरग मे शकुन्तला के आग्रह से दुष्यन्त अपनी मुद्रिका देते है। तृतीय तरंग मे शकुन्तला की विदाई का दृश्य है। शकुन्तला दुष्यन्त के पास एक मुनि के साथ जाती है। मुनि दुष्यन्त को ऋषि का आदेश सुनाते है। राजा कहता है—"सकुन्तला को ब्याही को है। मोहि नही यह सुधि तनको है।" शकुन्तला गौतमी और मुनि के प्रयास करने पर भी जब दुष्यन्त ने स्वीकार नही किया तो राज-द्वार से आश्रम वासी लौटे और अग्नि ज्वाला शकुन्तला को आकाश मे उठा कर ले गई।

चतुर्थ तरग मे दुष्यन्त को शकुन्तला के हाथ से गिरी हुई अगूठी मिल जाती है। मातलि राजा को इन्द्रलोक मे ले जाता है। मार्ग मे शकुन्तला से राजा का मिलन होता है।

सगर विजय (सन् १९३२, पृ० १११), ले० . उदयशकर भट्ट, प्र० . मसिजीवी प्रकाशन, नई दिल्ली, *पात्र* पु० ११, स्त्री ३, *अक* ५, *दृश्य* ५, ५, ५, ५, ५।
घटना-स्थल अयोध्या राज्य, जगल, आश्रम।

इस पौराणिक नाटक मे राजा सगर की वीरता और उनके दान, शील और शौर्यादि गुणो का वर्णन है। अयोध्या के राजा बाहु की विशालाक्षी और बर्हि नाम की दो रानिया है। दुर्दम नामक राजा बाहु को परास्त करके स्वय राज्य पर अधिकार कर लेता है। बाहु अपनी गर्भवती पत्नी विशालाक्षी के साथ वन मे शरण लेते है। इससे बर्हि को ईर्ष्या होती है। वह ईर्ष्यावश दोनो को विष दे देती है। परिणामस्वरूप बाहु की मृत्यु हो जाती है, किन्तु विशालाक्षी जीवित रहती है जिसे बाद मे बशिष्ठ ऋषि आश्रय देते है। उन्ही के आश्रम मे विशालाक्षी सगर को जन्म देती है। बर्हि एक बार पुन· सगर को समाप्त करने का उपक्रम करती है किन्तु कुन्त और मिदुर द्वारा रक्षा हो जाती है। बडा होकर यही सगर अयोध्या का राजा बनता है। बर्हि आत्महत्या कर लेती है। विशालाक्षी की भी मृत्यु हो जाती है और राजा दुर्दम का अन्त बन्दीगृह मे होता है। राजा सगर विश्वविजयी एव चक्रवर्ती होते हैं।

सगाई (सन् १९५३, पृ० ९८), ले० : शम्भूदयाल सक्सेना; प्र० नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर; *पात्र* पु० ४, स्त्री ३; *अक-रहित; दृश्य* : ९।
घटना-स्थल : दीवानखाने का एक छोटा कमरा, कॉलेज होस्टल, गोपाल चन्द की हवेली।

इस सामाजिक नाटक मे अर्थाभाव के कारण समाज मे प्रचलित अनमेल विवाह का मार्मिक चित्रण किया गया है।

मुरलीधर एक मध्यमवर्गीय गृहस्थ है। परिवार के सभी लोग उसी पर आश्रित हैं। उसकी आय का एक मात्र साधन लेखन है। ग्रन्थो की टीका करने से लेखनी के भरोसे अर्जित धन पर ही इस परिवार का पोषण होता है। जमुना, मुरलीधर की धर्म-पत्नी है। वीणा और नैना दोनो इस दम्पति की कन्यायें हैं। वीणा लगभग १४-१५ वर्षीया विवाहयोग्य युवती है, नैना अभी ८-९ वर्ष की अबोध बालिका है। कन्याओं के विवाह के व्ययशील प्रपञ्च मे ही सारी कमाई खर्च हो चुकी है। किसी तरह भोजन वत्ति निभ रही है। वीणा के विवाह के

मग्न है। अनसूया अपने पातिव्रत धर्म से गगा को प्रकट करती है अत: सभी जल से तृप्त होते है। इसके वाद के प्रसंग मे अनसूया नर्मदा को सशरीर स्वर्ग भेज देती है। अनसूया के पातिव्रत धर्म से लक्ष्मी-पार्वती एवं सरस्वती को ईर्ष्या होती है। वे अपने पतियो को भेजकर अनसूया की परीक्षा लेती है एवं पराजित होकर लज्जित होती है।

सती चन्दनवाला (सन् १९२७, पृ० २०७), ले० : शेरसिंह जैन, प्र० प्यारेलाल देवीसहाय, सदर वाजार, दिल्ली, *पात्र* . पु० १३, स्त्री ८, *अंक* · ३, *दृश्य* ९, ६, ६।
घटना-स्थल : जगल, देवी का मदिर, दुर्ग, घर, वेश्या वाजार।

इसका कथानक भगवान् महावीर के जीवन काल की मार्मिक घटना के आधार पर निर्मित है। जिन दिनो भगवान् महावीर संन्यास लेकर उपदेश देते फिर रहे थे उन्ही दिनो कुटिल राजा शतानीक धर्मात्मा राजा दधिवाहन को धोखा देकर मार डालता है। राज्य पर अधिकार कर रानी धारणी पर वलात्कार करना चाहता है। रानी खजर भोंककर अपना प्राण त्याग करती है। सेनापति राजकुमारी चंदनबाला को अपने घर ले जाता है। और एक वेश्या के हाथ उसे वेच देता है। उस वेश्या को धन देकर सेठ धनवाहा उसे क्रय कर लेता है पर उसकी स्त्री पति पर लाछन लगाकर चन्दनबाला को अँधेरे तहखाने मे डाल देती है, जहाँ वह अन्नजल के विना पडी रहती है। चन्दनवाला के कष्टो को देखकर भगवान् महावीर स्वयं पहुँच जाते हैं। सती की प्रार्थना सुनकर भगवान् लोहे की वेड़िया खोल देते है और देवता उसके प्रागण मे धन की वर्षा करते हैं। इसी समय आकाशवाणी होती है—

"ऐ राजा शतानीक कौशाम्वी नगरी के निवासियो, इस सारी सम्पत्ति की स्वामिनी चदनवाला है।"

इस प्रकार धर्माचरण मे निष्ठा रखने के उद्देश्य से यह नाटक लिखा गया। इसमे एक स्थान पर वलि देने वाले महन्तो का भी दृश्य दिखाया गया हे और अहिसा पर बल दिया गया है।

सती चन्द्रावली (सन् १८९०), ले० : राधाचरण गोस्वामी; प्र० : राजस्थान यंत्रालय, जयपुर, *पात्र* . पु० ३, स्त्री १; *अक-रहित, दृश्य* ७।
घटना-स्थल : पनघट, अशरफ का घर।

'इस नाटक मे चन्द्रावली अपनी सखियों के साथ जल भरने जाती है। शाहजादा अशरफ उसे पकड़ लेता है और उसका पिता औरगजेब जनता की प्रार्थना को ठुकराकर चन्द्रावली को मुक्त करना अस्वीकार कर देता है। हिन्दुओ के विद्रोह मे अशरफ की मृत्यु होती है। औरंगजेब रोषपूर्ण होकर नाना प्रकार के अत्याचार करता है। चन्द्रावली स्वत· अग्नि मे भस्म हो जाती है। इस ऐतिहासिक नाटक मे एक वीर नारी का चरित्र दिखाया गया है, जो राजसुख को त्यागकर अपने धर्म पर आरूढ रहती है और धर्मरक्षा के लिए युद्ध करते हुए शरीर त्याग देती है। इस प्रकार यह दु:खान्त नाटक समाप्त होता है।

सती चरित नाटक (सन् १८९०, पृ० ६४), ले० · कुँवर हनुमन्त सिंह रघुवशी; प्र० : राजपूत ऐंग्लो-ओरिएन्टल प्रेस, आगरा; *पात्र* . पु० १५, स्त्री ५; *अक* : ७, *गर्भांक* : ३, १, १, १, १, १, १।
घटना-स्थल : चन्द्रोदय सिंह का भवन, शशिकला के गृह का आगन, चन्द्रोदय सिंह की वारहदरी, हवन मण्डप, नृत्यशाला।

एक कुलीन पतिव्रता के सच्चरित्र पर आधारित इस नाटक मे यह दिखाया गया है कि एक स्त्री के सतीत्व की रक्षा केवल उसकी अपनी शक्ति पर ही निर्भर है। इसमें एक क्षत्रिय कुलवती युवती अपने सतीत्व की रक्षा एक दुराचारी पुरुष से स्वय उसका सहार करके करती है।

सती चिन्ता (सन् १९२०, पृ० १२८), ले० : जमुनादास मेहरा, प्र० रिखवदास वाहिती, कलकत्ता, *पात्र* : पु० १०, स्त्री ६; *अक* :

३; दृश्य : २३ ।
घटना-स्थल : महाराजा श्रीवत्स का दरबार।

इस पौराणिक नाटक मे सती का प्रभाव दिखाया गया है।

महाराज श्रीवत्स के दरबार मे शनिदेव तथा लक्ष्मी का वाद-विवाद हो गया है। प्रत्येक अपने को श्रेष्ठ बताता है। इस विषय की मीमासा वे श्रीवत्स से कराना चाहते है। श्रीवत्स लक्ष्मी को शनि से श्रेष्ठ घोषित करते है। शनिदेव वत्स पर कुपित हो जाते है जिसके परिणामस्वरूप वत्स को अपनी रानी चिन्ता के साथ दर-दर भटकना पडता है। अन्त मे सती चिन्ता के प्रताप तथा सत्यवादिता के कारण शनिदेव वत्स पर कृपा करते है। लक्ष्मी के वरदान से वत्स अपना राज्य और पूर्व से भी अधिक सुख प्राप्त करते हैं।

सती दहन नाटक (सन् १९१२, पृ० ३०), ले० : रामगुलामलाल, प्र० : प्रह्लाद बुक्सेलर, चौक पटना सिटी, *पात्र* : पु० ५, स्त्री २; *अक-रहित* · *दृश्य* · १२ ।
घटना-स्थल : दण्डक वन, वन-मार्ग, दक्ष-भवन, यज्ञशाला, विष्णुलोक ।

इस पौराणिक नाटक मे सतीजी शिवजी का कहना न मानकर रामचन्द्र जी की परीक्षा के लिए जाना, शिवजी का त्यागना, सती जी का विना वताये अपने पिता दक्ष के घर जाना और यज्ञ मे अनादर पाकर शरीर त्यागना दर्शाया गया है।

सती पार्वती (सन् १९३९, पृ० २१६), ले० राधेश्याम कविरत्न, प्र० : राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, *पात्र* : पु० १५, स्त्री ६, *अक* ३, *दृश्य* . ९, ६, ६ ।
घटना-स्थल : कैलाशपुरी ।

इस नाटक के विषय मे नाटककार का कथन है कि यह नाटक पौराणिक है। परन्तु पौराणिक होते हुए भी यह आधुनिक समय के लिए उपयुक्त है। सती-पार्वती और भगवान् शकर का चरित्र-चित्रण निस्सदेह, इस नाटक का मुख्य सौन्दर्य है।

भगवान् शिव के प्रति सती की निष्ठा प्रकट करना ही नाटककार का मुख्य उद्देश्य है।

सती लीला वा शिव पार्वती (सन् १९२५, पृ० १४२), ले० रामशरण 'आत्मानन्द', प्र० . उपन्यास बहार ऑफिस, काशी, *पात्र* : पु० १३, स्त्री ६; *अक* · ३, *दृश्य* · ६, ११, ३ ।
घटना-स्थल · दक्ष की नगरी, यज्ञ मडप, कैलाशपुरी ।

इस पौराणिक नाटक मे शिव-सती के माध्यम से आदर्श दाम्पत्य जीवन की स्थापना की गई है।

प्रजापति दक्ष की कुमारी कन्या सती शिव को वर रूप मे प्राप्त करने का वरदान शिव से प्राप्त कर लेती है। किंतु दक्ष शिव को कगाल, औघड तथा अपना शत्रु समझ कर उसे अपनी कन्या देना स्वीकार नही करता है। दक्ष शिव का अपमान करने के लिये सती स्वयवर का आयोजन करता है और उसमे शिव को निमत्रित नही करता। अन्य सभी देवताओ तथा राजाओ को निमंत्रित किया जाता है। स्वयवर मे प्रजापति दक्ष स्वयं सती द्वारा चुने पुरुष के साथ सती के विवाह की घोषणा करते है। समझदार राजा सती को जगदम्बा मान कर केवल दर्शक बनकर स्वयवर मे आते हैं। सती शिव की प्रार्थना करती है। शिव प्रकट होकर सती की जयमाला स्वीकार कर उन्हे अपने साथ ले जाते है। दक्ष इस पर बहुत क्रुद्ध होता है। वह शिव-विरोध का निर्णय कर राज्य मे शिव-पूजा वर्जित कर देता है।

दूसरे अंक में कीर्ति को शिव भक्ति के कारण दण्डित किया जाता है। शिव उसकी रक्षा करते है। दूसरी ओर दक्ष भृगु के यज्ञ का विरोध करता है और उनकी निन्दा करता है। शिव वहाँ भी शान्त रह कर यज्ञ निर्विघ्न समाप्त होने देते हैं।

तृतीय अंक मे दक्ष शिव के अपमान के

लिये यज्ञ का आयोजन करता है जिसमे शिव को निमंत्रित भी नही करता। नारद से समाचार पाकर सती पति की अनिच्छा पर भी पिता के यज्ञ मे सम्मिलित होने जाती है। वहाँ सती अपमानित होती है और शिव की निन्दा न सुन सकने के कारण अपना शरीरात यज्ञ-भूमि मे करती है। शिव तथा उनके गण यज्ञ का विध्वंस कर दक्ष को मारते है किन्तु पुन. देवताओ की प्रार्थना पर उसके सिर पर बकरे का सिर लगा जीवित करते हैं। इस अक का अन्तिम भाग शिव की वियोगावस्था प्रस्तुत करता है। विष्णु और ब्रह्मा की सहायता से उसका शमन किया गया है। विष्णु हिमालय-कन्या पार्वती मे सती की पुन प्राप्ति तथा शिव की पत्नी-भक्ति और सती के पातिव्रत धर्म की प्रशसा करते है।

सती वृन्दा नाटक (सन् १९२६, पृ० १४२), ले० . शम्भूराम नागर; प्र० : श्याम काशी प्रेस, मथुरा ; *पात्र* पु० २४, स्त्री ११ , *अक* ३, *दृश्य* . ७, १२, ८ ।
घटना-स्थल स्वर्ग, तारकासुर का सिंहासन, तपोवन, वडवृक्ष, यशोदा का घर, गोवर्धन पर्वत, वृन्दावन बसीवट ।

इस पौराणिक नाटक मे वृन्दा का सतीत्व चित्रित किया गया है।

तारकासुर नामक राक्षस ब्रह्मा से विवाद करता है कि वह देवताओ का क्यो पक्ष लेते हैं। देवता विशेष कर बृहस्पति अन्यायी और अधर्मी है। ब्रह्मा समझाते है कि 'तुम दोनो भाई हो, क्यो आपस मे लडते हो।' तारकासुर कहता है कि देवताओ की चाल का पता मुझे नारद से लगता रहता है। मेरे हाथ मे शमशीर है। मै बैरियो का कलेजा चीर देवो का काम तमाम करूँगा। इसी प्रकार जालधर अपने पिता समुद्र पर क्रुद्ध होता है कि वह देवताओ का पक्ष क्यो लेते हैं। जालंधर विष्णु के पास युद्ध करने जाता है। दोनो मे युद्ध होता है। इधर जालंधर की पत्नी और कालनेमि की कन्या वृन्दा जगल मे विष्णु भगवान् की उपासना करती है। वह अपने पिता और पति को विष्णु का विरोध करने से रोकती है। वृन्दा की उपासना से रीझकर भगवान् विष्णु कृष्ण का अवतार धारण कर रास रचाते हैं।

शिव भी सखी रूप मे प्रकट होते है। कृष्ण वृन्दा को समझाते है कि ये गोपेश्वरी है। इन्ही का तुमने तप किया था, यही तारकासुर, जालधर के सहारक है, इन्होने तुमको रास्ता बताया है। शिव वृन्दा से कहते है कि तुम्ही तुलसी हो, एक रूप से वृक्ष हो, एक रूप से श्याम के सग हुलसी हो।

कृष्ण वृन्दा को वरदान देते है कि जो लोग भक्ति से तेरा प्रेममय पूजन करेगे उन के घर मे भूत-प्रेत, रोग-शोक की बाधा कभी न होगी।

नाटक मे सूत्रधार नटी भरतवाक्य आदि का निर्वाह पाया जाता है।

सती वेश्या अथवा समाज की भूल (सन् १९४९, पृ० ११०), ले० : मुंशी दिल लखनवी; प्र० न्यू स्टैन्डर्ड पब्लिकेशन्ज, १८१४ चन्द्रावल रोड, दिल्ली; *पात्र* : पु० १६, स्त्री ७; *अंक* ३, *दृश्य* . ८, ६, ४।
घटना-स्थल : सेठ लक्ष्मीचन्द का मकान, वेश्यागृह ।

इस नाटक मे स्त्रियो की वेश्यावृत्ति के लिए समाज को उत्तरदायी बताया गया है। दीवान चन्द अपनी कन्या को रुपये के लोभ मे सेठ लक्ष्मीचन्द के हाथ बेच देता है। पत्नी के विरोध करने पर उसे मायके भेज देता है। वह पुत्री के प्रति अन्याय को न सहन कर गाड़ी से आत्महत्या कर लेती है। उसका लडका पिता को अपनी पत्नी के साथ अनैतिक सम्बन्ध का आरोप लगा कर दीवानचन्द को घर से निकाल देता है और वह भी वेश्यागामी हो जाता है। लक्ष्मीचन्द नन्ही बालिका निर्मला के साथ पत्नीवत भोग चाहता है। निर्मला अपनी बेबसी मे उस पिशाच से पीछा छुडाती है। उसका भतीजा मनोहर उसका अन्त कर निर्मला को भी निकाल बाहर करता है। वह आत्महत्या पर उतारू होती है किन्तु कामिनी वेश्या उसे वेश्यावृत्ति की शिक्षा देती है। प्रथम और द्वितीय सेठ के रूप में उसका भाई सुन्दर और भतीजा मनोहर उस

से प्रणय निवेदन करते है। सुन्दरदास भेद जानने पर लज्जित होता है और मनोहर की हत्या कर देता है। सुन्दर की पत्नी प्रभावती पति के स्थान पर स्वय खूनी का दोष अपने ऊपर ले लेती है। निर्मला, दुलारी के नाम से वेश्या बाजार मे है। वही उसका बाप कोढ़ी होकर आ जाता है। वह उसे भी अपना कच्चा चिट्ठा सुनाती है। एक निरजन नाम का साधु डाके आदि डलवाकर गरीब ब्राह्मणो की कन्याओ की शादी मे मदद करता है। वही बेचारी निर्मला का भी उद्धार करता है। निर्मला को अपने माता-पिता की इज्जत का ध्यान रहता है। वह नृत्य करके निर्वाह निमित्त नर्तकीवृत्ति अवश्य करती है किन्तु पाप कर्म से रहित है।

सती शिरोमणि (सन् १९७०, पृ० ८४), ले०: चन्द्रशेखर पाण्डेय 'चन्द्रमणि'; प्र० ब्रह्मलोक कार्यालय, रायबरेली, बछरावाँ, *पात्र :* पु० ९, स्त्री ८; *अक .* ३, *दृश्य* ' ११, ७, ३। *घटना-स्थल* ' आश्रम, घर, वन मार्ग, गंगा तट।

विश्वद्रोहियो के स्नान से भागीरथी (गगा) श्यामवर्ण होने पर पवित्र होने हेतु सती की चरण धूलि के लिए सब जगह भटकती है। अन्त मे महासती अनसूया उसे स्वेच्छा से चरण-धूलि देकर पवित्र करती है। उनके इस कृत्य से सावित्री, लक्ष्मी एवं पार्वती के सतीत्व-अभिमान को ठेस लगती है। अतएव अनसूया के प्रति उनमे प्रतिशोध की भावना जाग्रत होती है। शाण्डिली (शैव्या) नामक कुमारी की जिससे विवाह की चर्चा होती है वह मर जाता है। इस पर अनसूया उसे प्रात काल मदाकिनी के तट पर मिलने वाले व्यक्ति को पति बना लेने की सम्मति देती है। प्रतिशोधभरी त्रिदेवियाँ (सावित्री, लक्ष्मी और पार्वती) भिक्षुक तथा कोढी पुण्डरीक को उस समय आत्महत्या की प्रेरणा देकर वहाँ भेजती है। शाण्डिली उसे अपना लेती है। त्रिदेवियाँ क्रोधी-ऋषि माण्डव्य को अनसूया के विरुद्ध कर उन्हे शाप देने भेजती हैं, किन्तु वे भी अपनी कृत्याग्नि से त्राण पाने हेतु महासती की शरण ग्रहण करते है। अन्त मे चोरी के अभियोग मे चतुष्पथ पर उन्हें शूली पर चढाया जाता है किन्तु प्राणायाम के बल के कारण शूली उन्हे वेध नही पाती। इसी बीच पुण्डरीक का पैर लगने से माण्डव्य का ध्यान भग होता है। वे पुण्डरीक को सूर्योदय के साथ ही मर जाने का शाप देते है। किन्तु शाण्डिली अपने तप से सूर्योदय नही होने देती। अन्त मे अनसूया के यह आश्वासन देने पर कि तुम्हारे पति का कुछ क्षणो के लिए प्राणात होगा उसके पश्चात् उसे अमृत द्वारा पूर्ण स्वस्थ रूप में पुन. जीवित कर दिया जायगा, शाण्डिली अपने वचन को वापस ले लेती है। सूर्योदय के साथ पुण्डरीक की मृत्यु होती है किन्तु अमृत के प्रभाव से स्वस्थ एव सुन्दर रूप मे वह पुनर्जीवित होता है। त्रिदेवियों की प्रतिशोधाग्नि इस पर भी शात नही होती। इसके लिए वे अपने पतियो को भी माध्यम बनाती है। त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) ब्रह्मचारियो के रूप मे अनसूया के यहाँ पहुचते है। वह उनका स्वागत करती है। भोजन करने के लिए छद्मवेशी त्रिदेव अनसूया से नग्न होकर परोसने को कहते हैं। इस पर सन्देह होता है। वह अपने पातिव्रत बल से उन्हे छ छ· महीने के बालक बना देती है। अन्त मे त्रिदेवियाँ अनसूया से अपने पतियो की भिक्षा माँगती है। इस प्रकार उनका गर्व-मोचन होता है।

सती सरला (सन् १९००, पृ० ११०), ले० : चन्दन लाल अग्रवाल, प्र० श्री कृष्ण पुस्तकालय, चौक, कानपुर; *पात्र .* पु० १२, स्त्री ८, *अक* ३, *दृश्य :* २, ६, १८। *घटना-स्थल :* जगल, वेश्यागृह।

इस सामाजिक नाटक मे आदर्श-नारी के सतीत्व की रक्षा दिखाई गई है।

लम्पट वेनी कलावती, सरला आदि लडकियो को गाय चराती हुई अकेली पा उन का अपहरण करना चाहता है। उनके चिल्लाने पर कृष्ण, श्याम आदि आकर लडकियो की रक्षा करते है। वेनी अपने कामुक स्वभाव के

कारण समाज की सभी बुराइयो से ओतप्रोत हैं। मदन प्रभा वेश्या के यहाँ जाता है तथा शराब पीकर अपनी कामुक इच्छाओ की पूर्ति करता है। शराब के नशे मे एक दिन वह भरे समाज मे कलावती का हाथ पकडने की कोशिश करता है। कलावती पास पडे ईट के टुकडे से उसे घायल करती है तथा अपनी रक्षा के लिए चिल्लाती है। श्याम और कृष्ण समय पर आकर उसकी रक्षा करते है। उनके इसी उपकार के कारण श्याम और कलावती का आपस मे विवाह कर दिया जाता है और सरला अपने पति की सेवा से सदैव अपनी प्रतिष्ठा बचाने मे सफल रहती है।

सती सुकन्या (सन् १९१२, पृ० १०४), *ले० :* श्यामचरण जौहरी; प्र० उपन्यास बहार आफिस काशी, बनारस, *पात्र :* पु० ६, स्त्री ४, *अक* ३; *दृश्य* ८, ३, ३।
घटना-स्थल : उपवन, च्यवन ऋषि का आश्रम।

यह एक पौराणिक नाटक है। राजा शर्याति की कन्या सुकन्या को एक दिन उपवन मे सखियो सहित घूमते समय वल्मीकि मे दो चमकते हुए रत्न से दिखाई पडते हैं। उन्हे निकालने के लिए काटो से जब कुरेदती है तो उनमे से रक्त बहने लगता है। वास्तव मे वह च्यवन ऋषि की आखे थी। च्यवन और सुकन्या मे बाते होती है। सुकन्या च्यवन की दासी बनना चाहती है पर च्यवन उसे उसके पिता की अनुमति से पत्नी रूप मे ग्रहण करना चाहते हैं। सुकन्या के माता-पिता उसका विवाह एक राजकुमार से करना चाहते है। पर सुकन्या च्यवन ऋषि को ही पति बनाने पर दृढ है। दोनो का विवाह हो जाता है और सुकन्या के पातिव्रत से च्यवन को नेत्रो के साथ युवावस्था प्राप्त हो जाती है। शिव पार्वती तथा अन्य देवता सुकन्या के पातिव्रत धर्म की सराहना करते हैं। महाराज शर्याति सोमयज्ञ करते हैं, जिसमे सम्मिलित होकर इन्द्र, सूर्य, नारद सती सुकन्या का यशोगान करते हैं। अन्त मे नारद कहते हैं "हे सुकन्ये! तुम धन्य हो। तुमने आर्य ललना-समाज का मुख उज्ज्वल किया। तुमने सतीत्व धर्म का अपूर्व प्रताप दिखाया।"

सती सुलोचना (सन् १९६५, पृ० १०४), *ले० :* चन्द्रशेखर पाण्डेय 'चन्द्रमणि'; प्र० : राय बरेली, भारती भवन, बन्नावाँ, *पात्र :* पु० २०, स्त्री ३; *अंक :* ३, *दृश्य :* ९, १०, ३।
घटना-स्थल पहाड़ी, राजभवन, मार्ग, दरबार, युद्धभूमि।

यह पारसी शैली का धार्मिक एवं सामाजिक नाटक है। तप द्वारा ब्रह्मा से वरदान पाकर मेघनाद इन्द्रलोक पर आक्रमण करता है। आरम्भ मे उसका पिता रावण इन्द्र द्वारा बन्दी बनाया जाता है, किन्तु अन्त मे मेघनाद की विजय होती है। पिता के अपमान का बदला लेने के लिए वह इन्द्र का पीछा करता हुआ नागलोक पहुचता है। नागराज वासुकी की पुत्री सुलोचना मेघनाद के अदभत पराक्रम और सौन्दर्य पर मुग्ध हो जाती है। इन्द्र को शरण देने के कारण नागराज से मेघनाद का युद्ध होता है। विजयी मेघनाद इन्द्र को बदी बनाने के साथ-साथ क्षति-पूर्ति के रूप मे सुलोचना का हरण करता है। ब्रह्मा के सुझाव पर मेघनाद इन्द्र को मुक्त कर देता है।

युद्ध मे कुम्भकरण की मृत्यु पर दुखी पिता (रावण) को सान्त्वना देकर मेघनाद विजय की आशा से निकुम्भिला पहाडी के अन्तराल मे आसुरी यज्ञ करता है। सूचना पाकर वानरी सेना-सहित लक्ष्मण उसका यज्ञ विध्वस करते है और सम्मुख समर मे मेघनाद का वध करते है। पति-मृत्यु की सूचना पाकर सुलोचना राम के पास जाकर उसका शीश माँगती है और उसके साथ सती हो जाती है।

सत्य का स्वप्न (सन् १९५४, पृ० ११४), *ले० :* रामकुमार वर्मा; *प्र० :* किताब महल, इलाहाबाद; *पात्र :* पु० १५, स्त्री ८, *अक : रहित; दृश्य ।* शताधिक दृश्यातर हैं।
घटना-स्थल : गोकुल, यमुना तट, पहाड़, राज-

पथ, कामकन्दला का उपवन, उज्जयिनी का राज-उपवन, महाकालेश्वर का मन्दिर।

नाटक मे भारतीय कला और संस्कृति का सौन्दर्य प्रस्तुत किया गया है। इसमें श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर राधा सहित गोपियाँ वडी दुखी होती हैं। राधा को इस दुख मे देखकर कामदेव रति-सहित नृत्य करता हुआ आता है और राधा पर पुष्पवाण से प्रहार करता है। राधा उसे प्रिय वियोग का शाप देती है।

यही कामदेव आगे चलकर एक माधव नाम का प्रसिद्ध वीणावादक होता है तथा रति भी कामावती नगरी की प्रसिद्ध कामकन्दला नाम की राजनर्तकी होती है। माधव के वीणावादन पर पुष्पावती नगरी की स्त्रियाँ मोहित हो जाती हैं जिससे राजा उसे राज्य-निर्वासित कर देता है। माधव यहा से कामावती नगरी मे पहुचता है। वहा पर राजकक्ष मे माधव का वीणा-वादन होता है जिस पर राजनर्तकी कामकन्दला मुग्ध हो जाती है। वह नृत्य करते-करते मूर्छित हो जाती है। वहां से भी माधव को निर्वासित कर दिया जाता है।

माधव विक्रमादित्य के राज्य मे जाता है। अचानक महाकालेश्वर के मन्दिर मे उसका विक्रमादित्य से परिचय हो जाता है। विक्रमादित्य महाराज कामसेन को पत्र भेजकर कामकन्दला को माँगते है। महाराज कामसेन के प्रतिकूल उत्तर से युद्ध की स्थिति वन जाती है। युद्ध काफी दिन तक चलता है। अन्त मे कामसेन की तरफ से मेढामल और विक्रमादित्य की तरफ से माधव द्वन्द्व के लिए प्रस्तुत किये जाते हैं। दोनो मे युद्ध होता है जिसमे माधव विजयी होता है।

अन्त मे महाराज कामसेन नर्तकी कामकन्दला माधव को भेट करते हैं। दोनो वीणा और नृत्य की साधना मे चन्द्रकला की भाति वढ़ते हैं और राधा का अभिशाप समाप्त होता है।

सत्यग्रह उर्फ सुकन्या सावित्री (सन् १९२३, पृ० २२४), ले० 'मुहम्मद इब्राहीम 'महशर' अम्वालवी, प्र० . जे० एम० सन सिंह एण्ड सन्स लाहौर, पात्र पु० ७, स्त्री ६ ; *अंक :* ३, *दृश्य* . ३७।
घटना-स्थल . राजमहल, जगल, झोपडी।

इस पौराणिक नाटक मे सुकन्या अपनी तपस्या के वल से च्यवन मुनि को नेत्रवान् और वृद्धावस्था में पुन युवा वना देती है। अर्थात् सती नारी के तपोवल का महत्त्व दिखाया गया है।

एक राजा की कन्या सुकन्या अपनी सखी ललिता, ललती, सजोलिता के साथ जगल मे मनोरंजन के लिए जाती है। वहाँ पर्णकुटी मे एक ऋषि वैठा तपस्या कर रहा है जिसके नेत्र चमक रहे हैं। सुकन्या कुतूहल वस अनजाने मे उन्हे काटा चुभो देती है जिससे रक्त की धारा वहने लगती है। राजकुमारी रक्त की धार पर पानी छिडक देती है और ऋषि की आखे नष्ट हो जाती हैं। सुकन्या अन्धे च्यवन ऋषि से क्षमा मागती है किन्तु इतने से ही सुकन्या के मन मे शान्ति नही हो पाती और वह ऋषि की आजीवन सेवा के लिए उनसे विवाह का सकल्प करती है। उसके मा-वाप और उसकी सहेलिया वहुत मना करती हैं किन्तु वह सब की उपेक्षा करते हुए ऋषि से विवाह करने का आग्रह करती है। अन्त मे माँ-वाप प्रसन्नता से विवाह की आज्ञा देते है और शहर का दृश्य दिखाने ले आते हैं जहां राजकुमार सत्यवान को उसका चचा वन्दी वनाने के लिए सेनापति को आदेश दे रहा है।

दूसरे अंक मे राजा अश्वपति अपनी वेटी सावित्री और उसकी सहेलियो को देश-देशान्तर मे भ्रमण कराने ले जाते है। वह एक नगर मे पहुँचते हैं जहा राजकुमार सत्यवान को वन्दी वनाने के लिए उसका चचा सेनापति को आदेश देता है। वह राजा रानी और राजकुमार को वन्दी वनाना चाहता है किन्तु सत्यवान किसी प्रकार उस वन मे पहुँच जाता है जहाँ सावित्री अपने मां-वाप के साथ घूम रही है। सावित्री और सत्यवान एक दूसरे को देख लेते हैं और दोनो एक दूसरे से विवाह करने की प्रतिज्ञा कर

लेते हैं। विवाह के एक वर्ष बाद सत्यवान की मृत्यु होने को है इसे सावित्री जानती है। अन्तिम दिन सत्यवान को साँप काट लेता है और यमराज उसका शव लेने के लिए आते है सावित्री उनसे अपने सतीत्व के द्वारा पति का जीवन, सास-ससुर की आखे और अपना खोया हुआ राज्य मागती है। सावित्री और सत्यवान सुखपूर्वक अपने राज्य को वापस आते है।

इसमे दो नाटको को एक साथ मिलाया गया है।

सत्यनारायण (वि० १६७६, पृ० ११८), ले० : वलदेव प्रसाद खरे, प्र० निहालचन्द एण्ड कम्पनी, नारायण प्रसाद बाबूलेन, कलकत्ता; पात्र . पु० २५, स्त्री ६, अंक : ३; दृश्य ५, ८, ६।
घटना-स्थल : पूजन स्थल।

इस नाटक का आधार हिन्दू जाति मे प्रचलित श्री सत्यनारायण की कथा है। घोर कलिकाल मे भगवान् सत्यनारायण की कथा श्रद्धा और भक्ति से सुनने से परमाराध्य भगवान् भक्त-वत्सल दीनवन्धु के पाद-पद्मो मे स्थान मिलता है, इस बात का इसमे स्पष्टीकरण किया गया है। नाटक मे 'कौमिक' प्रहसन दिया गया है, नाटक का कथानक स्कन्दपुराण के विशेप अश से लिया गया है।

मनुष्य पर विपत्ति का पडना और सत्यनारायण भगवान् की कृपा से उसका कष्ट-निवारण यही नाटक का मुख्य विषय है। कलावती की कथा इसीलिए प्रसिद्ध है।

सत्यभक्त रामदास नाटक (सन् १६४४, पृ० १२८); ले० रामदयाल जडिया 'सेवक; प्र० माडव्य प्रकाशन मदिर, नसीराबाद, *पात्र* : पु० ७, स्त्री ४, *अक* : ३, *दृश्य* : ६, ७, ८।
घटना-स्थल यज्ञमडप, स्कूल, पनघट, महल, हरिजन बस्ती, गगातट, आश्रम।

'तत्कालीन विनाशकारी विभीषिका मे 'सत्यभक्त रामदास जीवन'—'निर्माणकारी पथ का प्रतीक है। गरीब तथा अछूत, पंडो के अत्याचारो से तंग आकर दूसरे मतो का ग्रहण करते है। उनके हृदय मे प्रतिशोध की भावना भी रहती है परन्तु विधर्मी होकर भी हिन्दुओ के विरोधी होते हुए वे हिन्दू धर्म के दोषी नही। भोली का जीवन इसका प्रमाण है। अछूत होने के कारण भोली और उसके बच्चे को कितने कष्ट उठाने पडते है। रुग्ण अवस्था मे उस अछूत बालक को एक बूंद पानी नही मिलता तो एक ईसाई पादरी आकर उसे दवा तथा पानी देता है और अपने तम्बू मे ले जाता है। उसका बेटा रामदास वही पढ लिखकर जज बन जाता है, भोली ईसाई धर्म से प्रभावित होते हुए भी हिन्दू धर्म के आदर्शो को नही भूलती और रामदास को भी जो मूर्ति-पूजा नही मानता कृष्ण-भक्त बनाती है। हिन्दू धर्म की सच्चाई से अवगत कराती है। इस नाटक मे ईसाई धर्म के प्रचारको के सेवाकार्य की सराहना और उनकी त्रुटियो का दिग्दर्शन कराया गया है। जमीदार ठाकुर गोविन्द सिह अछूतो पर अत्याचार कराते है परन्तु उनका भाई जयदेव जो गरीबो की सेवा करता है उन्हे सीधे रास्ते पर ले आता है। जयदेव अछूत-कन्या शीला को गुरुकुल भिजवा देता है और ठाकुर गुरुकुल को पाच हजार रुपये भेट मे देते है। नाटककार का उद्देश्य अछूतोद्धार करना है जो हिन्दू धीरे-धीरे विधर्मी बनते जा रहे है उन्हे फिर से अपने धर्म मे मिलाना है। और हिन्दू धर्म को शक्तिशाली बनाना है। यह कार्य शीला तथा जयदेव के द्वारा कराया गया है।

सत्यमेव जयते (सन् १६६३, पृ० ६६), ले० : सूर्यनारायण मूर्ति; प्र० दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास, *पात्र* : पु० १६, स्त्री ३, *अक* . ३; *दृश्य* : ५, ६, ७।
घटना-स्थल इन्द्र की सभा, आश्रम, शयन कक्ष, महल, जगल, गगा का किनारा, श्मशान।

प्रस्तुत नाटक मे हरिश्चन्द्र की पौराणिक कथा वर्णित है। यह कथा दक्षिण मे प्रचलित

हरिश्चन्द्राख्यान पर आधारित है, इसमे कई कल्पित प्रासगिक कथाओ तथा पात्रो की योजना की गई है।

नाटक के प्रथम अंक का प्रथम दृश्य इन्द्र की सभा का है जिसमे अनेक ऋषियो के मध्य विश्वामित्र वशिष्ठ से यह प्रतिज्ञा करते हैं कि मैं हरिश्चन्द्र को असत्यवादी सिद्ध करूगा। वह हरिश्चन्द्र के पास जाकर अपने एक अनुष्ठान के लिए एक करोड स्वर्ण मुद्राओ की माग करते है। हरिश्चन्द्र के देने पर वह वाद के लिए रख छोडते हैं। हरिश्चन्द्र विश्वामित्र के आश्रम मे हिंसक जन्तुओ का सहार करने जाते हैं तो विश्वामित्र उन्हे अपनी कल्पित पुत्री से विवाह करने के लिए कहते है। उनके न स्वीकार करने पर विश्वामित्र उनका सारा राज्य दान मे ले लेने का वचन लेते हैं, सब कुछ लेकर भी वे एक करोड़ स्वर्ण मुद्राओ की मांग करते हैं। हरिश्चन्द्र एक महीने का समय मांगते है। निश्चित अवधि मे ऋण चुकाने के लिए हरिश्चन्द्र पत्नी तथा पुत्र को काल कौशिक नामक ब्राह्मण के हाथ वेचते है तथा स्वयं चाण्डाल के यहाँ विक जाते हैं। अनेक परितापो एवं कष्टो को सहते हुए भी वे सत्य पर अटल रहते है। एक दिन पुत्र रोहित को फूल चुनते समय साप काट लेता है जिससे उसकी मृत्यु हो जाती है। चन्द्रमती रोहित के शव को लेकर श्मशान जाती है जहां हरिश्चन्द्र पुत्र शोक के अनन्तर भी चन्द्रमती से कफन की माँग करते है। चन्द्रमती कफन के प्रवध मे निकलती है किन्तु एक शिशु के शव को देखकर उसे गोद मे उठा लेती है। प्रहरी उसे अपराधिनी समझते है उसे शिशु की हत्या के अपराध मे मृत्यु-दण्ड के लिए श्मशान ले जाया जाता है तथा हरिश्चन्द्र को चाण्डाल का सेवक होने के नाते हत्या की आज्ञा दी जाती है। वे अपने कर्त्तव्य से तव भी विचलित नही होते तथा जैसे ही खड्ग उठाते है वैसे ही विश्वामित्र प्रगट होकर उनके सत्य एवं निष्ठा की सराहना करते हैं। रोहित भी जीवित हो जाता है। अन्त मे विश्वामित्र की हठता की सत्यवादी हरिश्चन्द्र के समक्ष पराजय हो जाती है।

सत्यमेव जयते नानृतम् (वि० २००१, पृ० ६४), ले०: पी० शा० नवरगी साहित्य रत्न, प्र० : अभिज्ञान प्रकाशन, रांची, पात्र : पु० २२, स्त्री, ७; अक : ५ दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : छोटा नागपुर (खुखरा)।

यह नाटक छोटा नागपुर से सम्वन्धित है। रामगढ राज्य की स्थापना १८वी शताब्दी मे होती है। उन दिनो छोटा नागपुर खुखरा राज्य कहलाता था। राजधानी खुखरा थी जो आजकल राची के पश्चिम मे एक ग्राम मात्र है। नाटक की समस्त घटनायें वही होती हैं।

खुखरा के महाराज को ऐसे ईमानदार और वीर पुरुप की आवश्यकता है जो कि रामगढ घाटी की ओर वढते हुए शत्रु से देश की रक्षा कर सके। वे उस पुरुप का विवाह अपनी पुत्री के साथ कर उसे रामगढ दहेज मे देने का प्रण करते हैं। कई रईस राजा लोग सत्य की परीक्षा मे असफल रहते है पर चोबदार हरदयाल परीक्षा मे खरा उतरता है। चोवदार के साथ राजकुमारी का विवाह होने से महाराज और राजकुमारी की वड़ी वेइज्जती होगी इसलिए महाराज चोवदार को सत्य-भ्रष्ट करने के अनेक प्रयत्न करते है और अन्त मे उसे मारने का हुक्म भी देते हैं। इतने पर भी चोबदार राजकुमारी से विवाह करने और रामगढ का राज्य पाने मे सफल हो जाता है।

सत्यवती नाटक (**राजनैतिक रूपकालंकार**), (सन् १८९६, पृ० २३७), ले० : छगनलाल मुशी; प्र० : वैदिक प्रेस, अजमेर, पात्र : पु० ११, स्त्री, ९, *अक* : ७; *दृश्य* १३, ६, ६, ५, ४, ९।
घटना-स्थल : राजभवन।

हस्तिनापुर के राजा रविसेन अमगलकारी स्वप्न से भयभीत होते हैं। रानी शशिप्रभा उन्हे सान्त्वना देती है—राजमंत्री वुद्धिसागर, कोतवाल और अपने पुत्रो को वुलाकर स्वप्न का वृत्तान्त सुनाता है। राजा के दरवार मे तमल्लुक वेग, अय्याशखा, तकव्वुर-

सत्य विजय (सन् १९१०, पृ० ९२), ले० : डी० डी० शर्मा; प्र० : बाबू बैजनाथ प्रसाद बुक्सेलर, राजा दरवाजा, वाराणसी; *पात्र :* पु० १३, स्त्री १०; *अक :* ३; *दृश्य :* १०, ८, ६।

घटना-स्थल मार्ग, शाहजहा का दरबार, भवन, जंगल, उपवन, पहाड, नदी, पुल और फासी घर।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। बादशाह शाहजहाँ एक दिन अपने दरबारियो से पूछते है कि क्या संसार मे कोई पतिव्रता स्त्री है? शाहजहा की बात सुनकर बूंदी के महाराज यशवन्त सिह अपनी स्त्री के पतिव्रता होने का दावा करते है। यशवन्त सिह के कथन को सुनकर शेरखा नामक दरबारी इसका विरोध करता है और सबूत देने के लिए समय मागता है। शाहजहाँ उसकी यह शर्त स्वीकार कर लेते है कि अगर यशवन्त सिह की बात झूठी हो तो उन्हे फासी दी जाय। शेर खाँ एक कुटनी द्वारा यशवन्त सिह के यहा से उसकी कटार मँगा लेता है और यह भी मालूम कर लेता है कि किरणमई की एक जांघ पर लहसुन का निशान है। शाहजहाँ इन सबूतो के आधार पर यशवन्त सिह को फासी का आदेश देते है। लेकिन किरणमई मौके पर पहुचकर यशवन्तसिह की सच्चाई का सही सबूत पेश करती है। सही तथ्यो से अवगत हो शाहजहाँ यशवन्त सिह को रिहा कर देते है और शेर खा को फासी की सजा देते है।

सत्य हरिश्चन्द्र (वि० १९३३, पृ० ८८), ले० भारतेन्दु हरिश्चन्द्र; प्र० : काशी नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस; *पात्र* पु० १२, स्त्री ३। अक ४, दृश्य १,१ १,१।

घटना-स्थल अयोध्या और काशी का महल, गगा-तट (मरघट)।

हरिश्चन्द्र की सत्य-निष्ठा की सूचना से आतकित इन्द्र ईर्ष्या से प्रेरित होकर उनकी परीक्षा करने का सकल्प करता है और कौशलपूर्वक क्रोधी विश्वामित्र को उनके विरुद्ध इस प्रकार भडकाता है कि वे उन्हे तेजोभ्रष्ट करने की प्रतिज्ञा कर लेते हैं। इधर हरिश्चन्द्र की रानी शैव्या दु स्वप्न के शान्त्यर्थ उपाय करती है और हरिश्चन्द्र किसी ब्राह्मण को अपना राज्य दान कर देने का स्वप्न देखने के बाद उसे सच मान लेते हैं तथा उसी ब्राह्मण राजा के मत्री रूप मे राज्य चलाने की घोषणा करते हैं। इसी बीच-विश्वामित्र पहुंचकर राज्य का सम्पूर्ण अधिकार और उक्तदान के दक्षिणा-स्वरूप सहस्र स्वर्ण मुद्रा मांगते है। हरिश्चन्द्र को ब्रह्मदण्ड का भय दिखलाकर एक मास मे उसे चुकाने की मुहलत देते हैं। अत. हरिश्चन्द्र स्त्री-पुत्र सहित बिककर दक्षिणा के लिए स्वर्ण मुद्राए प्राप्त करने काशी जाते हैं। वहा एक उपाध्याय के हाथ रानी को और चाडाल वेषधारी धर्म के हाथो स्वय को बेचकर हरिश्चन्द्र विश्वामित्र को उक्त स्वर्ण मुद्राएँ चुका देते हैं। अब चाडाल के क्रीतदास के रूप मे वे श्मशान मे शव-कर उगाहने का कार्य करते हैं। इस अवधि मे कापालिक वेषधारी धर्म, महाविद्या और ऋद्धियां-सिद्धियां उन्हे विविध प्रलोभनो द्वारा धर्मभ्रष्ट करने का प्रयत्न करती है। उनके असफल होने पर इन्द्र तक्षक से रोहिताश्व को डसवाकर अन्तिम प्रयत्न करता है। सर्पदंश से मृत रोहिताश्व को अपनी साडी के आधे भाग मे लपेटकर शैव्या अन्तिम संस्कार के लिए श्मशान मे जाती है जहा डोमराजा के कर्त्तव्यपरायण दास के रूप मे राजा सब कुछ जानते हुए भी रानी से कर के स्थान पर कफन का टुकडा मागते हैं। साड़ी को पुन: आधा फाडकर कर चुकाने के लिए रानी ज्योही उद्यत होती है, सभी देवगण प्रकट होकर दृढ प्रतिज्ञ एव सत्यनिष्ठ हरिश्चन्द्र की प्रशसा करते है। शिव की कृपा से रोहिताश्व जीवित हो जाता है। विश्वामित्र राजा को राज्य लौटाते हुए उनकी दृढता सराहते है। इन्द्र क्षमाप्रार्थी होते है।

सत्य हरिश्चन्द्र नाटक (सन् १९२९, पृ० १०८); ले० : मुशी विनायक प्रसाद, प्र० : बाबू बैजनाथ प्रसाद बुक्सेलर, बनारस;

पात्र . पु० १३, स्त्री ३; अंक : ३, दृश्य . ५, ४, ४।
घटना-स्थल : इन्द्रपुरी, जंगल, गोमती नदी का किनारा।

यह पौराणिक नाटक राजा हरिश्चन्द्र की कथा पर आधारित है। हरिश्चन्द्र सत्य-रक्षा के लिए अपने राज्य का, स्त्री का, पुत्र का मोह त्याग कर एक डोम के हाथ बिकते है और स्वय श्मशान की रक्षा करते है। कालातीत मे सर्प-दश से उनका पुत्र रोहित मर जाता है, उसकी माता उसे जलाने के लिए उसी श्मशान पर ले आती हैं जहा के रखवाले उसके पिता हरिश्चन्द्र हैं। उनकी स्त्री के पास घाट का कर देने को कुछ भी नही है और विना कर लिए हरिश्चन्द्र शव को जलाने नही देते। अन्त मे उनकी स्त्री कर-स्वरूप अपनी साडी का आचल फाड़कर देती हैं, उसी समय स्वयं ईश्वर प्रकट हो हरिश्चन्द्र के सत्य पर अडिग रहने की प्रशसा करते हैं एवं रोहित को जीवित कर पुन: उन्हे उनका राज्य देते है।

सत्य हरिश्चन्द्र नाटक (सन् १९०५, पृ० ७२), ले० : वेणीराम त्रिपाठी 'श्रीमाली'; प्र० : ठाकुर प्रसाद एण्ड संस, वाराणसी; पात्र : पु० १०, स्त्री ३, अंक : ३; दृश्य : ६, ५, ५।
घटना-स्थल : अयोध्या का महल, काशी, श्मशान घाट।

यह एक धार्मिक नाटक है। गुरु वशिष्ठ तथा महर्षि नारद द्वारा दानी हरिश्चन्द्र की प्रशसा सुनकर इन्द्र तथा विश्वामित्र को विश्वास नहीं होता। इन्द्र के कहने पर विश्वामित्र दानी तथा सत्य हरिश्चन्द्र की परीक्षा लेने के लिए अयोध्या मे जाते हैं तथा दान मे हरिश्चन्द्र से उनका सारा राजपाट और साथ-साथ दक्षिणा मे एक सहस्र स्वर्ण मुद्रा मागते हैं। दानी हरिश्चन्द्र दक्षिणा की पूर्ति के लिए अपना राज्य छोडकर काशी मे अपने पुत्र रोहित तथा पत्नी शैव्या के साथ जाते है। वहा पर श्रवणदेव, भरणी के हाथ पत्नी व पुत्र को ५०० मुद्रा मे वेचकर स्वय चाडाल के हाथ ५०० मुद्रा मे विक जाते हैं। रानी शैव्या को घर की नौकरानी का काम करना पड़ता है तथा हरिश्चन्द्र श्मशान घाट की रखवाली करते हैं। एक दिन अचानक फूल तोड़ते समय सर्पदंश से रोहित की मृत्यु हो जाती है। शैव्या मृत पुत्र को लेकर श्मशान घाट पर जाती है। वहा हरिश्चन्द्र अपनी रानी शैव्या तथा रोहित को पहचानते हुए भी धर्म तथा सत्य की रक्षा के लिए शैव्या से कर मांगते है। जब शैव्या अपनी साडी का आधा भाग फाडना चाहती है तभी भगवान विष्णु तथा विश्वामित्र प्रकट हो जाते है और हरिश्चन्द्र के सत्य की प्रशसा करते हुए उनके राजपाट तथा पुत्र रोहित को पुन: वापस कर देते हैं।

सत्य हरिश्चन्द्र (सन् १९१५, पृ० ८०), ले० इन्द्रदेव, प्र० : ठाकुर प्रसाद एण्ड संस, वाराणसी, पात्र . पु० १०, स्त्री १; अंक : ४, दृश्य २, २, ५, ७।
घटना-स्थल : अयोध्या का महल, काशी, श्मशान घाट।

इस पौराणिक नाटक मे सत्यवादी हरिश्चन्द्र की प्रसिद्ध कथा चित्रित है। राजा हरिश्चन्द्र की दानशीलता और सत्यवादिता की प्रशंसा सुनकर इन्द्र विश्वामित्र को हरिश्चन्द्र के पास परीक्षा लेने के लिए भेजते हैं। दान मे हरिश्चन्द्र अपना सारा राजपाट विश्वामित्र को दे देते हैं तथा दस सहस्र दक्षिणा देने के लिए अपने को ५ हजार मे चांडाल के हाथ मे वेच देते हैं जहाँ इनको श्मशान घाट की रखवाली करनी है तथा स्त्री शैव्या और पुत्र रोहिताश्व को उपाध्याय के हाथ वेच देते हैं। शैव्या नौकरानी का काम करती है। एक दिन साप के काटने से अचानक रोहिताश्व की मृत्यु हो जाती है। रानी शैव्या मृत पुत्र को लेकर श्मशान घाट पर जाती है। हरिश्चन्द्र अपनी स्त्री के विलाप को सुनकर पहचान जाते हैं लेकिन फिर भी रानी शैव्या से कफन का आधा भाग कर रूप मे मागते हैं। जैसे ही शैव्या अपनी साड़ी का आधा भाग फाडती है वैसे ही भगवान् नारायण प्रकट हो जाते हैं। भगवद् कृपा से

रोहिताश्व जीवित हो जाता है तथा सभी देवतागण हरिश्चन्द्र की जय जयकार करते है।

सत्यवादी हरिश्चन्द्र (सन् १९७१, पृ० ६४), *ले०* : न्यादर सिंह 'बेचैन' देहलवी; *प्र०* : अग्रवाल बुक डिपो, दिल्ली, *पात्र* : पु० ६, स्त्री २।
घटना-स्थल : अयोध्या का राजमहल, काशी, श्मशान घाट।

इस पौराणिक नाटक मे राजा हरिश्चन्द्र की सत्यवादिता दिखाई गई है। वे अपने सत्य पर डटे रहते है जिससे उन्हे डोम के हाथ बिकना पडता है। वे श्मशान-घाट पर अपनी पत्नी तारा से मरे हुए पुत्र रोहित के जलाने का कर उसकी फटी साडी लेकर पूरा करते है। उनकी इस सत्यवादिता से प्रसन्न होकर भगवान् स्वय उन्हे स्वर्ग भेज देते है।

सत्याग्रही नाटक (सन् १९३९, पृ० १२८), *ले०* ब्रजनन्दन शर्मा; *प्र०* : दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास; *पात्र* · पु०, ९, स्त्री ३; *अक* : ३; *दृश्य* · ५, ५, ४।
घटना-स्थल अयोध्या का राजमहल, काशी।

इस नाटक की पौराणिक कथा बहुत प्रचलित है। इसमे सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र की कथा है, जो सत्य की रक्षा के लिए सम्पूर्ण राज्य दान कर देते है साथ ही दक्षिणा चुकाने के लिए स्त्री पुत्र को बेचकर स्वय चाडाल के हाथो बिक जाते है। कथानक पौराणिक होते हुए भी आधुनिक परिवेश मे लिखा गया है।

सत्याग्रही प्रह्लाद (वि० १९७९, पृ० १३१), *ले०* : बलदेव प्रसाद खरे; *प्र०* : निहालचन्द एण्ड को० न० १ नारायण प्रसाद बाबूलेन, कलकत्ता; *पात्र* : पु० २१, स्त्री ८; *अक* : ३; *दृश्य* · ८, ८, ३।
घटना-स्थल : राजमहल, कारागार, पहाड़, अग्निकुण्ड।

इस पौराणिक नाटक मे भक्त प्रह्लाद का भगवत्-प्रेम व माता-पिता के विरुद्ध सत्याग्रह दिखाया गया है। प्रह्लाद बचपन से ही ईश्वर के भक्त थे और हर समय ईश्वर का ध्यान करते थे परन्तु हिरण्यकश्यप इसका विरोध करता है। वह प्रह्लाद को फांसी पर लटकवाता है, पहाड से गिरवाता है, हाथी के पैरो तले कुचलवाता है, तथा अग्नि कुण्ड मे जलवाता है किन्तु सच्चे सत्याग्रही बालक प्रह्लाद का बाल भी बाका नही होता। अन्त मे भगवान् विष्णु के नरसिंह अवतार धारण कर हिरण्यकश्यप का बध करते है।

सत्याग्रही हरिश्चन्द्र (सन् १९१९, पृ० ६४), *ले०* : रामगोपाल पाण्डेय; *प्र०* : श्री हनुमत प्रेस, अयोध्या, *पात्र* . पु० ६, स्त्री २; *अक* · *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल : अयोध्या का राजमहल, काशी, श्मशान घाट।

इस पौराणिक नाटक की कथा सत्यवादी हरिश्चन्द्र से सम्बन्धित है।

देवर्षि विश्वामित्र को अपनी तपस्या पर पूरा अभिमान है। वे इस तपस्या के बल से वशिष्ठ-शिष्य महाराज हरिश्चन्द्र को सत्य से डिगाना चाहते है। विश्वामित्र वशिष्ठ के प्रति बदले की भावना रखते हुए उनके शिष्य से काशी का राज्य दान-स्वरूप ले लेते है। ऋषि ६० सहस्र स्वर्ण मुद्रा दक्षिणा मे माँगते है। इस कर्ज को चुकाने के लिए हरिश्चन्द्र बडी-बड़ी यातनाओ को झेलकर अपनी पत्नी और पुत्र को ३५ भार स्वर्ण मुद्रा मे एक गंधर्व के हाथ बेच देते हैं। बाद मे स्वय भी २५ भार स्वर्ण मुद्राओ के बदले कालिया भगी के यहाँ श्मशान पर कर वसूलने चले जाते है। विश्वामित्र बार-बार उनको विविध छल द्वारा कष्ट देते है। परन्तु हरिश्चन्द्र अपने मार्ग से विचलित नही होते। विश्वामित्र रोहित के जीवन का भी ग्राहक बन जाते है। यही राजा और रानी के सत्य की अतिम परीक्षा होती है, परन्तु दोनो अपने सत्य की कसौटी पर खरे उतरते है।

सदानीरा (सन् १९६५, पृ० ६७), *ले०* : रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'; *प्र०* : पीतम प्रकाशन मन्दिर, आगरा; *पात्र* . पु० ८, स्त्री ४।
घटना-स्थल · घर, बाजार, बम्बई।

इस सामाजिक नाटक मे वाणिज्य और विज्ञान की निरपेक्ष दृष्टियो से मानव जीवन की नवीन समस्याओ का विवेचन किया गया है। शुभ्रक एक भ्रष्ट व्यापारी है जो एक अन्य दुराचारी भ्रष्ट व्यापारी दमनक के सहयोग से व्यापार मे काला धंधा करता है। शुभ्रक का पुत्र कौन्तेय एक वैज्ञानिक है। उसने अग्नि-शलाका का आविष्कार किया है जिसके लिए वह सम्मानित हुआ है तथा अखबारो मे उसका चित्र भी छपा है। शुभ्रक का दूसरा पुत्र कांचन भी काले व्यापार मे लगा हुआ है जो एम० कॉम होकर भी इसी माध्यम से धन एकत्र करने का प्रयास करता रहता है। शुभ्रक का तृतीय पुत्र कोमल घर से रुपए चुराकर अभिनेता बनने के लिए बम्बई भाग जाता है जहाँ वह हत्या के अभियोग मे दंडित होता है। उसकी पुत्री लता आधुनिक शिक्षा तथा एटीकेट्स मे विश्वास करती है तथा दमनक के सहयोगी कण्टक के मिथ्या जाल मे फँस जाती है। केवल सदानीरा आदर्श पात्र है जो इनका विरोध करती है परन्तु कुछ कर नही पाती।

सप्पत (सन् १९६४, पृ० ४८), *ले०* : तृप्तिनारायण लाल; *प्र०* : नवरत्न गोष्ठी मिश्रटोला, दरभगा, *पात्र* : पु० ७, स्त्री; ३; *अंक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल · विजय का कक्ष, पार्क, रास्ता, नीलम का शयन कक्ष, कमल बाबू का दरवाजा एवं गायिका गृह।

इसमे नाट्यकार ने समाज के एक ऐसे वर्ग की घटनाओ को स्पर्श किया है जो आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य मे अनुकूल प्रतीत होती हैं। एक दुश्चरित्र व्यक्ति एक कुमारी के साथ बलात्कार करता है जिसके फलस्वरूप उसका सतीत्व भंग हो जाता है। वह समाज मे अपना मुँह दिखाने लायक नहीं रह जाती है। वह एक नवयुवक के समक्ष शादी का प्रस्ताव प्रस्तुत करती है। पहले तो वह आनाकानी करता है; किन्तु परिस्थिति-वश शादी करने के लिए तैयार हो जाता है। विजय के पिता को जब यथार्थ स्थिति की जानकारी होती है तब उन्हे कष्ट होता है। अतएव इन सब से बचने के लिए नायिका गायिका के रूप मे परिवर्तित हो जाती है, किन्तु वहां भी उसे गुडो और डकैतो का सामना करना पड़ता है। इसी स्थिति मे विजय का पदार्पण होता है जो उसे मुक्त कराता है।

सभासार नाटिका (वि० १७५७, पृ० ५०), *ले०* रघुराम नागर; *प्र०*. नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, *पात्र व अंक-दृश्य-रहित*।

यह रचना दोहा, सोरठा, कवित्त, छप्पय, चौपाई, सवैया, भुजंगप्रयात, त्राटक, अरिल्ल लघुनाराच, मालिनी, साटिक, बरवै छन्दों मे आबद्ध है।

इस रचना मे कोई घटना नही केवल विभिन्न प्रकार के व्यक्तियो के लक्षण विभिन्न छन्दों मे वर्णित है। रचयिता अंक दृश्य के स्थान पर विभिन्न व्यक्तियो के 'लछिन' नाम से इसका विभाजन करता है। प्रारम्भ मे गणेश और सरस्वती की स्तुति साटिक और मालिनी छंद मे की गई है। तदुपरान्त गुरु शिष्य का संवाद है। तदुपरान्त गुरु राजा, धर्म, शिष्य, गम खाने वाले, कपटी, बेवकूफ बेदियानती, गाफिल, हरामी, फूटे कामदार, कचेरी को स्वान, समाचतुर, सभा बिगारा, वातबिगारा मुनशी, दाता, विवेकी, लबारदातार, सूम, लालची, सूर, वेदान्ती, कोटवाल, चुगुल, चोर, ठग, धर्म ठग, परोपकारी, दुष्ट मडली, दगाबाज, सत्यवादी, खुशामदी, बे मुरवती, लज्जावंत, निलज, हिमाइती, आलसी, भ्रमचित, मूरख, बाल मूरख, पोस्ती, भूखे चाकर, विरही त्रियाजित, गुडा, छैलचिकनिया, नास्तिक, आस्तिक उदासी, संतसगति के लक्षण सरस ब्रज भाषा मे वर्णित हैं।

नाटक के मध्य मे पुन. शिष्य गुरु से प्रश्न करता है। वह पूछता है कि प्रभु-स्मरण कितने प्रकार का होता है। तब गुरु शिष्य

को भक्ति के लक्षण समझाता है। अन्त मे आर्त्त, जिज्ञासु, गैर ज्ञानी के लक्षण शास्त्रीय पद्धति पर समझाए गए है।

सभ्य स्वयंवर (सन् १९१२, पृ० ५५), *ले०* · हरिहर प्रसाद जिन्जल, *प्र०* अग्रवाल प्रेस, गया; *पात्र* पु० १४, स्त्री ५; *अक* ५; *दृश्य* ३, ३, ३, ३, ३।
घटना-स्थल मकान, दुकान, मगशाला।

इस नाटक मे नाटककार ने यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि कलिकाल मे अवगुण भी गुण हो गया है।

नाटक मे प्रथम अंक मे लडके एवं लड़की की शादी हेतु कुण्डली मे राशि पडित जी के द्वारा उत्तम बतायी जाती है। इसके बाद भोदूचद्र अपने मित्र डपोर सख प्रसाद की सहमति इस विवाह के सबंध मे लेते हैं। डपोर संख कहता है कि झक्खड़दास (लड़का का पिता) आपसे वड़ा नही है लेकिन भोदू चन्द्र कवि को उक्ति से उन्हे समझाता है। इसके बाद डपोर संख कहता है कि 'बाप वड़ो न भैयो सबसे बडो रुपैयो'। भोदूचंद्र झक्खडदास के पास जाता है और विवाह की बाते करता है। झक्खडदास इसे बाल-विवाह समझकर इन्कार तो करता है पर अंत मे तैयार हो जाता है।

कुछ दिन के बाद छेका तथा मुँह दिखावा आदि हो जाता है। अब विवाह का दिन निश्चित करना बाकी रह गया है। भोदूचद्र अपने मित्रो एव नौकरो आदि से सलाह लेते है लेकिन वे लोग झक्खडदास के यहाँ शादी करने से मना करते हैं। पुनः भोदू डपोरसख के पास आता है और विवाह के सवध मे पूछता है। एक दिन की बात है कि डपोरसख और झक्खड़दास मे पैसे के कारण कुछ झड़प हो जाती है जिससे डपोरसख उनसे (झक्खड) रुष्ट हो जाता है। अत वे उनके यहाँ शादी करने से मना करते हैं और यह भी कहते हैं कि इसमे चिन्ता की बात ही क्या है—केवल छेका ही तो हुआ है। उसे छोड दिया जाएगा। अंत मे भोदू भी इन्कार कर देता है तथा वह किसी धनी-मानी व्यक्ति के घर अपनी लडकी की शादी करना चाहता है। उसकी पत्नी भी अब यही कहती है कि जब हो तब लखपति के यहाँ ही शादी हो पर लखपति कोई मिलता नही है।

अत मे भोदू अपनी लडकी के लिए एक 'स्वयवर' का आयोजन करता है और उसमे आये एक जौहरी से उसकी शादी कर देता है।

समय नाटक (वि० १९७४, पृ०५८), *ले०:* काशीनाथ वर्मा; *प्र० :* बाबा भगवानदास मंत्री, सरस्वती कार्यालय जालपादेवी, काशी, *पात्र* . पु० १६, स्त्री ५; *अक* ४, *दृश्य :* ६, ९, ४, २।
घटना-स्थल : फुलवारी आश्रम, घर।

यह एक रहस्यमय नाटक है। रामकृष्ण की बेटी स्वर्णा घर से भाग जाती है। किसी नकली स्वर्णा के मरे रूप का दाह संस्कार कर दिया जाता है। स्वर्णा एक योगी के आश्रम मे आश्रय लेती है। पुलिस के वहा पता लगाकर पहुचने पर वह वापस नही जाना चाहती, वह संसार से अपनी विरक्ति प्रगट करती है। क्योकि घर से भागने के पहले गोपाल दास की दूसरी युवती पत्नी स्वर्णा के पति को मार डालती है। अंत मे पुलिस से सत्य बयान कर स्वर्णा योगी के आश्रम मे ही रह जाती है। और वही अत तक जीवन व्यतीत करती है। गोपाल दास की युवा पत्नी को उसके कर्मो का फल मिलता है।

समय का फेर (वि० १९९१, पृ० ९७), *ले० :* महादेव प्रसाद शर्मा; *प्र० :* पुस्तक एजेसी, बम्बई, *पात्र* · पु० १८, स्त्री १०; *अक :* ३, *दृश्य :* ६, ५, ४।
घटना-स्थल · मानिक किसान का घर, कारागार।

इस सामाजिक नाटक मे समय का चक्र दिखा कर बताया गया हे कि समय के साथ-साथ चलकर जो महाजन अर्थात् धनी है, दुनिया उन पर झुकती है। प्रस्तुत नाटक मे एक किसान मानिक और उसके पुत्र मोहन को जिनके घर खाने के लिए कुछ भी

नही है लगान न देने पर पटवारी पकड कर जेल भेज देता है। इधर रायबहादुर किशोरीलाल अपने मित्रो के साथ बैठकर मदिरापान करते तथा वेश्या का नाच देखते हैं। उसके पास भी वेश्यागमन के कारण एक भी पैसा नही रहता जिससे उसका कोई साथ भी नही देता तो वह बहुत शर्मिन्दा हो जाता है। मानिक अपने देनदार के लगान न देने के कारण दुख से मर जाता है। उसका एक पुत्र मोतीलाल रामलाल के यहाँ रह कर उनके घरवालों की सेवा करता है। उसका प्रेम रामलाल की पुत्री शान्ति से हो जाता है। वह देशाटन के समय कुछ कठिन प्रश्नो का उत्तर देकर राज्य प्राप्त कर लेता है फिर अपने गुरु रामलाल की आज्ञानुसार उसकी पुत्री शांति से विवाह कर लेता है।

समय सार नाटक (टीका सहित) (वि० १६६३, पृ० ६१६), ले० : बनारसीदास जैन, *टीकाकार :* रूपचन्द पांडे, प्र० नंदलाल दिगम्बर जन ग्रन्थमाला, भिंड, ग्वालियर; *पात्र-रहित* अंक के स्थान पर द्वार है।

इस नाटक की कथा वस्तु १३ अधिकारो मे वर्णित है। प्रथम अधिकार 'जीवद्वार' मे जीव और आत्मा के स्वरूप का स्पष्टीकरण करते हुए आत्म स्वरूप को चेतन, सिद्ध तथा अमूर्त बताया है। जीव को भी चैतन्य एवं ज्ञानवान् बताते हुए, 'तैसेनव तत्त्व में भयो है वहु भेपी जीव' कहकर सांसारिक तत्त्व प्रपंचो मे पडने से कवि उसे 'शुद्ध रूप मिश्रित अशुद्ध रूप' की सज्ञा देता है। परमात्मानुभव से ही भेद बुद्धि का अन्त बतलाते हुए कवि ने भव्य जीवनचर्या से मोहपाश का नाश करने की ओर संकेत किया है। रागादिक वृत्तियाँ आत्मानुभव मे बाधक हैं। पुन: ज्ञान के प्रकाश से मोहान्धकार का नाश करके पूर्ण आत्मस्वरूप की पहचान सरल बताई गई है। तत्त्व प्रकाश एवं विशद विवेक आदि के द्वारा सहज स्वरूप के परखने की शक्ति विकसित हो चलती है। जीव के स्वरूप का निखार तप एवं ज्ञान की अग्नि मे तपाने से होता है।

दूसरे अधिकार 'अजीव द्वार' मे प्रथम शुद्ध, प्रकाश्य तथा ज्ञान के विलास रूप परमात्मस्वरूप की वदना की जाती है। तत्पश्चात् जीवाजीव का विभेद करते हुए उनका अन्तर स्पष्ट किया गया है। जब तक जीव कर्मबन्धनो से जकड़ा है, माया प्रपञ्चो मे रत है तब तक वह आत्माराम चेतन, अनंतगुण से सर्वथा भिन्न और वेमेल है लेकिन, जब शुद्ध एवं चैतन्यस्वरूप का अनुभव हो जाता है, आत्मस्वरूप मे रमण करने की शक्ति आ जाती है, कर्मो को वमनवत् त्याग दिया जाता है, उस स्थिति मे 'एक ब्रह्म नहि दूसरो दीसै अनुभव माहि' का अनुभव सामने आलोकित होने लगता है, यही जीव की सिद्धावस्था है। आगे चलकर कवि चैतन्यानुभवाराधन मे अखण्डरसास्वादन की क्षुधा की पूर्ण तृप्ति बतलाता है। अंत मे "चेतन जीव अजीव अचेतन', तथा 'मोहसौं भिन्न जुदो जड सौं चिनमूरति नाटक देखने हारौं" से जीवाजीव के भेद का स्पष्ट करते हुए द्वितीय अधिकार समाप्त किया जाता है।

तीसरे (कर्त्ता, कर्म क्रिया द्वार के) अधिकार में ज्ञान तथा अज्ञानावस्था का भेद दिखाया गया है। मोहवश जीव आत्मा को ही समस्त कर्मो का कर्त्ता समझता है। परन्तु ज्ञान होने पर उसे स्व-पर का अन्तर स्पष्ट होने लगता है तथा यह भी ज्ञात हो जाता है कि आत्मा कर्त्ता नही द्रष्टा मात्र है।

चौथे अधिकार मे बताया गया है कि पाप-पुण्य दोनों ही मोक्ष-प्रतिरोधक हैं। पाप और पुण्य दोनो मे जीव को निर्बन्ध-निर्मुक्त एवं चिद्विभा से विभासित करने के लिए इन दोनों ही को एक-सा समझ कर त्यागना ही अच्छा बताया गया है।

पाँचवाँ अधिकार 'आश्रव अधिकार' नाम से विहित है। आश्रव का अर्थ है, 'मिथ्यात्व'। यह भाव और द्रव्य भेद से दो प्रकार का है। ये दोनो अवस्थाये शुद्ध प्रकाश्य, चिद्रूप के साक्षात् मे योग देने मे असमर्थ है। सम्यग्दर्शन से ही सम्यग् ज्ञान-संभव है। अतएव आश्रवत्व को दूर कर ज्ञान वान् सम्यग्दर्शन की शक्ति को ही अधिक विभामय बनाने का प्रयत्न करे।

यही इस अधिकार का मूल विषय है ।

छठा अधिकार 'संवरद्वार' समता का विवेचन करता है। भेदबुद्धि हेय है। अतः आत्म-साक्षात्कार की वह स्थिति जब उसे स्वभाव-परभावज्ञान की अवस्था में ले जाती है, उस समय सम्यग् ज्ञान-बल से साधक को चाहिए कि वह परभाव से लिप्त होने मे अपनी रक्षा करे और समत्वबुद्धि से 'स्व' की परख करे; आत्मज्ञान तभी सुलभ होगा। यही समत्वबुद्धि (संवर) देवत्व की क्रमिक उन्नति के द्वारा मुक्ति प्रदान करती है।

सातवा अधिकार 'निर्जरद्वार' है। सवर द्वार की समत्वबुद्धि की जिसे प्राप्ति हो गई वह 'निर्जरा द्वार' के भाव मे प्रवेश करता है। इस स्थिति मे उसे कर्म-बन्धन बाध नही पाते। उससे संपत्ति-विपत्ति एक सी लगती है क्योकि दोनो ही कर्म से उद्बुद्ध है— कर्मवश है। इस दशा मे जीव 'कर्मबन्ध प्रहास्यति' की स्थिति मे होता है। उसे निर्मल सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति होती है।

आठवॉ अधिकार, 'बंधद्वार' है। पूर्वोक्त राग-द्वेष, पुण्य-पाप, शुद्धाशुद्ध आदि के बंध का विनाश करने के लिए विवेक बुद्धि (प्रज्ञा-सम्यग्ज्ञान) आवश्यक है। सम्यक् बुद्धिवाला आत्मस्वरूप का दर्शन करता है, वही परम पद भी प्राप्त करता है। यही इस अधिकार का विवेच्य विषय है।

'मोक्षद्वार' नामक नवे अधिकार मे जीव की मुक्तावस्था स्पष्ट की गई है। यह सदा मुक्त है। कर्मबन्ध-त्याग की अवस्था इसे उस सत्य से अवगत करा देती है। आत्मा का पर-द्रव्याहकार ही आश्रव (मिथ्यात्व) की अवस्था होती है। कर्म-बन्धावच्छिद स्वरूप ही सिद्धावस्था है। अतः आत्मस्वरूप पहचानने के लिए आत्म-चिन्तन द्वारा 'स्वभाव ज्ञान' का स्वारस्य आस्वाद्य है। स्वानुभूति, स्वरूप ज्ञान-आत्मसाक्षात्कार की यही दशा मुक्ति या मोक्ष कहलाती है।

दसवे 'सर्व विशुद्धि द्वार' मे स्वरूप-ज्ञान मे बाधक कर्म-प्रपंच-बुद्धि के नाशार्थ आत्मा के निर्लेप स्वरूप की दृढ भावना आवश्यक बताई गई है। ऐसा करने के लिए आत्मा-नुभव, आत्मस्वरूप ज्ञान का सतत चिंतन अनिवार्य है।

ग्यारहवां 'स्ताद्वाद अधिकार' है। इसमे स्वचतुष्टय, पर-चतुष्टय, स्याद्वाद के सप्त-भंग तथा एकान्तवादियो के चतुर्दशनय-स्वरूपो का विवेचन किया गया है।

बारहवाँ 'साध्य साधक द्वार' अधिकार है। इसमे साध्य-साधक स्वरूप को स्पष्ट करते हुए बताया गया है कि आत्मा ही साधक तथा वही स्वय साध्य भी है। अवस्था-भेद से उसका यह तारतम्य स्पष्ट हो जाता है। उसकी उच्चावस्था अभीष्ट लक्ष्य (साध्य) है तथा निम्नावस्था लक्षी या साधक है।

तेरहवॉ अधिकार 'चतुर्दश गुणस्थाना-धिकार' है। अनेक गुणस्थानो मे १४ गुण-स्थान प्रमुख माने गए है। इन गुण स्थानों की द्विविधा से दूर होकर जीव को स्वच्छंद गति से आत्मचिंतन-आत्मानुभव-आत्म-साक्षात् करना चाहिए। मूलत· इस अधि-कार का यही विषय है।

अन्त मे ४० छन्दो मे अन्तिम प्रशस्ति लिखते हुए नाटक का अन्त किया गया है। यह नाटक कुदकुदाचार्य कृत समय पाहुड की अमृत चंद मुनि की टीका पर आधृत है। समय का अर्थ है आत्मा और पाहुड का अर्थ है सार, अर्थात् शुद्धावस्था।

समर्पण (सन् १९७०, पृ० १३४), ले० : जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिन्द', प्र० · रवीन्द्र प्रकाशन, ग्वालियर, आगरा; *पात्र* · पु० १०, स्त्री ८; *अक : ३ दृश्य* ४, ४, ४। *घटना-स्थल* · हरिजन बस्ती।

इस नाटक मे प्रेम, विवाह आदि की बातो को मूर्खता से पूर्ण और समाज-सेवा के मार्ग मे बधन बताया गया है। इला अपने मा बाप और सखियो के बहुत दबाव डालने पर भी अच्छे-अच्छे युवको के साथ विवाह-प्रस्ताव ठुकरा देती है। हरिजन बस्ती की एक सभा मे इला की भेट नवीन से होती है। नवीन हरिजन-सेवक है। वह भी प्रेम, विवाह आदि का कट्टर विरोधी है और तपस्वी, दृढव्रती युवक-युवतियो का एक दल तैयार करना चाहता है जो निष्काय भाव से हरिजनो, किसानो तथा मजदूरो का उद्धार-कार्य करे। इला नवीन को अपना आदर्श

एव पथ-प्रदर्शक मानकर मानव-समाज-सेवा मे जुट जाती है। इनके विचारो तथा कार्यो से प्रभावित होकर सुषमा, माधवी, माया, उपेन्द्र और गजेन्द्र सिंह आदि भी नवीन के दल मे शामिल हो जाते हैं। नवीन के कार्यो से प्रभावित होकर विहारी भी प्रेम, विवाह से घृणा करने लगता है।

इला विनोद के साथ विवाह-प्रस्ताव को ठुकरा देती है। विनोद सुषमा के साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट करता है लेकिन इला के विचार से प्रभावित होने के कारण सुषमा भी उसका प्रस्ताव ठुकरा देती है। विनोद अपने प्रेम की असफलताओ के कारण बहुत निराश होता है। गजेन्द्र उसे प्रेम मे सफलता पाने का उपाय बताते हुए कहता है कि तुम जिससे प्रेम करते हो उसी के अनुरूप बन जाओ। विनोद निराश एव कुठित माधवी को मीठी बातो मे बहकाकर उससे शादी कर लेता है। अब दोनो हरिजन-बस्ती मे जाकर उनकी सेवा करने लगते हैं। दोनो हरिजनो को भडकाकर इला और नवीन के दल को बस्ती से निकलवा देते हैं। माया और गजेन्द्र सिंह नवीन के आदेश पर किसानो के बीच गाव मे रहकर काम करने लगते है। किसानो के दबाव पर उन्हे भी शादी करनी पड़ती है। इला अपने दल के साथियो के इस पतन पर बहुत दुखी होती है। नवीन भी इला के प्रति अपना उत्कट प्रेम प्रकट करता है। इला भी अन्तर्मन मे नवीन से प्रेम करती है, किन्तु वह नवीन की बाते सुनकर बहुत दुखी और नाराज होती है। नवीन हमेशा के लिए इला को छोड़कर मजदूरो मे काम करने चला जाता है। एक दिन इला सुषमा से बाते कर रही थी कि डाकिया उसे अखबार दे जाता है। अखबार खोलते ही उसकी निगाह 'नवीनचन्द्र मजदूरो का नेतृत्व करते हुए गोली से मारे गये' पर पडती है। बरसो की तपस्या और संयम का बाँध एक ही झटके मे टूट जाता है और इला विलख-विलखकर रोती हुई कहने लगी कि मैंने नवीन से प्रेम-विवाह किया है, मैं नवीन की विधवा हू। इला उसी समय नवीन के अधूरे काम को पूरा करने के लिए मजदूरो के पास चली जाती है।

समाज (वि० १९८३, पृ० १६१), ले० : बहुगुणा, प्र० गंगा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ, पात्र पु० १२, स्त्री ४; अक : ३, दृश्य . ७, ७, ७।
घटना-स्थल . सेवा आश्रम।

इस सामाजिक नाटक मे विधवा-विवाह की समस्या दिखाई गई है।

लाडली प्रसाद एक विधवा से विवाह कर लेने के अपराध मे समाज से च्युत कर दिये जाते हैं। पत्नी के देहावसान के उपरात लाडली प्रसाद अपनी नन्ही पुत्री शान्ता और अपनी समस्त सम्पत्ति स्वामी विशुद्धानन्द को सौप कर अज्ञात वास को चले जाते है। इसमे स्वामीजी के विचारो से प्रकट होता है कि ऊँच-नीच की भावना को जन्म देने वाले इसी समाज के व्यक्ति है न कि ईश्वर। स्वामी की प्रसिद्धि स्थानीय ब्राह्मणो और समाज के अन्य श्रेष्ठ व्यक्तियो को चुभने लगती है। इन श्रेष्ठ सामाजिको मे से सेठ हरिदास का पुत्र ज्ञान प्रकाश स्वय स्वामी जी का शिष्य हो जाता है। सेठ जी उसे घर से निकाल देते हैं और अपनी पुत्री सरला का विवाह एक दुराचारी व्यक्ति धनपत से कर देते है। सेठ जी अपनी समस्त संपत्ति भी उसी के नाम कर देते है। धनपत आम बिगड़े शाहजादो की तरह शराब और वेश्याओ पर धन की वर्षा करता है। सेठ जी के विरोध करने पर धनपत उन्हे घर से निकाल देता है। सेठ अपनी बदली हुई परिस्थिति मे कगालो की तरह घूमते हुए काशी के एक आश्रम मे पहुँचते है जिसके सयोजक लाडली प्रसाद जी ही होते है। शान्ता और ज्ञान प्रकाश का सबध होने से इस आश्रम मे सभी बिछुड़े हुए एक-दूसरे से मिलते हैं।

समाज (वि० १९८६, पृ० ११२), ले० : छविनाथ पाडेय; प्र० साहित्य सेवक कार्यालय, काशी, पात्र : पु० १४, स्त्री नही, अक : ३; दृश्य . १०, १०, ६, ४।
घटना-स्थल : देहली-शुद्धि-सभा, सडक, चमारो की बस्ती, ग्राम, नगर का एक प्रान्त।

इस सामाजिक नाटक मे हिन्दू जाति के अन्तर्गत व्याप्त छुआछूत की समस्या को उठाया गया है। नित्यानंद शास्त्री वेदपाठी और पुजारी है पर षोडशवर्षीया एक सुन्दरी को देखकर उसे प्राप्त करने को लालायित हो जाते हैं। ग्राम मे चमारों की बस्ती है। गर्मी मे नदी और तालाब का जल सूख जाने पर उन्हे मन्दिर के पास स्थित कूप से जल भरने नही दिया जाता अत: वे प्यासे तड़पते हैं। गाँव के जमीदार ठा० निदानसिंह कहते है कि "धर्माचार्य नित्यानंद शास्त्री के रहते इस राज्य मे किसी तरह का अधार्मिक आचरण नही हो सकता।" ठा० साहब के गाव नसीमपुर मे शुद्धि सभा के संचालक नेकीराम शर्मा और भूदेव मिश्र के उद्योग से हिन्दू-सभा का कार्यालय खुलता है। ग्राम के अछूत भाइयो को आश्वासन मिलता है। पं० नेकीराम-शर्मा के सम्पर्क मे आने से ठा० निदानसिह में परिवर्तन होता है और वे अछूतो के लिए उनकी बस्ती के पास एक मन्दिर बनवा देते है और कुआँ खुदवा देते है। मन्दिर की प्रतिष्ठा के समय छूत-अछूत सब एकत्र होते है और ठा० निदानसिंह घुकछू चमार को उठाकर गले से लगा लेते है।

ग्रामीण जनता मे हिन्दू-धर्म के प्रति जागृति हो जाती है और मौलवी लियाकत हुसेन का अछूतो को मुसलमान बनाने का स्वप्न टूट जाता है।

समाज का शिकार (सन् १९१६, पृ० १३०), *ले०* . राव रामदास गुप्त; *प्र०* : उपन्यास बहार आफिस, बनारस; *पात्र* : पु० १६, स्त्री ४, *अक* ३; *दृश्य* : १२, ८, ३।
घटना-स्थल : भवन, झोपडी, आर्य-संघ, ग्राम पथ।

इस सामाजिक नाटक मे ऐसे वर्गो का वर्णन है जो अकारण ही समाज के शिकार हो रहे है। लेखक ने साहित्यकार के विषय मे लिखा है कि जिसका नाम चमक गया है उसी को पैसा मिलता है, उसी को ख्याति मिलती है नही तो अच्छे-अच्छे साहित्यकार मारे-मारे फिरते है। दूसरा प्रसंग गरीबी-अमीरी का है। हरिदास नामक एक पात्र कहता है—"मतिमन्द ! गरीबी का रोना, अमीरी की हँसी हिन्दू घरों के बाहरी रूप है। जब तक इस धरती पर हिन्दू जाति है जातीयता मे समाज का विधान है, विधान मे दहेज की प्रथा है तब तक समाज की आशा भी आवश्यक रहेगी।" इस प्रकार लेखक ने दहेज प्रथा पर भी करारी चोट दी है। जाति-प्रसग भी इसमे उठाया गया है। दयाराम एक बिरादरी से निकाला हुआ व्यक्ति है तथा समाज उसको नाना प्रकार का कष्ट देता है। उसकी पुत्री को हरिदास सेठ का पुत्र जाल मे फँसाकर पुन. छोड़ देता है। इस प्रकार समाज मे प्रचलित कुरीतियो का नाटक मे अच्छा चित्रण है।

समाज की चिनगारी (सन् १९६१, पृ० ५६), *ले०* : देवेन्द्र नारायण एवं सत्यनारायण गुप्त, *प्र०* : श्री गंगा पुस्तक मन्दिर, पटना; *पात्र* : पु० ७, स्त्री २; *अक* : २; *दृश्य* : ४, ४।
घटना-स्थल: नदी का किनारा, झोपड़ी, बाटिका, दरोगा का कमरा, सेवा सदन।

इस नाटक की कथा अभिशप्त नारी जीवन की वेश्यावृत्ति से सम्बन्धित है। धनिक-वर्ग गरीबो की विवशता का लाभ उठा उनकी मान-मर्यादा से खुलकर खेलता है। स्वजनो से बिछुडी निर्मला को सेठ अपनी काम-वासना का शिकार बनाता है, इसी से वह अपने अवैध नवजात शिशु को गंगा-लहरियो को सौपने के लिए अपने वृद्ध सरक्षक को दे देती है। उसका बचपन का बिछुडा भाई शेखर अपने मित्रो की सहायता से वेश्या-उद्धार आन्दोलन चलाकर इस अभिशाप से नारी-जाति को मुक्त करना चाहता है। अन्त मे अपनी बहिन को पहचान कर उसका विवाह करने मे सफल हो जाता है।

समाज चित्र (सन् १९१९, पृ० ७०), *ले०* : कृष्ण कुमार मुखोपाध्याय, *प्र०* : बैल बेडियर प्रेस, इलाहाबाद; *पात्र* : पु० ८, स्त्री २; *अक* : ३, *दृश्य* : १, १, ५।

इस नाटक मे समाज की वर्ण-व्यवस्था पर व्यग्य किया गया है और देश की दुर्दशा का कारण वर्ण-व्यवस्था को ही माना गया है। नाटक के प्रथम अंक मे एक पात्र कहता है "यदि यथार्थ से देखा जाय तो ससार मे केवल दो ही जातियाँ है एक स्त्री और दूसरी पुरुष जाति।" आगे चलकर एक स्थान पर नायक कहता है कि "ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार वर्णो के नाम जो है वे सब गपोडशंख है। वर्ण केवल दो ही है : गौर और श्याम।" वह सारे समाज को वर्ण व्यवस्था से मुक्त कराना चाहता है। किन्तु एक स्थान पर वह अपने ही विचारो का मानो खडन करते हुए कहता है कि श्याम और गौर वर्ण मे उत्तम है गौर वर्ण। न टक मे वर्ण व्यवस्था के सम्बन्ध मे कोई विचार स्पष्ट नही दिखाई पडता।

समाज सेवक (सन् १९३३, पृ० १७३), *ले० :* बलदेव प्रसाद मिश्र, *प्र० :* साहित्य समिति, रायगढ; *पात्र* . पु० १३, स्त्री २; *अक :* ५, *दृश्य :* ८, ६, ७, ६, ५।
घटना-स्थल : गॉव।

ग्रामीण जीवन मे फैली हुई विषमता की भावना को आधार बना कर नाटक की रचना की गई है। नाटक का नायक मोहन मानव-एकता का प्रचार करना चाहता है। उसी गाँव का एक ब्राह्मण-कुमार मोहन का विरोध करते हुए अपने पिता का मत इस प्रकार प्रगट करता है—'अपने सुख-दुःख और गांव के सुख-दु ख मे अन्तर है। यहाँ तो कई चमार भी बसते है, जिनको छूने से हमारा धर्म नष्ट हो जावेगा। हम उनके सुख-दु ख मे शामिल कैसे हो सकते है।'

मोहन इसका उत्तर देते हुए कहता है कि 'जिस ईश्वर ने तुम्हे बनाया है उसी ने उनको भी जन्म दिया है। फिर एक ही पिता की सन्तानो मे इस प्रकार का भेद क्यो है।' वह एक वेहोश डोम की सेवा करता है। उसको गोद मे लेकर पानी पिलाता है।

मोहन ग्रामोद्धार के लिए सभी जातियो के नवयुवको का एक दल तैयार करता है और अपने साथियो को मानव-सेवा के लिए तैयार करता है।

इस प्रकार गान्धी जी के प्रभाव से सत्य, अहिंसा, अछूतोद्धार आदि का कार्यक्रम इस नाटक मे निर्धारित किया गया है।

समाधान (सन् १९४३, पृ० ११२), *ले० :* राम सजीवन; *प्र०* . पाटलीपुत्र प्रबोध प्रकाशन, पटना, *पात्र* पु० ६, स्त्री २, *अक* · ३; दृश्य-रहित।

प्रस्तुत गीति-नाट्य एक प्रणय-कथा पर आधारित है। प्रेम का त्रिकोण ही उसकी आधार-शिला है। किशोर और मृदुलिनि के प्रेम-मार्ग का कण्टक है किशोर का साथी रणेन्द्र, जो स्वयं मृदुलिनि से प्रेम करता है। मृदुलिनि को पाने के लिए वह भोले किशोर को मृदुलिनि की दृष्टि मे वासना का पुतला और पतित सिद्ध करता है। भोला किशोर रणेन्द्र की आशा के अनुकूल मृदुलिनि से प्रतारणा और तिरस्कार पाता है। परन्तु रणेन्द्र की शेष योजना सफल नही होती। मृदुलिनि की सखी मलयजा उसे वस्तुस्थिति से परिचित कराकर किशोर के प्रति उसके हृदय मे वास्तविक प्रेम को पुनर्जाग्रत कर दोनो का पुर्नमिलन करा देती है। किशोर अपने प्रणय की सात्विकता सिद्ध करने के हेतु मृदुलिनि को बहन के रूप मे ग्रहण करता है और रणेन्द्र को भी क्षमा प्रदान कर अपने हृदय की उच्चाशयता का परिचय देता है।

समाधि (सन् १९५२, पृ० २१४), *ले० :* विष्णु प्रभाकर, *प्र०* ओरियण्टल बुक डिपो, दिल्ली; *पात्र :* पु० १५, स्त्री ८; *अक :* ३, *दृश्य* . ४, ६, ८।
घटना-स्थल : तक्षशिला, कश्मीर।

भानुगुप्त वालादित्य युद्ध मे हार कर एक वार अपना हठ छोड बैठने है, परन्तु अपने अमात्य, महादेवी, राजमाता, तक्षशिला के महाविहार की वृद्धा और युवती भिक्षुणियो तथा यशोधर्मन आदि के उकसाने पर हूण राजा मिहिरकुल पर आक्रमण करते है। उनकी विजय भी होती है, परन्तु मिहिरकुल की पत्नी द्वारा राजमाता से क्षमा-याचना

पर भानुगुप्त उसे मुक्त कर पचनद प्रदेश का राज्य दे देते है ।

अपने सहोदर द्वारा प्रचारित निषेधाज्ञा से बाधित होकर मिहिरकुल काश्मीर-नरेश का आश्रय ग्रहण करता है और अवसर पाकर उसे सिंहासन से च्युत कर अधिपति बन बैठता है। हूण सैनिको के सहयोग से वह प्रजा को नानाविध त्रस्त करता है । त्रस्त प्रजा के उद्धार के लिए यशोधर्मन राष्ट्रीय युवको के एक दल के साथ हूणो का प्रबल विरोध करता है । हूण सेनापति मालव सेनापति रविवर्मन की भतीजी मालवी से बलात् विवाह करना चाहता है। रविवर्मन द्वारा विरोध प्रकट करने पर उन्हे मृत्यु-दण्ड मिलता है परन्तु यशोधर्मन के सतत प्रयास से उसके जीवन की रक्षा होती है। मालवी छद्म वेश मे महलो मे रहकर समस्त आवश्यक सूचनाओ मे स्वपक्ष को अवगत कराती रहती है और उचित अवसर पर कीर्तिवर्मन की सहायता से मालव नरेश की हत्या कर उसके राज्य पर अधिकार कर लेती है। मिहिरकुल प्रबल आक्रमण करता है किन्तु पराजित हो जाता है। यशोधर्मन की हूणो पर विजय के सुखद समाचार को सुनकर चेदिराजमहिषी आनन्दी आनंदातिरेक से मृत्यु को प्राप्त होती है। यशोधर्मन उसकी स्मृति मे समाधि बनवाता है। नाटक मे दूसरा नाटक खेला जाता है।

समुद्र गुप्त (सन् १९५७, पृ० ९८), *ले०*. वैकुठनाथ दुग्गल, *प्र०* आत्माराम एण्ड सस, दिल्ली, *पात्र* पु० ९, स्त्री ६ ; *अंक*. ३, *दृश्य* ७, ८, ६ ।
घटना-स्थल : कृष्णा नदी का तीर, महाबोधि विहार का मन्दिर, पाटलिपुत्र का राजोद्यान, काँची के राजभवन का मन्त्रणागार, पाटलिपुत्र का राजभवन, शिविर, मन्दिर ।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। भारत सम्राट् समुद्रगुप्त कृष्णा नदी के किनारे खड़े होकर प्राकृतिक सौन्दर्य का निरीक्षण कर रहे है। इसी समय एक पक्षी इनके समीप आकर गिरता है। पक्षी के मुख से स्वर्णमुद्रा गिरती है जिसे देखकर महाराज चिन्तित होते है कि सहसा एक सुन्दर युवती इनके पास आकर बातचीत करती है। किन्तु वह महाराज का परिचय पाकर कुछ डरती है। महाराज उसके अपराध को क्षमा कर उसे अपनी मोती की माला देते है। सम्राट् समुद्रगुप्त कचन की निडरता और सुन्दरता से बहुत प्रभावित होते है। दक्षिण के देश मिलकर अपनी स्वाधीनता के लिए सम्राट् से युद्ध की घोषणा करते है और काची-नरेश कृष्ण गोप के नेतृत्व मे चढाई करते है। राजकुमारी कचन युवराज अखिल के वेष मे सम्राट् की सेना के छक्के छुडा देती है। कृष्णगोप वीरगति को प्राप्त होते है। युवराज अखिल बन्दी बना लिए जाते है। महाराज के सामने पहुँचकर युवराज प्रतिशोध की कामना करता है। सम्राट् युवराज की इच्छापूर्ति का आश्वासन देते है। वसुबन्धु नाम का बौद्ध कवि कचन से प्यार करता है और उसे प्राप्त करने के लिए विजयोत्सव के समय समुद्रगुप्त पर छुरे से प्रहार करता है। इस प्रहार को अखिल सामने आकर झेल लेता है और सम्राट् की बाहो मे लुढककर मरते-मरते अपना वास्तविक परिचय दे जाता है कि 'मैं ही कंचन हूँ।' यह जानकर सम्राट् बहुत दुखी होते है।

सम्राट् अशोक (वि० १९९६, पृ० १९४), *ले०* रूपनारायण पाण्डेय, *प्र०* : गगा ग्रन्थागार, लखनऊ, *पात्र* पु० १२, स्त्री ३, *अक* ५, *दृश्य* ५, ३, ५, ५, ५ ।
घटना-स्थल : वाटिका, राजमहल, नदी-तट का वन, वन मार्ग, पहाड़ी बस्ती, श्मशान ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे सम्राट् अशोक की राष्ट्रप्रियता दिखाई गई है।

मगध-सम्राट् बिन्दुमार की पटरानी धारिणि से अशोक और छोटी रानी चित्रा से वीतशोक का जन्म हुआ। सम्राट् प्रियतमा चित्रा को अधिक सम्मान देने के लिए, वसन्तोत्सव मे उसे अपने साथ बिठाना चाहते है पर मन्त्री राधागुप्त इसका विरोध करके परम्परानुसार पटरानी धारिणी को साथ बिठाने का आग्रह करते है। धारिणी इस गृह-कलह को मिटाने के लिए चित्रा को

महाराज के साथ बैठने का अधिकार स्वेच्छा से देती है। चित्रा के षड्यन्त्र से बिन्दुसार रुग्णावस्था में अशोक को राज्य से निर्वासित कर देते है। निर्वासित अशोक पत्नी अनीता के साथ दर-दर घूमते हुए पिता के अत्याचारों को किसी प्रकार सहन करते है। चित्रा महाराज को भडकाती है कि अनीता आपके खिलाफ कुचक्र रचने के लिये अपने पति से जा मिली है। तक्षशिला का राजा कनिष्क अनीता की दीन दशा देखकर उसे अपनी धर्म बेटी बना लेता है। चित्रा के प्रकोप से अशोक के पुत्र महेन्द्र और कुणाल भी मगध त्यागने पर विवश हो जाते है।

तक्षशिला मे भ्रमते हुए अशोक जीवन से निराश हो विषपान करते है पर मृत्यु के स्थान पर वे नीरोग हो जाते है और वन मे तक्षशिलाधीश कनिष्क से उनकी भेंट हो जाती है। तक्षशिला राज की सहायता से अशोक सैन्य-सहित उस समय मगध पहुँचता है जब बिन्दुसार चित्रा के साथ सिंहासन पर बैठने के उपक्रम मे मन्त्री राधागुप्त का उपहास करता है। अशोक प्रतिशोध की भावना से उग्र और क्रूर बनकर अनेक व्यक्तियो को मृत्युदण्ड देता है पर बौद्ध भिक्षु कृपानन्द के उपदेश से उसका हृदय-परिवर्तन होता है। कृपानन्द आशीर्वाद देते है—'उठो, जागो, तुम्हारा राज्य धर्मराज्य हो। तुम्हारा यश अक्षय हो।"

अन्त मे भरत वाक्य के साथ नाटक समाप्त हो जाता है।

सम्राट् अशोक (सन् १९२३, पृ० १६८), ले० चन्द्रराज भण्डारी 'विशारद्'; प्र० : गाधी हिन्दी मन्दिर, अजमेर, *पात्र :* पु० १०, स्त्री ७, अक : ४, *दृश्य* · १५, ६, ५, ७।
घटना-स्थल : भारत, कलिंग देश, मथुरा आदि।

इस ऐतिहासिक नाटक मे सम्राट् अशोक की वीरता चित्रित है। कलिंग विजय के बाद अशोक युद्ध न करने की प्रतिज्ञा करता है। प्रणयिनी को अशोक के सैनिक पकड़ लाते है। वह अशोक के शत्रु कलिंग राजा मृगेन्द्र की पुत्री है। पहले वह अशोक से घृणा करती है पश्चात् प्रेम करने लगती है। अनाथ प्रमिला को भी राजा मृगेन्द्र ने अपनी पुत्री प्रणायिनी के साथ ही पाला है। बडी होकर प्रमिला कलिंग युवराज जितेन्द्र से विवाह की इच्छा प्रकट करती है इस पर राजा मृगेन्द्र हसते है। प्रमिला इसे अपमान समझ कलिंग के वृद्ध मन्त्री विशाखानन्द से विवाह करती है और षड्यन्त्र द्वारा कलिंग देश का विनाश करवाती है।

सम्राट् अशोक (सन् १९७०, पृ० ६४), ले० : विश्वम्भरनाथ वाचाल; प्र० : भाग्योदय प्रकाशन, ५०२ मातागली; मथुरा, *पात्र* पु० ९, स्त्री ३, *अक* · ३; *दृश्य* · ५, ३, ३।
घटना-स्थल · कलिंग देश, मगध का राजदरबार, कारागार।

सम्राट् अशोक अपने दुर्दम साहस से राज्य-विस्तार के लिए अपने मन्त्री विजयकेतु से कलिंग अभियान की चर्चा करते हैं। मंत्री राजा को ऐसा करने से रोकना चाहता है किन्तु राजा के दृढ निश्चय के सामने वह भी कलिंग अभियान का निश्चय करता है। वीताशोक सन्यासी जो सम्राट् का अनुज है, सम्राट् को राज्य-लिप्सा हेतु मानवता का संहार रोकने की प्रार्थना करता है। सम्राट् न मानकर युद्ध प्रारम्भ कर देते है। कलिंग सम्राट् और कलिंग निवासी इस जबरदस्ती थोपे युद्ध की चुनौती को स्वीकार कर अपने अल्प साधनो से अपनी स्वातन्त्र्य-भावना के कारण मगध की विशाल वाहिनी को रोकते हैं। कलिंग-नरेश युद्धभूमि मे मारे जाते हैं। कलिंग के भीषण रक्तपात मे वीरागना रानी दुर्गा पति-विद्रोह को सोच कर जौहर और युद्ध के लिये रमणियो को तैयार करती है।

द्वितीय अक मे अशोक को वन्दिनी द्वारा ज्ञात होता है कि वृद्ध और विधवाओ के अतिरिक्त कलिंग श्मशान बन गया है। प्रभा आकर पुरुष वेश मे सम्राट् को चुनौती देती है और अपने मन्त्री को छुडाकर ले जाती है।

इसका भाई देवेन्द्र भी मगध कारागार मे है। रानी तिष्यरक्षिता युवक देवेन्द्र पर मुग्ध हो उसे मुक्त करती है और आप अपनी वासना की शान्ति के लिये सम्राट् का वध कराना चाहती है। देवेन्द्र रानी को नीच कृत्य के लिये धिक्कारता है। वियजकेतु राजा के सम्मुख दण्ड के लिये प्रस्तुत होता है और देवेन्द्र के उज्ज्वल चरित्र तथा तिष्यरक्षिता की पाप कथा प्रकट करता है। इसी अ्रक मे बीत-शोक, प्रभा और कलिग मन्त्री प्रतिशोध न लेने की प्रार्थना कर नर संहार को और भी बढाने से रोकना चाहते है।

तृतीय अंक मे प्रभा और देवेन्द्र के उज्ज्वल चरित्र, रानी तिष्यरक्षिता का पाप और युद्ध के भीषण संहार सम्राट् का हृदय बदल देते है। वे घोषणा करवाते है कि अब से अशोक चण्डाशोक राज्य-विस्तार के लिये युद्ध नही करेगा और प्रत्येक क्षण प्रजा की सेवा मे लगायेगा। वे प्रभा से दण्ड पाने के लिये अपने को प्रस्तुत करते है। प्रभा उनके हृदय-परिवर्तन मे प्रतिशोध को पूर्ण समझती है और उपगुप्त सम्राट् को धर्म की दीक्षा देकर बुद्ध धर्म मे सम्मिलित करते है।

सम्राट् अशोक (सन् १९६२, पृ० ९२), *ले० :* मास्टर ग्यादर सिंह 'बेचैन'; *प्र० :* देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; *पात्र :* पु० ९, स्त्री ६; *अंक :* ३; *दृश्य :* ८, ५, ३।
घटना-स्थल : मगध राज्य।

यह नाटक ऐतिहासिक होते हुए भी कल्पना प्रधान है। इसमे इतिहास प्रसिद्ध महाराज बिन्दुसार, अशोक, महेन्द्र, कुणाल आदि के नाम मात्र आये है। इतिहास की सम्पूर्ण घटनायें तो अपनायी गई है किन्तु उनका स्वरूप नितान्त परिवर्तित है। बिन्दुसार अशोक के स्थान पर शकरानी चित्रा के प्रभाव मे वीतशोक को राज्य देना चाहते है। चित्रा, अपनी सौत धारणी को पटरानी पद से च्युत तथा अशोक को निर्वासित कर शक सेना की सहायता से महेन्द्र, कुणाल, मत्री राजा गुप्त, धारणी आदि का वध कर निष्कटक राज्य करना चाहती है। अशोक तक्षशिला-नरेश कनिष्क की सहायता से कुचक्रों का दमन करता है। चित्रा कुणाल की आँखें निकलवा लेती है। धर्मनाथ बौद्ध भिक्षु महेन्द्र, अनिता, कुणाल, विनायक तथा लबडधोधो आदि को शरण देता है और अपनी सिद्धि से राजा अशोक को भी प्रभावित कर बौद्ध धर्मानुयायी बनाता है।

सम्राट् परीक्षित (वि० १९७९, पृ० १२०), *ले० :* बलदेव प्रसाद खरे; *प्र० :* निहालचन्द एण्ड कम्पनी, नारायण प्रसाद बाबूलेन, कलकत्ता; *पात्र :* पु० ३८, स्त्री ११; *अंक :* ३; *दृश्य :* ७, ७, ६।
घटना-स्थल : वन-मार्ग, इन्द्रलोक।

इस पौराणिक नाटक मे अभिमन्यु पुत्र राजा परीक्षित के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। इसमे परीक्षित को धर्म-परायण, प्रजा-वत्सल, गो-विप्रपालक वीर भारत सम्राट् के रूप मे चित्रित किया गया है। कलियुग की प्रचंड महिमा और भगवान श्री कृष्ण का अलौकिक योगबल भी दर्शनीय है। नाटक के प्रथम अंक मे परीक्षित के जन्म का कारण, जन्म के समय की घटना और राजतिलक दूसरे अंक मे परीक्षित की धर्म निष्ठा, दयालुता तथा स्वर्गारोहण का दृश्य चित्रित है। तीसरे अंक मे इन्द्र का साहस, जनमेजय का नागयज्ञ और सधि-परिणाम दिखाया गया है।

सरजा शिवाजी (सन् १९३६, पृ० ११२), *ले० :* गोपाल चन्द्रदेव; *प्र० :* भारतीय साहित्य मन्दिर, दिल्ली; *पात्र :* पु० १५, स्त्री ३; *अक :* ७; *दृश्य* १०, ११, १०, १५, २, ६, ६।
घटना-स्थल : दिल्ली दुर्ग।

इस ऐतिहासिक नाटक मे ब्राह्मण, गऊ एव भारतीय सस्कृति के एकमात्र रक्षक शिवाजी की वीरताओ के प्रसग चित्रित है। शिवाजी को अपने बाल्यकाल मे अपनी माता जीजाबाई से ही ज्ञान मिलता है। उनको सूई बाई नामक पत्नी भी वरदान स्वरूप

मिलती है।

अब शिवाजी के मन में बार-बार मुसलमानों के अत्याचार खटकते हैं। वे हिन्दू जाति को इन म्लेच्छो के नीचे कभी नही देखना चाहते है। माधो जी अभयजी आदि मित्र भी शिवाजी के लिये जान पर खेलने को तैयार रहते है। शिवाजी के पिता शाह जी आदिल शाह के यहाँ एक बडे पद पर हैं। फिर भी शिवाजी कभी भी अपने पिता के पास बादशाह से मिलने नही जाते हैं।

शिवाजी धीरे से एक दुर्ग पर अधिकार कर बादशाह को उसका सालाना कर देना स्वीकार कर लेते हैं। वे धीरे-धीरे कुछ सेना तैयार कर लेते है। शाहजी उनके इस कार्य से असन्तुष्ट है, क्योंकि बादशाह से कभी विरोध ठीक नही। आदिलशाह को दूत के द्वारा खबर मिलती है कि शिवाजी ने बहुत से दुर्गों पर अधिकार कर लिया है। इससे आदिलशाह दुःखी होते है क्योकि दूसरी ओर से शाहजहा भी आक्रमण कर रहा है। अफजल खां शिवाजी को पकड़ने जाता है परन्तु नीतिज्ञ सरजा के द्वारा मार दिया जाता है। इधर शिवाजी औरंगजेब से भी टक्कर लेते है।

अन्त में शिवाजी एक सुदृढ़ राज्य की स्थापना करके गद्दी पर बैठते है।

सरदार बा (वि० १९९०, पृ० ७९), ले०: कुमार हृदय; प्र० : तरुण भारत ग्रन्थावली कार्यालय, प्रयाग, *पात्र :* पु० १३, स्त्री ५; *अक :* ३; *दृश्य :* ५, ५, ५।
घटना-स्थल : पाटन का न्यायालय, दिल्ली का राज मार्ग, रानीपुर का राज प्रसाद, रानीगढ का उत्तरी भाग।

यह नाटक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है जिसमे वीर कन्या का शौर्य दिखाया गया है।

रानीपुर के वृद्ध जागीरदार खेमराज प्रण करते हैं कि वे उस वीर राजकुमार से अपनी कन्या सरदार बा का विवाह करेगे जो कि समस्त सौराष्ट्र को स्वतन्त्र कराने की प्रतिज्ञा करेगा। गुजरात का सूबेदार रानीपुर पर अधिकार कर लेता है वह खेमराज सरदार वा तथा उसकी मा को कैद कर लेता है परन्तु सरदार वा कैद से निकल कर भाग जाती है। उसकी भेंट चन्द्रावती के राजकुमार वैरीसिंह से होती है। इसके पश्चात् वैरीसिंह अपनी वीरता व पराक्रम से गुजरात के सूबेदार रहमतखाँ का पतन कर देता है और खेमराज व उनकी पत्नी को कैद से छुडवाता है। खेमराज वैरीसिंह से प्रसन्न हो कर अपनी कन्या का हाथ उसके हाथ मे दे देता है।

सरवर नीर (सन् १९५८ पृ० ६२), ले० : न्यादरसिंह 'बेचैन'; प्र० : देहाती पुस्तक भडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; *पात्र :* पु० ८, स्त्री ३; *अक :* ३; *दृश्य :* ७, ५, ४।
घटना-स्थल : राजा अम्ब की राज-सभा, इन्द्रासन, नदी तट, धारा नगरी।

इस नाटक मे सत्यवादी राजा अम्ब के राजा से रक और रक से फिर राजा बनने की दिलचस्प कहानी है। राजा अम्ब के निन्नानवे यज्ञ करने से इन्द्र का सिंहासन डोल जाता है। नारद मुनि सिंहासन डोलने का कारण बताते हैं और इसकी सुरक्षा के लिए राजा अम्ब से राज दान मे माँगने का उपाय बताते हैं। इन्द्र ब्राह्मण-वेश मे अम्ब की राज-सभा मे जाकर राज माँगते है। राजा अम्ब ब्राह्मण को राज सौप कर अम्बली और दोनो पुत्रो—सरवर, नीर को लेकर राज्य से बाहर निकल जाते हैं और सबके सब भटियारी के यहाँ नौकरी करके अपना गुजारा करने लगते हैं। भटियारी इन सबसे बड़ी कठोरता से काम लेती, बच्चों को खूब मारती तथा भरपेट खाना भी नही देती। एक सौदागर अम्बली को देख उसके सौंदर्य पर मुग्ध हो जाता है। वह भटियारी को पाँच अशर्फियाँ देकर कहता है कि अम्बली को खाना लेकर मेरे जहाज पर भेज दे। वह बेचारी खाना लेकर जहाज पर जाती है। सौदागर जबरदस्ती अम्बली को अपनी औरत बनाने लगता है। अम्बली ने

विवशतावश सौदागर के सामने यह शर्त रखी कि छ महीने तक मुझे अपनी बहन बनाकर रखो, बाद मे तुम्हारी औरत बन जाऊँगी।

इधर भटियारी अम्ब और उनके दोनों बच्चो को धक्के मारकर सराय से निकाल देती है। एक नदी को पार करते समय अम्ब को मगर निगल जाता है। नीर और सरवर दोनो नदी के किनारो पर खडे-खड़े अपने दुःख और दैन्य पर रो रहे है। सतान-हीन कल्लू धोबी सरवर नीर को अपना बेटा बनाकर रख लेता है। मछुओ ने नदी मे जाल डाली तो उसमे मगर फँस गया। मगर का पेट चीरने पर उसमे से अम्ब जीवित निकले। दुर्भाग्य के सताये अम्ब बहुत सवेरे ही धारा नगरी के बन्द दरवाजे पर जा पहुँचते है। दरवाजा खुलते ही वहाँ के राजा की अरथी निकलती है। सिपाही अम्ब को पकडकर धारा नगरी का राजा बना देते है क्योकि मृतक राजा ने यह आज्ञा दी थी कि शहर का दरवाजा खुलते ही जो व्यक्ति सबसे पहले दिखाई दे उसी को मेरी जगह राजा बना देना।

अम्ब अब पुन राजा तो बन जाते है लेकिन पत्नी और बच्चो के वियोग मे बहुत दुखी रहते है। एक दिन सौदागर दरबार मे उपस्थित होकर अनेक बहुमूल्य हीरे आदि राजा को भेट करता है। परम्परानुसार अपने जहाज की रक्षा के लिए दो नौजवानो की माँग करता है। इस बार पहरेदार बनने की कल्लू की बारी थी। कल्लू की ओर से सरवर और नीर जहाज की रक्षा के लिए नदी-तट पर जा पहुँचते है। रात मे दोनो अपनी दुखभरी कहानी को कविता के रूप मे गाते है। रानी अम्बली इस दास्तान को सुनकर निश्चय करती है कि ये दोनों ही मेरे बेटे है। इसके लिए वह एक युक्ति अपनाती है। सवेरा होते ही सौदागर दरबार मे उपस्थित होकर राजा से प्रार्थना करता है कि मेरी बहन का नौलखाहार रात को पहरा देने वाले दोनो लडको ने चुरा लिया है। राजा सौदागर की बहन और कल्लू के दोनो बेटो को दरबार मे उपस्थित होने की आज्ञा देते है। सरवर और नीर दरबार मे अपनी बीती सुनाते है जिसे सुनकर राजा उन्हें अपने गले से लगा लेते है। पर्दे मे छिपी बैठी अम्बली भी अपनी राम कहानी सुनाती है और इस तरह राजा अम्ब, रानी अम्बली तथा दोनों राजकुमारो का पुनर्मिलन हो जाता है। राजा अम्ब सौवाँ यज्ञ करते है जिससे प्रसन्न होकर देवता पुष्प वृष्टि करते है।

सरस्वती (वि० १६५५, पृ० १८४), ले०: दुर्गाप्रसाद मिश्र; प्र०: बडा बाजार, सूतापट्टी न० ६५, कलकत्ता; *पात्र*. पु० १५, स्त्री ७; *अक*: ५; *गर्भाक* ६, ५, ४, ४, ५।

यह एक सामाजिक नाटक है। इसमे भारतवासियो की गृहस्थ-दशा को सुधारने का प्रयास किया गया है। सरस्वती नाम की स्त्री एक गाव मे रहती है। उसका एक पुत्र मोहन है। उसकी गरीबी से लोग बहुत फायदा उठाते है। एक वार उसका लडका बासुरी वाले से एक बासुरी जिद्द करके ले लेता है। माँ के पास पैसा न होने से वह अपनी जेठानी से पैसे मागती है। परन्तु वह देने से इन्कार कर देती है। इसी तरह कुछ दिन बीतते है। सरस्वती के जेठ किन्ही कारणो से नौकरी से निकाल दिये जाते है और पाँच हजार रुपये जुर्माना भी लगा दिया जाता है परन्तु दोनो माँ-बेटे मिलकर उसे छुडा लेते है। अन्त मे सभी एक-दूसरे से पुन. मिल जाते है।

सर्राफी नाटक (सन् १८६०, पृ० २४), ले०. गौरीदत्त, प्र०: गोरखपुर प्रेस; *पात्र*: पु० ५, स्त्री नही; *अक*: ३, *दृश्य*: २, २, २।
घटना-स्थल. नवाब का घर।

यह एक लघु नाटक है। सेठ के यहाँ दो नवाब आते है। पहला नवाब सेठ के पास पचास हजार तथा दूसरा दस हजार रुपये जमा करता है। लौटाने के लिए दस हजार वाले नवाब पहले आते है। सर्राफी भाषा की गलती के कारण वह उसे दूसरे नवाब की पचास हजार की राशि लौटा देता है। दूसरा नवाब इनके ऊपर दावा करता है और जिसके परिणामस्वरूप सेठ की कुर्की होती है और वह भिखारी हो

जाता है। सेठ अपनी सर्राफी-भाषा को कोसता है।

सलेजा का सौभाग्य (सन् १९४२, पृ० १०४), ले० · माधवाचार्य रावत; प्र० : माधवाचार्य रावत, एडवोकेट, बाँदा, *पात्र* : पु० ११, स्त्री ३; *अक-रहित*, *दृश्य* · २८।
घटना-स्थल · श्रीपुर—एक भारतीय गाँव।

इस सामाजिक नाटक मे भारत के सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक जीवन का चित्र खीचा गया है। नाटक का नायक अरविन्द और नायिका सरोज है। सन् १९३७ ई० के आसपास उन्मुक्त प्रेम-सम्बन्ध को अवैध माना जाता है। पर अरविन्द और सरोज समाज-सेवी के रूप मे काग्रेस की सहायता करते है और अन्त मे दोनो का विवाह हो जाता है।

नाटक का पात्र सुरेश भी काग्रेस की सहायता करता है। वह लोगो से काग्रेस को वोट देने को कहता है। वह सरोज की सहेली श्यामा का प्रेमी है। इन दोनो के प्रेम से जाति-प्रथा को नया रूप मिलता है। श्यामा चमार है, सुरेश ब्राह्मण। दोनो देश के सामने ऊँचा आदर्श स्थापित करते है। एक स्थल पर सुरेश कहता है 'यदि श्यामा के सम्बन्ध से मैं चमार हो सकता हूँ तो मेरे सम्बन्ध से श्यामा ब्राह्मणी क्यो नही बन सकती ?'

सबेरा (सन् १९६१, पृ० ५६); ले० . योगेन्द्र, प्र० आयास प्रकाशन खबडा, मुजफ्फरपुर; *पात्र* · पु० ११, स्त्री ३, *अक* · २, *दृश्य* . १०, ११।
घटना-स्थल . एक गाँव।

इस सामाजिक नाटक मे ग्रामोत्थान की भावना तथा ग्रामीणो मे व्याप्त कुप्रथाओ एव अधविश्वासो का परिचय मिलता है। दूसरी ओर एक नवीन चेतना का सचरण भी किया गया है। नाटक के मुख्य पात्र किशोर के पिता की मृत्यु के साथ कथा का प्रारम्भ होता है। ग्रामीण चाहते है कि उनका अतिम संस्कार गंगातट पर हो ताकि बस लारी की यात्रा करने का अवसर मिले तथा खाने के लिए दही-चूडा इत्यादि उपलब्ध हो सके। किशोर उन सबकी इच्छा के विरुद्ध अपने पिता का दाह-संस्कार ग्राम मे ही करता है। ग्राम-पचायत की व्यवस्था तथा श्रमदान द्वारा स्कूल निर्माण आदि कार्य नाटक की अन्य घटनाएँ हैं। इन्ही घटनाओ के साथ पापाचार की वृत्तियो का भी सकेतात्मक निरूपण हुआ है। एक ग्राम के माध्यम से 'सबेरा' अर्थात् विकास की नवीन दिशाओ का सकेत हुआ है।

सस्सी पुन्नु (सन् १९६०, पृ० पजाब की प्रीत कहानियो मे सग्रहीत), ले० हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० . आत्माराम एण्ड सस, दिल्ली, *पात्र* पु० ५, स्त्री ४, *अक . दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल · घाट, रेगिस्तान।

इस सगीत रूपक मे एक परदेसी शहजादे तथा एक धोबिन की प्रणय-गाथा वर्णित है। शहजादा पुन्नु सस्सी की रूप-चर्चा सुनकर बनजारे के वेश मे उसे चूडी पहनाने आता है। सस्सी के अनन्त सौन्दर्य के वशीभूत वह उसे देखता ही रह जाता है। किन्तु एक धोबिन एव शहजादे का प्रणय-व्यापार कैसे निभ सकता है ? अत वह धोबी बनना स्वीकार कर लेता है। कुछ समय पश्चात् दोनो का विवाह हो जाता है। प्रेमियो की अनिश्चित स्थिति यहाँ भी उत्पन्न होती है। पुन्नु का भाई हेतु आकर छल से उसे वापिस महलों मे ले जाता है। पीछे-पीछे सस्सी भी उसकी खोज मे जाती है और जलते रेगिस्तान मे प्रेम की अन्तिम प्राणाहुति देती है। उधर होश आने पर सस्सी को खोजता पुन्नु भी इस अपार्थिव मिलन की राह पर चल देता है।

सहारा (सन् १९६२, पृ० ६२), ले० : जगदीश शर्मा; प्र० देहाती पुस्तक भडार, चावडी बाजार, दिल्ली, *पात्र* : पु० ६, स्त्री २; *अक* २, *दृश्य* · १, १।
घटना स्थल प्रयोगशाला, अस्पताल, घर।

इस सामाजिक नाटक मे धनियो की धन-लोलुपता का दुष्परिणाम दिखाया गया है। सेठ गोविन्द सहाय का लडका किशोर डाक्टरी की शिक्षा के समय ही एक गरीब

घटना-स्थल : दिल्ली मे अलाउद्दीन खिलजी का राजमहल, अलाउद्दीन खिलजी का विश्राम-कक्ष, ग्वालियर के गढ मे उद्यान ।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है । गुजरात पर अलाउद्दीन खिलजी आक्रमण करता है । गुजरात-नरेश कर्णसिह भाग जाता है लेकिन महारानी कमलावती को अलाउद्दीन खिलजी अपने राजमहल (दिल्ली) मे ले आता है । महारानी कमलावती अलाउद्दीन खिलजी के रनिवास मे रहते हुए भी अपने सतीत्व की रक्षा करती है । कमलावती अपनी पुत्री देवल को भी अपने पास बुलवा लेती है । अलाउद्दीन खिलजी की बडी बेगम माहरू का पुत्र खिजरखा देवल से प्रेम करता है । माहरू चाहती है कि खिजरखा राजगद्दी का उत्तराधिकारी हो इसीलिए वह खिजरखा और देवल के बीच मे रोडा बनती है । खिजरखां सगीत प्रेमी है वह राजगद्दी नही चाहता । वह केवल अपनी प्रेमिका देवल ही को चाहता है । अलाउद्दीन खिलजी का सेनापति मालिक काफूर षड्यन्त्र करके देवल और खिजरखां को ग्वालियर भेज देता है और पीछे से खिलजी की हत्या कर देता है । खिलजी के कई पुत्रो को भी मौत के घाट उतार देता है । खिजरखा की आखे निकलवा लेता है और देवल को मल्लिका बनाने के लिए कहता है । खिजर किसी भी कीमत पर देवल को देने के लिए तैयार नही होता । अलाउद्दीन का ही एक सैनिक सेनापति काफूर की हत्या कर देता है । खिजरखा काफूर की हत्या सुनकर बहुत प्रसन्न होता है ।

साकार रहस्य (वि० १९७०, पृ० ५८); *ले०* : अम्बिकापद मुखोपाध्याय, *प्र०* : मनमोहन नाथ कौल, नियाजी मुहल्ला, गाजीपुर, *पात्र :* पु० ४, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* ३,२,२ ।

लेखक ने साकार ब्रह्म के विवेचन के लिए इस पुस्तक की रचना की है । नाटक ब्रह्मज्ञान विषयक है और साकार उपासको के कल्याण हेतु प्रणीत हुआ है । नाटककार ने सनातन और आर्य मतावलम्बी को वादी प्रतिवादी बनाकर विषय का निरूपण किया है जिसमे सगुण उपासको को सफलता प्राप्त हुई है । नाटक के अत मे साकार ब्रह्म की महिमा से प्रायः सभी पात्र अभिभूत हो जाते है और सबके मन मे निराकार के प्रति अविश्वास और साकार के प्रति विश्वास जाग्रत हो जाता है ।

साध (सन् १९४४, पृ० ६३), *ले०* : पृथ्वीनाथ शर्मा; *प्र०* हिन्दी भवन, लाहौर, *पात्र :* पु० ६, स्त्री ७; *अक* ३; *दृश्य* ३, ३, ३; *घटना-स्थल* कुमुद का घर ।

यह सामाजिक नाटक काम के स्वरो से स्पदित है । इस नाटक की नायिका पर पश्चिमी रहन-सहन की छाप है । वह स्वच्छद जीवन मे विश्वास करती है । विवाह के प्रति श्रद्धाहीन है क्योकि बच्चे पैदा करने की झझट इसे स्वीकार नही है । अपने प्रेमी अजीत के प्रस्ताव को इसलिए ठुकरा देती है कि "उसके बाद तुम्हारे हृदय मे अनत वर्षो से छिपी हुई अपने प्रतिरूप की, अपने उत्तराधिकार की लालसा जागृत होगी । फिर उस लालसा को पूर्ण करने के लिए मुझे धडाधड़ बच्चे पैदा करने होगे ।" किन्तु अन्त मे अपनी माँ के बाध्य करने पर कुमुद से विवाह कर लेती है । विवाह के उपरान्त भी उसके विचारो मे किसी तरह का अन्तर नही आता । अजीत उसे समझाने का प्रयास करता है किन्तु वह असफल रहता है । अंततः इसका निराकरण एक तृतीय पात्र बालक मोहन के माध्यम से होता है । मोहन के प्रति कुमुद मे एक तरह का मोह उत्पन्न हो जाता है किन्तु जब मोहन नही होता है, कुमुद में एक तरह का अपने मे अभाव का खटकना प्रारम्भ होता है । इसी अभाव को लेकर उसकी मा उसे समझाती है । यहा वह अपने पुत्र की लालसा मे अपने पति के समक्ष आत्म-समर्पण कर देती है ।

साधना पथ (सन् १९४०, पृ० १२८), *ले०* : शम्भूदयाल सक्सेना; *प्र०* . अर्चना मन्दिर, बीकानेर, *पात्र :* पु० ११, स्त्री ८; *अक* . ३

दृश्य १२,१०,१०।
घटना-स्थल उपासना गृह, एकान्त स्थान।

इस ऐतिहासिक नाटक में मीरा के बचपन से लेकर अन्तर्धान होने तक की कथा चित्रित है।

मीरा राव दूदा के पुत्र रतनसिंह की पुत्री तथा राणा सागा के पुत्र भोजराज की रानी है। भक्तपितामह रावदूदा के कारण ही मीरा मे बचपन से ही भक्ति-भावना कूट-कूट कर भरी हुई है। यौवनकाल मे ही मीरा विधवा हो जाती है, इसके पश्चात् तो मीरा का झुकाव भक्ति-क्षेत्र की ओर अधिक हो जाता है। वह कृष्ण-प्रेम मे दीवानी हो जाती है। राणा विक्रमाजित सिसोदिया कुल की वश मर्यादा के पुजारी है। उनको मीरा का सर्व-साधारण के सामने कीर्तन-भजन करना अच्छा नही लगता। उनको मीरा की भक्ति-भावना बुरी नही लगती परन्तु वे चाहते है कि मीरा एकान्त मे कृष्ण की उपासना करे। मीरा लोक-लाज की तनिक चिन्ता न कर कृष्ण की भक्ति को ही सर्वोपरि मानती है। मीरा कृष्ण को ही पति, देवता, पुरुष मानती है।

मीरा की भक्ति-भावना इतनी प्रबल है कि वे सांसारिक यातनाओ से भी नही घबराती है। उनकी दृष्टि मे मनुष्य जैसे-जैसे साधना पथ की ओर अग्रसर होता जाता है वैसे-वैसे सामारिक बन्धनो से मुक्त हो जाता है। साधना के अन्तिम सोपान पर उसे मोक्ष प्राप्त हो जाता है। कृष्ण की आराधिका मीरा के भक्ति-क्षेत्र मे सासारिक कठिनाइयाँ भी रोडा नही अटका सकी। भक्ति रस मे लीन मीरा अन्त मे कृष्ण मे अन्तर्धान हो जाती है।

साबरमती का सन्त (सन् १९६३, पृ० १४४), ले० देवीप्रसाद धवन 'विकल', प्र० चैतन्य प्रकाशन मन्दिर, कानपुर, पात्र पु० १२, स्त्री २, अक ३, दृश्य ११, १२ ११।
घटना-स्थल . दक्षिणी अफ्रीका, नोआखाली।

राष्ट्रपिता बापू के जीवन से सम्बन्धित इस नाटक मे गाँधी जी के जीवन का वर्णन है। उनके सहपाठी कान्तिलाल माँसाहार को आवश्यक वताते है पर गाधी जी उसे नही मानते। विलायत मे वैरिस्ट्री पास करने के लिए जाते है तो वहाँ भोजन की समस्या सामने आती है। लेकिन गांधी जी अपनी माँ से मास न खाने की प्रतिज्ञा करके गए हुए थे इसलिए वे प्रतिज्ञा को तोडने के पक्षपाती नही है और वे इसका सदैव पालन भी करते है। दूसरे अक मे गाधी जी का विलायत से वैरिस्ट्री पास कर भारत लौटने और बैरिस्ट्री करने का वर्णन है। किन्तु वैरिस्ट्री न चलने से देश की सेवा करने का व्रत भी उन्होने वना लिया है। लोकमान्य तिलक आदि से देश की स्थिति पर विचार-विमर्श भी किया है। दक्षिण अफ्रीका के हिन्दुस्तानियो की सेवा का भी लक्ष्य है। इसलिए वे वहाँ की यात्रा और सफल जन-सेवा भी करते हैं।

तीसरे अक मे असहयोग आन्दोलन और भारत की स्वतन्त्रता का वर्णन है। गाधी जी किस प्रकार अहिंसा के द्वारा देश को स्वतन्त्र कराते है। साथ ही उस समय के चोटी के नेता प० नेहरू, डा० राजेन्द्रप्रसाद, मुहम्मद अली जिन्ना के साथ देश की राजनीतिक परिस्थितियो पर विचार-विमर्श भी है और अन्त मे देश की स्वतन्त्रता के बाद गाधी जी की जय-जयकार होती है और गाधी जी वगाल के नोआखाली मे गरीवो की सेवा में लगे रहते है। गाधी-हत्या का प्रसग छोड़ दिया गया है।

सामवती पुनर्जन्म (सन् १९२०, पृ० ६६), ले० : जीवन शर्म्मा, प्र० : काशीराज के सभा पडित झोपाख्यायी हरिकान्त शर्म्मा, पात्र : पु० २०, स्त्री १२; अक ७; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल . विदर्भ राज की राजसभा, लतावृत्त कुञ्ज वन, मुनियो का उद्यान, वैवाहिक स्थल।

'सामवती पुनर्जन्म' की रचना पौराणिकता की पृष्ठभूमि मे हुई है। सारस्वत और वेद मित्र के पुत्र सुमेधा और सामवान हैं जब वे न्याय, वेदान्त और साख्य मे पाडित्य प्राप्त

करते है तब वे दोनो अनुभव करते है कि सुमेधा और सामवान की शादी हो जानी चाहिए। किन्तु द्रव्य के अभाव मे शादी नही हो सकती। अतएव द्रव्योपार्जन के लिए सुमेधा और सामवान विदर्भराज्य के लिए प्रस्थान करते है। मार्ग मे वीणा की मधुर झंकार सुनायी पडती है। वे लोग कुछ समय के लिए वहाँ रुक जाते है तथा सामवान यह सोचते है कि जिसके वाद्य-यन्त्र के स्वर इतने मधुर और सुन्दर है, वस्तुत उनकी सुन्दरता कैसी होगी। इसी बीच दुर्वासा ऋषि के शाप-युक्त कर्कश शब्द उन्हे सुनायी पडते है कि "जो हमे नारी समझता है वह शीघ्र ही नारी रूप मे परिवर्तित हो जायगा।" वे लोग विदर्भ पहुँच कर राजा के समक्ष अपने पाडित्य की चर्चा करते है तथा दो सहस्र रुपये की याचना करते है। किन्तु राजा यह कहला भेजते हैं कि इस तरह से दक्षिणा देने की प्रथा हमारे यहाँ नही है। वसन्तोत्सव के अवसर पर यदि वे लोग दम्पति रूप मे नृत्य करे तो इतनी राशि मिल सकती है। उपर्युक्त प्रस्ताव को सुमेधा और सामवान सहर्ष स्वीकार करते है, क्योकि इसके द्वारा दुर्वासा के शाप से मुक्ति भी मिल जायगी और द्रव्योपार्जन भी हो जायगा। जब वे लोग दम्पति रूप मे नृत्य प्रारम्भ करते है तब विदूषक उन का अत्यन्त घृणास्पद उपहास करता है, जिससे वे दोनो क्रोधित होकर शाप देकर वहाँ से प्रस्थान करते है। इस दुर्घटना से चिन्तित होकर राजा जगदम्बा का अनुष्ठान करता है। सामवान पूर्ण यौवना नायिका के रूप मे परिवर्तित हो जाते है। सारस्वत मुनि अपने पुत्र को नायिका के रूप मे परिवर्तित देखकर अत्यधिक चिन्तित हो जाते है, किन्तु जगदम्बा उन्हे रात मे स्वप्न दिखाती है कि, "आप इसकी शादी वेद मुनि के पुत्र सुमेधा के साथ कर दे। शादी का सारा व्यय विदर्भ राज्य के द्वारा होगा।" सारस्वत स्वप्नानुकूल अपने मित्र वेद मुनि से बातचीत कर उन दोनो की शादी कर देते है।

सावित्री (सन् १९६६, पृ० ६३), ले० : चन्द्रप्रकाश वर्मा; प्र०: यूनिवर्सल बुक डिपो, लश्कर; *पात्र :* पु० ४, स्त्री २।
घटना-स्थल : महल, जंगल, आश्रम।

इस पौराणिक नाटक मे लोक-प्रसिद्ध सावित्री की कथा चित्रित है।

अश्वपति मंत्री से अपनी एकमात्र पुत्री के वर के विषय मे विचार करते है। मत्री उत्तर देता है कि महाराज इस कार्य मे सावित्री स्वयं ही सफल हो सकती है। सावित्री योग्य वर खोजने के लिये प्रस्थान करती है। घूमते-घूमते वन मे सत्यवान नामक लकडहारे पर दृष्टिपात होता है। सत्यवान राजपुत्र है परंतु भाग्य ने अब उसको लकड़हारा बना दिया है। सखी के द्वारा सावित्री और सत्यवान का वार्तालाप होता है। सावित्री सत्यवान के लिये दृढ निश्चय कर लेती है।

सावित्री जब अपने पिताजी के समीप लौटती है तो वह नारदजी के सामने अपने वर के विषय मे कहती है। नारदजी इस पर चिन्तित होते है क्योकि सत्यवान की आयु तो अब एक वर्ष की ही शेष है। सावित्री इसकी परवाह नही करती। सत्यवान-सावित्री प्रेम-पूर्वक रहने लगते हैं। समय समाप्त होने पर यम लकडी काटते हुए सत्यवान को ले जाता है तो सावित्री अपनी वाक्-प्रतिभा एवं सतीत्व के द्वारा यम से केवल सत्यवान के प्राण ही नही बल्कि और भी शुभकारी वरदान लेती है।

सावित्री नाटक (सन् १९००, पृ० ४६), ले० : लाला देवराज; प्र० : कन्या महा-विद्यालय, जालधर; *पात्र :* पु० ७, स्त्री १; *अक* : रहित, *दृश्य :* ९।
घटना-स्थल : राज मन्दिर, पर्णशाला, वन।

इस पौराणिक नाटक के लिखने का उद्देश्य नाट्यकार ने भूमिका में स्पष्ट कर दिया है। उनका उद्देश्य यह दिखाना है कि प्राचीनकाल मे बाल-विवाह की रीति प्रच-लित न थी। स्त्री-शिक्षा का प्रचार था और स्त्रयो को वेदादि शास्त्रो तक पढने का अधिकार था। स्त्रियाँ पति की सेवा करती थी।

महाराज अश्वपति सन्तानोत्पत्ति के लिए सावित्री (गायत्री) मन्त्रो से यज्ञ करते है। यज्ञ-फलस्वरूप सावित्री कन्या उत्पन्न होती है। युवती होने पर पिता उसे वर ढूंढने का आदेश देते है। सावित्री स्वयंवर मे सत्यवान का वरण करती है। यमराज सत्यवान के पिता को अन्धा बना कर वन मे निकाल देता है अत: माता-पिता की सेवा के लिए सावित्री सत्यवान वन मे रहते हैं। एक दिन यमराज सत्यवान को पकड कर मार देना चाहता है किन्तु सावित्री उसे वार्तालाप मे निरुत्तर कर देती है। अत. यमराज को बाध्य होकर छोडना पड़ता है।

इस नाटक मे भी सूत्रधार और नटी का सवाद प्रारम्भ मे दिखाया है।

सावित्री नाटिका (सन् १६०८, पृ ७०), ले०: बाके बिहारी लाल, प्र०. राजनीति यत्रालय, पटना, *पात्र* पु० २०, स्त्री १०, *अक* ५, *दृश्य* ४, ६, ७, ६, २।
घटना-स्थल महल, जगल।

नि:सतान राजा अश्वपति शकरस्वामी की सहायता से सावित्री देवी को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ का अनुष्ठान करते हैं। सावित्री देवी यज्ञ-कुड से प्रकट हो राजा-रानी को तेजस्वी और सुन्दर पुत्री होने का वरदान देती है।

सावित्री के प्रसाद से उत्पन्न पुत्री का नामकरण भी सावित्री किया जाता है। जब वह बडी होती है और उसके तेज से हतप्रभ होने के कारण कोई राजकुमार उससे विवाह करने की ही हिम्मत नही करता तो चिन्तित राजा सभासदो के परामर्श से सावित्री को ही अपना वर आप ही ढूढने का काम सौपते हैं। मुनि के आश्रम मे पहुचकर सावित्री ध्यानावस्थित सत्यवान के रूप तथा आचरण पर रीझ कर उसे ही उपयुक्त वर ठहराती है और ध्यानोपरात सत्यवान भी उसके सौंदर्य तथा वाणी के माधुर्य से वशीभूत हो जाता है। वहाँ से लौटकर वह सभा मे पिता और नारद पर अपना निश्चय प्रकट करती है। नारद वर के गुणो की प्रशसा कर चुनाव के प्रति अपनी असहमति बताते है क्योकि सत्यवान एक वर्ष पश्चात् जीवित न रहेगा। किन्तु सावित्री अपने निश्चय पर दृढ रखती है। फलत नारद राजा को विवाह का आदेश दे देते हैं। सावित्री अपने पिता और रानी शैव्या के साथ राजा द्युमत्सेन के तपोवन मे पहुचती है। सत्यवान भी वन से आ जाता है। अश्वपति के अनुरोध पर सावित्री-सत्यवान का विवाह-कार्य सम्पन्न होता है।

सत्यवान पिता की सेवा मे रहकर उन से अनेक आध्यात्मिक समाधान पाता है और भक्ति एव अहिंसा का उपदेश ग्रहण करता है। सावित्री सत्यवान के कल्याण के निमित्त भगवान् से प्रार्थना करती और महात्माओ का दर्शन कर उनका आशीर्वाद पाती है। वह सम्भावित घटना के दिन वन मे लकडी काटने के लिए जाने को तैयार सत्यवान के साथ जाने का अनुरोध करती है और सास की आज्ञा से कंदमूल-फल लाने सत्यवान के साथ वन मे जाती है।

सत्यवान कुल्हाडी और सावित्री फूल की डलिया लिये वन मे जाते है। लक्ष्य स्थान पर पहुंचकर सत्यवान लकडी काटने लगता है। वह एकाएक शिर शूल से मूर्छित हो जाता है। सावित्री उसका सर गोद मे लेकर नारद के वचनो का स्मरण करती हुई विलाप करती है। भयकर मुद्रा मे यमराज पुण्यवान् सत्यवान का प्राण हरण करने स्वय पहुंचते है। वे अपना उद्देश्य बताकर उसके प्राण को ले पूर्व दिशा की ओर जाते हैं। सावित्री को पीछे-पीछे आता हुआ देख वे उसे लौट जाने का अनुरोध करते है, परन्तु पातिव्रत धर्म के प्रभाव से उसकी गति नही रुकती। इसलिए यमराज उससे बार-बार वर से संतुष्ट कर लौट जाने का अनुरोध करते हैं। इस क्रम मे वह पिता की आख पाने, पुत्रवान होने, अपने लिए भी पुत्रो की मा बनने का वर प्राप्त करती है। अन्त मे गन्धर्वलोक तक पीछा करते हुए सावित्री अपनी विनम्रता, वैदुष्य, धैर्य, पातिव्रत, चातुर्य और प्रार्थना से यमराज को प्रसन्न

कर अपने पति के प्राण प्राप्त कर लेती है।

सावित्री सत्यवान (सन् १९५१, पृ० ७२), ले० न्यादरसिंह 'बेचैन'; प्र०. देहाती पुस्तक भडार, दिल्ली, *पात्र* पु० १०, स्त्री ७, *अक* . ३, *दृश्य* · ६, ७, ३।
घटना-स्थल राजा अश्वपति का महल, जगल, वनाश्रम।

इस नाटक मे सती सावित्री के जन्म से लेकर यम-विजय तक के जीवन को कथा-वस्तु के रूप मे चित्रित किया है गया। कथा का आधार पौराणिक है। देवशक्तियो के द्वारा कथानक मे मोड और चमत्कार उत्पन्न किया गया है। सावित्री की उज्ज्वल और पवित्र शक्ति के सम्मुख यम की पराजय दिखा कर सती-महिमा का प्रतिपादन किया गया है।

सावित्री सत्यवान (सन् १९५०, पृ० ८०), ले० : दुर्गाप्रसाद गुप्त; प्र० · बाबू बैजनाथ प्रसाद बुक्सेलर बनारस, *पात्र :* पु० ६, स्त्री २; *अक* ३, *दृश्य* ८, ८, ७।
घटना-स्थल महल, जंगल, वनाश्रम।

यह एक पौराणिक एव धार्मिक नाटक है। इसमे सावित्री के पातिव्रत को दिखाकर यमराज की हार दिखाई गई है। महाराज अश्वपति की पुत्री सावित्री अपने तपोबल से महाराज द्युमत्सेन के पुत्र और अपने पति सत्यवान को यमराज के पजे से छुडा-कर जीवन-दान प्राप्त करती है। [सावित्री की कथा सावित्री नाटिका मे विस्तार से दी हुई है।]

सावित्री सत्यवान (सन् १९५०, पृ० ७२), ले० आर० एल० गुप्ता 'मायल', प्र० : अग्रवाल बुक डिपो, दिल्ली, *पात्र :* पु० ५; स्त्री ३, *अक-रहित*।

यह पौराणिक एव धार्मिक नाटक है। महाराज अश्वपति को सावित्री देवी की पूजा करने से अन्तिम समय मे एक पुत्री की प्राप्ति होती है किन्तु उसके लिए अभिशाप था कि विवाह के दिन ही उसका पति मर जायगा। इतना होते हुए भी सावित्री अपने पातिव्रत धर्म के बल से यमराज को वश मे कर लेती है और अपने मरे हुए पति को पुन· जीवित करा लेती है।

सावित्री सत्यवान (सन् १९३२, पृ० ८०), ले० : वेणीराम त्रिपाठी 'श्रीमाली'; प्र० : ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स, वाराणसी, *पात्र :* पु० ९, स्त्री ५; *अक* ' ३; *दृश्य* · ९, ७, ८।
घटना-स्थल महल, जगल, पर्णशाला।

यह एक पौराणिक नाटक है। राजा अश्वपति सतान प्राप्ति के लिए कठिन तपस्या करते है और एक शक्ति द्वारा पुत्री प्राप्त करने का वरदान प्राप्त करते है। सावित्री अचानक अपनी सखियो के साथ टहलती हुई जगल मे जाती है और रास्ते मे उसकी आखे एक सुन्दर युवक पर पडते ही वह उसके लिए अपना प्रेम दे देती है। महर्षि नारद द्वारा उस लडके के वश, जाति तथा नाम का पता चलता है। नारद सावित्री को उस लडके से शादी करने के लिए मना करते है क्योकि सत्यवान शादी के एक वर्ष बाद ही मर जायेगा। लेकिन सावित्री नहीं मानती और अन्त मे सावित्री-सत्यवान का विवाह हो जाता है। सावित्री अपने पिता के राज्य को छोडकर अपने पति तथा सास-ससुर के साथ प्रेम से रहती है। निश्चित समय पर अचानक सत्यवान की मृत्यु हो जाती है। जब यमराज उसको लेने के लिए आते है तो सावित्री उनका पीछा कर लेती है। अपनी पति-भक्ति, अनुराग और मीठे शब्दो से वह यमराज को प्रसन्न करती है और अन्त मे वरदान से अपने सास-ससुर की आखे, उनका राज्य, अपने पति के सौ पुत्र तथा अपने प्रिय पति सत्यवान का जीवन प्राप्त कर लेती है।

सावित्री सत्यवान (सन् १९१४, पृ० ३१), ले० · सोमेश्वरदत्त शुक्ल; प्र० : इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, *पात्र :* पु० ७, स्त्री १; *अक-रहित*; *दृश्य :* ७।

घटना-स्थल . महल, जंगल।

मूल कथा महाभारत से ली गई है किन्तु कही-कही नवीन बातो की कल्पना भी कर ली गई है।

राजा अश्वपति की पुत्री सावित्री शाल्व देश के राजा द्युमत्सेन के पुत्र सत्यवान को पति के रूप मे हृदयंगम करती है। नारद के यह बताने पर भी कि वह अल्पायु हैं, सावित्री अपने निश्चय पर अडिग रहती है। सत्यवान तथा सावित्री का विवाह दोनो पक्षो की सहमति तथा नारद के आशीर्वाद के साथ सम्पन्न होता है। एक दिन सत्यवान तथा सावित्री वन मे समिधा लेने जाते हैं, वही सत्यवान निश्चेष्ट होकर गिर पडता है। यमराज उसके पातिव्रत धर्म से प्रभावित होकर उसे अनेक वरदान देते है। सावित्री अपनी चतुराई से अपने अंधे श्वसुर को दृष्टि-दान, राज्य, वरदान मे प्राप्त करती है। यम अब उससे पीछा छोडने को कहते हैं किन्तु वह उनसे सौ बलवान पुत्रो का वरदान माँगती है। यम की स्वीकृति पाने पर सावित्री कहती है कि पति के बिना यह कैसे सम्भव है। अपने वचन को पूरा करते हुए मेरे पति का प्राण मुझे लौटाइए। यम अपने सभी वचनो को पूर्ण करता है। सेना-पति रणधीर सिंह के द्वारा बैरियो का नाश तथा द्युमत्सेन के राज्य की पुनर्स्थापना होती है।

सावित्री-सत्यवान (सन् १९६१, पृ० ६९), ले० · गुप्तवधु; प्र० : सर्वसुलभ-साहित्य सदन, फतेहपुर; पात्र . पु० ७, स्त्री ६, *अक* · ३; *दृश्य* ४, ४, ४।
घटना-स्थल . राजमहल, वनप्रदेश, पर्ण-शाला।

प्रथम अंक मे अपने पिता अश्वपति और महामात्य के आदेशानुसार सावित्री वर की खोज मे निकलती है और वन-प्रदेश मे शिविर बनाकर कन्याओ के लिए धन वितरण करती है। एक नारी अपने मृतक पुत्र को गोद मे लिये सावित्री से दु ख-निवारण की याचना करती है। सावित्री उसे जगन्माता बनने की सान्त्वना देकर विदा करती है। एक दिन सावित्री वन प्रदेश मे लकडी काटने वाले युवक सत्यवान का परि-चय प्राप्त करती है और मन मे उसे पति बनाने का सकल्प करती है। नारद सत्यवान की अल्पायु का रहस्योद्घाटन करते हैं पर सावित्री अपने संकल्प पर दृढ रहती है।

दूसरे अंक मे शाल्व नरेश द्युमत्सेन और रानी शैव्या को वन-प्रदेश मे स्थित आश्रम मे निवास करते हुए दिखाया गया है। सावित्री अपने सास-श्वसुर से सत्यवान के साथ वन प्रदेश मे लकडी काटने जाने की अनुमति माँगती है।

इसी अक मे सत्यवान का मृतप्राय होना तथा सावित्री और यम का सवाद दिखाया गया है।

सावित्री यम का अनुसरण करते हुए अन्तरिक्ष मे प्रस्थान करती है। यमराज सावित्री-की विजय स्वीकार करता है और सत्यवान को काल-पाश से मुक्त कर देता है। सावित्री-सत्यवान राजा द्युमत्सेन और रानी शैव्या के पास लौट आते है और सुख-पूर्वक जीवन विताते हैं।

साहित्य का सपूत (सन् १९३४, पृ० १६७), ले० . जी० पी० श्रीवास्तव, प्र० चाँद प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद, पात्र पु० ११, स्त्री ३; *अक* ३, *दृश्य* ५, ४, ५।
घटना-स्थल रास्ता, सम्पादक का कमरा।

यह हास्यरस-प्रधान नाटक है। इसमे साहित्य सुधार का प्रयास किया गया है। मूर्ख साहित्यानन्द एक पत्र के सम्पादक है जिन्हे भाषा-शैली, वर्णमाला और व्याकरण तक का शुद्ध ज्ञान नही है। अत वे बहुत-सी भूले करते है। इसी तरह विदेशी और खद्दर के दोहरे रूप वाले कुर्ते से ढोंगी देशसेवको की अच्छी खबर ली गई है। दुलहिन द्वारा दूल्हेराम का इम्तहान लिया जाना इस नाटक की दूसरी उपकथा है। चपला कुमारी प्रेम और संसारी नाथ को लेकर समाज पर

व्यंग्य किया गया है, समग्र नाटक सामाजिक सुधार से ओत-प्रोत है, जिसे साहित्यानन्द अपने अखबार के माध्यम से अटपटा छाप करके अपनी अयोग्यता का परिचय देते है जोकि नाटक मे स्थल-स्थल पर हास्य को जन्म देता रहता है।

सिन्दूर की होली (सन १९३४, पृ० १७२), ले० . लक्ष्मीनारायण मिश्र; प्र० · भारती भंडार, इलाहाबाद, प.त्र पु० ६, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* . १, १, १।

इस नाटक मे मुरारीलाल मजिस्ट्रेट आठ सहस्र रुपये के लिए अपने मित्र की हत्या करता है और उसके पुत्र मनोजशंकर के पालन-पोषण मे उक्त धन से कही अधिक व्यय करता है। वही मजिस्ट्रेट एक ऐसे आदमी से चालीस सहस्र रुपया उत्कोच मे लेता है, जो अपने पट्टीदार रजनीकान्त की हत्या करके उसकी सम्पत्ति हडप जाता है। युवा रजनीकान्त का चित्र देखकर मजिस्ट्रेट की कन्या चन्द्रकला नाना प्रकार के संकल्प-विकल्प करती है और अत मे रजनीकान्त के शव के हाथो से अपनी माँग मे सिंदूर भर लेती है। वह सदा अविवाहित रहकर अपने पिता से दूर निवास करती है। मनोजशकर को भी पिता की हत्या का रहस्य ज्ञात हो जाता है।

सिंध देश की राजकुमारियाँ (सन् १८९५, पृ० १२), ले० . काशीनाथ 'बाबू', प्र० : धार्मिक; यन्त्रालय, प्रयाग, *पात्र* . पु० ४, स्त्री २; *अक* : २, *गर्भाक* : २, १।

प्रस्तुत नाटक सन् ७५२ के इतिहास से सम्वन्ध रखता है। जब सबसे पहले खलीफा उमर ने मुहम्मद बिनकासिम के साथ मुसलमानो की फौज को सिंध देश मे भेजा है। वहा का राजा रणभूमि मे मारा जाता है और उसकी दो कुँवारी लडकियाँ कैद करके खलीफा के पास भेज दी जाती है। नायिका भेद-नीति से खलीफा से कहती है कि आपके सेवक कासिम ने मुझे भोगा है तब आपके पास भेजा है। खलीफा कासिम को प्राणदण्ड देता है। नायिका सारा प्रसंग बाद मे बादशाह को सुना कर मृत्यु को वरण करती है। इस प्रकार भारतीय नारी के आदर्श के साथ नाटक समाप्त होता है।

सिंहनाद (सन् १९२५, पृ० १९२), ले० : सरयूप्रसाद 'बिन्दु', प्र० : बजरग परिपद्, कलकत्ता, *पात्र* पु० ९, स्त्री ५; *अक* . ३ *दृश्य* ६, ६, ५।
घटना-स्थल : जंगल-पहाड, राजमार्ग, पुष्प वाटिका, औरगजेब का दिल्ली दरबार।

यह नाटक बजरंग परिषद् कलकत्ता द्वारा अभिनीत होने के लिए विशेष रूप से लिखवाया गया। नाटककार भूमिका मे लिखते है—"शिवाजी ने देश की हृदय-विदारक दयनीय दशा को आँख खोलकर देखा।" नाटक के प्रारम्भ मे महाराष्ट्र वंश के श्रद्धेय महात्मा आचार्य चन्द्रशेखर देशभक्त हिन्दू-धर्मानुरागी नवयुवक जगदीश कुमार सिह को हिन्दू जाति के अधःपतन का कारण समझाते हुए औरंगजेब से देश को मुक्त कराने के लिए सेना-संगठन का आदेश देते है। और जगदीश कुमार को शिवाजी की सहायता के लिए प्रेरित भी करते है। एक अन्य राजा जनकराव की कन्या प्रभातसुन्दरी जगदीश कुमार की अनुरागिणी बनती है। उसकी सखियाँ उसका परणय जगदीश कुमार से कराना चाहती है।

इधर शाइस्ताखा शिवाजी को धोखे से पकड़ने का षड्यत्र रचता है। शिवाजी अपने सेनापति प्रतापराव को समझाते है—"मैं रात को शाइस्ताखा के शयनागार मे जाऊँगा और उसका वध करूँगा। उसके मर जाने से शत्रुओ की फौज कमजोर पड जायेगी और हमारी सेना विजय पायेगी।" शाइस्ताखां सुलह के बहाने शिवाजी को बन्दी बनाना चाहता है। शिवाजी उसे युद्ध मे पराजित करते हैं जिससे वह भाग जाता है।

द्वितीय अक मे आचार्य, जगदीश कुमार

को देश-सकट और शिवाजी की नीति का परिचय देते हैं। शिवाजी को धोखा देकर मुगलो ने दिल्ली दुर्ग मे बन्द कर रखा है। उनकी मुक्ति के लिए आचार्य चन्द्रशेखर, प्रताप और ज्योतिषी गोविन्द राव दिल्ली पहुँचते हैं। दिल्ली दरबार मे जगदीश कुमार सिह और औरगजेब मे वाद-विवाद हो जाता है। औरगजेब कुमार को मुसलमान होने के लिए वाध्य करता है, और अस्वीकार करने पर हथकडी मे जकड़े कुमार पर औरगजेब तलवार का वार करता है। कुमार उसे हथकडी पर रोक लेते है और औरगजेब की तलवार छीनकर उसे गिरा देते हैं। युक्ति-पूर्वक आचार्य, कुमार और गोविन्द शिवाजी को मुक्त कराते हैं। इधर प्रभात की मुख्य सहेली पद्मावती औरंगजेब के दरबार मे नृत्य और सगीत कला दिखाकर उसे प्रसन्न करती है। गोविन्द ज्योतिषी पद्मावती के साथ तबला बजाने का काम करता है। वह औरगजेब से प्रतिज्ञा करती है कि मैं कुमार को मुसलमान बना लूंगी। कुमार भी मुसलमान बनने पर तैयार हो जाता है। पद्मावती कहती है, "आप अपने यहाँ की सब बत्तियाँ गुल कर दें, मैं दीपक राग गाऊँगी और सारी बत्तियाँ आपसे-आप रोशन हो जाएँगी।" बत्तियो के गुल होते ही पद्मावती (लैला) गोविन्द, आचार्य, कुमार दरबार से निकल भागते हैं। औरगजेब पछताता हुआ कहता है, "यह कोई हिन्दू औरत थी जो मुझे दगा दे गई, कुमार को मेरे पजे से छुडा ले गई।" महाराष्ट्र मे लौटकर जनकराव की कन्या प्रभातसुन्दरी और जगदीश कुमार सिह का विवाह होता है। विवाह मे मुसल्मानो से छीने गए रायगढ का चौथाई राज्य शिवाजी नव-दम्पती को उपहार मे प्रदान करते हैं। आचार्य कहते हैं, "यही वीरो का सिहनाद है।"

सिहल द्वीप (सन् १९६६, पृ० ५९), ले० . सेठ गोविन्द दास; प्र० . भारतीय विश्व प्रकाशन, दिल्ली, *पात्र :* पु० ६, स्त्री ४; *अक :* ५, *दृश्य-रहित ।*
घटना-स्थल . वंग देश की राजधानी, भारत का दक्षिणी समुद्री तट, तामलुक लका का उत्तरी बंदरगाह, समन्त कुटम पर्वत।

रावण की लका कहाँ थी। इस विषय मे पुरातत्ववेत्ताओ और इतिहासज्ञो मे बड़ा मतभेद है। वही रावण की लका वर्तमान लका है। वगाल के अधिपति सिहल के पुत्र विजय ने भारतीयो को ले जाकर इस द्वीप को बसाया था। यह विजय ही इस 'सिहल द्वीप' नाटक का मुख्य पात्र है जिसने नाटककार को नाटक लिखने को प्रेरित किया है।

सेठजी ने नाटक मे कथानक को मोड कर अपनी बुद्धि एवं कल्पना के सहारे नाटक को एक नये रूप मे प्रस्तुत किया है। उन्होने यह माना है कि विजय के सदृश वीर, साहसी और बुद्धिमान् व्यक्ति का देश-निष्कासन कुकृत्यो के कारण कदापि न हुआ होगा।

प्राचीन काल से ही भारत की विदेशो से मैत्री है। नाटक के एक गीत मे सिहल द्वीप और भारत की मैत्री का दिव्य सदेश दिया गया है। इस प्रकार यह नाटक अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री के महत्त्व का सूचक हो गया है और विश्व मे शान्ति स्थापित करने का एक मार्ग स्पष्ट करता है।

सिकन्दर (सन् १९४७, पृ० १४८), ले० : सुदर्शन; प्र० · वोरा एण्ड कम्पनी पब्लीशस, इलाहाबाद, *पात्र* पु० ६, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* १०, ८, ६।
घटना-स्थल . परसीपोलिन, सिकन्दर का खेमा।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। इस पर मिनर्वा मूवीटोन, बम्बई के अध्यक्ष श्री सोहराब मोदी ने फिल्म भी बनाई है। सिकन्दर नाटक के प्रारभ मे एक प्रेमी के रूप मे दिखाया गया है। वह ईरान की एक रमणी रुखसाना मे प्रेम करता है। उसके ही द्वारा सिकन्दर के जीवन मे बडा परिवर्तन आता है। रुखसाना की खूबसूरती ने स्वय अरस्तू तक को मोहित कर लिया था। कुछ

दिन बाद सिकन्दर उससे पीछा छुडाना चाहता है पर यदि रुखसाना वीर पुरुराज को अपना भाई बना सिकन्दर की रक्षा नहीं करती तो युद्ध-क्षेत्र मे जब सिकन्दर पुरु के भाले के नीचे था, उसकी मृत्यु और हार सुनिश्चित थी। किन्तु पुरुराज ने रुखसाना को पहले ही वचन दे दिया था कि वह सिकन्दर को जीवित छोड देगा। इसलिए जीतने पर भी वह हार जाता है और सिकन्दर जेहलम से आगे बढने का प्रयास करता है। तब रुखसाना स्वयं उसकी फौज मे बगावत कर देती है जिससे सिकन्दर को विवश होकर यूनान लौटना पडता है। वह सिकन्दर को पूरी स्थिति बताकर कहती है "भारत के आगे के राजा पुरु से भी अधिक वीर है तथा मेरी ही कुशलता के कारण आपकी यहाँ प्राण-रक्षा हो सकी है जिसे आप अपनी विजय समझते है, वस्तुत: यह आपका भ्रम है।" सिकन्दर रुखसाना की इन बातो से बहुत प्रभावित होता है तथा शीघ्र ही रुखसाना एवं सेना के साथ यूनान को लौट पडता है किन्तु उनके दिलो मे पुरुराज की वीरता की छाप घर किए रहती है।

सिकन्दर पोरस (सन् १९५८, पृ० ९६), ले० · चैनसुख 'बेताब', प्र० देहाती पुस्तक भंडार, चावडी बाजार, दिल्ली, पात्र पु० ७, स्त्री नही, अक रहित, दृश्य · १०। घटना-स्थल तक्षशिला, झेलम तट।

इस नाटक मे सिकन्दर व पोरस के मध्य युद्ध की ऐतिहासिक घटना का वर्णन किया गया है। सिकन्दर तक्षशिला पर आक्रमण करना चाहता है लेकिन आम्भी उससे मित्रता स्थापित कर अपने शत्रु पोरस पर हमला करने के लिए उत्तेजित करता है। सिकन्दर खून बहाना उचित नही समझता, इसलिए वह स्वय राजदूत का वेश धारण करके पोरस के पास मित्रतापूर्ण सधि करने जाता है। पोरस बिना युद्ध सिकन्दर की मित्रता व अधीनता स्वीकार करने से साफ इंकार कर देता है। फलतः झेलम के तट पर सिकन्दर व पोरस की सेना मे भयकर युद्ध होता है। पोरस का छोटा बेटा सिकन्दर से लडते हुए मारा जाता है। पोरस भी वीरता से लड़ता है लेकिन दुर्भाग्य से उसकी हार होती है। पोरस को कैद कर दरबार मे सिकन्दर के सामने हाजिर किया जाता है। सिकन्दर जब उससे पूछता है कि तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया जाय तो वीर पोरस गरज कर कहता है कि जैसे एक राजा दूसरे राजा से व्यवहार करता है। सिकन्दर पोरस की वीरता से खुश हो उसे मुक्त करके उसका राज्य वापस कर देता है। सिकन्दर देशद्रोही आम्भी को मृत्यु-दड की आज्ञा देता है। लेकिन पोरस अपने राज्याधिकार से आम्भी को मुक्त कर देता है। सिकन्दर की सलाह पर आम्भी अपनी बहन की शादी पोरस के बडे बेटे से कर देता है।

सिकन्दर पोरस को मित्र बना कर उत्तर भारत को जीतने के लिए आगे वढता है। वह कुछ प्रदेशो पर विजय भी प्राप्त करता है लेकिन सेना मे बगावत के डर से तथा विशाल एवं शक्तिशाली मगध साम्राज्य को जीतने मे अपने को असमर्थ पा कर वह अपने देश यूनान की ओर लौट पडता है। रास्ते मे बाबल नामक स्थान पर सिकन्दर ज्वर से पीडित होकर भयकर रूप मे बीमार पड जाता है। अपना अन्तिम समय देखकर सिकन्दर मन्त्री से यह इच्छा प्रकट करता है कि जब मेरी अरथी निकले तब मेरे दोनो हाथ बाहर निकाल देना जिससे दुनिया यह देख ले कि सिकन्दर खाली हाथ इस दुनिया मे आया था और अब खाली हाथ ही जा रहा है। यह कह कर वह सदा के लिए सो जाता है। मन्त्री उसकी अन्तिम इच्छा की पूर्ति करता है।

सितम इश्क व उल्फत (सन् १८९८), ले० : मिर्जा नजीर बेग 'नजीर', प्र० · दी पारसी जुबली थियेट्रिकल कम्पनी ऑफ बम्बई; पात्र · पु० ६, स्त्री ४।

नाटक का उद्देश्य प्रेम-मार्ग की कठिनाइयो पर प्रकाश डालना है। नाटक मे हजरत इश्क और दिलहजी के संवादो मे

प्रेम के विभिन्न पक्षो पर प्रकाश डाला गया है। नायिका नाजनीन,माँ और सखी गुलबदन के मना करने पर भी दिलहजी से विवाह करने का आग्रह करती है। माँ इसके चाचा के साथ जब इसे बनारस भेजना चाहती है तब नाजनीन विष खाकर मर जाती है। यह ओपेरा पारसी रगमंचीय युग की अभि-रुचि के अनुकूल रखा गया है। सम्पूर्ण रचना गजल, ठुमरी, गीत, दोहो और शेरो-शायरी मे की गई है। काव्यत्व अति सामान्य श्रेणी का है। भाषा हिन्दुस्तानी है।

सितम हामान व फरेबे शैतान (सन् १८८३, पृ० ७०), ले० हाफिज मोहम्मद अब्दुल्ला, प्र० ' हाजी साहब, इण्डियन इम्पीरियल थियेट्रिकल कम्पनी, धौलपुर; *पात्र* पु० ६, स्त्री २; *अक* (बॉब) २।
घटना-स्थल . यमन देश।

इस नाटक मे ईश्वर-भक्ति की विजय तथा शराब की निन्दा की गई है। इसका नायक हामान एक निर्धन, दयालु ईश्वर-भक्त, धर्म-परायण व्यक्ति यमन देश मे निवास करता है। उसकी पत्नी नागीना भी सती साध्वी धर्मात्मा है और उसके एक पुत्र मुजफ्फर और पुत्री मेहर निगार है। हामान अपनी निर्धनता से क्षुब्ध होकर जगल की राह लेता है। उसकी पत्नी भी बच्चो के भरण-पोषण के लिए घर छोड चल देती है, हामान जगल मे पहुँचकर ईश्वर से प्रार्थना करता है कि उसकी मृत्यु न हो। उसकी प्रार्थना पर फरिश्ता जिबराइल प्रकट होकर उसके मृत्युंजयी होने की सूचना देता है, और उसे सर्वदा ईश्वर को याद रखने की शिक्षा देता है। फरिश्ते के अन्तर्धान होते ही भूमि से शैतान प्रकट हो जाता है और ईर्ष्या के कारण हामान को पीड़ित करने के लिए उस जंगल के समस्त जल को सुखा देता है। हामान प्यास से व्याकुल हो उठता है। शैतान उसकी तृषा-शान्ति के लिए शराब प्रस्तुत करता है, परन्तु हामान उसे अस्वीकार कर देता है। शैतान भी उसके पीछे तब तक पडा रहा जब तक कि वह शराब पीकर उसका अनुचर नही बन जाता। अब हामान ईश्वर को भी भूल जाता है।

हामान की प्रिया नागीना भी अपने पुत्र और पुत्री के साथ जगल मे पहुँचती है। वह क्षुधा-पीडित अर्ध-विक्षिप्त अपनी सतान के असह्य कष्ट से विचलित हो उठती है और उन्हे बन मे ही सोता छोड आगे चल देती है। जगने पर दोनो अपनी माँ को न पाकर रोते-पीटते नगर की राह लेते है।

यमनराज फर्रुखसियर रोग-शय्या पर अपनी सतानहीनता के कारण राज्य के उत्तराधिकारी की चिन्ता मे सो जाते है। शैतान उन्हे स्वप्न मे हामान को राज्य सौंपने की सलाह देता है। राजा प्रात. मत्री को बुला हामान को खोज निकालने का आदेश देते है। राजा के मरने पर हामान राजगद्दी पर बैठता है और शैतान की प्रेरणा से शराब तथा उससे उत्पन्न अत्याचार मे लिप्त हो जाता है।

हामान के मातृ-पितृ-विहीन दोनो बालक मुजफ्फर और मेहर निगार राज्य दरबार मे भिक्षाटन करते पहुच जाते है। हामान उन्हे अपने पास बुलाकर राजसी वस्त्रो से सुसज्जित करता है और उन्हे सुरा-पान के लिए विवश करता है। परन्तु दोनो उसका प्रस्ताव अस्वीकृत कर देते है और शैतान की राय से मुजफ्फर कारागार मे डाल दिया जाता है। मेहर निगार को हामान जगल मे छोडवा देता है। वहाँ उसे साँप डस लेता है। शैतान उसे दवा के नाम से शराब पिलाना चाहता है, किन्तु वह 'लाहौल' पढकर उसे भगा देती हैं और स्वय विष के प्रभाव से मूर्छित हो जाती है। चगेज नामक सौदागर वहाँ पहुँचकर उसे एक 'जिन' द्वारा प्राप्त बूटी से स्वस्थ कर अपने घर भेजता है। मार्ग मे इलमासरफीक मेहर के सतीत्व को नष्ट करना ही चाहता है कि चगेज पहुँचकर उसकी रक्षा करता है। उसी समय शैतान प्रकट होकर रफीक को इतनी शराब पिलाता है कि वह मर जाता है। चगेज भी घर ले जाकर मेहर निगार से प्रेम की भीख माँगता है किन्तु वहाँ दो हब्शी चंगेज का वध कर मेहर के लिए लडते हुए

(दोनो ही) मर जाते है। शैतान उनके मुँह पर थूकता है। इसी समय सतान की खोज मे भटकती नागीना और आखेट के लिए गया हामान वही पहुँच जाते है। परस्पर पहचान होते ही हामान दोनो को घर ले जाता है।

हामान पत्नी और पुत्री को पुन. सुरा प्रस्तुत करता है। वे दोनो अस्वीकार करती है। वध को उद्यत हामान शैतान प्रेरित उन्हें कारागार मे भेजता है, जहाँ माँ, बेटा तथा बेटी मिल जाते है। शैतान और हामान कैद मे भी शराब पीने पर बाध्य करते है पर वे तीनो अडिग है। हामान ईश्वर की सत्ता भी नकारता है। वह मुजफ्फर के वध के लिए बढता है कि मृत्यु देवता 'मलकुल मौत' के पहुँचने पर वह स्वय निष्प्राण हो जाता है और मुजफ्फर को ताज देकर राजा बना दिया जाता है।

सिद्धान्त स्वातत्र्य (वि० १९९५, पृ० ७७); *ले०* : सेठ गोविन्द दास, *प्र०* · भारतीय विश्व प्रकाशन, दिल्ली; *पात्र* : पु० ४, स्त्री १, *अक* . २; *दृश्य*-रहित।
घटना-स्थल : लाला चतुर्भुज दास का घर।

इस सामाजिक नाटक मे सिद्धान्त-स्वातत्र्य की प्रमुखता दिखाई गई है। त्रिभुवन दास नाटक का नायक है जो चतुर्भुज दास का पुत्र है। लाला चतुर्भुज दास सेठ और जमीदार होते हुए भी पूरे कजूस है। त्रिभुवन बी०ए० करके घर लौटता है किसी तरह से छिपकर बग-भग के बायकाट आदोलन मे भाग लेता है। उसके पिताजी राज-भक्त है, वे सरकारी कर्मचारियो को झुककर प्रणाम करते है। बाप-बेटो के विपरीत विचार होने पर दोनो मे झगडा हो जाता है। त्रिभुवन 'सिद्धान्त-स्वातन्त्र्य' के आधार पर पिता से लडता है। चतुर्भुज पुत्र के सिद्धान्तो पर अपने सिद्धान्तो को स्वाहा कर देते है। अब पच्चीस वर्ष के पश्चात् त्रिभुवन दास प्रान्त का होम मेम्बर हो गया है। चतुर्भुज को राज-पदवी मिली हुई है। त्रिभुवन का पुत्र मनोहर गांधी जी का अनुयायी हो जाता है। त्रिभुवन पिता की तरह पुत्र से भी लडकर उसको घर से निकाल देता है। १९३० मे मनोहर किसी सत्याग्रह मे कार्य करते-करते गोली द्वारा घायल हो जाता है जो होम मेम्बर की आज्ञा से चलाई गई थी। चतुर्भुज ने जिस प्रकार पुत्र के लिए सिद्धान्त का बलिदान किया था उसी प्रकार पौत्र के लिए भी अपने सिद्धान्तो का स्वाह कर देता है। वह भी महात्मा जी के अनुयायी हो जाते है। परन्तु त्रिभुवन आखिर तक अपने 'सिद्धान्त-स्वातन्त्र्य' को अलापता रहता है।

प्रस्तुत नाटक सेठजी ने अपनी जेल-यात्रा मे लिखा था। नाटक का ऐतिहासिक महत्त्व भी है।

सिद्धार्थ (सन् १९४७, पृ० ८८); *ले०* · सीता राम चतुर्वेदी; *प्र०* : अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशी; *पात्र* · पु० ५, स्त्री ३, *अक* : २; *दृश्य* : ५, ५।
घटना-स्थल : उद्यान, राजमहल, तपोवन, मैदान, बुद्ध-सघ।

भगवान् सिद्धार्थ की जीवन-गाथा पर आधारित ऐतिहासिक नाटक है। कथारम्भ एक उद्यान से होता है। सुपर्णा, हेमलता तथा मधुकरिका नामक तीनो सखिया फूलो को चुनकर सिद्धार्थ को अर्पित कर देती है। फूलो की सुकुमारता से प्रभावित सिद्धार्थ मधुर चर्चा करते है। तभी सहसा देवदत्त के बाण से आहत खग गौतम के समक्ष आ गिरता है। गौतम करुणार्द्र हो उसे उठा लेते है। देवदत्त सिद्धार्थ से कलह करता है लेकिन शुद्धोदन आकर गौतम के न्याय का साथ दे देते है। देवदत्त अपने मित्रो के साथ लगातार हिंसा, चोरी तथा अन्याय को बढावा देता रहता है। सिद्धार्थ जीवन के प्रति वैराग्य-भाव रखते है, जीव-दया पर जीवित है। वे ससार की असारता से दुःखी हो गृह त्याग देते है। यशोधरा अपना अपमान समझकर विलाप करती हुई भी धैर्य धारण करती है, पुत्र राहुल का कर्त्तव्य-भार वहन करती है। गौतम विघ्न-बाधाओ को

झेलते हुए सत्य-ज्ञान की उपलब्धि करते है। राज्य मे बुद्ध के पुन· आने पर यशोधरा राहुल के साथ आरती गाती हुई बुद्ध-संघ मे प्रवेश करती है।

सिद्धार्थ का गृह-त्याग (सन् १९६२, पृ० १३५), ले०. गणेश प्रसाद श्रीवास्तव; प्र० नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ, पात्र पु० ५, स्त्री २, अक दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : कपिलवस्तु, राजमहल, उपवन।

नाटक के आरंभ मे शुद्धोदन, राजगुरु और सारथी आपस मे बाते करते है। सिद्धार्थ द्वारा कामिनी-कंचन, सुरा-सगीत कला का परित्याग करने, एक वृद्ध, रोगी और मृत व्यक्ति को देखकर दु खी होने का समाचार पाकर शुद्धोदन चितित हो जाते है। यशोधरा सिद्धार्थ को मोहजाल एव सासारिक सुखो मे बाँधने के लिए अपूर्व रूपवती रभा की सहायता लेती है। इसके लिए वह कोई भी त्याग करने को प्रस्तुत है। वह रभा से कहती है, "यदि तुम मेरे देवता को हँसता हुआ रख सको और बदले मे केवल सासारिक सुख से सतुष्ट रहो तो तुम्हारा वह सासारिक सुख मेरे लिए स्वर्गीय सुख होगा।" राजा के द्वारा अपने प्रति चरित्रहीन 'स्वतन्त्र विचरण करने वाली' सम्बोधन सुनकर रभा व्यथित हो उठती है, किन्तु दूसरे ही क्षण मन-ही-मन-अपने रूप-यौवन से सिद्धार्थ को पराजित करने के लिए ललकारती है। अपनी सम्पूर्ण मादकता एव मोहिनी-शक्ति से रभा सिद्धार्थ को अपने वश मे करना चाहती है। वे तो वासना तक सीमित नारी के सौदर्य मे कोई आकर्षण नही पाते। रभा अपनी जीवनी वताते हुए उस घटना को स्मरण कराती है जब काशिराज की सभा मे स्वयवर-नाच नाचते-नाचते उसने पुष्पमाला को उनके चरणो मे रख दिया था। वह कहती है कि आत्मा का मिलन तो हो ही गया है, शरीर से भी वह आनन्द पाना चाहती है किन्तु इस बाधा को दूर करने के लिए उसके लिए आत्महत्या अनिवार्य हो गई है। सिद्धार्थ आत्महत्या से बचने का सरल उपाय वताते हैं कि तुम काशी-नरेश के यहाँ जाकर कहो कि मैंने सिद्धार्थ को वर चुना है और कौमार्य की रक्षा के लिए शरीर से नही आत्मा से विवाह किया है। रंभा प्रेम मे शारीरिक सम्बन्ध को ही मुख्य समझने वाली वासना को गदी नाली कहती है। वासना अपनी क्रोधाग्नि से रभा को वश मे करती हुई आज्ञा देती है कि सिद्धार्थ को पथभ्रष्ट करे। रभा के ऐसा न करने पर वासना स्वय रभा के रूप मे आती है और स्वप्न मे पडे सिद्धार्थ को 'रंभा नृत्य' से मोहित करना चाहती है। अत मे वासना को पलायन करना पड़ता है। सिद्धार्थ की आत्मा उन्हे अपने पथ पर चलने के लिए इगित करती है। वे उत्तेजित होकर कहते है, "अब मैं राजभवन के पिंजडे मे एक क्षण भी नही रुक सकता। अभी इसी घडी इसी समय गृह त्याग करूँगा।" सारथी को बुलाकर मोहमाया दूर करके सकल्प-सिद्धि के लिए वे निकल पडते है।

सिद्धार्थ कुमार या महात्मा बुद्ध (वि० १९७९, पृ० १३४), ले० चन्द्रराज भण्डारी; प्र० : गाधी हिन्दी मन्दिर, अजमेर, पात्र : पु० १३, स्त्री ७, अक ५, दृश्य . ६, ९, ४, ५, ६।
घटना-स्थल . वाटिका।

प्रस्तुत नाटक के तीन अको मे सिद्धार्थ के तीन रूप नजर आते है।

पहले अक मे बालक सिद्धार्थ वाटिका की सैर कर रहे हैं। सौन्दर्य के निरीक्षण मे मुग्ध है, लेकिन उस सौन्दर्य मे उन्हे विप नजर आ रहा है। जिस समय वगुला मछली को निगल जाता है, देवदत्त के तीर से हंस गिर पडता है, उस समय उनका हृदय करुणा से रो पडता है। पर सौन्दर्य करुणा पर आधिपत्य जमा लेता है। जन्म के वैरागी सिद्धार्थ के सम्मुख सौन्दर्य की देवी यशोधरा अपना प्रेम प्रकट करती है।

विधि के विधान को कौन मिटा सकता है? काम के प्रति मानव की सहज दुर्बलता सिद्धार्थ मे जग उठती है। एकाएक सिद्धार्थ का पैर

फिसलता है, वैराग्य के स्थान पर प्रेम-अपना कब्जा जमा लेता है। यशोधरा की प्रेम-भिक्षा स्वीकृत होती है और उसे प्रेम का प्रतिदान भी मिल जाता है। परिणय के उपरान्त सिद्धार्थ को यशोधरा के अतिरिक्त कुछ भी दिखलाई नही पडता। यशोधरा के सौन्दर्य-सगीत मे समस्त जगत् का हाहाकार विलीन हो जाता है।

धीरे-धीरे स्वार्थ के क्षुद्र बन्धन ढीले हो जाते है, मोह का परदा फट जाता है। प्रेम अपना वास्तविक रूप प्रकट करता है। रमणी-प्रेम विश्व-प्रेम मे बदल जाता है। सिद्धार्थ की आँखे खुलती है। उनकी आत्मा मे एक अलक्षित झकार गूँज उठती है। प्रमोद-भवन के सुख उन्हे फीके मालूम होते है। सिद्धार्थ के मोह का रहा-सहा परदा बिल्कुल फट जाता है।

आधी रात का समय है। एक ओर यशोधरा आनन्द की निद्रा मे सोई हुई है लेकिन सिद्धार्थ की आँखो मे नीद का लेश भी नही है। सिद्धार्थ कुमार सोई हुई पत्नी को छोडकर द्वार से जाते है लेकिन प्रेम के कारण वापस आकर यशोधरा को जगाकर आज्ञा भी लेते है। यशोधरा प्रसन्न हृदय से उन्हे विदा करती है। स्वय सिद्धार्थ इस अलौकिक त्याग को देखकर मत्र-मुग्ध की तरह स्तब्ध हो जाते है। सिद्धार्थ प्रसन्नतापूर्वक देश-उद्धार हेतु प्रस्थान करते है। यह समाचार पाकर शुद्धोदन बहुत दुःखी होते है।

सिद्धार्थ बुद्ध (सन् १९५५, पृ० १४८); ले० बनारसीदास 'करुणाकर', प्र० : भारतीय साहित्य मदिर, दिल्ली, *पात्र :* पु० १५, स्त्री ५, *अक* · ४, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल . घर, वाटिका, उपवन।

यह नाटक भारत की सास्कृतिक एवं ऐतिहासिक परम्परा पर निर्मित किया गया है। देश के धार्मिक एव राजनीतिक इतिहास मे भगवान् बुद्ध को अगाध करुणा के कारण दशावतारो मे स्थान दिया गया है। बुद्ध के युवा जीवन से प्रारम्भ करके उनके बोधिसत्व प्राप्त करने के उपरात पुर्नमिलन तक के जीवन का इसमे विस्तार से वर्णन किया गया है।

सितार का सर्जक (सन् १९६३,), ले० : मनोहर प्रभाकर; नजसमा तथा अन्य सगीत-रूपक' मे सकलित, प्र० कल्याणमल एड सस, जयपुर; *पात्र* . पु० ६, स्त्री-रहित, *अक* . *दृश्य रहित*।
घटना-स्थल शाही दरबार, राज सभा।

'सितार का सर्जक' अमीर खुसरो के जीवन पर आधारित एक ऐतिहासिक संगीत-रूपक है। इसमे अमीर खुसरो की शायरी एवं उनके सगीत-प्रेम से सम्बन्धित अनेक घटनाओ को प्रस्तुत किया गया है। एक दिवस बलबन शहशाह के दरबार मे मजलिस होती है, जिसमे अमीर खुसरो के कलाम तथा पहेलियो से प्रसन्न होकर शाह उन्हे दरबारी कवि का सम्मान प्रदान करते है। एक अन्य दिन अमीर खुसरो देवगिरि के राजा के यहाँ सम्मानित होते है। वहाँ गोपाल नायकम् नामक सगीतज्ञ से वे अत्यन्त प्रभावित होते है और उनसे खिलजी दरबार मे चलने का अनुरोध करते है। गोपाल नायकम् इसके लिए शर्त रखते है कि यदि अमीर खुसरो उन्हें गायन मे पराजित कर देगे तो वे उनके साथ चल सकते है। सगीत प्रतियोगिता आयोजित की जाती है, जहाँ दोनो का गायन होता है। इस प्रतियोगिता मे गोपाल नायकम् पराजित हो जाते है और शर्त के अनुसार अमीर खुसरो के साथ चले जाते है।

सिपाही (सन् १९६९, पृ० ७२); ले० जगदीश शर्मा, प्र० . देहाती पुस्तक भडार, दिल्ली, *पात्र* पु० ६, स्त्री १, *अक* . ३; *दृश्य* १, १, १।
घटना-स्थल . हरगोविन्द सहाय का बगला।

नाटक की कथावस्तु काल्पनिक है। नाटक का विषय स्वतत्रता-प्राप्ति के बाद खद्दरधारी पूंजीपतियो का आडम्बर, छल और लूट-खसोट है। हरगोविन्द सेठ कांग्रेसी बनकर बड़े-बड़े वायदे करके एसेम्बली के

सदस्य चुने जाते है। वह अधिकारियो से मिल-मिलाकर रिश्वत की सहायता से एक फ्लोर मिल खोल लेते है जहाँ से काला धन पैदा करते है। उनका बडा पुत्र सुरेश शराबी है और वह पिता के प्रत्येक कार्य मे मदद करता है। दूसरा पुत्र प्रकाश प्रगतिशील समाजवादी विचारो का है। वह पिता-पुत्र के इस षड्यंत्र का विरोध करता है और मजदूरो का साथ देता है। मिल मे हडताल के समय गेहूँ की बोरियाँ काले बाजार मे पुलिस की सहायता से भेजने पर प्रकाश, पिता और इस्पेक्टर को पकडवाता है।

सुरेश क्रुद्ध होकर मजदूरो के अधिकारो के समर्थन के कारण प्रथम तो गोपी से प्रकाश को मरवाना चाहता है, किन्तु गोपी मना कर देता है। इस पर वह स्वय शराब पीकर उसे गोली मार देता है। माँ सध्या बिलखती है। देश का सिपाही प्रकाश संसार से कूच कर जाता है। सुरेश पश्चात्ताप करता है।

नाटक कई बार मंचस्थ हो चुका है।

सिलवर किग (नेक प्रवीण) (सन् १९५६, पृ० ९६), ले० आगाहश्र कश्मीरी, प्र० अग्रवाल बुक डिपो, दिल्ली, पात्र पु० ८, स्त्री ३, अक ३, दृश्य ६, २, ४,। घटना-स्थल मुनीर का घर, जुआ खेलने का स्थान।

नाटक मे सामाजिक कुरीतियो, जुआ शराब आदि पर प्रकाश डाला गया है।

प्रथम अक के प्रथम दृश्य मे नायिक, प्रवीन, उसकी पुत्री बानू और नौकर तहसीन भगवान् से प्रार्थना करते है। दूसरे दृश्य मे जुआरियो के अड्डे पर सुरा, सुन्दरी और जुए के खेल मे सभी अपने को लुटा रहे है। एक खानदानी अमीर नायक अफजल भी यही आ फसता है और जुए मे धन नष्ट कर शराब के नशे मे डूबा रहता है। स्वामि-भक्त नौकर तहसीन के आग्रह को ठुकरा कर वही डटा रहता है। अफजल की पुत्री और पत्नी प्रवीन उससे परेशान रहती हैं। इस दृश्य मे पतिव्रता पत्नी की आकुलता, पीडा और पति के प्रति चिन्ता को प्रस्तुत किया गया है। प्रवीन का भाई मुनीर अपनी पूर्व प्रेमिका और बहिन से अन्तिम बार मिलने आता है। प्रवीन पति अफजल की अनु-पस्थिति मे उससे नही मिलना चाहती किन्तु मुनीर अनुमति मिलने से पूर्व ही उपस्थित होता है और अपने मिलने का उद्देश्य भी कह देता है। वह उसे अपने पति की शका का भय दिखा कर विदा करना ही चाहती है कि अफजल आ जाता है और उसकी शका प्रतिशोध के रूप मे उग्र हो जाती है। मुनीर सयम बरतता है और चला जाता है किन्तु अपना कोट लेने पुन आता है। यह देखकर अफजल उसे पिस्तौल से मारना चाहता है। वह भागता है। अफजल उसका पीछा करता है।

मुनीर के घर मे असगर अब्बू, असद और बन्नू निमन्त्रित है। ये तीनो मुनीर की अनुपस्थिति का लाभ उठा उसकी आलमारी का ताला तोडकर ५० हजार रुपये निकाल लेते है। मुनीर के पहुंचने पर वे प्रवीन को अपशब्द निकालते है। साथ ही, इस सघर्ष मे मुनीर को गोली मार देते हैं और अफजल के आने पर उसे क्लोरोफार्म सुघाकर बेहोशी मे उसके हाथ मे पिस्तौल पकडा देते है। अफजल होश मे आने पर घर आता है और बचने के लिए फरार हो जाता है। यही पर वकील साहब की पत्नी की फरमाइश तथा नौकर लल्लू की घडी तोडने का हास्य दृश्य आता है।

दूसरे अक मे प्रवीन का आशिक उसकी लाचारी का लाभ उठाकर अपनी पत्नी बनाने का प्रयास करता है और उस सती को अपना सत न छोडने के कारण पुलिस की सहायता से प्रताडित करता है। अफजल विदेश से धन कमाकर लौटता है और अपने को छिपाकर नौकर तहसीन के माध्यम से पत्नी और पुत्री को आर्थिक सहायता देता है और प्रवीन की सच्चाई से आश्वस्त होकर असद तथा असगर से प्रतिशोध की घात लगाता है। तहसीन अफजल को प्रकट नही करता। इससे प्रवीन को शका हो जाती है।

इसी मध्य तीसरे अंक मे असद अपने षड्यंत्र से प्रवीन को गुप्त स्थान पर ले जाकर अपने अनुकूल करने की योजना बना लेता है और अफजल भी मौके की ताक मे उसी गुप्त स्थान के लिए गूंगा बनकर उनकी नौकरी कर लेता है।

असद पहले तहसीन और प्रवीन मे भेद पैदा कर तहसीन को घर से निकलवा देता है फिर प्रवीन को उठा ले जाता है। तहसीन चन्नू पुत्री और अफजल की खोज मे जाता है। उधर अब्बू असद का विरोध करता है, अफजल अब्बू को मिलता है और अब्बू असद तथा असगर को मारता है। अफजल, प्रवीन, तहसीन, बन्नू वही इकट्ठे मिलते है। अफजल अपनी गलती स्वीकार करता है और वकील फहिम दोनो अपराधियो को उचित सजा दिला कर अब्बू को क्षमादान देते है।

सिराजुद्दौला (वि० २०१५, पृ० ६१); ले० सर्वदानन्द, प्र० राष्ट्रीय साहित्य सदन, लखनऊ , पात्र पु० १४, स्त्री नही, अक : २ ; *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल महल का एक कक्ष, आँगन, बगाल, बिहार, उडीसा आदि।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। इसमे प्लासी का युद्ध सिराजुद्दौला को जिस फूट के वातावरण मे करना पडता है, उस ऐतिहासिक घटना को नाटकीय रूप देकर प्रभावोत्पादक बना दिया गया है। सिराजुद्दौला के बचपन मे ही उसके पिता की मृत्यु हो जाती है वह गरीबी-अमीरी, ऊच-नीच तथा हिन्दू-मुस्लिम के भेदभाव को दूर करके सबको एकता के सूत्र मे बाधना चाहता है। मीर मदन सिराजुद्दौला को धोखे मे मार डालना चाहता है लेकिन मीर जाफर तथा मदनलाल के विरोध करने से वह उसको मारने मे असफल हो जाता है। सिराजुद्दौला यूरोपियनो और फिरंगी शासको के अत्याचार को नही सहन कर पाता। वह फिरगियो तथा यूरोपियो के साथ युद्ध करता है। लेकिन वह अपनी ही तरफ के आदमियो—मीरन, मीरजाफर, रायदुर्लभ तथा राजवल्लभ और अमीरचद से धोखा खाता है। मीर जाफर राज्य के लालच मे फिरगियों से मिल जाता है। जिससे फिरंगी मीर जाफर को मुर्शिदाबाद का राजा बना देते है। मीरजाफर सिराजुद्दौला को कैदी बनाता है और मीर जाफर का लडका अमीन पहले से ही मुहम्मद बेग को इस बात के लिए राजी कर लेता है कि वह सिराजुद्दौला को मार देगा। कैदी सिराजुद्दौला को मुहम्मद बेग मार डालता है। वह हंसकर अपनी मा के चरणो को चूमते हुए सदा के लिए संसार से विदा हो जाता है।

सीता की माँ (सन् १९०७, पृ० ६३), ले० रामवृक्ष बेनीपुरी; प्र० जनवाणी प्रेस, कलकत्ता; पात्र : पु०नही, स्त्री १; अक : ५; *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल सीतामढी के निकट अटवी, जनकपुर की पुष्प-वाटिका, चित्रकूट का पहाडी अचल, लंका की अशोक वाटिका, अयोध्या का प्रान्तर।

यह स्वोक्ति रूपक है।

सीता की माँ अपनी पुत्री की सम्पूर्ण महत्वमयी जीवन-गाथा छाया-मूर्ति के रूप मे हृदयहारी शैली के माध्यम से वर्णन करती है। जनक के राज्य मे १२ वर्ष के अवर्षण के कारण अस्थि-कंकाल मात्र शरीर वाली सीता की मा स्तन मे दुग्धमात्र से अपनी बच्ची को पालन करने मे असमर्थ होने पर ढोगी राजा जनक को कोसते हुए कहती है—"बारह बरस तक वह निश्चिन्त राजमहल में रंगरेलिया मनाता रहा और अब जब पृथ्वी सूख कर पत्थर बन गई है, तो सोने के हल से उसे जोतने चला है।" वह बच्ची को एक स्थान पर रखकर बबूल के काटे के लिए इसलिए दौड़ती है कि वह अपनी नस मे सूराख बना सके जिसमे से दूध निकालकर बच्ची को पिलाये। इतनी देर मे जनक के हल के बैल बच्ची के पास रुक जाते है और राजा उस बच्ची को पुचकारता है। राजा और सीता की मा का वार्तालाप होता है। अन्त मे सीता की माँ मूर्च्छित होकर गिर

जाती है। द्वितीय अक मे सीता परिणय के उपरान्त राम के साथ अयोध्या जाती है तो उसकी माँ कहती है, "जा बेटी, मेरे भाग्य मे सिर्फ यह सुख बदा है कि छाया सी पीछे-पीछे घूमती रहूँ।"

तीसरे अक मे चित्रकूट के पहाडी अंचल मे पति का असीम लाड-प्यार पाकर मगल मना रही है। सीता की माँ वहाँ छाया रूप मे पहुचकर कहती है, "मेरा दुर्भाग्य मेरी बेटी के सिरपर जा गिरा।' —"मेरी बेटी, तू इसी कल्पना मे रह कि जनक तेरे पिता है, पृथ्वी तेरी माता है। यद्यपि जनक को कभी सीता नाम की कोई सन्तान न हुई और पृथ्वी ने न कभी हाड-मास का शिशु प्रसव किया।"

चौथे अक मे लका की अशोक वाटिका मे सीता की छाया-मूर्ति दिखाई पडती है। सीता की माँ वही पहुँचकर कहती है, "यह मेरा अभिशाप है। रावण, तुम्हारी सोने की लका को धूल मे मिलना है, तू आप जलेगा, सारा परिवार जलेगा, सोने की लका जलेगी। मेरी बेटी सोने की पुरी मे मानवता की प्रतिष्ठा करने के लिए ही पधारी है।

पचम अक मे सीता की माँ की छाया-मूर्ति अयोध्या की अट्टालिकाओ को घूरती है। सीता के निष्कासन के उपरान्त वह विलाप करती हुई कह रही है—"देवकन्या तू मानव से प्रेम करने चली थी। मानव ने तुझे निगल लिया बेटी? इनसे दानव भले थे। वाल्मीकि की कृपा से तुम मर्यादा-पुरुषोतम भले ही बने रहो राम, लेकिन सीता के साथ ही ओ अयोध्ये! तुम्हारा गौरव सदा के लिए पाताल-प्रवेश कर गया।"—सीता पाताल मे समा जाती है और विलाप करती हुई सीता की माँ आकाश की ओर बढती हुई कहती है—"आकाश, तू अपनी शरण मुझे दे।'

यह नाटक अनेक बार अभिनीत हुआ।

सीता वनवास (सन् १९३२, पृ० ६२), ले० आगाहश्र कश्मीरी; प्र० देहाती पुस्तक भडार, चावडी बाजार, दिल्ली, पात्र: पु० १२, स्त्री ६, *अक* ३, *दृश्य*: ७, ६, ३।

घटना-स्थल: अयोध्या का राजमहल, वाल्मीकि का आश्रम।

नाटक की कथावस्तु वाल्मीकि रामायण के लव-कुश काण्ड के आधार पर लिखी गई है।

दुर्मुख, रजक नामक धोबी द्वारा आरोपित, सीता के विषय मे जन-प्रचलित अपवाद की सूचना राम को देता है। राम के हृदय मे सीता के प्रति अगाध प्रेम है। उनकी निष्ठा और सतीत्व के प्रति पूर्ण विश्वास होते हुए भी वह उन्हे जन-भावना के प्रति आदर प्रदर्शित करने के लिए निर्वासित करते हैं। लक्ष्मण उन्हे ऋषि वाल्मीकि के आश्रम के पास छोड कर चले आते है।

द्वितीय अक मे सीता के लव-कुश पुत्रों का वाल्मीकि-आश्रम मे पालन और शिक्षण तथा सीता का राम के प्रति सत्य अनुराग वर्णित है। राम का अश्वमेध यज्ञ और लव-कुश द्वारा अभिमत्रित घोडा पकडना तथा हनुमान और लक्ष्मण-सहित राम-दल को युद्ध मे हराने का वर्णन है।

तृतीय अक मे सीता का हनुमान को छुडाना और पुत्रो को राम का परिचय देना तथा लक्ष्मण के साथ सीता और वाल्मीकि का अयोध्या जाना वर्णित है। अयोध्या मे पुन सीता की परीक्षा का प्रश्न राम को अधीर बना देता है और सीता पृथ्वी से प्रार्थना करके उसकी गोद मे समाविष्ट हो जाती है।

सीता वनवास (सन् १८८२), ले० बालकृष्ण भट्ट, प्र० हिन्दी प्रदीप, प्रयाग का अक्टूबर *अक*, *पात्र*: पु० ११, स्त्री ५; *अक* ३।
घटना-स्थल: अयोध्या, जगल, वाल्मीकि-आश्रम, यज्ञ-मडप।

पहला अक नाटक की पृष्ठभूमि का काम करता है। दूसरे मे दो दृश्यो के अन्तर्गत क्रमश राम को दुर्मुख द्वारा सीता सबधी लोकापवाद की सूचना तथा निर्णय के अनुसार लक्ष्मण द्वारा सीता को वन ले जाने का

प्रसग है। तीसरे अक मे सीता के वनजीवन, वाल्मीकि-आश्रम, लव-कुश के जन्म, बडे होने पर राम के यज्ञ मे उनके आगमन और अन्त मे सीता के पृथ्वी मे समा जाने का वर्णन है।

सीता वनवास नाटक (सन् १९५०, पृ० ९३), ले० मास्टर न्यादरसिंह 'बेचैन', प्र० : देहाती पुस्तक भडार, चावडी बाजार, दिल्ली, पात्र पु० १७, स्त्री १०, अक : ३ दृश्य . ४, ७, ४।
घटना-स्थल : राजमहल, जंगल, वाल्मीकि-आश्रम।

इस पौराणिक नाटक मे सीता के सतीत्व की परीक्षा दिखाई गई है।

रामराज्य मे राम अपने भाइयो के साथ हर प्रकार से प्रजा की रक्षा और सेवा करते हैं। ढिल्लन नामक धोबी अपनी पत्नी को देर से घर आने के अपराध मे निर्वासित करता है और देवी सीता को कलंकित बताता है। इस प्रवाद के कारण राम निर्दोष सीता को निर्वासित करते है। इधर राम अश्वमेध यज्ञ के लिए स्वर्ण की सीता बनवाते है। अश्वमेध यज्ञ के घोडे को वालमीकि आश्रम मे सीता-पुत्र लव-कुश पकडते है और भरत, शत्रुघ्न तथा लक्ष्मण के साथ हनुमान् और अगदादि को पराजित करते है। सीता पुत्रो को मुकुट के माध्यम से भरत, लक्ष्मण तथा सुग्रीव आदि का परिचय दे घोडा लौटा कर क्षमा मागने का आदेश देती है। लव-कुश के साथ सीता यज्ञ-भूमि मे भी लाई जाती है। पुन. उन की परीक्षा का प्रश्न उठता है। सीता पृथ्वी से अपनी लज्जा रखने की प्रार्थना करती है। पृथ्वी स्वय प्रकट हो सीता को अपनी गोद मे उठा अन्तर्धान हो जाती है। सभी अवाक् और मूक रह जाते है। नाटक अभिनीत है।

सीता स्वयंवर (वि० १९९५, पृ० ११२), ले० : आनन्द झा न्यायाचार्य ; प्र० श्री काञ्चीनाथ झा, रानी चन्द्रावती श्यामा दातव्य चिकित्सालय, वनारस, *पात्र* · पु० १६, स्त्री ८; *अक* : ५।
घटना-स्थल · सज्जित राजसभा, सुसज्जित राजभवन, प्रफुल्लित कुसुम-समूह, सुशोभित गिरिजा बाग, रावण का शिविर, स्वयवर सभा, अयोध्या की राजसभा, गिरजा बाग के सामने का भाग, सुसज्जित कौतुकागार।

इस पौराणिक नाटक मे सीता के स्वयवर की कथा दुहराई गई है। नाटकीय कथा-वस्तु के अन्तर्गत नाट्यकार ने महाराज जनक के राज्य की शासन-व्यवस्था, रहन-सहन, आचार-विचार आदि विषयो का उल्लेख किया है। महाराज जनक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि मैं सीता की शादी उसी व्यक्ति के साथ करूँगा जो शिव के धनुष को तोड सकेगा। इसी उद्देश्य से स्वयवर का आयोजन होता है। विभिन्न देशो के नरेश आमन्त्रित किये जाते है। विश्वामित्र के साथ राम और लक्ष्मण भी इस स्वयंवर मे भाग लेने के लिए मिथिला आते है। रावण भी इस स्वयवर मे सम्मिलित होता है। स्वयवर मे उपस्थित नरेशो मे राम ही ऐसे पराक्रमी निकलते है जो आसानी से शिव के धनुप को खड-खड कर देते है। इससे दशरथ और जनक को अत्यधिक प्रसन्नता होती है। पजीकारो से अधिकार जानकर शुभ लग्न मे दोनो की शादी हो जाती है। जब यह संवाद परशुराम को मिलता है, तब वे अत्यधिक क्रोधित होकर वहाँ उपस्थित होते है। शिव-धनुष को टूटा हुआ देखकर वे युद्ध के लिए सन्नद्ध हो जाते है। राम-लक्ष्मण परशुराम को समझाने की कोशिश करते है, किन्तु वे उनकी एक बात भी नही सुनते। कुल-गुरु वशिष्ठ के कहने पर परशुराम की क्रोधाग्नि शमित हो जाती है। इससे उप-स्थित व्यक्तियो मे अत्यधिक प्रसन्नता होती है। अन्ततः जनक सीता को अयोध्या के लिए विदा करते है। मिथिला की प्रच-लित परम्परानुसार नाट्यकार ने 'समदाउन' नामक गीत से, नाटक की समाप्ति की है।

सीता स्वयंवर नाटक (सन् १९०३, पृ० ६०), ले० : तोताराम-उपनाम प्रेमी कवि; प्र० : ईश्वरी प्रसाद, स्वामी प्रेस, मेरठ, *पात्र :* पु० १५, स्त्री ८; *अक* (एक्ट) · २; *सीन* : ४, ५।

घटना-स्थल . वन, वाटिका, वाल्मीकि आश्रम, जनकपुर ।

विश्वामित्र राजा से यज्ञ की रक्षा के लिए राम-लक्ष्मण की माग करते हैं। राजा प्रेमवश अधीर हो आनाकानी करते है किन्तु शाप के डर से तथा वशिष्ठ के समझाने से पुत्रो को दे देते है। उनकी संरक्षणता मे मुनि यज्ञ करते है। युद्ध मे ताडका, सुबाहु और मारीच का बध कर राम स्वय कहते है—"मैं लीन्ह मनुज अवतार भार महि टारो।" पश्चात् राम-लक्ष्मण को साथ ले मुनि वन मे आगे जाते है जहाँ राम के चरण स्पर्श से पाषाणी अहल्या प्रकट होकर स्तुति करती है। वहाँ से गंगा-माहात्म्य वताते हुए विश्वामित्र उन्हे साथ ले जनकपुर जाते है। बाग मे सीता-राम मिलन होता है। सीता जी दुर्गा की पूजा कर उनसे राम को पति रूप मे प्राप्त करने का वरदान मागती है। धनुष-यज्ञ मे जब सहस्रबाहु, रावण आदि बडे-बडे वीर धनुष तोडने मे असफल हो जाते है और जनक 'कोई क्षत्रिय शूरवीर नही रहा' कहकर खेद प्रकट करते है, तब राम मुनि की आज्ञा से उसे भग करते हैं। इससे परशुराम और लक्ष्मण मे विवाद चलता है।

अन्त मे राम "लखन पर मिहरबानी करने" का अनुरोध कर परशुराम "वास्ते आजमायश ताकत के अपना धनुष वास्ते चढाने के रामचन्द्र जी को" देते हैं। राम उसे चढा देते है। राम को परब्रह्म जान परशुराम उनकी स्तुति करते है। सीता राम के गले मे वरमाला डालती है।

सीताहरण (सन् १८९५, पृ० ७०); ले० · बंदीदीन दीक्षित; *प्र० :* लखनऊ प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ; *पात्र :* पु० ६, स्त्री २।
घटना-स्थल . चित्रकूट।

इस पौराणिक नाटक मे रामायण के आधार पर सीताहरण की कथा का वर्णन है। जब राम-सीता और लक्ष्मण को चित्रकूट मे निवास करते समय खरदूषण और सूर्पणखा उन्हे अनेको तरह की बाधा पहुँचाते है तब क्रुद्ध होकर राम खरदूषण का वध करते ही सूर्पणखा की नाक-कान भी काट लेते हैं। सूर्पणखा के उकसाने पर रावण यती का वेश बनाकर सीता का हरण कर लेता है। इधर राम और लक्ष्मण सीता को न पाकर विलाप करते है। फिर सीता के द्वारा फेंके हुए गहने आदि देखते हैं। और जटायु के द्वारा सारा समाचार प्राप्त करते हैं। जटायु घायल होने के कारण मर जाता है। दोनो भाई उसका दाह-संस्कार करते हैं।

सीय स्वयंवर (सन् १९१८, पृ० ३५), *ले० अम्बिकादत्त त्रिपाठी, प्र० ·* ग्रन्थ प्रकाशक समिति, वनारस; *पात्र* पु० १५, स्त्री ४, *अक-दृश्य-रहित।*
घटना-स्थल जनकपुर मे स्वयवर सभा।

इस पौराणिक नाटक मे सीता-स्वयवर की कथा चित्रित है। नाटक मंगलाचरण से प्रारम्भ होता है। सीता-स्वयंवर मे देश के अनेक राजा आते हैं जिनमे रावण एवं वाणासुर भी सम्मिलित है। धनुप तोडने मे सभी योद्धा असफल रहते है जिससे जनक चिंतित हो जाते हैं। उसके पश्चात् राम धनुष तोडते हैं। परशुराम सभा मे आकर क्रोध प्रकट करते है परन्तु राम के पराक्रम से प्रभावित होकर शान्त हो जाते हैं। अन्त मे सीता एव राम का विवाह हो जाता है।

सीमान्त के वादल (सन् १९६३, पृ० १२६), *ले० :* लक्ष्मीकान्त वर्मा, *प्र० ।* भृगुबन्धु कार्यालय, इलाहाबाद, *पात्र .* पु० १४, स्त्री २; *अक : ४, दृश्य* प्रत्येक अंक मे एक-एक।
घटना-स्थल : हिमालय की बर्फीली चोटियाँ, भारतीय सैनिकों का पहाड पर शिविर, आधे रगमच पर धुधली छाया, पहाडी दृश्य।

यह नाटक चीनी आक्रमण की घटनाओं से सम्बद्ध है। प्रथम अक मे श्वेत वस्त्र-धारिणी एक स्त्री वेग बोले एक स्वप्न मे विलीन हो जाती है। नेपथ्य मे गान होता है—"आज हिमालय की चोटी ने मागा कफन-

रक्त का दान। सुनो-सुनो ओ भारतवासी कर दो धरती लहूलुहान।" हिमदेवी अपना परिचय देते हुए कहती है—

"भारत की आत्मा, चेतन, मैं प्रेम, आस्था, प्रीत गीत, मैं पूजा आराधन।" उधर माओ सैनिको को ललकार कर कहता है—"ओ नगी भूखी सेनाओ, ओ पशु, ओ जीवित शव, सैन्य घोषणा चलो सुनाओ।" एक चीनी सैनिक मे चाऊ अपनी निर्ममता को प्रकट करते हुए कहता है—"पूरे देश के हृदय को कन्दराओ मे बन्दी देवताओ को दे दिया है। ताकि हम छीन सके, निर्दयता से ये सगीने, ये थैली चावल की।"

भारतीय और चीनी सेना मे युद्ध होता है। कैप्टन रवि शत्रुओ को भागते देखकर प्रसन्न होता है। मेजर पुरी लेफ्टिनेंट विजय आदि भारतीय वीर छुपे हुए चीनियो की गोलियो का जवाब देते है पर लेफ्टिनेट विजय गम्भीर रूप से आहत होकर राष्ट्र-ध्वज मेजर पुरी को देकर वीरगति प्राप्त करता है।

द्वितीय अक मे वालाक क्षेत्र मे भारत से मिलाने वाली सडके शत्रु काट डालते है। सैनिको को खाद्य एव युद्ध सामग्री नही मिलती। केवल वायुयान से सामग्री पहुँचाई जाती है। भूख-प्यास से व्याकुल इर्शा को लेफ्टिनेंट भारती रोटी और पानी देता है। वह चेतना मे आने पर एक मानचित्र देती है जिसे उसने एक चीनी जनरल को छिपकर गोली मारकर प्राप्त किया है। उसके दिए हुए यंत्रो और मानचित्रो से चीनियो की युद्ध-योजना का ज्ञान होता है। इसी समय चीन के विगत इतिहास की प्रेतात्मा प्रकट होकर अपना विवरण देती है।

तीसरे अक मे इतने भारतीय बन्दी बनाये जाते है कि माओ सबके लिए हथकडी-बेडी की व्यवस्था नही कर पाता। पर कमलसिह अपने सैनिको के साथ लड रहा है। भारतीय सेना और चीनियो मे युद्ध होता है। अधकार के मध्य चीनी योद्धा आनशान—जिसने गुप्तकाल मे भारत पर आक्रमण किया था—की प्रेतात्मा दिखाई पडती है।

इस गीति नाट्य मे चीनी आक्रमण से भारत-पराजय का दृश्य दिखाकर भारतीय संकल्प शक्ति द्वारा शत्रु से प्रतिशोध और स्वाभिमान की रक्षा का संदेश निहित है।

यह नाटक प्रयाग की विशिष्ट नाट्य संस्था सेतुमच द्वारा २७-१-६३ को स्थानीय पैलेस थियेटर हाल मे प्रातः ९ बजे प्रस्तुत किया गया।

सीमंतिनी चरित्रमु (सन् १८८४, पृ० ३८), ले० पुरुषोत्तम कवि, प्र० नादेल्ल मेधा-दक्षिणा मूर्ति शास्त्री, मछलीपट्टणम; *पात्र:* पु० २३, स्त्री ६, *अक-रहित, दृश्य :* २४। *घटना-स्थल* · घर, राजप्रासाद, नदी, युद्ध-क्षेत्र।

सोमवार-व्रत माहात्म्य को प्रकट करने वाले इस नाटक की कथावस्तु स्कदपुराण से ली गई है।

महाराज चित्रवर्मा की पुत्री सीमतिनी यह जानकर कि १४वे वर्ष मे वैधव्य प्राप्त होने वाला है, गुरुपत्नी मैत्रेयी के आदेश से नियमपूर्वक सोमवार-व्रत का पालन करती है।

सीमतिनी का विवाह चद्रागद नामक राजकुमार से होता है। एक दिन आखेट के लिए गया हुआ चद्रागद नदी मे डूब जाता है, खोजने पर भी उसके शव का पता नहीं चलता। कुशखड पर प्रेतत्व का आरोप कर चद्रागद की अन्त्यक्रियाएँ की जाती है। किन्तु चंद्रागद मरता नही। दो नाग कन्याएँ उसे पाताललोक ले जाती है। वहाँ राजा तक्षक उसकी शिवभक्ति से प्रसन्न हो, उसे सादर फिर भूलोक भेज देते हैं।

चद्रागद भूलोक लौटकर, शत्रुओ पर विजय प्राप्त कर राज्य-लाभ करता है। सीमतिनी और चंद्रागद का पुन मिलन सम्पन्न होता है।

सुखानन्द मनोरमा (वि० १९६४, पृ० १५४), ले० हिन्दी हितैषी विद्यार्थी, प्र० : खेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई; पात्र · पु० १३, स्त्री ३, *अक :* ५, *गर्भाक* · ५, ५, ५, ५, २।

घटना-स्थल : राजभवन, घर, शयनागार, काशी मे सेठ का उद्यान।

सुखानन्द विजन्ती का वणिक-पुत्र इस नाटक का नायक है और उसकी स्त्री मनोरमा नायिका है। विजन्ती नगर का राजकुमार कामसेन मनोरमा के सौन्दर्य पर आसक्त है और वह दूती भेजकर मनोरमा से अपना प्रेम प्रगट करता है। मनोरमा उसे पत्र देती है कि "राजकुमार! पराई स्त्री की इच्छा करना बड़ा दोष है।"

काम सेन दूती को समझाता है कि तुम उसके सास-ससुर के पास जाकर कहो कि "तुम्हारी बहू तो राजकुमार से सम्बन्ध रखती है, अतएव उसको घर से निकाल दो।" दूती की चाल से सास-ससुर को मनोरमा पर सदेह होता है और वे उसे अपने सारथी के द्वारा उसके पितृ-गृह भेजने के बहाने से घोर अरण्य मे भेज देते हैं। सुखानन्द व्यवसायार्थ विदेश गए हैं। उसकी अनुपस्थिति में यह काड होता है।

नाना प्रकार की विपत्ति सहने पर मनोरमा और सुखानन्द का पुन: मिलन होता है और सुखानन्द उसके धैर्य और सौन्दर्य की प्रशसा करते हैं। मनोरमा विनय करती है, "जब तक मेरा कलंक दूर न हो तब तक आप मुझसे किसी प्रकार का सम्बन्ध न रखें।"

अन्त मे मनोरमा के सास-ससुर अपनी भूल स्वीकार करते हैं। मनोरमा और सुखानन्द सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं। इस नाटक मे स्त्री के सतीत्व की महिमा दिखाई गई है। नान्दी सूत्रधार के बिना नाटक आधुनिक शैली मे प्रारम्भ किया गया है।

सुख किस में (सन् १९४९, पृ० १००), ले० सेठ गोविन्द दास; प्र० : प्रगति प्रकाशन, दिल्ली; पात्र : पु० ३, स्त्री २; अक : ५; दृश्य . २, २, २, २, २ तथा एक उपक्रम और दूसरा उपसहार है।
घटना-स्थल . सृष्टिनाथ का घर, हरिद्वार।

इस नाटक मे 'सुख किस मे' नामक समस्या उठाई गई है। नाटक में सृष्टिनाथ इस बात का इच्छुक है कि जो कुछ भी सृष्टि में सुन्दर है, उस पर उसका अधिकार रहे और वह उसका उपभोग करने के लिए सर्वदा स्वतन्त्र रहे। वह एक पूँजी-पति विलासी युवक है। वह अपने वैभव में इन्द्र की तरह सुखी है। दुर्भाग्य से उसके व्यापार में घाटा होता है। सारे विलास समाप्त हो जाते हैं। धन-हीन होकर सृष्टिनाथ गंगा में डूबकर आत्महत्या करना चाहता है। वैराग्यानन्द नामक संन्यासी उसे आत्महत्या से विरत कर फिर जीवन की ओर मोड़ता है। सृष्टिनाथ संन्यासी बन जाता है, परन्तु उसको वहाँ भी शान्ति नहीं मिलती। सृष्टिनाथ प्रेमपूर्णा से प्रेम करने लगता है परन्तु वह उसके प्रेम को समझ नहीं पाती, क्योंकि वह अज्ञात यौवना है। मरते समय उसकी माँ प्रेमपूर्णा का हाथ सृष्टिनाथ के हाथ में दे जाती है। दोनो दम्पती बन जाते हैं। कुछ समय पश्चात् इनसे मोहनमाला नाम की लड़की का जन्म होता है। दोनों उसी की ओर केंद्रित हो जाते है। सुख से रहते हुए कुछ दिन बाद मोहनमाला की मृत्यु हो जाती है। दोनो विकल हो जाते हैं पर आत्म-चिन्तन करने के पश्चात दोनो देखते हैं कि मोहनमाला विश्व मे व्याप्त हो गई है। सारा विश्व परमात्मामय है।

सुजाता (सन् १९६१, पृ० ६५), ले० : गोविन्दवल्लभ पंत; प्र० : आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; पात्र : पु० ५, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य : ३, ३, ३।
घटना-स्थल : विजय का घर।

शकित होकर सुजाता को घर के अन्दर बन्द रखते हैं। एक दिन डॉ० विसन धोखे से सुजाता के घर का ताला खोलकर उस के पास जाते है और उसे पिता की झूठी बीमारी का बहकावा देकर घर से बाहर ले जाते है। रहस्य खुलने पर सुजाता, डॉ० विसन का साथ छोड देती है और वह भूलती-भटकती हुई अपने पिता के घर पहुँच जाती है। इधर विजय अपनी पत्नी सुजाता को किसी बाहरी वासना की परछाई पडने मात्र से त्याज्य और कलकित समझने लगता हैं। अन्त मे उसे मृतक घोषित कर अपनी दूसरी शादी करके नव वधू रेखा को ले आता है।

उधर सुजाता भी अपने पिता द्वारा निष्कासित कर दी जाती है। वह पुन अपने पति विजय के पास आकर अपनी बीती कहानी उसे सुनाती है लेकिन विजय उसकी बातो पर विश्वास न करके उसे घर से निकाल देता है। इधर रेखा अपनी सौत सुजाता के परित्याग का कारण समझ जाती है। वह सुजाता को घर मे रख लेती है तथा कुछ दिन विजय से सारा रहस्य छिपाये रखती है। रेखा सुजाता की मार्मिक वेदना को अच्छी तरह समझती है और उसे अपना अमूल्य प्रेम तथा सहयोग देती है। रेखा भी एक सूझ-बूझ की स्त्री है जो अपनी सौत सुजाता के दु:ख को अपना दु ख समझकर उसको उसका वास्तविक अधिकार दिलाने का पूरा प्रयत्न करती है। अन्त मे धीरे-धीरे रेखा अपनी बुद्धिमानी से विजय तथा डॉ० विसन को सुजाता का वास्तविक ज्ञान कराती है। इधर सुजाता को भी वह पुन. विजय की पत्नी बनने को तैयार कर लेती है। सुजाता तथा रेखा एक ही वेप मे छिपे हुए दो रूप हैं जिसमे जीवन और मृत्यु का एकीकरण निहित है। अचानक सुजाता को एक साप काट लेता है, उसकी मृत्यु हो जाती है। खुशी की जगह शोक का मातम छा जाता है, जिससे डॉ० विसन वडे दु खी होते है और अन्त मे वे भी सुजाता के प्रेम मे विह्वल होकर अपना शरीर त्याग देते है तथा विजय अपने किए हुए कर्मो पर पश्चाताप करता है।

सुदामा (वि० १९९५, पृ० ९६), ले० : किशोरीदास वाजपेयी; प्र० : पटना पब्लिशर्स, पटना; पात्र . पु० ११, स्त्री ५; अक ५, दृश्य ४, २, २, ३, २।
घटना-स्थल : सरोवर तट, आश्रम का एक भाग, शिप्रा नदी का तट, चौपाल, सुदामा की झोपडी, श्रीकृष्ण की विनोदशाला, राजमहल।

इस नाटक मे कृष्ण-सुदामा की प्रसिद्ध कहानी का वर्णन है।

सुदामा श्रीकृष्ण के परम मित्र कैसे हो गये, जबकि अन्य सैकड़ो सहपाठियो से कोई मतलब ही नही ? दूसरे, उनकी गरीबी का कारण क्या था ? इन दो प्रश्नो का उत्तर पुराणो मे भी नही मिलता। वाजपेयी जी ने इनका उत्तर अपनी इस कृति मे स्पष्ट कर दिया है। इसमे कही कही गाधीवाद का भी प्रभाव मिलता है।

सुदामा तत्कालीन राजा के अत्याचारो का विरोध करता है और उसकी दासता को स्वीकार नही करता। इसी कारण से निर्धनता उसका साथ नही छोडती है। सुदामा की स्पष्टवादिता एव तेजस्विता से प्रसन्न होकर कृष्ण उस पर अपार कृपा रखते हैं और साथ पढने के कारण अपना अभिन्न मित्र भी समझते हैं।

सुदामा-कृष्ण नाटक (वि० १९६६, पृ० ७५), ले० : मातादीन सुकुल व बदीदीन दीक्षित; प्र० . ए० ओ० प्रेस, लखनऊ, पात्र . पु० १६, स्त्री १३; अक ३, दृश्य : ५, ६, ३।
घटना-स्थल सुदामा की झोपड़ी, जंगल, गोमती तट, द्वारिका मे कृष्ण का राजमहल।

इस पौराणिक नाटक मे प्रेम, भक्ति, सौहार्द तथा भक्तवत्सलता का वर्णन है।

प्रथम अक मे दो पुजारियो की प्रार्थना से प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण और सरस्वती उन्हे सुदामा नाटक की रचना और उसके अभिनय का आदेश देते है। सुदामा भिक्षाटन करते और यजमानो को आशीर्वाद देते हुए भटकते फिरते हैं, पर इससे प्राप्त अन्न भोजन के लिए पर्याप्त नही होता। इसलिए

उनकी पत्नी इस तुच्छ वृत्ति को त्याग कर कुछ दूसरा उपाय करने का आग्रह करती है। पत्नी के बार-बार द्वारिका जाकर अपने मित्र कृष्ण से कुछ माँग लाने का अनुरोध करने पर वे अपने मैत्रीव्रत को सफल करने के लिए 'भेट देने योग्य पदार्थ' की माग करते है। पडोस से सवाई पर प्राप्त चावल के कणो को फटे दुपट्टे मे बाधकर स्त्री सोत्साह विदा करती है।

इधर रुक्मिणी कृष्ण से भक्ति-दर्शन जानने की इच्छा प्रकट करती है। उधर वृद्धावस्था और पैदल यात्रा के कारण राह का कष्ट सहते थके-मादे सुदामा एक जगह सो जाते है, जिससे कोमल शैया पर सोये कृष्ण दुःखी हो रुक्मिणी को जगाकर दीन-भक्त ब्राह्मण के पथ-कष्टो का वर्णन करते हैं और उनकी सहायता के लिए गरुड पर बैठकर जाते है। वे वहाँ पहुँचकर सोते हुए सुदामा को उठा लाते है और द्वारिका के समीप गोमती तट के एक घाट पर सुला कर चले आते है। सुदामा कृष्ण से मिलने जाते है। कृष्ण उनका स्वागत-सत्कार करते है और ब्राह्मण की दीन दशा का समाचार जानकर दुःखी होते है। कृष्ण सुदामा की कोख से चावल की पोटली छीनकर भाभी की भेट स्वीकार करते हुए दो मूठी चावल खाते है पर तीसरी मूठी उठाते ही रुक्मिणी हाथ थाम लेती है। कुछ दिन वहाँ रहने के बाद कृष्ण की आज्ञा से सुदामा स्त्री और मित्र को कोसते तथा अपनी करनी पर पछताते खाली हाथ घर लौटते है। वहाँ पहुँचकर वह सुदामापुरी को देखते है। कृष्ण की इस महती कृपा के कारण वह और उनकी पत्नी भगवान् कृष्ण की स्तुति करते है।

सुन्दर रस (सन् १९५९, पृ० ८५); ले० : *लक्ष्मीनारायण लाल, प्र० : भारतीय ज्ञानपीठ, काशी; पात्र :* पु० ६, स्त्री २, *अक :* ३, *दृश्य :* १, १, १।
घटना-स्थल : पंडितराज का घर, मथुरा, एक कमरा।

इस नाटक मे पडित द्वारा बनाई हुई सुन्दर रस नामक औषधि से अन्य लोगो को सुन्दर बनाने का प्रयास निहित है।

पडितराज की धर्मपत्नी 'देवी माँ' यद्यपि इन्ट्रैस पास हैं परन्तु उनका मस्तिष्क कुछ विक्षिप्त-सा है। बाहर सडक से निकलने वालो, फल-सब्जी आदि बेचने वालो, की आवाज सुनकर पागलो की तरह दौड पडती है। उनको सँभालने और घर की देख-रेख के लिए पडितराज ने एक नौकर सुमिरन रखा है। उनके शिष्य सस्कृत के विद्यार्थी है तथा व्यवहार ज्ञान से प्राय शून्य है। इनके क्रियाकलाप प्रहसन के अच्छे साधन हो जाते है। पडितराज ने 'सुन्दर रस' नाम की एक औषधि तैयार कर रखी है जिसका गुण सौन्दर्य-वर्द्धन है। निजी उपचार एवं अनुसधान की गई स्वानुभूत औषधियों से पंडित जी ने अपनी पत्नी की स्थिति मे काफी सुधार किया है। पर अभी भी वह पूर्ण स्वस्थ न हो सकी है। भट्टाचार्य नामक पण्डित जी के मित्र बहुत दिनो पर उनसे मिलने आते है। उनकी भाषा और बोलने के ढंग से पुन. अच्छा विनोद प्रस्तुत होता है।

अब पण्डितजी की पत्नी स्वस्थ हो गई है। उनकी देवी माँ की छोटी बहिन 'बीना B A' भी यही है। अभी अविवाहिता और व्यवस्था-कला का ज्ञान रखने वाली है। इसी दिन १ माह के अवकाश के पश्चात् उनके शिष्यो का भी आगमन हुआ है। वे भी कमरे की स्थिति देख-देखकर चकित हैं। परन्तु बीना इन लोगो के व्यवहार से खीझी-सी है। थोडी देर बाद केदार वकील का आगमन होता है। उषा नाम की एक रमणी से उनका प्रेम चल रहा है तथा पण्डित जी के सुन्दर रस सेवन से अपना चेहरा ठीक करना चाहते हैं। परन्तु दो माह के सेवनोपरान्त भी उन्हे कोई लाभ नही है।

पण्डितराज तथा देवी माँ कलक्टर साहब के यहाँ स्पेशल मीटिंग मे आमन्त्रित होते है। इस मीटिंग मे जाने के लिए देवी माँ पण्डित जी के लिए आग्ल वेश-भूषा का प्रबध करती है। सूट-कोट आदि वस्त्रो को साग्रह पहिनाकर पण्डितराज को मीटिंग

मे ले जाती है। लेकिन आत्मा के न कबूल करने के कारण थोडी दूर जाकर वे पुन दु खी मन से झुझलाये हुए लौट आते है। पीछे-पीछे देवी माँ भी आती है। वे पण्डित जी को वस्त्रो को उतारने के लिए मना करती है तथा उसी वेश मे शीघ्र चलने का आग्रह करती है। पण्डित जी तैयार नही होते और विक्षुब्ध होकर लेट जाते है। भट्टाचार्य का पुन प्रवेश होता है। वह पण्डित जी के आवास को देखकर पहले तो निहाल हो जाता है पर बाद मे उन लोगो की आपसी व्यथा देखकर हैरान होता है।

कुछ ही क्षण बाद वकील केदार भी आते है। वे भी इस रहस्य से अवगत होते है। पण्डितराज और देवी मा सुन्दर रस की सभी बोतले बेच देते है और अब वे पूर्ण प्रसन्न होते है।

सुन्दर संयोग (वि० १९९५, पृ० ६४), *ले० :* जीवन शर्मा, *प्र०* ' काशिराज के सभा पडित श्री लक्ष्मण झा, *पात्र* . पु० ४, स्त्री ६, *अक* ४, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल . पण्डा का मकान, वैद्यनाथ का मदिर एव भद्र-पुरुष का मकान।

'सुन्दर सयोग' की कथा-वस्तु सुन्दर और सरला के वैयक्तिक जीवन से सबधित है। विवाहोपरान्त सरला भयानक रूप से अस्वस्थ हो जाती है। परिस्थिति से लाचार होकर सुन्दर विवाह के चौथे दिन ससुराल से प्रस्थान करते है। इसी बीच किसी अनुष्ठान के लिए वे वैद्यनाथ धाम चले जाते हैं। समय के अन्तराल मे डेढ साल की अवधि यो ही वहा समाप्त हो जाती है। अनुष्ठान के अनन्तर जब वे घर वापस ही आने वाले हे कि उसी समय सरला अपने सबधियो के साथ वैद्यनाथ धाम आती है। सयोग से सरला वही ठहरती है, जहाँ सुन्दर ठहरे हुए हैं। सुन्दर सरला को पहचान जाते हैं, किन्तु सरला उन्हे नही पहचान पाती फिर भी सुन्दर की विरहाग्नि प्रज्वलित हो जाती है, किन्तु शालीनतावश वह उसे अनावृत्त नही करते हैं। वैद्यनाथ धाम की अपार भीड मे सुन्दर अपनी पत्नी सरला की सुरक्षा करते है, जिससे सरला के हृदय मे सुन्दर के प्रति स्वाभाविक रूप से प्रेम जाग्रत होता है। सरला की बहन कादम्बरी सुन्दर को पहचान लेती है, किन्तु भ्रम के भय से वह सरला से नही कहती है।

सुदेशिया नाटक (सन् १९३७, पृ० १०४), *ले०* ' चचरीक; *प्र० :* सेवा पुस्तकालय, गोरखपुर, *पात्र* पु० १०, स्त्री १०; *अक :* ३, *दृश्य* ४, ४, ५।
घटना-स्थल रगभूमि, चम्पा का शयनागार, बम्बई नगर।

इस सामाजिक नाटक मे एक देशभक्त, कलाप्रेमी के कार्यो का वर्णन है जो सामाजिक कुरीतियो को भी दूर करने का प्रयास करता है।

देश के पढे-लिखे युवको की बेकारी और गरीबी देखकर शिक्षित देशभक्त मदनमोहन के हृदय मे कला-कौशल सीखने के लिए विदेश जाने की भावना उत्पन्न हो जाती है। इस सम्बन्ध मे अपने माता-पिता से आज्ञा प्राप्त कर वह अपनी सहधर्मिणी विदुषी चम्पा देवी के पास अनुमति के लिए जाता है। दोनो मे वादविवाद, विरह-वियोग-प्रदर्शन और प्रेमालाप-विलाप होता है और मदनमोहन को चम्पा के द्वारा विदेश गमन के लिए प्रसन्नतापूर्वक अनुमति मिलती हे। मदनमोहन खुशी के साथ विदेश के लिए विदा हो जाता है।

पति के वियोग मे दु खी चम्पा को सोनवाँ कुटनी पापियो और गुडो द्वारा भ्रष्ट कराने का आयोजन करती है। चम्पा श्यामा ननद की मदद से कुटनी को कूटनीति एवं षड्यन्त्र से गुडो सहित गिरफ्तार कराकर न्याय के लिए राजा के सामने पेश करती है जिसमे राजा की आज्ञा से कुटनी सहित गुडो को सजा हो जाती है और अबलाओ की रक्षा के लिए राजा स्मृति रूप मे 'चम्पा अबलाश्रम' की स्थापना करते है।

बम्बई चौपाटी के मैदान मे मदनमोहन की विनोद से भेट होती हे और परिचय के साथ ही वे जहाज से लन्दन जाते है। विनोद कैम्ब्रिज मे बैरिस्टरी पढता है, मदनमोहन कला कारीगरी सीखने के लिए अमेरिका

जाता है और इधर विनोद गोपाल की कुसगति मे पड़कर भ्रष्ट हो जाता है।-पाँच वर्ष के वाद मदनमोहन लन्दन आकर पतित विनोद और गोपाल को धिक्कारता है। वम्बई मे पहुँचकर चम्पा को तार देता है। स्वदेश मे स्वागत और बधाई के पश्चात् रगमहल मे चम्पा और मदनमोहन का प्रेमालाप होता है। वेकारी दूर करने के लिए विश्व-शिल्प कला महाविद्यालय की स्थापना होती है और दोनो पति-पत्नी स्वदेश सेवा का अखंड व्रत धारण करते हैं।

सुनहरी खंजर (सन् १९२४, पृ०१२०), ले० गगाप्रसाद अरोडा; प्र०: रत्नाकर, पुस्तकालय, वनारस, पात्र · पु० ९, स्त्री ५, अंक ३, दृश्य · ५, ५, ५।
घटना-स्थल. वादलखाँ का मकान, अगला महल, गार तहखाना, जगल, नाज के महल, खान वहादुर का चिडियाखाना, पहाडो मे पानी झरना, खान बहादुर का मकान, मकान शेर अफगान, जश्नगाह, वादल खाँन का मकान।

यह नाटक पारसी नाट्य मडलियों का प्रसिद्ध नाटक है। इसमे मुसलमानी दरबार के राजाओ का चित्र प्रस्तुत किया गया है। अतएव इसमे प्रेम का स्वर अधिक मुखर रहा है। यदि मजिल एक हो और उसके राही दो हो तो आपस मे थोडी-सी मुठभेड़ होगी ही, क्योकि दोनो ही मंजिल पर पहुँचना चाहते है। इस नाटक मे भी ऐसे अनेक घटना-स्थल है जहाँ यात्रियो के वीच थोडी-सी झडप होती है। अन्तिम स्थिति मे एअजाज अपनी किस्मत पर अफसोस करता है। बीच मे नाट्यकार ने डाकुओ का दृश्य भी उपस्थित किया है। डाकुओं द्वारा नाज को भगाने की कोशिश की जाती है; किन्तु सफलता नही मिलती है। नाटक की समाप्ति मे एअजाज और नाज की शादी हो जाती है।

नाटक पर पारसी नाट्य शैली का अत्यधिक प्रभाव है, इसमे नाट्यकार ने खुलकर गीतो का प्रयोग किया है। नाटक मे वहुत से ऐसे गीतो का भी प्रयोग हुआ है जो नाटकीयता की दृष्टि से उपादेय नहीं कहे जा सकते। इसमे विदूषक की योजना हास्य उत्पन्न करने के लिए की गई है। मूल कथा से हास्य कथा का कोई सम्वन्ध नही।

सुनहरे सपने (सन् १९६२, पृ० ८४), ले०: सतीश डे, प्र० देहाती पुस्तक भडार, दिल्ली; *पात्र* पु० ७, स्त्री ४; *अक* ३।
घटना-स्थल · घर, शराव की दुकान।

इस सामाजिक नाटक मे पति-पत्नी के प्रेम का सच्चा चित्रण हुआ है। मासूम वच्चो के सुन्दर सपनो को भी दिखाया गया है किन्तु शराव की लत के कारण सवके सुनहरे सपने भग हो जाते है। अन्त मे नाटककार इस लत को सुधार कर समाज को एक नयी दिशा दिखाता है।

सुनहला विष (सन् १९१९, पृ० १०५), ले० · आनन्द प्रसाद कपूर; प्र०. भारत जीवन प्रेस, काशी; *पात्र* · पु० ८, स्त्री ३, *अक* · ३, *दृश्य*. ५, ८, ४।
घटना-स्थल श्याम का घर।

यह एक सामाजिक नाटक है। इसमे उत्तरा द्वारा प्रेम-निर्वाह पर प्रकाश डाला गया है। उत्तरा के पिता श्याम को इसलिए कष्ट दिया जा रहा है कि वह सूर्य विक्रम से शादी करने के लिए 'हाँ' कह दे। पर ऐसा नही होता। उत्तरा अन्त मे अपने प्रेमी इन्द्रदेव की ही पत्नी वनती है।

सुफेद खून (सन् १९१९, पृ० ९८), ले०. जलाल अहमद 'शाद', प्र० · लक्ष्मीनारायण प्रेस, वनारस; *पात्र* पु० १४, स्त्री ५, *अक* ३, *दृश्य* ६, ६, ५।
घटना-स्थल दरवार, वाजार, मकान, पहाड, जंगल, कैप-ग्राउड परेट, दीवानखाना, कैदखाना।

इसकी कथावस्तु किंगलियर के प्लाट के आधार पर निर्मित है। प्रकाशक नाटक के प्रारम्भ मे खुलासा-तमाशा इस प्रकार देता है—

बादशाह खाकान अपनी बडी लड़की माहपारा और मझली दिलआरा की चाटुकारिता से प्रसन्न होकर अपनी कुल सल्तनत, दौलत और हशमत दोनो लडकियो को प्रदान करता है। इधर बादशाह का वजीर सादान अपने वेश्यापुत्र वैरम के कहने से औरस पुत्र परवेज से घृणा करने लगता है। तीसरे दृश्य मे बादशाह खाकान बेटी माहपारा के दुर्व्यवहार से उसका घर छोडकर चला आता है। चौथे दृश्य मे तुर्रम नामक रईस के मुलाजिम गुलखैरु और उसकी प्रेयसी गुलदम का प्रेमालाप मिलता है। इसी दृश्य मे तुर्रम के बेटे जलील और उसकी बीबी लैला की प्रेम-कहानी है। मुख्य कथानक के साथ उपर्युक्त दो और कहानियाँ चलती है। इस अक के अन्त मे खाकान का पत्र लेकर उसका सिपहसालार मझली लडकी दिलआरा के पास आता है और उससे माहपारा की बेवफाई की शिकायत करता है। कुछ दिन तक दिलआरा के पास रहकर उससे भी रुष्ट होकर खाकान अन्यत्र चला जाता है।

द्वितीय अक मे वजीर सादान का लडका परवेज अपनी दशा पर खिन्न होकर जंगल मे चला जाता है जहाँ खाकान भी अपने मुसाहिबो के साथ पहुँचता है और अपनी लडकियो की भर्त्सना करता रहता है। सादान माहपारा को बुलाकर पिता की दुर्दशा दिखाता है पर वह अपने प्रेमी वैरम के प्रेम मे पागल रहती है। एक दिन उसका पति यह दुराचार देखकर वैरम से लडता है और माहपारा को खंजर से घायल कर देता है। इसी के साथ लैला और गुलखैरू का रोमास चलता है। भडक और तुर्रम गुलखैरु को थैले मे वन्द समझकर पीटते है पर वह तो तरकीब से थैले से निकलकर उसमे बगलोल को बन्द कर देता है। माहपारा की आज्ञा से एक सिपाही सादान को बन्दी बना कर माहपारा और दिलआरा के पास ले जाता है। माहपारा की आज्ञा से सादान को कत्ल करने को तलवार उठाता है। उसी समय दिलआरा का शौहर आकर सिपाही को तमचे से मारता है। दिलआरा अपने शौहर को स्वय अपने तमचे का निशाना बनाती है और माहपारा सादान को मार डालती है।

तीसरे अंक मे वैरम विजय की खुशी मनाता है और दिलआरा को बहकाकर माहपारा को बन्दी बनाने के लिए भेजता है। दूसरे दृश्य मे खाकान कैदखाने मे दिखाई पडता है और कई कातिल उसकी हत्या को वहाँ पहुँच जाते है। इसी समय माहपारा भूल से दिलआरा को अपनी सबसे छोटी बहिन जारा समझकर कत्ल कर देती है। दिलआरा की चीत्कार सुनकर वैरम आता है और जारा भाग जाती है। खाकान को सिपाही पकडकर लाते है किन्तु जारा का शौहर जल्लादो को पिस्तौल मार कर खाकान को छुडा लेता है। खाकान सरे दरबार जारा को अपने हाथ से ताज पहनाता है, सादान वजीर की प्रशसा करता है और शौहरे जारा से जारा का फिर हाथ मिलवाता है।

सुफेद डाकू (सन् १९२७, पृ० १०१), *ले०* : मोहम्मद इस्मायल फरोग; *प्र०* · तात्या नेमिनाथ पागल सरसवाङ्मय रत्नमाला, पूना; *पात्र* : पु० ७, स्त्री ४; *अक* : ३, *दृश्य* . ८, ४, ७।
घटना-स्थल · महल, मिल, बागीचा, बगला, आफिस, सेसन कोर्ट, रास्ता, वेटिंग रूम, फाँसीखाना, कब्र, दरवाजे का महल।

दुर्गादास एक सत्यवादी आदर्श व्यक्ति है। समरदास उसका पुत्र और कोकिला उसकी पुत्री है। उसके साले जमुनादास की एक मिल मालिक कुँवरदास से दुश्मनी है। जमुनादास की पुत्री सुशीला की मँगनी समर से हो गई है। एक दिन कुँवरदास का पुत्र अमरदास आता है और दुर्गादास पर पुश्तैनी कर्ज का दावा करता है। दुर्गादास अगर चाहता तो इन्कार कर सकता था परन्तु अपने आदर्श की रक्षा के लिए वह अपनी अचल सम्पत्ति अमरदास को सौप देता है और पाँच हजार की कमी ो जाने पर अपने पुत्र समर को सेवक के रूप मे सौप देता है। जमुनादास अपने दुश्मन कुँवरदास के पास इतनी सम्पत्ति जाते हुए देखकर चिढ जाता है तथा सुशीला के लाख अनुरोध पर भी

सहायता नही करता। उधर कुंवरदास कालसेन नामक बदमाश को रुपये देकर जमुनादास की मिल मे आग लगवा देता है तथा जमुनादास पर यह लाछन लगाता है कि इसने जीवन बीमे के लालच से खुद आग लगाई है और उसे गिरफ्तार करवा देता है। दुर्गादास और कोकिला के साथ सुशीला भी दर-दर की भिखारिन हो जाती है। अमरदास सुशीला को अपनी बहन बनाकर घर ले जाता है परन्तु कुवरदास उसको सम्पत्ति, समर की मुक्ति आदि का लालच दिखाकर उससे विवाह करना चाहता है। समर इसमे बाधा उपस्थित करता है। कुंवरदास समर को रास्ते से हटाने के लिए कालसेन को साथ लेकर साजिश करता है तथा वह खून एवं चोरी के अपराध मे फाँसी की सजा पा जाता है। परन्तु जैसे ही उसे फाँसी पर लटकाने के लिए ले जाया जाता है, जेल से भागा हुआ जमुनादास प्रमाण उपस्थित कर देता है जिनसे कालसेन और कुंवरदास की कलई खुल जाती है। अन्त मे कुंवरदास आत्महत्या कर लेता है तथा कालसेन गिरफ्तार हो जाता है। समर और सुशीला तथा अमर और कोकिला का विवाह हो जाता है।

सुबह के घटे (सन् १९५६, पृ० १५१), ले० . नरेश मेहता; प्र० · नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, पात्र . पु० २५, स्त्री ४, अक · ५; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल · वन्दीगृह।

इस नाटक मे भारतीय राजनीति को पृष्ठभूमि बनाया गया है। नाटक का नायक एमन एक क्रान्तिकारी है जो राष्ट्रीय आन्दोलन मे वन्दी बनाया गया है और कल प्रात. उसे फाँसी लगने वाली है। जीवन की अन्तिम वेला मे जीवन के विस्मृत प्राय सदर्भ पुन सूत्र रूप मे प्रस्तुत हो उस वन्दी के समक्ष मूर्त्त होते जाते हैं और वह उन्ही के आलोक मे अपने जीवन और कृत्य का मूल्याकन करता है। एमन को लगता है कि मेरे विद्रोह को फाँसी देकर विद्रोह की सज्ञा समाप्त हो जायेगी (क्या)?"···इसी प्रकार एमन को लगता है कि गांधीवाद भी सम्पूर्ण सत्य नही है और न अराजकतावाद ही पूरा सत्य है। इन सारे मतवादो को जीवन तथा इतिहास के सामने शिष्य की भाति झुकना पड़ेगा क्योकि गुरु जीवन है और गाँधी शिष्य है।" "जब सरकारी गोदामो, सेठो के कोठारो मे अन्न सड रहा हो तब भूखे मरकर जीवन काटना क्या अन्याय नही है? अन्याय तो स्थिति है।" अन्तत. एमन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि "इडिया—दैट इज भारत! पीपुल—दैट इज कैपीटेलिस्ट ··"। नाटककार ने देश की राजनीति एव नेताओ को पात्र रूप मे ग्रहण कर नाटक की रचना की है।

सुभद्रा परिणय (सन् १९५२, पृ० ११३), ले० वीरेन्द्र कुमार गुप्त, प्र० · आत्माराम एण्ड सस, दिल्ली, पात्र पु० १३, स्त्री ६, अक . ४, दृश्य ६, ६, ६, ७।
घटना-स्थल : महल, पांडव-शिविर, कुरुक्षेत्र।

इस नाटक की कथावस्तु पौराणिक आधार पर ही है किन्तु लेखक ने कल्पना को भी महत्त्व दिया है। कृष्ण सर्वदा पाडवो और विशेष रूप से अर्जुन की शक्ति बढाने मे तत्पर रहते हैं। किन्तु कृष्ण के भाई बलराम का स्नेह दुर्योधन और कौरवो के प्रति होता है। कृष्ण सुभद्रा को अर्जुन के आतिथ्य का भार प्रथम ही सौंपकर उनके पारस्परिक प्रणय-जागरण की पृष्ठभूमि बना देते है और फिर तीर्थाटन के रूप मे उनकी शक्ति को बढ़ाते रहते हैं। बलराम सुभद्रा को दुर्योधन को सौंपने का निर्णय करते हैं और उसमे तर्क यह रखते हैं कि कौरव-पाडव एक हो जाएं ताकि यादवो की सम्मिलित शक्ति से कौरव-पाडव को इकट्ठा करके देश मे उत्पन्न अराजकता तथा अत्याचार का विरोध किया जाये। किन्तु कृष्ण इस बात मे सहमत नही हैं। वह जानते है कि दुर्योधन मे इतनी अधिक बुराइयाँ हैं कि बलराम की मंशा पूरी न होगी और सुभद्रा की इच्छा के प्रतिकूल दुर्योधन को सौंपने मे उसकी आत्मा मर जायेगी। इसके लिए षड्यन्त्र मे सुभद्रा को अर्जुन के साथ भगाकर बलराम को भी

अपनी राय मानने पर विवश करते है और सुभद्रा का परिणय अर्जुन के साथ सम्पन्न होता है। इन सभी बातो का प्रतिशोध ही महाभारत का युद्ध है जिसमे सत्य और न्याय की विजय होती है।

सुभद्राहरण नाटक (सन् १९१०, पृ० ७३), ले० गोविन्द शास्त्री दुगवेकर, प्र० हितचिंतक प्रेस, रामघाट, काशी, *पात्र* . पु० ८, स्त्री ५, *अक* · ४, *दृश्य* : २, ५, ४, ७।
घटना-स्थल . साधारण कमरा, महल।

इस पौराणिक नाटक का प्रारम्भ नादी-पाठ सूत्रधार और नटी के वार्तालाप से होता है। नटी वसन्त ऋतु का वर्णन गीत के माध्यम से करती है। प्रथम अक मे अर्जुन अपनी तीर्थ-यात्रा का कारण बताते है। सात्यकी सूचना देता है कि सुभद्रा देवी का विवाह आज ही निश्चित रहते हुए भी एकाएक वह अन्तःपुर से गुम हो गई है। अर्जुन इस संवाद से प्रसन्न होकर सुभद्रा को ढूँढने निकलते है। सुभद्रा को एक मायावी दैत्य मार डालना चाहता था तब तक अर्जुन वहाँ पहुँचकर सुभद्रा की रक्षा करते है। अनेक घटनाएँ घटती है और अन्त मे सुभद्रा को साथ लेकर आते है। अर्जुन को सुभद्रा के साथ देखकर बलराम अर्जुन पर क्रुद्ध होता है कि 'अरे पापी, तू सुभद्रा को हरण करना चाहता है।' प्रहार करता है पर नारद रक्षा कर लेते है। अन्त मे बलराम भी कृष्ण की अनुमति से अर्जुन-सुभद्रा परिणय का समर्थन करते है। भरतवाक्य के साथ नाटक समाप्त होता है।

यह नाटक भारतेन्दु नाटक मडली काशी द्वारा अभिनीत हुआ। नाट्यकार का कथन है कि "अभी तक रगमच तथा खेलने के समय का विचार कर हिन्दी मे एक भी नाटक नही लिखा गया है। वह त्रुटि दूर करने के लिए यह मेरा प्रथम और अल्प प्रयत्न है।"—लेखक मराठी भाषा-भाषी है पर उसने १४ वर्ष की छोटी अवस्था मे यह नाटक लिखा है।

सुरसुन्दरी नाटक (वि० १९८२, पृ० २५६), *ले० :* फकीरचन्द जैन; *प्र० :* स्वय प्रकाशन; *पात्र* पु० २१, स्त्री १५; *अक-रहित*; *दृश्य :* ६२।
घटना-स्थल चम्पा नगरी, पाठशाला, राजदरबार, कचहरी, नगर का द्वार (प्रत्येक सीन का नया घटना-स्थल)।

यह विशालकाय नाटक शताधिक कविताओ और ९२ गानो से युक्त है। नाटक, चम्पा नगरी के महाराज रिपुमर्दन के दरबार मे गायन से प्रारम्भ होता है। इसमे महाराज रिपुमर्दन की पुत्री सुरसुन्दरी की धर्म-निष्ठा दिखाई गई है। इसमे अनेक राजाओं, सेठों, रानियो, वेश्याओ, चोर-डाकुओ की कहानियाँ अव्यवस्थित रूप मे जोड दी गई है। शृखला-बद्ध घटनाओ के अभाव मे कोई क्रमवद्ध कथावस्तु नही बन पाती।

नाटक का उद्देश्य पाठको के हृदय मे जैनधर्म के प्रति निष्ठा उत्पन्न करना है। पारसी थियेट्रिकल कम्पनी के नाटको की शैली पर इसकी रचना की गई है।

सुल्ताना डाकू (सन् १९३२, पृ० ६३); *ले० :* वेणीराम त्रिपाठी, 'श्रीमाली', *प्र० :* ठाकुर प्रसाद एण्ड संस बुक्सेलर, वाराणसी; *पात्र :* पु० १५, स्त्री १०; *अक* . ३; *दृश्य :* ५, ६, ५।
घटना-स्थल . जगल, कारागार, न्यायालय।

यह एक शिक्षाप्रद सामाजिक नाटक है। इसमे आधुनिक सफेदपोशो द्वारा गरीब नागरिको का शोषण करके उनको किस प्रकार दबाया जाता है, यह दिखाया गया है। सुल्ताना डाकू से एक शिक्षा मिलती है। जब सुल्ताना के दिमाग मे, इन्सान के रूप मे घूमने वाले हैवानो, किसानो के पसीने और गरीबों के आँसू पर हँसने वाले क्रूर पूँजीपतियो की नाजायज हरकते, आती है तो वह इन हरकतों का जवाब देने के लिए डाकू-प्रवृत्ति को अपनाता है। सुल्ताना ने लूटा है उन लोगो को जिनके पैसे गरीबो का खून चूसकर तिजोरी मे बदबू पैदा कर रहे थे। उसने हमेशा मासूम, अनाथ तथा बेवा औरतो की खुले दिल से

सहायता की है। गरीबो के आँसू पोछे है। अन्त मे स्वय अपने को पुलिस के हाथो आत्म-समर्पण कर और हँसते हुए फाँसी के फदे को चूम लेता है।

सुल्ताना डाकू (सन् १९५० पृ० ५८), ले० . रामशरण 'आत्मानन्द'; प्र० : उपन्यास वहार आफिस, काशी, पात्र पु० ११, स्त्री ४; अक . ३; दृश्य · १०, ९, ३।
घटना-स्थल : जगल, मकान, कारागार, न्यायालय।

उत्तर भारत के मशहूर डाकू सुल्ताना के कार्यों पर इस नाटक की रचना हुई है। सुल्ताना सेठ श्यामदास के यहाँ डाका डालता है जहाँ वह पूरे परिवार की हत्या कर चल देता है। अन्त मे फूलकुँवर वेश्या के प्रेम मे फंस जाता है। यग साहव को इसका पता चल जाता है। वह फूलकुँवर को अपनी ओर मिला लेते है। एक दिन फूलकुँवर सुल्ताना को खूब शराब पिलाकर उसके सभी हथियार छिपा देती है। शराब के नशे मे डूबा ही था, उसी समय यग साहव आकर उसे गिरफ्तार करते है और अन्त मे उसे फाँसी की सजा दी जाती है।

*

सुल्ताना डाकू (सन् १९३५, पृ० ६६), ले० : न्यादरसिंह 'बेचैन'; प्र० . देहाती पुस्तक भडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; पात्र · पु० २०, स्त्री २; अक ३· दृश्य : ६, ३, ६।
घटना-स्थल जगल, मकान, वनमार्ग, कारागार, न्यायालय।

सुल्ताना कजूस सेठो के द्वारा ब्याज के नाम पर लूटने वाले पैसे से बेघरबार बनाया जाता है। वह प्रतिशोध-भावना से डाकू बनता है। अपने कुछ स्वामिभक्त साथियो की सहायता से सेठ-महाजनो को लूटता है और पुलिस को मारता है। अन्त मे वह साधु के कथनानुसार एक बालक को गोद लेने के परिणामस्वरूप पकडा जाता है और फाँसी चढता है। मिस्टर यग द्वारा उसको बन्दी बनाने की घटना का अच्छा प्रदर्शन है। अन्तिम इच्छा के रूप मे वह अपनी माता को कोसता है और कहता है कि यदि माँ चाहती तो वह डाकू न बनता और वह अपने भतीजे को यग साहब के सुपुर्द कर जाता है। नाटक अभिनीत है।

सुल्ताना डाकू (सन् १९४०, पृ० ८०), ले० बालभट्ट मालवीय, प्र० . हिन्दी नाटक विद्यापीठ, आगरा, पात्र पु० १५, स्त्री ५; अक ३; दृश्य ६, ७, १०।
घटना-स्थल . घर, जगल, वनमार्ग, कोतवाली, न्यायालय।

सुल्ताना डाकू अपने साथियो के साथ साहसिक अभियानो द्वारा पुलिस और रक्षक दल की आँख मे धूल डालकर दिन दहाड़े सेठो को लूटता है और गरीब जनता को दान देकर उन्हे मिलाये रखता है।

सुल्ताना अपने पिता की हत्या होने और कानून की मदद से गाय भी नीलाम हो जाने के कारण प्रतिशोध के लिए डाकू बनने का निर्णय करता है। समाज के पीडित फतेहचद, पीताम्बरसिह और माधोसिह भी सूदखोरों के शिकार होने पर उसके सहायक बनते है।

कुछ डाकू धन-वैभव और स्त्रियो के हुस्न के भी प्यासे होते थे। निर्ममता से साहूकारो का वध और किशोरी जैसी सुन्दरियो पर कुदृष्टि रखते थे। किशोरी अति चालाकी से उस भयानक सुल्ताना से अपना सतीत्व कुएँ मे प्राणान्त करके बचाती है।

पुलिस कर्मचारी सुल्ताना के दान और वीरत्व से अभिभूत होते है। सभी को जीवन-रक्षा की पडी रहती है। यंग साहब नीति से सुल्ताना को पकडने मे सफल होता है। वह डाकू की प्रेयसी फूलकुँवारी वेश्या को लालच देकर सुल्ताना को पकडता है। उसे फाँसी लगती है।

सुल्ताना अन्यायी सूदखोरो की क्रूरता का परिणाम डकैती बताता है और अपने बाप की हत्या के प्रतिशोध की पूर्ति के बाद सहर्ष फाँसी चढ जाता है।

सुलोचना सती (सन् १९४१, पृ० ८४), ले० : बलदेवजी अग्रहरी; प्र० : समाचार

प्रेस, हिन्दी पुस्तक एजेसी, कलकत्ता; पात्र : पु० ७, स्त्री ४, अक ४; दृश्य : ३, २, ५, २।
घटना-स्थल लका नगरी।

इस पौराणिक नाटक मे सती सुलोचना की कथा चित्रित है। विपत्तियो के बावजूद वह अपना धर्म नही छोड़ती। भाषा एव शैली तुकबदीपूर्ण है। सुलोचना रावण की बहू मेघनाद की पत्नी है। सवाद पद्य एव गद्य-युक्त है।

सुशीला विधवा नाटक (सन् १९२२, पृ० ९०), ले० रामेश्वर शर्मा; प्र० : मोती प्रेस, भागलपुर सिटी; पात्र : पु० ११, स्त्री ७; अक ६; दृश्य ४, ४, १२, १, १७, ६।
घटना-स्थल पुष्पवाडी, विवाह-मडप, टिकट-घर, गाडी, कचहरी, श्मशान।

इस नाटक का उद्देश्य स्त्रियो को शिक्षा देना है। सुशीला एक रूप-गुण-सम्पन्न युवती है। उसकी शादी एक पढे-लिखे सुयोग्य वर ० मोहनचन्द्र से हो जाती है। मोहनचन्द्र नौकरी पेशे वाले व्यक्ति है। सुशीला के हठ करने पर वे उसे अपने साथ ले चलने के लिए राजी हो जाते है। चारो तरफ प्लेग का दौरा है। मोहनचन्द्र रास्ते मे (आनन्द-पुर स्टेशन पर) प्लेग की पकड मे आकर देह-त्याग कर देते है। सुशीला पति के साथ सती होने के लिए तैयार है, किन्तु पुलिस उसे रोक रही है। कानून की दृष्टि से सती होना अवैध है। सुशीला सती नही हो पाती। वह अपने सभी वस्त्राभूषणो को एक-एक कर फेक देती है। वह कहाँ जाये ? क्या करे ? इस उधेड-बुन मे पडी हुई है। अन्त मे वह अपने बडे भाई के यहाँ जाती है। उसकी भाभी एक कर्कशा स्त्री है। सुशीला को विधवा रूप मे देखते ही उसे कुलक्षणा, रण्डी इत्यादि कहकर पति की इच्छा रहते हुए भी उसे घर से निकल जाने को बाध्य करती है। हतभाग्या सुशीला रोती-कलपती अपनी ससुराल मे पहुँचती है। वहाँ भी उसे अप-मान और निराशा ही मिलती है। वहाँ से भी उसकी सास और ननद उसे धक्का देकर निकाल देती है। आश्रयहीना सुशीला आत्महत्या करने की सोचती है, किंतु उसकी बुद्धि उसका साथ नही छोडती। अभी उसकी आशा का एक आधार उसका छोटा भाई शेष है। वह उनके यहाँ भी जाकर अपना भाग्य आजमा लेना चाहती है। सुशीला को अभी जीना है। यहाँ उसे शरण मिल जाती है। उसके भाई और भाभी दोनो ही उसे बडी श्रद्धा से देखते है। सुशीला अपने वैधव्य-व्रत का अनुष्ठान यहाँ शुरू कर देती है। नित्य गगा-स्नान और नियमित आहार आदि के द्वारा वह भारतीय विधवाओ की परम्परा मे अपना स्थान बना रही है। किन्तु अभी वह है बिलकुल युवती! उसका अभि-शप्त यौवन कई मनचलो को बडी तेजी से आकर्षित करता है। रसिकबिहारी नामक एक युवक भी ऐसा ही है। बैरिस्टरी पास करने के कारण उसमे शालीनता होनी चाहिए थी, लेकिन वह एक दुराचारी व्यक्ति है। सुशीला को फाँसने के लिए वह कई हथकण्डे अपनाता है। बुढिया कुटनी को १५० रु० देना स्वीकार करता है। कुटनी की दाल भी नही गल पाती। अन्त मे रसिक-बिहारी विधवा-विवाह का प्रचार कर सुशीला से शादी करने की योजना बनाता है। समाज मे उसकी प्रतिष्ठा है ही, सभी लोग उसकी बातों पर राजी हो जाते हैं। यहाँ तक सुशीला का बडा भाई भी सुशीला की शादी रसिकबिहारी से करने के लिए राजी हो जाता है। लेकिन परिस्थितियो की चोट खाकर सुशीला का व्यक्तित्व फौलादी हो गया है। वह अपना विवाह स्पष्टतत. अस्वीकृत कर देती है। पति की पादुकाओ की पूजा और अपना सयम-निर्वाह, यही उसके जीवन के लक्ष्य हैं। रसिक-बिहारी सुशीला के साथ एकात मे उसका शील भंग करना चाहता है। सुशीला उसे पटककर उसकी छाती पर चढ बैठती है। वह नीच अन्त मे उसे माँ कहकर क्षमा माँगता है। सुशीला पर आकाश से फूलो की वर्षा होती है तथा नभ-वाणी सुनाई देती है—"सुशीला तुम धन्य हो, तुम्हारी परीक्षा हो चुकी।" सुशीला के व्यक्तित्व से सभी

प्रभावित होते है। उसकी प्रतिष्ठा बढ जाती है। लोगो की नजरो मे वह देवी-सी हो जाती है। उसकी ससुराल के लोग जो उसके भाग्य के साथ रूठे हुए थे, पुन सुशीला की ओर मुडते हैं। उसके ससुर, उसकी सास, ननद सभी आकर उससे क्षमा माँगते है। उसके जेवरात की कीमत लौटा देते है। उसकी ननद भी विधवा हो गई है, यह भी सुशीला के ही साथ जीवन व्यतीत करने का फैसला करती है। सुशीला अपनी ननद को विधवा-धर्म का उपदेश देती है। इस तरह पुरातन भारतीय आदर्श की प्रतिष्ठा होती है और सुशीला सती की जय-ध्वनि के साथ नाटक समाप्त हो जाता है।

सुशीला (सन् १९१२, पृ० ३१), ले० . हरिहर प्रसाद जिजल; प्र० : अग्रवाल प्रेस, गया (विहार); अक . २; दृश्य : ५, ४। *घटना-स्थल* ' मकान, चण्डूखाना, रास्ता, जगल।

नाटक का प्रारम्भ सुशीला की व्यथापूर्ण कहानी से होता है। उसके पति की, जो अपने माता-पिता के साथ तीर्थयात्रा को गया था, किसी दुर्घटना के कारण मृत्यु हो जाती है। पति के निधन के असह्य दु ख के साथ ही उसे वचपन की वे दु खद घटनाएँ याद आती हैं जव वह अपने माता-पिता से सदा के लिए विलग हो गई थी। पतिशोक की अतिशयता मे वह आत्महत्या भी करना चाहती है, परन्तु महापाप के विचार मन मे आते ही वह रुक जाती है। अपना घर उसे काट खाये जा रहा है। वह अब कही दासी बनकर भी अपनी जिन्दगी विता लेना चाहती है।

दूसरे दृश्य मे लाभचन्द नामक एक ऐसे व्यक्ति है जो अपने दुर्भाग्य पर रोते दीख पडते है। उनका लडका आवारा है। बहुत चाहने के बाद भी वह सही रास्ते पर नही लाया जा रहा है। इसी की चिता मे वे रात-दिन डूबे दीखते है।

'कही धूप है तो कही छाया। एक ओर जहाँ सुशीला अपने पतिशोक से पीडित है, लाभचन्द पुत्र के आवारापन से दुःखी है, वही समाज का एक ऐसा वर्ग भी है जो चण्डू, चरस, धूमपान और अफीम मे मस्त है।

सुशीला 'चार दिना की चाँदनि रतिया फिर अधियारी छाही' कहती हुई चौथे दृश्य मे प्रवेश करती है। उसके इस बेहाल को देख एक देहाती उससे इसका कारण पूछता है। हाल जानकर वह सहानुभूति-पूर्ण होकर उसे अपने साथ चलने को कहता है। उसी समय उसकी भेट मोहन नामक व्यक्ति से होती है जिसके अपार स्नेह के कारण सुशीला उसके यहाँ चली जाती है। पर मोहन की पत्नी को सुशीला का उसके घर मे आना बुरा लगता है। वह उसे कुछ खरी-खोटी भी सुना देती है। सुशीला के हृदय पर सतभामा (मोहन की पत्नी) की बाते जले पर नमक छिडकने का कार्य करती है। वह इस जिंदगी से ऊबती हुई सी जान पडती है। चाहती है कि ससार से कही किनारा ग्रहण कर ले।

सुशीला का पति बमबहादुर, जिसे समुद्र मे डूबा हुआ घोषित किया गया था, जीवित आ जाता है। घर लौटकर अपनी पत्नी की खोज मे वह भटकता वहाँ मोहन के घर पहुँचा जहाँ सुशीला थी। परन्तु सुशीला तो वहाँ से कही और ही चली गई थी।

बमबहादुर सुशीला की खोज मे एक ऐसे जंगल मे आता है जहाँ उसे योगिनी के वेश मे सुशीला दीख पडती है। वह दौडकर अपनी पत्नी के पास जाता है। सुशीला को प्रेमापाश मे आबद्ध कर वह जहाज डूबने की कहानी सुनाता है जिससे वह बच निकला था। फिर दोनो भगवान् की महिमा का गान करते घर चले जाते है।

सुहाग बिन्दी (सन् १९४९ पृ० ९८), ले० : गोविन्दवल्लभ पन्त, प्र० : लखनऊ गगा ग्रन्थागार, लखनऊ, पात्र . पु० २, स्त्री २, अक ५, दृश्य : २, १, ३, ३, ५। *घटना-स्थल* गगा तट, विजय के पिता का घर, जगल।

यह एक सामाजिक नाटक है जिसकी नायिका विजया गंगा-स्नान के समय गुडो

द्वारा अपहृत होती है। संयोग से वह एक दुर्घटना से ग्रस्त हो जाती है। चैतन्य होने पर वहअपनी स्थिति से व्याकुल होकर आत्महत्या करने को उद्यत होती है।

इस अपहृता नारी को समाज की निन्दा के भय से पिता व पति दोनो घर रखने को तैयार नही होते है। विवश होकर वह पिता के घर ही पहुँचती है जो उसे तिरस्कृत और अपमानित करके अधेरी रात मे जगल मे छोड देता है। वह रोती-कलपती पति के पास पहुँचती है जो उसे आश्रय नही देता। उसका पति रेवा नामक स्त्री से विवाह कर लेता है। रेवा ऊचे चरित्र की उदार नारी है। वह विजया को अपनी शरण मे रख लेती है। विजया को सर्प डस लेता है। विजया इस जीवन से व्याकुल होकर मरने को तैयार बैठी है, इसलिए सर्प-दश को एक फाँस कहकर टाल देती है। विजया का पति कुमार अन्त मे रक्त की बिन्दी उसके मस्तक पर लगाकर उसकी शुद्धता और पवित्रता को स्वीकार करता है।

सुहाग दान (सन् १९६३, पृ० ७२), ले० *:* अनिरुद्ध यदुनन्दन मिश्र; प्र० श्रीगगा पुस्तक मन्दिर, पटना, *पात्र:* पु० ६, स्त्री १, *अक-रहित, दृश्य* १२।
घटना-स्थल ' रामचन्द्रदेव का दरबार, किला।

इस ऐतिहासिक नाटक मे वीरांगना स्त्रियो की सच्ची देशभक्ति दिखायी गई है।

देवगिरि के राजा रामचन्द्र देव की पालिता पुत्री का विवाह उसके ही महामत्री कृष्णराव से हो जाता है क्योकि वीरमती उससे प्रेम करती है। विवाह के समय ही अलाउद्दीन वहाँ पहुँचता है। पहले तो वह राजा रामचन्द्र देव का आतिथ्य स्वीकार करता है। फिर उसके महामत्री को प्रलोभन देकर अपनी ओर मिलाता है। कृष्णराव प्रलोभन मे आकर राजा रामचन्द्र देव के रहस्यो का पता अलाउद्दीन को देता है। समय आने पर वह अलाउद्दीन को देवगिरि पर आक्रमण करने के लिए आमत्रित करता है। देश-द्रोह की इस भावना को अन्दर-ही-अन्दर वीरमती देखती रहती है। उसे अपने पति के क्रिया-कलाप अच्छे नही लगते क्योकि उसके ही पिता को समाप्त करने का षड्यन्त्र चल रहा है। पति और पिता के मोह मे वह किसकी रक्षा करे, यह उसके समक्ष कठिन समस्या है। अन्त मे जिस समय किले पर अलाउद्दीन धोखे से आक्रमण करने ही वाला था, उसी समय वीरमती अपने पति कृष्णराव की हत्या कर देती है और कहती है कि "अपने देश के लिए अपने सुहाग का दान करके एक देश-द्रोही को समाप्त करती हूँ, पति को नही।"

सुहागिन (सन् १९६७, पृ० ७०), ले० : जगदीश शर्मा; प्र० : देहाती पुस्तक भडार, चावडी बाजार, दिल्ली, *पात्र:* पु० ७, स्त्री ३; *अक* ३।
घटना-स्थल . दीनानाथ का घर।

इस सामाजिक नाटक मे पारिवारिक वैषम्य, कटुता और विधवा-समस्या को एक त्रासदी के रूप मे प्रस्तुत किया गया है।

नाटक के पात्रो मे सेठ दीनानाथ, उनके पुत्र रतनलाल, हीरा और पत्नी चपा तथा पुत्री कृष्णा प्रमुख है। जय भतीजा है जिसकी सम्पत्ति पर उसके पिता की मृत्यु के बाद् दीनानाथ का अधिकार है। उनके बडे लड़के रतनलाल की शादी शकुन्तला से होती है। वह पति-परायणा सती नारी है। दुर्घटना मे असमय ही रतनलाल मर जाता है और शकुन्तला विधवा हो जाती है।

चम्पा जहाँ अपने पुत्र-पुत्रियो से अतिशय प्रेम के कारण उनके दुर्गुणो को भी गुण समझती है, वहाँ वह शकुन्तला से घृणा करती है और उस कुलवधू को इतना पीडित करती है कि वह विष खाकर इस संसार से कूच कर जाती है।

उस घर मे, जय ही केवल उसका हमदर्द था, किन्तु झूठा कलक लगाकर उसे भी अलग कर दिया जाता है। कृष्णा जब किशोर के साथ भागती है तो उसका भाई हीरा ही उसका सामान पहुँचाता है और बिगानः

जय उसे पकड़कर वापस लाता है।

सूखा सरोवर (सन् १९५९, पृ० १२४), ले० लक्ष्मीनारायण लाल; प्र० : भारतीय ज्ञानपीठ, काशी; पात्र · पु० १०, स्त्री २; अंक ३; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल · सूखे सरोवर का तट।

किसी नगरी मे एक सरोवर है जो सबका आधार है। उस नगर के राजा को उसका छोटा भाई बलपूर्वक हराकर स्वय राजा बन जाता है। उसकी पुत्री एक युवक को विवाह करने का वचन देती है। उसका प्रेमी उसे बचाने का वचन देता है, परन्तु पिता उसके इन स्वप्नो को तोड देता है। फलस्वरूप राजकुमारी उस सरोवर मे डूब-कर आत्महत्या कर लेती है। सरोवर का जल सूख जाता है। सारी नगरी प्यास के कारण तड़पने लगती है। राजा का बडा भाई सन्यासी बनकर उसी तालाब के किनारे सरोवर की आराधना करता है। राजकुमारी की आत्मा भी करुण आवाज सुनाती है। सरोवर पुन' अपने अंदर जल आने के लिए नगर के प्रतिनिधि का बलिदान मॉगता है। नगर के लोग राजा की बलि देने के लिए तैयार होते है। राजा भाग जाता है। इसी बीच राज-कुमारी का उन्मत्त प्रेमी उस सरोवर मे अपनी बलि देता है। परन्तु जनता को उसकी बलि पर विश्वास नही होता क्योंकि वह नगर का प्रतिनिधि नही था। अत राजा (सन्यासी) बलि देने के लिए तैयार होता है कि सरोवर मे जल भर आता है। उस पागल प्रेमी का बलिदान सार्थक होता है। उसकी आत्मा राजकुमारी की आत्मा से मिल जाती है।

इस गीति नाट्य मे सरोवर जीवन का प्रतीक है और जल जीवन-सौन्दर्य का। सूखा सरोवर सौन्दर्यहीन जीवन की ओर सकेत करता है।

सूरदास 'नाटक' अर्थात् बिल्वमंगल (वि० २०११, पृ० १२९), ले० : वेणीराम त्रिपाठी 'श्रीमाली'; प्र० . ठाकुर प्रसाद एड संस, वाराणसी; पात्र : पु० ८, स्त्री ११, अक : ३, दृश्य : ११, ७, ४।
घटना-स्थल : आगरा, कुरुक्षेत्र, मथुरा, वृन्दावन।

नाटक की कथा बिल्वमगल एव चिन्तामणि वेश्या के प्रणय-प्रसंगो पर आधारित है। बिल्वमगल चिन्तामणि के रूप सौन्दर्य पर आकृष्ट हो घर-द्वार एवं अपनी विवाहिता की सुध भुला देता है। पिता की मृत्यु का समाचार चिन्तामणि को बिल्वमंगल की पत्नी से प्राप्त होता है। इसी-से वह बिल्व मंगल को बलात् उसके घर भेज देता है। बिल्व मगल चिन्तामणि के बिछोह को न सह सकने के कारण रात के अन्धेरे मे शव के सहारे नदी पार कर सॉप को रस्सी समझ चिन्तामणि के समीप पहुँचने मे सफल होता है। चिन्तामणि की प्रताड़ना से उसका विवेक जागा, परन्तु कुरुक्षेत्र मे सेठ चन्दनदास की रूपवती पत्नी पर आसक्त हो पश्चात्तापस्वरूप वह अपने नेत्र फोड लेता है। और अपना शेप-जीवन कृष्ण-संकीर्तन मे अर्पित करता है।

सूर्यमुख (सन् १९६८, पृ० १२२), ले० : लक्ष्मीनारायण लाल; प्र० . नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पात्र . पु० ८, स्त्री ५; अक : ३, दृश्य . ७।
घटना-स्थल दुर्ग, मैदान।

यह नाटक पौराणिक कथा पर आधा-रित है। नाटककार ने महाभारत के प्रसग को कल्पना के द्वारा नवीन रग देना चाहा है। परन्तु कथा मूल से एकदम भिन्न हो गई है। इसमे धर्म-अधर्म, आस्था-अनास्था, आधुनिकता-प्राचीनता के प्रश्नो को उठाया गया है।

इसमे कृष्ण का पुत्र प्रद्युम्न कृष्ण की अतिम पत्नी वेनुरती से प्रेम करता है। कृष्ण की मृत्यु के पश्चात् द्वारिका नष्ट होती जाती है। प्रजा इसका कारण प्रद्युम्न और वेनुरती के अनुचित प्रेम को मानती है। द्वारिका मे युद्ध होता है। अराजकता फैल जाती है। प्रद्युम्न अपने भय को (मुखौटे को)

द्वारा अपहृत होती है। संयोग से वह एक दुर्घटना से ग्रस्त हो जाती है। चैतन्य होने पर वहअपनी स्थिति से व्याकुल होकर आत्महत्या करने को उद्यत होती है।

इस अपहृता नारी को समाज की निन्दा के भय से पिता व पति दोनो घर रखने को तैयार नही होते है। विवश होकर वह पिता के घर ही पहुँचती है जो उसे तिरस्कृत और अपमानित करके अधेरी रात मे जगल मे छोड देता है। वह रोती-कलपती पति के पास पहुँचती है जो उसे आश्रय नही देता। उसका पति रेवा नामक स्त्री से विवाह कर लेता है। रेवा ऊचे चरित्र की उदार नारी है। वह विजया को अपनी शरण मे रख लेती है। विजया को सर्प डस लेता है। विजया इस जीवन से व्याकुल होकर मरने को तैयार बैठी है, इसलिए सर्प-दश को एक फॉस कहकर टाल देती है। विजया का पति कुमार अन्त मे रक्त की बिन्दी उसके मस्तक पर लगाकर उसकी शुद्धता और पवित्रता का स्वीकार करता है।

सुहाग दान (सन् १९६३, पृ० ७२), ले० . अनिरुद्ध यदुनन्दन मिश्र; प्र० ·श्रीगगा पुस्तक मन्दिर, पटना, *पात्र :* पु० ६, स्त्री १, *अक-रहित, दृश्य* १२।
घटना-स्थल ' रामचन्द्रदेव का दरबार, किला।

इस ऐतिहासिक नाटक मे वीरागना स्त्रियो की सच्ची देशभक्ति दिखायी गई है।

देवगिरि के राजा रामचन्द्र देव की पालिता पुत्री का विवाह उसके ही महामत्री कृष्णराव से हो जाता है क्योकि वीरमती उससे प्रेम करती है। विवाह के समय ही अलाउद्दीन वहाँ पहुँचता है। पहले तो वह राजा रामचन्द्र देव का आतिथ्य स्वीकार करता है। फिर उसके महामत्री को प्रलोभन देकर अपनी ओर मिलाता है। कृष्णराव प्रलोभन मे आकर राजा रामचन्द्र देव के रहस्यो का पता अलाउद्दीन को देता है। समय आने पर वह अलाउद्दीन को देवगिरि पर आक्रमण करने के लिए आमत्रित करता है। देश-द्रोह की इस भावना को अन्दर-ही-अन्दर वीरमती देखती रहती है। उसे अपने पति के क्रिया-कलाप अच्छे नही लगते क्योकि उसके ही पिता को समाप्त करने का षड्यत्र चल रहा है। पति और पिता के मोह मे वह किसकी रक्षा करे, यह उसके समक्ष कठिन समस्या है। अन्त मे जिस समय किले पर अलाउद्दीन धोखे से आक्रमण करने ही वाला था, उसी समय वीरमती अपने पति कृष्णराव की हत्या कर देती है और कहती है कि "अपने देश के लिए अपने सुहाग का दान करके एक देश-द्रोही को समाप्त करती हूँ, पति को नही।"

सुहागिन (सन् १९६७, पृ० ७०), ले० : जगदीश शर्मा; प्र० : देहाती पुस्तक भडार, चावडी बाजार, दिल्ली, पात्र· पु० ७, स्त्री ३; *अक* ३।
घटना-स्थल : दीनानाथ का घर।

इस सामाजिक नाटक मे पारिवारिक वैषम्य, कटुता और विधवा-समस्या को एक त्रासदी के रूप मे प्रस्तुत किया गया है।

नाटक के पात्रो मे सेठ दीनानाथ, उनके पुत्र रतनलाल, हीरा और पत्नी चपा तथा पुत्री कृष्णा प्रमुख है। जय भतीजा है जिसकी सम्पत्ति पर उसके पिता की मृत्यु के बाद दीनानाथ का अधिकार है। उनके बडे लडके रतनलाल की शादी शकुन्तला से होती है। वह पति-परायणा सती नारी है। दुर्घटना मे असमय ही रतनलाल मर जाता है और शकुन्तला विधवा हो जाती है।

चम्पा जहाँ अपने पुत्र-पुत्रियो से अतिशय प्रेम के कारण उनके दुर्गुणो को भी गुण समझती है, वहाँ वह शकुन्तला से घृणा करती है और उस कुलवधू को इतना पीडित करती है कि वह विष खाकर इस संसार से कूच कर जाती है।

उस घर मे, जय ही केवल उसका हमदर्द था, किन्तु झूठा कलंक लगाकर उसे भी अलग कर दिया जाता है। कृष्णा जब किशोर के साथ भागती है तो उसका भाई हीरा ही उसका सामान पहुँचाता है और बिगाना

जय उसे पकड़कर वापस लाता है।

सूखा सरोवर (सन् १९५९, पृ० १२४), ले० लक्ष्मीनारायण लाल; प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, पात्र . पु० १०, स्त्री २; *अक* ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल . सूखे सरोवर का तट।

किसी नगरी मे एक सरोवर है जो सबका आधार है। उस नगर के राजा को उसका छोटा भाई बलपूर्वक हराकर स्वयं राजा बन जाता है। उसकी पुत्री एक युवक को विवाह करने का वचन देती है। उसका प्रेमी उसे बचाने का वचन देता है, परन्तु पिता उसके इन स्वप्नो को तोड़ देता है। फलस्वरूप राजकुमारी उस सरोवर मे डूबकर आत्महत्या कर लेती है। सरोवर का जल सूख जाता है। सारी नगरी प्यास के कारण तडपने लगती है। राजा का बडा भाई सन्यासी बनकर उसी तालाब के किनारे सरोवर की आराधना करता है। राजकुमारी की आत्मा भी करुण आवाज सुनाती है। सरोवर पुन: अपने अंदर जल आने के लिए नगर के प्रतिनिधि का बलिदान माँगता है। नगर के लोग राजा की बलि देने के लिए तैयार होते है। राजा भाग जाता है। इसी बीच राजकुमारी का उन्मत्त प्रेमी उस सरोवर मे अपनी बलि देता है। परन्तु जनता को उसकी बलि पर विश्वास नही होता क्योंकि वह नगर का प्रतिनिधि नही था। अत: राजा (सन्यासी) बलि देने के लिए तैयार होता है कि सरोवर मे जल भर आता है। उस पागल प्रेमी का बलिदान सार्थक होता है। उसकी आत्मा राजकुमारी की आत्मा से मिल जाती है।

इस गीति नाट्य मे सरोवर जीवन का प्रतीक है और जल जीवन-सौन्दर्य का। सूखा सरोवर सौन्दर्यहीन जीवन की ओर सकेत करता है।

सूरदास 'नाटक' अर्थात् बिल्वमंगल (वि० २०११, पृ० १२९), ले० वेणीराम त्रिपाठी 'श्रीमाली'; प्र० . ठाकुर प्रसाद एड संस, वाराणसी; पात्र : पु० ८, स्त्री ११, *अक* : ३, *दृश्य* . ११, ७, ४।
घटना-स्थल . आगरा, कुरुक्षेत्र, मथुरा, वृन्दावन।

नाटक की कथा बिल्वमगल एव चिन्तामणि वेश्या के प्रणय-प्रसगो पर आधारित है। बिल्वमगल चिन्तामणि के रूप सौन्दर्य पर आकृष्ट हो घर-द्वार एव अपनी विवाहिता की सुध भुला देता है। पिता की मृत्यु का समाचार चिन्तामणि को बिल्वमगल की पत्नी से प्राप्त होता है। इसीसे वह बिल्व मगल को बलात् उसके घर भेज देता है। बिल्व मगल चिन्तामणि के बिछोह को न सह सकने के कारण रात के अन्धेरे मे शव के सहारे नदी पार कर साँप को रस्सी समझ चिन्तामणि के समीप पहुँचने मे सफल होता है। चिन्तामणि की प्रताडना से उसका विवेक जागा, परन्तु कुरुक्षेत्र मे सेठ चन्दनदास की रूपवती पत्नी पर आसक्त हो पश्चात्तापस्वरूप वह अपने नेत्र फोड लेता है। और अपना शेष-जीवन कृष्ण-सकीर्तन मे अर्पित करता है।

सूर्यमुख (सन् १९६८, पृ० १२३), ले० लक्ष्मीनारायण लाल, प्र० . नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पात्र पु० ८, स्त्री ५, *अक* : ३, *दृश्य* ७।
घटना-स्थल दुर्ग, मैदान।

यह नाटक पौराणिक कथा पर आधारित है। नाटककार ने महाभारत के प्रसंग को कल्पना के द्वारा नवीन रग देना चाहा है। परन्तु कथा मूल से एकदम भिन्न हो गई है। इसमे धर्म-अधर्म, आस्था-अनास्था, आधुनिकता-प्राचीनता के प्रश्नो को उठाया गया है।

इसमे कृष्ण का पुत्र प्रद्युम्न कृष्ण की अतिम पत्नी वेनुरती से प्रेम करता है। कृष्ण की मृत्यु के पश्चात् द्वारिका नष्ट होती जाती है। प्रजा इसका कारण प्रद्युम्न और वेनुरती के अनुचित प्रेम को मानती है। द्वारिका मे युद्ध होता है। अराजकता फैल जाती है। प्रद्युम्न अपने भय को (मुखौटे को)

त्यागकर द्वारिका की रक्षा करता है। रुक्मिणी अन्त मे अपने पुत्र को क्षमा कर देती है। प्रद्युम्न और वेनुरती दोनो एक साथ द्वारिका के लिए लडते-लड़ते प्राण त्याग देते है।

सूर्योदय (वि० १९८१, पृ० १२७), ले० : ईश्वरी प्रसाद शर्मा; प्र० : रामलाल वर्मा, चीतपुर रोड, कलकत्ता; पात्र : पु० १७, स्त्री ६; अक ३; दृश्य : ११, ९, ५।
घटना-स्थल . तारानगर, राजमार्ग।

इस सामाजिक नाटक मे लोभ का दुष्परिणाम दिखाया गया है। सेठ परमेश्वर दास मरते समय अपनी वसीयतनामा अपने इकलौते पुत्र मदन के नाम करते है तथा उसका भार दीवान के ऊपर छोडते है। परन्तु दीवान जीवनराम दुष्ट और लोभी प्रकृति का होने के कारण सेठ की जायदाद हडपने के लिए नाना प्रकार का षड्यन्त्र करता है। उसके हाथो से कई हत्याएँ होती है। अन्त मे उसकी कलई खुलती है। वह भाग जाता है। उसकी स्त्री मनोरमा अपने को विधवा मानकर आत्म-हत्या करना चाहती है परन्तु मदन उसे बचा लेता है। मनोरमा एक अनाथ आश्रम की सचालिका हो जाती है। सबको सूत कातते दिखाया गया है।

सूर्योदय अर्थात् अछूतोद्धार-नाटक (सन् १९३५, पृ० २९), ले० : महमूदअली कमलेश, प्र० सेठ बाबूलाल माहेश्वरी रईस, झाँसी, पात्र पु० ८, स्त्री-रहित; *अक* : २; *दृश्य* : ५, ४।

यह सामाजिक नाटक अछूतोद्धार की समस्या पर लिखा गया है। प्रथम अंक मे धर्म और न्याय पात्र के रूप मे उपस्थित हुए है। धर्म कहता है —"एक समय था जब हमारे देश मे बड़े-बड़े ऋषि-मुनि हुआ करते थे। यह देश धर्म, ज्ञान और दर्शन के शिखर पर था, पर आज मानव अपने को वर्गो मे विभाजित कर ऊँच-नीच, छुआछूत का भाव फैलाकर अपने को पतन के मार्ग पर ले जा चुका है।" न्याय कहता है—"जब भगवान् ने सबको समान अधिकार दिए हैं तो ऊँच-नीच का भेदभाव कैसा! और देखने चलते है कि समाज कहाँ तक अपना उत्तरदायित्व समझने लगा है।" सेठ करोड़ीमल कट्टर सनातनी है और नन्हकू-राम तथा पलटूराम कट्टर जमीदार। वे लोग छुआछूत का भेद फैलाकर अछूतो को हेय दृष्टि से देखते हैं। ज्ञानचन्द एक सनातनी पण्डित होते हुए भी उदार प्रकृति का है। अन्त मे ये अछूतो के शुभचिन्तक हो उनके अधिकारो की रक्षा करते हैं। बहुत हाथ-पाँव मारने के बाद सेठ तथा जमीदार अछूतो की उचित माँगो को स्वीकार कर लेते हैं और ज्ञानचन्द के उदार विचारों की विजय होती है।

सृष्टि का अंत (सन् १९४६, पृ० ३२), ले० : देवेन्द्र बिसनपुरी; प्र० . बिसनपुरी प्रकाशन गृह, खजाची रोड, पटना; *पात्र* पु० ४, स्त्री २; *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल : रगमंच।

नाटक मे मनुष्य मात्र पर व्यंग्य है। उसके बढते हुए वैज्ञानिक अनुसधानो से प्रकृति और पृथ्वी भी बौखला उठी है। नाटक के आरम्भ मे प्रकृति और पृथ्वी का वार्तालाप होता है। पृथ्वी प्रकृति से कहती है—"तुम ···मेरे ही समान···दुर्दिन की मारी···जिसके साथ मनुष्यो ने हैवान बनकर व्यवहार किया, जिसके शरीर को टैंको, मशीन गनो और एटम बमो के सामने उछाला··· ।" प्रकृति उत्तर देती है—"हाँ। तुमसे भी अधिक मेरी क्षति हुई है। मेरे हरे-भरे ससार मे, जहाँ कोयल की कूक सदा गूँजती थी, वहाँ उन हैवानों ने रोने के लिए मेरे अलावा एक कुत्ते को भी नही छोडा।"

इस प्रकार से प्रकृति और पृथ्वी दोनो मिलकर मानव-जीवन की भर्त्सना करती है। पृथ्वी प्रकृति को सांत्वना देती है और कहती है कि घबराओ नही, मेरे पुत्र अभी शात हो रहे है। मुझे उनके प्रति बडा दुःख है क्योकि वे अरबो की सख्या मे से तीन या चार ही रह गये है।

इसके पश्चात् गोपाल कामरेड, वांगी और टोम रंगमंच पर आते हैं। चारों सद्भाव से रहने का प्रयत्न करते हैं परन्तु एक-दूसरे का स्वार्थ उनको सर्वथा नष्ट कर देता है।

सृष्टि का आखिरी आदमी (सन् १९५४, 'नदी प्यासी थी' में संगृहीत); ले० : धर्मवीर भारती प्र० : किताब महल, इलाहाबाद; पात्र : पु० ५, स्त्री नहीं; अंक-दृश्य-रहित।

प्रस्तुत गीतिनाट्य वर्तमान सभ्यता एवं संस्कृति के संभावित प्रलय तथा नव-सृष्टि के संकेत प्रस्तुत करता है। आधुनिक वैज्ञानिक सभ्यता का विकास क्रान्ति की नींव पर हुआ है, उसका अन्त भी क्रान्ति में ही होगा। विध्वंस-चित्रण के पश्चात् कवि भारत की प्राचीन कृषि संस्कृति को नव-संस्कृति के रूप में प्रस्तुत करता है। मुर्दे द्वारा आग की लपटों में से गेहूँ की बालों को सुरक्षित बचाना इसी ओर संकेत करता है। गीतिनाट्य के सभी प्रसंग प्रतीकात्मक हैं, जो श्रोताओं की संवेदना जाग्रत करके करुण वातावरण का निर्माण करते हैं।

सृष्टि की साँझ (सन् १९५४, 'सृष्टि की साँझ तथा अन्य रूपक' में संगृहीत); ले० : सिद्धनाथ कुमार; प्र० : पुस्तक मन्दिर, बक्सर; पात्र : पु० ४, स्त्री २; अंक-दृश्य-रहित।

इस गीति-नाट्य में युद्ध-सम्बन्धी मूलभूत प्रश्नों का समाधान खोजने का प्रयास किया गया है। सम्पूर्ण गीति-नाट्य तृतीय विश्वयुद्ध की संभावित प्रलयंकारी विभीषिका की पृष्ठभूमि पर आधारित है। सेनापति, महामात्य, अजय तथा रेखा आदि पात्र तृतीय महायुद्ध के अवशिष्ट मानव हैं। इनके वार्तालाप से युद्ध के औचित्य तथा अनौचित्य पर प्रकाश पड़ता है। सेनानायक तथा महामात्य मानवीय आदर्शों की रक्षा हेतु युद्ध को ही एकमात्र साधन मानते हैं। इसी समय एक अन्य पात्र अजय युद्ध के प्रति तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त करता हुआ स्वयं को युद्ध के लिए दोषी मानता है क्योंकि उसका अहंकार ही युद्ध का मूल कारण बना था। सेनानायक और महामात्य के अनुसार विगत ऐतिहासिक संस्कृति के विध्वंस पर ही नवीन सृष्टि का सर्जन होगा। अजय इस तर्क से विक्षुब्ध हो उठता है और कहता है कि विज्ञान का वरदान स्वयं अपने लिए ही अभिशाप बन गया है, जिसके परिणामस्वरूप कला का उत्कर्ष और सर्जन के लिए नष्ट हो गया है। वैज्ञानिक उपलब्धियों को तो पुनः प्राप्त किया जा सकता है किन्तु कला की यह क्षति कभी पूरी नहीं की जा सकती। महामात्य अजय को बन्दी बना देते हैं तथा नवसृष्टि की ओर प्रेरित करते हैं। इसके बाद सब, युद्ध में एकमात्र बची नारी रेखा की खोज में चल देते हैं। उधर रेखा भी निर्जन भीषण एकान्त में विगत-स्मृतियों का अवलोकन करती हुई आत्मघात के लिए उद्यत होती है। तभी अजय आकर उसे रोक लेता है और नवसृष्टि की आशा बताता है। यहाँ सेनापति और महामात्य का नाटकीय प्रवेश होता है। वे रेखा पर अजय का आधिपत्य सहन नहीं करते। परिणामस्वरूप अजय को बन्दी कर देते हैं। अब सेनापति एवं महामात्य में रेखा के लिए संघर्ष होता है, जिसमें दोनों की मृत्यु हो जाती है। शेष रह जाते हैं—अजय और रेखा। युद्ध के अणु-खंडहर पर नवीन सृष्टि की आशा के साथ गीति-नाट्य समाप्त होता है।

सेवक (सन् १९५४, पृ० ५८) ले० : काली बोस; प्र० : अमृत बुक कम्पनी, नई दिल्ली; पात्र : पु० ११, स्त्री ६; अंक : ३; दृश्य : ३, ३, ३।
घटना-स्थल : भारत मिल्स।

इस सामाजिक नाटक में सेवकों की मालिकों के प्रति सच्ची सहानुभूति दिखाई गई है। अपंग छोटू बैसाखी के सहारे अपने को धकेलता हुआ 'भारत मिल्स' के मैनेजर के समक्ष नौकरी की आशा से उपस्थित होता है। मैनेजर उसकी दीन दशा से द्रवित होकर उसे इंजीनियर रमण के निर्देशन में मशीनों के निर्माण का प्रशिक्षण ग्रहण करने

अवसर देते है। अपनी कुशाग्र बुद्धि एवं लगन के कारण वह शीघ्र ही अपने कार्य मे प्रवीण हो जाता है। उसकी इस कार्य-कुशलता पर स्वयं इजीनियर रमण को आश्चर्य होता है। अवकाश के क्षणो मे छोटू अपनी बाल सहचरी श्यामा के असफल प्रणय-प्रसगो का स्मरण कर दु.खी होता रहता है। छोटू के सद्व्यवहार के कारण सरोज उसे मन ही मन अपने पति रूप मे वरण कर लेती है। परन्तु दैववशात् एक साथ उसे पता चला कि इजीनियर रमण दुर्घटनावश एक मशीन मे गिर गए है। बायलर की ओर बढती मशीन के कारण रमण के जीवन की आशा ही समाप्त हो जाती है, परन्तु छोटू अपने प्राणो पर खेल कर उन्हे मशीन से निकालने मे सफल हो जाता है। यद्यपि रमण बच जाते है परन्तु छोटू को कोई नही बचा पाता। कर्त्तव्य की बलि-वेदी पर छोटू अपने को बलिदान कर देता है। सरोज छोटू की धधकती चिता मे कूदकर स्वय भी उसके साथ ही प्रयाण कर लेती है।

सेनापति पुष्यमित्र (सन् १९५१, पृ० १०९); *ले०* सीताराम चतुर्वेदी, *प्र०* : पुस्तक सदन, बनारस, *पात्र* पु० ७, स्त्री ५; *अक* ३, *दृश्य* ५, ६, ५।
घटना-स्थल साकेत (अयोध्या)।

इस ऐतिहासिक नाटक मे सेनापति पुष्यमित्र को एक त्यागी, कुशल तथा वीर सेनापति के रूप मे चित्रित किया गया है।

मौर्यवश का अन्तिम सम्राट् बृहद्रथ इतना दुर्बल है कि दक्षिण का शातकर्णि, कलिग का खारवेल और तक्षशिला का यवन राजा देमेत्रिय तीनो उसके राज्य पर आक्रमण करके उसकी सीमा छीनते चले जा रहे है। अब अयोध्या मे भी यवनो का राज्य हो गया है। वहा के राजा अन्तपाल की कन्या कल्याणी आकर बृहद्रथ से प्रार्थना करती है कि हमे सेना की आवश्यकता है, सेना से ही हमारी रक्षा हो सकती है परन्तु बृहद्रथ टस से मस नही होता। उसे साकेत की रक्षा का कोई ध्यान नही है। देवरात बौद्ध उसके राज्य का मत्री है। बृहद्रथ उसकी सभी सलाहो का अनुसरण करता है। देवरात और सेनापति पुष्यमित्र मे अनबन है। पुष्यमित्र कल्याणी की प्रार्थना पर अपने धर्म का निर्वाह करने के लिए साकेत की रक्षा का वचन देता है। इससे क्रुद्ध होकर राजा पुष्यमित्र को सेनापति पद से च्युत कर देता है। कल्याणी के विचार अपने विरुद्ध देखकर देवरात उसे भी दण्ड का भागी बनाना चाहता है, परन्तु पुष्यमित्र उसकी रक्षा कर लेता है।

बृहद्रथ अब पुष्यमित्र से और भी क्रुद्ध हो जाता है। सेनानायक धातुसेन बृहद्रथ को मृत्यु के घाट उतार देता है, परन्तु राजा की मृत्यु का दोप पुष्यमित्र अपने सिर पर ले लेता है। अमात्य देवरात पुष्यमित्र की मृत्यु के लिए अनेक कुचक्र रचता है, किन्तु असफल रहता है। सारा भेद खुलने पर राजमाता पुष्यमित्र के सिर पर राजमुकुट रखती है, परन्तु पुष्यमित्र सेनापति रहना ही स्वीकार करता है।

सेवापथ (सन् १९४०, पृ० १११), *ले०* : सेठ गोविन्ददास, *प्र०* : हिन्दी भवन, जालंधर और इलाहाबाद ; *पात्र* : पु० २, स्त्री ३, *अक* : ३ ; *दृश्य* ; ४, ५, ३।
घटना-स्थल : श्रीनिवास के मकान का एक कमरा, सेवाकुटी का बाहरी मैदान।

भारत की सामयिक समस्याओ पर आधारित इस नाटक मे गाधीवादी सिद्धातों का प्रतिपादन हुआ है। सुशिक्षित दीनानाथ नौकरी आदि के विभिन्न प्रलोभनो को ठुकरा कर गाधीवादी आदर्शो के माध्यम से समाज-सेवा के कष्टप्रद मार्ग का अनुसरण करता है। समाज-सेवा के इस मार्ग का विरोध प्रारम्भ मे उसके मित्रो के अतिरिक्त स्वय उसकी पत्नी करती है। मार्क्सवादी सिद्धातादर्शो के प्रबल समर्थक अपने मित्र शक्तिपाल के कौसिल प्रवेशादि विचारो से सहमत न होते हुए भी उसका विरोधी नही होता। शक्तिपाल अपने मित्र श्रीनिवास के सहयोग से चुनाव मे विजयी होता है परन्तु चुनाव मे अपने सहयोगी-मित्रो द्वारा प्रयुक्त ओछे हथकण्डो के कारण उसकी आत्मा को

कष्ट होता है। अपने सिद्धातादर्शों के कारण कर्त्तव्यपरायण होते हुए भी वह लोकप्रिय नही हो पाता। वह श्रीनिवास के दूसरे अनुरोध पर चुनाव मे ओछे हथकण्डे न अपनाने के कारण पराजित हो जाता है। परिस्थितियो से लाभ उठाकर श्रीनिवास दीनानाथ के प्रति न केवल मिथ्यारोपण ही करता है बल्कि शक्तिपाल के गृहस्थ जीवन को भी नष्ट कर देता है। प्रतिशोध की भावना से शक्तिपाल, श्रीनिवास तथा मार्गरेट दोनो को गोली मार कर समाप्त करना चाहता है परन्तु उसकी गोली से श्रीनिवास के रक्षार्थ आया दीनानाथ घायल हो जाता है। दीनानाथ के अनुरोध पर शक्तिपाल श्रीनिवास को क्षमा कर देता है।

सोडे की बोतल (सन् १९२१, पृ०५५); ले० : आनन्द प्रसाद ठाकुर ; प्र० : ठाकुर प्रसाद एण्ड संस, बुक्सेलर, वाराणसी; *पात्र :* पु० ४, स्त्री २, अक . १; *दृश्य :* ५।
घटना-स्थल . बागभट्ट का मकान, उपवन।

यह एक शिक्षाप्रद हास्य नाटक है। स्त्री पुरुष को प्यार से वशीभूत समझकर हर ढंग से दबाना चाहती है। बागभट्ट एक गरीब ब्राह्मण है। उसकी पत्नी चंचला उसे धन-प्राप्ति के लिए हमेशा तंग करती रहती है। कुलवंती एक गुणवती कन्या है जो बागभट्ट को विपत्ति के समय धैर्य देती है। जब चचला को सब तरह का सुख मिलने लगता है तो भी बागभट्ट तथा नौकरो पर अधिकार जमाती है। इससे बागभट्ट आधुनिक स्त्रियों की सोडा की बोतल से उपमा देते हैं।

सोना रानी (सन् १९०१, पृ० ७२), ले० : भगवानदीन लाला ; प्र० दामोदर पुस्तक माला, कार्यालय, बस्ती; *पात्र :* पु० १३, स्त्री ६; *अंक :* ६, *दृश्य;* २, १, ३, ३, ३, २।
घटना-स्थल . अकबर की सीमा।

नाटक की मूलकथा का लक्ष्य सोना रानी की पातिव्रत-परीक्षा है। अकबर के समय मे चौपराज नाम के गुजरात में एक राजा है, सोना रानी उन्ही की धर्मपत्नी है। अकबर इसकी परीक्षा कराता है जिसमे रानी पूरी खरी उतरती है। नाटक स्त्री-प्रधान है। स्त्रियो के ही चातुर्य तथा कौशल का वर्णन इसमे है।

सोहनी-महीवाल (सन् १९६०, पंजाब की प्रीत कहानियो मे संगृहीत); ले० : हरिकृष्ण प्रेमी ; प्र० : आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ; *पात्र :* पु० ४, स्त्री २; *अक :* २।
घटना-स्थल : चनाब नदी।

पंजाब की प्रसिद्ध लोककथा पर आधारित 'सोहनी-महीवाल' एक सगीत-रूपक है। एक राही के पूछने पर माँझी सोहनी-महीवाल की करुण प्रेम-कहानी का वर्णन करता है कि किस प्रकार इज्जतबेग नामक शाहजादा एक कुम्हारिन सुन्दरी सोहनी के रूप-लावण्य पर मुग्ध हो जाता है।

परिणाम-स्वरूप वह महलो को छोड़कर सोहनी के घर नौकर हो जाता है। यहा उनकी प्रेमचर्चा चारो ओर फैल जाती है जिसके कारण सोहनी का विवाह अन्यत्र कर दिया जाता है। प्रेम-पथिक इन बाधाओ से डर कर प्रेम-मार्ग नही छोड़ते। महीवाल जोगी-वेश मे सोहनी की ससुराल पहुंच जाता है। वहाँ प्रतिदिन निस्तब्ध रात्रि मे चनाब नदी के पार दोनो मिलने लगते हैं। एक दिन सोहनी की ननद को जब यह प्रेम-रहस्य ज्ञात होता है तो वह पक्के घडे के स्थान पर मिट्टी का एक कच्चा घडा रख देती है। एक बार पुन: प्रेम की परीक्षा होती है और सोहनी तूफानी नदी मे अपने प्राण-विसर्जन कर देती है। उधर महीवाल भी नदी मे कूदकर मिलन-पथ पर अग्रसर होता है।

सौभाग्य सुन्दरी (सन् १९२४, पृ० १००), ले०. गोकुल प्रसाद कवि, प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी, पात्र पु० ६, स्त्री ३, *अक* · ३ ; *दृश्य :* १०, ८, ५।
घटना-स्थल : नदी का किनारा, मकान, जगल।

इस नाटक का कथानक प्रेमकथा है।

सौभाग्य बचपन मे अपनी मा के साथ एक नदी मे फेक दिया जाता है। किसी तरह दोनो किनारे लगते है। मा बच्चे के हाथ मे अंगूठी बाध कर स्वय तपस्विनी बन जाती है। कालान्तर मे सौभाग्य माधो के साथ अपने माता-पिता की खोज मे निकलता है। वह एक मेले मे पागल हाथी से सुन्दरी की रक्षा करता है फिर दोनो का आपस मे प्रेम हो जाता है। किन्तु दुर्मत सिह की चाल से माधो भी सुन्दरी से प्रेम करके सौभाग्य को धोखा दे देता है। और जब सुन्दरी अपने प्रेम की निशानी मे सौभाग्य की अगूठी माधो को दे देती है तब उसे विश्वास होता है कि सुन्दरी माधो से प्रेम करती है। फिर सौभाग्य दुर्मत को पानी मे फेक देता है पर जब क्षमा सिह के द्वारा वह पकड़ा जाता है तब अपने सभी कुकृत्यो को बताकर यह रहस्य खोलता है कि "वास्तव मे सुन्दरी सौभाग्य से प्रेम करती थी। सौभाग्य एव माधो मे बरभाव पैदा करने के लिए मैने ऐसा किया।" तब पुन सौभाग्य सुन्दरी को वही स्थान देता है जो कि पहले प्रेम के समय दिया था।

सौवर्ण (सन् १९५४, 'सौवर्ण' मे सगृहीत), ले० . सुमित्रानन्दन पन्त, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, काशी; पात्र पु० ४, स्त्री २; *अक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल · हिमाद्रि श्रेणिया, धरती।

मानवता के व्यापक विश्वधरातल पर आधृत सौवर्ण एक वैचारिक गीति-नाट्य है, जिसके अन्तर्गत स्वप्निल युग को प्रस्तुत किया गया है।

प्रारम्भ मे हिमाद्रि श्रेणियो मे एकत्रित देवी-देवता सृष्टि का अवलोकन करते है। संक्रान्ति काल मे जड रूढियुक्त मानव का आन्तरिक स्तर पर विकास हो रहा है। इसके पश्चात् स्वर्गदूत तथा स्वर्गदूती का धरा पर आगमन होता है। इन दोनो के वार्तालाप मे भू पर ऊर्ध्व तथा समदिक् विकास के दर्शन होते है। स्वर्गदूत, साधना और तप की निष्क्रियता की ओर सकेत करता है। दूसरी ओर भौतिक विकास भी मानव को मृत्यु-भय से मुक्त नही कर पाता है। इसका कारण है, मानव का मध्यकालीन जड-रूढ-सस्कारो से मुक्त न हो पाना। देशकाल मे विभक्त मानव-सभ्यता क्रमश. ह्रासोन्मुख होती जा रही है। विश्व का एक बडा भाग दैन्य, निराशा, क्षुधा तथा विपमता से त्रस्त है जिसका समाधान बुद्धि-जीवी शब्द कौशल द्वारा खोजते है। तत्पश्चात् स्वर्गदूत तथा स्वर्गदूती भारत मे पधारते है तथा भारत के सास्कृतिक विकास के प्रति पूर्ण आश्वस्त होते है। भारत-दर्शन के पश्चात् स्वर्गदूत वापिस देवलोक चले जाते है। यहाँ हिम अंचल मे भ्रमण करते हुए एक तापस को देखकर सोचते है कि क्या यह कोई काल्पनिक दृष्य है, अरविन्द है अथवा स्वयं कवि है? सम्भवत: तीनो ही कवि के मन मे रहे हो। एकाकी जीवन की अतिशयता पर विचार करने के पश्चात् इस निर्णय पर पहुँचता है, कि आज मानव को देव, मनुज एव पशु-गुणो से संयोजित महती समन्विति चाहिए। महत् समन्वय के रूप मे सौवर्ण का आगमन होता है जिसमे लोकतत्व, देवत्व, अमरत्व का अद्भुत सामजस्य दृष्टि-गोचर होता है। आत्मपरिचय मे वह आध्यात्मिक व्याख्याएँ प्रस्तुत करता है तथा युग-युग से विच्छिन्न चेतना के प्रकाश को जीवन सूत्रो से गुम्फित करके धरा मे समा जाता है।

स्नेह-बन्धन (सन् १९४४, पृ० ८९), ले० · व्यथित हृदय, प्र० : ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना ; *पात्र* पु० १०, स्त्री २ ; *अक* : ३; *दृश्य* ६, ४, ७।
घटना-स्थल · उदयपुर का विलास भवन, वाटिका, वन, दुर्ग द्वार, निर्जन वन, शिविर, अकबर का राजभवन।

उदयपुर की जनता जगमल के अशक्त हाथो से राजमुकुट लेकर प्रतापसिंह को राणा घोषित करती है। स्वाधीनता के रक्षार्थ राणा प्रताप प्रतिश्रुत है, परन्तु अहेरिया उत्सव के समय आखेट के प्रश्न पर शक्ति-सिह की उद्दण्डता के कारण प्रताप उन्हें राज्य से निर्वासित कर देते है। शक्तिसिंह मुगल बादशाह अकबर से मिलकर मानसिंह के अपमान का प्रतिशोध लेने हल्दीघाटी के

मैदान मे राणा प्रताप के विरुद्ध आ डटता है। प्रताप मुगल सेना का डटकर मुकाबला करता है। शत्रु-पक्ष से घिरा जानकर चन्द्रावत सरदार राणा का मुकुट अपने सिर पर रख कर उनके प्राणो की रक्षा करता है। राणा युद्ध-क्षेत्र से सकुशल लौट पडते है परन्तु दो मुगल सैनिको को राणा का पीछा करते देख शक्तिसिह मे भ्रातृ-प्रेम की भावना बलवती हो जाती है। शक्तिसिह मुगल सैनिको को हराकर प्रताप से अपने अपराधो की क्षमा माँग लेते है।

स्नेह या स्वर्ग (सन् १९४६, पृ० ९९), ले० सेठ गोविन्ददास, प्र० किताब महल, इलाहाबाद ; पात्र पु० ५, स्त्री, ४ ; अक : ३ ; दृश्य ४, ४, ३।
घटना-स्थल स्वर्ग, पृथ्वी, समुद्र तट।

यह गीतिनाट्य प्रसिद्ध यूनानी महाकवि होमर के महाकाव्य 'इलियड' मे वर्णित एक कथा को आधार बनाकर भारतीय परिवेश मे प्रस्तुत किया गया है।

प्रथम अक मे स्नेहलता के प्रणय के आकाक्षी देव पुरुष जयन्त तथा मानव अज्ञेय दोनो युवक क्रमशः शुचिता तथा प्रभाकर को प्रणय-दूत बनाकर स्नेहलता के पास भेजते हैं। स्नेहलता प्रेम मे इस प्रकार की मध्यस्थता के विरुद्ध है, जिसके लिए वह अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त करती है। द्वितीय अक मे अजय स्नेह को उसकी बाल स्मृतियो का स्मरण दिलाकर उसे देवताओ की नित नूतन प्रणय-कृति के प्रति सावधान करता है और बताता है कि देवताओ के हृदय मे प्रेम नही बल्कि लालसा विद्यमान रहती है। इसीलिए वह स्नेहलता के पिता अक्षय से उसको अपने घर ले जाने का अनुरोध करता है, जिससे वह निष्पक्ष निर्णय ले सके। स्नेहलता अजय के घर चली जाती है। जयन्त को जब यह पता चलता है तो वह अजय को द्वन्द्व के लिए ललकारता है, जिसे अजय स्वीकार कर लेता है। तृतीय अक के प्रारम्भ मे जयन्त तथा अजय के द्वन्द्व की चर्चा सामान्य जन भी करते है। शुचिता द्वन्द्व का वर्णन अपनी माँ शुचि तथा पिता महेन्द्र मे करती हुई उन्हे द्वन्द्व-स्थल पर ले आती है। यहाँ महेन्द्र आकर द्वन्द्व रुकवाता है तथा स्नेहलता की सम्मति ही सर्वोपरि मान उससे जयन्त एव अजय मे से किसी एक को चुनने का आग्रह करता है। उपसंहार मे स्नेह के वशीभूत स्नेहलता अजय को वरमाला पहना देती है।

स्पर्धा (सन् १९५६, पृ० ७१), ले०: मस्तराम कपूर, प्र० हिन्दी ग्रन्थ-रत्नाकर हीरा बाग बम्बई ; पात्र पु० २, स्त्री नही, अक ३, दृश्य २, ३, ३।
घटना-स्थल : पाठशाला।

इस बालकोपयोगी नाटक की घटनाएं बालको के प्रत्यक्ष जीवन मे ली गई हैं। एक पाठशाला मे दो लडके हैं। दोनो मे प्रथम आने के लिए स्पर्धा रहती है किंतु उस स्पर्धा मे ईर्ष्या या शत्रुता की गध नही है। उसी कक्षा मे दो निकम्मे लडके भी है, जो उन दोनो को लडाकर वर्ग मे अपना रोब जमाना चाहते है। वे दोनो को एक दूसरे के खिलाफ झूठी बाते बताकर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहते है। जो स्पर्धा अब तक प्रेम के घोड़े पर सवार थी, अब वह शत्रुता के घोडे पर दौडने लगती है। लेकिन एक दिन अचानक साजिश बाहर आ जाती है। प्रेम फिर लौट आता है और प्रेम की पावन धारा इतने वेग से बहती है कि उसमे स्पर्धा तिनके की तरह बह जाती है।

स्वतन्त्रता-संग्राम (सन् १९५८, पृ० २७६), ले० कुवर वीरेन्द्र सिह ; प्र० साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, पात्र : पु० १८, स्त्री ६ ; अक ८, दृश्य : ५, ६, ८, १०।
घटना-स्थल धारानगर।

यह ऐतिहासिक नाटक स्वतन्त्रता-संग्राम के विषय मे लिखा गया है। देश अंग्रेज शासको की दासता को प्राप्त होता है। देश को इस सकटपूर्ण दशा मे मुक्ति प्रदान करने के लिए देश के अनुपम विद्वान् सन्यासी महात्मा जी प्रथम अपने आश्रम मे स्वराज्यान्दोलन का बीजारोपण करते

हैं। धारा नगर के नरेश गन्धर्वसेन के पुत्र विक्रमादित्य अपने ज्येष्ठ भ्राता भर्तृहरि, रानी पिंगला के षड्यन्त्र के कारण पृथक् होकर स्वातंत्र्य संग्राम का सफल सेनानी के रूप मे संचालन करते हुए देश को स्वराज्य सुख की प्राप्ति कराने मे सफल हो जाते है। रानी पिंगला के दुराग्रह एवं दुश्चरित्रता-पूर्ण षड्-यन्त्र का आचार्य-प्रदत्त अमरफल भण्डाफोड करता है, जिसके फलस्वरूप राजा भर्तृहरि धारा का राज्य विक्रमादित्य के लिए छोड़कर सन्यास ग्रहण कर लेते है। विक्रमादित्य संगठन द्वारा समस्त भारत को एकता के सूत्र मे बाँधकर राष्ट्रपति के रूप मे राजसूय तथा अश्वमेध यज्ञ करते है। उनकी उन्नति को देखकर ईर्ष्यावश कतिपय विदेशी शक्तियाँ सम्मिलित रूप से उनके विरुद्ध युद्ध घोषित करती है। विद्रोही बन्धुओ के देशद्रोह के कारण भारत अपनी जीती बाजी को हार जाता है। उसके उद्धारकर्ता एक मात्र देश-प्राण नेता विक्रमादित्य छल-छद्म द्वारा मृत्यु को प्राप्त होते है।

स्वतन्त्र भारत (सन् १९४७, पृ० १६५), ले० · दशरथ ओझा, प्र० . आदर्श साहित्य मदिर, गाजियाबाद ; पात्र . पु० ११, स्त्री ४; अक ५ ; दृश्य २, ३, ३, ३, २। *घटना-स्थल :* पाटलिपुत्र का राजप्रासाद, तक्षशिला विश्वविद्यालय, स्यालकोट का दुर्ग, उज्जैन का विस्तृत उद्यान, चाडालिन की झोपड़ी, मथुरा का यमुना-तट, उज्जैन का राजप्रासाद, काश्मीर की उपत्यका।

इस ऐतिहासिक नाटक मे हूणो के आक्रमण काल की घटनाओ का उल्लेख है। जिस समय मगध-सम्राट् बालादित्य बौद्ध धर्म की अहिंसा और ललित कलाओ के विकास और विस्तार मे संलग्न है उस समय गाधार और तक्षशिला पर हूणो की बर्बरता का साम्राज्य फैल रहा है। शत्रु के साथ अहिंसा के बर्ताव का विरोध करने वाले सेनापति गोपराज को बालादित्य मगध से निकाल देता है। बालादित्य की भगिनी कमला हूणो की बर्बरता की कहानियाँ सुनकर देश को युद्ध के लिए जागृत करती है। जनता के नेता यशोधर्मन और वैदिक विद्वान् वासुरत जनता मे घूम-घूम कर युद्ध के लिए धन एकत्र कर रहे है। हूणराज तूरमाण पश्चिमी भारत को रौंदता, अग्नि मे भस्मसात् करता मालवा पहुंचता है और उत्तर भारत के खडराज्य पारस्परिक कलह मे तल्लीन है। बालादित्य और वैदिक विद्वान् वासुरत में हिंसा-अहिंसा के विषय में विवाद छिडता है। अन्त मे बालादित्य हूणों से युद्ध के लिए प्रस्तुत हो जाते है किन्तु उज्जैन मे हूणो की विजय होती है। वहाँ से तूरमाण और मिहिरकुल मथुरा पहुंचते हैं। गोपराज, अवन्तिका, कमला, यशोधर्मन, वासुरत के उद्योग से हूण पराजित किये जाते है। मिहिरकुल बन्दी बनता है किन्तु बालादित्य उसे क्षमा कर मुक्त कर देता है। मिहिरकुल पुनः कश्मीर पर आक्रमण कर उसे जीत लेता है। वह पुनः सम्पूर्ण भारत का सम्राट् बनना चाहता है। अब बालादित्य अत्यन्त क्रुद्ध होता है और भिक्षुवर्ग उसके साथ अस्त्र-शस्त्र सभाल कर बर्बर हूणो का सामना करके उन्हे पराजित करता है। बालादित्य मिहिरकुल को पहली बार क्षमा करने की भूल स्वीकार करता है। मिहिर-कुल की भगिनी सरला भारतीय संस्कृति में रम जाती है और हूण क्रमश. भारतीय बन जाते है। इस नाटक का अभिनय १९४८ मे कानपुर मे हुआ।

स्वप्न और सत्य (सन् १९५२, 'सौवर्ण' मे संगृहीत), ले० : सुमित्रानन्दन पंत; प्र० : भारतीय ज्ञानपीठ काशी; पात्र · स्त्री ५ तथा कतिपय स्वर; *अंक-रहित; दृश्य* . ३।

अरविन्द के समन्वयवाद पर आधारित इस गीतिनाट्य मे जीवन के आदर्श और यथार्थ दोनो पक्षो की सघर्षपूर्ण स्थिति प्रस्तुत की गयी है।

प्रस्तुत गीतिनाट्य का प्रारम्भ प्रकृति-सम्बन्धी एक गीत से होता है। विमुग्ध कलाकार पतझड मे जीवन की जर्जरता, रूढियो, जीर्ण-शीर्ण मान्यताओ का स्पष्ट दर्शन करता है। इसी समय कलाकार के दो मित्र

आकर कला सम्बन्धी वाद-विवाद छेड देते हैं। एक मित्र कलाकार के अतिशय प्रकृति-प्रेम को सामाजिक दृष्टि से अभिशप्त बताते हुए जीवन के परिप्रेक्ष्य मे कला का महत्त्व आकता है। दूसरा मित्र कला का उपयोग मन के आन्तरिक वैषम्य मे साम्य स्थापित करने मे मानता है।

दूसरे दृश्य मे कलाकार स्वप्नावस्था मे अन्तर्जगत् के सूक्ष्म प्रसारो मे विचरण करता है, जिसे स्वर्ग कहते है। यहाँ उसे अनुभव होता है कि विश्व का विकास दुहरी गति से हो रहा है।

निम्न धरातल का आरोहण एवं ऊर्ध्व धरातल का अवरोहण दोनो का समन्वय ही मानव के लिए कल्याणकारी है। तभी अर्द्धजागरितावस्था मे कलाकार का साक्षात्कार छायारूप मे आत्माओ से होता है एवं उनके दर्शनो के अनुरूप वह स्वर्ग के अनेक स्तरो का अवलोकन करता है। जहाँ उपनिषद् का त्यागमय भोग, बुद्ध का निर्वाण, इस्लाम-ईसाई की जीवन-कामना तथा शंकर का जगन्मिथ्या—सभी मतवाद सम्प्रदायो की सीमित परिधि मे त्रिशंकु से लटके हुए हैं। इन सम्प्रदायों ने जीवन के उच्चादर्शों को जड नियमों में आवद्ध कर दिया है। कलाकार कहता है,—'स्वर्ग रहता कभी चिरन्तन'—क्योकि मात्र स्वर्ग वास्तविक जीवन की उद्भूत कल्पना है। इसीलिए कलाकार सभी मतो के समन्वय मे परिपूर्ण जीवन के दर्शन करता है।

तृतीय दृश्य मे कलाकार का दुःस्वप्न-ग्रस्त अन्तः-अवचेतन के अधकार-पूर्ण लोको मे भटकना है। परस्पर द्वेष, स्वार्थ से ग्रस्त-कलाकार के जीवन मे आशा की एक रेखा उत्पन्न होती है, जिसमे उसकी स्वप्न-चेतना व्यापक जीवन-प्रसार मे विचरण करती है और उसे विश्वास हो जाता है कि सिन्धु क्षितिज पर नवजीवन का अरुणोदय होगा।

स्वप्न पूर्ण (सन् १९६३, पृ० ६३), ले० : सुरेन्द्र मोहन घुन्ना; प्र० राज पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली; पात्र : पु० ७, स्त्री २; अंक : ५।
घटना-स्थल : कार्यालय, सेठ का घर।

यह सामाजिक नाटक बेकारी की समस्या पर आधारित है। रामकरण एक अखबार-विक्रेता है। उसका लडका रमेश नौकरी की तलाश मे है। एक कार्यालय मे क्लर्क की जगह खाली है। नियुक्ति-कर्त्ता तथा अधिकारी मि० शर्मा है जो २०० रु० घूस लेकर नियुक्ति कर रहे हैं। सेठ करोडपति है। उनका लडका सुरेश भी नौकरी चाहता है। सेठ मि० शर्मा से अपने लड़के की नियुक्ति के लिए सिफारिश करते हैं। मि० शर्मा आवेदन-पत्र की तिथि समाप्त हो जाने पर भी सुरेश को नियुक्ति के लिए आश्वासन देते है किन्तु इन्टरव्यू के समय उन्हे सुरेश के स्थान पर रमेश की याद आ जाती है और गरीब रमेश की नियुक्ति हो जाती है। तब सेठ का फोन आता है और वस्तुस्थिति का पता चलता है। तब मि० शर्मा कहते हैं कि सुरेश को काम मिल जाएगा। एकाध सप्ताह मे किसी को दोषारोपण कर निष्कासित कर दूंगा और उसके स्थान पर सुरेश नियुक्त हो जाएगा। नौकरी की समस्या और उसम व्याप्त भ्रष्टाचार का खुला पर्दाफाश प्रस्तुत नाटक मे है।

स्वप्न-भंग (सन् १९४०, पृ० १२८), ले० : हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० : आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, *पात्र* पु० ५, स्त्री ५, *अक* : ३, *दृश्य* : ६, ७, ७।
घटना-स्थल : उज्जैन, चम्बल।

'रक्षा-बन्धन' के समान प्रस्तुत नाटक का विषय भी दोनो सम्प्रदायो मे मेल कराना है। इसका नायक औरंगजेब का बडा भाई, मानवता, सहिष्णुता तथा उदारता की प्रतिमूर्ति दारा है जो हिन्दू-मुस्लिम एकता द्वारा ही मुगल-साम्राज्य को सुदृढ बनाए रखने मे विश्वास करता है। दारा के जीवन के उत्तरकाल की घटनाओ को आधार बनाकर औरंगजेब के साथ संघर्ष का चित्र प्रस्तुत किया गया है। शाहजहाँ को ज्येष्ठ पुत्र-पुत्री दारा और जहाँनारा से अधिक स्नेह करते देख औरंगजेब तथा रोशनारा ईर्ष्या से दग्ध होकर उन दोनो को अपदस्थ करने का अवसर देखते रहते हैं

और शाहजहाँ को वृद्ध, रोगी तथा शिथिल पाते ही अपना शक्ति-विस्तार करने लगते हैं। रोशनारा अपने रूप-लावण्य तथा मधु-भीगी बातो से प्रभावित कर, दारा को काफिर तथा इस्लाम का शत्रु कहकर, धर्म तथा कुरान के नाम पर मुसलमान सरदारो तथा सैनिको को अपने पक्ष मे कर लेती है। उधर राजा जसवर्तसिंह की असावधानी राजपूतो की प्रतिशोध, की भावना और दारा तथा शाहजहाँ की स्नेह-भावना के कारण दारा की शक्ति क्षीण होती जाती है और वह उज्जैन तथा चम्बल के युद्ध मे पराजित होकर जामनगर के हिन्दू राजा के यहाँ शरण लेता है। वहाँ उसे दक्षिण की मुसलमानी रियासते, शिवाजी और जसवतसिंह पुन. सेना को सुव्यवस्थित कर औरंगजेब के विरुद्ध युद्ध करने का निमंत्रण देते है। दारा जसवर्तसिंह पर विश्वास कर दक्षिण न जाकर उन्ही का निमत्रण स्वीकार कर लेता है और ऐसी राजनीतिक भूल करता है जिसके कारण वह सदा के लिए दर-दर का भिखारी हो जाता है। औरङ्गजेब तथा रोशनारा की कूटनीति से जसवर्तसिंह ठीक मौके पर विश्वासघात करता है और दारा को पत्नी सहित जगलो मे भूखा-प्यासा रहना पडता है। अन्त मे वे मलिक जीवन नामक जागीरदार के यहां, जिसकी उन्होने एक बार प्राण-रक्षा की थी, शरण लेते है परन्तु वहा भी उन्हे विश्वासघात ही मिलता है। मलिक जीवन उन्हे और उनके पुत्र शिकोह को औरगजेब को सौप देता है। दारा को दिल्ली लाकर पहले मैली-कुचैली हथिनी पर खुले हौदे मे फटे चीथडे पहनाकर घुमाया जाता है और अपमानित किया जाता है। तदुपरान्त न्याय का खेल रच कर दारा को धर्म का दुश्मन बताकर मृत्यु-दंड दिया जाता है।

स्वराज्य [सचित्र नाटक] (सन १९२८, पृ० ११४), ले० ब्रजवासीलाल; प्र० : दयालबाग, आगरा, पात्र : पु० २८, स्त्री ६; अक : ४, दृश्य : ३, ५, ३, ३।
घटना-स्थल बाजार, हरिद्वार, बनारस।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। नगरकोट के प्रान्त को यूनानियों ने आक्रमण करके जीत लिया है। वहाँ का राजा उग्रसेन राज्य छोडकर ब्रह्मविद्या सीखने के उद्देश्य से हरिद्वार पहुँचता है। हरिद्वार मे साधना करके उग्रसेन ब्रह्मविद्या की प्राप्ति के लिए बनारस पहुँचता है। वरणा और असी के मध्य स्थित वाराणसी का अध्यात्मपरक अर्थ उग्रसेन को समझाया जाता है और उसे आत्महत्या से बचा लिया जाता है। तीसरे अक मे नगरकोट की जनता मे जागृति आ जाती है और महिला-समाज बहुत बडा जलसा मनाता है जिसमे राजकुमारी का प्रभावशाली भाषण होता है। वह कहती है, "यह असंभव है कि कोई जाति सदा के लिए आत्म-निर्णय के अधिकार से वचित रहे।" साथ ही फूट-फूटकर रोने लगती है। उसी समय एक सन्यासी चबूतरे की तरफ बढता है और सभासदो को उद्बुद्ध करते हुए कहता है—"मेरा सकल्प पूरा हो गया है और मै आप लोगो की सेवा के लिए हाजिर हूं।" राजकुमारी अपने पिता को पहचान कर उनके गले लिपट जाती है।

चौथे अक मे शाह यूनान के दरबार में उग्रसेन तथा राजकुमारी आमंत्रित है। लाहौर के गवर्नर ने शाह यूनान को नगरकोट निवासियो की उत्कृष्ट अभिलाषा से परिचित करा दिया है। राजकुमारी बीस वर्ष तक (पिता के संन्यास की अवधि मे) एडाल्फस नामक चित्रकार के घर पली। एडाल्फस के कागजो मे एक सन्यासी उग्रसेन की चिट्ठी निकलती है जिसमे राजकुमारी की परवरिश का जिक्र है। अब शाह यूनान को विश्वास हो जाता है कि नगरकोट का राजा यही उग्रसेन है। शाह यूनान लाहौर गवर्नर के द्वारा नगरकोट को स्वतंत्र करने की घोपणा करते है।

स्वर्ग-किन्नरी (सन् १९५३, पृ० ६८), ले० : रामेश्वरसिंह 'नटवर', प्र० : श्रीकालिकिकर चट्टोपाध्याय, जयश्री प्रेस, गया, पात्र : पु० ८, स्त्री ५, अक : ४; दृश्य : ७, ६, ५, ४।

घटना-स्थल : इन्द्रपुरी, नेपाल, गगातट।

यह एक धार्मिक नाटक है। महर्षि दुर्वासा इन्द्रपुरी की विख्यात नर्तकी उर्वशी पर मोहित होते है और फिर किसी कारण से क्रोधित होकर शाप दे देते है कि 'तू रात मे किन्नरी तथा दिन मे तुरगिनी बनकर भूतल पर रहना।' उर्वशी भूतल पर दु खमय जीवन व्यतीत करती है। नेपालनरेश दगीराय उसकी सुन्दरता देखकर मोहित हो जाते है। उर्वशी भी दंगीराय की वीरता से प्रसन्न होकर अपना भेद बताकर राजा के साथ रहने लगती है। मथुरा के राजा श्रीकृष्ण तुरगिनी की चाल-ढाल और सुन्दरता देखकर दगीराय के पास घोडी लौटाने को सदेश भेजते है। मथुरा का दूत दगीराय को धोखा देकर युद्ध से विमुख करवा लेता है। शोकाकुल दगीराय गगा मे जाकर डूबना चाहते है। सुभद्रा, कृष्ण की बहन और अर्जुन की पत्नी है। उसके द्वारा दगीराय को युद्ध मे सहायता करने का वचन मिलता है। अन्त मे दंगीराय तथा युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन सभी श्रीकृष्ण के साथ युद्ध करते है। जब श्रीकृष्ण की तरफ से हनुमान जी त्रिशूल, चक्र और बज्र लिये हुए भीम के आधे बज्र के समान शरीर से युद्ध करते है तो साढे तीन बज्र के इकट्ठा होते ही किन्नरी स्वर्ग को चली जाती है।

स्वर्ग की झलक (सन् १९३९, पृ० ९६), ले० उपेन्द्रनाथ अश्क, प्र० · मोतीलाल बनारसीदास, लाहौर, *पात्र :* पु० ११, स्त्री ७, अक · ४, *दृश्य* : १, १, १, ४।
घटना स्थल · अशोक का घर, रघुनन्दन का घर।

इस सामाजिक नाटक मे उच्च शिक्षा-प्राप्त युवतियो के विवाह करने के सिलसिले मे दो तरह की प्रवृत्तियो का उद्घाटन किया गया है। प्रथम तो यह है कि विवाह या तो अर्थ को दृष्टि मे रखकर होता है या फिर रोमान्टिक स्वरूप ही उसका रहता है। रोमान्टिक धारा मे बाह्य प्रदर्शन और साज-सज्जा ही प्रमुख रहती है जिसके प्रति इस नाटक मे गहरा व्यग्य किया गया है। इस तरह की युवतिया न तो अपने को सँवार पाती हैं और न ही अपने भविष्य मे होने वाले साथी का ही सही चयन कर पाती है। रघुनन्दन के सभी साथियो की पत्नियाँ या तो बी० ए० पास है या एम० ए०, अतएव वह भी एक उच्च शिक्षा-प्राप्त पत्नी की आशा करता है। किन्तु रघुनदन जब अशोक के घर पहुँचता है तो उसकी पढी-लिखी बीवी से साक्षात्कार होता है। इसके अनतर वह राजेन्द्र के घर पहुँचता है जहाँ उसकी पढी-लिखी शिक्षिता लडकियो के प्रति धारणा पर और भी चोट लगती है। रघुनन्दन का अतिम सपर्क पढी-लिखी युवतियो से, 'कसर्ट-पार्टी' मे होता है, जहाँ पर उसके मन मे पढी-लिखी युवतियो के प्रति विचारधारा बदल जाती है। अतत वह कम पढी-लिखी लडकी रक्षा से विवाह करता है। इस नाटक मे मध्यम वर्ग मे फैली हुई शिक्षित युवतियो की माग पर व्यग्य किया गया है तथा साथ ही उनकी आशा करने वाले मध्यम वर्गीय व्यक्ति के दबे व्यक्तित्व का भी पर्दाफाश है। पढी-लिखी बीवी से एक समझदार पति बहस मोल लेने की हिम्मत नही करता है, उससे दूरदर्शिता से काम लेने के लिए चुप ही बना रहता है, जैसा कि राजेन्द्र के चरित्र मे दिखाया गया है। कुल मिलाकर यह नाटक अपने समय के मध्यम वर्ग के परिवारो के जीवन पर आधारित व्यग्य है।

स्वर्गभूमि यात्रा (सन् १९५१, पृ० १५०), ले० : रागेय राघव, प्र० . राजेन्द्र प्रकाशन मन्दिर, आगरा, *पात्र* पु० १९, स्त्री ४, अक ७, *दृश्य* ६, ४, ५, ७, ५, ४।
घटना-स्थल : विदुर का घर, जंगल।

प्रस्तुत पौराणिक नाटक मे महाभारत का युद्ध दिखाया गया है।

नाटक मे कृष्ण का अर्जुन को उपदेश देना तथा विदुर के यहा भोजन करना आदि बडे मार्मिक दृश्य दिखलाये गए है। अन्त मे पाँचो पाडवो का वनवास दिखाया गया है।

स्वर्ग-सुन्दरी [संगीत-रूपक] (सन् १९६३, 'जसमा तथा अन्य संगीत-रूपक' मे सगहीत), लेे० : मनोहर प्रभाकर; प्र० कल्याणमल एंड सस, जयपुर, पात्र पु० २, स्त्री १; *अक-दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल स्वर्ग, पृथ्वी ।

'स्वर्ग-सुन्दरी' उत्कृष्ट प्रेम की कल्पित कथा पर आधारित एक सगीत-रूपक है। अप्सरा स्वर्ग से ऊबकर पृथ्वी पर सुख-दु खमय प्रेम की खोज मे आती है, जहाँ उसकी भेट एक कलाकार से होती है। यह भेंट शीघ्र ही प्रेम मे परिवर्तित हो जाती है। कुछ समय पश्चात् इन्द्र के आमत्रण पर वह स्वर्गलोक मे वापिस चली जाती है। वहा इन्द्र से अपने मानसी रूप की याचना करती है। इन्द्र कुपित होकर उसे शाप दे देता है कि वह चक्षुहीन होकर भू-विचरण करे। उधर उसके विरह मे संतप्त कलाकार भी उसे खोजने निकलता है। एक दिवस उसे ज्ञात होता है कि अनत सुन्दरी अप्सरा शापवश कुरूप हो गई है। कलाकार उसे अपनाकर सिद्ध कर देता है कि हृदय का प्यार रूप का निर्माता होता है।

स्वर्ण देश का उद्धार (सन् १९२१, पृ० ७८), *ले०* इन्द्र वेदालकार, प्र० गुरुकुल यंत्रालय, कागडी, पात्र ·पु० १६, स्त्री १; *अक* ·३, *दृश्य* : ८, ८, ८।
घटना-स्थल स्वर्गलोक, राजदरबार ।

नाट्यकार इस नाटक का उद्देश्य 'एक राजनीतिक समस्या का हल' घोषित करता है। असहयोग आन्दोलन मे धर्म के प्रतीक, निरस्त्र तपस्वी महात्मा गाधी क्रूर शस्त्र-धारियो से युद्ध कर रहे है। धर्मात्मा और क्रूर मे विजयलक्ष्मी किसका साथ देती है, यही समस्या उठाई गई है। इसके प्रत्येक गर्भाक मे अलग-अलग कथा-सूत्र है। एक कथा धर्म-प्राण नामक आन्दोलनकारी की है। वह एक सभा मे देश की दुर्दशा का चित्र खीचते है और इसका दोष भारतवासियो पर लगाते है। इसी समय एक राजपुरुष धर्मप्राण को बन्दी बनाता है। न्यायालय मे उनके ऊपर अभियोग चलता है। कर्मदास नामक महात्मा प्रकट होकर धर्मप्राण को समझाते हैं कि "यदि अत्याचारी को हम शुद्ध भाव से समझावे तो वह मान जाएगा।" न्यायाधीश पर राजपुरुष का दबाव पडता है कि धर्म-प्राण को अवश्य दड दिया जाय। इसी अवधि मे न्यायाधीश का १० वर्षीय पुत्र राजद्रोह मे कारावास मे बन्द किया जाता है। न्यायाधीश भी राजक्रान्ति मे सम्मिलित होता है। आन्दोलनकारियो को कर्मदास का यह सदेश सुनाया जाता है। पुलिस सबको बन्दी बनाती है। देश-प्रेमी एक-एक करके बन्दी बना लिये जाते है।

अनन्त प्रभा नामक एक देवी देश मे क्रान्ति का आह्वान करती है। वह राज्य को उलट देना चाहती है। वह हिंसा पर भी उतर आती है किन्तु महात्मा उसे समझाते है। धर्मप्राण को बन्दीगृह से मुक्त कराने के लिए अनन्त प्रभा के साथ जनता एकत्र होती है। धर्मप्राण मुक्त होते है। राजा अपने दीवान पर रुष्ट होता है। न्यायाधीश राजा को समझाता है कि 'प्रजा जब तक सह सकती है शान्ति से सह लेती है, परन्तु जब कष्ट असह्य हो जाता है तो भूखी बाघिन की तरह उठती है।' ढिढोरा पीटने वाला घोषणा करता है कि १५ फाल्गुन १९७९ को सारे देश के लोगो ने अपनी राय से राज्य की सस्था बना ली है और पाँच साल के लिए धर्मप्राण को अपना राष्ट्रपति चुना है।

स्वर्ण विहान (सन् १९३०, पृ० १०२), *ले०* हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० सस्ता साहित्य मडल, अजमेर, *अक-दृश्य-रहित* ।

इस गीतिनाट्य मे भारतीय चेतना, राष्ट्रीय भावना तथा जागृति को युवक समु-दाय के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इस कार्य के लिए हिंसा के स्थान पर अहिंसा का उपदेश दिया गया है। गाधीजी के सत्य, अहिंसा और प्रेम को प्रतिपादित किया गया है। देश-भक्ति के साथ-साथ नाटक मे श्रृगार का भी वातावरण प्रस्तुत किया गया है। प्रेमी जी ने प्रेम को वैयक्तिक क्षेत्र से ऊपर

उठाकर पीडित जन-समूह की सेवा के लिए प्रवृत्त करना चाहा है। वास्तव मे इस कृति का उद्देश्य प्रेम को व्यक्ति और देश दोनों के मध्य त्रिकोण बनाकर चित्रित करने वाली विधा को अपनाकर गाधीवादी भावना को परिपुष्ट करना है।

स्वाधीनता का संग्राम (सन् १९६९, पृ० १३४), ले० विष्णु प्रभाकर; प्र० · सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर, *पात्र* पु० १६, स्त्री १, अक ६, दृश्य ९, १०, ५, ९, ७, ८।
घटना-स्थल झाँसी का महल, जलियाँवाला बाग, डाडीयात्रा।

यह राजनैतिक नाटक राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत है। प्रथम अक मे सन् १८५७ ई० की क्रान्ति का चित्र है—इसमे मगल पाडे, झासी की रानी लक्ष्मीबाई, राजा, तात्या टोपे, बेगम हजरत महल, शाहजादा फिरोज, तथा राव साहब की वीरता का वर्णन है। यही क्रान्ति राष्ट्रीय एकता और स्वाधीनता का बीज बोती है। इसी नीव पर स्वतत्रता का महल खडा होता है। द्वितीय अक मे सन् १८५७ से १९१८ तक की क्रान्ति का वर्णन है। इस अक मे स्वतत्रता के पुजारी स्वामी विवेकानन्द, लोकमान्य, विपिनचन्द्र पाल और लाला लाजपतराय का विद्रोही स्वर मुखरित होता है। तृतीय अक मे जलियावाला बाग से चौरीचौरा तक का वर्णन है। चतुर्थ अंक मे स्वाधीनता की घोषणा और गाधी जी की डाडीयात्रा का वर्णन है। पंचम अक मे सन् १९४२ के 'भारत छोडो' आन्दोलन का दृश्य है तथा छठे अक मे स्वाधीनता सग्राम का वर्णन है। अन्त मे १५ अगस्त १९४७ को देश स्वतत्र होता है तथा इसके साथ ही देश का विभाजन भी हो जाता है। भारत की विधान सभा स्वय शासन-भार सभाल लेती है।

स्वामिभक्ति (वि० १९८०, पृ० १५४), ले० · रामसिह वर्मा, प्र० · आर० एस० बेरी, २०१ हरिसन रोड, कलकत्ता, *पात्र :* पु० १२, स्त्री ६; अक · ३, दृश्य ८, ७, ७।
घटना-स्थल . गाँव, वेश्यागृह।

प्रस्तुत सामाजिक नाटक मे हीरालाल की पतिव्रता पत्नी सरस्वती की पति-परायणता तथा स्वामिभक्ति, हीरालाल की आदर्श बहन कलावती का धर्मपालन तथा भ्रातृ-स्नेह, हीरालाल के वेश्यागमन का दुष्परिणाम, दुष्ट राजा अभयचन्द और उसके साथियो का अत्याचार, नाटक के नायक रामदास की कर्त्तव्यपरायणता और स्वामिभक्ति को दिखाया गया है।

स्वार्थी संसार (सन् १९३४, पृ० १२७), ले० · शिवरामदास गुप्त, प्र० · उपन्यास बहार आफिस, काशी, *पात्र* पु० १६, स्त्री ३।
घटना-स्थल दयाराम का घर।

इस नाटक मे अतिथि-सत्कार पर बल दिया गया है। दयाराम एक नवयुवक व्यक्ति है जिसका पिता कृपण है और अतिथि-सत्कार मे व्यय के भय से वह कभी किसी अतिथि को अपने यहाँ नही ठहरने देता। दयाराम अपने पिता से अनुनय-विनय करता है कि अतिथियो का सत्कार करना हमारा धर्म है। वह प्रभातकिरण नामक उदार व्यक्ति का उदाहरण देकर कहता है, "पिताजी प्रभातकिरण की भाति अतिथि का स्वागत कीजिए, आगे वढिए।"—किन्तु पिता पुत्र को मूर्ख समझता है और धन-संग्रह को ही जीवन का लक्ष्य मानता है। इस प्रकार परिवार मे अशान्ति है। इसमे दो पीढियो के विचार-वैषम्य के कारण परिवार मे होने वाले सघर्ष का दृश्य उपस्थित किया गया है।

ह

हंस मयूर (सन् १९४८, पृ० १५३) ले० : वृन्दावनलाल वर्मा; प्र० : मयूर प्रकाशन, झासी; पात्र : पु० १०, स्त्री ४, अक : ४; दृश्य : ७, ५, ४, ५ ।
घटना-स्थल : उज्जयनी, राजभवन, युद्ध-क्षेत्र, मार्ग ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे शको का भारत पर आक्रमण तथा शक-विजय का दृश्य दिखाया गया है। शको से पूर्व भारत मे राज्य व्यवस्था सुन्दर थी परन्तु शको ने सामत प्रथा और दास-प्रथा आरम्भ की। उज्जयनी मे १४ वर्ष के शक-शासन से राष्ट्र खंडो मे बँट गया। अन्त मे इन्द्रसेन की कोशिशो से देश से शक निकल सके।

धारा नगरी का राजकुमार कालक जैनी बनकर अपनी बहन तथा भिक्षु के साथ धर्म-प्रचारार्थ भ्रमण करता है। मालव-राज्य मे गर्दभिल्ल नामक राजा है। उज्ज-यनी मे पुरन्दर कापालिक की कालकाचार्य निन्दा करता है अतः उसे बलि करने का आदेश मिलता है परन्तु गर्दभिल्ल द्वारा वह बचा लिया जाता है। गर्दभिल्ल कालका-चार्य की बहन सुनन्दा की सुन्दरता पर आसक्त होता है। राजा, कालकाचार्य और वकुल को बाहर भेज सुनन्दा से विवाह कर लेता है। कालकाचार्य इसे वासना समझ कर प्रतिहिंसा मे शको को आक्रमण के लिए उकसाता है और शको को गुप्त भेद देता है। भूमक शक-नेता की लडकी तन्वी का शिक्षक बनता है। रक्तपात के पश्चात् शक उज्जैन की सीमा मे आते है। भूमक वापिस लौट जाना है पर तन्वी यही रहती है। जनता के विरोध के कारण गर्दभिल्ल सुनन्दा को लेकर जगलो मे भाग जाता है। शकों की विजय होती है। कालकाचार्य अपनी भूल अनुभव करता है और पुन सन्यासी बन जाता है। वकुल और तन्वी गुप्तचर रूप में इन्द्रसेन के राज्य मे हंस-मयूर नृत्य करते हैं जहाँ शकों को भगाने के लिए मन्त्रणा चल रही है। तन्वी और वकुल इन्द्रसेन को मारने की सोचते है पर तन्वी इन्द्रसेन पर आसक्त हो उसे बचा लेती है। युद्ध मे शको की हार होती है। गर्दभिल्ल शेर द्वारा मारा जाता है तथा सुनन्दा वापिस अपने भाई के पास आकर संन्यास ले लेती है। गर्दभिल्ल का अल्पवयस्क पुत्र राज्य करता है पर शक्ति इन्द्रसेन के हाथ मे ही आती है। इसी खुशी मे विक्रम सवत् की स्थापना होती है।

हंसडिभ नाटक (सन् १९४०, पृ० ४४), ले० : विश्वेश्वर दयाल वैद्य, प्र० हरिहर प्रेस, वारालोकपुर, इटावा; पात्र . पु० ९, स्त्री ४, अक-रहित ; दृश्य : ११ ।

हस शालवन देश के राजा ब्रह्मदत्त का पुत्र है। उसे स्वय शक्तिशाली बनने की बहुत आकाक्षा है। एक बार वह जगल मे शिकार खेलने जाता है। साथ मे उसका मत्री जनार्दन भी है। रास्ते मे लोग दुर्वासा ऋषि के आश्रम मे जाते है जहाँ ऋषि ध्यान-मग्न है। दुर्वासा के अभिवादन न करने पर अभिमान मे चूर राजा हस दुर्वासा का आश्रम उजडवा कर स्वयं उन का कमंडल फोड देता है। दुर्वासा उसे कृष्ण के हाथो मारे जाने का शाप भी देते है। हस वापस लौटकर पिता से राजसूय यज्ञ करने का हठ करता है। पिता समझाता है कि महापुरुष कृष्ण ऐसे महाबली राजा के होते हुए दिग्विजय असम्भव है। दिग्विजय के बिना राजसूय यज्ञ असम्भव है। पर हस अपने हठ पर अडिग रहकर कृष्ण के पास उप-स्थित होता है और राजसूय यज्ञ के लिए आवश्यक समस्त कार्य करने का आदेश देता है। इस पर कृष्ण उसे लडने के लिए लल-

कारते है। पुष्कर युद्ध-क्षेत्र होता है। हस को शिव से वरदान प्राप्त है कि द्वन्द्वो मे शिव उसकी सहायता करेगे। अत· युद्धक्षेत्र मे शिवगण आते हैं। कृष्ण से युद्ध होता है। सभी शिवगण हार जाते है। हस भी मारा जाता है। इस प्रकार दुर्वासा का शाप पूरा होता है।

हकीकतराय (सन् १९३६, पृ० २५६), *ले०* : न्यादर सिह 'बेचैन'; *प्र०* : देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली; *पात्र* पु० ११, स्त्री ४, *अक* · ६; *दृश्य* · ५, ३, ३, ४, २, ३।
घटना-स्थल : सेठ का भवन, बन्दीगृह, सूली-स्थल।

इस ऐतिहासिक नाटक मे हकीकतराय का धर्म तथा देश के लिए बलिदान दिखाया गया है। स्यालकोट के प्रसिद्ध व्यापारी सेठ भागमल का पुत्र हकीकतराय अपने धर्म और जाति के लिए मुगल-शासको से लड़ता है। वह मानवता का जयघोष करना चाहता है। शाहजहाँ के सिपाही उसे ऐसा नही करने देते। इसी सघर्ष मे उसकी हत्या कर दी जाती है। हकीकत के बलिदान के उपरान्त शाहजहाँ को अपनी भूल मालूम पडती है। तब वह हकीकतराय की मजार बनवा कर उसे हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य का प्रतीक मानता है और उस पर श्रद्धा के सुमन चढाता है।

हनुमन्नाटक भाषा [रामगीता] (सन् १८९२, पृ० ५२५), ले० हृदयराम ; प्र० . भारत जीवन प्रेस, काशी, *पात्र* पु० २२, स्त्री ६, *अक* : १४ ; *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल · अयोध्या, विश्वामित्र का आश्रम, जनकपुरी, स्वयवर सभा।

विश्वामित्र यज्ञानुष्ठान के विघ्नकारी राक्षसो के नाश अथवा निवारण मे समर्थ राम को अपने साथ लेने के लिए राजा दशरथ से याचना करते है। महाराज दशरथ पुत्र-प्रेम के वश कुछ बहाने बनाते है। परन्तु शीघ्र ही विश्वामित्र के दृढ आग्रह पर राजा अपनी बात रखने मे असमर्थ हो जाते हैं और राम-लक्ष्मण पिता के चरणो मे सिर नवा कर ऋषि के सग चल पडते है। राम-वियोग से राजा नित्यप्रति कृश होते जाते है। रामचन्द्र ताडका तथा सुबाहु जैसे राक्षसो का बध करते हैं। जनक-दूत आगमन, विश्वामित्र सहित राम लक्ष्मण का जनक पुरी-गमन, धनुपयज्ञ मे सम्मिलित होकर समस्त राजाओ के बीच विश्वामित्र की आज्ञा से धनुभंग, लग्न पत्रिका-प्रेषण, विवाह, परशुराम-आगमन और राम से उनका विवाद तथा अन्त मे परशुराम-मद-खण्डन के प्रसग उपस्थित किए गये है। यही 'श्री राम गीते सीता वैवाहिको नाम प्रथमो अंक' समाप्त होता है।

राजा दशरथ राम-राज्याभिषेक का प्रस्ताव करते है। सब इस वृत्तान्त से अत्यन्त प्रसन्न होते है परन्तु कैकेयी राजा के इस प्रस्ताव के विरुद्ध रुष्ट होकर दो वर (राम वनवास, और भरत-राज्याभिषेक) माँग लेती है। यही से अशान्ति और करुण कथा का आरम्भ हो जाता है। बहुत समझाने पर भी लक्ष्मण तथा सीता राम के साथ हो लेते है। इधर राजा दशरथ स्वर्ग को सिधारते हैं।

तृतीय अक मे राजा की मृत्यु के उपरान्त सीता-हरण के पूर्व की कथा काव्य रूप मे वर्णित है। भरत जी ननिहाल से आकर कैकेयी पर क्रुद्ध होते है। राम को मनाने चित्रकूट जाते है, परन्तु रामाज्ञा मानकर लौटना पडता है। उधर राम पचवटी मे रहकर शूर्पणखा को विरूप करते हुए खर-दूषणादि का बध करते है।

बध का समाचार पाकर रावण, पत्नी मन्दोदरी के समझाने के बाद भी राम से बदला लेने के लिए पचवटी आता है। तदुपरान्त मारीच का मायामृग बनना और सीता के आग्रह से राम का मृग पकडने जाना दिखाया गया है।

चतुर्थ अंक मे 'सीता हरण' का प्रसंग उपस्थित किया गया है। पचम अक किष्किधा काण्ड की मूल कथा को लेकर चलता है। सीता-हरण से राम विकल है। मार्ग मे सीता को लेकर जाते हुए रावण से जटायु-विवाद.

सीतान्वेषण मे रत राम की जटायु से भेट तथा उसका मोक्ष, हनुमान से मिलन, सुग्रीव से मित्रता, बालिवध और अंगद का युवराज पद पर स्थापन आदि का वर्णन इस अक मे किया गया है। 'बालिवध' नाम का यह अक यही समाप्त है।

छठे 'हनुमल्लकादहन' अंक मे हनुमान का रामाज्ञा से मुद्रिका-सहित लका गमन, लंका मे राक्षस-बध, जानकी के दर्शन और संदेश का आदान-प्रदान, वाटिका विनाश, तथा अंत मे लंका-दहन के प्रसंग वर्णित है।

सातवे अक मे समुद्र के अभिमान को दलित करके ससैन्य राम के पार उतरने की कथा है। अक का नाम 'सिंधुसेतु बन्धन' रखा गया है।

आठवे अक मे विभीषण के सत्परामर्श की रावण द्वारा उपेक्षा, उसका राम की शरण मे जाना, मन्दोदरी का रावण को समझाना, अंगद-रावण संवाद और अगद परावर्तन का वर्णन है। अंक का नाम है—'रावण-अंगद संवाद'।

नवे अंक मे मत्रियो के सत्परामर्श और मन्दोदरी के अनुनय-विनय का वर्णन है। इनमे से किसी की भी बात रावण नही मानता। यह 'मंत्री उपदेश' नामक अक है।

दशवे अक (रावण प्रपच रचना) मे कवि ने सीता के सतीत्व को स्पष्ट करने के विचार से रावण को माया रूप मे दिखाया है। वह रूप बदल कर राम-लक्ष्मण की मृत्यु का संदेश लेकर सीता के पास जाता है। आकाशवाणी के द्वारा अभिज्ञान से सीता, रावण-स्पर्श से बच जाती है। पुन विजयी रूप मे रावण का, राम का सिर लिये हुए सीता के पास जाना दिखाया गया है। इस बार भी विजयी राम के कपट वेशधारी रावण के स्पर्श से उनकी रक्षा हो जाती है। रावण के पैर ही आगे नही बढते। यहाँ त्रिजटा की सहानुभूति से प्रभावित होकर सीता उसे अपनी सखी बना लेती है।

इसी प्रकार कुंभकर्ण-बध; इन्द्रजीतबध, लक्ष्मण के नवजीवन एव राम राज्याभिषेक के प्रसंग वर्णित है। 'लक्ष्मण-जीवन अंक' मे पुत्र के मरने पर रावण क्रुद्ध होता है। वह ब्रह्मा पर दबाव डाल कर हनुमान जी को लक्ष्मण-रक्षा से हटाता है और तब रावण स्वय शक्ति वेध करता है। शेष सभी वृत्तान्त प्रख्यात कथा के अनुसार ही है। १४वे अक मे मन्दोदरी पति की मृत्यु से दुखित होकर विलाप करती है। राम समझाकर विभीषण से उसका विवाह कर देते है। रावण की अन्त्येष्टि की जाती है। सीता की अग्नि-परीक्षा के बाद से राज्याभिषेक-पर्यन्त का विख्यात कथानक ही अग्रिम वर्ण्य विषय है।

हत्या एक आकार की (सन् १९६८, पृ० ९६), ले० . ललित सहगल; प्र० : समकाल प्रकाशन, दिल्ली; *पात्र :* पु० ४, स्त्री नही; *अक :* *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल . एक बड़ा भूमिगत कमरा।

'हत्या एक आकार की' एक प्रयोगात्मक नाटक है। इसमे गाधीजी की हत्या को एक नए संदर्भ मे बौद्धिक स्तर पर प्रस्तुत किया गया है।

इसमे गांधी जी की हत्या की योजना बनाने वाले चार व्यक्तियो के मन का विश्लेषण किया गया है। इनमे से एक व्यक्ति, शंकित युवक अपने को स्थिर नही रख पाता। वह अपने को इस योजना से हटाना चाहता है और वह हत्या के औचित्य के सम्बन्ध मे प्रश्न करता है परन्तु अन्य तीनो व्यक्ति (पहला व्यक्ति, दूसरा व्यक्ति और अधेड व्यक्ति) उसे योजना से पृथक् नही रहने देते और उसे समझाने के लिए अपराधियो के विरुद्ध एक झूठे मुकदमे का नाटक रचते है। इस मुकदमे मे शकित युवक ही अभियुक्त बनता है। वह इस झूठे नाटक के अनन्तर गाधी जी से इतना मिल जाता है कि वह तीनो के तर्को को निराधार सिद्ध कर देता है। लेकिन अभियुक्त को पहले से ही निश्चित किया हुआ मृत्युदण्ड सुनाया जाता है। इस पर वह शकित युवक कहता है कि तुमने तो एक आकार की हत्या की है अर्थात् उसका केवल शरीर नष्ट किया है उसकी आत्मा और जीवन-दर्शन अब भी जीवित है।

यह नाटक प्रतीकात्मक मच के लिए प्रस्तुत किया गया है। दिल्ली की अभियान संस्था द्वारा राजेन्द्रनाथ के निर्देशन मे सन् १९६७ मे सफलतापूर्वक खेला जा चुका है। रामपुर मे हस्ताक्षर सस्था द्वारा सन् १९७० मे भी खेला गया है।

हनुमान नाटक (सन् १९६४, पृ० ११९), ले० · ठाकुर प्रसाद शास्त्री ; प्र० : देश सेवा प्रेस, इलाहाबाद ; *पात्र* · पु० २१, स्त्री ६, *अक* · ३ ; *दृश्य* · ७, ११, ३।
घटना-स्थल . सरयू तट, लका और समुद्र द्वार, किष्किन्धा, सूर्यलोक, सुमेरु पर्वत।

इस पौराणिक नाटक मे राम-कथा का आधार लेते हुए हनुमान के चरित्र पर बल दिया गया है।

हम एक हैं (सन् १९६३, पृ० ६८), ले० : कणाद ऋषि भटनागर, प्र० : आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली; *पात्र* : पु० ८; स्त्री, ५ *अंक* . ३; *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल . घर, पुलिस स्टेशन।

प्रस्तुत राजनीतिक नाटक चीनी आक्रमण की पृष्ठभूमि पर लिखा हुआ है। राष्ट्रीय सुरक्षा और एकता के उद्देश्य से नाटक की रचना की गई है।

गंगा के चार पुत्रो मे से राजेन्द्रनाथ स्थल-सेना मेजर है, शेष व्यापारी, कवि और क्लर्क है। इनके घर नीलम नाम की एक जासूस लडकी आती है जो तीनो भाइयो को झूठे प्रेम-प्रदर्शन के बल पर बेवकूफ बनाती है। एक भाई जितेन्द्र डिफेंस मे क्लर्क है। उससे नीलम सेना की गुप्त बातो का रहस्य जानना चाहती है। जितेन्द्र उसके बहकावे मे आकर सैनिक-रहस्य बता भी देता है। अन्त मे नीलम की वास्तविकता ज्ञात हो जाती है। गंगा स्वय अपने पुत्र और नीलम को पुलिस मे दे देती है।

अभिनय—यह नाटक दिल्ली नाट्य सघ के तत्त्वावधान मे १९६४-६५ मे नाट्य-समारोह के अवसर पर खेला जा चुका है।

हमारा काश्मीर (सन् १९६६, पृ० ४२), ले० : मदन मोहन शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, चावडी बाजार, दिल्ली, *पात्र* : पु० १९, स्त्री नही; अक-रहित, दृश्य ३।
घटना-स्थल · कश्मीर।

इस राजनीतिक नाटक मे कश्मीर पर पाकिस्तानियो के १९६५ ई० के हमले और भारतीयो द्वारा उसके करारे जवाब का चित्रण हुआ है। पाक सैनिक घुसपैठिओ को लेकर कश्मीर मे आता है और एक बूढे कश्मीरी मुसलमान को अपनी मदद के लिए फुसलाता है। बूढा, पाक और उसके सिपाहियो को भारत पर हमला न करने के लिए समझाता है। इसी समय फातमा अपने बापू को खोजती हुई वहाँ आ पहुचती है। फातमा को पाक-सैनिक पकड कर ले जाना चाहते हैं, लेकिन बूढा विरोध करता है। बूढे को घुसपैठिये गोली मार देते हैं और फातमा को पकडते हैं किन्तु उसी समय भारतीय सैनिक नेहरू ज्योति लिये वहाँ आ पहुँचते हैं। फातमा की रक्षा होती है और पाक-सैनिक भाग जाते है। चाऊ अयूब को भारत पर हमला करने के लिए भड़काता है और उसे सहायता का आश्वासन देता है। अयूब पहले कुछ आनाकानी करता है लेकिन भुट्टो चाऊ का समर्थन करके जनरल मूसा को भारत पर हमला करने का हुक्म दिलाता है। पाकिस्तान का एक वर्ग युद्ध का विरोध करता है पर भुट्टो अड जाता है।

शास्त्री जी, नन्दा और चौहान विवश होकर देश-रक्षा हित चौधरी और अर्जुनसिंह को पाकिस्तान का मुँहतोड जवाब देने के लिए आज्ञा देते है। भारतीय सैनिक कश्मीर और लाहौर मे मोर्चे सँभालते हैं। दीपसिंह के नेतृत्व मे भारतीय फौज कश्मीर मे दुश्मनो पर हमला करती है। फातमा सैनिको की सेवा-शुश्रूषा के लिए मोर्चे पर जाती है। दीपसिंह दुश्मनो की गोली से घायल होकर छटपटा रहा है कि फातमा उसके पास जा पहुचती है और उसे पानी पिलाती है। वही पर रफीक प्यास से तड़प रहा है और दीपसिंह फातमा को उसे भी

पानी पिलाने को कहता है। फातमा अपने बाप के हत्यारे पाक-सैनिको को पानी पिलाने को तैयार नही होती। दीपसिंह फातमा को भारतीय संस्कृति का उपदेश देता है कि शरण मे आये दुश्मन की भी सहायता करनी चाहिए। फातमा रफीक को पानी पिलाती है लेकिन किदवई फातमा को गोली मारता है। युद्ध-भूमि मे दीपसिंह और फातमा मरते-मरते भी एक-दूसरे को भारत भूमि की रक्त-स्नात पवित्र मिट्टी से टीका करते है।

हम कभी झुकें नहीं (सन् १९६५, पृ० ८०)। ले० . नरेन्द्र कुमार शास्त्री, प्र० : राजेन्द्र कुमार एण्ड ब्रदर्स, बलिया, पात्र . पु० २५, स्त्री ६, अंक ४, दृश्य : ४, ४, ३, ३।
घटना-स्थल . पचनद, पाटलिपुत्र, चित्तौड।

यह नाटक ऐतिहासिक घटनाओ के द्वारा यह सिद्ध करता है कि भारतीय शत्रु के सम्मुख कभी नही झुके। इसमे काल की उपेक्षा करके सभी शत्रुओ को एक साथ समेटा गया है। नाटककार इतिहास के कई उदाहरण सामने रखता है किन्तु प्रमुख रूप से राजा पुरु, सम्राट चन्द्रगुप्त, महाराणा प्रताप को आगे लाता है। इस नाटक मे ऐतिहासिक पात्र ज्यो के त्यो है किन्तु ऐतिहासिक घटनाएं कल्पना से परिवर्तित कर दी गई है।

हमारे भाग मे काटे (सन् १९३०, पृ० ४०,) ले० : रामचन्द्र गुप्त, प्र० : ठाकुर प्रसाद एण्ड संस, वाराणसी ; पात्र . पु० ४, स्त्री २, अंक-रहित, दृश्य १५।
घटना-स्थल . गाव की झोपडी, विवाह-मडप।

यह सामाजिक भोजपुरी नाटक है। इसमे गरीबी की छाया मे खडे मिट्टी के वे घर मन्दिर बन जाते है जिनमे कैलाश और चन्दर पलते है तथा उनकी बहने कमली तथा विमली निवास करती है। कैलाश चन्दर की बहन कमली से प्यार करता है तथा चन्दर कैलाश की बहन विमली से प्रेम करता है। लेकिन खलनायक लागू सिंह इनके प्रेम से ईर्ष्या करता है तथा विवाह-मडप मे बजती हुई शहनाई बन्द हो जाती है। चुनरी कफन मे बदल जाती है तथा सजी हुई डोली अर्थी मे परिवर्तित होती है। विवाह की खुशी मातम मे बदल जाती है।

हमारा स्वाधीनता-संग्राम (सन् १९५०, पृ० १३४), ले० विष्णु प्रभाकर, प्र० : हिन्दी प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद, *पात्र :* पु० १५, स्त्री नही; *अंक :* ६, *दृश्य :* ९, ९, ५, ९, ७, ८।
घटना-स्थल · जलियावाला बाग, डाडी-यात्रा, नोआखाली।

इस रेडियो रूपक मे स्वाधीनता-संग्राम का इतिहास चित्रित है। अंग्रेजो के अत्याचार से पीडित भारतवासी अंग्रेजो के खिलाफ सन् १८५७ मे सशस्त्र विद्रोह करते हैं। सेना देशी नरेशो और बादशाहो के नेतृत्व में, भारत से अंग्रेजो के पैर उखाड़ती है लेकिन फूट, हथियारो की कमी और कमजोर सैनिक-संगठन के कारण प्रथम स्वाधीनता-संग्राम असफल रहता है। अंग्रेज दमन-चक्र चलाकर बडी निर्दयता, क्रूरता से जनता पर अत्याचार करते है लेकिन आजादी की आग बुझती नही। यह आग जलियाँवाला बाग के हत्याकाड के रूप मे फिर भडकती है। डायर अमृतसर की एक सभा मे निर्दोष स्त्री, बच्चो, बूढो को अंधाधुध गोलिया चलाकर भूनता है। सारे देश मे आजादी की नई लहर फैलती है। 'स्वाधीनता हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है'—इस के मत्रदाता तिलक की मृत्यु के बाद गाधी जी स्वाधीनता-संग्राम का नेतृत्व सँभालते है। वह असहयोग, सत्याग्रह, स्वदेशी आदि के द्वारा अंग्रेजो के खिलाफ अहिंसक आन्दोलन छेडते है। देश मे नई जागृति पैदा होती है। २६ जनवरी, १९३० को रावी के तट पर जवाहरलाल नेहरू पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा करते है। आजादी की लडाई अपने पूरे रूप मे शुरू मे होती है। भारत के क्रान्तिकारी नवयुवक आजादी पाने के लिए सशस्त्र संघर्ष करते है। आजादी के दीवाने सते हुए फासी के फंदों पर झूलते है। सन्-'४२ मे गांधी जी 'भारत

छोडो' की घोषणा करते है। सारे भारतवर्ष मे आग फैलती है। अंग्रेज समझ जाते है कि अब हम भारत को गुलाम बनाकर नही रख सकते। फलत: १५ अगस्त, '४७ को भारत आजाद होता है। भारत मां के दो टुकडे होने से देश मे भयकर साम्प्रदायिक दगे फैलते हैं। जब सारा भारत आजादी की खुशिया मनाता है, गांधी जी नगे पाव नोआखाली के गॉवो मे घूम-घूमकर पीड़ित मानवता के आसू पोछते हैं।

हमारी बस्ती हमारे लोग (सन् १९६६, पृ० ६४), ले० : सतीश डे, प्र० : देहाती पुस्तक भडार, दिल्ली; पात्र : पु० ६, स्त्री २, अक ३; दृश्य १, १, १।
घटना-स्थल : ग्रामीण मकान, मद्यशाला।

इस सामाजिक नाटक में मद्य-पान के हानिकारक प्रभाव दिखाकर मद्य-निषेध को अनिवार्य सिद्ध किया गया है। वदलू धोबी की दो पुत्रियां फुलवा और गोविन्दी हैं। फुलवा का पति सरजू घर-जमाई है। वदलू उसे मद्य से दूर रखने मे सफल होता है। सरजू के एक पुत्र वसन्ता भी है और तीनो प्राणी परिश्रम से सुखपूर्वक अपना धन्धा करते हैं। उसका एक सम्बन्धी लालू स्कूटर-चालक शराबी है और वह फुलवा पर बुरी दृष्टि रखता है। किन्तु फुलवा अपने सतीत्व की गरिमा और पटु व्यवहार से लालू को ठीक रखती है। सरजू भी मद्य का विरोधी है। किन्तु उसका साढू और गोविन्दी का पति चौरंगीलाल मद्य मे चूर रहकर समस्त घर बर्बाद कर देते हैं। वह गोविन्दी के साथ सरजू के घर शरण लेता है। सरजू, चौरंगीलाल की उपस्थिति को घर के लिए हानिकारक समझता है। वदलू अपने मद्यप दामाद को रख लेता है किन्तु उसे मद्य के लिए पैसे नही देता है। फुलवा उसे चोरी से पैसे देती है। एक दिन चौरंगी की दशा बिगड जाती है। डॉक्टर भी जवाब दे देता है। वदलू गोविन्दी के लिए चिन्तित है। इसी समय सरजू और वसन्ता मद्य पीने का नाटक करते हैं।

हम्मीर हठ (सन् १८९०), ले० : प्रतापनारायण मिश्र, प्र० खडग विलास प्रेस, पटना, पात्र : पु० २८, स्त्री ३, अंक ६, दृश्य : १, २, १, २, १, १।
घटना-स्थल अलाउद्दीन का दरबार, रणथंभौर।

राधाकृष्ण ग्रंथावली के अनुसार इस नाटक का आधार-स्वरूप प्रथम परिच्छेद भारतेन्दु ने उपन्यास के रूप मे लिखा था। उनकी मृत्यु के उपरान्त इसे पूरा करने का भार श्रीनिवासदास ने लिया था, किन्तु वे पूरा न कर सके। तब फिर उसे प्रतापनारायण मिश्र ने नाटक के रूप मे प्रस्तुत किया। यह नाटक मिश्र जी की मृत्यु के उपरान्त प्रकाश मे आया। दोहा, सवैया, लावनी, गजल आदि का प्रयोग किया गया है। नाटक का आरभ नादी पाठ से होता है और अन्त भरत वाक्य से। कथा का आरभ अलाउद्दीन की मरहठी वेगम के प्रति की गई मीर मुहम्मद की गुस्ताखी से होता है। इसका रहस्य खुल जाने से अलाउद्दीन उसे बंदी बनाने का आदेश देता है किन्तु बेगम के सचेत कर देने पर मीर मुहम्मद शरण के लिए अनेक राजाओं के पास जाता है। अलाउद्दीन के भय से कोई भी उसे शरण नही देता। अन्त मे वह रणथभौर के राजा हम्मीर के पास पहुचता है। राजा अपने प्रधानमंत्री की आशकाओ को दृष्टि मे रखता हुआ मीर मुहम्मद को शरण दे देता है। अलाउद्दीन इसका आभास मिलने पर राजा से अपने अपराधी को वापिस माँगता है। राजा ऐसा न कर शरणागत की रक्षा करना अपना धर्म समझता है। फलत दोनो ओर से घोर संघर्ष होता है। इस युद्ध के दौरान मीर मुहम्मद अलाउद्दीन द्वारा लडता हुआ पकड लिया जाता है और हाथी के पैरो तले कुचलवा दिया जाता है। भयकर युद्ध चलता रहता है। अन्तत मुसलमानो के पैर उखड जाते है। राजपूत सैनिक युद्ध-सामग्री लूटते है। इसी बीच वायुवेग के कारण राजा की रणध्वजा गिर जाती है जिसको किले की रानिया देखकर यह समझती है कि राजा वीरगति को प्राप्त हो गए हैं। अतएव

रानियां अपने सतीत्व की रक्षा करने के लिए जौहर करती है। राजा जब युद्ध जीतकर दुर्ग के महलो को लौटता है तब तक सभी स्त्रिया जल चुकी होती है। इस घटना से राजा के मन मे वैराग्य उत्पन्न होता है। वे राज्य को कुमार के हाथ सौपकर तपस्या के हेतु गमन करते है। तप मे राजा ज्योतिर्लिंग के दर्शन करते हुए शरीर-त्याग करते है। स्वर्ग मे देवताओ द्वारा राजा की प्रशंसा भी इस नाटक मे प्रस्तुत की गई है। प्रारम्भिक पाँच अको मे ऐतिहासिक घटनाएँ है किन्तु छठे अक मे नारद, शिव आदि पौराणिक पात्र आ जाते है।

अभिनय—दिसबर १८८७ के 'ब्राह्मण' पत्र के अनुसार इसका अभिनय इसी वर्ष कई स्थानो पर हुआ।

हम्मीर हठ (सन् १९३१, पृ० १४१), *ले० :* दुर्गाप्रसाद गुप्त; *प्र० :* उपन्यास बहार आफिस काशी, *पात्र :* पु० ४, स्त्री ३; *अक :* ३; *दृश्य :* ७, ६, ५।
घटना-स्थल : दिल्ली का महल, चित्तौड, युद्ध-क्षेत्र।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। इसमे चित्तौड गढ के राजा हम्मीर की बहादुरी का वर्णन है। दिल्ली का सम्राट् अलाउद्दीन अपने हरम मे प्रत्येक प्रदेश की रानियाँ रखता था। उसमे एक मरहठा वंश की मरहठी थी जो अपनी इज्जत बचाकर वहाँ से भाग निकलती है और चित्तौड मे हम्मीर के यहाँ शरण लेती है। इसी स्त्री की रक्षा और हिन्दू जाति को बचाने के लिए हम्मीर अलाउद्दीन को नाको चने चबवाकर उसे इन्सानियत की सीख देता है और अन्त मे अबलाओ की रक्षा कर अपने चरित्र का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करता है।

हर-गौरी-विवाह नाटक (वि० १६६० के आसपास), *ले० :* जगज्ज्योतिर्मल, *प्र० :* मिथिला रिसर्च सोसायटी, लहरिया सराय, दरभंगा; *पात्र :* पु० ६, स्त्री ३; *अंक के स्थान पर* ९ सम्बन्ध है।
घटना-स्थल : नगर एव ऋषि आश्रम।

इस पौराणिक नाटक मे शिव-पार्वती के वैवाहिक प्रसग की प्रचलित कथा ग्रहण की गई है। विवाह-पूर्व सती का प्राण त्याग, पार्वती तपस्या, मदन-दहन, ब्रह्मचारी द्वारा पार्वती की परीक्षा आदि विषयो की चर्चा नही हुई है। प्रथम सम्बन्ध मे नाटक की प्रस्तावना है, जिसमे सूत्रधार और नटी आकर जगज्ज्योतिर्मल्ल का कीर्तिगान, नगर-वर्णन, नाट्याभिनय आदि बातो की चर्चा करते है। द्वितीय सम्बन्ध मे महादेव सती के शरीर-त्याग और उसके कारण वियोग-व्याकुलता प्रकट कर, हिमालय के घर मे गौरी रूप मे अवतरित सती को देखने का प्रस्ताव रखते है। नन्दी एवं भृंगी इसका अनुमोदन करते है। तीसरे सम्बन्ध मे तीनों मिलकर हिमालय के समीप जाकर ऋष्याश्रम मे विश्राम करते है। इसी बीच ऋषीश्वर अपने शिष्य बासु के साथ आश्रम में प्रवेश करते है जिससे उनकी दृष्टि महादेव पर पड़ती है। चौथे सम्बन्ध में हिमालय, मैना और गौरी आदि का प्रवेश एव वार्तालाप है। पाँचवे सम्बन्ध मे ऋषीश्वर महादेव पुन: दर्शन की इच्छा से नन्दी एव भृंगी से जिज्ञासा प्रकट करते है और ऋषीश्वर के द्वारा हिमालय से अपने लिए कन्या की याचना करते है। छठे सम्बन्ध मे हिमालय मैना और गौरी पर्वत-शिखर पर उपस्थित होते है तथा प्राकृतिक सौन्दर्य पर मुग्ध हो जाते है। हिमालय ऋषीश्वर की याचना को स्वीकार कर लेते है और शादी की तैयारी होने लगती है। सातवे सम्बन्ध मे महादेव चिन्तित दृष्टिगोचर होते है, किन्तु ऋषि को प्रसन्न देखकर प्रसन्न हो जाते है। आठवे सम्बन्ध मे विवाह-मडप मे हिमालय सपरिवार दृष्टिगोचर होते है। वैदिक रीति के अनुसार महादेव और पार्वती की शादी होती है तथा वे दोनों कौतुकागार मे प्रवेश करते है। अन्तिम सम्बन्ध मे महादेव और गौरी की लीला वर्णित है। सभी वाग्मती के तट पर उपस्थित होते है एवं महादेव वाग्मती की उत्पत्ति का माहात्म्य वर्णन करते है। नाटक

की समाप्ति शिव-पार्वती के नृत्य से होती है। इसमे ३८ गीत हैं।

राजाज्ञा से अभिनीत।

हरतालिका नाटिका (सन् १८८७, पृ० ४०), ले० : खग बहादुर मल्ल; प्र० : खड्ग विलास प्रेस, बाकीपुर; पात्र : पु० ६, स्त्री ४।
घटना-स्थल : राजभवन, जंगल।

इस पौराणिक नाटक में शिवपुराण-प्रशसित हरतालिका व्रत की कथा कुलवधुओं के उपयुक्त बनाई गई है।

पार्वती के विवाह के लिए चिंतित राजा हिमवान मंत्री से अपनी चिन्ता प्रकट करते हुए उन्हे कन्या के कठिन तप की सूचना देते हैं और यह संभावना व्यक्त करते है—"कुछ आश्चर्य नही जो योग्य वर मिलने के अर्थ यह किया हो।" वार्तालाप के बीच नारदजी आकर राजा से कृष्ण का सदेश बताते हुए कहते है—"अपनी कन्या के लिए एकमात्र वर वही है, यही उनकी इच्छा है।" हिमवान यह स्वीकार कर लेते हैं। पिता के इस निश्चय की सूचना पाकर पार्वती दु:खी होती है क्योकि उन्होने अपने मन मे संकल्प कर लिया है कि 'श्री त्रिशूलधारी को अपना पति मानूंगी।' वे अपनी चिन्ता-व्यथा सखी पर प्रकट कर उससे कही भाग चलने का प्रस्ताव करती है। निश्चय के अनुसार एक अंधेरी रात मे सखी के साथ घोर वन मे चल देती हैं। उधर सवेरा होने पर जब मैना को पार्वती की अनुपस्थिति का बोध होता है तो वह व्याकुल होकर राजा से रहस्य कहती है। अत राजा मंत्री के साथ पार्वती की खोज मे निकलते हैं। इधर बड़े ही कष्ट से कँटीली झाडियो और पथरीली राहो पर चलती हुई वे उपवास के कारण शिथिल हो जाती हैं तथा घोर वन मे पहुँचती है। पुन. दिनात तक भूखी-प्यासी रहने के बाद सखी की सहायता से शिव की पूजा करती हैं। उनकी भक्ति से शिवजी प्रसन्न होकर प्रकट होते हैं और अपने को विष्णु से अभिन्न बताते हुए कहते हैं—"तुम सदा मेरे हृदय मे निवास करोगी। तुमने आज भादो शुक्ला तीज को हस्तनक्षत्र मे व्रत, पूजन और जागरण करके मुझे पाया है। अतएव ससार मे जो स्त्री यह व्रत करेगी जन्मजन्मातर सौभाग्यवती और पुत्रवती रहेगी।" शिव के अतर्धान होने पर हिमवान मंत्री के साथ पार्वती को ढूंढते हुए आते है और उसे ध्यानावस्थित देखकर प्रसन्न होते हैं। लज्जित पार्वती को उसके मनोनुकूल वर से विवाहित करने की प्रतिज्ञा कर साथ ले घर लौट आते हैं।

हर हर महादेव (सन् १९२०, पृ० ११०), ले० : गोविन्द शास्त्री दुगवेकर; प्र० : नारायण लक्ष्मण सोला पुरकर, बाल बोध कार्यालय, बनारस; पात्र : पु० ११, स्त्री ५; अंक : ३; दृश्य : ६, ७, ६।
घटना-स्थल : जयपुर, बूंदी।

इस ऐतिहासिक नाटक मे सत्रहवी-अठारहवी शताब्दी के स्वातत्र्य आन्दोलन का चित्रण है। उस काल मे किस प्रकार एकता, समता, स्वतन्त्रता आदि के भाव जागृत हुए, उसका परिचय है। नाटक के पात्र राजपूत व मराठा हैं। इन्ही दोनो जातियो के बीच बन्धु-भाव का चित्रण नाटक मे किया गया है। इस नाटक की कथा लेखकानुसार 'टाड' साहब के 'टाड राजस्थान' से ली गई है। इसमे दिखाया गया है कि सत्रहवी-अठारहवी शताब्दी मे स्वतन्त्रता का नारा 'हरहर-महादेव' माना गया और इसी के द्वारा वीर योद्धा जातियाँ राजपूत और मराठे, देश स्वातन्त्र्य युद्ध मे कूद पडे।

हरिश्चन्द्र (सन् १८८०, पृ० १०८), ले० : विनायक प्रसाद 'तालिब' बनारसी, प्र० : जामेजमशेद प्रेस, बम्बई, नवीन सस्करण बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, काशी, सन् १९२९; पात्र : पु० १०, स्त्री १; अक-रहित।
घटना-स्थल : आश्रम, राजभवन, नगर, श्मशान।

इस पौराणिक नाटक मे महाराज हरिश्चन्द्र की सत्यनिष्ठा दिखाई गई है।

विश्वामित्र और वशिष्ठ मे सबसे अधिक सत्यनिष्ठ व्यक्ति के विषय मे विवाद उठता है। वशिष्ठ मुनि हरिश्चन्द्र को सबसे बडा सत्यवादी मानते है पर विश्वामित्र इसका विरोध करते हैं। नारदजी विश्वामित्र को हरिश्चन्द्र की परीक्षा लेने भेजते है। विश्वामित्र हरिश्चन्द्र से एक सहस्र मुहरे यज्ञ के लिए मागते है। राजा वचन-बद्ध हो जाते है। विश्वामित्र दूसरी बार परीक्षा के लिए राजा के दरबार मे एक अप्सरा भेजते है जो राजा से विवाह का प्रस्ताव रखती है। अप्सरा विश्वामित्र को बुला लाती है। राजा अपना राजपाट प्रदान करता है। विश्वामित्र अपनी मुहरो का तकाजा करते है, और इसके लिए अपने चेले नक्षत्र को राजा के पीछे लगा देते है। राजा अपनी स्त्री शैव्या और बच्चे रोहित को ६ सौ मोहरो मे उग्रसेन (काल देवता) को बेच देता है और स्वय चार सौ मुहरो मे कालसेन (धर्म-देवता) के यहाँ बिक जाता है। राजकुमार को सर्प डस लेता है। शैव्या उसका शवदाह करने श्मशान पर जाती है जहाँ चाडाल-सेवक हरिश्चन्द्र उससे कफन माँगता है। विवश होकर रानी अपनी स्वामिनी से कफन लाती है।

नक्षत्र विश्वामित्र को मुहरे लाकर दे देता है और उनसे अपना पुरस्कार माँगता है। राजा इस शर्त पर पुरस्कार देने को तैयार होता है कि वह पुन. हरिश्चन्द्र की परीक्षा लेगा। हरिश्चन्द्र पुन: विश्वामित्र और नक्षत्र की परीक्षा मे सफल होते है। विश्वामित्र उन्हे राजपाट लौटाकर रोहित को जीवित कर देते हे।

इस नाटक मे हास्य-विनोद के लिए मंगल मित्र और नक्षत्र का समावेश किया गया है।

अभिनय—विक्टोरिया नाटक मडली द्वारा सारे देश मे शताधिक बार अभिनीत।

सर्वप्रथम यह नाटक विक्टोरिया नाटक मंडली के लिए लिखा गया था। यह इतना जनप्रिय हुआ कि सन् १९१० तक इसकी ३२ सहस्र प्रतियाँ बिक चुकी थी। सम्भवत: गांधी जी भी यही नाटक बचपन मे देखकर सत्य की ओर आकृष्ट हुए थे।

हरिश्चन्द्र नाटक (सन् १९११, पृ० ९२), ले०: विश्वम्भर सहाय 'व्याकुल'; प्र० : हिन्दू संगति समाज, प्रह्लाद वाटिका, मेरठ; *पात्र :* पु० ७, स्त्री ३; *अक :* ३; *दृश्य* ७। *घटना-स्थल* . महल, काशी, श्मशान घाट, ब्राह्मणी का घर।

यह भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक की प्रसिद्ध कथा पर आधारित है जिसमे आवश्यकतानुसार अन्य लेखको के इसी नाम के नाटको की सामग्री लेकर परिवर्तन कर लिया गया है तथा अपनी ओर से भी कुछ जोड़ दिया गया है।

संगीत की प्रधानता नाटक की विशेषता है।

हरिओम् तत्सत् (सन् १९३६, पृ० २२), ले० : राइट हैण्ड; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, बनारस; *पात्र :* पु० ४, स्त्री १; *अक-रहित; दृश्य :* ३।

यह एक प्रहसन है।

सस्कृत पण्डितो की यह शैली है कि वह किसी कार्य के बिगडने पर हरिओम् तत्सत् कहा करते है। इस प्रहसन मे उसी हरिओम् तत्सत् की बार-बार पुनरावृत्ति कर हास्य उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है।

हर्ष (वि० १९९२, पृ० १८२), ले० : गोविन्ददास; प्र० : महाकोशल साहित्य मन्दिर, जबलपुर; *पात्र :* पु० १९, स्त्री ४, *अक* . ४; *दृश्य :* ६, ४, ६, ४। *घटना-स्थल :* स्थाणीश्वर, कान्यकुब्ज, प्रयाग।

इस ऐतिहासिक नाटक मे सम्राट् हर्षवर्द्धन कालीन भारत की राजनीति का परिचय मिलता है।

स्थाणीश्वर के सम्राट् राज्यवर्द्धन की हत्या के उपरान्त हर्ष बौद्ध धर्म के प्रभाव के कारण राज्यसत्ता स्वीकार नही करता।

हर्ष का मित्र माधवगुप्त राजकुमार को समझाता है कि 'षड्यन्त्र से महाराजाधिराज का वध करने वाले हत्यारे चक्रवर्ती सम्राट् होने की आकाक्षा कर रहे है और राजपुत्री राज्यश्री भी वन्धन मे पडी है। यदि आततायियो को दड न मिला तो ससार का कार्य नियमित रूप से किस प्रकार चल सकेगा।" मित्रो और महामन्त्रियो के आग्रह पर अधिकार स्वीकार करते हुए शिलादित्य कहते है—"मैं अपने को राज्य का संरक्षक मात्र मानना चाहता हूँ और राज्य को अपने पास प्रजा की धरोहर।" इस राजधर्म के अनासक्त भाव से पालन के लिए हर्ष आजीवन अविवाहित रहने का व्रत लेते है। उनका कथन है कि विवाह से "पुत्र-पौत्रादि यदि अयोग्य हो तो भी राज्यसत्ता उन्ही के अधिकार मे रहे, इस लोभ की उत्पत्ति होती है।"

हर्ष प्रजातन्त्र-प्रणाली के समर्थक है किन्तु देश की परिस्थितियो से बाध्य होकर जनकल्याण के लिए महाराज-पद स्वीकार करते है। वह विधवा वहिन राज्यश्री को साम्राज्ञी बनाकर स्थाणीश्वर को कान्यकुब्ज का माडलीक राज्य बनाते हैं। वह सम्पूर्ण भारत को एक साम्राज्य के अन्तर्गत लाने को प्रयत्नशील है। वह कहते है—"यदि मैं सारे देश मे एक साम्राज्य की स्थापना के उद्देश्य को स्पष्ट कर स्वेच्छापूर्वक तुम्हारा माडलीक हो गया तो अन्य राज्यो के लिए एक उदाहरण हो जायगा। और मैं अन्य राज्यो को समझा-बुझाकर बिना रक्तपात के ही साम्राज्य के अन्तर्गत लाने का प्रयत्न करूँगा।"

हर्ष, चीनी यात्री ह्वानचाग से चीन और भारत-मैत्री का आग्रह करता है। वह जम्बूद्वीप मे शान्ति के लिए प्रयत्न करते हुए कहता है—"चीन, पारस और भारत मे यदि परस्पर मैत्री हो गई, तो जम्बूद्वीप के अन्यान्य छोटे-छोटे देशो मे तो यह कार्य बहुत शीघ्र हो जाएगा—इस जीवन मे मैं अब युद्ध नही करूँगा।" चौथे अक के अन्त मे हर्ष प्रयाग मे यज्ञशाला स्थापित करके समस्त कोष और अपने कुडल, हार, केयूर, वलय और मुद्रिकाएँ दान कर देता है। साथ ही अपने बहुमूल्य वस्त्रो का दान करके राज्यश्री से एक वस्त्र की भिक्षा मागता है। उसी समय माधवगुप्त का विद्रोही पुत्र आदित्यसेन बन्दी रूप मे उपस्थित होता है। माधवगुप्त वर्द्धनो के विरुद्ध षड्यन्त्र के अपराध मे अपने पुत्र आदित्यसेन को मृत्युदड दिलाना चाहता है पर माता शैलबाला पुत्र को क्षमा कराना चाहती है। हर्ष आदित्यसेन को मुक्त करते हुए कहता है—"तुम्हे आशीर्वाद देता हूँ कि तुम इस आर्यावर्त्त के परम प्रतापी, सच्चे लोकसेवी सम्राट् होगे।"

जन समुदाय एक स्वर से राजर्षि हर्षवर्द्धन की जय-जयकार करता है।

हर्षवर्द्धन (सन् १९४९, पृ० ११६), ले० वैकुठनाथ दुग्गल, प्र० यगमैन एण्ड कम्पनी पुस्तक प्रकाशन, दिल्ली; *पात्र :* पु० १७, स्त्री ६; *अक* ३, *दृश्य* ६, ७, ८। *घटना-स्थल* थानेश्वर का राजोद्यान, वदीगृह, बौद्ध विहार का आँगन, शशाक का विलास भवन, मन्त्रणागार, कानन पथ, आश्रम का बाहरी भाग, शिविर, शिवमंदिर के वगल वट वृक्ष, राज्य-मंत्रणालय, रंगशाला।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। महाराज राज्यवर्द्धन की अकाल मृत्यु के कारण उनके अनुज हर्षवर्द्धन को अल्पायु मे ही राज्य-भार सँभालना पडता है। हर्ष अपने भाई की मृत्यु का वदला लेने की प्रतिज्ञा करते है। मालवेन्द्र देवगुप्त, कन्नौज-पति ग्रहवर्मा पर चढाई कर देता है। ग्रहवर्मा वीरगति को प्राप्त होते है और राज्यश्री वन्दिनी हो जाती है। यह दुःखद समाचार सुनकर हर्षवर्द्धन बहुत दुःखी होते हैं और अपनी वहिन की मुक्ति की युक्ति सोचते हैं। राज्यश्री किसी तरह बन्दी-गृह से भाग जाती है और विन्ध्याटवी के बीहड़ जगलों की खाक छानती है। भटकते-भटकते एक भील के यहाँ उसे शरण मिलती है। हर्ष मंत्री द्वारा राज्यश्री का समाचार पाकर

ठीक उस समय उसके पास पहुँचते हैं जिस समय वह चिता पर चढना चाहती है। महाराज हर्ष उसे भाई की मृत्यु की खबर सुनाते है। यह दु खद समाचार सुनकर राज्यश्री राज्यवर्धन के दुश्मनो से बदला लेने का दृढ सकल्प करती है और सती होने का विचार छोड देती है। कन्नौज आकर राज्यश्री एवं मत्रीगण हर्षवर्धन के राज्याभिषेक का प्रबध करते है। राज्याभिषेक के दिन शशाक का गुप्तचर शीलभद्र हर्ष की हत्या मे सफल नही होता। हर्षवर्धन उसके इस दुष्कृत्य को क्षमा कर देते है और प्रजा की सेवा करते हुए जीवनयापन करते है।

हल्दीघाटी का शेर (सन् १९३१, पृ० ५२), *ले०*. विपिन बिहारी नन्दन; *प्र०:* गंगा पुस्तक मदिर, पटना, *पात्र :* पु० १३, स्त्री २; *अक :* ३; *दृश्य :* ४, ४, ३।
घटना-स्थल : चित्तौड, हल्दीघाटी, जंगल।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। इतिहास-प्रसिद्ध महाराणा प्रताप की राजनीतिक घटनाओ पर इसका कथानक आधारित है। महाराणा प्रताप किस प्रकार चित्तौड़ की रक्षा के लिए कठिन परिस्थितियो का सामना करते है और अकबर की महती शक्ति से लोहा लेते है उसका विवरण है। देश-भक्ति से परिपूर्ण महाराणा प्रताप की वीरता अनुकरणीय बन पडी है। महाराणा के जीतेजी अकबर चित्तौड की भूमि पर अधिकार न कर सका। इस नाटक मे प्रताप की कन्या इरावती की राष्ट्रीयता और भामाशाह की उदारता का परिचय मिलता है।

हश्र महशर (सन् १९२४), *ले०:* मुहम्मद इब्राहीम 'महशर' अबालवी, *प्र०:* जे० एस० सत सिंह एण्ड सस, लाहौर, *पात्र :* पु० ७, स्त्री ४, *अंक-रहित*।
घटना-स्थल : जमील का घर।

जमील का पिता मृत्यु-काल निकट देख अपने भाई महशर को बेटे का संरक्षक और अपनी जायदाद का निगराँ (देखभाल करने वाला) नियत करता है। महशर के मन मे भाई की बडी सम्पत्ति देखकर लालच आता है और वह जमील की हत्या करके उसकी सम्पत्ति हडपना चाहता है। महशर की पत्नी सुलताना और उसका सेवक गरगट महशर को इस जघन्य कार्य से रोकते है किन्तु वह अपने निश्चय पर दृढ़ रहता है। फलतः सुलताना और गरगट घर छोडकर भाग जाते है और महशर जमील की हत्या कर देता है। सुल्ताना का प्रेमी खादर अपनी स्त्री हमीदा को विषाक्त अंगूठी पहना देता है और उसे जीवित ही मृतक समझकर दफना देता है। वह सुल्ताना को अपनी गृहस्वामिनी बनाता है। इधर हमीदा चैतन्य होने पर मजीदा के नाम से सुल्ताना के यहाँ नौकरी करती है।

जमील की हत्या करने पर महशर विक्षिप्त हो जाता है और उसे फाँसी का दंड भी मिलता है। खादर इस घटना से स्वयं विकल होकर हमीदा को स्मरण करता है किन्तु नौकरानी मजीदा उसे आश्वस्त करती है। सुल्ताना को मजीदा की वास्तविक स्थिति ज्ञात हो जाती है कि यह मजीदा ही हमीदा है। खादर अपनी पत्नी से क्षमायाचना करता है और अपने पुत्र अरसलान को बुलाकर शिक्षित करता है।

हाजीपीर का दर्रा (सन् १९६७, पृ० ९६), *ले०* : राजकुमार; *प्र० :* हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी; *पात्र :* पु० १४, स्त्री नही, *अक :* ३; *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल : कश्मीर, हाजीपीर का दर्रा।

पाकिस्तानी युद्ध की एक झाँकी दिखाने वाला यह राजनीतिक नाटक है। हाजीपीर दर्रे को अपना समझकर पाकिस्तानी सैनिक कश्मीर पर कब्जा करने की साजिश करते है। अकबर इस दर्रे को हाजीपीर की मजार बताता है जिसके सामने वह इसान की भलाई के लिए दुआ माँगता है। अब यही दर्रा बेनकाब शैतान के जुल्मोसितम का गवाह है जिस पर पाकिस्तानी ठोकर मारते हैं, थूकते है तथा इसकी दीवारो को गिराने की कोशिश करते है।

वे कश्मीरियों के साथ दुर्व्यवहार करते है। इस हाजीपीर दर्रे पर पाकिस्तानी झडे को लहराता देख दुखी अकबर, बहादुर सैनिक बोधासिह, रामसिह तथा मुजाहिद जालिम नूरखा आदि की मदद से उसके स्थान पर भारत का राष्ट्रीय झंडा फहराता है। भारतीय सैनिकों की वीरता से पाकिस्तानी जासूसो एवं मौलवी वगैरह देश-द्रोहियो को तौबा करना पडना है।

हातिम विनताई उर्फ अफसरे सखावत (सन् १८८८ के आसपास,), ले० : मुहम्मद महमूद मियाँ 'रौनक'; प्र० : विक्टोरिया कम्पनी, बम्बई; पात्र : पु० ५, स्त्री २; *अक दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल : हुस्नबानो का घर, मार्ग।

इस नाटक मे 'हातिम विनताई' के उदार और परोपकारी जीवन की कुछ घटनाओ का संकलन किया गया है। इसमे मुनीरशाह का सौन्दर्य की देवी हुस्नबानो से विवाह करवाया गया है। हुस्नबानो शादी के अभ्यर्थियों के सामने सात प्रश्न रखती है जिनका समुचित उत्तर देने वाला ही उसका पति हो सकता है। अनेक प्रेमी परीक्षा मे असफल रहते हैं। मुनीरशाह भी उसके सौन्दर्य पर मुग्ध होकर भाग्य आजमाने हुस्नबानो के यहाँ पहुँचता है। वह चार प्रश्नो का उत्तर देकर तीन प्रश्न साथ लेकर वापस आता है। हुस्नबानो भी मुनीरशाह के प्रति कुछ आकृष्ट होती है, किन्तु प्रतिज्ञानुसार शादी तो वह तभी कर सकती थी, जब उसके सभी प्रश्नो के ठीक उत्तर मिले। दायी मुनीर के प्रति उसकी आसक्ति देख प्रश्नोत्तर का हठ त्यागने की सलाह देती है किन्तु हुस्नबानो अटल रहती है। अन्त मे मुनीर हातिम की शरण लेता है। हातिम उसे साथ ले शेष उत्तर प्राप्त करने के लिए निकल पड़ता है।

संयोग से मार्ग मे एक फकीर से हातिम को सभी प्रश्नो का समाधान मिल जाता है। हातिम की सहायता से मुनीरशाह प्रश्नो का उत्तर देकर हुस्नबानो के साथ शादी करता है। नाटककार सहायक पात्रो के माध्यम से हुस्नबानो और मुनीरशाह के प्रणय को खूब तपाता है। कथा मे इन प्रसंगो के कारण हास्य-व्यंग्य-विनोद भी उभरकर आता है। नाटक के अन्त मे हातिम और जरीनपोश विवाह की बधाई देते है।

अनेक वार अभिनीत।

हादुली राव (सन् १९५२, पृ० ५०), ले० सत्यव्रत अवस्थी, प्र० शिक्षा सदन, प्रयाग, *पात्र* : पु० ११, स्त्री २०, *अक* ४; *दृश्य* : ३, ३, ३, ३।
घटना-स्थल : पृथ्वीराज का दरबार, जयचन्द का दरबार, मुहम्मद गौरी का दरबार।

यह ऐतिहासिक नाटक पृथ्वीराज, जयचन्द और सयुक्ता के आधार पर देशद्रोह का परिणाम दिखाता है।

हादुली राव पृथ्वीराज का बड़ा सरदार है। किसी कारण से वह अप्रसन्न होकर कन्नौज चला जाता है। वहाँ से परामर्श करके मुहम्मद गौरी के पास जाता है। पृथ्वीराज को मुहम्मद गौरी पराजित करता है और हादुली राव के अनुरोध से दिल्ली लूटी जाती है। हादुली राव के देशद्रोह से दु.खी होकर उसकी पत्नी सविता पति की हत्या करती है। जब हादुली राव की चिता जलने लगती है तो वह भी उसमे कूदकर प्राण दे देती है।

हिन्दी नाटिका (वि० १९७३, पृ० ३८), ले० चन्द्रकुमार मिश्र, प्र० : लेखक द्वारा महर्षि प्रेस, भागलपुर, *पात्र* पु० ११, स्त्री ७; *अक* २, *दृश्य* : (पट) १, ५।
घटना-स्थल : जंगल, नगर, ग्राम, गंगातट।

इस नाटिका मे हिन्दी की दुर्दशा तथा उसका सुधार-मार्ग दर्शाया गया है।

प्रथम अक मे हिन्दी माता बिखरे केश, धूलि-धूसरित हो जंगल मे रोदन करती है। उसको इस बात का क्लेश है कि मेरे ही लड़के मेरा निरादर कर दूसरी स्त्री—मेरी सौत का आदर कर रहे हैं। हिन्दी माता का

रोदन सुनकर दो सन्यासी, गुणानन्द और महानन्द, उसके उद्धार के लिए प्रतिज्ञा करते है और अपने शिष्यो को इस कार्य के लिए कटिबद्ध होने की प्रेरणा देते है। द्वितीय अक मे बैरिस्टर चतुरानन्द अपनी पत्नी करुणा से अग्रेजी मे बोलते है। करुणा हिन्दी की पुस्तक पढ रही है। चतुरानन्द हिन्दी का पुस्तक देखकर क्रुद्ध होते है और उसके हाथ से पुस्तक छीनकर फेक देते है। वह आज्ञा देते है—"Don't read such गडा book, English book पढो।" पर करुणा के अनुरोध से वह मान जाते है कि अग्रेजी के द्वारा पति-पत्नी मे प्रेम स्थापित नही हो सकता। स्त्रियो के अतिरिक्त संन्यासियो की प्रेरणा से जनता को हिन्दी भापा के पठन-पाठन की आवश्यकता का अनुभव होने लगता है। संन्यासीगण स्थान-स्थान पर बालिका-विद्यालय की स्थापना करते है, और हिन्दी का प्रचार होने लगता है। पत्नी करुणा और भगिनी दया के प्रयास से चतुरानन्द हिन्दी का ज्ञान प्राप्त करके उसके प्रचार मे लग जाते है। वह गुणानन्द, महानन्द आदि संन्यासियो के साथ प्रचार कार्य मे जुट जाते है। सन्यासाश्रम मे बगाली, मौलवी, महाराष्ट्री, मद्रासी, पजावी आदि एकत्र होकर एक बगाली के प्रस्ताव से यह निर्णय करते है कि "एक सर्व साधारण की सभा की जावे और सभी के जुटने पर स्वामीजी का एक राष्ट्रलिपि तथा एक भाषा की उपयोगिता पर व्याख्यान कराया जावे जिसके लिए एक विज्ञापन छपाकर अनेक भाषाओ मे बॉट दिया जावे।" एक पंजाबी सज्जन रोमन लिपि के पक्ष मे है किन्तु चतुरानन्द इसका विरोध करके नागरी लिपि मे विज्ञापन छपवाते है। एक विशाल सभा मे स्वामी गुणानन्द का भाषण होता है। वह देशवासियो को समझाते है कि "देश के नाते और जातीयता के नाते अपने प्रातीय पक्षपात का स्वार्थ त्याग दे तो सारी बाधाएँ मिट जावेगी।" महाराष्ट्री, मद्रासी, बंगाली, पंजाबी सभी हिन्दी माता की स्तुति करते है और राजा जी स्वामी जी को धन्यवाद देते है।

हिन्दी माता स्वामी जी को आशीर्वाद देते हुए कहती है—"जो चाहो कल्याण को, मत्र ये जपो महान। सत्र मिलि बोलो साथ ह्वै, हिन्दू-हिन्दी-हिन्दुस्तान"।

हिन्द (वि० १९७९, पृ० ११२), ले० : जमनादास मेहरा; प्र० : एस० आर० बेरी एण्ड कम्पनी, कलकत्ता; *पात्र* : पु० २६, स्त्री ४; *अंक* : ३; *दृश्य* : ७, ६, ६। *घटना-स्थल* : हिमालय, जंगल का मार्ग।

यह नाटक हिन्द की परतन्त्रता और स्त्राधीनता की तुलना पर आधारित है। हिन्द सदियो से परतन्त्रता के जाल मे जकड़ा हुआ है। दूसरी ओर स्वतन्त्रता देश को सुखी और सम्पन्न बनाये हुए है। इसके साथ देश की धर्म-प्रथा तथा नवीनता को भी दर्शाया गया है।

हिंसा या अहिंसा (सन् १९७०, पृ० १२९), *ले०* : सेठ गोविन्ददास ; *प्र०* : चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी, *पात्र* : पु० ४, स्त्री २; *अक* : ४; *दृश्य-रहित*। *घटना-स्थल* : मकान के बाहर बगीचा, कम्पाउंड, कमरा।

इस सामाजिक समस्याप्रधान नाटक में मिल-मालिको और मजदूरो का संघर्ष दिखाया गया है। इसमे नाटककार ने यह चित्रित किया है कि वर्गयुद्ध से पूँजीवाद और श्रमवाद दोनो का नाश हो जाएगा। उत्तेजना-रहित हो सहयोगपूर्ण सद्भाव से पूँजीपतियो और श्रमिको की समस्या सुलझ सकती है।

इसमे छ. पात्र है, और उनमें सभी का महत्त्व है। वे अपने वर्गो का प्रतिनिधित्व करते है। वयोवृद्ध माधवदास पुराने ढंग का मिल-मालिक है। मजदूरो के प्रति बड़ा दयालु है और पारस्परिक सद्भाव से शान्तिपूर्वक अपना काम चला रहा है। उसका उत्तराधिकारी दुर्गादास नयी शिक्षा प्राप्त आधुनिक पूँजीपति व्यापारी है। मजदूरो को वह नगण्य समझता है और उन्हे

कुचल देने मे ही अपनी शान मानता है। उसके दुर्व्यवहार से मिल मे हडताल हो जाती है। मजदूर दल का वृद्ध सेनापति हेमराज तथा मजदूर दल का तरुण मंत्री त्रिलोचन पाल मजदूरो के नेता है। हेमराज पुराने ढंग का मजदूर है और पूंजीपतियो को मालिक समझता है। त्रिलोचन नये विचारो का मजदूर-नेता है, पूंजीपतियो से घोर विरोध रखने तथा उन्हे शोषक समझने वाला है। सौदामिनी माधवदास की पत्नी और दुर्गादास की सौतेली माँ है। अलकनन्दा सौदामिनी की छोटी बहिन है जिसका विवाह सौदामिनी दुर्गादास से करना चाहती है। सौदामिनी को कोई पुत्र नही हुआ था और वह चाहती है कि उत्तराधिकार उसकी बहिन के पुत्र को जाये। अलकनन्दा नितान्त विश्व-प्रेमी है। सौदामिनी ने सौतेली माँ होते हुए भी दुर्गादास का लालन-पालन किया है।

हिन्दू कन्या (वि० १९८९, पृ० १२३), ले० : जमुनादास मेहरा; प्र० : हिन्दी पुस्तक एजेसी हरिसन, रोड, कलकत्ता; पात्र· पु० १४, स्त्री ९; अक : ३; दृश्य : ९, ७, ३। घटना-स्थल : एक सुन्दर बाग, रंगमहल, दरिया का किनारा, भूतनाथ का घर।

प्रस्तुत नाटक एक क्रातिकारी सामाजिक नाटक है जिसमे प्रभा और राधा दो प्रमुख स्त्रियाँ है। प्रभा राधा की माँ है राधा की शादी हो चुकी है परन्तु टोडरमल उसे चाहता है। रेवा टोडरमल की दासी है जो राधा को उसके पास लाने का वादा करती है। राधा का परिवार बहुत गरीब है अत रेवा कहती है कि "विपत्ति मे मनुष्य को पैसे की तरफ झुकना पडता है और तुम धनवान् हो।" परन्तु वह विपत्ति के समय भी नही झुकती जब कि उसके पास खाने का भी साधन नही है और कहती है—"समाज कहाँ है···किस कुएँ मे है···कौन से पाताल मे है यदि समाज है तो मैं कहूँगी···

जिसका बना समाज है उसको है ना लाज।
आंखो से हुआ अन्धा जो अपना समाज॥"

हिन्दू कोड बिल (सन् १९५२, पृ० ६०), ले० : न्यादरसिंह बेचैन; प्र० : देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; पात्र : पु० ७, स्त्री ४; अक : ३, दृश्य : ६, ५, ५।
घटना-स्थल : उमाशंकर का घर, क्लब, कोर्ट।

इस नाटक मे हिन्दू कोडबिल के दुष्परिणामो का चित्रण किया गया है। भारतीय सभ्यता-सस्कृति का विरोधी डॉ० उमाशकर हिन्दू कोडबिल का फायदा उठाकर तीन औरतो को तलाक दे देता है। लक्ष्मी उसकी चौथी स्त्री है। वह भारतीय नारी, लज्जा, सेवा, धर्मपरायणता आदि गुणो से सम्पन्न, साक्षात् देवी की मूर्ति है। वह पति को परमेश्वर मानकर उमाशंकर की सेवा मे तत्पर रहती है और उसे हर तरह से प्रसन्न रखना चाहती है। उमाशंकर लक्ष्मी के धर्म, व्रत, कथा, पूजा आदि से घृणा करता है और उससे भी पिंड छुडाना चाहता है। लक्ष्मी जन्माष्टमी के दिन उपवास रखकर कथा-पूजा कर रही थी तभी उमाशकर आकर उससे जबरदस्ती चाबी छीन लेता है और अलमारी से रुपये निकालकर दयाशंकर के साथ क्लब मे खूब गुलछर्रे उड़ाता है। फैशनपरस्त औरत चादनी भी घर से गायब रहती है और विलासियो के साथ ऐश-आराम करती है। वह बुखार-पीड़ित बेटे की भी परवाह नही करती है, किन्तु माँ की ममता का भूखा बच्चा तेज बुखार मे ही खाट से उठकर चांदनी को पकड़ लेता है। वह बच्चे को धक्का दे देती है। वह रोते-तडपते बच्चे को छोडकर महिला-सभा मे जाती है और वहा स्त्रियो को पतियो के खिलाफ तलाक देने के लिए भडकाती है। सुशीला चादनी को मुंहतोड़ जवाब देती हुई भारतीय नारी के त्याग, तपस्या एव उदात्त चरित्र की प्रशसा करती है।

वकील जयनारायण हिन्दू कोडबिल का

फायदा उठाकर पति-पत्नियो को एक-दूसरे के खिलाफ खूब भड़काते है और तलाक दिलवाने के बहाने खूब रकम ऐंठते हैं । चादनी अपने पति को और उमाशकर अपनी स्त्री को तलाक देकर कोर्ट मे ही दोनो शादी कर लेते है । श्याम पश्चिमी सभ्यता का समर्थक है और वह डॉक्टर की पहली स्त्री का भाई है । श्याम क्लब मे चादनी को खूब शराब पिलाकर उसके साथ डास करता है । इसी समय उमाशकर क्लब मे आता है और चादनी को परपुरुष के साथ नाचने के लिए मना करता है, किन्तु चादनी उसे दुत्कार कर भगा देती है । चादनी अब होटल मे रहकर नई शादी के लिए अखबार मे विज्ञापन प्रकाशित करती है । अन्त मे वह एक पजाबी से शादी कर लेती है । डॉ० उमाशंकर को लोग व्यभिचारी समझकर दुत्कारते है । जन्माष्टमी के दिन लक्ष्मी अपनी लडकी के साथ और ताराचन्द अपने बेटे के साथ मन्दिर मे भजन-कीर्तन कर रहे है । इसी समय चार दिन का भूखा डॉक्टर मन्दिर मे आकर भगवान् से अपने पापो के लिए क्षमा मांगता है । लेकिन पुजारी इस पापात्मा को धक्के देकर मदिर से बाहर निकालने लगता है तो उसी समय लक्ष्मी का ध्यान टूट जाता है और वह दौडकर डॉक्टर को उठाने लगती है। उमाशकर लक्ष्मी से क्षमा मागता है लेकिन लक्ष्मी के हृदय मे तो पति के लिए पहले जैसा ही सम्मान और प्रेम है । इसी समय वृद्धा चांदनी भी भूखी, ठोकरे खाती मदिर मे आती है और ताराचन्द से क्षमा मागती है । पुजारी भगवान् से जीवो पर दया करने की प्रार्थना करता है । भगवान् कृष्ण प्रकट होकर सबको हिन्दू कोडबिल की सच्ची भावना को अपनाने का उपदेश देते है ।

हिन्दू ललना (सन् १९२६, पृ० ९९), ले० : दास और आरजू, प्र० · शिवरामदास गुप्त, उपन्यास बहार आफिस, काशी बनारस, पात्र पु० १०, स्त्री १०; *अंक* : ३, *दृश्य* : ७, ७, ७ ।

इस शिक्षाप्रद पौराणिक नाटक मे हिन्दू-ललना के कर्त्तव्यो पर प्रकाश डाला गया है । पार्वती जी एक स्थल पर सखियो को उपदेश देते हुए कहती हैं —"सखी ! काम क्रोध को जीतने वाला तीनों लोक को जीत सकता है । अपने स्वामी, अपने प्रभु के मन पर अधिकार रखने वाली स्त्री, समस्त संसार की रानी होती है; पर स्वामी से बिछुडी हुई रमणी, अथाह धन की मालिक होने पर भी एक निर्धन और मार्ग की भिखारिन से भी बदतर है ।···सती को अपने स्वामी के ध्यान मे मग्न रहना चाहिए । उसको प्रसन्न करने के लिए यदि देह का भी त्याग करना पडे तो भी मन-वचन-कर्म से न हटना चाहिए ।"

नागलोक की रानी पद्मा पर चन्द्रधर आसक्त है । अन्त मे उसकी प्रेमिका अलका ही रह गयी है । विपुला के चले जाने पर अलका चन्द्रधर से कहती है, "आज विपुला को गये पूरे ६ मास हो गये ।" अपने पुत्र को जीवित लेकर आने की आशा अलका विपुला से करती है ।

हिन्दू विधवा (सन् १९५३, पृ० १२८), ले० · विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक, प्र० : राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, *पात्र* पु० ८, स्त्री १०, *अक* ३; *दृश्य* : ८, ६, ४ ।

घटना-स्थल मकान, बोर्डिंग हाउस का कमरा, दीवानखाना, धर्मशाला, जगल ।

इस सामाजिक नाटक मे विधवा की दुर्दशा तथा उसका समाधान दिखाया गया है । प्रथम अक मे विधवा कमला कृष्ण की आरती करते हुए भगवान् से निर्मल जीवन की भीख मागती है । उसी स्थान पर उसकी पुत्री सरस्वती और भावी दामाद मणिधर आ जाते है । सरस्वती और मणिधर मे प्रेमालाप होता है और दोनो एक-दूसरे के सदा साथ रहने का सकल्प लेते हैं । दूसरे सीन मे एक धनाढ्य व्यक्ति ब्रजनाथ की बाल विधवा पुत्री ब्रह्मावती अपने दुर्भाग्य पर आँसू बहा रही है उसी समय उसकी विमाता दुर्गावती उसे आकर कोसती है कि

'आज मेरे बच्चे की सालगिरह का दिन है और तुझे रोने की पडी है।" दुर्गावती ब्रह्मावती की घोर भर्त्सना करके चली जाती है। उसी समय गिरीश नामक एक व्यभिचारी व्यक्ति वहां आ जाता है और ब्रह्मावती को आश्वासन देते हुए प्रेम-प्रदर्शन करता है। तीसरे दृश्य मे दौलतराम की स्त्री कोकिला के घर पर उसकी सखियां मालती,, मैना रामभोली, भीमा, आशा आदि सभा करके भारतीय नारी की दुर्दशा पर दुःख प्रकट करती है। कोकिला पुरुषो से स्त्रियो को स्वतन्त्रता दिलाने के पक्ष मे है पर मालती उसका विरोध करती है। स्त्री-स्वातत्र्य का आन्दोलन चलता है। विधवा कमला अब निर्मलाबाई नामक वेश्या बन जाती है। उसके घर पर कुछ बाबू लोग बैठे हैं। इसी समय उसकी पुत्री सरस्वती आ जाती है। इस समय कमला अपने जीवन का रहस्य खोलते हुए कहती है—"मै एक दरिद्र हिन्दू की लडकी हूँ। पाँच वर्ष की उम्र मे मेरा विवाह हुआ। ६ मास के उपरान्त पति स्वर्गलोक सिधार गये। समाज ने मुझे पुर्नविवाह की आज्ञा नही दी। मैं दरबदर ठोकरे खाती फिरी। मेरे गाँव के जमीदार के लड़के ने मुझे कलकत्ते मे रखा। गाना-बजाना, पढना-लिखना सिखाया। जब यह लडकी सरस्वती पैदा हुई तो निराधार छोड़ कर चला गया। मैं इसका विवाह मणिधर गार्ड से करके जीवन समाप्त करना चाहती थी। मैंने इससे सब कुछ छिपाने के लिए ही इसे बोर्डिंग हाउस मे रखा था। अब आप लोगो से प्रार्थना है कि मेरी इस जीवन-कहानी को समाचार-पत्रो मे प्रकाशित कराइएगा और समाज के नेत्र खोलिएगा।"

तीसरी विधवा डॉ० विश्वनाथ की विधवा पुत्री कल्याणी है। जब उसकी सखियां पतियो का उपहास करती है तो वह पति-महिमा का बखान करती है और किसी तरह से व्यभिचारियो से अपने सतीत्व की रक्षा करती है।

ब्रह्मावती भी धर्मशाला मे व्यभिचारियो का अत्याचार सहती है पर किसी प्रकार अपना सतीत्व बचा लेती है।

हिन्दू विवाह आदर्श या शिवकुमार विवाह नाटक (सन् १६२२, पृ० ७८), ले० : लक्ष्मीनारायण वाजपेयी; प्र० : सत्यसुधाकर, छापाखाना, पटना, *पात्र* : पु० ११, स्त्री ३; *अक* . ४; *दृश्य* . १, ३, ७, ७। *घटना-स्थल*-रहित।

इस सामाजिक नाटक मे लेखक ने अनमेल विवाह की कुरीतियो का खण्डन, योग्य विवाह का निर्णय, ब्रह्मचर्यादिक आश्रम की महिमा आदि अनेक उत्तम एव शिक्षाप्रद विषयो का चित्र खीचा है।

हिन्दू स्त्री नाटक (सन् १६२४, पृ० ६०), ले० . अनवर हुसैन 'आरजू'; प्र० · उपन्यास बहार आफिस, काशी-बनारस, *पात्र* · पु० ५, स्त्री ११; *अक* . ३, *दृश्य* : ६, ५, ४। *घटना-स्थल* : अफ्रीका का रेगिस्तान।

इस सामाजिक नाटक मे हिन्दू स्त्रियो की सच्ची पति-भक्ति दिखाई गई है। एक हिन्दू स्त्री के लिए उसका पति ही सब कुछ है। पति उसे त्याग देता है तो भी हिन्दू स्त्री उसी की आस मे जीवन बिता देती है। मनोरमा नामक एक हिन्दू स्त्री का पति जसवन्त यमुना नामक वेश्या के वशीभूत होकर अपनी पत्नी को त्याग देता है परन्तु उसकी पत्नी मनोरमा अपने पातिव्रत-धर्म पर अविचल रहकर तमाम कष्टो को सहती है और अन्त मे उसका पति वेश्या द्वारा सारा धन ऐंठ लिये जाने पर ठुकरा दिया जाता है। वह मारा-मारा फिरता है। मनोरमा अपने पति को उसके सारे अपराधो को क्षमा कर अपना लेती है। धनहीन होकर भी वह अपने पति के साथ सतोषपूर्वक जीवन व्यतीत करती है।

हिमालय का संदेश (सन् १६५४, 'नील कुसुम' मे संगृहीत, पृ० १५), ले० राम-धारी सिंह दिनकर, प्र० उदयाचल, पटना; *पात्र* . कुछ स्वर, *अंक* : *दृश्य*-रहित।

'हिमालय का संदेश' एक लघु सगीत

रूपक है, जिसमे कवि ने युद्ध से संत्रस्त विश्व को धर्म और श्रद्धा का संदेश दिया है। वैज्ञानिक उपलब्धियां मानव को मानवता से दूर ले जा रही है। वह स्वयं को ईश्वर मान बैठा है। विश्व की इस विषम स्थिति मे कवि भारत के प्रति आशान्वित है। इसीलिए तप, त्याग तथा समरसता के प्रतीक भारत को विश्व-शान्ति का दूत बतलाया गया है।

इसका मूल संदेश है—

'शान्ति चाहते हो तो पहले सुमति शून्य से माँगो। नवयुग के प्राणियो ! ऊर्ध्वमुख जागो, जागो, जागो।"

हिमालय ने पुकारा (सन् १९६७, पृ० ८८), ले०: सतीश डे; प्र०: देहाती पुस्तक भंडार, चावडी बाजार, दिल्ली; पात्र: पु० ६, स्त्री २, अक: ३, दृश्य-रहित। घटना-स्थल: हिमालय, भारतभूमि।

इस नाटक मे भारत पर चीनी आक्रमण के समय एक देशद्रोही पिता और एक देशभक्त पुत्र की वार्ता प्रस्तुत है। सेठ कालीचरण गोहाटी का एक वडा व्यापारी है। वह अपने नौकरो को हुक्म देकर पैट्रोल, चीनी, रुई आदि आवश्यक चीजों को तहखाने मे छुपा देता है। देशवासी चीनियो को करारा जवाब देने की तैयारी करते है लेकिन कालीचरण चीनी आक्रमण को वरदान समझ नाजायज तरीके से धन बटोरने मे लग जाता है। भारती अपने मित्रो को पार्टी देने के लिए अपने पिता से सौ रुपये लेकर लाचा को देता है। लेकिन अशोक देश पर आई विपत्ति को देखकर भारती का पार्टी देना उचित नही समझता और वह लाचा से सौ रुपए छीन लेता है। भारती अपने ऐश-आराम मे रुकावट डालने की शिकायत पिता से करता है। कालीचरण अशोक को फटकारता है। अशोक घर के देशद्रोहपूर्ण वातावरण से दुःखी होकर जाने लगता है, लेकिन मनोरमा उसे रोक लेती है। दौलतराम कालीचरण को विपुल धन का लोभ देकर उसके गुप्त ट्रांसमीटर में एक यंत्र लगा देता है, जिससे उसका सम्बन्ध चीनी गुप्तचर शन-ची, सी-फो से हो जाता है। दौलत उसी समय चीनी गुप्तचर से बात करता है। चीनी उन्हे भारतीय सेना के गुप्त रहस्यो की खबर देने का हुक्म देता है। दौलत उसी रात को एक बड़े चीनी सेना अधिकारी से मिलने के लिए स्थान व समय निश्चित करता है। कालीचरण देशद्रोह का यह काम करने से डर जाता है और वह दौलतराम से इस काम को छोड देने के लिए कहता है। दौलत उसकी कमजोरी, डर-भय दूर कराने को लालपरी के पायलो की झंकार मे खो जाने के लिए ले जाता है। दौलत और कालीचरण के जाने के बाद रात मे ट्रांसमीटर पर चीनी गुप्तचर का संदेश आता है जिसे सुनकर लाचा बड़बड़ाने लगता है। लाचा का शोर सुन अशोक वहां जाकर मूर्ति के नीचे से गुप्त ट्रांसमीटर निकालकर संदेश सुनता है। चीनी खतरे के कारण भेंट की योजना रद्द कर देता है लेकिन अशोक उसे रात के एक बजे अपने घर पर भेंट के लिए बुलाता है। उसी रात को भारती अपने साथी जिमिका को भेंट के लिए बुलाता है। दोनो चीनी जासूस वहां जाते हैं। वे दौलत तथा कालीचरण को वहां न पाकर हैरान होते हैं। वे भारती को बहकाकर ले जाने लगते हैं। इसी समय अशोक वहा बन्दूक लेकर आ जाता है। वह चीनियो को मारने ही वाला था कि भारती पीछे से बन्दूक हिला देता है जिससे गोली ऊपर को चली जाती है। चीनी भाग जाते हैं। भारती अशोक से लिपटकर रोने लगता है। अशोक भारती से पिता की सारी काली करतूते कहता है। भारती गुस्से मे ट्रांसमीटर तोड़ देता है।

अशोक देश-रक्षा के लिए सेना मे भर्ती हो जाता है और अफसर बनकर दुश्मनो को मौत के घाट उतारने लगता है। कालीचरण अपने देशद्रोह के कामो पर बहुत पश्चात्ताप करता है।

हिरोल (सन् १९४७, पृ० ४७), ले०: शिवप्रसाद; प्र०: दीपक प्रेस, बिजनौर; पात्र: पु० २६, स्त्री २; अंक: ३; दृश्य: ४, ५, २।

घटना-स्थल : उंटला, दुर्ग-प्रकोष्ठ, आगरा, मुगल दरबार, देवा क्षेत्र, रण-प्रांगण ।

यह ऐतिहासिक नाटक है। महाराणा अमरसिंह, महाराणा प्रताप के पुत्र, बड़े विलासी और भीरु प्रकृति के व्यक्ति हैं। जहाँगीर के सैनिको के चढाई करने पर वह सन्धि का प्रस्ताव रखते हैं, परन्तु सामन्तो को यह स्वीकार नही होता । वे जीते-जी चित्तौड मुगलो को नही देना चाहते । युद्ध से अनिच्छा प्रकट करने पर अमरसिंह को चन्द्रावत सरदार बलपूर्वक युद्ध-क्षेत्र मे ले जाता है और युद्ध मे विजयी होता है। अमरसिंह का चाचा, सागरसिंह, मुगलो से मिलकर चित्तौड़ का शासक बन बैठा था। अमरसिंह इस युद्ध को जीत जाने के बाद पुन संघर्ष के लिए जहाँगीर को उकसाता है। जहाँगीर आवुल्लाखा के नेतृत्व मे भारी सेना भेजता है, परन्तु पुनः विजय अमरसिंह की ही होती है। इस आत्मग्लानि से दुखी सागरसिंह चित्तौड़ का गढ़ अमरसिंह को सौप जगल मे चला जाता है और जहांगीर के यहाँ वंदी होकर उपस्थित होता है। वह अपनी तलवार से आत्महत्या कर लेता है। शलावत सरदार तथा चन्द्रावत सरदार में इस बात के लिए कहा-सुनी होती है कि हिरोल पर किसका अधिकार है। अन्त मे निर्णायक दुर्ग डँटल पर अधिकार कर चन्द्रावत सरदार हिरोल पद प्राप्त करते हैं।

हिरौल अर्थात् राजपूती शान की एक झलक (सन् १९५०, पृ० ११९), ले० : गोकुल चन्द्र शास्त्री; प्र० . ओरिएण्टल बुक डिपो, नई सडक, दिल्ली, पात्र · पु० १४, स्त्री २; अक ३; दृश्य : ८, ६, ११ :
घटना-स्थल . उदयपुर में राजदरबार का कमरा, मैदान ।

'हिरौल' नाटक मे दो वीर राजपूतो का वर्णन है जिन्होने अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करने के लिए स्वयं को वलिदान कर दिया। इसमे उनकी वीरता का ज्वलन्त उदाहरण है। जिस समय बादशाह जहांगीर राणा अमरसिंह के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करते हैं उस समय अमरसिंह के सामने यह समस्या उत्पन्न होती है कि राजपूत सेना का 'हिरौल' (प्रमुख पद) किसको दिया जाये। शक्तावत चाहते हैं कि 'हिरौल' उन्हे ही मिले क्योकि चूडावतो ने सदा से ही इसका उपभोग किया है। लेकिन चूडावत 'हिरौल' को अपने अधिकार में ही रखना चाहते हैं। अन्त मे सर्वसम्मति से निश्चित होता है कि जो पक्ष अन्तल्ला दुर्ग को विजित कर प्रथम प्रवेश करेगा उसी को हिरौल मिलेगा। दोनो दलो के वीर प्राणों की वाजी लगाकर उस पर विजय प्राप्त करने के लिए उद्यत हो जाते हैं। दुर्ग के चारों ओर ऊँची-ऊँची दीवारें तथा मुख्य द्वार पर नुकीली कीले लगी होती हैं। दोनो दलो के सामने विकट परिस्थिति होती है कि वे किस प्रकार दुर्ग के अन्दर जायें। चूडावत-दल के नेता सालुम्बा सरदार दुर्ग की दीवार पर चढ़ आक्रमण करते है लेकिन एक वाण उनके हृदय को वेध देता है और उनकी मृत्यु हो जाती है। चूड़ावत दल का सरदार वन्दा ठाकुर सालुम्वा सरदार का शव गठरी मे वाधकर तथा पीठ पर लादकर युद्ध करता है।

दूसरी ओर शक्तावत दल के नेता वल्लजी हाथी को दुर्गद्वार की ओर धकेलते हैं लेकिन नुकीली कीलें हाथी के मस्तक मे लग जाती हैं। वह वापिस मुड़ जाता है अत. द्वार नही खुलता। अन्त मे वल्लजी दुर्गद्वार पर स्वयं खड़े हो जाते हैं। पीछे से हाथी टक्कर मारता है। दुर्ग का द्वार खुल जाता है लेकिन नुकीली कीलें उनके शरीर मे धंस जाती हैं। रोम-रोम से रक्त बहने लगता है। वल्लजी को वीरगति प्राप्त होती है। शक्तावत दल के राजपूत जय-घोषणा करते हुए दुर्ग मे प्रवेश करते हैं लेकिन इससे पहले चूडावत दुर्ग की दीवार पर चढकर उस पर विजय प्राप्त कर लेते हैं। अत दोनो वीर प्राणो की बाजी लगाकर अपने प्रण की रक्षा करते हैं।

हीर-रांझा (सन् १९६०, पंजाब की प्रीत कहानियों में संगृहीत), ले० : हरिकृष्ण प्रेमी; प्र० : आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली ;

पात्र : पु० ८, स्त्री ३, *अक-दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल : चनाब नदी ।

इस दुखांत नाटक मे पंजाब की पृष्ठभूमि पर हीर और राँझा की प्रसिद्ध प्रेमकथा वर्णित है। एक दिन राँझा अनजाने मे हीर के घर सो जाता है। इस पर हीर की सखिया उसे बुरी तरह पीटती है। सखियो की मार से पीड़ित राँझे की दयनीय अवस्था हीर के हृदय मे सहज आकर्षण उत्पन्न करती है और वह द्रवित होकर राझे को अपने घर मे नौकरी दिला देती है। दोनो की सच्ची प्रीति दिनोदिन बढती है किन्तु भाग्य की विडम्बना यहा भी रंग लाती है। हीर का चाचा शैदो एक दिवस हीर को राँझे से मिलते हुए देख लेता है। जैसा प्राय. होता है हीर का विवाह अन्यत्र कर दिया जाता है। इस पर भी उनकी प्रीति-रीति पराजित नही होती । स्वय भी इस प्रेम-रोग से ग्रस्त हीर की ननद कष्ट सहती है, किन्तु उनकी सहायता करती है। हीर साप काटने का बहाना करती है। राँझा जोगी के वेश मे उसे घर ले आता है। घर पर हीर की मा शैदो के कहने पर उसे विष पिला देती है। उधर राँझा भी नदी मे डूबकर प्रेम की अनन्त राह पर हीर से जा मिलता है।

हीरे की अंगूठी (वि० १९८१, पृ० १३२), *ले०* . गणेश ; *प्र०* : मिश्र बन्धु कार्यालय, जबलपुर, *पात्र* : पु० ६, स्त्री ८; *अक* . ४, *दृश्य* (प्रवेश) : ६, ५, ४, ४ ।
घटना-स्थल : घर, विवाह-मडप ।

यह एक सामाजिक नाटक है। इस नाटक का मुख्य विषय विवाह समस्या है। इसमे विवाह प्रथा के दोषो पर प्रकाश डाला गया है। विधवा विवाह नाटक की मुख्य समस्या है। साथ ही जितेन्द्र और इन्द्र की समस्या पत्नी के गहनो के प्रेम के सन्दर्भ मे दिखाई गई है।

हैदर अली या मैसूर पतन (सन् १९३४, पृ० १९४), *ले०* : द्वारकाप्रसाद मौर्य; *प्र०* : चौधरी एण्ड सन्स, पुस्तक विक्रेता, बनारस सिटी; *पात्र* : पु० ११, स्त्री ४; *अंक* : ५, *दृश्य* : ६, ६, ६, ८, १० ।
घटना-स्थल : रगपत्तन का किला, नंदराज का घर, राजमहल, महाराज कृष्णराज का कमरा, लड़ाई का मैदान, हैदरअली का दरबार।

मैसूर-राज चिक्रू कृष्णराज का सरदार हैदरअली एक बहादुर सिपाही है। सभामंडप में उसकी वीरता की प्रशंसा होती है। महाराज उस पर प्रसन्न होकर उसे दिल्ली गढ़ का दुर्ग प्रदान करते है। इसी समय गुप्तचर से सूचना मिलती है कि मरहठों ने मैसूर पर आक्रमण कर दिया है। पेशवा काली राव उनके सेनाध्यक्ष है। राज्य के सेनापति देवराज उत्कोच देकर मराठो से राज्य की रक्षा करना चाहते हैं। कुछ लोग हैदरअली को युद्ध के लिए भेजना चाहते हैं। हैदरअली का सेनापति लुत्फअली हैदर की पुत्री रजिया पर आसक्त है पर रजिया लुत्फअली को अन्दर से बदसूरत और घृणित समझती है। वह कहती है, "तुम्हारे लिए रजिया के दिल मे जगह नही है।" लुत्फअली पुन आने की इच्छा प्रकट करता हुआ विदा लेता है। विधवा महारानी भी मराठो से सन्धि करना चाहती है और हैदरअली पर उनको पूरा विश्वास नही है। हैदरअली मराठो से युद्ध करता है किन्तु उसी का एक मराठा नायक धोखा देकर मराठो से मिलकर मैसूर की ही सेना पर आक्रमण करता है। अत. हैदरअली की हार होती है। मराठे रजिया को बलात् पकड़ना चाहते है किन्तु नंदराज की कन्या शक्ति के प्रयास से रजिया बच जाती है। हैदरअली उजाड प्रदेश मे सैनिको और लुत्फअली बेग से परामर्श करता है। वह पाँच हजार सैनिको के साथ पुन मराठो से युद्ध करता है और साथ ही सोचता है कि किसी तरकीब से नाराज देवराज की तरफ से खाडेराव के दिल मे सदेह पैदा कर दिया जाता और वह उनका साथ छोड़ देता तो विजय की आशापूर्ण होती। हैदरअली की नीति सफल होती है। युद्ध मे मैसूर के सेना-

पति और उपसेनापति बन्दी और आहत होते है। हैदरअली की विजय होती है। हैदरअली सिंहासन पर बैठकर घोषणा करता है—

"हर हिन्दू अपने धर्म पर चलने के लिए आजाद है। गाय की कुर्बानी बन्द की जाती है।" हैदरअली खाडेराव को लोहे के पिंजडे मे बन्द करके ले जाता है। कृष्णराज का सेनापति देवराज हैदर द्वारा बन्दी बनाया गया था। उसका वध कर दिया जाता है। मन्त्री-कन्या शान्ति उससे प्रेम करती थी। वह अपने प्रेमी का सिर को गोद मे उठा लेती है और अपनी कटार से आत्महत्या कर लेती है। लुत्फअली मन्त्री नंदराज का हैदरअली की आज्ञा से वध करना चाहता है। रजिया उसका हाथ पकडकर नन्दराज की रक्षा के लिए प्रार्थना करती है। लुत्फअली बदले मे उसकी मुहब्बत माँगता है। रजिया विवश होकर लुत्फअली का प्रस्ताव स्वीकार करती है, किन्तु थोडे ही समय उपरान्त पागल हो जाती है। हैदरअली और लुत्फअली सिर पीट कर रह जाते हैं।

हैदराबाद (सन् १९५०, पृ० ६५); *ले०* : बालभट्ट मालवीय; *प्र०* : गिरधारीलाल थोक पुस्तकालय, दिल्ली; *पात्र* : पु० २०, स्त्री ४; *अंक* : ३, *दृश्य* : ७, ६, ४। *घटना-स्थल* : हैदराबाद।

यह एक राजनैतिक नाटक है। निजाम-हैदराबाद को भारतीय गणतन्त्र मे जिस तरह शामिल किया गया उसका पूरा ब्योरा असली पात्रो के माध्यम से इसमे चित्रित किया गया है। नवाब साहब का सुलहनामा, कासिम रिज्वी की गिरफ्तारी, रजाकारो की मक्कारी और उनकी गिरफ्तारी तथा सरदार पटेल की अनुपम सूझ-बूझ का परिचय इस नाटक की कथावस्तु है।

होरी (सन् १९६१, पृ० १०८), *ले०* : विष्णु प्रभाकर; *प्र०* : हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, *पात्र* : पु० १०, स्त्री ५; *अंक* : ३; *दृश्य* : ४, ५, ५।

इस सामाजिक नाटक मे भारत के दीन-दुखी और जर्जर किसान का यथार्थ जीवन चित्रित किया गया है। इसमे तत्कालीन जमींदारी व्यवस्था के उस किसान का चित्र प्रस्तुत है जो वर्षों आंधी-तूफान मे सर्दी-गर्मी सहता हुआ जमीन से अनाज पैदा करता है और जब वही अनाज खलियानो मे आता है तब जमींदार, सूदखोर और पटवारी आदि जनता के शोषक बन उस अनाज को ले जाते है। होरी अपने खलियान मे खाली का खाली रह जाता है। होरी की एक वह स्थिति आती है जब उसे अपनी लडकी नादान रूपा का विवाह एक वयस्क व्यक्ति से, परिस्थितियो के वशीभूत होकर कर देना पडता है। होरी का बेटा अपने पिता की परिस्थिति-विवशता पर कटाक्ष करता है—"जिसे पेट की रोटी मयस्सर नही, उसके लिए मरजाद और इज्जत सब ढोंग है। औरो की तरह तुमने भी दूसरो का गला दबाया होता, जमा मारी होती, तो तुम भी भले आदमी होते। तुमने कभी नीति को नही छोड़ा, यह उसी का दण्ड है।" गाँव के प्रमुख व्यक्ति मुखिया, पटवारी आदि को पुलिस का साथ मिलता है जिसके सहारे वे दीनो के ऊपर अत्याचार करते हैं। होरी का बेटा गोबर सब देखता है और उसके मन मे समाज से घृणा होती है।

अनेक बार अभिनीत।

होली नाटक (सन् १९५१ पृ० ८४) *ले०* : गिरधारीलाल प्रीतम, *प्र०* : अग्रवाल बुक डिपो दिल्ली, *पात्र* : पु० १०, स्त्री १; *अंक-रहित*; *दृश्य* : ८। *घटना-स्थल* : होलिका, हिरण्यकश्यप का मकान।

यह पौराणिक नाटक है। इसकी कथा चिर परिचित हिरण्यकश्यप और उसके पुत्र प्रह्लाद से सम्बन्धित है। होलिका का आग मे जल जाना तथा प्रह्लाद का बच जाना, फिर नृसिंह भगवान के हाथो हिरण्यकश्यप की हत्या इस नाटक की मुख्य कथा है।

होली दर्पण (सन् १८८५, पृ० २६), ले० : शिवराम पाण्डेय; प्र० : स्वयं प्रकाशन; पात्र . पु० १०, स्त्री ०, अक : १; दृश्य : ३ ।
घटना-स्थल : घर, मैदान ।

ऐसा प्रतीत होता है कि यह नाटक मृत्यु सभा का उत्तर देने के लिए लिखा गया। मृत्यु सभा मे सुरापान करने वाले व्यक्तियो ने शारीरिक दृष्टि से मद्यपान को लाभप्रद घोपित किया है किन्तु इस नाटक मे आयुर्वेद की दृष्टि से मद्यपान को निपिद्ध सिद्ध किया गया है। मद्यपान के विरुद्ध तर्क दिया गया है कि २० प्रतिशत से अधिक मद्यपानकर्ताओं की मृत्यु सुरापान से होती है। मद्यपान से शारीरिक शक्ति का विकास नही, ह्रास होता है। पाचन-शक्ति क्रमशः विघटित होती जाती है। हृदय-रोग आरम्भ हो जाते हैं, क्षुधा क्षीण एव अग्नि मन्द हो जाती है अत: शराबी की आयु कम हो जाती है। ऐसा प्रतीत होता है कि नाटककार प्रस्तुत नाटक मे आयुर्वेद के आधार पर मद्यपान के कुप्रभावो का विश्लेषण करता है।

● ● ●

